SEERATE RASOOLE ARABI (HINDI)

रसूले अकरम ﷺ की मुबारक ज़िन्दगी के ह़ालात व वाक़िआ़त पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

DAWAT-E-ISLAMI

صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सीरते रसूले अ़रबी

मुसन्निफ़ : ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(दावते इस्लामी)
शो'बए तख़रीज

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़र्ज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

*तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इ़ल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

सीरते रसूले अ़रबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस '**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**' ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

किताब के हिन्दी लिपियांतर में क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ں

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,
बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी के ह़ालात व वाक़िआ़त पर मुश्तमिल मदनी गुलदस्ता

सीरते रसूले अ़रबी

मुसन्निफ़ : ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

नाम किताब : **सीरते रसूले अ़रबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुसन्निफ़ : **हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद नूर बख़्श तवक्कुली** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तख़रीज)**

पहली बार : **जमादिल अव्वल 1437 हिजरी ब मुताबिक़ मार्च 2016 ईसवी**

ता'दाद : **तीन हज़ार (3000)**

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना, देहली - 6**

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁.... **अजमेर शरीफ़** : **मक्तबतुल मदीना**, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385

❁... **बरेली शरीफ़** : **मक्तबतुल मदीना**, दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदा गरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994

❁... **गुलबर्गा शरीफ़** : **मक्तबतुल मदीना**, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503

❁... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना**, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

❁... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045

❁... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना**, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212

❁... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना**, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099

❁... **अनंतनाग** : **मक्तबतुल मदीना**, मदनी तर्बिय्यत गाह, टाउन होंल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438

❁... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना**, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861

❁... **इन्दोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शोंप नम्बर 13, बोंम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

❁... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना**, शोंप नम्बर 13, हज़रत बिलाल मस्जिद कोंम्पलेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अ़रेबिक कोंलेज, बेंग्लोर, कर्नाटक : 09343268414

❁... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना**, ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net / www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	8	शाम का दूसरा सफ़र	66
पेशे लफ़्ज़	10	ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से निकाह़	67
दीबाचा अज़ मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه	28	ता'मीरे का'बा	68
पहला मुक़द्दमा : मुल्के अ़रब का जोग्राफ़िया	31	**तीसरा बाब**	71
दूसरा मुक़द्दमा : अ़रब की तारीख़े क़दीम पर ताइराना नज़र	35	**ह़ालाते बिअ़्सत शरीफ़ ता हिजरत**	71
पहला बाब	41	दुन्या की ह़ालत	71
बरकाते नूरे मुह़म्मदी	41	इब्तिदाए वह़्य	80
दूसरा बाब	46	आग़ाज़े दा'वत	82
ह़ालाते नसब व विलादत शरीफ़ ता बिअ़्सत शरीफ़	46	तब्लीग़ अ़लल ए'लान	83
ख़ानदानी शराफ़त व सियादत	46	सिने 5 नबुव्वत	90
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात	55	सिने 6 नबुव्वत	91
वाक़िअ़ए अस्ह़ाबे फ़ील	55	सिने 7 नबुव्वत	93
तवल्लुद शरीफ़	57	सिने 10 नबुव्वत	95
तवल्लुद शरीफ़ की ख़ुशी का समरा	58	सिने 11 ता 13 नबुव्वत	97
तवल्लुद शरीफ़ के वक़्त ख़वारिक़,	59	**चौथा बाब**	101
रज़ाअ़त	60	**ह़ालाते हिजरत ता वफ़ात शरीफ़**	101
तअ़द्दुदे शक़्क़े सद्र	62	ख़बरे दारुन्नदवा	101
ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वफ़ात	62	क़िस्सए हिजरत	102
अ़ब्दुल मुत्तलिब व अबू त़ालिब की कफ़ालत	62	**हिजरत का पहला साल**	111
तुफ़ूलिय्यत में ह़ज़रत की दुआ़ से नुज़ूले बारां	63	ता'मीरे मस्जिदे क़ुबा	111
शाम का पहला सफ़र	64	मदीने में नुज़ूले रह़मत	112
ह़र्बे फ़िजार में शिर्कत	65	ता'मीरे मस्जिदे नबवी	114
ह़िल्फ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत	66		

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
अस्हाबे सुफ़्फ़ा	115	ग़ज़्वए ज़ी क़रद	211
अज़्वाजे मुत़हहरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के हुजरों की ता'मीर	117	ग़ज़्वए ख़ैबर	212
मुहाजिरीन के मकानात की ता'मीर	118	ग़ज़्वए वादियुल क़ुरा	215
मस्जिदे नबवी में चराग़ की इब्तिदा	119	**हिजरत का आठवां साल**	217
मुवाख़ात	119	ग़ज़्वए मौता	217
अज़ान की इब्तिदा	123	ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का	218
यहूद से मुआ़हदा	124	ग़ज़्वए हुनैन	229
हिजरत का दूसरा साल	125	जंगे अवत़ास	232
तह़वीले क़िब्ला	125	मुहासरए त़ाइफ़	233
ग़ज़्वात व सराया का आग़ाज़	127	**हिजरत का नवां साल**	237
ग़ज़्वए बद्रे कुब्रा	129	ग़ज़्वए तबूक	238
ग़ज़्वए बनी क़ैनूक़ाअ़	157	मस्जिदे ज़िरार	240
ग़ज़्वए सवीक़	157	**हिजरत का दसवां साल**	241
हिजरत का तीसरा साल	158	**हिजरत का ग्यारहवां साल**	241
ग़ज़्वए उहुद	158	**पांचवां बाब**	242
हिजरत का चौथा साल	184	**वफ़ात शरीफ़ और हुल्यए मुबारक का बयान**	242
ग़ज़्वए बनी नज़ीर	184	हुल्या शरीफ़	247
हिजरत का पांचवां साल	185	रूए मुबारक	249
ग़ज़्वए दूमतुल जन्दल, ग़ज़्वए अह़ज़ाब	185	चश्मे मुबारक	251
ग़ज़्वए बनी क़ुरैज़ा	186	अब्रूए मुबारक	253
हिजरत का छटा साल	187	बीनिये मुबारक	253
बैअ़ते रिज़्वान और सुल्ह़े हुदैबिय्या	187	पेशानिये मुबारक	254
हिजरत का सातवां साल	195	गोशे मुबारक	254
वालियाने मुल्क को दा'वते इस्लाम	195	दहाने मुबारक	255

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा
लुआ़बे दहन मुबारक	256
ज़बाने मुबारक	259
आवाज़े मुबारक	260
ख़न्दा व गिर्या मुबारक	261
सरे मुबारक	262
गर्दने मुबारक	262
दस्ते मुबारक	263
सीनए मुबारक व क़ल्ब शरीफ़	274
शिकमे मुबारक	275
पुश्ते मुबारक	275
पाए मुबारक	276
क़दे मुबारक	277
रंग मुबारक	278
जिल्दे मुबारक व बूए खुश	278
मूए मुबारक	281
लिबास	282
दुरूद शरीफ़	284
हयातुन्नबी	285
छटा बाब	291
आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के खुल्के अ़ज़ीम का बयान	291
सब्रो हिल्म व अ़फ़्व	293
शफ़्क़त व रहमत	310
उम्मत पर शफ़्क़त व रहमत	311

उ़नवान	सफ़्हा
काफ़िरों पर रहमत	316
औ़रतों पर शफ़्क़त व रहमत	318
हुस्ने मुआ़शरत की ताकीद	320
औ़रतों के हुक़ूक़	322
यतामा व मसाकीन व बेवगान पर शफ़्क़त व रहमत	323
बच्चों पर शफ़्क़त व रहमत	325
गुलामों पर शफ़्क़त व रहमत	330
चौपायों पर शफ़्क़त व रहमत	332
परन्दों और हशरातुल अर्ज़ पर शफ़्क़त व रहमत	335
नबातात व जमादात पर रहमत	336
तवाज़ोअ़ व हुस्ने मुआ़शरत	337
सख़ावत व ईसार	346
शुजाअ़त व कुव्वत, अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल	354
ज़ोहद	357
ख़ौफ़ व इबादत	363
अ़द्लो इन्साफ़	364
सिद्क़	368
हुस्ने अ़हदो वफ़ा	370
इफ़्फ़त व हया	371
तक़्सीमे अवक़ात	372
सातवां बाब	375
आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो 'जिज़ों का बयान	375
फ़स्ले अव्वल	375

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
ए'जाज़ुल कुरआन का बयान	375	हैवानात की ताअ़त और कलाम	495
ए'जाज़ुल कुरआन की पहली वज्ह	377	ऊंट की शिकायत और सजदा	495
फ़साहतो बलागत	377	बकरी की इताअ़त और सजदा	496
ए'जाज़ुल कुरआन की दूसरी वज्ह	391	भेड़िये की शहादत और ताअ़त	497
नज़्मे कुरआन का उस्लूबे बदीअ़	391	शेर की ताअ़त	499
ए'जाज़ुल कुरआन की तीसरी वज्ह	397	नबातात का कलाम व ताअ़त और सलाम व शहादत	499
गै़ब की ख़बरें	397	जमादात की ताअ़त और तस्बीह़ व सलाम	501
ए'जाज़ुल कुरआन की चौथी वज्ह	447	मुग़य्यबात पर मुत्तलअ़ होना	507
उ़लूमुल कुरआन	447	ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	526
कुरआने करीम की फ़साहतो बलागत की मिसालें	456	दज्जाले लई़न	527
फ़स्ले दुवुम	466	ह़ज़रते ई़सा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	529
दीगर मो'जिज़ात का बयान	466	याजूज व माजूज	530
असरा व मे'राज शरीफ़	466	दुख़ान (धुवां)	532
शक़्कुल क़मर	469	आफ़्ताब का मग़रिब से निकलना	532
रद्दुश्शम्स	471	दाब्बतुल अर्ज़	533
मुर्दों को ज़िन्दा करना	472	ख़ानए का'बा का गिराया जाना	533
इन्क़िलाबे आ'यान	474	एक बड़ी आग	534
बच्चों की शहादत (गवाही)	477	नफ़्ख़े सूर	534
बीमारों को शिफ़ा देना	478	हिजाज़ की आग	535
तआ़मे क़लील को कसीर बना देना	479	तातारियों का फ़ितना और ह़ादिसए बग़दाद	538
इजाबते दुआ़	485	का'बा शरीफ़ की हिजाबत	543
नजरान के नसारा के साथ मुबाहला	491	मह़ासिने ज़ाहिरी व बातिनी	543
उंगलियों से चश्मों की तरह पानी जारी होना	494	नसारा का ए'तिराज़	544

www.dawateislami.net

उ़नवान	सफ़्हा
जवाब	545
आठवां बाब	550
आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल व ख़साइस का बयान	550
ख़साइसे सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	559
नवां बाब	597
आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात	
और अवलादे किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का बयान	597
ह़ज़रते ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	603
ह़ज़रते सौदह बिन्ते जमआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	604
ह़ज़रते आ़इशा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا	605
ह़ज़रते ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا	608
ह़ज़रते उम्मे सलमह बिन्ते अबी उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	609
ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	611
ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	611
ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हिलालिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	616
ह़ज़रते मैमूना बिन्ते ह़ारिसा हिलालिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	616
ह़ज़रते जुवैरिय्या ख़ुज़ाइय्या मुस्त़लिक़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	617
ह़ज़रते सफ़िय्या इस्राईलिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	618
आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अवलादे किराम	619
ह़ज़रते क़ासिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	619
ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	619
ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	623
ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	624
ह़ज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا	624
ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	627
ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ	627
दसवां बाब	633
उम्मत पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ुक़ूक़ का बयान	633
ईमान व इत्तिबाअ़्	633
मह़ब्बत व इ़श्क़	637
अ़लामाते ह़ुब्बे सादिक़	642
ता'ज़ीमो तौक़ीर	649
आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर	
और अदब के त़रीक़े	653
आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस शरीफ़ का अदब	672
आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आसार शरीफ़ा की ता'ज़ीम	674
दुरूद शरीफ़ व ज़ियारते क़ब्र शरीफ़	692
ह़दीस لَا تُشَدُّ الرِّحَال की बह़्स	700
ख़ातिमा दर बह़्से इस्तिग़ासा व तवस्सुल	704
विलादत शरीफ़ से पहले तवस्सुल	705
ह़यात शरीफ़ में तवस्सुल	706
वफ़ात शरीफ़ के बा'द तवस्सुल	709
ह़दीसे तवस्सुल बिल अ़ब्बास की बह़्स	743
अ़रसाते क़ियामत में शफ़ाअ़त व तवस्सुल	751
माख़ज़ो मराजेअ़्	754

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“सब से औला व आ'ला हमारा नबी”
के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की “21 निय्यतें”

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : “अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।”

(الجامع الصغير،الحديث:٩٣٢٦،ص٥٥٧، دارالكتب العلمية بيروت)

दो मदनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। ﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां “**सरकार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढूंगा ﴾12﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) “याद दाश्त” वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात <u>अन्डर लाइन</u> करूंगा। ﴾14﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इल्मे दीन रोज़ाना कम अज़ कम चार सफ़ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा। ﴾15﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾16﴿ इस रिवायत عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ (حلية الاولياء،الحديث:١٠٧٥٠،ج٧،ص٣٣٥،دارالكتب العلمية) या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है, पर अ़मल करते हुवे इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लूटूंगा। ﴾17﴿ इस ह़दीसे पाक “تَهَادَوْا تَحَابُّوْا” एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी ﴿مؤطا امام مالک ج٢ص ٤٠٧ حديث ١٧٣١﴾ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾18﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 63) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लें ﴾19﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढूंगा ﴾20﴿ इस किताब के मुत़ालए का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾21﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلّى الله تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴿2﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब
﴿3﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
﴿4﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلّى الله تعالٰى عليه واٰله وسلّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जो وَحْدَهٗ لَا شَرِيْك है और बेशुमार दुरूदो सलाम हों हमारे आक़ा व मौला पर जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम आ़लम के लिये रह़मत व हिदायत बना कर भेजा, जिन्हें सब से अफ़्ज़ल और हर त़रह़ से कामिल व अकमल बनाया, तमाम ख़साइल और कमालात जिन की ज़ाते अक़्दस में जम्अ़ फ़रमाए और उन की इत़ाअ़त और पैरवी का यूं हुक्म इरशाद फ़रमाया :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱،الاحزاب:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "इत्तिबाअ़ (पैरवी) के मा'ना हैं किसी के नक़्शे क़दम पर चलना जो उसे करते हुवे देखना वोह करना।"

(मिरआतुल मनाजीह़, किताबुल उमरातुल क़ज़ा, 5/338)

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا (پ۲۸، الحشر:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो।

इस आयते मुबारका के तह़त ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : "रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हें जो हुक्म दें उस का इत्तिबाअ़ करो क्यूंकि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त हर अम्र में वाजिब है।"

और जो अपनी ज़िन्दगी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व पैरवी में गुज़ारे उस के लिये फ़रमाया :

يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (پ۳، ال عمران:۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।

मज़ीद फ़रमाया :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝ (پ ۲۲،الاحزاب: ۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी कामयाबी पाई।

इस आयते मुबारका के तह़त साह़िबे तफ़्सीरे ख़ाज़िन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुह़म्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : बड़ी कामयाबी पाने से मुराद येह है कि वोह शख़्स

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी के सबब अ़ज़ीम भलाई को पाने में कामयाब हो गया। (تفسیر الخازن، ج۳، ص۵۱۴) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैज़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।

(تفسیر البیضاوی، ج۴، ص۳۸۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक दुन्या व आख़िरत में भलाई और कामयाबी का मुतमन्नी है। और मुन्दरिजए बाला आयात व अक़्वाल से येह बात बिल्कुल वाज़ेह़ है कि दोनों जहां की भलाई और कामयाबी मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त और आप की सुन्नतों पर अ़मल ही में है लिहाज़ा हर एक को चाहिये कि सुन्नतों पर अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी बसर करे।

सुन्नतें सीखने के लिये प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका और ह़याते त़य्यिबा का बग़ौर मुत़ालआ़ कीजिये और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े अ़ज़ीमा, आप के चलने फिरने, उठने बैठने, सोने जागने, खाने पीने, गुफ़्त्गू फ़रमाने वग़ैरा के मुबारक अन्दाज़ सीख कर इन्हें अपने आप पर नाफ़िज़ करने की कोशिश कीजिये। इस सिलसिले में दीगर कुतुब के साथ साथ ज़ेरे नज़र किताब **"सीरते रसूले अ़रबी"** का मुत़ालआ़ काफ़ी मुमिदो मुआ़विन है, मुअल्लिफ़ ने बड़े दिलकश अन्दाज़ में मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़िन्दगी के ह़ालात क़लमबन्द फ़रमाए हैं और आज तक़रीबन पौन सदी गुज़रने के बा'द भी इस किताब की अहम्मिय्यत अपनी जगह मुसल्लम है। मज़ीद सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और रोज़ाना अपना मुह़ासबा (फ़िक्रे मदीना) करने को अपना मा'मूल बना लीजिये ! اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में इस की बरकतें नसीब होंगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सुन्नतें सीखने और इन पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए नीज़ इन्हें आ़म करने का जज़्बा मरह़मत फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

सीरत के मा'ना

लफ़्ज़ **"सीरत"** दर अस्ल سَارَ يَسِيْرُ سَيْرًا وَّ مَسِيْرًا से निकला है जिस के लुग़वी मा'ना हैं : त़रीक़ा, चलना, नीज़ क़िस्से और वाक़िआ़त बयान करने को भी सीरत कहते हैं। (उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिय्या, जि. 11, स. 505) सीरत के अव्वलीन इस्त़िलाह़ी मा'ना हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मग़ाज़ी (ग़ज़्वात के ह़ालात) और सवानेह़े ह़यात हैं। (उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिय्या, जि. 11, स. 506)

www.dawateislami.net

क़दीम मुह़द्दिसीन व फ़ुक़हा "मग़ाज़ी व सियर" के उ़नवान के तह़्त फ़क़त़ ग़ज़्वात और इस के मुतअ़ल्लिक़ात को बयान करते थे मगर सीरते नबविय्या के मुसन्निफ़ीन ने इस उ़नवान को इस क़दर वुस्अ़त दे दी कि हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत से वफ़ाते अक़्दस तक के तमाम मराहि़ले ह़यात, आप की ज़ातो सिफ़ात, आप के दिन रात और तमाम वोह चीजें जिन को आप की ज़ाते वाला सिफ़ात से तअ़ल्लुक़ात हों ख़्वाह वोह इन्सानी ज़िन्दगी के मुआ़मलात हों या नबुव्वत के मो'जिज़ात हों इन सब को "किताबे सीरत" ही के अबवाब व फ़ुसूल और मसाइल शुमार करने लगे। इसी त़रह़ ख़ुलफ़ाए राशिदीन हों या दूसरे सह़ाबए किराम, अज़्वाजे मुत़ह्हरात हों या आप की अवलादे इ़ज़ाम, इन सब की किताबे ज़िन्दगी के अवराक़ पर सीरते नबुव्वत के नक़्शो निगार फूलों की त़रह़ महकते, मोतियों की त़रह़ चमकते और सितारों की त़रह़ जगमगाते हैं। और येह तमाम मज़ामीन सीरते नबविय्या के "शजरतुल ख़ुल्द" ही की शाख़ें, पत्तियां, फूल और फल हैं। (सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, स. 39)

दौरे ताबेईन और सीरत निगारी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में जब अह़ादीसे नबविय्या की किताबत का आ़म त़ौर पर चर्चा हुवा तो दौरे ताबेईन में "मुह़द्दिसीन" के साथ साथ सीरते नबविय्या के मुसन्निफ़ीन का भी एक त़बक़ा पैदा हो गया। अब तक मग़ाज़ी व सियर की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की गई थी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस फ़न की त़रफ़ ख़ास तवज्जोह दी और हुक्म इरशाद फ़रमाया कि ग़ज़्वाते नबवी का ख़ास ह़ल्क़ए दर्स क़ाइम किया जाए चुनान्चे, ह़ज़रते आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को जो इस फ़न में ख़ास कमाल रखते थे, हुक्म दिया गया कि जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ में लोगों को मग़ाज़ी का दर्स दें। इसी ज़माने में मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग इमाम ज़ोहरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी थे जो ह़दीस व फ़िक़्ह में कमाल महारत रखते थे इन का शुमार इमाम बुख़ारी के शुयूख़ में होता है, इन्हों ने ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की हिदायत पर किताबुल मग़ाज़ी लिखी, जिस की वज्ह से सीरत व मग़ाज़ी का आ़म ज़ौक़ पैदा हुवा। इन के तलामिज़ा भी सीरत निगारी की त़रफ़ माइल हुवे और सीरत निगारी का सिलसिला शुरूअ़ हुवा। इस त़रह़ इस फ़न की बदौलत हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ व आ़दात जो ह़दीस की कुतुब में मोतियों की त़रह़ बिखरे हुवे थे और इन में कोई तारीख़ी तरतीब नहीं थी वोह एक ख़ास तरतीब के तह़्त एक जगह जम्अ़ हो गए। (माख़ूज़ अज़ : उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिय्या, जि. 11/506)

www.dawateislami.net

ग्यारहवीं सदी हिजरी तक के चन्द सीरत निगार

वोह आ़शिक़ाने रसूल जो सीरत नवेशी की बदौलत आस्माने इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत में सितारों की त़रह़ चमकते और चमनिस्ताने शोहरत में फूलों की त़रह़ महकते हैं उन ख़ुश नसीब आ़लिमों की फ़ेहरिस्त इतनी त़वील है कि उन का ह़सरो शुमार हमारी त़ाक़त व इक़्तिदार से बाहर है। जिन मुह़द्दिसीन, मुअर्रिख़ीन और मुफ़स्सिरीन ने कसीर ता'दाद में सीरत की कुतुब पर काम किया है उन सब को तो यहां ज़िक्र नहीं किया जा सकता मगर फिर भी चन्द सियर की कुतुब के मुसन्निफ़ीन का ज़िक्र ''ذِكْرُ الصَّالِحِيْنَ كَفَّارَةٌ''(नेकों का ज़िक्र गुनाहों का कफ़्फ़ारा है) की निय्यत से किया जाता है। दौरे ताबेईन से ग्यारहवीं सदी तक चन्द मुक़्तदर मुह़द्दिसीन व मुसन्निफ़ीने सीरत के अस्माए गिरामी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। ग्यारहवीं सदी के बा'द वाले मुसन्निफ़ीन के नामों और इन की कुतुब को हम ने इस फ़ेहरिस्त में इस लिये जगह नहीं दी कि येह लोग दर ह़क़ीक़त अगले मुसन्निफ़ीन ही के ख़ोशाचीन व फ़ैज़ याफ़्ता हैं :

❁....ह़ज़रते उ़र्वह बिन ज़ुबैर ताबेई (मुतवफ़्फ़ा सि. 92 हि.)
❁....ह़ज़रते आ़मिर बिन शराह़ील इमाम शा'बी (मुतवफ़्फ़ा सि. 104 हि.)
❁....ह़ज़रते अबान बिन अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्मान (मुतवफ़्फ़ा सि. 105 हि.)
❁....ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह यमनी (मुतवफ़्फ़ा सि. 110 हि.)
❁....ह़ज़रते आ़सिम बिन उ़मर बिन क़तादा (मुतवफ़्फ़ा सि. 120 हि.)
❁....ह़ज़रते शुर्ह़बील बिन सा'द (मुतवफ़्फ़ा सि. 123 हि.)
❁....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन शिहाब ज़ोहरी (मुतवफ़्फ़ा सि. 124 हि.)
❁....ह़ज़रते इस्माईल बिन अ़ब्दुर्रह़मान सुद्दी (मुतवफ़्फ़ा सि. 127 हि.)
❁....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र बिन ह़ज़्म (मुतवफ़्फ़ा सि. 135 हि.)
❁....ह़ज़रते मूसा बिन उ़क़बा (साह़िबुल मग़ाज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 141 हि.)
❁....ह़ज़रते मा'मर बिन राशिद (मुतवफ़्फ़ा सि. 150 हि.)
❁....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ (साह़िबुल मग़ाज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 150 हि.)
❁....ह़ज़रते ज़ियाद बकाई (मुतवफ़्फ़ा सि.183 हि.)
❁....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन उ़मर वाक़िदी (साह़िबुल मग़ाज़ी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 207 हि.)

www.dawateislami.net

۞....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सा'द (साह़िबुत्त़बक़ात) (मुतवफ़्फ़ा सि. 230 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (मुसन्निफ़े बुख़ारी शरीफ़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 256 हि.)

۞....ह़ज़रते मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी (मुसन्निफ़े मुस्लिम शरीफ़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 261 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन क़ुतैबा (मुतवफ़्फ़ा सि. 267 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अ़स सजिस्तानी साह़िबुस्सुनन (मुतवफ़्फ़ा सि. 275 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू ईसा मुह़म्मद बिन ईसा तिर्मिज़ी (मुसन्निफ़े जामेए़ तिर्मिज़ी)(मुतवफ़्फ़ा सि. 279 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद यज़ीद बिन माजह क़ज़्वीनी (साह़िबुस्सुनन) (मुतवफ़्फ़ा सि. 273 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान अह़मद बिन शोऐ़ब नसाई (मुसन्निफ़े सुनने नसाई) (मुतवफ़्फ़ा सि. 303 हि.)

۞....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन जरीर त़बरी (साह़िबुत्तारीख़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 310 हि.)

۞....ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल ग़नी बिन सईद इमामुन्नसब (मुतवफ़्फ़ा सि. 332 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह (साह़िबुल ह़िल्या) (मुतवफ़्फ़ा सि. 430 हि.)

۞....ह़ज़रते अबू बक्र अह़मद बिन ह़ुसैन बैहक़ी (मुतवफ़्फ़ा सि. 458 हि.)

۞....ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम अबू उ़मर ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र (मुतवफ़्फ़ा सि. 463 हि.)

۞....ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ (साह़िबुश्शिफ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 544 हि.)

۞....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह सुहैली (साह़िबुर्रौज़ुल उनुफ़) (मुतवफ़्फ़ा सि. 581 हि.)

۞....ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अल जौज़ी (साह़िबे शरफ़ुल मुस्त़फ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 597 हि.)

۞....ह़ज़रते इमाम शरफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मोमिन दिमयात़ी (साह़िबे सीरते दिमयात़ी)(मुतवफ़्फ़ा सि. 705 हि.)

۞....ह़ज़रते इब्ने सय्यिदुन्नास बसरी (साह़िबे उ़यूनुल असर) (मुतवफ़्फ़ा सि. 734 हि.)

۞....ह़ज़रते ह़ाफ़िज़ अ़लाउद्दीन मुग़लत़ाई (साह़िबुल इशारह इला सीरतुल मुस्त़फ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 762 हि.)

۞....ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी (शारेह़े बुख़ारी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 852 हि.)

۞....ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन मह़मूद ऐ़नी (शारेह़े बुख़ारी) (मुतवफ़्फ़ा सि. 855 हि.)

۞....ह़ज़रते अबुल ह़सन अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद समहूदी (साह़िबे वफ़ाउल वफ़ा) (मुतवफ़्फ़ा सि. 911 हि.)

۞....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन यूसुफ़ सालिह़ी (साह़िबुल सीरतुल शामिय्या) (मुतवफ़्फ़ा सि. 942 हि.)

www.dawateislami.net

❁....ह़ज़रते अ़ली बिन बुरहानुद्दीन (साह़िबुस्सीरतुल ह़ल्बिया) (मुतवफ़्फ़ा सि. 1044 हि.)

❁....ह़ज़रते अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र क़स्त़लानी (साह़िबे मवाहिबे लदुन्निय्या) (मुतवफ़्फ़ा सि. 923 हि.)

❁....ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी (साह़िबे मदारिजुन्नबुव्वत) (मुतवफ़्फ़ा सि. 1052 हि.) (सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, स. 36)

सीरते रसूले अ़रबी

जिस त़रह़ हर दौर में आ़शिक़ाने रसूल ने अपनी इ़ल्मी बिसात़ और माह़ोल की ज़रूरियात के लिह़ाज़ से सीरते नबविय्या के दिलकश, रूह़ परवर और ईमान अफ़रोज़ उ़नवान पर मुफ़स्सल और मुख़्तसर किताबें तह़रीर फ़रमाईं इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़ल्लामा नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी अपने दौर की ज़रूरत के मुत़ाबिक़ एक मुख़्तसर किताब "सीरते रसूले अ़रबी" तह़रीर फ़रमाई जिस में मुस्तनद और मो'तबर रिवायात ब ह़वाला नक़्ल की गई हैं। इस की एक मुख़्तसर झलक पेश की जाती है। किताब की तरतीब यूं है : इब्तिदा में दो मुक़द्दमे, फिर दस अबवाब और आख़िर में एक ख़ातिमा।

पहला मुक़द्दमा : मुल्के अ़रब का जोग्राफ़िया

दूसरा मुक़द्दमा : अ़रब की तारीखे़ क़दीम पर त़ाइराना नज़र

पहला बाब : बरकाते नूरे मुह़म्मदी

दूसरा बाब : ह़ालाते नसब व विलादत शरीफ़ ता बिअ़्सत शरीफ़

तीसरा बाब : ह़ालाते बिअ़्सत शरीफ़ ता हिजरत

चौथा बाब : ह़ालाते हिजरत ता वफ़ात शरीफ़

पांचवां बाब : वफ़ात शरीफ़ और ह़ुल्यए मुबारक का बयान

छटा बाब : आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुल्क़े अ़ज़ीम का बयान

सातवां बाब : आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ों का बयान

आठवां बाब : आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइलो ख़साइस का बयान

नवां बाब : आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अवलादे किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का बयान

दसवां बाब : उम्मत पर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ुक़ूक़ का बयान

ख़ातिमा : बह़्से इस्तिग़ासा व तवस्सुल

पहले मुक़द्दमे में मुल्के अ़रब का जोग्राफ़िया और दूसरे में अ़रब की क़दीम तारीख़ इन्तिहाई इख़्तिसार के साथ पेश की गई है। पहले बाब से पांचवें बाब तक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते मुबारका से आप के विसाले ज़ाहिरी तक के ह़ालात का बयान है। छटे बाब में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा की एक झलक पेश की गई है। सातवें बाब को दो फ़स्लों में तक़्सीम किया गया है पहली फ़स्ल में आप के अ़ज़ीम तरीन मो'जिज़ा क़ुरआने पाक पर बतौरे मो'जिज़ा चार वुजूह या'नी फ़साह़तो बलाग़त, नज़्मे क़ुरआन का उस्लूबे बदीअ़, ग़ैब की ख़बरें और क़ुरआन के उ़लूम के तह़्त मुफ़स्सल कलाम किया है और क़ुरआने पाक की चालीस पेश गोइयां ज़िक्र की गई हैं। दूसरी फ़स्ल में दीगर मो'जिज़ात बयान किये गए हैं। आठवें बाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइलो ख़साइस बयान किये गए हैं और मिसालों के ज़रीए़ येह साबित किया है कि अम्बियाए साबिक़ीन को जो जो मो'जिज़े अ़त़ा हुवे वोह सारे बल्कि उस से बढ़ कर आप को अ़त़ा किये गए नीज़ आप की एक सो पच्चीस ख़ुसूसिय्यात ज़िक्र की गई हैं। फिर कुफ़्फ़ार ने अपने तईं आप पर जो ए'तिराज़ किये और इन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो जवाब इरशाद फ़रमाया उस का भी ज़िक्र किया और इस ज़िम्न में पन्दरह आयाते मुबारका बतौरे मिसाल पेश की हैं। नवें बाब में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस अज़्वाज और अवलादे किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का फ़र्दन फ़र्दन तज़्किरा किया गया है। दसवें बाब में उम्मत पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क्या क्या हुक़ूक़ हैं उन का बयान नीज़ हुज़ूर से मह़ब्बत व इ़श्क़, आप की और आप से निस्बत रखने वाली चीज़ों की ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदब के त़रीक़े, दुरूद शरीफ़, रौज़ए अन्वर की ज़ियारत और आदाब और आख़िर में ह़दीस "لَاتُشَدُّ الرِّحَال" की बह़्स की गई है। और ख़ातिमे में इस्तिग़ासा व तवस्सुल के मुतअ़ल्लिक़ बह़्स है जिस के तह़्त हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका को वसीला बनाने और आप से इस्तिआ़नत के जवाज़ पर दलाइल दिये गए हैं।

वज्हे तालीफ़

मुसन्निफ़े सीरते रसूले अ़रबी ह़ज़रते अ़ल्लामा नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़र्फ़े आग़ाज़ में फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

"इस पुर आशूब ज़माने में मुल्के हिन्द में कई फ़ितने बरपा हैं जो सब के सब सिराते़ मुस्तक़ीम या'नी मस्लके अहले सुन्नत व जमाअ़त से मुन्ह़रिफ़ हैं। उर्दू में सीरत पर जो चन्द किताबें शाएअ़ हुई हैं उन में से शायद ही कोई बहमए वुजूह अहले सुन्नत व जमाअ़त के मे'यार पर पूरी उतरे। फ़क़ीर ने ब तौफ़ीक़े इलाही इस किताब में मस्लके अहले सुन्नत की पाबन्दी का पूरा इल्तिज़ाम रखा है।"

मक़्बूलिय्यत

सीरते रसूले अ़रबी का पहला एडीशन तक़रीबन पौन सदी क़ब्ल 1357 हिजरी मुत़ाबिक़ 1938 ईसवी में लुधियाना (मशरिक़ी पंजाब) से शाएअ़ हुवा था और आज तक इस की इशाअ़त का सिलसिला जारी है। इस की मक़्बूलिय्यत के बारे में खु़द मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ दूसरे एडीशन के दीबाचे में फ़रमाते हैं : "इस किताब के पहले एडीशन को उ़लमा व मशाइख़ व आ़म्मए मुस्लिमीन ने बा वुजूद आ़लमगीर जंग व क़ह़त़ के जिस क़द्र दानी की निगाह से देखा वोह निहायत हौ़सला अफ़्ज़ा है। ह़ालाते मौजूदा में कम्पनी मज़्कूरा का इस की त़बअ़ की इजाज़त त़लब करना मज़ीद सुबूत इस की मक़्बूलिय्यत का है। क्यूं न हो, **अल्लाह** तआ़ला के प्यारे नबी بِاَبِیْ ھُوَ وَاُمِّی के प्यारे प्यारे ह़ालात हैं।"

मुख़्तलिफ़ उ़लमा ने इसे सराहा, जिन में शरफ़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ज़रूरत थी कि ऐसी किताब लिखी जाए जो मुस्तनद मा'लूमात पर मुश्तमिल हो, मस्लके अहले सुन्नत की सह़ीह़ तर्जुमानी करे और अन्दाज़े बयान सादा और आ़म फ़ह्म हो, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद नूर बख़्श तवक्कुली قُدِّسَ سِرُّہٗ ने **सीरते रसूले अ़रबी** लिख कर इस ज़रूरत को पूरा कर दिया।"

कुछ मुसन्निफ़ के बारे में

पैदाइश :-

फ़ख्ऱे अहले सुन्नत, पीरे त़रीक़त ह़ज़रते अ़ल्लामा नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादते बा सआ़दत ज़िल्अ़ लुधियाना (मशरिक़ी पंजाब, हिन्द) के मौज़अ़ चक क़ाज़ियां में सिने 1305 हिजरी में हुई। आप का तअ़ल्लुक़ एक दीनी घराने से था लिहाज़ा बचपन ही से बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن की सोह़बत व क़ुर्बत नसीब हुई।

ता'लीमो तर्बिय्यत :-

इब्तिदाई ता'लीम मक़ामी मदारिस से ह़ासिल की। बचपन ही से ज़हानत और खु़दादाद सलाहि़य्यतों की बिना पर अपने साथियों में मुमताज़ व माफ़ूक़ रहे। एम-ए-अ़रबी का इमतिह़ान

www.dawateislami.net

हिन्द की मश्हूर दर्सगाह मुस्लिम यूनिवर्सिटी अ़लीगढ़ से इम्तियाज़ी हैसिय्यत के साथ पास किया। आप को दीनी उ़लूम सीखने का भी बहुत शौक़ था और येह आ़लम था कि म्यूनिसिपल बोर्ड कॉलेज में प्रोफ़ेसर होने के बावुजूद मा'रूफ़ आ़लिमे दीन मौलाना ग़ुलाम रसूल क़ासिमी कश्मीरी अमृतसरी के पास हाज़िर होते और त़लबा के साथ चटाई पर बैठ कर तफ़्सीर, ह़दीस और फ़िक़्ह का दर्स लेते। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तसानीफ़ आप के कसीर मुत़ालए़ और वुस्अ़ते नज़री की निशान देही करती हैं।

बैअ़त व ख़िलाफ़त :-

जिन दिनों आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अम्बाला के एक स्कूल में बत़ौरे हेड मास्टर तअ़य्युनात थे उन दिनों अम्बाला में रूह़ानी पेश्वा ह़ज़रते ख़्वाजा तवक्कुल शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बड़ा शोहरा था। आप उन के दस्ते अक़्दस पर सिलसिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया में बैअ़त हुवे और इजाज़त व ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हुवे। इसी निस्बत से अपने नाम के साथ "तवक्कुली" लिखा करते थे। ह़ज़रते ख़्वाजा तवक्कुल शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के विसाल फ़रमाने के बा'द आप ने बुलन्द पाया आ़लिमे दीन ह़ज़रते मुश्ताक़ अह़मद अम्बेठवी सुम्मा लुधियानवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से सिलसिलए साबिरिय्या में इक्तिसाबे फ़ैज़ किया। ह़ज़रत ने भी आप को ख़िरक़ए ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

दीनी व मिल्ली ख़िदमात :-

आप अम्बाला के स्कूल में बत़ौरे हेड मास्टर और म्यूनिसिपल बोर्ड कॉलेज अमृतसर में बत़ौरे प्रोफ़ेसर ख़िदमात सर अन्जाम देते रहे। बा'दे अज़ां मर्कज़ुल औलिया लाहोर तशरीफ़ लाए और एक अ़र्सा तक दारुल उ़लूम नो'मानिय्या लाहोर के नाज़िमे ता'लीम और अन्जुमने नो'मानिय्या के माहवार रिसाला के एडीटर रहे। इन्ही अय्याम में पंजाब की मश्हूर दर्सगाह गवर्नमेन्ट कॉलेज मर्कज़ुल औलिया लाहोर में अ़रबी के प्रोफ़ेसर मुक़र्रर हुवे। इस अ़र्से में आप ने नौजवान नस्ल की ता'लीमो तर्बिय्यत पर ज़ोर दिया, इन में अस्लाफ़े किराम से तअ़ल्लुक़ क़ाइम रखने की ज़रूरत और अहम्मिय्यत को उजागर किया और तक़रीर व तह़रीर के ज़रीए़ मस्लके अहले सुन्नत की गिरां क़द्र ख़िदमात अन्जाम दीं।

गवर्नमेन्ट कॉलेज से रीटायर मेन्ट के बा'द आप ने चक क़ाज़ियां ज़िलअ़ लुधियाना (मशरिक़ी पंजाब, हिन्द) में एक मद्रसा क़ाइम फ़रमाया और अपने पीरो मुर्शिद की निस्बत से

www.dawateislami.net

उस का नाम "मद्रसए इस्लामिय्या तवक्कुलिय्या" रखा। कसीर त़लबा उस मद्रसे से मुस्तफ़ीद हुवे। आप का एक शानदार व तारीख़ी कारनामा येह है कि आप ने गवर्नमेन्ट के गज़ट में 12 रबीउ़न्नूर शरीफ़ के लिये ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम मन्ज़ूर करवाया और इस दिन की आ़म ता'त़ील पास करवाई। بحمدہ تعالیٰ आज येही नाम बच्चे बच्चे की ज़बान पर है और येह दिन बड़े एह़तिराम और शायाने शान त़रीके़ से मनाया जाता है।

आप एक बुलन्द पाया मुदर्रिस होने के साथ साथ एक अदीब भी थे, तस्नीफ़ो तालीफ़ की ज़रूरत, अहम्मिय्यत और इफ़ादिय्यत को ब ख़ूबी समझते थे, आप को वसीअ़ मा'लूमात थीं, कुव्वते इस्तिद्लाल और आ़म फ़ह्म अन्दाज़े तह़रीर का मलका भी ह़ासिल था। अन्जुमने नो'मानिय्या के माहवार रिसाले में अक्सरो बेशतर आप के पुर मग़्ज़ मज़ामीन और फ़तावा शाएअ़ होते थे। आप की जुम्ला तसानीफ़ से न सिर्फ़ येह कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वालिहाना मह़ब्बत का पता चलता है बल्कि पढ़ने वाले का ईमान भी ताज़ा होता है।

तसानीफ़ :-

आप की कुछ तसानीफ़ येह हैं :

﴾1﴿.....सीरते रसूले अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾2﴿.....एजाज़ुल कु़रआन

﴾3﴿.....अ़क़ाइदे अहले सुन्नत ﴾4﴿.....ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾5﴿.....मो'जिज़ातुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾6﴿.....ग़ज़्वातुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾7﴿.....हुल्यतुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾8﴿.....सीरते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

﴾9﴿.....तज़्किरए मशाइख़े नक़्शबन्द ﴾10﴿.....शर्हे क़सीदा बुर्दा अ़रबी-उर्दू

﴾11﴿.....तोह़्फ़ए शीआ़ ﴾12﴿.....किताबुल बरज़ख़

﴾13﴿.....मुक़द्दमा तफ़्सीरुल कु़रआन ﴾14﴿.....तफ़्सीरे सूरए फ़ातिह़ा व सूरए बक़रह

﴾15﴿.....रिसालए नूर ﴾16﴿.....ह़ाशिय्यतुत्तोह़्फ़तुल इब्राहीमिय्या फ़ी आ'फ़ाउल लह़िय्या

﴾17﴿.....मौलूद बरज़न्जी की उर्दू शर्ह ﴾18﴿.....इमाम बुख़ारी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

﴾19﴿.....तर्जमा تحقیق المرام فی منع القراءۃ خلف الامام ﴾20﴿.....الاقوال الصحیحۃ فی جواب الجرح علی ابی حنیفۃ

www.dawateislami.net

वफ़ात :-

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने मकान की सीढ़ी से गिरने की वज्ह से कुछ अ़र्से बीमार रहे और 13 जुमादल ऊला 1367 हिजरी / 24 मार्च 1948 ईसवी को विसाल फ़रमा गए। फ़ैसलाबाद के जज़िल बस स्टेन्ड के क़रीब ह़ज़रते नूर शाह वली قُدِّسَ سِرُّہٗ के मज़ार के पास आप को दफ़्न किया गया।

सीरते रसूले अ़रबी की वज्ह से मुसन्निफ़ पर करम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बे नियाज़ में कौन सा अ़मल मक़्बूल हो कर उख़रवी कामयाबी का सबब बन जाए येह कोई नहीं जानता। कुछ ऐसा ही मौसूफ़ मौलाना नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साथ भी हुवा, चुनान्चे, आप की किताब सीरते रसूले अ़रबी मक़्बूल हो कर आप के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इन्आ़मो इकराम का सबब बन गई। हुवा यूं कि आप के विसाल के बा'द मोह़तरम मुफ़्ती अ़ब्दुल ह़मीद नक़्शबन्दी मुजद्दिदी लुधियानवी ने आप को एक ख़ूब सूरत मुअ़त्त़र बाग़ में एक सुन्हरी तख़्त पर जल्वा अफ़रोज़ देख कर दरयाफ़्त किया कि मौलाना साह़िब ! येह सरफ़राज़ी कैसे नसीब हुई ? फ़रमाने लगे कि मुफ़्ती साह़िब ! येह इन्आ़म **सीरते रसूले अ़रबी** की वज्ह से नसीब हुवा है।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो !

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

सीरते रसूले अ़रबी पढ़ने का त़रीक़ा

इस किताब का मुत़ालआ़ इस त़रह़ न कीजिये जिस त़रह़ आ़म तौर पर लोग नाविलों या क़िस्से कहानियों या तारीख़ी किताबों को निहायत ही ला परवाई के साथ पाकी नापाकी हर ह़ालत में पढ़ते रहते हैं और निहायत ही बे तवज्जोगी के साथ पढ़ कर इधर उधर डाल दिया करते हैं बल्कि इस जज़्बए अ़क़ीदत और वालिहाना जोशे मह़ब्बत के साथ इस किताब का मुत़ालआ़ करें कि येह शहनशाहे दारैन और मह़बूबे रब्बुल मशरिक़ैन वल मग़रिबैन की ह़याते त़य्यिबा और इन की सीरते मुक़द्दसा का ज़िक्रे जमील है जो हमारी ईमानी अ़क़ीदतों का मर्कज़ और हमारी इस्लामी

---

1 .....आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के इन मुख़्तसर ह़ालात के लिये, तज़्किरए अकाबिरे अहले सुन्नत (अज़ अ़ब्दुल ह़कीम शरफ़ क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ), रोशन सितारे (नूरिय्या रज़विय्या पब्लीकेशन्ज़ मर्कज़ुल औलिया लाहोर) और सीरते रसूले अ़रबी के एक क़दीम नुस्ख़े से इस्तिफ़ादा किया गया है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी का मह़्वर है। येह मह़्बूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उन क़ाबिले एह़्तिराम अदाओं का बयान है जिन पर काइनाते आ़लम की तमाम अ़ज़्मतें कुरबान हैं, लिहाज़ा इस के मुत़ालए़ के वक़्त आप को अदबो एह़्तिराम का पैकर बन कर और ता'ज़ीमो तौक़ीर के जज़्बाते सादिक़ा से अपने क़ल्बो दिमाग़ को मुनव्वर कर के इस तसव्वुर के साथ इस की एक एक सत़्र को पढ़ना चाहिये कि इस का एक एक लफ़्ज़ मेरे लिये ह़सनात व बरकात का ख़ज़ाना है और गोया मैं हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस दरबार में ह़ाज़िर हूं और आप की इन प्यारी प्यारी अदाओं को देख रहा हूं और आप के फ़ैज़े सोह़्बत से अन्वार ह़ासिल कर रहा हूं। ह़ज़रते अबू इब्राहीम तुजीबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया है कि "हर मोमिन पर वाजिब है कि जब वोह रह़्मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करे या उस के सामने आप का ज़िक्र किया जाए तो वोह पुर सुकून हो कर नियाज़ मन्दी व आ़जिज़ी का इज़्हार करे, और अपने क़ल्ब में आप की अ़ज़्मत और हैबत व जलाल का ऐसा ही तअस्सुर पैदा करे जैसा कि आप के रू बरू ह़ाज़िर होने की सूरत में आप के जलाल व हैबत से मुतअस्सिर होता।"

(الشفا بتعریف حقوق المصطفی،الباب الثالث فی تعظیم امره،فصل واعلم ان حرمة النبی...الخ ،ج۲،ص ۴۰)

और ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बा'द भी हर उम्मती पर आप की इतनी ही ता'ज़ीमो तौक़ीर लाज़िम है जितनी कि आप की ज़ाहिरी ह़यात में थी। चुनान्चे, ख़लीफ़ए बग़दाद अबू जा'फ़र मन्सूर अ़ब्बासी जब मस्जिदे नबवी में आ कर ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा तो ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को येह कह कर डांट दिया कि ऐ अमीरल मोमिनीन ! यहां बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू न कीजिये क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआन में अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार का येह अदब सिखाया कि

لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ
(پ۲۶، الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से।*

"وَاِنَّ حُرْمَتَهٗ مَيِّتًا كَحُرْمَتِهٖ حَيًّا" और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बा'द भी हर उम्मती पर आप की उतनी ही ता'ज़ीम वाजिब है जितनी कि आप की ज़ाहिरी ह़यात में थी। येह सुन कर ख़लीफ़ा लर्ज़ां बर अन्दाम हो कर नर्म पड़ गया।

(الشفا بتعریف حقوق المصطفی،الباب الثالث فی تعظیم امره،فصل واعلم ان حرمة النبی...الخ ،ج۲،ص ۴۱)

www.dawateislami.net

बहर ह़ाल सीरते मुक़द्दसा की किताबों को पढ़ते वक़्त अदबो एह़तिराम लाज़िम है और बेहतर येह है कि जब पढ़ना शुरूअ़ करे तो दुरूद शरीफ़ पढ़ कर किताब शुरूअ़ करे और जब तक दिल जमई बाक़ी रहे पढ़ता रहे और जब ज़रा भी उकताहट मह़सूस करे तो पढ़ना बन्द कर दे और बे तवज्जोगी के साथ हरगिज़ न पढ़े। (सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, स. 45)

واللّٰہ تعالٰی ھو الموفق والمعین وصلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وعلٰی الہ وصحبہ اجمعین .

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" और "सीरते रसूले अ़रबी"

मुसलमानों को येह ए'ज़ाज़ व शरफ़ ह़ासिल है कि इन्हों ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ालात व वाक़िआ़त को इस इस्तिक़्सा के साथ मह़फ़ूज़ रखा कि किसी शख़्स के ह़ालात आज तक इस जामिइय्यत और एह़तियात़ के साथ क़लम बन्द नहीं हो सके और न आयिन्दा किये जा सकते हैं। इस से ज़ियादा क्या अ़जीब बात हो सकती है कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अफ़्आ़लो अक़्वाल की तह़क़ीक़ की ग़रज़ से आप के देखने वालों और मिलने वालों में से तक़रीबन तेरह हज़ार अश्ख़ास के नाम और ह़ालात क़लम बन्द किये गए। एक स्कॉलर (शुपरिंगर) की राए येह है कि दुन्या में न कोई ऐसी क़ौम गुज़री न आज मौजूद है जिस ने मुसलमानों की त़रह़ अस्माउर्रिजाल का सा अ़ज़ीमुश्शान फ़न ईजाद किया हो जिस की बदौलत आज पांच लाख अश्ख़ास का ह़ाल मा'लूम हो सकता है। येह सारी काविशें इस लिये हुईं कि रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ीह़ तरीन और मुस्तनद तरीन ह़ालात और अक़्वालो अफ़्आ़ल की तदवीन हो सके और एक ऐसे ज़माने में जब फ़राहमी मा'लूमात के वसाइल कम से कम और मुश्किलात ज़ियादा से ज़ियादा थीं ह़दीस और सीरत के मवाद की फ़राहमी और इन की तन्क़ीद, दुन्या भर में तारीख़ के फ़न का मुह़य्यरुल उ़क़ूल और अ़क़ीदत और मह़ब्बत का नाक़ाबिले यक़ीन कारनामा है। (उर्दू दाइरए मआ़रिफ़े इस्लामिय्या, जि. 11/509)

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के इदारे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के शो'बए तख़रीज के लिये यक़ीनन येह बहुत बड़ी सआ़दत है कि सीरते रसूले अ़रबी पर काम इन के ह़िस्से में आया और इस सिलसिले में शो'बे के मदनी इस्लामी भाइयों ने भी अपनी दिलचस्पी और शौक़ का इज़्हार किया। इन का मत़मह़े नज़र येह था कि इस इ़ल्मी ज़ख़ीरे को मुफ़ीद से मुफ़ीद तर बनाने के लिये अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों से हम आहंग कर के

www.dawateislami.net

मन्ज़रे आ़म पर लाया जाए और एक ऐसा नुस्ख़ा दस्तयाब हो जाए जिस में अग़लात़ न होने के बराबर हों लिहाज़ा मदनी उ़लमा ने तख़रीज व तस्हील वग़ैरा का एहतिमाम करते हुवे काम का आग़ाज किया और अब तक्मील के बा'द येह ख़ूब सूरत किताब आप के हाथों में है। मदनी उ़लमा के काम की कुछ तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

मुख़्तलिफ़ नुस्ख़े और तक़ाबुल

तक़ाबुल एक इन्तिहाई अहम मरह़ला है जिस में कम्प्यूटर से कम्पोज़ किये हुवे मवाद को अस्ल के मुत़ाबिक़ किया जाता है। इस सिलसिले में **सीरते रसूले अ़रबी** के चन्द क़दीम नुस्ख़े ह़ासिल किये गए इसी दौरान **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के एक शो'बा ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने कमो बेश निस्फ़ सदी क़ब्ल शाएअ़ होने वाला एक क़दीम नुस्ख़ा ब ग़रज़े मुआ़वनत पेश कर दिया जिस से काफ़ी इस्तिफ़ादा किया गया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए। तक़ाबुल के दौरान नुस्ख़ों में जो इख़्तिलाफ़ात सामने आए अस्ल ह़वाले की त़रफ़ मुराजअ़त करते हुवे उन की तसह़ीह़ की गई है और ह़ाशिय्ये में उन की वज़ाह़त कर दी गई है।

तख़रीज का एहतिमाम

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के अन्दाज़ के मुत़ाबिक़ रिवायात व वाक़िआ़त की तख़रीज का एहतिमाम किया गया है और कोशिश की गई है कि मुसन्निफ़ ने जिस किताब का ह़वाला दिया है उसी का ह़वाला बित्तफ़्सील या'नी किताब, बाब, फ़स्ल, रक़म, जिल्द और सफ़ह़ा नम्बर के साथ दिया जाए मसलन मुसन्निफ़ ने ह़वाले में लिखा :

सह़ीह़ बुख़ारी, बाब क़त्ले ह़म्ज़ा। इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से बित्तफ़्सील ह़वाला यूं पेश किया गया :

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قتل حمزة رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، الحدیث:٤٠٧٢، ج٣،ص٤١)

अलबत्ता बा'ज़ मक़ामात पर दीगर कुतुब के भी ह़वाले दिये गए हैं।

मुसन्निफ़ ने ह़वालाजात ह़ाशिय्ये में लिखने का एहतिमाम फ़रमाया है अलबत्ता आख़िरी अबवाब में कहीं कहीं मतन में भी ह़वालाजात लिखे हैं नीज़ बा'ज़ ह़ाशिये भी मतन में बैनल क़ौसैन तह़रीर फ़रमाए हैं। हम ने इसी अन्दाज़ को बर क़रार रखा है और वज़ाह़त के लिये मतन में बैनल क़ौसैन इ़बारत को थोड़ा सा छोटा कर के लिखा है (या'नी उन का फ़ोन्ट साइज़ कम कर दिया है)।

मुसन्निफ़ और इ़ल्मिय्या के ह़वालाजात में तफ़रीक़ के लिये इ़ल्मिय्या की तख़ारीज के आख़िर में इ़ल्मिय्या लिखा है नीज़ मुसन्निफ़ के ह़वाशी के आख़िर में (**12 मिन्ह**) और इ़ल्मिय्या के ह़वाशी के आख़िर में **इ़ल्मिय्या** लिखा है।

www.dawateislami.net

जहां मुसन्निफ़ और इल्मिय्या दोनों के ह़वाले इकठ्ठे हो गए हैं वहां पहले मुसन्निफ़ का ह़वाला और कुछ फ़ासिला दे कर बैनल क़ौसैन इल्मिय्या की तख़्रीज लिखी गई है और तफ़रीक़ के लिये (उर्दू में) दोनों के रस्मुल ख़त़ (Font style) जुदा जुदा रखे हैं।

ह़त्तल मक्दूर कोशिश की गई है कि तमाम रिवायात व वाक़िआ़त के ह़वालाजात ज़िक्र कर दिये जाएं ता हम जहां तख़्रीज नहीं दी गई वहां या तो मुतअ़ल्लिक़ा किताब मुयस्सर न आ सकी या फिर वोह रिवायत हमें दीगर कुतुब में न मिल सकी। ऐसे चन्द मक़ामात पर मुसन्निफ़ की ज़िक्र कर्दा किताब का फ़क़त़ नाम लिख दिया गया है ताकि आयिन्दा किताब मुयस्सर आ जाने की सूरत में तफ़्सील लिख दी जाए और मतन व ह़वाशी की दोबारा फ़ॉरमेशन न करना पड़े।

जिन कुतुब से तख़्रीज की गई है आख़िर में उन तमाम की फ़ेहरिस्त "माख़ज़ो मराजेअ़" के नाम से बनाई गई है और इस फ़ेहरिस्त में मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नाम मअ़ सिने वफ़ात, मत़ाबेअ़ और सिने त़बाअ़त भी ज़िक्र कर दिये गए हैं।

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी और ए'राब का एहतिमाम

मुश्किल और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ के मआ़नी और जहां ज़रूरत मह़सूस हुई वहां तस्हील का इल्तिज़ाम किया गया है और जा बजा अल्फ़ाज़ पर ए'राब भी लगाए गए हैं। येह इन्तिहाई मेह़नत और वक़्त त़लब काम थे जिन के लिये अ़रबी, उर्दू और फ़ारसी लुग़ात से इस्तिफ़ादा किया गया है और आ'लाम या'नी अह़ादीस व वाक़िआ़त के राविंयों, किताबों के मुसन्निफ़ीन और मक़ामात वग़ैरा के नामों पर ए'राब के लिये लुग़ात के इलावा सीरत व तारीख़ की कुतुब की त़रफ़ मुराजअ़त की गई है।

क़ुरआनी आयात और तर्जमा

आयात में क़ुरआनी रस्मुल ख़त़ (ख़त़्ते उ़स्मानी) बर क़रार रखने के लिये तमाम आयात एक मख़्सूस क़ुरआनी सॉफ़्टवेर से (Corel Draw) के ज़रीए़ पेस्ट की गई हैं।

आयाते क़ुरआनिय्या और तर्जमा बत़ौरे साबिक़ आमने सामने लिखा गया है।

मतन में मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तर्जमा बर क़रार रखते हुवे कन्ज़ुल ईमान का ज़ौक़ रखने वालों के लिये हाशिये में तर्जमए कन्ज़ुल ईमान भी पेश किया गया है।

जहां मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़ुरआन की किसी आयत की त़रफ़ एक दो लफ़्ज़ लिख कर इशारा किया है ज़रूरतन हाशिये में वोह आयत और तर्जमए कन्ज़ुल ईमान दोनों लिखे गए हैं।

www.dawateislami.net

मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हाशिये में जो आयात तह़रीर फ़रमाईं या आयात मतन में पेश कीं और ह़वाला हाशिये में दिया तो इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से उसी के आगे बैनल क़ौसैन तर्जमए कन्ज़ुल ईमान का एहतिमाम किया गया है और आख़िर में इ़ल्मिय्या लिखा गया है।

जिन आयात का तर्जमा मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नहीं लिखा हाशिये में उन का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान से लिख दिया गया है।

आयात और तराजुम का तक़ाबुल कन्ज़ुल ईमान (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) से दो मरतबा किया गया है।

तत़बीक़ व तह़क़ीक़

मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बेशतर मक़ामात पर अ़रबी और फ़ारसी इ़बारात नक़्ल फ़रमाई हैं नीज़ कई मक़ामात पर अ़रबी और फ़ारसी में अश्आ़र भी ज़िक्र किये हैं इन तमाम की तत़बीक़ के लिये ह़त्तल मक़्दूर अस्ल कुतुब की त़रफ़ मुराजअ़त की गई है।

दौराने तख़रीज बा'ज़ मक़ामात पर आ'लाम और रिवायात के अल्फ़ाज़ में वाज़ेह़ इख़्तिलाफ़ व तफ़ावुत सामने आया जिस की तसह़ीह़ के लिये मुख़र्रिजीन (तख़रीज करने वाले) इस्लामी भाइयों ने काफ़ी मेह़नत की। एक एक मक़ाम को मुतअ़द्दिद कुतुब में देख कर कहीं तसह़ीह़ और कहीं तौज़ीह़ फ़रमाई और ह़वाशी में उन की वज़ाह़त भी कर दी है। बा'ज़ ह़वाशी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ! मसलन

जहां रावी के नामों में इख़्तिलाफ़ था वहां तस्ह़ीह़ कर के हाशिये में यूं वज़ाह़त की गई :

सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इस ह़दीस के रावी का नाम ह़ज़रते 'अबू बक्र सिद्दीक़' लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि '**मिश्कातुल मसाबीह़**' (जिस का मुसन्निफ़ ने ह़वाला दिया है) '**अबू दावूद**' और दीगर कुतुब में येह ह़दीस ह़ज़रते 'अबू बकरह' से मरवी है लिहाज़ा हम ने यहां ह़ज़रते 'अबू बक्र सिद्दीक़' (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) के बजाए ह़ज़रते 'अबू बकरह' (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) लिखा है। واللّٰه تعالٰى اعلم بالصواب । **इ़ल्मिय्या**

सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां इस त़रह़ लिखा है : उ़बैद बिन जरीह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि उस ने ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से कहा......इलख़, जब कि '**शमाइले तिर्मिज़ी**' में है :

"عن عبيد بن جريج انه قال لابن عمر رأيتك تلبس النعال......الخ"

इस के इ़लावा बुख़ारी, मुस्लिम, दलाइलुन्नुबुव्वह लिल बैहक़ी, सबलुल हुदा वर्रशाद और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में भी (अल्फ़ाज़े मुख़्तलिफ़ा के साथ इस रिवायत में) 'उ़बैद बिन जुरैज' और 'इब्ने उ़मर' का ज़िक्र है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां 'उ़बैद बिन जरीह़' और 'उ़मर' के बजाए 'उ़बैद बिन जुरैज' और 'इब्ने उ़मर' लिखा है। واللّٰه تعالٰى اعلم بالصواب । **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

शख़्स के नाम में तस्ह़ीह़ के बा'द ह़ाशिये की यूं तरकीब की गई :

सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां 'ज़ैद बिन मुसन्नह' लिखा है येह हमें नहीं मिला अलबत्ता 'السيرة النبوية لابن هشام، اسد الغابة, المستدرك على الصحيحين للحاكم' और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में 'ज़ैद बिन दसिन्ना' है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां 'ज़ैद बिन मुसन्ना' के बजाए 'ज़ैद बिन दसिन्ना' लिखा है। والله تعالٰى اعلم بالصواب । **इल्मिय्या**

कुतुबो रसाइल के नामों में तसह़ीह़ के बा'द यूं ह़ाशिया दिया गया :

सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इस रिसाले का नाम '**निहायतुल ए'जाज़ फ़ी दरायतुल ए'जाज़**' लिखा है जो कि किताबत की ग़लती मा'लूम होती है क्यूंकि हमारे पेशे नज़र दारे सादिर बैरूत (الطبعة الاولى، ١٤٢٤ھ-٢٠٠٤م) का नुस्ख़ा है जिस पर '**निहायतुल ईजाज़ फ़ी दरायतुल ए'जाज़**' लिखा है लिहाज़ा हम ने इसी के मुत़ाबिक़ तसह़ीह़ की है, والله تعالٰى اعلم । **इल्मिय्या**

सिन और ता'दाद में इख़्तिलाफ़ की वज़ाह़त इस त़रह़ की गई :

सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां 'सिने 585 हिजरी' लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि 'सिने 585 हिजरी' में तो अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत भी नहीं हुई थी, आप का सिने विलादत 'सिने 851 हिजरी' है, मवाहिबे लदुन्निय्या और हुज्जतुल्लाहि अ़लल आ़लमीन में लिखा है कि येह वाक़िआ़ 'सिने 885 हिजरी' में पेश आया लिहाज़ा हम ने येही सिन लिखा है। **इल्मिय्या**

अत्त़बक़ातुल कुब्रा लि इब्ने सा'द में है कि ''وهم تسعمائة'' या'नी वोह नव सो थे जब कि तारीख़े मदीना दिमश्क़ और दीगर में सात सो ही लिखा है, हो सकता है मुसन्निफ़ के पास अत्त़बक़ातुल कुब्रा लि इब्ने सा'द का जो नुस्ख़ा हो उस में وهم سبعمائة ही हो। والله تعالٰى اعلم **इल्मिय्या**

कमो बेश पिछली पौन सदी से सीरते रसूले अ़रबी की त़बाअ़त का सिलसिला जारी है इस त़वील तरीन अ़र्से में मुरूरे ज़माना के साथ त़बाअ़त व इशाअ़त के अन्दाज़ भी बदलते रहे लिहाज़ा इस त़रह़ की अग़लात़ का होना ख़ारिज अज़ इमकान नहीं, बहर ह़ाल इल्मिय्या के मदनी उ़लमा ने इन अग़लात़ को दूर करने की कोशिश की है।

मज़ीद कुछ काम येह भी हैं :

जहां नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे नामी या आप के ज़िक्र के साथ दुरूदे पाक लिखने से रह गया था वहां दुरूदे पाक लिखने का एहतिमाम किया गया है नीज़ सह़ाबए किराम और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के नामों के साथ भी तरद्दिया (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) और तर्ह़ीमा (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) लिखने की तरकीब की गई है।

www.dawateislami.net

अ़लामाते तरक़ीम (Punctuation Marks) या'नी कोमा, फ़ुल स्टोप, कोलोन, इन्वर्टेड कोमाज़ (Inverted Commas) वग़ैरा का ज़रूरतन एहतिमाम किया गया है।

किताब को ख़ूब सूरत बनाने के लिये हेडिंग्ज़ (Headings), क़ुरआनी आयात, बा'ज़ इबारात, नम्बरिंग और बोर्डर वग़ैरा की तरकीब डीज़ाइंग सोफ़्टवेर Corel Draw के ज़रीए़ की गई है।

दो मरतबा पूरी किताब की प्रुफ़ रीडिंग की गई है।

आख़िरी अ़र्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब पर शो'बए तख़रीज (अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या) के 6 इस्लामी भाइयों ने काम करने की सआ़दत ह़ासिल की बिल ख़ुसूस इब्ने दावूद मुह़म्मद इरफ़ान अ़त्तारी मदनी, इब्ने ह़नीफ़ मुह़म्मद सईद अ़त्तारी मदनी और अबू अ़तीक़ मुह़म्मद नवीद रज़ा अ़त्तारी मदनी ने ख़ूब कोशिश की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की सई क़बूल फ़रमा कर ज़रीअ़ए नजात बनाए। सच तो येह है कि येह तमाम काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ताकर्दा तौफ़ीक़ ही से मुमकिन हुवा, अगर तौफ़ीक़े इलाही शामिले ह़ाल न होती तो येह काम न हो पाता, उसी ने इस काम के अवसाफ़ और मह़ासिन सुझाए और अपने ह़बीब के सदक़े में इन्हें दिल में डाला लिहाज़ा इस काम की तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इनायत से हैं नीज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام बिल ख़ुसूस शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी ज़ियाई مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के फ़ैज़ान का सदक़ा है कि इस अन्दाज़ में येह काम हो पाया। और बा वुजूदे एह़तियात़ के जो ख़ामियां रह गईं उन्हें हमारी त़रफ़ से दानिस्ता कोताही पर मह़मूल किया जाए। क़ारेईन ख़ुसूसन उ़लमाए किराम دامت فیوضھم से गुज़ारिश है अगर कोई ख़ामी आप मह़सूस फ़रमाएं या अपनी क़ीमती आरा और तजावीज़ देना चाहें तो हमें तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ फ़रमाइये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी रिज़ा के लिये काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

शो'बए तख़रीज अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

www.dawateislami.net

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحیم

الحمد للّٰه ذی الجلال والاکرام والصلوٰة والسلام علٰی سیدنا ومولٰنا ووسیلتنا فی الدارین محمد خیر الانام وعلٰی اٰله واصحابه وازواجه وذریته وأتباعه الٰی یوم البعث والقیام .

امابعد : गवर्नमेन्ट कॉलेज लाहोर की प्रोफ़ेसरी से सुबुकदोश होने के कुछ अ़र्से बा'द फ़क़ीर तवक्कुली ने ह़ज़राते ख़्वाजगाने नक़्शबन्दिया قَدَّسَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَسْرَارَهُمْ के ह़ालात लिखने शुरूअ़ किये। पहले येह इरादा था कि इन के शुरूअ़ में चन्द सफ़ह़े वक़्फ़ ह़ालाते मुबारक हुज़ूर इमामुल औलिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कर दिये जाएंगे मगर जब वोह किताब इख़्तिताम के क़रीब पहुंची तो येह शौक़ पैदा हुवा कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सवानेह़े अक़्दस में एक मुस्तक़िल किताब लिखूं चुनान्चे, सीरत का एक निहायत मुख़्तसर सा ख़ाका ज़ेह्न नशीन कर के त़बअ़ आज़्माई करने लगा। इनायते इलाही और हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ानी मदद शामिले ह़ाल हुई, फिर क्या बयान करूं ! ह़ालात थे प्यारे प्यारे, जज़्बए शौक़ मेरे क़लम को कशां कशां कहीं से कहीं ले गया और ग़ायते इख़्तिसार के बा वुजूद येह किताब तय्यार हो गई जो क़ारेईने किराम के सामने है।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरत से वाक़िफ़ होना हर एक मुसलमान पर फ़र्ज़ है क्यूंकि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़स्बे इरशादे इलाही मुसलमानों के लिये वाजिबुत्तक़्लीद नुमूना हैं, इसी वासित़े हुज़ूर के अक़्वालो अफ़्आ़ल, अख़्लाक़ व आ़दात, ह़रकातो सकनात, वज़्ओ़ क़त़्अ़, रफ़्तार व गुफ़्तार और त़रीक़े मुआ़शरत वग़ैरा सब के सब ब त़रीक़े अस्नाद निहायत सिह़्ह़त के साथ मह़फ़ूज़ हैं ताकि वोह क़ियामत तक आप के नाम लेवाओं के लिये दस्तूरुल अ़मल बनें।

इसी दस्तूरुल अ़मल में रज़ाए मौला करीम جَلَّ شَانُهٗ और मुसलमानों की तरक़्क़ी का राज़ मुज़्मिर है। मुसलमान अगर अग़्यार की ग़ुलामी से आज़ादी चाहते हैं तो वोह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी इख़्तियार करें और जमीअ़ उमूर में आप के इरशादात की ता'मील, आप के त़र्ज़े अ़मल का इत्तिबाअ़, आप के क़वानीन की पाबन्दी, आप के अत़्वारो आ़दात की पैरवी और आप की ज़ाते मम्बउ़ल बरकात की इन्तिहाई मह़ब्बत और ता'ज़ीमो तौक़ीर मल्ह़ूज़ रखें। हुज़ूर بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّیْ तो यहां तक फ़रमा रहे हैं कि "तुम में से कोई मोमिन नहीं बन सकता, जब तक कि मैं उस की नज़र में उस की जान से भी ज़ियादा मह़बूब न बन जाऊं।" कामिल व ह़क़ीक़ी ईमान इसी का नाम है, ऐसे ही मोमिनों के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ का मुज़्दा सुनाया है, अ़रब को देखिये पहले उन की मज़्हबी, अख़्लाक़ी, सियासी और तमद्दुनी

www.dawateislami.net

ह़ालत कैसी गिरी हुई और नागुफ़्ताबेह थी मगर जब वोह दर्सगाहे मुह़म्मदी से इस ह़क़ीक़त की सनद ले कर निकले, तो क्या क्या बन गए, मुआ़रिफ़े रब्बानी के आ़रिफ़ और अस्रारे फ़ुरक़ानी के माहिर बन गए, शब बेदार आ़बिद बन गए, फ़ातेह़े आ़लम बन गए, मुबल्लिग़े इस्लाम बन गए, मुअ़ल्लिमे अख़्लाक़ बन गए, उ़लूमो फ़ुनून के मूजिद बन गए, ग़रज़ हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ता'लीमो सोह़बत ने उन की काया ही पलट दी, दुन्या उन की इस बे नज़ीर तरक़्क़ी पर ह़ैरान थी और है। चुनान्चे, जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ारस में ए'लाए कलिमतुल्लाह के लिये भेजा तो यज़्दगर्द शाहे फ़ारस ने अपने सिपह सालार रुस्तुम बिन हुरमुज़ को मुक़ाबले के लिये रवाना किया। रुस्तुम मज़्कूर ने ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक तहदीद आमेज़ नामा में यूं लिखा :

ز شیر شتر خوردن و سو سمسار　　عرب را بجائے رسید است کار

کہ تاجِ کیاں را کند آرزو　　تفو بر تو اے چرخ گرداں تفو (शाहनामा फ़िरदौसी)

ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब में रुस्तुम को दा'वते इस्लाम दी मगर वोह रू बराह न हुवा। मुक़ाबले में ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के हाथ से मारा गया। काश ! ज़मानए मौजूदा के मुसलमान भी उस्वए ह़सनए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पूरे आ़मिल बन कर क़ुरूने ऊला की बरकात का मुशाहदा करें।

इस पुर आशूब ज़माने में मुल्के हिन्द में कई फ़ितने बरपा हैं जो सब के सब सिराते़ मुस्तक़ीम या'नी मस्लके अहले सुन्नत व जमाअ़त से मुन्ह़रिफ़ हैं, उर्दू में सीरत पर जो चन्द किताबें शाएअ़ हुई हैं उन में से शायद ही कोई बहमए वुजूह अहले सुन्नत व जमाअ़त के मे'यार पर पूरी उतरे, फ़क़ीर ने ब तौफ़ीक़े इलाही इस किताब में मस्लके अहले सुन्नत की पाबन्दी का पूरा इल्तिज़ाम रखा है और मुस्तनद और मो'तबर रिवायात मअ़ ह़वाला दर्ज की हैं। आयात व अह़ादीस वग़ैरा का तर्जमा बिल उ़मूम लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ दिया गया है और इ़बारत आराई का चन्दां लिह़ाज़ नहीं रखा गया। क़ारिईने किराम असनाए मुत़ालआ़ में जहां किसी सह़ाबी या और बुज़ुर्ग का नाम पाएं, رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या और मुनासिब फ़क़रा इस्ति'माल करें।

जब इस किताब का मुसव्वदा तय्यार हो चुका तो इस की त़ब्अ़ व इशाअ़त का मरह़ला पेश आया, मैं ने अपने बरादरे अ़ज़ीज़ आ़ली जनाब फ़ैज़ मआब चौधरी मुह़म्मद सुलैमान एडवोकेट हाईकोर्ट पंजाब से तज़्किरा किया। उन्हों ने मेरी सदा पर ख़ुशी से लब्बैक कहा, मुझे उम्मीदे वासिक़ है कि येह कारनामा जनाब चौधरी साह़िब मौसूफ़ के आ'माले ह़सना में इम्तियाज़ी ह़ैसिय्यत रखेगा। **अल्लाह** तआ़ला उन को दुन्या व आख़िरत में आबरू से रखे और उन के साह़िबज़ादों को त़वीलुल उ़म्र करे। بجاہ حبیبہٖ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

आग़ाज़े किताब से पहले येह मुनासिब समझा गया कि मुल्के अ़रब का जोग्राफ़िया और तारीख़े क़दीम पेश की जाए। जिन से एक ह़द्द तक मज़ामीने सीरत का भी तअ़ल्लुक़ है। सफ़रे आख़िरत दरपेश है अगर मोहलत मिल गई तो दूसरे एडीशन में नक़्शए अ़रब और बा'ज़ दीगर मज़ामीन के इज़ाफ़े का इरादा है। واللّٰه هو الموفّق والمعين

21 मुह़र्रमुल ह़राम सिने 1357 हिजरी
मुत़ाबिक़ 24 मार्च सिने 1938 ईसवी

मुह़म्मद नूर बख़्श तवक्कुली
बानिये मद्रसा तवक्कुलिया, चक क़ाज़ियां, ज़िल्अ़ लुधियाना, लुधियाना, नूर मन्ज़िल

दीबाचा त़ब्ए़ दुवुम

नक़्शए अ़रब और दीगर मज़ामीन से मुतअ़ल्लिक़ दूसरे एड़ीशन के दीबाचे में मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

"दीबाचए सीरत के अख़ीर में दूसरे एड़ीशन में नक़्शए अ़रब और बा'ज़ दीगर मज़ामीन के इज़ाफ़े का इरादा ज़ाहिर किया गया था, बिना बरीं नज़्रे सानी में तवल्लुद शरीफ़ की ख़ुशी का समरा, ह़यातुन्नबी, आसारे कुब्रा, ह़दीस ला तुशद्दुर्रिह़ाल की बह़्स, ह़दीसे तवस्सुल बिल अ़ब्बास की बह़्स, अ़रसाते क़ियामत में शफ़ाअ़त व तवस्सुल वग़ैरा मज़ामीन का इज़ाफ़ा कर दिया गया है और बा'ज़ दीगर मक़ामात पर भी क़दरे तक़्दीम व ताख़ीर और रद्दो बदल अ़मल में आया है जो मुत़ालए़ से मा'लूम होगा, रहा नक़्शए अ़रब, सो इस के लिये वक़्त दरकार है और फ़क़ीर इस वक़्त मराकिज़े इल्मो तहज़ीब से दूर अपने गाऊं में बैठा है लिहाज़ा फ़िल ह़ाल बजाए नक़्शे के मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व रौज़ए मुनव्वरा का फ़ोटो शुरूअ़ में मन्ज़ुम कर दिया गया है।"

मज़ीद आख़िर में फ़रमाते हैं :

इस किताब की तक्मील के लिये अभी कई और उमूर के इज़ाफ़े की ज़रूरत है जिन पर ब शर्ते ज़िन्दगी तीसरे एडीशन में ग़ौर किया जाएगा अब तो बड़े इम्तिह़ान की फ़िक्र दामनगीर है अपनी बे बिज़ाअ़ती व बे ए'तिदालियां पेशे नज़र हैं

بجائے کہ دہشت خورند انبیاء　　تو عذرِ گنہ را چہ داری بیا

मगर जब ख़याल आता है कि मुआ़मला तो आख़िर ख़ुदा व रसूल से है और वोह दोनों करीम हैं तो ढारस बंध जाती है और ज़बान यूं गोया हो जाती है।

یارب تو کریمی و رسولِ تو کریم　　صد شکر کہ ہستیم میانِ دو کریم

जुमुअ़तुल वदाअ़, 29 रमज़ानुल मुबारक सिने 1364 हिजरी
मुत़ाबिक़ 7 सितम्बर सिने 1945 ईसवी

मुह़म्मद नूर बख़्श तवक्कुली عُفِیَ عَنْہُ

www.dawateislami.net

पहला मुक़द्दमा

मुल्के अ़रब का जोग्राफ़िया

मुल्के अ़रब बर्रे आ'ज़म एशिया के जुनूब मग़रिब में वाक़ेअ़ है चूंकि इस को तीन त़रफ़ से तो समन्दर ने और चौथी त़रफ़ से दरियाए फ़ुरात ने जज़ीरे की त़रह़ घेरा हुवा है इस लिये इसे जज़ीरए अ़रब कहते हैं। इस के शिमाल में बिलादे शाम व इराक़ हैं। मग़रिब में बह़्रे अह़्मर या'नी बुहैर कुल्ज़ुम, जुनूब में बह़्रे हिन्द और मशरिक़ में ख़लीजे उ़मान और ख़लीजे फ़ारिस हैं। इस का तूल शिमालन जुनूबन पन्दरह सो मील के क़रीब और औसत़न अ़र्ज़ शरक़न ग़ुरबन आठ सो मील है। इस का रक़्बा एक लाख बीस हज़ार मरबअ़ मील या'नी बर्रे आ'ज़म यूरोप की एक तिहाई के क़रीब है।

उ़लमाए जोग्राफ़िया ने बर बिनाए त़बीअ़ते अर्ज़ी[1] इस मुल्क को आठ हिस्सों में तक़्सीम किया है जिन का बयान ब त़रीक़े इख़्तिसार नीचे लिखा जाता है :

﴾1﴿ इक़्लीम ह़िजाज़

जो मग़रिब में बह़्रे अह़्मर के साह़िल के क़रीब वाक़ेअ़ है। ह़िजाज़ से मुल्ह़िक़ साह़िले बह़्र को जो नशीब है "तिहामा" या "ग़ौर" कहते हैं और ह़िजाज़ से मशरिक़ को जो ह़िस्सए मुल्क है वोह नज्द (ज़मीने मुर-तफ़अ़) कहलाता है। ह़िजाज़ चूंकि नज्द व तिहामा के दरमियान ह़ाजिज़ व ह़ाइल है इस लिये इसी नाम से मौसूम है। ह़िजाज़ के मश्हूर शहरों में मक्कए मुशर्रफ़ा है जो मशरिक़ में जबले अबू क़ुबैस और मग़रिब में जबले क़ुअ़य क़िआ़न के दरमियान वाक़ेअ़ है। इस शहरे मुबारक में नौशीरवां की तख़्त नशीनी के बयालीसवें साल "साले फ़ील" में रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं तारीख़ को सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैदा हुवे। ख़ानए का'बा (बैतुल्लाह शरीफ़) इसी शहर में है। मनासिके ह़ज के मश्हूर मक़ामात में से सफ़ा और मरवह तो बैतुल्लाह शरीफ़ के ऐन क़रीब ही हैं, मिना तीन मील मशरिक़ को है, मिना से इसी क़दर फ़ासिले पर मशरिक़ की त़रफ़ मुज़्दलिफ़ा और मुज़्दलिफ़ा से मशरिक़ को इतने ही मसाफ़त पर अ़रफ़ात है।

---

1 ......ज़मीनी ख़स्लतों की बिना पर।

www.dawateislami.net

मक्कए मुशर्रफ़ा से शिमाल की त़रफ़ क़रीबन दो सो मील के फ़ासिले पर मदीनए मुनव्वरा है जहां हुज़ूर सरवरे काइनात عَلَیْہِ التَّحِیَّۃُ وَالصَّلٰوۃ का मज़ारे मुक़द्दस वाक़ेअ़ है। मदीनए मुनव्वरा से क़रीबन तीन मील शिमाल को जबले उहुद है जहां ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मज़ारे मुबारक है।

मक्कए मुशर्रफ़ा का बन्दरगाह जद्दा है जो 34 मील के फ़ासिले पर बुह़ैरए क़ुल्ज़ुम के साह़िल पर वाक़ेअ़ है। मदीनए मुनव्वरा का बन्दरगाह यम्बूअ़ है जो मदीना से 73 मील के फ़ासिले पर बुह़ैरए क़ुल्ज़ुम के साह़िल पर है। ह़िजाज़ रेल्वे लाइन सिने 1908 ईसवी में दिमश्क़ से मदीनए मुनव्वरा तक तय्यार हो गई थी, मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुशर्रफ़ा तक इस वक़्त तक तय्यार नहीं हुई।

इस इक़्लीम में ह़रमैने शरीफ़ैन के इ़लावा बद्र, उहुद, ख़ैबर, फ़िदक, हुनैन, त़ाइफ़, तबूक और गदीरे खुम्मु इस्लामी तारीख़ में बहुत मशहूर हैं। ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام का शहर मदयन तबूक के मुह़ाज़ में साह़िले बह़्रे अह़्मर पर वाक़ेअ़ है। ह़जर में, जो वादियुल क़ुरा में है आसारे समूद अब तक पाए जाते हैं। त़ाइफ़ अहले मक्कए मुशर्रफ़ा का मसीफ़ है[1] यहां के मेवे मशहूर हैं।

﴾2﴿.....इक़्लीमे यमन

जो ह़िजाज़ के जुनूब में बह़्रे अह़्मर और बह़्रे हिन्द के साह़िल से मुत्तसिल वाक़ेअ़ है। इस की युम्न व बरकत या का'बतुल्लाह से जानिबे यमीन होने के सबब से इस नाम से मौसूम है।

इस इक़्लीम में नजरान, सन्आ़ और सबा व मारिब मशहूर तारीख़ी मक़ामात हैं। मख़ा, ह़ुदीदा और ज़ुबैद तिजारती ह़ैसिय्यत रखते हैं। सन्आ़ दारुस्सल्त़नत है जो अ़दन से 68 मील है। कनीसा क़लीस इसी शहर में था। इस का बन्दरगाह ह़ुदीदा है जहां से बुन[2] और चमड़े बैरूनी मुमालिक को जाते हैं। सन्आ़ से चार दिन की मसाफ़त पर सबा व मारिब के आसार पाए जाते हैं जिन का ज़िक्र क़ुरआने करीम में आया है।

नजरान एक बड़ा शहर था जिस के मुतअ़ल्लिक़ सत्तर गाऊं थे, येह शहर मुल्के अ़रब में ईसाइय्यत का मर्कज़ था यहां एक बड़ा गिरजा था जिसे बनू अ़ब्दुल मदान बिन अद्दय्यान ह़ारिसी ने का'बतुल्लाह के मुक़ाबले में बनाया था। वोह का'बातुल्लाह की त़रह़ इस की ता'ज़ीम करते थे

1.....मसीफ़ : गर्मियां गुज़ारने का मक़ाम या'नी अहले मक्का गर्मियों में त़ाइफ़ चले जाते।
2.....एक बीज जिसे भून कर खाते और चाए की त़रह़ जोश दे कर पीते हैं।

www.dawateislami.net

और इसे का'बए नजरान कहा करते थे इसी गिरजा के बड़े बड़े पादरी हिजरत के बारहवें साल हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे थे और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को मुबाहला[1] की दा'वत दी थी। नजरान ही के एक गाऊं में क़िस्सए अस्ह़ाबे उख़दूद वुक़ूअ़ में आया था जिस का तज़्किरा **अल्लाह** तआ़ला के कलामे पाक में पाया जाता है।

﴾3﴿ इक़्लीमे ह़ज़्र मौत

जो यमन के मशरिक़ में बह़्रे हिन्द के साह़िल से मुत्तसिल वाक़ेअ़ है इस के मश्हूर शहर तरीम और शिबाम हैं और शिबाम दारुस्सल्त़नत है इन के इ़लावा मिरबात़, ज़फ़ार, शिह़्र और मुकिल्ला साह़िल पर वाक़ेअ़ हैं। मुकिल्ला से लोबान बैरूनी मुमालिक को जाता है।

﴾4﴿ इक़्लीमे मह्‌रह

जो ह़ज़्र मौत के मशरिक़ में वाक़ेअ़ है यहां के ऊंट मश्हूर हैं जिन्हें क़बीलए मह्‌रह की त़रफ़ निस्बत कर के इबिल मह्‌रय्या बोलते हैं यहां के बाशिन्दों की ग़िज़ा उ़मूमन मछली है।

﴾5﴿ इक़्लीमे उ़मान

जो मह्‌रह से मुत्तसिल बह़्रे हिन्द व बह़्रे उ़मान के साह़िल से मुल्ह़िक़ है। इस के मश्हूर शहरों में से मस्क़त़ और सुह़ार हैं यहां के बाशिन्दे उ़मूमन ख़वारिजे उबाज़िय्या हैं।[2]

﴾6﴿ इक़्लीमुल अह़्सा

जिसे बह़्रैन भी कहते हैं क्यूंकि येह बह़्रे फ़ारिस व बह़्रे उ़मान के साह़िल पर वाक़ेअ़ है। इस त़रफ़ के जज़ाइर में मोतियों के मग़ास[3] हैं इस के मश्हूर शहरों में से क़त़ीफ़, हुफ़ूफ़ और हजर हैं यहां के बाशिन्दे उ़मूमन राफ़ज़ी तबर्राई हैं।

---

1 ......या'नी किसी मुतनाज़िआ़ फ़ीह मस्अ़ले को ख़ुदा पर छोड़ते हुवे झूटे के लिये बरबादी की दुआ़ करना।

2 ......ख़वारिज ख़ारिजी की जम्अ़ है येह वोह लोग हैं जो ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से बुग़्ज़ रखते हैं ख़ारिजियों के बारह फ़िर्क़े हैं जिन में से एक उबाज़िय्या कहलाता है बा'ज़ ने इबाज़िय्या भी लिखा है और इस की भी मज़ीद चार शाख़ें बनती हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन उबाज़ के साथी उबाज़ी कहलाते हैं बा'ज़ का कहना है कि उबाज़ एक गाऊं का नाम है येह लोग इसी की त़रफ़ मन्सूब हैं। واللّٰه تعالٰى اعلم (मज़ाहिबे इस्लाम, स. 637)। **इल्मिय्या**

3 ......या'नी समन्दर में मोती पाए जाने की मख़्सूस जगहें।

www.dawateislami.net

﴾7﴿ इक्लीमे नज्द

जो हिजाज़ के मशरिक़ और सहराए शाम के जुनूब में है। इसी इक्लीम की निस्बत ह़दीस शरीफ़ में आया है कि यहां से शैत़ान का सींग निकलेगा,[1] येह पेशन गोई मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब और फ़िर्क़ए वहाबिय्या के ज़ुहूर से पूरी हो गई। इसी इक्लीम के शिमाली हिस्से में ह़र्बे दाहिस और ह़र्बे बसूस वुक़ूअ़ में आईं जिन में से हर एक चालीस साल तक जारी रही। वहाबिय्या का दारुस्सल्त़नत रियाज़ है।

﴾8﴿ इक्लीम अल अह़क़ाफ़

जो उ़मान व अह़सा व नज्द व ह़ज़्र मौत व मह्रह के दरमियान में एक वसीअ़ बे आबाद सह़रा है, इस का ह़ाल मा'लूम नहीं। ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام की क़ब्र मुबारक ह़ज़्र मौत के मुत्तसिल अह़क़ाफ़ ही में है।

पैदावार

यमन वगै़रा में बुन[2] के पेड़ और समगे़ अ़रबी[3] के दरख़्त (अक़ाक़िया)[4] होते हैं ह़ज़्र मौत में नबाताते इ़त्रिय्या और मश्मूमात[5] और ऊ़दे क़ाक़ुली[6] होता है। खजूर, कपास, मक्कई और चावल यमन में ख़ुसूसिय्यत से होते हैं। सना[7] जुनूबी ह़िजाज़ और तिहामा में होती है। बलसान मक्कए मुशर्रफ़ा के क़रीब और ह़िना[8] मग़रिबी साह़िल पर पाई जाती है। नज्द के घोड़े और मह्रह के ऊंट मश्हूर हैं। गधे, दुम्बे, बकरियां और मवेशी कसरत से हैं। अ़रब में वुह़ूश में से शुतर मुर्ग़, चीता, पलंग[9], सियाहगोश[10] और कफ़्तार[11] हैं।

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الاستسقاء، باب ما قیل فی الزلازل و الآیات، الحدیث:۱۰۳۷، ج۱، ص۳۵۴ علمیہ۔
2 ......एक क़िस्म का बीज जिसे भून कर खाते और चाए की त़रह़ जोश दे कर पीते हैं।
3 ......या'नी कीकर के गोंद।
4 ......अक़ाक़िया एक दवा है।
5 ......मुश्क।
6 ......एक बूटी।
7 ......एक पौदा जिस की पत्ती दस्त आवर होती है।
8 ......मेहंदी।
9 ......चीते की त़रह़ का एक दरिन्दा।
10 ......जंगली बिल्ला।
11 ......एक दरिन्दा।

www.dawateislami.net

दूसरा मुक़द्दमा

अ़रब की तारीख़े क़दीम पर ताइराना नज़र

ज़मानए क़दीम में तूफ़ाने नूह़ के बा'द जज़ीरए अ़रब में साम बिन नूह़ की नस्ल के लोग आबाद थे। चुनान्चे, बनू या'रुब बिन क़ह़्त़ान बिन आ़मिर बिन शालिख़ बिन अरफ़ख़्शद बिन साम यमन में बसते थे। बनू जुरहुम बिन क़ह़्त़ान और बनू इमलीक़ बिन लौज़ बिन साम ह़िजाज़ में रहते थे। बनू त़सम बिन लूज़ और बनू ज़दीस बिन आ़मिर बिन इरम बिन साम यमामा में बह़्रैन तक फैले हुवे थे। क़ौमे आ़द बिन अ़वज़ बिन इरम शिह़्रो उ़मान व ह़ज़्र मौत के माबैन अह़क़ाफ़ में आबाद थी इस क़ौम की त़रफ़ **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा था। क़ौमे समूद बिन जासर बिन इरम ह़िजाज़ व शाम के दरमियान ह़जर में आबाद थी। इन की त़रफ़ ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام भेजे गए थे।

एक ज़माना गुज़रने पर आ़द व समूद व जदीस व अ़मालीक़ व जुरहुम फ़ना हो गए। इस वासित़े इन को अ़रब बाइदा[1] बोलते हैं इन में से जो बाक़ी रहे वोह ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में मिल जुल गए। ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَيْهِ السَّلَام की शादी क़बीलए जुरहुम में हुई थी इस वासित़े इन की अवलाद को अ़रब मुस्ता'रिबा कहते हैं[2] और बनू क़ह़्त़ान को अ़रब आ़रिबा या'नी अस्ली अ़रब बोलते हैं। अल क़िस्सा मज़्कूरए बाला तबाही व इख़्तिलात़ के बा'द अ़रब में दो बड़े क़बीले रह गए। बनू क़ह़्त़ान और बनू अ़दनान (बनू इस्माई़ल) इन दोनों की बहुत सी शाख़ें थीं। अब अ़रब का बड़ा ह़िस्सा ख़ानदाने इस्माई़ल से है और ख़ुद ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इसी ख़ानदान से हैं।

क़दीमुल अय्याम से अ़रबों की तिजारत मिस्र व शाम के साथ थी। चुनान्चे, जब भाइयों ने ह़ज़रते युसूफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कूंएं में गिरा दिया तो इन्हों ने देखा कि गिलआ़द से इस्माई़लियों का क़ाफ़िला आ रहा है। जिन के ऊंटों पर अदविय्या[3] व बलसान[4] व मुर[5] लदे हुवे हैं और वोह मिस्र को जा रहे हैं।[6] येह चीज़ें लाशों के मुअ़त्त़र बनाने में मिस्रियों के काम आया करती थीं। इस के मुद्दतों बा'द वोह अहाली सुवर[7] के साथ मवेशियों और अदविय्या और बेश बहा पथ्थरों और सोने की तिजारत करते देखे जाते हैं।[8]

1……हलाक होने वाली क़ौम। 2……या'नी अ़रब में आ कर आबाद होने वाले ग़ैर अ़रबी। 3……दवा की जम्अ़ है। 4……एक ख़ास क़िस्म के दरख़्त के पत्ते जिन से दवा ह़ासिल की जाती है। 5……एक दवा। 6……किताब पैदाइश, बाब 37, आयह 25। 7……शाम के साह़िली शहर सुवर के बाशिन्दों। 8……ह़ज़्क़ील बाब, 27 आयह 20 ता 22।

www.dawateislami.net

क़रूने माज़िय्या[1] में अ़रबों पर बहुत से बैरूनी ह़म्ले हुवे मगर वोह किसी के मा तह़्त न रहे, चुनान्चे मिस्री फ़ातेह़ शीशक उन को ज़ेर न कर सका। क़ीरूशे फ़ारिसी (मुतवफ़्फ़ा सिने 529 क़ब्ले मसीह़) ने अ़रब के शिमाली ह़िस्से के बा'ज़ अ़रबों को मग़्लूब किया मगर मुअर्रिख़े हीरु दौतस[2] (मुतवफ़्फ़ा सिने 424 क़ब्ले मसीह़) हमें यक़ीन दिलाता है कि दारे इश्तास्प (जिस ने सल्त़नते फ़ारिस की तौसीअ़ की थी) के अ़हद में अ़रब ख़िराज से बरी थे। बुख़्ते नस्सर बाबिली ने इन पर ह़म्ला किया और इन के बहुत से शहर फ़त्ह़ किये मगर ग़नीमत ले कर अपने वत़न को चला आया।[3] सिकन्दरे आ'ज़म का जा नशीन अन्त़ीगौनस[4] (मुतवफ़्फ़ा सिने 301 क़ब्ले मसीह़) इन पर ह़म्ला आवर हुवा, मगर उसे इन के साथ इन ही की शराइत़ पर सुल्ह़ करनी पड़ी। रूमी फ़ातेह़ पोम्पे (मौलूद सिने 106 क़ब्ले मसीह़) ने मुल्के अ़रब के एक ह़िस्से को ताख़्तो ताराज[5] किया मगर उस की फ़ौज पस्पा हुई तो अ़रबों ने शिद्दत से तआ़क़ुब किया और वोह कुछ अ़र्से तक शाम में रूमियों को तंग करते रहे, विलादते मसीह़ से तक़रीबन 23 साल पहले रूमी सिपह सालार अलयूस गालिस बुह़ैरए क़ुल्ज़ुम तक आया। उस ने चाहा कि अ़रब को फ़त्ह़ कर ले मगर नाकाम रहा। त़राजान रूमी ने सिने 120 ईसवी के क़रीब इन पर ह़म्ला किया और शहरे ह़जर का मुह़ासरा कर लिया मगर रा'द व ज़ाला व गिर्दबाद[6] और मख्खियों के झुन्ड के सबब से उस का लश्कर कामयाब न हुवा। जब वोह ह़म्ला करते तो येही आफ़तें पेश आतीं। सिने 200 ईसवी के क़रीब सेवारूस रूमी ने लश्करे कसीर और सामाने ह़र्ब के साथ शहरे ह़जर का दोबारा मुह़ासरा किया मगर लश्कर व शाह के दरमियान एक बे वज्ह तनाज़ुअ़ ने शाह को मुह़ासरा उठा लेने पर मजबूर कर दिया।[7]

शाहे फ़ारिस शापूर ज़ुल अक्ताफ़ ने अ़रब पर ह़म्ला किया तो बह़रैन व हजर व यमामा में कुश्त व ख़ून करता हुवा मदीना तक पहुंच गया। सरदाराने अ़रब जो गिरिफ़्तार हो कर आते थे वोह इन के मूंढे निकाल देता था इस लिये इसे ज़ुल अक्ताफ़ कहते थे।[8] मगर इसी बादशाह ने सिने 360 ईसवी के क़रीब तकरीत पर जो ख़ुद मुख़्तार अ़रबों का एक मज़्बूत़ क़ल्अ़ा था ह़म्ला किया तो नाकाम रहा।[9]

---

1 ......गुज़श्ता ज़मानों। 2 .....Herodotus

3 ......तारीख़े कामिल इब्ने असीर ।(الكامل فی التاريخ،ذكر غزو بختنصر العرب، ج ١، ص ٢٠٦-٢٠٧) (इल्मिय्या)

4 .....Antigonus 5 ......तह्स नह्स 6 ......बिजली की कड़क, ओलों और तुन्दो तेज़ हवाओं। 7 ......लुग़ते बाइबल मुसन्निफ़ हू पादरी जान बरून मत़्बूआ न्यूयोर्क सिने 1833 ईसवी तह़्त लफ़्ज़े अ़रब। 8 ......तारीख़े कामिल इब्ने असीर ज़िक्र शाफ़ूर ज़ुल अक्ताफ़। (الكامل فی التاريخ،ذكر ملك ابنه سابور ذی الاكتاف،ج ١، ص ٣٠١-٣٠٢) (इल्मिय्या)

9 ....تنزل وزوال رومۃ الکبریٰ مصنفہ ایڈورڈ گبن در چہار جلد، جلداوّل ص ۵۲۵۔

www.dawateislami.net

दसवीं सदी क़ब्ले मसीह़ में यमन में मुलूके ह़िमयर बिन सबा में से एक फ़ासिक़ ख़बीस बादशाह मालिक नाम था वोह बाकिरा औ़रतों को बुला कर उन की आबरू रेज़ी करता था चुनान्चे, उस ने अपनी चचाज़ाद बहन बिल्क़ीस से भी येही इरादा ज़ाहिर किया। बिल्क़ीस ने कहा कि मेरे मह़ल में आ जाना और उस के क़त्ल करने के लिये अपने अक़रबा में से दो आदमी मुक़र्रर किये। जब वोह मह़ल में दाख़िल हुवा तो उन आदमियों ने उसे क़त्ल कर डाला। अहले यमन ने इसी सबब से बिल्क़ीस को अपना हुक्मरान बनाया वरना औ़रत की हुकूमत को पसन्द न करत थे। येह वोही बिल्क़ीस है जिस का क़िस्सा कुरआने मजीद में मज़्कूर है।(1)

बिल्क़ीस के बा'द ख़ानदाने ह़िमयर के बहुत से बादशाह यके बा'दे दीगरे तख़्ते यमन पर मुतमक्किन हुवे। जब अहले यमन ने ख़ुदा तआ़ला की ना फ़रमानी की तो उन पर सैले अ़रिम(2) भेजा गया जिस से उन के बाग़ात वग़ैरा बरबाद हो गए। जैसा कि कुरआने मजीद में वारिद है वोह रिज़्क़ व मआ़श की तलाश में मुख़्तलिफ़ अत़राफ़ को हिजरत कर के चले गए चुनान्चे, बनू लख़्म बिन अ़दी की एक जमाअ़त ख़ुरासान की त़रफ़ निकली उन्हों ने दरयाए फ़ुरात़ के क़रीब शहरे ह़ीरा की बिना डाली जो बा'द में इसी ख़ानदान का दारुस्सल्त़नत रहा। मुलूक बनू लख़्मिया व मनाज़िरह सिने 634 ईसवी तक अकासिरह(3) की त़रफ़ से इराक़ पर गवर्नर होते रहे इस के बा'द इस्लाम का तसल्लुत़ हो गया।

बनू लख़्म की त़रह़ बनू क़ह़त़ान की एक जमाअ़त हिजरत कर के दिमश्क़ के मुत्तसिल एक चश्मे पर जिसे ग़स्सान कहते थे जा उतरी। वोह आख़िरे कार शाम के हुक्मरान बन गए। मुलूके ग़स्सान जिन्हें मुअर्रिख़ीने अ़रब, अ़रबे मुतनस्सिरह(4) से ता'बीर करते हैं क़ियासरहे रूम(5) की त़रफ़ से क़रीबन सिने 200 ईसवी से सिने 236 ईसवी तक मुल्के शाम में हुक्मरानी करते रहे। इस ख़ानदान का आख़िरी बादशाह जबला बिन ऐहम था जो भाग कर क़ैसर के हां चला गया था उस के बा'द येह मुल्क ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हद में मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया।

बनू क़ह़त़ान में से क़बीलए अज़्द के दो भाई औस व ख़ज़रज मदीने में आ बसे। अन्सार इन ही की अवलाद में से हैं। क़ह़त़ानियों में से बा'ज़े अन्दरूने जज़ीरए अ़रब में चले गए। चुनान्चे, मुलूके किन्दा ने नज्द में अपनी सल्त़नत क़ाइम की इन के इलावा अ़रब में और मुतफ़र्रिक़ मुलूक थे जिन के ज़िक्र की यहां चन्द आं ज़रूरत नहीं।

---

1 ......الكامل فى التاريخ،ذكرما جرى له مع بلقيس،ج١،ص١٧٧-١٧٨ علميه۔

2 ......तबाह कुन सैलाब। 3 ......किस्रा की जम्अ़, किस्रा या'नी ईरान के बादशाह। 4 ......या'नी मदद के लिये कोशां रहने वाले अ़रबी। 5 ......क़ैसर की जम्अ़ क़ैसर या'नी रूम के बादशाह।

www.dawateislami.net

सैले अ़रिम[1] के बा'द जो लोग यमन में रह गए इन पर बनू क़ह्त़ान ब दस्तूर हुक्मरानी करते रहे इन बादशाहों में से एक का नाम शमर बिन अफ़रीक़ैस बिन अबरहा था। कहते हैं कि शमर मज़्कूर बड़ा आ़ली हिम्मत था उस ने इ़राक़ पर लश्कर कशी की और उसे फ़त्ह़ कर के चीन की त़रफ़ रवाना हुवा रास्ते में जब वोह सुग़्द में पहुंचा तो उस नवाह़ के बाशिन्दे एक मक़ाम में पनाह गुज़ीन हो गए। शमर ने चारों त़रफ़ से मुह़ासरा कर के उन को क़त्ल किया और उस मक़ाम को खुदवा कर वीरान कर दिया इस वासित़े उस मक़ाम को शमरकन्द कहने लगे, जिसे अ़रब मा'रुब कर के समर क़न्द बोलते थे। शमर वहां से चीन की त़रफ़ बढ़ा मगर वोह और उस की फ़ौज प्यास से हलाक हो गई।[2]

तबाबिअ़[3] यमन[4] में से तुब्बान अस्अ़द अबू करिब था। वोह बिलादे मशरिक़ को फ़त्ह़ कर के वापस आता हुवा मदीने में उतरा, जहां वोह जाता हुवा अपने बेटे को छोड़ गया था मगर उस को किसी ने ना गहां क़त्ल कर दिया था इस लिये तुब्बअ़ मज़्कूरा ने मदीना और अहले मदीना को तबाह करना चाहा मगर यहूदे बनी क़ुरैज़ा से दो आ़लिमों ने तुब्बअ़ को मन्अ़ किया। उस ने वज्ह दरयाफ़्त की तो आ़लिमों ने कहा कि आख़िर ज़माने में क़ुरैश में से एक पैग़म्बर पैदा होगा जिस की हिजरत इसी शहरे मदीना की त़रफ़ होगी। वोह येह सुन कर बाज़ आया और उस ने मज़्हबे यहूद इख़्तियार कर लिया।

तुब्बअ़ मज़्कूरा मदीने से अपने वत़न यमन की त़रफ़ रवाना हुवा, रास्ते में उस ने मक्का में छे दिन क़ियाम किया और त़वाफ़ कर के का'बा पर बुर्दे यमानी चढ़ाई। येह तुब्बअ़ पहला शख़्स है जिस ने सब से पहले का'बतुल्लाह पर पर्दा चढ़ाया। मक्का से वोह यमन में आया दोनों आ़लिम उस के साथ थे उस ने अपनी क़ौम या'नी ह़िमयर को यहूदिय्यत की दा'वत दी। ह़िमयर उस वक़्त तक बुत परस्त थे उन्हों ने तुब्बअ़ की दा'वत से आख़िरे कार मज़्हबे यहूद इख़्तियार कर लिया।

तुब्बान अस्अ़द के बा'द उस के बेटे ह़स्सान को अ़म्र[5] बिन तुब्बान अस्अ़द ने मुल्क के लालच में क़त्ल कर दिया। अ़म्र मज़्कूर भी जल्दी हलाक हो गया और ह़िमयर की सल्त़नत का शीराज़ा परा गन्दा हो गया। लख़्नीआ़ यनूफ़ु ज़ु शनातिर जो शाही ख़ानदान में से न था उन का बादशाह बन बैठा। वोह फ़ासिक़ ख़बीस था। अबनाए मुलूक[6] से लिवात़त किया करता था ताकि वोह बादशाह न बन जाएं क्यूंकि उस ज़माने में अ़रब की आ़दत थी कि ऐसे शहज़ादे को

---

1 ......तबाह कुन सैलाब।

2 ......معجم البلدان یاقوت حموی، تحت سمرقند۔ (معجم البلدان لیاقوت حموی، باب السین والمیم ومایلیھما، تحت سمرقند، ج٥، ص٦٦۔ علمیه)

3 ......यहां से सीरते इब्ने हिशाम से माख़ूज़ है। 4 ......यमनी बादशाहों। 5 ......उ़मर और अ़म्र लिखने में यक्सां हैं इस लिये इम्तियाज़ के लिये अ़म्र के साथ **वाव** और उ़मर बिग़ैर **वाव** के लिखा जाता है। **इ़ल्मिय्या**

6 ......बादशाहों के बेटों।

www.dawateislami.net

बादशाह न बनाते थे। ज़ुरआ़ बिन तुब्बान अस्अ़द अपने भाई ह़स्सान के क़त्ल के वक़्त बच्चा ही था वोह बहुत ख़ूब सूरत था उस के सर के बाल पीठ तक पहुंचते थे इस वासिते़ उस का लक़ब ज़ूनुवास था ख़ूब सूरती के सबब से लोग उसे यूसुफ़ कहा करते थे। ज़ू शनातिर ने उसे बुला भेजा। ज़ूनुवास समझ गया और एक तेज़ छुरी जूते में पाउं तले छुपा कर ले गया जब वोह ख़ल्वत में पहुंचा तो उसी छुरी से ज़ू शनातिर का काम तमाम कर दिया, येह शुजाअ़त देख कर ह़िमयर ने ज़ूनुवास ही को अपना बादशाह तस्लीम कर लिया। अहले नजरान उस वक़्त ईसाई थे ज़ूनुवास लश्कर समेत नजरान में गया और उस ने अहले नजरान को यहूदिय्यत की दा'वत दी। ज़ूनुवास ने एक ख़न्दक़ खुदवा कर आग से भर दी, जो लोग यहूदी होने से इन्कार करते वोह उन को आग में गिरा देता था। क़ुरआने करीम में इसी ज़ूनुवास और इस के अस्ह़ाब को सूरए बुरूज में अस्ह़ाबुल उख़्दूद कहा गया है। नजरान के ईसाइयों में से एक शख़्स दोस ज़ूसा'लबान क़ैसरे रूम जिस्तीनीन (मुतवफ़्फ़ा सिने 565 ईसवी) के पास पहुंचा और उसे सब माजिरा कह सुनाया। क़ैसर ने जवाब दिया कि तुम्हारा मुल्क हम से बहुत दूर है हम शाहे ह़बशा नजाशी को जो ईसाई है तुम्हारी मदद के लिये लिख देते हैं, चुनान्चे, दोस क़ैसर का नामा नजाशी के पास लाया। नजाशी ने अपने एक अमीर अरयात़ को लश्करे जर्रार दे कर दोस के साथ रवाना किया। उस लश्कर में अबरहा अशरम भी था। ज़ूनुवास को शिकस्त हुई वोह बदीं ख़याल कि मुबादा दुश्मन के हाथ गिरिफ़्तार हो जाए सिने 528 ईसवी में समन्दर में डूब कर मर गया। अरयात़ सिने 529 ईसवी से सिने 549 ईसवी तक यमन में हुक्मरान रहा, वोह कमज़ोरों पर तअ़द्दी[1] किया करता था, इस लिये बहुत सी रुइय्यत उस के ख़िलाफ़ अबरहा से मिल गई। अबरहा ने अरयात़ से कहा कि हम दोनों समझ लें चुनान्चे, दोनों लड़ने लगे। अबरहा ने पसे पुश्त एक ग़ुलाम को मुक़र्रर किया था। जब अरयात़ ने ह़र्बा मारा तो अबरहा की पेशानी पर पड़ा और उस की आंख, नाक और होंट काट दिये। इसी सबब से इस को अबरहा अशरम कहते हैं। येह देख उस ग़ुलाम ने अबरहा की पुश्त की त़रफ़ से निकल कर अरयात़ को क़त्ल कर डाला। इस त़रह़ ह़बशा और यमन ने अबरहा को बादशाह तस्लीम कर लिया। नजाशी येह ह़ाल सुन कर अबरहा पर नाराज़ हुवा मगर अबरहा ने मुआ़फ़ी मांग कर उस को राज़ी कर लिया। इसी अबरहा ने सन्आ़ में एक गिर्जा बनाया था, ताकि अ़रब बजाए का'बतुल्लाह के इस का त़वाफ़ किया करें, मगर बनू किनाना में से एक शख़्स ने उस में बोलो बराज़[2] कर दिया। इस पर अबरहा हाथी ले कर ख़ानए का'बा को ढाने आया मगर वोह और उस की फ़ौज तबाह हो गई। येह क़िस्सए अस्ह़ाबे फ़ील क़ुरआने मजीद में मज़्कूर है। हुज़ूर ख़तमुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तवल्लुद शरीफ़ इस वाक़िए के पचपन दिन बा'द हुवा।

1......ज़ुल्मो ज़ियादती। 2......पेशाब व पाख़ाना।

www.dawateislami.net

अबरहा के बा'द उस का बेटा यक्सूम तख़्ते यमन पर बैठा मगर जल्द ही हलाक हो गया। फिर यक्सूम का भाई मस्रूक़ तख़्त नशीन हुवा। अहले यमन अजनबियों की हुकूमत से तंग आए हुवे थे। इस लिये सैफ़ बिन ज़ी यज़न ह़िमयरी क़ैसरे रूम के पास गया और अपने मुल्क को ग़ैरों की ग़ुलामी से आज़ाद करने के लिये उस से मदद मांगी। क़ैसर ने मदद देने से इन्कार कर दिया इस लिये वोह किस्रा नौशीरवां के दरबार में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि हमारे मुल्क पर अजनबियों की हुकूमत है अगर आप मदद करें तो हमारा मुल्क आप के ज़ेरे फ़रमान हो जाएगा। किस्रा के एक मरज़ुबान ने येह मश्वरा दिया कि बादशाह के क़ैदख़ाने में आठ सो आदमी वाजिबुल क़त्ल मौजूद हैं उन को भेज दिया जाए। अगर वोह हलाक हो गए फ़हुवल मुराद और अगर फ़त्ह़याब हो गए तो अ़लाक़ए मफ़्तूह़ा आप के क़ब्ज़े में आ जाएगा, चुनान्चे, क़ैदियों में से एक शख़्स वहरिज़ की सरकर्दगी में वोह सब मुहिम यमन पर भेज दिये गए। अहले फ़ारिस को फ़त्ह़ नसीब हुई और मसरूक़ मारा गया। इस त़रह़ ह़बशा का तसर्रुफ़ यमन पर बहत्तर साल (सिने 529 ईसवी से सिने 601 ईसवी तक) रहा।

वहरिज़ के बा'द किस्रा की त़रफ़ मरज़ुबान बिन वहरिज़ फिर तीनुजान बिन मरज़ुबान नाइबुल सल्त़नत मुक़र्रर हुवा। तीनुजान के बा'द उस का बेटा जा निशीन हुवा मगर किस्रा ने उसे मा'ज़ूल कर के बाज़ान को अपना नाइब मुक़र्रर किया। जब ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मबऊ़स हुवे तो उस वक़्त येही बाज़ान ह़ाकिमे यमन था। जब किस्रा (ख़ुसरू परवेज़) को ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत की ख़बर पहुंची तो उस ने बाज़ान को लिखा कि तुम उस मुद्दइ्ये नबुव्वत के पास जाओ और उसे कह दो कि अपने दा'वे से बाज़ आ जाए वरना उस का सर क़लम कर के हमारे पास भेज दो। बाज़ान ने वोह ख़त़ रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में भेज दिया। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बाज़ान को जवाब में लिखा कि किस्रा फ़ुलां महीने की फ़ुलां तारीख़ को क़त्ल हो जाएगा। जब येह नामा बाज़ान को मिला तो कहने लगा कि अगर वोह नबी हैं तो ऐसा ही होगा। चुनान्चे, किस्रा को इस के बेटे शीरूज़ ने उसी महीने और उसी तारीख़ को क़त्ल कर दिया जैसा कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पेशगोई फ़रमाई थी। येह देख कर बाज़ान और दीगर अहले फ़ारिस जो यमन में थे मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे।(1)

ह़ुरूबे अ़रब की, जिन्हें अय्यामे अ़रब से ता'बीर किया जाता है इस मुख़्तसर मुक़द्दमे में गुन्जाइश नहीं, अ़रब की जाहिलिय्यत की दीनी व अख़्लाक़ी ह़ालत का बयान आगे आएगा। اِنْ شَاءَ اللّٰہ تعالی

(1) ......الکامل فی التاریخ،ذکر حوادث العرب ایام قباذ وغیرہ،ج۱، ص۳۲۱-۳۴۸ و السیرۃ النبویۃلابن ھشام،ذکر ماانتھی الیہ امر الفرس بالیمن،ص۱۲-۳۲ علمیہ۔

www.dawateislami.net

पहला बाब

बरकाते नूरे मुहम्मदी

अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले बिला वासित़ा अपने ह़बीब मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर पैदा किया, फिर इसी नूर को ख़ल्क़े आ़लम का वासित़ा ठहराया।[1] और आ़लमे अरवाह़ ही में इस रूहे़ सरापा नूर को वस्फ़े नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया, चुनान्चे, एक रोज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने हुज़ूरे अन्वर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से पूछा कि आप की नबुव्वत कब साबित हुई ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : [2] وَآدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ या'नी मैं उस वक़्त नबी था जब कि आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) की रूह़ ने जिस्म से तअ़ल्लुक़ न पकड़ा था। बा'दे अज़ां इसी आ़लम में अल्लाह तआ़ला ने दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रूहों से अ़हद लिया जो [3] وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ الآيه में मज़कूर है। जिस वक़्त इन पैग़म्बरों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की रूहों ने अ़हदे मज़कूर के मुत़ाबिक़ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नबुव्वत व इमदाद का इक़रार कर लिया तो नूरे मुह़म्मदी के फ़ैज़ान से इन रूहों में वोह क़ाबिलिय्यतें पैदा हो गईं कि दुन्या में अपने अपने वक़्त में इन को मन्सबे नबुव्वत अ़त़ा हुवा और इन से मो'जिज़ात ज़ुहूर में आए।

इमाम बुसैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ूब फ़रमाया है :

وَكُلُّ اٰيٍ اَتَى الرُّسُلُ الْكِرَامُ بِهَا　　　فَاِنَّمَا اتَّصَلَتْ مِنْ نُّوْرِهٖ بِهِمِ

---

1 ......मुसन्निफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ (मुतवफ़्फ़ा सिने 211 हिजरी) ब रिवायते ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (الجزء المفقود من الجزء الاول من المصنف لعبد الرزاق، كتاب الايمان ، باب فى تخليق نور محمد صلى الله تعالى عليه وسلم، الحديث:١٨، ص٦٣ علميه)

2 ......ترمذی شریف۔(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ما جاء فی فضل النبی صلی الله علیه وسلم، الحدیث:٣٦٢٩، ج٥، ص ٣٥١ علميه)

3 ......इस आयत का तर्जमा यूं है और जब लिया अल्लाह ने इक़रार पैग़म्बरों का कि अलबत्ता जो कुछ मैं ने तुम को दिया किताब व ह़िक्मत से फिर आवे तुम्हारे पास रसूल सच्चा करने वाला उस चीज़ को कि तुम्हारे साथ है अलबत्ता तुम ईमान लाओगे उस पर और अलबत्ता मदद दोगे उस को, कहा ख़ुदा ने क्या इक़रार किया तुम ने और लिया इस पर अ़हद मेरा, कहा : इन्हों ने इक़रार किया हम ने, फ़रमाया ख़ुदा ने तुम गवाह रहो और मैं तुम्हारे साथ गवाहों से हूं। इन्तिहा (آل عمران، رکوع ٩) 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और याद करो जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से इन का अ़हद लिया जो मैं तुम को किताब और ह़िक्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वोह रसूल कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना फ़रमाया क्यूं तुम ने इक़रार किया और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सब ने अ़र्ज़ की हम ने इक़रार किया फ़रमाया तो एक दूसरे पर गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाहों में हूं। پ٣، آل عمران:٨١ **इल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

فَإِنَّهُ شَمْسُ فَضْلٍ هُمْ كَوَاكِبُهَا ‏ ‏ يُظْهِرْنَ أَنْوَارَهَا لِلنَّاسِ فِي الظُّلَمِ (1)

तर्जमए मन्ज़ूम

लड़ उसी के नूर से जा मिलती है सब की बहम ‏ ‏ मो 'जिज़े जितने कि लाए थे रसूलाने किराम
ज़ुल्मतों में नूर फैलाया जिन्हों ने बेशो कम ‏ ‏ आफ़्ताबे फ़ज़्ल है वोह सब कवाकिब इस के थे

इसी अ़हद के सबब से ह़ज़राते अम्बियाए साबिक़ीन عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी उम्मतों को हुज़ूर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आमदो बिशारत और इन के इत्तिबाअ़ व इमदाद की ताकीद फ़रमाते रहे हैं। अगर हुज़ूर नबिय्ये उम्मी بِاَبِيْ هُوَ وَاُمِّيْ(2) की नबुव्वत दुन्या में ज़ाहिर न होती तो तमाम अम्बियाए साबिक़ीन عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नबुव्वतें बातिल हो जातीं और वोह तमाम बिशारतें ना तमाम रह जातीं। पस दुन्या में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी ने तमाम अम्बियाए साबिक़ीन عَلَيْهِمُ السَّلَام की नबुव्वतों की तस्दीक़ फ़रमा दी।

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۷﴾ (3)

जिस त़रह़ रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूरे अज़्हर मम्बए अन्वारुल अम्बिया था इसी त़रह़ आप के जिस्मे अत़्हर का माद्दा भी लत़ीफ़ तरीन अश्या था चुनान्चे, ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मन्क़ूल है(4) कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पैदा करना चाहा तो जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि सफ़ेद मिट्टी लाओ। पस जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام बिहिश्त के फ़िरिश्तों के साथ उतरे और ह़ज़रत की क़ब्र शरीफ़ की जगह से मुट्ठी भर ख़ाके सफ़ेद चमकती दमकती उठा लाए फिर वोह मुश्ते ख़ाके सफ़ेद बिहिश्त के चश्मए तस्नीम के पानी से गूंधी गई यहां तक कि सफ़ेद मोती की मानिन्द हो गई जिस की बड़ी शुआअ़ थी बा'दे अ़ज़ां फ़िरिश्ते उसे ले कर अ़र्श व कुरसी के गिर्द और आस्मानों और ज़मीन में फिरे यहां तक कि तमाम फ़िरिश्तों ने आप (रूहे़ अन्वर व माद्दए अत़्हर) को आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पैदाइश से पहले पहचान लिया।

---

1 ......قصيدة البردة مع شرح عصيدة الشهدة،شعر ۵۲،۵۳،ص۹۸ علميه۔

2 ......मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान।

3 ......बल्कि लाया है ह़क़ को और सच्चा किया है पैग़म्बरों को (साफ़्फ़ात, रुकूअ़ 2) 12 मिन्ह। (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह तो ह़क़ लाए हैं और उन्हों ने रसूलों की तस्दीक़ फ़रमाई। (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۳۷) **इल्मिय्या**)

4 ......وفاء الوفاء فی فضائل المصطفٰی لابن الجوزی۔(الوفا باحوال المصطفٰی صلی اللّٰہ علیہ وسلم لابن جوزی(مترجم)دوسرا باب،سرور عالم صلی اللّٰہ علیہ وسلم کے وجود عنصری کا بیان، ص۴۹)

www.dawateislami.net

जब अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पैदा किया तो अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर को उन की पुश्ते मुबारक में बत़ौरे वदीअ़त[1] रखा। इस नूर के अन्वार उन की पेशानी में यूं नुमायां थे जैसे आफ़्ताब आस्मान में और चांद अन्धेरी रात में और इन से अ़हद लिया गया कि येह नूरे अन्वर पाक पुश्तों से पाक रेह़्मों में मुन्तक़िल हुवा करे। इसी वासित़े जब वोह ह़ज़रते ह़व्वा عَلَیۡہَا السَّلَام से मुक़ारबत का इरादा करते तो उन्हें पाक व पाकीज़ा होने की ताकीद फ़रमाते यहां तक कि वोह नूर ह़ज़रते ह़व्वा عَلَیۡہَا السَّلَام के रेह़्मे पाक में मुन्तक़िल हो गया उस वक़्त वोह अन्वार जो ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام की पेशानी में थे ह़ज़रते ह़व्वा عَلَیۡہَا السَّلَام की पेशानी में नुमूदार हुवे। अय्यामे ह़म्ल में ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام ने ब पासे अदबो ता'ज़ीम ह़ज़रते ह़व्वा عَلَیۡہَا السَّلَام से मुक़ारबत तर्क कर दी यहां तक कि ह़ज़रते शीस عَلَیۡہِ السَّلَام पैदा हुवे तो वोह नूर उन की पुश्त में मुन्तक़िल हो गया। येह हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा था कि ह़ज़रते शीस عَلَیۡہِ السَّلَام अकेले पैदा हुवे। आप के बा'द एक बत़्न में जोड़ा (लड़का लड़की) पैदा होता रहा इस त़रह़ येह नूरे पाक, पाक पुश्तों से पाक रेह़्मों में मुन्तक़िल होता हुवा हुज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वालिदे माजिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तक पहुंचा और उन से बिना बर क़ौले असह़ अय्यामे तशरीक़ में जुमुआ़ की रात को आप की वालिदए माजिदा ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के रेह़्मे पाक में मुन्तक़िल हुवा।

इसी नूर के पाक व साफ़ रखने के लिये अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत के तमाम आबा व उम्महात को शिर्को कुफ़्र की नजासत और ज़िना की आलूदगी से पाक रखा है। इसी नूर के ज़रीए़ से ह़ज़रत के तमाम आबाओ अजदाद निहायत ह़सीन व मरजए़ ख़लाइक़ थे। इसी नूर की बरकत से ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मलाइक के मस्जूद बने और इसी नूर के वसीले से उन की तौबा क़बूल हुई, इसी की बरकत से ह़ज़रते नूह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की किश्ती तूफ़ान में ग़र्क़ होने से बची। इसी नूर की बरकत से ह़ज़रते इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर आतशे नमरूद गुलज़ार हो गई और इसी नूर के तुफ़ैल से ह़ज़राते अम्बियाए साबिक़ीन عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِمُ الصَّلَوٰتُ وَالتَّسۡلِیۡمَات पर अल्लाह तआ़ला की इनायात बे ग़ायत[2] हुईं।

1......बत़ौरे अमानत। 2......बे इन्तिहा।

www.dawateislami.net

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक से वापस तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इजाज़त से आप की मद्ह़ में चन्द अश्आ़र अ़र्ज़ किये।[1] जिन में मज़्कूर है कि किश्तिए नूह़ का तूफ़ान से बचना और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर आतशे नमरूद का गुलज़ार हो जाना हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर ही की बरकत से था।

ह़ज़रते इमामुल अइम्मा अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित ताबेई कूफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हु़ज़ूर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में यूं फ़रमाते हैं :[2]

أَنْتَ الَّذِیْ لَوْلَاكَ مَا خُلِقَ امْرُءٌ ۔۔۔ كَلَّا وَلَا خُلِقَ الْوَرٰی لَوْلَاكَا
أَنْتَ الَّذِیْ مِنْ نُّوْرِكَ لِلْبَدْرِ السَّنَا ۔۔۔ وَالشَّمْسُ مُشْرِقَةٌ بِنُوْرِ بَهَاكَا
أَنْتَ الَّذِیْ لَمَّا تَوَسَّلَ اٰدَمُ ۔۔۔ مِنْ زَلَّةٍ بِكَ فَازَ وَهُوَ اَبَاكَا
وَبِكَ الْخَلِيْلُ دَعَا فَعَادَتْ نَارُهٗ ۔۔۔ بَرْدًا وَّ قَدْ خَمِدَتْ بِنُوْرِ سَنَاكَا
وَدَعَاكَ اَيُّوْبُ لِضُرٍّ مَّسَّهٗ ۔۔۔ فَاُزِيْلَ عَنْهُ الضُّرُّ حِيْنَ دَعَاكَا
وَبِكَ الْمَسِيْحُ اَتٰى بَشِيْرًا مُّخْبِرًا ۔۔۔ بِصِفَاتِ حُسْنِكَ مَادِحًا لِعُلَاكَا
كَذٰلِكَ مُوْسٰى لَمْ يَزَلْ مُتَوَسِّلًا ۔۔۔ بِكَ فِی الْقِيٰمَةِ مُحْتَمًا بِحِمَاكَا
وَالْاَنْبِيَآءُ وَكُلُّ خَلْقٍ فِی الْوَرٰی ۔۔۔ وَالرُّسُلُ وَالْاَمْلَاكُ تَحْتَ لِوَاكَا[3]

आप की वोह मुक़द्दस ज़ात है कि अगर आप न होते तो हरगिज़ कोई आदमी पैदा न होता और न कोई मख़्लूक़ पैदा होती अगर आप न होते। आप वोह हैं कि आप के नूर से चांद को रोशनी है और सूरज आप ही के नूरे ज़ैबा से चमक रहा है। आप वोह हैं कि जब आदम ने लग़्ज़िश के सबब से आप का वसीला पकड़ा तो वोह कामयाब हो गए ह़ालांकि वोह आप के बाप हैं। आप ही के वसीले से ख़लील ने दुआ़ मांगी, तो आप के रोशन नूर से आग उन पर ठन्डी हो गई और

1 ......خصائص کبریٰ للسیوطی بحوالہ حاکم وطبرانی۔ (الخصائص الکبری للسیوطی، باب اختصاصه صلی الله علیه وسلم بطهارة نسبه...الخ، ج١، ص٦٦ علمیه)

2 ......मजमूअ़ए क़साइद, स. 40।

3 ...... المستطرف ،باب الثانی والاربعون ،الفصل الاول فی المدح و الثناء ،ج١ ،ص٣٩١، ٣٩٣ ملتقطا علمیه۔

www.dawateislami.net

बुझ गई और अय्यूब ने अपनी मुसीबत में आप ही को पुकारा तो इस पुकारने पर उन की मुसीबत दूर हो गई और मसीह़ आप ही की बिशारत और आप ही की सिफ़ाते ह़सना की ख़बर देते और आप की मदद़ करते हुवे आए। इसी त़रह़ मूसा आप का वसीला पकड़ने वाले और क़ियामत में आप के सब्ज़ाज़ार में पनाह लेने वाले रहे और अम्बिया और मख़्लूक़ात में से हर मख़्लूक़ और पैग़म्बर और फ़िरिश्ते आप के झन्डे तले होंगे।

मौलाना जामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه यूं फ़रमाते हैं :

و صلی اللّٰہ علیٰ نور کزوشد نورہا پیدا　　زمین از حبِ اُوساکن فلک درعشقِ اُوشیدا
محمد احمد و محمود وے را خالقش بستود　　کزو شد بود ہر موجود زو شد دیدہا بینا
اگر نامِ محمد را نیاوردے شفیع آدم　　نہ آدم یافتے توبہ نہ نوح از غرق نجّینا
نہ ایوب از بلا راحت نہ یوسف حشمت وجاہت　　نہ عیسیٰ آں مسیحا دم نہ موسیٰ آں یدِ بیضا

नूरानी फूल

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़द मुबारक का साया न था। ह़कीम तिर्मिज़ी (मुतव्वफ़ा सिने 255 हिजरी) ने अपनी किताब "नवादिरुल उसूल" में ह़ज़रते ज़क्वान ताबेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से येह ह़दीस नक़्ल की है कि सूरज की धूप और चांद की चांदनी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया नहीं पड़ता था। इमाम इब्ने सब्अ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ौल है कि येह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस में से है कि आप का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता था और आप नूर थे इस लिये जब आप धूप या चांदनी में चलते तो आप का साया नज़र न आता था और बा'ज़ का क़ौल है कि इस की शाहिद वोह ह़दीस है जिस में आप की इस दुआ़ का ज़िक्र है कि आप ने येह दुआ़ मांगी :

﴿اللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا وَفِي سَمْعِي نُورًا وَفِي بَصَرِي نُورًا وَعَنْ يَمِينِي نُورًا وَعَنْ يَسَارِي نُورًا وَأَمَامِي نُورًا وَخَلْفِي نُورًا وَفَوْقِي نُورًا وَتَحْتِي نُورًا وَاجْعَلْنِي نُورًا. مسلم كتاب صلاة المسافرين وقصره، باب الدعاء فى صلاة الليل وقيامه﴾

कि ख़ुदावन्दा ! तू मेरे तमाम आ'ज़ा (और मेरे तमाम अत़राफ़) को नूर बना दे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी इस दुआ़ को इस क़ौल पर ख़त्म फ़रमाया कि "وَاجْعَلْنِي نُورًا" या'नी या **अल्लाह** ! तू मुझ को सरापा नूर बना दे। ज़ाहिर है कि जब आप सरापा नूर थे तो फिर आप का साया कहां से पड़ता !

इसी त़रह़ अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक और इब्नुल जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا ने भी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया नहीं था।

(المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، الفصل الاول فى كمال خلقته...الخ، ٥/٥٢٤، ٥٢٥)

www.dawateislami.net

दूसरा बाब

हालाते नसब व विलादत शरीफ़ ता बिअ़्सत शरीफ़

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सिलसिलए नसब येह है : सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन कुसा बिन किलाब बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय्य बिन ग़ालिब बिन फ़िहर बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदरिका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़ार बिन मा'द बिन अ़दनान ।(1) और अ़दनान ह़ज़रते इस्माईल बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह على نبينا وعليهما الصلوٰة والسلام की अवलाद से हैं ।

ख़ानदानी शराफ़त व सियादत

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ानदान अ़रब में हमेशा से मुमताज़ व मुअ़ज़्ज़ज़ चला आता था। नज़्र (या फ़िहर) का लक़ब क़ुरैश था इस वज्ह से इस की अवलाद को क़ुरैशी और ख़ानदान को क़ुरैश कहने लगे और इस से ऊपर वाले किनानी कहलाए। क़ुरैश की वज्हे तस्मिय्या में बहुत से मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं जिन के ईराद की इस मुख़्तसर में गुन्जाइश नहीं ।(2) सहीह़ बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं बनी आदम के बेहतरीन त़बक़ात से भेजा गया, एक क़र्न बा'द दूसरे क़र्न के, यहां तक कि मैं उस क़र्न से हुवा, जिस से कि हुवा ।(3)

ह़दीसे मुस्लिम में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से किनाना को बरगुज़ीदा बनाया और किनाना में से क़ुरैश को और क़ुरैश में से बनी हाशिम को बनी हाशिम में से मुझ को बरगुज़ीदा बनाया ।(4) इसी त़रह़ तिर्मिज़ी शरीफ़ में ब सनदे ह़सन आया है कि **अल्लाह** तआ़ला ने ख़ल्क़त को पैदा किया तो मुझ को उन के सब से अच्छे गुरौह में बनाया फिर क़बीलों को चुना तो मुझ को सब से अच्छे क़बीले में बनाया। फिर घरों को चुना तो मुझे उन

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، ذكر سرد النسب...الخ، ص ٧ علميه۔

2 ......या'नी उन्हें यहां बयान करने की गुन्जाइश नहीं ।

3 ......صحيح البخارى،كتاب المناقب، باب صفة النبى صلى الله عليه وسلم، الحديث:٣٥٥٧،ج٢،ص٤٨٨علميه۔

4 ......صحيح مسلم،كتاب الفضائل،باب فضل نسب النبى...الخ،الحديث:٢٢٧٦،ص١٢٤٩علميه۔

www.dawateislami.net

के सब से अच्छे घर में बनाया, पस मैं रूह़ व ज़ात और अस्ल के लिह़ाज़ से इन सब से अच्छा हूं।[1] किसी ने क्या अच्छा कहा है :

لَمْ يَخْلُقِ الرَّحْمٰنُ مِثْلَ مُحَمَّدٍ   اَبَدًا وَّ عِلْمِی اَنَّهٗ لَا يَخْلُقٗ[2]

ख़ुदा ने ह़ज़रते मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मिस्ल कभी पैदा नहीं किया और मुझे इ़ल्म है कि वोह आप का मिस्ल पैदा न करेगा।

नज़्र के बा'द फ़िहर अपने वक़्त में रईस अ़रब था, इस का हम अ़स्र ह़स्सान बिन अ़ब्दे कुलाल ह़िमयरी चाहता था कि का'बा के पथ्थर उठा कर यमन में ले जाए ताकि ह़ज के लिये वहीं का'बा बना दिया जाए, जब वोह इस इरादे से ह़िमयर वग़ैरा को साथ ले कर यमन से आया और मक्का से एक मन्ज़िल पर मक़ामे नख़्ला में उतरा तो फ़िहर ने क़बाइले अ़रब को जम्अ़ कर के उस का मुक़ाबला किया। ह़िमयर को शिकस्त हुई, ह़स्सान गिरिफ़्तार हुवा और तीन बरस के बा'द फ़िद्या दे कर रिहा हुवा। इस वाक़िए़ से फ़िहर की हैबत व अ़ज़मत का सिक्का अ़रब के दिलों पर जम गया।

फ़िहर के बा'द क़ुसा[3] बिन किलाब ने निहायत इ़ज़्ज़तो इक़्तिदार ह़ासिल किया। क़ुसा मज़्कूर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जद्दे ख़ामिस हैं इन का अस्ली नाम ज़ैद था। किलाब की वफ़ात के बा'द इन की वालिदा फ़ातिमा ने बनू उ़ज़्रा में से एक शख़्स रबीआ़ बिन ह़िज़ाम से शादी कर ली थी, वोह फ़ातिमा को अपनी विलायत या'नी मुल्के शाम को ले गया। फ़ातिमा अपने साथ ज़ैद को भी ले गई चूंकि ज़ैद अभी बच्चे ही थे और अपने वत़न मालूफ़[4] से दूर जा रहे थे इस लिये उन को क़ुसा (तसग़ीरे अक़्सा ब मा'ना बई़द) कहने लगे। जब क़ुसा जवान हो गए तो फिर मक्का में अपनी क़ौम में आ गए और वहीं ह़ुलैल ख़ुज़ाई की बेटी ह़ुबय से शादी कर ली। ह़ुलैल उस वक़्त का'बे का मुतवल्ली था, उस के मरने पर तौलियत क़ुसा के हाथ आई, उस ने ख़ुज़ाआ़ को बैतुल माल से निकाल दिया और क़ुरैश को घाटियों पहाड़ियों और वादियों से जम्अ़ कर के मक्का के अन्दर और बाहर आबाद किया इस वज्ह से क़ुसा को मुजतमिअ़ भी कहते हैं।[5]

---

1 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی فضل النبی، الحدیث:۳۶۲۷، ج۵، ص۳۵۰ علمیہ۔

2 ......حیاۃ الحیوان الکبریٰ، خلافۃ ابی بکر الصدیق رضی اللّٰہ عنہ، ج۱، ص۷۵ علمیہ۔

3 ......क़ुसा के ह़ालात के लिये देखो सीरते इब्ने हिशाम और सीरते ह़ल्बिय्या। 12 मिन्ह 4 ......वत़न मानूस।

5 ......السیرۃ الحلبیۃ، باب نسبہ الشریف، ج۱، ص۱۴۔۱۵ ملخصاً و الکامل فی التاریخ لابن اثیر، نسب رسول اللّٰہ...الخ، ج۱، ص۵۵۶۔۵۵۷ ملخصاً علمیہ۔

www.dawateislami.net

कुसा ने कई कारहाए नुमायां किये चुनान्चे, एक कमेटी घर क़ाइम किया जिसे दारुन्नदवा कहते हैं। मुहिम्माते उमूर[1] में मश्वरे यहीं करते। लड़ाई के लिये झन्डा यहीं तय्यार होता। निकाह़ और दीगर तक़रीबात की मरासिम[2] यहीं अदा करते। ह़रम की रिफ़ादत व सक़ायत[3] का मन्सब भी कुसा ही ने क़ाइम किया। चुनान्चे, मौसिमे ह़ज में क़ुरैश को जम्अ़ कर के येह तक़रीर की : "तुम ख़ुदा के पड़ोसी और ख़ुदा के घर के मुतवल्ली हो और हुज्जाज़ ख़ुदा के मेहमान और ख़ुदा के घर के ज़ाइरीन हैं वोह और मेहमानों की निस्बत तुम्हारी मेज़बानी के ज़ियादा मुस्तह़िक़ हैं इस लिये अय्यामे ह़ज में उन के खाने पीने के लिये कुछ मुक़र्रर करो।" इस पर क़ुरैश ने सालाना रक़म मुक़र्रर की जिस से हर साल अय्यामे मिना में ग़रीब ह़ाजियों को खाना खिलाया जाता था। सक़ायत के लिये कुसा ने चर्मी[4] हौज़ बनाए जो अय्यामे ह़ज में का'बा के सेह़न में रखे जाते थे। इन हौज़ों के भरने के लिये मक्का के कूओं[5] का पानी मशकों में ऊंटों पर लाया जाता था। इन मनासिब[6] के इ़लावा क़ुरैश के बाक़ी शरफ़ भी या'नी ह़िजाबत (का'बा की कलीद बरदारी व तौलियत) और लिवाअ (अ़लम बन्दी) और क़ियादत (इमारते लश्कर) कुसा के हाथ में थे और कुसा ही पहले शख़्स हैं जिन्हों ने मुज़्दलिफ़ा पर रोशनी की ताकि लोगों को अ़रफ़ात से नज़र आ जाए।[7]

कुसा के चार लड़के (अ़ब्दुद्दार, अ़ब्दे मनाफ़, अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा, अ़ब्द) और दो लड़कियां (तख़्मुर, बर्रह) थीं।[8] अ़ब्दुद्दार अगर्चे उ़म्र में सब से बड़ा था मगर शराफ़तो वजाहत में अपने भाइयों के हम पाया न था और अ़ब्दे मनाफ़ तो सब से अशरफ़ थे येह आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जद्दे राबिअ़ थे इन का अस्ली नाम मुग़ीरा था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूर की झलक इन की पेशानी में ऐसी थी कि इन को क़मरुल बत़ह़ा (वादिये मक्का का चांद) कहा करते थे। जब कुसा बहुत बूढ़े हो गए तो उन्हों ने अ़ब्दुद्दार से कहा कि मैं तुझे तेरे भाइयों के बराबर करता हूं येह कह कर ह़रम शरीफ़ के तमाम मनासिब उस के सिपुर्द कर दिये। कुसा की हैबत के सबब से उस वक़्त किसी ने ए'तिराज़ न किया, मगर कुसा के बा'द जब अ़ब्दुद्दार और अ़ब्दे मनाफ़ का भी इन्तिक़ाल हो चुका तो अ़ब्द के बेटों (हाशिम, अ़ब्दे शम्स, मुत्त़लिब, नौफ़ल) ने अपना

---

1 ......अहम तरीन उमूर। 2 ......रस्में।

3 ......**रिफ़ादत :** ह़ाजियों के खाने पीने का इन्तिज़ाम करना। **सक़ायत :** ह़ाजियों को आबे ज़म ज़म पिलाना। 12 मिन्ह

4 ......चमड़े के। 5 ......कूंओं। 6 ......मन्सब की जम्अ़।

7 ......السيرة الحلبية، باب نسبه الشريف، ج۱، ص۲۱، ۲۲ملخصاً و الکامل فی التاريخ لابن اثير، نسب رسول اللّٰه...الخ، ج۱، ص۵۵۷ ملخصاً علميه۔

8 ......السيرة النبوية لابن هشام، امر البسل، اولاد قُصَی وامهم، ص۴۶ علميه۔

www.dawateislami.net

इस्तिह़क़ाक़ ज़ाहिर किया और चाहा कि ह़रम शरीफ़ के वज़ाइफ़ अ़ब्दुद्दार की अवलाद से छीन लें। इस पर कुरैश में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया बनू असद बिन उ़ज़्ज़ा और बनू ज़हरा बिन किलाब और बनू तैम बिन मुर्रह और बनू ह़ारिस बिन फ़िहर येह सब बनू अ़ब्दे मनाफ़ की त़रफ़ और बनू मख़्ज़ूम और बनू सह्म और बनू जुमह़ और बनू अ़दी बिन का'ब दूसरी त़रफ़ हो गए। बनू अ़ब्दे मनाफ़ और इन के अह़लाफ़ ने क़समें खा कर मुआ़हदा किया कि हम एक दूसरे का साथ न छोड़ेंगे और यक जहती के इज़्हार के लिये एक प्याला ख़ुश्बू से भर कर ह़रम शरीफ़ में रखा और सब ने उस में अपनी उंगलियां डुबोईं इस लिये इन पांच क़बाइल को मुत़य्यबीन कहते हैं। इसी त़रह़ दूसरे फ़रीक़ ने बा हम मुआ़हदा किया और एक प्याला ख़ून से भर कर उस में अपनी उंगलियां डूबो कर चाट लीं इस लिये इन पांच क़बाइल को लअ़क़तुद्दम (ख़ून के चाटने वाले) कहते हैं। ग़रज़ हर दो फ़रीक़ लड़ाई के लिये तय्यार हो गए मगर इस बात पर सुल्ह़ हो गई कि सक़ायत व रिफ़ादत व क़ियादत बनू अ़ब्दे मनाफ़ को दी जाए और ह़िजाबत व लिवा व नदवा ब दस्तूर बनू अ़ब्दुद्दार के पास रहे चुनान्चे, हाशिम को जो भाइयों में सब से बड़े थे सक़ायत व रिफ़ादत मिली। हाशिम के बा'द मुत्त़लिब को और मुत्त़लिब के बा'द अ़ब्दुल मुत्त़लिब और अ़ब्दुल मुत्त़लिब के बा'द अबू त़ालिब को मिली और अबू त़ालिब ने अपने भाई अ़ब्बास के ह़वाले कर दी, क़ियादत अ़ब्दे शम्स को दी गई अ़ब्दे शम्स के बा'द उस के बेटे उमय्या को फिर उमय्या के बेटे ह़र्ब को फिर ह़र्ब के बेटे अबू सुफ़्यान को अ़त़ा हुई इस लिये जंगे उहुद और अह़ज़ाब में अबू सुफ़्यान ही क़ाइद था। जंगे बद्र के वक़्त वोह क़ाफ़िलए कुरैश के साथ था इस लिये उ़तबा बिन रबीआ़ बिन अ़ब्दे शम्स अमीरुल जैश था। दारुन्नदवा अ़ब्दुद्दार की अवलाद में रहा यहां तक कि इकरमा बिन आ़मिर बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन अ़ब्दुद्दार ने ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। उन्हों ने इसे दारुल अमारत बना लिया और आख़िरे कार ह़रम में शामिल हो गया।(1) ह़िजाबत आज तक अ़ब्दुद्दार की अवलाद में है और वोह बनू शैबा बिन उ़स्मान बिन अबी त़लह़ा बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन उ़स्मान बिन अ़ब्दुद्दार हैं। लिवा भी उसी की अवलाद में रहा चुनान्चे, जंगे उहुद में झन्डा उन ही के हाथ में था। जब एक क़त्ल हो जाता तो दूसरा उस की जगह लेता इस त़रह़ उन की एक जमाअ़त क़त्ल हो गई।

हाशिम(2) ने मन्सबे रिफ़ादत व सक़ायत को निहायत ख़ूबी से अन्जाम दिया ज़िल ह़िज्जा की पहली तारीख़ को सुब्ह़ के वक़्त का'बा से पुश्त लगा कर यूं ख़िताब करते थे : "ऐ कुरैश के

---

1 ......السیرۃ الحلبیۃ، باب نسبہ الشریف، ج۱، ص۲۲۔۲۴ ملخصاً والکامل فی التاریخ لابن اثیر، نسب رسول اللّٰہ...الخ، ج۱، ص۵۵۷۔۵۵۸ ملخصاً علمیہ۔

2 ......کامل ابن اثیر وسیرت حلبیہ۔

गुरौह तुम ख़ुदा के घर के पड़ोसी हो ख़ुदा ने बनी इस्माईल में से तुम को इस की तौलियत का शरफ़ बख़्शा है और तुम को इस के पड़ोस के लिये ख़ास किया है। ख़ुदा के ज़ाइरीन तुम्हारे पास आ रहे हैं जो उस के घर की ता'ज़ीम करते हैं, पस वोह ख़ुदा के मेहमान हैं और ख़ुदा के मेहमानों की मेज़बानी का ह़क़ सब से ज़ियादा तुम पर है इस लिये तुम ख़ुदा के मेहमानों और उस के घर के ज़ाइरीन का इकराम करो जो, हर एक शहर से तीरों जैसी लाग़र और सबुक अन्दाम[1] ऊंटनियों पर ज़ूलीदामू[2] और ग़ुबार आलूदा आ रहे हैं। इस घर के रब की क़सम ! अगर मेरे पास इस काम के लिये काफ़ी सरमाया होता तो मैं तुम्हें तक्लीफ़ न देता मैं अपने कसबे ह़लाल की कमाई में से दे रहा हूं। तुम में से भी जो चाहे ऐसा करे। मैं इस घर की ह़ुरमत का वासित़ा दे कर गुज़ारिश करता हूं कि जो शख़्स बैतुल्लाह के ज़ाइरीन को अपने माल से दे, वोह ब जुज़ ह़लाल की कमाई के न हो।" इस तक़रीर पर क़ुरैश अपने ह़लाल मालों में से दिया करते और दारुन्नदवा में जम्अ़ कर देते।

हाशिम का अस्ली नाम अ़म्र था उ़लू रुतबा[3] के सबब अ़म्र अल अ़ला कहलाते थे। निहायत मेहमान नवाज़ थे, इन का दस्तरख़्वान हर वक़्त बिछा रहता था। एक साल क़ुरैश में सख़्त क़ह़्त़ पड़ा। येह मुल्के शाम से ख़ुश्क रोटियां ख़रीद कर अय्यामे ह़ज में मक्के में पहुंचे और रोटियों का चूरा कर के ऊंटों के गोश्त के शोरबे में डाल कर सरीद बनाया और लोगों को पेट भर कर खिलाया। उस दिन से इन को हाशिम (रोटियों का चूरा करने वाला) कहने लगे।[4]

अ़ब्दे मनाफ़ के साहि़बज़ादों ने क़ुरैश की तिजारत को बहुत तरक़्क़ी दी और दुवुले ख़ारिजा[5] के साथ तअ़ल्लुक़ात पैदा कर के इन से कारवाने क़ुरैश के लिये फ़रामीने ह़िफ़्ज़ो अम्न ह़ासिल किये। चुनान्चे, हाशिम ने क़ैसरे रूम और मलिके ग़स्सान से और अ़ब्दे शम्स ने ह़बशा के बादशाह नजाशी से और नौफ़ल ने अकासिरहे इ़राक़ से और मुत्त़लिब ने यमन के शाह ह़िमयर से इसी क़िस्म के फ़रमान लिखवा लिये। इस के बा'द हाशिम ने क़ुरैश के लिये साल में दो तिजारती सफ़र मुक़र्रर किये इस लिये क़ुरैश मौसिमे सर्मा में यमन व ह़बशा और गर्मा में इ़राक़ व शाम में जाते और ऐशियाए कोचक के मश्हूर शहर अन्क़रा (अंगूरा) तक पहुंच जाते।

हाशिम की पेशानी में नूरे मुह़म्मदी चमक रहा था। अह़बार में से जो आप को देखता आप के हाथ को बोसा देता। क़बाइले अ़रब व अह़बार में से आप को शादी के पयाम आते मगर आप इन्कार कर देते।

1......हल्के बदन वाली ।
2......बिखरे या उलझे हुवे बालों वाले।
3......बुलन्द रुत्बा ।
4 ......السيرة الحلبية، باب نسبه الشريف، ج۱، ص۱۰۔۱۲ ملتقطاً علميه۔
5......बैरूनी हुकूमतें ।

www.dawateislami.net

एक दफ़्अ़ा ब ग़रज़े तिजारत आप मुल्के शाम को गए। रास्ते में मदीने में बनू अ़दी बिन नज्जार में से एक शख़्स अ़म्र बिन जै़द बिन लबीद ख़ज़्रजी के हां ठहरे। उस की साहि़बज़ादी सलमा हुस्नो सूरत व शराफ़त में अपनी क़ौम की तमाम औ़रतों में मुम्ताज़ थी। आप ने उस से शादी कर ली। मगर अ़म्र ने हाशिम से येह अ़हद लिया कि सलमा[1] जो अवलाद जनेगी वोह अपने मैके में जनेगी। शादी के बा'द हाशिम शाम को चले गए। जब वापस आए तो सलमा को अपने साथ मक्का में ले आए। ह़म्ल के आसार ब ख़ूबी मह़सूस हुवे तो सलमा को मदीने में छोड़ कर आप शाम को चले गए और वहीं ग़ज़्ज़ा[2] में पच्चीस साल की उ़म्र में इन्तिक़ाल किया और ग़ज़्ज़ा ही में दफ़्न हुवे। सलमा के हां एक लड़का पैदा हुवा जिस के सर में कुछ सफ़ेद बाल थे इस लिये इस का नाम शैबा रखा गया और शैबतुल ह़म्द भी कहते थे। ह़म्द की निस्बत इस की त़रफ़ इस उम्मीद पर की गई कि इस से अफ़्आ़ले नेक सरज़द होंगे जिस के सबब से लोग इस की ता'रीफ़ किया करेंगे। शैबा सात या आठ साल मदीने ही में रहे फिर मुत्त़लिब को ख़बर लगी तो भतीजे को लेने के लिये मदीने में पहुंचे। जब मदीने से वापस आए तो शैबा को अपने पीछे ऊंट पर सुवार कर लिया। शैबा के कपड़े फटे पुराने थे। जब चाश्त के वक़्त मक्का में दाख़िल हुवे तो लोगों ने मुत्त़लिब से पूछा कि येह कौन हैं? मुत्त़लिब ने कहा : येह मेरा अ़ब्द (ग़ुलाम) है इस वज्ह से शैबा को अ़ब्दुल मुत्त़लिब कहने लगे। वज्हे तस्मिय्या में बा'ज़ों ने और क़ौल भी नक़्ल किये हैं।[3]

मुत्त़लिब के बा'द अहले मक्का की रियासत अ़ब्दुल मुत्त़लिब[4] को मिली और रिफ़ादत व सक़ायत उन के ह़वाले हुई, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नूर उन की पेशानी में चमक रहा था उन से कस्तूरी की सी ख़ुश्बू आती थी जब क़ुरैश को कोई ह़ादिसा पेश आता तो अ़ब्दुल मुत्त़लिब को कोहे शैबा पर ले जाते और उन के वसीले से बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ मांगते और अय्यामे क़ह़त़ में उन के वासित़े से त़लबे बारां करते और वोह दुआ़ क़बूल होती। अ़ब्दुल मुत्त़लिब पहले शख़्स हैं जो तह़न्नुस किया करते थे या'नी हर साल माहे रमज़ान में कोहे ह़िरा में

1 ......सलमा हाशिम से पहले उह़ैह़ा बिन जल्लाह़ के तह़त में थी जिस से अ़म्र बिन उह़ैह़ा पैदा हुवा। 12 मिन्ह

2 ......येह शहर मिस्र की त़रफ़ अक़्शाए शाम में वाक़ेअ़ है, मुत्त़लिब ने रूमान में, अ़ब्दे शम्स ने मक्का में और नौफ़ल ने सलमात में वफ़ात पाई जो इ़राक़ से मक्का के रास्ते में एक क़त़्आ़ आब है। 12 मिन्ह

3 ......السيرة الحلبية، باب نسبه الشريف،ج١، ص٩ـ١٢ملتقطاً والكامل فى التاريخ لابن اثير،نسب رسول الله...الخ، ج١، ص٥٤٩و٥٥٣-٥٥٤ ملخصاً علميه۔

4 ......इन के ह़ालात के लिये देखो सीरते हिशामिय्या और सीरते नबविय्या लिल सय्यिद अह़मद ज़ीनी अल मश्हूरे बदह़लान। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

जा कर ख़ुदा के गियान धियान में गोशा नशीन रहा करते। वोह मवह़्ह़िद[1] थे शराब व ज़िना को ह़राम जानते थे, निकाहे़ मह़ारिम से और ब ह़ालते बरहंगी त़वाफ़े का'बा से मन्अ़ करते, लड़कियों के क़त्ल से रोकते, चोर का हाथ काट देते, बड़े मुस्तजाबुद्दा'वात[2] और फ़य्याज़ थे, अपने दस्तरख़्वान से पहाड़ियों की चोटियों पर परन्दे चरिन्दे को खिलाया करते थे। इस लिये इन्हें मुत़इमुत्तै़र (परन्दों को खिलाने वाले) कहते थे।[3] येह सब कुछ नूरे मुह़म्मदी की बरकत से था।

अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने चाहे ज़म ज़म को नए सिरे से खुदवा कर दुरुस्त किया। इस का क़िस्सा यूं है कि ह़ज़रते इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के बा'द का'बे की तौलियत नाबित बिन इस्माईल के सिपुर्द हुई नाबित के बा'द नाबित का नाना मज़्ज़ाज़ बिन अ़म्र जुरहुमी मुतवल्ली हुवा। जब बनू जुरहुम ह़रम शरीफ़ की बे हुरमती करने और का'बे के माल अपने ख़र्च में लाने लगे तो बनू बक्र बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन किनाना और ग़बशान ख़ुज़ाई ने उन को मक्का से यमन की त़रफ़ निकाल दिया। उस वक़्त से ख़ुज़ाआ़ मुतवल्ली हुवे। ख़ुज़ाआ़ में से अख़ीर मुतवल्ली हुलैल बिन ह़बशिय्या था जिस के बा'द तौलियत क़ुसा के हाथ आई जैसा कि पहले मज़्कूर हुवा। अ़म्र बिन ह़ारिस बिन मज़्ज़ाज़ जुरहुमी ने जाते वक़्त का'बे के हर दो ग़ज़ाले त़िलाई[4] और ह़जर रुक्न को ज़म ज़म में डाल कर उसे ऐसा बन्द कर दिया था कि मुद्दत गुज़रने पर किसी को उस का निशान तक मा'लूम न रहा। आख़िरे कार अ़ब्दुल मुत्त़लिब को ख़्वाब में उस के खोदने का इशारा हुवा। अ़ब्दुल मुत्त़लिब के हां उस वक़्त सिर्फ़ एक साहि़बज़ादा ह़ारिस था उसी को साथ ले कर खोदने लगे। जब कूएं का बालाई हि़स्सा नज़र आया तो ख़ुशी में तक्बीर कही। खोदते खोदते हर दो ग़ज़ाल[5] और कुछ तल्वारें और ज़िरहें बर आमद हुईं। येह देख कर क़ुरैश ने कहा कि इस में हमारा भी ह़क़ है। अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने बजाए मुक़ाबले के इस मुआ़मले को क़ुर्आ़ अन्दाज़ी पर छोड़ा चुनान्चे, हर दो ग़ज़ाल का क़ुर्आ़ का'बे पर, तल्वारों और ज़िरहों का क़ुर्आ़ अ़ब्दुल मुत्त़लिब पर पड़ा और क़ुरैश के नाम कुछ न निकला। इस त़रह़ अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने ज़म ज़म को खोद कर दुरुस्त किया। उस वक़्त से ज़म ज़म ही का पानी ह़ाजियों के काम आने लगा और मक्का के कूओं[6] के पानी की ज़रूरत न रही।[7]

---

1 ......ख़ुदा को एक मानने वाला। 2 ......जिन की दुआ़एं क़बूल हों।

3 ......السيرة الحلبية، باب نسبه الشريف،ج١،ص٩،١٠ ملتقطاً و الكامل فی التاريخ لابن اثير، نسب رسول اللّٰه...الخ، ج١، ص٥٥٣ علميه۔

4 ......सोने के दोनों हिरन।

5 ......दोनों हिरन। 6 ......कूंओं

7 ......السيرة الحلبية، باب تزويج عبد اللّٰه...الخ،ج١،ص٤٨۔٥٢ ملتقطاً والسيرة النبوية لابن هشام، ذكرحضر زم زم...الخ، ص٦١ ملخصاً علميه۔

www.dawateislami.net

ज़म ज़म के खोदने में अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने अपने मुआ़विनीन की क़िल्लत मह़सूस कर के येह मन्नत मानी थी कि अगर मैं अपने सामने दस बेटों को जवान देख लूं तो इन में से एक को ख़ुदा की राह में क़ुरबान करूंगा। जब मुराद बर आई तो ईफ़ाए नज़्र के लिये[1] दसों बेटों को ले कर का'बा में आए और पुजारी से अपनी नज़्र का ह़ाल बयान किया और कहा कि इन दसों पर क़ुर्आ डालो, देखो किस का नाम निकलता है? चुनान्चे, हर एक ने अपने अपने नाम का क़ुर्आ दिया। एक त़रफ़ पुजारी क़ुर्आ निकाल रहा था दूसरी त़रफ़ अ़ब्दुल मुत्त़लिब यूं दुआ़ कर रहे थे : "या **अल्लाह** ! मैं ने इन में से एक की क़ुरबानी की मन्नत मानी थी अब मैं इन पर क़ुर्आ अन्दाज़ी करता हूं, तू जिसे चाहता है उस का नाम निकाल।" इत्तिफ़ाक़ से अ़ब्दुल्लाह का नाम निकला जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिद और अ़ब्दुल मुत्त़लिब को सब बेटों में प्यारे थे। अ़ब्दुल मुत्त़लिब छुरी हाथ में ले कर उन को क़ुरबान गाह की त़रफ़ ले चले मगर क़ुरैश और अ़ब्दुल्लाह के भाई मानेअ़ हुवे, आख़िरे कार अ़ब्दुल्लाह और दस ऊंटों पर क़ुर्आ डाला गया इत्तिफ़ाक़ येह कि अ़ब्दुल्लाह ही के नाम पर क़ुर्आ निकला फिर अ़ब्दुल्लाह और बीस ऊंटों पर क़ुर्आ डाला गया मगर नतीजा वोही निकला। बढ़ाते बढ़ाते सो ऊंटों पर नोबत पहुंची तो क़ुर्आ ऊंटों पर निकला, चुनान्चे, अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने सो ऊंट क़ुरबानी किये और अ़ब्दुल्लाह बच गए इसी वासित़े आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَنَا ابْنُ الذَّبِیْحَیْن या'नी मैं दो ज़बीह़ (इस्माईल व अ़ब्दुल्लाह) का बेटा हूं।[2]

जब अ़ब्दुल मुत्त़लिब ऊंटों की क़ुरबानी से फ़ारिग़ हुवे तो अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शादी की फ़िक्र हुई। अ़ब्दुल्लाह नूरे मुह़म्मदी के सबब कमाले ह़ुस्नो जमाल रखते थे। क़ज़ीए ज़ब्ह़[3] से और मशहूर हो गए क़ुरैश की औ़रतें इन की त़रफ़ माइल थीं, मगर **अल्लाह** तआ़ला ने इन को पर्दए इ़फ़्फ़त व इ़स्मत में मह़फ़ूज़ रखा। अ़ब्दुल मुत्त़लिब इन के लिये ऐसी औ़रत की तलाश में थे जो शरफ़, नसबो ह़सब व इ़फ़्फ़त में मुमताज़ हो। इस लिये वोह इन को बनू ज़ोहरा के सरदार वह्ब बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन ज़ोहरा बिन किलाब बिन मुर्रह के हां ले गए वह्ब की बेटी आमिना ज़ोहरिय्या क़रशिय्या नसब व शरफ़ में क़ुरैश की तमाम औ़रतों से अफ़्ज़ल थीं, अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने वह्ब को अ़ब्दुल्लाह की शादी का पैग़ाम दिया और वहीं अ़क़्द हो गया। बा'ज़े[4] कहते हैं कि आमिना अपने चचा वुहैब के पास रहती थीं अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने वुहैब को पैग़ाम दिया और निकाह़ हो

---

1 ......मन्नत पूरी करने के लिये।

2 ......السيرة الحلبية، باب تزويج عبد الله...الخ،ج١، ص٥٣_٥٥ ملتقطاً علميه۔

3 ......ज़ब्ह़ के मुआ़मले।

4 ......इस्तीआ़ब इब्ने अ़ब्दुलबर्र। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

गया और इसी मजलिस में ख़ुद अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने वुहैब की साहि़बज़ादी हाला से शादी की।[1]

अ़ब्दुल मुत्त़लिब के हां ब क़ौले इब्ने हिशाम पांच बीवियों से दस लड़के और छे लड़कियां पैदा हुईं जिन की तफ़्सील यूं है :

ज़ौजा का नाम	अवलाद
समरा बिन्ते जुन्दब हवाज़िनिय्या	ह़ारिस[2]
लुबना बिन्ते हाजिर खुज़ाइय्या	अबू लहब (अस्ली नाम अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा)
फ़ाति़मा बिन्ते अ़म्र मख़्ज़ूमिया	अबू त़ालिब (अस्ली नाम अ़ब्दे मनाफ़), ज़ुबैर, अ़ब्दुल्लाह (वालिदे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم), बैज़ा, आ़तिका, बर्रह, उमैमा, अरवा
हाला बिन्ते वुहैब ज़ोहरिया	ह़म्ज़ा, मुक़व्वम, ह़ज्ल, सफ़िय्या
नुतैला बिन्ते ख़ब्बाब ख़ज़्रजिय्या	अ़ब्बास, ज़िरार[3]

जब नूरे मुह़म्मदी ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रेह़्मे मुबारक में मुन्तक़िल हो गया तो कई अ़जाइबात ज़ुहूर में आए। उस साल क़ुरैश में सख़्त क़ह़्त़ साली थी, इस नूर की बरकत से ज़मीन पर जा बजा रूईदगी[4] की मख़मली चादर नज़र आने लगी। दरख़्तों ने अपने फल झुका दिये और मक्का में इस क़दर फ़राख़ साली हुई कि इस साल को [5]"سَنَۃُ الْفَتْحِ وَالْاِبْتِہَاج" कहने लगे। क़ुरैश का हर एक चार पाये फ़सीह़ अ़रबी ज़बान में ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़म्ल की ख़बर देने लगा, बादशाहों के तख़्त और बुत औंधे गिर पड़े, मशरिक़ो मग़रिब के वह़्शी चरिन्दे परन्दे और दरयाई जानवरों ने एक दूसरे को ख़ुश ख़बरी दी। जिन्न पुकार उठे कि ह़ज़रत का ज़माना क़रीब आ गया, कहानत की आबरू जाती रही और रुहबानिय्यत पर ख़ौफ़ त़ारी हुवा। ह़ज़रत की वालिदए माजिदा ने ख़्वाब में सुना कि कोई कह रहा है : "तेरे पेट में जहान का सरदार है, जब वोह पैदा हों तो उन का नाम मुह़म्मद रखना।"[6]

---

1 ......السیرۃ الحلبیۃ، باب تزویج عبد اللّٰہ...الخ، ج۱، ص۵۸۔۵۹ ملتقطاً والاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، محمد رسول اللّٰہ...الخ، ج۱، ص۱۳۴ علمیہ۔

2 ......बक़ौले वाक़िदी ह़ारिस की मां का नाम सफ़िय्या बिन्ते जुन्दब है और अरवा ह़ारिस की सगी बहन है। 12 मिन्ह

3 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، اولاد عبدالمُطَّلِب بن ھاشم، ص۴۷ علمیہ۔

4 ......हरयाली।

5 ......फ़त्ह़ और ख़ुश ह़ाली का साल।

6 ......السیرۃ الحلبیۃ، باب ذکر حمل امہ بہ...الخ، ج۱، ص۶۹۔۷۰ ملتقطاً علمیہ۔

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात

जब क़ौले मशहूर के मुवाफ़िक़ ह़म्ल शरीफ़ को दो महीने पूरे हो गए तो ह़ज़रत के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने आप के वालिद ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मदीने में खजूरें लाने के लिये भेजा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वहां अपने वालिद के ननिहाल बनू अ़दी बिन नज्जार में एक माह बीमार रह कर इन्तिक़ाल फ़रमा गए और वहीं दारे नाबिग़ा में दफ़्न हुवे। बा'ज़े कहते हैं कि अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को तिजारत के लिये मुल्के शाम भेजा था वोह वापस आते हुवे मदीने में बनू अ़दी में ठहरे और बीमार हो कर यहीं रह गए। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का तर्का एक लौंडी उम्मे ऐमन बरका ह़बशिय्या और पांच ऊंट और कुछ बकरियां थीं।[1]

वाक़िअ़ए अस्ह़ाबे फ़ील

तवल्लुद शरीफ़ से 55 दिन पहले एक वाक़िआ़ पेश आया जो अस्ह़ाबे फ़ील का वाक़िआ़ कर के मशहूर है। इस वाक़िए की कैफ़िय्यत बत़रीक़े इख़्तिसार यूं है कि उस वक़्त शाहे ह़बशा की त़रफ़ से अबरहा यमन का गवर्नर था उस ने शहरे सन्आ़ में एक कलीसा बनाया और शाहे ह़बशा को लिखा कि मैं ने आप के लिये एक बे नज़ीर कलीसा बनवाया है। मैं कोशिश कर रहा हूं कि अ़रब के लोग आयिन्दा ख़ानए का'बा को छोड़ कर यहीं ह़ज व त़वाफ़ किया करें। जब येह ख़बर अ़रब में मशहूर हो गई तो बनी किनाना में से एक शख़्स ने ग़ुस्से में आ कर उस कलीसा में बोल व बराज़ कर दिया। येह देख कर अबरहा आग बगूला हो गया और उस ने क़सम खाई कि का'बे की ईंट से ईंट न बजा दूं तो मेरा नाम अबरहा नहीं। उसी वक़्त फ़ौज व हाथी ले कर का'बे पर चढ़ाई की यहां तक कि मक़ामे मुग़म्मस में जो मक्कए मुशर्रफ़ा से दो मील है जा उतरा और एक सरदार को हुक्म दिया कि अहले मक्का से छेड़ छाड़ शुरूअ़ करे। चुनान्चे, वोह सरदार क़ुरैश के ऊंट और भेड़ बकरियां हांक लाया जिन में दो सो ऊंट अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन हाशिम के भी थे। बा'दे अज़ां अबरहा की त़रफ़ से हुनात़ा ह़िमयरी गया और अ़ब्दुल मुत्त़लिब को अबरहा के पास ले आया। अबरहा ने अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बड़ा इकराम किया और दोनों में ब ज़रीअ़ए तर्जुमान येह गुफ़्तगू हुई :

1 ......السيرة الحلبية، باب وفاة والده...الخ، ج١، ص٧٤، ٧٧ ملتقطاً علميه۔

www.dawateislami.net

अबरहा : तुम क्या चाहते हो ?

अ़ब्दुल मुत्त़लिब : मेरे ऊंट वापस कर दो।

अबरहा : (मुतअ़ज्जिब हो कर) तुम्हें ऊंटों का तो ख़याल है मगर ख़ानए का'बा जो तुम्हारा और तुम्हारे आबाओ अज्दाद का दीन है जिसे मैं ढाने आया हूं उस का नाम तक नहीं लेते।

अ़ब्दुल मुत्त़लिब : मैं ऊंटों का मालिक हूं, ख़ानए का'बा का मालिक और है वोह अपने घर को बचाएगा ।

अबरहा : ख़ानए का'बा मुझ से बच नहीं सकता।

अ़ब्दुल मुत्त़लिब : फिर तुम जानो और वोह।

इस गुफ़्त्गू के बा'द अ़ब्दुल मुत्त़लिब अपने ऊंट ले कर मक्के में वापस आ गया और कुरैश से कहने लगा कि शहरे मक्का से निकल जाओ और पहाड़ियों के दर्रों में पनाह लो। येह कह कर खुद चन्द आदमियों को साथ ले कर ख़ानए का'बा में गया और दरवाज़े का ह़ल्क़ा पकड़ कर यूं दुआ़ की :

لَا هُمَّ اِنَّ الْعَبْدَ يَمْنَعُ رَحْلَهٗ فَامْنَعْ حِلَالَكْ

لَا يَغْلِبَنَّ صَلِيْبُهُمْ وَمِحَالُهُمْ غَدْوًا مِحَالَكْ

اِنْ كُنْتَ تَارِكَهُمْ وَقِبْلَتَنَا فَاَمْرٌ مَّا بَدَا لَكْ

तर्जमए अश्आ़र : ऐ अल्लाह ! बन्दा अपने घर को बचाया करता है तू भी अपना घर बचा, ऐसा न हो कि कल को उन की सलीब और उन की तदबीर तेरी तदबीर पर ग़ालिब आ जाए, अगर तू हमारे क़िबले को उन पर छोड़ने लगा है तो हुक्म कर जो चाहता है।

इधर अ़ब्दुल मुत्त़लिब येह दुआ़ कर के अपने साथियों समेत पहाड़ों के दर्रे[1] में पनाह गुज़ीं हुवा, उधर सुब्ह़ को अबरहा ख़ानए का'बा को ढाने के लिये फ़ौज और हाथी ले कर तय्यार हुवा। जब उस ने हाथी का मुंह मक्के की त़रफ़ किया तो वोह बैठ गया, बोहतेरे आंक्स[2] मारे मगर न उठा, आख़िर मक्के की त़रफ़ से उस का मुंह मोड़ कर उठाया तो उठा और तेज़ भागने लगा, ग़रज़ जब मक्के की त़रफ़ उस का मुंह करते तो बैठ जाता और किसी दूसरी त़रफ़ करते तो उठ कर भागता, इसी ह़ाल में अल्लाह तआ़ला ने समन्दर की त़रफ़ से अबाबीलों के ग़ौल के

1 ......दो पहाड़ों के दरमियान घाटी।

2 ......आंक्स (آں۔کس) : लोहे का आंकड़ा जिस से कोंच कर उ़मूमन फ़ील बान हाथी को चलाता और क़ाबू में रखता है।

www.dawateislami.net

ग़ौल भेजे, जिन के पास कंकरियां थीं, एक एक चोंच में और दो दो पन्जों में उन्हों ने कंकरों का मींह बरसाना शुरूअ़ किया, जिस पर कंकर गिरती हलाक हो जाता। येह देख कर अबरहा का लश्कर भाग निकला। इस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने अपना घर दुश्मन से बचा लिया, कुरआने मजीद सूरए फ़ील में इसी वाक़िए की त़रफ़ इशारा है।(1)

क़िस्सए अस्ह़ाबे फ़ील में दो त़रह़ से ह़ज़रत की करामत ज़ाहिर है, एक तो येह कि अगर अस्ह़ाबे फ़ील ग़ालिब आते तो वोह ह़ज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की क़ौम को क़ैद कर लेते और ग़ुलाम बना लेते, इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने अस्ह़ाबे फ़ील को हलाक कर दिया ताकि उस के ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ल व तुफ़ूलिय्यत की ह़ालत में असीरी व ग़ुलामी का धब्बा न लगे। दूसरे येह कि अस्ह़ाबे फ़ील नसारा अहले किताब थे जिन का दीन कुरैश के दीन से जो बुत परस्त थे यक़ीनन बेहतर था मगर येह कि ह़ज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के वुजूदे बा जूद की बरकत थी कि **अल्लाह** तआ़ला ने बैतुल्लाह शरीफ़ की ह़ुरमत क़ाइम रखने के लिये कुरैश को बा वुजूद बुत परस्त होने के अहले किताब पर फ़त्ह़ दी। येह वाक़िआ़ ह़ज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नबुव्वत का पेश ख़ैमा था क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन में इसी बैतुल्लाह की ता'ज़ीम इसी के ह़ज और इसी की त़रफ़ नमाज़ का ह़ुक्म हुवा।

तवल्लुद शरीफ़

जब ह़म्ल शरीफ़ को चांद के ह़िसाब से पूरे नव महीने हो गए तो ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारह रबीउ़ल अव्वल दो शम्बा के दिन फ़ज्र के वक़्त कि अभी बा'ज़ सितारे आस्मान पर नज़र आ रहे थे पैदा हुवे। दोनों हाथ ज़मीन पर रखे हुवे, सर आस्मान की त़रफ़ उठाए हुवे (जिस से आप अपने उ़लूव्वे मर्तबा की त़रफ़ इशारा फ़रमाते रहे थे), बदन बिल्कुल पाकीज़ा और तेज़ बू कस्तूरी की त़रह़ ख़ुश्बूदार, ख़त्ना किये हुवे, नाफ़ बुरीदा,(2) चेहरा चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ नूरानी, आंखें कुदरते इलाही से सुर्मगीं, दोनों शानों के दरमियान मोहरे नबुव्वत दरख़्शां,(3) आप की वालिदा ने आप के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब को जो उस वक़्त ख़ानए का'बा का त़वाफ़ कर रहे थे बुला भेजा। वोह ह़ज़रत को देख कर बहुत ख़ुश हुवे और बैतुल्लाह शरीफ़ में ले जा कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सिद्क़े दिल से दुआ़ की और **अल्लाह** तआ़ला

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، امر الفيل وقصة النسأة، ص٢٢-٢٦ملخصاً علميه۔

2 ......या'नी सह़ीह़ व सलामत बनी हुई नाफ़। 3 ......चमकती हुई।

www.dawateislami.net

की इस ने'मते उ़ज़्मा का शुक्रिया अदा किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा अबू लहब की लौंडी सुवैबा ने अबू लहब को तवल्लुद शरीफ़ की ख़बर दी तो उस ने इस खुशी में सुवैबा को आज़ाद कर दिया।

हज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जिस महीने में पैदा हुवे इस का नाम तो रबीअ़ था ही मगर वोह मौसिम भी रबीअ़ (बहार) का था। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

رَبِيْعٌ فِيْ رَبِيْعٍ فِيْ رَبِيْعٍ   وَ نُوْرٌ فَوْقَ نُوْرٍ فَوْقَ نُوْرٍ

चेहरए मुबारक 12   मौसिमे रबीअ़ 12   माहे तवल्लुद शरीफ़ 12

तवल्लुद शरीफ़ की खुशी का समरा

अबू लहब की मौत के एक साल बा'द हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़्वाब में अबू लहब को बुरे ह़ाल में देखा, पूछा : तुझे क्या मिला ? अबू लहब ने जवाब दिया : لَمْ اَلْقَ بَعْدَكُمْ غَيْرًا اَنِّیْ سُقِيْتُ فِی هٰذِهٖ بِعَتَاقَتِیْ ثُوَيْبَةَ[1] तुम्हारे बा'द मुझे कुछ आराम नहीं मिला सिवाए इस के कि सुवैबा को आज़ाद करने के सबब से ब मिक़्दार इस मुग़ाक (मियाने इबहाम व सबाबा)[2] के पानी मिल जाता है जिसे मैं पी लेता हूं।

इस ह़दीस[3] उ़रवा बिन ज़ुबैर का मत़लब येह है कि अबू लहब बता रहा है कि मेरे तमाम आ'माल राइगां गए सिवाए एक के और वोह येह कि मैं ने ह़ज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की विलादत की खुशी में अपनी लौंडी सुवैबा को आज़ाद कर दिया था, इस एक अ़मल का फ़ाइदा बाक़ी रह गया और वोह यूं है कि इस के बदले हर दो शम्बा को इबहाम व सबाबा के दरमियानी मुग़ाक की मिक़्दार मुझे पानी मिल जाता है जिसे मैं उंगलियों से चूस लेता हूं और अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो जाती है। येह हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खुसूसिय्यात से है, वरना काफ़िर का कोई अ़मल फ़ाइदा न देगा।

---

1 ......صحيح البخارى، كتاب النكاح، باب و امهاتكم اللاتى ارضعنكم، الحديث: ٥١٠١، ج٣، ص٤٣٢ و شرح الزرقانى على المواهب، ذكر رضاعه وما معه، ج١، ص٢٦٠ علميه۔

2 ......या'नी अंगूठे और शहादत के दरमियान गढ़ा या गोश्त।

3 ......صحیح بخاری، کتاب النکاح، باب وامھتکم اللاتی ارضعنکم، نیز زرقانی علی المواهب (جز اوّل، ص ٣٨)۔

www.dawateislami.net

फ़क़ीर तवक्कुली[1] गुज़ारिश करता है कि जब हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के तवल्लुद शरीफ़ पर ख़ुशी मनाने से एक काफ़िर को येह फ़ाइदा पहुंचा तो क़ियास कीजिये कि एक मुसलमान जो हर साल मौलूद शरीफ़ कराता और हुज़ूर अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तवल्लुद शरीफ़ पर ख़ुशियां मनाता इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो जाए तो उसे किस क़दर फ़ाइदा पहुंचेगा।

तवल्लुद शरीफ़ के वक़्त ख़वारिक़

तवल्लुद शरीफ़ के वक़्त ग़ैब से अ़जीबो ग़रीब और ख़ारिक़े आ़दत[2] उमूर ज़ाहिर हुवे ताकि आप की नबुव्वत की बुन्याद पड़ जाए और लोगों को मा'लूम हो जाए कि आप **अल्लाह** तआ़ला के बरगुज़ीदा व पसन्दीदा हैं। चुनान्चे, सितारे ता'ज़ीम के लिये झुक कर आप के क़रीब आ गए और उन के नूर से ह़रम शरीफ़ की पस्त ज़मीन और टीले रोशन हो गए। आप के साथ ऐसा नूर निकला कि मक्कए मुशर्रफ़ा के रहने वालों को मुल्के शाम के क़ैसरी मह़ल नज़र आ गए। शयात़ीन पहले आस्मानों पर चले जाते और काहिनों को बा'ज़ मुग़य्यबात की ख़बर दे देते थे और वोह लोगों को कुछ अपनी त़रफ़ से मिला कर बता दिया करते थे। अब आस्मानों में इन का आना जाना बन्द कर दिया गया और आस्मानों की ह़िफ़ाज़त शहाबे साक़िब से कर दी गई। इस त़रह़ वह़्य व ग़ैरे वह़्य में ख़ल्त़ मल्त़ हो जाने का अन्देशा जाता रहा। शहरे मदाइन में मह़ले किस्रा फट गया और इस के चौदह कुंगरे गिर पड़े। इस में इशारा था कि चौदह हुक्मरानों के बा'द मुल्के फ़ारिस ख़ादिमाने इस्लाम के क़ब्ज़े में आ जाएगा।[3] फ़ारिस के आतश कदे ऐसे सर्द पड़ गए कि हर चन्द इन में आग जलाने की कोशिश की जाती थी मगर न जलती थी। बुह़ैरए सावा जो हम्दान वुक़ुम के दरमियान छे मील लम्बा और इतना ही चौड़ा था और जिस के किनारों पर शिर्क व बुत परस्ती हुवा करती थी यका यक बिल्कुल ख़ुश्क हो गया। वादिये सावा (शाम व कूफ़ा के दरमियान) की नदी जो बिल्कुल ख़ुश्क पड़ी थी लबालब बहने लगी।

---

1 ......राक़िमुल हुरूफ़।　　2 ......ख़िलाफ़े आ़दत।

3 ......चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया, इन हुक्मरानों के नाम येह हैं : नौशीरवां, हुरमुज़ बिन नौशीरवां, ख़ुसरो परवेज़ बिन हुरमुज़, शीरवयह बिन ख़ुसरो परवेज़, अज़्द शीर बिन शीरवयह, शहर यार या शहर यराज़, किस्रा बिन शीरवयह (बक़ौल बा'ज़ बिन परवेज़) मलिका बूरान हमशीरा शीरवयह, फ़ैरूज़ ख़ुफ़्श, आरज़ मीदख़्त हमशीरा शीरवयह, ख़िरज़ाद ख़ुसरुवानह अवलाद परवेज़ बिन हुरमुज़, इब्ने मिहर जिस्निस अज़ नस्ल अर्दशीर बिन बाबक, फ़ैरूज़ बिन मिहरान जिस्निस, यज़्द बिन शहरयार बिन परवेज़। **12 मिन्ह**

www.dawateislami.net

रज़ाअ़त

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आप की वालिदए माजिदा ने कई दिन दूध पिलाया फिर अबू लहब की आज़ाद की हुई लौंडी सुवैबा ने चन्द रोज़ ऐसा ही किया, बा'दे अज़ां ह़लीमा सा'दिया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने येह ख़िदमत अपने ज़िम्मे ली।

कु़रैश में दस्तूर था कि शहर के लोग अपने शीर ख़्वार बच्चों को बदवी आबादी[1] में भेज दिया करते थे ताकि बच्चे बद्दुओं में[2] पल कर फ़साह़त और अ़रब की ख़ालिस ख़ुसूसिय्यात ह़ासिल करें और मुद्दते रज़ाअ़त के ख़त्म होने पर इवज़ाना दे कर वापस ले आते थे। इस लिये नवाह़े मक्का के क़बाइल की बदवी औ़रतें साल में दो दफ़्आ़ रबीअ़ व ख़रीफ़ में बच्चों की तलाश में शहरे मक्का में आया करती थीं। चुनान्चे, इस दफ़्आ़ क़ह़त़ साली में ह़लीमा सा'दिया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا अपने क़बीले की दस औ़रतों के साथ इसी ग़रज़ से शहर में आई। ह़लीमा के साथ उस का शीर ख़्वार बच्चा अ़ब्दुल्लाह नाम, उस का शोहर ह़ारिस बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा सा'दी, एक दराज़ गोश और एक ऊंटनी थी। भूक के मारे न ऊंटनी दूध का एक क़त़रा देती थी और न ह़लीमा की छातियों में काफ़ी दूध था, इस लिये बच्चा बे चैन रहता था और रात को उस के रोने के सबब से मियां बीवी सो भी न सकते थे, अब क़िस्मत जागी तो ह़लीमा को जो शरफ़ो कमाल में मश्हूर थी ऐसा मुबारक रज़ीअ़[3] मिल गया कि सारी ज़ह़मत काफ़ूर हो गई। देखते ही दाईं छाती से लगा लिया। दूध ने जोश मारा ह़ज़रत ने पिया और बाईं छाती छोड़ दी जिस से ह़लीमा के बच्चे ने पिया, इस के बा'द भी ऐसा ही होता रहा, येह अ़द्ले जिबिल्ली[4] का नतीजा था। डेरे पर पहुंची तो फिर दोनों बच्चों ने सैर हो कर दूध पिया। ह़ारिस ने उठ कर ऊंटनी को जो देखा तो उस के थन दूध से भरे हुवे थे जिस से मियां बीवी सैर हो गए और रात आराम से कटी। इस त़रह़ तीन रातें मक्का में गुज़ार कर ह़ज़रते आमिना رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को वदाअ़ कर दिया गया और ह़लीमा अपने क़बीले को आई, उस ने ह़ज़रत को अपने आगे दराज़ गोश पर सुवार कर लिया। दराज़ गोश ने पहले का'बे की त़रफ़ तीन सजदे कर के सर आस्मान की त़रफ़ उठाया गोया शुक्रिया अदा किया कि उस से येह ख़िदमत ली गई, फिर रवाना हुई और ह़ज़रत की बरकत से ऐसी चुस्तो चालाक बन गई कि क़ाफ़िले के सब चोपायों से आगे चल रही थी ह़ालांकि जब आई थी तो कमज़ोरी के सबब से सब से पीछे रह जाती थी। साथ की औ़रतें ह़ैरान हो कर पूछती थीं अबू ज़ुऐब की बेटी ! क्या येह वोही दराज़ गोश है ? ह़लीमा जवाब देती वल्लाह येह वोही है। बनू सा'द में उस वक़्त

---

1 ......देहात। 2 ......देहात में रहने वालों में।
3 ......दूध पीता। 4 ......फ़ित़्री अ़द्ल।

www.dawateislami.net

सख़्त क़ह़्त था मगर ह़ज़रत की बरकत से ह़लीमा के मवेशी सैर हो कर आते और ख़ूब दूध देते और दूसरों के मवेशी भूके आते और वोह दूध का एक क़त़रा भी न देते, इस त़रह़ ह़लीमा की सब तंगदस्ती दूर हो गई।(1)

ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ह़ज़रत (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को किसी दूर जगह न जाने देती थी, एक रोज़ वोह ग़ाफ़िल हो गई और ह़ज़रत अपनी रज़ाई बहन शैमा के साथ दो पहर के वक़्त भेड़ों के रेवड़ में तशरीफ़ ले गए माई ह़लीमा तलाश में निकली और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शैमा के साथ पाया। कहने लगी : तपश में !!! शैमा बोली :(2) "अम्मां जान ! मेरे भाई ने तपश मह़सूस नहीं की, बादल आप पर साया करता था, जब आप ठहर जाते तो बादल भी ठहर जाता और जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो बादल भी चलता, येही ह़ाल रहा यहां तक कि हम इस जगह आ पहुंचे हैं।"(3)

जब ह़ज़रत दो साल के हो गए तो माई ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दूध छुडा दिया और आप को आप की वालिदा के पास ले कर आई और कहा : काश ! तू अपने बेटे को मेरे पास और रहने दे ताकि क़वी हो जाए क्यूंकि मुझे इस पर वबाए मक्का का डर है। येह सुन कर बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के साथ वापस कर दिया। ह़लीमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का बयान है कि हमें वापस आए दो या तीन महीने गुज़रे थे कि एक रोज़ ह़ज़रत अपने रज़ाई भाई अ़ब्दुल्लाह के साथ हमारे घरों के पीछे हमारी भेड़ों में थे कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का भाई दौड़ता आया, कहने लगा कि मेरे इस क़ुरैशी भाई के पास दो शख़्स आए जिन पर सफ़ेद कपड़े हैं उन्हों ने पहलू के बल लिटा कर इस का पेट फाड़ दिया। येह सुन कर मैं और मेरा ख़ावन्द दौड़े गए, देखा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हैं और चेहरे का रंग बदला हुवा है, हम दोनों आप के गले लिपट गए और पूछा : बेटा ! तुझे क्या हुवा ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बयान किया कि दो शख़्स मेरे पास आए जिन पर सफ़ेद कपड़े थे, उन्हों ने पहलू के बल लिटा कर मेरा पेट फाड़ दिया और उस में से एक ख़ून की फटकी निकाल कर कहा : "هٰذَا حَظُّ الشَّيۡطٰنِ مِنۡكَ" (येह तुझ से शैत़ान का ह़िस्सा है) फिर इसे ईमान व ह़िक्मत से भर कर सी दिया। पस हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने ख़ैमे में ले आए। मेरे ख़ावन्द ने कहा : ह़लीमा ! मुझे डर है इस लड़के को कुछ आसेब है, आसेब ज़ाहिर होने से पहले इसे इस के कुम्बे में छोड़ आ।

---

1 ......مواہب وزرقانی۔(المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، ذکر رضاعه وما معه، ج۱،ص۲۶۶۔۲۷٤ملخصاً علميه۔)

2 ......इब्ने सा'द व अबू नुऐ़म वग़ैरा।

3 ......المواهب اللدنية، ذکر رضاعه وما معه، ج۱،ص۲۷۸ علميه۔

www.dawateislami.net

मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप की वालिदा के पास लाई और बड़े इस्रार के बा'द उस से ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान की। मां ने कहा : अल्लाह की क़सम ! इन पर शैत़ान को दख़्ल नहीं, मेरे बेटे की बड़ी शान है।(1)

तअ़द्दुदे शक़्क़े सद्र

वाज़ेह़ रहे कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का शक़्क़े सद्र(2) चार मरतबा हुवा है, एक वोह जिस का ज़िक्र ऊपर हुवा, येह इस वासित़े था कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वसाविसे शैत़ान से जिन में बच्चे मुब्तला हुवा करते हैं मह़फ़ूज़ रहें और बचपन ही से अख़्लाक़े ह़मीदा पर परवरिश पाएं, दूसरी मरतबा दस बरस की उ़म्र में हुवा ताकि आप कामिल तरीन अवसाफ़ पर जवान हों, तीसरी मरतबा ग़ारे ह़िरा में बिअ़्सत के वक़्त हुवा ताकि आप वह़्य के बोझ को बरदाश्त कर सकें, चौथी मरतबा शबे मे'राज में हुवा ताकि आप मुनाजाते इलाही के लिये तय्यार हो जाएं।(3)

ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात

ह़ज़रत (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की उ़म्र मुबारक छे साल की हुई तो आप की वालिदा आप को साथ ले कर मदीने में आप के दादा के ननिहाल बनू अ़दी बिन नज्जार में मिलने गईं बा'ज़ कहते हैं कि अपने शोहर की क़ब्र की ज़ियारत के लिये गई थीं। उम्मे ऐमन भी साथ थीं, जब वापस आईं तो रास्ते में मक़ामे अब्वा में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं और वहीं दफ़्न हुईं।(4)

हिजरत के बा'द जब ह़ज़रत (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का गुज़र बनू नज्जार पर हुवा तो अपने क़ियामे मदीना का नक़्शा सामने आ गया और अपने क़ियाम गाह को देख कर फ़रमाया : "इस घर में मेरी वालिदए मुकर्रमा मुझे ले कर ठहरी थीं मैं बनी अ़दी बिन नज्जार के तालाब में तैरा करता था।"(5)

अ़ब्दुल मुत्तलिब व अबू त़ालिब की कफ़ालत

उम्मे ऐमन ह़ज़रत (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को मक्के में लाईं और आप के दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब के ह़वाले किया। अ़ब्दुल मुत्तलिब आप की परवरिश करता रहा मगर जब

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، ذکر رضاعہ وما معہ، ج۱، ص۲۷۹۔۲۸۲ملخصاً علمیہ۔

2 ......सीनए मुबारक का चाक होना।

3 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،ذکر رضاعہ وما معہ، ج۱، ص۲۸۸ملخصاً علمیہ۔

4 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی،ذکروفاۃ امہ...الخ،ج۱،ص۳۰۸۔۳۰۹ملخصاً علمیہ۔

5 ......شرح الزرقانی علی المواھب،باب ذکر وفاۃ امہ...الخ،ج۱،ص۳۰۹ علمیہ۔

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक आठ साल की हुई तो इस ने भी वफ़ात पाई और ह़स्बे वसिय्यत आप का चचा अबू त़ालिब जो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बाप और आप के वालिद अ़ब्दुल्लाह का मां जाया भाई था, आप की तर्बिय्यत का कफ़ील हुवा, अबू त़ालिब ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कफ़ालत को बहुत अच्छी त़रह़ अन्जाम दिया और आप को अपनी ज़ात और बेटों पर मुक़द्दम रखा।[1]

तुफ़ूलिय्यत में हज़रत की दुआ़ से नुज़ूले बारां

एक दफ़्आ़ अबू त़ालिब ने ह़ज़रत (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को साथ ले कर बारिश के लिये दुआ़ की थी जो हुज़ूर की बरकत से फ़ौरन क़बूल हुई थी। चुनान्चे, इब्ने अ़साकिर जुल्हुमा बिन उ़र्फ़ुत़ा से नाक़िल है कि उस ने कहा कि मैं मक्का में आया, अहले मक्का क़ह़त़ में मुब्तला थे, एक बोला कि लात व उ़ज़्ज़ा के पास चलो दूसरा बोला कि मनात के पास चलो। येह सुन कर एक ख़ूब रू जय्यदुर्राए[2] बूढ़े ने कहा : तुम कहां उलटे जा रहे हो ह़ालांकि हमारे दरमियान बाक़ियए इब्राहीम[3] व सुलालए इस्माईल[4] मौजूद है। वोह बोले : क्या तुम्हारी मुराद अबू त़ालिब है ? उस ने कहा : हां ! पस वोह सब उठे और मैं भी साथ हो लिया। जा कर दरवाज़े पर दस्तक दी अबू त़ालिब निकला तो कहने लगे : "अबू त़ालिब ! जंगल क़ह़त़ ज़दा हो गया, हमारे ज़न व फ़रज़न्द क़ह़त़ में मुब्तला हैं, चल मींह मांग।" पस अबू त़ालिब निकला उस के साथ एक लड़का था गोया आफ़्ताब था, जिस से हल्का सियाह बादल दूर हो गया हो, उस के गिर्द और छोटे छोटे लड़के थे। अबू त़ालिब ने उस लड़के को लिया और उस की पीठ का'बा से लगाई। उस लड़के (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इल्तिजा करने वाले की त़रह़ अपनी उंगली से आस्मान की त़रफ़ इशारा किया, ह़ालांकि उस वक़्त आस्मान पर कोई बादल का टुकड़ा न था, इशारा करना था कि चारों त़रफ़ से बादल आने लगे। बरसा और ख़ूब बरसा जंगल में पानी ही पानी नज़र आने लगा और आबादी व वादी सब सर सब्ज़ो शादाब हो गए इसी बारे में अबू त़ालिब ने कहा है :

وَاَبْیَضَ یُسْتَسْقَی الْغَمَامُ بِوَجْھِہٖ ثِمَالُ الْیَتَامٰی عِصْمَۃٌ لِّلْاَرَامِلِ

और गोरे रंग वाले जिन की ज़ात के वसीले से नुज़ूले बारां त़लब किया जाता है यतीमों के मल्जा व मावा रांड़ों[5] और दरवेशों के निगहबान।

---

1 ......المواھب اللدنیۃ وشرح الزرقانی، ذکر وفاۃ امہ...الخ، ج۱، ص۳۵۳-۳۵۴ ملخصاً علمیہ۔

2 ......अच्छी राए देने वाला।

3 ......ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की आल।

4 ......ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की अवलाद।

5 ......बेवाओं।

www.dawateislami.net

बिअ्सत के बा'द जब कुरैश आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सता रहे थे तो अबू त़ालिब ने एक क़सीदा लिखा था जो सीरते इब्ने हिशाम में दिया हुवा है। शे'रे मज़्कूर उसी क़सीदे में से है, इस शे'र में अबू त़ालिब कुरैश पर बचपन से ह़ज़रत के एह़सानात जता रहा है और गोया कह रहा है कि ऐसे क़दीम बा बरकत मोह़सिन के दरपए आज़ार[1] क्यूं हो ?[2] (मवाहिब व ज़ुरक़ानी)

शाम का पहला सफ़र

जब ह़ज़रत की उ़म्र मुबारक बारह साल की हुई तो अबू त़ालिब ह़स्बे मा'मूल क़ाफ़िलए कुरैश के साथ ब ग़रज़े तिजारत मुल्के शाम को जाने लगा, येह देख कर आप उस से लिपट गए। इस लिये उस ने आप को भी साथ ले लिया। जब क़ाफ़िला शहरे बसरा में पहुंचा तो वहां बहीरा राहिब ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर पहचान लिया और आप का हाथ पकड़ कर कहने लगा : येह सारे जहान का सरदार है, रब्बुल आ़लमीन का रसूल है, **अल्लाह** इस को तमाम जहान के लिये रह़मत बना कर भेजेगा। कुरैशियों ने पूछा : तुझे येह क्यूंकर मा'लूम हुवा ? उस ने कहा कि जिस वक़्त तुम घाटी से चढ़े कोई दरख़्त और पथ्थर बाक़ी न रहा मगर सजदे में गिर पड़ा। दरख़्त और पथ्थर पैग़म्बर के सिवा किसी दूसरे शख़्स को सजदा नहीं करते और मैं इन को मोहरे नबुव्वत से पहचानता हूं जो इन के शाने की हड्डी के नीचे सेब की मानिन्द है फिर उस राहिब ने खाना तय्यार किया। जब वोह उन के पास खाना लाया तो ह़ज़रत ऊंटों के चराने में मश्ग़ूल थे। उस ने कहा : आप को बुला लो। आप आए तो बादल ने आप पर साया किया हुवा था। जब आप क़ौम के नज़्दीक आए तो उन को दरख़्त के साए की त़रफ़ आगे बढ़े हुवे पाया जिस वक़्त आप बैठ गए तो दरख़्त का साया आप की त़रफ़ हट आया। फिर कहा : "तुम्हें ख़ुदा की क़सम ! बताओ इन का वली कौन है ?" उन्हों ने कहा : अबू त़ालिब। पस उस ने अबू त़ालिब से ब ताकीदे तमाम कहा कि इन को मक्का वापस ले जाओ क्यूंकि अगर तुम आगे बढ़ोगे तो डर है कहीं यहूदी इन को क़त्ल कर दें लिहाज़ा अबू त़ालिब आप को वापस ले आया और शहरे बसरा से आगे न बढ़ा और उस राहिब ने ह़ज़रत को ख़ुश्क रोटी और ज़ैतून का तेल ज़ादे राह दिया।[3]

---

1 ......तक्लीफ़ या ज़रर पहुंचाने की फ़िक्र में रहना।

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى،ذكروفاة امه...الخ،ج١،ص٣٥٥-٣٥٨ملخصاً علميه۔

3 ......ترمذی شریف۔(سنن الترمذی،کتاب مناقب رسول، باب ما جاء فی بدء نبوة النبی صلی الله علیه وسلم،ج٥، ص٣٦٥، الحدیث:٣٦٤٠ علميه۔)

www.dawateislami.net

हर्बे फ़िजार में शिर्कत

आग़ाज़े इस्लाम से पहले अ़रब में जो लड़ाइयां उन महीनों में पेश आती थीं जिन में लड़ना नाजाइज़ था हुरूबे फ़िजार कहलाती थीं। चौथी या'नी अख़ीर हर्बे फ़िजार में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी शिर्कत फ़रमाई थी। इस जंग का सबब येह था कि नो'मान बिन मुन्ज़िर शाहे ह़ीरा हर साल अपना तिजारती माल बाज़ारे उ़काज़ में फ़रोख़्त होने के लिये अशराफ़े अ़रब में से किसी की पनाह में भेजा करता था इस दफ़्आ़ जो उस ने ऊंट लदवा कर तय्यार किये, इत्तिफ़ाक़न अ़रब की एक जमाअ़त उस के पास ह़ाज़िर थी जिन में बनी किनाना में से बर्राज़ और हवाज़िन में से उ़र्वा रह़्ह़ाल मौजूद था। नो'मान ने कहा : इस क़ाफ़िले को कौन पनाह देगा ? बर्राज़ बोला : मैं बनी किनाना से पनाह देता हूं। नो'मान ने कहा : मैं ऐसा शख़्स चाहता हूं जो अहले नज्द व तिहामा से पनाह दे। येह सुन कर उ़र्वा ने कहा : اَكَلْبٌ خَلِيعٌ يُجِيرُهَا لَكَ(1) मैं अहले नज्द व तिहामा से पनाह देता हूं। बर्राज़ ने कहा : ऐ उ़र्वा क्या तू बनी किनाना से पनाह देता है ? उ़र्वा ने कहा : तमाम मख़्लूक़ से। पस उ़र्वा इस क़ाफ़िले के साथ निकला। बर्राज़ भी इस के पीछे रवाना हुवा और मौक़अ़ पा कर उ़र्वा का माहे ह़राम में क़त्ल कर डाला। हवाज़िन ने क़िसास में बर्राज़ को क़त्ल करने से इन्कार किया क्यूंकि उ़र्वा हवाज़िन का सरदार था, वोह क़ुरैश के किसी सरदार को क़त्ल करना चाहते थे मगर क़ुरैश ने मन्ज़ूर न किया इस लिये क़ुरैश व किनाना और हवाज़िन में जंग छिड़ गई किनाना का सिपह सालारे आ'ज़म ह़र्ब बिन उमय्या था जो अबू सुफ़्यान का बाप और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या का दादा था और हवाज़िन का सिपह सालारे आ'ज़म मसऊ़द बिन मुअ़त्तिब सक़फ़ी था। लश्करे किनाना के एक पहलू पर अ़ब्दुल्लाह बिन जुदआ़न और दूसरे पर कुरैज़ बिन रबीआ़ और क़ल्ब में ह़र्ब बिन उमय्या था। इस जंग में कई लड़ाइयां हुईं, इन में से एक में ह़ज़रत के चचा आप को भी ले गए, उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक चौदह साल की थी मगर आप ने खुद लड़ाई नहीं की बल्कि तीर उठा उठा कर अपने चचाओं को देते रहे चुनान्चे, फ़रमाते हैं : وَ كُنْتُ اُنَبِّلُ عَلٰى اَعْمَامِى(2) बा'ज़े कहते हैं : आप ने भी तीर फेंके थे बहर ह़ाल अख़ीर में फ़रीक़ैन में सुल्ह़ हो गई।(3)

---

1 ......क्या रान्दए क़ौम कुत्ता तेरे क़ाफ़िले को पनाह देगा ? देखो अ़क़्दुल फ़रीद लि इब्ने अ़ब्दे रब्बेह। 12 मिन्ह

2 ......और मैं तीर उठा कर अपने चचाओं को दे रहा था। 12 मिन्ह

3 ......العقد الفرید، الفجار الآخر، ج٦، ص١٠٣۔١٠٦ ملتقطاً علمیه۔

www.dawateislami.net

हिल्फ़ुल फ़ुज़ूल में शिर्कत

जब कुरैश ह़र्बे फ़िजार से वापस आए तो येह वाक़िआ़ पेश आया कि शहर ज़ुबैद का एक शख़्स अपना माले तिजारत मक्के में लाया जिसे आ़स बिन वाइल सह्मी ने ख़रीद लिया मगर क़ीमत न दी। इस पर ज़ुबैदी ने अपने अह़लाफ़ अ़ब्दुद्दार व मख़्ज़ूम व जु–मह़ व सह्म व अ़द्दी बिन का'ब से मदद मांगी मगर उन सब ने मदद देने से इन्कार किया। फिर इस ने जबले अबू क़ुबैस पर खड़े हो कर फ़रयाद की, जिसे कुरैश का'बा में सुन रहे थे, येह देख कर ह़ज़रत के चचा ज़ुबैर बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब की तह़रीक पर बनू हाशिम, ज़ोहरा और बनू असद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा सब अ़ब्दुल्लाह बिन जुदआ़न के घर में जम्अ़ हुवे और बाहम अ़हद किया कि हम ज़ालिम के ख़िलाफ़ मज़्लूम की मदद किया करेंगे और मज़ालिम[1] वापस करा दिया करेंगे, इस के बा'द वोह सब आ़स बिन वाइल के पास गए और उन से ज़ुबैदी का माल वापस कराया। इस मुआ़हदे को हि़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल इस वासिते़ कहते हैं कि येह मुआ़हदा उस मुआ़हदे के मुशाबे था जो क़दीम ज़माने में जुरहुम के वक़्त मक्का में बदीं मज़्मून हुवा था कि हम एक दूसरे की ह़क़ रसानी किया करेंगे और क़वी से ज़ईफ़ का और मुक़ीम से मुसाफ़िर का ह़क़ ले कर दिया करेंगे। चूंकि, जुरहुम के वोह लोग जो इस मुआ़हदे के मुह़र्रिक थे इन सब का नाम फ़ज़्ल था, जिन में से फ़ज़्ल बिन हा़रिस और फ़ज़्ल बिन वदाआ़ और फ़ज़्ल बिन फ़ज़ाला थे। इस लिये इस को "हि़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल" से मौसूम किया गया था।

इस मुआ़हदए कुरैश में आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी शरीक थे और अ़हदे नबुव्वत में फ़रमाया करते थे कि इस मुआ़हदे के मुक़ाबले में अगर मुझ को सुर्ख़ रंग के ऊंट भी दिये जाते तो मैं इसे न तोड़ता और एक रिवायत में है कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन जुदआ़न के घर में ऐसे मुआ़हदे में हाज़िर हुवा कि अगर इस से ग़ैर हाज़िरी पर मुझे सुर्ख़ रंग के ऊंट भी दिये जाते तो मैं पसन्द न करता और आज इस्लाम में भी अगर कोई मज़्लूम يَا آلَ حِلْفِ الْفُضُوْل[2] कह कर पुकारे तो मैं मदद देने को हाज़िर हूं।[3]

शाम का दूसरा सफ़र

जब ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक पच्चीस साल की हुई तो आप के सिद्क़ो अमानत का शोहरा दूर दूर तक पहुंच चुका था कि ज़बाने ख़ल्क़ ने आप को अमीन का लक़ब दे

1......ज़ुल्मन छीनी हुई अश्या। 2......ऐ हि़ल्फ़ुल फ़ुज़ूल वालो !

3......الروض الانف،حلف الفضول،ج۱،ص۲۴۳۔۲۴۴ ملخصاً علمیہ۔

www.dawateislami.net

दिया था येह देख कर ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जो एक मुअ़ज़्ज़ज़ मालदार ख़ातून थीं आप के पास पैग़ाम भेजा कि आप मेरा माले तिजारत ले कर शाम को जाएं जो मुआ़वज़ा मैं औरों को देती हूं आप को इस का मुज़ाअ़फ़ (दुगना) दूंगी। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़बूल फ़रमाया और माले तिजारत ले कर शाम को रवाना हुवे। ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا का ग़ुलाम मैसरा आप के साथ था जो आप की ख़िदमत करता था और आप की ज़रूरियात का मुतकफ़्फ़िल[(1)] था। जब आप शाम में पहुंचे तो बाज़ारे बसरा में एक राहिब नस्तूरा नाम की ख़ानक़ाह के नज़दीक उतरे। वोह राहिब मैसरा की त़रफ़ आया और उसे जानता था, कहा : "ऐ मैसरा ! येह कौन है जो इस दरख़्त के नीचे उतरा है।" मैसरा ने कहा : अहले ह़रम में से क़ुरैश से है। राहिब ने कहा : सिवाए नबी के इस दरख़्त के नीचे कभी कोई नहीं उतरा, फिर उस ने पूछा : क्या इस की दोनों आंखों में सुर्ख़ी है ? मैसरा ने जवाब दिया : हां और कभी दूर नहीं होती। येह सुन कर राहिब बोला : "येह वोही हैं और येही आख़िरुल अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हैं, काश ! मैं इन को पाऊं जिस वक़्त येह मबऊ़स होंगे।" और मैसरह से कहा कि "इन से जुदा न होना और नेक निय्यती से इन के साथ रहना क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने इन को नबुव्वत का शरफ़ अ़त़ा किया है।" ह़ज़रत बाज़ारे बसरा में ख़रीदो फ़रोख़्त कर के मक्का वापस आए जब ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जो औरतों के दरमियान एक बालाख़ाने में बैठी थी आप को आते हुवे देखा तो दो फ़िरिश्ते आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक पर धूप से साया किये हुवे थे। मैसरह ने ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से बयान किया कि मैं ने तमाम सफ़र में आप का येही ह़ाल देखा है और उस राहिब के क़ौल व वसिय्यत की ख़बर दी। **अल्लाह** तआ़ला ने इस तिजारत में मुज़ाअ़फ़[(2)] नफ़्अ़ दिया। ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जो देखा और सुना इस से ज़ाहिर हो गया कि आप बेशक सारी मख़्लूक़ की त़रफ़ **अल्लाह** के भेजे हुवे हैं।[(3)]

ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से निकाह़

उस वक़्त ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا बेवा थीं इन की दो शादियां पहले हो चुकी थीं, इन की पाक दामनी के सबब लोग जाहिलिय्यत में इन को त़ाहिरा कहा करते थे। इन का सिलसिलए नसब पांचवीं पुश्त में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से मिलता है।

1......ज़िम्मेदार। 2......दुगना।

3 ......السيرة الحلبية،باب سفره الى الشام ثانياً،ج١،ص١٩٣۔١٩٦ملتقطاً علميه۔

www.dawateislami.net

हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने उमूरे मज़्कूरए बाला को मद्दे नज़र रख कर वापस आने के क़रीबन तीन महीने बा'द या'ला बिन मुन्या की बहन नफ़ीसा की वसातत से आप को निकाह का पैग़ाम भेजा। आप ने इस दरख़्वास्त की ख़बर अपने चचाओं को दी, उन्हों ने क़बूल किया। पस तारीख़े मुअय्यन पर अबू तालिब और अमीरे हम्ज़ा और दीगर रुअसाए ख़ानदान हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के मकान पर गए और इन के चचा अम्र बिन असद ने और ब क़ौले बा'ज़ इन के भाई अम्र बिन ख़ुवैलिद ने इन का निकाह कर दिया। शादी के वक़्त उन की उम्र चालीस साल की थी। अबू तालिब ने निकाह का ख़ुतबा पढ़ा और पांसो500 दिरहम महर क़रार पाया।(1) येह आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पहली शादी थी। हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के इन्तिक़ाल के बा'द आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चन्द शादियां और कीं। तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ का महर पांसो500 दिरहम ही मुक़र्रर हुवा। आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम अवलाद हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ही के बत्न से हुई, सिर्फ़ एक साहिबज़ादे जिन का नाम इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ था हज़रते मारिया क़िब्तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बत्न से सिने आठ हिजरी में पैदा हुवे और सिने दस हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

ता'मीरे का'बा

जब हज़रत की उम्र मुबारक पेंतीस साल की हुई तो क़ुरैश ने का'बे को अज़ सरे नौ बनाया। अ़ल्लामा(2) अज़्रक़्क़ी (मुतवफ़्फ़ा सिने 223 हिजरी) ने तारीख़े मक्का में लिखा है कि हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने पथ्थरों से जो ता'मीर की थी इस का तूल व अ़र्ज़ हस्बे ज़ैल था :

इर्तिफ़ाअ़ ---------------------------- 9 गज़ ।(3)

तूल (सामने की तरफ़) हजरे अस्वद से रुक्ने शामी तक। 32 गज़ (32 हाथ)

अ़र्ज़ (मीज़ाब शरीफ़ की तरफ़) रुक्ने शामी से रुक्ने ग़रबी तक। 22 गज़ (22 हाथ)

तूल (पिछवाड़े की तरफ़) रुक्ने ग़रबी से रुक्ने यमानी तक। 31 गज़ (31 हाथ)

अ़र्ज़ रुक्ने यमानी से हजरे अस्वद तक.......................... 20 गज़ (20 हाथ)

1 ......السيرة الحلبية،باب تزويجه خديجة...الخ،ج١،ص١٩٩ـ٢٠٤ملخصاً علميه۔

2 ......اعلام باعلام بیت اللہ الحرام للعلامۃ قطب الدین الحنفی، ص۱۴۔

3 ......शरई गज़ 24 उंगल का होता है। 12 मिन्हु

www.dawateislami.net

इस इमारत को ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ता'मीर कर रहे थे और ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام कन्धे पर पथ्थर लाद कर ला रहे थे जब दीवारें ऊंची हो गईं तो मक़ाम पर खड़े हो कर काम करते रहे जब ह़जरे अस्वद की जगह तक पहुंच गए तो आप ने ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि एक पथ्थर लाओ, मैं इसे यहां नस्ब कर दूं ताकि लोग त़वाफ़ यहां से शुरूअ़ किया करें ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام पथ्थर की तलाश में गए तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़जरे अस्वद ले कर ह़ाज़िर हुवे। इस बिना में दरवाज़ा सत़्हे ज़मीन के बराबर था मगर चौखट बाज़ू न थे न किवाड़ थे न छत। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द अ़मालिक़ा[1] व जुरहुम व क़ुसा ने अपने अपने वक़्त में इस इमारत की तजदीद की। चूंकि इमारत निशेब में वाक़ेअ़ थी वादिये मक्का की रौओं का पानी ह़रम में आ जाता था इस पानी की रोक के लिये बालाई ह़िस्से पर बन्द भी बनवा दिया गया था मगर वोह टूट टूट जाता था। उस दफ़्आ़ ऐसे ज़ोर की रौ[2] आई कि का'बे की दीवारें फट गईं इस लिये क़ुरैश ने पुरानी इमारत को ढा कर नए सिरे से मज़बूत़ व मुसक़्क़फ़[3] बनाने का इरादा किया। ह़ुस्ने इत्तिफ़ाक़ येह कि एक रूमी ताजिर बाक़ूम का जहाज़ साह़िले जद्दा पर किनारे से टकरा कर टूट गया। बाक़ूम मज़्कूर मे'मार व नज्जार भी था। क़ुरैश को जो ख़बर मिली तो वलीद बिन मुग़ीरा चन्द और क़ुरैशियों के साथ वहां पहुंचा, उस ने छत के लिये जहाज़ के तख़्ते मोल ले लिये और बाक़ूम को भी साथ ले आया। दीवारों के लिये क़ुरैश के हर एक क़बीले ने अलग अलग पथ्थर ढोने शुरूअ़ किये, मर्द दो दो मिल कर दूर से पथ्थरो को कन्धों पर उठा कर लाते थे, चुनान्चे, इस काम में ह़ज़रत अपने चचा अ़ब्बास के साथ शरीक थे और कोहे सफ़ा के मुत्तसिल अजयाद से पथ्थर ला रहे थे। जब सामाने इमारत जम्अ़ हो गया तो अबू वह्ब बिन अ़म्र बिन आइज़ मख़्ज़ूमी के मश्वरे से क़बाइले क़ुरैश ने ता'मीर के लिये बैतुल्लाह की चारों त़रफ़ें आपस में तक़्सीम कर लीं।

अबू वह्ब मज़्कूर ह़ज़रत के वालिदे माजिद अ़ब्दुल्लाह का मामूं था, इसी ने क़ुरैश से कहा था कि का'बे की ता'मीर में कस्बे ह़लाल की कमाई के सिवा और माल सर्फ़ न किया जाए। जब इमारत ह़जरे अस्वद के मक़ाम तक पहुंच गई तो क़बाइल में सख़्त, झगड़ा पैदा हुवा, हर एक क़बीला चाहता था कि हम ही ह़जरे अस्वद को उठा कर नस्ब करेंगे इसी कश्मकश में चार दिन गुज़र गए और तल्वारों तक नौबत पहुंच गई। बनू अ़ब्दुद्दार और बनू अ़दी बिन का'ब ने तो इस पर जान देने की क़सम खाई और ह़स्बे दस्तूर इस ह़ल्फ़ की ताकीद के लिये एक प्याले में ख़ून भर

---

1 ...... تفصیل اعلام باعلام بیت اللہ الحرام میں ہے۔۱۲منہ

2 ......तेज़ लहर। 3 ......छत वाली।

www.dawateislami.net

कर अपनी उंगलियां उस में डूबो कर चाट लीं। पांचवें दिन सब मस्जिदे ह़राम में जम्अ़ हुवे। अबू उमय्या बिन मुग़ीरा मख़्ज़ूमी ने जो ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का वालिद और क़ुरैश में सब से मुअ़म्मर[1] था येह राए दी कि कल सुब्ह़ जो शख़्स इस मस्जिद के बाब बनी शैबा से ह़रम में दाख़िल हो वोह सालिस क़रार दिया जाए। सब ने इस राए से इत्तिफ़ाक़ किया। दूसरे रोज़ सब से पहले दाख़िल होने वाले हमारे आक़ाए नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे। देखते ही सब पुकार उठे : "येह अमीन हैं हम इन पर राज़ी हैं।" जब इन्हों ने आप से येह मुआ़मला ज़िक्र किया तो आप ने एक चादर बिछा कर इस में ह़जरे अस्वद को रखा, फिर फ़रमाया कि हर त़रफ़ वाले एक एक सरदार का इन्तिख़ाब कर लें और वोह चारों सरदार चादर के चारों कोने थाम लें और ऊपर को उठाएं, इस त़रह़ जब वोह चादर मक़ामे नस्ब के बराबर पहुंच गई तो ह़ज़रत ने ह़जरे अस्वद को अपने मुबारक हाथ से उठा कर दीवार में नस्ब फ़रमा दिया और वोह सब खुश हो गए।[2]

क़ुरैश ने इस ता'मीर में ब निस्बते साबिक़ कई तब्दीलियां कर दीं। बिनाए ख़लील में इर्तिफ़ाअ़[3] नव गज़ था, अब अठ्ठारह गज़ इर्तिफ़ाअ़ कर के इमारत मुसक़्क़फ़[4] कर दी गई मगर सामाने ता'मीर के लिये नफ़्क़ए ह़लाल काफ़ी न मिला इस लिये बिनाए ख़लील में से जानिबे गुरुब का कुछ ह़िस्सा छोड़ दिया गया और इस के गिर्द चार दीवारी खींच दी गई कि फिर मौक़अ़ मिलेगा तो का'बे के अन्दर ले लेंगे इस ह़िस्से को ह़जर या ह़त़ीम[5] कहते थे। बिनाए ख़लील में का'बे का दरवाज़ा सत़्ह़े ज़मीन के बराबर था मगर अब क़ुरैश ने ज़मीन से ऊंचा कर दिया, ताकि जिस को चाहें अन्दर जाने दें और जिस को चाहें रोक दें। अ़हदे नबुव्वत में ह़ज़रत का इरादा हुवा कि ह़जर को इमारते का'बा में मिला लें और दरवाज़ा सत़्ह़े ज़मीन के बराबर कर दें, मगर बदीं ख़याल ऐसा न किया कि क़ुरैश नए नए मुसलमान हैं कहीं दीवारे का'बा के गिराने से बद ज़न हो कर दीने इस्लाम से न फिर जाएं।

---

1 ......बड़ी उ़म्र का।

2 ......الکامل فی التاریخ،ذکرھدم قریش الکعبۃ وبنائھا،ج۱،ص۵۷۱-۵۷۳ علمیہ۔

3 ......बुलन्दी। 4 ......छतदार।

5 ......ब क़ौले ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ह़जर को ह़त़ीम न कहना चाहिये क्यूंकि येह नाम अय्यामे जाहिलिय्यत में वज़्अ़ हुवा है, जिस की वज्ह येह है कि अय्यामे जाहिलिय्यत में वहां बाहम क़सम खाया करते थे और अ़क़्दे ह़ल्फ़ की अ़लामत येह हुवा करती थी कि मुआ़हदीन अपना जूता या चाबुक या कमान ह़जर की त़रफ़ फेंक दिया करते थे, इस वासित़े ह़जर को ह़त़ीम कहा करते थे। (बुख़ारी शरीफ़)। 12 मिन्ह.....शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی नुज़हतुल क़ारी शर्ह़े बुख़ारी में इस के बा'द फ़रमाते हैं : येह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की अपनी पसन्द थी वरना ह़त़ीम को ह़त़ीम कहना पूरी उम्मत में ज़मानए रिसालत से मा'मूल रहा है। (नुज़हतुल क़ारी जि. 4, स. 671) लिहाज़ा ह़त़ीम को ह़त़ीम कहने में कोई ह़रज नहीं। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

तीसरा बाब

हालाते बिअ़्सत शरीफ़ ता हिजरत

इस उ़नवान पर क़लम उठाने से पहले मुनासिब बल्कि ज़रूरी मा'लूम होता है कि उस वक़्त अ़रब और बाक़ी दुन्या की दीनी और अख़्लाक़ी और रूहानी ह़ालत जो थी उस का मुजमल बयान पेश किया जाए जिस से हुज़ूर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत की ज़रूरत व अहम्मिय्यत साबित हो जाए।

दुन्या की हालत

अ़रब पहले दीने इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर थे। ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द इन के साहिबज़ादे ह़ज़रते नाबित का'बे के मुतवल्लि हुवे इन के बा'द क़बीला जुरहुम मुतवल्ली हुवा, इस क़बीले को अ़म्र बिन लुह़य्यि[1] ने जो क़बीलए ख़ुज़ाआ़ का मुरिसे आ'ला था, बैतुल्लाह शरीफ़ से निकाल दिया और ख़ुद मुतवल्ली बन गया इस का अस्ली नाम अ़म्र बिन रबीआ़ बिन ह़ारिसा बिन अ़म्र बिन आ़मिर अज़्दी था अ़रब में बुत परस्ती का बानी येही शख़्स था इसी ने साइबा, वसीला, बह़ीरा, ह़ामिया की रस्म ईजाद की थी।[2] एक दफ़्आ़ येह सख़्त बीमार हो गया किसी ने कहा कि बल्क़ा वाक़ेअ़ शाम में एक गर्म पानी का चश्मा है, अगर तुम उस में ग़ुस्ल करो तो तन्दुरुस्त हो जाओगे। इस लिये येह बल्क़ा में पहुंचा और उस चश्मे में ग़ुस्ल करने से अच्छा हो गया, वहां उस ने लोगों को बुतों की पूजा करते देखा, पूछा कि येह क्या हैं? उन्हों ने कहा कि

---

1 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "अ़म्र बिन लह़मी" लिखा है येह हमें नहीं मिला अलबत्ता ह़दीस व सीरत की कुतुब में "अ़म्र बिन लुह़य्यि" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "अ़म्र बिन लह़मी' के बजाए "अ़म्र बिन लुह़य्यि" लिखा है। **इल्मिय्या**

2 ......ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ार का येह दस्तूर था कि जो ऊंटनी पांच मरतबा बच्चे जनती और आख़िरी मरतबा उस के नर होता उस का कान चीर देते फिर न उस पर सुवारी करते न उस को ज़ब्ह़ करते, न पानी और चारे पर से हंकाते, उस को बह़ीरा कहते। और जब सफ़र पेश होता या कोई बीमार होता तो येह नज़्र करते कि अगर मैं सफ़र से ब ख़ैरिय्यत वापस आऊं या तन्दुरुस्त हो जाऊं तो मेरी ऊंटनी साइबा है और इस से भी नफ़्अ़ उठाना बह़ीरा की त़रह़ ह़राम जानते और इस को आज़ाद छोड़ देते। और बकरी जब सात मरतबा बच्चे जन चुकती तो अगर सातवां बच्चा नर होता तो उस को मर्द खाते और अगर माद्दा होता तो बकरियों में छोड़ देते और ऐसे ही अगर नर माद्दा दोनों होते तो कहते कि येह अपने भाई से मिल गई इस को वसीला कहते। और जब नर ऊंट से दस गयाभ ह़ासिल हो जाते तो उस को छोड़ देते न उस पर सुवारी करते, न उस से काम लेते, न उस को चारे पानी पर से रोकते उस को ह़ामी कहते। (मदारिक) बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि बह़ीरा वोह है जिस का दूध बुतों के लिये रोकते थे कोई उस जानवर का दूध न दोहता और साइबा वोह जिस को अपने बुतों के लिये छोड़ देते थे कोई उन से काम न लेता, येह रस्में ज़मानए जाहिलिय्यत से इब्तिदाए अ़हदे इस्लाम तक चली आ रही थीं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, तह़त पारह 7, अल माइदह : 103)

www.dawateislami.net

हम इन के वसीले से बारिश की दुआ़ करते हैं और इन ही के वसीले से दुश्मन पर फ़त्ह़ पाते हैं। येह सुन कर उस ने दरख़्वास्त की, कि इन में से कुछ मुझे भी इनायत कीजिये। ग़रज़ उस ने वोह बुत ला कर का'बा के गिर्द नस्ब कर दिये और अ़रब को इन की पूजा की दा'वत दी, इस त़रह़ अ़रब में बुत परस्ती शाएअ़ हो गई। जिस का इजमाली[1] ख़ाका ज़ैल में दर्ज किया जाता है।

बुत का नाम	मक़ाम जहां वोह बुत था	क़बीला जो इस बुत को पूजता था	कैफ़िय्यत
वुद्द	दूमतुल जन्दल जो दिमश्क़ व मदीना के वस्त में है।	कल्ब	येह बुत ब शक्ले इन्सान बुज़ुर्ग जुस्सा था जिस पर दो हुल्ले मन्क़ूश थे,[2] एक हुल्ला बत़ौरे इज़ार दूसरा बत़ौरे चादर, तल्वार आड़े लटकाए हुवे और कमान शाने पर, सामने एक थैले में नेज़ा और झन्डा था और एक तर्कश[3] थी जिस में तीर थे। ह़ारिसा अजदारी अपने बेटे मालिक को दूध दे कर इस बुत के पास भेजा करता था और कहा करता था कि अपने मा'बूद को पिला लाओ।
सुवाअ़	रुहात़	हुज़ैल	बनू लिह़यान इस बुत के ख़ादिम या पुजारी थे।
यग़ूस	मज़्ह़िज	मज़्ह़िज वाहिले जुरश	मज़्ह़िज यमन में एक टीले का नाम है।
यऊ़क़	ख़ैवान	हमदान और इस के नवाह़ के लोग यमन में	ख़ैवान सन्आ़ए यमन से मक्के की त़रफ़ दो दिन का रास्ता है।
नस्र	बल्ख़अ़	ह़िमयर	बल्ख़अ़ सर ज़मीने सबा वाक़ेअ़ यमन में है। ह़िमयर नस्र को पूजते रहे यहां तक कि ज़ूनुवास ने इन को यहूदी बना लिया, इस त़रह़ ह़िमयर के लिये तब्दीले मज़्हब से पहले सन्आ़ए यमन में एक मन्दर रियाम था जिस पर वोह क़ुरबानियां चढ़ाते थे।

1......येह ख़ाका अबुल मुन्ज़िर हिशाम कल्बी (मुतवफ़्फ़ा सिने 204 हिजरी) की तस्नीफ़ किताबुल अस्नाम से माख़ूज़ है जो मिस्र में सिने 1343 हिजरी में छप चुकी है।

2......नक़्शो निगार वाली दो चादरें थीं। 3......तीरदान

www.dawateislami.net

फ़ल्स (ब शक्ले इन्सान)	अजाअ	तय	क़बीलए तय के दो पहाड़ अजाअ व सलमा मदीनए मुनव्वरा से जानिबे शिमाल तीन मर्ह़ले[1] के फ़ासिले पर हैं इस बुत पर क़ुरबानी चढ़ाते थे, अगर कोई जानवर भाग कर इस की पनाह में आता तो वोह उसी का हो जाता। एक रोज़ उस का पुजारी सैफ़ी नाम एक औ़रत की ऊंटनी भगा लाया और उस बुत के पास ला कर बांध दी। औ़रत ने अपने हमसाए से शिकायत की, वोह ऊंटनी को खोल कर ले गया, पुजारी ने बुत से फ़रयाद की मगर कुछ न बना। अ़दी बिन हा़तिम ने येह देख कर बुत परस्ती छोड़ दी और ईसाई हो गए, फिर सिने 9 हिजरी में मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه
मनात	क़ुदैद के क़रीब साहिले बह़्र पर कोहे मुशल्लल[2] के नवाह़ में।	औस व ख़ज़रज हुज़ैल व ख़ुज़ाआ़	क़ुरैश और बाक़ी तमाम अ़रब इस की इ़बादत करते थे और इस पर क़ुरबानियां चढ़ाते थे। औस व ख़ज़रज जब मदीन से ह़ज करने आते तो अरकाने ह़ज अदा कर के अपने सर इस बुत के पास मुंडवाते थे और इस के बिग़ैर ह़ज को ना तमाम समझते थे।
लात	त़ाइफ़	सक़ीफ़	मरबअ़[3] पथ्थर था, तमाम अ़रब इस की ता'ज़ीम करते थे।
उ़ज़्ज़ा	वादिये ह़ुर्राज़ वाक़ेअ़ नख़्ला शामिय्या (मक्के से जानिबे शिमाल दो दिन का रास्ता)	क़ुरैश	येह एक शैत़ाना थी जिस का थान[4] बबूल के तीन दरख़्तों में था। फ़त्ह़े मक्का के बा'द ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इन दरख़्तों को काट दिया और उ़ज़्ज़ा को क़त्ल कर दिया क़ुरैश दीगर अस्नाम की निस्बत इस की ता'ज़ीम ज़ियादा किया करते थे, उन्हों ने ह़रमे का'बा की त़रह़ वादिये ह़ुर्राज़ में एक दर्रे को उस का ह़रम क़रार दिया था, उस दर्रे का नाम सक़ाम था और क़ुरबानियों के लिये एक मज़्बह़ बनाया था जिसे ग़बग़ब कहते थे। अ़रब लात व मनात व उ़ज़्ज़ा को ख़ुदा की बेटियां कहते थे और उन का अ़क़ीदा था कि येह हमारी शफ़ाअ़त करेंगी।

1......या'नी बारह मील।

2......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "**मश्क़ल**" लिखा है येह हमें नहीं मिला, अलबत्ता किताबुल अस्नाम और दीगर कुतुब में "**मुशल्लल**" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "**मश्क़ल**" के बजाए **मुशल्लल** लिखा है। **इ़ल्मिय्या**

3......चौकूर।

4......मक़ाम, ठिकाना।

www.dawateislami.net

जुल ख़लसा	तबाला	ख़स्अ़म, बजीला, अज़्द, सरात	तबाला मक्का व यमन के दरमियान मक्के से सात या आठ दिन की राह है। येह बुत सफ़ेद पथ्थर पर मन्क़ूश था जिस पर ताज की मिस्ल कोई शै थी।
सा'द	साहिले जद्दा	मालिक व मिलकान पिसराने किनाना	त़वील पथ्थर था, इस पर ख़ून बहाया जाता था।
जुल[1] कफ़्फ़ैन	अर्ज़े दौस वाक़ेअ़ यमन	दौस	फ़त्हे मक्का के बा'द ह़ज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी ने इस बुत को ब हुक्मे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आग से जला दिया था।
जुश्शिरा	जुश्शिरा	बनू ह़ारिस बिन यश्कर अज़्दी	जुश्शिरा मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के क़रीब एक मक़ाम का नाम है।
उक़ैसिर	मशारिफ़े शाम	क़ुज़ाआ़, लख़्म, जुज़ाम, आ़मिला, ग़त़फ़ान	इस का ह़ज करते, क़ुरबानी देते और इस के पास अपना सर मुंडाया करते सर मुंडवाने वाला हर बाल पर गेहूं के आटे की एक मुठ्ठी फेंका करता था।
नहम	=	मुज़ैना	इस का पुजारी ख़ज़ाई बिन अ़ब्दे नुह्म मुज़नी था, उस ने जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ाल सुना तो इस बुत को तोड़ कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और ईमान लाया।
आइम	=	अज़्द सरात	=
रुज़ाअ या रुज़ा	=	बनू रबीआ़ बिन का'ब बिन सा'द तमीमी	इस बुत का ज़िक्र सन्आ़ के पुराने कतबों[2] में भी पाया जाता है। इस को मुस्तव ग़िर या'नी अ़म्र बिन रबीआ़ तमीमी ने ज़मानए इस्लाम में मुन्हदिम कर दिया।

---

1 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "**ज़ुल कफ़लैन**" लिखा है जो कि किताबत की ग़लत़ी मा'लूम होती है क्यूंकि "**किताबुल अस्नाम**" और दीगर कुतुब में "**ज़ुल कफ़्फ़ैन**" है लिहाज़ा हम ने यहां "**किताबुल अस्नाम**" के मुत़ाबिक़ "**ज़ुल कफ़्फ़ैन**" लिखा है। واللّٰه تعالٰی اعلم **इल्मिय्या**

2 ......कन्दा किये हुवे पथ्थर।

www.dawateislami.net

सईर	=	अ़नज़ा[1]	इस पर कुरबानियां चढ़ाते थे।
उ़मयानिस	मौज़अ़ ख़ौलान वाक़िअ़ए यमन	ख़ौलान	मवैशियों और खेतों को इस बुत और ख़ुदा तआ़ला के दरमियान तक़्सीम किया करते थे। बक़ौले हिशाम कल्बी "وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِیْبًا الآیۃ" ख़ौलान ही के बारे में नाज़िल हुई है।[2]
हुबल	मक्का	कुरैश	का'बतुल्लाह जो ख़ानए ख़ुदा था बुत ख़ाना बना हुवा था, इस में तीन सो साठ बुत थे जिन में हुबल बहुत बड़ा और जौफ़े का'बा[3] में नस्ब किया हुवा था येह बुत ब शक्ले इन्सान अ़क़ीक़ अह़मर[4] का बना हुवा था। इस का बायां हाथ टूटा हुवा था कुरैश को इसी ह़ालत में मिला था, इन्हों ने इस के लिये सोने का हाथ बना दिया था, इस के सामने सात तीर रखे हुवे थे, जिन से पुजारी कुर्आ अन्दाज़ी किया करता था। इसाफ़ और नाइला[5] दोनों ज़म ज़म की जगह पर थे कुरैश इन के पास कुरबानियां दिया करते थे, कुरैश का एक बुत मनाफ़ था इलावा इन के मक्के के घर घर में एक एक बुत था जब कोई सफ़र को जाता तो बत़ौरे तबर्रुक इस को मस्ह़ करता जब वापस आता तो घर में दाख़िल हो कर सब से पहले इस को मस्ह़ करता।

मुन्दरिजए बाला बुतों के इलावा अ़रब में और भी बुत थे। सितारों की भी पूजा होती थी चुनान्चे, क़बीलए ह़िमयर सूरज की परस्तिश करता था, किनाना चांद को, बनू तमीम दबरान को, क़ैस शिअ़रा को, असद उ़तारिद को और लख़्म व जुज़ाम मुश्तरी को पूजते थे।[6]

1......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों मे यहां "ग़ुज़ा" लिखा है लेकिन किताबुल अस्नाम और दीगर कुतुब में "अ़नज़ा" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां किताबुल अस्नाम के मुत़ाबिक़ "अ़नज़ा" लिखा है। **इल्मिय्या** 2......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** ने जो खेती और मवैशी पैदा किये इन में इसे एक ह़िस्सेदार ठहराया। (پ٨، الانعام:١٣٦) 3......का'बा शरीफ़ के वस्त़ में। 4......एक क़ीमती सुर्ख़ पथ्थर। 5......येह दो बुत थे, क़बीलए जुरहुम के एक मर्द इसाफ़ बिन बग़ी ने जुरहुम ही की एक औ़रत नाइला बिन्ते दीक से ख़ानए का'बा में बदकारी की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन दोनों को पथ्थर का बना दिया।

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، قصۃ عمرو بن لحی...الخ، ص٣٧)

6 ......طبقات الامم لابن صاعد الاندلسی، مطبوعہ بیروت ۱۹۱۲ء ص ۴۳۔(المحرر الوجیز حج تحت الآیۃ ١٨، ج٤، ص١١٣۔ علمیہ)

www.dawateislami.net

अ़रब में दरख़्त परस्ती भी पाई जाती थी। मक्कए मुशर्रफ़ा के क़रीब एक बड़ा सब्ज़ दरख़्त था जाहिलिय्यत में लोग साल में एक दफ़्आ़ वहां आते और उस दरख़्त पर अपने हथयार लटकाते और उस के पास हैवानात ज़ब्ह़ करते। कहते हैं कि अ़रब जब ह़ज को आते तो अपनी चादरें उस दरख़्त पर लटका देते और ह़रम में ब ग़रज़ ता'ज़ीम बिग़ैर चादरों के दाख़िल होते इस लिये उस दरख़्त को अन्वात़[1] कहते थे।[2] इब्ने इस्ह़ाक़ ने ह़दीसे वह्ब बिन मुनब्बेह में ज़िक्र किया है कि जब फ़ैमियून नसरानी अपनी सियाह़त में नजरान में बत़ौरे ग़ुलाम फ़रोख़्त हुवा तो उस वक़्त अहले नजरान एक बड़े दरख़्त की पूजा किया करते थे। उस दरख़्त के पास साल में एक दफ़्आ़ ईद हुवा करती थी वोह ईद के मौक़अ़ पर अपने अच्छे से अच्छे कपड़े और औ़रतों के ज़ेवरात इस दरख़्त पर डाल दिया करते थे। फिर वोह फ़ैमियून की करामत देख कर ईसाई हो गए।[3]

बुतों पर उ़मूमन हैवानात का ख़ून बहाया जाता था मगर बा'ज़ दफ़्आ़ इन्सान को भी ज़ब्ह़ कर देते थे चुनान्चे, नीलौस एक क़िस्म की क़ुरबानी का ज़िक्र जो सिने 410 ईसवी में दी गई थी बदीं अल्फ़ाज़ करता है :

ह़िजाज़ के वह़शी अ़रबों के हां देवता की कोई सूरत न थी। सिर्फ़ अन घड़ पथ्थरों की एक क़ुरबान गाह हुवा करती थी उस पर वोह सितारे सुब्ह़ (ज़ोहरा) के लिये कोई इन्सान या सफ़ेद ऊंट बड़ी जल्दी से ज़ब्ह़ किया करते थे, येह क़ुरबानी त़ुलूए़ आफ़्ताब से पहले ब ज़ाहिर बदीं वज्ह हुवा करती थी कि वोह सितारा इस अ़मल में पेशे नज़र रहे। वोह मक़ाम मुतबर्रिक के गिर्द भजन[4] गाते हुवे तीन बार त़वाफ़ करते तब सरदारे क़ौम या बूढ़ा पुजारी उस भेंट पर पहला वार करता और उस का कुछ ख़ून पीता, बा'दे अज़ां ह़ाज़िरीन कूद पड़ते और उस जानवर को कच्चा और सिर्फ़ नीम पोस्त कुन्दा[5] त़ुलूए़ आफ़्ताब से पहले खा जाते। ख़ुद नीलौस का बेटा ज़ोहरा की भेंट चढ़ने को था कि एक इत्तिफ़ाक़ी अम्र से बच गया। नीलौस से पेशतर पोरफ़्री[6] बयान करता है कि अ़रब में दूमा के बाशिन्दे साल में एक बार एक लड़के की भेंट देते और उसे क़ुरबान गाह के नीचे दफ़्न कर देते।[7]

1......अन्वात़ "नौत़" की जम्अ़ है, नौत़ कहते हैं लटकाने और सिपुर्द करने को, चूंकि अ़रब अपनी चादरें और अस्लहे इस दरख़्त पर लटका कर इस के सिपुर्द कर देते थे इस लिये इसे अन्वात़ कहा जाता था। बा'ज़ों ने इस को ज़ाते अन्वात़ भी लिखा है। **इल्मिय्या**

2......मो'जमुल बलदान याक़ूत ह़मवी, तह़ते अन्वात़। (معجم البلدان،باب الهمزة والنون وما يليهما،الانواط،ج١،ص٢١٨ ـ علميه)

3......सीरते इब्ने हिशाम। क़िस्सए अस्हाबुल उख़्दूद। (السيرة النبوية لابن هشام،ابتداء وقوع النصرانية بنجران،ص١٨ ـ علميه)

4......ख़ुशी में गीत। 5......आधी खाल उतरा हुवा। 6......Forphyrius

7......मज़्हब व अख़्लाक़ की एन्साईक्लोपीडिया, तह़ते अ़रब क़दीम।

www.dawateislami.net

ऊपर के बयान से ज़ाहिर है कि अ़रब के तूल व अ़र्ज़ में बुत परस्ती का जाल बिछा हुवा था इस के इ़लावा यहूदिय्यत व नसरानिय्यत व मजूसिय्यत भी कहीं कहीं राइज थी। चुनान्चे,[1] हि़मयर, किनाना, बनू हा़रिस बिन का'ब और किन्दा में यहूदिय्यत थी, मदीने में यहूदियों का ज़ोर था, ख़ैबर में भी यहूदी बसते थे, रबीआ़, ग़स्सान और बा'ज़ कु़ज़ाआ़ में नसरानिय्यत थी, मजूसिय्यत बहुत कम थी, वोह बुत परस्ती व यहूदिय्यत व ईसाइय्यत में जज़्ब होते होते सिर्फ़ बनू तमीम में रह गई थी जिन के मनाज़िल[2] नज्द से यमामा तक पाए जाते थे। ह़ज़रते हा़जिब बिन ज़ुरारा तमीमी इसी क़बीले से थे जिन्हों ने किस्रा के हां अपनी कमान रह्न रखी थी और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में फ़क्क करा कर[3] बत़ौरे हदिय्या ख़िदमते अक़्दस में भेजी थी।[4]

अ़रब में इज़्दवाज की कसरत थी चुनान्चे, जब ह़ज़रते ग़ैलान सक़फ़ी ईमान लाए तो इन के तह़्त में दस औ़रतें थीं। جَمْع بَيْنَ الْاُخْتَيْن[5] जाइज़ समझते थे चुनान्चे, ज़ह्हाक़ बिन फ़ैरोज़ का बयान है कि जब मेरा बाप इस्लाम लाया तो उस के तह़्त में दो सगी बहनें थी। जब कोई शख़्स मर जाता तो उस का सब से बड़ा बेटा अपनी सोतेली मां को मीरास में पाता, चाहता तो उस से शादी कर लेता वरना अपने किसी और भाई या रिश्तेदार को शादी के लिये दे देता। ज़िनाकारी का आ़म रवाज था और इसे जाइज़ ख़याल करते थे। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बयान है कि जाहिलिय्यत में निकाह़ चार त़रह़[6] का था : एक निकाहे़ मुतआ़रिफ़, जैसा कि आज कल है कि ज़ौज व ज़ौजा के वली महरे मुअ़य्यन पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं और ईजाबो क़बूल हो जाए। दूसरा निकाहे़ इस्तिबज़ाअ़, बदीं त़ौर कि शोहर अपनी औ़रत को हैज़ से पाक होने के बा'द कहता कि तू फ़ुलां से इस्तिबज़ाअ़ (त़लबे वलद) कर ले और ख़ुद इस से मक़ारबत न करता यहां तक कि उस शख़्स से ह़म्ल ज़ाहिर हो जाता, उस वक़्त चाहता तो वोह अपनी ज़ौजा से मुजामअ़त[7] करता येह इस्तिबज़ाअ़ ब ग़रज़े नजाबते वलद[8] किया जाता था। तीसरा निकाहे़ जम्अ़, बदीं त़ौर कि दस से कम मर्द एक औ़रत पर यके बा'दे दीगरे दाख़िल होते यहां तक कि वोह हा़मिला हो जाती, वज़्ए़ ह़म्ल के चन्द रोज़ बा'द वोह औ़रत उन सब को बुलाती और उन से कहती कि तुम ने जो किया वोह तुम्हें मा'लूम है, मेरे हां बच्चा पैदा हुवा है, उन में से एक की त़रफ़ इशारा कर के

---

1 ......حیوۃ الحیوان للدمیری (جزاول،ص۱۶۹) بحوالہ بصائرالقدما، وسرائرالحکماء للشیخ ابی حیان التوحیدی المتوفی ۳۸۰ھ۔

2 ......ठिकाने। 3 ......रह्न रखी गई शै को छुड़ाना।

4 ......حیاة الحیوان الکبری،باب الجیم،الجریث،ج۱،ص ۲۸۰ علمیه۔

5 ......दो बहनों को इकठ्ठा निकाह़ में रखना।

6 ......کشف الغمہ للقطب الشعرانی، جزء ثانی،ص ۵۶۔

7 ......कु़र्बत। 8 ......बच्चे की ख़ानदानी शराफ़त त़लब करने की ग़रज़ से।

www.dawateislami.net

कहती कि येह तेरा बच्चा है, पस वोह उसी का समझा जाता था और वोह शख़्स इन्कार न कर सकता था। चौथा निकाहे बग़ाया, बदीं त़ौर कि बहुत से मर्द जम्अ़ हो कर बग़ाया (ज़िनाकार औ़रतें) में से किसी पर बे रोक टोक दाख़िल होते। येह बग़ाया बत़ौरे अ़लामत के अपने दरवाज़ों पर झन्डे नस्ब करती थीं, जो चाहता उन के पास जाता जब उन में से कोई ह़ामिला हो जाती तो वज़्ए़ ह़म्ल के बा'द वोह सब मर्द उस के हां जम्अ़ होते और क़ाफ़ा[1] को बुलाते वोह क़ाफ़ा उस बच्चे को (उस के आ'ज़ा देख कर फ़िरासत से) जिस से मन्सूब करता उसी का बेटा समझा जाता था और उस से इन्कार न हो सकता था।[2]

शराब ख़ोरी और क़िमार बाज़ी[3] भी अ़रब में कसरत से राइज थीं। मेहमान नवाज़ी की त़रह़ इन दोनों में मालो दौलत लुटाने पर फ़ख़्र किया करते थे। मुल्के अ़रब में अंगूरों या खजूरों वग़ैरा से जो शराब बनाते थे वोह इन के लिये काफ़ी न थी इस लिये शराब का बहुत बड़ा हिस्सा दीगर ममालिक से मंगाया जाता था, वोह बहुत तेज़ होती थी। पानी में मिला कर इस्ति'माल किया करते थे। शराब की दुकानों पर झन्डे लहराया करते थे जब किसी दुकान में शराब का ज़ख़ीरा ख़त्म हो जाता तो झन्डा उतार लिया जाता था। अश्आ़रे अ़रब में जिन मक़ामात की शराब का ज़िक्र आया है उन की तफ़्सील यूं है :

मुल्क का नाम	मक़ामात जो शराब के लिये मश्हूर थे	कैफ़िय्यत
सीरिया या'नी शाम	जदर, ह़िम्स, बैते रास, ख़ुस्स, अन्दरीन, बुसरा, सरख़द, मआब	बैते रास दो शहरों का नाम है एक बैतुल मुक़द्दस में दूसरा अन्वाअ़ ह़ल्ब में है, दोनों में अंगूर ब कसरत और शराब के लिये मश्हूर थे। जदर की शराब को जदरिय्या कहते थे।
फ़िलिस्त़ीन	मक़्दर, ग़ौर, बैसान	मक़्दर की शराब को मुक़्दरी या मुक़्दरिया और बैसान की शराब को बैसानिय्या बोलते थे।
अल जज़ीरा	आ़ना	आ़ना की शराब को आ़निय्या कहते थे।
कलदिय्या या बाबलूनिया	बाबिल, सरीफ़ून, क़ुत़रब्बुल	सरीफ़ून अ़क्बरा के क़रीब है और क़ुत़रब्बुल बग़दाद व अ़क्बरा के दरमियान है। इन मक़ामात की शराब को बाबिलिय्या व सरीफ़िय्या व क़ुत़रुब्बलिय्या कहते थे।

---

1 ......बच्चे के आ'ज़ा को देख कर फ़िरासत से नसब बता देने के माहिर।

2 ......كشف الغمة، كتاب النكاح، باب انكحة الكفار و اقرارهم عليها و فصل فيمن اسلم ... الخ، الجزء الثانى، ص٨٤-٨٥ ملتقطاً

3 ......जूआ।

www.dawateislami.net

खुलासए कलाम येह कि दीने इब्राहीमी जो अ़रब का अस्ली दीन था, सिवाए चन्द रस्मों के जिन से अ़क्ले सलीम को, क़त़ए नज़र इरशादे अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के इन्कार नहीं हो सकता अ़रब में मा'दूम हो गया था। बजाए तौह़ीद के उ़मूमन शिर्क व बुत परस्ती थी वोह मा'बूदाने बात़िल को क़ादिरे मुत़लक़ की त़रह़ अपने ह़ाजत रवा जानते थे। बा'ज़े अजरामे फ़लकिया आफ़ताब माहताब व सितारगान की पूजा करते थे। बा'ज़े तशबीह के क़ाइल थे और फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां समझ कर इन की पूजा करते और ख़ुदा के हां इन की शफ़ाअ़त के उम्मीद वार थे। शिर्क व तशबीह का क्या ज़िक्र बा'ज़ को ख़ुदा की हस्ती ही से इन्कार था। वोह शबो रोज़ शराब ख़ोरी, क़िमार बाज़ी, ज़िनाकारी और क़त्लो ग़ारत गिरी में मश्ग़ूल रहते थे। क़सावते क़ल्ब[1] का येह ह़ाल था कि लड़कियों को पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे, बुतों पर आदमियों की क़ुरबानी चढ़ाने से दरैग़ न करते, लड़ाइयों में आदमियों को ज़िन्दा जला देना मस्तूरात का पेट चाक करना और बच्चों को तहे तैग़[2] करना उ़मूमन जाइज़ समझते थे। इन के दरमियान जो यहूदो नसारा थे उन की ह़ालत भी दिगर गूं[3] थी, इन की किताबें मुह़र्रफ़[4] हो चुकी थी। यहूद ख़ुदा को मग़्लू लतुल यद[5] और ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیْہِ السَّلَام को ख़ुदा का बेटा कहते थे और नसारा तीन ख़ुदा मानते थे और मस्अलए कफ़्फ़ारा[6] की आड़ में आ'माले ह़सना की कोई ज़रूरत ही मह़सूस न करते थे।

येह ह़ालत सिर्फ़ अ़रब के साथ मख़्सूस न थी बल्कि तमाम दुन्या में इसी त़रह़ की तारीकी छाई हुई थी चुनान्चे, अहले फ़ारिस[7] आग के पूजने और माओं के साथ वत़ी करने में मश्ग़ूल थे। तुर्क शबो रोज़ बस्तियों के तबाह करने और बन्दगाने ख़ुदा को अज़िय्यत देने में मसरूफ़ थे, इन का दीन बुतों की पूजा और इन की आ़दत मख़्लूक़ात पर ज़ुल्म करना था। हिन्दुस्तान के लोग बुतों की पूजा और ख़ुद को आग में जलाने के सिवा कुछ न जानते थे और न्योग[8] को जाइज़ समझते थे।

1......दिल की सख़्ती। 2......क़त्ल। 3......मुतग़य्यर।
4......तह़रीफ़ व तब्दील। 5......बख़ील।
6......ईसाइयों का येह अ़क़ीदा है कि ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मसलूब हो कर हमारे तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया। مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ
7......شرح فقہ اکبر لعلی القاری۔
8......हिन्दुओं में अवलाद के ह़ुसूल की मख़्सूस रस्म।

www.dawateislami.net

येह आ़लमगीर ज़ुल्मत[1] इस अम्र की मुक़्तज़ी[2] थी कि ह़स्बे आ़दते इलाही मुल्के अ़रब में जहां दुन्या भर के अदयाने बाति़ला व अ़क़ाइदे क़बीह़ा व अख़्लाक़े रद्दिया[3] मौजूद थे। एक हादी[4] तमाम दुन्या के लिये मबऊ़स हो, चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया।

अ़रब जैसी क़ौम में जिस की ह़ालत ऊपर बयान हुई, सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी बिअ़सत तक हर पहलू के लिह़ाज़ से बिल्कुल बे लौस रही। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अख़्लाक़े ह़मीदा से मुत्तसिफ़ और सिद्क़ो अमानत में मश्हूर थे ह़त्ता कि क़ौम ने आप को अमीन का लक़ब दिया हुवा था। आप मजालिसे लह्व लइ़ब में कभी शरीक न हुवे वोह अफ़्आ़ले जाहिलिय्यत जिन की आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शरीअ़त में मुमानअ़त वारिद है आप कभी उन के मुर्तकिब न हुवे। जो जानवर बुतों पर ज़ब्ह़ किये जाते आप उन का गोश्त न खाते, फ़साना गोई, शराब ख़ोरी, क़िमार बाज़ी और बुत परस्ती जो क़ौम में आ़म शाएअ़ थीं, आप उन सब से अलग रहे। साल में एक बार माहे रमज़ान में कोहे ह़िरा में जो मक्कए मुशर्रफ़ा से तीन मील के फ़ासिले पर मिना को जाते हुवे बाईं त़रफ़ को है ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते और वहां ज़िक्रो फ़िक्र में मश्ग़ूल रहते चन्द रातों का तोशा साथ ले जाते, वोह ख़त्म हो चुकता तो घर तशरीफ़ लाते और इसी क़दर तोशा ले कर ह़िरा में जा मो'तकिफ़ होते।

इब्तिदाए वह़्य

जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक चालीस साल की हुई तो **अल्लाह** तआ़ला ने आप को मन्सबे नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया। वह़्य की इब्तिदा रूयाए सादिक़ा[5] से हुई, जो कुछ आप रात को ख़्वाब में देखते बि ऐनिही वोही ज़ुहूर में आता, छे माह इसी ह़ालत में गुज़र गए कि एक रोज़ आप ह़स्बे मा'मूल ग़ारे ह़िरा में मुराक़िब थे[6] कि फ़िरिश्ता (जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام) आप के पास आया, उस ने आप से कहा : اِقْرَاْ (पढ़ो), आप ने फ़रमाया : مَا اَنَا بِقَارِی[7] (मैं पढ़ा हुवा नहीं),

1......तारीकी। 2......मुत़ालबा करने वाला।
3......गन्दे अख़्लाक़ 4......हिदायत करने वाला।
5......सच्चे ख़्वाबों। 6......या'नी मुशाहदए ज़ात व सिफ़ाते इलाही में मुस्तग़्रक़ थे।

7......शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नुज़हतुल क़ारी शर्ह़े बुख़ारी में फ़रमाते हैं : "مَا اَنَا بِقَارِی" का तर्जमा आ़म त़ौर पर येह किया जाता है कि "मैं पढ़ा हुवा नहीं" (अगर्चे दुरुस्त है) लेकिन हमारे मशाइख़ (رحمهم الله) ने येह तर्जमा कराया "मैं नहीं पढ़ता" क्यूंकि येह तर्जमा ज़ियादा अन्सब व अरजह़ है और येह तर्जमा मुह़ावरए अ़रब के मुत़ाबिक़ भी है कि येह तरकीबे ह़ाल और मुस्तक़्बिल के लिये इस्ति'माल करते थे जैसा कि अबू सुफ़्यान ने तजदीदे सुल्ह़ के लिये सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सिफ़ारिश चाही तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : مَا اَنَا بِفَاعِلٍ मैं नहीं करूंगा। (सीरते इब्ने हिशाम) ख़ुद क़ुरआने मजीद में बरादराने यूसुफ़ का क़ौल मज़्कूर है : وَمَاۤ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا (یوسف:۱۷) आप हमारा यक़ीन न करेंगे। (नुज़हतुल क़ारी जि.1 स. 247) । **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान है कि इस पर फ़िरिश्ते ने मुझे पकड़ कर भींचा यहां तक कि वोह मुझ से ग़ायते वस्अ़ और त़ाक़त को पहुंचा।[1] फिर मुझे छोड़ दिया और कहा : اِقْرَاْ मैं ने कहा : مَا اَنَا بِقَارِی इस पर उस ने मुझे पकड़ कर दूसरी बार भींचा यहां तक वोह मुझ से ग़ायते वस्अ़ व त़ाक़त को पहुंचा फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा : اِقْرَاْ मैं ने कहा : مَا اَنَا بِقَارِی पस उस ने मुझे पकड़ कर तीसरी बार भींचा यहां तक कि वोह मुझ से ग़ायते वस्अ़ और त़ाक़त को पहुंचा[2]

फिर उस ने मुझे छोड़ दिया और कहा :

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَۚ(۱) خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍۚ(۲) اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُۙ(۳) الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِۙ(۴) عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْؕ(۵)

पढ़ अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया, पैदा किया आदमी को लहू की फटकी से। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिस ने इ़ल्म सिखाया क़लम से सिखाया आदमी को जो कुछ न जानता था।[3]

येह सबक़ पढ़ कर आप घर तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से सारा क़िस्सा बयान किया वोह आप को अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं, जो ईसाई और तौरात व इन्जील का माहिर था, उस ने येह माजरा सुन कर कहा कि येह वोही मानूस[4] व फ़िरिश्ता है जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام पर उतरा था।[5] इस के बा'द कुछ मुद्दत तक वह़्य बन्द रही ताकि आप का शौक़ व इन्तिज़ार ज़ियादा हो जाए फिर येह आयतें नाज़िल हुईं :

یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُۙ(۱) قُمْ فَاَنْذِرْ۪ۙ(۲) وَ رَبَّكَ فَكَبِّرْ۪ۙ(۳) وَ ثِیَابَكَ فَطَهِّرْ۪ۙ(۴) وَ الرُّجْزَ فَاهْجُرْ۪ۙ(۵)

ऐ लिह़ाफ़ में लिपटे उठ खड़ा हो। पस डर सुना और अपने रब की बड़ाई कर और अपने कपड़े पाक रख और पलीदी को छोड़ दे।[6]

1......या'नी फ़िरिश्ते ने मुझे गले लगा कर ख़ूब ज़ोर से दबाया।

2......अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं कि पहली बार जो इरशाद हुवा : "مَا اَنَا بِقَارِیٍٔ" वहां "مَا" नाफ़िया है और अब तीसरी बार जो फ़रमाया "مَا اَنَا بِقَارِیٍٔ" इस में "مَا" इस्तिफ़हामिय्या है या'नी अब बताओ ! मैं क्या पढ़ूं ? (مرقاة المفاتيح ج١٠ص١٠٥)

3......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** पढ़ो अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया आदमी को ख़ून की फटक से बनाया पढ़ो और तुम्हारा रब ही सब से बड़ा करीम जिस ने क़लम से लिखना सिखाया आदमी को सिखाया जो न जानता था। (پ٣٠، العلق:١ـ٥) **इल्मिय्या**

4......ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام का लक़ब।

5......तफ़्सील के लिये सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर देखो।

(صحيح البخاری، كتاب التفسير، سورة اقرأ باسم ربك الذى خلق، الحديث: ٤٩٥٣، ج٣، ص٣٨٤ملخصاً علميه)

6......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ बालापोश ओढ़ने वाले खड़े हो जाओ फिर डर सुनाओ और अपने रब ही की बड़ाई बोलो और अपने कपड़े पाक रखो और बुतों से दूर रहो। (پ٣٠، العلق:١ـ٥) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

आग़ाज़े दा'वत

قُمْ فَاَنْذِرْ से आप पर इन्ज़ार(1) और दा'वत इलल्लाह(2) फ़र्ज़ हो चुकी थी मगर ए'लाने दा'वत का हुक्म न आया था, इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ख़ुफ़्या तौ़र से उन लोगों को दा'वते इस्लाम दी जिन पर आप को ए'तिमाद था और जो आप के ह़ालात से ब ख़ूबी वाक़िफ़ थे, इस दा'वत पर कई मर्द व ज़न(3) ईमान लाए। चुनान्चे, मर्दों में सब से पहले जो आप पर ईमान लाए वोह ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। लड़कों में सब से पहले ईमान लाने वाले ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم हैं और औ़रतों में ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) आज़ाद किये हुवे ग़ुलामों में ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ग़ुलामों में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ईमान लाते ही दा'वते इस्लाम शुरूअ़ कर दी। अ़शरए मुबश्शरा(4) में से पांच, या'नी ह़ज़राते उ़स्माने ग़नी, सा'द बिन अबी वक़्क़ास, त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) आप ही की तरग़ीब से मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। इन के बा'द ह़ज़राते सई़द बिन ज़ैद, अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी, अरक़म बिन अबी अरक़म, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, उ़स्मान बिन मज़ऊ़न, अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़, उ़बैदा बिन ह़ारिस, ह़ुसैन वालिदे इमरान बिन ह़ुसैन, अ़म्मार बिन यासिर, ख़ब्बाब बिन अल अरत, ख़ालिद बिन सई़द बिन अल आ़स और सुहैब रूमी वग़ैरहुम साबिक़ीने अव्वलीन के ज़ुमरे में शामिल हुवे(5) (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن) और औ़रतों में फ़ाति़मा बिन्ते ख़त्ताब हमशीरए उ़मर फ़ारूक़, अस्मा बिन्ते अबी बक्र, अस्मा बिन्ते सल्लामा

---

1 ......डर सुनाना या'नी ईमान न लाने पर अ़ज़ाबे इलाही का डर सुनाना।

2 ......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाना।

3 ......मर्द और औ़रतें।

4 ......वोह दस सह़ाबा जिन के क़त़ई जन्नती होने की बिशारत व ख़ुश ख़बरी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ज़िन्दगी ही में सुना दी थी वोह अ़शरए मुबश्शरा कहलाते हैं या'नी ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए अरबआ़ राशिदीन, ह़ज़रते त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सई़द बिन ज़ैद, ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن

(قال رسول الله صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم: "أبو بَكْر في الجنة و عُمَر في الجنة و عُثْمان في الجنة و عَلِي في الجنة و طَلْحَة في الجنة و الزُّبَيْر في الجنة و عبد الرحمٰن بن عَوْف في الجنة و سَعْد بن أبي وَقَّاص في الجنة و سَعِيد بن زيد في الجنة و أبو عُبَيْدَة بن الجَرَّاح في الجنة." سنن الترمذی، کتاب المناقب، الحدیث:٣٧٦٨، ج٥، ص٤١٦)۔علمیہ

5 ......सह़ाबा में सब से पहले ईमान लाने वालों में शामिल हुवे।

www.dawateislami.net

तमीमिय्या, अस्मा बिन्ते उ़मैस ख़स्अ़मिय्या, फ़ातिमा बिन्ते अल मुजल्लल क़रशिय्या आ़मिरिय्या, फ़ुकैहा बिन्ते यसार, रम्ला बिन्ते अबी औ़फ़ और अमीना बिन्ते ख़लफ़ ख़ुज़ाइय्या साबिक़ात इलल इस्लाम में से हैं।[1] (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) लेकिन येह सब कुछ जो हुवा पोशीदा तौ़र पर हुवा। नमाज़ भी शिआ़बे मक्का[2] में छुप कर पढ़ा करते थे। एक रोज़ ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और कुछ अस्ह़ाब मक्का के किसी शा'ब[3] में नमाज़ पढ़ रहे थे कि मुशरिकीन ने देख कर इस फ़े'ल को बुरा कहा। पस बाहम लड़ाई हो गई। ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ऊंट के तालू की हड्डी इन ना बकारों[4] में से एक पर मारी और सर तोड़ डाला। इस के बा'द आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब दारे अरक़म में जो कोहे सफ़ा के निशेब में था रहते और वहीं नमाज़ पढ़ते।[5]

तब्लीग़ अ़लल ए'लान

खुफ़्या दा'वत को जब तीन साल हो चुके तो ए'लान का हुक्म इस त़रह़ आया :

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۹۴﴾ (سورۂ حجر)

पस तू खोल कर बयान कर दे जो तुझे हुक्म दिया जाता है और मुशरिकों से किनारा कर।[6]

नीज़ हुक्म आया :

وَ اَنْذِرْ عَشِیْرَتَكَ الْاَقْرَبِیْنَ ﴿۲۱۴﴾ (شعراء)

और डरा अपने नज़्दीक के नाते वालों को।[7]

इस[8] पर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर क़बीलए क़ुरैश के बत़ून[9] को यूं पुकारा :

---

1 ......सह़ाबिय्यात में सब से पहले ईमान लाने वालियों में से हैं।

2 ......शिआ़ब जम्अ़ है शा'ब की, या'नी मक्का की घाटियां।

3 ......घाटी।

4 ......नाकारों।

5 ......السيرة الحلبية،باب بدء الوحی له،ج۱،ص۳۷۲وباب استخفائه صلی اللّٰه علیه وآله وسلم واصحابه...الخ، ص۴۰۲ و المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،ذکر اول من آمن باللّٰه ورسوله، ج۱،ص۴۵۴والسيرة النبويةلابن هشام،ذکر من اسلم من الصحابة ،ص۱۰۰۔علميه

6 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो एलानिय्या कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है और मुशरिकों से मुंह फेर लो। (پ۱۴،الحجر:۹۴) **इल्मिय्या**

7 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब अपने क़रीब तर रिश्तेदारों को डराओ। (پ۱۹،الشعراء:۲۱۴) **इल्मिय्या**

8 ......صحیح بخاری،کتاب التفسیر سورۂ شعراء۔

9 ......ख़ानदानों।

www.dawateislami.net

या बनी फ़िह्र ! या बनी अ़दी ! यहां तक कि वोह जम्अ़ हो गए, जो खुद न आ सकता था वोह अपनी त़रफ़ से किसी और को भेजता ताकि देखे कि येह पुकार कैसी है। पस अबू लहब और कुरैश आ गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बताओ अगर मैं तुम से कहूं कि वादिये मक्का से एक सुवारों का लश्कर तुम पर ताख़्तो ताराज करना चाहता है[1] तो क्या तुम्हें यक़ीन आ जाएगा ?" वोह बोले : हां ! क्यूंकि हम ने तुम को सच ही बोलते देखा है। आप ने फ़रमाया : तो मैं तुम से कहता हूं कि अगर तुम मुझ पर ईमान न लाओगे तो तुम पर सख़्त अ़ज़ाब नाज़िल होगा। इस पर अबू लहब बोला : तुझ पर आयिन्दा हमेशा हलाक व ज़ियान हो, क्या इस के लिये तू ने हम को जम्अ़ किया है ! तब येह आयतें नाज़िल हुईं :[2]

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ﴿۱﴾ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ﴿۲﴾

हलाक हो जियो हाथ अबू लहब के और हलाक हो वोह, काम न आया उस को माल उस का और न जो कुछ कमाया।[3]

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने दा'वत किया और बुत परस्ती की एलानिय्या मज़म्मत शुरूअ़ की तो सरदाराने कुरैश **उ़तबा व शैबा पिसराने रबीआ़ बिन अ़ब्दे शम्स, अबू सुफ़्यान, अबू जह्ल, वलीद बिन मुग़ीरा, आ़स बिन वाइल सह्मी और अस्वद बिन मुत्तलिब** वग़ैरा अबू त़ालिब के पास आए और कहने लगे कि तेरा भतीजा हमारे मा'बूदों को बुरा कहता है और हमारे आबाओ अज्दाद को गुमराह बताता है और हमें अह़मक़ ठहराता है तुम उस को मन्अ़ कर दो या बीच में से हट जाओ, हम उस से समझ लेंगे। अबू त़ालिब ने उन्हें नर्मी से समझा कर रुख़्सत कर दिया। आप ने तब्लीग़ को जारी रखा मगर कुरैश बजाए रूबराह[4] होने के आप से हिक़्दो अ़दावत[5] ज़ियादा करने लगे और एक दूसरे को आप से लड़ने पर उभारने लगे। वोह दोबारा अबू त़ालिब के पास आए और कहने लगे : "अबू त़ालिब ! बेशक हम में तेरी क़द्रो मन्ज़िलत है हम ने तुम से कहा था कि अपने भतीजे को मन्अ़ कर दो, मगर तुम ने ऐसा नहीं किया, खुदा की क़सम ! हम अपने मा'बूदों और आबाओ अज्दाद की तौहीन गवारा नहीं कर सकते, तुम उस को रोक दो वरना वोह और तुम मैदान में आओ कि हम दोनों में से एक का फ़ैसला हो जाए।" वोह येह कह कर चले गए। अबू त़ालिब ने

---

1 ......तुम्हें तह्स नह्स करना चाहता है।

2 ......صحيح البخارى، كتاب التفسير، سورة الشعراء، باب ولا تخزني يوم يبعثون، الحديث: ٤٧٧٠، ج ٣، ص ٢٩٤ علميه۔

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया उसे कुछ काम न आया उस का माल और न जो कमाया। (پ ٣٠، اللهب: ١،٢) **इल्मिय्या**

4 ......आमादा। 5 ......कीना व दुश्मनी।

www.dawateislami.net

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को बुला कर कहा : "ऐ मेरे भतीजे ! तेरी क़ौम ने मेरे पास आ कर ऐसा ऐसा कहा है, तू अपने आप पर और मुझ पर रह़्म कर और मुझे اَمْرِمَا لَایُطَاق[1] की तक्लीफ़ न दे।" येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदीं ख़याल कि अब मेरे चचा ने मुझे छोड़ दिया है और मेरी मदद से आ़जिज़ आ गया है, यूं फ़रमाया : "ऐ मेरे चचा ! अल्लाह की क़सम ! अगर वोह सूरज को मेरे दाएं हाथ पर और चांद को मेरे बाएं हाथ पर रख दें ताकि मैं इस काम को छोड़ दूं तब भी मैं इस को न छोड़ूंगा यहां तक कि अल्लाह इसे ग़ालिब कर दे या मैं खुद इस में हलाक हो जाऊं।"[2]

دست از طلب ندارم تا کام من بر آید　　یا تن رسد بجاناں یا جاں ز تن بر آید

फिर आप आबदीदा हुवे और रो पड़े। आप वापस हुवे तो अबू त़ालिब ने बुला कर कहा : "ऐ मेरे भतीजे ! जो कुछ आप चाहें कहें मैं कभी आप का साथ न छोड़ूंगा।" जब कुरैश ने देखा कि अबू त़ालिब इस तरह़ नहीं मानता तो अ़म्मारा बिन वलीद बिन मुग़ीरा को साथ ले कर उस के पास आए, कहने लगे : ऐ अबू त़ालिब ! येह अ़म्मारा कुरैश में निहायत क़वी और ख़ूब सूरत नौजवान है। हम येह तुझे देते हैं तू इस को अपना बेटा बना ले और इस के इवज़ में अपने भतीजे को हमारे ह़वाले कर दे। अबू त़ालिब ने कहा : "अल्लाह की क़सम ! तुम मुझे बड़ी तक्लीफ़ देते हो, क्या तुम मुझे अपना बेटा देते हो कि मैं उसे तुम्हारे वासित़े पालूं और अपना बेटा तुम्हें दूं कि उसे क़त्ल कर डालो ! अल्लाह की क़सम ! ऐसा हरगिज़ न होगा।"[3] येह सुन कर कुरैश और भी बरअफ़्रोख़्ता हो गए वोह एक रोज़ वलीद बिन मुग़ीरा के पास जम्अ़ हुवे, वलीदे मज़्कूर फ़साह़तो बलाग़त में इन का सरदार था। अय्यामे ह़ज क़रीब थे। वलीद व कुरैश में यूं गुफ़्तगू हुई :

वलीद : ऐ गुरोहे कुरैश ! ह़ज का मौसिम आ गया है, अ़रब के क़बाइल तुम्हारे पास आएंगे जिन्हों ने तुम्हारे साह़िब का ह़ाल सुन लिया है। इस के बारे में एक राए पर इत्तिफ़ाक़ कर लो ऐसा न हो कि तुम एक दूसरे की तक्ज़ीब करो।

कुरैश : आप ही एक राए क़ाइम कर दें हम उसे तस्लीम कर लेंगे।

वलीद : नहीं ! तुम ही कहो मैं सुनता हूं।

1......ऐसा काम जिस की त़ाक़त न हो।　2......सीरते इब्ने हिशाम।

3 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،مباداۃ رسول اللّٰہ...الخ،ص۱۰۳۔۱۰۴ملتقطاً۔

www.dawateislami.net

कुरैश : हम कहेंगे कि वोह काहिन है।

वलीद : **अल्लाह** की क़सम ! वोह काहिन नहीं, हम ने काहिन देखे हुवे हैं उस का कलाम न काहिन का ज़म ज़मा[1] है न सज्अ़।[2]

कुरैश : हम कहेंगे कि वोह दीवाना है।

वलीद : वोह दीवाना नहीं, हम ने दीवानगी देखी हुई है वोह दीवाने का ग़ैज़ो ग़ज़ब नहीं न दीवाने का ख़ल्जान[3] व वस्वसा है।

कुरैश : हम कहेंगे कि वोह शाइ़र है।

वलीद : वोह शाइ़र नहीं, हमें तमाम अक़्सामे शे'र रज्ज़, हज़ज, क़रीज़, मक़्बूज़ और मबसूत़ मा'लूम हैं उस का कलाम शे'र नहीं।

कुरैश : हम कहेंगे कि वोह जादूगर है।

वलीद : वोह जादूगर नहीं, हम ने जादूगर और उन के जादू देखे हुवे हैं, येह जादूगरों का फूंक मारना नहीं और न इन का रस्सियों या बालों को गिरह देना है।

कुरैश : अबू अ़ब्दे शम्स ! फिर तुम बताओ हम क्या कहें ?

वलीद : **अल्लाह** की क़सम ! उस के कलाम में बड़ी ह़लावत[4] है, उस कलाम की अस्ल मज़बूत़ जड़ वाला दरख़्त ख़ुरमा है और उस की फ़र्अ़ फल है। उन बातों में से जो तुम कहोगे वोह ज़रूर पहचान ली जाएगी कि झूट है उस के बारे में सिह़ह़त से क़रीब तर क़ौल येह है कि तुम कहो : वोह जादूगर है और ऐसा कलाम लाया है जो जादू है, इस कलाम में वोह बाप बेटे में, भाई भाई में, मियां बीवी में और ख़ैश[5] व अक़ारिब में जुदाई डाल देता है।

वलीद का कलाम सुन कर वोह मजलिस से चले गए जब मौसिमे ह़ज में लोग आने लगे तो वोह उन के रास्तों में बैठते जो कोई उन के पास से गुज़रता वोह उस को आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से डरा देते और आप का ह़ाल बयान कर देते **अल्लाह** तआ़ला ने वलीद के बारे में येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

ذَرۡنِیۡ وَمَنۡ خَلَقۡتُ وَحِیۡدًا ﴿۱۱﴾ وَّ جَعَلۡتُ لَہٗ مَالًا مَّمۡدُوۡدًا ﴿۱۲﴾ وَّ بَنِیۡنَ شُہُوۡدًا ﴿۱۳﴾ وَّ مَہَّدۡتُّ لَہٗ تَمۡہِیۡدًا ﴿۱۴﴾

छोड़ दे मुझ को और उस को जो मैं ने बनाया अकेला और दिया मैं ने उस को माल फैला कर और बेटे मौजूद (या'नी ज़िन्दगी वाले) और तय्यारी

---

1 ......गीत। 2 ......क़ाफ़िया दार कलाम। शाइ़री। 3 ......अन्देशा।
4 ......मिठास। 5 ......ख़ैश (خ۔ے۔ش) या'नी क़रीबी रिश्तेदार।

www.dawateislami.net

ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ﴿۱۶﴾ (مدثر، ع ۱، آیت ۱۱)[1]

कर दी उस को ख़ूब तय्यारी और फिर लालच रखता है कि और दूं । कोई नहीं वोह है हमारी आयतों का मुख़ालिफ़ ।[2]

इन के बा'द की और कई आयतें वलीद ही के बारे में हैं ।

इसी त़रह़ एक दिन जब कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में अकेले बैठे हुवे थे सरदारे क़ौम उ़तबा बिन रबीआ़ बिन अ़ब्दे शम्स और क़ुरैश में यूं[3] गुफ़्त्गू हुई :

उ़तबा : ऐ गुरौहे क़ुरैश ! क्या मैं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास जाऊं ताकि उस से कलाम करूं और चन्द बातें उस के आगे पेश करूं शायद वोह उन में से एक बात को पसन्द करे पस हम वोह कर दें और वोह हम से बाज़ रहे ।

क़ुरैश : हां ऐ अबल वलीद ! आप जाइये और उस से गुफ़्त्गू कीजिये ।

उ़तबा : (ह़ज़रत से मुख़ात़ब हो कर) भाई के बेटे ! आप को मा'लूम है कि ख़ैश व अक़ारिब[4] में आप बुज़ुर्ग व बरगुज़ीदा और नसब में आ़ली रुत्बा हैं आप अपनी क़ौम में एक नया मज़्हब लाए हैं जिस से आप ने इन की जमाअ़त को परागन्दा[5] कर दिया है आप ने इन के दानाओं को नादान बताया इन के मा'बूदों और इन के दीन को बुरा कहा और इन के गुज़श्ता आबाओ अज्दाद को काफ़िर बताया । सुनिये ! मैं चन्द बातें पेश करता हूं शायद आप इन में से एक बात पसन्द फ़रमाएं ।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** अबल वलीद ! बयान कर, मैं सुनता हूं ।

उ़तबा : भाई के बेटे ! इस नए मज़्हब से आप का मक़्सूद अगर माल है तो हम आप के लिये इतना माल जम्अ़ कर देते हैं कि आप हम सब से ज़ियादा मालदार बन जाएं, अगर इस से हम पर शरफ़ मक़्सूद है तो हम आप को अपना सरदार बना लेते हैं आप के बिग़ैर कोई काम न किया करेंगे । अगर आप को मुल्क मत़्लूब है तो हम आप को अपना बादशाह तस्लीम कर लेते हैं । अगर हम आप से उस जिन्न को न रोक सकें जो आप के पास आता है तो आप का इ़लाज कराएंगे और इ़लाज में अपना ख़र्च करेंगे यहां तक कि वोह जिन्न भाग जाए ।

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे मुझ पर छोड़ जिसे मैं ने अकेला पैदा किया और इसे वसीअ़ माल दिया और बेटे दिये सामने ह़ाज़िर रहते और मैं ने इस के लिये त़रह़ त़रह़ की तय्यारियां कीं फिर येह त़म्अ़ करता है कि मैं और ज़ियादा दूं हरगिज़ नहीं वोह तो मेरी आयतों से इ़नाद रखता है । (پ۲۹،المدّثّر:۱۱-۱٦) **इल्मिय्या**

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،تحير الوليد بن المغيرة...الخ،ص ۱۰۵ علميه

3 ......सीरते इब्ने हिशाम । 4 ......रिश्तेदारों । 5 ......मुन्तशिर ।

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** अबल वलीद ! क्या तू कह चुका जो कहना था ?

उ़तबा : हां !

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ से सुन !

उ़तबा : सुनाइये !

(आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सूरए حٰمٓ السجدہ की आयात ता आयए सजदा तिलावत फ़रमा कर सजदा किया और उ़तबा खड़ा सुनता रहा)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** अबल वलीद ! तू ने सुना ?

उ़तबा : मैं ने सुन लिया, आप जानें और आप का काम !

कुरैश : (उ़तबा को आता देख कर एक दूसरे से) **अल्लाह** की क़सम ! अबुल वलीद वोह चेहरा ले कर नहीं आया जो ले कर गया था। (उ़तबा को पास बैठा देख कर) अबल वलीद ! वहां का ह़ाल सुनाइये !

उ़तबा : अल्लाह की क़सम ! मैं ने ऐसा कलाम सुना कि इस की मिस्ल कभी नहीं सुना, **अल्लाह** की क़सम ! वोह शे'र नहीं न जादू है न कहानत। ऐ गुरौहे कुरैश ! मेरा कहा मानो, उस शख़्स को करने दो जो करता है और उस से अलग हो जाओ। **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने जो कलाम उस से सुना है उस की बड़ी अ़ज़मतो शान होगी। अगर अ़रब उस को मग़्लूब कर लें तो तुम ग़ैर के ज़रीए उस से बच गए। अगर वोह अ़रब पर ग़ालिब आ गया तो उस का मुल्क तुम्हारा मुल्क है और उस की इ़ज़्ज़त तुम्हारी इ़ज़्ज़त है तुम उस के सबब से ख़ुश नसीब हो जाओगे।

कुरैश : अबल वलीद ! **अल्लाह** की क़सम ! उस ने अपनी ज़बान से तुझे भी जादू कर दिया।

उ़तबा : उस की निस्बत मेरी येही राए है, तुम जो चाहो करो।(1)

अब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र बिलादे अ़रब में दूर दूर पहुंच चुका था कुरैश रोज़ बरोज़ तशद्दुद में ज़ियादती करते जाते थे, इन्हों ने आप को त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें दीं कमीने लोगों को आप पर बर अंगेख़्ता किया, आप की तक्ज़ीब की, आप पर इस्तिह्ज़ा किया, आप को शाइर कहा, जादूगर बताया, काहिन कहा, सिड़ी(2) और पागल बताया मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बराबर तब्लीग़ फ़रमाते रहे।

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،قول عتبة بن ربيعة...الخ،ص ١١٤ ملخصاً ـ علميه

2 ......दीवाना।

www.dawateislami.net

एक रोज़ आप ख़ानए का'बा के नज़्दीक नमाज़ पढ़ रहे थे। ह़रम शरीफ़ में उस वक़्त कुरैश की एक जमाअ़त मौजूद थी। उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ने अबू जह्ल की तरग़ीब से ज़ब्ह़ किये हुवे ऊंटों की औझ[1] सजदे की ह़ालत में आप के दोनों शानों के दरमियान रख दी, येह देख कर वोह सब ना बकार क़ह्क़हा मार कर हंसे। किसी ने आप की साह़िबज़ादी बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को ख़बर कर दी वोह फ़ौरन दौड़ी आईं और आप की पुश्ते मुबारक से वोह पलीदी दूर कर दी और उन को बुरा भला कहा। येह ना बकार हु़रुमातुल्लाह[2] की बे हु़रमती भी किया करते थे। इस लिये जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो यूं बद दुआ़ फ़रमाई :[3] "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू गुरौहे कुरैश को पकड़। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू **अबू जह्ल बिन हिशाम, उ़तबा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़** और **उमय्या बिन ख़लफ़** को पकड़।" इस ह़दीस के रावी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने इन सब को बद्र के दिन मक़्तूल देखा और उमय्या के सिवा सब चाहे बद्र में फेंक दिये गए, उमय्या मोटा था, जब उसे खींचने लगे तो चाह में डालने से पहले ही उस के आ'ज़ा टुकड़े टुकड़े हो गए।[4]

इसी त़रह़ शयात़ीने कुरैश एक दिन ख़ानए का'बा में जम्अ़ थे। अबू जह्ल एक भारी पथ्थर उठा कर सजदे की ह़ालत में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक को कुचलने के लिये आगे बढ़ा जब वोह नज़्दीक पहुंचा तो वोह ख़ौफ़ज़दा और रंग बदला हुवा पीछे भागा और पथ्थर हाथ से न फेंक सका। कुरैश ने पूछा : ऐ अबल ह़कम ! तुझे क्या हुवा ? बोला : जब मैं नज़्दीक गया तो मैं ने उस के वरे[5] एक ऊंट देखा। **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने उस का वोह सर और गर्दन और दांत देखे कि कभी किसी ऊंट के देखने में नहीं आए, वोह ऊंट मुझे खाने लगा था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :[6] "वोह जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام थे, अगर अबू जह्ल और नज़्दीक आता तो उसे पकड़ लेते।"[7] एक दफ़्आ़ का ज़िक्र है कि वोह ना बकार का'बे के साए में बैठे हुवे थे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ रहे थे। उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ने आप की गर्दने मुबारक में चादर डाल ली फिर उसे

1......मे'दा।　　2......जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मोह़तरम बनाया।

3 ......صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب طرح جیف المشرکین فی البئر۔

4 ......صحيح البخاری، كتاب الجزية و الموادعة، باب طرح جيف المشركين...الخ، الحديث:٣١٨٥، ج٢، ص٣٧٢۔ علميه

5......क़रीब।

6......सीरते इब्ने हिशाम।

7 ......السيرة النبوية لابن هشام، ما دار بين رسول الله...الخ، ص١١٧ ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

खींचा यहां तक कि आप घुटनों के बल गिर पड़े। लोगों को गुमान हुवा कि आप का इन्तिक़ाल हो गया, ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौड़े आए और फ़रमाने लगे :[1] "क्या तुम एक शख़्स को इस लिये क़त्ल करते हो कि वोह कहता है कि मेरा परवर दगार **अल्लाह** है।"[2] येह सुन कर वोह हट गए।

येह अज़िय्यतें आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक मह़दूद न थीं बल्कि आप के अस्ह़ाब भी त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों में मुब्तला थे। वोह ग़रीब मुसलमान जिन का मक्का में कोई क़बीला और यार व यावर[3] न था ख़ुसूसिय्यत से कुरैश का तख़्तए मश्क़[4] बने हुवे थे। अज़िय्यतें मुख़्तलिफ़ अन्वाअ़ की थीं मसलन आग पर लिटा देना, तपती रैत पर लिटा कर भारी पथ्थर सीने पर रख देना ताकि करवट न ले सके, चाबुक से इस क़दर मारना कि टूट जाए, चटाई में लपेट कर नाक में धुंआं देना, जकड़ कर कोठड़ी में बन्द कर देना, पाउं में रस्सी बांध कर तपती रैत पर घसीटना, गला इस क़दर घोंटना कि दम निकल जाने का गुमान हो जाए, ज़दो कोब[5] से बेहोश व मुख़्तलुल ह़वास[6] कर देना, नेज़ा मार कर हलाक कर देना वग़ैरा।

सिने 5 नबुव्वत

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि मुसलमानों का मक्का में रहना मुश्किल हो गया है तो आप ने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि मुल्के ह़बशा का बादशाह अपने हां किसी पर ज़ुल्म नहीं होने देता, तुम में से जो चाहें वहां चले जाएं। चुनान्चे, इस साल माहे रजब में अव्वल अव्वल ग्यारह मर्द और चार औ़रतों ने हिजरत की, जिन में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और इन की ज़ौजए मोह़तरमा रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह भी थीं। ह़ुस्ने इत्तिफ़ाक़ से जब येह बन्दरगाह पर पहुंचे तो दो तिजारती जहाज़ ह़बशा को जा रहे थे, जहाज़ वालों ने इन को सस्ते किराये पर बिठा लिया। कुरैश को ख़बर लगी तो उन्हों ने बन्दरगाह तक तआ़क़ुब किया मगर मौक़अ़ निकल चुका था।[7]

मुहाजिरीन क़रीबन तीन माह ह़बशा में अम्नो अमान से रहे। माहे शव्वाल में इन को येह ग़लत़ ख़बर पहुंची कि अहले मक्का ईमान ले आए हैं इस लिये इन में से अक्सर मक्का में वापस आ गए।

---

1 ......सह़ीह़ बुख़ारी, मनाक़िबे अबू बक्र।

2 ......صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی...الخ، الحدیث:۳۶۷۸، ج۲، ص۵۲۴۔ علمیه

3 ......दोस्त व मददगार। 4 ......ज़ुल्मो सितम का निशाना। 5 ......मार पीट।

6 ......ह़वास बाख़्ता, जिस के ह़वास जाते रहें।

7 ......المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی، الھجرة الاولی الی الحبشة، ج۱، ص۵۰۳...... والطبقات الکبری، ذکر ھجرة من ھاجر...الخ، ج۱، ص۱۵۹۔ علمیه

www.dawateislami.net

सिने 6 नबुव्वत

इस साल आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अमीरे ह़म्ज़ा ईमान लाए और इन के तीन दिन बा'द ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुशर्रफ ब इस्लाम हुवे। जो लोग ह़बशा से वापस आए थे कुरैश ने उन को और दूसरे मुसलमानों को ज़ियादा सताना शुरूअ़ किया यहां तक कि हिजरत पर मजबूर हुवे। चुनान्चे, इस दफ़्आ़ 83 मर्द और 18 औ़रतें हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इजाज़त से हिजरत कर के ह़बशा चली गईं।[1]

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा को हिजरत फ़रमाई तो मुहाजिरीने ह़बशा में से कुछ लोग फ़ौरन वापस आ गए। ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा जो वहां रह गए थे वोह फ़त्ह़े ख़ैबर के वक़्त मदीने में वापस आए। जब ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो हुज़ूर ने उन से मुआ़नक़ा किया और पेशानी को बोसा दे कर फ़रमाया :[2] "मैं नहीं बता सकता कि फ़त्ह़े ख़ैबर से मुझे ज़ियादा खुशी है या जा'फ़र के आने से।"

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ब इरादए हिजरत ह़बशा की त़रफ़ निकले थे। बर्कुल ग़िमाद तक जो मक्का से यमन की त़रफ़ पांच दिन की राह है, येह पहुंचे थे कि क़बीलए क़ारह का सरदार इब्नुद्दुग़ुन्ना मिला, उस ने पूछा : कहां जा रहे हो ? आप ने जवाब दिया कि मेरी क़ौम ने मुझे निकलने पर मजबूर कर दिया, मैं चाहता हूं कि कहीं अलग जा कर ख़ुदा की इ़बादत करूं। इब्नुद्दुग़ुन्ना ने कहा : येह नहीं हो सकता कि आप सा फ़य्याज़ व मेहमान नवाज़, अपनों से नेक सुलूक करने वाला, ग़रीब परवर और ह़वादिसे ह़क़ में लोगों का मददगार मक्का से निकल जाए या निकाला जाए, मैं आप को अपनी पनाह में लेता हूं। इस लिये आप इब्नुद्दुग़ुन्ना के साथ मक्का में वापस आ गए।[3]

जब कुरैश को येह ख़बर पहुंची तो इन्हों ने मश्वरा कर के एक सिफ़ारत बसर कर्दगी अ़म्र बिन अल आ़स और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ (या अ़म्मारा बिन वलीद) नजाशी की

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی، اسلام الفاروق، ج۲، ص۳ و الهجرة الثانية...الخ، ج۲، ص۳۱ ملخصاً۔ علميه

2 ......مشکٰوة شريف بحواله شرح السنه، باب المصافحة والمعانقة۔ (مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب المصافحة و المعانقة، الحديث: ٤٦٨٦۔٤٦٨٧، ج٢، ص١٧٠۔١٧١ ملتقطاً۔ علميه)

3 ......तफ़्सील के लिये देखो सह़ीह़ बुख़ारी, बाब हिजरते मदीना। 12 मिन्ह

(صحيح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی و اصحابه الی المدينة، الحديث: ٣٩٠٥، ج٢، ص٥٩١ ملخصاً۔ علميه)

www.dawateislami.net

ख़िदमत में मअ़ तहाइफ़ भेजी। सुफ़रा[1] वहां पहुंच कर पहले बादशाह के बत़ारिक़ा[2] से मिले और नज़्रें पेश कर के कहा कि हम में चन्द नादान लौंडों ने एक नया दीन ईजाद किया है जो नसरानिय्यत व बुत परस्ती दोनों से जुदा है, वोह भाग कर यहां पनाह गुज़ीन हो गए हैं हमें अशराफ़े क़ुरैश ने आप के बादशाह के पास भेजा है कि इन को वापस कर दे दरख़्वास्त पेश होने पर आप हमारी ताईद कर दें। चुनान्चे, सुफ़रा ने नजाशी की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर तहाइफ़ पेश किये और सारा क़िस्सा बयान किया, बादशाह ने मुहाजिरीन को त़लब किया। बत़ारिक़ा ने कहा : "ह़ुज़ूर ! येह लोग इन के ह़ाल से ब ख़ूबी वाक़िफ़ हैं आप इन के ह़वाले कर दें।" बादशाह ने कहा : "नहीं पहले हम इन से दरयाफ़्त कर लें।" चुनान्चे, जब मुहाजिरीन दरबार में ह़ाज़िर हुवे तो ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने इन की त़रफ़ से इस त़रह़ तक़रीर शुरूअ़ की :[3]

"शाहा ! हम लोग एक जाहिल क़ौम थे, बुतों को पूजते थे, मुर्दार खाते थे, बदकारियां करते थे, अपनों से दुश्मनी रखते थे, पड़ोसियों से बुरा सुलूक करते थे, क़वी लोग कमज़ोरों को खा जाते थे, हम इस ह़ालत में थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने हम में से एक रसूल हमारी त़रफ़ भेजा जिस के नसब और सिद्क़ो अमानत और परहेज़गारी से हम लोग पहले से वाक़िफ़ थे, उस ने हम को येह दा'वत दी कि हम ख़ुदा को एक जानें, उसी की इ़बादत करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं, बुतों की पूजा जो हम और हमारे बाप दादा किया करते थे छोड़ दें, सच बोला करें, अमानत अदा करें, अपनों से मह़ब्बत व सुलूक रखें, हमसायों से नेक सुलूक करें, मह़ारिम और ख़ूं रेज़ी से बाज़ आएं, यतीमों का माल न खाएं, अ़फ़ीफ़ औ़रतों[4] पर तोहमत न लगाएं, नमाज़ पढ़ें, सदक़ा दें, रोज़े रखें, पस हम उस पर ईमान ले आए, **अल्लाह** की इ़बादत करने लगे, शिर्क व बुत परस्ती छोड़ दी, ह़राम को ह़राम और ह़लाल को ह़लाल जानने लगे, इस जुर्म पर हमारी क़ौम हम पर टूट पड़ी और अज़िय्यत दे कर मजबूर करने लगी कि हम **अल्लाह** की इ़बादत छोड़ कर फिर बुतों को पूजने लग जाएं और ख़बाइस को ब दस्तूर साबिक़ ह़लाल समझें। जब इन्हों ने हम पर क़ह्रो ज़ुल्म किया और हमारे फ़राइज़े मज़हबी की बजा आवरी में सद्देराह[5] हो गए तो हम आप के मुल्क में आप की पनाह में आ गए, हमें उम्मीद है कि आप के हां हम पर ज़ुल्म न होगा।"

1......सफ़ीर की जम्अ़। 2......पादरी। 3......सीरते इब्ने हिशाम।
4......पाक दामन औ़रतें। 5......रुकावट।

www.dawateislami.net

येह तक़रीर सुन कर नजाशी ने कहा कि तुम्हारे पैग़म्बर पर जो कलाम उतरा है उस में से कुछ सुनाओ। ह़ज़रत जा'फ़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सूरए मरयम की चंद आयतें पढ़ीं। नजाशी सुन कर इतना रोया कि उस की दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई और उस के असाक़िफ़ा[1] भी रोए। फिर नजाशी ने कहा : "येह कलाम और इन्जील दोनों एक ही चराग़ के परतव हैं।" इस के बा'द सफ़ीरों से कहा कि तुम वापस चले जाओ, **अल्लाह** की क़सम ! मैं इन को तुम्हारे ह़वाले न करूंगा।

दूसरे दिन अ़म्र बिन अल आ़स ने ह़ाज़िरे दरबार हो कर अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! येह लोग ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की निस्बत बुरा अ़क़ीदा रखते हैं।" नजाशी ने मुसलमानों को त़लब किया, जब वोह ह़ाज़िर हुवे तो उन से पूछा कि "तुम ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की निस्बत क्या अ़क़ीदा रखते हो ?" ह़ज़रते जा'फ़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : हम ए'तिक़ाद रखते हैं जैसा कि हमारे पैग़म्बर ने फ़रमाया है कि ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और पैग़म्बर और रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं। येह सुन कर नजाशी ने ज़मीन से एक तिन्का उठा लिया और कहा : "वल्लाह ! जो तुम ने कहा ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उस से इस तिन्के के बराबर भी ज़ियादा नहीं हैं।" जब नजाशी की ज़बान से येह अल्फ़ाज़ निकले तो बत़ारिक़ा ह़ाज़िरीन के नथनों से ख़र ख़राहट की आवाज़ आने लगी मगर नजाशी ने परवा न की और सिफ़ारत बिल्कुल ना काम वापस आई।[2]

सिने 7 नबुव्वत

क़ुरैश ने जब देखा कि बा वुजूद तशद्दुद व मज़ाह़मत के इस्लाम क़बाइले अ़रब में फैल रहा है। ह़ज़रते ह़म्ज़ा व उ़मर (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) जैसे लोग ईमान ला चुके हैं, नजाशी ने मुसलमानों को पनाह दी है और सिफ़ारत भी बे नीले मराहम[3] वापस आ गई है तो उन्हों ने बिल इत्तिफ़ाक़ येह क़रार[4] दिया कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को अ़लानिय्या क़त्ल कर दिया जाए। अबू त़ालिब को येह ख़बर पहुंची तो उस ने बनी हाशिम व बनी मुत्त़लिब को जम्अ़ कर के कहा कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ब ग़रज़े ह़िफ़ाज़त अपने शि'ब (दर्रह) में ले चलो, चुनान्चे, ऐसा ही किया गया, जब क़ुरैश को मा'लूम हुवा कि हाशिम व मुत्त़लिब की अवलाद ने (सिवाए अबू लहब के) बिला इम्तियाज़े मज़हब ह़ज़रत को इस त़रह़ अपनी पनाह में ले लिया है तो उन्हों ने मक़ामे मुह़स्सब में जो कि मक्का व मिना के दरमियान है आपस में येह अ़हद किया कि हाशिम व मुत्त़लिब की अवलाद से मुनाकह़त[5] और लैन दैन सब मौक़ूफ़ कर

---

1 ......उस्क़ुफ़ की जम्अ़, या'नी पादरियों के सरदार।

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،ارسال قريش الى الحبشة...الخ،ص١٣٢-١٣٤ملخصاً ـ علميه

3 ......मक़्सद ह़ासिल किये बिग़ैर।

4 ......خصائص کبریٰ للسیوطی بحوالہ بیہقی وابونعیم۔

5 ......शादी बियाह।

www.dawateislami.net

दिया जाए यहां तक कि वोह तंग आ कर मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को क़त्ल के लिये हमारे ह़वाले कर दें।[1] और ताकीदे मज़ीद के लिये येह मुआ़हदा तह़रीर कर के का'बतुल्लाह की छत में लटका दिया। कुफ़्फ़ारे कुरैश ने निहायत सख़्ती से इस मुआ़हदे पर अ़मल किया, बाहर से जो ग़ल्ला मक्के में आता वोह ख़ुद ही ख़रीद लेते और मुसलमानों तक न पहुंचने देते अगर उन में से कोई बत़ौरे सिलए रेह़्म अपने किसी मुसलमान रिश्तेदार को अनाज भेजता तो उस के भी सद्दे राह होते। ग़रज़ बनू हाशिम शा'बे अबी त़ालिब में त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें उठाते रहे। अबू त़ालिब का येह मा'मूल था कि जब लोग सो जाते तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ब ग़रज़े ह़िफ़ाज़त आप के बिस्तर से उठाता ताकि दूसरे बिस्तर पर जा लैटे और आप के बिस्तर पर अपने किसी बेटे या भाई को लिटाता।[2]

सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि अबू त़ालिब आप की मराआ़त व मदद किया करता था और आप के लिये नाराज़ हुवा करता था क्या येह अ़मल उस को फ़ाइदा देगा ? आप ने फ़रमाया : نَعَمْ وَجَدْتُّهٗ فِيْ غَمَرَاتٍ مِنَ النَّارِ فَاَخْرَجْتُهٗ اِلٰى ضَحْضَاحٍ.[3] हां ! मैं ने उसे सर ता पा बड़ी आग में पाया पस उस को निकाल कर थोड़ी आग में कर दिया जो उस के टख़्नों तक पहुंचती है।

येह तो अ़ज़ाबे क़ब्र में तख़्फ़ीफ़ है क़ियामत को भी उस की येही ह़ालत होगी। चुनान्चे, अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि अबू त़ालिब का ज़िक्र आया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَعَلَّهٗ تَنْفَعُهٗ شَفَاعَتِيْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَيُجْعَلُ فِيْ ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ يَغْلِيْ مِنْهُ دِمَاغُهٗ[4] मुझे उम्मीद है क़ियामत को मेरी शफ़ाअ़त उसे फ़ाइदा देगी पस उस को थोड़ी आग में कर दिया जाएगा जो उस के टख़्नों तक पहुंचेगी जिस से उस का दिमाग़ जोश खाएगा। बा'ज़ उ़लमा ने ख़िलाफ़े अह़ादीसे सिह़ाह़ अबू त़ालिब का ईमान साबित करने की कोशिश की है। والعلم عند الله

जब तीन साल इसी ह़ालत में गुज़र गए तो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर दी कि इस मुआ़हदे को दीमक इस त़रह़ चाट गई है कि **अल्लाह** के नाम के सिवा उस में कुछ बाक़ी नहीं रहा। आप ने येह ख़बर अबू त़ालिब को दी उस ने कुफ़्फ़ारे

---

1 ......صحیح بخاری، باب نزول النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مکہ۔

2 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني، دخول الشعب و خبر الصحيفة، ج٢، ص١٢-١٤۔ علميه

3 ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب شفاعة النبى...الخ، الحديث: ٢٠٩، ص١٣٣۔ علميه

4 ......صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب شفاعة النبى...الخ، الحديث: ٢١٠، ص١٣٣۔ علميه

www.dawateislami.net

कुरैश को जा कर कहा : "ऐ गुरौहे कुरैश ! मेरे भतीजे ने मुझ को इस त़रह़ ख़बर दी है तुम अपना मुआ़हदा लाओ, अगर येह ख़बर सह़ीह़ निकली तो तुम क़त़ए़ रेह़्म से बाज़ आओ और अगर ग़लत़ निकली तो मैं अपने भतीजे को तुम्हारे ह़वाले कर दूंगा।" वोह इस पर राज़ी हो गए, जब मुआ़हदा देखा गया तो वैसा ही पाया गया जैसा की ख़बर दी गई थी[1] उसी वक़्त पांच अश्ख़ास (हिशाम बिन अ़म्र, ज़ुबैर बिन अबी उमय्या मख़ज़ूमी, मुत़इ़म बिन अ़दी, अबुल बख़्तरी, ज़मआ़ बिन अल अस्वद) कुछ क़ीलो क़ाल के बा'द इस मुआ़हदे को चाक करने पर मुत्तफ़िक़ हो गए[2] और आख़िरेकार अबुल बख़्तरी ने ले कर फाड़ डाला, बाक़ी सब बजाए रू बराह[3] होने के मज़ीद ईज़ा के दरपे हो गए।

सिने 10 नबुव्वत

इस साल माहे रमज़ान में अबू त़ालिब ने वफ़ात पाई और इस के तीन रोज़ बा'द ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी इन्तिक़ाल फ़रमा गईं। अब कुफ़्फ़ारे कुरैश रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी पर और दिलैर हो गए। एक रोज़ एक ना बकार ने राह में आप के सरे मुबारक पर ख़ाक डाल दी आप इसी ह़ालत में घर तशरीफ़ ले गए आप की साह़िबज़ादी ने देखा तो पानी ले कर सरे मुबारक को धोने लगीं और रोती जाती थीं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जाने पिदर ! **अल्लाह** तआ़ला तेरे बाप को बचा लेगा।"[4]

आख़िर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तंग आ कर इस ख़याल से कि अगर सक़ीफ़ ईमान ले आए तो कुरैश के बर ख़िलाफ़ मेरी मदद करेंगे त़ाइफ़ का क़स्द किया, ज़ैद बिन ह़ारिसा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वहां पहुंच कर अशराफ़े सक़ीफ़ या'नी अ़ब्दु यालील और इस के भाई मसऊ़द व ह़बीब[5] को दा'वते इस्लाम दी। मगर उन्हों ने आप की दा'वत का बुरी त़रह़ जवाब[6] दिया एक बोला : "अगर तुझे ख़ुदा ने पैग़म्बर बनाया है

---

1 ......الخصائص الکبری،باب ماوقع فی قصة الصحیفة من الآیات،ج۱، ص۲۴۹۔۲۵۰ ملخصاً وصحیح البخاری، کتاب الحج،باب نزول النبی مکة،الحدیث:۱۵۸۹،ج۱،ص۵۳۵ملتقطاً۔ علمیه

2 ......الکامل فی التاریخ،ذکرامر الصحیفة،ج۱،ص۶۰۵۔ علمیه

3 ......आमादा।

4 ......سیرت ابن ہشام۔......(السیرة النبویة لابن هشام،وفاة ابی طالب و خدیجة،ص۱۶۵-۱۶۶ملتقطاً۔ علمیه)

5 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "मसऊ़द ह़बीब" लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लत़ी है जिस की वज्ह से दरमियान में "**वाव**" लिखने से रह गया, सह़ीह़ "**मसऊ़द व ह़बीब**" है, सीरते इब्ने हिशाम में लिखा है कि येह तीनों भाई थे। **و هم إخوة ثلاثة** : अ़ब्दु यालील बिन अ़म्र, व मसऊ़द बिन अ़म्र, व ह़बीब बिन अ़म्र बिन उ़मैर बिन औ़फ़ बिन सक़ीफ़। 6 ......सीरते इब्ने हिशाम।

www.dawateislami.net

तो वोह का'बे का पर्दा चाक कर रहा है।'' दूसरे ने कहा : ''क्या ख़ुदा को पैग़म्बरी के लिये तेरे सिवा कोई और न मिला ?'' तीसरे ने कहा : ''मैं हरगिज़ तुझ से कलाम नहीं कर सकता, अगर तू पैग़म्बरी के दा'वे में सच्चा है तो तुझ से गुफ़्तगू करना ख़िलाफ़े अदब है और अगर झूटा है तो क़ाबिले ख़िताब नहीं।'' जब आप मायूस हो कर वापस हुवे तो उन्हों ने कमीने लोगों और गुलामों को आप पर उभारा जो आप को गालियां देते और तालियां बजाते थे, इतने में लोग जम्अ़ हो गए वोह आप के रास्ते में दोरोया(1) सफ़ बांध कर खड़े हो गए जब आप दरमियान से गुज़रे तो क़दम उठाते वक़्त आप के पाउं पर पथ्थर बरसाने लगे यहां तक कि ना'लैने मुबारक ख़ून से भर गए, जब आप को पथ्थरों का सदमा पहुंचा तो बैठ जाते, मगर वोह बाज़ू थाम कर खड़ा कर देते जब फिर चलने लगते तो पथ्थर बरसाते और साथ साथ हंसते जाते। इस त़रह़ उन्हों ने उ़तबा और शैबा पिस्राने रबीआ़ के बाग़ तक आप का तआ़क़ुब किया, आप ने बाग़ में एक अंगूर की शाख़ के साए में पनाह ली, उ़तबा और शैबा अगर्चे आप के सख़्त दुश्मन थे मगर आप की इस ह़ालत पर उन को भी रह़्म आ गया, उन्हों ने अपने नसरानी गुलाम अ़द्दास से कहा कि अंगूर का एक ख़ोशा थाल में रख कर उन के पास ले जा और कह दे कि खा लें। आप ने बिस्मिल्लाह कह कर खाया, अ़द्दास मुतअ़ज्जिब हो कर कहने लगा कि इन शहरों के लोग ऐसा नहीं कहते। आप ने पूछा : तू कहां से है ? उस ने कहा नैनवा से। आप ने फ़रमाया कि वोह नेक बन्दे यूनुस बिन मता عَلَیْہِ السَّلَام का शहर है। फिर उस ने आप से यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ाल पूछा। आप ने फ़रमाया कि वोह भी मेरी त़रह़ पैग़म्बर थे। येह सुन कर वोह आप के हाथ पाउं चूमने लगा(2) और इस्लाम लाया।

इसी सफ़र में मक़ामे नख़्ला में जो मक्कए मुशर्रफ़ा से एक रात का रास्ता है। शहर नसीबीन(3) के जिन्न ह़ाज़िर हुवे। आप रात को नमाज़ में क़ुरआने मजीद पढ़ रहे थे वोह सुन कर ईमान लाए। ''وَاِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ الاٰیہ''(4) में इसी त़रफ़ इशारा है।(5) नख़्ला में चन्द रोज़ क़ियाम रहा, वहां से आप ह़िरा में तशरीफ़ लाए और मुत़इम बिन अ़दी को पैग़ाम भेजा कि क्या तुम मुझे अपनी पनाह व अमान में ले सकते हो ? मुत़इम ने क़बूल किया। आप रात को मुत़इम के हां रहे जब

1......दोनों त़रफ़।

2...... السيرة النبوية لابن هشام،سعى الرسول الى ثقيف يطلب النصرة،ص١٦٦ـ١٦٧ملتقطاً۔ علميه

3......येह मक़ाम मौसिल से छे दिन का रास्ता है और मौसिल से शाम को क़ाफ़िले का रास्ता है इस पर वाक़ेअ़ है। 12 मिन्ह

4......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ कितने जिन्न फेरे। (پ٢٦،الاحقاف:٢٩) **इल्मिय्या**

5...... السيرة النبوية لابن هشام،سعى الرسول الى ثقيف يطلب النصرة،ص١٦٨ـ علميه

www.dawateislami.net

सुब्ह़ हुई तो मुत़इम और उस के बेटों ने हथयार लगाए और आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि आप त़वाफ़ कीजिये और खुद तल्वारें लगाए हुवे मत़ाफ़ में मौजूद रहे जब ह़ज़रत त़वाफ़ से फ़ारिग़ हुवे तो इसी हैअत में आप के दौलत ख़ाने तक आप के साथ आए।

इस सफ़रे त़ाइफ़ के मुद्दतों बा'द एक रोज़ आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप पर कोई ऐसा दिन आया है जो उहुद के दिन से सख़्त हो ? फ़रमाया : बेशक मैं ने तेरी क़ौम से देखा जो देखा और जो मैं ने उन से देखा उस में सब से सख़्त अ़क़्बा का दिन था जब कि मैं ने अपने आप को अ़ब्दु यालील बिन किलाल पर पेश किया, उस ने दा'वते इस्लाम को क़बूल न किया, पस मैं ग़म की ह़ालत में गर्दन झुकाए चला, मुझे होश न आया मगर क़र्नुस्सआ़लिब(1) में सर उठाया तो क्या देखता हूं कि एक बादल ने मुझे साया किया हुवा है। मैं ने नज़र उठाई तो उस बादल में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام दिखाई दिये। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे आवाज़ दी और कहा : बेशक अल्लाह तआ़ला ने आप की क़ौम का क़ौल सुन लिया है और उन्हों ने जो आप को जवाब दिया वोह भी सुन लिया है, आप की त़रफ़ पहाड़ों का फ़िरिश्ता भेजा गया है ताकि आप उसे हुक्म दें जो कुछ आप अपनी क़ौम में चाहते हैं। हुज़ूर का बयान है कि फिर मुझे पहाड़ों के फ़िरिश्ते ने आवाज़ दी और सलाम के बा'द कहा : ऐ मुह़म्मद ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की क़ौम का क़ौल सुन लिया है। मैं पहाड़ों का फ़िरिश्ता हूं, मुझ को आप के रब ने आप की त़रफ़ भेजा है ताकि आप मुझे जो चाहें हुक्म दें अगर आप चाहते हैं कि मैं अख़्-शबैन(2) को इन पर उलट दूं ? (तो उलट देता हूं) आप ने जवाब दिया ''नहीं बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि अल्लाह तआ़ला इन की पुश्तों से ऐसे बन्दे पैदा करेगा जो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करेंगे और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएंगे।''(3)

सिने 11 ता 13 नबुव्वत

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दत शरीफ़ थी कि हर साल मौसिमे ह़ज में तमाम क़बाइले अ़रब को जो मक्का और नवाहे़ मक्का में मौजूद होते दा'वते इस्लाम दिया करते थे। इसी ग़रज़ से इन के मेलों में भी तशरीफ़ ले जाया करते इन मेलों में से उ़काज़ व मजन्ना व ज़ुल

1......मक्कए मुकर्रमा से एक दिन और रात के फ़ासिले पर एक मक़ाम।

2......अख़्-शबैन दो पहाड़ हैं जिन के दरमियान मक्कए मुशर्रफ़ा वाक़ेअ़ है इन के नाम येह हैं : अबू क़ुबैस और क़ुईक़आ़न। 12 मिन्ह

3......صحیح بخاری و صحیح مسلم۔(صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق،باب اذا قال احدکم...الخ،الحدیث:۳۲۳۱،ج۲، ص۳۸۶و صحیح مسلم،کتاب الجھاد والسیر،مالقی النبی من اذی المشرکین والمنافقین، الحدیث:۱۷۹۵،ص۹۹۲۔ علمیه)

www.dawateislami.net

मजाज़ का ज़िक्र ह़दीस में आया है। उ़काज़ जो उन सब से बड़ा था नख़्ला व त़ाइफ़ के दरमियान त़ाइफ़ से दस मील के फ़ासिले पर लगा करता था। येह अ़रब की तिजारत की बड़ी मन्डी और शो'रा का दंगल था, ज़ी क़ा'दा की पहली तारीख़ से बीस तक रहा करता था। फिर मजन्ना जो मर्रुज़्ज़हरान के मुत्तसिल मक्के से चन्द मील पर था, अख़ीर ज़ी का'दा तक लगता। और ज़ुल मजाज़ जो अ़रफ़ा के मुत्तसिल था ज़िल ह़िज्जा की पहली तारीख़ से आठवीं तक क़ाइम रहता, बा'दे अज़ां लोग ह़ज को निकलते। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों के डेरों पर जा कर तब्लीग़ फ़रमाते मगर कोई आप की नुस्रत का दम न भरता था। अ़रब के क़बाइल जिन के पास ह़ज़रत ब ग़रज़े तब्लीग़ तशरीफ़ ले गए येह हैं : **बनू आ़मिर मुह़ारिब, फ़ज़ारा, ग़स्सान, मुर्रह, ह़नीफ़ा, सुलैम, अ़ब्स, बनू नज़्र, किन्दा, कल्ब, ह़ारिस बिन का'ब उ़ज़्रा, ह़ज़ारमा,** इन सब को आप ने दा'वते इस्लाम दी मगर कोई ईमान न लाया। अबू लहब लईन हर जगह साथ जाता जब आप कहीं तक़रीर फ़रमाते तो वोह बराबर से कहता : "इस का कहना न मानयो ! येह बड़ा दरोग़ गो, दीन से फिरा हुवा है।"

अल्लाह तआ़ला को अपने दीन और अपने रसूल का ए'ज़ाज़ मन्ज़ूर था इस लिये नबुव्वत के ग्यारहवें साल माहे रजब में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़स्बे आ़दत मिना में अ़क़्बा के नज़दीक जहां अब मस्जिदे अ़क़्बा है क़बीलए ख़ज़रज के छे आदमियों को इस्लाम की दा'वत दी तो वोह ईमान ले आए।

वाज़ेह़ रहे कि मदीने का अस्ली नाम यसरब था,(1) बहुत क़दीम ज़माने में यहां क़ौमे अ़मालिक़ा के लोग आबाद थे, इन के बा'द शाम से यहूद आ बसे और उन्हों ने यसरब और इस के नवाह़ में अपनी सुकूनत के लिये आहिस्ता आहिस्ता छोटे छोटे क़ल्ए बनाए, जब मआरिब वाक़ेअ़ यमन में सैले अ़रिम(2) आया तो वहां के लोग यमन से निकल कर मुख़्तलिफ़ जगहों में चले गए। चुनान्चे, क़बीलए अज़्द बिन ग़ौस क़ह़त़ानी के दो भाई औस व ख़ज़रज यसरब में आ बसे। तमाम अन्सार इन्ही दो के ख़ानदान से हैं जैसा कि पहले आ चुका है, यहूद का चूंकि बड़ा इक़्तिदार व ज़ोर था इस लिये क़बीले औस व ख़ज़रज आख़िरे कार इन के ह़लीफ़ बन गए। यहूद अहले किताब और साहि़बे इ़ल्म थे, औस व ख़ज़रज ने जो बुत परस्त थे इन से सुना हुवा था कि एक और पैग़म्बर अ़न क़रीब मबऊ़स होने वाला है इस लिये जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़स्बे मा'मूल दा'वते इस्लाम दी तो ख़ज़रज के छे अश्ख़ास ने आप के ह़ालात पर ग़ौर कर के

---

1 ......जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर यहां तशरीफ़ लाए तो इस का नाम मदीनतुन्नबी पड़ गया और अब मदीना कहते हैं, ह़दीस में इसे यसरब कहने की मुमानअ़त है। **इ़ल्मिय्या**

2 ......तबाह कुन सैलाब।

www.dawateislami.net

एक दूसरे से कहा कि "वल्लाह ! येह तो वोही हैं जिन का ज़िक्र हम ने यहूदे मदीना से सुना हुवा है, कहीं यहूद हम से सबक़त न ले जाएं।" इस लिये वोह सब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए, उन्हों ने मदीने में पहुंच कर अपने भाई बन्दों को इस्लाम की दा'वत दी। आयिन्दा साल बारह मर्द अय्यामे ह़ज में मक्का में आए और उन्हों ने अ़क़्बा के मुत्तसिल आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ पर औ़रतों की त़रह़ बैअ़त की, कि हम **अल्लाह** के साथ किसी को शरीक न ठहराएंगे, चोरी न करेंगे, अपनी अवलाद को क़त्ल न करेंगे, ज़िना न करेंगे, बोहतान न लगाएंगे, किसी अम्रे मा'रूफ़ में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी न करेंगे। चूंकि औ़रतों से इन्ही बातों पर बैअ़त हुई थी इस लिये बैअ़ते मज़्कूरा को औ़रतों की सी बैअ़त कहा गया, इस को बैअ़ते अ़क़्बए ऊला या'नी उ़क़्बा में अव्वल मरतबा बैअ़त बोलते हैं। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन बारह के साथ मुस्अ़ब बिन उ़मैर बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ को बदीं ग़रज़ भेजा कि इन को ता'लीमे इस्लाम दें। ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अस्अ़द बिन ज़ुरारा के मकान पर क़ियाम किया फिर इन को साथ ले कर बनी अ़ब्दुल अश्हल औसी में आए, इस क़बीले के सरदार सा'द बिन मुआ़ज़ और उसैद बिन हुज़ैर आप के समझाने से ईमान लाए और इन के ईमान लाने से सारा क़बीला मुसलमान हो गया।(1) बक़ौले मश्हूर उसी साल माहे रजब की सत्ताईसवीं रात को आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ालते बेदारी में जसद शरीफ़ के साथ मे'राज शरीफ़ हुवा और पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं।

नबुव्वत के तेरहवें साल अय्यामे ह़ज में अन्सार के साथ उन की क़ौम के बहुत से मुशरिक भी बग़रज़े ह़ज मक्के में आए, जब ह़ज से फ़ारिग़ हुवे तो उन में से तिहत्तर73 मर्द और दो2 औ़रतें अपनी क़ौम से छुप कर अय्यामे तशरीक़ में रात के वक़्त अ़क़्बए मिना में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, उस वक़्त ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो अब तक इस्लाम न लाए थे आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे, सब से पहले वोही बोले : "ऐ गुरौहे ख़ज़रज ! मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अपनी क़ौम में मुअ़ज़्ज़ज़ हैं और अपने शहर में मददगारों की एक जमाअ़त साथ रखते हैं, हम ने इन को दुश्मनों से बचाया है अगर तुम अपने अ़हद को पूरा कर सको और इन का साथ दे सको तो बेहतर वरना अभी से इन का साथ छोड़ दो।" इस के बा'द आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को दा'वते इस्लाम दी और फ़रमाया कि मैं तुम से इस बात पर बैअ़त लेता हूं कि तुम मुझ से वोह चीज़ बाज़ रखोगे जो अपने अहलो अ़याल से

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، بدء اسلام الانصار، ص ١٧٠-١٧٤ ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

बाज़ रखते हो । येह सुन कर सब से पहले बरा बिन मा'रूर अन्सारी ख़ज़रजी ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक पकड़ कर कहा : "हमें मन्ज़ूर है या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें बैअ़त कर लीजिये ! वल्लाह ! हम अहले ह़र्ब व अहले सिलाह़ हैं, येही चीज़ें बाप दादा से हमें विरसे में मिली हैं ।" अबुल हैसम बिन तहिहयान अन्सारी औसी ने क़त्ए कलाम कर के अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यहूद से हमारे तअ़ल्लुक़ात हैं जो बैअ़त से टूट जाएंगे, ऐसा न हो कि जब **अल्लाह** आप को ग़लबा दे तो आप हमें छोड़ कर अपनी क़ौम में चले जाएं ।" आप ने मुस्कुरा कर फ़रमाया : "नहीं ! तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून है, मेरा जीना मरना तुम्हारे साथ है, मैं तुम्हारा हूं और तुम मेरे हो, तुम्हारा दुश्मन मेरा दुश्मन और तुम्हारा दोस्त मेरा दोस्त है ।" इस त़रह़ जब वोह बैअ़त के लिये आमादा हो गए तो अ़ब्बास बिन उ़बादा बिन नज़्ला अन्सारी ख़ज़रजी ने उन से कहा : "येह भी ख़बर है तुम मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से किस चीज़ पर बैअ़त कर रहे हो, येह अ़रबो अ़जम से जंग पर बैअ़त है, अगर तुम्हारा ख़याल है कि जब तुम्हारे माल ताराज हों और तुम्हारे अशराफ़ क़त्ल हों, तुम इन का साथ छोड़ दोगे तो अभी से छोड़ दो और अगर ऐसी मुसीबत पर भी साथ दे सको तो बैअ़त कर लो ।" सब बोले : हम इसी बात पर बैअ़त करते हैं मगर या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर हम इस अ़हद पर साबित रहें तो हमें क्या मिलेगा ? हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : बिहिश्त । येह सुन कर सब ने आप के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की इसे अ़क़्बा की बैअ़ते[1] सानिय्या कहते हैं । बैअ़त के बा'द आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन में बारह अश्ख़ास को नक़ीब मुक़र्रर किया, जिन के नाम ख़ुद अन्सार ने पेश किये और उन से यूं ख़ित़ाब फ़रमाया : "तुम अपनी अपनी क़ौम के ह़ालात के कफ़ील हो, जैसा कि ह़वारी ह़ज़रते ईसा इब्ने मरयम (عليهما السلام) के थे और मैं अपनी क़ौम का कफ़ील हूं ।" वोह बोले कि हां ! मन्ज़ूर है । इस के बा'द वोह अपने अपने डेरों पर चले गए । सुब्ह़ को क़ुरैश उन से कहने लगे : हम ने सुना है कि तुम ने हमारे साथ जंग करने पर बैअ़त की है ? उन के मुशरिक साथियों ने कहा कि कोई ऐसी बात नहीं हुई, येह सुन कर क़ुरैश वापस चले गए मगर तफ़्तीश के बा'द ह़क़ीक़ते ह़ाल जो उन को मा'लूम हुई तो उन्हों ने अन्सार का तआ़क़ुब किया । सिर्फ़ सा'द बिन उ़बादा उन के हाथ आए, ज़ालिमों ने इन्ही के ऊंट के तंग[2] से इन के हाथ गर्दन से जकड़ लिये और मारते पीटते और सर के बालों से घसीटते हुवे इन को मक्का में ले आए वहां जुबैर बिन मुत़इम बिन अ़दी और ह़ारिस बिन ह़र्ब बिन उमय्या ने इन को छुड़ाया ।[3]

---

1 ......इस बैअ़त के ह़ालात सीरते इब्ने हिशाम से माख़ूज़ हैं । 12 मिन्ह

2 ......ज़ीन कसने का चौड़ा तस्मा ।

3 ......السيرة النبوية لابن هشام،امر العقبة الثانية،ص١٧٥-١٧٩ ملتقطاًوملخصاً علميه

www.dawateislami.net

चौथा बाब

हालाते हिजरत ता वफ़ात शरीफ़

कुरैश की अज़िय्यत रसानी के सबब से अब मक्का में मुसलमानों का क़ियाम निहायत दुश्वार हो गया इस लिये आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि हिजरत कर के मदीना चले जाओ। चुनान्चे, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم मुतफ़र्रिक़ तौर पर रफ़्ता रफ़्ता चोरी छुपे मदीना पहुंच गए और मक्का में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّیْ के इ़लावा ह़ज़राते अबू बक्र व अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और कुछ बीमार व आ़जिज़ रह गए। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हिजरत की इजाज़त मांगी तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उम्मीद है कि मुझे हिजरत की इजाज़त मिल जाएगी," अ़र्ज़ किया : "मेरे मां बाप आप पर कुरबान, येह उम्मीद है ?" फ़रमाया : "हां !" येह सुन कर ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हमराही की उम्मीद पर ह़ाज़िरे ख़िदमत रहे।

ख़बरे दारुन्नदवा

कुरैश ने जब देखा कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मददगार मक्के से बाहर मदीने में भी हो गए हैं और मुहाजिरीने मक्का को अन्सार ने अपनी ह़िमायत व पनाह में ले लिया है तो वोह डरे कि कहीं ऐसा न हो कि आप भी वहां चले जाएं और अपने मददगारों को साथ ले कर ह़म्ला आवर हों, इस लिये तमाम क़बाइल के सरदार **उ़तबा व शैबा पिसराने रबीआ़, अबू सुफ़्यान, तुऐ़मा बिन अ़दी, ज़ुबैर बिन मुत़इम, नज़्र बिन ह़ारिस, अबुल बख़्तरी बिन हिशाम, ज़मआ़ बिन अस्वद, अबू जह्ल, नबीह व मुनब्बेह पिसराने ह़ज्जाज और उमय्या बिन ख़लफ़ वग़ैरा "दारुन्नदवा"**[1] में मश्वरे के लिये जम्अ़ हुवे। इब्लीसे लईन भी कम्बल ओढ़े और शैखे़ पारसा की सूरत बनाए दरवाज़े पर आ मौजूद हुवा, उन्हों ने पूछा कि तुम कौन हो ? बोला : "मैं नजदियों से एक शैख़ हूं, मैं ने सुन लिया है जिस अम्र के लिये तुम जम्अ़ हुवे हो, इस लिये मैं भी ह़ाज़िर हुवा हूं ताकि सुनूं कि तुम क्या कहते हो और मुझे तुम से अपनी राए और नसीह़त से भी दरेग़ न होगा।" वोह बोले : बहुत अच्छा ! आइये ! जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुआ़मला पेश हुवा तो एक बोला कि उस के हाथ पाउं में लोहे की बेड़ियां डाल कर एक

1......सीरते इब्ने हिशाम, ख़बरे दारुन्नदवा।

www.dawateislami.net

कोठड़ी में बन्द कर दो और खाने पीने को कुछ न दो, ख़ुद हलाक हो जाएगा। शैख़े नजदी ने कहा : येह राए अच्छी नहीं, **अल्लाह** की क़सम ! अगर तुम उस को इस त़रह़ कोठड़ी में क़ैद भी कर दो तो इस की ख़बर बन्द दरवाज़े में से उस के अस्ह़ाब तक पहुंच जाएगी वोह तुम पर ह़म्ला कर के उस को छुड़ा लेंगे। दूसरा बोला कि उस को शहर से निकाल दो, जहां चाहे चला जाए हमें उस का ख़ौफ़ न रहेगा। शैख़े नजदी ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! येह राए अच्छी नहीं, क्या तुम नहीं देखते कि उस का कलाम कैसा शीरीं और दिल फ़रेब है, अगर तुम ऐसा करोगे तो मुमकिन है वोह किसी क़बीले में चला जाए और अपने कलाम से उसे अपना ताबेअ़ बना ले और फिर उन्हें साथ ले कर तुम पर ह़म्ला कर दे। अबू जह्ल बोला : मेरे ज़ेह्न में एक राए है जो अब तक किसी को नहीं सूझी। उन्हों ने पूछा : वोह क्या है ? अबू जह्ल ने कहा : "वोह येह है कि हम हर क़बीले में से एक एक आ़ली क़दर दिलेर ख़ानदानी जवान लें और हर नौजवान के हाथ में एक एक तेज़ तल्वार दे दें, फिर वोह सब मिल कर उस को क़त्ल कर दें इस त़रह़ जुर्मे ख़ून तमाम क़बाइल पर आ़इद होगा। अ़ब्दे मनाफ़ की अवलाद तमाम क़बाइल से लड़ नहीं सकती इस लिये वोह ख़ून-बहा लेने पर राज़ी हो जाएंगे और हम आसानी से **ख़ून-बहा** दे देंगे।" येह सुन कर शैख़े नजदी बोला : "येही बात दुरुस्त है इस के सिवा कोई और राए नहीं।" सब ने इस राए पर इत्तिफ़ाक़ किया और मजलिस बरख़ास्त हो गई। क़ुरआने मजीद की आयए ज़ैल में इसी क़िस्से की त़रफ़ इशारा है :

وَ اِذْ یَمْكُرُ بِكَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لِیُثْبِتُوْكَ اَوْ یَقْتُلُوْكَ اَوْ یُخْرِجُوْكَ ؕ وَ یَمْكُرُوْنَ وَ یَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَیْرُ الْمٰكِرِیْنَ ۝۳۰ (انفال، ع۴)(1)

ऐ मह़बूब ! याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें और वोह अपना मक्र करते थे और ***अल्लाह*** *अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और* ***अल्लाह*** *की ख़ुफ़्या तदबीर सब से बेहतर।* (2)

क़िस्सए हिजरत

जब क़ुरैश क़त्ल पर इत्तिफ़ाक़ कर के अपने अपने घरों को चले गए तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में

---

1 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،ھجرۃ الرسول،ص ۱۹۱۔۱۹۳ ملتقطاً ۔ علمیه

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब याद करो जब काफ़िर तुम्हारे साथ मक्र करते थे कि तुम्हें बन्द कर लें या शहीद कर दें या निकाल दें और वोह अपना सा मक्र करते थे और **अल्लाह** अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता था और **अल्लाह** की ख़ुफ़्या तदबीर सब से बेहतर। (پ۹،الانفال:۳۰) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ह़ाज़िर हुवे और क़ुरैश के इरादे की आप को इत्तिलाअ़ दी और अ़र्ज़ किया कि आज रात आप अपने बिस्तर पर न सोएं। ऐन[1] दोपहर के वक़्त हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर तशरीफ़ ले गए दरवाज़े पर दस्तक दी, इजाज़त के बा'द अन्दर दाख़िल हुवे और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : "जो तुम्हारे पास हैं उन को निकाल दो।" ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा बाप आप पर क़ुरबान ! आप के सिवा कोई और नहीं।" आप ने फ़रमाया कि "मुझे हिजरत की इजाज़त हो गई है।" ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा बाप आप पर क़ुरबान ! मैं आप की हमराही चाहता हूं।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्ज़ूर फ़रमाया। ह़ज़रते सिद्दीक़ ने फिर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! मेरा बाप आप पर क़ुरबान ! आप इन दो ऊंटनियों[2] में से एक पसन्द फ़रमा लें।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं क़ीमत से लूंगा। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा।

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जो शादी के बा'द से उस वक़्त तक अपने वालिदे बुज़ुर्गवार के घर में थीं बयान फ़रमाती हैं कि हम ने सफ़र की ज़रूरियात को जल्दी तय्यार कर दिया और दोनों के लिये कुछ खाना तौशादान में रख दिया। ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अपने निताक़ (पट्के)[3] के दो टुकड़े कर के एक से तौशादान का मुंह और दूसरे से मश्कीज़े का मुंह बांधा। जिस की वज्ह से इन को ज़ातुन्निताक़ैन कहा जाता है। एक काफ़िर अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़ित़ दुअली जो रास्ते से ख़ूब वाक़िफ़ था रहनुमाई के लिये उजरत पर नोकर रख लिया गया और दोनों ऊंटनियां उस के सिपुर्द कर दी गईं ताकि तीन रातों के बा'द ग़ार पर ह़ाज़िर कर दे। इस इन्तिज़ाम के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने को तशरीफ़ ले गए।

एक तिहाई रात गुज़री ही थी कि क़ुरैश ने ह़स्बे क़रार दादे दौलत ख़ाने का मुह़ासरा कर लिया और इस इन्तिज़ार में रहे कि आप सो जाएं तो ह़म्ला आवर हों। उस वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास सिर्फ़ ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم थे। क़ुरैश को अगर्चे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सख़्त अ़दावत थी, मगर आप की अमानत व दियानत पर

1..क़िस्सए हिजरत के लिये देखो सह़ीह़ बुख़ारी बाब हिजरतुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व अस्ह़ाबे इलल मदीना। 12 मिन्ह

2..ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इन ऊंटनियों को चार माह से बबूल की पत्तियां खिला खिला कर तय्यार किया था। जैसा कि सह़ीह़ बुख़ारी में है। 12 मिन्ह

3......पट्का या'नी कमर से बांधने वाला कपड़ा।

www.dawateislami.net

उन्हें इस क़दर ए'तिमाद था कि जिस के पास कुछ माल व अस्बाब ऐसा होता कि उसे ख़ुद अपने पास रखने में जोखम नज़र आती[1] वोह आप ही के पास अमानत रखता। चुनान्चे, अब भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कुछ अमानतें थीं इस लिये आप ने ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से फ़रमाया कि तुम मेरी सब्ज़ चादर ओढ़ कर मेरे बिस्तर पर सो रहो, तुम्हें कोई तक्लीफ़ न होगी और हुक्म दिया कि येह अमानतें वापस कर के चले आना और ख़ुद ख़ाक की एक मुठ्ठी ली।[2] और सूरए यासिन शरीफ़ के शुरूअ़ की आयात فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ तक पढ़ते हुवे कुफ़्फ़ार पर फेंक दी और उस मज्मअ़ में से साफ़ निकल गए, किसी ने आप को न पहचाना। एक मुख़्बिर ने जो उस मज्मअ़ में न था उन को ख़बर दी कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो यहां से निकल गए और तुम्हारे सरों पर ख़ाक डाल गए हैं। उन्हों ने अपने सरों पर जो हाथ फेरा तो वाक़ेअ़ में ख़ाक पाई मगर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को सब्ज़ चादर ओढ़े हुवे सोते देख कर ख़याल किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सो रहे हैं। जब सुब्ह़ को ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बेदार हुवे तो वोह कहने लगे कि उस मुख़्बिर ने सच कहा था।[3]

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने से निकल कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर तशरीफ़ ले गए। रास्ते में बाज़ारे ह़ज़्वरा में जो बा'द में मस्जिदे ह़राम में शामिल कर लिया गया ठहर कर यूं ख़ित़ाब[4] फ़रमाया : "बत़्ह़ाए मक्का![5] तू पाकीज़ा शहर है और मेरे नज़्दीक कैसा अ़ज़ीज़ है अगर मेरी क़ौम मुझे तुझ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा किसी और जगह सुकूनत पज़ीर न होता।" उसी रात आप ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को साथ ले कर घर के अ़क़ब में एक दरीचे से निकले और कोहे सौर के ग़ार पर पहुंचे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चाहा कि ग़ार में दाख़िल हों मगर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि आप दाख़िल न हों जब तक कि मैं पहले दाख़िल न हो लूं ताकि अगर इस में कोई सांप, बिच्छू वग़ैरा हो तो वोह मुझ को काटे आप को न काटे। इस लिये ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पहले दाख़िल हुवे, ग़ार में झाड़ू दी, इस के एक त़रफ़ में कुछ सूराख़ पाए। अपना शलवार फाड़ कर इन

1......ख़त़रा होता। 2......सीरते इब्ने हिशाम।

3 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار،باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث:۳۹۰۵، ج۲، ص۵۹۲ ملتقطاً و السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،ھجرۃ الرسول، ص۱۹۲۔۱۹۳ ملتقطاً۔ علمیہ

4 ......معجم البلدان لیاقوت الحموی، تحت حزورہ۔

5......ऐ मक्का की पथरीली ज़मीन।

www.dawateislami.net

को बन्द किया मगर दो सूराख़ बाक़ी रह गए, इन में अपने दोनों पाउं डाल दिये। फिर अ़र्ज़ किया : अब तशरीफ़ लाइये। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाख़िल हुवे और सरे मुबारक ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में रख कर सो गए। एक सूराख़ से किसी चीज़ ने ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को काटा, मगर वोह अपनी जगह से न हिले कि मबादा[1] रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जाग उठें। ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के आंसू जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक पर गिरे, तो फ़रमाया : "अबू बक्र तुझे क्या हुवा !" अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप पर फ़िदा ! मुझे किसी चीज़ ने काट खाया।" आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ख़्म पर अपना लुआ़बे दह्न लगा दिया, फ़ौरन सब दर्द जाता रहा।[2] इस ग़ार में दोनों तीन रातें रहे। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे अ़ब्दुल्लाह जो नौख़ेज़ जवान थे रात को ग़ार में साथ सोते सुब्ह़ मुंह अन्धेरे शहर चले जाते और क़ुरैश जो मश्वरा करते या कहते शाम को ग़ार में आ कर उस की इत्तिलाअ़ देते। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम आ़मिर बिन फ़ुहैरा दिन को बकरियां चराता और रात को दो बकरियां ग़ार पर ले जाता। इन का दूध हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के काम आता। आ़मिर मुंह अन्धेरे बकरियों को अ़ब्दुल्लाह के नक़्शे पा[3] पर हांक ले जाता ताकि नक़्शे क़दम मिट जाए।[4]

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात को अपने दौलत ख़ाने से निकल आए तो सुब्ह़ को कुफ़्फ़ार ने ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से पूछा कि तेरा यार कहां गया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे मा'लूम नहीं इस लिये पाए मुबारक के निशान के ज़रीए़ से उन्हों ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तआ़क़ुब किया। जब वोह कोहे सौर के पास पहुंचे तो पाए मुबारक का निशान उन पर मुश्तबा हो गया।[5] वोह पहाड़ पर चढ़ गए और ग़ार के दहाने पर पहुंच गए मगर ग़ार पर उस वक़्त ख़ुदाई पहरा लगा हुवा था। दहाने[6] पर मकड़ी ने जाला तना हुवा था[7] और किनारे पर कबूतरी ने अन्डे दे रखे थे। येह देख कर वोह कहने लगे कि अगर

---

1 ......ऐसा न हो कि। 2 ......मिश्कात शरीफ़, बाबे मनाक़िबे अबी बक्र। 3 ......क़दमों के निशान

4 ......معجم البلدان،حزورۃ،ج٢،ص١٤٦ ومشکاۃ المصابیح،کتاب المناقب،باب مناقب ابی بکر،الحدیث:٦٠٣٤، ج٢، ص٤١٧ والسیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ھجرۃ الرسول،ص١٩٤۔ علمیه

5 ......या'नी क़दमों के निशान वाज़ेह़ न रहे। 6 ......मिश्कात शरीफ़, बाबे फ़िल मो'जिज़ात, फ़स्ल सालिस।

7 ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات،الحدیث:٥٩٣٤،ج٢،ص٣٩٦۔ علمیه

www.dawateislami.net

(ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इस में दाख़िल होते तो मकड़ी जाला न तनती और कबूतरी अन्डे न देती। इस ह़ाल में आहट पा कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर इन में से किसी की नज़र अपने क़दम पर पड़ जाए तो हमें देख लेगा।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ग़म न कर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ हमारे साथ है।"

क़िस्सए कोताह ग़ार में तीन रातें गुज़ार कर शबे दो शम्बा(1) यकुम रबीउ़ल अव्वल को ऊंटनियों पर मदीने की त़रफ़ रवाना हुवे आ़मिर बिन फ़ुहैरा को ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ब ग़रज़े ख़िदमत अपने साथ सुवार कर लिया था। बदरक़ा(2) आगे आगे रास्ता बनाता जाता था। रास्ते में अगर कोई ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत पूछता था कि येह कौन हैं ? जवाब देते कि येह मेरे हादिये त़रीक़(3) हैं।(4)

ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि (दो शम्बा की) रात को रवाना हो कर हम बराबर चलते रहे यहां तक कि दो पहर हो गई और रास्ते में आमदो रफ़्त बन्द हो गई। हमें एक बड़ा पथ्थर नज़र आया, हम उस के नज़्दीक उतर पड़े, मैं ने उस के साये में अपने हाथों से जगह हमवार की, उस पर पोस्तीन(5) बिछा दी और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप सो जाएं मैं आप के इर्द गिर्द पासबानी करता हूं।" आप सो गए मैं निकला कि देखूं इर्द गिर्द कोई दुश्मन तो नहीं आ रहा। क्या देखता हूं कि एक चरवाहा अपनी बकरियां इसी पथ्थर की त़रफ़ साये में आराम पाने के लिये ला रहा है। मैं ने पूछा : तू किस का ग़ुलाम है ? उस ने क़ुरैश के एक शख़्स का नाम लिया तो मैं ने उसे पहचान लिया और पूछा : क्या तेरी बकरियों में दूध देने वाली हैं ? वोह बोला कि हां ! मैं ने कहा : क्या तू दोह कर दे सकता है ? उस ने जवाब दिया कि हां ! पस उस ने एक बकरी पकड़ ली। मैं ने कहा : इस का थन गर्दो ग़ुबार से साफ़ कर ले, फिर कहा कि तू अपना हाथ साफ़ कर ले। उस ने एक प्यालए चौबीन(6) में दूध दोहा। मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मित़्हरा(7) साथ ले गया था जिस से आप वुज़ू करते। मैं ने ठन्डा करने के लिये दूध में थोड़ा सा पानी मिला कर ख़िदमते अक़्दस में पेश किया। आप ने ख़ूब पिया।

1......शबे पीर। 2......रास्तों का माहिर, रास्ता बताने वाला। 3......रहनुमा, रास्ता दिखाने वाले।

4 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،باب هجرة المصطفٰی...الخ، ج۲،ص۱۰۲و ص۱۱۸۔۱۲۳ و السيرة الحلبية، باب الهجرة الى المدينة،ج۲،ص۵۷۔ علميه

5......चमड़े का कोट। 6......लकड़ी के प्याले। 7......वुज़ू का बरतन।

www.dawateislami.net

जिस से मेरी त़बीअ़त खुश हुई, फिर फ़रमाया : क्या चलने का वक़्त नहीं आया ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि हां ! दिन ढल चुका था कि हम वहां से चले ।[1]

दूसरे रोज़ या'नी सह शम्बा के दिन, जब क़ुदैद के क़रीब पहुंचे तो सुराक़ा बिन मालिक बिन जो'शुम मुद्लिजी तआ़क़ुब में निकला । जिस की कैफ़िय्यत वोह खुद यूं बयान करता है : "कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के क़ासिद हमारे पास आए, कहने लगे कि जो शख़्स मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) या अबू बक्र को क़त्ल करेगा या गिरिफ़्तार कर के लाएगा उसे एक ख़ून-बहा के बराबर (या'नी सो ऊंट) इन्आ़म दिया जाएगा । मैं अपनी क़ौम बनू मुदलिज की एक मजलिस में बैठा हुवा था कि उन में से एक शख़्स ने आ कर कहा : "सुराक़ा ! मैं ने अभी साह़िल पर चन्द अश्ख़ास देखे हैं, मेरे ख़याल में वोह मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और उन के साथी हैं ।" मैं समझ गया कि वोही हैं मगर मैं ने उस से कहा कि वोह नहीं हैं तू ने फ़ुलां फ़ुलां को देखा है जो हमारे सामने से गए हैं । फिर थोड़ी देर के बा'द मैं मजलिस से उठ कर घर आया और अपनी लौंडी से कहा कि मेरे घोड़े को पुश्ते[2] के पीछे (बत़्ने वादी में) ले जा कर ठहरा । मैं नेज़ा ले कर अपने घर के अ़क़्ब से निकला और बुने नेज़ा[3] से ज़मीन में ख़त़ खींचा और नेज़े के बालाई ह़िस्से को नीचा किये हुवे घोड़े के पास पहुंचा । मैं ने सुवार हो कर घोड़े को ज़रा दौड़ाया यहां तक कि मैं उन के क़रीब जा पहुंचा । मेरे घोड़े ने ठोकर खाई, मैं गिर पड़ा, उठ कर मैं ने तरकश की त़रफ़ हाथ बढ़ाया और उस में से फ़ाल के तीर निकाले कि ह़म्ला करना चाहिये या नहीं मगर जवाब ख़िलाफ़े मुराद निकला । मैं ने तीर की बात न मानी । दोबारा घोड़े पर सुवार हो कर आगे बढ़ा यहां तक कि जब मैं ने रसूलुल्लाह की क़िराअत की आवाज़ सुनी ह़ालांकि आप (मेरी त़रफ़) न देखते[4] थे और अबू बक्र अक्सर पीछे देखते थे तो मेरे घोड़े के अगले पाउं घुटनों तक ज़मीन में धंस गए मैं ने उतर कर घोड़े को ज़ज्रो तौबीख़[5] की । उस ने चाहा कि उठे मगर वोह पाउं ज़मीन से न निकाल सका । जब वोह (ब मुश्किल तमाम) सीधा खड़ा हुवा तो नागाह[6] उस के पाउं के निशान से

---

1 ......صحیح بخاری، باب علامات النبوت فی الاسلام۔ نیز باب مناقب المہاجرین وفضلہم.
(صحیح البخاری، کتاب المناقب و کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث: ۳۶۱۵و۳۶۵۲، ج۲، ص۵۰۵ و۵۱۶ ملتقطاً۔ علمیہ)

2 ......मज़्बूत़ी के लिये लगाया गया मिट्टी का ढेर । 3 ......नेज़े की नोक ।

4 ......आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिमाद था इस लिये आप को सुराक़ा की कुछ परवा न थी ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना तो ख़याल न था मगर मह़ब्बत की वज्ह से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बड़ा ख़याल था इस लिये अज़ रूए शफ़्क़त पीछे देखते थे कि सुराक़ा की त़रफ़ से क्या ज़ुहूर में आता है । 12 मिन्ह

5 ......ला'नत मलामत । 6 ......अचानक ।

www.dawateislami.net

धुवें कि मानिन्द ग़ुबार आस्मान की त़रफ़ उठा। मैं ने फिर तीरों से फ़ाल ली मगर ख़िलाफ़े मुराद ही जवाब मिला। मैं ने पुकारा : अमान ! अमान ! येह सुन कर वोह ठहर गए। मैं अपने घोड़े पर सुवार हो कर उन के पास पहुंच गया। मुकर्रर तजरिबे[1] से मेरे ज़ेह्न में येह बात आई कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बोल बाला होगा। मैं ने आप से क़ुरैश के इरादे और इन्आ़म का ज़िक्र किया और ज़ादो मताअ़[2] पेश किया। मगर उन्हों ने कुछ न लिया और सिर्फ़ येही दरख़्वास्त की, कि हमारा ह़ाल पोशीदा रखना। इस के बा'द मैं ने आप से दरख़्वास्त की, कि मुझे किताबे अम्न तह़रीर फ़रमा दीजिये। आप के हुक्म से आ़मिर बिन फ़ुहैरा ने चमड़े के टुकड़े पर फ़रमाने अम्न लिख[3] दिया।" सुराक़ा ने फ़रमाने अम्न अपनी तरकश में रख लिया और वापस हुवा रास्ते में जिस से मिलता येह कह कर वापस कर लेता कि मैं ने बहुत ढूंडा, आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस त़रफ़ नहीं हैं। हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुसलमानों का एक क़ाफ़िला मिला जो शाम से माले तिजारत ला रहा था। उस क़ाफ़िले में ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी थे जिन्हों ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को सफ़ेद कपड़े पहनाए।[4]

क़ुदैद ही में सह शम्बा[5] को दोपहर के वक़्त उम्मे मा'बद आ़तिका बिन्ते ख़ालिद ख़ुज़ाइय्या के हां गुज़र हुवा। उम्मे मा'बद की क़ौम क़ह़्त़ ज़दा थी वोह अपने ख़ैमे के सेह़्न में बैठा करती और आने जाने वालों को पानी पिलाती और खाना खिलाती। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1......बार बार के तजरिबे। 2......सफ़र के लिये सामान।

3......सह़ीह़ बुख़ारी, बाबुल हिजरत इलल मदीना। इस मौक़अ़ पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुराक़ा से फ़रमाया : كَيْفَ بِكَ اِذَا لَبِسْتَ سِوَارَىْ كِسْرٰى (तेरा क्या ह़ाल होगा जब तू किसरा के दो कंगन पहनाया जाएगा) जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए हुनैन व त़ाइफ़ से वापस हुवे तो जिइर्राना में सुराक़ा ने वोह फ़रमाने अम्न पेश किया। ह़ज़रत ने फ़रमाया कि आज वफ़ा व एह़सान का दिन है। सुराक़ा आगे बढ़े और ईमान लाए। जब अ़हदे फ़ारूक़ी में ईरान फ़त्ह़ हुवा और किसरा हुरमुज़ के कंगन ह़ज़रते फ़ारूक़ के हाथ आए तो आप ने क़ौले रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ व तह़क़ीक़ के लिये वोह कंगन सुराक़ा को पहना दिये और फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِى سَلَبَهُمَا كِسْرٰى وَاَلْبَسَهُمَا سُرَاقَة (या'नी सब सताइश अल्लाह को है जिस ने किसरा जैसे शाहे अ़जम के कंगन छीन कर सुराक़ा जैसे ग़रीब बदवी को पहना दिये।) सुराक़ा ने सिने 24 हिजरी में ब अ़हदे ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वफ़ात पाई। 12 मिन्ह

4...... صحيح البخارى، كتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبى واصحابه الى المدينة، الحديث:٣٩٠٦، ج٢، ص٥٩٣۔ علميه

5......बरोज़ मंगल।

www.dawateislami.net

ने उस से गोश्त और खजूरें ख़रीदने का क़स्द किया मगर उस के पास इन में से कोई चीज़ मौजूद न थी। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस के ख़ैमे की एक जानिब एक बकरी देखी, पूछा : "येह बकरी कैसी है?" उस ने जवाब दिया कि लाग़री व कमज़ोरी के सबब दूसरी बकरियों से पीछे रह गई है, फिर पूछा : "क्या दूध देती है?" उस ने कहा कि नहीं। आप ने फ़रमाया कि क्या तू मुझे इजाज़त देती है कि इसे दोह लूं? उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप पर कुरबान! अगर आप इस के नीचे दूध देखते हैं तो दोह लें। आप ने उस के थन पर अपना हाथ मुबारक फेरा और बिस्मिल्लाह पढ़ी और **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगी। बकरी ने आप के लिये दोनों टांगें चौड़ी कर दीं, दूध उतार लिया और जुगाली की। आप ने बरतन त़लब किया जो जमाअ़त को सैराब कर दे। पस आप ने उस में ख़ूब दोहा यहां तक कि उस पर झाग आ गई। फिर उम्मे मा'बद को पिलाया यहां तक कि सैर हो गई और अपने साथियों को पिलाया यहां तक कि सैर हो गए। सब के बा'द आप ने पिया। बा'दे अज़ां दूसरी बार दोहा यहां तक कि बरतन भर दिया और उस को (बत़ौरे निशान) उम्मे मा'बद के पास छोड़ा और उस को इस्लाम में बैअ़त किया फिर सब वहां से चल दिये।(1) थोड़ी देर के बा'द उम्मे मा'बद का ख़ावन्द घर आया, उस ने दूध जो देखा तो ह़ैरान हो कर कहने लगा कि येह दूध कहां से आया? ह़ालांकि घर में तो कोई ऐसी बकरी नहीं जो दूध का एक क़त़रा भी दे। उम्मे मा'बद ने जवाब दिया कि एक मुबारक शख़्स आया था कि जिस का ह़ुल्या शरीफ़ ऐसा ऐसा था। वोह बोला : "वोही तो क़ुरैश के सरदार हैं जिन का चरचा हो रहा है, मैं ने क़स्द कर लिया है कि उन की सोह़बत में रहूं।"

जब मदीने के क़रीब मौज़ए ग़मीम में पहुंचे जो राबिग़ व जुह़फ़ा के दरमियान है तो बुरैदा अस्लमी क़बीलए बनी सह्म के सत्तर सुवार ले कर ह़ुसूले इन्आ़म की उम्मीद पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गिरिफ़्तार करने आया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तू कौन है? उस ने जवाब दिया कि मैं बुरैदा हूं। येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से बत़ौरे तफ़ावुल(2) फ़रमाया : अबू बक्र! हमारा काम ख़ुशो ख़ुर्रम और दुरुस्त हो गया, फिर आप ने बुरैदा से पूछा कि तू किस क़बीले से है? उस ने कहा कि बनू अस्लम से। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया : हमारे लिये ख़ैरो सलामती है।

1 ......مشکوٰۃ،باب فی المعجزات،فصل۔(مشكاة المصابيح،كتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات، الحديث:٥٩٤٣، ج٢،ص٣٩٨۔علميه)

2 ......अच्छी फ़ाल लेने के त़ौर पर।

www.dawateislami.net

फिर पूछा : कौन से बनू अस्लम से ? उस ने कहा कि बनू सह्म से। आप ने फ़रमाया : तू ने अपना ह़िस्सा (इस्लाम से) पा लिया। बा'दे अज़ां बुरैदा ने ह़ज़रत से पूछा आप कौन हैं ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं **अल्लाह** का रसूल मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह हूं। बुरैदा ने नाम मुबारक सुन कर कलिमए शहादत पढ़ा और मुसलमान हो गया। जो सुवार बुरैदा के साथ थे वोह भी मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। बुरैदा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने में आप का दाख़िला झन्डे के साथ होना चाहिये पस अपना इ़मामा सर से उतार कर नेज़े पर बांध लिया और ह़ज़रत के आगे आगे रवाना हुवा। फिर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप किस के हां उतरेंगे ? फ़रमाया : येह मेरा नाक़ा मामूर है जहां येह बैठ जाएगा वोही मेरी मन्ज़िल है। बुरैदा ने कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कि बनू सह्म बत़ौओ़ रग़बत[1] मुसलमान हो गए।[2]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ख़बर मदीने में पहुंच चुकी थी। लोग हर रोज़ सुब्ह़ को शहर से निकल कर ह़र्रा में जम्अ़ होते इन्तिज़ार करते करते जब दोपहर हो जाती तो वापस चले जाते। एक दिन इन्तिज़ार कर के घरों में वापस जा चुके थे कि एक यहूदी ने एक क़ल्आ़ पर से किसी मत़लब के लिये नज़र दौडाई, उसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के हमराही सफे़द लिबास पहने हुवे नज़र पड़े जो सराब[3] के आगे ह़ाइल थे। वोह यहूदी निहायत ज़ोर से बे साख़्ता पुकार उठा : "ऐ मा'शरे अ़रब !"[4] लो तुम्हारा मक़्सद व मक़्सूद जिस का तुम इन्तिज़ार कर रहे थे वोह आ गया।" येह सुन कर मुसलमानों ने फ़ौरन हथयार लगा कर ह़र्रहे क़ुबा के अ़क़ब में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्तिक़बाल किया और इज़्हारे मसर्रत के लिये ना'रए तक्बीर बुलन्द किया जिस की आवाज़ बनी अ़म्र बिन औ़फ़ में पहुंची। येह क़बीला मौज़ए क़ुबा में जो मदीने से जुनूब की त़रफ़ दो मील के फ़ासिले पर है आबाद था। इस ख़ानदान का सरदार कुल्सूम बिन हिद्म अन्सारी औसी था। इस से पहले अक्सर अकाबिर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم इसी के हां उतरते थे। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने भी इसी को शरफे़ नुज़ूल बख़्शा।

1......ख़ुशी से।

2...استیعاب لابن عبدالبر۔وفاء الوفاء للسمہودی۔(وفاء الوفاء للسمهودى،الفصل التاسع فى هجرة النبى اليها، ج ۱ ، الجزءالاول، ص ۲۴۳۔ علميه)

3......ज़मीन की वोह चमक जो चांद सूरज की रोशनी पड़ने से पैदा होती है और जिस पर पानी का धोका होता है।

4......ऐ अ़रब के गुरौह।

www.dawateislami.net

हिजरत का पहला साल

ता'मीरे मस्जिदे क़ुबा :

क़ुबा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नुज़ूल 12 रबीउ़ल अव्वल यौमे दो शम्बा[1] को हुवा। येही तारीख़े इस्लामी की इब्तिदा है। ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रवानगी के तीन दिन बा'द मक्का से चले थे यहां आ मिले और यहीं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस मस्जिद की बिना[2] रखी जिस की शान में येह आयत वारिद है :

لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ (سورۂ توبہ)

*अलबत्ता वोह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से परहेज़गारी पर रखी गई है ज़ियादा लाइक़ है कि तू उस में खड़ा हो, उस में वोह मर्द हैं जो पाक रहने को दोस्त रखते हैं और **अल्लाह** पाक रहने वालों को दोस्त रखता है।* [3]

कुल्सूम बिन हिद्म की एक उफ़्तादा ज़मीन[4] थी जहां खजूरें ख़ुश्क होने के लिये फैला दी जाती थीं। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से येह ज़मीन ले कर मस्जिदे मज़्कूर की बुन्याद रखी। इस मस्जिद की ता'मीर में दीगर अस्ह़ाब के साथ ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुद भी ब ग़रज़े तश्वीक़ व तरग़ीब[5] काम करते थे। शमूस बिन्ते नो'मान अन्सारिय्या मदनिय्या का बयान है कि मैं देख रही थी कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इतना भारी पथ्थर उठाते कि जिस्मे अत़्हर ख़म हो जाता और बत़्न शरीफ़ पर मुझे मिट्टी की सफ़ेदी नज़र आ जाती।" आप के अस्ह़ाब में से अगर कोई अ़क़ीदत मन्द आ कर अ़र्ज़ करता : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर फ़िदा ! छोड़ दीजिये मैं उठाता हूं।" तो आप फ़रमाते : "नहीं ! तुम ऐसा और पथ्थर उठा लो।" और ख़ुद उसी को इमारत में लगाते। इस ता'मीर में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام

1....बरोज़ पीर। 2......बुन्याद।

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़गारी पर रखी गई है वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं। (پ۱۱،التوبۃ:۱۰۸) **इल्मिय्या**

4......नाकारा ज़मीन। 5......शौक़ो तरग़ीब दिलाने के लिये।

www.dawateislami.net

आप को सिम्ते क़िब्ला बता रहे थे। इसी वासित़े कहा जाता था कि इस मस्जिद का क़िब्ला आ'दल व अक़्वम[1] है।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा ख़ज़रजी शाइ़र भी ता'मीरे मस्जिद में शामिल थे और काम करते हुवे यूं कहते जाते थे :

اَفْلَحَ مَنْ يُّعَالِجُ الْمَسَاجِدَا
وَ يَقْرَءُ الْقُرْاٰنَ قَآئِماً وَّ قَاعِدَا
وَ لَا يَبِيْتُ اللَّيْلَ عَنْهُ رَاقِدَا

"वोह कामयाब है जो मस्जिदें ता'मीर करता है उठते बैठते कुरआन पढ़ता है और रात को जागता रहता है।"[3] आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी हर हर क़ाफ़िये के साथ आवाज़ मिलाते जाते थे।[4]

मदीने में नुज़ूले रह़मत

कु़बा में चार (चौदह या बीस) रोज़ क़ियाम रहा। यहां से जुमुआ़ के दिन बात़िने मदीना[5] को रवाना हुवे। मुहाजिरीन व अन्सार साथ थे। अन्सार के जिस क़बीले पर से गुज़र होता उस के सर बर आवरदा[6] अ़क़ीदत मन्द अ़र्ज़ करते : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी नुस्रत व ह़िमायत में उतरिये।" आप इज़्हारे मिन्नत[7] व दुआ़ए ख़ैर के बा'द फ़रमाते कि "मेरा नाक़ा मामूर है, इस का रास्ता छोड़ दो।" रास्ते में बनू सालिम ख़ज़रजी के मह़ल्ले में जुमुआ़ का वक़्त आ गया। आप ने वादिये ज़ी सल्ब की मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ मअ़ ख़ुत़बा अदा की। येह आप का पहला जुमुआ़ और पहला ख़ुत़बा था। इस त़रह़ बनी बयाज़ा, बनी साइ़दा और बनी ह़ारिस बिन ख़ज़रज से गुज़रते हुवे बनी अ़दी बिन नज्जार में पहुंचे जो आप के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब के ननिहाल थे। सलीत़ बिन क़ैस नज्जारी ख़ज़रजी वग़ैरा ने ननिहाली रिश्ते को याद दिला कर इक़ामत के लिये अ़र्ज़ किया, मगर उन को भी वोही जवाब मिला। बा'दे अज़ां आप का नाक़ा

1.....बराबर व दुरुस्त। 2.....इसाबा, लिल हाफ़िज़ इब्ने ह़जर, तर्जमा शमूस बिन्ते नो'मान, नीज़ वफ़ाउल वफ़ा।

3 ...... الاصابة فی تمییزالصحابة،الشموس بنت النعمان،ج٨،ص٢٠٤ووفاء الوفاء للسمهودی،الفصل العاشر فی دخوله ارض المدینة...الخ،ج١،الجزء الاول، ص٢٤٨ملتقطاً و صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی صلی اللّٰه علیه وسلم...الخ،ج٢،ص٥٩٤۔علمیه

4......वफ़ाउल वफ़ा, जुज़े अव्वल सफ़्ह़ा 181। 5......अन्दरूने मदीना। 6......सरदार, बड़े लोग। 7......आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़्हार।

www.dawateislami.net

महल्ला मालिक बिन नज्जार में उस जगह बैठ गया जहां अब मस्जिदे नबवी है। फिर उठ कर क़दरे आगे बढ़ा और मुड़ कर पहली जगह बैठ गया। आप ने फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ येही मन्ज़िल है। ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप की इजाज़त से आप का सामान उठा कर अपने घर ले गए और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام येह फ़रमा कर اَلْمَرْءُ مَعَ رَحْلِهٖ वहीं तशरीफ़ फ़रमा हुवे।

مبارک منزلے کاں خانہ را ماہے چنیں باشد

ہمایوں کشورے کاں عرصہ را شاہے چنیں باشد

हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से जो ख़ुशी मदीने में मुसलमानों को हुई इस का बयान नहीं हो सकता। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी नज़्दीक पहुंची तो जोशे मसर्रत का येह आ़लम था कि पर्दा नशीन औ़रतें छतों पर निकल आईं और यूं गाने लगीं :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاع

وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاع

"हम पर चांद निकल आया वदाअ़ की घाटियों से, हम पर ख़ुदा का शुक्र वाजिब है जब तक दुआ़ मांगने वाला दुआ़ मांगे।" आप के नाक़े का बैठना था कि बनू नज्जार की लड़कियां दफ़ बजाती निकलीं और यूं गाने लगीं :

نَحْنُ جَوَارٍ مِّنْ بَنِي النَّجَّار   يَاحَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِّنْ جَار

"हम बनू नज्जार की लड़कियां हैं, ऐ नज्जारियो ! मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसा अच्छा हमसाया है।"

आप ने येह सुन कर उन लड़कियों से पूछा : क्या तुम मुझ को दोस्त रखती हो ? वोह बोलीं : हां ! आप ने फ़रमाया : मैं भी तुम को दोस्त रखता हूं।

इसी ख़ुशी में ज़न व मर्द, छोटे बड़े, गली कूचों में पुकार रहे थे : جَآءَ رَسُوْلُ اللّٰهِ جَآءَ نَبِيُّ اللّٰهِ ह़बशी ग़ुलाम आप के क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम[1] की ख़ुशी में हथयारों से खेल रहे थे। इन्सानों पर क्या मौक़ूफ़ है वुहूश[2] भी अपनी ह़रकातो सकनात से ख़ुशी का इज़्हार कर रहे थे।

जब मदीने में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ियाम का इन्तिज़ाम हो चुका तो आप ने ज़ैद बिन ह़ारिसा और अपने ग़ुलाम अबू राफ़ेअ़ को पान सो दिरहम और दो ऊंट दे कर मक्का में

1......बा बरकत तशरीफ़ आवरी।   2......जानवर।

www.dawateislami.net

भेजा कि आप के इ़याल को मदीने में ले आएं। उसी वक़्त ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़त़ दुअली (जो कि मक्का को वापस जा रहा था) के हाथ अपने साहिबज़ादे अ़ब्दुल्लाह को रुक़्आ़[1] दे दिया कि मेरे इ़याल को मदीने में ले आओ। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादियों में से ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को उन के ख़ावन्द अबुल आ़स ने आने न दिया ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़बशा में थीं, इस लिये ज़ैद व अबू राफ़ेअ़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादियों ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम व फ़ाति़मा और ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सौदह को और उम्मे ऐमन ज़ौजए ज़ैद और उसामा बिन ज़ैद को ले आए, और इन के साथ अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र, ह़ज़रते आ़इशा और इन की वालिदा उम्मे रूमान और ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र को लाए। येह सब ह़ारिसा बिन नो'मान के हां उतरे।[2] رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ियाम सात माह तक ह़ज़रते अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हां ही रहा। जब मस्जिदे नबवी के साथ हुजरे तय्यार हो गए तो नक़्ले मकान फ़रमाया। इस अ़र्से में बनू नज्जार ने मेहमानी का ह़क़ कमा ह़क़्क़ुहू[3] अदा किया। ह़ज़रते अबू अय्यूब और सा'द बिन उ़बादा और सा'द बिन मुआ़ज़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) ने ख़ुसूसिय्यत से इस में हि़स्सा लिया। جَزَاهُمُ اللّٰه تَعَالٰی خَيْرَ الْجَزَاء[4]

ता'मीरे मस्जिदे नबवी

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाक़ा जहां बैठा था वोह जगह दो नज्जारी यतीमों (सुहैल व सह्ल) की थी, जिन के वली ह़ज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारा नज्जारी ख़ज़रजी थे। वोह इस ज़मीन में खजूरें ख़ुश्क करने के लिये फैला दिया करते थे। इस के एक हि़स्से में ह़ज़रते अस्अ़द ने नमाज़ के लिये एक मुख़्तसर जगह बनाई हुई थी जिस पर छत न थी यहां वोह नमाज़े जुमुआ़ पढ़ा करते थे, बाक़ी ज़मीन में खजूर के दरख़्त और मुशरिकों की क़ब्रें और गढ़े थे। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने यहां मस्जिदे जामेअ़ बनाने का इरादा किया। आप ने उन यतीम बच्चों को बुला भेजा और उन से क़ीमत पर ज़मीन त़लब की, उन्हों ने कहा कि हम बिला क़ीमत आप की नज़्र करते हैं, आप ने

1.....तह़रीरी पैग़ाम नामा।

2.....ज़ादुल मआ़द। वफ़ाउल वफ़ा।

(وفاء الوفاء للسمهودی،الفصل العاشر فی دخوله ارض المدینة...الخ،ج۱،الجزء الاول، ص۲۴۴ـ۲۶۳ملتقطاً و ملخصاً وزاد المعاد،فصل،ج۲،الجزء الثالث، ص۴۲ـ۴۵ملتقطاًـ علمیه

3......जैसा कि उस का ह़क़ था।

4......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन को अच्छी जज़ा अ़ता फ़रमाए।

www.dawateislami.net

क़बूल न फ़रमाया और क़ीमत दे कर ख़रीद ली, ता'मीर का काम शुरूअ़ हो गया, क़ब्रें उखड़वा कर हड्डियां किसी दूसरी जगह दबा दी गईं, दरख़्त काट दिये गए और गढ़े हमवार कर दिये गए, हुज़ूर सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुद भी काम कर रहे थे आप अपनी चादर में ईंटें उठा कर ला रहे थे और यूं फ़रमा रहे थे।

هذا الحمال لاحمال خيبر　　　هــذا ابــر ربـنــا واطهــر

"ऐ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ येह ईंटें ख़ैबर के तमरो ज़बीब[1] से ज़ियादा सवाब वाली और पाकीज़ा हैं।"

और नीज़ फ़रमा रहे थे :

اللهم ان الاجر اجر الأخرة　　　فارحم الانصار والمهاجرة[2]

"ख़ुदाया ! बेशक अज्र सिर्फ़ आख़िरत का अज्र है पस तू अन्सार व मुहाजिरीन पर रह़्म फ़रमा।"

येह मस्जिद निहायत सादा थी, बुन्यादें तीन हाथ तक पथ्थर की थीं, दीवारें कच्ची ईंटों की, छत बरगे ख़ुर्मा[3] की क़दे आदम से कुछ ऊंची और सुतून खजूर के थे, क़िब्ला बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ रखा गया, तीन दरवाज़े थे, एक जानिबे का'बा और दो दाएं बाएं। जब क़िब्ला बदल कर का'बा की त़रफ़ हो गया तो जानिबे का'बा का दरवाज़ा बन्द कर दिया गया और उस के मुक़ाबिल शिमाली जानिब में नया दरवाज़ा बना दिया गया। चूंकि छत पर मिट्टी कम थी और फ़र्श ख़ाम था इस लिये बारिश में कीचड़ हो जाया करती थी। एक दफ़्अ़ा रात को बारिश बहुत हुई, जो नमाज़ी आता कपड़े में कंकरियां साथ लाता और अपनी जगह पर बिछा लेता। जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो फ़रमाया : "येह ख़ूब है" और कंकरों का फ़र्श बनवा दिया।

अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा

पायाने मस्जिद[4] में एक साइबान था जो सुफ़्फ़ा कहलाता था और उन फ़ुक़रा व मसाकीन सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के लिये था जो मालो मनाल और अहलो इ़याल न रखते थे। उन ही की शान में येह आयत नाज़िल हुई।

---

1 ......खजूर और किशमिश।

2 ......وفاء الوفاء للسمهودى،الباب الرابع...الخ،الفصل الاول فى اخذه...الخ، ج ١،الجزء الاول،ص ٣٢١ـ٣٢٨ ملتقطاً۔علميه

3 ......खजूर के पत्ते। 4 ......मस्जिद के आख़िर।

www.dawateislami.net

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ (كهف،٤٦)

और रोक रख जान अपनी साथ उन लोगों के कि पुकारते हैं परवर दगार अपने को सुब्ह़ को और शाम को चाहते हैं रज़ामन्दी उस की।[1]

इन की ता'दाद में मौत या सफ़र या तज़्व्वुज के सबब से कमी बेशी होती रहती थी। बा'ज़ वक़्त इन की ता'दाद सत्तर तक पहुंच जाती थी। बाहर से मदीने में अगर कोई आता और शहर में उस का कोई शरीफ़ जान पहचान न होता तो वोह भी सुफ़्फ़ा में उतरा करता था। ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म ने ह़िल्यतुल औलिया में से सो से कुछ ऊपर अहले सुफ़्फ़ा के नाम गिनाए हैं। जिन में से ह़ज़राते अबू ज़र गि़फ़ारी, अ़म्मार बिन यासिर, सलमान फ़ारिसी, सुहैब रूमी, बिलाल ह़बशी, अबू हुरैरा, ख़ब्बाब बिन अल अरत, हुज़ैफ़ा बिन अल यमान, अबू सई़द खु़दरी, बशीर बिन अल ख़सासिया, अबू मुवैहबा (मौला रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) वग़ैरहुम मुशाहीर में से थे।[2] (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)

अहले सुफ़्फ़ा पर आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बड़ी नज़रे इनायत थी। एक दफ़्आ़ ग़नीमत में कनीज़ें आई हुई थीं, इस मौक़अ़ को ग़नीमत समझ कर आप की साहि़बज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ाति़मा और ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم दोनों ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और एक ख़ादिमा के लिये दरख़्वास्त की। आप ने यूं जवाब दिया: "**अल्लाह** की क़सम! येह नहीं होने का कि तुम को ख़ादिमा दूं और अहले सुफ़्फ़ा भूके मरें। इन के ख़र्च के लिये मेरे पास कुछ नहीं मैं इन असीराने जंग को बेच कर इन की क़ीमत अहले सुफ़्फ़ा पर ख़र्च करूंगा।[3]

1......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ो शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते। (پ١٥،الكهف:٢٨) **इल्मिय्या**

2......مرقات شرح مشکوٰۃ، جزء خامس، ص ٢٨٦۔ عینی شرح صحیح بخاری، جزء ثانی، ص ٢١٣۔......(مرقاة المفاتيح، كتاب الفضائل، باب الكرامات، تحت الحديث:٥٩٤٦، ج١٠، ص٢٨٥ وعمدة القارى، كتاب مواقيت الصلاة، باب السمر مع الضيف و الاهل، تحت الحديث:٦٠٢، ج٤، ص١٣٨۔ علميه)

3......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی۔......(عمدة القارى، كتاب الخمس، باب الدليل على ان الخمس لنوائب رسول الله، تحت الحديث:٣١١٣، ج١٠، ص٤٤٣۔ علميه)

www.dawateislami.net

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के हुजरों की ता'मीर

अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से उस वक़्त ह़ज़रते सौदह व ह़ज़रते आ़इशा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़क़्द में आ चुकी थीं इन के लिये मस्जिद से मुत्तसिल दो मकान बना दिये गए। बा'दे अज़ां दीगर अज़्वाज के आने पर और मकानात बनते गए। इन मकानात में से पांच खजूर की शाख़ों से बने थे जिन पर कह्गिल[1] की हुई थी। इन के साथ कोई हुजरा न था। दरवाज़ों पर कम्बल का पर्दा पड़ा रहता था बाक़ी चार मकान कच्ची ईंटों के थे जिन की छत पर खजूर[2] की शाख़ों की कह्गिल की हुई थी। इन में से हर एक के साथ एक एक हुजरा खजूर की शाख़ों का था जिस के दरवाज़े पर कम्बल का पर्दा था। ब क़ौले दावूद बिन क़ैस[3] हुजरे के दरवाज़े से अन्दरूनी कमरे के दरवाज़े तक छे या सात हाथ का फ़ासिला था और अन्दरूनी कमरा दस हाथ का था और इरतिफ़ाअ़[4] सात आठ हाथ के दरमियान था। ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि मैं अ़हदे उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه में मुराहिक़[5] था इन मकानात की छत को मैं हाथ से छू लेता था।[6]

येह मकानात[7] जानिबे ग़ुरूबी के सिवा मस्जिद के इर्द गिर्द थे। इन के दरवाज़े मस्जिद ही की त़रफ़ थे और मस्जिद से इस क़दर मुत्तसिल थे कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ालते ए'तिकाफ़ में मस्जिद से सरे मुबारक निकाल देते और अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ घर में बैठी आप के बाल मुबारक धो दिया करती थीं।

1.....भुस और मिट्टी का प्लास्तर।

2......जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए दूमतुल जन्दल के लिये तशरीफ़ ले गए तो आप की ग़ैर ह़ाज़िरी में ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपना हुजरा भी कच्ची ईंटों का बना लिया। आप ने वापसी पर दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह इ़मारत कैसी है? उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जवाब दिया : या रसूलल्लाह! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने येह इस लिये बना लिया कि लोगों की नज़र न पड़े। आप ने फ़रमाया : "उम्मे सलमह! मुसलमान के माल का बुरा मसरफ़ इ़मारत है।" وفاءالوفاء،جزءاول،صفحہ٣٢٧۔ ١٢منہ

3.....अल अदबुल मुफ़रिद लिल बुख़ारी, सफ़्ह़ा 88।

4.....इस इर्तिफ़ाअ़ में बज़ाहिर तीन हाथ की बुन्याद मह़सूब है। واللّٰہاعلم بالصواب۔١٢منہ

5.....बालिग़ होने के क़रीब।

6......وفاء الوفاء للسمهودى،الباب الرابع...الخ،الفصل التاسع...الخ،ج١،الجزء الثانى،ص٤٥٨ـ٤٦١ ملتقطاً والادب المفرد للبخارى،باب التطاول فى البنيان، الحديث:٤٥١،ص١٢٠ـ علميه

7......ता'मीरे मस्जिद व मकानात की तफ़्सील के लिये देखो सह़ीह़ बुख़ारी और वफ़ाउल वफ़ा। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का दौलत ख़ाना जानिबे मशरिक़ ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरे से मुत्तसिल उस जगह था जहां अब आप की क़ब्र शरीफ़ की सूरत बनी हुई हैं। जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र से तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में दो–गाना अदा करते, बा'दे अज़ां ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ ले जाते और उन का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाते, फिर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के घरों में क़दम रन्जा फ़रमाते।(1)

मुहाजिरीन के मकानात की ता'मीर

मुहाजिरीन की सुकूनत के लिये मस्जिद के क़रीब मकानात का इन्तिज़ाम किया गया चुनान्चे, आक़ाए नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू ज़हरा को मस्जिद की एक जानिब में एक ख़ित़्त़ा इनायत फ़रमाया जिस में ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ क़ुरशी ज़ोहरी के ह़िस्से में एक ख़ुरमा सितान(2) आया जो उन के नाम से मश्हूरो मा'रूफ़ था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह व उ़तबा पिस्राने मसऊ़द हुज़ली जो बनू ज़ोहरा के ह़लीफ़ थे, उन के लिये मस्जिद के पास एक ख़ित़्त़ा मुअ़य्यन किया गया जो उन के नाम से मश्हूर था। ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम क़ुरशी अस्दी को एक वसीअ़ क़त़्आ़ मिला, जिस में मुख़्तलिफ़ अक़्साम के दरख़्तों की जड़ें थीं वोह बक़ीउ़ज़्ज़ुबैर कहलाता था। ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह क़ुरशी तैमी को उन के घरों की जगह मिली। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भी मस्जिद के क़रीब ज़मीन दी गई। इसी त़रह़ ह़ज़राते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान क़ुरशी उमवी, ख़ालिद बिन वलीद क़ुरशी मख़्ज़ूमी, मिक़्दाद बिन अस्वद किन्दी और तुफ़ैल बिन ह़ारिस क़ुरशी मुत्त़लबी वग़ैरहुम को ज़मीनें दी गईं।

इन क़त़्आ़त में से जो ज़मीनें बे आबाद, ग़ैर ममलूका थीं(3) वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बत़ौरे ख़ुद तक़्सीम फ़रमा दीं और जिन क़त़्आ़त में अन्सार के मनाज़िल व मकानात थे वोह उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हिबा कर दिये और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन को अ़त़ा फ़रमा दिये चुनान्चे, सब से पहले ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान ने अपने मकानात बत़ौरे हदिय्या पेश(4) किये। ब क़ौले वाक़िदी मनाज़िले(5) ह़ारिसा की जगह ही ह़ज़राते उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के हुजरे बने।(6)

1 ......وفاء الوفاء للسمھودی،الباب الرابع...الخ،الفصل العاشرفی حجرۃ فاطمۃ...الخ، الجزء الثانی،ص٤٦٦_٤٦٧ ملتقطاً_علمیه

2 ......खजूरों का बाग़। 3 ......किसी की मिल्क न थीं।

4 ......मो'जमुल बलदान लिल ह़मवी, तह़्ते मदीना यसरब। ज़ियादा तफ़्सील वफ़ाउल वफ़ा में है। 5 ......मकानात।

6 ......معجم البلدان للحموی،تحت مدینة یثرب،ج٤،ص ٢٣١ و وفاء الوفاء للسمھودی،الباب الرابع...الخ،الفصل الرابع والثلاثون فیما کان مطیفاً...الخ،ج١،الجزء الثانی،ص٧١٧_ علمیه

www.dawateislami.net

मस्जिदे नबवी में चराग़ की इब्तिदा

मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और हुजरात में रातों को चराग़ नहीं[1] जलते थे।[2] ह़ज़रते तमीम दारी के ग़ुलाम सिराज का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्जिद में खजूर की टहनियों और पत्तों से रोशनी की जाती थी। हम क़नादील[3] व रोग़ने ज़ैतून और रस्सिया लाए और मैं ने (क़िन्दिलों को लटका कर) मस्जिद में रोशनी की। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : इस का क्या नाम है ? तमीम ने कहा : फ़त्ह़। पैग़म्बरे खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि इस का नाम सिराज है। पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा नाम सिराज[4] रखा।[5]

मुवाख़ात

मुहाजिरीन अपने वत़न से अहलो इ़याल और भाईबन्दों को छोड़ कर बे सरो सामान छुप कर निकले थे, इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे जामेअ़ की ता'मीर के बा'द मुहाजिरीन व अन्सार में रिश्तए उख़ुव्वत क़ाइम किया ताकि मुहाजिरीन ग़ुरबत की वह़शत और अहलो इ़याल की मुफ़ारक़त मह़सूस न करें और एक को दूसरे से मदद मिले। मुहाजिरीन की ता'दाद पैंतालीस या पचास थी आप हर दो फ़रीक़ में से दो दो को बुला कर फ़रमाते गए कि येह और तुम भाई भाई हो। आप का येह फ़रमाना था कि वोह दर ह़क़ीक़त भाई बन गए चुनान्चे, जब हु़ज़ूरे अन्वर بِاَبِیْ هُوَوَاُمِّیْ ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ क़ुरशी ज़ोहरी और ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी ख़ज़रजी में रिश्तए बरादरी क़ाइम कर दिया तो ह़ज़रते सा'द ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान से कहा कि अन्सार में मेरे पास सब से ज़ियादा माल है। मैं अपना माल आप को बांट देता हूं।

---

1 ......صحیح بخاری، باب الصلوٰۃ علی الفراش۔

2 ......صحیح البخاری، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی الفراش، الحدیث:۳۸۲، ج۱، ص۱۵۳۔ علمیه

3 ......क़िन्दील की जम्अ़, क़िन्दील : एक क़िस्म का फ़ानूस जिस में चराग़ जलाते हैं।

4 ......استیعاب واصابہ، ترجمہ سراج التمیمی۔

5 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، ۳۱۱۰۔سراج التمیمی، ج۳، ص۳۳۔ والاستیعاب فی معرفة الاصحاب، ۱۱۳۶۔ سراج مولی تمیم الداری، ج۲، ص۲٤۲۔ علمیه

www.dawateislami.net

मेरी दो बीवियां हैं, इन में से एक को जो आप पसन्द करें मैं त़लाक़ दे देता हूं। इ़द्दत गुज़रने पर आप उस से निकाह़ कर लीजिये। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा कि आप के अहल और आप का माल आप को मुबारक हो। क्या यहां कोई बाज़ारे तिजारत है? उन्हों ने बनू क़ैनुक़ाअ़ के बाज़ार का रास्ता बता दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शाम को नफ़्अ़ का पनीर और मख्खन साथ लाए। इसी त़रह़ हर रोज़ बाज़ार में चले जाया करते थे। थोड़े अ़र्से में वोह मालदार हो गए। एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे उन के बदन पर खुश्बू का निशान था। हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि येह क्या है? अ़र्ज़ की, कि मैं ने अन्सार की एक औ़रत से शादी की है। हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि महर कितना दिया? अ़र्ज़ की, कि पांच दिरहम भर सोना। फ़रमाया कि "वलीमा दो, ख़्वाह एक बकरी हो।"[1] ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रह़ कई और मुहाजिरीन ने भी तिजारत का काम शुरूअ़ कर दिया।

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि अ़क़्दे बरादरी के बा'द अन्सार ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि आप हमारे नख़्लिस्तान हमारे भाइयों और हम में तक़्सीम फ़रमा दें। आप ने फ़रमाया : नहीं! येह सुन कर अन्सार ने मुहाजिरीन से कहा कि काम (दरख़्तों को पानी देना वग़ैरा) तुम किया करो, हम तुम्हें फल में शरीक कर लेंगे। इस पर सब ने कहा : "बसर व चशम[2]।"[3] येह मुसाक़ात[4] की सूरत थी। मगर बा'ज़ नख़्लिस्तान मह़ज़ मनीह़ा[5] के त़ौर पर भी दिये हुवे थे। जिन में काम भी खुद अन्सार करते थे और मुहाजिरीन को पैदावार का निस्फ़ देते थे।

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب المناقب، باب اخاء النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم بین المہاجرین والانصار ......(صحيح البخارى، كتاب مناقب الانصار، باب إخاء النبى...الخ، الحديث: ٣٧٨٠ـ ٣٧٨١، ج٢، ص٥٥٤ ملخصاً ـ علميه)

2 ......बड़ी खुशी से।

3 ......صحیح بخاری، ابواب الحرث والمزارعۃ ـ......(صحيح البخارى، كتاب الحرث و المزارعة، باب اذا قال اكفنى...الخ، الحديث: ٢٣٢٥، ج٢، ص٨٦ ـ علميه)

4 ......बैअ़ की एक क़िस्म।

5 ......तोह़फ़ा।

www.dawateislami.net

येह अ़क़्दे बरादरी नुसरत व मुवासात व तवारुस पर था इस लिये जब कोई अन्सारी वफ़ात पाता था तो उस की जाएदाद व माल मुहाजिर को मिलता था और क़रीबी रिश्तेदार महरूम रहते थे। चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में है :

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوْتُوْا وَ يُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ (حشر،ع ۱)

और (फ़य है वासिते़) उन लोगों के जिन्हों ने मुहाजिरीन से पहले दारुल इस्लाम (मदीना) और ईमान में जगह पकड़ी वोह दोस्त रखते हैं उन को जो वत़न छोड़ कर उन के पास आते हैं और अपने दिलों में कोई दग़दग़ा नहीं पाते उस चीज़ से जो मुहाजिरीन को दी गई और उन को अपनी जानों से अव्वल रखते हैं अगर्चे ख़ुद उन को तंगी हो और जो कोई अपने नफ़्स के ह़िर्स से बचाया जाए वोही लोग हैं फ़लाह़ पाने वाले।[1]

सह़ीह़[2] बुख़ारी में येह क़िस्सा मज़्कूर है कि एक भूका साइल जनाबे पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया। आप ने घर में दरयाफ़्त किया कि कुछ खाने को है ? जवाब आया : सिर्फ़ पानी। आप ने फ़रमाया कि कौन है जो इस को अपना मेहमान बनाए। एक अन्सारी ने कहा : मैं ह़ाज़िर हूं चुनान्चे, वोह उसे अपने घर ले गया और बीवी से कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मेहमान को खाना खिलाओ, वोह बोली कि सिर्फ़ बच्चों की ख़ूराक मौजूद है, कहा कि तू वोह खाना तय्यार कर और चराग़ रोशन कर के खाने के वक़्त बच्चों को सुला देना, चुनान्चे, उस ने ऐसा ही किया। जब मियां बीवी और मेहमान खाने पर बैठे तो बीवी ने बत्ती उक्साने के बहाने से उठ कर चराग़ गुल कर दिया। मियां बीवी भूके रहे और इस त़रह़ हाथ चलाते रहे कि गोया खा रहे हैं। सुब्ह़ को वोह अन्सारी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप ने फ़रमाया कि रात **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे नेक काम से राज़ी हुवा और وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ الآية नाज़िल फ़रमाई।[3]

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन्हों ने पहले से उस शहर और ईमान में घर बना लिया दोस्त रखते हैं उन्हें जो उन की त़रफ़ हिजरत कर के गए और अपने दिलों में कोई ह़ाजत नहीं पाते उस चीज़ की जो दिये गए और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं। (پ۲۸،الحشر:۹) **इल्मिय्या**

2 ......صحیح بخاری،کتاب المناقب،باب:ویؤثرون علی انفسھم۔

3 ......صحیح البخاری،کتاب مناقب الانصار،باب ویؤثرون علی انفسھم...الخ،الحدیث:۳۷۹۸،ج۲،ص۵۵۹۔ علمیه

www.dawateislami.net

जब सिने 4 हिजरी में बनू नज़ीर जिला वत़न हुवे और उन के अम्वाल (अराज़ी व नख़्लिस्तान) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ब्ज़े में आए तो आप ने तमाम अन्सार को बुला कर फ़रमाया :[1] अगर तुम चाहते हो तो मैं बनू नज़ीर के अम्वाल तुम में और मुहाजिरीन में तक़्सीम कर देता हूं और मुहाजिरीन तुम्हारे घरों और अम्वाल में ब दस्तूर रहेंगे और अगर तुम चाहते हो तो येह अम्वाल मुहाजिरीन को बांट देता हूं और वोह तुम्हारे घरों और अम्वाल से बे दख़्ल हो जाएंगे। ह़ज़राते सा'द बिन उ़बादा और सा'द बिन मुआ़ज़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन अम्वाल को आप मुहाजिरीन में तक़्सीम कर दीजिये, वोह हमारे घरों और अम्वाल में ब दस्तूर रहेंगे, येह सुन कर अन्सार बोले या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम इस पर राज़ी हैं। इस पर रसूलुल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ुदाया ! तू अन्सार और अबनाए अन्सार[2] पर रह़्म फ़रमा।" इस त़रह़ हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अम्वाले बनी नज़ीर सिर्फ़ मुहाजिरीन में तक़्सीम फ़रमा दिये।[3]

सिने 8 हिजरी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़रमी को ब ग़रज़े तब्लीग़ विलायते बह़रैन[4] में भेजा। मुन्ज़िर बिन सावा ह़ाकिमे बह़रैन और वहां के तमाम अ़रब ईमान लाए बाक़ी अहले बह़रैन (मजूस व यहूदो नसारा) ने जिज़्ये पर सुल्ह़ कर ली। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार को बुलाया ताकि बह़रैन का जिज़्या व ख़िराज अन्सार के लिये लिख दें, मगर अन्सार ने अ़र्ज़ किया : "नहीं ![5] **अल्लाह** की क़सम ! ऐसा न कीजिये, यहां तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे क़ुरैशी भाइयों के लिये इतना ही माल लिख दें।"[6]

जब सिने 7 हिजरी में ख़ैबर फ़त्ह़ हुवा तो मुहाजिरीन के ह़िस्से में इस क़दर माल आया कि उन को अन्सार के नख़्लिस्तान की ह़ाजत न रही, इस लिये उन्हों ने वोह नख़्लिस्तान जो बत़ौरे इबाह़त उन के पास थे अन्सार को वापस कर दिये।[7]

1 ......زرقانی علی المواہب،غزوۂ بنی نضیر،بحوالہ اکلیل حاکم نیشاپوری۔نیز دیکھو فتوح البلدان بلاذری مطبوعہ مصر صفحہ ۲۶۔۱۲منہ

2 ......अन्सार की अवलाद।

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب اللدنية،حديث بنی نضير،ج۲،ص۵۱۹۔۵۲۰۔ علميه

4 ......सल्त़नते बह़रैन।

5 ......صحیح بخاری،کتاب الجہاد،باب ما اقطع النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم من البحرین وما وعد من مال البحرین والجزیۃ.یہ حدیث کتاب المناقب اور کتاب المساقات میں بھی وارد ہے۔۱۲منہ

6 ......صحيح البخاری،کتاب الجزية و الموادعة، باب ما اقطع النبی...الخ، الحديث:۳۱۶۳،ج۲،ص۳۶۴۔ علميه

7 ......صحیح مسلم،کتاب الجہاد،باب رد المہاجرین الی الانصار منائحہم من الشجر والثمر حین استغنوا عنہا بالفتوح۔......(صحيح مسلم، کتاب الجهاد و السير، باب رد المهاجرين الی الانصار...الخ، الحديث:۱۷۷۱،ص۹۷۴۔ علميه)

www.dawateislami.net

अज़ान की इब्तिदा

जब मदीनए मुनव्वरा में मस्जिदे जामेअ़ तय्यार हो चुकी तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह ख़याल आया कि मुसलमानों को नमाज़ के लिये किस त़रह़ जम्अ़ किया जाए। आप ने अपने अस्ह़ाबे किराम से मश्वरा किया। ज़ाहिर है कि एक वक़्त और एक मकान में इजतिमाअ़ बिग़ैर ए'लाम[1] व आगाही के नहीं हो सकता, इस लिये सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने ए'लाम के लिये कई त़रीक़े पेश किये, बा'ज़ ने कहा कि आग रोशन कर के ऊंची कर दी जाए मुसलमान उसे देख कर जम्अ़ हो जाया करेंगे। हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ब वज्हे मुशाबहते मजूस इस त़रीक़े को पसन्द न फ़रमाया, बा'ज़ों ने नाक़ूस[2] तजवीज़ किया, मगर ब वज्हे मुशाबहते नसारा येह तजवीज़ रद्द कर दी गई। इस त़रह़ बूक़[3] को ब वज्हे मुशाबहते यहूद पसन्द न किया गया। ह़ज़रते फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह मश्वरा दिया कि एक शख़्स को नमाज़ के वक़्त ब ग़रज़े ए'लाम भेज दिया जाए। इस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया कि उठ कर नमाज़ के लिये निदा कर दे, चुनान्चे, ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه यूं निदा कर दिया करते : **"अस्सलातु जामिअ़ा"** इसी असना में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ख़्वाब में इन सब से बेहतर त़रीक़ बतला दिया गया और वोह मुरव्वजा[4] अज़ाने शरई है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपना ख़्वाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया। हु़ज़ूरे अन्वर بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّیْ पर इस से पहले इस बारे में वह़्य आ चुकी थी इस लिये आप ने सुन कर फ़रमाया कि बेशक येह रूया[5] ह़क़ है اِنْ شَآءَ اللّٰه تعَالٰی और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को हु़क्म दिया कि ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को कलिमाते अज़ान की तल्क़ीन कर दो वोह अज़ान देंगे क्यूंकि उन की आवाज़ तुम से बुलन्द और नर्म व शीरीं है चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।[6]

---

1 ......ए'लान। 2 ......मख़रूती़ शक्ल का लकड़ी का बाजा जिसे नसारा मख़्सूस इ़बादत के लिये बजाते थे।

3 ......या'नी बिगुल : एक बाजा जो यहूद अपनी मख़्सूस इ़बादत के लिये बजाते और इस की आवाज़ सुन कर जम्अ़ हो जाते थे।

4 ......राइज। 5 ......ख़्वाब 6 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى،باب بدء الاذان،ج٢،ص١٩٤۔ علميه

www.dawateislami.net

यहूद से मुआ़हदा

इसी साल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों और यहूदे मदीना के दरमियान एक मुआ़हदा तह़रीर फ़रमाया, जिस की शराइत़ की पूरी तफ़्सील सीरते इब्ने हिशाम में है, इन शराइत़ का ख़ुलासा येह है :

﴾1﴿.......ख़ून–बहा और फ़िदये का त़रीक़ए साबिक़ा क़ाइम रहेगा।

﴾2﴿.......हर दो फ़रीक़ को मज़हबी आज़ादी होगी, एक दूसरे के दीन से तअ़र्रुज़ न करेंगे।

﴾3﴿.......हर दो फ़रीक़ एक दूसरे के ख़ैर ख़्वाह रहेंगे।

﴾4﴿.......अगर एक फ़रीक़ को किसी से लड़ाई पेश आए तो दूसरा उस की मदद करेगा।

﴾5﴿.......अगर फ़रीक़ैन में ऐसा इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाए कि जिस से फ़साद का अन्देशा हो तो उस का फ़ैसला ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर छोड़ दिया जाएगा।

﴾6﴿.......कोई फ़रीक़, क़ुरैश और उन के मुआ़विनीन को अमान न देगा।

﴾7﴿.......अगर कोई दुश्मन यसरब पर ह़म्ला आवर हो तो हर दो फ़रीक़ मिल कर उस का मुक़ाबला करेंगे।

﴾8﴿.......अगर एक फ़रीक़ किसी से सुल्ह़ करेगा तो इस मुसालह़त में दूसरा फ़रीक़ भी शामिल होगा मगर मज़हबी लड़ाई इस से मुस्तस्ना होगी।[1]

मस्जिद से मह़ब्बत की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : "जो मस्जिद से उल्फ़त (मह़ब्बत) रखता है **अल्लाह** तआ़ला उस से उल्फ़त रखता है।" (المعجم الاوسط للطبرانی، الحدیث:٦٣٨٣، ج٤، ص٤٠٠)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस की शर्ह़ में लिखते हैं : मस्जिद से उल्फ़त इस त़रह़ है कि रज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह और शरई मसाइल सीखने सीखाने के लिये बैठे रहने की आ़दत बनाना है। और **अल्लाह** तआ़ला का उस बन्दे से मह़ब्बत करना इस त़रह़ है कि **अल्लाह** तआ़ला उस को अपने सायए रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाता और उस को अपनी ह़िफ़ाज़त में दाख़िल करता है। (فیض القدیر شرح الجامع الصغیر، تحت الحدیث:٨٥٢٤، ج٦، ص١١٢)

---

1 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، ھجرۃ الرسول، ص٢٠١۔ علمیہ

www.dawateislami.net

हिजरत का दूसरा साल

तह़वीले क़िब्ला :

नमाज़ इस्लाम का एक रुक्न है और नमाज़ की रूह़ ख़ुशूअ़ है, ख़ुशूअ़ के लिये बात़िनी यक जहती के साथ ज़ाहिरी यक जहती भी दरकार है क्यूंकि ज़ाहिर का असर बात़िन पर ज़रूर पड़ता है और मक़्सूदे अस्ली को तक़्विय्यत पहुंचती है। नमाज़े जमाअ़त व जुमुआ़ में इत्तिह़ादे जहत का असर जो दूसरे नमाज़ियों पर पड़ता है मोह़ताजे बयान नहीं इस लिये नमाज़ में एक जहत का तअ़य्युन ज़रूरी है मगर इस में इन्सानी अ़क़्ल को दख़्ल नहीं बल्कि जो ज़ाते पाक सज़ावारे इबादत(1) है येह तअ़य्युन उसी का ह़क़ है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पहले मक्का में का'बा की त़रफ़ नमाज़ पढ़ा करते थे हिजरत के बा'द ब हुक्मे इलाही बिनाए बर ह़िक्मत व मस्लेह़ते वक़्त बैतुल मुक़द्दस आप का क़िब्ला मुक़र्रर हुवा, चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सोलह या सतरह माह बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ नमाज़ पढ़ी। यहूद आप पर ता'न किया करते थे कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हमारी मुख़ालफ़त करते हैं मगर क़िब्ले में हमारे ताबेअ़ हैं इस लिये आप की येह आरज़ू रही कि मिल्लते इब्राहीमी की त़रह़ मेरा क़िब्ला भी इब्राहीमी ही हो। मुद्दते मज़्कूरा के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने आप की येह आरज़ू पूरी कर दी :

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ

(البقرۃ، ع۱۷)

बेशक हम देखते हैं तेरे मुंह का फिरना आस्मान की त़रफ़ पस ज़रूर हम फेरेंगे तुझ को उस क़िब्ले की त़रफ़ कि तू उसे पसन्द करता है। पस फेर मुंह अपना मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और जिस जगह तुम हुवा करो पस फेरो मुंह अपने उस की त़रफ़।(2)

इस तह़वील की कैफ़िय्यत येह है कि निस्फ़ रजब यौमे दो शम्बा(3) या निस्फ़ शा'बान यौमे सेह शम्बा(4) को ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिदे बनी सलमा में नमाज़े ज़ोहर पढ़ा रहे थे तीसरी रक्अ़त के रुकूअ़ में थे कि वह़्ये इलाही से आप ने नमाज़ ही में का'बा की

---

1 ......इबादत के लाइक़।

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना तो ज़रूर हम तुम्हें फेर देंगे उस क़िब्ले की त़रफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है अभी अपना मुंह फेर दो मस्जिदे ह़राम की त़रफ़ और ऐ मुसलमानो तुम जहां कहीं हो अपना मुंह उसी की त़रफ़ करो। (پ۲،البقرۃ:۱۴۴) **इल्मिय्या**

3 ......बरोज़ पीर शरीफ़।

4 ......बरोज़ मंगल।

www.dawateislami.net

त़रफ़ रुख़ कर लिया और मुक़्तदियों ने भी आप का इत्तिबाअ़ किया । इस मस्जिद को **"मस्जिदे क़िब्लतैन"** कहते हैं । एक नमाज़ी जो शामिले जमाअ़त था अ़स्र के वक़्त मस्जिदे बनी ह़ारिसा में गया उस ने देखा कि वहां अन्सार नमाज़े अ़स्र बैतुल मुक़द्दस की त़रफ़ पढ़ रहे हैं उस ने तह़वीले क़िब्ला की ख़बर दी । वोह लोग नमाज़ ही में का'बा रुख़ हो गए । दूसरे रोज़ क़ुबा में ऐन उस वक़्त ख़बर पहुंची जब कि लोग फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहे थे उन्हों ने भी उसी ह़ाल में अपना रुख़ बदल कर का'बा की त़रफ़ कर लिया ।(1)

तह़वीले क़िब्ला यहूदियों पर सख़्त ना गवार गुज़रा, वोह इस पर ए'तिराज़ करने लगे । उन का ए'तिराज़ और इस का जवाब क़ुरआने करीम में यूं मज़्कूर है :

﴾1﴿

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِیْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِیْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۱۴۲﴾ (البقرة، ع١٧)

*अब कहेंगे लोगों में से बे वुक़ूफ़ किस चीज़ ने फेरा उन को उन के क़िब्ले से जिस पर वोह थे कह दे **अल्लाह** की है मशरिक़ और मग़रिब चलाता है जिसे चाहता है सीधी राह की त़रफ़ ।*(2)

﴾2﴿

وَ مَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِیْ كُنْتَ عَلَيْهَاۤ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَ اِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ (البقرة، ع١٧)

*और नहीं मुक़र्रर किया हम ने क़िब्ला उस को जिस पर तू पहले था (या'नी का'बा) मगर इसी वासित़े कि मा'लूम करें कौन ताबेअ़ रहेगा रसूल का और कौन फिर जावेगा उलटे पाउं और अलबत्ता येह क़िब्ला है शाक व दुश्वार मगर उन लोगों पर जिन को राह दिखाई **अल्लाह** ने (ह़िक्मते अह़काम की) ।*(3)

पहली आयत में उन का ए'तिराज़ नक़्ल कर के यूं जवाब दिया गया कि शर्क़ व ग़र्ब बल्कि जिहाते सित्ता(4) सब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की हैं, उस को किसी ख़ास जिहत से ख़ुसूसिय्यत नहीं क्यूंकि

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى، تحويل القبلة وفرض رمضان وزكاة الفطر، ج٢، ص٢٤٢ـ٢٤٥ـ علميه

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अब कहेंगे बे वुक़ूफ़ लोग किस ने फेर दिया मुसलमानों को उन के उस क़िब्ले से जिस पर थे तुम फ़रमा दो कि पूरब पश्चिम सब **अल्लाह** ही का है जिसे चाहे सीधी राह चलाता है । (پ٢، البقرة:١٤٢) **इल्मिय्या**

3 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब तुम पहले जिस क़िब्ले पर थे हम ने वोह इसी लिये मुक़र्रर किया था कि देखें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उल्टे पाउं फिर जाता है और बेशक येह भारी थी मगर उन पर जिन्हें **अल्लाह** ने हिदायत की । (پ٢، البقرة:١٤٣) **इल्मिय्या**

4 ......छे सम्तें ।

www.dawateislami.net

वोह मकान व जिहत[1] से पाक है वोह जिस जिहत को चाहे क़िब्ला मुक़र्रर कर दे हमारा काम इताअ़त है। दूसरी आयत में मज़्कूर है कि तह़वीले क़िब्ला इस वासिते हुवा कि साबित व मुतज़लज़ल में[2] तमीज़ हो जाए।

ग़ज़वात व सराया का आग़ाज़

इसी साल सिलसिलए ग़ज़्वात व सराया शुरूअ़ होता है। मुह़द्दिसीन व अहले सियर[3] की इस्तिलाह़ में ग़ज़्वा वोह लश्कर है जिस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब ज़ाते अक़्दस शामिल हों और अगर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ब ज़ाते शरीफ़ शामिल न हो बल्कि अपने अस्ह़ाब में से किसी को दुश्मन के मुक़ाबले में भेज दें तो वोह लश्कर सरिय्या कहलाता है। ग़ज़्वात ता'दाद में सत्ताईस हैं। जिन में से नव में क़िताल वुक़ूअ़ में आया है और वोह येह हैं : बद्र, उह़ुद, मुरैसीअ़, ख़न्दक़, क़ुरैज़ा, ख़ैबर, फ़त्हे मक्का, हुनैन, ताइफ़। सराया की ता'दाद सेंतालीस है। नज़रे बर इख़्तिसार हम सराया को पसे अन्दाज़ कर के[4] ग़ज़्वात व बा'ज़ दीगर वक़ाएअ़[5] का हाले सन्ह़्वार पेश करते हैं।

हिजरत के बा'द भी कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुसलमानों के मज़्हबी फ़राइज़ की बजा आवरी में मुज़ाहिम होते[6] थे और इस्लाम के मिटाने की कोशिश करते थे बल्कि दीगर क़बाइल को भी मुसलमानों की मुख़ालफ़त पर बरअंगेख़्ता करते[7] थे, इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ अग़राज़ के लिये अपने अस्ह़ाब की छोटी छोटी जमाअ़तें (सराया) अत़राफ़े मदीना में भेजनी शुरूअ़ कीं बल्कि बा'ज़ दफ़्आ़ ख़ुद भी शिर्कत फ़रमाई। कहीं दुश्मन की नक़्ल व ह़रकत की ख़बर लाने के लिये, कहीं बा'ज़ क़बीलों से मुआ़हदा क़ाइम करने के लिये और कहीं मह़्ज़ मुदाफ़अ़त के लिये ऐसा किया गया। हां एक ग़रज़ येह भी थी कि क़ुरैश की शामी तिजारत का रास्ता बन्द कर दिया जाए और येह वोही बात है जिस की धमकी ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हिजरत के बा'द अबू जह्ल को ख़ास ख़ानए का'बा में यूं दी थी कि अगर तुम ने[8] हम को त़वाफ़े का'बा से रोका तो हम तुम्हारा मदीने का रास्ता बन्द कर देंगे,[9] चूंकि क़ुरैश

1......या'नी जगह और सम्त। 2......साबित क़दम और डगमगाने वालों या'नी मोमिन व काफ़िर में।
3......सीरत लिखने वालों। 4......छोड़ के। 5......वाक़िआत।
6......रुकावट बनते। 7......उभारते, उक्साते।

8 ......صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب ذکر النبی صلّی اللہ تعالٰی علیہ وآلہٖ وسلّم من یقتل ببدر۔

9 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ذکر النبی من یقتل ببدر، الحدیث: ۳۹۵۰، ج۳، ص۳۔ علمیه

www.dawateislami.net

बिल उ़मूम मुसलमानों को ह़ज व उ़मरह से रोकते थे इस लिये मजबूरन मुसलमानों को उन के तिजारती क़ाफ़िलों से तअ़र्रुज़ करना पड़ा[1] ताकि मज़हबी मुदाख़लत से बाज़ आ जाएं।

"ग़ज़्वए अबवा"[2] इसी साल के माहे सफ़र में, **"ग़ज़्वए बुवात़"**[3] व ग़ज़्वए **बद्रे ऊला** माहे रबीउ़ल अव्वल में और **"ग़ज़्वए ज़ुल उ़शैरा"**[4] माहे जुमादल उख़रा में हुवा। बद्रे[5] ऊला कुर्ज़ बिन जाबिर फ़िहिरी की गोशमाली[6] के लिये था जो मदीनए मुनव्वरा के ऊंट हांक ले गया था। बाक़ी तीनों क़ाफ़िलए कुरैश से तअ़र्रुज़ के लिये थे मगर उन में से किसी में भी मुक़ाबला नहीं हुवा।

ग़ज़्वए ज़ुल उ़शैरा के बा'द माहे रजब में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने फूफीज़ाद भाई ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को आठ या बक़ौले बा'ज़ बारह मुहाजिरीन की जमइ़य्यत के साथ नख़्ला[7] की त़रफ़ रवाना किया। वोह नख़्ला में पहुंच कर क़ाफ़िलए कुरैश के मुन्तज़िर रहे। नागाह[8] कुरैश के ऊंटों का क़ाफ़िला जिन पर वोह शराबे मुनक़्क़ा और चमड़ा वग़ैरा माले तिजारत त़ाइफ़ से ला रहे थे उन के क़रीब उतरा। उस क़ाफ़िले में अ़म्र[9] बिन ह़ज़रमी, उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़ीरा और उस का भाई नौफ़ल बिन अ़ब्दुल्लाह और अबू जह्ल के बाप हिशाम बिन मुग़ीरा का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम ह़कम बिन कैसान थे। फ़रीक़ैन में मुक़ाबला हुवा, इस में ह़ज़रते वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह तमीमी ने एक तीर से अ़म्र बिन ह़ज़रमी का काम तमाम कर दिया। उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह और ह़कम बिन कैसान गिरिफ़्तार हुवे और बाक़ी भाग गए। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श दोनों असीरों और माले ग़नीमत को ले कर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। हु़ज़ूर ने ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा दी। ह़ज़रते ह़कम

1......रुकावट बनना पड़ा।

2......अबवा एक क़रिया है जो जह़्फ़ा से 23 मील है। यहां आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा की क़ब्र है। 12 मिन्ह

3......बवात़ एक पहाड़ का नाम है जो यम्बअ़ से एक दिन की राह है। 12 मिन्ह

4......ज़ुल उ़शैरा मक्का मदीना के दरमियान में यम्बअ़ के नवाह़ में वाक़ेअ़ है। 12 मिन्ह

5......बद्र एक कूंएं का नाम है बद्र और मदीनए मुनव्वरा के दरमियान सात बरीद (मन्ज़िल) हैं। 12 मिन्ह

6......सज़ा देना। 7......येह मक़ाम मक्का व त़ाइफ़ के दरमियान मक्का से एक दिन की राह है। 12 मिन्ह

8......अचानक।

9......अ़म्र बिन ह़ज़रमी का बाप अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रमी ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दादा ह़र्ब बिन उमय्या का ह़लीफ़ था और ह़र्बे कुरैश का रईस था और उ़स्मान व नौफ़ल ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दादा मुग़ीरा के बेटे थे जो रऊसाए कुरैश के ज़ुमरे में शुमार होता था। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

बिन कैसान इस्लाम लाए उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह को छोड़ दिया गया, वोह मक्का में चला गया और कुफ़्र पर मरा।(1)

इसी साल के माहे शा'बान में माहे रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुवे और माहे रमज़ान में **"ग़ज़्वए बद्रे सानिय्या"** वुक़ूअ़ में आया।

ग़ज़्वए बद्रे कुब्रा

"ग़ज़्वए बद्र" सब से बड़ा ग़ज़्वा है। इस का सबब अ़म्र बिन ह़ज़्रमी का क़त्ल और क़ाफ़िलए कुरैश का शाम की त़रफ़ से आना था। येह वोही क़ाफ़िला था जिस के क़स्द से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुल उ़शैरा तक तशरीफ़ ले गए थे। अमीरे क़ाफ़िला अबू सुफ़्यान था। इस क़ाफ़िले में कुरैश का बहुत सा माल था। जब येह क़ाफ़िला बद्र के क़रीब पहुंचा तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर लगी आप ने फ़ौरन मुसलमानों को निकलने की दा'वत दी। इस लिये जल्दी से तय्यारी कर के आप ब तारीख़ 12 माहे रमज़ान बरोज़ हफ़्ता मदीने से निकले और मदीनए मुनव्वरा से एक मील के फ़ासिले पर "बिअरे अबी उ़तबा"(2) पर लश्कर गाह मुक़र्रर हुवा। यहां लश्कर का जाइज़ा लेने के बा'द आप ने सग़ीरुस्सिन(3) सह़ाबा (मसलन इब्ने उ़मर, बरा बिन आ़ज़िब, अनस बिन मालिक, जाबिर, ज़ैद बिन ह़ारिस और राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) को वापस कर दिया और बाक़ी को ले कर रवाना हुवे।

ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास के भाई उ़मैर(4) जिन की उ़म्र सोलह साल की थी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आंख बचा रहे थे क्यूंकि उन को शहादत का शौक़ था मगर डरते थे कि कहीं छोटी उ़म्र के सबब वापस न कर दिये जाएं चुनान्चे, जब पेश हुवे तो वापसी का हुक्म मिला। इस पर आप रोने लगे लिहाज़ा उस रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शुमूलिय्यत की इजाज़त दे दी बल्कि उन पर ख़ुद अपनी तल्वार का परतला(5) लगा दिया।(6)

---

1 ......الطبقات الکبری لابن سعد،سریۃ عبد اللّٰہ بن جحش الاسدی،ج۲،ص۳۔۷ و السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،سریۃ عبد اللّٰہ بن جحش...الخ،ص۲۴۷۔۲۴۹ملتقطاً۔علمیہ

2 ......सीरत की कुतुब में इस कूंएं का नाम "बिअरे अबी इ़नबा" भी लिखा है। **इ़ल्मिय्या**

3 ......कम उ़म्र।

4 ......طبقات ابن سعد واستیعاب واصابہ،ترجمہ عمیر بن ابی وقاص۔

5 ......वोह पट्टी जो तल्वार लटकाने के लिये कन्धे पर डालते हैं।

6 ......الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ،۶۰۷۲۔عمیر بن ابی وقاص،ج۴،ص۶۰۳ و الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، ۲۰۱۹ عمیر بن ابی وقاص،ج۳،ص۲۹۴۔ علمیہ

www.dawateislami.net

वाज़ेह़ रहे कि मुसलमान मह़्ज़ क़ाफ़िलए क़ुरैश से तअ़र्रुज़[(1)] के लिये निकले थे इन को इ़ल्म न था कि फ़ौजे क़ुरैश से मुक़ाबला करना पड़ेगा। इस लिये फ़ौरी ना तमाम तय्यारी की गई। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस का सुवारी का ऊंट मौजूद हो वोह सुवार हो कर हमारे साथ चले।" अन्सार आप से उन ऊंटों के लाने के लिये जो मदीने के हि़स्सए बालाई में थे इजाज़त मांगने लगे। आप ने फ़रमाया : "नहीं सिर्फ़ वोही साथ चले जिस का सुवारी का ऊंट ह़ाज़िर है।"[(2)]

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ सत्तर ऊंट दो घोड़े और तीन सो आठ मुजाहिदीन थे। जिन में से मुहाजिरीन कुछ साठ से ऊपर थे और बाक़ी सब अन्सार थे। आठ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم और थे जो ब वज्हे उ़ज़्र शामिल न हो सके। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को भी ग़नीमत में से पूरा हि़स्सा दिया लिहाज़ा येह भी अस्ह़ाबे बद्र में शामिल होते हैं। उन आठ में से तीन तो मुहाजिरीन थे। या'नी ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो अपनी अहलिय्या ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बिन्ते रसूलिल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तीमार दारी के लिये हुज़ूर ही के इरशाद से मदीनए मुनव्वरा में रह गए थे और ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह और सईद बिन ज़ैद (हर दो अ़शरए मुबश्शरा में से हैं) जिन को हुज़ूर ने रवानगी से दस रोज़ पेशतर क़ाफ़िलए क़ुरैश की ख़बर लाने के लिये भेज दिया था और वोह आप की रवानगी के बा'द मदीने में वापस आए थे और पांच अन्सार थे। या'नी अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर जिन को आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ग़ैबत में मदीने का ह़ाकिम मुक़र्रर किया।[(3)] आ़सिम बिन अ़दी अल अ़जलानी जो रौह़ा[(4)] से ज़र्बे शदीद के सबब वापस कर दिये गए और मदीनए मुनव्वरा की

1.....ह़दीसे का'ब बिन मालिक में है : انما خرج النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم یرید عیر قریش حتی جمع اللّٰہ بینہ وبینھم علی غیر میعاد. (या'नी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ क़ाफ़िलए क़ुरैश के क़स्द से निकले थे कि **अल्लाह** तआ़ला ने दोनों फ़रीक़ को अचानक मुक़ाबिल कर दिया।) येह ह़दीस सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में है और क़ुरआने करीम की आयते ज़ैल की सह़ीह़ तफ़्सीर है :

وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِی الْمِیْعٰدِ ۙ وَ لٰكِنْ لِّیَقْضِیَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ (انفال، ۵ع) और अगर आपस में तुम वा'दे करते तो न पहुंचते वा'दे पर लेकिन **अल्लाह** को कर डालना था एक अम्र का जो हो चुका था (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुम आपस में कोई वा'दा करते तो ज़रूर वक़्त पर बराबर न पहुंचते लेकिन येह इस लिये कि **अल्लाह** पूरा करे जो काम होना है। (پ۱۰،الانفال:۴۲۔علمیہ)) ह़दीसे का'ब के इ़लावा और ह़दीसें भी हैं जो इसी मज़्मून की ताईद करती हैं। 12 मिन्ह

2 ......صحیح مسلم، کتاب الجہاد، باب سقوط فرض الجہاد عن المعذورین، حدیث انس بن مالک۔......(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب ثبوت الجنۃ للشہید، الحدیث:۱۹۰۱، ص۱۰۵۳۔علمیہ)

3......या'नी मदीने से रवानगी पर अपने पीछे उन को मदीनए मुनव्वरा का ह़ाकिम मुक़र्रर फ़रमाया।

4......बद्र से 36 मील है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

बालाई आबादी (आ़लिय्या) के ह़ाकिम बनाए गए। ह़ारिस बिन ह़ाति़ब अल उ़मरी जिन को ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रौह़ा से किसी ख़ा़स काम के लिये बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के पास भेज दिया। ह़ारिस बिन अस्सम्मा जो रौह़ा में टांग पर ज़र्बे शदीद आने के सबब वापस कर दिये गए और ख़्व्वात बिन जुबैर जो असनाए राह में साक़[1] पर पथ्थर लगने के सबब मक़ामे सफ़रा[2] से वापस कर दिये गए।[3]

सुवारी के लिये तीन तीन मुजाहिदीन को एक एक ऊंट मिला हुवा था। चुनान्चे, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते मरसद ग़नवी[4] एक ऊंट पर और ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ दूसरे पर बारी बारी सुवार होते थे। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रौह़ा से चल कर सफ़रा के क़रीब पहुंचे तो आप ने ह़ज़रते बस्बस बिन अ़म्र और अ़दी बिन अबिज़्ज़ग़बा को क़ाफ़िलए क़ुरैश की ख़बर लाने के लिये भेजा। वोह बद्र में पहुंचे और वहां से येह ख़बर सुन कर आए कि क़ाफ़िला कल या परसों[5] बद्र में पहुंचेगा। अबू सुफ़्यान को शाम में ख़बर लगी थी कि ह़ज़रत क़ाफ़िले की वापसी का इन्तिज़ार कर रहे हैं। इस लिये उस ने ह़िजाज़ के क़रीब पहुंच कर ज़मज़म बिन अ़म्र को बीस मिस्क़ाल सोने की उजरत पर मक्का में क़ुरैश के पास भेजा ताकि उन को क़ाफ़िले के बचाने की तरग़ीब दे। चुनान्चे, ज़मज़म ऊंट पर सुवार हो कर फ़ौरन रवाना हो गया।

मक्का पहुंच कर ज़मज़म ने अपने ऊंट के नाक कान काट दिये थे। कजावा उलट दिया था और अपनी क़मीस फाड़ दी थी। इस हैअते कज़ाई में[6] वोह अपने ऊंट पर सुवार, यूं पुकार पुकार कर कह रहा था : "ऐ गुरौहे क़ुरैश ! क़ाफ़िलए तिजारत ! क़ाफ़िलए तिजारत ! तुम्हारा माल अबू सुफ़्यान के साथ है। मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उस के अस्ह़ाब इस के सद्दे राह[7] हो गए हैं। मैं ख़याल नहीं करता कि तुम इसे बचा लोगे। फ़रयाद ! फ़रयाद !" येह सुन कर क़ुरैश

1......पिड़ली। 2......बद्र से एक मन्ज़िल के फ़ासिले पर है। 12 मिन्हु।

3......الطبقات الكبرى لابن سعد،غزوة بدر،ج٢،ص٨ و السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدر الكبرى، ص ٢٥١-٢٥٦ ملتقطاً
وصحيح البخاری، كتاب المغازی،باب ذكر النبی من يقتل ببدر،الحديث:٣٩٥٠،ج٣،ص٣ملتقطاً۔ علميه

4......मक़ामे रौह़ा तक ह़ज़रते मरसद की जगह ह़ज़रते अबू लुबाबा थे। जब ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारी पैदल चलने की आती तो ह़ज़रते अ़ली व अबू लुबाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا अ़र्ज़ करते कि आप सुवार हो लें हम बजाए आप के पैदल चलते हैं मगर ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते : तुम पैदल चलने पर मुझ से ज़ियादा क़ादिर नहीं हो और न मैं तुम्हारी निस्बत अज्र का कम ख़्वाहां हूं। त़बक़ाते इब्ने सा'द, ग़ज़्वए बद्र। 12 मिन्हु

5....सीरते इब्ने हिशाम। 6....या'नी इसी ह़ालत में। 7.....राह में रुकावट बनना।

www.dawateislami.net

कहने लगे : क्या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उस के अस्ह़ाब गुमान करते हैं कि येह क़ाफ़िला भी अ़म्र बिन ह़ज़्रमी की मानिन्द होगा ! हरगिज़ नहीं । **अल्लाह** की क़सम ! उन्हें मा'लूम हो जाएगा कि ऐसा नहीं । ग़रज़ कुरैश जल्दी निकले और उन के अशराफ़ में से सिवाए अबू लहब के कोई पीछे न रहा और उस ने भी अपने इवज़ अबू जह्ल के भाई आ़स बिन हिशाम को भेजा और चार हज़ार दिरहम जो बत़ौरे सूद उस से लेने थे इस सिले में उस को मुआ़फ़ कर दिये । उमय्या बिन ख़लफ़ ने भी पीछे रह जाने का इरादा किया था क्यूंकि उस ने ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ से हिजरत के बा'द मक्कए मुशर्रफ़ा में सुना था कि वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब के हाथ से क़त्ल होगा मगर अबू जह्ल ने कहा : तू अहले वादिये मक्का का सरदार है अगर तू पीछे रह गया तो दूसरे भी देखा देखी तेरे साथ रह जाएंगे । ग़रज़ पसो पेश[1] के बा'द अबू जह्ल के इसरार पर वोह भी साथ हो लिया ।[2]

कुरैश जब बड़े साज़ो सामान से इस त़रह़ चलने को तय्यार हो गए तो उन्हें बनू किनाना की त़रफ़ से अन्देशा पैदा हुवा क्यूंकि बद्र से पहले कुरैश व किनाना में लड़ाई जारी थी । इस लिये कुरैश ख़ाइफ़ थे कि मबादा[3] कीनए साबिक़[4] के सबब हमारे पीछे हम को कोई ज़रर पहुंचाएं । उस वक़्त इब्लीस[5] ब सूरते सूराक़ा बिन मालिक ज़ाहिर हुवा जो किनाना का सरदार था, और कहने लगा : मैं ज़ामिन हूं तुम्हारे पीछे, बनू किनाना से तुम्हें कोई ज़रर न पहुंचेगा । मैं तुम्हारे[6] साथ हूं । इस त़रह़ इब्लीसे लईन सूरते सुराक़ा लश्करे कुरैश के साथ था । इ़लावा अज़ीं अहले मक्का के साथ गाने वाली औ़रतें और आलाते मलाही[7] भी थी । रुस्द का इन्तिज़ाम[8] येह था कि उमराए कुरैश अ़ब्बास, उ़तबा बिन रबीआ़, ह़ारिस बिन आ़मिर, नज़्र बिन ह़ारिस, अबू जह्ल, उमय्या वग़ैरा बारी बारी हर रोज़ दस दस ऊंट ज़ब्ह़ करते और लोगों को खिलाते थे । उ़तबा बिन रबीआ़ जो कुरैश का सब से मुअ़ज़्ज़ज़ रईस था फ़ौज का सिपह सालार था ।

1......सोच बिचार

2......صحیح بخاری، باب ذکر النبی صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم من يقتل ببدر۔

3......ऐसा न हो ।

4......पुरानी दुश्मनी ।

5......सीरते इब्ने हिशाम ।

6......कुरआने मजीद की आयते ज़ैल में इसी क़िस्से की त़रफ़ इशारा है :

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ (الانفال، ٤٦) और जिस वक़्त संवारने लगा शैत़ान उन की नज़र में उन के काम और बोला कोई ग़ालिब न होगा तुम पर आज के दिन और मैं रफ़ीक़ हूं तुम्हारा । 12 मिन्ह

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब कि शैत़ान ने उन की निगाह में उन के काम भले कर दिखाए और बोला आज तुम पर कोई शख़्स ग़ालिब आने वाला नहीं और तुम मेरी पनाह में हो । (پ١٠، الانفال:٤٨) **इल्मिय्या**)

7......लह्व लइ़ब के आलात । 8......लश्कर के खाने पीने का इन्तिज़ाम ।

www.dawateislami.net

जब अबू सुफ़्यान मदीने के नवाह़ में पहुंचा और कुरैश की कुमक[1] उस की मदद को न पहुंची तो वोह निहायत ख़ौफ़ज़दा हुवा कि कहीं मुसलमान कमीनगाह[2] में न हों। इसी ह़ाल में वोह बद्र में जा पहुंचा वहां उस ने मज्दी बिन अ़म्र से पूछा : क्या तू ने मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के जासूसों में से किसी को देखा है ? मज्दी बोला : "**अल्लाह** की क़सम ! मैं ने किसी अजनबी शख़्स को नहीं देखा, हां इस मक़ाम पर दो सुवार आए थे। येह कह कर अ़दी व बस्बस के मुनाख़[3] की त़रफ़ इशारा किया। अबू सुफ़्यान ने उन के ऊंटों की मेंगनियों को ले कर तोड़ा तो क्या देखता है कि उन में खजूर की गुटलियां हैं। कहने लगा : इन ऊंटों[4] ने यसरब की खजूरें खाई हैं। वोह तो मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के जासूस थे लिहाज़ा उस ने अपने क़ाफ़िले के ऊंटों के मुंह फेर दिये और बद्र को बाएं हाथ छोड़ कर साह़िले समन्दर के साथ साथ मक्का को रवाना हुवा। जब वोह क़ाफ़िले को मह़ल्ले ख़त़र से बचा ले गया तो उस ने क़ैस बिन इमरियुल क़ैस के हाथ कुरैश को कहला भेजा कि मैं ने क़ाफ़िले को बचा लिया है लिहाज़ा तुम वापस चले जाओ। येह क़ासिद जुह़्फ़ा[5] में कुरैश से मिला और उन्हें अबू सुफ़्यान का पैग़ाम पहुंचाया। कुरैश ने वापस होने का इरादा किया मगर अबू जह्ल बोला कि हम[6] बद्र से वरे[7] वापस न होंगे। वहां तीन दिन ठहरेंगे, ऊंट ज़ब्ह़ करेंगे और खाएं खिलाएंगे। शराब पियेंगे और राग सुनेंगे। इस त़रह़ क़बाइले अ़रब के अत़राफ़ में हमारी अ़ज़मत व शौकत का आवाज़ा फैल[8]

1......वोह फ़ौज जो लड़ाई में मदद के लिये भेजी जाए।

2......दुश्मन को पकड़ने या मारने के लिये घात लगा कर या'नी छुप कर बैठने की जगह को कमीनगाह कहते हैं।

3......ऊंटों के बिठाने की जगह को मुनाख़ बोलते हैं। 12 मिन्ह

4......त़बक़ाते इब्ने सा'द, ग़ज़्वए बद्र

5......जुह़्फ़ा मदीने के रास्ते में मक्का से तीन या चार मन्ज़िल है और ग़दीरे खुम से दो मील और साह़िले बह़्र से क़रीबन तीन मन्ज़िल है। मो'जमुल बलदान लि-याक़ूतुल ह़मवी। 12 मिन्ह

6......कामिल लि-इब्ने अल असीर, ग़ज़्वए बद्र। बद्र मवासिमे अ़रब में एक मौसम भी था जहां हर साल एक दफ़्आ़ मेला लगा करता था हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बद्र पहुंचने के लिये जो रास्ता इख़्तियार फ़रमाया था वोह रौह़ा में से था। रौह़ा और मदीने के दरमियान चार दिन का रास्ता है। फिर रौह़ा से मुन्सरफ़ एक बुरैद। फिर ज़ात अज्ज़ाल एक बुरैद फिर मुआ़मलात एक बुरैद फिर असील एक बुरैद और असील से बद्र दो मील। त़बक़ाते इब्ने सा'द 12 मिन्ह

7......बद्र के क़रीब आ कर।

8......कुरआने करीम की आयते ज़ैल में इसी त़रफ़ इशारा हुवा है :

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّ رِئَآءَ النَّاسِ وَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿۴۷﴾ (انفال،٦ع) और मत हो कि जैसे निकले वोह लोग अपने घरों से इतराते और लोगों को दिखाते और रोकते **अल्लाह** की राह से और **अल्लाह** के क़ाबू में है जो वोह करते हैं। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन जैसे न होना जो अपने घर से निकले इतराते और लोगों के दिखाने को और **अल्लाह** की राह से रोकते और उन के सब काम **अल्लाह** के क़ाबू में हैं। (پ١٠،الانفال:٤٧) **इल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

जाएगा[1] और वोह हमेशा हम से डरते रहेंगे। पस अबू जहल की राए पर अ़मल किया गया। जुह़फ़ा ही में अख़्नस[2] बिन शरीक़ अल सक़फ़ी ने अपने ह़लीफ़ बनू ज़ोहरा को जो एक सो और बक़ौले बा'ज़ तीन सो मर्द थे मश्वरा दिया कि वापस चले जाओ। चुनान्चे, वोह वापस चले गए इस त़रह़ बनू अ़दी बिन का'ब जो क़ुरैश के साथ आए थे सनिय्यए लफ़्त से वापस लौट गए और वापसी में अबू सुफ़्यान उन से मिला और कहने लगा : ऐ बनू अ़दी ! तुम क्यूं कर लौट आए। [3] لَا فِی الْعِیْرِ وَلَا فِی النَّفِیْرِ (न क़ाफ़िले में और न क़ुरैश में) वोह बोले कि तू ने ही तो क़ुरैश को लौट जाने का पैग़ाम भेजा था। ग़रज़ बनू ज़ोहरा और बनू अ़दी के सिवा तमाम क़ुरैश के क़बाइल लड़ाई में शामिल थे।[4]

मक़ामे सफ़रा के नज़्दीक वादिये ज़फ़िरान में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام दो जमाअ़तों में से एक का वा'दा लाए। पस आप ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मश्वरा किया और पूछा कि तुम क्या चाहते हो ? ई़र (क़ाफ़िला) या नफ़ीर (गुरौहे क़ुरैश) मुसलमान चूंकि मह़ज़ क़ाफ़िले के क़स्द से निकले थे, ता'दाद भी कम थी और सामाने जंग भी काफ़ी न था, इस लिये एक फ़रीक़ इस ह़ालत में लड़ाई से हिचकिचाता था।[5] वोह बोले : ई़र।

1......शोहरत हो जाएगी।

2......इस का अस्ली नाम उबय था मगर जब बनू ज़ोहरा को लौटा ले गया तो कहा गया **ख़नस बहिम** (वोह उन को वापस ले गया) लिहाज़ा इस को अख़्नस कहने लगे (त़बक़ाते इब्ने सा'द) इस के इस्लाम में इख़्तिलाफ़ है। देखो इसाबा फ़ी तमीज़ुस्सह़ाबा। 12 मिन्ह

3......त़बक़ाते इब्ने सा'द। मगर ज़रबुल मसल लिल बदानी में है कि अबू सुफ़्यान का येह ख़िताब बनू ज़ोहरा से था और उसी ने लिखा है कि येह मसल सब से पहले अबू सुफ़्यान की ज़बान से निकली थी। बक़ौले अस्मई इसे ऐसे मक़ाम पर बोला जाता है जहां किसी शख़्स की क़दरे तह़क़ीर व तसग़ीर मन्ज़ूर हो। 12 मिन्ह

4 ......الطبقات الکبری لابن سعد،غزوۃ بدر،ج۲،ص۹۔۱۰ ملتقطاً و والکامل فی التاریخ،ذکر غزوۃ بدر الکبری،ج۲، ص۱۷۔۱۹۔ علمیہ

5......सूरए अन्फ़ाल, रुकूए अव्वल में है : كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَیْتِكَ بِالْحَقِّ (آیہ ۵ تا ۱۱) बा'ज़ ने पांचवीं आयत में وَاِنَّ فَرِیْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِیْنَ لَكٰرِهُوْنَ को ह़ाले ह़क़ीक़िय्या समझ कर कहा है कि मदीने से निकले और इस गुरौह के जी चुराने का वक़्त एक ही था। और सातवीं आयत وَاِذْ یَعِدُكُمُ اللّٰهُ की रू से दो फ़रीक़ (कारवाने तिजारत व फ़ौजे क़ुरैश) में से एक का वा'दा भी मदीने ही में था मगर येह दुरुस्त नहीं क्यूंकि जुम्ला وان فریقا ह़ाले ह़क़ीक़िय्या नहीं बल्कि मुक़द्दरा है जैसा कि तमाम कुतुबे तफ़्सीर में मज़्कूर है और وَاِذْ یَعِدُكُمُ में वाव आ़तिफ़ा नहीं बल्कि इस्तीनाफ़ है और अज़ ज़र्फ़ है फ़े'ले मुज़्मर وَاذْكُرُوْا का न कि اَخْرَجَكَ का। इस में शक नहीं कि नवीं आयत (اِذْ تَسْتَغِیْثُوْنَ) में और ग्यारहवीं आयत (اِذْ یُغَشِّیْكُمُ النُّعَاسَ) में अज़ बदल है وَاِذْ یَعِدُكُمُ से पस बिनाए बर तक़रीरे बा'ज़ मज़्कूरे ख़ुरूज मिनल बैत, वा'दए अह़दी अत्ताइफ़तीन, इस्तिग़ासए मुस्लिमीन, नींद का त़ारी होना और मींह का बरसना येह सब मदीने ही में होना चाहिये। وھذا کما تری तफ़्सील के लिये रिसाला ग़ज़्वातुन्नबी, मुअल्लिफ़हू ख़ाकसार देखो। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

येह सुन कर हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नाखुश हुवे, लिहाज़ा अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खड़े हो कर तक़रीर की और खूब[1] कहा। फिर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक़रीर की और अच्छी की। फिर हज़रते मिक्दाद बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुवे और बोले कि "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला ने जो आप को बताया है वोह कीजिये हम आप के साथ हैं, **अल्लाह** की क़सम ! हम[2] नहीं कहते जैसा कि हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की क़ौम ने कहा था : [3]فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ बल्कि हम आप के दाएं बाएं और आगे पीछे लड़ेंगे।" येह सुन कर हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुश हुवे और हज़रते मिक्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में दुआ़ए खैर फ़रमाई। फिर आप ने अन्सार की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि मुझे मश्वरा दो। अन्सार की त़रफ़ इशारे की वज्ह येह थी कि उन्हों ने बैअ़ते उ़क़्बा के वक़्त कहा था :[4] "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम आप के ज़िमाम या'नी अ़हद से बरी हैं यहां तक कि आप हमारे दियार में पहुंच जाएं जब आप हमारे दियार में पहुंचेंगे तो हमारे अमान व अ़हद में होंगे और हम आप की ह़िमायत करेंगे हर ऐसे अम्र से कि उस से हम अपनी अवलाद और औ़रतों की ह़िमायत करते हैं।" चूंकि इस इ़बारत से एक त़रह़ का वहम होता था कि अन्सार पर सिर्फ़ मदीने में ही हुज़ूर की ह़िमायत वाजिब थी, लिहाज़ा आप ने इस मक़ाम पर मह़ज़ उन के ह़ाल से इस्तिक्शाफ़ व इस्तिम-ज़ाज के लिये ऐसा किया।[5] अन्सार ने जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद सुना तो हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो अकाबिरे अन्सार में से थे यूं जवाब दिया :[6] "हम आप पर ईमान लाए हैं और शाहिद हैं उस अम्र पर कि जो कुछ आप लाए हैं वोही ह़क़ है और इस तस्दीक़ पर हम ने आप को अपनी इत़ाअ़त के अ़हदो मवासीक़ दिये हुवे हैं। या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप जहां चाहें चलें हम आप के साथ हैं **अल्लाह** की क़सम !

1......सीरते इब्ने हिशाम।

2......सह़ीह़ बुख़ारी, ग़ज़्वए बद्र, बाब क़ौलुल्लाहि तआ़ला : اِذْ تَسْتَغِیْثُوْنَ رَبَّكُمْ الآیۃ सीरते इब्ने हिशाम में हज़रते मिक्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तक़रीर में येह भी है : "क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप को ह़क़ दे कर भेजा है अगर आप हमारे साथ बर्कुल ग़िमाद का क़स्द करेंगे तो हम तल्वार चलाएंगे यहां तक कि आप वहां पहुंच जाएं।" बा'ज़ रिवायतों में येही अल्फ़ाज़ हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मन्सूब हैं। मुमकिन है दोनों ने ऐसा ही कहा हो। जैसा कि इब्नुल दमीना का क़ौल है। (मो'जमुल बलदान लि-याक़ूतुल ह़मवी) बर्कुल ग़िमाद मक्कए मुशर्रफ़ा से पांच दिन की राह पर अक़्साए यमन में ह़बशा के मुक़ाबिल एक शहर है। 12 मिन्ह

3......فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ तू जा और तेरा रब दोनों लड़ो हम यहां ही बैठते हैं। (مائدہ ع ٤)
(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं। (پ٦، المائدة:٢٤) **इल्मिय्या**)

4......सीरते इब्ने हिशाम, ग़ज़्वए बद्र।

5......या'नी वज़ाह़त और मरज़ी पूछने के लिये ऐसा फ़रमाया।

6......सीरते इब्ने हिशाम, ग़ज़्वए बद्र।

www.dawateislami.net

जिस ने आप को ह़क़ दे कर भेजा है, अगर आप हमारे साथ इस समन्दर को उ़बूर करना चाहें और इस में कूद पड़ें तो बेशक हम भी आप के साथ इस में कूद पड़ेंगे और हम में से एक भी पीछे न रहेगा। हमें येह ना गवार नहीं कि कल को आप हमें साथ ले कर दुश्मन का मुक़ाबला करें। हम लड़ाई में साबिर और दुश्मन के मुक़ाबले के वक़्त सादिक़ हैं। शायद **अल्लाह** तआ़ला मुक़ाबले में हमारे हाथ से आप को वोह दिखाए कि जिस से आप की आंखें ठन्डी हों, लिहाज़ा आप हम को **अल्लाह** की बरकत से ले चलें।" हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस क़ौल से ख़ुश हुवे और फ़रमाया कि "**अल्लाह** की बरकत से चलो ! **अल्लाह** तआ़ला ने मुझ से दो बातों (क़ाफ़िला और फ़ौजे क़ुरैश) में से एक[1] का वा'दा किया हुवा है। **अल्लाह** की क़सम ! गोया मैं क़ुरैश की मौत की जगहों को देख रहा हूं।" यहां हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने झन्डे तय्यार किये। सब से बड़ा झन्डा मुहाजिरीन का था जो ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में था और क़बीलए ख़ज़रज का झन्डा ह़ज़रते ह़ब्बाब बिन अल मुन्ज़िर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास था और क़बीलए औस का झन्डा ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उठाया हुवा था। मुशरिकीन के साथ भी तीन झन्डे थे। एक अबू उ़ज़ैर बिन उ़मैर दूसरा नज़्र बिन ह़ारिस और तीसरा त़ल्ह़ा बिन अबी त़ल्ह़ा के हाथ में था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब तारीख़ 17 माहे रमज़ान जुमुआ़ की रात को बद्र में क़रीब के मैदान में उतरे और क़ुरैश दूसरी त़रफ़ उतरे।[2] हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़राते अ़ली व ज़ुबैर व सा'द बिन अबी

1......क़ुरआने करीम में है : وَ اِذْ یَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآىٕفَتَیْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَیْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ یُرِیْدُ اللّٰهُ اَنْ یُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ یَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِیْنَۙ۝ और जब वा'दा करता है **अल्लाह** एक का दो जमाअ़तों में से कि येह वासित़े तुम्हारे है और तुम दोस्त रखते हो येह कि बन शौकत वाला ही होवे वासित़े तुम्हारे और **अल्लाह** चाहता है कि सच्चा करे सच को अपने कामों से और काटे पीछा काफ़िरों का। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम्हें वा'दा दिया था कि उन दोनों गुरौहों में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका नहीं और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे। (پ۹،الانفال:۷) **इल्मिय्या**।) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मत़लब येह था कि कारवान और लश्करे क़ुरैश में से एक का वा'दा हो चुका है। अब क़ाफ़िला तो हाथ से जाता रहा लिहाज़ा क़ुरैश गिरिफ़्तार होंगे। 12 मिन्ह

2......क़ुरआने करीम में है : اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْیَا وَ هُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَ الرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْؕ (انفال،ع۵) जिस वक़्त तुम थे वरे के नाके पर और वोह परे के नाके पर और क़ाफ़िला नीचे उतर गया तुम से। (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब तुम नाले के इस किनारे थे और काफ़िर परले किनारे और क़ाफ़िला तुम से तराई में। (پ۱۰،الانفال:۴۲) **इल्मिय्या**) या'नी मुसलमान क़रीब के मैदान में मदीने की त़रफ़ को उतरे और कुफ़्फ़ार परले नाके पर मक्का की त़रफ़ उतरे और क़ाफ़िला मुसलमानों से नीचे की त़रफ़ साहि़ले समन्दर के क़रीब था। 12 मिन्ह......

(السیرة النبویة لابن ہشام،غزوة بدر الکبری،ص۲۵۳۔۲۵۴ و صحیح البخاری،کتاب المغازی، باب قول اللّٰہ تعالٰی: اذ تستغیثون ربکم...الخ،الحدیث:۳۹۵۲،ج۳،ص۵ و الطبقات الکبری، لابن سعد، غزوة بدر، ج۲،ص۱۰۔علمیہ)

www.dawateislami.net

वक़्क़ास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को मुशरिकीन का ह़ाल दरयाफ़्त करने के लिये भेजा वोह क़ुरैश के दो ग़ुलाम पकड़ लाए। उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ रहे थे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उन[1] ग़ुलामों से पूछा : क्या तुम अबू सुफ़्यान के साथी हो ? उन्हों ने जवाब दिया कि हम तो क़ुरैश के सक़्क़े हैं। क़ुरैश ने हमें पानी पिलाने के लिये भेजा है। इस पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने उन्हें मारा। जब वोह दर्द से बे चैन हुवे तो कहने लगे कि हम अबू सुफ़्यान के साथी हैं। इतने में ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे। आप ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : "जब येह तुम से सच बोले तुम ने इन को मारा और जब तुम से झूट बोले तो इन को छोड़ दिया। अल्लाह की क़सम ! इन्हों ने सच कहा येह क़ुरैश के साथी हैं।" फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन ग़ुलामों से क़ुरैश का ह़ाल दरयाफ़्त किया। उन्हों ने जवाब दिया : अल्लाह की क़सम ! येह तो दए रैग[2] जो नज़र आ रहा है इस के पीछे हैं। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि क़ुरैश ता'दाद में कितने हैं ? वोह बोले कि हमें मा'लूम नहीं। फिर आप ने पूछा कि वोह रोज़ाना कितने ऊंट ज़ब्ह़ करते हैं ? उन्हों ने जवाब दिया कि एक दिन दस और एक दिन नव। आप ने फ़रमाया कि वोह हज़ार और नव सो के दरमियान हैं। (वाक़ेअ़ में वोह साड़े नव सो थे और उन के पास सो घोड़े थे।) फिर आप ने पूछा : सरदाराने क़ुरैश में से कौन कौन आए हैं। वोह बोले उ़तबा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, अबू जह्ल बिन हिशाम, अबुल बुख़्तरी बिन हिशाम, ह़कीम बिन ह़िज़ाम, नौफ़ल बिन ख़ुवैलिद, ह़ारिस बिन आ़मिर बिन नौफ़ल, तुऐ़मा बिन अ़दी इब्ने नौफ़ल, नज़्र बिन ह़ारिस, ज़मआ़ बिन अस्वद, उमय्या बिन ख़लफ़, नुबै व मुनब्बेह पिस्राने ह़ज्जाज, सुहैल बिन अ़म्र[3] अ़म्र बिन अ़ब्दे वुद। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : "लो ! मक्का ने अपने जिगर पारे तुम्हारी त़रफ़

1......सीरते इब्ने हिशाम। मगर सह़ीह़ मुस्लिम में एक ग़ुलाम का ज़िक्र है। ब ज़ाहिर ह़दीसे मुस्लिम के रावी ने एक ही के ज़िक्र पर इख़्तिसार किया है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم 12 मिन्हु

2......रैत का टीला।

3......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "**सहल बिन अ़म्र**" लिखा है जो कि किताबत की ग़लती है क्यूंकि अस्सीरतुन्नबविय्या लि-इब्ने हिशाम, अस्सीरतुल ह़ल्बीह और दीगर कुतुब में "**सुहैल बिन अ़म्र**" है लिहाज़ा हम ने येही लिखा है। **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

भेज दिये हैं।" पस हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्दी कूच कर के कूओं[1] की त़रफ़ आए और जो कूआं[2] बद्र के सब से क़रीब था उस पर उतरे। ह़ज़रते ह़ब्बाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जहां आप हैं वोह अच्छी जगह नहीं। आप हमें उस कूएं पर ले चलें जो क़ुरैश के सब से नज़्दीक हो मैं बद्र से और उस के कूओं से वाक़िफ़ हूं। वहां एक मीठे पानी का कूआं है जिस का पानी ख़त्म नहीं होता। हम उस पर एक हौज़ बना लेंगे इस में से पियेंगे और जंग करेंगे और बाक़ी कूओं को बन्द कर देंगे ताकि कुफ़्फ़ार को पानी न मिले। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया कि ह़ब्बाब की राए दुरुस्त है।[3] इलावा अज़ीं जहां मुसलमान उतरे हुवे थे वोह नर्म रैतीली ज़मीन थी जिस में आदमियों के पाउं और चोपायों के खुर और सुम धंसते थे और जहां कुफ़्फ़ार ठहरे हुवे थे उन्हों ने वहां कूएं खोद लिये थे और पानी जम्अ़ कर लिया था। मुसलमानों में से बा'ज़ को ग़ुस्ले जनाबत और बा'ज़ को वुज़ू की ह़ाजत थी और प्यासे थे पानी न मिलता था। पस शैत़ान ने उन के दिलों में येह वस्वसा डाला कि तुम्हारा गुमान है कि हम ह़क़ पर हैं, पैग़म्बर हमारे दरमियान हैं और हम **अल्लाह** के प्यारे हैं, ह़ालांकि मुशरिकीन पानी पर क़ाबिज़ हैं और तुम जुनुब और मुह़दस[4] होने की ह़ालत में नमाज़ें पढ़ते हो, फिर तुम्हें किस त़रह़ उम्मीद हो सकती है कि तुम उन पर ग़ालिब आ जाओगे। ऐसी ह़ालत में **अल्लाह** तआ़ला ने उन पर नींद त़ारी कर दी।[5] जिस से उन का रन्ज व तअ़ब[6] दूर हो गया और मींह बरसा दिया जिस से उन्हों ने पिया, ग़ुस्ल किया अपने चोपायों को पिलाया और मश्कें भर लीं और रैत सख़्त हो गई

1......कूंओं। 2......कूंआं।

3......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدر الكبرى،ص٢٥٤ و الطبقات الكبرى لابن سعد،غزوة بدر،ج٢،ص١٠ ملخصاً علميه۔

4......बे ग़ुस्ल और बे वुज़ू।

5......क़ुरआने मजीद में है :

اِذْ یُغَشِّیْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَ یُنَزِّلُ عَلَیْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّیُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَ یُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّیْطٰنِ وَ لِیَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَ یُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ؕ﴿۱۱﴾ (انفال،٢٦)

और जिस वक़्त डाल दी तुम पर ऊंघ अपनी त़रफ़ से तस्कीन को और उतारा तुम पर आस्मान से पानी कि इस से तुम को पाक करे और दूर करे तुम से शैत़ान की नजासत और मोहूकम गिरह दे तुम्हारे दिलों पर और साबित करे इस के सबब तुम्हारे क़दम। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब उस ने तुम्हें ऊंघ से घेर दिया तो उस की त़रफ़ से चैन (तस्कीन) थी और आस्मान से तुम पर पानी उतारा कि तुम्हें इस से सुथरा कर दे और शैत़ान की नापाकी तुम से दूर फ़रमावे और तुम्हारे दिलों को ढारस बंधाए और इस से तुम्हारे क़दम जमा दे। (پ٩،الانفال:١١) **इल्मिय्या**)

6......रंज और थकावट।

www.dawateislami.net

जिस पर चलना आसान हो गया और कुफ़्फ़ार की ज़मीन कीचड़ हो गई जिस पर चलना दुश्वार हो गया। इस त़रह़ वस्वसए शैत़ान जाता रहा और इत़मीनान ह़ासिल हो गया।

ग़रज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब वहां से चल कर कुफ़्फ़ार से पहले आबे बद्र पर पहुंच गए और क़ुरैश के सब से क़रीब कूएं पर उतरे और उस पर हौज़ बना कर पानी से भर लिया और दूसरे कूओं को बन्द कर दिया फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ऊंची जगह पर एक अ़रीश (खजूर की शाख़ों का साएबान) बनाया गया, और ह़ज़रत ब ज़ाते ख़ुद मा'रिका की जगह पर तशरीफ़ ले गए और दस्ते मुबारक के इशारे से फ़रमाते थे कि येह फ़ुलां काफ़िर के मारे जाने की जगह है और येह फ़ुलां काफ़िर के क़त्ल होने की जगह है। जैसा कि हुज़ूर ने फ़रमाया था लड़ाई में वैसा ही वुक़ूअ़ में आया उन में से किसी ने भी इशारे की जगह से सरे मू[1] तजावुज़ न किया। येह सब कुछ जुमुआ़ की रात ब तारीख़ 17 माहे रमज़ानुल मुबारक वाक़ेअ़ हुवा। कुफ़्फ़ार कीचड़ के सबब से अपनी जगह से आगे न बढ़ सके। ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़रीश में दाख़िल हुवे यारे ग़ार यहां भी अ़रीश के अन्दर अपने आक़ाए नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त के लिये शमशीरे बरह्ना[2] अ़लम किये हुवे[3] था और दरवाज़े पर ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तल्वार आड़े लटकाए पहरा दे रहे थे।[4]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम रात बेदार और मसरूफ़े दुआ़ रहे। सुब्ह़ हुई तो लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दी और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर जिहाद पर वा'ज़ फ़रमाया।[5] फिर आप सफ़ आराई में मश्ग़ूल हुवे। आप के दस्ते मुबारक में एक तीर की लकड़ी थी जिस से किसी को आप इशारा फ़रमाते कि आगे हो जाओ और किसी से इरशाद फ़रमाते थे कि पीछे हो जाओ। चुनान्चे, ह़ज़रते सव्वाद[6] बिन ग़ज़िय्या अन्सारी जो सफ़ से आगे निकले हुवे थे हुज़ूरे

---

1 ......बाल बराबर।
2 ......सवाइक़े मह़रिक़ा लि-इब्ने ह़जर अल मक्की ब ह़वाला मुस्नदे बज़्ज़ार स. 17।
3 ......नंगी तल्वार बुलन्द किये हुवे।
4 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدر الكبرى،ص٢٥٦ـ٢٥٩ و سبل الهدى والرشاد، غزوة بدرالكبرى، ذكر وصول ابى سفيان،ج٤،ص٢٩-٣١ و الدر المنثور للسيوطى، سورة الانفال، تحت الآية: ٧،٨،ج٤،ص٢٧ـ علميه
5 ......मुन्तख़ब कन्ज़ुल उ़म्माल ब रिवायते इब्ने अ़साकिर।
6 ......सीरते इब्ने हिशाम, ग़ज़्वए बद्र ब रिवायते इब्ने इस्ह़ाक़।

www.dawateislami.net

अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस लकड़ी से उन के पेट को ठोका दिया[1] और फ़रमाया : اِسْتَوِ يَا سَوَاد (ऐ सव्वाद बराबर हो जाओ) ह़ज़रते सव्वाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने मुझे ज़र्बे शदीद लगाई है ह़ालांकि आप को अल्लाह तआ़ला ने ह़क़ व इन्साफ़ के साथ भेजा है आप मुझे क़िसास दें। येह सुन कर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना शिकम मुबारक नंगा कर दिया और फ़रमाया : अपना क़िसास ले लो, इस पर ह़ज़रते सव्वाद हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गले लिपट गए और आप के शिकमे मुबारक को बोसा दिया। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : ऐ सव्वाद ! तू ने ऐसा क्यूं किया ? ह़ज़रते सव्वाद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मौत ह़ाज़िर है मैं ने चाहा कि आख़िर उ़म्र में मेरा बदन आप के बदने अत़हर से मस कर जाए, येह सुन कर आप ने उस के लिये दुआ़ए ख़ैर फ़रमाई और उस ने मुआ़फ़ कर दिया। इसी अस्ना में मुशरिकीन भी नुमूदार हुवे। हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की ता'दाद कसीर देख कर यूं दुआ़ फ़रमाई : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ येह क़ुरैश फ़ख़्र व तकब्बुर करते आ पहुंचे हैं और चाहते हैं कि तेरे साथ जंग करें और तेरे रसूल को झुटलाएं, ऐ ख़ुदा ! عَزَّوَجَلَّ मैं उस नुसरत का मुन्तज़िर हूं जिस का तू ने मुझ से वा'दा किया हुवा है।"[2]

जब हर दो फ़रीक़ सफ़ आराई कर चुके तो क़ुरैश ने उ़मैर बिन वहब जुमह़ी को लश्करे इस्लाम की ता'दाद मा'लूम करने भेजा। वोह लश्करे इस्लाम में आया और देख भाल के बा'द वापस जा कर कहने लगा : "मुसलमान[3] कमो बेश तीन सो हैं और उन के साथ सत्तर ऊंट और दो घोड़े हैं। ऐ गुरौहे क़ुरैश ! मैं ने देखा कि उन के ऊंटों के पालान[4] मौतों को उठाए हुवे हैं। यसरब के आब कश ऊंट[5] ज़हरे क़ातिल से लदे हुवे हैं। उन को अपनी तल्वारों के सिवा और कोई पनाह नहीं वोह गूंगे हैं कलाम नहीं कर सकते और सांपों की त़रह़ ज़बानें मुंह से निकालते हैं। अल्लाह की क़सम ! मेरी राए में उन में से एक शख़्स भी क़त्ल नहीं हो सकता ता वक़्त येह कि तुम में से एक को क़त्ल न कर ले। पस जब वोह तुम में से अपनी ता'दाद के बराबर क़त्ल कर देंगे तो इस के बा'द तुम्हारा जीना कैसा होगा। इस लिये तुम आपस में मश्वरा कर लो।"[6] जब ह़कीम बिन ह़िज़ाम ने येह सुना तो उ़तबा बिन रबीआ़ के पास गया और उस से कहा : ऐ अबल

1......अन्दर की त़रफ़ दबाया।

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدر الكبرى،ص٢٥٧-٢٥٩ ملتقطاً۔ علميه

3......त़बक़ाते इब्ने सा'द, ग़ज़्वए बद्र।

4......वोह गदाया कपड़ा जो ऊंट वग़ैरा की पीठ के बचाव के लिये उस की पुश्त पर डालते हैं।

5......आब पाशी के लिये पानी ले जाने वाले ऊंट।

6 ......الطبقات الكبرى لابن سعد،غزوة بدر،ج٢،ص١١۔ علميه

www.dawateislami.net

वलीद ! तू कु़रैश का सरदार है। क्यां तू चाहता है कि आखि़र ज़माने तक दुन्या में तेरा ज़िक्रे खै़र रहे ? वोह बोला : फिर मैं क्या करूं ? ह़कीम ने कहा : लोगों को वापस ले जा और अपने ह़लीफ़ अ़म्र बिन ह़ज़रमी का ख़ून-बहा अदा कर दे। उ़तबा ने कहा : बेशक वोह मेरा ह़लीफ़ था। उस का ख़ून-बहा और उस का नुक़्साने माल जो हुवा वोह सब मेरे ज़िम्मे है। तू इब्नुल ह़न्ज़लिय्या (अबू जह्ल) के पास जा क्यूंकि वोही है जिस की त़रफ़ से मुझे अन्देशा है कि लोगों में लड़ाई करा दे। फिर उ़तबा ने खड़े हो कर यूं तक़रीर की : "ऐ गुरौहे कु़रैश ! तुम्हें मुह़म्मद और उस के अस्ह़ाब के साथ लड़ने से कुछ फ़ाइदा नहीं। खु़दा की क़सम ! अगर तुम मुह़म्मद को क़त्ल करोगे तो तुम में से हर एक को उन में अपने चचेरे भाई के क़ातिल या मामूज़ाद भाई के क़ातिल या अपने ख़ानदान के किसी शख़्स के क़ातिल का मुंह हर वक़्त देखना पड़ेगा इस लिये लौट चलो और मुह़म्मद और बाक़ी अ़रब को खुद आपस में समझ लेने दो।" ह़कीमे मज़्कूर का बयान है कि मैं अबू जह्ल के पास गया। क्या देखता हूं कि अबू जह्ल ने ज़िर्हदान में से अपनी ज़िर्ह निकाली हुई है। उसे ज़ैतून के तेल की चेटक मल रहा है। मैं ने कहा : ऐ अबल ह़कम ! उ़तबा ने मुझे ऐसा ऐसा कह कर तेरे पास भेजा है। अबू जह्ल ने कहा : "खु़दा की क़सम ![1] मुह़म्मद और उस के अस्ह़ाब को देख कर उस का सीना फूल गया है। (या'नी बुज़दिल हो गया है) खु़दा की क़सम ! हम हरगिज़ वापस न होंगे यहां तक कि अल्लाह हमारे और मुह़म्मद के दरमियान फै़सला कर दे। उ़तबा बुज़दिल तो नहीं है मगर उस ने देखा कि मुह़म्मद और उस के अस्ह़ाब चन्द ऊंटों का गोश्त खाने वाले हैं और उन में उन का बेटा अबू हुज़ैफ़ा है। इस के बारे में वोह तुम से डर गया है।" फिर अबू जह्ल ने आ़मिर बिन ह़ज़रमी को कहला भेजा कि तेरा ह़लीफ़ उ़तबा चाहता है कि लोगों को हटा ले जावे और तू क़िसास चाहता है। इस लिये उठ और अपने भाई का क़िसास और अ़हदो पैमान याद दिला। इस पर आ़मिरे मज़्कूर उठा और अपने चूतड़[2] नंगे कर के चिल्लाया وَاعَمْرَاهْ! وَاعَمْرَاهْ! येह देख कर लोगों की राए बदल गई। जब उ़तबा को मा'लूम हुवा कि अबू जह्ल ने उस की निस्बत येह अल्फ़ाज़ (अल्लाह की क़सम इस का सीना फूल गया है) कहे हैं तो बोला : "वोह ह़ल्क़ए दुबुर[3] ज़र्द किये हुवे जल्दी जान लेगा कि किस का सीना फूल गया है मेरा या उस का।" येह कह कर उ़तबा ने अपने सर के लिये ख़ौद[4] त़लब की मगर उस की खोपड़ी इतनी

---

1 ......त़बक़ाते इब्ने सा'द, ग़ज़्वए बद्र।

2 ......सुरीन

3 ......अबू जह्ल लईन के ह़ल्क़ए दुबुर पर एक बर्स का दाग़ था जिसे वोह ज़ा'फ़रान लगा कर ज़र्द रखा करता था। सीरते इब्ने हिशाम। 12 मिन्ह

4 ......लोहे की जंगी टोपी।

www.dawateislami.net

बड़ी थी कि तमाम लश्कर में ऐसी ख़ौद न मिली जो उस के सर पर ठीक आ जाए। इस लिये उस ने चादर से अपना सर ढांप लिया।(1) इस त़रह़ कुरैश आमादए जंग हो गए। उ़तबा ने उ़मैर बिन वहब से कहा कि जंग और इस लिये वोह सो सुवार ले कर ह़म्ला आवर हुवा। मुसलमान अपनी सफ़ पर क़ाइम रहे। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि मेरी इजाज़त के बिग़ैर लड़ाई न करना। उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नींद(2) त़ारी हो गई। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुरैश हम पर आ पड़े हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हो गए। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इस ख़्वाब में कुरैश थोड़े दिखाए।(3) अगर बहुत दिखाता तो मुसलमान ता'दादे कसीर का नाम सुन कर डर जाते। **अल्लाह** तआ़ला के इस इन्आ़म को देखिये कि मैदाने जंग में इल्तिह़ामे ह़र्ब से पहले(4) मुसलमानों को कुफ़्फ़ार थोड़े(5) दिखाए ताकि वोह जंग पर इक़्दाम करें और कुफ़्फ़ार को मुसलमान थोड़े दिखाए जिस से उन्हों ने लड़ने में बहुत कोशिश न की।(6)

मुसलमानों में से जो सब से पहले लड़ाई के लिये निकला वोह ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम मिह्जअ़ नाम था। जिसे आ़मिर बिन ह़ज़रमी ने तीर से

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدر الكبرى، ص٢٥٧۔ علميه

2 ......درمنثور للسیوطی بحوالہ دلائل بیہقی، جزء ثالث، صفحہ١٦٧۔

3 ......कुरआने मजीद में है :

اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۴۳﴾ (انفال، ع٥)

जब **अल्लाह** तआ़ला ने उन को दिखाया तेरे ख़्वाब में थोड़े अगर वोह तुझ को बहुत दिखाता तो तुम लोग नामर्दी करते और झगड़ा डालते काम में लेकिन **अल्लाह** ने बचा लिया उस को मा'लूम है जो बात है दिलों में। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब कि ऐ मह़बूब **अल्लाह** तुम्हें काफ़िरों को तुम्हारी ख़्वाब में थोड़ा दिखाता था और ऐ मुसलमानो अगर वोह तुम्हें बहुत कर के दिखाता तो ज़रूर तुम बुज़दिली करते और मुआ़मले में झगड़ा डालते मगर **अल्लाह** ने बचा लिया बेशक वोह दिलों की बात जानता है। (پ١٠، الانفال:٤٣) **इल्मिय्या**)

4 ......दोनों फ़ौजों के गुथ्थम गुथ्था होने से पहले।

5 ......कुरआने मजीद में है :

وَ اِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْۤ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّ يُقَلِّلُكُمْ فِيْۤ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۴۴﴾ "(انفال، ع٥)

और जब तुम को दिखाई दी वोह फ़ौज वक़्ते मुलाक़ात के तुम्हारी आंखों में थोड़ी और तुम को थोड़ा दिखाया उन की आंखों में ताकि कर डाले **अल्लाह** एक काम जो हो चुका था और **अल्लाह** तक पहुंच है हर काम की। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब लड़ते वक़्त तुम्हें काफ़िर थोड़े कर के दिखाए और तुम्हें उन की निगाहों में थोड़ा किया कि **अल्लाह** पूरा करे जो काम होना है और **अल्लाह** की त़रफ़ सब कामों की रुजूअ़ है। (پ١٠، الانفال:٤٤) **इल्मिय्या**)

6 ......الدر المنثور للسيوطى، سورة الانفال، تحت الآية:٤٣، ج٤، ص٧٨-٢٤۔ علميه

www.dawateislami.net

शहीद किया वोह मुसलमानों में पहला क़तील[1] था फिर अन्सार में से ह़ज़रते ह़ारिसा बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शहीद हुवे बा'दे अज़ां आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को तरग़ीब दी और फ़रमाया :[2] बिहिश्त की त़रफ़ उठो जिस का अ़र्ज़ आस्मान व ज़मीन है येह सुन कर ह़ज़रते उ़मैर बिन हुमाम अन्सारी बोले : "या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिहिश्त जिस का अ़र्ज़ आस्मान व ज़मीन है ?" आप ने फ़रमाया : हां ! तब ह़ज़रते उ़मैर ने कहा : वाह वा ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तू ने वाह वा क्यूं कहा ? ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़क़त़ इस तवक़्क़ोअ़ पर कि मैं अहले बिहिश्त से हो जाऊं ।" आप ने फ़रमाया : "तब तो बेशक अहले बिहिश्त में से है ।" इस पर ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी तरकश से छूहारे निकाल कर खाने शुरूअ़ किये फिर कहने लगे : "अगर मैं ज़िन्दा रहूं यहां तक कि येह छूहारे खा लूं तो अलबत्ता येह लम्बी ज़िन्दगी है ।" येह कह कर ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने छूहारे जो पास थे फेंक दिये फिर जिहाद किया यहां तक कि शहीद हो गए ।[3] दूसरी जानिब सफ़े आ'दा में से अस्वद बिन अ़ब्दुल असद मख़्ज़ूमी जो बद ख़ुल्क़ था, आगे बढ़ा और कहने लगा : "मैं **अल्लाह** से अ़हद करता हूं कि मुसलमानों के ह़ौज़ से पानी पियूंगा या इसे वीरान कर दूंगा या इस से वरे[4] मर जाऊंगा ।" इधर से ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه निकले । अस्वद ह़ौज़ तक पहुंचने न पाया कि ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस का पाउं निस्फ़ साक़ तक काट दिया और वोह पीठ के बल गिर पड़ा फिर वोह ह़ौज़ के क़रीब पहुंचा यहां तक कि उस में गिर पड़ा ताकि उस की क़सम पूरी हो जाए । ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस का तआ़क़ुब किया और ह़ौज़ ही में उस का काम तमाम कर दिया ।[5] बा'दे अज़ां शैबा बिन रबीआ़ और उ़तबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन रबीआ़ निकले । मुशरिकीन ने चिल्ला कर कहा : "ऐ मुह़म्मद ! हमारी त़रफ़ अपनी क़ौम में से हमारे जोड़ के आदमी भेजिये ।" येह सुन

---

1 ......मक़्तूल, शहीद ।

2 ......صحیح مسلم، کتاب الجہاد، باب سقوط فرض الجہاد عن المعذورین۔

3 ......صحيح مسلم، كتاب الامارة، باب ثبوت الجنة للشهيد، الحديث: ١٩٠١، ص١٠٥٣ وسبل الهدى والرشاد، غزوة بدر الكبرى، ج٤، ص٣٤، ٣٥۔ علميه

4 ......उस के पास ।

5 ......دلائل النبوة للبيهقي، باب سياق قصة بدر عن مغازى...الخ، ج٣، ص١١٣۔ السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدر الكبرى، ص٢٥٨۔ علميه

www.dawateislami.net

कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ बनी हाशिम ! उठो और उस ह़क़ की ह़िमायत में लड़ो जिस के साथ **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे नबी को भेजा है क्यूंकि वोह बात़िल लाए हैं ताकि **अल्लाह** के नूर को बुझा दें।" पस ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (जिन के सीनए मुबारक पर बत़ौर निशान शुतर मुर्ग़ का पर था) और अ़ली बिन अबी त़ालिब और उ़बैदा बिन मुत्त़लिब बिन अ़ब्दे मनाफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दुश्मन की त़रफ़ बढ़े और उन के सरों पर ख़ौद थे। उ़तबा ने कहा : "तुम बोलो ताकि हम पहचान लें।" ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : "मैं ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब शेरे ख़ुदा और शेरे रसूल हूं।" उ़तबा बोला : "येह अच्छा जोड़ है, मैं ह़लीफ़ों का शेर हूं।" फिर उस ने अपने बेटे से कहा : वलीद उठ। पस ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم वलीद[1] की त़रफ़ बढ़े और एक ने दूसरे पर वार किया मगर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस को क़त्ल कर दिया, फिर उ़तबा उठा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उस की त़रफ़ बढ़े और उसे क़त्ल कर दिया फिर शैबा उठा ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो अस्ह़ाब में से उ़म्र में सब से बड़े थे उस की त़रफ़ बढ़े शैबा ने तल्वार की धार ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पाउं पर मारी जो पिन्डली के गोश्त पर लगी और उसे काट दिया फिर ह़ज़रते ह़म्ज़ा और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا शैबा पर ह़म्ला आवर हुवे और उसे क़त्ल कर दिया और ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को उठा कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए। ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह क्या मैं शहीद नहीं ?" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां।" फिर ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : "अगर अबू त़ालिब इस ह़ालत[2] में मुझे देखता तो मान जाता कि मैं उस की निस्बत इस के शे'रे ज़ैल का ज़ियादा मुस्तह़िक़ हूं।"

و نسلمه حتى نصرع حوله　　　ونذهل عن ابنائنا و الحلائل[3]

हम मुह़म्मद को ह़वाले न करेंगे यहां तक कि उन के गिर्द लड़ कर मर जाएं और अपने बेटों और बीवियों को भूल जाएं।

1....इब्ने सा'द ने इस क़ौल को सब्त कहा है मगर सुनने अबी दावूद में ब रिवायते ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वारिद है कि ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और वलीद में मुक़ाबला हुवा और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का मुक़ाबला शैबा से हुवा। 12 मिन्ह

2....इन छे (ह़ज़रते ह़म्ज़ा, ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते उ़बैदा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم, उ़तबा, शैबा, वलीद बिन उ़तबा) के बारे में सूरए ह़ज की येह आयत नाज़िल हुई : هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِیْ رَبِّهِمْ ۔(صحیح بخاری، تفسیر سورۂ حج) 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह दो फ़रीक़ हैं कि अपने रब में झगड़े। (پ۱۷، الحج:۱۹) **इल्मिय्या**)

3......الطبقات الكبرى لابن سعد، غزوة بدر، ج۲، ص۱۲ و شرح الزرقانی على المواهب اللدنية، باب غزوة بدر الكبرى، ج۲، ص۲۷٦ علميه۔

www.dawateislami.net

येह सब हर दो फ़ौज के इजतिमाई ह़म्ले से पहले वुक़ूअ़ में आया। फिर दोनों फ़ौजें मुक़ाबले के लिये नज़्दीक हुईं। आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को ताकीद फ़रमाई कि मेरे हुक्म के बिग़ैर ह़म्ला न करो अगर तुम्हें दुश्मन आ घेरे तो नेज़ों से उसे दूर रखो। अहले इस्लाम ने जब जंग से चारह न देखा तो अपनी ता'दाद की कमी और दुश्मन की कसरत देख कर ख़ुदा से दुआ़ करने लगे। ह़ज़रत भी सफ़ें दुरुस्त करने के बा'द अ़रीश में तशरीफ़ ले आए। अ़रीश में ब जुज़ यारे ग़ार आप के साथ कोई न था। उस वक़्त हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़िब्ला रू हो कर यूं दस्त ब दुआ़ हुवे : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ[1] तू ने मुझ से जो वा'दा किया है उसे पूरा कर। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने जो कुछ मुझ से वा'दा किया है वोह अ़त़ा कर। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तू मुसलमानों का येह गुरौह हलाक कर देगा तो रूए ज़मीन पर तेरी इ़बादत न की जाएगी।" हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ में इतनी इल्ह़ाह़[2] किया कि चादर शानए मुबारक से गिर पड़ी। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चादर उठा कर शानए मुबारक पर डाल दी, फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक पकड़ लिया और अ़र्ज़ की : "या नबिय्यल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से इतनी ही दरख़्वास्त काफ़ी है।[3] जो उस ने आप से वा'दा किया है वोह जल्दी पूरा कर देगा।" अ़रीश ही में आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई। जब बेदार हुवे तो फ़रमाया : "अबू बक्र ! बिशारत हो। **अल्लाह** की नुस्रत आ पहुंची। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام घोड़े पर सुवार बाग[4] पकड़े आ रहे हैं और उन के दन्दाने पेशीन पर[5] गुबार है।" इस इन्आ़म को **अल्लाह** तआ़ला यूं बयान फ़रमाता है :

---

1 ......اَللّٰھُمَّ اَنۡجِزۡ لِیۡ مَا وَعَدۡتَنِی،اَللّٰھُمَّ اٰتِ مَا وَعَدۡتَنِی،اَللّٰھُمَّ اِنۡ تُھۡلِکۡ ھٰذِہِ الۡعِصَابَۃَ مِنۡ اَھۡلِ الۡاِسۡلَامِ لَا تُعۡبَدُ فِی الۡاَرۡضِ.
(صحیح مسلم، باب الامداد بالملائکۃ فی غزوۃ بدر واباحۃ الغنائم)۱۲منہ

2 ......गिर्या व ज़ारी।

3 ......इमाम ख़त्ताबी फ़रमाते हैं कि इस से येह न समझना चाहिये कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत इस ह़ालत में वा'दए इलाही पर ज़ियादा ए'तिमाद था क्यूंकि येह क़त्अ़न नाजाइज़ है बल्कि हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब पर शफ़्क़त और उन के दिलों की तक़्विय्यत के लिये ऐसा किया। इस लिये कि येह दुश्मन के साथ पहला मुक़ाबला था। लिहाज़ा दुआ़ में इल्ह़ाह़ फ़रमाया कि उन के दिल को तस्कीन ह़ासिल हो, क्यूंकि उन को मा'लूम था कि हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला मक़्बूल और उन की दुआ़ मुस्तजाब है। पस ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुव्वत व त़मानिय्यते क़ल्बी से मा'लूम हो गया कि हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ क़बूल हो गई तो उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि बस येह काफ़ी है। ऐ़नी शर्हे बुख़ारी। 12 मिन्ह

4 ......लगाम।   5 ......सामने वाले दांतों पर।

www.dawateislami.net

اِذۡ تَسۡتَغِیۡثُوۡنَ رَبَّکُمۡ فَاسۡتَجَابَ لَکُمۡ اَنِّیۡ مُمِدُّکُمۡ بِاَلۡفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ مُرۡدِفِیۡنَ ﴿۹﴾ (انفال، ع ۱)

जब तुम लगे फ़रयाद करने अपने रब से तो पहुंचा तुम्हारी पुकार को कि मैं तुम्हारी मदद भेजूंगा हज़ार फ़िरिश्ते लगातार आने वाले।(1)

पहले हज़ार फ़िरिश्ते आए। फिर तीन(2) हज़ार हो गए। बा'दे अज़ां ब सूरते सब्र व तक़्वा पांच हज़ार हो गए। शैतान ने जो ब सूरते सुराक़ा कुफ़्फ़ार के साथ था जब येह आस्मानी मदद देखी तो अपनी जान के डर से भाग गया।(3) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक कंकरियों की मुठ्ठी ले कर कुफ़्फ़ार की त़रफ़ फेंक दी।(4) कोई मुशरिक ऐसा न था जिस की आंख में कंकरियां न हों अब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़म्लए इजतिमाई का हुक्म दिया। घुमसान के मा'रिके(5) के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्फ़ार को मुसलमान

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब तुम अपने रब से फ़रयाद करते थे तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार फ़िरिश्तों की क़िता़र से। (پ۹،الانفال:۹) **इल्मिय्या**)

2 ......क़ुरआने करीम में है :

اِذۡ تَقُوۡلُ لِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَلَنۡ یَّکۡفِیَکُمۡ اَنۡ یُّمِدَّکُمۡ رَبُّکُمۡ بِثَلٰثَۃِ اٰلٰفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ مُنۡزَلِیۡنَ ﴿۱۲۴﴾ بَلٰۤی ۙ اِنۡ

تَصۡبِرُوۡا وَ تَتَّقُوۡا وَ یَاۡتُوۡکُمۡ مِّنۡ فَوۡرِہِمۡ ہٰذَا یُمۡدِدۡکُمۡ رَبُّکُمۡ بِخَمۡسَۃِ اٰلٰفٍ مِّنَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ مُسَوِّمِیۡنَ ﴿۱۲۵﴾ (آل عمران، ع۱۳)

जब तू कहने लगा मुसलमानों को। क्या तुम को किफ़ायत नहीं कि तुम्हारी मदद भेजे रब तुम्हारा तीन हज़ार फ़िरिश्ते आस्मान से उतरे अलबत्ता अगर तुम ठहरे रहो और परहेज़गारी करो तुम और वोह आएं तुम पर उसी दम तो मदद भेजे रब तुम्हारा पांच हज़ार फ़िरिश्ते पले हुवे घोड़ों पर। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब ऐ मह़बूब ! तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर हां क्यूं नहीं अगर तुम सब्र व तक़्वा करो और काफ़िर उसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा। (پ٤،آل عمران:١٢٤،١٢٥) **इल्मिय्या**)

3 ......चुनान्चे, क़ुरआने मजीद में है : فَلَمَّا تَرَآءَتِ الۡفِئَتٰنِ نَکَصَ عَلٰی عَقِبَیۡہِ وَ قَالَ اِنِّیۡ بَرِیۡٓءٌ مِّنۡکُمۡ اِنِّیۡۤ اَرٰی مَا لَا تَرَوۡنَ اِنِّیۡۤ اَخَافُ اللّٰہَ ؕ وَ اللّٰہُ شَدِیۡدُ الۡعِقَابِ ﴿۴۸﴾ (انفال، ع۲) पस जब सामने हुई दो फ़ौजें उल्टा फिरा अपनी ऐड़ियों पर और बोला मैं तुम्हारे साथ नहीं मैं देखता हूं जो तुम नहीं देखते मैं डरता हूं **अल्लाह** से और **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है। 12 मिन्ह

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जब दोनों लश्कर आमने सामने हुवे उल्टे पाउं भागा और बोला मैं तुम से अलग हूं मैं वोह देखता हूं जो तुम्हें नज़र नहीं आता मैं **अल्लाह** से डरता हूं और **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है। (پ١٠،الانفال:٤٨)

صحیح مسلم، کتاب الجهاد، باب الامداد بالملائکة...الخ، الحدیث:١٧٦٣، ص٩٦٩ و المواهب اللدنیة وشرح الزرقانی، باب غزوة بدرالکبری، ج٢، ص٢٧٧۔٢٨٦ ملتقطاً و السیرة النبویة لابن هشام، غزوة بدر الکبری، ص٢٥٨-٢٥٩ ملتقطاً۔ علمیه

4 ......इसी की निस्बत क़ुरआने मजीद में वारिद है : وَمَا رَمَیۡتَ اِذۡ رَمَیۡتَ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ رَمٰی ۚ (انفال) और तू ने नहीं फेंकी थी मुठ्ठी ख़ाक जिस वक़्त फेंकी थी लेकिन **अल्लाह** ने फेंकी। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब ! वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फेंकी। (پ٩،الانفال:١٧) **इल्मिय्या**)

5 ......जंग की शिद्दत।

www.dawateislami.net

अपने से दो चन्द[1] दिखाए जिस से उन पर रो'ब त़ारी हो गया। क़त्ल का बाज़ार गर्म हुवा। फ़िरिश्ते नज़र न आते थे मगर उन के अफ़्आ़ल नुमायां थे। कहीं किसी मुशरिक के मुंह और नाक पर कोड़े की ज़र्ब का निशान पाया जाता कहीं बे तल्वार सर कटता नज़र आता कहीं आवाज़ आती : [2] اُقْدُمْ حَیْزُوْم आख़िर कुफ़्फ़ार को शिकस्त हुई और वोह भाग निकले। ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रीश से नंगी तल्वार अ़लम[3] किये येह पुकारते हुवे निकले :[4] (قمر،ع٣) سَیُهْزَمُ الْجَمْعُ وَیُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ[5]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लड़ाई शुरूअ़ होने से पहले इरशाद फ़रमाया[6] था कि "मुझे मा'लूम है कि बनू हाशिम वग़ैरा में से चन्द लोग ब जब्रो इकराह[7] कुफ़्फ़ार के साथ शामिल हो कर आए हैं जो हम से लड़ना नहीं चाहते। अगर उन में से कोई तुम्हारे मुक़ाबिल आ जाए तो तुम उसे क़त्ल न करो।" हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन लोगों के नाम भी बता दिये थे। अज़ आं जुम्ला[8] अबुल बख़्तरी आ़स बिन हिशाम था जो मक्का में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी क़िस्म की अज़िय्यत न दिया करता था। अबुल बख़्तरी के साथ जुनादा बिन मुलैह़ा भी उस का रदीफ़[9] था। मुजज़्ज़र बिन ज़ियाद की नज़र जो अबुल बख़्तरी पर पड़ी तो कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें तेरे क़त्ल से मन्अ़ फ़रमाया है इस लिये तुझे छोड़ता हूं।" अबुल बख़्तरी ने कहा : मेरे रफ़ीक़ को भी। मुजज़्ज़र ने कहा : "**अल्लाह** की क़सम ! हम तेरे रफ़ीक़ को नहीं छोड़ने के, हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

1......चुनान्चे, कुरआने करीम में है قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰیَةٌ فِیْ فِئَتَیْنِ الْتَقَتَاؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ اُخْرٰى كَافِرَةٌ یَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَیْهِمْ رَاْیَ الْعَیْنِؕ وَ اللّٰهُ یُؤَیِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ یَّشَآءُؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِی الْاَبْصَارِ (آل عمران،ع٢) अभी हो चुका है तुम को एक नुमूना दो फ़ौजों में जो भिड़ी थीं एक फ़ौज है लड़ती है **अल्लाह** की राह में और दूसरी मुन्किर है देखते थे वोह काफ़िर मुसलमानों को अपने दो बराबर सरीह़ आंखों से और **अल्लाह** ज़ोर देता है अपनी मदद का जिस को चाहे। इस में इब्रत है आंख वालों के लिये। 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारे लिये निशानी थी दो गुरौहों में जो आपस में भिड़ पड़े एक जथ्था **अल्लाह** की राह में लड़ता दूसरा काफ़िर कि उन्हें आंखों देखा अपने दूना समझें और **अल्लाह** अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है बेशक इस में अ़क़्लमन्दों के लिये ज़रूर देख कर सीखना है। (پ٣،ال عمران:١٣) दो चन्द या'नी दुगने। **इल्मिय्या**)

2......हैज़ूम ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े का नाम है। या'नी ऐ हैज़ूम आगे बढ़ो। 12 मिन्ह

3......बुलन्द।

4......**तर्जमा :** शताब शिकस्त खावेगी जमाअ़त और भागेंगे पीठ दे कर इन्तिहा। इस आयत में नबुव्वत का एक निशान है क्यूंकि मक्कए मुशर्रफ़ा में नाज़िल हुई जिस में पहले येह बताया गया था कि कुफ़्फ़ार को हज़ीमत होगी। 12 मिन्ह

5......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अब भगाई जाती है येह जमाअ़त और पीठें फेर देंगे। (پ٢٧،القمر:٤٥) **इल्मिय्या**

6......सीरते इब्ने हिशाम, ग़ज़्वए बद्र।

7......अपनी मरज़ी के ख़िलाफ़, मजबूरन।

8......उन में से।

9......सुवार के पीछे बैठने वाला।

www.dawateislami.net

फ़क़त् तेरे छोड़ने का हुक्म दिया है।" अबुल बख़्तरी ने कहा : "तब **अल्लाह** की क़सम ! मैं और वोह दोनों जान देंगे, मैं मक्का की औ़रतों का येह त़ा'ना नहीं सुन सकता कि अबुल बख़्तरी ने अपनी जान बचाने के लिये अपने रफ़ीक़ का साथ छोड़ दिया।" जब मुजज़्ज़र ने ह़म्ला किया तो अबुल बख़्तरी भी येह रज्ज़ पढ़ता हुवा ह़म्ला आवर हुवा और मारा गया।

لن يسلم ابن حرة زميله　　　حتى يموت او يرى سبيله[1]

शरीफ़ ज़ादा अपने रफ़ीक़ को नहीं छोड़ सकता जब तक मर न जाए या अपने रफ़ीक़ के बचाव की राह न देख ले।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बड़ा दुश्मन उमय्या बिन ख़लफ़ भी जंगे बद्र में शरीक था और उस के साथ उस का बेटा भी था। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले उसी उमय्या के गुलाम थे। उमय्या उन को अज़िय्यत दिया करता था ताकि इस्लाम छोड़ दें। मक्का की गर्म रेत पर पीठ के बल लिटा कर एक भारी पथ्थर उन के सीने पर रख दिया करता था फिर कहा करता था : तुम्हें येह ह़ालत पसन्द है या तर्के इस्लाम ? ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस ह़ालत में भी "اَحَد! اَحَد!" पुकारा करते थे। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी ज़माने में मक्का में उमय्या से मुआ़हदा किया था कि वोह मदीने में आएगा तो येह उस की जान के ज़ामिन होंगे। अ़हद की पाबन्दी को मल्ह़ूज़ रख कर ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चाहा कि वोह मैदाने जंग से बच कर निकल जाए। इस लिये उस को और उस के बेटे को ले कर एक पहाड़ पर चढ़े। इत्तिफ़ाक़ येह कि ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देख लिया और अन्सार को ख़बर कर दी। लोग दफ़्अ़तन टूट पड़े। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उमय्या के बेटे को आगे कर दिया लोगों ने उसे क़त्ल कर दिया लेकिन उस पर भी क़नाअ़त न की और उमय्या की त़रफ़ बढ़े। उमय्या चूंकि जसीम व सक़ील[2] था इस लिये ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा तुम ज़मीन पर लैट जाओ। वोह लैट गया तो आप उस पर छा गए ताकि लोग उस को मारने न पाएं मगर लोगों ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की टांगों के अन्दर से हाथ डाल कर उस को क़त्ल कर दिया। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान की भी एक टांग ज़ख़्मी हुई और ज़ख़्म का निशान मुद्दतों बाक़ी रहा।[3]

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة بدرالكبرى،ص٢٦٠ملتقطاً۔ علميه

2 ......भारी बदन वाला।

3 ......صحیح بخاری،کتاب الوکالۃ۔......(صحيح البخارى، كتاب الوكالة،باب اذا وكل المسلم حربياً...الخ،الحديث:٢٣٠١، ج٢،ص٧٨ و السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدر الكبرى، ص٢٦٠۔ علميه)

www.dawateislami.net

जब मैदाने कारज़ार सर्द हो गया तो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐसा कौन है जो अबू जहल की ख़बर लाए ? येह सुन कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गए और उसे इस ह़ाल में पाया कि अफ़रा के बेटों मुआ़ज़ और मुअ़व्वज़ ने उसे ज़र्बे शमशीर से गिराया हुवा था और उस में अभी रमक़े ह़यात बाक़ी था।(1) ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस लईन के सीने पर बैठ गए और उस की नापाक दाढ़ी को पकड़ कर कहा : क्या तू अबू जहल है ? बता आज तुझे अल्लाह ने रुस्वा किया ? उस लईन ने जवाब दिया : "रुस्वा क्या किया ! तुम्हारा मुझे क़त्ल करना इस से ज़ियादा(2) नहीं कि एक शख़्स को उस की क़ौम ने क़त्ल कर डाला। काश ! मुझे किसान के सिवा कोई और क़त्ल करता।" इस जवाब में उस लईन का तकब्बुर और अन्सार की तह़क़ीर पाई जाती है क्यूंकि ह़ज़रते मुआ़ज़ और मुअ़व्वज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अन्सार में से थे और अन्सार खेतीबाड़ी का काम किया करते थे। फिर ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस लईन का काम तमाम कर दिया और येह ख़बर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में लाए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर तीन बार اَللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ पढ़ा। चौथी बार यूं फ़रमाया : اللّٰہ اَکْبَرُ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ صَدَّقَ وَعْدَهٗ وَ نَصَرَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साथ ले कर उस लईन की लाश के पास तशरीफ़ ले गए और देख कर येह फ़रमाया : "येह इस उम्मत का फ़िरऔ़न है।"(3)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जंग से फ़ारिग़ हो कर ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी देने के लिये मदीने में भेजा और इसी ग़रज़ के लिये ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अहले आ़लिया (मदीने की बालाई आबादी) की त़रफ़ भेजा। जब ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीने में पहुंचे तो बक़ीअ़ में ह़ज़रते रुक़य्या बिन्ते रसूलिल्लाह को दफ़्न कर रहे थे।(4)

इस जंग में मुसलमानों में से सिर्फ़ चौदह शहीद हुवे जिन के अस्माए मुबारक येह हैं : ह़ज़रते उ़बैदा बिन ह़ारिस बिन मुत्त़लिब बिन अ़ब्दे मनाफ़, ह़ज़रते उ़मैर बिन अबी वक़्क़ास,

1 ......कुछ सांसें बाक़ी थीं।

2 ......उस लईन का मत़लब येह था कि तुम्हारा मुझे क़त्ल करना ऐसा है जैसा कि एक शख़्स को उस की क़ौम क़त्ल कर दे पस इस में न तुम्हें कोई फ़ख़्र है और न मुझे कोई आ़र है। 12 मिन्ह

3 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قتل ابی جهل، الحدیث:٣٩٦٣، ج٣، ص٨ وسبل الهدی والرشاد، غزوة بدر الکبری، ج٤، ص٥١ و دلائل النبوة للبیهقی، باب اجابة اللّٰه عزوجل دعوة رسول اللّٰه...الخ، ج٣، ص٨٨۔ علمیه

4 ......السیرة النبویة لابن هشام، غزوة بدرالکبری، ص٢٦٥۔ علمیه

www.dawateislami.net

हज़रते ज़ुश्शिमालैन उ़मैर बिन अ़ब्दे अ़म्र बिन नज़्ला, हज़रते आ़क़िल बिन अबी बकीर, हज़रते मिह्जअ़ मौला उ़मर बिन ख़त्ताब, हज़रते सफ़्वान बिन बैज़ा, (येह छे मुहाजिरीन में से हैं) हज़रते सा'द बिन ख़ैसमा, हज़रते मुबश्शिर बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर, हज़रते ह़ारिसा बिन सुराक़ा, हज़रते औ़फ़ व मुअ़व्वज़ पिसराने अ़फ़रा, हज़रते उ़मैर बिन हुमाम, हज़रते राफ़ेअ़ बिन मुअ़ल्ला, हज़रते यज़ीद बिन ह़ारिस बिन फ़ुस्हुम (येह आठ अन्सार में से हैं)(رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) मुशरिकीन में से सत्तर मक़्तूल और सत्तर गिरिफ़्तार हुवे।[1] मिन जुम्ला मक़्तूलीन येह हैं : शैबा बिन रबीआ़, उ़तबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़तबा, आ़स बिन सई़द बिन आ़स, अबू जहल बिन हिशाम, अबुल बख़्तरी, ह़न्ज़ला बिन अबी सुफ़्यान बिन ह़र्ब, ह़ारिस बिन आ़मीर बिन नौफ़ल बिन अ़ब्दे मनाफ़, तुई़मा बिन अ़दी, ज़मआ़ बिन अस्वद बिन मुत्तलिब, नौफ़ल बिन ख़ुवैलिद, आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरा जो हज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मामू था, उमय्या बिन ख़लफ़, अ़ली बिन उमय्या बिन ख़लफ़, मम्बा बिन हिजाज, मुई़द बिन वह्ब और मिन जुम्ला असीरान येह हैं : नौफ़ल बिन ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब, अ़क़ील बिन अबी तालिब, अबुल आ़स बिन रबीअ़, अ़दी बिन ख़य्यार, अबू अ़ज़ीज़ बिन उ़मैर, वलीद बिन वलीद बिन मुग़ीरा, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन ख़लफ़, अबू उ़ज़्ज़ा अ़म्र बिन अ़ब्दुल्लाह जमही शाइ़र, वहब बिन उ़मैर बिन वहब जमही, अबू वदाआ़ बिन ज़बीरा सहमी, सुहैल बिन अ़म्र आ़मिरी।

आं हज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से मुशरिकीने मक़्तूलीन में से चोबीस रुअसा[2] की लाशें एक गढ़े में डाल दी गईं जिस में मुर्दार फेंका करते थे। उमय्या बिन ख़लफ़ जो जिरह में फूल गया था उस पर जहां वोह पड़ा था वहीं मिट्टी डाल दी गई और बाक़ी लाशों को और जगह फेंक दिया गया।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दत शरीफ़ थी कि जब दुश्मन पर फ़त्ह पाते तो तीन दिन मैदाने जंग में क़ियाम फ़रमाते। चुनान्चे, बद्र में भी तीसरे रोज़ सुवार हो कर मक़्तूलीन के गढ़े पर तशरीफ़ ले गए और उन से यूं ख़िताब[3] फ़रमाया : "ऐ बेटे फ़ुलां के! ऐ फ़ुलां बेटे फ़ुलां के! क्या अब तुम्हें तमन्ना है कि **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल की इताअ़त करते,

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،من استشهد من المسلمين يوم بدر،ص٢٩٥-٣٠٠ و المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، باب غزوة بدر الكبرى،ج٢،ص٣٢٨۔ علميه

2 ......सरदारों।

3 ......صحیح بخاری،کتاب المغازی،باب قتل ابی جہل۔

www.dawateislami.net

जो कुछ हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने हम से वा'दा फ़रमाया था हम ने उसे सच पाया। क्या तुम ने भी उसे जो तुम्हारे परवर दगार ने तुम से वा'दा किया था सच पाया ?" येह देख कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप इन बे रूह़ जिस्मों से क्या ख़िताब फ़रमा रहे हैं ?" इस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़सम है ख़ुदा की जिस के हाथ में मुह़म्मद की जान है, तुम मेरी बात को इन से ज़ियादा नहीं सुनते।"(1) फिर जनाबे रिसालत मआब عَلَيْهِ اَلْوُفُ التَّحِيَّةِ وَ الصَّلٰوة मुज़फ़्फ़र व मन्सूर(2) असीराने जंग(3) और ग़नाइम(4) के साथ मदीना को वापस हुवे।

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक़ामे सफ़रा में पहुंचे जो बद्र से एक मन्ज़िल है तो आप ने तमाम ग़नीमत मुजाहिदीन में(5) बराबर बराबर तक़्सीम फ़रमा दी। इसी मक़ाम पर ह़ज़रते उ़बैदा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जिन का पाए मुबारक कट गया था वफ़ात पाई।(6) सफ़रा ही में नज़्र बिन ह़ारिस को क़त्ल कर दिया गया। यहां से रवाना हो कर जब इरक़ुज़्ज़बया में पहुंचे तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ क़त्ल कर दिया गया। मदीने में इस फ़त्ह़ की इतनी ख़ुशी थी कि लोगों ने मुबारक बाद कहने के लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मक़ामे रौह़ा में इस्तिक़्बाल किया। असीराने जंग जनाबे सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक दिन बा'द मदीने में पहुंचे। आप ने इन को सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم में तक़्सीम कर दिया था और ताकीद फ़रमा दी थी कि इन के साथ नेक सुलूक किया जाए चुनान्चे, अबू अ़ज़ीज़ बिन उ़मैर का बयान है कि जब मुझे बद्र से लाए तो मैं अन्सार की एक जमाअ़त में था वोह सुब्ह़ या शाम का खाना लाते तो रोटी मुझे देते और ख़ुद खजूरें खाते उन में से जिस के हाथ रोटी का टुकड़ा आता वोह मेरे आगे रख देता मुझे शर्म आती मैं उसे वापस करता मगर वोह मुझ ही को वापस देता और हाथ न लगाता।(7)

1....इस से समाए़ मौता साबित है अगर ज़ियादा तफ़्सील मत़लूब हो तो किताबुल बरज़ख़ मोअल्लिफ़ह़ू ख़ाकसार देखो। 12 मिन्ह

(صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب قتل ابی جھل،الحدیث:۳۹۷۶،ج۳،ص۱۱ و المواھب اللدنیة وشرح الزرقانی،باب غزوۃ بدرالکبری،ج۲،ص۳۰۳۔۳۰۵ملتقطاً۔ علمیه)

2......कामयाब व कामरान। 3......जंगी क़ैदी।

4......ग़नीमत की जम्अ़, अमवाले ग़नीमत।

5......ग़नीमत के बारे में मुजाहिदीन में झगड़ा हुवा। लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला ने قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ आयत नाज़िल फ़रमाई और तक़्सीम का मुआ़मला आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिपुर्द किया पस हुज़ूर بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّیْ ने बराबर तक़्सीम फ़रमाई। 12 मिन्ह

6......सीरते इब्ने हिशाम।

7......سیرت ابن ہشام،غزوۂ بدر۔......(السیرۃ النبویة لابن ھشام،غزوۃ بدرالکبری،ص۲۶۶۔۲۶۷ملتقطاًو ص۲۹۵۔علمیه)

www.dawateislami.net

जिन क़ैदियों के पास कपड़े न थे उन को कपड़े दिलवाए गए। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चूंकि दराज़ क़द थे किसी का कुर्ता उन के बदन पर ठीक न उतरता था, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय (रईसुल मुनाफ़िक़ीन) ने जो ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का हम क़द था अपना कुर्ता मंगवा कर दिया। सह़ीह़ बुख़ारी[1] में सुफ़्यान बिन उ़यैना का येह क़ौल मन्क़ूल है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाहे मज़्कूर को क़ब्र से निकलवा कर जो अपना कुर्ता पहनाया था वोह अक्सर के नज़्दीक इसी एह़सान का मुआ़वज़ा[2] था।[3]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ैदियों के बारे में अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया :[4] "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह आप की क़ौम और आप का क़बीला हैं, इन्हें क़त्ल न किया जाए बल्कि इन से फ़िदया लिया जाए, शायद **अल्लाह** तआ़ला इन को इस्लाम की तौफ़ीक़ दे।" ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी तो वोह राए नहीं जो अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की है बल्कि मेरी राए तो येह है कि आप इन को हमारे ह़वाले कर दें ताकि हम इन को क़त्ल कर डालें, मसलन अ़क़ील को ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़वाले कर दें और मेरे फ़ुलां रिश्तेदार को मेरे सिपुर्द कर दें।" ह़ुज़ूरे अन्वर بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّیْ ने ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की राए पर अ़मल फ़रमाया।[5]

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الجنائز، باب ھل یخرج المیت من القبر واللحد لعلة۔

2 ......बदला।

3 ......صحيح البخاری، كتاب الجنائز، باب هل يخرج الميت...الخ، الحديث: ١٣٥٠، ج١، ص٤٥٤ علميه۔

4 ......صحیح مسلم، باب الامداد بالملٰئکة فی غزوة بدر واباحة الغنائم۔

5 ......इस पर येह आयत नाज़िल हुई :

"مَا كَانَ لِنَبِیٍّ اَنْ یَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى حَتّٰى یُثْخِنَ فِی الْاَرْضِؕ-تُرِیْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْیَا ﳓ وَ اللّٰهُ یُرِیْدُ الْاٰخِرَةَؕ-وَ اللّٰهُ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ(۶۷)" (انفال، ع٩)

न था लाइक़ वासिते नबी के येह कि हुई वासिते इस के बन्दीवान यहां तक कि ख़ूं रेज़ी करे बीच ज़मीन के। इरादा करते हो अस्बाबे दुन्या का और **अल्लाह** इरादा करता है आख़िरत का और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है। (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** किसी नबी को लाइक़ नहीं कि काफ़िरों को ज़िन्दा क़ैद करे जब तक ज़मीन में उन का ख़ून ख़ूब न बहाए तुम लोग दुन्या का माल चाहते हो और **अल्लाह** आख़िरत चाहता है और **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है। (پ١٠، الانفال:٦٧)) (صحيح مسلم، كتاب الجهاد، باب الامداد بالملائكة...الخ، الحديث:١٧٦٣، ص٩٧٠ ملتقطاً۔ علميه)

www.dawateislami.net

क़ैदियों में से हर एक का फ़िदया ह़स्बे इस्तित़ाअ़त एक हज़ार दिरहम से चार हज़ार दिरहम तक था जिन के पास माल न था और वोह लिखना जानते थे उन में से हर एक का फ़िदया येह था कि अन्सार के दस[1] लड़कों को लिखना सिखा दे। चुनान्चे, ज़ैद बिन साबित ने इस त़रह़ लिखना सीखा था। बा'ज़ों मसलन "अबू अ़ज़्ज़ह जुमह़ी शाइ़र" को हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूंही छोड़ दिया।[2] इन क़ैदियों में से एक शख़्स सुहैल बिन अ़म्र था जो आ़म मजमओं में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ तक़रीरें किया करता था, ह़ज़रते उ़मर इब्नुल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं सुहैल के दन्दाने पेशीन[3] उखाड़ दूं और उस की ज़बान निकाल दूं फिर वोह किसी जगह आप के ख़िलाफ़ तक़रीर न कर सकेगा।" हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मैं उस का उ़ज़्व नहीं बिगाड़ता वरना ख़ुदा उस की जज़ा में मेरे आ'ज़ा बिगाड़ देगा, गो मैं नबी हूं।"[4]

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उन दस रुअसाए क़ुरैश में थे जिन्हों ने लश्करे क़ुरैश की रुस्द का सामान अपने ज़िम्मे लिया था इस ग़रज़ के लिये ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास बीस ऊक़िया[5] सोना था चूंकि इन की नोबत खाना खिलाने की न आई इस लिये वोह सोना इन्हीं के पास रहा और ग़नीमत में शामिल कर लिया गया। ह़ज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं मुसलमान हूं।" हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तेरे इस्लाम का ख़ूब इ़ल्म है अगर तू सच्चा है तो **अल्लाह** तुझे जज़ा देगा। तू अपने फ़िदये के साथ अ़क़ील बिन अबी त़ालिब और नौफ़ल बिन ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब और अपने ह़लीफ़ अ़म्र बिन जह़दम का फ़िदया भी अदा कर।" ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाब दिया कि मेरे पास कोई माल नहीं। इस पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह माल कहां है जो तू ने अपनी बीवी उम्मुल फ़ज़्ल के पास रखा था और उसे कहा था कि अगर मैं लड़ाई में मारा जाऊं तो इतना फ़ज़्ल को इतना अ़ब्दुल्लाह को इतना उ़बैदुल्लाह को मिले। येह

---

1 ......त़बक़ाते इब्ने सा'द, ग़ज़्वए बद्र।

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد،غزوۃ بدر،ج٢،ص١٣و١٦۔ علمیه

3 ......अगले दांत।

4 ......السیرۃ النبویة لابن ھشام،غزوۃ بدرالکبری،ص٢٦٩۔ علمیه)

5 ......एक ऊक़िया वज़्न में चालीस दिरहम के बराबर था और एक दिरहम का वज़्न तक़रीबन 3.0618 ग्राम बनता है लिहाज़ा बीस ऊक़िया तक़रीबन 2450 ग्राम हुवा। واللّٰهُ تعالٰی اَعلم بالصواب **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

सुन कर ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ[1] ने कहा : "क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने आप को ह़क़ दे कर भेजा है इस माल का इ़ल्म सिवाए मेरे और उम्मुल फ़ज़्ल के किसी को न था मैं ख़ूब जानता हूं कि आप अल्लाह के रसूल हैं।" ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तेरा येह बीस ऊक़िया सोना फ़िदये में शुमार न होगा येह तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें अ़त़ा किया है। पस ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना और अपने भाइयों के बेटों और अपने ह़लीफ़ का फ़िदया[2] अदा कर दिया।[3]

शिकस्ते क़ुरैश की ख़बर मक्का में सब से पहले हैसुमान बिन अयास ख़ुज़ाई लाया।[4] क़ुरैश अपने मक़्तूलीन पर नौह़ा करने लगे फिर बदीं ख़याल[5] कि मुसलमान हम पर हंसेंगे नौह़ा बन्द कर दिया। शिकस्त की ख़बर पहुंचने के नव रोज़ बा'द अबू लहब मर गया। अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस के दो बेटे ज़मआ़ और अ़क़ील और एक पोता ह़ारिस बिन ज़मआ़ मैदाने बद्र में काम आए। वोह चाहता था कि इन पर रोए मगर मुमानअ़त के सबब ख़ामोश था। एक रात उस ने किसी औ़रत के रोने की आवाज़ सुनी चूंकि उस की बीनाई जाती रही थी इस लिये उस ने अपने ग़ुलाम से कहा कि जाओ दरयाफ़्त करो क्या अब रोने की इजाज़त हो गई है। अगर ऐसा है तो मैं भी ज़मआ़ पर नौह़ा करूं क्यूंकि मेरा जिगर जल गया है। ग़ुलाम ने आ कर कहा एक औ़रत का ऊंट गुम हो गया है। उस के लिये रो रही है। येह सुन कर अस्वद की ज़बान से बे इख़्तियार येह शे'र[6] निकले।

اتبکی ان یضل لها بعیر و یمنعها من النوم السهود

فلا تبکی علٰی بِکرٍ و لٰکن علی بدر تقاصرت الجدود

1......कामिल इब्ने असीर, ग़ज़्वए बद्र।

2......इस पर येह आयत नाज़िल हुई :

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ قُلْ لِّمَنْ فِیْۤ اَیْدِیْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰۤىۙ اِنْ یَّعْلَمِ اللّٰهُ فِیْ قُلُوْبِكُمْ خَیْرًا یُّؤْتِكُمْ خَیْرًا مِّمَّاۤ اُخِذَ مِنْكُمْ وَ یَغْفِرْ لَكُمْؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۝ (انفال،ع۱۰)

"ऐ नबी ! कह दे उन को जो तुम्हारे हाथ में हैं क़ैदी अगर जानेगा अल्लाह तुम्हारे दिल में कुछ नेकी तो देगा तुम को बेहतर उस से जो तुम से छिन गया और तुम को बख़्शेगा और अल्लाह है बख़्शने वाला मेहरबान।

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में हैं उन से फ़रमाओ अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में भलाई जानी तो जो तुम से लिया गया उस से बेहतर तुम्हें अ़त़ा फ़रमाएगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ۱۰،الانفال:۷۰) **इ़ल्मिय्या**)

3......الطبقات الکبری لابن سعد،الطبقة الثانیة من المهاجرین...الخ،ج٤،ص٩۔١٠ والکامل فی التاریخ لابن اثیر،ذکر غزوۃبدرالکبری،ج٢،ص٢٩۔علمیه

4......कामिल इब्ने असीर, ग़ज़्वए बद्र। 5......इस ख़याल से। 6......सीरते इब्ने हिशाम, ग़ज़्वए बद्र।

www.dawateislami.net

و بکی ان بکیت علٰی عقیل و بکی حارثا اسد الا سود

و بکیهم و لا تسمی جمیعًا و ما لابی حکیمة من ندید(1)

क्या वोह ऊंट के गुम होने पर रोती है और बे ख़्वाबी उसे नींद नहीं आने देती सो वोह जो उन ऊंट पर न रोए बल्कि बद्र पर जहां क़िस्मतों ने कोताही की, अगर तुझ को रोना है तो अ़क़ील पर रो और शेरों के शेर ह़ारिस पर रो और उन सब पर रो और नाम न ले और अबू ह़कीमा (जमअ़ा) का कोई हमसर नहीं।

यौमे बद्र वाक़ेअ़ में यौमे फ़ुरक़ान था कि कुफ़्र व इस्लाम में फ़र्क़ ज़ाहिर हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़ो'फ़ के बा'द मुसलमानों को तक़्विय्यत दी चुनान्चे, इस ने'मत को यूं याद दिलाया है :

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (ال عمران، ع ١٣)

*और तुम्हारी मदद कर चुका है **अल्लाह** बद्र की लड़ाई में और तुम बे मक़्दूर थे।*(2)

उस दिन से इस्लाम का सिक्का कुफ़्फ़ार के दिल पर जम गया और अहले मदीना में बहुत से लोग ईमान लाए। अहले बद्र के फ़ज़ाइल में इतना ही कह देना काफ़ी है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के ह़क़ में फ़रमाया है :(3) "बेशक **अल्लाह** अहले बद्र से वाक़िफ़ है क्यूंकि उस ने फ़रमा दिया : तुम अ़मल करो जो चाहो अलबत्ता तुम्हारे वासिते जन्नत साबित हो चुकी या तह़क़ीक़ मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।"(4) आख़िरत में मग़फ़ूर होने के इलावा दुन्या में भी बद्री होना ख़ास इम्तियाज़ का सबब शुमार किया जाता था बल्कि वोह हथयार भी जिन से बद्र में काम लिया गया तबर्रुक ख़याल किये जाते थे चुनान्चे, ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जो बरछी उ़बैदा बिन सईद बिन आ़स की आंख में मारी थी।(5) वोह यादगार रही बदीं तौर कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मुस्तआ़र ली, फिर आप के चारों

---

1 ......السیرة النبویة لابن ھشام،غزوة بدرالکبری،ص٢٦٨ والکامل فی التاریخ لابن اثیر،ذکر غزوة بدرالکبری،ج٢، ص٢٨ علمیه۔

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे। (پ٤،اٰل عمران:١٢٣) **इल्मिय्या**

3 ......لَعَلَّ اللّٰهَ اطَّلَعَ اِلٰی اَهْلِ بَدْرٍ فَقَالَ اعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ وَجَبَتْ لَكُمُ الْجَنَّةُ اَوْ فَقَدْ غَفَرْتُ لَكُمْ (صحیح بخاری، کتاب المغازی، فضل من شهد بدرا) ١٢منه

4 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب فضل من شهد بدراً، الحدیث:٣٩٨٣، ج٣، ص١٣ ملتقطاً۔ علمیه

5 ......صحیح بخاری، باب شهود الملائکة بدرا۔

www.dawateislami.net

ख़लीफ़ाओं के पास मुन्तक़िल होती रही। बा'दे अज़ां ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रही यहां तक कि सिने 73 हिजरी में ह़ज्जाज ने उन को शहीद कर दिया।

अहले बद्र के तवस्सुल से जो दुआ़ मांगी जाए वोह ब फ़ज़्ले इलाही "मुस्तजाब" होती है जैसा कि "मशाइख़" का तजरिबा है।[1]

अन्दुलस के मश्हूर सय्याह़ मुह़म्मद बिन जुबैर (मुतवफ़्फ़ा 27 शा'बान सिने 614 हिजरी) ने बद्र के ह़ाल में यूं लिखा है :[2] "इस मौज़अ़ में खुरमा[3] के बहुत बाग़ हैं और आबे रवां का एक चश्मा है। मौज़अ़ का क़ल्आ़ बुलन्द टीले पर है और क़ल्ए़ का रास्ता पहाड़ों के बीच में है। वोह क़त़्आ़ ज़मीने निशेब में है जहां इस्लामी लड़ाई हुई थी और **अल्लाह** तआ़ला ने इस्लाम को इ़ज़्ज़त और अहले शिर्क को ज़िल्लत दी। आज कल इस ज़मीन में खुरमा का बाग़ है और इस के बीच में गन्जे शहीदां[4] है। इस आबादी में दाखि़ल होते वक़्त बाईं त़रफ़ जबलुर्रह़मा है। लड़ाई के दिन इस पहाड़ पर फ़िरिश्ते उतरे थे। इस पहाड़ के साथ जबलुत्तुबूल है। इस की क़त़्अ़[5] रैत के टीले की सी है। कहते हैं हर शबे जुमुआ़ को इस पहाड़ से नक़्क़ारे की सदा आती है। इस लिये इस का नाम जबलुत्तुबूल रखा है। हनूज़ नुस्रते नबवी की येह भी एक करामत बाक़ी है। इस बस्ती के एक अ़रब बाशिन्दे ने बयान किया कि मैं ने अपने कानों से नक़्क़ारों की आवाज़ सुनी है, येह आवाज़ हर जुमा'रात और दो शम्बा को आया करती है। इस पहाड़ की सत़्ह़ के क़रीब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ रखने की जगह है और इस के सामने मैदाने जंग है।"

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِحَبِیْبِكَ سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ الْمُصْطَفٰی صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَبِاَھْلِ بَدْرٍ
رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَنْ تُبَلِّغَنِیْ فِی الدَّارَیْنِ اَقْصٰی مَرَامِیْ وَتَغْفِرَ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَشَائِخِیْ
وَلِاَحِبَّائِیْ وَلِسَائِرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاَنْ تُؤَیِّدَ الْاِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِیْنَ۔

इसी साल यौमे फ़ित्र से दो दिन पहले या शुरूए़ शव्वाल में सदक़ए़ फ़ित्र वाजिब हुवा ईद के दिन नमाज़े ईदुल फ़ित्र ईदगाह में जमाअ़त से पढ़ी गई। इसी वक़्त ज़काते माल फ़र्ज़ हुई।

---

1 ......صحيح البخاری، کتاب المغازی، باب شهود الملائکة بدراً، الحديث:٣٩٩٨، ج٣، ص١٨۔ علميه

2 ......सफ़र नामा मुह़म्मद बिन जुबैर अन्दुलसी (उर्दू तर्जमा) मत़बए़ अह़मदी रियासत रामपुर सफ़्ह़ा 192।

3 ......खजूर। 4 ......इजतिमाई क़ब्र। 5 ......बनावट।

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए बनी क़ैनुक़ाअ़

निस्फ़ माहे शव्वाल में ग़ज़्वए बनी क़ैनुक़ाअ़ पेश आया। यहूद से पहले मुआ़हदा हो चुका था जैसा कि ऊपर मज़्कूर हो चुका। मदीने के गिर्द यहूद के तीन क़बीले थे। बनू क़ैनुक़ाअ़, बनू नज़ीर, बनू कुरैज़ा इन तीनों ने यके बा'द दीगरे नक़्ज़े अ़हद किया।(1) इन में सब से पहले बनू क़ैनुक़ाअ़ ने जो छे सो मर्दे कारज़ार और यहूद में सब से बहादुर थे अ़हद को तोड़ा और बाग़ी हो कर क़ल्अ़ा बन्द हो गए मगर पन्दरह रोज़ के मुहासरे के बा'द मग़लूब हो गए। आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को जिला वतन कर दिया और वोह अज़रिआ़त मुल्के शाम में पहुंचा दिये गए जहां वोह जल्दी हलाक व तबाह हो गए।(2)

ग़ज़्वए सवीक़

माहे ज़ी क़ा'दा में ग़ज़्वए सवीक़ वुक़ूअ़ में आया। सवीक़ अ़रब में सत्तू को कहते हैं चूंकि इस ग़ज़्वे में कुफ़्फ़ार की ग़िज़ा सत्तू थी इस लिये इस नाम से मौसूम हुवा। इस ग़ज़्वे का सबब येह था कि ग़ज़्वए बद्र के बा'द अबू सुफ़्यान ने क़सम खाई थी कि जब तक मैं मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से लड़ाई न कर लूं जनाबत से सर न धोऊंगा। इस लिये क़सम के पूरा करने के लिये वोह दो सो सुवार ले कर निकला। मक़ामे अ़रीज़ में उस ने एक नख़्लिस्तान को जला दिया और एक अन्सारी को क़त्ल कर डाला। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तआ़क़ुब फ़रमाया। अबू सुफ़्यान और उस के हमराही बोझ हल्का करने के लिये सत्तू के बोरे फेंक कर भाग गए। जिन्हें मुसलमानों ने उठा लिया और वापस चले आए।(3)

ग़म ख़्वारी का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स अपने किसी (मुसलमान) भाई की मुसीबत में ता'ज़ियत करता (या'नी तसल्ली देता) है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे इ़ज़्ज़त का लिबास पहनाएगा।" (الترغیب والترھیب،ج٤،ص٣٤٤)

---

1 ......वा'दा तोड़ दिया ।

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد،غزوۃ بنی قینقاع،ج٢،ص٢١ملخصاً والکامل فی التاریخ لابن اثیر،ذکر غزوۃ بنی قینقاع، ج٢،ص٣٣۔٣٤ملخصاً۔ علمیه

3 ......الکامل فی التاریخ لابن اثیر،ذکرغزوۃ السویق،ج٢،ص٣٦ملخصاً و الکامل فی التاریخ لابن اثیر،ودخلت السنة الثالثة...الخ،ج٢،ص٣٨-٤٢ و المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، غزوۃ بنی سلیم...الخ،ج٢،ص٣٤٤-٣٤٥ و غزوۃ غطفان، ٣٧٨-٣٨١ملخصاً۔ علمیه

www.dawateislami.net

हिजरत का तीसरा साल

निस्फ़ मुहर्रम को "**ग़ज़्वए क़र्क़रतुल कुद्र**" और रबीउ़ल अव्वल में ग़ज़्वए अंमार या ग़त्फ़ान और जुमादल ऊला में ग़ज़्वए बनी सुलैम वुक़ूअ़ में आया। इन में से किसी में मुक़ाबला नहीं हुवा। ग़ज़्वए अंमार में दो'सूर ग़त्फ़ानी इस्लाम लाया। माहे रबीउ़ल अव्वल में का'ब बिन अशरफ़ यहूदी शाइ़र जो इस्लाम की ह़जू किया करता था ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मस्लमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से क़त्ल हुवा। माहे जुमादल उख़रा में अबू राफ़ेअ़ सल्लाम बिन अबिल हुक़ैक़ यहूदी जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत दिया करता था ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से मारा गया।[1]

ग़ज़्वए उहुद

माहे शव्वाल में ग़ज़्वए उहुद[2] वुक़ूअ़ में आया। जब क़ुरैश बद्र में शिकस्ते फ़ाश खा कर मक्का में आए तो अबू सुफ़्यान के क़ाफ़िले का तमाम माल दारुन्नदवा में रखा हुवा पाया। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय, रबीआ़ और इक्रमा बिन अबी जह्ल और सफ़्वान बिन उमय्या वग़ैरा रुअसाए क़ुरैश जिन के बाप भाई और बेटे जंगे बद्र में क़त्ल हुवे थे, अबू सुफ़्यान और दीगर शुरका के पास आ कर कहने लगे कि अपने माल के नफ़्अ़ से मदद करो ताकि हम एक लश्कर तय्यार करें और (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से बदला लें। सब ने ब ख़ुशी मन्ज़ूर किया चुनान्चे, तमाम माल फ़रोख़्त कर दिया गया और ह़स्बे क़रार दाद राअसुल माल[3] मालिकों को दिया गया और नफ़्अ़ तजहीज़े लश्कर[4] में काम आया। इसी बारे में येह आयत नाज़िल हुई :

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ۬ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۶﴾ (انفال:ع٤)

जो लोग काफ़िर हैं ख़र्च करते हैं अपने माल ताकि रोकें अल्लाह की राह से सो अभी और ख़र्च करेंगे फिर आख़िर होगा उन पर पछताव फिर आख़िर मग़्लूब होंगे और जो काफ़िर हैं दोज़ख़ को हांके जाएंगे।[5]

1....इस क़त्ल के सिन व माह में येह मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं : रमज़ान सिने 6 हिजरी, ज़ुल हिज्जा सिने 5 हिजरी, ज़ुल हिज्जा सिने 4 हिजरी, जुमादल उख़रा सिने 3 हिजरी, रजब सिने 3 हिजरी। 12 मिन्ह

2....उहुद एक पहाड़ का नाम है जो मदीनए मुनव्वरा से क़रीबन तीन मील पर है। 12 मिन्ह

3....अस्ल ज़र।

4....लश्कर के साज़ो सामान।

5....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक काफ़िर अपने माल ख़र्च करते हैं कि अल्लाह की राह से रोकें तो अब उन्हें ख़र्च करेंगे फिर वोह इन पर पछतावा होंगे फिर मग़्लूब कर दिये जाएंगे और काफ़िरों का ह़श्र जहन्नम की त़रफ़ होगा। (پ۹،الانفال:۳۶) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

क़ुरैश ने बड़ी सरगर्मी से तय्यारी की और क़बाइले अ़रब को भी दा'वते जंग दी। मर्दों के साथ औ़रतों की एक जमाअ़त भी शामिल हुई ताकि उन को मक़्तूलीने बद्र की याद दिला कर लड़ाई पर उभारती रहें चुनान्चे, अबू सुफ़्यान की ज़ौजा हिन्द बिन्ते उ़तबा, इकरमा बिन अबू जह्ल की ज़ौजा उम्मे ह़कीम बिन्ते ह़ारिस बिन हिशाम, ह़ारिस बिन हिशाम बिन मुग़ैरा की ज़ौजा फ़ाति़मा बिन्ते वलीद बिन मुग़ीरा, सफ़्वान बिन उमय्या की ज़ौजा बरज़ा बिन्ते मसऊ़द सक़फ़िया, अ़म्र बिन आ़स की ज़ौजा रैत़ा बिन्ते मुनब्बेह सहमिया,[1] त़ल्ह़ा ह़जबी की ज़ौजा सुलाफ़ा बिन्ते सा'द अपने अपने शोहरों समेत निकलीं। इसी त़रह़ ख़न्नास बिन्ते मालिक अपने बेटे अबू अ़ज़ीज़ बिन उ़मैर के साथ निकली। कुल जमइय्यत तीन हज़ार थी जिन में सात सो ज़िरह पोश थे इन के साथ दो सो घोड़े तीन हज़ार ऊंट और पन्दरह औ़रतें थीं। जुबैर बिन मुत़इ़म ने अपने ह़बशी ग़ुलाम वह़शी नाम को भी येह कह कर भेज दिया कि अगर तुम मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के चचा ह़म्ज़ा को मेरे चचा तुऐ़मा बिन अ़दी के बदले क़त्ल कर दो तो मैं तुम को आज़ाद कर दूंगा।

येह लश्करे क़ुरैश बसर कर्दगी अबू सुफ़्यान[2] मदीने की त़रफ़ रवाना हुवा, और मदीने के मुक़ाबिल उहुद की त़रफ़ बत़ने वादी में उतरा। ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जो अब तक मक्का में थे ब ज़रीअ़ए ख़त़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ुरैश की तय्यारी की ख़बर दी। ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अनस व मुवन्निस पिसराने फ़ज़ाला बिन अ़दी अन्सारी को बत़ौरे जासूस भेजा। वोह ख़बर लाए और कहने लगे कि मुशरिकीन ने अपने ऊंट और घोड़े अ़रीज़[3] में छोड़ दिये हैं जिन्हों ने चरागाह में सब्ज़ी का नामो निशान नहीं छोड़ा फिर ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते ह़ुबाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भी ब ग़रज़े तजस्सुस भेजा वोह लश्कर की ता'दाद वग़ैरा की ख़बर लाए। जुमुआ़ की रात (14 शव्वाल) को ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ और उसैद बिन ह़ुज़ैर और सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) एक जमाअ़त के साथ मुसल्लह़ हो कर ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने पर पहरा देते रहे और शहर पर भी पहरा लगा रहा। उसी रात ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखा कि गोया आप मज़बूत़ ज़िरह पहने हुवे हैं, आप की तल्वार "**ज़ुल फ़िक़ार**" एक त़रफ़ से टूट गई है, एक गाए पर नज़र पड़ी जो ज़ब्ह़ की जा रही है और आप के पीछे एक मेंढ़ा सुवार है। सुब्ह़ को आप ने येह ता'बीर

1......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "**रबत़ा बिन्ते मुनब्बेह**" लिखा है लेकिन सीरते इब्ने हिशाम, सीरते इब्ने इस्ह़ाक़ और दीगर कुतुब में "**रैत़ा बिन्ते मुनब्बेह**" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां सीरते इब्ने हिशाम के मुत़ाबिक़ "**रैत़ा बिन्ते मुनब्बेह**" लिखा है। **इल्मिय्या**

2......अबू सुफ़्यान की सरदारी में।

3......मदीने की चरागाह का नाम।

www.dawateislami.net

बयान फ़रमाई कि मज़्बूत़ ज़िरह मदीना है। तल्वार[1] की शिकस्तगी ज़ात शरीफ़ पर मुसीबत है। गाए आप के वोह अस्ह़ाब हैं जो शहीद होंगे और मेंढा "कब्शुल[2] कतीबा" है जिसे **अल्लाह** तआ़ला क़त्ल करेगा। इस ख़्वाब के सबब से हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की राए थी कि लड़ाई के लिये मदीने से बाहर न निकलें। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय की भी येही राए थी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया तो अकाबिर मुहाजिरीन व अन्सार भी आप से मुत्तफ़िक़ हो गए मगर वोह नौजवान जो जंगे बद्र में शामिल न थे आप से दरख़्वास्त करने लगे कि मदीने से निकल कर लड़ना चाहिये उन के इसरार पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निकलने की त़रफ़ माइल हुवे नमाज़े जुमुआ़ के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वा'ज़ फ़रमाया, अहले मदीना व अहले अ़वाली जम्अ़ हो गए। आप दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए और दोहरी ज़िरह पहन कर निकले येह देख कर वोह नौजवान कहने लगे कि हमें ज़ैबा नहीं कि आप की राए के ख़िलाफ़ करें इस पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "पैग़म्बरे ख़ुदा का शायां नहीं कि जब वोह ज़िरह पहन ले तो उसे उतार दे यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला उस के और दुश्मन के दरमियान फ़ैसला कर दे अब जो मैं हुक्म दूं वोही करो और ख़ुदा का नाम ले कर चलो अगर तुम सब्र करोगे तो फ़त्ह़ तुम्हारी होगी।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन झन्डे तय्यार किये। औस का झन्डा ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को और ख़ज़रज का झन्डा ह़ज़रते हुबाब बिन मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को और मुहाजिरीन का झन्डा ह़ज़रते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को अ़त़ा फ़रमाया इस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक हज़ार की जमइय्यत के साथ निकले जिन में से एक सो ने दोहरी ज़िरह पहनी हुई थी। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ और सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ज़िरह पहने हुवे आप के आगे चल रहे थे जब आप सनिय्यतुल वदाअ़ के क़रीब पहुंचे तो एक फ़ौज नज़र आई आप के दरयाफ़्त फ़रमाने पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया कि येह यहूद में से इब्ने उबय के ह़लीफ़ हैं जो आप की मदद को आए हैं आप ने फ़रमाया कि इन से कह दो कि लौट जाएं क्यूंकि हम मुशरिकीन के ख़िलाफ़ मुशरिकीन से मदद नहीं लेते। जब आप मौज़ए शैख़ान[3] में उतरे तो अ़र्ज़े लश्कर के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को ब वज्हे सिग़रे सिनी[4] वापस कर दिया। चुनान्चे, उसामा बिन

---

1 ......त़बक़ाते इब्ने सा'द, बुख़ारी शरीफ़ में है कि तल्वार का ऊपर का हिस्सा टूट गया जिस की ता'बीर अस्ह़ाबे किराम की शिकस्तगी व हज़ीमत थी। 12 मिन्ह

2 ......त़ल्ह़ा बिन अबी त़ल्ह़ा को कब्शुल कतीबा कहा करते थे। 12 मिन्ह

3 ......मदीनए मुनव्वरा की एक बस्ती का नाम।

4 ......कम उ़म्री।

www.dawateislami.net

ज़ैद, इब्ने उ़मर, ज़ैद बिन साबित, बरा बिन आ़ज़िब, अ़म्र बिन ह़ज़्म, उसैद बिन ज़ुहैर अन्सारी, अबू सईद ख़ुदरी, अ़राबा बिन औस, ज़ैद बिन अरक़म, सा'द बिन उ़कैब, सा'द बिन ह़ब्ता, ज़ैद बिन जारिया अन्सारी और जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) वापस हुवे। ह़ज़रते समुरा बिन जुनदब और राफ़ेअ़ बिन ख़दीज (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) जो पन्दरह पन्दरह साल के थे पहले रोक दिये गए फिर अ़र्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم राफ़ेअ़ अच्छा तीर अन्दाज़ है इस लिये वोह भी रख लिये गए फिर समुरा की निस्बत कहा गया कि वोह कुश्ती में राफ़ेअ़ को पछाड़ देते हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दोनों कुश्ती लड़ें चुनान्चे, समुरा ने राफ़ेअ़ को पछाड़ दिया, इस त़रह़ ह़ज़रते समुरा भी रख लिये गए। रात यहीं बसर हुई दूसरे रोज़ बाग़े शौत़ में जो मदीना और उहुद के दरमियान है फ़ज्र के वक़्त पहुंचे और नमाज़े बा जमाअ़त अदा की गई इसी जगह इब्ने उबय अपने तीन सो आदमी ले कर लश्करे इस्लाम से अ़लाहिदा हो गया और येह कह कर मदीने को चला आया कि "ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का कहा माना मेरा कहा न माना, फिर हम किस लिये यहां जान दें।" जब येह मुनाफ़िक़ीन वापस हुवे तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के एक गुरौह ने कहा कि हम इन से क़िताल करते हैं और दूसरे गुरौह ने कहा कि हम क़िताल नहीं करते क्यूंकि येह मुसलमान हैं इस पर आयत नाज़िल हुई :

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ؕ اَتُرِيْدُوْنَ اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ﴿۸۸﴾ (نساء، ع۱۲)

*पस क्या है वासिते़ तुम्हारे बीच मुनाफ़िक़ों के दो फ़िर्क़े हो रहे हो और **अल्लाह** ने उल्टा किया उन को ब सबब इस चीज़ के कि कमाया उन्हों ने। क्या इरादा करते हो तुम येह कि राह पर लाओ जिस को गुमराह किया **अल्लाह** ने ? और जिस को गुमराह करे **अल्लाह** पस हरगिज़ न पावेगा तू वासिते़ उस के राह।* (1)

इब्ने उबय का क़ौल सुन कर ख़ज़रज में से बनू सलमा और औस में से बनू ह़ारिसा ने दिल में लौटने की ठहराई मगर **अल्लाह** तआ़ला ने इन को बचा लिया चुनान्चे, कुरआने करीम में है :

1......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम्हें क्या हुवा कि मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए और **अल्लाह** ने उन्हें औंधा कर दिया उन के कोतकों के सबब क्या येह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ जिसे **अल्लाह** ने गुमराह किया और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे तो हरगिज़ तू उस के लिये कोई राह न पाएगा। (پ۵، النساء:۸۸) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

اِذْ هَمَّتْ طَّآىِٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَاۙ وَ اللّٰهُ وَلِیُّهُمَاؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ (آلِ عمران:١٣)

जब क़स्द किया दो फ़रीक़ों ने तुम में से येह कि नामर्दी करें और दोस्तदार था उन का अल्लाह और ऊपर अल्लाह के पस चाहिये कि तवक्कुल करें ईमान वाले।[1]

अब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सात सो आदमी और दो घोड़े रह गए। आप ने अबू ख़ैसमा अन्सारी को बत़ौरे बदरक़ा[2] साथ लिया ताकि नज़्दीक के रास्ते से ले चले। इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़र्रह बनी ह़ारिसा और इन के अम्वाल के पास से गुज़रते हुवे मिरबअ़ बिन क़ैज़ी मुनाफ़िक़ के बाग़ के पास पहुंचे वोह नाबीना था। उस ने जब लश्करे इस्लाम की आहट सुनी तो उन पर ख़ाक फेंकने लगा और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहने लगा कि अगर तू अल्लाह का रसूल है तो मैं तुझे अपने बाग़ में दाख़िल होने की इजाज़त नहीं देता। येह सुन कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم इसे क़त्ल करने दौड़े। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इसे क़त्ल न करो येह आंख का अन्धा, दिल का भी अन्धा है। मगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मन्अ़ करने से पहले ही सा'द बिन ज़ैद अश्हली ने उस पर कमान मारी और सर तोड़ दिया। यहां से रवाना हो कर लश्करे इस्लाम निस्फ़ शव्वाल यौमे शम्बा[3] को कोहे उहुद की शा'ब (दर्रा) में करानए वादी[4] में पहाड़ की त़रफ़ उतरा।[5] हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़ आराई के लिये पहाड़ को पसे पुश्त और कोहे ऐनैन को जो वादिये क़नात में है अपनी बाईं त़रफ़ रखा। कोहे ऐनैन में एक शिगाफ़ या दर्रा था जिस में से दुश्मन अ़क़ब से मुसलमानों पर ह़म्ला आवर हो सकता था। इस लिये आप ने इस दर्रे पर अपने पचास पैदल तीर अन्दाज़ मुक़र्रर किये और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को इन का सरदार बनाया और यूं हिदायत की : "अगर तुम देखो कि परन्दे हम को उचक ले गए हैं तो अपनी जगह को न छोड़ो यहां तक कि मैं तुम्हारे पास किसी को भेजूं और अगर तुम देखो कि हम ने दुश्मन को शिकस्त दी है और मार कर पामाल कर दिया है तो भी ऐसा ही करना।"[6]

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं और अल्लाह उन का संभालने वाला है और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिये। (پ٤،ال عمرٰن:١٢٢) **इल्मिय्या**

2 ......रास्ता बताने वाला। 3 ......बरोज़े हफ़्ता। 4 ......वादी के किनारे।

5 ......الطبقات الکبری لابن سعد،غزوة رسول اللّٰه أحداً،ج٢،ص٢٨ـ٣٠ملخصاً والسيرة النبوية لابن هشام،غزوة أُحد،ص٣٢٣ـ٣٢٥ملتقطاً والكامل فى التاريخ لابن اثير،ذكرغزوة أُحد،ج٢،ص٤٤ـ٤٦ملخصاً۔ علميه

6 ......صحیح بخاری،کتاب الجہاد،باب ما یکرہ من التنازع والاختلاف فی الحرب۔......(صحيح البخارى، كتاب الجهاد،باب مايكره من التنازع...الخ،الحديث:٣٠٣٩،ج٢،ص٣٢٠۔ علميه)

www.dawateislami.net

मुशरिकीन ने भी जो ऐ़नैन में वादिये क़नात के मदीने की त़रफ़ के किनारे पर शोरिस्तान में उतरे हुवे थे, सफ़ें आरास्ता कीं चुनान्चे, इन्हों ने सुवारों के मैमना पर ख़ालिद बिन वलीद को, मैसरा पर इ़करमा बिन अबी जहल को, पैदलों पर सफ़्वान बिन उमय्या को और तीर अन्दाज़ों पर जो ता'दाद में एक सो थे, अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ को मुक़र्रर किया और झन्डा त़ल्ह़ा बिन अबी त़ल्ह़ा को दिया। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा कि मुशरिकीन का झन्डा बनू अ़ब्दुद्दार के पास है तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लश्करे इस्लाम का झन्डा ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन अ़ब्दुद्दार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दिया और मैमना पर ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और मैसरा पर ह़ज़रते मुन्ज़िर बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मुक़र्रर फ़रमाया।

मुशरिकीन में सब से पहले जो लड़ाई के लिये निकला वोह अबू आ़मिर अन्सारी औसी था। उस को राहिब कहा करते थे मगर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का नाम फ़ासिक़ रखा। ज़मानए जाहिलिय्यत में वोह क़बीलए औस का सरदार था। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीने में तशरीफ़ ले गए तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त करने लगा और मदीने से निकल कर मक्का में चला आया। उस ने कुरैश को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ने पर आमादा किया और कहा कि मेरी क़ौम जब मुझे देखेगी तो मेरे साथ हो जाएगी। इस लिये उस ने पुकार कर कहा : "ऐ गुरौहे औस ! मैं अबू आ़मिर हूं।" औस ने जवाब दिया : "ऐ फ़ासिक़ ! तेरी मुराद पूरी न हो।" फ़ासिक़ का नाम सुन कर कहने लगा कि मेरी क़ौम मेरे बा'द बिगड़ गई है। उस के साथ ग़ुलामाने क़ुरैश की एक जमाअ़त थी वोह मुसलमानों पर तीर फेंकने लगे। मुसलमान भी उन पर संगबारी करने लगे यहां तक कि अबू आ़मिर और उस के साथी भाग गए।(1)

मुशरिकीन का अ़लम बरदार त़ल्ह़ा सफ़ से निकल कर पुकारा : "मुसलमानो ! तुम समझते हो कि हम में से जो तुम्हारे हाथों मर जाता है वोह जल्द दोज़ख़ में पहुंच जाता है और तुम में जो हमारे हाथों मर जाता है वोह जल्द बिहिश्त में पहुंच जाता है। क्या तुम में कोई है जिस को मैं जल्द बिहिश्त में पहुंचा दूं या वोह मुझे जल्द दोज़ख़ में पहुंचा दे। ह़ज़रते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم निकले और त़ल्ह़ा के सर पर ऐसी तल्वार मारी कि खोपड़ी फाड़ दी और वोह गिर पड़ा। ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कब्शुल कतीबा के मारे जाने पर ख़ुश हुवे आप ने तक्बीर कही। मुसलमानों ने भी आप का इक़्तिदा किया। त़ल्ह़ा के बा'द उस

❶ ......الطبقات الكبرى لابن سعد،غزوة رسول الله أحداً،ج٢،ص٣٠ملخصاً والسيرة النبوية لابن هشام،غزوة أحد،ص٣٢٦ ـ علميه

www.dawateislami.net

के भाई उ़स्मान बिन अबी त़ल्ह़ा ने झन्डा हाथ में लिया। उस के पीछे औ़रतें अश्आ़र पढ़ती आती थीं और वोह उन के आगे येह रज्ज़ पढ़ता था।

اِنَّ عَـلٰی اَھْلِ الـلِّـوَآءِ حَقًّا   اَنْ تُخْضَبَ الصَّعْدَۃُ اَوْ تَنْدَقًّا

बेशक अ़लम बरदारों पर वाजिब है कि नेज़ा ख़ून से सुर्ख़ हो जाए या टूट जाए।

ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुक़ाबले के लिये निकले और उ़स्मान के दो शानों के दरमियान इस ज़ोर से तल्वार मारी कि एक बाज़ू और शाने को काट कर सुरीन तक जा पहुंची। ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस आए और ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ थे : اَنَا ابْنُ سَاقِي الْحَجِيْجِ[1] मैं साक़िये ह़ुज्जाज[2] (अ़ब्दुल मुत्त़लिब) का बेटा हूं।

अब मैदाने कारज़ार गर्म हुवा। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक तल्वार थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कौन है जो इस तल्वार को ले कर इस का ह़क़ अदा करे।" येह सुन कर कई शख़्स आप की त़रफ़ बढ़े मगर आप ने वोह तल्वार किसी को न दी। अबू दुजाना (सिमाक बिन ख़रशा अन्सारी) ने उठ कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस का ह़क़ क्या है? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस का ह़क़ येह है कि तू इस को दुश्मन पर मारे यहां तक कि टेढ़ी हो जाए।" अबू दुजाना ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं इस को इस के ह़क़ के साथ लेता हूं।" ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू दुजाना को इनायत फ़रमाई। अबू दुजाना मश्हूर पहलवान थे और लड़ाई में अकड़ कर चला करते थे। जब सुर्ख़ रूमाल सर पर बांध लेते तो लोग समझ जाते थे कि लड़ेंगे। उन्हों ने तल्वार ले कर ह़स्बे आ़दत सर पर सुर्ख़ रूमाल बांधा और अकड़ते तनते निकले येह देख कर ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "येह चाल ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को ना पसन्द है।"[3] ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सफ़ों को चीरते और लाशों पर लाशें गिराते दामने कोह[4] में मुशरिकीन की औ़रतों तक जा पहुंचे जो ब ग़रज़े तरग़ीब दफ़ पर अश्आ़रे ज़ैल गा रही थीं :

---

1 ......الکامل فی التاریخ لابن اثیر،ذکرغزوۃ اُحد،ج۲،ص۴۷ملخصاً و الطبقات الکبری لابن سعد،غزوۃ رسول اللّٰہ اُحداً، ج۲،ص۳۱۔ علمیہ

2 ......ह़ाजियों को पानी पिलाने वाला।

3 ......अल मो'जमुल कबीर लित्त़बरानी और दीगर कुतुब में इस रिवायत में मज़ीद अल्फ़ाज़ यूं हैं : "الا فی ھذا الموضع" (या'नी) इस मक़ाम के सिवा। **इल्मिय्या**

4 ......पहाड़ का दामन।

www.dawateislami.net

نحن بنات طارق   نمشی علی النمارق

ان تقبلوا نعانق   او تدبروا نفارق

हम (उ़लुव्वो शरफ़ में) परवीन सितारे हैं। हम क़ालीनों पर चलने वालियां हैं अगर तुम आगे बढ़ोगे तो हम तुम से गले मिलेंगी पीछे हटोगे तो हम तुम से जुदा हो जाएंगी।

ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तल्वार उठाई कि हिन्द बिन्ते उ़तबा के सर पर मारें फिर बदीं ख़याल रुक गए कि येह सज़ावार नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तल्वार एक औ़रत पर मारी जाए।(1)

ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रह़ ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते अ़ली वग़ैरा भी दुश्मनों में जा घुसे और सफ़ों की सफ़ें साफ़ कर दीं। ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को आख़िरे कार वह़शी ने जो बा'द में ईमान लाए, शहीद कर दिया। वह़शी अपना क़िस्सा यूं बयान करते हैं : "ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तुऐ़मा बिन अ़दी बिन अल ख़ियार को बद्र में क़त्ल कर दिया था इस लिये मेरे आक़ा जुबैर बिन मुत़्इम ने कहा : अगर तू ह़म्ज़ा को मेरे चचा के बदले क़त्ल कर दे तो आज़ाद हो जाएगा। जब साले ऐ़नैन में (ऐ़नैन उहुद के मुक़ाबिल एक पहाड़ है और दोनों के दरमियान एक वादी है) लोग निकले तो मैं लोगों के साथ लड़ाई के लिये निकला जब लड़ाई के लिये सफ़ बस्ता हुवे तो सिबाअ़ (बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा) निकला और कहा क्या कोई मुबारिज़ है? येह सुन कर ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस की त़रफ़ निकले और यूं ख़ित़ाब किया : "ऐ सिबाअ़! ऐ औ़रतों के ख़तना करने वाली उम्मे अंमार(2) के बेटे! क्या तू ख़ुदा और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जंग करता है!! येह कह कर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस पर ह़म्ला किया पस वोह कले गुज़श्ता की त़रह़ हो गया।"(3) मैं एक पथ्थर के नीचे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ताक में था जब ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुझ से नज़्दीक हुवा मैं ने अपना ह़र्बा(4) उस पर मारा वोह उस की नाफ़ व आ़ना(5) के दरमियान लगा। यहां तक कि उस की दो रानों में से

1 ......الکامل فی التاریخ لابن اثیر، ذکر غزوۃ اُحد، ج۲، ص۴۷۔۴۸ و المعجم الکبیر للطبرانی، ۶۵۲۔ من اسمہ سماك، الحدیث: ۶۵۰۸، ج۷، ص۱۰۴۔ علمیه

2 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "उम्मे नमार" लिखा है लेकिन बुख़ारी शरीफ़ और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में "उम्मे अंमार" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां बुख़ारी शरीफ़ के मुत़ाबिक़ "उम्मे अंमार" लिखा है। **इ़ल्मिय्या**

3 ......या'नी नेस्तो नाबूद हो गया। 4 ......नेज़ा। 5 ......नाफ़ के नीचे की जगह जहां बाल होते हैं।

www.dawateislami.net

निकल गया और येह उस का आखि़र अम्र[1] था। जब लोग वापस आए मैं उन के साथ वापस आया और मक्का में ठहरा यहां तक कि उस में इस्लाम फैल गया फिर (फ़त्ह़ के बा'द) त़ाइफ़ की त़रफ़ भाग गया जब अहले त़ाइफ़ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ अपने क़ासिद भेजे तो मुझ से कहा गया कि ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ासिदों को तक्लीफ़ नहीं देते। इस लिये मैं क़ासिदों के साथ निकला और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खि़दमत में ह़ाजि़र हुवा। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो पूछा : क्या तू वह़्शी है ? मैं ने कहा : हां। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तू ने ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को क़त्ल किया ? मैं ने कहा : ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया है जैसा कि आप को ख़बर पहुंची है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तू मेरे सामने न आया कर, पस मैं चला गया। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो मुसैलिमा कज़्ज़ाब ज़ाहिर हुवा मैं ने कहा कि मैं मुसैलिमा की त़रफ़ ज़रूर निकलूंगा शायद मैं उसे मार डालूं और इस त़रह़ से क़त्ले ह़म्ज़ा की मकाफ़ात[2] कर दूं इस लिये मैं लोगों के साथ निकला मुसैलिमा का ह़ाल हुवा जो हुवा। क्या देखता हूं कि वोह एक शख़्स है दीवार के दरमियान खड़ा हुवा। गोया कि वोह एक जौलीदा मू[3] ख़ाकिस्तरी[4] ऊंट है। मैं ने उस पर अपना ह़र्बा[5] मारा जो उस के दो पिस्तान के दरमियान लगा यहां तक कि उस के दोनों शानों के दरमियान से पार हो गया। अन्सार में से एक शख़्स उस की त़रफ़ कूदा और उस के सर पर तल्वार मारी पस एक लौंडी ने घर की छत पर (नौह़ा करते हुवे) कहा : "वाए अमीरुल मोमिनीन ![6] उसे एक ह़बशी ग़ुलाम वह़्शी ने क़त्ल कर दिया।"[7]

ह़ज़रते ह़न्ज़ला बिन अबी आ़मिर अन्सारी औसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुशरिकीन के सिपह सालार अबू सुफ़्यान पर ह़म्ला किया और क़रीब था कि अबू सुफ़्यान को क़त्ल कर देते मगर

1......अन्जाम। 2......बदला, इवज़। 3......बिखरे बालों वाला। 4......मटयाले रंग का।

5......येह वोही ह़र्बा है जिस से ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद किया था। ह़ज़रते वह़्शी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहा करते थे قتلت فی کفری خیر الناس و فی اسلامی شر الناس या'नी मैं ने अपनी कुफ़्र की ह़ालत में ख़ैरुन्नास को शहीद किया और मुसलमान होने की ह़ालत में शर्रुन्नास को क़त्ल किया। 12 मिन्ह

6......मुसैलिमा कज़्ज़ाब को अमीरुल मोमिनीन इस लिये कहा कि इस पर ईमान लाने वालों के उमूर का मरजअ़ वोही था, इस से तलक़ीब (लक़ब देना) मक़्सूद न थी। 12 मिन्ह

7......सह़ीह़ बुख़ारी, बाबे क़त्ले ह़म्ज़ा।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قتل حمزۃ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، الحدیث:٤٠٧٢، ج٣، ص٤١ ۔ علمیه)

www.dawateislami.net

शद्दाद बिन अल अस्वद ने उन के वार को रोक लिया और अपनी तल्वार से ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद कर दिया। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फ़िरिश्ते ह़न्ज़ला को ग़ुस्ल दे रहे हैं। उन की बीवी से उन का ह़ाल दरयाफ़्त करो। बीवी ने कहा कि शबे उहुद को उन की शादी हुई थी। सुब्ह़ को उठे तो ग़ुस्ल की ह़ाजत थी ग़ुस्ल के लिये आधा सर धोया था कि दा'वते जंग की आवाज़ कान में पड़ी। फ़ौरन उसी ह़ालत में वोह शरीके जंग हो गए। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इसी सबब से उसे फ़िरिश्ते ग़ुस्ल दे रहे हैं। इसी वज्ह से ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को **ग़सीलुल मलाइका**[1] कहते हैं।[2]

बहादुराने इस्लाम ने ख़ूब दादे शुजाअ़त दी।[3] मुशरिकीन के पाउं उखड़ गए। उ़स्मान बिन अबी त़ल्ह़ा के बा'द उन के अ़लम बरदार अबू सईद बिन अबी त़ल्ह़ा, मुसाफ़ेअ़ बिन त़ल्ह़ा, ह़ारिस बिन त़ल्ह़ा, किलाब बिन त़ल्ह़ा, जुल्लास बिन त़ल्ह़ा, अर्त़ात बिन शुर्ह़बील, शुरीह़ बिन क़ारिज़ और अबू ज़ैद बिन अ़म्र बिन अ़ब्दे मनाफ़ यके बा'द दीगरे क़त्ल हो गए। उन का झन्डा ज़मीन पर पड़ा रह गया कोई उस के नज़्दीक न आता था, अ़म्रह बिन्ते अ़ल्क़मा ह़ारिसिय्या ने उठा लिया, जिस से एक ह़बशी ग़ुलाम सुवाब नाम ने ले लिया। क़ुरैश उस के गिर्द जम्अ़ हो गए, लड़ते लड़ते सुवाब के दोनों बाज़ू कट गए वोह सीने के बल ज़मीन पर गिर पड़ा और झन्डे को सीने और गर्दन के दरमियान दबा लिया इस ह़ालत में येह कहता हुवा मारा गया कि मैं ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया।[4]

सुवाब के बा'द किसी को झन्डा उठाने की जुरअत न हुई। मुशरिकीन को शिकस्त हुई। वोह औ़रतें जो दफ़ बजाती थीं अब कपड़े चढ़ाए बरह्ना साक़ पहाड़ पर भागी जा रही थीं। मुसलमान क़त्लो ग़ारत में मश्ग़ूल थे। येह देख कर ऐ़नैन पर तीर अन्दाज़ों ने आपस में कहा : "ग़नीमत ! ग़नीमत ! तुम्हारे अस्ह़ाब ग़ालिब आ गए हैं। अब तुम क्या देखते हो।" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद याद दिलाया मगर वोह बदीं ख़याल कि मुशरिकीन अब वापस नहीं आ सकते अपनी जगह छोड़ कर लूटने में

---

1 ......जिसे फ़िरिश्तों ने ग़ुस्ल दिया।

2 ......सीरते इब्ने हिशाम। السيرة النبوية لابن هشام،غزوة أُحد،ص٣٢٩۔ علميه

3 ......जुरअत व बहादुरी से लड़े।

4 ......सीरते इब्ने हिशाम, ब रिवायत इब्ने इस्ह़ाक़।

(السيرة النبوية لابن هشام،غزوة أُحد،ص ٣٣١ و سبل الهدى والرشاد، غزوة احد،ج٤،ص١٩٤-١٩٥۔ علميه)

www.dawateislami.net

मशगूल हो गए और सिर्फ़ चन्द आदमी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ रह गए। ख़ालिद बिन वलीद और इकरमा बिन अबी जह्ल ने इस मौक़अ़ को ग़नीमत समझ कर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के साथियों पर ह़म्ला किया और सब को शहीद कर दिया। फिर दर्रए कोह में से आ कर अ़क़ब से लश्करे इस्लाम पर टूट पड़े और इन की सफ़ों को दरहम बरहम कर दिया। इब्लीसे लईन ने पुकार कर कहा : ان محمدًا قد قتل (मुह़म्मद क़त्ल हो चुके) मुसलमान सरासीमा[1] भागने लगे और इन के तीन फ़िर्क़े हो गए। फ़िर्क़ए क़लील भाग कर मदीने के क़रीब पहुंच गए और इख़्तितामे[2] जंग तक वापस नहीं आए इन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई है :

اِنَّ الَّذِیْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ یَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّیْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْاۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِیْمٌ۠ (آلِ عمران، ع ١٦)

तह़क़ीक़ जो लोग कि पीठ मोड़ गए तुम में से उस दिन कि मिलीं दो जमाअ़तें। सिवाए इस के नहीं कि डगा दिया उन को शैत़ान ने कुछ उन के गुनाहों की शामत से और तह़क़ीक़ मुआ़फ़ किया ***अल्लाह*** *ने उन से बेशक* ***अल्लाह*** *बख़्शने वाला बुर्दबार है।*[3]

दूसरा फ़िर्क़ा या'नी अक्सर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم येह सुन कर कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़त्ल हो गए, ह़ैरान हो गए। उन में से जहां कोई था वहीं रह गया और अपनी जान बचाता रहा या जंग करता रहा। तीसरा फ़िर्क़ा जो बारह या कुछ ऊपर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم थे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साबित रहा।

फ़त्ह़ के बा'द मुसलमानों को शिकस्त हुई इस की वज्ह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशाद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी थी जैसा कि आयाते ज़ैल से साबित है :

---

1 ......परेशान और घबरा कर।

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد،غزوۃ رسول اللّٰہ اُحداً،ج۲،ص۳۱۔۳۲ملتقطاً۔ علمیه

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो तुम में से फिर गए जिस दिन दोनों फ़ौजें मिली थीं उन्हें शैत़ान ही ने लग़्ज़िश दी उन के बा'ज़ आ'माल के बाइस और बेशक **अल्लाह** ने उन्हें मुआ़फ़ फ़रमा दिया बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला ह़िल्म वाला है। (پ٤،اٰل عمران:١٥٥) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِى الْاَمْرِ وَعَصَیْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ مِنْكُمْ مَّنْ یُّرِیْدُ الدُّنْیَا وَ مِنْكُمْ مَّنْ یُّرِیْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِیَبْتَلِیَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۵۲﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ یَدْعُوْكُمْ فِیْۤ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا بِغَمٍّ لِّكَیْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ (آل عمران، ع ١٦)

और अलबत्ता तह़क़ीक़ सच्चा किया है तुम से **अल्लाह** ने वा'दा अपना जिस वक़्त काटते थे तुम उन को उस के हुक्म से यहां तक कि जब नामर्दी की तुम ने और झगड़ा किया तुम ने अपने काम में और ना फ़रमानी की तुम ने बा'द इस के कि दिखलाया तुम को जो चाहते थे तुम, बा'ज़ तुम में से वोह था कि इरादा करता था दुन्या का और बा'ज़ तुम में से वोह था कि इरादा करता था आख़िरत का, फिर फेर दिया तुम को उन से ताकि आज़मावे तुम को और अलबत्ता तह़क़ीक़ मुआ़फ़ किया तुम से और **अल्लाह** साह़िब फ़ज़्ल का है ईमान वालों पर जिस वक़्त चढ़े जाते थे तुम शहर को और पीछे न देखते थे किसी को और रसूल पुकारता था तुम को पिछाड़ी में पस दोबारा दिया तुम को ग़म साथ ग़म के ताकि तुम ग़म न खाओ उस चीज़ का जो चूक गई तुम से और जो न पहुंची तुम को और **अल्लाह** को ख़बर है उस चीज़ की, कि करते हो तुम। (1)

ख़ालिद बिन वलीद के ह़म्ले पर मुसलमानों में जो लूटने में मश्ग़ूल थे ऐसी अबतरी व सरासीमगी(2) फैली कि अपने बेगाने में तमीज़ न रही। चुनान्चे, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा के वालिद ह़ज़रते यमान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) को मुसलमानों ही ने शहीद कर दिया।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहादत की आवाज़ ने बड़े बड़े बहादुरों को बद ह़वास कर रखा था। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि मेरे चचा ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जंगे बद्र में ह़ाज़िर न थे। वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करने लगे : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं पहले क़िताल में कि आप

1......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक **अल्लाह** ने तुम्हें सच कर दिखाया अपना वा'दा जब कि तुम उस के हुक्म से काफ़िरों को क़त्ल करते थे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और हुक्म में झगड़ा डाला और ना फ़रमानी की बा'द इस के कि **अल्लाह** तुम्हें दिखा चुका तुम्हारी ख़ुशी की बात तुम में कोई दुन्या चाहता था और तुम में कोई आख़िरत चाहता था फिर तुम्हारा मुंह उन से फेर दिया कि तुम्हें आज़माए और बेशक उस ने तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया और **अल्लाह** मुसलमानों पर फ़ज़्ल करता है जब तुम मुंह उठाए चले जाते थे और पीठ फेर कर किसी को न देखते और दूसरी जमाअ़त में हमारे रसूल तुम्हें पुकार रहे थे तो तुम्हें ग़म का बदला ग़म दिया और मुआ़फ़ी इस लिये सुनाई कि जो हाथ से गया और जो इफ़्ताद पड़ी उस का रन्ज न करो और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (پ٤،آل عمرٰن:١٥٢-١٥٣)

2......घबराहट ।

www.dawateislami.net

ने ब ज़ाते शरीफ़ मुशरिकीन से किया है हाज़िर न था। अगर खुदा मुझे मुशरिकीन के क़िताल में हाज़िर करे तो देखियेगा कि मैं क्या करता हूं। जब उहुद का दिन आया और मुसलमानों ने शिकस्त खाई तो कहा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं उ़ज़्र चाहता हूं तेरे आगे उस से जो इन लोगों ने किया या'नी अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने और बेज़ार हूं तेरे आगे उस से जो इन लोगों ने किया या'नी मुशरिकों ने। फिर लड़ाई के लिये आए। ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इन को मिले, इब्ने नज़्र ने कहा : सा'द ! मैं बिहिश्त चाहता हूं और नज़्र के रब की क़सम कि मैं उहुद की त़रफ़ से उस की खुश्बू पाता हूं। सा'द ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं न कर सका जो इब्ने नज़्र ने किया। अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का क़ौल है कि हम ने इब्ने नज़्र पर अस्सी[80] से कुछ ऊपर तल्वार व नेज़े व तीर के ज़ख़्म पाए और वोह शहीद थे, मुशरिकीन ने उन को मुस्ला कर दिया था, इन को फ़क़त़ उन की बहन ने उंगिलयों के पोरों से पहचाना। रावी का बयान है कि हम गुमान करते थे कि आयते ज़ैल इब्ने नज़्र और इस की मिस्ल दूसरों के ह़क़ में नाज़िल[(1)] हुई है :

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّنْتَظِرُ ۖ٘ وَ مَا بَدَّلُوْا تَبْدِیْلًا ﴿۲۳﴾ (احزاب، ع٣) [(2)]

मुसलमानों में से वोह मर्द हैं कि सच कर दिखाया उन्हों ने उस चीज़ को कि अ़हद बांधा था अल्लाह से इस पर। पस बा'ज़ इन में से वोह है कि पूरा कर चुका काम अपना और बा'ज़ उन में से वोह है कि इन्तिज़ार करता है और नहीं बदल डाला उन्हों ने कुछ बदल डालना।[(3)]

इब्ने इस्ह़ाक़ की रिवायत में है कि ह़ज़रते इब्ने नज़्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रास्ते में मुहाजिरीन व अन्सार की एक जमाअ़त को देखा जिस में ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ व त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी थे वोह मायूस हो कर बैठ रहे थे। इब्ने नज़्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से पूछा कि क्यूं बैठ रहे हो ? उन्हों ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहादत पा चुके हैं। इब्ने नज़्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द तुम ज़िन्दा रह कर क्या करोगे, तुम भी इसी त़रह़ दीन पर शहीद हो जाओ। फिर इब्ने नज़्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जंग किया और शहीद[(4)] हो गए।[(5)]

---

1 ......सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुज्जिहाद, बाबे क़ौलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ : من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله عليه (الآية)

2 ......صحيح البخاری، كتاب الجهاد والسير، باب قول الله: من المؤمنين رجال...الخ، الحديث: ٢٨٠٥، ج٢، ص٢٥٥ ـ علميه

3 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया या जो अ़हद अल्लाह से किया था तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वोह ज़रा न बदले। (پ٢١، الاحزاب: ٢٣) **इल्मिय्या**

4 ......सीरते इब्ने हिशाम।

5 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة أحد، ص٣٣٣ ـ علميه

www.dawateislami.net

हज़रते इब्ने नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रह़ साबित बिन दह़दाह़ आए और अन्सार से यूं ख़िताब किया : "ऐ गुरौहे अन्सार ! अगर हज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो चुके तो **अल्लाह** तो ज़िन्दा है मरता नहीं, तुम अपने दीन के लिये लड़ो।" येह कह कर उन्हों ने चन्द अन्सार के साथ ख़ालिद बिन वलीद की फ़ौज पर ह़म्ला किया मगर ख़ालिद बिन वलीद ने उन को शहीद[1] कर दिया।[2]

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़त्ल की अफ़्वाह और मुसलमानों की नज़रों से ग़ाइब होने के बा'द सब से पहले ह़ज़रते का'ब बिन मालिक अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहचाना, सरे मुबारक पर मिग़्फ़र[3] था जिस के नीचे से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखें चमक रही थीं। ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ोर से पुकार कर कहा : "मुसलमानो ! तुम को बिशारत हो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह हैं।" येह सुन कर एक जमाअ़त ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, उ़मर फ़ारूक़, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम और ह़ारिस बिन सम्मा वग़ैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के साथ शो'ब[4] की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे ताकि अपने बाक़ी अस्ह़ाब का ह़ाल देखें। अब कुफ़्फ़ार ने भी सब त़रफ़ से हट कर उसी रुख़ पर ज़ोर दिया। वोह बार बार हुजूम कर के ह़म्ला आवर होते थे। एक दफ़्आ़ हुजूम हुवा तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कौन मुझ पर जान देता है" ह़ज़रते ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पांच या सात अन्सारी साथ ले कर ह़ाज़िर हुवे जिन्हों ने यके बा'दे दीगरे जांबाज़ी से लड़ कर जानें फ़िदा कर दीं। उ़तबा बिन अबी वक़्क़ास ने पथ्थर मार कर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दांत मुबारक (रबाइय्या यमना सफ़्ला) शहीद कर दिया[5] और नीचे का होंट ज़ख़्मी कर दिया। इब्ने क़मिआ लईन ने चेहरए मुबारक ऐसा ज़ख़्मी किया कि ख़ौद

---

1 ......इसाबा, तर्जमए साबित बिन दह़दाह़।

2 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، ۸۸۰۔ثابت بن الدحداح، ج۱، ص۵۰۳۔ علمیه

3 ......लोहे की जाली जो ख़ौद के अन्दर पहनी जाती है। 4 ......घाटी, वादी।

5 ......इब्ने जौज़ी ने और ख़त़ीब ने तारीख़ में मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ह़ाफ़िज़ फ़रयाबी से नक़्ल किया है कि इस ने कहा कि मुझे येह ख़बर पहुंची है कि जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रबाइय्या तोड़ा था उस के घर में जो बच्चा पैदा होता इस का रबाइय्या न उगता। ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब, जुज़ अव्वल स. 35। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

के दो ह़ल्क़े रुख़्सारे मुबारक में घुस गए और आप इन गढ़ों में से एक गढ़े में गिर पड़े जो अबू आ़मिर फ़ासिक़ ने बदीं ग़र्ज़[1] खोदे थे कि मुसलमान बे इ़ल्मी में उन में गिर पड़ें। इस हालत में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : كيف يفلح قوم شجوا نبيهم (वोह क़ौम क्या फ़लाह़ पा सकती है जिस ने अपने पैग़म्बर को ज़ख़्मी कर दिया। عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) इस पर येह आयत नाज़िल हुई :

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ (آلِ عمران، ع ۱۳)

तेरा इख़्तियार कुछ नहीं या उन को तौबा देवे या उन को अ़ज़ाब करे कि वोह नाहक़ पर हैं।[2]

ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ मुबारक पकड़ा और ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उठाया यहां तक कि आप सीधे खड़े हो गए। ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दांतों से ख़ौद का एक ह़ल्क़ा निकाला तो इन का एक सामने का दांत गिर पड़ा दूसरा ह़ल्क़ा निकाला तो दूसरा निकल गया। ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद मालिक बिन सिनान ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ून चूस कर पी लिया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद भी कपड़े से अपने चेहरे का ख़ून पोंछ रहे थे कि मुबादा (ऐसा न हो) ज़मीन पर गिर पड़े तो अ़ज़ाब नाज़िल हो और यूं फ़रमा रहे थे : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी क़ौम को बख़्श दे क्यूंकि वोह नहीं जानते।)[3]

इस मौक़अ़ पर बा'ज़ अस्ह़ाब ने जांबाज़ी की ख़ूब दाद दी चुनान्चे, ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो अ़शरए मुबश्शरा में से हैं इस कसरत से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर से तीर रोके कि हाथ बेकार हो गया। ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे ढाल बने खड़े थे। उन की पुश्त पर तीर लग रहे थे मगर अपने आक़ा

---

1 ......इस लिये।

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह बात तुम्हारे हाथ नहीं या उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ दे या उन पर अ़ज़ाब करे कि वोह ज़ालिम हैं। (پ۴،اٰل عمران:۱۲۸) **इ़ल्मिय्या**।

3 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،غزوة أحد،ج۲،ص۴۲۳۔۴۲۹و۴۳۵ملخصاً والسيرة النبوية لابن هشام،غزوة أحد، ص۳۳۱۔۳۳۲ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर झुके हुवे थे ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुदाफ़अ़त में तीर चला रहे थे और कह रहे थे आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान।[1] हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद उन को अपने तरकश में से तीर देते थे और फ़रमाते थे : "फेंकते जाओ" ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बड़े तीर अन्दाज़ थे, उन्हों ने इस क़दर तीर बरसाए कि दो तीन कमानें टूट टूट कर इन के हाथ में रह गईं। वोह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर चमड़े की ढाल की ओट बनाए खड़े थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी गर्दन उठा कर दुश्मनों की त़रफ़ देखते तो अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अ़र्ज़ करते : "आप पर मेरे मां बाप क़ुरबान! गर्दन उठा कर न देखिये ऐसा न हो कि कोई तीर लग जाए। येह मेरा सीना आप के सीने के लिये ढाल है।" ह़ज़रते शम्मास बिन उ़स्मान क़ुरशी मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तल्वार के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुदाफ़अ़त कर रहे थे। दाएं बाएं जिस त़रफ़ से वार होता वोह ढाल की त़रह़ आप को बचा रहे थे यहां तक कि शहीद हो गए। अभी रमक़े ह़यात बाक़ी था[2] कि उन को उठा कर मदीने में ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास ले गए। वहां एक दिन रात ज़िन्दा रह कर वफ़ात पाई। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस दिन ढाल के सिवा मुझे कोई ऐसी चीज़ न सूझी कि जिस से शम्मास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को तश्बीह दूं। इसी त़रह़ सह्ल बिन ह़नीफ़ अन्सारी औसी तीरों के साथ मुदाफ़अ़त कर रहे थे और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमा रहे थे : "सह्ल को तीर दो।" ह़ज़रते क़तादा बिन नो'मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक को बचाने के लिये अपना चेहरा सामने किये हुवे थे। आख़िर कार एक तीर इन की आंख में ऐसा लगा कि डेला रुख़्सार पर आ गिरा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उस की जगह पर रख दिया और यूं दुआ़ फ़रमाई :

---

1 ....इन अल्फ़ाज़ के साथ रिवायत हमें नहीं मिली अलबत्ता बुख़ारी शरीफ़ और सीरते इब्ने हिशाम वग़ैरा में मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया : सा'द! तीर फेंको, तुम पर मेरे मां बाप क़ुरबान!। बुख़ारी शरीफ़ में है :

عن علی رضی اللّٰه عنه قال ما سمعت النبی صلی اللّٰه علیه وسلم جمع ابویه لاحد الا لسعد بن مالك، فانی سمعته یقول یوم احد یا سعد ارم، فداك ابی و امی. (صحیح البخاری، کتاب المغازی، الحدیث:٤٠٥٩، ج٣، ص٣٨)

सीरते इब्ने हिशाम में है : و رمی سعد بن ابی وقاص دون رسول اللّٰه، قال سعد : فلقد رایته یناولنی النبل و هو یقول : ارم، فداك ابی و امی (سیرة ابن هشام، غزوة احد، ص٣٣٢ و المواهب اللدنیه مع شرح الزرقانی، باب غزوة احد، ج٢، ص٤٣١) و اللّٰه تعالٰی اعلم علمه

2 ......कुछ सांसें बाक़ी थीं।

www.dawateislami.net

"ख़ुदाया ! तू क़तादा को बचा जैसा कि इस ने तेरे नबी के चेहरे को बचाया है।" पस वोह आंख दूसरी आंख से भी तेज़ और ख़ूब सूरत हो गई।[1]

असनाए जंग में मुशरिकीन की औ़रतें शुहदाए इ़ज़ाम को मुस्ला करने में मश्ग़ूल थीं। उ़तबा की बेटी हिन्द ने अपने पाउं के कड़े, बालियां और हार ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ातिल वह़्शी को दे दिये और ख़ुद शुहदा के कानों और नाकों से अपने वासिते़ कड़े बालियां और हार बनाए और ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिगर को फाड़ कर चबाया निगल न सकी तो फेंक[2] दिया।[3]

ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर अ़लम बरदारे लश्करे इस्लाम ने भी आक़ाए नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जान फ़िदा कर दी। जब इब्ने क़मिआ लईन हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़त्ल के इरादे से ह़म्ला आवर हुवा तो ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुदाफ़अ़त की मगर शहीद हो गए। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन शुर्ह़बील अ़ब्दरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का दाहिना हाथ कट गया तो उन्हों ने झन्डा बाएं हाथ में ले लिया और वोह कह रहे थे : وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ (الآیہ)[4] फिर बायां हाथ भी कट गया तो झुक कर झन्डे को दोनों बाज़ूओं के साथ सीने से लगा लिया और आयए मज़्कूर ज़बान पर थी। रावी का क़ौल है कि येह आयत बा'द में नाज़िल हुई मगर उस दिन **अल्लाह** तआ़ला ने ब जवाबे क़ौले क़ाइल : "قَدْ قُتِلَ مُحَمَّدٌ" इन की ज़बान पर जारी कर दी थी।[5] ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द इस्लामी झन्डा ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को दिया गया।

जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शा'ब पर चढ़े तो उबय्य बिन ख़लफ़ सामने आ कर कहने लगा : "ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अगर तुम बच गए तो मैं न बचूंगा।" सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया : अगर इजाज़त हो तो हम में से एक इस का फ़ैसला कर दे। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त न दी और ब ज़ाते शरीफ़ ह़ज़रते ह़ारिस बिन सम्मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام، شان عاصم بن ثابت، ص۳۳۲و سبل الهدى والرشاد،غزوة احد،ج٤،ص٢٠٤ و الاصابة في تمييز الصحابة، حرف الشين المعجمة، شماس بن عثمان:۳۹۳۸،ج۳،ص۲۸۸۔ علميه

2 ......सीरते इब्ने हिशाम।

3 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة أُحد،ص۳۳۶۔ علميه

4 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं। (پ٤،ال عمران:١٤٤) **इ़ल्मिय्या**

5 ......तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर लिस्सुयूती़, ब ह़वाला त़बक़ाते इब्ने सा'द।

(الدرالمنثور للسيوطی،سورة آل عمران،تحت الآية:١٤٤ـ١٤٥، ج٢ص٣٣٦) **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

से नेज़ा ले कर उस की गर्दन पर मारा जिस से फ़क़त ख़राश आई और लहू न निकला, उबय मज़्कूर मक्का में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा करता था कि मेरे पास एक घोड़ा है जिसे मैं हर रोज़ आठ या दस सेर पुख़्ता ज़ुर्रा (जुवार) खिलाता हूं इस पर सुवार हो कर आप को क़त्ल करूंगा। आप फ़रमाते : बल्कि मैं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ तुम को क़त्ल करूंगा। जब वोह क़ुरैश में वापस गया तो कहने लगा : **अल्लाह** की क़सम ! मुझे मुह़म्मद ने क़त्ल कर दिया। वोह कहने लगे : तू बे दिल हो गया है। इस ख़राश का कुछ डर नहीं। उस ने कहा कि मक्का में मुझ से मुह़म्मद ने कहा था कि मैं तुझे क़त्ल करूंगा। सो **अल्लाह** की क़सम ! अगर वोह मुझ पर सिर्फ़ थूक दे तो मैं मर जाऊंगा। चुनान्चे, क़ुरैश इस दुश्मने ख़ुदा को मक्के की त़रफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में मक़ामे सरफ़ में मर गया।(1)

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शा'ब के दहाने पर पहुंचे तो ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم मेहरास(2) (कुन्ड) से अपनी ढाल पानी से भर लाए ताकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पियें मगर आप ने उस में बू पाई और न पिया। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इस से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे से ख़ून धोया और सर मुबारक पर गिराया। उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اِشْتَدَّ(3) غَضَبُ اللّٰهِ عَلٰى مَنْ دَمّٰى وَجْهَ نَبِيِّهٖ"-(4)।

मुशरिकीन अब तक तआ़क़ुब में थे चुनान्चे, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अस्ह़ाबे मज़्कूरए बाला के साथ शा'ब में थे तो उन के सुवारों का एक दस्तए बसर कर्दगी ख़ालिद बिन वलीद पहाड़ पर चढ़ा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई कि ख़ुदाया ! येह हम पर ग़ालिब न आएं। पस ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और मुहाजिरीन की एक जमाअ़त ने क़िताल किया यहां तक कि उन को पहाड़ से उतार दिया। यहां रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक चट्टान पर चढ़ने लगे तो नातुवानी और दोहरी ज़िरह के सबब से न चढ़ सके। येह देख कर ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه आप के नीचे बैठ गए और आप उन की पुश्त पर से चढ़ गए। उस वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اوجب طلحة (या'नी ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने वोह काम किया कि जिस से वोह बिहिश्त के मुस्तह़िक़ हो गए।) उस रोज़ ज़ख़्मों की वज्ह से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े ज़ोहर बैठ कर अदा की और मुक़्तदियों ने भी बैठ कर पढ़ी।(5)

1.....सीरते इब्ने हिशाम। (السيرة النبوية لابن هشام،غزوة أحد،ص٣٣٣ملتقطاً۔ علميه)

2......तालाब। 3......सीरते इब्ने हिशाम।

4......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़ब सख़्त है उस पर जिस ने उस के पैग़म्बर का चेहरा ख़ून आलूद कर दिया। 12 मिन्ह

5......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة أحد،ص٣٣٤ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

जब अबू सुफ़्यान ने मैदान से वापस होने का इरादा किया तो सामने की एक पहाड़ी पर चढ़ कर पुकारा : क्या तुम में मुह़म्मद हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस का जवाब न दो। वोह फिर पुकारा : क्या तुम में इब्ने अबी क़ुह़ाफ़ा है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस का जवाब न दो। उस ने फिर पुकार कर कहा : क्या तुम में इब्ने ख़त़्त़ाब है ? जब जवाब न मिला तो कहने लगा कि येह सब मारे गए क्यूंकि अगर ज़िन्दा होते तो ज़रूर जवाब देते। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रहा न गया बोल उठे : "ओ दुश्मने खुदा ! तू ने झूट कहा, वोह सब ज़िन्दा हैं। **अल्लाह** ने तेरे वासित़े वोह बाक़ी रखा है जो तुझे ग़मगीन करेगा। (फ़त्ह़ के दिन) अबू सुफ़्यान बोला :

"اُعْلُ هُبَل" ऐ हुबल ! तू ऊंचा रह।

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने ह़स्बे इरशादे हुज़ूर जवाब दिया :

"اَللّٰهُ اَعْلٰی وَ اَجَلّ" **अल्लाह** ऊंचा और बड़ा है।

अबू सुफ़्यान ने कहा :

"لَنَا الْعُزّٰی وَ لَا عُزّٰی لَكُم" हमारे पास उ़ज़्ज़ा है और तुम्हारे पास उ़ज़्ज़ा नहीं

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने ह़स्बे इरशादे नबवी जवाब दिया :

"اَللّٰهُ مَوْلَانَا وَ لَا مَوْلٰی لَكُم" **अल्लाह** हमारा नासिरो मददगार है और तुम्हारा कोई नासिर नहीं।

अबू सुफ़्यान ने कहा : आज का दिन बद्र के दिन का जवाब है। लड़ाई में कभी जीत कभी हार होती है। तुम अपनी क़ौम में नाक कान कटे पाओगे। मैं ने अपनी फ़ौज को येह हुक्म नहीं दिया मगर इस पर कुछ रन्ज भी नहीं हुवा।(1) इस के बा'द अबू सुफ़्यान येह कह कर वापस हुवा कि हमारा और तुम्हारा मुक़ाबला आयिन्दा साल मक़ामे बद्र में होगा। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमा दिया कि कह दीजिये : हां ! बद्र हमारा और तुम्हारा मौइ़द है।(2) इस त़रह़ जब मुशरिकीन मक्का को लौटे तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को ख़दशा हुवा कि मबादा(3) वोह मदीने का क़स्द करें इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......सह़ीह़ बुख़ारी, ग़ज़्वए उहुद।

2 ......या'नी हां ! बद्र में हमारा और तुम्हारा मुक़ाबला होगा।

3 ......कहीं ऐसा न हो।

www.dawateislami.net

ने अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को दरयाफ़्ते ह़ाल के लिये भेजा और फ़रमा दिया कि अगर वोह ऊंटों पर सुवार हों और घोड़ों को पहलू में ख़ाली लिये जा रहे हों तो समझना कि वोह मक्का को जाते हैं अगर इस का अ़क्स करें तो मदीने का क़स्द रखते हैं। ह़ज़रते मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ख़बर लाए कि वोह ऊंटों पर सुवार घोड़ों को ख़ाली ले जा रहे हैं और मक्का की त़रफ़ मुतवज्जेह हैं।[1] [2](آل عمران، ع ١٦) سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ मुशरिकीन के इसी फ़िरार की त़रफ़ इशारा है जैसा कि पहले आ चुका है।

ख़्वातीने इस्लाम ने भी इस ग़ज़्वे में ह़िस्सा लिया चुनान्चे, ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा और उम्मे सुलैम (वालिदए अनस) رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم पाईंचे चढ़ाए हुवे कि जिस से इन के पाउं की झांझें[3] नज़र आती थीं, मशकें भर भर कर लाती थीं और मुसलमानों को पानी पिलाती थीं। जब मशकें ख़ाली हो जातीं तो फिर भर लातीं और पिलातीं। ह़ज़रते उम्मे सलीत़ (वालिदए ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) भी येही ख़िदमत बजा ला रही थीं। ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا (रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाया) और ह़म्ना बिन्ते जह़्श (उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब की बहन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) पानी पिलातीं और ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करती थीं। ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा नसीबा बिन्ते का'ब अन्सारिय्या رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا (ज़ौजए ज़ैद बिन आ़सिम अन्सारी माज़ुनी) अपने शोहर और दोनों बेटों के साथ मशक ले कर निकलीं। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ चन्द जांबाज़ रह गए तो येह ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंची और तीर और तल्वार से काफ़िरों को रोकती रहीं। जब इब्ने क़मिआ लई़न, ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बढ़ा तो ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और चन्द और मुसलमान मुक़ाबिल हुवे। इन में उम्मे अ़म्मारा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا भी थीं। इब्ने क़मिआ ने इन के कन्धे पर ऐसी ज़र्ब लगाई कि ग़ार पड़ गया। उम्मे अ़म्मार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने भी कई वार किये मगर वोह दुश्मने ख़ुदा दोहरी ज़िरह पहने हुवे था

---

1 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة أحد، الحديث:٤٠٤٣، ج٣، ص٣٤ والمواهب اللدنية وشرح الزرقانى، غزوة أُحد، ج٢، ص٤٤٤ ـ علميه

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डालेंगे। (پ٤، آل عمران:١٥١) **इल्मिय्या**

3 ......पाउं का एक ज़ेवर।

www.dawateislami.net

इस लिये कारगर न हुवे। ह़ज़रते सफ़िया (ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा की बहन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) मुसलमानों की शिकस्त पर उहुद में नेज़ा हाथ में लिये आईं और भागने वालों के मुंह पर मार कर कहती थीं कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को छोड़ कर भागते हो ? फिर भाई की लाश देख कर बड़े इस्तिक़्लाल से "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ" पढ़ा और दुआ़ए मग़्फ़िरत की।

जब मुशरिकीन मैदाने कारज़ार से चले गए तो मदीने की औ़रतें सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की मदद को निकलीं। इन में ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا भी थीं। जब ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो ख़ुशी के मारे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गले लिपट गईं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ख़्मों को धोने लगीं। ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ढाल से पानी गिरा रहे थे। जब फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने देखा कि पानी से ख़ून ज़ियादा निकल रहा है तो चटाई का एक टुकड़ा जला कर लगा दिया जिस से ख़ून[1] बन्द हो गया। फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِشْتَدَّ غَضَبُ اللّٰهِ عَلٰى قَوْمٍ دَمَّوْا وَجْهَ رَسُوْلِهٖ[2] फिर थोड़ी देर बा'द फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ[3] इस के बा'द आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुह़म्मद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का ह़ाल मा'लूम करने के लिये भेजा। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को मक़्तूलीन में ज़ख़्मी पाया। (उन पर तीर, तल्वार और नेज़े के सत्तर ज़ख़्म थे।) उन में फ़क़त़ रमक़े ह़यात बाक़ी था। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने कहा कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है कि मैं देखूं कि तुम ज़िन्दों में हो या मुर्दों में। ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने धीमी आवाज़ से जवाब दिया : "मैं मुर्दों में हूं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मेरा सलाम पहुंचाना और अ़र्ज़ करना कि सा'द बिन रबीअ़ आप से गुज़ारिश करता है कि **अल्लाह** तआ़ला आप को हमारी त़रफ़ से अच्छी से अच्छी जज़ा दे जो उस ने किसी नबी عَلَيْهِ السَّلَام को उन की उम्मत की त़रफ़ से दी है और अपनी क़ौम को मेरा सलाम पहुंचाना और उन

1....सह़ीह़ बुख़ारी, ग़ज़्वए उहुद।

2....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ग़ज़बे शदीद हो गया उस क़ौम पर जिस ने उस के रसूल के चेहरे को ख़ून आलूद कर दिया। **इल्मिय्या**

3....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी क़ौम को बख़्श दे क्यूंकि वोह नहीं जानते। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

से कहना कि अगर कोई (दुश्मन) तुम्हारे पैग़म्बर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तक (ब इरादए क़त्ल) पहुंच जाए और तुम में से एक भी ज़िन्दा हो तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हारा कोई उ़ज़्र न होगा।" ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह कह कर वासिल बह़क़ हो गए। ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुस्लिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में सूरते ह़ाल अ़र्ज़ कर दी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़्म करे उस ने ह़यात व मौत में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ैर ख़्वाही की।"(1)

इस ग़ज़्वे में मुसलमानों में से सत्तर या कुछ कमो बेश शहीद हुवे। इब्ने नज्जार ने इन सब के नाम दिये हैं। जिन में से चार मुहाजिरीन में से और बाक़ी छियासठ अन्सार में से हैं।(2) इख़्तितामे जंग पर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शुहदाए किराम की लाशों पर तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लाश मुबारक को देख कर फ़रमाया कि "ऐसा दर्दनाक मन्ज़र मेरी नज़र से कभी नहीं गुज़रा। ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सातों आस्मानों में शेरे ख़ुदा और शेरे रसूल लिखे गए।" फिर तमाम लाशों पर नज़र डालते हुवे फ़रमाया : اَنَا شَهِيْدٌ عَلٰى هٰۤؤُلَاۤءِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ(3) मैं क़ियामत के दिन इन का शफ़ीअ़ हूं।

बा'दे अज़ां(4) हुक्म दिया कि इन को दफ़्न कर दिया जाए। कपड़े कि क़िल्लत का येह आ़लम था कि उ़मूमन दो दो तीन तीन मिला कर एक ही कपड़े में एक ही क़ब्र में दफ़्न कर दिये गए। जिस को क़ुरआन ज़ियादा याद होता उस को मुक़द्दम किया जाता और इन शुहदा पर उस वक़्त नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी गई बल्कि बे ग़ुस्ल इसी त़रह ख़ून में लिथड़े हुवे दफ़्न कर दिये गए। رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن(5)

---

1 ......इस्तीआ़ब व मवाहिब।....

(صحیح البخاری، کتاب الجهاد والسیر، باب المجن...الخ، الحدیث:۲۹۰۳، ج۲، ص۲۸۳ و المواهب اللدنیة وشرح الزرقانی، غزوة أحد، ج۲، ص۴۴۴۔ ۴۴۶ ملتقطاً والاستیعاب فی معرفة الاصحاب، ۹۳۶۔ سعد بن الربیع بن عمرو الانصاری، ج۲، ص۱۵۷ وسبل الهدی والرشاد، غزوة احد، ج۴، ص۲۰۲۔علمیه)

2 ......وفاء الوفاء للسمہودی، جزء ثانی، ص۱۱۳۔

3 ......सह़ीह़ बुख़ारी, ग़ज़्वए उहुद।

4 ......इस के बा'द।

5 ......وفاء الوفاء للسمهودی، تسمیة شهداء أحد، ج۲، الجزء الثالث، ص۹۳۳۔۹۳۵ ملتقطاً وصحیح البخاری، کتاب المغازی، باب من قتل المسلمین یوم أحد...الخ، الحدیث:۴۰۷۹، ج۳، ص۴۴۔ علمیه

www.dawateislami.net

सय्यिदुश्शुहदा अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक चादर में दफ़्न किया गया मगर चादर कोताह थी अगर मुंह ढांपते तो क़दम नंगे रहते, क़दमों को छुपाते तो मुंह नंगा रहता। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुंह को ढांप दो और क़दमों पर ह़रमल[1] डाल दो चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।[2]

ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब शहीद हुवे तो इन के पास सिर्फ़ एक कम्ली[3] थी उस से सर ढांपते तो पाउं नंगे रहते और पाउं छुपाते तो सर नंगा रहता। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद से सर कम्ली से ढांप दिया गया और पाउं इज़्ख़र[4] घास[5] से छुपा दिये गए।[6]

ह़ज़रते वह्ब बिन क़ाबूस मुज़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इन का भतीजा ह़ारिस बिन उ़तबा बिन क़ाबूस[7] बकरियां चराते मदीने में आए। जब मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए उहुद पर तशरीफ़ ले गए तो इस्लाम ला कर ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवे। ख़ालिद व इकरमा के ह़म्ले के वक़्त ह़ज़रते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बड़ी बहादुरी से लड़े। मुशरिकीन का एक दस्ता आगे बढ़ा तो आप ने तीरों से हटा दिया, दूसरा आया तो उसे तल्वार से भगा दिया, तीसरा आया तो तल्वार से लड़ते लड़ते शहीद हो गए। इन का भतीजा भी इसी त़रह़ लड़ कर शहीद हुवा। मुशरिकीन ने ह़ज़रते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बुरी त़रह़ से मुस्ला कर दिया था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर्चे ज़ख़्मों से निढाल थे मगर दोनों लाशों पर खड़े रहे और ह़ज़रते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : رَضِیَ اللّٰہُ عَنْکَ فَاِنِّیْ عَنْکَ رَاضٍ अल्लाह तुझ से राज़ी हो, मैं तो तुझ से राज़ी हूं।

ह़ज़रते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लह़द में रखा गया तो हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का सर इन ही की चादर से छुपा दिया मगर वोह चादर इन की निस्फ़ साक़[8] तक पहुंची इस

1......एक जंगली पौदे के पत्ते।

2......त़बक़ात इब्ने सा'द। (الطبقات الکبری لابن سعد،الطبقة البدريين من المهاجرين،الطبقة الاولی، ۲ـحمزة بن عبدالمطلب،ج۳،ص۶-۷ ـ علمیه)

3......छोटा कम्बल।

4......फ़ारसी गोरे गियाह। ब हिन्दी गन्धलीन गन्धील। 12 मिन्ह   5......ख़ुश्बूदार घास।

6 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوة اُحد،الحدیث:۴۰۴۷،ج۳،ص۳۵ـ علمیه

7......उसुदुल ग़ाबा, अल इस्तीआ़ब, अत्त़बक़ात लि इब्ने सा'द व दीगर कुतुब में इन का नाम 'अ़क़्बा बिन क़ाबूस' लिखा है। واللّٰہ تعالٰی اعلم ـ इल्मिय्या

8......आधी पिन्डली।

www.dawateislami.net

लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद से पाउं पर ह़रमल[1] डाल दी गई। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ और ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا तमन्ना किया करते थे कि काश ! हम खुदा तआ़ला से मुज़्नी के ह़ाल में मिलें।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जनाज़ा उठाया गया तो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक रोने वाली औ़रत की आवाज़ सुनी और दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह कौन है ? अ़र्ज़ किया गया कि मक़्तूल की बहन या फूफी है। फ़रमाया कि येह क्यूं रोती है या फ़रमाया कि न रोए क्यूंकि जनाज़ा उठने तक फ़िरिश्ते इसे अपने बाज़ूओं से साया करते रहते हैं।[3] तिर्मिज़ी (अबवाबे तफ़्सीरुल क़ुरआन) में ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से मिले फ़रमाया कि तू ग़मगीन क्यूं है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा बाप उहुद के दिन शहीद हो गया और क़र्ज़ व इ़याल छोड़ गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुझे बिशारत न दूं कि खुदा तेरे बाप से किस त़रह़ मिला है ? **अल्लाह** तआ़ला ने कभी शुहदाए उहुद में से किसी से बे पर्दा कलाम नहीं किया मगर तेरे बाप से रू बरू कलाम किया और कहा : मुझ से मांग कि तुझे अ़त़ा करूं। तेरे बाप ने कहा : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तू मुझे ह़याते दुन्यवी अ़त़ा कर ताकि मैं दोबारा तेरी राह में शहीद हो जाऊं। रब عَزَّوَجَلَّ ने कहा : मेरी त़रफ़ से वा'दा हो चुका है कि वोह (मर कर) दुन्या की त़रफ़ न लौटेंगे। पस येह आयत नाज़िल हुई : "وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ" [4] (الآیہ)[5] ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़िज़ाम भी एक कम्ली[6] में दफ़्न हुवे थे पाउं ह़रमल से छुपा दिये गए थे।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीर अन्दाज़ों के अमीर थे जब उन के साथ सिर्फ़ चन्द आदमी रह गए तो मुशरिकीन ने उन पर ह़म्ला किया वोह सब शहीद हो गए मगर अपनी

1....एक जंगली पौदे के पत्ते।

2....त़बक़ात इब्ने सा'द। (الطبقات الکبری لابن سعد،الطبقة الثانية من المهاجرين والانصار،٤٤٢۔وهب بن قابوس المزنی، ج٤،ص١٨٦۔ علمیه)

3 ......بخاری،(باب ما یکون من النیاحۃ علی المیت)......(صحیح البخاری، کتاب الجنائز،٣٤۔باب، الحدیث:١٢٩٣، ج١، ص٤٣٨۔ علمیه)

4....ज़ादुल मआ़द, ग़ज़्वए उहुद। (سنن الترمذی، کتاب التفسیر،باب ومن سورة آل عمران،الحدیث:٣٠٢١،ج٥،ص١٢۔علمیه)

5....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना। (پ٤،آل عمران:١٦٩) **इ़ल्मिय्या**

6....छोटा कम्बल।

www.dawateislami.net

जगह को न छोड़ा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले दुश्मनों पर तीर फेंकते रहे जब तीर ख़त्म हो गए तो नेज़े से काम लेने लगे जब नेज़ा भी टूट गया तो तल्वार से लड़ते रहे यहां तक कि शहीद हो गए। कुफ़्फ़ार ने आप को बुरी त़रह़ से मुस्ला कर दिया था आप के भाई ह़ज़रते ख़व्वात बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमानों से गढ़ा खोद कर आप को दफ़्न कर दिया।[1]

ह़ज़रते अ़म्र बिन जमूह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लंगड़े थे। उन से कहा गया कि आप मा'ज़ूर हैं आप पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं, मगर वोह मुसल्लह़ हो कर निकले और कहने लगे कि मुझे उम्मीद है कि मैं इसी त़रह़ बिहिश्त में टहला करूंगा। फिर क़िब्ला रू हो कर यूं दुआ़ की : "ख़ुदाया ! मुझे शहादत नसीब कर और अपने अहल की त़रफ़ मह़रूम वापस न ला।" चुनान्चे, उहुद में शहीद हो गए।[2]

अस्नाए जंग[3] में एक मुसलमान खड़ा हुवा खजूरें खा रहा था उस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि अगर मैं मारा गया तो कहां होऊंगा ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बिहिश्त में।" येह सुन कर उस ने खजूरें हाथ से फेंक दीं और लड़ता हुवा शहीद हो गया।[4]

शुहदाए किराम की तदफ़ीन के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने को वापस आए। रास्ते में जो औ़रतें अपने अहलो अक़ारिब का ह़ाल दरयाफ़्त करती थीं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बताते जाते थे। आप बनू दीनार की एक औ़रत के बराबर से गुज़रे जिस का शोहर और भाई और बाप उहुद में शहीद हो गए थे, लोगों ने उसे तीनों की शहादत की ख़बर दी तो उस ने कुछ परवा न की और पूछा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? उन्हों ने जवाब दिया कि ब ख़ैर हैं। कहने लगी कि मुझे दिखा दो ताकि मैं आंखों से देख लूं चुनान्चे, उस वक़्त हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ इशारा कर दिया गया। उस ने जब हुज़ूरे अन्वर بِاَبِیْ ھُوَ وَاُمِّیْ को देखा तो पुकार उठी :[5]

---

1 ......त़बक़ात इब्ने सा'द।
(الطبقات الکبری لابن سعد،طبقات البدريين من الانصار،الطبقة الاولى من الانصار،١٣٧ ـ عبدالله بن جبير،ج٣،ص٣٦٢ـ٣٦٣ملخصاً۔علميه)

2 ......इस्तिआ़द इब्ने अ़ब्दुल बर्र। (الاستیعاب فی معرفة الاصحاب، ١٩٢٥ـعمروبن الجموح السلمی،ج٣،ص٢٥٣ـ علميه).

3 ......दौराने जंग।

4 ......बुख़ारी, ग़ज़्वए उहुद। (صحیح البخاری، کتاب المغازی،باب غزوة أحد،الحديث:٤٠٤٦،ج٣،ص٣٥ـ علميه)

5 ......सीरते इब्ने हिशाम।

www.dawateislami.net

"كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ"[1] आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के होते हुवे हर एक मुसीबत हैच है।

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अन्सार के मह़ल्ले बनी अ़ब्दुल अश्हल में पहुंचे तो उन की औ़रतों को देखा कि अपने मक़्तूलीन पर रो रही हैं। आंखों में आंसू भर आए और ज़बाने मुबारक से निकला : " اَمَّا حَمْزَةُ فَلَا بَوَاكِيَ لَهُ " लेकिन ह़म्ज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के लिये कोई रोने वालियां नहीं।

येह सुन कर ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उन औ़रतों के पास गए और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे दौलत पर जा कर अफ़्सोस करो, चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा ही किया। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हम भी शामिले गिर्या हो गईं। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सो गए और हम रो रही थीं, आप ने जाग कर नमाज़े इ़शा पढ़ी और सो गए फिर जो आंख खुली और रोने की आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : क्या तुम अब तक रो रही हो ? येह फ़रमा कर आप ने रोने वालियों को रुख़्सत किया और उन के लिये और उन के अज़्वाज व अवलाद के लिये दुआ़ए ख़ैर फ़रमाई। जब सुब्ह़ हुई तो आप ने नौह़ा से मन्अ़ फ़रमा दिया।[2]

इस वाक़िए़ से आठ बरस के बा'द एक रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस त़रफ़ को निकले और शुहदाए उहुद पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे मुनीफ़[3] पर रौनक़ अफ़रोज़ हो कर येह ख़ुत़बा दिया :[4]

اِنِّیْ فَرَطٌ لَّكُمْ وَاِنِّیْ وَاللّٰهِ لَاَنْظُرُ اِلٰى حَوْضِی الْاٰنَ وَاِنِّیْ اُعْطِيْتُ مَفَاتِحَ خَزَآئِنِ الْاَرْضِ اَوْ مَفَاتِحَ الْاَرْضِ وَاِنِّیْ وَاللّٰهِ مَاۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ اَنْ تُشْرِكُوْا بَعْدِیْ وَلٰكِنْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنَافَسُوْا فِيْهَا.[5]

बेशक मैं तुम्हारे वासित़े फ़र्त़[6] (पेश रू) हूं, अल्लाह की क़सम ! मैं इस वक़्त अपने ह़ौज़ को देख रहा हूं बेशक मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियां या ज़मीन की कुन्जियां अ़त़ा की गई हैं। ख़ुदा की क़सम ! मुझे येह डर नहीं कि तुम मेरे बा'द मुशरिक बन जाओगे लेकिन येह डर है कि तुम दुन्या में फंस जाओ।

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة أحد،ص ٣٤٠۔ علميه

2 ......त़बक़ात इब्ने सा'द।
(الطبقات الكبرى لابن سعد،طبقات البدريين من المهاجرين،الطبقة الاولى،٢۔حمزة بن عبد المطلب،ج٣،ص١٣۔ علميه)

3 ......बुज़ुर्गी वाला बुलन्द रुत्बा मिम्बर।

4 ......بخاری،کتاب الجنائز،باب الصلوٰۃ علی الشہید۔

5 ......صحيح البخاری، كتاب الجنائز،باب الصلاة على الشهيد،الحديث:١٣٤٤،ج١،ص٤٥٢ و كتاب المغازی،باب غزوة احد، الحديث:٤٠٤٢،ج٣،ص٣٣۔ علميه

6 ......فرط آنکہ پیش قوم رود تا اسباب آبخورر ا درست کند۔ منتہی الارب۔١٢منہ

www.dawateislami.net

हिजरत का चौथा साल

ग़ज़्वए बनी नज़ीर :

येह ग़ज़्वा माहे रबीउ़ल अव्वल में हुवा जिस की वज्ह नक़्ज़े अ़हदे साबिक़[1] थी। बनू आ़मिर के दो शख़्स जिन के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़हद था मदीनए मुनव्वरा से अपने अहल की त़रफ़ निकले। रास्ते में अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी उन से मिला, उसे मा'लूम न था कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवार में[2] हैं उस ने दोनों को क़त्ल कर दिया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुत़ालबए दियत के लिये बनू नज़ीर से मदद मांगी। उन्हों ने जवाब दिया कि आप तशरीफ़ रखिये हम बाहम मश्वरा करते हैं। पस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़राते अबू बक्र व उ़मर व अ़ली वग़ैरहुम के साथ उन की एक दीवार तले बैठ गए। यहूद ने बजाए मदद देने के इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि बे ख़बरी में दीवार पर से आप पर चक्की का पाट फेंक दें। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इत्तिलाअ़ कर दी, आप फ़ौरन वहां से मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए और जंग के लिये तय्यार हो कर उन पर ह़म्ला आवर हुवे। बनू क़ुरैज़ा भी बर सरे पैकार[3] थे। आख़िरे कार आप ने बनू नज़ीर को जिला वत़न कर दिया। बदीं शर्त़[4] इन को इजाज़त दी कि जो माल वोह ऊंटों पर ले जा सकें ले जाएं। चुनान्चे, वोह अपने अम्वाल ले कर ख़ैबर में और बा'ज़े अज़्रिआ़त वाक़ेअ़ शाम में चले गए मगर बनू क़ुरैज़ा पर आप ने एह़सान किया कि उन को अम्न दे दिया।[5] जुमादल ऊला में ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ हुवा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बनू मुह़ारिब और बनू सा'लबा के क़स्द से नज्द की त़रफ़ निकले मगर क़िताल वुक़ूअ़ में न आया। इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस ग़ज़्वे को ग़ज़्वए ख़ैबर के बा'द बताया है। मुमकिन है कि येह ग़ज़्वा दो दफ़्आ़ हुवा हो। सलातुल ख़ौफ़ सब से पहले इसी ग़ज़्वे में पढ़ी गई। इस में ग़ौरस बिन ह़ारिस का क़िस्सा पेश आया।

1......पिछले मुआ़हदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी। 2......पनाह में।
3......जंग पर आमादा। 4......इस शर्त़ पर।
5......सह़ीह़ बुख़ारी मअ़ क़स्त़लानी, बाबे ह़दीसे बनी नज़ीर।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی النضیر...الخ، الحدیث:٤٠٢٨، ج٣، ص٢٦ و کتاب المغازی، باب غزوة ذات الرقاع، ج٣، ص٥٧، ٥٨ و ارشادالساری لشرح صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی النضیر..الخ، ج٩، ص٨٢-٨٣ملتقطاً والمواهب اللدنیة و شرح الزرقانی، حدیث بنی النضیر، ج٢، ص٥٠٧-٥٠٨ وغزوة ذات الرقاع، ص٥٢٢، ٥٣١، ٥٣٢۔ علمیه)

www.dawateislami.net

हिजरत का पांचवां साल

ग़ज़्वए दूमतुल जन्दल :(1)

माहे रबीउ़ल अव्वल में ग़ज़्वए दूमतुल जन्दल पेश आया मगर क़िताल वुक़ूअ़ में न आया। शा'बान में ग़ज़्वए मुरैसीअ़ या ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लिक़ हुवा। जिस में बनू अल मुस्त़लिक़ मग़्लूब हुवे। क़िस्सए इफ़्क या'नी ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर मुनाफ़िक़ों ने जो तोहमत लगाई थी वोह इसी ग़ज़्वे से वापसी पर पेश आया।

ग़ज़्वए अह़ज़ाब

माहे ज़ी क़ा'दा में ग़ज़्वए अह़ज़ाब या ग़ज़्वए ख़न्दक़ वाक़ेअ़ हुवा। बनू नज़ीर जिला वत़न हो कर ख़ैबर में आ रहे थे, उन्हों ने मक्का में जा कर क़ुरैश को मुसलमानों से लड़ने पर उभारा और दीगर क़बाइले अ़रब (ग़त़फ़ान, बनू सुलैम, बनू मुर्रह, अश्जअ़, बनू असद वग़ैरा) को भी अपने साथ मुत्तफ़िक़ कर लिया। बनू क़ुरैज़ा पहले शामिल न थे मगर हुयय बिन अख़्त़ब ने आख़िरे कार उन को भी अपने साथ मिला लिया। ग़रज़ क़ुरैश व यहूद व क़बाइले अ़रब बारह हज़ार की जमइय्यत के साथ मदीने की त़रफ़ बढ़े। चूंकि इस ग़ज़्वे में तमाम क़बाइले अ़रब व यहूद शामिल थे इस वासित़े इस ग़ज़्वे को ग़ज़्वए अह़ज़ाब (ह़िज़्ब ब मा'ना त़ाइफ़ा) कहते हैं। कुफ़्फ़ार की तय्यारी की ख़बर सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया। ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि खुले मैदान में लड़ना मस्लह़त नहीं, मदीना और दुश्मन के दरमियान एक ख़न्दक़ खोद कर मुक़ाबला करना चाहिये। सब ने इस राए को पसन्द किया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्तूरात(2) और बच्चों को शहर के महफ़ूज़ क़ल्ओं में भेज दिया और ब ज़ाते शरीफ़ तीन हज़ार की जमइय्यत के साथ शहर से निकले और सामी त़रफ़ में(3) सल्अ़ की पहाड़ी को पसे पुश्त रख कर ख़न्दक़ खोदी। इस वासित़े इस ग़ज़्वे को ग़ज़्वए ख़न्दक़ भी कहते हैं। ख़न्दक़ खोदने में ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भी ब ग़रज़े तरग़ीब शामिल थे। कुफ़्फ़ार ने एक माह मुह़ासरा क़ाइम रखा। वोह ख़न्दक़ को उ़बूर न कर सकते थे। इस लिये दूर से तीर और पथ्थर बरसाते थे। एक रोज़ क़ुरैश के कुछ सुवार अ़म्र बिन अ़ब्द वग़ैरा एक जगह से जहां से इत्तिफ़ाक़न अ़र्ज़(4) कम रह गया था, ख़न्दक़ को उ़बूर कर गए। अ़म्र मज़्कूर ने मुबारिज़(5) त़लब किया। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ आगे बढ़े और तल्वार से उस

---

1 ......येह मौज़अ़ दिमश्क़ व मदीने के दरमियान दिमश्क़ से सात मन्ज़िल पर है। 12 मिन्ह

2 ......ख़वातीन।

3 ......ऊंचाई की जानिब में।

4 ......चौड़ाई।

5 ......मुक़ाबले पर आने वाला।

www.dawateislami.net

का फ़ैसला कर दिया। येह देख कर बाक़ी हमराही भाग गए। आख़िरे कार कुरैज़ा व कुरैश में फूट पड़ गई और[1] बा वुजूद सर्दी के मौसिम के एक रात बादे सर सर[2] का ऐसा तूफ़ान आया कि ख़ैमों की तनाबें[3] उखड़ गईं और घोड़े छूट गए। खाने के देगचे चूल्हों पर उलट उलट जाते थे। इम्तिदादे मुहासरा के सबब से[4] सामाने रसद[5] भी ख़त्म हो चुका था, इस लिये कुरैश व दीगर क़बाइल मुहासरा उठाने पर मजबूर हो गए और बनू कुरैज़ा अपने क़ल्ओं में चले आए इस ग़ज़्वे में शिद्दते क़िताल के वक़्त अ़स्र व मग़रिब और ब क़ौले बा'ज़ ज़ोहर भी क़ज़ा हो गई थी। शुहदा की ता'दाद छे थी जिन में औस के सरदार हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه भी थे इन की रगे अकहल[6] तीर लगने से कट गई। मस्जिद में रुफ़ैदा अन्सारिय्या का ख़ैमा था जो ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करती थीं। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इलाज के लिये उसी ख़ैमे में भेज दिया मगर वोह इस ज़ख़्म से जांबर न हुवे और एक माह के बा'द इन्तिक़ाल फ़रमा गए। इस ग़ज़्वे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुतअ़द्दिद मो'जिज़े ज़ुहूर में आए।

ग़ज़्वए बनी कुरैज़ा

जब आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए ख़न्दक़ से वापस तशरीफ़ लाए तो नमाज़े ज़ोहर के बा'द बनू कुरैज़ा से जंग का हुक्म आया। बनू कुरैज़ा नक़्ज़े अ़हद कर के[7] अह़ज़ाब के साथ मिल गए थे। इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तीन हज़ार की जमइय्यत के साथ रवाना हुवे और पच्चीस दिन उन को मुहासरे में रखा। आख़िरे कार उन्हों ने हज़रते सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ह़कम[8] मन्ज़ूर कर लिया। हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह फ़ैसला किया कि उन के मर्द क़त्ल किये जाएं। औरतें और बच्चे गिरिफ़्तार कर लिये जाएं और उन का मालो अस्बाब ग़नीमत समझा जाए। इस पर आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "قَضَيْتَ بِحُكْمِ اللّٰهِ" तू ने **अल्लाह** के हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला किया है। (इस्तिस्नाए बाब, 20 आयत 10)

चुनान्चे, ऐसा ही किया गया। मर्दों की ता'दाद छे सो या सात सो थी। इसी साल रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का निकाह हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से हुवा। जिन का क़िस्सा कुरआने करीम में मज़्कूर है।

1......कुफ़्फ़ार का बड़े ज़ोरो शोर से मदीने पर ह़म्ला करना, मुख़्लिसों का साबित क़दम रहना और मुनाफ़िक़ों से कलिमाते निफ़ाक़ का सरज़द होना और तूफ़ाने बाद से लश्करे कुफ़्फ़ार का बरबाद होना येह सब कुछ सूरए अह़ज़ाब में मज़्कूर है। 12 मिन्ह

2......झक्कड़, आंधी।

3......ख़ैमों की रस्सियां।

4......मुहासरे की मुद्दत तवील हो जाने के सबब से।

5......ख़ूराक, खाने का सामान।

6......बाज़ू की एक रग जिस की फ़सद की जाती है।

7......अ़हद तोड़ कर।

8......फ़ैसला करने वाला।

www.dawateislami.net

हिजरत का छटा साल

बैअ़ते रिज़्वान और सुल्हे हुदैबिय्या

माहे जुमादल ऊला में ग़ज़्वए बनी लिह़यान पेश आया मगर मुक़ाबला न हुवा। माहे ज़ी क़ा'दा में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक हज़ार चार सो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के साथ मदीनए मुनव्वरा से उ़मरह के इरादे से निकले, ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا साथ थीं। जब आप ज़ुल हुलैफ़ा में पहुंचे जो अहले मदीना का मीक़ात है, आप ने उ़मरह का एह़राम बांधा और क़ुरबानियों को तक़्लीद व इश्आ़र[1] किया। यहां से आप ने ह़ज़रते बुस्र बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ुरैश की त़रफ़ बत़ौरे जासूस भेजा। जब आप उ़स्फ़ान के क़रीब ग़ुदैर अस्त़ात़ में पहुंचे तो आप का जासूस ख़बर लाया कि क़ुरैश ह़ुलफ़ा[2] समेत मक्का से बाहर मक़ामे बल्दह़ में जम्अ़ हैं और आमादा हैं कि आप को मक्के में दाख़िल न होने दें येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से मश्वरा किया कि ह़ुलफ़ा के अहलो इ़याल को गिरिफ़्तार किया जाए ताकि अगर वोह उन की मदद को आएं तो हमें तन्हा क़ुरैश से मुक़ाबला करना पड़े।

ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप बैतुल्लाह के क़स्द से निकले हैं आप का इरादा किसी से लड़ाई का नहीं आप बैतुल्लाह का रुख़ करें जो हमें इस से रोकेगा हम उस से लड़ेंगे।" आप ने इस राए को पसन्द फ़रमाया और आगे बढ़ने का हुक्म दिया। जब आप हुदैबिय्या के क़रीब सनिय्यतुल मरार[3] में पहुंचे जहां से उतर कर क़ुरैश के पास पहुंच जाते, तो आप की नाक़ा क़स्वा बैठ गई हर चन्द उठाने की कोशिश की गई मगर न उठी आप ने फ़रमाया : "क़स्वा नहीं रुकी और न रुकना इस की आ़दत है बल्कि ख़ुदाए ह़ाबिसुल फ़ील[4] ने इसे रोक लिया है। क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान

---

1 ......क़ुरबानी के जानवरों की गर्दन में कोई शै बत़ौरे अ़लामत डालना जिस से मा'लूम हो कि येह क़ुरबानी के लिये हैं।

2 ......ह़लीफ़ों या'नी मददगारों समेत।

3 ......सीरते रसूले अ़रबी के बा'ज़ नुस्ख़ों में यहां "तीनतुल मरा" और बा'ज़ में "सनीयतुल मुर्रह" लिखा है लेकिन मवाहिबे लदुन्निय्या, सीरते इब्ने हिशाम, मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल और दीगर कुतुब में "सनिय्यतुल मरार" है लिहाज़ा इसे किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "सनिय्यतुल मरार" लिखा है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

4 ......क़िस्सए अस्ह़ाबे फ़ील की त़रफ़ इशारा है। या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने फ़ील को मक्के में दाख़िल होने से रोक दिया था ताकि जानो माल का नुक़्सान और बैतुल्लाह की बे ह़ुरमती न हो और उस के ह़बीबे पाक पर ग़ुलामी का धब्बा न लगे इसी क़िस्म के उ़मूर के लिये ख़ुदा तआ़ला ने क़स्वा को मक्के में दाख़िल होने से रोक दिया। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

है, कुरैश मुझ से किसी ऐसी ह़ाजत का सुवाल न करेंगे जिस से वोह हुरुमातिल्लाह[1] की ता'ज़ीम करें मगर मैं वोह उन्हें अ़ता कर दूंगा।'' इस के बा'द आप ने क़स्वा को झिड़क दिया और वोह उठ खड़ी हुई और आप मुड़ कर हुदैबिय्या[2] की परली त़रफ़[3] एक कूएं पर उतरे जिस में पानी कम था। मौसिमे गर्मा था पानी जल्दी ख़त्म हो गया और आप की ख़िदमते अक़्दस में प्यास की शिकायत आई। आप ने पानी की एक कुल्ली कूएं में डाल दी जिस से पानी ब कसरत हो गया और छागल[4] में अपना दस्ते मुबारक रख दिया तो आप की उंगलियों से चश्मों की त़रह़ पानी निकलने लगा। इन दोनों मो'जिज़ों का ज़िक्र इस किताब में आगे आएगा।

इसी अस्ना में बुदैल[5] बिन वरक़ा ख़ुज़ाई अपनी क़ौम के चन्द अश्ख़ास के साथ ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा। कहने लगा कि क़बाइले का'ब बिन लुअय और आ़मिर बिन लुअय हुदैबिय्या के आबे कसीर पर उतरे हुवे हैं और उन के साथ दूधैल[6] ऊंटनियां और औ़रतें बच्चों समेत हैं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया: ''हम किसी से लड़ने नहीं आए बल्कि सिर्फ़ उ़मरह के इरादे से आए हैं। लड़ाई ने कुरैश को कमज़ोर कर दिया है और नुक़्सान पहुंचाया है अगर वोह चाहें तो हम एक मुद्दत के लिये इन से जंग का इल्तवा[7] कर देते हैं बाक़ी लोगों से हम खुद समझ लेंगे। अगर मैं ग़ालिब आ जाऊं और ब सूरते ग़लबा वोह मेरी इत़ाअ़त में आना चाहें तो ऐसा कर सकते हैं अगर उन्हों ने इन्कार कर दिया तो क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है मैं उन से ज़रूर लड़ता रहूंगा यहां तक कि मैं अकेला रह जाऊं अल्लाह तआ़ला अपने दीन की ज़रूर मदद करेगा।'' बुदैल ने अ़र्ज़ किया कि मैं आप का येह इरशाद उन तक पहुंचा दूंगा। चुनान्चे, वोह कुरैश में आ कर कहने लगा कि मैं उस मर्द (रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का क़ौल सुन आया हूं अगर चाहो तो गुज़ारिश कर दूं। उन में से एक नादान बोला कि हम उस की किसी बात के सुनने के लिये तय्यार नहीं। एक साह़िबुर्राए[8] ने कहा कि

---

1 ......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़्मत वाली अश्या। 2 ......हुदैबिय्या मक्का से 9 मील के फ़ासिले पर है। 12 मिन्हू

3 ......दूसरी त़रफ़।

4 ......मिट्टी का वोह बरतन जिस में मुसाफ़िर पानी भर कर रखते हैं।

5 ......बुदैले मज़्कूर फ़त्हे मक्का के दिन ईमान लाया। क़बीलए ख़ुज़ाआ़ ने ज़मानए जाहिलिय्यत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दादा अ़ब्दुल मुत्तलिब के अ़हद से मुवालात किया था इसी की रू से बुदैल का इस मौक़अ़ पर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होना ब ग़रज़े ख़ैर ख़्वाही था। 12 मिन्हू

6 ......बहुत दूध देने वाली। 7 ......जंग को मुल्तवी।

8 ......अच्छा मश्वरा देने वाला, अ़क़्लमन्द।

www.dawateislami.net

बयान कीजिये जो उस से सुन आए हो। इस पर बुदैल ने बयान कर दिया। उ़रवा बिन मसऊ़द ने उठ कर कहा कि उस ने एक नेक अम्र पेश किया है वोह क़बूल कर लो और मुझे उस के पास जाने दो। चुनान्चे, उ़रवा ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और बुदैल की त़रह़ कलाम किया और वोही जवाब पाया। उ़रवा ने येह अल्फ़ाज़ (मैं उन से ज़रूर लड़ता रहूंगा) सुन कर अ़र्ज़ किया : "ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) बताइये अगर आप ने अपनी क़ौम को बिल्कुल हलाक कर दिया। क्या आप ने अ़रब में किसी की बाबत सुना है कि उस ने आप से पहले अपने अहल को हलाक कर दिया हो। और अगर कुरैश ग़ालिब आ गए तो आप उन से अम्न में न रहेंगे क्यूंकि **अल्लाह** की क़सम ! मैं सरदारे (मक्का) हूं और अख़्लात़ को देखता हूं जो इस लाइक़ हैं कि आप को छोड़ कर भाग जाएं।"[1] ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर कहा : [2]امصص بظر اللات क्या हम आप को छोड़ कर भाग जाएंगे !" इस पर उ़रवा बोला कि येह कौन है ? जवाब मिला : अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। पस वोह ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं मुख़ात़िब हुवा : "क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है अगर मुझ पर तेरा एह़सान[3] न होता जिस का बदला मैं ने नहीं दिया तो मैं तुझे जवाब देता।" फिर उ़रवा आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा। जब वोह आप से कलाम करता तो (ह़स्बे आ़दते अ़रब) आप की रीश मुबारक[4] को छूता। उस वक़्त मुग़ीरा बिन शा'बा ख़ुद सर पर तल्वार हाथ में लिये आप के सर मुबारक पर खड़े थे। जब उ़रवा अपने हाथ रीश मुबारक की त़रफ़ बढ़ाता तो मुग़ीरा ब ग़रज़े ता'ज़ीम नियामे शमशीर उस के हाथ पर मारते और कहते कि रीश मुबारक से हाथ हटाओ। उ़रवा ने आंख उठा कर पूछा कि येह कौन है ? जवाब मिला कि (तेरा भतीजा) मुग़ीरा बिन शा'बा। उ़रवा ने येह सुन कर कहा : ओ बे वफ़ा ! क्या मैं तेरी दियत[5] में कोशिश न करता था ?

---

1 ......अख़्लात़ जम्अ़ है ख़ल्त़ की या'नी मिले हुवे मुराद येह कि आप के अस्ह़ाब में ऐसे भी हैं जो वक़्त पड़ने पर आप को छोड़ कर भाग जाएंगे।

2 ......अ़रबी में "امصص بظر الام" गाली है ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बजाए उम के लात कह दिया। इस में उ़रवा और उस के मा'बूद की तह़क़ीर है। वोह लात को ख़ुदा की बेटी कहा करते थे, लिहाज़ा उ़रवा पर चोट है कि लात अगर ख़ुदा की बेटी है तो उस के लिये वोह चाहिये जो औ़रतों में है। 12 मिन्ह

3 ......एक दफ़्आ़ उ़रवा को दियत देनी पड़ी थी इस में ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उ़रवा को मदद दी थी येह उस की त़रफ़ इशारा है। 12 मिन्ह

4 ......दाढ़ी मुबारक।

5 ......मुग़ीरा और सक़ीफ़ के तेरह आदमी तह़ाइफ़ ले कर मुक़ौक़िस वालिये मिस्र के हां गए थे जो इन्आ़म मिला वोह तेरह ने ले लिया और मुग़ीरा को कुछ न दिया वापसी पर रास्ते में वोह तेरह शराब पी कर सो गए। मुग़ीरा ने सब को क़त्ल कर दिया और माल ले कर मदीने में ह़ाज़िर हुवा और इस्लाम लाया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तेरा इस्लाम हम क़बूल करते हैं मगर माल में दख़्ल नहीं देते। इस पर फ़रीक़ैन में लड़ाई हुई। उ़रवा ने दियत दे कर सक़ीफ़ से सुल्ह़ कर ली। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

फिर उ़रवा अस्ह़ाबे नबी की त़रफ़ देखता रहा। उस ने वापस जा कर अपनी क़ौम से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के अवसाफ़ बयान किये और कहा कि एक नेक अम्र जो पेश किया जा रहा है उसे क़बूल कर लो। फिर हुलैस बिल अ़लक़मा ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा उस ने भी वापस जा कर कहा कि मेरी राए है कि मुसलमानों को बैतुल्लाह से न रोका जाए। हुलैस के बा'द मिकरज़ आया वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम कर ही रहा था कि ख़त़ीबे क़ुरैश सुहैल बिन अ़म्र क़ुरैशी आ़मिरी ह़ाज़िर हुवा आप ने ब त़रीक़े तफ़ावुल(1) फ़रमाया कि अब तुम्हारा काम कुछ सह्ल(2) हो गया। गुफ़्तगूए सुल्ह़ के बा'द क़रार पाया कि दस साल तक लड़ाई बन्द रहे। सुहैल ने अ़र्ज़ किया कि मुआ़हदा तह़रीर में आ जाए। पस नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कातिब या'नी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को त़लब फ़रमाया।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) (अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से) : लिख ! بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

सुहैल : "الرحمن" मैं नहीं जानता क्या है बल्कि लिख بِاسۡمِكَ اللّٰھُمَّ जैसा कि तू पहले लिखा करता था।

सह़ाबए ह़ाज़िरीन : अल्लाह की क़सम ! بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم के सिवा और न लिख।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) : लिख ! (3) بِاسۡمِكَ اللّٰھُمَّ (बा'दे ता'मील) लिख ھٰذا ما قاضٰی علیہ محمد رسول اللّٰہ

सुहैल : (बा'दे किताबत) **अल्लाह** की क़सम ! अगर हम जानते कि तू **अल्लाह** का रसूल है तो तुझे बैतुल्लाह से मन्अ़ न करते और न तुझ से लड़ाई करते (अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से) बल्कि लिख मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह और लफ़्ज़ रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को मिटा दे।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) (सुहैल से) : अल्लाह की क़सम ! मैं बेशक **अल्लाह** का रसूल हूं अगर तुम मेरी तक्ज़ीब कर रहे हो (तो इस से मेरी रिसालत में फ़र्क़ नहीं आता) (अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से) इसे मिटा दो !

1......अच्छी फ़ाल लेने के त़ौर पर। 2......आसान।

3......रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुहैल से जो मुवाफ़क़त की इस में बड़ी मस्लह़त थी जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को उस वक़्त मा'लूम न हुई। येह ह़क़ीक़त में बड़ी फ़त्ह़ थी। येही सुहैल ह़ज्जतुल वदाअ़ में ह़ाज़िर है हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुरबानी देने के बा'द अपना सरे मुबारक मुंडा रहे हैं और सुहैल आप के बाल मुबारक ले कर अपनी आंखों पर रख रहा है। इलावा अज़ीं بِاسۡمِكَ اللّٰھُمَّ और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم के एक ही मा'ना हैं। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **:** मैं इसे नहीं मिटाऊंगा।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **:** मुझे इस लफ़्ज़ की जगह बताओ।

(हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बता देते हैं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लफ़्ज़ रसूलुल्लाह को मिटा कर अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इस की जगह मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह लिखवाते हैं) आगे लिख ! शर्त़ येह है कि क़ुरैश हमारे वासित़े बैतुल्लाह का रास्ता छोड़ देंगे और हम इस का त़वाफ़ करेंगे।

सुहैल : **अल्लाह** की क़सम ! हम न छोड़ेंगे। अ़रब येह कहेंगे कि दबाव डाल कर हमें इस पर राज़ी किया गया है, हां आयिन्दा साल ऐसा हो जाएगा। (चुनान्चे, ऐसा ही लिखा गया) दीगर शर्त़ येह[1] है कि हम में से जो कोई आप के पास आए ख़्वाह वोह आप के दीन पर हो आप उसे हमारी त़रफ़ वापस कर देंगे।

सह़ाबए ह़ाज़िरीन : (मुतअ़ज्जिब हो कर) سُبْحٰنَ اللّٰه जो मुसलमान हो कर आए वोह मुशरिकीन की त़रफ़ किस त़रह़ वापस किया जाएगा ?

(इसी अस्ना में सुहैल का बेटा अबू जन्दल पा ब ज़न्जीर[2] अस्फ़ल मक्का से (क़ैदख़ाने में से निकल कर) यहां आ जाता है और अपने तईं[3] मुसलमानों के ह़वाले करता है।)

सुहैल : या मुह़म्मद ! पहले मैं इसी पर आप से मुह़ाकमा करता हूं[4] कि आप इसे मेरे ह़वाले कर दें।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **:** हम अभी सुल्ह़ नामा की किताबत से फ़ारिग़ नहीं हुवे।

सुहैल : **अल्लाह** की क़सम ! तब मैं भी आप से कभी किसी बात पर मसालह़त न करूंगा।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **:** इसे मेरे पास रहने दो।

सुहैल : मैं आप को इस की इजाज़त नहीं देता।

1.....इस शर्त़ में भी मुवाफ़क़त बिनाए बर मस्लह़त थी और वोह इस सुल्ह़ के समरात व फ़वाइद थे इस से कुफ़्फ़ार को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़ालात सुनने और देखने का मौक़अ़ मिल गया और वोह इस्लाम की त़रफ़ माइल हो गए। चुनान्चे, हुदैबिय्या और फ़त्ह़े मक्का के दरमियान कुछ लोग इस्लाम लाए मगर फ़त्ह़े मक्का के बा'द गुरौह दर गुरौह इस्लाम में दाख़िल हुवे। 12 मिन्ह

2....पाउं में ज़न्जीर समेत। 3....अपने आप को। 4....या'नी इसी सुल्ह़नामे के तह़्त फ़ैसले का त़लबगार हूं।

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** हां इजाज़त दे दो।

सुहैल : मैं ऐसा नहीं करने का।

मिकरज़ : (सुहैल से) हम ने तेरे वासित़े इजाज़त दे दी।

अबू जन्दल : ऐ मा'शरे मुस्लिमीन ![1] मैं मुसलमान हो कर मुशरिकीन के ह़वाले किया जा रहा हूं क्या तुम मेरी तक्लीफ़ नहीं देखते हो?

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** अबू जन्दल ! सब्र कर और सवाब की उम्मीद रख हम अ़हद नहीं तोड़ते **अल्लाह** तेरे वासित़े ख़लासी की कोई सबील पैदा कर देगा। (येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ उठ कर अबू जन्दल के साथ हो लिये और कह रहे थे वोह तो मुशरिकीन हैं किसी मुशरिक को क़त्ल करना ऐसा है जैसा किसी कुत्ते को क़त्ल कर डाला।)

इब्ने सा'द और बैहक़ी वग़ैरा ने लिखा है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब हुदैबिय्या में पहुंचे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ुरैश को अपने इरादे से मुत्त़लअ़ करने के लिये ह़ज़रते ख़िराश बिन उमय्या ख़ुज़ाई[2] को अपने ऊंट पर सुवार कर के उन की त़रफ़ भेजा। इकरमा बिन अबू जह्ल ने उस ऊंट की कूंचें काट दीं और ख़िराश को क़त्ल करने लगे मगर अह़ाबीश[3] और अह़लाफ़ ने रोक दिया। ख़िराश ने ख़िदमते अक़्दस में वापस आ कर येह माजरा कह सुनाया। ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को एक ख़त़ दे कर अशराफ़े क़ुरैश की त़रफ़ भेजा और फ़रमाया कि मक्के में कमज़ोर मुसलमानों को अ़न क़रीब फ़त्ह़ की बिशारत देना। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़ुरैश को मक़ामे बल्दह़ में देखा कि मुसलमानों को मक्का से रोकने पर मुत्तफ़िक़ हैं।

अबान बिन सईद उमवी ने जो अब तक ईमान न लाए थे ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पनाह दी और अपने साथ घोड़े पर सुवार कर के मक्का में ले आए। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अशराफ़े क़ुरैश को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम पहुंचाया और नामे मुबारक पढ़

---

1 ......ऐ मुसलमानों के गुरौह।

2 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "फ़िराश बिन उमय्या" लिखा है येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि त़बक़ाते इब्ने सा'द, मुस्नदे अह़मद बिन ह़म्बल और दीगर कुतुब में "ख़िराश बिन उमय्या" है लिहाज़ा हम ने येही लिखा है। **इल्मिय्या**

3 ......अह़ाबीश वोह क़ुरैशी जिन्हों ने ह़बशी औ़रतों से निकाह़ किये या फिर जबले ह़बशा के पास आपस में अ़हदो पैमान करने की वज्ह से अह़ाबीश कहलाए। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

कर एक एक को सुनाया मगर वोह रू बराह[1] न हुवे। जब सुल्ह़ नामा मुकम्मल हो गया और वोह इस के निफ़ाज़ के मुन्तज़िर थे तो फ़रीक़ैन के एक शख़्स ने दूसरे फ़रीक़ के एक शख़्स पर पथ्थर या तीर मारा इस से लड़ाई छिड़ गई। इस लिये फ़रीक़ैन ने फ़रीक़े मुख़ालिफ़ के आदमियों को बत़ौरे यर-ग़माल अपने पास रोक लिया। चुनान्चे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुहैल बिन अ़म्र को और मुशरिकीन ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को (मअ़ दस और के) ज़ेरे ह़िरासत रखा। इस अस्ना में येह ग़लत़ ख़बर उड़ी कि ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मक्के में क़त्ल कर दिये गए। इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बबूल के दरख़्त के नीचे मुसलमानों से मौत पर बैअ़त ली जिस का ज़िक्र किताबुल्लाह में है, इस को बैअ़तुर्रिज़्वान कहते हैं। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه चूंकि मक्का में थे इस लिये हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दायां हाथ बाएं हाथ पर मार कर इन को बैअ़त के शरफ़ में शामिल किया। जैसा कि इस किताब में दूसरी जगह बित्तफ़्सील मज़्कूर है। जब क़ुरैश को इस बैअ़त की ख़बर पहुंची तो वोह डर गए और मा'ज़िरत कर के सुल्ह़ कर ली और त़रफ़ैन के अस्ह़ाब छोड़ दिये गए।

जब सुल्ह़ से फ़ारिग़ हुवे तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया कि उठो ! क़ुरबानियां दो और सर मुंडाओ ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार ऐसा फ़रमाया मगर कोई न उठा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से येह तज़्किरा किया तो उन की तदबीर से येह मुश्किल ह़ल हो गई जैसा कि आगे आएगा।

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हु़दैबिय्या से मदीने में वापस तशरीफ़ लाए तो अबू जन्दल की त़रह़ अबू बसीर सक़फ़ी ह़लीफ़े बनी ज़ोह्रा मक्का से भाग कर आप की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा। क़ुरैश ने दो शख़्स उस के तआ़क़ुब में भेजे। हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़स्बे मुआ़हदा अबू बसीर को उन दोनों के ह़वाले कर दिया। जब वोह ज़ुल हु़लैफ़ा में पहुंचे तो अबू बसीर ने उन में से एक से देखने के बहाने से तल्वार ली और उस का काम तमाम कर दिया। दूसरा भाग कर ख़िदमते अक़्दस में आया अबू बसीर भी उस के पीछे आ पहुंचा और आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप का वा'दा पूरा हो चुका। आप ने फ़रमाया : पूरा नहीं हुवा तू जहां चाहता है चला जा। इस लिये अबू बसीर साहि़ले बह़्र पर चला गया। अबू

---

1 ......आमादा।

www.dawateislami.net

जन्दल भी भाग कर ज़ूमरा के क़रीब अबू बसीर से आ मिला और रफ़्ता रफ़्ता एक जमाअ़त उन के साथ हो गई।

अबू जन्दल ने कुरैश का शामी रास्ता रोक लिया। कुरैश तंग आ कर हुज़ूर रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से त़ालिबे रह़म हुवे और वापसी की शर्त़ भी उड़ा दी। पस हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू बसीर व अबू जन्दल के नाम एक नामा भेजा। अबू बसीर उस वक़्त क़रीबुल मौत था वोह नामए मुबारक उस के हाथ ही में था कि इन्तिक़ाल कर गया और अबू जन्दल साथियों समेत मदीने में ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो गया और मदीने ही में रहा यहां तक कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हद में मुल्के शाम में शहीद हो गया।(1) (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِين)

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक साह़िब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की मौजूदगी में फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि **अल्लाह** तआ़ला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है ! इस पर लोग मुतअ़ज्जिब हुवे क्यूंकि बज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे, एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के घर गए और उन की बेवा से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे। (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج۴۰، ص۴۱۲۔۴۱۳ ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब अज़ान शुरूअ़ हो तो बातें और दीगर काम काज मौक़ूफ़ कर के इस का जवाब देना चाहिये। हां अगर मस्जिद की त़रफ़ जा रहा है या वुज़ू कर रहा है तो चलते चलते और वुज़ू करते करते जवाब दे सकता है। जब पे दर पे अज़ानों की आवाज़ें आ रही हों तो पहली अज़ान का जवाब दे देना काफ़ी है, अगर सब अज़ानों का जवाब दे तो बेहतर है।

अज़ान व जवाबे अज़ान के तफ़्सीली अह़कामात की मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला फ़ैज़ाने अज़ान (32 सफ़ह़ात) ज़रूर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

---

(1)......ह़ालाते मज़्कूरा के लिये देखो ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब। (المواهب اللدنية وشرح الزرقانی،امر الحديبية،ج۳، ص۱۷۰۔

۲۲٦ملخصاً وغزوة المريسيع، ص۳-۱٦ و غزوة الخندق...الخ،ص۱۷-٦٤ و غزوة بنی قريظة،ص٦٥-۱۰۰،سبل الهدى والرشاد، غزوة دومة الجندل، ج٤، ص۳٤۲۔ علميه)

www.dawateislami.net

हिजरत का सातवां साल

वालियाने मुल्क को दा'वते इस्लाम

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ज़िल हिज्जा सिने 6 हिजरी में) हुदैबिय्या से वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने शुरूए सिने 7 हिजरी में वालियाने मुल्क(1) को दा'वते इस्लाम के ख़ुतूत इरसाल फ़रमाए जिन का ज़िक्र किसी क़दर तफ़्सील से यहां दर्ज किया जाता है :

﴾1﴿.......जो नामए मुबारका क़ैसरे रूम के नाम लिखा गया उस के अल्फ़ाज़ येह थे :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ من محمد عبد اللّٰه و
رسوله الٰى هِرَقْلَ عظيم الروم سلام على من اتبع
الهدٰى امّا بعد فانى ادعوك بدعاية الاسلام اسلم
تسلم يؤتك اللّٰه اجرك مرتين فان توليت فان عليك
اثم الاريسين ويٰاهل الكتٰب تعالوا الٰى كلمة سواء
بيننا وبينكم الا نعبد الا اللّٰه ولا نشرك به شيئًا ولا
يتخذ بعضنا بعضًا اربابًا من دون اللّٰه فان تولّوا فقولوا
اشهدوا بانا مسلمون۔ (اللّٰه رسول محمد)

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है। **अल्लाह** के बन्दे और रसूल मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ से हिरक़्ल अमीरे रूम के नाम। सलाम उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। अम्मा बा'द ! मैं तुझ को दा'वते इस्लाम की त़रफ़ बुलाता हूं तू इस्लाम ला, सलामत रहेगा, ख़ुदा तुझ को दोहरा सवाब देगा। अगर तू ने रूगर्दानी की तो तेरी रिआ़या का गुनाह तुझ पर होगा। और ऐ अहले किताब ! आओ ऐसी बात की त़रफ़ जो हम में और तुम में यक्सां है कि हम ख़ुदा के सिवा किसी की पूजा न करें और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हम में से कोई **अल्लाह** को छोड़ कर दूसरे को ख़ुदा न बनाए। अगर वोह नहीं मानते तो कह दो : तुम गवाह रहो कि हम मानने वाले हैं। (اللّٰه رسول محمد)

1......मुख़्तलिफ़ ममालिक के बादशाह।

www.dawateislami.net

रूमियों और ईरानियों में देर से लड़ाई चली आती थी। ईरानियों ने मुल्के शाम फ़त्ह़ कर लिया था। हिरक़्ल की येह ह़ालत हो गई थी कि उसे अपने पायए तख़्त[1] क़ुसत़नत़ीनिय्या पर ईरानी ह़म्ले का अन्देशा हो गया था। इस ह़ालत में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कलामे पाक में ख़बर दी कि रूमी जो शाम में मग़्लूब हो गए हैं चन्द साल में वोह ईरानियों पर ग़ालिब आएंगे। येह पेशीनगोई सुल्ह़े हुदैबिय्या से नव साल पेशतर हुई थी और ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ पूरी हुई। चुनान्चे, हुदैबिय्या के दिन मुसलमानों को रूमियों की फ़त्ह़ की ख़बर पहुंची। हिरक़्ल इस फ़त्ह़ के शुक्राने के लिये ह़िम्स से बैतुल मुक़द्दस में प्यादा गया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना नामए मुबारक ह़ज़रते देह़्या बिन ख़ुलेफ़ा कल्बी के हाथ रवाना किया था। ह़ज़रते देह़्या ने वोह ख़त़ हिरक़्ल के गवर्नर शाम ह़ारिस ग़स्सानी को बसरे में दे दिया। उस ने क़ैसर के पास बैतुल मुक़द्दस में भेज दिया। क़ैसर ने हुक्म दिया कि इस मुद्दइये नबुव्वत की क़ौम का कोई आदमी यहां मिले तो लाओ। इत्तिफ़ाक़ येह कि अबू सुफ़्यान जो उस वक़्त तक ईमान न लाए थे, ताजिर उन क़ुरैश के साथ ग़ज़्ज़ा[2] में आए हुवे थे। क़ैसर का क़ासिद उन सब को बैतुल मुक़द्दस में ले गया। अबू सुफ़्यान[3] का बयान है कि जब हम को क़ैसर के पास ले गए तो क्या देखते हैं कि वोह ताज पहने हुवे दरबार में तख़्त पर बैठा है और उस के गिर्दा गिर्द[4] उमराए रूम हैं। उस ने अपने तर्जुमान से कहा कि इन (क़ुरैशियों) से पूछो कि तुम में ब लिह़ाज़े नसब उस मुद्दइये नबुव्वत से कौन अक़्रब[5] है? (क़ौले अबू सुफ़्यान) मैं ने कहा कि मैं अक़्रब हूं। क़ैसर ने रिश्ता दरयाफ़्त किया। मैं ने कहा : वोह मेरा चचेरा भाई है। क़ाफ़िले में उस वक़्त अ़ब्दे मनाफ़ की अवलाद में मेरे सिवा कोई न था। क़ैसर के हुक्म से मुझे नज़्दीक बुलाया गया और मेरे साथियों को मेरी पीठ पीछे बिठाया गया। फिर क़ैसर ने अपने तर्जुमान से कहा कि इस के साथियों से कह दो कि मैं इस (अबू सुफ़्यान) से उस मुद्दइये नबुव्वत का ह़ाल दरयाफ़्त करता हूं। अगर येह झूट बोले तो कह देना कि येह झूट बोलता है। अबू सुफ़्यान का क़ौल है कि अगर मुझे येह डर न होता कि मेरे साथी मेरा झूट औरों से नक़्ल किया करेंगे तो मैं इस का ह़ाल बयान करने में झूट बोलता मगर इस डर से मैं सच ही बोला। इस के बा'द क़ैसर व अबू सुफ़्यान में ब ज़रीअ़ए तर्जुमान येह गुफ़्तगू हुई :

1......दारुल हुकूमत 2......येह शहर अक़्साए शाम में मिस्र की त़रफ़ वाक़ेअ़ है। 12 मिन्ह

3......सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल उ़लूम व किताबुल्जिहाद।

4......इर्द गिर्द। 5......ज़ियादा क़रीबी।

www.dawateislami.net

क़ैसर :........उस मुद्दइये नबुव्वत का नसब तुम में कैसा है ?

अबू सुफ़्यान :........वोह शरीफ़ुन्नसब है।

क़ैसर :........क्या इस से पहले तुम में से किसी ने नबुव्वत का दा'वा किया है ?

अबू सुफ़्यान :........नहीं।

क़ैसर :........क्या उस के ख़ानदान में कोई बादशाह गुज़रा है ?

अबू सुफ़्यान :........नहीं।

क़ैसर :........उस के पैरू अकाबिर हैं या कमज़ोर लोग ?

अबू सुफ़्यान :........कमज़ोर लोग हैं।

क़ैसर :........उस के पैरू ज़ियादा हो रहे हैं या कम होते जा रहे हैं ?

अबू सुफ़्यान :........ज़ियादा हो रहे हैं।

क़ैसर :........क्या उस की पैरूओं में से कोई उस के दीन से नाख़ुश हो कर उस दीन से फिर भी जाता है ?

अबू सुफ़्यान :........नहीं।

क़ैसर :........क्या दा'वए नबुव्वत से पहले तुम्हें उस पर झूट बोलने का गुमान हुवा है ?

अबू सुफ़्यान :........नहीं।

क़ैसर :........क्या वोह अ़हद शिकनी करता है ?

अबू सुफ़्यान :........नहीं। लेकिन अब जो हमारा उस के साथ मुआ़हदा सुल्ह़ है, देखिये इस में क्या करता है।

क़ैसर :........क्या तुम ने कभी उस से जंग भी की ?

अबू सुफ़्यान :........हां।

क़ैसर :........जंग का नतीजा क्या रहा ?

अबू सुफ़्यान :........कभी हम ग़ालिब रहे और कभी वोह।

क़ैसर :........वोह तुम्हें क्या ता'लीम देता है ?

अबू सुफ़्यान :........कहता है कि एक ख़ुदा की इ़बादत करो, ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराओ तुम्हारे आबाओ अज्दाद जो कुछ कहते हैं वोह छोड़ दो, नमाज़ पढ़ो, सच बोलो, पाक दामन रहो, सिलए रेह़्म करो।

www.dawateislami.net

इस गुफ़्तगू के बा'द क़ैसर ने तर्जुमान की वसातत से अबू सुफ़्यान से कहा कि तुम ने इस को शरीफ़ुन्नसब बताया, पैग़म्बर अपनी क़ौम के अशराफ़ में मबऊ़स हुवा करते हैं। तुम ने कहा कि हम में से किसी ने उस से पहले नबुव्वत का दा'वा नहीं किया। अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि उस ने पहले के क़ौल का इक़्तिदा किया है। तुम ने कहा कि उस के ख़ानदान में कोई बादशाह नहीं गुज़रा। अगर ऐसा होता तो मैं ख़याल करता कि वोह अपने आबाई मुल्क का त़ालिब है। तुम ने कहा कि दा'वए नबुव्वत से पहले वोह कभी मुत्तहिम बिल किज़्ब नहीं हुवा।[1] इस से मैं ने पहचान लिया कि ऐसा नहीं हो सकता कि वोह लोगों पर तो झूट न बांधे और ख़ुदा पर झूट बांधे। तुम ने बताया कि कमज़ोर लोग उस के पैरू हैं। पैग़म्बरों के पैरू (ग़ालिबन) कमज़ोर लोग ही हुवा करते हैं। तुम ने ज़िक्र किया कि उस के पैरू ज़ियादा हो रहे हैं। दीनो ईमान का येही ह़ाल होता है यहां तक कि वोह तमाम व कामिल हो जाता है। तुम ने बताया कि उस के पैरूओं में से कोई मुर्तद[2] नहीं होता। ईमान का येही ह़ाल है कि जब उस की बिशाशत व लज़्ज़त दिल में सरायत कर जाती है तो वोह दिल से नहीं निकलता। तुम ने कहा कि वोह अ़हद शिकनी नहीं करता। पैग़म्बर अ़हद नहीं तोड़ा करते। तुम ने बयान किया कि जंग में कभी हम ग़ालिब रहते हैं और कभी वोह। पैग़म्बरों का येही ह़ाल होता है कि आ'दाए दीन के सबब उन को इब्तिला[3] हुवा करता है मगर आख़िरे कार फ़त्ह़ पैग़म्बरों ही को होती है। तुम ने उस की ता'लीमात बयान कीं। अगर तुम सच कहते हो तो मेरे क़दम गाह तक उस का क़ब्ज़ा हो जाएगा। मैं जानता था कि वोह आने वाला है मगर मुझे येह ख़याल न था कि वोह तुम में से होगा। अगर मुझे यक़ीन होता कि उस तक पहुंच जाऊंगा तो मैं उस की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने की तक्लीफ़ गवारा करता और अगर मैं उस के पास होता तो उस के पाउं धोता। इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामए मुबारक पढ़ा गया। इसे सुन कर उमराए रूम ने बड़ा शोरो शग़ब बरपा किया अबू सुफ़्यान और उस के हमराही रुख़्सत कर दिये गए।

क़ैसर ह़िम्स[4] में चला आया और उमराए रूम को क़स्रे शाही में जम्अ़ कर के हुक्म दिया कि दरवाज़े बन्द कर दिये जाएं। फिर यूं ख़िताब किया : "ऐ गुरौहे रूम ! अगर तुम फ़लाहो रुश्द के त़ालिब हो और चाहते हो कि तुम्हारा मुल्क बर क़रार रहे तो उस नबी पर ईमान लाओ। येह सुन कर वोह ख़राने वह़शी[5] की त़रह़ दरवाज़ों की त़रफ़ भागे मगर उन को बन्द पाया। जब हिरक़्ल ने उन की नफ़रत देखी और उन के ईमान से मायूस हो गया तो कहा कि उन को मेरे पास

1....झूट की तोहमत नहीं लगाई गई। 2....ईमान लाने के बा'द फिर जाना। 3....आज़्माइश, इम्तिह़ान।
4....येह शहर दिमश्क़ व ह़लब के वस्त़ में वाक़ेअ़ है। 12 मिन्हू 5....वह़्शी गधे।

www.dawateislami.net

लाओ और उन से यूं ख़िताब किया कि मैं तुम्हें आज़्माता था कि तुम अपने दीन में कैसे मुस्तह़्कम हो, सो मैं ने तुम को मुस्तह़्कम पाया। येह सुन कर इन्हों ने क़ैसर को सजदा किया और उस से खुश हो गए।[1]

﴾2﴿.....ख़ुस्रू परवेज़ बिन हुरमुज़ बिन नौशीरवां शाहे ईरान को यूं[2] लिखा गया :

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم من محمد رسول اللّٰہ الٰی
کسرٰی عظیم فارس سلام علی من ا تبع الھدٰی
و اٰمن باللّٰہ و رسولہ و شھد ان لا الہ الا اللّٰہ وحدہ
لا شریك لہ و ان محمدا عبدہ و رسولہ ادعوك
بدعایة اللّٰہ عز وجل فانی رسول اللّٰہ الی الناس کلھم
لینذر من کان حیًّا و یحقّ ا لقول علی الکفر ین
اسلم تسلم فان تولیت فعلیك اثم المجوس. (اللّٰہ رسول محمد)

शुरूअ़ खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है। **अल्लाह** के रसूल मुह़म्मद की त़रफ़ से किस्रा अमीरे फ़ारस के नाम। सलाम उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की और **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाया और गवाही दी कि कोई मा'बूदे ब ह़क़ नहीं मगर खुदा एक जिस का कोई शरीक नहीं और येह कि मुह़म्मद उस का बन्दा और रसूल है। मैं तुझे दा'वते खुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाता हूं क्यूंकि मैं तमाम लोगों की त़रफ़ खुदा का रसूल हूं ताकि डरावे उस को जो ज़िन्दा हो और साबित हो जाए कलिमए अ़ज़ाब काफ़िरों पर तू इस्लाम ला, सलामत रहेगा। पस अगर तू ने न माना तो मजूसियों का गुनाह तुझ पर है। (اللّٰہ رسول محمد)

अ़लाक़ा बह़रैन किस्रा के ज़ेरे फ़रमान था। वहां उस की त़रफ़ से मुन्ज़िर बिन सावी अ़ब्दी तमीमी नाइबुस्सल्त़नत था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना नामए मुबारक ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा क़रशी सहमी को दे कर हुक्म दिया[3] कि इसे ह़ाकिमे बह़रैन के पास ले जाओ। ह़ाकिमे मौसूफ़ ने वोह नामा ख़ुसरो परवेज़ के पास भेज दिया। जब वोह पढ़ा गया तो परवेज़ ने उसे फाड़ डाला। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

---

1 .....صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب ـ ٦، الحدیث:٧، ج١، ص١٠ـ١٢ ملخصاً علمیہ

2 ....मवाहिबे लदुन्निय्या। 3 ......सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल उ़लूम व किताबुल जिहाद।

www.dawateislami.net

परवेज़ और उस के मुआ़विनीन पर बद दुआ़ फ़रमाई कि "वोह हर त़रह़ पारा पारा किये जाएं।" चुनान्चे, ऐसा ही ज़ुहूर में आया, उन की सल्त़नत जाती रही, दौलत व इक़्बाल ने मुंह फेर लिया और वोह हलाक हो गए। इस बरबादी की कैफ़िय्यत यूं है[1] कि परवेज़ ने नामए मुबारक को चाक करने के बा'द अपने गवर्नर यमने बाज़ान को लिखा कि अपने दो दिलैर आदमियों को हिजाज़ में भेजो ताकि उस मुद्दइये नबुव्वत को पकड़ कर मेरे पास लाएं। बाज़ान ने अपने क़हरमान[2] बाबुवया और एक शख़्स ख़ुर ख़ुसरा नाम को इस ग़रज़ के लिये मदीने में भेजा और बाबुवया से कह दिया कि उस मुद्दइये नबुव्वत से कलाम करना और उस के ह़ाल से इत्तिलाअ़ देना। येह दोनों बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे। बाबुवया ने ह़क़ीक़ते ह़ाल अ़र्ज़ की। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कल मेरे पास आओ। जब वोह दूसरे दिन ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो आप ने फ़रमाया कि फ़ुलां महीने की फ़ुलां रात को ख़ुदा ने किस्रा को क़त्ल कर दिया और उस के बेटे शीरवया को उस पर मुसल्लत़ कर दिया। वोह बोले आप येह क्या फ़रमा रहे हैं क्या हम अपने बादशाह (बाज़ान) को येह इत्तिलाअ़ कर दें? हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : हां! मेरी त़रफ़ से उसे येह ख़बर दे दो और कह दो कि मेरा दीन और मेरी हुकूमत किस्रा के मुल्क की इन्तिहा तक पहुंच जाएगी और (बाज़ान से) येह भी कह दो कि अगर तुम इस्लाम लाओ तो तुम्हारा मुल्क तुम ही को दिया जाएगा। दोनों ने वापस आ कर बाज़ान से सारा माजरा कह सुनाया। इस पर कुछ अ़र्सा न गुज़रा था कि शीरवया का ख़त़ बाज़ान के नाम आया जिस में लिखा था कि मैं ने अपने बाप परवेज़ को क़त्ल कर डाला क्यूंकि वोह अशराफ़े फ़ारस का क़त्ल जाइज़ समझता था। इस लिये तुम लोगों से मेरी इत़ाअ़त का अ़हद लो और उस मुद्दइये नबुव्वत को जिस के बारे में किस्रा ने तुम को कुछ लिखा था बुरा भला मत कहो। येह देख कर बाज़ान मुसलमान हो गया और ईरानी जो यमन में थे सब ईमान ले आए। इस के छे माह बा'द शीरवया भी मर गया। फ़ारस का आख़िरी बादशाह यज़्-दज-रिद बिन शहरयार बिन शीरवया ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हद में क़त्ल हुवा।[3]

1......इसाबा, तर्जमा जिद्दे जमीरा।　　2......वकील

3......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،واما مكاتبته الى الملوك وغيرهم،ج٥،ص١٤ وصحيح البخارى،كتاب المغازى، بـاب كتاب النبى الى كسرى وقيصر،الحديث:٤٤٢٤،ج٣،ص١٥١ والاصابة فى تمييز الصحابة،الجيم بعدها الدال والراء،١٢٧٨۔جد جميرة،ج١،ص٦٣٢ملخصاً ومدارج النبوة،مضمون نامه كه كسرى...الخ،ج٢،ص٢٢٤ والكامل فى التاريخ،ذكرمقتل يزدجر بن شهريار،ج٣،ص١٤-١٨۔ علميه

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....अस्ह़मा नजाशी शाहे ह़बशा को जो नामए मुबारक[1] लिखा गया उस के अल्फ़ाज़ येह हैं :

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم من محمد رسول اللّٰه الى
النجاشي ملك الحبشة سلام انت فانی احمد اليك
اللّٰه الذی لا اله الا هو الملك القدوس السلام المؤمن
المهيمن و اشهد ان عيسی ابن مريم روح اللّٰه و
كلمته القٰها الی مريم البتول الطيبة الحصينة حملت
بعيسی فخلقه من روحه و نفخه كما خلق اٰدم بيدهٖ
و انی ادعوك الی اللّٰه وحده لا شريك له و الی موالات
علی طاعته و ان تتبعنی و تؤمن بالذی جآء نی
فانی رسول اللّٰه اليك و انی ادعوك و جنودك الی
اللّٰه عز و جل و قد بلغت و نصحت فاقبلوا نصيحتی
و السلام علی من اتبع الهدٰی.

शुरूअ़ खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है। **अल्लाह** के रसूल मुह़म्मद की त़रफ़ से नजाशी शाहे ह़बशा के नाम। तू सलामती वाला है मैं तेरे पास खुदा का शुक्र करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूदे ब ह़क़ नहीं वोह बादशाह है, पाक ज़ात, सलामत सब ऐ़ब से अमान देने वाला, निगहबान और मैं गवाही देता हूं कि ई़सा इब्ने मरयम रूहुल्लाह हैं और **अल्लाह** का कलिमा जिसे उस ने अलक़ा किया मरयम बतूल त़य्यिबा अफ़ीफ़ा[2] की त़रफ़ वोह बारवर हुई[3] ई़सा के साथ पस खुदा ने उसे पैदा किया अपनी रूह़ से और उस के फूंकने से जैसा कि पैदा किया आदम को अपने हाथ से और मैं तुझे बुलाता हूं **अल्लाह** की त़रफ़ जो وَحْدَہٗ لَا شَرِیْک है और उस की इत़ाअ़त पर मुवालात[4] की त़रफ़ और येह कि तू मेरी पैरवी करे और ईमान लाए उस चीज़ पर जो मुझे मिली क्यूंकि मैं तेरी त़रफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं और मैं

1 ......ہدایۃ الحیاری لابن قیم۔مواہب لدنیہ۔

2 ......इ़फ़्फ़त वाली या'नी पाक बाज़ औ़रत। 3 ......ह़ामिला हुई। 4 ......बाहमी इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद।

www.dawateislami.net

तुझ को और तेरे लश्करों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाता हूं। मैं ने पहुंचा दिया और नसीह़त कर दी तुम मेरी नसीह़त को क़बूल करो। والسلام علی من اتبع الهدیٰ (الله رسول محمد)

जब येह नामए मुबारक ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी के हाथ अस्ह़मा नजाशी को मिला तो उस ने उसे अपनी आंखों पर रखा और तख़्त से उतर कर ज़मीन पर बैठ गया फिर अपने इस्लाम का ए'लान कर दिया और नामए मुबारक को हाथी दांत के डब्बे में रख लिया और येह जवाब लिखा :

بسم اللّٰه الر حمن الرحیم الی محمد رسول اللّٰه من
النجاشی اصحمة سلام علیك یارسول اللّٰه و رحمة اللّٰه
وبر کات اللّٰه الذی لا اله الا هو الذی هدا نی للاسلام
اما بعد فقد بلغنی کتابك یارسول اللّٰه فما ذکرت من
امر عیسی فو رب السمآء والارض ان عیسٰی علیه الصلٰوة
و السلام لا یزید علٰی ما ذکرت ثفروقاً انه کما ذکرت
وقد عرفنا ما بعثت به علینا فاشهد انك رسول اللّٰه صادقاً
مصد قاً وقد بایعتك وبایعت ابن عمك واسلمت علی
یدیه للّٰه رب العٰلمین وقد بعثت الیك ابنی وان شئت
اتیتك بنفسی فعلت فانی اشهد ان ما تقوله حق و
السلام علیك ورحمة اللّٰه وبر کاته. (مہر)

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है। अल्लाह के रसूल मुह़म्मद के नाम नजाशी अस्ह़मा की त़रफ़ से। या रसूलल्लाह आप पर सलाम और अल्लाह की रह़मत और अल्लाह की बरकतें जिस के सिवा कोई मा'बूदे ब ह़क़ नहीं। उस ने मुझे इस्लाम की त़रफ़ हिदायत की। अम्मा बा'द ! या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मुझे आप का नामा मिला, आप ने जो ह़ज़रते ईसा (علیه الصلٰوة و السلام) का ह़ाल बयान किया है सो आस्मानो ज़मीन के रब की क़सम कि ह़ज़रते ईसा (علیه الصلٰوة و السلام) इस से ज़र्रा भी ज़ियादा नहीं हैं वोह बेशक ऐसे ही हैं जैसा कि आप ने ज़िक्र किया है और हम ने पहचान लिया जो

www.dawateislami.net

कुछ आप ने हमारी त़रफ़ लिख कर भेजा है। पस मैं गवाही देता हूं कि आप **अल्लाह** के रसूले सादिक़ मुसद्दिक़ हैं और मैं ने आप की बैअ़त की और आप के चचेरे भाई की बैअ़त की और उस के हाथ पर **अल्लाह** रब्बुल आ़लमीन के लिये इस्लाम लाया और मैं आप की ख़िदमत में अपने बेटे को भेज रहा हूं। अगर आप चाहते हैं कि मैं ख़ुद हाज़िर हो जाऊं तो तय्यार हूं। पस मैं गवाही देता हूं कि आप जो कुछ फ़रमाते हैं ह़क़ है। (मोहर) والسلام عليك و رحمة الله و بركاته

अस्ह़मा को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी के हाथ एक और नामा भेजा था कि उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا (अमीरे मुआ़विय्या की बहन) को निकाह़ का पैग़ाम दो और मुहाजिरीन में से जो अब तक ह़बशा में हैं उन को यहां पहुंचा दो। इरशादे मुबारक की ता'मील की गई। ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन सई़द बिन अल आ़स رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को अपना वकील मुक़र्रर किया और नजाशी ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का निकाह़ उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कर दिया और महर जो चार सो दीनार था वोह भी ख़ुद ही अदा कर दिया। उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का पहला ख़ावन्द उ़बैदुल्लाह बिन जह़श असदी था दोनों हिजरत कर के ह़बशा में चले आए थे मगर उ़बैदुल्लाह नसरानी हो कर मर गया था। इस त़रह़ उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बेवा रह गई थीं।

नजाशी ने ह़ज़रते जा'फ़र[1] त़य्यार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और दीगर मुहाजिरीने ह़बशा को एक जहाज़ में मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ रवाना किया। इस के बा'द दूसरे जहाज़ में अपने बेटे को मुसाह़िबों के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक ख़त़ दे कर भेजा जिस में अपने ईमान लाने का ह़ाल लिखा था। पहला जहाज़ सह़ीह़ व सालिम मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंच गया। उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ैबर में तशरीफ़ रखते थे मगर दूसरा जहाज़ समन्दर में डूब गया और सुवार सब हलाक हो गए।

1....जब ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजरत की ख़बर पहुंची तो वोह और उन के दो भाई और उन की क़ौम के बावन या तिरपन आदमी यमन से हिजरत कर के एक किश्ती में मदीनए मुनव्वरा को रवाना हुवे, मगर बादे मुख़ालिफ़ के सबब से उन की किश्ती साह़िले ह़बशा पर जा लगी इस लिये वोह ह़बशा में ह़ज़रते जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ ठहरे हुवे थे। इस सफ़र में वोह भी ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ मदीने चले आए। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

अस्हमा नजाशी ने सिने 9 हिजरी में वफ़ात पाई। आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के जनाज़े की नमाज़ ग़ाइबाना पढ़ी।[1] रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरे नजाशी को भी जो अस्हमा के बा'द बादशाह हुवा दा'वते इस्लाम का ख़त़ लिखा था उस दूसरे नजाशी के ईमान का ह़ाल मा'लूम नहीं।[2]

﴾4﴿.....मुक़ौक़िस वालिये मिस्र हिरक़्ल क़ैसरे रूम का बाज गुज़ार[3] था। ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ के हाथ उस को येह नामए मुबारका भेजा गया :

بسم الله الرحمن الرحيم من محمد عبد الله و
رسوله الى المقوقس عظيم القبط سلام على من
اتبع الهدٰى اما بعد فانى ادعوك بدعاية الاسلام
اسلم تسلم يوتك الله اجرك مرتين فان توليت
فعليك اثم القبط يٰاهل الكتٰب تعالوا الى كلمة
سوآء بيننا و بينكم الا نعبد الا الله و لا نشرك به
شيئا و لا يتخذ بعضنا بعضا اربابا من دون الله فان
تولوا فقولوا اشهدوا بانا مسلمون.

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है। अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल मुह़म्मद की त़रफ़ से मुक़ौक़िस अमीरे क़िब्त़ के नाम। सलाम उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। अम्मा बा'द ! मैं बुलाता हूं तुझ को दा'वते इस्लाम की त़रफ़। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। देगा तुझ को अल्लाह सवाब दोहरा। अगर तू ने न माना तो तुझ पर होगा गुनाह क़िब्त़ियों का। ऐ अहले किताब ! तुम आओ त़रफ़ ऐसी बात की जो यक्सां है हम में और तुम में कि हम इबादत न करें मगर अल्लाह की और शरीक न ठहराएं उस के साथ

1......फ़िक़्हे ह़नफ़ी में ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा जाइज़ नहीं। तफ़्सील के लिये "नुज़्हतुल क़ारी शर्हे सह़ीह़ बुख़ारी" जिल्द अव्वल, सफ़्ह़ा 754 पर इसी ह़दीस की शर्ह़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

2......المواهب اللدنية و شرح الزرقانى، واما مكاتبته الى الملوك وغيرهم، ج٥، ص١٩ـ٢٦ ملخصاً۔ علميه

3......मह़सूल देने वाला।

www.dawateislami.net

किसी को और न बनाए हम से कोई दूसरे को रब सिवाए **अल्लाह** के सो अगर वोह न मानें तो कहो तुम गवाह रहो कि हम हैं मानने वाले। (رسول اللّٰه محمد)

हुस्ने इत्तिफ़ाक़ से अस्ल नामए मुबारक एक फ़्रान्सीसी सय्याह़ को अह़मीम के गिर्जा में एक राहिब से मिला। उस ने ख़रीद कर सुल्त़ान अ़ब्दुल मजीद ख़ां मर्ह़ूम वालिये सल्त़नते उ़स्मानिय्या की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या पेश किया और अब कुस्त़नत़िन्या में मह़फ़ूज़ है। उस के दो फ़ोटो इस वक़्त हमारे ज़ेरे नज़र हैं। हम ने इसे तबर्रुकन मुत़ाबिक़े अस्ल लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ सत़रवार नक़्ल किया है। इस के अख़ीर में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मोहर सब्त़ है। जिस की ऊपर की सत़र में **अल्लाह** दूसरी में **रसूल** और तीसरी में **मुह़म्मद** है। दीगर ख़ुत़ूत़ के आख़िर में भी येही मोहरे मुबारक सब्त़ थी। येह नामए मुबारक मुक़ौक़िस को सिकन्दरिया में मिला। उस ने हाथी दांत के डब्बे में रख लिया और उस पर अपनी मोहर लगा दी और जवाब में अ़रबी ज़बान में यूं लिखवाया :

بسم اللّٰه الرحمن الرحيم لمحمد بن عبد اللّٰه من المقوقس عظيم

القبط سلام عليك اما بعد فقد قرات كتابك فهمت ماذكرت فيه وما

تدعو اليه وقد علمت ان نبيا بقي وكنت اظن انه يخرج بالشام وقد

اكرمت رسولك وبعثته اليك بجاريتين لهما مكان فى القبط عظيم

وبكسوة واهديت اليك بغلة لتركبها والسلام عليك.[1] (مهر)

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़ूम वाला है। मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह के नाम मुक़ौक़िस अमीरे क़िब्त़ की त़रफ़ से सलाम आप पर। अम्मा बा'द ! मैं ने आप का ख़त़ पढ़ा और समझ गया जो कुछ आप ने इस में ज़िक्र किया है और जिस की त़रफ़ आप बुलाते हैं। मुझे मा'लूम था कि एक नबी आने वाला है। मेरा गुमान था कि वोह शाम में ज़ाहिर होगा। मैं ने आप के क़ासिद की इ़ज़्ज़त की और आप की त़रफ़ दो कनीज़ें जिन की क़िब्त़ियों में बड़ी इ़ज़्ज़त है और कपड़े भेजता हूं और आप की सुवारी के लिये एक ख़च्चर हदिय्या भेजता हूं। (مهر) و السلام عليك

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى،واما مكاتبته الى الملوك وغيرهم،ج٥،ص٢٧۔٣٣ملتقطاً ۔ علميه

www.dawateislami.net

येह दो कनीज़ें मारिया और सीरीन नाम सगी बहनें थी। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को दा'वते इस्लाम दी तो मारिया ने फ़ौरन और सीरीन ने कुछ तवक़्क़ुफ़ के बा'द कलिमए शहादत पढ़ा इस वासित़े ह़ज़रते मारिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़रमे नबवी में दाख़िल कर ली गईं और सीरीन ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित शाइर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इनायत हुई। ख़च्चर का नाम दुलदुल था। ह़ज़रते ह़ात़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मुक़ौक़िस का ह़ाल जो ज़िक्र किया तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस ख़बीस को मुल्क की त़म्अ़ ने इस्लाम से मह़रूम रखा ह़ालांकि उस का मुल्क बाक़ी न रहेगा। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा।

﴾5﴿.....हौज़ा बिन अ़ली अल ह़नफ़ी साह़िबे यमामा की त़रफ़ यूं लिखा गया है :

بسم الله الرحمن الرحيم من محمد رسول الله الى
هَوذة بن على سلام على من اتبع الهدى واعلم ان
دينى سيظهر الى منتهى الخف و الحافر فاسلم تسلم
اجعل لك ما تحت يديك. (الله رسول محمد)

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है। **अल्लाह** के रसूल मुह़म्मद की त़रफ़ से हौज़ा बिन अ़ली के नाम। सलाम उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। तुझे मा'लूम रहे कि मेरा दीन अ़न क़रीब इस ह़द तक पहुंचेगा जहां तक कि ऊंट और ख़च्चर जाते हैं तू इस्लाम ला, सलामत रहेगा। मैं तेरा मुल्क तुझ को दे दूंगा। (الله رسول محمد)

जब ह़ज़रते सलीत़ बिन अ़म्र आमिरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ येह नामए मुबारक हौज़ा के पास ले गए तो उर्कू़न[1] दिमश्क़ जो उमराए नसारा में से था उस वक़्त ह़ाज़िर था। हौज़ा ने मज़्मून नामा बयान कर के उस से आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत दरयाफ़्त किया। उर्कू़न ने कहा : तुम उस की दा'वत क़बूल क्यूं नहीं करते ? हौज़ा ने कहा : मैं अपनी क़ौम का बादशाह हूं अगर मैं उस का पैरू बन गया तो मुल्क जाता रहेगा। उर्कू़न ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! अगर तू उस का पैरू बन जाए तो वोह ज़रूर तेरा मुल्क तुझ को दे देगा। तेरी बेहबूदी उस के इत्तिबाअ़ में है। वोह

1......सरदार।

www.dawateislami.net

बेशक नबिय्ये अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है जिस की बिशारत ह़ज़रते ईसा इब्ने मरयम عَلَيْهِ السَّلَام ने दी है और येह बिशारत हमारे पास इन्जील में मौजूद है। बई हमा हौज़ा ईमान न लाया। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हौज़ा हलाक हो गया और उस का मुल्क जाता रहा। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़त्हे मक्का से वापस तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर ख़बर दी की हौज़ा मर गया।[1]

﴾6﴿.....क़ैसरे रूम की त़रफ़ से ह़ारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी ह़ुदूदे शाम का गवर्नर था, ग़ौत़ए दिमश्क़ उस का पायए तख़्त[2] था। उस को येह नामए मुबारक भेजा गया :

بسم الله الرحمن الرحيم من محمد رسول الله الى

الحارث بن ابى شمرسلام على من اتبع الهد ى

وامن به وصدق فانى ادعوك الى ان تؤمن بالله

وحده لا شريك له يبقى ملكك.

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़्म वाला है। **अल्लाह** के रसूल मुह़म्मद की त़रफ़ से ह़ारिस बिन अबी शिम्र के नाम। सलाम उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की और उस पर ईमान लाया और तस्दीक़ की। मैं तुझे इस बात की त़रफ़ बुलाता हूं कि तू **अल्लाह** وَحْدَهٗ لَا شَرِيْك पर ईमान लाए। तेरी हुकूमत क़ाइम रहेगी।

ह़ज़रते शुजाअ़ बिन वह्ब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه येह नामए मुबारक ले कर रवाना हुवे। जब दिमश्क़ पहुंचे तो देखा कि क़ैसरे रूम जो ह़िम्स से बैतुल मुक़द्दस को ईरानियों पर फ़त्ह़ के शुक्राने के लिये आ रहा था, उस के इस्तिक़्बाल के लिये तय्यारियां हो रही हैं। उन का बयान है[3] कि मैं ने ह़ारिस के दरवाज़े पर दो तीन दिन क़ियाम किया मैं ने उस के रूमी दरबान से कहा कि मैं ह़ारिस की त़रफ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ासिद हूं। उस ने कहा कि फुलां रोज़ बारयाबी[4] होगी। वोह दरबान जिस का नाम मुर्री था मुझ से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की दा'वत का ह़ाल पूछता रहता था मैं बयान करता तो उस पर रिक़्क़त त़ारी हो जाती यहां तक कि रो

---

1 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانى،واما مكاتبته الى الملوك وغيرهم،ج٥،ص٤٣ـ٤٥ ملتقطاً ـ علميه

2 ......दारुल हुकूमत।

3 ......ہدایۃ الحیاری لابن قیم۔

4 ......मुलाक़ात।

www.dawateislami.net

पढ़ता और कहता कि मैं ने इन्जील में पढ़ा है। बि ऐनिही उसी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सिफ़त उस में मज़्कूर है। मेरा ख़याल था कि वोह शाम में ज़ाहिर होगा मगर मैं देखता हूं कि वोह ज़मीने अ़रब में ज़ाहिर हुवा है। मैं उस पर ईमान लाता हूं और उस की तस्दीक़ करता हूं। मुझे अन्देशा है कि ह़ारिस मुझे क़त्ल कर देगा आख़िरे कार ह़ारिस एक रोज़ दरबार में ताज पहन कर तख़्त पर बैठा, मैं बारयाब हुवा तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामए मुबारक पेश किया। उस ने पढ़ कर फेंक दिया कहने लगा : मुझ से मेरा मुल्क कौन छीन सकता है? वोह ख़्वाह यमन में हो मैं उस के पास जाता हूं और हुक्म दिया कि फ़ौज तय्यार हो जाए और घोड़ों की ना'ल बन्दी की जाए। फिर मुझ से कहा : तुम जो कुछ देख रहे हो उस को बता देना। ह़ारिस ने मेरी आमद का ह़ाल क़ैसर को लिखा। वोह अ़र्ज़दाश्त क़ैसर को बैतुल मुक़द्दस में मिली। दह़्या कल्बी अभी वहां थे। जब क़ैसर ने ह़ारिस का ख़त़ पढ़ा तो उसे लिखा कि उस मुद्दइये नबुव्वत के पास मत जाओ उस से दूर रहो और मुझ से बैतुल मुक़द्दस में मिलो। येह जवाब मेरे अय्यामे क़ियाम में आ गया। ह़ारिस ने मुझे बुला कर दरयाफ़्त किया कि कब जाने का इरादा है? मैं ने कहा कि कल। येह सुन कर उस ने हुक्म दिया कि मुझे सो मिस्क़ाल सोना दे दिया जाए। ह़ज़रते मुर्री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने नफ़्क़ा व लिबास से मेरी मदद की और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बा'दे सलाम अ़र्ज़ कर देना कि मैं आप के दीन का पैरू हूं। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर ह़ारिस का ह़ाल अ़र्ज़ किया तो फ़रमाया कि उस का मुल्क जाता रहा और ह़ज़रते मुर्री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का ह़ाल अ़र्ज़ किया तो फ़रमाया कि वोह सच्चा है।(1)

﴿7﴾.....सिने 8 हिजरी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ला बिन अल ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ मुन्ज़िर बिन सावा ह़ाकिमे बह़रैन के नाम एक तब्लीग़ी ख़त़ भेजा जिस के मुत़ालए से मुन्ज़िर के साथ वहां के तमाम अ़रब और बा'ज़ अ़जम ईमान लाए मगर यहूदो मजूस ईमान न लाए। ह़ज़रते मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ब ज़रीअ़ए अ़र्ज़दाश्त आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन ह़ालात की इत्तिलाअ़ दी और दरयाफ़्त किया कि क्या किया जाए? इस पर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मुन्ज़िर को येह ख़त़ लिखा :

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،واما مكاتبته الى الملوك وغيرهم،ج٥،ص٤٦-٤٧ ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

بسم اللّٰه الرحمن الرحیم من محمد رسول اللّٰه الی
المنذر بن ساوی سلام علیك فانی احمد اللّٰه الیك
الذی لا اله الا هو واشهد ان لا اله الا اللّٰه وان محمداً
عبده ورسوله اما بعد فانی اذکر اللّٰه عزوجل فانه
من ینصح فانما ینصح لنفسه وانه من یطع رسلی
ویتبع امرهم فقد اطاعنی ومن نصح لهم فقد نصح
لی وان رسلی قد اثنوا علیك خیرا وانی قد شفعتك
فی قومك فاترك للمسلمین ما اسلموا علیه وعفوت
عن اهل الذنوب فاقبل منهم وانك مهما تصلح فلن
نعزلك عن عملك و من اقام علی یهودیته او
مجوسیته فعلیه الجزیة. (مُهر) (1)

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है। **अल्लाह** के रसूल मुह़म्मद की त़रफ़ से मुन्ज़िर बिन सावा के नाम। सलाम तुझ पर मैं तेरे पास ख़ुदा का शुक्र करता हूं कि जिस के सिवा कोई मा'बूदे ब ह़क़ नहीं और गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूदे ब ह़क़ नहीं और येह कि मुह़म्मद **अल्लाह** का बन्दा और रसूल है, अम्मा बा'द ! मैं तुझे याद दिलाता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (के अह़काम) बेशक जो ख़ैर ख़्वाही करता है वोह अपने लिये करता है और जो मेरे क़ासिदों की इत़ाअ़त करे और इन का हुक्म माने, उस ने बे शुबा मेरी इत़ाअ़त की और जो इन की ख़ैर ख़्वाही करे उस ने बेशक मेरी ख़ैर ख़्वाही की। मेरे क़ासिदों ने तुम्हारी ता'रीफ़ की है मैं ने तुम्हारी सिफ़ारिश तुम्हारी क़ौम के बारे में क़बूल की। पस मुसलमानों के लिये छोड़ दो वोह (माल वग़ैरा) जिस पर वोह मुसलमान हुवे। मैं ने गुनहगारों को (पहले गुनाह) मुआ़फ़ कर दिये तुम इन से (इस्लाम) क़बूल करो। जब तक तुम काम अच्छा करते रहोगे हम तुम को तुम्हारे ओ़हदे से मा'ज़ूल न करेंगे और जो शख़्स यहूदिय्यत या मजूसिय्यत पर क़ाइम रहे उस पर जिज़्या है। (मुहर)

1 ......المواهب اللدنیة و شرح الزرقانی،واما مکاتبته الی الملوك وغیرهم،ج٥،ص٣٤۔٣٦ملخصاً۔ علمیه

www.dawateislami.net

येह अस्ल नामए मुबारक भी एक फ़्रान्सीसी सय्याह़ ने अत़राफ़े बिलादे मिस्र से एक क़िब्त़ी राहिब से ख़रीद कर सुल्त़ान अ़ब्दुल मजीद ख़ां मर्ह़ूम की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या पेश किया था। अब वोह ख़ज़ानए शाही में मह़फ़ूज़ है इस के अख़ीर में येह मोहर है :

﴾8﴿.....ज़ी क़ा'दा सिने 8 हिजरी में वालियाने उ़मान के नाम येह नामए मुबारक लिखा गया :

بسم الله الرحمن الرحيم من محمد بن عبد الله الى
جيفر و عبد ابنى الجلندى سلام على من اتبع الهدى
اما بعد فانى ادعو كما بدعاية الاسلام اسلما تسلما
فانى رسول الله الى الناس كافة لانذر من كان حيا
و يحق القول على الكفرين وانكما ان اقررتما بالاسلام
وليتكما مكانكما وان ابيتما ان تقرّا بالاسلام فان
ملككما زائل عنكما و خيلى تحل بساحتكما و
تظهر نبوتى على ملككما.

शुरूअ़ ख़ुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़ूम वाला है। मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह की त़रफ़ से जैफ़र व अ़ब्द पिसराने जुलन्दी के नाम। सलाम उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। अम्मा बा'द ! मैं तुम दोनों को दा'वते इस्लाम की त़रफ़ बुलाता हूं। तुम इस्लाम लाओ सलामत रहोगे क्यूंकि मैं तमाम लोगों की त़रफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं ताकि डराऊं उस को जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाए। अगर तुम इस्लाम का इक़रार कर लो तो मैं तुम को तुम्हारा मुल्क दे दूंगा अगर तुम इक़रारे इस्लाम से इन्कार करो तो तुम्हारा मुल्क तुम्हारे हाथ से निकल जाएगा और मेरे सुवार तुम्हारे मकानात की फ़ज़ा में उतरेंगे और मेरी नबुव्वत तुम्हारे मुल्क पर ग़ालिब आएगी।

येह नामए मुबारक ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ इरसाल किया गया। जैफ़र व अ़ब्द दोनों ईमान लाए।[1]

1 ......तफ़्सील के लिये देखो हिदायतुल ह़यारी और मवाहिबे लदुन्निय्या।......

(المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،واما مكاتبته الى الملوك و غيرهم،ج٥،ص٣٧-٤٣ ملتقطاً۔ علمیه)

www.dawateislami.net

गज़्वए ज़ी क़रद

माहे मुहर्रम में गज़्वए ग़ाबा या गज़्वए ज़ी क़रद पेश आया। मौज़ए ग़ाबा में जो मदीने से चार मील मुल्के शाम की त़रफ़ वाके़अ़ है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनियां चरा करती थीं। ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का लड़का चराया करता और शाम को उन का दूध दोह कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया करता था। एक रात क़बीलए ग़त्फ़ान के चालीस सुवारों ने बसर कर्दगी उ़यैना बिन ह़िस्न फ़ज़ारी छापा मारा। वोह ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साह़िबज़ादे को क़त्ल कर के बीस ऊंटनियां ले गए और ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बीवी को भी गिरिफ़्तार कर के साथ ले गए। दूसरे रोज़ फ़ज्र की अज़ान से पहले ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो मश्हूर तीर अन्दाज़ और तेज़ रफ़्तार सह़ाबी थे कमान ह़माइल किये मदीने से ग़ाबा की त़रफ़ जो निकले तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के गुलाम ने उन को इस माजरे की ख़बर दी। उन्हों ने कोहे सल्अ़ या सनिय्यतुल वदाअ़ पर खड़े हो कर मदीने की त़रफ़ मुंह कर के तीन बार ज़ोर से या सबाह़ा ! पुकारा[1] यहां तक कि वोह आवाज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंच गई फिर वोह प्यादा दुश्मन की त़रफ़ दौड़े और उन को जा लिया और तीर अन्दाज़ी से वोह ऊंटनियां यके बा'दे दीगरे छुड़ा लीं। उधर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी पान सो500 की जमइय्यत के साथ तआ़कुब में निकले। ग़त्फ़ान ज़ूक़रद[2] के क़रीब एक तंग दर्रे में पहुंचे जहां उ़यैना उन की मदद को आया यहां मुक़ाबला हुवा ग़त्फ़ान भाग गए। आफ़्ताब गुरूब न हुवा था कि वोह ज़ूक़रद में पानी पीने लगे। ह़ज़रते सलमह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने दौड़ कर उन पर तीर बरसाने शुरूअ़ किये और उन को पानी न पीने दिया वोह भाग कर अपने अ़लाके़ में जो ज़ूक़रद से मुल्ह़िक़ था चले गए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शाम को ज़ूक़रद में पहुंचे। सुवार व प्यादा सब आप से आ मिले। ह़ज़रते सलमह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि मैं ने उन को पानी पीने न दिया अगर मुझे सो100 सुवार मिल जाएं तो मैं उन को एक एक गिरिफ़्तार कर लाता हूं मगर हु़ज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया :

---

1 ......दुश्मन या किसी आफ़त वग़ैरा से ख़बर दार करने के लिये इस त़रह़ पुकारा जाता था। **इल्मिय्या**

2 ......ज़ूक़रद एक जगह का नाम है जो मदीनए मुनव्वरा और ख़ैबर के दरमियान मदीने से एक दिन (बक़ौले बा'ज़ दो दिन) की मसाफ़त पर है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

اِذَا مَلَكْتَ فَاَسْجِحْ जब तू क़ाबू पा जाए तो नर्मी से काम ले। ज़ूक़रद में एक दिन रात क़ियाम कर के वापस हुवे। ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बीवी इस के बा'द नाक़े पर आ पहुंची।[1]

ग़ज़्वए ख़ैबर

ग़ज़्वए ग़ाबा के तीन दिन बा'द जंगे ख़ैबर[2] पेश आई। ख़ैबर के यहूद इस्लाम के सख़्त दुश्मन थे। ग़ज़्वए अह़ज़ाब में अगर्चे उन को कामयाबी न हुई मगर वोह इस्लाम को मिटाने के लिये बराबर साज़िश कर रहे थे। ग़त़फ़ान उन को मदद देने के लिये तय्यार हो गए। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक हज़ार छे सो की जमइय्यत के साथ निकले जिन में से दो सो सुवार और बाक़ी सब प्यादा थे। रासुल मुनाफ़िक़ीन[3] अ़ब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल ने अहले ख़ैबर को कहला भेजा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम से लड़ने आ रहे हैं मगर तुम उन से न डरना तुम्हारी ता'दाद बहुत है येह तो मुठ्ठी भर आदमी हैं जिन के पास हथयार तक नहीं। इस सफ़र में जब लश्करे इस्लाम सहबा में पहुंचा जो ख़ैबर से बारह मील पर है तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर खाना त़लब फ़रमाया सिर्फ़ सत्तू पेश किये गए जो ह़स्बुल इरशाद पानी में घोल दिये गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने वोही खाए। सहबा से रवाना हो कर ख़ैबर के क़रीब ग़त़फ़ान व यहूद के दरमियान वादिये रजीअ़ में उतरे ताकि ग़त़फ़ान यहूद की मदद को न जा सकें। चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया। येह मक़ाम इस्लामी केम्प या लश्कर गाह मुक़र्रर हुवा। यहां से लड़ाई के लिये तय्यार हो कर जाया करते और ज़ख़्मियों को इ़लाज के लिये यहां लाया जाता ग़रज़ अस्बाबे बार बरदारी और मस्तूरात को यहां छोड़ दिया गया और रात यहीं गुज़ारी क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारक[4] थी कि किसी क़ौम पर रात को ह़म्ला न किया करते थे। सुब्ह़ को नमाज़े फ़ज्र अव्वल वक़्त पढ़ कर आगे बढ़े। जब बस्ती नज़र आई तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार यूं पुकारा : اَللّٰهُ اَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ اِنَّا اِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ **अल्लाहु अक्बर !**

---

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،غزوة ذى قرد،ج۳،ص۱۱۰-۱۱۷۔ علميه

2 ......ख़ैबर मदीना से शाम की त़रफ़ 96 मील के फ़ासिले पर है। इस बड़ी बस्ती में सात क़ल्ए और खेत व बाग़ात ब कसरत थे। क़ल्ओं के नाम येह हैं : नाइम, क़मूस, शक़, नत़ात, सलालम, वत़ीह़, कतीबा। मो'जमुल बलदान 12 मिन्ह

3 ......मुनाफ़िक़ों का सरदार।

4 ......सह़ीह़ बुख़ारी, ग़ज़्वए ख़ैबर।

www.dawateislami.net

ख़ैबर वीरान हो गया। हम जब किसी क़ौम की अंगनाई में उतरते हैं तो डराए गयों की सुब्ह़ बुरी होती है।

जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहर में दाख़िल होने लगे तो फ़रमाया : ठहरो ! येह सुन कर तमाम फ़ौज ने ता'मीले इरशाद की और आप ने येह दुआ़ मांगी :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرْضِيْنَ السَّبْعِ وَمَآ اَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيٰطِيْنِ وَمَآ اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَآ اَذْرَيْنَ فَاِنَّا نَسْاَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا .

ऐ परवर दगार सात आस्मानों के और उन चीज़ों के जिन पर आस्मानों ने साया डाला है और परवर दगार सात ज़मीनों के और उन चीज़ों के जिन को ज़मीनों ने उठाया हुवा है और परवर दगार शैत़ानों के और उन के जिन को शैत़ानों ने गुमराह किया है और परवर दगार हवाओं के और उन चीज़ों के जिन को हवाएं उड़ा ले जाती हैं हम तुझ से इस बस्ती और बस्ती वालों और बस्ती की चीज़ों की ख़ैर मांगते हैं और इस बस्ती और बस्ती वालों और बस्ती की चीज़ों के शर से तेरी पनाह मांगते हैं।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि जब किसी बस्ती में दाख़िल होते तो येही दुआ़ मांगते।[(1)] इस के बा'द शहर में दाख़िला हुवा और तमाम क़ल्ए़ यके बा'द दीगरे फ़त्ह़ हो गए।

सब से पहले क़ल्अ़ए नाइम फ़त्ह़ हुवा। ह़ज़रते मह़मूद बिन मुस्लिमा अन्सारी औसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इसी क़ल्ए़ की दीवार तले शहीद हुवे। गर्मी की शिद्दत थी। वोह लड़ते लड़ते थक कर दीवार के साये में आ बैठे। किनाना बिन रबीअ़ बिन अबिल हुक़ैक़ ने अकेले या ब शराकते मर्ह़ब फ़सील पर से चक्की का पाट उन के सर पर गिरा दिया जिस के सदमे से इन्हों ने शहादत पाई।

नाइम के बा'द क़मूस फ़त्ह़ हुवा येह बड़ा मज़बूत़ क़ल्अ़ा था जो इसी नाम की पहाड़ी पर वाक़ेअ़ था। इब्ने अबिल हुक़ैक़ यहूदी का ख़ानदान इसी क़ल्ए़ में रहता था अ़रब का मश्हूर पहलवान मर्ह़ब इसी क़ल्ए़ का रईस था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़ौज दे कर भेजा मगर येह क़ल्अ़ा फ़त्ह़ न हुवा जब

---

1 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب غزوة خيبر، الحديث: ٤١٩٧، ج٣، ص٨١ و المواهب اللدنية وشرح الزرقانی، غزوة خيبر، ج٣، ص٢٥٢-٢٥٣ والسيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه صلى الله عليه وسلم، ج٣، ص٤٩ ـ علميه

www.dawateislami.net

मुहासरे ने तूल खींचा तो एक रोज़ आप ने फ़रमाया कि मैं कल अ़लम उस शख़्स को दूंगा जिस के हाथ पर खुदा फ़त्ह देगा और जो **अल्लाह** और उस के रसूल को दोस्त रखता है और **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल भी उस को दोस्त रखते हैं। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने येह रात इन्तिज़ार व बे क़रारी में गुज़ारी कि देखिये अ़लम किसे इनायत होता है। सुब्ह़ को इरशाद हुवा कि अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) कहां हैं ? अ़र्ज़ किया गया कि उन की आंखों में आशूब[1] है। फ़रमाया : उन को बुलाओ। जब वोह ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो आप ने अपना लुआ़बे दहन मुबारक उन की आंखों में डाला और दुआ़ की। फ़ौरन आराम हो गया और अ़लम उन को इनायत हुवा दुश्मन की त़रफ़ से पहले मर्ह़ब का भाई ह़ारिस निकला जो शुजाअ़त में मा'रूफ़ था। वोह ह़ज़रते मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हाथ से क़त्ल हुवा तो खुद मर्ह़ब बड़े तुमत़ुराक़[2] से निकला उस को भी बिनाए बर असह़्हुर्रिवायात[3] ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने क़त्ल किया। मर्ह़ब के बा'द यासर निकला उसे ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़त्ल किया। इस त़रह़ येह मोह़्कम क़ल्अ़ा[4] भी फ़त्ह़ हो गया। जो सबाया[5] हाथ आईं वोह सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم में तक़्सीम कर दी गईं और सफ़िया बिन्ते हुयय बिन अख़्त़ब जो किनाना बिन रबीअ़ के तह़्त में थी उस को आज़ाद कर के रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने निकाह़ में लाए। ह़ज़रते सफ़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बाप रईसे ख़ैबर था उन का शोहर क़बीलए नज़ीर का रईस था बाप और शोहर दोनों क़त्ल किये जा चुके थे वोह कनीज़ हो कर भी रह सकती थी मगर हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़िफ़्ज़े मरातिब और रफ़्ए ग़म के लिये उन को आज़ाद कर के अपने अ़क़्द में ले लिया और वोह उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ में शामिल हुईं इस से बढ़ कर और क्या हुस्ने सुलूक हो सकता था !

क़मूस के बा'द बाक़ी क़ल्ए जल्दी फ़त्ह़ हो गए। इन मा'रिकों में 93 यहूद मारे गए और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم में से पन्दरह ने शहादत पाई। फ़त्ह़ के बा'द ज़मीने ख़ैबर पर क़ब्ज़ा कर लिया गया मगर यहूद ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि ज़मीन हमारे क़ब्ज़े में रहे हम पैदावार का निस्फ़ आप को दे दिया करेंगे। आप ने येह दरख़्वास्त मन्ज़ूर की और

---

1 ......आंखों का मरज़ जिस में आंखें सुर्ख़ हो जाती और दुखती हैं। 2 ......ग़ुरूर व तकब्बुर।
3 ......सह़ीह़ रिवायतों के मुत़ाबिक़। 4 ......मज़बूत़ क़ल्अ़ा। 5 ......क़ैदी औरतें।

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "हम तुम्हें बर क़रार रखेंगे जब तक हम चाहें।" जब ग़ल्ले का वक़्त आया तो आप ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को वहां भेज दिया। उन्हों ने ग़ल्ले को दो मुसावी हिस्सों में तक़्सीम कर के यहूद से कहा कि जो हिस्सा चाहो ले लो। इस पर वोह ह़ैरान हो कर कहने लगे कि "ज़मीनो आस्मान ऐसे ही अ़द्ल से क़ाइम हैं।"[1]

ग़ज़्वए वादियुल क़ुरा

जंगे ख़ैबर से फ़ारिग़ हो कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वादियुल क़ुरा की त़रफ़ रवाना हुवे। येह वादी ख़ैबर और तैमा के दरमियान वाक़ेअ़ है। इस में देहात का लगातार सिलसिला चला गया है इस लिये इसे वादियुल क़ुरा कहते हैं। वहां पहुंच कर यहूद को दा'वते इस्लाम दी गई उन्हों ने क़बूल न की बल्कि बर सरे पैकार हुवे[2] मगर जल्दी मग़्लूब हो गए। ख़ैबर की त़रह़ ग़नाइम तक़्सीम कर दी गईं और ज़मीन व बाग़ात निस्फ़ पैदावार पर उन के क़ब्ज़े में छोड़ दिये गए। तैमा के यहूद ने जब वादियुल क़ुरा का ह़ाल सुना तो क़ासिद भेज कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जिज़्ये पर सुल्ह़ कर ली और ज़मीन उन ही के क़ब्ज़े में रही।

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ैबर से वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने ह़ज़रते मुह़य्यिसा बिन मसऊ़द को अहले फ़िदक के पास भेजा वहां का रईस यूशअ़ बिन नून यहूदी था। दा'वते इस्लाम दी गई वोह ख़ैबर का ह़ाल सुन कर पहले ही डरे हुवे थे इस लिये उन्हों ने निस्फ़ ज़मीन पर सुल्ह़[3] कर ली।[4]

यहूदे ख़ैबर को अगर्चे अमान दिया गया था मगर वोह अपनी शरारतों से बाज़ न आते थे। चुनान्चे, एक दिन ज़ैनब ने जो सलाम बिन मिशकम की ज़ौजा और मर्ह़ब की भावज थी एक बकरी का गोश्त भून कर उस में ज़ह्र मिला दी और बत़ौरे हदिय्या आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा। आप ने उस में से बाज़ू उठा लिया और खाने लगे। बाक़ी चन्द सह़ाबा

---

1 ......فتوح البلدان بلاذری، ذکر خیبر۔......(سبل الهدى والرشاد، فی غزوة خيبر، ج٥، ص١٢٠ و ١٢٤-١٢٧ والسيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه صلى الله عليه وسلم، ج٣، ص٥٠، ٥٥ و ٦٣۔ علميه)

2 ......लड़ाई के लिये तय्यार हो गए।

3 ......بلاذری، ذکر فدک۔١٢منه

4 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، فتح وادى القرى، ج٣، ص٣٠١-٣٠٣۔ علميه

www.dawateislami.net

हाज़िरीन ने तनावुल किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाते हुवे फ़रमाया कि येह गोश्त न खाओ। और उस यहूदिय्या को बुला भेजा। वोह हाज़िरे ख़िदमत हुई तो फ़रमाया कि तुम ने इस गोश्त में ज़हर मिलाया है। वोह बोली आप को किस ने ख़बर दी ? आप ने बाज़ू की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि इस बाज़ू ने जो मेरे हाथ में है। उस ने कहा : हां मैं ने इस में ज़हर मिला दी है। बदीं ख़याल कि अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पैग़म्बर हैं तो ज़हर असर न करेगी और अगर आप पैग़म्बर नहीं है तो हम आप से आराम पाएंगे। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ज़ात शरीफ़ के लिये किसी से इन्तिक़ाम न लेते थे। इस लिये मुआ़फ़[1] फ़रमा दिया।[2] वोह सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم जिन्हों ने खाया था इन्तिक़ाल फ़रमा गए। उन में से सब से पहले ह़ज़रते बिश्र बिन बरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो उन के क़िसास में उस यहूदिय्या को क़त्ल कर दिया गया।

उसी साल ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (फ़ातेह़े शाम) और ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه (फ़ातेह़े मिस्र) ईमान लाए।

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।” ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे, वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे। (سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب کراھیۃ المسألۃ، الحدیث:١٦٤٣، ج٢، ص١٧٠)

---

1 ......مشکوٰۃ شریف،باب فی المعجزات،فصل ثانی۔

2 ......مشکـاۃ المصابیح،کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق،باب فی المعجزات،الحدیث:٥٩٣١،ج٢،ص٣٩٥ و مرقاۃ المفاتیح،کتاب الفضائل،باب فی المعجزات،تحت الحدیث:٥٩٣١،ج٣،ص٢٦٦۔ علمیہ

www.dawateislami.net

हिजरत का आठवां साल

ग़ज़्वए मौता

जुमादल ऊला में ग़ज़्वए मौता वुक़ूअ़ में आया। ह़क़ीक़त में येह सरिय्या था मगर लश्कर की कसरत के सबब से इसे ग़ज़्वा से ता'बीर किया गया। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ारिस बिन उ़मैर अज़्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ अमीरे बसरा या क़ैसरे रूम के नाम अपना नामए मुबारक भेजा। जब क़ासिद मौता में पहुंचा तो शुर्ह़बील बिन अ़म्र ग़स्सानी ने जो क़ैसरे रूम की त़रफ़ से शाम में एक गवर्नर था उस को शहीद कर दिया। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह ख़बर पहुंची तो आप निहायत ग़मगीन हुवे और तीन हज़ार फ़ौज बसर कर्दगी ज़ैद बिन ह़ारिसा (जो आप के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम थे) भेजी और हुक्म दिया कि अगर ज़ैद शहीद हो जाएं तो जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और वोह भी शहीद हों तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़ौज के सरदार हों और इरशाद हुवा कि उस मक़ाम पर जाना जहां ह़ारिस बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शहीद हुवे हैं और येह भी हिदायत कर दी गई कि पहले उन को दा'वते इस्लाम देना अगर वोह क़बूल कर लें तो जंग की ज़रूरत नहीं। ख़ुद जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सनिय्यतुल वदाअ़ तक फ़ौज की मुशायिअ़त[1] फ़रमाई। शुर्ह़बील को ख़बर पहुंची तो उस ने एक लाख फ़ौज तय्यार की। इधर क़ैसरे रूम अ़रब की एक लाख फ़ौज ले कर ज़मीने बल्क़ा[2] में ख़ैमा ज़न हुवा। जब लश्करे इस्लाम शहरे मआ़न में पहुंचा उन को दुश्मन की ता'दादे कसीर की इत्तिलाअ़ मिली। उन्हों ने चाहा कि दरबारे रिसालत को ह़ालात की इत्तिलाअ़ दी जाए और हुक्म का इन्तिज़ार किया जाए मगर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि फ़त्ह़ व शहादत में से एक हमें ज़रूर ह़ासिल हो जाएगी इस लिये आगे बढ़े। जब बल्क़ा की ह़द पर पहुंचे तो मशारिफ़ में क़ैसर का लश्कर नज़र आया। मुसलमान बच कर मौता की त़रफ़ चले गए और यहां जंग हुई। ह़ज़राते ज़ैद व जा'फ़र व अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) यके बा'द दीगरे बड़ी बहादुरी से पैदल हो कर लड़े और शहीद हुवे। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने में इन

---

1 ......फ़ौज को रुख़्सत करते वक़्त कुछ फ़ासिले तक उस के साथ जाना।

2 ......येह मक़ाम शाम व वादियुल क़ुरा के दरमियान वाक़ेअ़ है, मौता और मशारिफ़े दिहात बल्क़ा में से हैं, शहरे मआ़न बल्क़ा के नवाह़ में है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

वाक़िआ़त को अपनी आंखों से देख रहे थे और बयान फ़रमा रहे थे। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पहले अपने घोड़े की कूंचें काट दीं[1] फिर ह़म्ला किया उन का दायां बाज़ू कट गया तो अ़लम बाएं हाथ में ले लिया। बायां भी कट गया तो बग़ल में ले लिया यहां तक कि शहीद हो गए। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मैं ने उन की लाश देखी तो उस पर नव्वे से कुछ ऊपर ज़ख़्म तल्वारों और बरछियों के थे और सब के सब सामने की त़रफ़ थे पुश्त पर एक भी न था। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहादत के बा'द बिहिश्त में फ़िरिश्तों के साथ उड़ते देखा। दूसरी रिवायत में है कि ब शक्ले फ़िरिश्ता दो ख़ून आलूदा बाज़ूओं के साथ देखा। इसी वासित़े उन को जा'फ़र त़य्यार या जा'फ़र ज़ुल जनाह़ैन कहते हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द बिल इत्तिफ़ाक़ ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अमीरे लश्कर हुवे। वोह भी निहायत शुजाअ़त से लड़े। खुद उन का बयान है कि उस दिन नव तल्वारें मेरे हाथ से टूट टूट कर गिर पड़ीं। लश्करे कुफ़्फ़ार में तज़ल्ज़ुल पड़ गया[2] आख़िर लश्करे इस्लाम पस्पा हो गया। इसे मुसलमानों की फ़त्ह़ कहना चाहिये कि दो लाख के मुक़ाबले में सिर्फ़ बारह शहीद हुवे बाक़ी सब सह़ीह़ व सालिम मदीनए मुनव्वरा वापस आ गए।

ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का

माहे रमज़ान में ग़ज़्वए फ़त्ह़े मक्का वुक़ूअ़ में आया। इस का सबब येह था कि क़ुरैश ने मुआ़हदए हुदैबिय्या तोड़ दिया। ब ग़र्ज़े तौज़ीह़ हम यहां किसी क़दर तफ़्सील से काम लेते हैं। अ़ब्दुल मुत्त़लिब बिन हाशिम को उन के चचा मुत्त़लिब सात या आठ साल की उ़म्र में मदीने से मक्के में लाए थे जैसा कि इस किताब में पहले मज़्कूर हुवा और हाशिम के मकानात पर उन को क़ाबिज़ कर दिया था जब मुत्त़लिब ने वफ़ात पाई तो अ़ब्दुल मुत्त़लिब के चचा नौफ़ल ने वोह मकानात छीन लिये। अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने क़ुरैश से मदद मांगी। क़ुरैश ने कहा कि हम तो तुम दोनों में दख़्ल नहीं देते। अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने अपने ननिहाल या'नी बनू नज्जार को मदीने में लिखा। इस लिये अबू सईद बिन उ़दस नज्जारी अस्सी सुवार ले कर मदद को आया। जब वोह मक्के में पहुंचा तो नौफ़ल ह़त़ीम में क़ुरैश की एक जमाअ़त में बैठा हुवा था। अबू सईद ने वहां पहुंच कर नौफ़ल के सर पर तल्वार खींच ली और कहने लगा कि हमारे भांजे के मकानात वापस कर दो

---

1 ......ऐड़ी के उपर से पाउं के पट्ठे काटना, लूला बना देना।
2 ......हलचल मच गई।

www.dawateislami.net

वरना इस तल्वार से फ़ैसला कर देता हूं। येह देख कर नौफ़ल ने कुरैश के सामने मकानात तो वापस कर दिये मगर अपनी कमज़ोरी को मह़सूस कर के आयिन्दा के लिये अ़ब्दे शम्स के बेटों को बनू हाशिम के ख़िलाफ़ अपना ह़लीफ़ बना लिया। इस पर अ़ब्दुल मुत्त़लिब ने ख़ुज़ाअ़ा से कहा कि तुम बनू नौफ़ल और बनू अ़ब्दे शम्स के ख़िलाफ़ मेरे ह़लीफ़ बन जाओ। अ़ब्दे मनाफ़ की मां ख़ुज़ाअ़ा के सरदार हुलैल की बेटी थी। इस लिये वोह कहने लगे कि तुम्हारी मदद करना हम पर वाजिब है। चुनान्चे, दारुन्नदवा में येह मुआ़हदा लिखा गया।

हुदैबिय्या के दिन अज़् रूए मुआ़हदा हर एक क़बीला फ़रीक़ैन में से जिस का चाहा ह़लीफ़ बन गया। चुनान्चे, ख़ुज़ाअ़ा अपना पुराना मुआ़हदा दिखा कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़लीफ़ बन गए और बनू बक्र कुरैश के मुआ़हदे में शामिल हुवे। येह दोनों क़बीले (ख़ुज़ाअ़ा व बनू बक्र) एक दूसरे के ह़रीफ़ थे और इन में मुद्दत से लड़ाई चली आती थी। जिस का सबब येह था कि ज़मानए जाहिलिय्यत में बनू अल ह़ज़रमी में से एक शख़्स जो अस्वद बिन रज़न दुअली बिकरी का ह़लीफ़ था ब ग़र्ज़े तिजारत घर से निकला जब वोह ख़ुज़ाअ़ा के अ़लाक़े में पहुंचा तो उन्हों ने इसे क़त्ल कर डाला और माल ले लिया। इस पर बनू बक्र ने ख़ुज़ाअ़ा का एक आदमी क़त्ल कर डाला। फिर ख़ुज़ाअ़ा ने बनू अल अस्वद या'नी सलमा व कुल्सूम व ज़ूऐब को अ़रफ़ात में क़त्ल कर डाला। इसी ह़ालत में इस्लाम के ज़ुहूर ने अ़रब को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह कर लिया और वोह लड़ाइयां रुक गईं। जब सुल्ह़े हुदैबिय्या के सबब से इस्लाम व कुफ़्र में लड़ाई का सिलसिला बन्द हो गया तो बनू बक्र (की एक शाख़ बनू नुफ़ासा) समझे कि अब इन्तिक़ाम का वक़्त है इस लिये नौफ़ल बिन मुआ़विय्या दैली बिकरी बनू नुफ़ासा को साथ ले कर आबे वतीर में जो अस्फ़ले मक्का में ख़ुज़ाअ़ा के अ़लाक़े में है रात को ह़म्ला आवर हुवा। कुरैश ने ह़स्बे मुआ़हदा बनू बक्र की मदद की। चुनान्चे, सफ़्वान बिन उमय्या, हुवैत़ब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा, इकरमा बिन अबी जह्ल और सुहैल बिन अ़म्र वग़ैरा सूरतें बदल बदल कर ख़ुज़ाअ़ा से लड़े यहां तक कि ख़ुज़ाअ़ा ने मजबूर हो कर ह़रमे मक्का में पनाह ली। बनू बक्र ह़रम का एह़तिराम मल्ह़ूज़ रख कर रुक गए मगर नौफ़ल ने कहा कि येह मौक़अ़ फिर हाथ न आएगा चुनान्चे, ह़रम में ख़ुज़ाअ़ा का ख़ून बहाया गया।

जब बनू बक्र व कुरैश ने वोह अ़हद तोड़ दिया जो उन के और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरमियान था तो अ़म्र बिन सालिम ख़ुज़ाई चालीस सुवार ले कर मदीने पहुंचा उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में अपने अस्ह़ाब में तशरीफ़ रखते थे। अ़म्रे मज़्कूर ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर यूं गोया हुवा :

www.dawateislami.net

يَا رَبِّ إِنِّي نَاشِدٌ مُحَمَّدًا   حِلْفَ أَبِيْنَا وَ أَبِيْهِ الْأَتْلَدَا
فَانْصُرْ رَسُوْلَ اللّٰهِ نَصْرًا عَتِدًا   وَ ادْعُ عِبَادَ اللّٰهِ يَأْتُوْا مَدَدًا
إِنَّ قُرَيْشًا أَخْلَفُوْكَ الْمَوْعِدَا   وَ نَقَضُوْا مِيْثَاقَكَ الْمُؤَكَّدَا
هُمْ بَيَّتُوْنَا بِالْوَتِيْرِ هُجَّدًا   وَ قَتَلُوْنَا رُكَّعًا وَّ سُجَّدًا

ऐ ख़ुदा ! मैं मुह़म्मद को याद दिलाता हूं वोह पुराना मुआ़हदा जो हमारे बाप और उस के बाप (अ़ब्दुल मुत्त़लिब) के दरमियान हुवा था। या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी पूरी मदद कीजिये और ख़ुदा के बन्दों को बुलाइये जो हमारी मदद को आएं। कु़रैश ने आप से वा'दे के ख़िलाफ़ किया और आप का मोह़कम[1] मुआ़हदा तोड़ डाला। उन्हों ने वतीर में हम पर ब ह़ालते ख़्वाब ह़म्ला किया और हमें रुकूअ़ व सजदे की ह़ालत में क़त्ल कर डाला।

येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़म्र ! तुझे मदद मिल जाएगी। एक रिवायत[2] में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं कु़रैश से दरयाफ़्त करता हूं। पस आप ने ह़ज़रते ज़मरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भेजा और येह तीन शर्तें पेश कीं, कि कु़रैश इन में से एक इख़्तियार कर लें :

﴾1﴿.....ख़ुज़ाआ़ के मक़्तूलीन का ख़ून बहा दें।

﴾2﴿.....बनू नुफ़ासा की ह़िमायत से दस्त बरदार हो जाएं।

﴾3﴿.....ए'लान कर दें कि हु़दैबिय्या का मुआ़हदा टूट गया।

कु़रत़ा बिन अ़म्र ने कहा कि हमें सिर्फ़ तीसरी शर्त़ मन्ज़ूर है।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्के पर ह़म्ले की पोशीदा तय्यारी शुरूअ़ कर दी। ह़ज़रते ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ लह़मी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जो बनू असद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा के ह़लीफ़ थे बनू हाशिम की कनीज़ सारा के हाथ कु़रैश को एक ख़त़ लिख भेजा जिस में उस जंगी तय्यारी का ह़ाल दर्ज था। सारा ने वोह ख़त़ अपने सर के बालों में छुपा लिया और रवाना हुई। **अल्लाह** तआ़ला ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मुआ़मले की ख़बर दे दी। आप ने ह़ज़रते अ़ली व ज़ुबैर व मिक़्दाद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) को भेजा और उन से फ़रमाया कि रौज़ए ख़ाख़

1......मज़बूत़।
2......ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब ब ह़वाला मग़ाज़ी इब्ने आइज़ ब रिवायते इब्ने उ़मर।

www.dawateislami.net

में तुम को एक सांडनी सुवार[1] औ़रत मिलेगी उस के पास कुरैशे मक्का के नाम एक ख़त़ है वोह ले आओ। वोह सुवार हो कर चल पड़े और सारा से रौज़ए ख़ाख़ में जा मिले। उस को नीचे उतार लिया और कहा कि तेरे पास एक ख़त़ है। उस ने इन्कार किया। उस के कजावे की तलाशी ली गई मगर कुछ बर आमद न हुवा। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने उस से कहा : मैं **अल्लाह** की क़सम खाता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने झूट नहीं फ़रमाया तू ख़त़ निकाल वरना हम तेरे कपड़ों की तलाशी लेंगे। येह सुन कर उस ने अपने सर के बालों से वोह ख़त़ निकाल कर ह़वाले किया। जब येह ख़त़ आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को त़लब फ़रमाया और पूछा : "ह़ातिब ! तू ने येह क्या ह़रकत की ?" ह़ातिब ने यूं अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे बारे में जल्दी न कीजिये। मैं दीन से नहीं फिरा। मेरे बाल बच्चे मक्का में कुरैश के दरमियान हैं। आप के साथ जो मुहाजिरीन हैं कुरैश में उन के रिश्ते हैं जिन के सबब से वोह उन के बाल बच्चों की हिफ़ाज़त करेंगे। मगर मेरा कुरैश में कोई रिश्ता नहीं। अपने अहलो इ़याल के बचाव के लिये मैं ने येह ह़ीला किया कि कुरैश पर येह एह़सान करूं ताकि इस के सिले में वोह मेरे बाल बच्चों की हिफ़ाज़त करें।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस ने सच कहा है। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने बेताब हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं इस मुनाफ़िक़ का सर उड़ा दूं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ह़ातिब अस्ह़ाबे बद्र में से है। उ़मर ! तुझे क्या मा'लूम है बेशक **अल्लाह** तआ़ला अहले बद्र पर मुत़्त़लअ़ है कि फ़रमा दिया : [2] اِعۡمَلُوۡا مَا شِئۡتُمۡ فَقَدۡ غَفَرۡتُ لَکُمۡ ग़रज़ बा वुजूद ऐसे संगीन जुर्म के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।[3]

क़िस्सए कोताह आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब तारीख़ 10 माहे रमज़ान सिने 8 हिजरी दस हज़ार आरास्ता फ़ौज ले कर मदीने से रवाना हुवे। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ जो अब तक मक्के में मुक़ीम थे अपने अहलो इ़याल समेत हिजरत कर के मदीने को आ रहे थे।

---

1 ......ऊंटनी पर सुवार।

2 ......तुम करो जो चाहो अलबत्ता मैं ने तुम को मुआ़फ़ कर दिया। صحیح بخاری،باب غزوۃ الفتح وما بعث حاطب بن ابی بلتعہ الی اہل مکہ۔۱۲منہ

3 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقاني،باب غزوة الفتح الاعظم،ج٣،ص٣٢٩۔٣٩١ملخصاً و صحيح البخاری، كتاب المغازی،باب غزوة الفتح،الحديث:٤٢٧٤،ج٣،ص٩٩ و السيرة الحلبية،باب ذكر مغازيه،غزوة وادی القری، ج٣، ص٨٧۔ علميه

www.dawateislami.net

वोह मक़ामे जुह़फ़ा[1] में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। ह़स्बे इरशादे नबवी उन्हों ने अहलो इ़याल को तो मदीने भेज दिया और ख़ुद लश्करे इस्लाम में शामिल हो गए। क़ुदैद में क़बाइल को झन्डे दिये गए। अख़ीर पड़ाव मर्रुज़्ज़हरान था जहां से मक्का एक मन्ज़िल या इस से भी कम था। यहां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से तमाम फ़ौज ने अलग अलग आग रोशन की। क़ुरैश को लश्करे इस्लाम की रवानगी की अफ़्वा पहुंच चुकी थी। मज़ीद तह़क़ीक़ के लिये उन्हों ने अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और ह़कीम बिन ह़िज़ाम और बुदैल बिन वरक़ा को भेजा। इस तजस्सुस में उन का गुज़र मर्रुज़्ज़हरान पर हुवा। अबू सुफ़्यान बोला : येह इस क़दर जा बजा[2] आग कैसी है ? येह तो शबे अ़रफ़ा की आग की मानिन्द है। बुदैल ख़ुज़ाई ने कहा : येह ख़ुज़ाआ़ की आग है। अबू सुफ़्यान ने कहा : ख़ुज़ाआ़ गिनती में इतने नहीं कि इन की इस क़दर आग हो। ख़ैमए नबवी की ह़िफ़ाज़त पर जो दस्ता मुतअ़य्यन था उन्हों ने अबू सुफ़्यान वग़ैरा को देख लिया और पकड़ कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए। अबू सुफ़्यान ईमान लाए। जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यहां से मक्के की त़रफ़ रवाना होने लगे तो ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि अबू सुफ़्यान को पहाड़ की चोटी पर ले जा कर खड़ा करा दो ताकि अफ़्वाजे इलाही का नज़्ज़ारा आंखों से देख लें। क़बाइले अ़रब की फ़ौजें अबू सुफ़्यान के सामने से गुज़रने लगीं। पहले गिफ़ार फिर जुहैना, सा'द बिन हुज़ैल, सुलैम ना'रए तक्बीर बुलन्द करते हुवे यके बा'द दीगरे गुज़रे इन के बा'द एक फ़ौज आई जिस की मिस्ल देखने में नहीं आई। अबू सुफ़्यान ने पूछा कि येह कौन हैं ? ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाब दिया कि येह अन्सार हैं। सरदारे अन्सार ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अ़लम हाथ में लिये हुवे बराबर से गुज़रे तो अबू सुफ़्यान से कहा : "اَلْيَوْمُ يَوْمُ الْمَلْحَمَةِ الْيَوْمَ تُسْتَحَلُّ الْكَعْبَة" आज घमसान के मा'रिके का दिन है, आज का'बा ह़लाल कर दिया जाएगा।

बा'दे अज़ां वोह मुबारक दस्ता आया जिस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब (मुहाजिरीन) थे। ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम अ़लम बरदार थे। ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बराबर से गुज़रे तो अबू सुफ़्यान ने कहा : "ह़ुज़ूर ने सुना सा'द बिन उ़बादा क्या कहते गुज़रे हैं ?" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सा'द ने गलत़ कहा। आज का'बे की इ़ज़्ज़त की जाएगी और गि़लाफ़ चढ़ाया जाएगा फिर हुक्म दिया कि अ़लम सा'द से ले कर उन के साहिब ज़ादे क़ैस को दे दिया जाए।

1 ......येह मक़ाम मक्का शरीफ़ से चार मन्ज़िल है। 12 मिन्ह

2 ......जगह जगह।

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के में ह़िस्सए बालाई की त़रफ़ से दाख़िल हुवे। ए'लान कर दिया गया कि जो शख़्स हथयार डाल देगा या अबू सुफ़्यान के घर पनाह लेगा या मस्जिद में दाख़िल होगा या दरवाज़े बन्द कर लेगा उस को अम्न दिया जाएगा। ह़िस्सए बालाई में (ख़ैफ़े बनी किनाना या'नी मुह़स्सब में) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ख़ैमा नस्ब किया गया और ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़स्बुल इरशाद मुह़स्सब की ह़द या'नी ह़जून की पहाड़ी पर अ़लम खड़ा कर दिया। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म दिया क़बाइले अ़रब के साथ पाईने शहर की त़रफ़ से[1] दाख़िल हों और सफ़ा में हम से आ मिलें और किसी से जंग न करें। मगर सफ़्वान बिन उमय्या, इकरमा बिन अबी जह्ल और सुहैल बिन अ़म्र क़ुरैश की एक जमाअ़त साथ ले कर जन्दमा में सद्दे राह हुवे और ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की फ़ौज पर तीर बरसाने लगे चुनान्चे, ह़ज़रते हुबैश बिन अश्अ़र और कुर्ज़ बिन जाबिर फ़िहरी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने शहादत पाई। ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मजबूर हो कर उन पर ह़म्ला किया। वोह तेरह या ज़ियादा लाशें छोड़ कर घरों को भाग गए और बा'ज़े पहाड़ी पर चढ़ गए। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो तल्वारों की चमक देखी तो पूछा कि येह जंग कैसी है? अ़र्ज़ किया गया कि शायद मुशरिकीन ने पेश दस्ती[2] की है जिस की वज्ह से ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को लड़ना पड़ा। बा'दे अज़ां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बाज़ पुर्स की तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि इब्तिदा मुशरिकीन की त़रफ़ से थी, फ़रमाया : "क़ज़ाए इलाही बेहतर है।"[3]

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ैमे में ज़रा आराम फ़रमाया फिर ग़ुस्ल किया और हथयारों से सज कर नाक़ए क़स्वा पर सुवार हुवे और अपने ग़ुलाम के लड़के उसामा को अपने पीछे सुवार कर लिया। कौकबए नबवी[4] बड़ी शानो शौकत से का'बे की त़रफ़ रवाना हुवा। आप के दाएं बाएं आगे पीछे मुहाजिरीन व अन्सार थे जो इस त़रह़ सरापा आहन पोश[5] थे कि बजुज़ सियाह चश्म[6] इन के बदन का कोई ह़िस्सा नज़र न आता था। बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हो कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले ह़जरे अस्वद को बोसा दिया फिर अपनी नाक़ा पर त़वाफ़ किया। बैतुल्लाह के गिर्द और ऊपर तीन सो साठ बुत थे जिन के सबब से वोह

---

1 ......या'नी शहर के निचले ह़िस्से से। 2 ......पहल।

3 ......المواهب اللدنية و شرح الزرقانی،باب غزوة الفتح الاعظم،ج٣،ص٣٩٥_٤١٧ملخصاً۔ علمیه

4 ......नबवी जुलूस। 5 ......ज़िरह पहने हुवे। 6 ......सियाह आंखों के सिवा।

www.dawateislami.net

ख़ानए ख़ुदा बुत ख़ाना बना हुवा था। आप के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी थी इस से आप एक एक बुत को ठोके देते जाते थे और येह पढ़ते जाते थे :

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾

सच आ गया और बातिल मिट गया बेशक बातिल मिटने वाला है।(1)

جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿۴۹﴾

सच आ गया और बातिल न पहली बार पैदा करता है और न दोबारा करता है।(2)

और वोह मुंह के बल गिरते जाते थे।(3) जब इस त़रह़ बैतुल्लाह शरीफ़ बुतों से पाक हो गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कुन्जी ले कर दरवाज़ा खोला अन्दर दाख़िल हुवे तो ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا السَّلَام के मुजस्समे नज़र पड़े जिन के हाथों में जूआ खेलने के तीर दिये हुवे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ुदा इन को ग़ारत करे **अल्लाह** की क़सम ! इन दोनों ने कभी तीरों से जूआ नहीं खेला।" का'बे के अन्दर ही लकड़ियों की एक कबूतरी बनी हुई थी जिसे आप ने अपने दस्ते मुबारक से तोड़ डाला और तस्वीरें जो थीं वोह मिटा दी गईं। फिर दरवाज़ा बन्द कर दिया गया और ह़ज़रते उसामा व बिलाल व उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ अन्दर रहे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी और हर त़रफ़ तक्बीर कही फिर दरवाज़ा खोल दिया गया। मस्जिदे ह़राम क़ुरैश की सफ़ों से भरी हुई थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरवाज़े के बाज़ूओं को पकड़ कर येह ख़ुत़बा पढ़ा :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ
وَحْدَهٗ اَلَا كُلُّ مَاْثَرَةٍ اَوْ دَمٍ اَوْ مَالٍ يُدْعٰى فَهُوَ تَحْتَ قَدَمَيَّ هَاتَيْنِ اِلَّا سِدَانَةَ
الْبَيْتِ وَسِقَايَةَ الْحَآجِّ اَلَا وَ قَتِيْلُ الْخَطَاءِ شِبْهِ الْعَمْدِ بِالسَّوْطِ وَالْعَصَا فَفِيْهِ الدِّيَّةُ
مِائَةٌ مِّنَ الْاِبِلِ مِنْهَا اَرْبَعُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهَا اَوْلَادُهَا يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ! اِنَّ اللّٰهَ قَدْ
اَذْهَبَ عَنْكُمْ نَخْوَةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَتَعَظُّمَهَا بِالْاٰبَآءِ اَلنَّاسُ مِنْ اٰدَمَ وَاٰدَمُ مِنْ تُرَابٍ

---

1 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ह़क़ आया और बातिल मिट गया बेशक बातिल को मिटना ही था। (پ۱۵،بنی اسراءیل:۸۱) **इल्मिय्या**

2 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ह़क़ आया और बातिल न पहल करे और न फिर लौट कर आए। (پ۲۲،سبا:۴۹) **इल्मिय्या**

3 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانى،باب غزوة الفتح الاعظم،ج۳،ص۴۶۰-۴۶۲ ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

एक ख़ुदा के सिवा और कोई मा'बूदे ब ह़क़ नहीं, उस का कोई शरीक नहीं, ख़ुदा ने अपना वा'दा सच्चा किया और अपने बन्दे की मदद की और काफ़िरों के गुरौहों को तन्हा शिकस्त दी, आगाह रहो कि तमाम मफ़ाख़िर या ख़ून या माल हर क़िस्म का सिवाए का'बे की तौलियत और ह़ाजियों की सिक़ायत के मेरे इन दो क़दमों के नीचे हैं, आगाह रहो कि क़त्ल ख़त़ा जो अ़मद के मुशाबेह हो, ताज़ियाने से हो या अ़सा से उस का ख़ून-बहा एक सो ऊंट हैं जिन में से चालीस के पेटों में बच्चे हों, ऐ गुरौहे क़ुरैश ! ख़ुदा ने तुम से जाहिलिय्यत का ग़ुरूर और नसब का इफ़्तिख़ार दूर कर दिया, तमाम लोग आदम की अवलाद से हैं और आदम मिट्टी से हैं।

फिर येह आयत तिलावत फ़रमाई :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾ (حجرات، ٢٦)

*ऐ लोगो ! हम ने तुम को एक मर्द और औ़रत (आदम व ह़व्वा) से पैदा किया और तुम को कुम्बे और क़बीले बनाया ताकि एक दूसरे को पहचानो बेशक तुम में **अल्लाह** के नज़्दीक ज़ियादा बुज़ुर्ग वोह है जो ज़ियादा परहेज़गार है तह़क़ीक़ **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है।*(1)

ख़ुत़्बे के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुरैश की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे जिन से मस्जिद भरी हुई थी। ए'लाने दा'वत से अब तक साढ़े सत्तरह साल में क़ुरैश ने आप से और आप के अस्ह़ाब से जो जो सुलूक किये थे वोह सब उन के पेशे नज़र थे और ख़ौफ़ज़दा इस इन्तिज़ार में थे कि देखिये क्या सुलूक किया जाता है। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब उस शहर में हैं जहां से निकले थे तो अन्धेरी रात और फ़क़त़ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه साथ थे। आज आप दाख़िल होते हैं तो दस हज़ार जां निसार साथ हैं और बदला लेने पर पूरी क़ुदरत ह़ासिल है। बईं हमा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं ख़ित़ाब फ़रमाया : ऐ गुरौहे क़ुरैश ! तुम अपने गुमान में मुझ से कैसे सुलूक की तवक़्क़ोअ़ रखते हो ? वोह बोले : خَيْرًا اَخٌ كَرِيْمٌ وَابْنُ اَخٍ كَرِيْم नेकी की तवक़्क़ोअ़ रखते हैं, आप शरीफ़ भाई और शरीफ़ बरादर ज़ादे हैं। येह सुन कर हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

---

(1)......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ लोगो हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया और तुम्हें शाख़ें और क़बीले किया कि आपस में पहचान रखो बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है बेशक **अल्लाह** जानने वाला ख़बरदार है। (پ٢٦،الحجرات:١٣) इल्मिय्या

www.dawateislami.net

لَا تَثْرِیْبَ عَلَیْکُمُ الْیَوْمَ اِذْھَبُوْا فَاَنْتُمُ الطُّلَقَآء आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम आज़ाद हो।

ए'लाने अ़फ़्व के बा'द आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे हराम में बैठ गए। बैतुल्लाह शरीफ़ की कुन्जी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में थी। हज़रते अ़ली और हज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) में से हर एक ने अ़र्ज़ किया कि कुन्जी हमें इनायत हो मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा बिन अबी त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अ़त़ा फ़रमाई।(1)

हज़रते उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हिजरत से पहले मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्के में मिले, आप ने मुझे दा'वते इस्लाम दी। मैं ने कहा : ऐ मुह़म्मद ! तुझ से तअ़ज्जुब है कि तू चाहता है कि मैं तेरी पैरवी करूं ह़ालांकि तू ने अपनी क़ौम के दीन की मुख़ालफ़त की है और एक नया दीन लाया है। हम जाहिलिय्यत में का'बे को दो शम्बा और पंज शम्बा के दिन(2) खोला करते थे। एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों के साथ का'बे में दाख़िल होने के इरादे से आए। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दुरुश्त कलामी(3) की और आप को बुरा भला कहा मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दर गुज़र किया और फ़रमाया : "उ़स्मान तू यक़ीनन अ़न क़रीब एक दिन इस कुन्जी को मेरे हाथ में देखेगा कि जहां चाहूं रख दूं।" मैं ने कहा : उस दिन बेशक क़ुरैश हलाक हो जाएंगे और ज़लील हो जाएंगे। इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि ज़िन्दा रहेंगे और इ़ज़्ज़त पाएंगे और आप का'बे में दाख़िल हुवे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस इरशाद ने मुझ पर असर किया। मैं ने गुमान किया कि जैसा आप ने मुझ से फ़रमाया अ़न क़रीब वैसा ही हो जाएगा और इरादा किया कि मुसलमान हो जाऊं मगर मेरी क़ौम मुझ से निहायत दुरुश्त कलामी करने लगी। जब फ़त्हे मक्का का दिन आया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : उ़स्मान ! कुन्जी ला, आप ने कुन्जी मुझ से ली फिर वोही कुन्जी मुझे दे दी और फ़रमाया : लो येह पहले से तुम्हारी है और तुम्हारे ही पास हमेशा रहेगी। ज़ालिम के सिवा इसे कोई तुम से न छीनेगा। उ़स्मान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम को अपने घर का अमीन बनाया है। पस इस घर की ख़िदमत के सबब से जो कुछ तुम्हें मिले उसे दस्तूरे शरई के मुवाफ़िक़ खाओ। जब मैं ने पीठ फेरी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे पुकारा मैं फिर ह़ाज़िर हुवा। फ़रमाया : क्या वोह बात न हुई जो मैं ने तुझ से कही थी। इस पर मुझे हिजरत से पहले मक्का में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वोह क़ौल याद आ गया। मैं ने अ़र्ज़ किया : "हां

1 ......السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،دخول رسول الحرم،ص٤٧٣ ملخصاً۔ علمیہ

2 ......पीर और जुमा'रात के दिन। 3 ......सख़्त कलामी।

www.dawateislami.net

(वोह बात हो गई) मैं गवाही[1] देता हूं कि "आप अल्लाह के रसूल हैं।"[2] इस ह़दीस में तीन पेश गोइयां हैं। वोह तीनों पूरी हो गईं।

उस रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم देर तक मस्जिद में रौनक़ अफ़रोज़ रहे। नमाज़ का वक़्त आया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म से ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने का'बे की छत पर अज़ान कही। अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब और अ़त्ताब बिन असीद और ह़ारिस बिन हिशाम का'बे के सिह़्न में बैठे हुवे थे अज़ान की आवाज़ सुन कर अ़त्ताब बोला कि ख़ुदा ने असीद को येह इ़ज़्ज़त बख़्शी कि उस ने येह आवाज़ न सुनी वरना उसे रन्ज पहुंचता। ह़ारिस बोला : ख़ुदा की क़सम ! अगर येह ह़क़ होता तो मैं इस की पैरवी करता। ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : मैं तो कुछ नहीं कहता अगर कहूं तो येह कंकरियां उन को मेरे क़ौल की ख़बर देंगी। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन लोगों के पास हो कर निकले तो फ़रमाया कि तुम्हारी बातें मुझे मा'लूम हो गईं तुम ने ऐसा ऐसा कहा है। ह़ारिस व अ़त्ताब येह सुनते ही कहने लगे : "हम गवाही देते हैं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। इन बातों की इत्तिलाअ़ किसी और को न थी वरना हम कह देते कि उस ने आप को बता दीं।"[3]

मस्जिद से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोहे सफ़ा पर तशरीफ़ ले गए। वहां मर्दों और औ़रतों ने इस्लाम क़बूल कर के आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की। मर्दों में ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और मस्तूरात में उन की वालिदा हिन्द भी थी जो ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का कलेजा चबा गई थी।

अ़फ़्वे आ़म से नव या दस अश्ख़ास मुस्तसना थे जिन की निस्बत हुक्म दिया गया था कि जहां मिलें क़त्ल कर दिए जाएं। इस हुक्म की वज्ह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़ाती इन्तिक़ाम न था बल्कि और मुख़्तलिफ़ जुर्म थे। इन में से सिर्फ़ तीन या'नी इब्ने ख़त़ल, मिक़्यस बिन सुबाबा और इब्ने ख़त़ल की कनीज़ क़ुरैबा क़त्ल हुवे। इब्ने ख़त़ल और मिक़्यस क़िसास में क़त्ल किये गए। क़ुरैबा इस्लाम की हजू गाया करती थी। बाक़ी सब को अम्न दिया गया और ईमान लाए। एक दुश्मने इस्लाम ईसाई मुसन्निफ़ इन दस अश्ख़ास की तफ़्सील दे कर यूं लिखता है।[4]

1......ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह मो'जिज़ा देख कर तजदीदे शहादत की वरना येह मा'लूम है कि आप साले फ़त्ह़ से पहले इस्लाम ला चुके थे। 12 मिन्ह

2......त़बक़ाते इब्ने सा'द (मुतवफ़्फ़ा सि. 230हि.)......(المواهب اللدنية وشرح الزرقاني،باب غزوة الفتح الاعظم،ج٣،ص٤٦٩ ملتقطاً۔ علميه)

3......(السيرة النبوية لابن هشام،دخول رسول الله الحرم،ص٤٧٢ ملخصاً۔ علميه)

4......लाइफ़ ऑफ़ मुह़म्मद, मुअल्लिफ़ह सर विलियम मेवर साहिब।

(سبل الهدى والرشاد،فى غزوة الفتح الاعظم...الخ،ج٥،ص٢٢٤-٢٢٦و٢٤٧۔ علميه)

www.dawateislami.net

"इस त़रह़ अ़फ़्व के मुक़ाबले में हुक्मे क़त्ल की सूरतें कल्अ़दम थीं और सज़ाए मौत जहां फ़िल वाक़ेअ़ अ़मल में आई (शायद ब इस्तिस्नाए मुग़न्निया) मह़ज़ पोलीटीकल मुख़ालफ़त के सिवा और जुर्मों की वज्ह ग़ालिबन रवा थी। जिस आ़ली ह़ौसलगी से (ह़ज़रत) मुह़म्मद ने इस क़ौम से सुलूक किया जिस ने इतनी देर आप से दुश्मनी रखी और आप का इन्कार किया वोह हर त़रह़ की तह़सीन व आफ़रीन के क़ाबिल है। ह़क़ीक़त में गुज़श्ता की मुआ़फ़ी और इस की गुस्ताख़ियों और अज़िय्यतों की फ़रामोशी आप ही के फ़ाइदे के लिये थी मगर ताहम इस के लिये एक फ़राख़ व फ़य्याज़ दिल की कुछ कम ज़रूरत न थी।"

फ़त्ह़े मक्का के दूसरे रोज़ ख़ुज़ाआ़ ने हुज़ैल के एक शख़्स को जो मुशरिक था क़त्ल कर डाला इस पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़म्दो सना के बा'द यूं ख़ित़ाब[1] फ़रमाया :

اِنَّ مَكَّةَ حَرَّمَهَا اللّٰهُ وَلَمْ يُحَرِّمْهَا النَّاسُ لَا يَحِلُّ لِاِمْرِىءٍ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يَّسْفِكَ بِهَا دَمًا وَّلَا يَعْضِدَ بِهَا شَجَرًا فَاِنْ تَرَخَّصَ اَحَدٌ لِقِتَالِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْهَا فَقُوْلُوْا لَهٗ اِنَّ اللّٰهَ اَذِنَ لِرَسُوْلِهٖ وَلَمْ يَاْذَنْ لَكُمْ وَاِنَّمَا اَذِنَ لِيْ فِيْهَا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ وَّقَدْ عَادَتْ حُرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالْاَمْسِ وَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ.[2]

तह़क़ीक़ मक्का को **अल्लाह** ने ह़राम कर दिया और लोगों ने ह़राम नहीं किया जो शख़्स ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखता है उस के लिये जाइज़ नहीं कि इस में ख़ून बहाए और न इस का दरख़्त काटे अगर कोई इस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जंग के सबब से क़िताल को रुख़्सत कहे तो उस से कह दो कि ख़ुदा ने अपने रसूल को इजाज़त दी तुम को इजाज़त नहीं दी, मुझे भी दिन की एक साअ़त इजाज़त दी गई और आज फिर इस की ह़ुरमत ऐसी हो गई जैसा कि कल (फ़त्ह़ से पहले) थी, चाहिये कि जो यहां ह़ाज़िर है वोह ग़ाइब को येह पैग़ाम पहुंचा दे।

जब मक्का बुतों से पाक हो चुका तो मक्का के गिर्द जो बुत (मनात, लात, उ़ज़्ज़ा, सवाअ़) थे वोह सराया के ज़रीए से मुन्हदिम कर दिये गए।

---

1 ......सह़ीह़ बुख़ारी व सीरते इब्ने हिशाम।

2 ......صحيح البخارى، كتاب المغازى، ٥٣ـ باب، الحديث: ٤٢٩٥، ج٣، ص١٠٥ والسيرة النبوية لابن هشام، دخول رسول الحرم، ص٤٧٤ ـ علميه

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए हुनैन

फ़त्हे मक्का का असर क़बाइले अ़रब पर निहायत अच्छा पड़ा वोह अब तक मुन्तज़िर थे और कहा करते थे कि (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और उन की क़ौम को आपस में निपट लेने दो अगर वोह कुरैश पर ग़ालिब आ गए तो सच्चे पैग़म्बर हैं। इस लिये जब मक्का फ़त्ह़ हुवा तो हर एक क़ौम ने इस्लाम क़बूल करने में पेश दस्ती की[1] मगर हवाज़िन का ज़बरदस्त क़बीला जो मक्का व ताइफ़ के दरमियान सुकूनत पज़ीर था इस फ़त्ह़ पर बहुत बर अफ़रोख़्ता[2] हुवा। वोह इस से पहले ही जंग की तय्यारियां कर रहे थे इस लिये फ़त्ह़ की ख़बर सुनते ही ह़म्ले के लिये तय्यार हो गए। हवाज़िन (ब इस्तिसनाए का'ब व किलाब) के साथ सक़ीफ़ तमाम और नस्र व जुशम तमाम और सा'द बिन अबी बक्र और कुछ बनू हिलाल शामिल हुवे। जुशम का रईस दुरैद बिन सिम्मा था जिस की उ़म्र सो साल से मुतजाविज़ थी। इसे मह्ज़ मश्वरे के लिये हौदज[3] में बिठा कर साथ ले गए। तमाम फ़ौज का सिपह सालारे आ'ज़म मालिक बिन औ़फ़ नस्री था जिस के हुक्म से बच्चे और औ़रतें और अम्वाल भी साथ थे ताकि लड़ाई में पीछे न हटें। दुरैद ने इस हुक्म को पसन्द न किया मगर इस की कुछ पेश न गई।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर पहुंची तो आप ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी ह़दरद अस्लमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बतौ़रे जासूस दरयाफ़्ते ह़ाल के लिये भेजा। वोह दुश्मन के लश्कर में आए और उन्हों ने वहां के तमाम ह़ालात दरबारे रिसालत में अ़र्ज़ किये। आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तय्यारी शुरूअ़ कर दी। दस हज़ार दिरहम से ज़ाइद अ़ब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ़ से जो अबू जह्ल के भाई थे क़र्ज़ लिये गए। और सफ़्वान बिन उमय्या से जो अब तक ईमान न लाए थे सो ज़िरहें मअ़ लवाज़िम मुस्तआ़र ली गईं। ग़रज़ शव्वाल सिने 8 हिजरी में आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारह हज़ार जमइय्यत के साथ रवाना हुवे जिन में से दो हज़ार तुलक़ा (अहले मक्का) थे। लश्कर की कसरत को देख कर बा'ज़ों की ज़बान से बे इख़्तियार निकला : "आज हम पर कौन ग़ालिब आ सकता है ?" जब हुनैन[4] में पहुंचे तो सुब्ह़ के वक़्त कि अभी उजाला भी अच्छी त़रह़ न हुवा था ह़म्ले के लिये आगे बढ़े। दुश्मन ने इन के पहुंचने से पहले ही

---

1 ......जल्दी की। 2 ......गुस्से में भरा होना। 3 ......ऊंट का कजावा।

4 ......एक वादी का नाम है जो मक्का से ताइफ़ की त़रफ़ क़रीबन बारह मील के फ़ासिले पर है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

इस त़रह़ सफ़ आराई कर रखी थी कि सब से आगे सुवार, सुवारों के पीछे प्यादा, प्यादों के पीछे औ़रतें और औ़रतों के पीछे बकरियां और ऊंट थे और कुछ फ़ौज पहाड़ की घाटियों और दरों की कमीनगाहों में मुक़र्रर कर दी थी। इस्लामी फ़ौज ने पहले ऐसी शुजाअ़त से धावा किया कि कुफ़्फ़ार(1) भाग निकले। मुसलमान ग़नीमत लूटने में मश्ग़ूल हो गए। कुफ़्फ़ार ने एक दूसरे को पुकारा कि येह क्या ज़िल्लत व फ़ज़ीह़त(2) है और मुड़ कर ह़म्ला किया। अब कसरत पर नाज़िश(3) अपना रंग लाई। लश्करे इस्लाम के मुक़द्दमे में बहुत से ऐसे नौजवान थे जो सलाह़(4) व ज़िरह से ख़ाली थे। हवाज़िन व बनू नस्र की जमाअ़त ने जो तीर अन्दाज़ी में मश्हूर थे तीरों का मींह बरसाना शुरूअ़ किया। ज़रा सी देर में मुक़द्दमतुल जैश(5) के पाउं उखड़ गए। इस त़रह़ बाक़ी फ़ौज भी भाग निकली। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ चन्द अस्ह़ाब साबित क़दम रहे मगर अकेले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे कि इस ह़ालत में भी दुश्मन की त़रफ़ बढ़ना चाहते थे और वोह अस्ह़ाब ब मुक़्तज़ाए शफ़्क़त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रोक रहे थे। चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के ख़च्चर की लगाम और ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिकाब थामे हुवे थे कि आगे न बढ़ जाएं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे :

اَنَا النَّبِیُّ لَا کَذِبْ   اَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبْ

मैं पैग़म्बर हूं इस में झूट नहीं, मैं अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बेटा हूं।

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत बुलन्द आवाज़ थे। आप ने हुक्म दिया कि मुहाजिरीन व अन्सार को आवाज़ दो। चुनान्चे, वोह यूं पुकारने लगे :

یَامَعْشَرَ الْاَنْصَارِ! یَا اَصْحَابَ السَّمُرَۃِ! یَا اَصْحَابَ سُوْرَۃِ الْبَقَرَۃِ

ओ गुरौहे अन्सार ! ओ बैअ़ते रिज़्वान वालो ! ऐ सूरए बक़रह वालो !

इस आवाज़ का कान में पड़ना था कि लब्बैक लब्बैक कहते हुवे सब जम्अ़ हो गए। आप ने सफ़ आराई के बा'द ह़म्ले का हुक्म दिया चुनान्चे, वोह निहायत बहादुरी से लड़ने लगे। शिद्दते जंग को देख कर आप ने फ़रमाया : اَلْاٰنَ حَمِیَ الْوَطِیْسُ (अब तन्नूर ख़ूब गर्म हो गया) लड़ाई

1......सह़ीह़ बुख़ारी, बाबे क़ौलुल्लाहि तआ़ला : ویوم حنین اذ اعجبتکم کثرتکم۔الآیۃ

2......रुस्वाई। 3.....फ़ख़्र व बड़ाई। 4.....अस्लिह़ा। 5.....वोह फ़ौजी दस्ता जो लश्कर के आगे आगे होता है।

www.dawateislami.net

का नक़्शा बदल चुका था। मुसलमानों पर त़मानियत का नुज़ूल हुवा। कुफ़्फ़ार को मलाए आ'ला[1] का लश्कर पचकलियान घोड़ों[2] पर सुवारों की शक्ल में नज़र आ रहा था।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़च्चर से उतर कर एक मुश्त ख़ाक ली और شَاهَتِ الْوُجُوْه[3] पढ़ते हुवे कुफ़्फ़ार की त़रफ़ फेंक दी। दुश्मन में से कोई ऐसा न था जिस की आंखों में वोह ख़ाक न पड़ी हो।[4] लश्करे कुफ़्फ़ार को शिकस्त हुई। अल्लाह तआ़ला ने अपने कलामे पाक में जंगे हुनैन का ज़िक्र इस त़रह़ किया :

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِیْ مَوَاطِنَ كَثِیْرَةٍ ۙ وَّ یَوْمَ حُنَیْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَیْـًٔا وَّ ضَاقَتْ عَلَیْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّیْتُمْ مُّدْبِرِیْنَ ۚ﴿۲۵﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلٰی رَسُوْلِهٖ وَ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَ اَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَ عَذَّبَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ یَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰی مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۲۷﴾ (سورۂ توبہ، ع ٤)

अलबत्ता तह़क़ीक़ अल्लाह ने तुम को मदद दी बहुत मैदानों में और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतराए। पस वोह कसरत तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन बा वुजूद फ़राख़ी के तुम पर तंग हो गई फिर तुम पीठ फेर कर हटे फिर अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी त़रफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमाई और वोह फ़ौजें उतारीं जो तुम ने न देखीं और काफ़िरों को अ़ज़ाब किया और येही सज़ा है काफ़िरों की फिर ख़ुदा इस के बा'द तौबा क़बूल करेगा जिस की चाहे और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।[5]

---

1 ....आस्मानी फ़िरिश्ते। 2 ....वोह घोड़ा जिस के चारों पाउं और माथा सफ़ेद हो। 3 ....चेहरे सियाह हो जाएं।

4 ......السيرة النبوية لابن هشام،غزوة حنين فی سنة ثمان بعد الفتح،ص٤٨٣۔٤٨٨ملتقطاً و المواهب اللدنية وشرح الزرقانی، غزوة حنين،ج٣،ص٤٨٧۔٥١١ملخصاً وصحيح البخاری، كتاب المغازی،باب قول اللّٰه تعالٰی:ويوم حنين...الخ، الحديث:٤٣١٧،ج٣،ص١١١۔ علميه

5 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कसरत पर इतरा गए थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन इतनी वसीअ़ हो कर तुम पर तंग हो गई फिर तुम पीठ दे कर फिर गए फिर अल्लाह ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर और मुसलमानों पर और वोह लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया और मुन्किरों की येही सज़ा है फिर इस के बा'द अल्लाह जिसे चाहेगा तौबा देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ١٠،التوبۃ:٢٥۔٢٧) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

जंगे अवत़ास

शिकस्त खुर्दा फ़ौज टूट फूट कर कुछ तो अवत़ास में और कुछ त़ाइफ़ में जम्अ़ हुई। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ फ़ौज ब सर कर्दगी ह़ज़रते अबू आ़मिर अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अवत़ास भेजी जो दियारे हवाज़िन में एक वादी का नाम है। दुरैद बिन सिम्मा यहां मारा गया। क़बीलए जुशम के एक शख़्स ने ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की रान में तीर मारा ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस जुशमी को क़त्ल कर डाला और ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को इत्तिलाअ़ दी। ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कुछ देर के बा'द वासिल ब ह़क़ हुवे। मगर शहादत से पहले उन्हों ने ह़ज़रते अबू मूसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से कहा कि सलाम के बा'द मेरा येह पैग़ाम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचा देना कि आप मेरे ह़क़ में दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाएं।

ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बा'द ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़लम हाथ में लिया और ख़ूब जंग की, दुश्मन को शिकस्त हुई। असीराने जंग में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ाई बहन शैमा सा'दिय्या भी थीं। जब गिरिफ़्तार हो कर आईं तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहने लगीं कि मैं आप की बहन हूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस की अ़लामत क्या है? इस पर उन्हों ने अपनी पीठ खोल कर दिखाई कि एक दफ़्आ़ बचपन में मैं आप को गोद में लिये बैठी थी आप ने दांत से काटा था येह उस का निशान है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह निशान पहचान लिया और अपनी चादर मुबारक बिछा कर उन को उस पर बिठाया और मरह़बा कहा। फिर फ़रमाया : "जी चाहे तो मेरे हां इ़ज़्ज़त से रहो और अपनी क़ौम में जाना चाहो तो वहां पहुंचा दिया जाए।" उन्हों ने अपनी क़ौम में रहना पसन्द किया और ईमान लाईं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को गुलाम व कनीज़ और एक ऊंट दे कर बड़े एह़तिराम से उन की क़ौम में पहुंचा दिया।

जब ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अवत़ास से वापस आए तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते अबू आ़मिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का पैग़ाम पहुंचा दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعُبَيْدٍ اَبِىْ عَامِرٍ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَوْقَ كَثِيْرٍ مِّنْ خَلْقِكَ وَمِنَ النَّاسِ

ऐ ख़ुदाया ! अबू आ़मिर उ़बैद को बख़्श दे ऐ ख़ुदा ! इसे क़ियामत के दिन अपनी मख़्लूक़ और अपने लोगों में से बहुतों के ऊपर रखना।

www.dawateislami.net

येह देख कर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने वासिते़ दुआ़ की इल्तिजा की। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِعَبْدِ اللّٰهِ ابْنِ قَيْسٍ ذَنْبَهٗ وَ اَدْخِلْهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مُدْخَلًا كَرِيْمًا ऐ खु़दा ! अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस का गुनाह बख़्श दे और इसे क़ियामत के दिन इ़ज़्ज़त के मक़ाम में दाखि़ल कर।[1]

मुह़ासरए त़ाइफ़

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़नाइम व असीराने जंग[2] की निस्बत हुक्म दिया कि सब को जम्अ़ कर के जिइर्राना[3] में भेज दिया जाए। ब ज़ाते अक़्दस त़ाइफ़[4] की त़रफ़ रवाना हुवे। रवानगी के वक़्त तुफै़ल बिन अ़म्र दोसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बुते ज़ुल कफ़्फै़न के मुन्हदिम करने के लिये भेजा और हुक्म दिया कि अपनी क़ौम से मदद ले कर हम से त़ाइफ़ में आ मिलो, ह़ज़रते तुफै़ल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी क़ौम के रईस थे उन्हों ने बुत को जला दिया और क़बीलए दोस के चार सो आदमी और दबाबा व मुन्जनीक़ ले कर त़ाइफ़ में ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवे।

सक़ीफ़ अवत़ास से भाग कर त़ाइफ़ में चले आए थे। यहां एक क़ल्आ़ था इस की मरम्मत कर के एक साल का सामाने रुस्द[5] ले कर इस में पनाह गुज़ीन थे। लश्करे इस्लाम इस क़ल्ए़ के क़रीब उतरा इस्लाम में येह पहला मौक़अ़ था कि क़ल्आ़ शिकन आलात इस्ति'माल में लाए गए। मुसलमानों ने मुन्जनीक़[6] नस्ब किया तो अहले क़ल्आ़ ने तीरों का मींह बरसाना शुरूअ़ किया बारह ग़ाज़ी शहीद हो गए। दबाबा[7] इस्ति'माल किया गया तो सक़ीफ़ ने लोहे की गर्म सलाखें बरसाईं जिन से दबाबा जल गया और नुक़्साने जान भी हुवा, फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से मुनादी कर दी गई कि कुफ़्फ़ार का जो ग़ुलाम क़ल्ए़ से हमारे पास आएगा वोह आज़ाद कर दिया जाएगा। इस का नतीजा येह हुवा कि तीस ग़ुलाम क़ल्ए़ से उतर कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे, वोह सब आज़ाद कर दिये गए और एक एक कर के मुसलमानों के

1 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی،غزوة اوطاس،ج٣،ص٥٣٢-٥٣٦ملتقطاً۔ علميه

2....माले ग़नीमत और जंगी क़ैदी।

3....जिइर्राना या जिग़राना मक्का व त़ाइफ़ के दरमियान मक्का से एक बुरैद (12 मील) है। 12 मिन्ह

4....त़ाइफ़ एक बड़ा शहर है जो मक्का से दो या तीन मन्ज़िल मशरिक़ की त़रफ़ वाक़ेअ़ है। 12 मिन्ह

5....राशन।

6....मुन्जनीक़ एक क़िस्म का बड़ा गोफ़या था जिस में बड़े बड़े पथ्थर रख कर दीवारे क़ल्आ़ पर फेंका करते थे ताकि दीवार टूट जाए। 12 मिन्ह

7....दबाबा एक आलए जंग था जो चमड़े और लकड़ी से बनाया जाता था इस की ओट में दुश्मन के क़ल्ए़ की त़रफ़ जाते ताकि दीवारे क़ल्आ़ में नक़्ब लगाएं। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

हवाले कर दिये गए कि इन की ज़रूरियात के मुतकफ़्फ़िल हों और इन को ता'लीमे इस्लाम दें। इन गुलामों में हज़रते नुफ़ैअ़ बिन हारिस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे जो चर्ख़ चाह[1] पर लटक कर क़ल्ए की दीवार से उतरे थे। इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की कुन्यत अबू बकरह[2] रख दी।

दो हफ़्ते बल्कि इस से ज़ियादा मुहासरा क़ाइम रहा मगर क़ल्आ फ़त्ह न हुवा। आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते नौफ़ल बिन मुआ़विय्या दैली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मश्वरा किया। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि "लोमड़ी भट में है। अगर आप कोशिश जारी रखेंगे तो उसे पकड़ लेंगे और अगर उसे छोड़ जाएं तो आप को मुज़िर नहीं।" ग़रज़ मुहासरा उठा लिया गया। जब वापस आने लगे तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सक़ीफ़ के तीरों ने हम को जला दिया, आप उन पर बद दुआ फ़रमाएं।" इस पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا وَّائْتِ بِهِمْ مُسْلِمِيْن[3] ऐ ख़ुदा ! तू सक़ीफ़ को हिदायत दे और उन को (मुसलमान बना कर) ला। इस दुआए रह़मतुल्लिल आ़लमीन का नतीजा येह हुवा कि सिने 9 हिजरी में सक़ीफ़ के वफ़्द ने हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर इज़्हारे इस्लाम किया।

आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ताइफ़ से जिइर्राना में तशरीफ़ लाए। यहां ग़नाइमे हुनैन व अवत़ास जम्अ़ थीं, जिन की तफ़्सील येह है :

असीराने जंग (ज़नान व अत़्फ़ाल)	6000
ऊंट	24000
बकरियां	40,000 से ज़ाइद
चांदी	4000 ऊक़िया

आप ने दस दिन से कुछ ज़ियादा हवाज़िन का इन्तिज़ार किया। वोह न आए तो आप ने माले ग़नीमत में से तुलक़ा व मुहाजिरीन को दिया और अन्सार को कुछ न दिया। इस पर अन्सार को रन्ज हुवा इन में से बा'ज़े कहने लगे : "ख़ुदा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुआ़फ़ कर दे। वोह क़ुरैश को अ़त़ा फ़रमाते हैं और हम को मह़रूम रखते हैं हालांकि हमारी तल्वारों से क़ुरैश के ख़ून के क़त़्रे टपकते हैं" और बा'ज़ बोले : "जब मुश्किल पेश आती है तो हमें बुलाया जाता है और ग़नीमत औरों को दी जाती है।"

---

1 ......कूंएं के चर्ख़े। 2 ......या'नी चर्ख़ वाला।

3 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقاني، حرق ذی الكفلين،غزوة الطائف، ج٤، ص٣-١٨ ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह चर्चा सुना तो अन्सार को त़लब फ़रमाया। एक चर्मी[1] ख़ैमा नस्ब किया गया जिस में आप ने अन्सार के सिवा किसी और को न रहने दिया। जब अन्सार जम्अ़ हो गए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि "वोह क्या बात है जो तुम्हारी निस्बत मेरे कान में पहुंची है।" अन्सार झूट न बोला करते थे कहने लगे कि सच है जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुना मगर हम में से किसी दाना ने ऐसा नहीं कहा नौ ख़ैज़ जवानों ने ऐसा कहा था। येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़म्दो सना के बा'द यूं ख़ित़ाब फ़रमाया :

يَامَعْشَرَ الْاَنْصَارِ اَلَمْ اَجِدْكُمْ ضُلَّالًا[2] فَهَدَاكُمُ اللّٰهُ بِيْ وَكُنْتُمْ مُتَفَرِّقِيْنَ فَاَلَّفَكُمُ اللّٰهُ بِيْ وَكُنْتُمْ عَالَةً فَاَغْنَاكُمُ اللّٰهُ بِيْ

ऐ गुरौहे अन्सार ! क्या येह सच नहीं कि तुम गुमराह थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीए़ से तुम को हिदायत दी और तुम परागन्दा[3] थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीए़ से तुम को जम्अ़ कर दिया और तुम मुफ़्लिस थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीए़ से तुम को दौलत मन्द कर दिया।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह फ़रमाते जाते थे और अन्सार हर फ़िक़रे पर कहते जाते थे कि "ख़ुदा और रसूल का एह़सान इस से बढ़ कर है।"

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम मुझे जवाब क्यूं नहीं देते ? अन्सार ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम क्या जवाब दें ख़ुदा और रसूल का एह़सान और फ़ज़्ल है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ब ख़ुदा ! अगर तुम चाहो तो येह जवाब दो मैं साथ साथ तुम्हारी तस्दीक़ करता जाऊंगा :

اَتَيْتَنَا مُكَذَّبًا فَصَدَّقْنَاكَ وَمَخْذُوْلًا فَنَصَرْنَاكَ وَطَرِيْدًا فَاٰوَيْنَاكَ وَعَائِلًا فَوَاسَيْنَاكَ

तू हमारे पास इस ह़ाल में आया कि लोगों ने तेरी तक्ज़ीब की थी, हम ने तेरी तस्दीक़ की, लोगों ने तेरा साथ छोड़ दिया था, हम ने तेरी मदद की, लोगों ने तुझ को निकाल दिया था हम ने तुझे पनाह दी, तू मुफ़्लिस था हम ने जानो माल से तेरी हमदर्दी की।

फिर फ़रमाया कि मैं ने तालीफ़े क़ुलूब के लिये अहले मक्का के साथ येह सुलूक किया है "ऐ अन्सार ! क्या तुम्हें येह पसन्द नहीं कि लोग ऊंट बकरियां ले कर जाएं और तुम

1......चमड़े का।

2......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "ضَآلًّا" लिखा है लेकिन बुख़ारी शरीफ़, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में "ضُلَّالًا" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "ضَآلًّا" के बजाए "ضُلَّالًا" लिखा है। **इल्मिय्या**

3......मुन्तशिर, बिखरे हुवे।

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ले कर घर जाओ। अल्लाह की क़सम ! तुम जो कुछ ले जा रहे हो वोह इस से बेहतर है जो वोह ले जा रहे हैं। अगर लोग किसी वादी या दर्रे में चलें तो मैं अन्सार की वादी या दर्रे में चलूंगा।" येह[1] सुन कर अन्सार पुकार उठे : "یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ رَضِیْنَا" (या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम राज़ी हैं) और उन पर इस क़दर रिक़्क़त तारी हुई कि रोते रोते दाढ़ियां तर हो गईं।[2]

जब जिइर्राना में असीराने जंग की तक़्सीम भी हो चुकी तो हवाज़िन की सिफ़ारत (वफ़्द) हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुई। आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रज़ाई मां हलीमा क़बीलए सा'द बिन बक्र बिन हवाज़िन से थीं। इस सिफ़ारत में आप का रज़ाई चचा अबू सुरवान (या अबू बुरक़ान) बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा सअ़दी भी था। सिफ़ारत का रईस ज़ुहैर बिन सुरद साअ़दी जुशमी था। वफ़्द ने पहले अपनी त़रफ़ से और अपनी क़ौम की त़रफ़ से इज़्हारे इस्लाम किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की फिर ह़ज़रते ज़ुहैर बिन सुरद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं तक़रीर की :[3]

"या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم असीराने जंग में से जो औ़रतें छपरों में हैं वोह आप की फूफियां और ख़ालाएं और दाया हैं जो आप की परवरिश की कफ़ील थीं। अगर हम ने हारिस बिन अबी शिम्र (अमीरे शाम) या नो'मान बिन मुन्ज़िर (शाहे इराक़) को दूध पिलाया होता फिर इस त़रह़ की मुसीबत हम पर आ पड़ती तो हमें उस से मेहरबानी व फ़ाइदे की तवक़्क़ोअ़ होती मगर आप से तो ज़ियादा तवक़्क़ोअ़ है क्यूंकि आप फ़ज़्लो शरफ़ में हर मक्फ़ूल से बढ़ कर हैं।"[4]

इस के बा'द ह़ज़रते अबू सुरवान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं अ़र्ज़ किया :[5] "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन छपरों में आप की फूफियां ख़ालाएं और बहनें हैं जो आप की परवरिश की कफ़ील थीं। इन्हों ने आप को अपनी गोदों में पाला और अपने पिस्तान से दूध पिलाया। मैं ने आप को दूध पीते देखा कोई दूध पीता बच्चा आप से बेहतर न देखा। मैं ने आप को दूध छुड़ाया हुवा

1......इन ह़ालात के लिये सह़ीह़ बुख़ारी देखो। 12 मिन्ह

2 ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی،نبذة من قسم الغنائم...الخ،ج٤،ص١٨ـ٢٤ملتقطاً وصحيح البخاری،كتاب المغازی، باب غزوة الطائف،الحديث:٤٣٣٠ـ٤٣٣١،ج٣،ص١١٦ـ١١٧ـ علميه

3 ......سیرت حلبیہ واصابہ۔

4 ......السيرة الحلبية،غزوة الطائف،ج٣،ص١٧٨ والاصابة فی تمييز الصحابة،٢٨٣٣ـزهير بن صرد،ج٢،ص٤٧٣ـعلميه

5......इसाबा, तर्जमा अबू सुरवान।

www.dawateislami.net

देखा कोई दूध छुड़ाया बच्चा मैं ने आप से बेहतर न देखा फिर मैं ने आप को नौजवान देखा कोई नौजवान आप से बेहतर न देखा। आप में ख़िसाले ख़ैर[1] कामिल तौर पर मौजूद हैं और बा वुजूद इस के हम आप के अहल व कुम्बा हैं आप हम पर एह़सान करें **अल्लाह** तआ़ला आप पर एह़सान करेगा।"

येह तक़रीर सुन कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने इन्तिज़ार के बा'द तक़्सीम की है। अब तुम असीराने जंग व ग़नाइम में एक इख़्तियार कर लो। उन्हों ने कहा कि हम असीराने जंग की रिहाई चाहते हैं। आप ने फ़रमाया कि मुझे अपने ख़ानदान के हिस़्से का इख़्तियार है। बाक़ी के लिये औरों की इजाज़त दरकार है तुम नमाज़े ज़ोहर के बा'द अपनी दरख़्वास्त पेश करना। चुनान्चे, नमाज़े ज़ोहर के बा'द उन्हों ने इज़्हारे मत़लब किया फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़म्दो सना के बा'द यूं ख़ित़ाब[2] फ़रमाया : "तुम्हारे भाई मुसलमान हो कर आए हैं। मेरी राए है कि असीराने जंग इन को वापस कर दूं तुम में से जो बिग़ैर इ़वज़ वापस करना चाहते हैं कर दें और जो इ़वज़ लेना चाहते हैं हम पहली ग़नीमत में से जो हाथ आएगी अदा कर देंगे।" क़िस्सए कोताह तमाम मुहाजिरीन व अन्सार ने बिग़ैर इ़वज़ वापस कर देना मन्ज़ूर कर लिया इस त़रह़ छे हज़ार रिहा कर दिये गए।[3]

हिजरत का नवां साल

इस साल के अवाइल में वाक़िअ़ए ईला पेश आया। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मक़्दूर से ज़ियादा नफ़्क़ा व कसवत[4] त़लब किया इस पर आप ने ईला किया या'नी सोगंद[5] खाई कि एक माह तक इन के साथ मुख़ालत़त[6] न करूंगा। जब 29 दिन गुज़रने पर महीना पूरा हुवा तो आयए तख़्यीर (सूरए अह़ज़ाब) नाज़िल हुई मगर सब ने ज़ीनते दुन्या पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इख़्तियार किया।

---

1 ......अच्छी आ़दतें। 2 ......सह़ीह़ बुख़ारी, ग़ज़्वए हुनैन।

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٩٦٦٦۔ابو ثروان بن عبد العزی السعدی،ج٧،ص٤٨ والسیرة الحلبیة،غزوة الطائف،ج٣، ص١٧٩۔١٨٠ملتقطاً وصحیح البخاری، کتاب المغازی،باب قول الله تعالی:ویوم حنین...الخ،الحدیث:٤٣١٨۔ ٤٣١٩،ج٣،ص١١١۔علمیه

4 ......या'नी दुन्यावी साज़ो सामान व आसाइशें। 5 ......क़सम। 6 ......मेल जोल।

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए ताइफ़ और ग़ज़्वए तबूक[1] के दरमियानी ज़माने में ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर ईमान लाए और उन्हों ने अपना मश्हूर क़सीदा पढ़ा।

ग़ज़्वए तबूक

येह ग़ज़्वा माहे रजब में पेश आया। इस का सबब येह था कि मदीने में येह ख़बर पहुंची कि रूमियों और ईसाई अ़रबों ने मदीने पर ह़म्ला करने के लिये बड़ी फ़ौज तय्यार कर ली है। इस लिये आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले मक्का और क़बाइले अ़रब से जानी व माली इमदाद त़लब की। उस वक़्त सख़्त क़ह़त़ और शिद्दत की गर्मी थी। इसी वज्ह से इस ग़ज़्वे को ग़ज़्वतुल उ़सरह भी कहते हैं। सूरए तौबा में है : (2)"اَلَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُ فِیْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ" जो लश्कर इस ग़ज़्वे के लिये तय्यार किया गया उसे जैशुल उ़सरह कहते हैं। इस जैश की तय्यारी में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुसूसिय्यत से ह़िस्सा लिया। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने भी बड़े ईसार का सुबूत दिया। ग़रज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीस हज़ार की जमइय्यत के साथ मदीने से रवाना हुवे। रास्ते में जब सर ज़मीने समूद में उतरे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया[3] कि यहां के कूओं का पानी न लेना और न वोह पानी पीना। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि हम ने पानी लिया है और इस से आटा गूंधा है। आप ने फ़रमाया कि पानी गिरा दो और आटा ऊंटों को खिला दो। जब आप ह़जर या'नी समूद के मकानात में से गुज़रे जो पहाड़ों को तराश कर बनाए हुवे थे तो फ़रमाया[4] कि इन मोअ़ज़्ज़िबीन के मकानात से रोते हुवे गुज़रना चाहिये कि मबादा हम पर भी वोही अ़ज़ाब आए। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी चादर से मुंह छुपा लिया और इस वादी से जल्दी गुज़र गए।

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़जर से रवाना हुवे तो रास्ते में एक जगह आप का नाक़ा गुम हो गया। ज़ैद बिन लुसैत[5] क़ैनुक़ाई मुनाफ़िक़ कहने लगा : "मुह़म्मद नबुव्वत का

1......येह शहर मदीना व दिमश्क़ के क़रीबन वस्त़ में है। 12 मिन्ह

2......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिन्हों ने मुश्किल की घड़ी में इन का साथ दिया। (پ۱۱،التوبۃ:۱۱۷) **इल्मिय्या**

3 ......صحیح بخاری،کتاب الانبیاء،باب قول اللّٰہ تعالٰی وَاِلٰی ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا۔الآیۃ

4 ......صحیح بخاری،کتاب المغازی،باب نزول النبی صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم الحجر۔

5......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "ज़ैद बिन बुसैत" लिखा है लेकिन ज़ुरक़ानी, वाक़िदी और दीगर कुतुब में "ज़ैद बिन लुसैत" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां ज़ुरक़ानी के मुत़ाबिक़ "ज़ैद बिन लुसैत" लिखा है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

दा'वा करता है और तुम को आस्मान की ख़बर देता है ह़ालांकि वोह इतना भी नहीं जानता कि उस का नाक़ा कहां है।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ब इत्तिलाए इलाही येह मा'लूम हो गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया : "एक मुनाफ़िक़ ऐसा ऐसा कहता है ख़ुदा की क़सम ! मैं वोही जानता हूं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बता दिया। चुनान्चे, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने मुझे नाक़ा का ह़ाल बता दिया है। वोह फ़ुलां दर्रे में है उस की नकील एक दरख़्त में फंसी हुई है इस सबब से वोह रुका हुवा है, तुम जा कर ले आओ।" ब ता'मीले इरशादे मुबारक नाक़ा उस दर्रे में से लाया गया। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशादे मुबारक के वक़्त ह़ज़रते अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मौजूद थे। मुनाफ़िक़े मज़्कूर ह़ज़रते अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ही के डेरे में था। ह़ज़रते अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने डेरे में वापस आ कर कहने लगे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अभी हम से ब इत्तिलाए इलाही अ़जीब माजरा बयान फ़रमाया कि एक शख़्स ऐसा ऐसा कहता है। अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के भाई अ़म्र बिन ह़ज़्म ने कहा कि तुम्हारे आने से पहले ज़ैद बिन लुसैत ने ऐसा ही कहा है। येह सुन कर ह़ज़रते अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ज़ैद की गर्दन लकड़ी से ठुका दी और कहा : "ओ दुश्मने ख़ुदा ! मेरे डेरे से निकल जा, मेरे साथ न रह।" कहा गया है कि ज़ैदे मज़्कूर बा'द में ताइब हो गया था।[1]

ह़जर से तबूक चार मन्ज़िल है। वहां पहुंच कर मा'लूम हुवा कि वोह ख़बर ग़लत़ थी। तबूक में बीस रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ियाम रहा। अहले तबूक ने जिज़्ये पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुल्ह़ कर ली। ऐला[2] का नसरानी सरदार यूह़न्ना बिन रुअबा ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवा। उस ने तीन सो दीनार सालाना जिज़्ये पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुल्ह़ कर ली और एक सफ़ेद ख़च्चर पेश किया। आप ने एक चादर उसे इनायत फ़रमाई। जर्बा व अज़्रुह़[3] के यहूदियों ने भी जिज़्ये पर सुल्ह़ कर ली।

तबूक ही से आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को चार सो सुवारों का दस्ता दे कर उकैदिर बिन अ़ब्दुल मालिक किन्दी नसरानी सरदार दूमतुल जुन्दल के ज़ेर करने के लिये भेजा और फ़रमा दिया कि तुम उकैदिर को नील गाए[4] का शिकार करते पाओगे। उकैदिर दूमतुल जुन्दल के क़ल्ए में रहा करता था जब ह़ज़रते ख़ालिद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه क़ल्ए के पास पहुंचे तो एक अ़जीब वाक़िआ पेश आया, चांदनी रात थी कि एक नील

1....ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब ब ह़वाला इब्ने इस्ह़ाक़ व वाक़िदी वग़ैरा, ग़ज़्वए तबूक।

2....येह शहर बह़ीरए क़ुल्ज़ुम के किनारे पर शाम से मुल्ह़िक़ वाक़ेअ़ है। वोह यहूद जिन पर अल्लाह तआ़ला ने मछली का शिकार सब्त के दिन ह़राम कर दिया था इसी शहर में रहा करते थे। 12 मिन्ह

3....येह दो अ़लाक़ों के नाम हैं। 4....हिरन की क़िस्म का एक जंगली चोपाया जो छोटी गाए के बराबर होता है।

www.dawateislami.net

गाए जंगल से आ कर क़ल्ए़ के दरवाज़े पर सींग मारने लगी उकैदिर उस के शिकार के लिये क़ल्ए़ से उतर आया। अस्नाए शिकार में ह़ज़रते ख़ालिद के दस्ते ने उस पर ह़म्ला किया और गिरिफ़्तार कर के मदीने में ले आए। उस ने भी जिज़्ये पर सुल्ह़ कर ली।(1)

मस्जिदे ज़िरार

मुनाफ़िक़ हमेशा इस अम्र के दरपे थे कि किसी त़रह़ मुसलमानों में फूट डाल दें। इस ग़रज़ से उन्हों ने अपनी अ़लाह़िदा मस्जिद बनाने का इरादा किया। अबू आ़मिर फ़ासिक़ जो अन्सार में से था ईसाई हो गया था। वोह ग़ज़्वए ख़न्दक़ तक आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ता रहा। जब हवाज़िन भाग गए तो वोह शाम में चला गया था उस ने वहां से उन मुनाफ़िक़ीन को कहला भेजा कि तुम मस्जिदे क़ुबा के मुत्तसिल अपनी मस्जिद बना लो और सामाने ह़र्ब तय्यार कर लो। मैं क़ैसरे रूम के पास जाता हूं और रूमियों की फ़ौजें लाता हूं ताकि मुह़म्मद और उस के अस्ह़ाब को मुल्क से निकाल दें। चुनान्चे, मुनाफ़िक़ों ने मस्जिदे क़ुबा के पास एक मस्जिद बनाई और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ कर दरख़्वास्त की, कि हम ने बीमारों और मा'ज़ूरों के लिये एक मस्जिद बनाई है। आप उस में क़दम रन्जा फ़रमा कर इस में नमाज़ पढ़ाएं और दुआ़ए बरकत फ़रमाएं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं अब ग़ज़्वए तबूक पर जा रहा हूं वापस आ कर اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی ह़ाज़िर होऊंगा। चुनान्चे, जब आप मुहिमे तबूक से वापस हो कर मौज़ए ज़ू–अवान में पहुंचे जो मदीनए त़य्यिबा से एक घन्टे की राह है तो येह आयतें नाज़िल हुईं :

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا
بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ لَا تَقُمْ فِيْهِ
اَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ

*और वोह लोग जिन्हों ने एक मस्जिद बनाई ज़रर पहुंचाने और कुफ़्र करने और मुसलमानों में फूट डालने के लिये वोह कमीनगाह बनाने के लिये उस शख़्स के वासिते़ जो पहले से ख़ुदा और रसूल से लड़ रहा है और अलबत्ता वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो भलाई ही चाही थी। **अल्लाह** गवाह है कि वोह लोग झूटे हैं तू उस मस्जिद में हरगिज़ खड़ा न*

---

(1) ......المواهب اللدنية وشرح الزرقانی، ثم غزوة تبوك، ج٤، ص٦٥ـ٩٥ وهدم صنم طيء، ص٥٧-٦٣ ملخصاً و صحيح البخاری، كتاب احاديث الانبياء، باب قول اللّٰه تعالٰى: والى ثمود اخاهم صالحاً، الحديث:٣٣٧٨-٣٣٧٩، ج٢، ص٤٣٢ و صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب نزول النبی الحجر، الحديث:٤٤١٩ـ٤٤٢٠، ج٣، ص١٤٩ـ١٥٠ ملتقطاً ـ علميه

www.dawateislami.net

होना अलबत्ता वोह मस्जिद जिस की बुन्याद पहले दिन से परहेज़गारी पर रखी गई है इस बात की ज़ियादा मुस्तह़िक़ है कि तू उस में खड़ा हो। उस में ऐसे मर्द हैं जो पाक रहने को दोस्त रखते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को दोस्त रखता है। (1)

اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ (توبہ، ع ۱۳)

पस आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मालिक बिन दख़्शम और मा'न बिन अ़दी अ़जलानी को हुक्म दिया कि जा कर उस मस्जिदे ज़िरार को गिरा दो और जला दो, चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।(2) इस साल मुख़्तलिफ़ क़बाइल के वुफ़ूद इस कसरत से दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे कि इसे साले वुफ़ूद कहा जाता है। येह वुफ़ूद बिल उ़मूम ने'मते ईमान से माला माल हो कर वापस गए। इस मुख़्तसर में इन की तफ़्सील की गुन्जाइश नहीं।

हिजरत का दसवां साल

इस साल भी वुफ़ूदे अ़रब पै दर पै ह़ाज़िरे ख़िदमत होते रहे। अहले यमन व मुलूक ह़िमयर ईमान लाए, इसी साल रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आख़िरी ह़ज किया जिसे ह़ज्जतुल वदाअ़ कहते हैं,(3) اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ الاية अ़रफ़ा में नाज़िल हुई।(4)

हिजरत का ग्यारहवां साल

इस साल के माहे रबीउ़ल अव्वल में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हो गया जिस का ज़िक्र आयिन्दा बाब में आता है।(5)

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जिन्हों ने मस्जिद बनाई नुक़्सान पहुंचाने को और कुफ़्र के सबब और मुसलमानों में तफ़रिक़ा डालने को और इस के इन्तिज़ार में जो पहले से अल्लाह और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे हम ने तो भलाई चाही और अल्लाह गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़गारी पर रखी गई है वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं। (پ۱۱، التوبة:۱۰۷-۱۰۸)

2 ......تفسیر درمنثور اور وفاء الوفاء۔......(الدر المنثور للسیوطی، سورة التوبة، تحت الآية:۱۰۷، ج۴، ص۲۸۴-۲۸۶ ملتقطاً و وفاء الوفاء للسمهودی، الباب الخامس: ماجاء فی مسجد الضرار، ج۲، الجزء الثالث، ص۸۱۴-۸۱۶ ملتقطاً۔ علمیه)

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया। (پ۶، المآئدة:۳) इल्मिय्या

4 ......الكامل فی التاريخ، ذكر الاحداث فی سنة عشر، ج۲، ص۱۶۲-۱۷۱۔ علمیه

5 ......الكامل فی التاريخ، ذكر احداث سنة احدى عشرة، ج۲، ص۱۸۲۔ علمیه

www.dawateislami.net

पांचवां बाब

वफ़ात शरीफ़ व हुल्यए मुबारक का बयान

माहे सफ़र सिने 11 हिजरी के अख़ीर अ़शरह में आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमार हो गए और माहे रबीउ़ल अव्वल में विसाल फ़रमा गए। विसाल शरीफ़ की तारीख़ में इख़्तिलाफ़ है। इस बात पर सब का इत्तिफ़ाक़ है कि वफ़ात शरीफ़ माहे रबीउ़ल अव्वल में दो शम्बा के दिन[1] हुई। जमहूर के नज़्दीक रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं तारीख़ थी। माहे सफ़र की एक या दो रातें बाक़ी थीं कि मरज़ का आग़ाज़ हुवा। बा'ज़े तारीख़े विसाल यकुम रबीउ़ल अव्वल बताते हैं। बिनाए बर क़ौले ह़ज़रते सुलैमान तैमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इब्तिदाए मरज़ यौमे शम्बा[2] 22 माहे सफ़र को हुई और वफ़ात शरीफ़ यौमे दो शम्बा[3] 2 रबीउ़ल अव्वल को हुई। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अबू मिह़नफ़[4] का क़ौल ही मो'तमद है कि वफ़ात शरीफ़ 2 रबीउ़ल अव्वल को हुई। दूसरों की ग़लती की वज्ह येह हुई कि सानी[5] को सानिये उ़शर[6] ख़याल कर लिया गया, फिर इसी वह्म में बा'ज़ों ने बा'ज़ की पैरवी की।[7]

ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه जंगे मौता में शहीद हो गए थे। इन के इन्तिक़ाम के लिये आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अय्यामे मरज़ ही में फ़ौज तय्यार की और अपने दस्ते मुबारक से झन्डा तय्यार किया और ह़ज़रते ज़ैद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के साहिबज़ादे ह़ज़रते उसामा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को इस फ़ौज का सरदार मुक़र्रर कर के हुक्म दिया कि मक़ामे उबना में पहुंच कर रूमियों से जिहाद करो। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के अय्यामे मरज़ ही में ह़ज़रते फ़ैरोज़ दैलमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अस्वद अ़निसी मुद्दइये नबुव्वत को क़त्ल कर डाला। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीने में इस ह़ाल की ख़बर दी और फ़रमाया : "فَازَ فيروز" (फ़ैरोज़ कामयाब हो गया)।

---

1 ......बरोज़ पीर। 2 ......बरोज़ हफ़्ता। 3 ......बरोज़ पीर।

4 ......वफ़ाउल वफ़ा में "अबू मिख़नफ़" लिखा है अलबत्ता सीरत व तारीख़ की बा'ज़ कुतुब में "अबू मिह़नफ़" भी है मुमकिन है मुसन्निफ़ के पास वफ़ाउल वफ़ा का जो नुस्ख़ा हो उस में "अबू मिह़नफ़" ही हो या इन्हों ने किसी वज्ह से इसे तरजीह़ दी हो। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या** 5 ......2 रबीउ़ल अव्वल। 6 ......12 रबीउ़ल अव्वल।

7 ......وفاءالوفاء، جزءاوّل،ص۲۲۶۔......(وفاء الوفاء للسمهودى،الستة العاشرة من الهجرة...الخ،ج۱،الجزء الاول، ص۳۱۷۔ ۳۱۹ملتقطاً۔ علميه)

www.dawateislami.net

वफ़ात शरीफ़ से पहले जो पंज शम्बा[1] था उस में क़िस्सए क़िरत़ास वुक़ूअ़ में आया जिस को फ़क़ीर ने तोह़्फ़ए शीआ़ में बित्तफ़सील लिखा है।[2] इसी रोज़ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم को तीन चीज़ों की वसिय्यत फ़रमाई :

﴾1﴿.....मुशरिकीन को जज़ीरए अ़रब से निकाल देना।

﴾2﴿.....मुलूक व उमरा के ऐलची जो तुम्हारे पास आया करें उन को जाइज़ा व इन्आ़म दिया करना जैसा कि मैं दिया करता था।

......तीसरी चीज़ का ज़िक्र हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न फ़रमाया, या रावी (सुलैमान अह़वल) भूल गया।[3] इसी रोज़ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपना ख़लीफ़ए नमाज़ मुक़र्रर फ़रमाया और वोह वफ़ात शरीफ़ तक नमाज़ पढ़ाते रहे। छे या सात दीनार जो ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास थे वोह भी हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अय्यामे मरज़ में तक़्सीम फ़रमा दिये और कुछ बाक़ी न छोड़ा।[4] वफ़ात शरीफ़ का वक़्त

1......जुमा'रात।

2......क़िस्सए क़िरत़ास बिल इख़्तिसार यूं है कि रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ात शरीफ़ से पांच दिन पहले फ़रमाया : काग़ज़ क़लम लाओ मैं एक तह़रीर लिख दूं ताकि तुम इस के बा'द गुमराह न हो, इस पर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दर्द ग़ालिब है और हमारे पास किताबुल्लाह है और वोह हम को काफ़ी है। ह़ाज़िरीन में इख़्तिलाफ़ हुवा और बात बढ़ गई जिस पर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरे पास से उठ जाओ मेरे पास झगड़ा करना मुनासिब नहीं, फिर इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا येह कहते हुवे निकले बड़ी मुसीबत है जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और तह़रीर के दरमियान ह़ाइल हो गई। (صحیح بخاری، کتاب العلم، باب کتابة العلم، الحدیث:۱۱۴، ج۱، ص۵۹ ملخصاً) इसे "ह़दीसे क़िरत़ास" भी कहते हैं इस क़िस्से में मो'तरिज़ीन के مَعَاذَ اللہ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ए'तिराज़ात हैं कि उन्हों ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक ज़रूरी तह़रीर से रोक दिया वग़ैरा। इन ए'तिराज़ात और इन के जवाबात को मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "तोह़्फ़ए शीआ़" में तह़रीर फ़रमाया है। **इल्मिय्या**

3 ......مشکوٰۃ شریف بحوالہ صحیحین، باب وفات النبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔......(مشكاة المصابيح، كتاب احوال القيامة، باب هجرة اصحابه...الخ، الحديث:۵۹۶۶، ج۲، ص۴۰۴۔ علميه)

4 ......مشکوٰۃ شریف، باب الانفاق وکراھیۃ الامساک۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب الانفاق و كراهية الامساك، الحديث:۱۸۸۴، ج۱، ص۳۵۸۔ علميه)

www.dawateislami.net

ऐन क़रीब आ पहुंचा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अकसर यूं वसिय्यत फ़रमाते थे :[1] اَلصَّلٰوةُ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ[2] नमाज़ और गुलाम।

जब रूहे पाक ने जिस्मे अत़हर से आ'ला इल्लिय्यीन की त़रफ़ परवाज़ की तो अल्फ़ाज़ اَللّٰهُمَّ فِى الرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى ज़बाने मुबारक पर थे।[3]

वाज़ेह़ रहे कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ दो शम्बा के दिन दोपहर ढले हुवा। विसाल शरीफ़ के बा'द ज़मीन तारीक हो गई। इस सदमे से सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم का जो ह़ाल हुवा वोह बयान नहीं हो सकता। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गुस्ल दिया। ह़ज़रते अ़ब्बास व फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू बदलने में ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की मदद कर रहे थे और क़ुसम बिन अ़ब्बास और उसामा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुलाम शुक़रान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पानी डाल रहे थे। सिवाए ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बाक़ी सब आंखों पर रूमाल बांधे हुवे थे ताकि जसदे शरीफ़ पर नज़र न पड़े। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कफ़न में तीन सूती कपड़े सुहूल के बने हुवे थे जिन में क़मीस व इमामा न था।

शबे चहार शम्बा में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दफ़्न किया गया। ताख़ीर की वज्ह कई उमूर थे चुनान्चे, मुहाजिरीन व अन्सार में बैअ़त के बारे में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, इस इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला होते ही इस अम्र में इख़्तिलाफ़े आरा हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कहां दफ़्न किया जाए? क़ब्र शरीफ़ में लह़द चाहिये या शक़? आख़िरे कार ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने लह़द खोदी। नमाज़े जनाज़ा हुजरे शरीफ़ के अन्दर ही बिग़ैर इमामत अलग अलग पढ़ी गई। पहले मर्दों ने फिर औ़रतों ने फिर बच्चों ने फिर गुलामों ने नमाज़ पढ़ी। बा'दे अज़ां हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बिल इत्तिफ़ाक़ हुजरे शरीफ़ ही में जहां विसाल शरीफ़ हुवा था दफ़्न कर दिया गया। बिनाए बर क़ौले असह़ ह़ज़रते अ़ब्बास व अ़ली व क़ुसम व फ़ज़्ल (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) क़ब्र शरीफ़ में उतरे। लह़द की ईंटें कच्ची नौ थीं। ह़ज़रते क़ुसम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सब से अख़ीर में क़ब्रे मुबारक से निकले।

---

1 ......इब्ने माजा, अबवाबुल वसाया।

2 ......سنن ابن ماجه، كتاب الوصايا، باب هل اوصى رسول اللّٰه، الحديث: ٢٦٩٧، ج٣، ص٣٠٢۔ علميه

3 ......مشكاة المصابيح، كتاب احوال القيامة، باب هجرة اصحابه...الخ، ج٢، الحديث: ٥٩٦٤، ص٤٠٤۔ علميه

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बत़ौरे मीरास कुछ नहीं छोड़ा जो कुछ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने छोड़ा वोह सदक़ा व वक़्फ़ था और इस का मसरफ़ वोही था जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हयात शरीफ़ में था, चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुबारक है : [1] لَا نُوْرِثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ हम (अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) किसी को वारिस नहीं बनाते जो कुछ हम छोड़ जाएं वोह सदक़ा व वक़्फ़ है। (बुख़ारी शरीफ़, किताबुज्जिहाद)

हज़रते अ़म्र बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जो उम्मुल मोमिनीन जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भाई थे, यूं रिवायत है :

مَا تَرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ عِنْدَ مَوْتِهٖ دِيْنَارًا وَّ لَا دِرْهَمًا وَّ لَا عَبْدًا وَّ لَا اَمَةً وَّ
لَا شَيْئًا اِلَّا بَغْلَتَهُ الْبَيْضَآءَ وَ سِلَاحَهٗ وَ اَرْضًا جَعَلَهَا صَدَقَةً. [2]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मौत के वक़्त न कोई दीनार छोड़ा न दिरहम न गुलाम न लौंडी न कुछ और मगर अपना सफ़ेद ख़च्चर और अपना हथयार और कुछ ज़मीन जिसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सदक़ा व वक़्फ़ बना दिया। (बुख़ारी, किताबुल वसाया)

अबू दावूद में हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रिवायत इस त़रह़ है :

مَا تَرَكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دِيْنَارًا وَّ لَا دِرْهَمًا وَّ لَا بَعِيْرًا وَّلَا شَاةً [3]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न कोई दीनार छोड़ा न दिरहम न ऊंट न बकरी।

रिवायाते मज़्कूरए बाला से पता चलता है कि आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मतरूकात में एक सफ़ेद ख़च्चर (दुलदुल) कुछ हथयार और ज़मीन (ख़ैबर व फ़िदक) थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशादे मुबारक के मुत़ाबिक़ इन में से किसी में क़ाइदए इर्स[4] जारी नहीं हुवा। इसी वासिते़ दुलदुल और ज़ुल फ़िक़ार दोनों हज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के पास थे। वरना बजाए अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के हज़रते अ़ब्बास व फ़ात़िमा ज़हरा और अज़्वाजे मुत़ह्हरात ह़क़दार थीं। अम्वाले बनू नज़ीर वग़ैरा पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का

1 ......صحیح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب فرض الخمس، الحدیث:۳۰۹۳، ج۲، ص۳۳۸ و السیرۃ الحلبیۃ، باب یذکر فیہ مدۃ مرضہ...الخ، ج۳، ص۵۰۱-۵۰۲۔ علمیہ

2 ......صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب الوصایا...الخ، الحدیث:۲۷۳۹، ج۲، ص۲۳۱۔ علمیہ

3 ......سنن ابی داود، کتاب الوصایا، باب ماجاء فی مایؤمر بہ من الوصیۃ، الحدیث:۲۸۶۳، ج۳، ص۱۵۳۔ علمیہ

4 ......विरासत का क़ानून।

www.dawateislami.net

क़ब्ज़ा मालिकाना न था बल्कि मुतवल्लियाना था। अबू दावूद में मालिक बिन औस की रिवायत में ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हां तीन सफ़ाया थीं।[1] एक अम्वाले बनू नज़ीर, दूसरे ख़ैबर, तीसरे फ़िदक। अम्वाले बनू नज़ीर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वादिस व ह़वाइज[2] के लिये मह़बूस व मौक़ूफ़ थे। फ़िदक मुसाफ़िरों के लिये मख़्सूस था। ख़ैबर की आमदनी के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन ह़िस्से किये थे। दो ह़िस्से मुसलमानों के लिये और एक ह़िस्सा अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के लिये मुक़र्रर कर दिया था। अपने अहल के नफ़्क़े में से जो कुछ बच रहता वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ुक़रा व मुहाजिरीन में तक़्सीम फ़रमा देते।

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द येह जाएदादें ब ह़ैसिय्यते वक़्फ़ ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ेरे एहतिमाम रहीं। उन्हों ने इन में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ तसर्रुफ़ किया। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन पर इसी ह़ैसिय्यत से दो साल क़ाबिज़ रहे फिर ह़ज़रते अ़ब्बास व अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के इसरार पर माले बनू नज़ीर इन दोनों की तौलियत में कर दिया और ख़ैबर व फ़िदक को अपनी तह़वील में रखा। कुछ दिनों के बा'द तौलियत व तसर्रुफ़ में शिर्कत ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ना गवार गुज़री, वोह चाहने लगे कि तौलियत में तक़्सीम हो जाए ताकि हर एक अपने ह़िस्से के तसर्रुफ़ में मुस्तक़िल बन जाए। ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم मानेअ़ हुवे। इस लिये फ़ैसले के लिये दोनों दरबारे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवे मगर ह़ज़रते फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तक़्सीमे तौलियत से इन्कार कर दिया। बा'दे अज़ां ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ग़लबा पा कर माले बनू नज़ीर को अपने तसर्रुफ़ में कर लिया। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के बा'द ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और फिर ह़ुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के हाथ में रहा। इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द अ़ली बिन ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और ह़सन बिन ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दोनों के हाथ में रहा। दोनों नोबत ब नोबत इस में तसर्रुफ़ करते थे। फिर ज़ैद बिन ह़सन के हाथ आया।[3] (सह़ीह़ बुख़ारी)

---

1 ......सफ़ाया सफ़ी की जम्अ़ है मुराद माले ग़नीमत का वोह ह़िस्सा जो किसी मसरफ़ के लिये ख़ास कर लिया जाए।

2 ......ज़रूरियात।

3 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی نضیر...الخ، الحدیث:۴۰۳۳-۴۰۳۴، ج۳، ص۲۷-۲۹ملخصاً-علمیه

www.dawateislami.net

हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ख़ैबर व फ़िदक ब हैसिय्यते वक़्फ़े आ़म हज़रते उ़स्माने ग़नी व अ़ली मुर्तज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के तसर्रुफ़ में रहे। जब सिने 40 हिजरी में हज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अमारत(1) पर इजमाअ़ हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़िदक मरवान हाकिमे मदीना को दे दिया। शायद बदीं तावील(2) कि जो अम्र आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुख़्तस हो वोही आप के ख़लीफ़ा के लिये होता है, चूंकि हज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़ुद तो ज़रूरत न थी लिहाज़ा अपने बा'ज़ अक़रबा के साथ सुलूक किया। واللّٰہ اعلم بالصواب

आख़िरुल अम्र ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी ख़िलाफ़त में फ़िदक को इसी हालत पर बहाल कर दिया जिस पर वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अ़हद में था। (त़बक़ाते इब्ने सा'द)

मज़ीद तफ़्सील के लिये तोह़फ़ए शीआ़ मुअल्लिफ़ह़ू ख़ाकसार देखो।

मतरूकाते मज़्कूरए बाला के सिवा और अश्या भी थीं जो बत़ौरे तबर्रुक मुख़्तलिफ़ अश्ख़ास के पास थीं। इन का ज़िक्र आसार शरीफ़ा में आएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی

अरबाबे सिय्यर ने आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घोड़ों, ख़च्चरों, दराज़ गोशों, ऊंटों और बकरियों की जो लम्बी फ़ेहरिस्त दी है वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हां मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मौजूद थे। मगर वफ़ात शरीफ़ से पहले ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को ह़स्बे आ़दते शरीफ़ हिबा या ख़ैरात कर दिया था। वफ़ात शरीफ़ के वक़्त सिर्फ़ एक सफ़ेद ख़च्चर या'नी दुलदुल बाक़ी था जैसा कि रिवायाते मज़्कूरए बाला से ज़ाहिर है।

हुल्या शरीफ़

आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुल्या शरीफ़ के बयान में अ़र्ज़े मुद्दआ़ से पेशतर क़ारिईने किराम की आगाही के लिये उमूरे ज़ैल का बता देना ज़रूरी है :

﴾1﴿.....हमारा अ़क़ीदा है कि कमाले ख़ुल्क़ की त़रह़ कमाले ख़िल्क़त में भी अल्लाह तआ़ला ने किसी मख़्लूक़ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मिस्ल पैदा नहीं किया और न करेगा।

1......हुकूमत।
2......इस तावील से।

www.dawateislami.net

لَمْ يَخْلُقِ الرَّحْمٰنُ مِثْلَ مُحَمَّدٍ　　اَبَدًا وَّ عِلْمِى اَنَّهٗ لَا يَخْلُقُ [1]

नहीं पैदा किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मिस्ले मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कभी और मुझे यक़ीन है कि वोह न पैदा करेगा।

﴾2﴿.....जिन बुज़ुर्गों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुल्या मुबारक बयान किया है उन्हों ने अगर्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अवसाफ़ के बयान में ह़स्बे त़ाक़ते बशरी अब्लग़ अन्वाए़ बलाग़त व अकमल क़वानीने फ़साह़त से काम लिया है मगर ग़ायत जिसे वोह पहुंचे हैं येही है कि उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ात की सिर्फ़ एक झलक का इदराक किया है और ह़क़ीक़ते वस्फ़ के इदराक से आ़जिज़ रह गए हैं। ख़ुलासा येह है कि वोह सूरते वस्फ़ को पेश कर सकते हैं न ह़क़ीक़ते वस्फ़ को क्यूंकि ह़क़ीक़ते वस्फ़े हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ालिक़े बे चूं के सिवा कोई नहीं जानता, चुनान्चे, इमाम बूसैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़सीदए हमज़िय्या में फ़रमाते हैं :

اِنَّمَا مَثَّلُوْا صِفَاتَكَ لِلنَّاس　　كَمَا مَثَّلَ النُّجُوْمَ الْمَآءُ

इन्हों ने सिर्फ़ सूरत दिखाई है तेरी सिफ़ात की लोगों को जैसा पानी सूरत दिखा देता है सितारों की।

इमाम क़ुरत़ुबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा सिने 671 हिजरी) ने किताबुस्सलात में किसी आ़रिफ़ का क्या अच्छा क़ौल[2] नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कामिल हुस्न हमारे लिये ज़ाहिर नहीं हुवा क्यूंकि अगर ज़ाहिर हो जाता तो हमारी आंखें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार की ताब न ला सकतीं।[3]

﴾3﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अवसाफ़ के बयान में जो तशबीहात वारिद हुई हैं वोह सिर्फ़ लोगों के समझाने के लिये ह़स्बे उ़र्फ़ व आ़दते शो'रा इस्ति'माल हुई हैं क्यूंकि ह़क़ीक़त में मख़्लूक़ात में से कोई शै आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़ाते ख़ल्क़िय्या व ख़ुल्क़िय्या के मुमासिल व मुआ़दिल नहीं।

---

1 ......حیوۃ الحیوان للعلامہ کمال الدین الدمیری الشافعی المتوفی ۸۰۸ھ، جزء اوّل، ص۴۲......(حیاۃ الحیوان الکبری، الاوز، فائدۃ اجنبیۃ، ج۱، ص۷۵۔ علمیہ)

2 ......مواہب لدنیہ، کتاب شمائل النبویہ۔

3 ......المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، المقصد الثالث، الفصل الاول فی کمال خلقتہ...الخ، ج۵، ص۲۴۱۔علمیہ

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....आ'ज़ाए शरीफ़ में तवस्सुत़ व ए'तिदाल जो हुस्नो जमाल का मदार और फ़ज़्लो कमाल का मम्बा है, बत़ौरे कुल्लिया हर जगह मल्ह़ूज़ है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاَصْحٰبِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ بِقَدَرِ حُسْنِهٖ وَجَمَالِهٖ وَكَمَالِهٖ كُلَّمَا ذَكَرَكَ وَذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ وَذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ.

रूए मुबारक

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रूए मुबारक[1] जो जमाले इलाही का आईना और अन्वारे तजल्ली का मज़्हर था, पुर गोश्त और किसी क़दर गोल था। इसी रूए मुबारक को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه देखते ही पुकार उठे थे : وَجْهُهٗ لَيْسَ بِوَجْهِ كَذَّابٍ[2] इन का चेहरा दरोग़ गो का चेहरा नहीं और ईमान लाए थे।[3]

ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों से बढ़ कर ख़ू बरू और ख़ुश ख़ू थे।[4] ह़ज़रते हिन्द[5] बिन अबी हाला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه बयान फ़रमाते हैं कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक चौदहवीं रात के चांद की मानिन्द चमकता था।[6] ह़ज़रते जाबिर बिन समरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को चांदनी रात में देखा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुर्ख़ धारी दार हुल्ला[7]

1......चेहरए मुबारक।

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، باب فضل الصدقة، الحديث: ١٩٠٧، ج١، ص٣٦٢۔ علميه

3 ......مشکوٰۃ شریف، باب فضل الصدقہ۔

4 ......صحیح بخاری، باب صفۃ النبی صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم......(صحيح البخاری، كتاب المناقب، باب صفة النبی، الحديث: ٣٥٤٩، ج٢، ص٤٨٧۔ علميه)

5......येह हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रबीब थे क्यूंकि ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले अबू हाला के निकाह़ में थीं जिस से हिन्दे मज़्कूर पैदा हुवे। येह ईमान लाए और हिजरत की और सिने 36 हिजरी में यौमे जमल में ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की त़रफ़ से लड़ते हुवे शहीद हुवे। 12 मिन्ह

6 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول الله صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم......(الشمائل المحمدية للترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول الله، الحديث: ٧، ص٢٢ ملتقطاً۔ علميه)

7......हुल्ला दो कपड़ों को कहते हैं या'नी चादर और शलवार। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

पहने हुवे थे। मैं कभी चांद की त़रफ़ देखता और कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बेशक मेरे नज़्दीक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चांद से ज़ियादा ख़ूब सूरत थे।(1)

इब्ने अ़साकिर (मुतवफ़्फ़ा सिने 571 हिजरी) ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रिवायत से नक़्ल किया है कि मैं सह़ूर के वक़्त सी रही थी, मुझ से सूई गिर पड़ी, मैं ने हर चन्द तलाश की मगर न मिली। इतने में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रूए मुबारक के नूर की शुआ़अ़ में वोह सूई नज़र आई, मैं ने येह माजरा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ हुमैरा !(2) सख़्ती व अ़ज़ाब है (तीन दफ़्आ़ फ़रमाया) उस शख़्स के लिये जो मेरे चेहरे की त़रफ़ देखने से मह़रूम किया गया।"(3)

ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म (मुतवफ़्फ़ा सिने 430 हिजरी) ने ब रिवायते उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुस्समद नक़्ल किया है कि उस ने कहा कि हम ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां आए। आप ने कनीज़ से कहा कि दस्तरख़्वान ला ! ताकि हम चाश्त का खाना खाएं वोह ले आई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि रूमाल ला। वोह एक मैला रूमाल लाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि तन्नूर गर्म कर। उस ने तन्नूर गर्म किया फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से रूमाल उस में डाल दिया गया। वोह ऐसा सफ़ेद निकला गोया की दूध है। हम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि येह क्या है ? उन्हों ने फ़रमाया कि येह वोह रूमाल है जिस से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रूए मुबारक को मस्ह़ फ़रमाया करते थे। जब येह मैला हो जाता है तो इसे हम यूं साफ़ कर लेते हैं क्यूंकि आग उस शै पर असर नहीं करती जो अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रूए मुबारक पर से गुज़री हो।(4)

---

1 ......دیکھو شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ......(الشمائل المحمدية للترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه، الحديث: ۹، ص ۲٤ ـ علميه)

2 ......حمیراء لقب ام المؤمنین حضرت عائشہ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ۔ گویند کہ حمرہ بمعنی سفیدی نیز آمدہ وایشاں را حمیراء گویند ایشاں سفید رنگ بودند۔ کذافی المنتخب ۔۱۲ منہ

3 ......خصائص کبریٰ للسیوطی، مطبوعہ دائرۃ المعارف حیدر آباد دکن، جزء اوّل، ص ۶۳......(الخصائص الكبرى للسيوطی، باب الآية فی وجهه الشريف، ج ۱، ص ۱۰۷ ـ علميه)

4 ......خصائص کبریٰ، جزء ثانی، ص ۸۰۔......(الخصائص الكبرى للسيوطی، فائدة فی عدم احتراق المنديل...الخ، ج ۲، ص ۱۳٤ ـ علميه)

www.dawateislami.net

किसी शाइर ने क्या अच्छा कहा है :

ہر چہ اسباب جمال است رخ خوب ترا　　ہمہ بروجہ کمال است کما لایخفی

चश्मे मुबारक

आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखें बड़ी[1] और कु़दरते इलाही से सुर्मगीं[2] और पलकें दराज़ थीं। आंखों की सफे़दी में बारीक सुर्ख़ डोरे थे। कुतुबे साबिक़ा में येह भी आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक अ़लामते नबुव्वत थी येही वज्ह थी कि जब आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने 25 साल की उ़म्र शरीफ़ में ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ से उन के गु़लाम मैसरा के साथ तिजारत के लिये मुल्के शाम का सफ़र किया और बसरा में नस्तूर राहिब के इबादत ख़ाने के क़रीब एक दरख़्त के नीचे उतरे तो राहिबे मज़्कूर ने मैसरा से हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत येह सुवाल किया : "क्या[3] इन की दोनों आंखों में सुर्ख़ी है ?" मैसरा ने जवाब दिया : हां और वोह सुर्ख़ी आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कभी जुदा नहीं होती।[4]

अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बसर शरीफ़ का वस्फ़ कु़रआने मजीद में यूं मज़्कूर फ़रमाया : مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی ﴿۱۷﴾ (سورۂ نجم)[5] या'नी शबे मे'राज में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंख मुबारक ने इन आयात को देखने से उ़दूल व तजावुज़ न किया कि जिन के देखने के लिये आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मामूर थे। इस से येह पता चलता है कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसी गा़यत दरजे की कु़व्वते बसारत अ़त़ा हुई थी कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस शै को देखते ख़्वाह

1......या'नी न छोटी और न इतनी बड़ी कि बाहर निकली हुई मा'लूम हों। 12 मिन्ह

2......सुर्मे वाली।

3......दलाइले हा़फ़िज़ अबी नुऐ़म, मत़बूआ़ दाइरतुल मआ़रिफ़ इन्तिज़ामिया है़दराबाद, दक्कन, स. 12। अबू नुऐ़म के इ़लावा इब्ने सा'द और इब्ने अ़साकिर ने भी इसे रिवायत किया है (خصائص کبریٰ، جزء اوّل، ص۹۱) 12 मिन्ह

4......دلائل النبوة لابی نعیم، الفصل الحادی عشر، ذکر خروج النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم الی الشام...الخ، ص ۱۰۰، الخصائص الکبری للسیوطی، باب ما ظھر من الآیات فی سفرہ صلی اللّٰہ تعالی علیہ وسلم...الخ، ج ۱، ص ٥٤ والسیرة الحلبیة، باب سفرہ الی الشام ثانیاً، ج ۱، ص ۱۹۳ ۔ علمیہ

5......बहकी नहीं निगाह और ह़द से नहीं बढ़ी.......(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी। (پ۲۷، النجم:۱۷) **इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

वोह ग़ायत दरजे ख़फ़ा में हो,(1) उसे यूं इदराक फ़रमाते थे कि जिस त़रह़ वोह वाक़ेअ़ और नफ़्सुल अम्र(2) में हुवा करती ।(3)

इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा सिने 458 हिजरी) ने ब रिवायते(4) इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अन्धेरी रात में रोशन दिन की त़रह़ देखते थे ।(5) ह़दीसे सह़ीह़ में(6) आया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझ से तुम्हारा रुकूअ़ और ख़ुशूअ़ पोशीदा नहीं । मैं तुम को अपनी पीठ के पीछे देखता हूं ।(7) इमाम मुजाहिद (मुतवफ़्फ़ा सिने 104 हिजरी) ने (8)(9)(شعرآء، ع ١١) "الَّذِىْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۙ وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيْنَ" की तफ़्सीर में फ़रमाया है कि रसूलुल्लाह(10) صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ में पिछली सफ़ों को यूं देखते थे जैसा कि अपने सामने वालों को ।(11) अह़ादीसे मज़्कूरए बाला में रुवैत से मुराद रुवैते ऐ़नी(12) है जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बत़ौरे ख़िर्क़े आ़दत(13) अ़त़ा फ़रमाई थी । जिस त़रह़ बारी तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्ब शरीफ़ को मा'क़ूलात के इदराक में इह़ात़ा और वुस्अ़त

1......इन्तिहाई दर्जे छुपी हुई हो । 2......ह़क़ीक़त में ।

3......زرقانی علی المواہب، جزء رابع، ص۸۲......(المواهب اللدنية و شرح الزرقانى، الفصل الاول فى كمال خلقته و جمال صورته، ج٥، ص ٢٦٢-٢٦٣۔ علميه)

4......خصائص کبری، جزء اوّل، ص۶۱۔

5......الخصائص الكبرى للسيوطى، باب المعجزة والخصائص فى عينيه الشريفين، ج١، ص١٠٤۔ علميه

6......صحیح بخاری، باب عظۃ الامام الناس فی اتمام الصلوۃ وذکر القبلۃ۔

7......صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب عظة الامام الناس...الخ، الحديث:٤١٨، ج١، ص١٦١۔ علميه

8......**तर्जमा :** जो देखता है तुझ को जब तू उठता है और तेरा फिरना नमाज़ियों में । इस आयत के तह़त तफ़्सीरे ख़ाज़िन में लिखा है : وقيل معناه يرى تقلب بصرك فى المصلين فانه كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يبصر من خلفه كما يبصر من قدامه.(انتہی)۔

9......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को । (پ۱۹، الشعرآء:۲۱۸،۲۱۹)

10......इस ह़दीसे मुर्सल को इमाम ह़मीदी (मुतवफ़्फ़ा सिने 409 हिजरी) ने अपनी मुस्नद में और इब्ने मुन्ज़िर (मुतवफ़्फ़ा सिने 318 हिजरी) ने अपनी तफ़्सीर में और बैहक़ी ने रिवायत किया है । देखो مواہب لدنیہ، جزء اوّل، ص۲۵۲ اور خصائص کبری، جزء اوّل، ص۶۱۔

11......الخصائص الكبرى للسيوطى، باب فى المعجزة والخصائص فى عينيه الشريفين، ج١، ص١٠٤ و المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، الفصل الاول فى كمال خلقته و جمال صورته، ج٥، ص٢٦٥۔ علميه

12......ज़ाहिरी आंखों से देखना । 13......मो'जिज़े के त़ौर पर ।

www.dawateislami.net

बख़्शी थी इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वासे लती़फ़ को मह़सूसात के एह़सास में तौसीअ़ इनायत फ़रमाई थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़िरिश्तों और शयाती़न को देखना और शबे मे'राज की सुब्ह़ को मक्कए मुशर्रफ़ा में क़ुरैश के आगे बैतुल मुक़द्दस को देख कर उस का ह़ाल बयान फ़रमाना और मस्जिदे नबवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बनने के वक़्त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मदीनए मुनव्वरा से का'बए मुशर्रफ़ा को देखना, ज़मीन के मशारिक़ व मग़ारिब को देख लेना और ह़ज़रते जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को शहादत के बा'द बिहिश्त में फ़िरिश्तों के साथ उड़ते देखना, येह तमाम उमूर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ुव्वते बीनाई पर दलालत करते हैं।

ग़ज़्वए अह़ज़ाब में ख़न्दक़ खोदते वक़्त एक सख़्त पथ्थर ह़ाइल हो गया था जिसे ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुदाल की तीन ज़र्बों से उड़ा दिया पहली ज़र्ब पर फ़रमाया कि मैं यहां से शाम के सुर्ख़ मह़ल्लात देख रहा हूं। दूसरी ज़र्ब पर फ़रमाया कि मैं यहां से किसरा का सफ़ेद मह़ल देख रहा हूं। तीसरी ज़र्ब पर फ़रमाया कि इस वक़्त मैं यहां से अब्वाबे सनआ़ को देख रहा हूं।[1] इसी त़रह़ जब ग़ज़्वए मौता में ह़ज़राते ज़ैद बिन ह़ारिसा व जा'फ़र बिन अबी त़ालिब व अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) यके बा'द दीगरे बड़ी बहादुरी से लड़ते हुवे शहीद हो गए तो ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में इन वाक़िआ़त को अपनी आंखों से देख रहे थे और बयान फ़रमा रहे थे।

अब्रूए मुबारक

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भवें दराज़ व बारीक थीं और दरमियान में दोनों इस क़दर मुत्तसिल थीं कि दूर से मिली हुई मा'लूम होती थीं। इन दोनों के दरमियान एक रग थी जो ग़ुस्से के वक़्त ह़रकत में आ जाती और ख़ून से भर जाती।[2]

बीनिये मुबारक

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाक मुबारक ख़ूब सूरत और दराज़ थी और दरमियान में उभराव नुमायां था और बुनिबीनी (इर्नीन)[3] पर एक नूर दरख़्शां था। जो शख़्स बग़ौर तअम्मुल

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین،باب وفات النبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔

2 ......الشمائل المحمدیة للترمذی،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ،الحدیث:۷،ص۲۲ ملتقطاً۔ علمیه

3 ......नाक की हड्डी।........شمائل ترمذی،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔

www.dawateislami.net

न करता उसे मा'लूम होता कि बुलन्द है ह़ालांकि बुलन्द न थी। बुलन्दी तो वोह नूर था जो इसे घेरे हुवे था।[(1)]

पेशानिये मुबारक

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानिये मुबारक कुशादा थी और चराग़ की मानिन्द चमकती थी। चुनान्चे, ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया है :[(2)]

مَتٰی يَبْدُ فِي اللَّيْلِ الْبَهِيْمِ جَبِيْنُهٗ　　بَلَجَ مِثْلَ مِصْبَاحِ الدُّجَى الْمُتَوَقِّدِ[(3)]

जब अन्धेरी रात में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी ज़ाहिर होती तो तारीकी के रोशन चराग़ की मानिन्द चमकती।

गोशे मुबारक

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हर दो गोशे मुबारक[(4)] कामिल व ताम थे। कुव्वते बसर की त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कुव्वते सम्अ़ भी ब त़रीक़े ख़िर्क़े आ़दत ग़ायत दरजे की अ़त़ा की थी। इसी वासित़े आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाते कि मैं जो देखता हूं[(5)] तुम नहीं देख सकते और मैं जो सुनता हूं तुम नहीं सुन सकते। मैं तो आस्मान की आवाज़ भी सुन लेता हूं।[(6)]

आवाज़े आस्मान की त़रह़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आस्मान के दरवाज़े के खुलने की आवाज़ भी सुन लेते थे चुनान्चे, एक रोज़ ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे कि नागाह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ऊपर की त़रफ़ से एक आवाज़ सुनी।

---

1 ......الشمائل المحمدية للترمذی،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه،الحديث:٧،ص٢٢ ملتقطاً۔ علميه

2 ......زرقانی علی المواہب، جزءرابع،ص٩١۔

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب،الفصل الاول فی كمال خلقته وجمال صورته،ج٥،ص٢٧٨۔ علميه

4 ......दोनों मुबारक कान।

5 ......خصائص کبریٰ بحوالہ ترمذی وابن ماجہ وابی نعیم، جزءاوّل،ص٦٥۔

6 ......الخصائص الكبرى للسيوطی،باب الآية فی سمعه الشريف،ج١،ص١١٣ ملتقطاً۔ علميه

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरे मुबारक उठाया तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि येह आस्मान का एक दरवाज़ा है जो आज ही खुला है, आज से पहले कभी नहीं खुला ।[1] अल ह़दीस[2]

दहाने मुबारक

मुंह मुबारक फ़राख़, रुख़्सारे मुबारक हमवार, दन्दानहाए पेशीन[3] कुशादा और रोशन व ताबां, जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कलाम फ़रमाते तो दन्दानहाए पेशीन में से नूर निकलता दिखाई देता था । बज़्ज़ार (मुतवफ़्फ़ा सिने 292 हिजरी) व बैहक़ी ने ब रिवायते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नक़्ल किया है कि जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ह़िक[4] फ़रमाते तो दीवारें रोशन हो जातीं ।[5] आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कभी जमाई[6] नहीं आई ।[7]

ह़ज़रते उ़मैरा बिन्ते मसऊ़द अन्सारिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि मैं और मेरी पांच बहनें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़दीद (ख़ुश्क किया हुवा गोश्त) खा रहे थे । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चबा कर एक टुकड़ा उन को दिया, उन्हों ने बांट कर खा लिया मरते दम तक उन में से किसी के मुंह में बूए नाख़ुश पैदा न हुई और न कोई मुंह की बीमारी हुई ।[8]

ग़ज़्वए ख़ैबर[9] के रोज़ ह़ज़रते सलमह बिन अल अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पिन्डली में ऐसी ज़र्बे शदीद लगी कि लोगों को गुमान हुवा कि शहीद हो गए । हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......مشكاة المصابيح،كتاب فضائل القرآن،الفصل الاول،الحديث:٢١٢٤،ج١،ص٤٠٠۔ علميه

2 ......مشکوٰۃ شریف بحوالہ صحیح مسلم،کتاب فضائل القرآن۔

3 ......सामने के मुबारक दांत ।

4 ......خصائص کبریٰ،جزءاوّل،ص۷۴۔

5 ......الخصائص الكبرى للسيوطى،باب جامع فى صفة خلقه،ج١،ص١٢٧۔ علميه

6 ......जब किसी शख़्स को नमाज़ में जमाई आए तो वोह सिर्फ़ ज़ेहन में इतना याद कर ले कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कभी जमाई नहीं आई थी, इस के बा'द न आएगी । 12 मिन्ह

7 ......الخصائص الكبرى للسيوطى،باب الآية فى حفظه من التثاؤب،ج١،ص١١٢۔ علميه

8 ......इसाबा, तर्जमा उ़मैरा बिन्ते मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ।

(الاصابة فى تمييز الصحابة،١١٥٤٨۔عميرة بنت مسعود الانصارية، ج٨،ص٢٥١۔ علميه)

9 ......देखो सह़ीह़ बुख़ारी, बाबे ग़ज़्वए ख़ैबर ।

www.dawateislami.net

तीन बार उस पर दम कर दिया।[1] फिर पिन्डली में कभी दर्द न हुवा।[2]

एक रोज़ एक बद ज़बान औ़रत आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़दीद तनावुल फ़रमा रहे थे। उस ने सुवाल किया कि मुझे भी दीजिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो क़दीद सामने पड़ा हुवा था उस में से दिया। उस ने अ़र्ज़ किया कि अपने मुंह में से दीजिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुंह से निकाल कर उसे दिया वोह खा गई उस रोज़ से फ़ोह़्श और कलामे क़बीह़ उस से सुनने में न आया।[3]

मज़्कूरए बाला वाक़िआ़त के इलावा बे शुमार पेशगोइयां और दा'वात जो पूरी और क़बूल हुईं वोह इसी मुंह मुबारक से निकली हुई थीं।

यौमे हुदैबिय्या में चाहे हुदैबिय्या का तमाम पानी लश्करे इस्लाम ने (जो बक़ौले ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब चौदह सो थे।) निकाल लिया उस में एक क़त़रा भी न रहा। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पानी का एक बरतन त़लब फ़रमाया और वुज़ू कर के पानी की एक कुल्ली कूएं में डाल दी और फ़रमाया कि ज़रा ठहरो। उस कूएं में इस क़दर पानी जम्अ़ हो गया कि हुदैबिय्या में क़रीबन बीस रोज़ क़ियाम रहा, तमाम फ़ौज और उन के ऊंट उसी से सैराब होते रहे।[4]

लुआ़बे दहने मुबारक

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुंह मुबारक का लुआ़ब ज़ख़्मी और बीमारों के लिये शिफ़ा था चुनान्चे, फ़त्ह़े ख़ैबर के दिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे दहन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की आंखों में डाल दिया तो वोह फ़ौरन तन्दुरुस्त हो गए गोया दर्दे चश्म कभी हुवा ही न था।

---

1 ......ह़ज़रते फ़दीक बिन अ़म्र अस्सलामानी और ह़ज़रते जरहिद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) का क़िस्सा मो'जिज़ात में आएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی 12 मिन्ह

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، الحدیث:٤٢٠٦، ج٣، ص٨٣۔ علمیه

3 ......خصائص کبریٰ للسیوطی، جزءاوّل، ص٦٢۔......(الخصائص الکبری للسیوطی، باب الآیة فی فمه الشریف وریقه واسنانه، ج١، ص١٠٥۔ علمیه)

4 ......استیعاب واصابہ اور خصائص کبریٰ بحوالہ بیہقی وحاکم۔......(السنن الکبری للبیهقی، باب نزول سورة الفتح...الخ، الحدیث:١٨٨١٥، ج٩، ص٣٣٧ وصحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیة، الحدیث:٤١٥١، ج٣، ص٦٩۔ علمیه)

www.dawateislami.net

ग़ारे सौर में ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाउं को किसी चीज़ ने काट खाया। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे दहन ज़ख़्म पर लगाया उसी वक़्त दर्द जाता रहा।

ह़ज़रते रिफ़ाअ़ा बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि बद्र के दिन मेरी आंख में तीर लगा और वोह फूट गई। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस में अपना लुआ़बे मुबारक डाल दिया और दुआ़ फ़रमाई। पस मुझे ज़रा भी तक्लीफ़ न हुई और आंख बिल्कुल दुरुस्त हो गई।[(1)]

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन ह़ाति़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर हन्डिया गिर पड़ी और वोह जल गया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे मुबारक उस पर डाला और दुआ़ की वोह हाथ चंगा हो गया।

ह़ज़रते अ़म्र बिन मुआ़ज़ बिन जमूह़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पाउं कट गया था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस पर अपना लुआ़बे मुबारक लगा दिया। वोह अच्छा हो गया।[(2)]

ह़ज़रते अबू क़तादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ग़ज़्वए ज़ी क़रद (मुहर्रम सिने 7 हिजरी) में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से पूछा कि तुम्हारे चेहरे में येह क्या है? मैं ने अ़र्ज़ किया कि एक तीर लगा है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि नज़दीक आओ। मैं नज़दीक हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस पर लुआ़बे दहन लगा दिया। उस रोज़ से मुझे कभी तीर व तल्वार नहीं लगी और न ख़ून निकला।[(3)]

एक दफ़्अ़ा हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पानी का डोल लाया गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से पिया। पस ख़ुर्दा[(4)] कूएं में डाल दिया गया। पस उस में से कस्तूरी की सी ख़ुश्बू निकली। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में

---

1 ......ज़ादुल मआ़द, ग़ज़्वए बद्र।........(زاد المعاد،فصل فی غزوۃ بدر الکبری،ج۲،الجزء الثالث،ص۱٤٤۔ علمیه)

2 ......इसाबा, तर्जमए अ़म्र बिन मुआ़ज़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।....

(الاصابة فی تمییز الصحابة،٥٩٨٠۔عمرو بن معاذ بن الجموح الانصاری،ج٤،ص٥٦٦۔٥٦٧۔ علمیه)

3 ......इसाबा, तर्जमए अबू क़तादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।.......

(الاصابة فی تمییز الصحابة،١٠٤١١۔ابوقتادة بن ربعی الانصاری، ج۷،ص۲۷۲۔ علمیه)

4 ......बचा हुवा।

www.dawateislami.net

एक कूआं[1] था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे दहन उस में डाल दिया। उस का पानी ऐसा शीरीं हो गया कि तमाम मदीनए मुनव्वरा में उस से बढ़ कर मीठा कोई कूआं[2] न था।

आ़शूरे के रोज़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बच्चों को बुला कर उन के मुंह में अपना लुआ़बे दहन डाल देते और उन की माओं से फ़रमा देते कि शाम तक उन को दूध न देना। पस वोही लुआ़बे दहन उन को काफ़ी होता।[3]

ह़ज़रते आ़मिर बिन कुरैज़ कुरैशी अ़ब्शमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने साहि़ब ज़ादे अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बचपन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में लाए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मुंह में अपना लुआ़बे मुबारक डालने लगे और वोह उसे निगलने लगे। इस पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह मस्क़ी (सैराब) है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जब किसी ज़मीन (या पथ्थर) में शिगाफ़ किया करते तो पानी निकल आया करता।[4]

उ़त्बा बिन फ़रक़द जिन्हों ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अ़हदे मुबारक में मौसिल को फ़त्ह़ किया उन की बीवी उम्मे आ़सिम बयान करती है कि उ़त्बा के हां हम चार औ़रतें थीं। हम में से हर एक खुश्बू लगाने में कोशिश करती थी ताकि दूसरी से अत़्यब हो और उ़त्बा कोई खुश्बू न लगाता था मगर अपने हाथ से तेल मल कर दाढ़ी को मल लेता था और हम सब से ज़ियादा खुश्बू दार था। जब वोह बाहर निकलता तो लोग कहते कि हम ने उ़त्बा की खुश्बू से बढ़ कर कोई खुश्बू नहीं सूंघी। एक दिन मैं ने उस से पूछा कि हम इस्ति'माले खुश्बू में कोशिश करती हैं और तू हम से ज़ियादा खुश्बूदार है! इस का सबब क्या है? उस ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में मेरे बदन पर आबला रेज़े[5] नुमूदार हुवे, मैं ख़िदमते

---

1 ......कुंवां। 2 ......कुंवां।

3 ......خصائص کبریٰ بروایت ابونعیم، جزء اوّل، ص ۹۱۔......(الخصائص الکبری للسیوطی، باب الآیة فی فمه الشریف وریقه واسنانه، ج۱، ص ۱۰۵ ملتقطاً۔ علمیه)

4 ......استیعاب واصابہ اور خصائص کبریٰ بحوالہ بیہقی وحاکم۔......(الاستیعاب فی معرفة الاصحاب، ۱۶۰۵۔عبد اللّٰه بن عامر العبشمی، ج۳، ص ٦٤ و الاصابة فی تمییز۔ علمیه)

5 ......फोड़े।

www.dawateislami.net

नबवी में हाज़िर हुवा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस बीमारी की शिकायत की । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया कि कपड़े उतार दो। मैं ने कपड़े उतार दिये और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे मुबारक अपने दस्ते मुबारक पर डाल कर मेरी पीठ और पेट पर मल दिया। उस दिन से मुझ में येह ख़ुश्बू पैदा हो गई।[1] इस ह़दीस को त़बरानी (मुतवफ़्फ़ा सिने 360 हिजरी) ने औसत़ में रिवायत किया है।

ज़बाने मुबारक

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अफ़्सहुल ख़ुल्क़ थे और फ़साह़त में ख़ारिक़े आ़दत ह़द को पहुंचे हुवे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवामेए़ कलिम, बदाइए़ ह़कम, इम्साले साइरा, दुर्रे मन्सूरा, क़ज़ायाए मोह़्कमा, वसायाए मुबर्रमा और मवाइज़ व मकातीब व मनाशीर मश्हूरे आफ़ाक़ हैं, इन की तफ़्सील का येह मह़ल नहीं। ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम तुम्हारे कलाम की मानिन्द न था कि ब वज्हे उ़ज्लत सामेअ़ पर मुल्तबस[2] हो बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम वाज़ेह़ और मुबीन ऐसा था कि पास बैठने वाला उसे याद कर लेता।[3]

ह़ज़रते उम्मे मा'बद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुल्या शरीफ़ बयान किया है उस में यूं है : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम[4] शीरीं, ह़क़ व बात़िल में फ़र्क़ करने वाला, न ह़द से कम न ह़द से ज़ियादा, गोया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम लड़ी के मोती हैं जो गिर रहे हैं।"[5]

1 ......المعجم الصغير للطبرانى، الجزء الاول، الحديث:٩٨، ص٣٨۔ علميه

2 ......शक व शुबा।

3 ......شمائل ترمذی، باب کیف کان کلام رسول اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ۔......(الشمائل المحمدية للترمذى، باب كيف كان كلام رسول اللّٰه، الحديث:٢١٣، ص١٣٤ ۔ علميه)

4 ......इस्तीआ़ब लि इब्ने अ़ब्दुल बर्र। फ़स्ल से येह मुराद भी हो सकती है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम मुबीन व ज़ाहिर होता था जैसा कि रिवायते ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا में वारिद है। 12 मिन्ह

5 ......الاستيعاب فى معرفة الاصحاب، كتاب كنى النساء، باب الميم، ٣٦٣٩ـ ام معبد الخزاعية، ج٤، ص٥١٤۔ علميه

www.dawateislami.net

हाफ़िज़ इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा सिने 852 हिजरी) फ़रमाते हैं कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़यात शरीफ़ में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में से कोई असम या'नी बहरा न था और येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की करामात में से है क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के लिये अह़कामे इलाही के मुबल्लिग़ थे और बहरापन इस काम के सहूलत के साथ होने से मानेअ़ होता है। बर अ़क्स ना बीनाई के कि वोह मानेअ़ नहीं होती।(1)

आवाज़े मुबारक

तमाम अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ूबरू और ख़ुश आवाज़ थे मगर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन सब से ज़ियादा ख़ूबरू(2) और ख़ुश आवाज़ थे।(3) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आवाज़ में ज़रा गिरानी पाई जाती थी जो अवसाफ़े ह़मीदा में शुमार होती है। ख़ुश आवाज़ होने के इ़लावा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बुलन्द आवाज़ इतने थे कि जहां तक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आवाज़ शरीफ़ पहुंचती और किसी की आवाज़ न पहुंचती थी। बिल ख़ुसूस ख़ुत़बों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आवाज़ शरीफ़ घरों में पर्दा नशीन औ़रतों तक पहुंच जाती थी। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ाज़िरीन से फ़रमाया कि ख़ुत़बा सुनने के लिये बैठ जाओ। इस आवाज़ को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो शहरे मदीना में क़बीलए बनी ग़नम में थे सुन लिया और इरशादे नबवी की ता'मील में वहीं अपने मकान में दो ज़ानू हो बैठे।(4) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिना में ख़ुत़बा पढ़ा जिस से हमारे कान खुल गए यहां तक कि हम अपनी अपनी जगह पर

---

1 ......نسیم الریاض، جلداوّل، صفحہ ۳۹۷۔......(نسیم الریاض، الباب الثانی...الخ، القسم الاول، فصل فی خصال محمودۃ مخصوصۃ به، ج۱، ص۴۹۸۔ علمیه)

2 ......زرقانی علی المواہب بحوالہ ترمذی، جزء رابع، ص ۱۷۸۔

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب اللدنية، الفصل الاول فی كمال خلقته وجمال صورته، ج۵، ص۴۴۴۔ علمیه

4 ......خصائص کبریٰ للسیوطی بروایت ابن سعد وابی نعیم وغیرہ۔

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कलामे मुबारक सुनते थे। ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हम आधी रात के वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़िराअत सुना करते थे ह़ालांकि मैं मकान के अन्दर चारपाई पर हुवा करती थी।[1]

ख़न्दा व गिर्या मुबारक

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मूमन तबस्सुम फ़रमाया करते थे। तबस्सुम मबादिये ज़ह़िक से है और ज़ह़िक के मा'ना चेहरे का इम्बिसात़[2] है यहां तक कि ख़ुशी से दांत ज़ाहिर हो जाएं। अगर आवाज़ के साथ हो और दूर से सुना जाए उसे क़ह्क़हा कहते हैं। अगर आवाज़ तो हो और दूर से न सुना जाए तो ज़ह़िक कहते हैं। अगर बिल्कुल आवाज़ न पाई जाए तो इसे तबस्सुम बोलते हैं। पस यूं समझिये कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात तबस्सुम की ह़द से तजावुज़ न फ़रमाते। शाज़ो नादिर ज़ह़िक की ह़द तक पहुंचते क्यूंकि कसरते ज़ह़िक दिल को हलाक कर देती है और क़ह्क़हा कभी न मारते क्यूंकि येह मकरूह है।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गिर्या शरीफ़ ज़ह़िक की जिन्स से था कि आवाज़ बुलन्द न होती थी मगर आंसू मुबारक आंखों से गिर पड़ते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सीने शरीफ़ से देगे मिसी[3] के जोश की सी आवाज़ सुनी जाती थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गिर्या मुबारक सिफ़ते जलाले इलाही की तजल्ली और उम्मत पर शफ़्क़त और मय्यित पर रह़मत के बाइ़स हुवा करता और अक्सर कुरआन शरीफ़ के सुनने से और कभी कभी नमाज़े शब में भी हुवा करता।[4]

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अंगड़ाई कभी नहीं ली।

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الاول فی کمال خلقته و جمال صورته،ج٥،ص٤٤٥و الخصائص الکبری للسیوطی،باب الآیة فی صوته...الخ،ج١،ص١١٣۔ علمیه

2 ......चेहरा खिल उठना। 3 ......तांबे की देग।

4 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الاول فی کمال خلقته و جمال صورته،ج٥،ص٤٤٨۔٤٥١ملتقطاً۔ علمیه

www.dawateislami.net

सरे मुबारक

सरे मुबारक बड़ा था। येह वोही सरे मुबारक है कि जिस पर क़ब्ले बिअ़्सत ब त़रीक़े इरहास[1] व करामत गर्मा में बादल साया किये रहता था। चुनान्चे, जब आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم माई ह़लीमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां परवरिश पा रहे थे तो वोह आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी दूर जगह न जाने देती थीं। एक रोज़ वोह ग़ाफ़िल हो गईं और हु़ज़ूर صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी रज़ाई बहन शैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ दोपहर के वक़्त मवैशियों में तशरीफ़ ले गए। माई ह़लीमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا तलाश में निकलीं। आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ पाया। कहने लगीं : ऐसी तपिश में ? शैमा बोली : "अम्मां जान ! मेरे भाई ने तपिश मह़सूस नहीं की, मैं ने देखा कि बादल आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर साया करता था जब आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ठहर जाते तो बादल भी ठहर जाता और जब आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो वोह भी चलता, येही ह़ाल रहा यहां तक कि हम इस जगह आ पहुंचे हैं।" माई ह़लीमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पूछा : "बेटी ! क्या येह सच है ?" शैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया : "हां ख़ुदा की क़सम।"[2] इसी त़रह़ जब आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारह बरस की उ़म्र शरीफ़ में अपने चचा अबू त़ालिब और दीगर शुयूख़े क़ुरैश के साथ मुल्के शाम में तशरीफ़ ले गए तो बुह़ैरा राहिब के इ़बादत ख़ाने के क़रीब उतरे। उस राहिब ने आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पहचान लिया और खाना तय्यार कर के लाया और आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुलवाया। पस आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर बादल साया किये हुवे था।[3]

गर्दने मुबारक

गर्दने मुबारक क्या थी गोया बुते आ़ज[4] की गर्दन थी, चांदी की मानिन्द साफ़।[5]

---

1 ......नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले नबुव्वत ज़ाहिर हो उस को इरहास कहते हैं।

2 ......دیکھومواہب لدنیہ اورخصائص کبریٰ۔......(الخصائص الکبری للسیوطی،باب ما ظهر فی زمان رضاعه من الآیات والمعجزات، ج۱،ص۱۰۰۔ علمیه)

3 ......ترمذی، باب ماجاء فی بدء نبوۃ النبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔......(سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب ماجاء فی بدء نبوة النبی،الحدیث:۳٦٤۰،ج۵،ص۳۵٦ملتقطاً۔ علمیه)

4 ......हाथी दांत की बनी हुई मूरत।

5 ......الشمائل المحمدیة،باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وآله وسلم،ص۲۲۔ علمیه

www.dawateislami.net

दस्ते मुबारक

कफ़े दस्त[1] और बाज़ू मुबारक पुर गोश्त थे। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने किसी रेशम या दीबा[2] को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कफ़े मुबारक से ज़ियादा नर्म नहीं पाया और न किसी ख़ुश्बू को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश्बू से बढ़ कर पाया।[3]

जिस शख़्स से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसाफ़ह़ा करते वोह दिन भर अपने हाथ में ख़ुश्बू पाता और जिस बच्चे के सर पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना दस्ते मुबारक रख देते वोह ख़ुश्बू में दूसरे बच्चों से मुमताज़ होता। चुनान्चे, ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े ज़ोहर पढ़ी फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अहले ख़ाना की त़रफ़ निकले, मैं भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ निकला, बच्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने आए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन में से हर एक के रुख़्सार को अपने हाथ मुबारक से मस्ह़ फ़रमाने लगे। मेरे रुख़्सार को भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्ह़ फ़रमाया। पस मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक की ठन्डक या ख़ुश्बू ऐसी पाई कि गोया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ अ़त्तार के सन्दूक़चे से निकाला था।[4]

ह़ज़रते वाइल बिन ह़जर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुसाफ़ह़ा करता था या मेरा बदन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बदन से मस करता तो मैं इस का असर बा'दे अज़ां अपने हाथ में पाता और मेरा हाथ कस्तूरी से ज़ियादा ख़ुश्बूदार होता। ह़ज़रते यज़ीद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक मेरी त़रफ़ बढ़ाया, क्या देखता हूं कि वोह बर्फ़ से ठन्डा और कस्तूरी से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है।[5]

---

1 ......हथेली। 2 ......रेशमी कपड़ा।

3 ......صحیح بخاری، باب صفۃ النبی صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ۔......(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی، الحدیث: ۳۵۶۱، ج۲، ص۴۸۹ ۔ علمیه)

4 ......صحیح مسلم، باب طیب ریحہ ولین مسہ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ۔......(صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب طیب رائحة النبی... الخ، الحدیث: ۲۳۲۹، ص ۱۲۷۱ ۔ علمیه)

5 ......دیکھو مواہب لدنیہ۔......(المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، الفصل الاول فی کمال خلقته و جمال صورته، ج۵، ص ۴۵۲ ۔ علمیه)

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ वोह मुबारक हाथ था कि एक मुश्ते ख़ाक कुफ़्फ़ार पर फेंक दी[1] और उन को शिकस्त हुई। येह वोही दस्ते करम था कि कभी कोई साइल आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरवाज़े से महरूम नहीं फिरा। येह वोही दस्ते शिफ़ा था कि जिस के महज़ छूने से वोह बीमारियां जाती रहीं कि जिन के इलाज से अत़िब्बा आ़जिज़ हैं। इसी मुबारक हाथ में संग रेज़ों[2] ने कलिमए शहादत पढ़ा। इसी मुबारक हाथ के इशारे से फ़त्हे मक्का के रोज़ तीन सो साठ बुत[3] यके बा'द दीगरे मुंह के बल गिर पड़े। इसी मुबारक हाथ की एक उंगली के इशारे से चांद[4] दो पारा हो गया। इसी मुबारक हाथ की उंगलियों से[5] मुतअ़द्दिद दफ़्आ़ चश्मे की तरह पानी जारी हुवा।

आं हज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक की मज़ीद बरकात की तशरीह के लिये ज़ैल में चन्द मिसालें और दर्ज की जाती हैं :

﴾1﴿.....हज़रते अबयज़ बिन हम्माल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर दाद था जिस से चेहरे का रंग बदल गया था एक रोज़ आं हज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को बुलाया और उन के चेहरे पर अपना दस्ते शिफ़ा फेरा। शाम न होने पाई कि दाद का कोई निशान न रहा।[6]

﴾2﴿.....हज़रते शुर्हबील जो'फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हथेली में एक गिलटी सी थी जिस के सबब से वोह तल्वार का क़ब्ज़ा और घोड़े की बाग नहीं पकड़ सकते थे। उन्हों ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से

1......क़ुरआने करीम में है : (وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ رَمٰی) **तर्जमा :** "और नहीं फेंका तू ने जिस वक़्त कि फेंका तू ने लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने फेंका था।" 12 मिन्हु (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फेंकी। (پ۹،الانفال:۱۷) **इल्मिय्या**

2......خصائص کبریٰ، جزء ثانی، ص ۷۵۔ 3......دلائل حافظ ابونعیم، جزء ثانی، ص ۱۸۸۔

4......क़ुरआने मजीद में है : اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝ (**तर्जमा**) नज़दीक आई क़ियामत और फट गया चांद। 12 मिन्हु। (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद। (پ۲۷،القمر:۱) **इल्मिय्या**

5......صحیح بخاری، باب علامات النبوت فی الاسلام۔

6......الخصائص الکبری للسیوطی، باب آیاته فی ابراء المرضی...الخ، ج۲، ص۱۱٦ والاصابة فی تمییز الصحابة، ۱۹۔ ابیض بن حمال، ج۱، ص۱۷۷۔ علمیه

www.dawateislami.net

शिकायत की। आप ने अपनी हथेली से उस गिलटी को रगड़ा पस उस का निशान तक न रहा।(1)

﴾3﴿.....एक औ़रत अपने लड़के को ख़िदमते अक़्दस में लाई और अ़र्ज़ किया कि इस को जुनून है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सीने पर हाथ फेरा। लड़के को क़ै हुई और उस में एक काला कुत्ते का पिल्ला निकला और फ़ौरन आराम हो गया।(2)

﴾4﴿.....जंगे उहुद में ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आंख को सदमा पहुंचा और डेला रुख़्सार पर आ पड़ा। तजवीज़ हुई कि काट दिया जाए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया गया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ऐसा न करो और उन्हें बुला कर अपने दस्ते मुबारक से डेले को उस की जगह पर रख दिया। आंख फ़ौरन ऐसी दुरुस्त हो गई कि कोई येह न बता सकता था कि दोनों में से किस आंख को सदमा पहुंचा था।(3)

﴾5﴿.....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه जब अबू राफ़ेअ़ यहूदी को क़त्ल कर के उस के घर से निकले तो ज़ीने से गिर कर उन की साक़(4) टूट गई। उन्हों ने अपने इ़मामे से बांध ली। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि पाउं फैलाओ। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने पाउं फैलाया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस पर अपना दस्ते शिफ़ा फेरा उसी वक़्त ऐसी तन्दुरुस्त हो गई कि गोया कभी वोह टूटी ही न थी।(5)

﴾6﴿.....ह़ज़रते आइज़ बिन सईद जस्री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मेरे चेहरे पर अपना मुबारक हाथ फेर दीजिये और दुआ़ए बरकत फ़रमाइये। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही किया उस वक़्त से ह़ज़रते आइज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का चेहरा तरो ताज़ा और नूरानी रहा करता था।(6)

---

1 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب آیاته فی ابراء المرضی...الخ،ج۲،ص۱۱٦۔ علمیه

2 ......مشکاة المصابیح،کتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات،الحدیث:۵۹۲۳،ج۲،ص۳۹٤ و الخصائص الکبری للسیوطی،باب آیاته فی ابراء المرضی...الخ،ج۲،ص۱۱٦۔ علمیه

3 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب ما وقع فی غزوة اُحد من الآیات والمعجزات،ج۱،ص۳٦۰۔ علمیه

4 ......पिंडली।

5 ......مشکاة المصابیح،کتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات،الحدیث:۵۸۷٦، ج۲،ص۳۸۲۔ علمیه

6 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٤٤٦۲۔عائذ بن سعید،ج۳،ص٤۹۳۔ علمیه

www.dawateislami.net

﴾7﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान व अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا पिसराने अ़ब्द के लिये दुआ़ए बरकत फ़रमाई और दोनों के सरों पर अपना मुबारक हाथ फेरा। वोह दोनों जब सर मुंडाया करते तो जिस जगह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुबारक हाथ रखा था उस पर बाक़ी हिस्से से पहले बाल उग आते।[1]

﴾8﴿.....जब ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब क़रशी अ़दवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे तो निहायत ही कोताह क़द थे। उन के नाना ह़ज़रते अबू लुबाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ले गए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तह़नीक[2] के बा'द इन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और दुआ़ए बरकत फ़रमाई। इस का येह असर हुवा कि ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी क़ौम में होते तो क़द में सब से बुलन्द नज़र आते।[3]

﴾9﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते क़तादा बिन मिलह़ान क़ैसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चेहरे पर अपना दस्ते मुबारक फेरा, जब वोह उ़म्र रसीदा हो गए तो उन के तमाम आ'ज़ा पर कोहनगी[4] के आसार नुमायां थे मगर चेहरा ब दस्तूर तरो ताज़ा था।[5]

﴾10﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ैस बिन ज़ैद बिन जब्बार[6] जुज़ामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और दुआ़ए बरकत फ़रमाई। ह़ज़रते क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सो बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई। उन के सर के बाल सफ़ेद हो गए थे मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक की जगह के बाल सियाह ही रहे।[7]

1......الاصابة فی تمييز الصحابة،٦١٩٩۔عبد اللّٰه بن عبد،ج٥،ص١٦۔ علميه

2......कोई चीज़ मसलन खजूर चबा कर उसे बच्चे के तालू में लगा देना तह़नीक कहलाता है। सह़ाबए किराम ब ग़रज़े तह़नीक अपने बच्चों को बारगाहे रिसालत में लाते ताकि सब से पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे मुबारक इन के शिकम में पहुंचे।

3......الاصابة فی تمييز الصحابة،٦٢٢٧۔عبد الرحمن بن زيد،ج٥،ص٢٩۔٣٠۔ علميه

4......या'नी बुढ़ापे।

5......الاصابة فی تمييز الصحابة،٧٠٨٩۔قتادة بن ملحان القيسی،ج٥،ص٣١٧۔ علميه

6......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "क़ैस बिन ज़ैद बिन ह़बाब" लिखा है लेकिन इसाबा और दीगर कुतुब में "क़ैस बिन ज़ैद बिन जब्बार" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां इसाबा के मुत़ाबिक़ "क़ैस बिन ज़ैद बिन जब्बार" लिखा है। **इल्मिय्या**

7......الاصابة فی تمييز الصحابة،٧١٨٨۔قيس بن زيد بن جبار الجذامی،ج٥،ص٣٥٧۔ علميه

www.dawateislami.net

﴾11﴿.....जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीने की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई तो रास्ते में एक गुलाम चरवाहे से आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूध त़लब किया। उस ने जवाब दिया कि मेरे पास कोई दूध देने वाली बकरी नहीं। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बकरी पकड़ ली और उस के थन पर अपना दस्ते मुबारक फेरा। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का दूध दोहा और दोनों ने पिया। गुलाम ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा कि आप कौन हैं ? हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं। येह सुन कर वोह ईमान लाया।[1]

इसी त़रह़ हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उम्मे मा'बद की बकरी के थन पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और उस ने दूध दिया, जैसा कि इस किताब में पहले आ चुका है।

﴾12﴿.....ह़ज़रते मालिक बिन उ़मैर सुलमी शाइ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं शाइ़र हूं। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शे'र के बारे में क्या फ़तवा देते हैं ? आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तेरे सर सीने से कन्धे तक पीप से भर जाए तो येह इस से बेहतर है कि शे'र से भरा हो। मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी ख़त़ा ब त़रीक़े मस्ह़[2] दूर कर दीजिये। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर और चेहरे पर अपना मुबारक हाथ फेरा फिर मेरे जिगर पर फिर पेट पर फेरा यहां तक कि मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक के मबलग़ से शर्मिन्दा होता था। रावी का बयान है कि ह़ज़रते मालिक बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बूढ़े हो गए यहां तक कि उन के सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद हो गए मगर सर और दाढ़ी में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक की जगह के बाल सफ़ेद न हुवे।[3]

﴾13﴿.....ह़ज़रते मदलूक फ़ज़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मेरा आक़ा मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गया। मैं इस्लाम लाया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे दुआ़ए बरकत दी और मेरे सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा। मेरे सर का वोह हिस्सा जिसे

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٧٢٥٨ـقیس بن النعمان السکونی،ج٥،ص٣٨٢ـ علمیه

2 ......हाथ मुबारक फेर कर।

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٧٦٨٦ـمالك بن عمیر السلمی الشاعر،ج٥،ص٥٤٩ـ علمیه

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक ने मस किया था सियाह ही रहा बाक़ी तमाम सर सफ़ेद हो गया।[1]

﴾14﴿.....ह़ज़रते मुआ़विय्या बिन सौर बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। इन के साहिबज़ादे बिश्र बिन मुआ़विय्या साथ थे। ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बिश्र के चेहरे पर अपना दस्ते मुबारक फेर दीजिये। चुनान्चे, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिश्र के चेहरे को मस्ह़ किया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मस्ह़ का निशान ह़ज़रते बिश्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पेशानी में ग़ुर्रह की मानिन्द था[2] और वोह जिस बीमार पर अपना हाथ फेर देते अच्छा हो जाता। ह़ज़रते बिश्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे मुह़म्मद बिन बिश्र इस बात पर फ़ख़्र किया करते थे कि मेरे बाप के सर पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक फेरा था, चुनान्चे, यूं कहा करते थे :

وَ اَبِی الَّذِیْ مَسَحَ النَّبِیُّ بِرَاْسِہٖ   وَ دَعَا لَہٗ بِالْخَیْرِ وَ الْبَرَکَات

मेरा बाप वोह है कि पैग़म्बरे ख़ुदा ने उन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और उन के लिये दुआ़ए ख़ैरो बरकत फ़रमाई।[3]

﴾15﴿.....ह़ज़रते यज़ीद बिन कुनाफ़ा त़ाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे वोह अक़रअ़ (गन्जे) थे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सर पर हाथ मुबारक फेरा उसी वक़्त बाल उग आए। इसी वासित़े उन का लक़ब हुल्ब (बिसयार मू)[4] हो गया। इब्ने दुरैद का क़ौल है कि वोह अक़रअ़ थे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक की बरकत से अफ़रअ़ (मर्दे तमाम मू)[5] हो गए।[6]

﴾16﴿.....यसार बिन उज़ैहिर जोहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िक्र करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और मुझे दो चादरें पहना दीं और एक तल्वार अ़त़ा फ़रमाई।

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٧٨٧٧۔مدلوك الفزاری،ج٦،ص٥١۔ علمیه

2 ....ग़ुर्रह ब मा'ना चमक व रोशनी या'नी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मस्ह़ फ़रमाने से उन की पेशानी नूरानी हो गई। **इल्मिय्या**

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٦٧٩۔بشر بن معاویة،ج١،ص٤٣٧۔ علمیه

4 ......घने बालों वाला।

5 ......वोह मर्द जिस के सर पर पूरे बाल हों।

6 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٩٠١٢۔الهلب الطائی ج٦،ص٤٣٢۔ علمیه

www.dawateislami.net

ह़ज़रते यसार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की साहि़बज़ादी अ़मरह का बयान है कि मेरे बाप के सर में सफ़ेद बाल न आए यहां तक कि उन्हों ने वफ़ात पाई।(1)

﴾17﴿.....ह़ज़रते अबू ज़ैद बिन अख़्त़ब अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के सर और चेहरे पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना मुबारक हाथ फेरा सो साल से ज़ाइद उन की उ़म्र हो गई मगर सर और दाढ़ी में कोई सफ़ेद बाल न था।(2)

﴾18﴿.....ह़ज़रते अबू सिनान अ़ब्दी सबाह़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के चेहरे पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक फेरा उन की उ़म्र नव्वे बरस की हो गई मगर चेहरा बिजली की त़रह़ चमकता था।(3)

﴾19﴿.....ह़ज़रते अबू ग़ज़्वान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़ालते कुफ़्र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अबू ग़ज़्वान। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये सात बकरियों का दूध दोहा और वोह सब पी गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को दा'वते इस्लाम दी वोह मुसलमान हो गए फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सीने पर अपना हाथ मुबारक फेर दिया दूसरे रोज़ सुब्ह़ के वक़्त सिर्फ़ एक बकरी दोही गई वोह उस का भी तमाम दूध न पी सके।(4)

﴾20﴿.....ह़ज़रते सह्ल बिन राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दो साअ़ खजूरें बत़ौरे ज़कात और अपनी लड़की अ़मीरह को ले कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे ह़क़ में और लड़की के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर फ़रमाएं और इस लड़की के सर पर अपना मुबारक हाथ फेर दें। अ़मीरह का क़ौल है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक मुझ पर रखा। मैं **अल्लाह** की क़सम खाती हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ की ठन्डक बा'द में मेरे कलेजे पर रही।(5)

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٩٣٥١۔يساربن ازيهر الجهنی،ج٦،ص٥٣٣۔ علميه

2 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،٩٩٥٢۔ابو زيد بن اخطب،ج٧،ص١٣٣۔ علميه

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،١٠٠٦٦۔ابو سنان العبدی ثم الصباحی،ج٧،ص١٦٤۔ علميه

4 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،١٠٣٧٥۔ابوغزوان،ج٧،ص٢٦١۔ علميه

5 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،١١٥٣٥۔عميرة بنت سهل بن رافع،ج٨،ص٢٥٠۔ علميه

www.dawateislami.net

﴾21﴿.....ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आज़ाद कर्दा गुलाम अ़ता बयान करता है कि मैं ने ह़ज़रते साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि उन की दाढ़ी के बाल सफ़ेद थे मगर सर के बाल सियाह थे। मैं ने पूछा : आक़ा ! आप के सर के बाल सफ़ेद क्यूं नहीं होते ? उन्हों ने जवाब दिया कि एक रोज़ मैं लड़कों के साथ खेल रहा था। हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने लड़कों को सलाम किया। उन में से मैं ने सलाम का जवाब दिया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलाया और अपना मुबारक हाथ मेरे सर पर रख कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ में बरकत दे।" पस हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक की जगह पर सफ़ेद बाल कभी न आएंगे।[1]

﴾22﴿.....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं उ़क़्बा बिन अबी मुऐ़त़ की बकरियां चराया करता था। एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लड़के ! क्या तेरे पास दूध है ? मैं ने कहा कि हां ! लेकिन मैं अमीन हूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तेरे पास कोई ऐसी बकरी है जिस पर नर न कूदा हो ? मैं ने जवाब दिया कि हां। पस मैं ने एक बकरी पेश की जिस का थन न था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने थन की जगह पर अपना दस्ते मुबारक फेरा। नागाह एक दूध भरा थन नुमूदार हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध दोहा और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुझ को पिलाया फिर थन से इरशाद फ़रमाया कि सुकड़ जा। पस वोह ऐसा ही हो गया जैसा कि पहले था। येह देख कर मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ता'लीम दीजिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और दुआ़ए बरकत दे कर फ़रमाया कि तू ता'लीम याफ़्ता लड़का है। पस मैं इस्लाम लाया।[2]

﴾23﴿.....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अनस बिन फ़ज़ाला अन्सारी औसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िक्र करते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए तो मैं दो हफ़्ते का था मुझे हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते मुबारक फेरा और दुआ़ए बरकत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि इस का नाम मेरे नाम पर रखो मगर मेरी

---

1 ......المعجم الصغير للطبرانی، الجزء الاول، الحديث:٢٠٧، ص٢٤٩ ـ علميه

2 ......المعجم الصغير للطبرانی، الجزء الاول، الحديث:٥١٤، ص١٨٦ ـ علميه

www.dawateislami.net

कुन्यत न रखो। इन के साहि़ब ज़ादे यूनुस का क़ौल है कि मेरे वालिद बूढ़े हो गए और उन के तमाम बाल सफ़ेद हो गए मगर सर के बाल जिन पर दस्ते मुबारक फिरा था सफ़ेद न हुवे।(1)

﴾24﴿.....ह़ज़रते उ़बादा बिन सअ़द बिन उ़स्मान ज़ुरक़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सर पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक फेरा और दुआ़ फ़रमाई। उन्हों ने अस्सी साल की उ़म्र में वफ़ात पाई और कोई बाल सफ़ेद न हुवा।(2)

﴾25﴿.....ह़ज़रते बिश्र (या बुशैर) बिन अ़क़रबा जोहनी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मेरे वालिद मुझ को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि येह कौन है ? उन्हों ने कहा कि येह मेरा बेटा बह़ीर है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि नज़्दीक आओ। मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दाएं हाथ बैठ गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और मुझ से पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा नाम बह़ीर है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं बल्कि तुम्हारा नाम बुशैर है। मेरी ज़बान में लुक्नत थी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे मुंह में अपना लुआ़बे दहन डाल दिया लुक्नत जाती रही। मेरे सर के तमाम बाल सफ़ेद हो गए मगर जिन बालों पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक फिरा था वोह सियाह ही रहे।(3)

﴾26﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ुज़ैमा बिन आ़सिम उ़क्ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के चेहरे पर अपना दस्ते मुबारक फेरा उन के चेहरे पर पीरी(4) के आसार नुमूदार न हुवे यहां तक कि वफ़ात पाई।(5)

﴾27﴿.....ह़ज़रते फ़िरास बिन अ़म्र किनानी लैसी(6) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिद के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और दर्दे सर की शिकायत की।

---

1 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب الشعر الذی وضع یدہ الکریمۃ...الخ،ج۲،ص۱۳۸۔علمیہ

2 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب الشعر الذی وضع یدہ الکریمۃ...الخ،ج۲،ص۱۳۹۔علمیہ

3 ......الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ،۶۷۱۔بشر بن عقربۃ الجھنی،ج۱،ص۴۳۴-۴۳۵۔علمیہ

4 ......बुढ़ापे।

5 ......الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ،۲۲۶۵۔خزیمۃ بن عاصم،ج۲،ص۲۴۳۔علمیہ

6 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "फ़िराश बिन अ़म्र" लिखा है जब कि "उसुदुल ग़ाबा" और "अल इसाबा" वग़ैरा में इन का नाम "फ़िरास बिन अ़म्र" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने "फ़िरास बिन अ़म्र" लिखा है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़िरास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अपने सामने बिठाया और उन की आंखों के दरमियानी चमड़े को पकड़ कर खींचा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक उंगलियों की जगह बाल उग आए और दर्द जाता रहा। उन्हों ने ह़रूरा[1] के दिन ख़वारिज के साथ निकलना चाहा उन के वालिद ने उन को कोठड़ी में बन्द कर दिया, वोह बाल गिर गए जब तौबा की तो फिर उग आए।[2]

﴾28﴿.....ह़ज़रते अ़म्र बिन तग़्लिब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के चेहरे और सर पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक फेरा उन्हों ने सो बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई मगर चेहरे और सर के वोह बाल जिन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक ने छुवा था सफ़ेद न हुवे।[3]

﴾29﴿.....ह़ज़रते उसैद बिन अबी इयास[4] किनानी देइली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के सीने पर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक रखा और चेहरे पर फेरा। वोह तारीक घर में दाख़िल होते तो रोशन हो जाता।[5]

﴾30﴿.....ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का निकाह़ ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से हुवा तो मेरी मां उम्मे सुलैम ने ख़ुरमा[6] और घी और पनीर से हैस[7] तय्यार किया और उसे एक तोर[8] में डाल दिया। फिर कहा : अनस ! इस को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ले जा। वहां अ़र्ज़ करना कि येह मेरी मां ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये भेजा है वोह सलाम कहती है और अ़र्ज़ करती है कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह थोड़ा सा खाना हमारी त़रफ़ से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये है। मैं ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और मां ने जो कुछ कहा था अ़र्ज़ कर दिया।

1......इराक़ में कूफ़ा के क़रीब एक मक़ाम जहां लड़ाई हुई थी उस दिन को यौमे ह़रूरा कहा जाता है। **इल्मिय्या**

2......الاصابة فی تمییز الصحابة،٦٩٨٣ـفراس بن عمرو الکنانی،ج٥،ص٢٧٤ـ علمیه

3......الخصائص الکبری للسیوطی،باب الشعر الذی وضع یده الکریمة...الخ،ج٢،ص١٣٩ـ علمیه

4......अल ख़साइसुल कुब्रा में इन सह़ाबी का नाम "उसैद बिन अबी उनास" लिखा है अलबत्ता ह़दीस व सीरत की बा'ज़ कुतुब में "उसैद बिन अबी इयास" भी है मुमकिन है मुसन्निफ़ के पास अल ख़साइसुल कुब्रा का जो नुस्ख़ा हो उस में "उसैद बिन अबी इयास" ही हो या फिर उन्हों ने किसी वज्ह से इसे तरजीह़ दी हो। وَاللّٰه تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

5......अमसिलए मज़्कूरए बाला में से नम्बर 21, 22 मो'जमे सग़ीर त़बरानी में से हैं और नम्बर 23, 28, 29 ख़साइसे कुब्रा लिस्सुयूत़ी से और बाक़ी तमाम इसाबा लिल अ़स्क़लानी में से हैं। 12 मिन्ह ..

(الخصائص الکبری للسیوطی،باب الآیة فی اثر یده...الخ،ج٢،ص١٤٢ـ علمیه)

6......खजूर। 7......इन अश्या से मुरकब्ब एक खाना।

8......तोर प्याले की शक्ल का एक बरतन होता है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस को रख दो और फ़ुलां फ़ुलां फ़ुलां (तीन शख़्सों) को बुला लाओ, और जो और मिलें उन को भी ले आओ। मैं ने ता'मीले इरशाद की। वापस आया तो क्या देखता हूं कि घर अहले ख़ाना से भरा हुवा है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उस हैस पर रखा और दुआ़ए बरकत फ़रमाई। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हाज़िरीन में से दस दस को बुलाते रहे और फ़रमाते रहे कि **अल्लाह** का नाम ले कर खाओ और हर एक अपने सामने से खाए। इस त़रह़ एक गुरौह निकलता और दूसरा आ जाता यहां तक कि सब ने सैर हो कर खाया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : अनस ! उठाओ। मैं ने उठा लिया। मैं येह नहीं बता सकता कि जब तोर रखा गया तो उस वक़्त खाना ज़ियादा था या जब उठाया गया। बक़ौले अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िरीन की ता'दाद तीन सो थी।[1]

﴾31﴿.....जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीने में रौनक़ अफ़रोज़ हुवे तो उस वक़्त ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक यहूदी के हां बत़ौरे ग़ुलाम काम करते थे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशाद से उन्हों ने उस यहूदी से इस अम्र पर मुकातबत[2] कर ली कि वोह उस यहूदी को चालीस ऊक़िया सोना अदा करें और उस के लिये खजूरों के तीन सो पौदे लगा कर परवरिश करें यहां तक कि वोह बार आवर हों। जब ह़ज़रते सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह ख़बर दी तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया कि सलमान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) की मदद करो। चुनान्चे, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने पौदे दे दिये और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक हाथ से उन को लगाया। वोह सब लग गए और उसी साल फल लाए। एक रिवायत में है कि तीन सो पौदों में से एक किसी[3] और ने लगाया। वोह फल न लाया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे उखाड़ कर अपने दस्ते मुबारक से फिर लगा दिया। वोह भी दूसरों के साथ ही फल लाया।[4] आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، باب فی المعجزات۔......(مشكاة المصابيح،احوال القيامة و بدء الخلق،باب فى المعجزات، الحديث: ٥٩١٣،ج٢،ص٣٩١۔ علميه)

2 ......आक़ा और ग़ुलाम के दरमियान मुआ़हदा जिस के तह़त ग़ुलाम मुक़र्ररा माल दे कर आज़ाद हो जाता है।

3 ......एक रिवायते तिर्मिज़ी में है कि वोह ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ थे। (شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خاتم النبوۃ) 12 मिन्ह

4 ......اسد الغابة فى معرفة الصحابة،سلمان الفارسى: ٢١٥٠،ج٢،ص٤٩٠۔ علميه

www.dawateislami.net

ख़िदमत में किसी कान से मुर्ग़ी के अन्डे के बराबर सोना आया था, वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया। सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि इस को चालीस ऊक़िया के साथ क्या निस्बत है ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येही ले जाओ **अल्लाह** तआ़ला इसी के साथ तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर देगा। चुनान्चे, वोह ले गए और उसी में से चालीस ऊक़िया[(1)] तोल कर यहूदी को दे दिये।[(2)] इस तरह ह़ज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आज़ाद हो गए।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बग़ल शरीफ़ सफ़ेद थी और इस से किसी क़िस्म की ना ख़ुश बू न आती थी बल्कि कस्तूरी की मानिन्द ख़ुश्बू आया करती थी।

सीनए मुबारक व क़ल्ब शरीफ़

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सीनए मुबारक कुशादा था। आप का क़ल्ब शरीफ़ पहला क़ल्ब शरीफ़ है जिस में असरारे इलाहिय्या और मआ़रिफ़े रब्बानिय्या वदीअ़त रखे गए। क्यूंकि आप ब वुजूदे सूरते नूरी सब से पहले पैदा किये गए। सद्रे मा'नवी की शर्ह़ और क़ल्बे अक़्दस की वुस्अ़त का बयान त़ाक़ते बशरी से ख़ारिज है। चार दफ़्आ़ फ़िरिश्तों ने आप के सद्रे मुबारक को शक़ किया और क़ल्ब शरीफ़ को निकाल कर धोया और उसे ईमान व ह़िक्मत से भर दिया। इसी की त़रफ़ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला अपने क़ुरआने पाक में यूं इरशाद फ़रमाता है :

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴿۱﴾ *क्या हम ने तेरा सीना नहीं खोल दिया !*[(3)]

येही वज्ह है कि जो असरार आप के क़ल्ब शरीफ़ को अ़ता हुवे वोह किसी और मख़्लूक़ को अ़ता नहीं हुवे और न किसी और मख़्लूक़ का क़ल्ब इस का मुतह़म्मिल हो सकता था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने क़ल्ब शरीफ़ की निस्बत यूं इरशाद फ़रमाते हैं कि मेरी आंख सो जाती है मगर मेरा दिल नहीं सोता।[(4)]

---

1 ......एक ऊक़िया, वज़्न में चालीस दिरहम के बराबर था और एक दिरहम का वज़्न तक़रीबन 3.0618 ग्राम बनता है लिहाज़ा चालीस ऊक़िया तक़रीबन 4899 ग्राम हुवा। **इल्मिय्या**

2 ......استیعاب لابن عبدالبر وغیرہ۔

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया ! (پ۳۰،الم نشرح:۱) **इल्मिय्या**

4 ......تنام عینی ولا ینام قلبی۔صحیح بخاری۔......(صحیح البخاری، کتاب المناقب،باب کان النبی تنام عینه...الخ،الحدیث: ۳۵۶۹، ج۲،ص۴۹۱۔ علمیه)

www.dawateislami.net

शिकमे मुबारक

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिवाउल बत़्न वस्सद्र थे या'नी आप का शिकम और सीनए मुबारक हमवार व बराबर थे। न तो शिकम सीने से और न सीना शिकम से बुलन्द था। ह़ज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शिकमे मुबारक को देखा गोया काग़ज़ हैं एक दूसरे पर रखे हुवे और तह किये हुवे।(1)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बोलो बराज़ बल्कि तमाम फ़ुज़्लात पाक थे जैसा कि अह़ादीसे कसीरा से साबित है।(2)

पुश्ते मुबारक

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते मुबारक ऐसी साफ़ व सफ़ेद थी कि गोया पिघलाई हुई चांदी है,(3) हर दोशाने(4) के दरमियान एक नूरानी गोश्त का टुकड़ा था जो बदन शरीफ़ के बाक़ी अज्ज़ा से उभरा हुवा था। इसे मोहरे नबुव्वत या ख़ातिमे नबुव्वत कहते थे। कुतुबे साबिक़ा में आप की अ़लामाते नबुव्वत में एक येह भी मज़्कूर थी। हुल्या मुबारक बयान करने वालों ने उस की ज़ाहिरी शक्लो सूरत के बयान करने में उसे कई चीज़ों (मसलन : बैज़ए कबूतर या तक्मिए छपरखट या गिर्हे गोश्ते सुर्ख़ वग़ैरा) से तशबीह दी है ताकि लोग समझ लें। सच पूछो तो येह एक सिर्रे अ़ज़ीम(5) और निशाने अ़जीब था जो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुख़्तस था कि जिस की ह़क़ीक़त को रब्बुल इ़ज़्ज़त के सिवा और कोई नहीं जानता।

نبوت را توئی آں نامہ در پشت — کہ از تعظیم دارد مہر بر پشت

---

1 ......خصائص کبریٰ بحوالہ ابن سعد وطبرانی، جزء اول، ص۳ ۷۔......(الخصائص الکبری للسیوطی، باب جامع فی صفۃ خلقہ، ج۱، ص۱۲۶۔ علمیہ)

2 ......तफ़्सील के लिये देखो रिसाला हुल्यतुन्नबी, मुअल्लिफ़हू ख़ाकसार।

3 ......خصائص کبریٰ بحوالہ احمد وبیہقی، جزء اول، ص۳ ۷۔......(الخصائص الکبری للسیوطی، باب جامع فی صفۃ خلقہ، ج۱، ص۱۲۵۔ علمیہ)

4 ......दोनों मुबारक कन्धे। 5 ......बड़ा राज़।

www.dawateislami.net

पाए मुबारक

हर दो पाए मुबारक सितबर[1] व पुर गोश्त और ख़ूब सूरत ऐसे कि किसी इन्सान के न थे और नर्म व साफ़ ऐसे कि उन पर पानी ज़रा भी न ठहरता बल्कि फ़ौरन गिर जाता। एड़ियां कम गोश्त हर दो साक़ मुबारक[2] बारीक व सफ़ेद व लत़ीफ़ गोया शह़मुल नख़्ल[3] या'नी खजूर का गाभा[4] हैं।[5] जब आप चलते तो क़दम मुबारक को क़ुव्वत व तसब्बुत[6] और वक़ारे तवाज़ोअ़ से उठाते जैसा कि अहले हिम्मत व शुजाअ़त का क़ाइदा[7] है। ह़ज़रते अबू हुरैरा[8] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि चलने में मैं ने आं ह़ज़रत से बढ़ कर किसी को नहीं देखा। गोया आप के लिये ज़मीन लिपटती जाती थी। हम दौड़ा करते और तेज़ चलने में मशक़्क़त उठाते और आप ब आसानी व बे तकल्लुफ़ चलते मगर फिर भी सब से आगे रहते।[9] बा'ज़ दफ़्आ़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ चलने का क़स्द फ़रमाते तो इस सूरत में अस्ह़ाब आप के आगे होते और आप अ़मदन[10] उन के पीछे होते।[11] और फ़रमाते हैं कि मेरी पीठ फ़िरिश्तों के लिये ख़ाली छोड़ दो।[12]

1......तनो मन्द। 2......दोनों पिन्डलियां मुबारका।

3 ......مدارج النبوۃ مطبوعہ نولکشور، جلد اول، ص ۶۵۔

4......खजूर का मग़्ज़।

5 ......مدارج النبوت، قسم اول در فضائل...الخ، باب اول دربیان حسن خلقت...الخ، ج۱، ص ۲۰، ۲۱ ملتقطاً۔ علمیہ

6......ठहराव। 7......इस तरह़ की रफ़्तार ममदूह़ व मुस्तह़सन है। चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ''وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِیْنَ یَمْشُوْنَ عَلَی الْاَرْضِ هَوْنًا وَّ اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿۶۳﴾ (فرقان، ع۶)'' और बन्दे रह़मान के वोह हैं जो चलते हैं ज़मीन पर दबे पाउं और जब बात करने लगें उन से बे समझ लोग, कहें साह़िब सलामत।

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो कहते हैं बस सलाम। (پ۱۹، الفرقان:۶۳) **इल्मिय्या**

8 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی مشیہ صلی اللّٰہ تعالی علیہ والہ وسلم۔

9 ......الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی مشیة رسول اللّٰہ، الحدیث:۱۱۶، ص۸۶۔ علمیہ

10......क़स्दन।

11......हुज़ूर अपने अस्ह़ाब के मुरब्बी व निगहबान थे। इस लिये उन के ह़ालात के मुलाह़ज़ा के लिये आप पीछे हो जाते ताकि ह़स्बे ह़ाल उन की तर्बिय्यत व तादीब व तक्मील फ़रमाएं या आप का येह फ़े'ल तवाज़ोअ़ पर मबनी था। واللّٰہ اعلم بالصواب

12......ब क़ौले ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म फ़िरिश्ते आप की निगहबानी करते थे। येह अम्र किसी त़रह़ وَاللّٰهُ یَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ الآیۃ (और **अल्लाह** तुझ को लोगों से बचाएगा) के मनाफ़ी नहीं। क्यूंकि अगर येह ह़ालत इस आयत के नुज़ूल से पहले थी तो अ़दमे मनाफ़ात ज़ाहिर ही है। और अगर नुज़ूल के बा'द हो तो यूं समझना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने दुश्मनों से आप की ह़िफ़ाज़त का यूं इन्तिज़ाम कर दिया कि इज़्हारे शरफ़ के लिये फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त इस काम पर मुतअ़य्यन फ़रमा दी। (देखो ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब, जुज़्ए राबेअ़, स. 291)

(المواهب اللدنیة وشرح الزرقانی، الفصل الاول فی كمال خلقته وجمال صورته، ج۵، ص۵۲۳۔ علمیه)

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाउं मुबारक वोह क़दम मुबारक हैं कि जब आप पथ्थर पर चलते तो वोह नर्म[1] हो जाता। ताकि आप ब आसानी उस पर से गुज़र जाएं। और जब रैत पर चलते तो उस में पाए मुबारक का निशान न होता। येह वोही क़दमे मुबारक हैं जिन की मह़ब्बत में कोहे उहुद व कोहे सबीर ह़रकत में आए। येह वोही क़दमे मुबारक हैं कि क़ियामे शब में वरम कर आते थे। येह वोही क़दमे मुबारक हैं कि मक्का और बैतुल मुक़द्दस को इन से शरफ़ ज़ाइद ह़ासिल हुवा।

क़दे मुबारक

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न बहुत दराज़ थे न कोताह क़द बल्कि मियाना क़द माइल ब दराज़ी थे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत दराज़ क़द न थे और माइल ब दराज़ी होने के सबब अवसत़ क़द से ज़ियादा थे मगर जब लोगों के साथ होते तो सब से बुलन्द व सरफ़राज़ होते।[2] ह़क़ीक़त में येह आप का मो'जिज़ा था कि जब अ़लाह़िदा होते तो मियाना क़द माइल ब दराज़ी होते और जब औरों के साथ चलते या बैठते तो सब से बुलन्द दिखाई देते।[3] ताकि बात़िन की त़रह़ ज़ाहिर व सूरत में भी कोई आप से बड़ा मा'लूम न हो।

आप की क़ामते ज़ैबा का साया न था इस की ताईद इस अम्र से होती है कि आप के अस्माए मुबारक में से एक इस्म शरीफ़ नूर है। चुनान्चे, कुरआने मजीद में सूरए माइदह में है :

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾

*अलबत्ता तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर और किताब वाज़ेह़ आई।*[4]

---

1 ......خصائص کبریٰ وشرح ہمزیہ لابن حجر ہیتمی۔

2 ......مواہب لدنیہ بحوالہ عبد اللہ ابن الامام احمد وغیرہ۔......(المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الاول في كمال خلقته وجمال صورته،ج٥،ص٤٨٥۔علميه)

3 ......आप का इरतिफ़ाए़ मा'नवी देखने वालों के लिये मुमसल हो जाता और आप उन सब को बुलन्द नज़र आते (देखो ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब, जुज़ राबिअ़, स. 199).

......(شرح الزرقاني على المواهب اللدنية،الفصل الاول في كمال خلقته وجمال صورته،ج٥، ص٤٨٥ ۔ علميه)

4 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारे पास **अल्लाह** की त़रफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब। (پ٦،المائدة:١٥)

www.dawateislami.net

और ज़ाहिर है कि नूर का साया नहीं होता । ह़कीम तिर्मिज़ी (मुतवफ़्फ़ा सिने 255 हिजरी) ने नवादिरुल उसूल में ब रिवायते ज़क्वान (ताबेई) नक़्ल किया है कि धूप और चांदनी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया नज़र न आता था । इमाम इब्ने सब्अ़ का क़ौल है कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़साइस में से है कि आप का साया ज़मीन पर न पड़ता था और आप नूर थे । लिहाज़ा जब आप धूप या चांद की रोशनी में चलते तो आप का साया नज़र न आता था । बा'ज़ ने कहा है कि इस की शाहिद वोह ह़दीस है कि जिस में मज़्कूर है कि जब आप ने येह दुआ़ मांगी कि **अल्लाह** मेरे तमाम आ'ज़ा और जिहात में नूर कर दे तो दुआ़ को इस क़ौल पर ख़त्म फ़रमाया :[1][2] وَاجْعَلْنِی نُوْرًا (और मुझ को नूर बना दे) । ज़ुरक़ानी[3] में मज़्कूर है कि ह़दीसे ज़क्वान मुर्सल है । मगर इब्ने मुबारक व इब्ने जौज़ी ने ब रिवायते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا नक़्ल किया है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया न था । जब आप धूप में खड़े होते तो आप की रोशनी सूरज की रोशनी पर ग़ालिब आती और जब चराग़ के सामने खड़े होते तो चराग़ की रोशनी पर ग़ालिब आती । बा'ज़ का क़ौल है कि आप का साया न होने में येह ह़िक्मत थी कि आप के साए को कोई काफ़िर पामाल न करे ।[4]

ماہ فرو ماند از جمال محمد　　سرو نروید باعتدال محمد

रंग मुबारक

रंग मुबारक गोरा और रोशन व ताबां मगर इस में किसी क़दर सुर्ख़ी मिली हुई थी । बा'ज़ रिवायतों में जो आप को "اَسْمَرُاللَّوْن" या'नी गन्दुम गूं लिखा है इस से भी येही मुराद है ।

जिल्दे मुबारक व बूए ख़ुश

आप की जिल्दे मुबारक नर्म थी । एक वस्फ़े ज़ाती ह़ुज़ूर में येह था कि ख़ुश्बू लगाए बिग़ैर आप से ऐसी ख़ुश्बू आती थी कि कोई ख़ुश्बू उस को न पहुंच सकती थी । आप की वालिदए माजिदा फ़रमाती हैं कि जब आप पैदा हुवे तो मैं ने ग़ौर से आप की त़रफ़ निगाह की क्या

1 ......خصائص کبریٰ، جزء اول، ص ٦٨۔

2 ......الخصائص الکبری للسیوطی، باب الآیة فی انه لم یکن یری له ظل، ج ١، ص ١١٦۔علمیه

3 ......زرقانی علی المواہب، جزء رابع، ص ٢٢٠۔

4 ......شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة، الفصل الاول فی کمال خلقته...الخ، ج ٥، ص ٥٢٤۔٥٢٥ ملتقطاً۔علمیه

www.dawateislami.net

देखती हूं कि आप चौदहवीं रात के चांद की मानिन्द हैं और आप से तेज़ बू कस्तूरी की त़रह़ खुश्बू[1] आ रही है।[2] ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने किसी कस्तूरी या अ़बीर[3] को बूए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से खुशतर न पाया।[4]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह मैं ने अपनी बेटी का निकाह़ कर दिया है मैं उसे उस के ख़ावन्द के घर भेजना चाहता हूं मेरे पास कोई खुश्बू नहीं आप कुछ इनायत फ़रमाएं। आप ने फ़रमाया कि मेरे पास मौजूद नहीं मगर कल सुब्ह़ एक चौड़े मुंह वाली शीशी और किसी दरख़्त की लकड़ी मेरे पास ले आना। दूसरे रोज़ वोह शख़्स शीशी और लकड़ी ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आप ने अपने दोनों बाज़ूओं से उस में अपना पसीना डालना शुरूअ़ किया यहां तक कि वोह भर गई फिर फ़रमाया कि इसे ले जा अपनी बेटी से कह देना कि इस लकड़ी को शीशी में तर कर के मल लिया करे। पस जब वोह आप के पसीनए मुबारक को लगाती तमाम अहले मदीना को उस की खुश्बू पहुंचती यहां तक कि इन के घर का नाम बैतुल मुत़य्यिबीन (खुश्बू वालों का घर) हो गया।[5]

हुज़ूर के ख़ादिम ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए और क़ैलूला फ़रमाया। ह़ालते ख़्वाब में आप को पसीना आ गया मेरी मां उम्मे सुलैम ने एक शीशी ली और आप का पसीनए मुबारक उस में डालने लगी आप जाग उठे और फ़रमाने लगे : उम्मे सुलैम ! तू येह क्या करती है ? उस ने अ़र्ज़ किया : ''येह आप का

---

1 ......زرقانی علی المواہب، جزء رابع، ص ۲۲۳۔

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیة،الفصل الاول ...الخ،ج٥،ص٥٣١۔ علمیه

3 ......अ़बीर एक खुश्बू है जो सन्दल व गुलाब व मुश्क से बनाते हैं। बा'ज़ ने कहा है कि येह एक खुश्बू है जिस में ज़ा'फ़रान मिला होता है। 12 मिन्ह

4 ......صحیح بخاری، کتاب الصیام، باب مایذکر من صوم النبی صلی اللّٰہ تعالی علیه واله وسلم وافطارہ۔ ......(صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب ما یذکر من صوم النبی وافطارہ،الحدیث:١٩٧٣،ج١،ص٦٤٩۔ علمیه)

5 ......येह एक ह़दीस का मज़्मून है जिसे अबू या'ला और त़बरानी और इब्ने अ़साकिर ने रिवायत किया है। देखो मवाहिबे लदुन्निय्या और ख़साइसे कुब्रा। 12 मिन्ह

......الخصائص الکبری للسیوطی،باب الآیة فی عرقه الشریف،ج١،ص١١٥ و شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیة، الفصل الاول...الخ،ج٥،ص٥٣٤۔ علمیه

www.dawateislami.net

पसीना है।[1] हम इस को अपनी ख़ुश्बू में डालते हैं और वोह सब ख़ुश्बूओं से ख़ुश्बूदार बन जाती है।"[2] दूसरी रिवायत मुस्लिम में है कि उम्मे सुलैम ने यूं अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम अपने बच्चों के लिये आप के अ़र्क़े मुबारक की बरकत के उम्मीदवार[3] हैं।" आप ने फ़रमाया : "तू ने सच कहा।"[4] इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर के अ़र्क़े मुबारक को बच्चों के चेहरे और बदन पर मल दिया करते थे और वोह तमाम बलाओं से मह़फ़ूज़ रहा करते थे।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه[5] से रिवायत है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा के किसी कूचे में से गुज़रते तो गुज़र जाने के बा'द भी आने जाने वालों को उस कूचे से ख़ुश्बू आती और वोह समझ जाते कि इस कूचे में से आप का गुज़र हुवा है।[6] बाक़ी ह़ाल लुआ़बे मुबारक और दस्ते मुबारक में आ चुका। यहां इस के इआ़दे की ज़रूरत नहीं।

अब भी मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार से ख़ुश्बूएं आ रही हैं जिन्हें मुह़िब्बान व आ़शिक़ाने जनाबे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शाम्मए मह़ब्बत से मह़सूस करते हैं। इब्ने बत्ताल का क़ौल है[7] कि जो शख़्स मदीनए मुनव्वरा में रहता है वोह उस की ख़ाक और दीवारों से ख़ुश्बू मह़सूस करता है। और अशबीली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है कि ख़ाके मदीना में एक अ़जीब महक है जो किसी ख़ुश्बू में नहीं। और याक़ूत ने कहा है कि मिन जुम्ला ख़साइसे मदीना इस की हवा का ख़ुश्बूदार होना है और वहां की बारिश में बूए ख़ुश होती है जो किसी और जगह की बारिश में नहीं होती। अबू अ़ब्दुल्लाह अ़त्तार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क्या ख़ूब कहा है :

1 ......صحیح مسلم، باب طیب عرقہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب طيب عرق النبى و التبرك به، الحديث: ٢٣٣١، ص ١٢٧٢ ۔ علميه

3 ......صحیح مسلم، باب طیب عرقہ صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم والتبرک بہ۔

4 ......صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب طيب عرق النبى و التبرك به، الحديث: ٢٣٣١، ص ١٢٧٢ ۔ علميه

5 ......इस को बज़्ज़ार और अबू या'ला ने ब अस्नादे सह़ीह़ रिवायत किया है। देखो मवाहिबे लदुन्निय्या और ख़साइसे कुब्रा।

6 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى، الفصل الاول... الخ، ج٥، ص ٥٣٥ و الخصائص الكبرى للسيوطى، باب الآية فى عرقه الشريف، ج١، ص ١١٥ ۔ علميه

7 ......देखो वफ़ाउल वफ़ा बि अख़्बारे दारुल मुस्त़फ़ा लिश्शैख़ुल इस्लाम अस्समहूदी, जुज़ए अव्वल, स. 12

www.dawateislami.net

بِطِیْبِ رَسُوْلِ اللّٰہِ طَابَ نَسِیْمُھَا فَمَا الْمِسْکُ مَا الْکَافُوْرُ مَا الصَّنْدَلُ الرَّطْبُ [1]

रसूलुल्लाह की ख़ुश्बू से नसीमे मदीना ख़ुश्बूदार हो गई। पस क्या है कस्तूरी, क्या है काफ़ूर, क्या है इत्रे संदल तरो ताज़ा।[2]

इमाम इब्ने सब्अ़[3] ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़साइस में शुमार किया है कि आप के कपड़ों पर मख्खी न बैठती और आप को जूं ईज़ा न देती।[4] या'नी आप के कपड़ों में जूं न होती कि आप को ईज़ा दे। क्यूंकि जूं उ़फ़ूनत[5] और पसीने से पैदा होती है और हुज़ूर तो नूर और अत़यबुन्नास[6] थे और आप का पसीना ख़ुश्बूदार होता था इसी त़रह़ ब वज्हे लत़ाफ़त आप के बदने मुबारक पर कपड़ा मैला न होता था।

अ़ल्लामा दमीरी ने अपने मन्ज़ूमा फ़िल फ़िक़्ह में लिखा है कि जिन चोपायों पर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवार हुवे, आप की सुवारी की ह़ालत में उन्हों ने कभी पेशाब न किया और जिस चोपाए पर आप सुवार हुवे वोह आप की ह़यात में कभी बीमार न हुवा।

मूए मुबारक

सरे मुबारक के बाल न तो बहुत घूंगर वाले थे और न बहुत सीधे बल्कि दोनों के बैन बैन[7] थे। इन बालों की दराज़ी में मुख़्तलिफ़ रिवायतें आई हैं। कानों तक, कानों के निस्फ़ तक, कानों की लौ तक, शाने मुबारक के नज़्दीक तक, शानों तक। इन सब रिवायतों में तत़बीक़ यूं है कि इन को मुख़्तलिफ़ अवक़ात व अह़वाल पर मह़मूल किया जाए। या'नी जब आप कटवा देते तो कान तक रह जाते फिर बढ़ कर निस्फ़ गोश या नर्मए गोश[8] या शाने तक पहुंच जाते।

1......वफ़ाउल वफ़ा बि अख़्बारे दारुल मुस्त़फ़ा लिश्शैख़ुल इस्लाम अस्समहूदी में "مَا الصَّنْدَلُ الرَّطْبُ" के बजाए "مَا الْمَنْدَلُ الرَّطْبُ" लिखा है मुमकिन है मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के नुस्ख़े में ऐसा ही हो या फिर यहां किताबत में ग़लती हुई हो, واللّٰہ تعالٰی اعلم بالصواب **इल्मिय्या**।

2......وفاء الوفاء للسمهودی،الباب الاول فی ذکر اسماء هذه البلدة الشریفة،ج۱،الجزء الاول،ص۱۷۔ علمیه

3......خصائص کبریٰ،جزء اول،ص۶۸۔

4......الخصائص الکبری للسیوطی،باب فی انه کان لا ینزل الذباب علیه...الخ،ج۱،ص۱۱۷۔ علمیه

5......गन्दगी। 6.....सब से ज़ियादा पाकीज़ा। 7......दरमियान। 8.....कान का नर्म हिस्सा।

www.dawateislami.net

अगर मूए मुबारक ख़ुद ब ख़ुद परा गन्दा हो जाते[1] तो आप उन को दो हिस्से बतौरे मांग कर लेते और अगर अज़् ख़ुद न बिखरते तो बहाले ख़ुद रहने देते और ब तकल्लुफ़ मांग न निकालते ।

दाढ़ी मुबारक घनी थी उसे कंघी करते और आइना देखते और सोने से पहले आंखों[2] में तीन तीन बार सुर्मा डालते । मूंछ मुबारक को कटवाया करते और फ़रमाते[3] थे कि मुशरिकीन की मुख़ालफ़त करो । या'नी दाढ़ियों को बढ़ाओ और मूंछों को ख़ूब कटवाओ ।[4] अख़ीर उ़म्र शरीफ़ में आप की रीशे मुबारक[5] और सरे मुबारक में क़रीबन बीस बाल सफ़ेद थे । गले और नाफ़ के दरमियान बालों का एक बारीक ख़त़ था इस के सिवा शिकमे मुबारक और पिस्तान मुबारक पर बाल न थे । दोनों बाज़ूओं और शानों और सीनए मुबारक के बालाई हिस्से में बाल ज़ियादा थे । मूए मुबारक का बाक़ी ह़ाल आसार शरीफ़ा की ता'ज़ीम के तह़्त में आएगा । اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی

लिबास

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आ़म लिबास[6] चादर, क़मीस और तहबन्द था । यमन की धारीदार चादरें जिन को अ़रबी में ह़िबरह[7] कहते हैं सब से ज़ियादा पसन्द फ़रमाते थे । बा'ज़ अवक़ात आप ने ऊनी जुब्बए शामिय्या इस्ति'माल फ़रमाया है जिस की आस्तीनें इस क़दर तंग थीं कि वुज़ू के वक़्त हाथ आस्तीनों से निकालने पड़ते थे । जुब्बए कसरवानी भी पहन

---

1 ......फैल जाते ।

2 ......नज़्रे बरीं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखें क़ुदरती त़ौर पर सुर्मगीं थीं और बदन मुबारक से ख़ुश्बू आया करती थी आप को सुर्मा या ख़ुश्बू के इस्ति'माल की ह़ाजत न थी मगर बईं हमा आप का सुर्मा और ख़ुश्बू को इस्ति'माल करना ब ग़रज़े ता'लीमे उम्मत होगा । फ़ा फ़्हम । 12 मिन्ह

3 ......मिश्कातुल मसाबीह़, बाबुत्तरजिल ।

4 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الترجل، الحدیث:٤٤٢١، ج٢، ص١٢٨۔ علمیه

5 ......दाढ़ी मुबारक ।

6 ......लिबास के मुतअ़ल्लिक़ देखो मिश्कात शरीफ़, किताबुल्लिबास ।

7 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "हीरा" लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि मिश्कातुल मसाबीह़ व दीगर कुतुब में "ह़िबरह" है मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी यमन की धारीदार चादरों का ज़िक्र किया है जिन्हें "ह़िबरह" कहते हैं लिहाज़ा हम ने येही लिखा है । **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

लेते थे जिस की जेब और दोनों चाकों पर दीबा की सन्जाफ़[1] थी। ऐसी ऊनी चादर भी आप ने पहनी है जिस पर कजावे की शक्ल बनी हुई थी। सफ़ेद लिबास पसन्द और सुर्ख़ ना पसन्द फ़रमाते थे। पाजामा आप ने कभी नहीं पहना।

इमामे का शिम्ला छोड़ा करते और कभी न छोड़ा करते। शिम्ला अक्सर दोनों शानों के बीच में और कभी शानए मुबारक पर पड़ा रहता। बा'ज़ वक़्त इमामे में तह़नीक फ़रमाते। या'नी दस्तार मुबारक का एक पेच बाईं जानिब से ठोड़ी मुबारक के नीचे से गुज़ार कर सरे मुबारक पर लपेट लेते। इमामा अक्सर सियाह रंग का होता था। इमामे के नीचे सर से लिपटी हुई टोपी हुवा करती। ऊंची टोपी आप ने इस्ति'माल नहीं फ़रमाई।

ना'लैने शरीफ़ैन चपली की शक्ल की थीं। हर एक के दो दो तस्मे दोहरी तेह वाले थे। एक तस्मा अंगूठे और मुत्तसिल की उंगली मुबारक के बीच में और दूसरा अंगूश्ते मियाना और बिन्सर[2] के बीच में हुवा करता। येह वोही ना'लैने शरीफ़ैन हैं कि शबे मे'राज में जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़र्श पर तशरीफ़ ले गए तो ब क़ौले सूफ़ियाए किराम बारी तआ़ला का इरशाद हुवा कि ना'लैन समेत अ़र्श को शरफ़ बख़्शिये। किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

لَدَی الطُّوْرِ مُوْسٰی نُوْدِیَ اخْلَعْ وَ اَحْمَدُ
عَلَی الْعَرْشِ لَمْ یُؤْذَنْ بِخَلْعِ نِعَالِهٖ

तूर के पास ह़ज़रते मूसा को आवाज़ आई कि पा पोश[3] उतार लीजिये और ह़ज़रते अह़मद को अ़र्श पर पा पोश उतारने की इजाज़त न मिली।

हर एक मुसलमान की येह आरज़ू होती है और होनी चाहिये कि इस दुन्या में भी ह़ालते ख़्वाब या ह़ालते बेदारी में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो। लिहाज़ा हम ज़ैल में एक दुरूद शरीफ़ दर्ज करते हैं। जो शख़्स इस दुरुद शरीफ़ को हर रोज़ सोने से पहले बा वुज़ू बा अदब और हुज़ूरे क़ल्ब से तीन बार पढ़ेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی चालीस दिन के अन्दर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा।

---

1 ......रेशमी गोट।

2 ......छुंगलिया के साथ वाली उंगली।

3 ......ना'लैन शरीफ़।

www.dawateislami.net

दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى نُوْرِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَنْوَارِ وَصَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَرْوَاحِ وَصَلِّ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَجْسَادِ وَصَلِّ عَلٰى رَأْسِ مُحَمَّدٍ فِي الرُّءُوْسِ وَصَلِّ عَلٰى وَجْهِ مُحَمَّدٍ فِي الْوُجُوْهِ وَصَلِّ عَلٰى جَبِيْنِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَجْبُنِ وَصَلِّ عَلٰى جَبْهَةِ مُحَمَّدٍ فِي الْجِبَاهِ وَصَلِّ عَلٰى عَيْنِ مُحَمَّدٍ فِي الْعُيُوْنِ وَصَلِّ عَلٰى حَاجِبِ مُحَمَّدٍ فِي الْحَوَاجِبِ وَصَلِّ عَلٰى جَفْنِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَجْفَانِ وَصَلِّ عَلٰى اَنْفِ مُحَمَّدٍ فِي الْاُنُوْفِ وَ صَلِّ عَلٰى خَدِّ مُحَمَّدٍ فِي الْخُدُوْدِ وَصَلِّ عَلٰى صُدْغِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَصْدَاغِ وَصَلِّ عَلٰى اُذُنِ مُحَمَّدٍ فِي الْاٰذَانِ وَصَلِّ عَلٰى فَمِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَفْوَاهِ وَصَلِّ عَلٰى شَفَةِ مُحَمَّدٍ فِي الشِّفَاهِ وَصَلِّ عَلٰى سِنِّ مُحَمَّدٍ فِي الْاَسْنَانِ وَصَلِّ عَلٰى لِسَانِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَلْسِنَةِ وَصَلِّ عَلٰى ذَقَنِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَذْقَانِ وَصَلِّ عَلٰى عُنُقِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَعْنَاقِ وَصَلِّ عَلٰى صَدْرِ مُحَمَّدٍ فِي الصُّدُوْرِ وَصَلِّ عَلٰى قَلْبِ مُحَمَّدٍ فِي الْقُلُوْبِ وَصَلِّ عَلٰى يَدِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَيْدِيْ وَصَلِّ عَلٰى كَفِّ مُحَمَّدٍ فِي الْاَكُفِّ وَصَلِّ عَلٰى اِصْبَعِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَصَابِعِ وَ صَلِّ عَلٰى زَنْدِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَزْنَادِ وَصَلِّ عَلٰى ذِرَاعِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَذْرُعِ وَصَلِّ عَلٰى مِرْفَقِ مُحَمَّدٍ فِي الْمَرَافِقِ وَ صَلِّ عَلٰى عَضُدِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَعْضَادِ وَصَلِّ عَلٰى اِبْطِ مُحَمَّدٍ فِي الْاٰبَاطِ وَصَلِّ عَلٰى مَنْكِبِ مُحَمَّدٍ فِي الْمَنَاكِبِ وَ صَلِّ عَلٰى كَتِفِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَكْتَافِ وَصَلِّ عَلٰى تَرْقُوَةِ مُحَمَّدٍ فِي التَّرَاقِيْ وَصَلِّ عَلٰى كَبِدِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَكْبَادِ وَصَلِّ عَلٰى ظَهْرِ مُحَمَّدٍ فِي الظُّهُوْرِ وَصَلِّ عَلٰى فَخِذِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَفْخَاذِ وَصَلِّ عَلٰى رُكْبَةِ مُحَمَّدٍ فِي الرُّكَبِ وَصَلِّ عَلٰى سَاقِ مُحَمَّدٍ فِي السُّوْقِ وَصَلِّ عَلٰى كَعْبِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَكْعُبِ وَصَلِّ عَلٰى عَقِبِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَعْقَابِ وَصَلِّ عَلٰى قَدَمِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَقْدَامِ وَصَلِّ عَلٰى شَعْرِ مُحَمَّدٍ فِي الشُّعُوْرِ وَ صَلِّ عَلٰى لَحْمِ مُحَمَّدٍ فِي اللُّحُوْمِ وَصَلِّ عَلٰى عِرْقِ مُحَمَّدٍ فِي الْعُرُوْقِ وَصَلِّ عَلٰى دَمِ مُحَمَّدٍ فِي الدِّمَآءِ وَصَلِّ عَلٰى عَظْمِ مُحَمَّدٍ فِي الْعِظَامِ وَصَلِّ عَلٰى جِلْدِ مُحَمَّدٍ فِي الْجُلُوْدِ وَصَلِّ عَلٰى لَوْنِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَلْوَانِ وَصَلِّ عَلٰى قَامَةِ مُحَمَّدٍ فِي الْقَامَاتِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّاتِهٖ اَفْضَلَ صَلٰوةٍ وَاَكْمَلَ بَرَكَةٍ وَّاَزْكٰى سَلَامٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ كُلَّمَا ذَكَرَكَ وَذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ وَذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ ۔

www.dawateislami.net

हयातुन्नबी

अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام बिल ख़ुसूस हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं ब हयाते ह़क़ीक़िय्या दुन्यविय्या। क़ुरआने मजीद में जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौत की ख़बर है वोह मौते आ़दी है जिस से मख़्लूक़ात में से किसी को चारह नहीं। इसी आ़दी मौत के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने पैग़म्बरों को हयात बख़्श दी है। अह़ादीसे सह़ीह़ा से अम्बिया व शुहदा के वासिते़ इस ह़यात का दाइमी होना साबित है।

इब्ने तैमिय्या के वक़्त से एक फ़िर्क़ा ऐसा पैदा हो गया है जो कहता है कि अम्बिया भी दूसरे मुर्दा अश्ख़ास की त़रह़ ज़मीन के नीचे मदफ़ून और मुर्दा हैं। इस लिये मदीनए मुनव्वरा में रोज़ा शरीफ़ पर ह़ाज़िर होना और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वसीले से त़लबे ह़ाजात बेकार व बे सूद है। चुनान्चे, इब्ने तैमिय्या का बड़ा शागिर्द इब्नुल क़य्यिम अपनी किताब अ़क़ाइद या'नी क़सीदए नौनिय्या (मत़बूआ़ मिस्र, स. 141) में यूं लिखता है :

من فوقه اطباق ذاك الترب واللبنا ت قد عرضت على الجدران

لو كان حيا فى الضريح حياته قبل الممات بغير فرقان

و ما كان تحت الارض بل من فو قها و الله هذه سنة الرحمان

(**तर्जमा**) ह़ज़रते नबी पर ढेरों मिट्टी और ईंटें हैं, दीवारें बनी हुई हैं, अगर आप क़ब्र शरीफ़ में वैसे ही ज़िन्दा होते जैसे मौत से पहले थे तो ज़मीन के नीचे न होते बल्कि इस के ऊपर होते। वल्लाह आ़दतुल्लाह येही है। (इन्तिहा)[1]

तवस्सुल और ज़ियारते रौज़ए अक़्दस की बह़स आगे आएगी اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی यहां सिर्फ़ ह़याते अम्बियाए किराम बिल ख़ुसूस ह़याते हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सुबूत पेश करना मक़्सूद है।

क़ुरआने करीम में शुहदाए किराम की ह़यात की नस्स मौजूद है। अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام शुहदाए इ़ज़ाम से यक़ीनन अफ़्ज़ल हैं। इन में वस्फ़े नबुव्वत के साथ बिल उ़मूम वस्फ़े शहादत भी पाया जाता है। चुनान्चे, सह़ीह़ बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ात शरीफ़ के वक़्त यूं फ़रमाया :

1 ......القصيدة النونية، فصل فى الكلام فى حياة الانبياء...الخ،ص١٧٨ ـعلميه

www.dawateislami.net

یاعائشة ما ازال اجد الم الطعام الذی اکلت بخیبرفهذا اوان وجدت انقطاع ابهری من ذلك السّم.[1]

ऐ आइशा ! मुझे ख़ैबर के खाने की तक्लीफ़ बराबर रही है और अब मेरी रगे जान[2] इसी ज़हर से मुन्क़तअ़ होती है।

इस से साबित हुवा कि हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नबुव्वत के साथ शहादत का दरजा भी ह़ासिल है। लिहाज़ा आप सय्यिदुल मुर्सलीन होने के साथ सय्यिदुश्शुहदा भी हुवे। पस आप की ह़यात शुहदा की ह़यात से अकमल है बईं हमा[3] आप को मुर्दा कहना कैसी गुस्ताख़ी है ह़ालांकि कुरआने करीम में शुहदा की निस्बत इरशादे बारी तआ़ला है कि इन को मुर्दा न कहो।

अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه वफ़ाउल वफ़ा (जुज़्ए सानी, स. 405) में लिखते हैं कि इस में शक नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़ात के बा'द ज़िन्दा हैं। इसी त़रह़ दीगर अम्बिया भी अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं ऐसी ह़ालत के साथ जो शुहदा (जिन की ह़यात की **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताबे अ़ज़ीज़ में ख़बर दी है) की ह़यात से अकमल है और हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सय्यिदुश्शुहदा हैं और शुहदा के आ'माल आप की मीज़ान में हैं। इन्तिहा[4]

अह़ादीसे सह़ीह़ा से भी ह़याते अम्बिया का सुबूत मिलता है जिन में से चन्द ज़ैल में दर्ज की जाती हैं :

﴿1﴾......عَنْ اَوْسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم اِنَّ مِنْ اَفْضَلِ اَیَّامِکُمْ یَوْمَ الْجُمُعَةِ فِیْهِ خُلِقَ اٰدَمُ وَفِیْهِ قُبِضَ وَفِیْهِ النَّفْخَةُ وَفِیْهِ الصَّعْقَةُ فَاَکْثِرُوْا عَلَیَّ مِنَ الصَّلٰوةِ فِیْهِ فَاِنَّ صَلٰوتَکُمْ مَعْرُوْضَةٌ عَلَیَّ قَالُوْا یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَکَیْفَ تُعْرَضُ صَلٰوتُنَا عَلَیْكَ وَقَدْ اَرِمْتَ قَالَ یَقُوْلُوْنَ بَلِیْتَ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَی الْاَرْضِ اَجْسَادَ الْاَنْبِیَآءِ. رواه ابوداؤد والنسائی وابن ماجه والدارمی والبیهقی فی الدعوات الکبیر.[5]

(مشکوٰۃ،باب الجمعة)

ह़ज़रते औस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, कहा : फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कि तुम्हारे अफ़्ज़ल अय्याम में से जुमुआ़ का दिन है। इस में आदम पैदा किये गए और इसी में क़ब्ज़ किये गए इस में नफ़्ख़ए सानिया और नफ़्ख़ए ऊला है। पस तुम इस दिन मुझ पर दुरूद

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، الحدیث:٤٤٢٨، ج٣، ص١٥٢۔علمیه

2 ......बड़ी रग जो तमाम रगों को ख़ून पहुंचाती है।

3 ......इस के बा वुजूद।

4 ......وفاء الوفاء للسمهودی، ج٢، الجزء الرابع، ص١٣٥٢۔ علمیه

5 ......مشکاة المصابیح، کتاب الصلاة، باب الجمعة، الحدیث:١٣٦١، ج١، ص٢٦٤۔ علمیه

www.dawateislami.net

ज़ियादा भेजो क्यूंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है। सहाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारा दुरूद आप पर किस त़रह़ पेश किया जाएगा ह़ालांकि आप बोसीदा हड्डियां होंगे। (क़ौले रावी) सह़ाबा की मुराद **अरिम्त** से **बलीत** (बोसीदा होंगे) है। आप ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन पर ह़राम कर दिया है कि पैग़म्बरों के जिस्मों को खाए। इसे अबू दावूद व निसाई व इब्ने माजा व दारिमी ने और बैहक़ी ने दा'वतुल कबीर में रिवायत किया है।

इस ह़दीस से साबित है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिस्मों के साथ ज़िन्दा हैं क्यूंकि सह़ाबए किराम ने जब हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह इरशाद सुना कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर अ़र्ज़ किया जाता है[1] तो उन को शुबा हुवा कि आया येह अ़र्ज़ बा'दे वफ़ात शरीफ़ सिर्फ़ रूह़ पर होगा या रूह़ मअ़ल जसद पर। क्यूंकि उन्हों ने ख़याल किया कि जसदे नबी दूसरे अश्ख़ास के जसद की मानिन्द है। पस इस के जवाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमा दिया कि मेरा जसद दूसरे अश्ख़ास के जसद की मानिन्द नहीं क्यूंकि पैग़म्बरों के जिस्म को मिट्टी नहीं खाती। पस वोह समझ गए कि येह अ़र्ज़ रूह़ मअ़ल जसद पर होगा लिहाज़ा ह़याते अम्बिया बा'दे वफ़ात साबित है।

﴿۲﴾...... عن ابی الدرداء قال قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَكْثِرُوا الصَّلٰوةَ عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَاِنَّهٗ مَشْهُوْدٌ تَشْهَدُهُ الْمَلٰئِكَةُ وَاِنَّ اَحَدًا لَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ اِلَّا عُرِضَتْ عَلَيَّ صَلَاتُهٗ حَتّٰى يَفْرُغَ مِنْهَا قَالَ قُلْتُ وَبَعْدَ الْمَوْتِ قَالَ وَبَعْدَ الْمَوْتِ اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ. رواه ابن ماجه.[2]

ह़ज़रते अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझ पर जुमुआ़ के दिन दुरूद ज़ियादा भेजा करो क्यूंकि वोह दिन ह़ाज़िर किया गया है। ह़ाज़िर होते हैं उस में फ़िरिश्ते तह़क़ीक़ कोई मुझ पर दुरूद नहीं भेजता मगर उस का दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है यहां तक कि वोह दुरूद से फ़ारिग़ हो जाए।" कहा अबू दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने : मैं ने अ़र्ज़ किया, क्या मौत के बा'द भी ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन पर ह़राम कर दिया कि पैग़म्बरों के जिस्मों को खाए। पस **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं रिज़्क़ दिये जाते हैं। इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है।

---

1 ......पेश किया जाता है।

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب الصلاة، باب الجمعة، الحديث:١٣٦٦، ج١، ص٢٦٥ ـ علميه

www.dawateislami.net

इस ह़दीस से अम्बिया की ह़यात ब ह़याते ह़क़ीक़िय्या दुन्यविय्या बा'दल वफ़ात साबित है इस में حـی के साथ يـرزق बत़ौरे ताकीद है क्यूंकि रिज़्क़ की ह़ाजत जिस्म को होती है।

अ़ल्लामा सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "शर्हुस्सुदूर" में नक़्ल करते हैं :

﴿٣﴾...... و اخرج ابو يعلى و البيهقى و ابن مندة عن انس اَنَّ النَّبِىَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ.[1]

और अबू या'ला और बैहक़ी और इब्ने मन्दा ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत किया है कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अम्बिया ज़िन्दा हैं अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं।

अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने वफ़ाउल वफ़ा में इस ह़दीस को नक़्ल कर के लिखा है कि रिवायते अबू या'ला के रावी सिक़ा हैं और बैहक़ी ने इसे मअ़्त्तसह़ीह़ नक़्ल किया है। इस के शवाहिद से सह़ीह़ मुस्लिम में रिवायते ह़ज़रते अनस है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं (शबे मे'राज में) मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर गुज़रा वोह अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ते थे। (इन्तिहा) इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज में बैतुल मुक़द्दस में अम्बियाए किराम की जमाअ़त कराई और आस्मानों में इन को देखा।[2] मस्अलए ह़याते अम्बिया की ताईद सह़ीह़ मुस्लिम की रिवायत इब्ने अ़ब्बास से भी होती है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वादिये अज़्रक़[3] से गुज़रे। फ़रमाया : येह कौन सी वादी है? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : वादिये अज़्रक़ है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं गोया मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को देख रहा हूं कि घाटी से उतरते हुवे लब्बैक कह रहे हैं। फिर वादिये हरशा पर पहुंच कर हुज़ूर ने फ़रमाया : येह कौन सी घाटी है? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : येह वादिये हरशा है। हुज़ूर ने फ़रमाया : गोया मैं यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام को सुर्ख़ बालों वाली ऊंटनी पर देखता हूं कि सौफ़ का जुब्बा पहने हुवे हैं। मुहार[4] खजूर की छाल की रस्सी की है।[5]

---

1 ......شرح الصدور بشرح حال الموتى والقبور،باب احوال الموتى فى قبورهم...الخ،ص١٨٧(مركز اهل سنت بركات رضا)۔علميه

2 ......وفاء الوفاء للسمهودى، ج٢،الجزء الرابع،ص١٣٥٢۔ علميه

3 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में "अरज़क़" लिखा है जो कि किताबत की ग़लत़ी मा'लूम होती है क्यूंकि मुस्लिम शरीफ़ व दीगर कुतुब में "अज़्रक़' है लिहाज़ा हम ने येही लिखा है। **इल्मिय्या**

4 ......नकील या'नी ऊंट के नाक की रस्सी।

5 ......صحيح مسلم،كتاب الايمان،باب الاسراء برسول الله...الخ،الحديث:١٦٦،ص١٠٣۔ علميه

www.dawateislami.net

औलियाए किराम में बहुत सी मिसालें ऐसे बुजुर्गों की मिलती हैं जो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हालते बेदारी में देखा करते थे। ब ख़ौफ़े त़वालत यहां उन का ह़ाल दर्ज नहीं करते। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने रिसालए तनवीरुल मलक में वोह अह़ादीस व अक़्वाले सुलह़ा नक़्ल करते हैं जो हालते ख़्वाब और हालते बेदारी हर दो में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूयत के इमकान पर दलालत करते हैं। बा'दे अज़ां यूं फ़रमाते हैं कि इन तमाम अह़ादीस व अक़्वाल से साबित हो गया कि हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने जिस्मे अक़्दस और रूह़ शरीफ़ के साथ ज़िन्दा हैं और वोह तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं जहां चाहते हैं ज़मीनो आस्मान में और उसी हैअते साबिक़ा शरीफ़ा पर हैं[1] कुछ तब्दीली उस में नहीं हुई। आंखों से ऐसे ही ग़ाइब हैं जैसे फ़िरिश्ते नज़र नहीं आते हालांकि फ़िरिश्ते ज़िन्दा हैं और उन के अजसाम भी हैं। जब **अल्लाह** तआ़ला इरादा करता है किसी उम्मती पर करामत और एह़सान का तो ह़िजाब उठा देता है और वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत अस्ली सूरत में कर लेता है। इस में कोई मानेअ़ नहीं है और सिर्फ़ मिसाल ही के देखने पर मुन्ह़सिर कर देने की कोई वज्ह नहीं। इन्तिहा। इमाम बैहक़ी ने ह़याते अम्बिया पर एक रिसाला लिखा है जो चाहे उसे मुत़ालआ़ करे।

ख़ुलासए कलाम येह कि सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी जिस्मे अत़्हर के साथ ज़िन्दा हैं। ब ह़याते ह़क़ीक़िय्या दुन्यविय्या और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तसर्रुफ़ात ब दस्तूर जारी हैं। इसी वासित़े आप की उम्मत में ता क़ियामत क़ुत़ुब, ग़ौस, अब्दाल व अवताद होते रहेंगे। ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी قُدِّسَ سِرُّهٗ ने रिसाला[2] ''سلوك اقرب السبل بالتوجه الى سيد الر سل صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم'' में जो ख़ानिख़ानां की त़रफ़ लिखा है यूं फ़रमाया है :

---

(1)......या'नी ह़याते ज़ाहिरी पर हैं।

(2)......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इस रिसाले का नाम '' سلوك اقرب السبل الى سيد الر سل '' लिखा है लेकिन ''अख़्बारुल अख़्यार'' में इस का नाम '' سلوك اقرب السبل بالتوجه الى سيد الر سل '' है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने इस का नाम ''अख़्बारुल अख़्यार'' के मुत़ाबिक़ लिखा है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعلم **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

"وباچندیں[1] اختلافات وکثرت مذاہب کہ درعلماء امت است یک کس را دریں مسئلہ خلافے نیست کہ آنحضرت صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم بحقیقت حیات بے شائبہ مجاز وتوہم تاویل دائم وباقی است۔ وبراعمال امت حاضروناظر ومرطالبان حقیقت راومتوجہان آنحضرت رامفیض ومربی است۔"[2]

उ़लमाए उम्मत में इस क़दर इख़्तिलाफ़ात और कसरते मज़ाहिब है। बईं हमा किसी एक को इस मस्अले में ज़रा भी इख़्तिलाफ़ नहीं कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिला शाइबाए मजाज़ व तवह्हुमे तावीले ह़याते ह़क़ीक़िय्या के साथ दाइम व बाक़ी हैं और उम्मत के आ'माल पर ह़ाज़िरो नाज़िर हैं और त़ालिबाने ह़क़ीक़त को और मुतवस्सिलाने बारगाहे नबुव्वत को फ़ैज़ पहुंचाने वाले और इन की तर्बिय्यत फ़रमाने वाले हैं।

ह़ज़रते शैख़ ने बिल्कुल दुरुस्त लिखा है क्यूंकि फ़ितना इब्ने तैमिय्या इस तह़रीर से सेंकड़ों साल पहले फ़रू हो चुका था और शैत़ान का सींग अभी नज्द से न निकला था जिस ने ता'लीमे तैमी की सोती बला को जगाया और बात बात पर मुसलमानों को मुशरिक बताया।

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اِسْمُهُ عَلٰى بَابِ النَّارِ فِيْمَنْ يَدْخُلُهَا या'नी जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा। (حلیۃ الاولیاء، الحدیث:۱۰۵۹۰، ج۷، ص۲۹۹)

1 ......اخبار الاخیار مجتبائی، حاشیہ ص ۱۵۵۔

2 ......مکتوبات شیخ عبدالحق محدث دهلوی علی هامش اخبار الاخیار، ص ۱۵۵۔ علمیه

www.dawateislami.net

छटा बाब

आं ह़ज़रत صلی اللہ علیہ وسلم के ख़ुल्के़ अ़ज़ीम का बयान

अफ़रादे इन्सान में से अम्बियाए किराम صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को मकारिमे अख़्लाक़[1] की ज़ियादा ज़रूरत है क्यूंकि उन का काम तब्लीग़ व तज़्किय्या[2] है। इसी वासित़े ब इनायते इलाही उन्हें अव्वले ख़ल्क़त व फ़ित़रत[3] ही में मह़ासिने अख़्लाक़ ह़ासिल थे जिन का ज़ुहूर ह़स्बे मौक़अ़ उन की उ़म्र शरीफ़ में होता रहा मगर दीगर फ़ज़ाइल की त़रह़ इस कमाल में भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुमताज़ हैं। चुनान्चे,

अल्लाह तआ़ला ने ख़ुल्के़ अ़ज़ीम को आप की ज़ात शरीफ़ में ह़सर फ़रमाया :

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿۴﴾ (سورۂ قلم) *और तह़क़ीक़ तू बड़े ख़ुल्क़ पर पैदा हुवा है।*[4]

और ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ (मुअत्ता इमाम मालिक) मैं मह़ासिने अख़्लाक़ की तक्मील के लिये भेजा गया हूं।[5]

अम्बियाए साबिक़ीन عَلَيْهِمُ السَّلَام में से हर एक ह़ुस्ने अख़्लाक़ की एक नौअ़ से मुख़्तस थे मगर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस ह़ुस्ने अख़्लाक़ के तमाम अन्वाअ़ की जामेअ़ थी। **अल्लाह** तआ़ला ने आप को तमाम अम्बियाए साबिक़ीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوات की सीरत के इत्तिबाअ़ का ह़ुक्म दिया :

فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ (انعام، ع ۱۰) *पस तू उन की रविश की पैरवी कर।*[6]

लिहाज़ा ख़िसालो कमाल व सिफ़ाते शरफ़ो फ़ज़ाइल जो उन में मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर पाए जाते थे वोह तमाम आप की ज़ात शरीफ़ में जम्अ़ थे। चुनान्चे, ह़िल्म व सख़ावते इब्राहीम,

---

1......उ़म्दा अख़्लाक़। 2......पाक करना। 3......इब्तिदाए पैदाइश।

4......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है। (پ۲۹،القلم:٤)

5 ......نوادر الاصول للحكيم الترمذى،الاصل الثالث و الستون و المائتان،الحديث:١٤٢٥،ج١،ص١١٠٧۔ علميه

6......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम उन्हीं की राह चलो। (پ۷،الانعام:٩٠)

www.dawateislami.net

सिद्क़े वा'दए इस्माईल, शुक्रे दावूद व सुलैमान, सब्रे अय्यूब, मो'जिज़ाते क़ाहिरा मूसा, मुनाजाते ज़करिय्या, तज़र्रुए यह्या, दमे ईसा वग़ैरा सब आप में मौजूद थे। (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوتُ وَالتَّسْلِیْمَات)

آنچہ بنازند زاں دلبراں جملہ ترا ہست وزیادت براں

हज़रते सा'द बिन हिशाम बिन आ़मिर ने जब हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ुल्क़ की बाबत दरयाफ़्त किया तो हज़रते सिद्दीक़ा ने जवाब में फ़रमाया : क्या तू क़ुरआन नहीं पढ़ता ? हज़रते सा'द ने जवाब दिया कि हां। येह सुन कर हज़रते सिद्दीक़ा ने फ़रमाया कि "नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़(1) क़ुरआन था।(2) कुतुबे साबिक़ए इल्हामिय्या(3) में जो आदाबो फ़ज़ाइल व अवसाफ़े ह़मीदा मज़्कूर थे क़ुरआने मजीद उन सब का जामेअ़ है। इरशादे सिद्दीक़ा का मत़लब येह है कि क़ुरआने मजीद में जिस क़दर मह़ामिदे अख़्लाक़ मज़्कूर हैं वोह सब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस में पाए जाते थे। ग़रज़ दीगर कमालात की त़रह़ मह़ासिने अख़्लाक़ में भी आप का मर्तबा दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْهِمُ التَّسْلِیْمَات से बढ़ा हुवा है। साहि़बे क़सीदए बुर्दा शरीफ़ फ़रमाते हैं :

فَاقَ النَّبِیّٖنَ فِیْ خَلْقٍ وَّ فِیْ خُلُقٍ وَلَمْ یُدَانُوْهُ فِیْ عِلْمٍ وَّ لَا کَرَمٖ(4)

ले गया फ़ौक़ अम्बिया पर ख़ल्क़ में और ख़ुल्क़ में, किस में था इस का इल्म और किस में इस का सा करम !

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई और नया नबी न होगा। इस लिये आप के अख़्लाक़ो आ़दात ब त़रीक़े इसनाद निहायत सिह़्ह़त के साथ मह़फ़ूज़ हैं ताकि क़ियामत तक हर ज़माने में उन का इक़्तिदा किया जाए और उन ही को दस्तूरुल अ़मल बनाया जाए। इस मुख़्तसर में तफ़्सील की गुन्जाइश नहीं इस लिये ज़ैल में चन्द जुज़इय्यात पेश की जाती हैं। واللّٰہ الموفق والمعین

---

1 ......صحیح مسلم، باب صلوۃ اللیل۔

2 ......صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرین وقصرها، باب جامع صلاة اللیل...الخ، الحدیث:٧٤٦، ص٣٧٤۔ علمیه

3 ......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाज़िल कर्दा किताबें।

4 ......القصیدتان، البردة للبوصیری، الفصل الثالث فی مدح رسول اللّٰہ، ص١٢ (ضیاء القرآن)

www.dawateislami.net

सब्रो हिल्म व अ़फ़्व

नबुव्वत का बोझ इन अवसाफ़[1] के बिग़ैर बरदाश्त नहीं हो सकता। कुरआने करीम में कई जगह इन अवसाफ़ का ज़िक्र आया है।

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۱۳
(مائدہ، ع۳)

पस मुआ़फ़ कर उन से और दरगुज़र कर बेशक अल्लाह नेकी करने वालों को चाहता है।[2]

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰي مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓي اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ
(انعام، ع۴)

और अलबत्ता बहुत रसूल तुझ से पहले झुटलाए गए। पस वोह झुटलाने और ईज़ा पर सब्र करते रहे यहां तक कि उन को हमारी मदद पहुंची।[3]

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝۱۹۹
(اعراف، اخیر رکوع)

ख़ू पकड़ मुआ़फ़ करना और कहा कर नेक काम को और किनारा कर जाहिलों से।[4]

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ
(احقاف، اخیر رکوع)

पस तू सब्र कर जैसे सब्र करते रहे ऊलुल अ़ज़्म रसूल और शताबी न कर उन के वासिते।[5]

1....मुसीबत व ईज़ा के वक़्त अपने आप को रोकना और मुतअस्सिर न होना सब्र कहलाता है। अपनी त़बीअ़त को गुस्से से ज़ब्त़ करने का नाम हिल्म है। ख़त़ा पर मुआख़ज़ा न करने को अ़फ़्व कहते हैं। 12 मिन्ह

2....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन्हें मुआ़फ़ कर दो और उन से दर गुज़र करो बेशक एह़सान वाले अल्लाह को मह़बूब हैं। (پ۶، المائدۃ:۱۳)

3....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम से पहले रसूल झुटलाए गए तो उन्हों ने सब्र किया उस झुटलाने और ईज़ाएं पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई। (پ۷، الانعام:۳۴)

4....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो। (پ۹، الاعراف:۱۹۹)

5....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम सब्र करो जैसा हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया और उन के लिये जल्दी न करो। (پ۲۶، الاحقاف:۳۵)

www.dawateislami.net

اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ لَاَوَّاهٌ حَلِیْمٌ ﴿۱۱۴﴾ (توبہ،ع۱۴)

तह़क़ीक़ इब्राहीम था अलबत्ता दर्दमन्द ह़िल्म वाला ।(1)

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ात के ह़क़ के लिये कभी इन्तिक़ाम न लिया, हां जब आप किसी हुरमतिल्लाह की बे हुरमती देखते तो **अल्लाह** के वासिते़ उस का इन्तिक़ाम लेते ।(2)

नबुव्वत के दसवें साल जैसा कि पहले आ चुका है आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़बीलए सक़ीफ़ को दा'वते इस्लाम देने के लिये ता़इफ़ तशरीफ़ ले गए मगर बजाए रू ब राह(3) होने के उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस क़दर अज़िय्यत दी कि ना'लैने मुबारक ख़ून आलूदा हो गए। जब आप वहां से वापस हुवे तो रास्ते में पहाड़ों के फ़िरिश्ते ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ की : या मुह़म्मद ! आप जो चाहें हुक्म दें अगर इजाज़त हो तो अख़्-शबैन(4) को उन पर उलट दूं। इस के जवाब में आप ने फ़रमाया कि मैं येह नहीं चाहता कि वोह हलाक हो जाएं बल्कि मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** तआ़ला उन की पुश्तों से ऐसे बन्दे पैदा करेगा जो सिर्फ़ ख़ुदा की इ़बादत करेंगे और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएंगे ।(5)

हिजरत से पहले मक्का में कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को इस क़दर अज़िय्यत दी कि उन का पैमानए सब्र लबरेज़ हो गया। चुनान्चे, ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत बयान करते हैं कि हमें मुशरिकीन से शिद्दत व सख़्ती पहुंची। मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। आप सरे मुबारक के नीचे चादर रख कर का'बे के साए में लेटे हुवे थे। मैं ने अ़र्ज़ किया : आप मुशरिकीन पर बद दुआ़ क्यूं नहीं करते ? येह सुन कर आप उठ बैठे, चेहरए मुबारक सुर्ख़ हो गया था। फ़रमाया : तुम से पहले जो लोग गुज़रे हैं उन पर लोहे की कंघियां चलाई जातीं जिस से गोश्त पोस्त सब अ़लाह़िदा हो जाता और उन के सर पर आरे रखे जाते और चीर कर दो टुकड़े कर दिये जाते। मगर येह अज़िय्यतें उन को दीन से बरगश्ता(6) न कर सकती थीं। **अल्लाह** तआ़ला

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक इब्राहीम ज़रूर बहुत आहें करने वाला मुतह़म्मिल है। (پ۱۱،التوبة:۱۱٤)

2 ...... صحیح بخاری، باب صفۃ النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم۔......(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، الحدیث:۳٥٦۰، ج۲، ص٤٨٩۔ علمیه)

3 ......आमादा ।   4 ......ता़इफ़ के दो मज़बूत़ और ऊंचे पहाड़ ।

5 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، باب البعث وبدء الوحی۔......(مشکاة المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب المبعث و بدء الوحی، الحدیث:٥٨٤٨، ج۲، ص۳۷۱۔ علمیه)

6 ......मुख़ालिफ़ ।

www.dawateislami.net

दीने इस्लाम को कमाल तक पहुंचाएगा यहां तक कि एक सुवार सन्आ़ से ह़ज़्र मौत तक सफ़र करेगा और उसे ख़ुदा के सिवा किसी का डर न होगा।(1)

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए बद्र (रमज़ान सिने 2 हिजरी) से वापस तशरीफ़ लाए तो रास्ते में मक़ामे सफ़रा में आप के हुक्म से ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ने नज़्र बिन ह़ारिस बिन अ़ल्क़मा बिन कलदह बिन अ़ब्दे मनाफ़ बिन अ़ब्दुद्दार बिन कुसय्य को क़त्ल कर डाला। नज़्रे मज़्कूर उन उमराए कुरैश में से था जिन का शग़्ल आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी और इस्लाम को मिटाने की कोशिश करना था। इसी नज़्र की बेटी कुतैला ने जो बा'द में इस्लाम लाई अपने बाप का मरसिया लिखा जिस के अख़ीर में येह शे'र हैं :

مُحَمَّـد وَلَاَنْـتَ اِبْنُ نَجِيْبَة   مِنْ قَومِها وَ الفَحْل فَحلٌ مُعرِقُ

ऐ मुह़म्मद ! बेशक आप उस मां के बेटे हैं जो अपनी क़ौम में

शरीफ़ है और आप शरीफ़ अस्ल वाले मर्द हैं।

ما كان ضَرَّكَ لو مَنَنت و رُبّما   مَنَّ الفَتٰى و هو المَغِيظُ المُحْنَق

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कुछ न बिगड़ता था अगर आप एह़सान करते और बा'ज़ वक़्त जवान एह़सान करता है, ह़ालांकि वोह ग़ज़बनाक और निहायत ख़श्मनाक(2) होता है।

وَالنّضْراَقرَبُ مَنْ اَسَرت قَرابةً   وَ اَحَقُّ اِن كـان عِتْق يُعْتَق

और नज़्र आप के तमाम क़ैदियों में क़राबत में सब से ज़ियादा क़रीब था और आज़ादी का ज़ियादा मुस्तह़िक़ था अगर ऐसी आज़ादी पाई जाए कि जिस से आज़ाद किया जाए।

जब येह शे'र हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में पहुंचे तो इन को पढ़ कर आप इतना रोए कि रीशे मुबारक आंसूओं से तर हो गई।(3) और फ़रमाया कि अगर येह अश्आ़र नज़्र के क़त्ल से पहले मेरे पास पहुंच जाते तो मैं ज़रूर उसे कुतैला के ह़वाले कर देता।(4)

---

1 ......صحیح بخاری، باب مالقی النبی صلی اللہ علیہ وسلم واصحابہ من المشرکین بمکۃ۔......(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مالقی النبی و اصحابه...الخ، الحديث:٣٨٥٢، ج٢، ص٥٧٣۔ علميه)

2 ......गुस्से में भरा हुवा।

3 ......استیعاب لابن عبدالبر، ترجمہ قتیلہ بنت نضر۔

4 ......الاستيعاب فی معرفة الاصحاب، ٣٥٠٤_قتيلة بنت النضر بن الحارث، ج٤، ص٤٥٨۔ علميه

www.dawateislami.net

जंगे बद्र के कुछ दिन बा'द एक रोज़ उ़मैर बिन वह्ब बिन ख़लफ़ क़रशी जुमही़ और सफ़्वान बिन उमय्या बिन ख़लफ़ क़रशी जुमही ख़ानए का'बा में ह़तीम में बैठे हुवे थे। उ़मैरे मज़्कूर शयातीने कुरैश में से था और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को अज़िय्यत दिया करता था। इस का बेटा वह्ब बिन उ़मैर असीराने जंग में था। उ़मैर व सफ़्वान के दरमियान यूं गुफ़्त्गू हुई :

उ़मैर : बद्र में हमारे साथियों ने मुसलमानों के हाथों से क्या क्या मुसीबतें उठाईं ! ज़ालिमों ने किस बे रह़्मी से उन को गढ़े में फेंक दिया।

सफ़्वान : **अल्लाह** की क़सम ! उन के बा'द अब ज़िन्दगी का लुत्फ़ न रहा।

उ़मैर : **अल्लाह** की क़सम ! तू ने सच कहा। **अल्लाह** की क़सम ! अगर मुझ पर क़र्ज़ न होता जिसे मैं अदा नहीं कर सकता और अ़याल[1] न होता जिस के तलफ़ हो जाने का अन्देशा है तो मैं सुवार हो कर मुह़म्मद को क़त्ल करने जाता क्यूंकि अब तो एक बहाना भी है कि मेरा बेटा उन के हाथ में गिरिफ़्तार है।

सफ़्वान : आप का क़र्ज़ मैं अदा कर देता हूं। आप का अ़याल मेरे अ़याल के साथ रहेगा। मैं आप के बाल बच्चों का मुतकफ़्फ़िल हूं[2] जब तक वोह ज़िन्दा हैं।

उ़मैर : बस मेरे और आप के दरमियान।

सफ़्वान : ब सरो चश्म। (उ़मैर की रवानगी के बा'द लोगों से) तुम शाद हो कि चन्द रोज़ में तुम्हारे पास एक वाक़िए की ख़बर आएगी जिस से तुम जंगे बद्र की सब मुसीबतें भूल जाओगे।

(उ़मैर ज़ह्र में बुझी हुई तेज़ तल्वार ले कर मदीने में आता है। उस वक़्त ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ मुसलमानों की एक जमाअ़त में बैठे हुवे जंगे बद्र में मुसलमानों पर ख़ुदा की इनायात का ज़िक्र कर रहे हैं। उ़मैर तल्वार आड़े लटकाए हुवे अपनी ऊंटनी को मस्जिद के दरवाज़े में बिठा देता है।)

उ़मर फ़ारूक़ : (उ़मैर को देख कर) येह कुत्ता दुश्मने ख़ुदा उ़मैर किसी शरारत के लिये आया है।

1......ख़ान्दान।

2......या'नी उन की कफ़ालत मेरे ज़िम्मे है।

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** इसे मेरे पास लाओ। (उ़मैर से) आगे आओ।

उ़मैर : आप की सुब्ह़ ब ख़ैर हो।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** उ़मैर ! तू ने जाहिलिय्यत का तह़िय्या[1] कहा मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें तेरे तह़िय्ये से बेहतर अ़त़ा फ़रमाया है और वोह सलाम है जो अहले बिहिश्त का तह़िय्या है।

उ़मैर : या मुह़म्मद ! **अल्लाह** की क़सम ! येह तह़िय्या आप को थोड़े दिनों से मिला है।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** उ़मैर ! क्यूं कर आना हुवा ?

उ़मैर : अपने बेटे के लिये जो आप के पास असीराने जंग में है।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** फिर गले में तल्वार आड़े क्यूं लटकाई है।

उ़मैर : ख़ुदा इन तल्वारों का बुरा करे इन्हों ने हमें कुछ फ़ाइदा न दिया।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** सच बताओ किस लिये आए हो ?

उ़मैर : फ़क़त़ अपने बेटे के लिये।

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **:** नहीं बल्कि तू और सफ़्वान दोनों ह़त़ीम में बैठे हुवे थे तू ने मक़्तूलीने बद्र का ज़िक्र किया जो गढ़े में फेंके गए फिर तू ने कहा कि अगर मुझ पर क़र्ज़ और बारे अ़याल न होता मैं मुह़म्मद को क़त्ल करने निकलता। येह सुन कर सफ़्वान ने बारे क़र्ज़ व अ़याल अपने ज़िम्मे लिया। बदीं ग़रज़ कि तू मुझे क़त्ल कर दे मगर **अल्लाह** तेरे और इस ग़रज़ के दरमियान ह़ाइल है।

उ़मैर : मैं गवाही देता हूं कि आप ख़ुदा के रसूल हैं। या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हम उस आस्मानी वह़्य को जो आप पर नाज़िल हुई थी झुटला दिया करते थे। आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने जो बात बतलाई वोह मेरे और सफ़्वान के सिवा किसी को मा'लूम न थी। **अल्लाह** की क़सम ! मैं ख़ूब जानता हूं कि ख़ुदा के सिवा आप को किसी ने नहीं बताई। ह़म्द है **अल्लाह** की जिस ने मुझे इस्लाम की तौफ़ीक़ बख़्शी اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) (अपने अस्ह़ाब से) **:** तुम अपने भाई उ़मैर को मसाइले दीनी सिखाओ और क़ुरआन पढ़ाओ और इस के बेटे को भी छोड़ दो।[2]

---

1 ......मुलाक़ात के वक़्त कहा जाने वाला कलिमा।

2 ......سیرت ابن ہشام۔......(السيرة النبوية لابن هشام، غزوة بدر الكبرى، اسلام عمير بن وهب، ص٢٧٤ ملخصاً۔علميه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ग़ज़्वए अन्मार (रबीउ़ल अव्वल सिने 3 हिजरी) में हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे। आप की आमद की ख़बर सुन कर आ'राब पहाड़ों की चोटियों पर चले गए। ग़त़फ़ान ने दो'सूर बिन ह़ारिस को जो उन का सरदार था कहा कि मुह़म्मद इस वक़्त अपने अस्ह़ाब से अ़लाह़िदा है तुम्हें ऐसा मौक़अ़ न मिलेगा। दो'सूर तेज़ तल्वार ले कर उतर आया। क्या देखता है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लेटे हुवे हैं वोह तल्वार खींच कर आप के सर पर आ खड़ा हुवा आप बेदार हुवे तो कहने लगा : "तुझ को मुझ से कौन बचाएगा ?" आप ने फ़रमाया : "**अल्लाह**।" ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे हटा दिया और वोह गिर पड़ा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तल्वार ले कर कहा : "तुझ को मुझ से कौन बचाएगा ?" वोह बोला : कोई नहीं। ग़रज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से कुछ तअ़र्रुज़ न किया और वोह ईमान ले आया।[(1)]

ग़ज़्वए उह़ुद (शव्वाल सिने 3 हिजरी) में कुफ़्फ़ार ने आप का दांत मुबारक शहीद कर दिया और सर और पेशानी मुबारक भी ज़ख़्मी कर दी। इस ह़ालत में आप की ज़बाने मुबारक पर येह अल्फ़ाज़[(2)] थे :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ

ख़ुदाया ! मेरी क़ौम का येह गुनाह मुआ़फ़ कर दे क्यूंकि वोह नहीं जानते।[(3)]

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ग़ज़्वए नज्द (ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ जुमादल ऊला सिने 4 हिजरी) में हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे। वापस आते हुवे एक घने जंगल में आप को दोपहर हो गई। आप एक दरख़्त के साए में उतरे और अपनी तल्वार उस दरख़्त से लटका दी और आप के अस्ह़ाब एक एक कर के दरख़्तों के साए में उतर पड़े। इसी असना में आप ने हमें आवाज़ दी, हम ह़ाज़िर हुवे तो क्या देखते हैं कि एक बद्दू आप के सामने बैठा है। आप ने फ़रमाया कि मैं सो रहा था इस ने आ कर मेरी तल्वार खींच ली,

---

1 ......اصابہ بحوالہ واقدی، ترجمہ دعثور بن حارث غطفانی۔......(الاصابة فی تمييز الصحابة، ۲٤۰۱۔دعثور بن الحارث الغطفانی، ج۲،ص۳۲٤۔علمیه)

2 ......مواہب لدنیہ وشفا شریف۔

3 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، غزوة اُحد، ج۲، ص۴۲۸۔۴۲۹ والشفاء بتعريف حقوق المصطفی، الباب الثانی فی تكميل محاسنه، فصل واما الحلم، الجزء الاول، ص۱۰٦۔علمیه

www.dawateislami.net

मैं बेदार हुवा तो येह तल्वार खींचे मेरे सर पर खड़ा था। कहने लगा : "तुझ को मुझ से कौन बचाएगा ?" मैं ने कहा : "अल्लाह। येह सुन कर इस ने तल्वार नियाम में कर ली। आप ने उस को कुछ सज़ा न दी।(1) उस आ'राबी का नाम ग़ौरस बिन ह़ारिस था।

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रावी हैं कि एक ग़ज़्वे (ग़ज़्वए मुरैसीअ़ शा'बान सिने 5 हिजरी) में हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थे। एक मुहाजिर ने एक अन्सारी के थप्पड़ मारा, अन्सारी ने अन्सार और मुहाजिर ने मुहाजिरीन को मदद के लिये पुकारा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुना तो पूछा कि येह क्या मुआ़मला है ? जब सारा माजरा अ़र्ज़ किया गया तो फ़रमाया कि येह दा'वए जाहिलिय्यत अच्छा नहीं। इस त़रह़ रफ़्ए फ़साद हो गया।(2) रासुल मुनाफ़िक़ीन(3) अ़ब्दुल्लाह बिन उबय ख़ज़रजी ने सुना तो कहने लगा कि "अगर हम इस सफ़र से मदीने में पहुंच गए तो जिस का इस शहर में ज़ोर है वोह बे क़दर शख़्स को निकाल देगा।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह ख़बर पहुंची तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! आप मुझे इजाज़त दें कि इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ा दूं। मगर ह़ुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इसे जाने दो क्यूंकि लोग येही कहेंगे कि मुह़म्मद अपने अस्ह़ाब को क़त्ल करता है।(4) जाए ग़ौर है कि आप का येह सुलूक उस शख़्स के साथ है जो उ़म्र भर मुनाफ़िक़ रहा जिस ने आप को अज़ल बताया जो जंगे उहुद में ऐन मौक़अ़ पर तीन सो की जमइय्यत ले कर रास्ते में से वापस आ गया और हमेशा आप की मुख़ालफ़त व तौहीन में सरगर्म रहा।

जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए मुरैसीअ़ से वापस हुवे तो रास्ते में वाक़िअ़ए इफ़्क पेश आया जिस का बानी येही रासुल मुनाफ़िक़ीन था। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस का इ़ल्म था मगर मुआ़मला घर का था इस लिये फ़ैसला ख़ुदा पर छोड़ा ताकि मुनाफ़िक़ीन को चूनो चरा की गुन्जाइश न रहे। चुनान्चे, अल्लाह तआ़ला ने इस वाक़िए की तकज़ीब अपने कलामे पाक में कर दी। बईं हमा जब येह मुनाफ़िक़ मरा तो आप को नमाज़े जनाज़ा के लिये

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الجہاد و کتاب المغازی۔......(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة ذات الرقاع، الحديث: ٤١٣٥، ج٣، ص٦٠ وصحيح البخارى، كتاب الجهاد والسير، باب من علق سيفه...الخ، الحديث: ٢٩١٠، ج٢، ص٢٨٤ ـ علميه)

2 ......फ़साद ख़त्म हो गया। 3 ......मुनाफ़िक़ों का सरदार।

4 ......صحیح بخاری، کتاب التفسیر، سورۂ اذا جاءک المنافقون۔......(صحيح البخارى، كتاب التفسير، باب قوله: سواء عليهم...الخ، الحديث: ٤٩٠٥، ج٣، ص٣٥٥ ـ علميه)

www.dawateislami.net

बुलाया गया। जब आप उस पर नमाज़ पढ़ने लगे तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप इब्ने उबय पर नमाज़ पढ़ते हैं ? जिस ने फ़ुलां फ़ुलां रोज़ ऐसा ऐसा कहा।" इस पर आप ने मुस्कुरा कर फ़रमाया : उ़मर ! हटो। जब इसरार किया तो फ़रमाया कि इस्तिग़फ़ार व अ़दमे इस्तिग़फ़ार का मुझे इख़्तियार दिया गया है अगर मुझे मा'लूम होता कि सत्तर से ज़ियादा बार इस्तिग़फ़ार से इस की मग़फ़िरत हो सकती है तो मैं वैसा ही करता। जब आप नमाज़े जनाज़ा से फ़ारिग़ हो कर वापस तशरीफ़ लाए तो आयिन्दा के लिये हुक्मे मुमानअ़त नाज़िल हुवा।[1]

फ़ुरात बिन ह़य्यान जो अन्सार में से एक शख़्स का ह़लीफ़ था अबू सुफ़्यान की त़रफ़ से मुसलमानों की जासूसी पर मामूर था। ग़ज़्वए ख़न्दक़ (ज़ी क़ा'दा सिने 5 हिजरी) में वोह जासूसी करता हुवा पकड़ा गया। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के क़त्ल का हुक्म दिया। लोग उस को पकड़ कर ले चले। रास्ते में उस का गुज़र अन्सार के एक ह़ल्क़े पर हुवा तो कहने लगा कि मैं मुसलमान हूं। एक अन्सारी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इत्तिलाअ़ दी कि फ़ुरात कहता है कि मैं मुसलमान हूं। आप ने फ़रमाया कि तुम में से कुछ लोग ऐसे हैं जिन को हम उन के ईमान पर छोड़ते हैं उन में से एक फ़ुरात है। ह़ज़रते फ़ुरात बा'द में सिद्क़ दिल से ईमान लाए और आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को यमामा में एक क़त़्आ़ ज़मीन अ़त़ा फ़रमाई जिस की आमदनी चार हज़ार[2] दो सो थी।[3]

सुमामा बिन उसाल अल यमामी जो अहले यमामा का सरदार था रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़त्ल करना चाहता था। आप ने दुआ़ फ़रमाई थी कि ख़ुदाया ! उस को मेरे क़ाबू में कर दे। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुवारों का एक दस्ता नज्द की त़रफ़ भेजा वोह बनू ह़नीफ़ा में से एक शख़्स सुमामा बिन उसाल को पकड़ लाए और उसे मस्जिद के एक सुतून से बांध दिया। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ निकले तो पूछा :

---

1 ......صحیح بخاری،کتاب الجنائز،باب۔...... (صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب قوله: استغفر لهم او لا تستغفر لهم ...الخ، الحدیث: ٤٦٧١،ج٣، ص٢٣٨ وصحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ما یکره من الصلاة علی المنافقین ...الخ، الحدیث:١٣٦٦،ج١،ص٤٦٠ ـعلمیه)

2 ......ابوداؤد،کتاب الجہاد،باب فی الجاسوس الذمی۔اصابہ،ترجمہ ابن حیان۔

3 ......سنن ابی داود،کتاب الجهاد،باب فی الجاسوس الذمی،الحدیث:٢٦٥٢،ج٣،ص٦٧ والاصابة فی تمییز الصحابة، ٦٩٨٠ـفرات بن حیان،ج٥،ص٢٧٣ ـعلمیه

www.dawateislami.net

सुमामा ! क्या कहते हो ? सुमामा ने कहा : या मुह़म्मद ! अगर आप मुझे क़त्ल करेंगे तो एक ख़ूनी को क़त्ल करेंगे और अगर एह़सान करेंगे तो एक शुक्र गुज़ार पर एह़सान करेंगे अगर आप ज़रे फ़िदया चाहते हैं तो जिस क़दर मांगें दे दूंगा। आप ने येह सुन कर कुछ जवाब न दिया। दूसरे रोज़ भी येही गुफ़्तगू हुई। तीसरे रोज़ आप ने उस का वोही जवाब सुन कर हुक्म दिया कि सुमामा को खोल दो। येह इनायत देख कर उस ने मस्जिद के क़रीब एक दरख़्त की आड़ में ग़ुस्ल किया और मस्जिद में आ कर कलिमए शहादत पढ़ा और कहने लगा : "ऐ मुह़म्मद ! ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ न था अब वोही चेहरा मेरे नज़दीक सब चेहरों से ज़ियादा मह़बूब है। अल्लाह की क़सम ! मेरे नज़दीक कोई दीन आप के दीन से ज़ियादा मबग़ूज़[1] न था अब वोही दीन मेरे नज़दीक सब दीनों से ज़ियादा मह़बूब है। अल्लाह की क़सम ! मेरे नज़दीक कोई शहर आप के शहर से ज़ियादा मबग़ूज़ न था अब वोही शहर मेरे नज़दीक सब शहरों से ज़ियादा मह़बूब है।[2] वफ़ाउल वफ़ा में है कि ह़ज़रते सुमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की गिरिफ़्तारी शुरूए सिने 6 हिजरी में हुई।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत[3] करते हैं कि अहले मक्का में से अस्सी मर्द कोहे तन्ईम[4] से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आ पड़े। वोह हथयार लगाए हुवे थे और चाहते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को ग़ाफ़िल पाएं। आप ने उन को लड़ाई के बिग़ैर पकड़ लिया और ज़िन्दा रखा। एक रिवायत में है कि उन को छोड़ दिया। पस अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

وَهُوَ الَّذِیْ كَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ وَ اَیْدِیَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ (فتح، ۲٤)

और ख़ुदा वोह है जिस ने मक्का के नवाह़ में उन के हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उन से बाज़ रखा।[5]

येह[6] वाक़िआ़ क़ज़्या हुदैबिय्या (ज़ी क़ा'दा सिने 6 हिजरी) में हुवा था।

---

1 ......ना पसन्दीदा।

2 ......صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب وفد بنی حنیفہ......(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب وفد بنی حنیفة...الخ، الحدیث: ٤٣٧٢، ج٣، ص ١٣١ ـ علمیه)

3 ......مشکوۃ بحوالہ صحیح مسلم، کتاب الجہاد، باب حکم الاسراء۔

4 ......मक्कए मुशर्रफ़ा से तीन मील के फ़ासिले पर एक मश्हूर मक़ाम है जहां से उ़मरह बजा लाते हैं। 12 मिन्ह

5 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोही है जिस ने इन के हाथ तुम से रोक दिये और तुम्हारे हाथ इन से रोक दिये वादिये मक्का में। (پ٢٦، الفتح:٢٤) **इल्मिय्या**

6 ......مشکاۃ المصابیح، کتاب الجہاد، باب حکم الاسراء، الحدیث: ٣٩٦٦، ج٢، ص ٥٣ ـ علمیه

www.dawateislami.net

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए ख़ैबर (मुह़र्रम सिने 7 हिजरी) से वापस तशरीफ़ लाए तो एक रोज़ सलाम बिन मिशकम यहूदी की ज़ौजा ज़ैनब बिन्ते ह़ारिस ने बकरी का गोश्त भून कर ज़हर आलूदा कर के आप की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या भेजा जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और आप के चन्द अस्ह़ाब ने खाया। बा वुजूद ए'तिराफ़ के आप ने उस यहूदिय्या को अपनी त़रफ़ से मुआ़फ़ कर दिया मगर जब इस के सबब से एक सह़ाबी ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तो क़िसास में उस को क़त्ल कर दिया गया।(1) जैसा कि इस किताब में पहले बयान हो चुका है। उसी साल माहे मुह़र्रम ही(2) में लबीद बिन आ'सम यहूदी मुनाफ़िक़ ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जादू कर दिया मा'लूम हो जाने पर आप ने उस से भी कुछ तअ़र्रुज़ न फ़रमाया।(3)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मेरी मां मुशरिका थीं। मैं उन को दा'वते इस्लाम दिया करता था। एक दिन मैं ने उन को दा'वते इस्लाम दी तो उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में मुझे मकरूह अल्फ़ाज़ सुनाए। मैं रोता हुवा आप की ख़िदमते अक़्दस में गया और वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर के दुआ़ए हिदायत की दरख़्वास्त की। आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई : "खुदाया ! अबू हुरैरा की मां को हिदायत दे।" मैं इस दुआ़ से खुश हो कर घर आया तो देखा कि किवाड़ बन्द हैं। मेरी मां ने मेरे क़दम की आहट सुन कर कहा : अबू हुरैरा ! यहीं ठहरो। मैं ने पानी की आवाज़ सुनी। उन्हों ने ग़ुस्ल कर के जल्दी कपड़े पहने और दरवाज़ा खोलते ही कलिमए शहादत पढ़ा।(4)

जिन दिनों रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़त्हे मक्का (रमज़ान सिने 8 हिजरी) के लिये पोशीदा तय्यारियां कर रहे थे। ह़ज़रते ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ ने ब ग़रज़े इत्तिलाए क़ुरैश एक ख़त़ लिखा और एक औ़रत की मा'रिफ़त मक्का रवाना किया वोह ख़त़ रास्ते में पकड़ा गया बा वुजूद ऐसे संगीन जुर्म के आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ह़ात़िब को मुआ़फ़ कर दिया और उस औ़रत से भी किसी क़िस्म का तअ़र्रुज़ न किया।

---

1 ......مرقاة المفاتيح، كتاب الفضائل،باب فی المعجزات،الفصل الثانی،تحت الحديث:٥٩٣١،ج١٠،ص٢٦٥-٢٦٦۔علميه

2 ......وفاء الوفاء، جزء اول،ص ۲۲۵۔جزء ثانی،ص ۲۵۲۔

3 ......صحیح بخاری،کتاب الطب،باب ہل یستخرج السحر۔......(صحيح البخاری،كتاب الطب،باب السحر،الحديث:٥٧٦٦،ج٤، ص٤٠۔علميه)

4 ......صحیح مسلم،باب من فضائل ابی ہریرة۔......(صحيح مسلم،كتاب الفضائل،باب من فضائل ابی هريرة الدوسی،الحديث: ٢٤٩١،ص١٣٥٣۔علميه)

www.dawateislami.net

अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब जो इस्लाम लाने से पहले ग़ज़्वए उहुद व ग़ज़्वए अह़ज़ाब में रासुल मुशरिकीन थे । ग़ज़्वए फ़त्ह़ में मक़ामे मर्रुज़्ज़हरान में मुसलमानों की जासूसी करते हुवे गिरिफ़्तार हुवे । ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन को ले कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे । आप अबू सुफ़्यान से मुरुव्वत से पेश आए और वोह इस्लाम लाए ।

क़ुरैश आं ह़ज़रत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुज़म्मम कह कर गालियां दिया करते थे । मगर आप फ़रमाया करते : "क्या तुम तअ़ज्जुब नहीं करते कि **अल्लाह** तआ़ला क़ुरैश की दुश्नाम[1] व ला'नत को किस त़रह़ मुझ से बाज़ रखता है वोह मुज़म्मम कह कर गालियां देते और ला'नत करते हैं ह़ालांकि मैं मुह़म्मद हूं ।"[2]

ए'लाने दा'वत से साढ़े सतरह साल तक क़ुरैश ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब को जो जो अज़िय्यतें दीं उन की दास्तान दोहराने की ज़रूरत नहीं । फ़त्ह़े मक्का के दिन वोही क़ुरैश मस्जिदे ह़राम में निहायत ख़ौफ़ व बे क़रारी की ह़ालत में आप के हुक्म के मुन्तज़िर हैं । आप उन अज़िय्यतों का ज़िक्र तक ज़बाने मुबारक पर नहीं लाते और येह हुक्म सुनाते हैं : اِذْهَبُوْا فَاَنْتُمُ الطُّلَقَاء (जाओ तुम आज़ाद हो ।) इस आ़ली ह़ौसलगी की नज़ीर दुन्या की तारीख़ में नहीं पाई जाती । इस अ़फ़्वे आ़म का नतीजा येह हुवा कि जंगे हुनैन में दो हज़ार तुलक़ा लश्करे इस्लाम में शामिल थे ।

हिन्द बिन्ते उ़तबा (ज़ौजए अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब) जो ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा का कलेजा चबा गई थीं फ़त्ह़े मक्का के दिन निक़ाब पोश हो कर ईमान लाईं ताकि आं ह़ज़रत صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहचान न लें । बैअ़त के मौक़अ़ पर भी गुस्ताख़ी से बाज़ न रहीं । ईमान ला कर निक़ाब उठा दिया और कहने लगीं कि मैं हिन्द बिन्ते उ़तबा हूं । मगर हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी अम्र का ज़िक्र तक न किया । येह देख कर हिन्द ने कहा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ न थे लेकिन आज मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब नहीं रहे ।"[3]

---

1 ......गाली गलोच ।

2 ......صحیح بخاری، کتاب المناقب، باب اسماء النبی۔......(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب ما جاء فی اسماء رسول الله، الحدیث: ۳۵۳۳، ج۲، ص۴۸۴۔علمیه)

3 ......صحیح بخاری، باب ذکر ہند بنت عتبہ۔......(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ذکر هند بنت عتبة بن ربیعة، الحدیث: ۳۸۲۵، ج۲، ص۵۶۷۔علمیه)

www.dawateislami.net

इकरमा बिन अबी जह्ल क़ुरशी मख़्ज़ूमी अपने बाप की त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सख़्त दुश्मन थे। फ़त्ह़े मक्का के दिन वोह भाग कर यमन चले गए। उन की बीवी जो मुसलमान हो चुकी थी वहां पहुंची और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से बढ़ कर सिलए रेह़्म और एह़सान करने वाले हैं। ग़रज़ वोह इकरमा को बारगाहे रिसालत में लाई। इकरमा ने आप को सलाम कहा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को देखते ही खड़े हो गए और ऐसी जल्दी से उन की त़रफ़ बढ़े कि चादरे मुबारक गिर पड़ी और फ़रमाया :[1], [2] مرحبا بالرّاکب المهاجر हिजरत करने वाले सुवार को आना मुबारक हो।

सफ़्वान इब्ने उमय्या जाहिलिय्यत में अशराफ़े क़ुरैश में से थे और इस्लाम के सख़्त दुश्मन थे। फ़त्ह़े मक्का के दिन भाग गए थे। ह़ज़रते उ़मैर बिन वह्ब ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि सफ़्वान मेरी क़ौम के सरदार हैं वोह भाग गए हैं ताकि अपने आप को समन्दर में डाल दें। अह़मर व अस्वद को आप ने अमान दी है उन को भी अमान दीजिये। आप ने फ़रमाया : तू अपने चचेरे भाई को ले आ ! उसे अमान है। ह़ज़रते उ़मैर ने अ़र्ज़ किया कि अमान की कोई निशानी चाहिये जो मैं उसे दिखा दूं। आप ने अपना इमामा जो फ़त्ह़े मक्का के दिन पहने हुवे थे अ़त़ा फ़रमाया। सफ़्वान जिद्दा में जहाज़ पर सुवार होने को थे कि ह़ज़रते उ़मैर जा पहुंचे और उन को मुज़्दए अमान सुनाया। सफ़्वान ने कहा : मुझे अपनी जान का डर है। ह़ज़रते उ़मैर ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़िल्म व करम इस से बरतर है। ग़रज़ सफ़्वान ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवे और अ़र्ज़ किया कि येह उ़मैर कहता है कि आप ने मुझे अमान दी है। आप ने फ़रमाया : उ़मैर सच कहता है। येह सुन कर सफ़्वान ने कहा : या रसूलल्लाह ! दो माह की मोहलत दीजिये। आप ने फ़रमाया कि तुझे चार माह की मोहलत है।[3] ह़ज़रते सफ़्वान ग़ज़्वए त़ाइफ़ के बा'द ब रग़बतो रिज़ा ईमान लाए।

---

1 ......اصابہ۔سیرت حلبیہ۔

2 ......السيرة الحلبية، باب ذكر مغازيه، فتح مكة شرفها اللّٰه تعالى، ج٣،ص١٣٢ والاصابة فى تمييز الصحابة،٥٦٥٤۔عكرمة بن ابى جهل،ج٤،ص٤٤٣۔٤٤٤۔علميه

3 ......سیرت حلبیہ۔......(السيرة الحلبية،باب ذكر مغازيه،فتح مكة شرفها اللّٰه تعالى،ج٣،ص١٣٥۔علميه)

www.dawateislami.net

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुह़ासरए त़ाइफ़ (शव्वाल सिने 8 हिजरी) से वापस आने लगे तो सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया कि आप सक़ीफ़ पर बद दुआ़ फ़रमाएं। मगर आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا (ख़ुदाया ! सक़ीफ़ को हिदायत दे।) चुनान्चे, वोह दुआ़ क़बूल हुई और सक़ीफ़ सिने 9 हिजरी में ईमान लाए।

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जि'राना में ग़नाइमे हुनैन तक़्सीम फ़रमाईं तो एक मुनाफ़िक़ अन्सारी ने कहा कि इस तक़्सीम से रज़ाए ख़ुदा मत़्लूब नहीं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने येह माजरा आप से अ़र्ज़ किया तो फ़रमाया : "ख़ुदा मूसा पर रह़्म करे उन को इस से ज़ियादा अज़िय्यत दी गई, पस सब्र किया।"[1]

जब अबुल आ़स बिन रबीअ़ ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साह़िबज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब को मक्के से मदीना भेजा तो रास्ते में चन्द सुफ़हाए क़ुरैश ने मुज़ाह़मत की। उन में से हब्बार बिन अस्वद क़ुरैशी असदी ने ह़ज़रते ज़ैनब को ऊंट से गिरा दिया। वोह ह़ामिला थीं पथ्थर पर गिरीं ह़म्ल साक़ित़ हो गया और उन को सख़्त चोट आई और इसी में जां ब ह़क़ हुईं। फ़त्ह़े मक्का के दिन हब्बारे मज़्कूर वाजिबुल क़त्ल इश्तिहारियों में था वोह मक्का से भाग गया और चाहता था कि ईरान चला जाए। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जि'राना से वापस तशरीफ़ लाए तो वोह बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और यूं अ़र्ज़ करने लगा : "या नबिय्यल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं आप के हां से भाग कर शहरों में फिरता रहा मेरा इरादा था कि ईरान चला जाऊं फिर मुझे आप की नफ़्अ़ रसानी, सिलए रेह़्मी और अ़फ़्वो करम याद आए मुझे अपनी ख़त़ा व गुनाह का ए'तिराफ़ है आप दर गुज़र फ़रमाएं।" येह सुन कर आप ने फ़रमाया : "मैं ने तुझे मुआ़फ़ कर दिया।"[2]

का'ब बिन ज़ुहैर और उन के भाई बुजैर[3] "अबरक़ अ़ज़्ज़ाफ़"[4] में बकरियां चराया करते थे। बुजैर ने का'ब से कहा : "तुम यहां ठहरो मैं उसी मुद्दइये नबुव्वत के पास जाता हूं ताकि

---

1 ......صحیح بخاری، باب غزوۃ الطائف۔......(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب غزوة الطائف، الحديث:٤٣٣٥، ج٣،ص١١٨۔علميه)

2 ......اصابہ، ترجمہ ہبار بن اسود۔......(الاصابة فى تمييز الصحابة، ٨٩٥١۔هبار بن الاسود، ج٦، ص٤١٢۔٤١٣۔علميه)

3 ......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इन सह़ाबी का नाम "बुहै़र" लिखा है येह हमें नहीं मिला, यक़ीनन किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि सीरते इब्ने हिशाम, अल इसाबा और सीरत व तारीख़ की कुतुब में इन का नाम "बुजैर" लिखा है लिहाज़ा हम ने येही लिखा है। **इल्मिय्या**

4 ......मक्का की एक वादी का नाम है।

www.dawateislami.net

देखूं वोह क्या कहता है।" बुजैर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए और आप का कलाम सुन कर मुसलमान हो गए। का'ब को येह ख़बर लगी तो उन्हों ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हजू और इस्लाम की तौहीन में येह अश्आ़र बुजैर को लिख भेजे :

الا ابلغا عنى بُجَيرا رسالة　　فهل لك فيما قلت ويحك هل لكا

سقاك ابوبكر بكأس رَوِيّة　　فانهلك المامون منها و علكا

ففارقت اسباب الهدى و اتبعته　　على اىّ شىءٍ ريب غيرك دلكا

على خلق لم تلف أُمًّا و لَا ابًا　　عليه و لم تعرف عليه اخا لكا

فان انت لم تفعل فلست بأسف　　و لا قائل اما عثرت لعًا لكا

आगाह रहो मेरी त़रफ़ से बुजैर को येह पैग़ाम पहुंचा दो कि क्या तू ने दिल से कलिमए शहादत पढ़ लिया है? तुझ पर अफ़्सोस! क्या तू ने दिल से कलिमा पढ़ लिया है? अबू बक्र ने तुझे सैराब करने वाला प्याला पिला दिया और अमीन (ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने तुझे उस प्याले से पहली बार और दूसरी बार पिला दिया। इस लिये तू अस्बाबे हिदायत छोड़ कर उस का पैरू बन गया। उस ने तुझे क्या बताया तू औरों की त़रह़ हलाक हो गया। उस ने ऐसा मज़्हब बताया जिस पर तू ने अपने मां बाप को न पाया और न अपने भाई को उस पर देखा। अगर तू ने मेरा कहा न माना तो मैं तुझ पर तअस्सुफ़ न करूंगा और तू ठोकर खा कर गिर पड़े तो मैं दुआ़ न करूंगा कि तू उठ कर खड़ा हो जाए।

ह़ज़रते बुजैर ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह माजरा अ़र्ज़ कर दिया। आप ने का'ब का ख़ून हद्र[1] फ़रमा दिया। फिर ह़ज़रते बुजैर ने का'ब को इत्तिलाअ़ दी और तरग़ीब दी कि ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर मुआ़फ़ी मांगें। चुनान्चे, वोह सिने 9 हिजरी में ग़ज़्वए तबूक से पहले ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे। आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त मस्जिद में अपने अस्ह़ाब में तशरीफ़ रखते थे। आप का'ब से वाक़िफ़ न थे का'ब ने आप के हाथ में हाथ दे कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! का'ब बिन ज़ुहैर मुसलमान हो कर अमान

1 ......जाइज़।

www.dawateislami.net

त़लब करता है इजाज़त हो तो मैं उसे आप के पास ले आऊं। आप ने इजाज़त दी फिर का'ब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! का'ब मैं ही हूं। बा'दे अज़ां इस्लाम ला कर उन्हों ने अपना क़सीदा पढ़ा जिस में अश्आ़रे तौति़य्या के बा'द येह शे'र है :

اُنْبِئْتُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ اَوْعَدَنِیْ ‌ ‌ ‌ ‌ وَ الْعَفْوُ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ مَامُوْلُ

मुझे ख़बर दी गई है कि बारगाहे रिसालत से मेरी निस्बत वई़दे क़त्ल सादिर हुई है हा़लांकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़फ़्व की उम्मीद की जाती है।

इस क़सीदे से ख़ुश हो कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते का'ब को अपनी चादर (बुर्दा) अ़त़ा फ़रमाई और उन की गुज़श्ता ख़त़ा का एक ह़र्फ़ भी ज़बान पर न लाए।(1)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा का क़ातिल वह़्शी ह़बशी गुलामे सुफ़्यान बिन ह़र्ब जंगे उहुद के बा'द मक्का में रहा करता था। जब मक्का में इस्लाम फैला तो वोह भाग कर त़ाइफ़ चला गया फिर वोह वफ़्दे त़ाइफ़ के साथ माहे रमज़ान सिने 9 हिजरी में आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और ईमान लाया आप ने उन से सिर्फ़ इतना फ़रमाया कि मुझे अपना चेहरा न दिखाया करो।(2)

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न फ़ाह़िश थे और न मुतफ़ह़्ह़िश(3) और न बाज़ार में शोर करने वाले थे। आप बदी का बदला बदी से न दिया करते थे बल्कि मुआ़फ़ कर देते और दर गुज़र फ़रमाते।(4)

अब हम चन्द मुतफ़र्रिक़ मिसालें और पेश करते हैं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि एक आ'राबी ने मस्जिदे नबवी में पेशाब कर दिया लोग उसे मार पीट करने के लिये

---

1 ......اصابہ وغیرہ۔......(الاصابة فی تمییز الصحابة، ٧٤٢٦۔ کعب بن زهیر، ج٥، ص٤٤٣۔٤٤٤ بالتغیر و السیرة النبویة لابن هشام، امر کعب بن زهیر بعد الانصراف عن الطائف، ص٥١٠۔٥١١۔علمیه)

2 ......صحیح بخاری، باب قتل حمزہ۔......(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قتل حمزة، الحدیث:٤٠٧٢، ج٣، ص٤٢۔علمیه)

3 ......फ़ाह़िश के मा'ना है कलाम में बित्तब्अ़ फ़ोह़्श करने वाला और मुतफ़ह़्ह़िश के मा'ना ब तकल्लुफ़ फ़ोह़्श करने वाला हैं। **इ़ल्मिय्या**

4 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰه تعالٰی علیه و اله وسلم۔......(الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه، الحدیث:٣٣٠، ص١٩٧۔علمیه)

www.dawateislami.net

उठे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे जाने दो और इस के पेशाब पर पानी का एक डोल बहा दो क्यूंकि तुम नर्म गीर बना कर भेजे गए हो सख़्त गीर बना कर नहीं भेजे गए।"[1]

ह़ज़रते अनस का बयान है कि एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जा रहा था। आप सख़्त ह़ाशिये वाली[2] नजरानी चादर औढ़े हुवे थे। एक बद्दू आप के पास आया उस ने आप की चादर के साथ आप को ऐसा सख़्त खींचा कि चादर फट गई। आप की गर्दन मुबारक को जो मैं ने देखा उस में चादर के ह़ाशिये ने असर किया हुवा था फिर उस बद्दू ने कहा : "ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आप के पास जो ख़ुदा का माल है उस में मेरे वासिते हुक्म कीजिये।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ देखा फिर हंस के उस के लिये बख़्शिश का हुक्म दिया।[3]

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़त़ा बख़्शी का येह आ़लम था कि ह़स्बे बयाने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप ने कभी किसी औ़रत या ख़ादिम को अपने दस्ते मुबारक से नहीं मारा।[4]

ह़ज़रते ज़ैद बिन सा'ना जो अह़बारे यहूद[5] में से थे अपने इस्लाम लाने का क़िस्सा यूं बयान करते हैं कि मैं ने तौरात में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की नबुव्वत की जो अ़लामात पढ़ी थीं। वोह सब मैं ने रूए मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखते ही पहचान लीं। सिर्फ़ दो ख़स्लतें ऐसी थीं जिन का आज़माना बाक़ी रहा या'नी आप का ह़िल्म आप के ग़ज़ब पर सबक़त ले जाता है और दूसरे की शिद्दते जहालत व ईज़ा आप के ह़िल्म को और ज़ियादा कर देती है इन दोनों की आज़माइश के लिये मैं मौक़अ़ का मुन्तज़िर था और आप से तलत्तुफ़[6] से पेश आता था एक

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب قول النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم: یسروا و لا تعسروا۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب قول النبی:یسروا و لاتعسروا،الحدیث:٦١٢٨،ج٤،ص١٣٣۔علمیہ)

2 ......सख़्त किनारों वाली।

3 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب التبسم والضحک۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب التبسم و الضحك،الحدیث:٦٠٨٨،ج٤،ص١٢٤۔علمیہ)

4 ......ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی التجاوز۔......(سنن ابی داود، کتاب الادب،باب فی التجاوز فی الامر،الحدیث:٤٧٨٦، ج٤،ص٣٢٨۔علمیہ)

5 ......यहूदियों के उ़लमा।

6 ......मेहरबानी।

www.dawateislami.net

रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने से निकले आप के साथ ह़ज़रते अ़ली बिन अबी ता़लिब थे। एक सुवार जो ब ज़ाहिर कोई बादिय्या नशीन[1] था आप की ख़िदमत में आया और यूं अ़र्ज़ करने लगा : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ुलां क़बीले के लोग ईमान लाए हैं मैं उन से कहा करता था कि अगर तुम मुसलमान हो जाओ तो तुम्हे रिज़्क़ ब कसरत मिलेगा। अब उन के हां इमसाके बारां[2] और क़ह़त़ है। या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अन्देशा है कहीं वोह त़म्अ़ के सबब से इस्लाम से बरगश्ता न हो जाएं।[3] क्यूंकि त़म्अ़ के लिये ही वोह इस्लाम में दाख़िल हुवे हैं। अगर आप की राए मुबारक हो तो कुछ उन की दस्तगीरी फ़रमाइये।" येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने पहलू में एक शख़्स (जो मेरे गुमान में ह़ज़रते अ़ली थे) की त़रफ़ देखा। उस ने अ़र्ज़ किया कि इस में से तो कुछ बाक़ी नहीं रहा। येह देख कर मैं आगे बढ़ा और आप से खजूरों की मीआ़दे मुअ़य्यन मीआ़दे मा'लूम पर ख़रीद की और उस की क़ीमत अस्सी मिस्क़ाल सोना अपनी हमयान[4] से निकाल कर पेशतर दे दी। आप ने वोह अस्सी मिस्क़ाल उस सुवार को दे दिये और फ़रमाया कि जल्दी जाओ और उस क़बीले के लोगों में इसे तक़्सीम कर दो। जब मीआ़द ख़त्म होने में दो तीन दिन बाक़ी रह गए तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक अन्सारी के जनाज़े के साथ निकले। आप के हमराह मिन जुम्ला दीगर अस्ह़ाब ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) थे। जब आप नमाज़े जनाज़ा से फ़ारिग़ हुवे और बैठने के लिये एक दीवार के क़रीब पहुंचे तो मैं ने आगे बढ़ कर आप की क़मीस और चादर के दामन पकड़ लिये और तुन्द निगाह[5] से आप की त़रफ़ देख कर यूं कहा : "ऐ मुह़म्मद ! क्या तू मेरा ह़क़ अदा नहीं करता ? ऐ अ़ब्दुल मुत्त़लिब के ख़ानदान वालो ! क़सम ब ख़ुदा ! तुम अदाए ह़क़ से गुरेज़ करने के लिये ह़ीले ह़वाले किया करते हो।" ह़ज़रते उ़मर ने तेज़ निगाह से मेरी त़रफ़ देख कर कहा : "ओ दुश्मने ख़ुदा ! क्या तू रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह कहता है जो सुन रहा हूं और आप के साथ येह सुलूक करता है जो मैं देख रहा हूं। क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस ने आप को ह़क़ दे कर भेजा है। अगर मुझे मुसलमानों और तेरी क़ौम के दरमियान सुल्ह़ के फ़ौत हो जाने का डर न होता तो अपनी तल्वार से तेरा सर उड़ा देता।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आराम व आहिस्तगी और तबस्सुम की ह़ालत में ह़ज़रते उ़मर की त़रफ़ देख कर फ़रमाया : "उ़मर ! मुझे और इसे बजाए इस सख़्ती के इस बात की ज़ियादा

1....देहात का रहने वाला। 2....बारिश का न होना। 3....फिर न जाएं।
4....रूपों की थैली जो कमर से बांधी जाती है। 5....गुस्से भरी निगाह।

www.dawateislami.net

ज़रूरत थी कि तुम मुझे हुस्ने अदाए ह़क़ और इसे हुस्ने तक़ाज़ा का अम्र करते। ऐ उ़मर ! इस को ले जाओ और इस का ह़क़ अदा कर दो और इसे जो तुम ने धमकाया है इस के इवज़ बीस साअ़ खजूरें और दे दो।" ह़ज़रते उ़मर मुझे अपने साथ ले गए और मेरा ह़क़ अदा कर दिया और बीस साअ़ खजूर इज़ाफ़ा दीं। मैं ने पूछा कि येह ज़ाइद कैसी हैं ? ह़ज़रते उ़मर ने इस का जवाब दिया फिर मैं ने कहा : उ़मर ! क्या तुम मुझे पहचानते हो ? जवाब दिया कि नहीं। मैं ने कहा कि मैं ज़ैद बिन सा'ना हूं। फ़रमाया : वोही ज़ैद जो यहूदियों का आ़लिम है ? मैं ने कहा : हां। फिर पूछा कि तू ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ऐसा सुलूक क्यूं किया ? मैं ने कहा : "ऐ उ़मर ! जिस वक़्त मैं ने रूए मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा वोह तमाम अ़लामात जो मैं तौरात में पढ़ता था मौजूद पाईं। इन में सिर्फ़ दो अ़लामतें बाक़ी थीं जो मैं ने अब आज़मा लीं। ऐ उ़मर ! मैं तुझ को गवाह बनाता हूं कि मैं **अल्लाह** को अपना परवर दगार और इस्लाम को अपना दीन और मुह़म्मद को अपना पैग़म्बर मानने पर राज़ी हो गया और मैं तुझे गवाह बनाता हूं कि मेरा आधा माल उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर सदक़ा है।" फिर ह़ज़रते उ़मर और ज़ैद दोनों आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और ह़ज़रते ज़ैद ने बारगाहे रिसालत में इज़्हारे इस्लाम किया।[1] इस्लाम लाने के बा'द ह़ज़रते ज़ैद बिन सा'ना बहुत से ग़ज़्वात में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह रहे और ग़ज़्वए तबूक में दुश्मन की त़रफ़ बढ़ते हुवे शहीद हुवे। رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه[2]

शफ़्क़त व रह़मत :

अल्लाह तआ़ला ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सारे जहां के लिये रह़मत बना कर भेजा है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۰۷﴾ (انبیاء، ع ۷)

और नहीं भेजा हम ने तुझ को मगर रह़मत बना कर सारे जहां के लिये।[3]

इस लिये तमाम मख़्लूक़ात आप की रह़मत से बहरा वर है जैसा कि ज़ैल के मुख़्तसर बयान से वाज़ेह होगा।

---

1 ......دلائل النبوۃ للحافظ ابی نعیم، مطبوعہ دائرۃ المعارف حیدر آباد دکن۔

2 ......اسد الغابة فی معرفة الصحابة، زيد بن سعنه: ۱۸٤۱، ج۲، ص۳٤٥۔علمیه

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये। (پ۱۷، الانبیاء:۱۰۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

उम्मत पर शफ़्क़त व रह़मत :

अल्लाह तआ़ला हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शान में यूं फ़रमाता है :

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِیْزٌ عَلَیْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِیْصٌ عَلَیْكُمْ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۲۸﴾ (توبه، اخير ركوع)

अलबत्ता तह़क़ीक़ तुम्हारे में का एक पैग़म्बर तुम्हारे पास आया है तुम्हारी तक्लीफ़ उस पर शाक़ गुज़रती है उस को तुम्हारी हिदायत व सलाह़ की ह़िर्स है वोह ईमान वालों पर शफ़्क़त रखने वाला और मेहरबान है।(1)

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अवसाफ़े ह़मीदा में ज़िक्र कर दिया कि उम्मत की तक्लीफ़ इन पर शाक़ गुज़रती है। इन को शबो रोज़ येही ख़्वाहिश दामन गीर है कि उम्मत राहे रास्त पर आ जाए। इस किताब के मुत़ालए़ से ज़ाहिर है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मत की हिदायत व बेहबूदी के लिए क्या क्या मुसीबतें झेलीं। सख़्त से सख़्त मुसीबत में भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बद दुआ़ न फ़रमाई बल्कि हिदायत की दुआ़ की। ईमान वालों पर आप की शफ़्क़त व रह़मत ज़ाहिर है इसी वासिते़ आप ने किसी मक़ाम पर उम्मत को फ़रामोश नहीं फ़रमाया ब ग़रज़े तौज़ीह़ चन्द मिसालें पेश की जाती हैं।

जिस रोज़ आंधी या आस्मान पर बादल होता रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक में ग़मो फ़िक्र के आसार नुमायां होते और आप कभी आगे बढ़ते और कभी पीछे हटते जब बारिश हो जाती तो आप ख़ुश होते और ह़ालते ग़म जाती रहती। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि मैं डरता हूं कि मबादा(2) (क़ौमे आ़द की त़रह़) येह अ़ज़ाब हो जो मेरी उम्मत पर मुसल्लत़ किया गया हो।(3)

1......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान। (پ۱۱، التوبة:۱۲۸) **इल्मिय्या**

2.... कहीं ऐसा न हो कि।

3......صحیح مسلم، کتاب صلوۃ الاستسقاء۔......(صحیح مسلم، کتاب صلاة الاستسقاء، باب التعوذ عند رؤية الريح...الخ، الحديث: ۸۹۹، ص۴۴۶۔علميه)

www.dawateislami.net

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ मांगी :

اَللّٰھُمَّ مَنْ وَّلِیَ مِنْ اَمْرِ اُمَّتِیْ شَیْئًا فَشَقَّ عَلَیْھِمْ فَاشْقُقْ عَلَیْہِ وَمَنْ وَّلِیَ مِنْ اَمْرِ اُمَّتِیْ شَیْئًا فَرَفَقَ بِھِمْ فَارْفُقْ بِہٖ (1)

खुदाया जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी काम का वाली व मुतसर्रिफ़ बनाया जाए पस वोह उन को मशक़्क़त में डाले तू उस वाली को मशक़्क़त में डाल और जो शख़्स मेरी उम्मत के किसी काम का वाली बनाया जाए पस वोह उन के साथ नर्मी करे तू उस वाली के साथ नर्मी कर।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जिहाद का इस क़दर शौक़ था कि आप चाहते थे कि मैं बार बार शहीद हो कर ज़िन्दा होता रहूं मगर चूंकि उम्मत में से हर एक पर वाजिब था कि जिहाद में आप के साथ निकले ब फ़हवाए आयए जैल :[2]

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِیْنَةِ وَ مَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ یَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَ لَا یَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖؕ (توبہ، ۱۵٤)

न चाहिये मदीने के रहने वालों को और उन आ'राब को जो इन के गिर्द हैं कि पीछे रह जाएं रसूले ख़ुदा से और न येह कि रसूल की जान से अपनी जान को ज़ियादा चाहें।[3]

इस लिये आप सराया में लश्करे इस्लाम के साथ बदीं ख़याल तशरीफ़ न ले जाया करते थे कि अगर मैं हर फ़ौज के हमराह जाऊं तो मुसलमानों की एक जमाअ़त पीछे रह जाएगी। क्यूंकि मेरे पास इस क़दर घोड़े ऊंट नहीं कि सब को सुवार कर के साथ ले जाऊं और न उन में इस्तिताअ़त है कि सुवार हो कर मेरे साथ चलें। इस त़रह़ पीछे रह जाने वाले गुनहगार और ना खुश व शिकस्ता दिल होंगे।[4]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ौल ह़ज़रते इब्राहीम की

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ مسلم، کتاب الامارۃ والقضاء......(مشكاة المصابيح، كتاب الامارة والقضاء،الفصل الاول، الحديث:٣٦٨٩، ج٢،ص٧۔علميه)

2 ......इसी आयत के मज़्मून की वज्ह से।

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मदीने वालों और इन के गिर्द देहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न येह कि इन की जान से अपनी जान प्यारी समझें। (پ١١،التوبة:١٢٠) **इल्मिय्या**

4 ......صحیح مسلم، باب فضل الجہاد......(صحيح مسلم،كتاب الامارة،باب فضل الجهاد...الخ،الحديث:١٨٧٦،ص١٠٤٢۔١٠٤٣۔علميه)

www.dawateislami.net

निस्बत (1) "رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ.. الآیہ" और हज़रते ईसा का क़ौल (2) اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ اِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ तिलावत फ़रमाया। फिर अपने दोनों हाथ उठा कर यूं दुआ़ की : اَللّٰهُمَّ اُمَّتِيْ اُمَّتِيْ (खुदाया मेरी उम्मत मेरी उम्मत) और रो पड़े। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते जिब्रईल को हुक्म दिया कि मुह़म्मद के पास जाओ (ह़ालांकि तेरा परवर दगार ख़ूब जानता है।) उन से रोने का सबब दरयाफ़्त करो। ह़ज़रते जिब्रईल ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर रोने का सबब पूछा। आप ने बता दिया (ह़ालांकि खुदा को ख़ूब मा'लूम है।) **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म दिया : ऐ जिब्रईल ! मुह़म्मद के पास जाओ और उन से कह दो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में राज़ी करेंगे और ग़मगीन न करेंगे।(3)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जनाबे पैग़म्बरे खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो मोमिन मर जाए और माल छोड़ जाए तो वोह उस के वारिसों को ख़्वाह कोई हों मिलना चाहिये और जो मोमिन क़र्ज़ या (मोह़ताज) अ़याल छोड़ जाए तो चाहिये कि क़र्ज़ ख़्वाह या अ़याल मेरे पास आए क्यूंकि मैं उस का वली व मुतकफ़्फ़िल(4) हूं।(5)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन रात नमाज़े तरावीह़ अपने अस्ह़ाबे किराम को पढ़ाई चौथी रात सह़ाबए किराम ब कसरत मस्जिद में जम्अ़ हुवे और इन्तिज़ार करते रहे मगर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ न लाए। सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द आप ने यूं तक़रीर फ़रमाई :(6)

اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّهٗ لَمْ يَخْفَ عَلَيَّ مَكَانُكُمْ لٰكِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تُفْرَضَ عَلَيْكُمْ فَتَعْجِزُوْا عَنْهَا.(7)

1......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये। (پ۱۳، ابراھیم:۳۶) **इल्मिय्या**

2......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर तू उन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब ह़िक्मत वाला। (پ۷،المائدۃ:۱۱۸) **इल्मिय्या**

3......صحیح مسلم،باب دعاء النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم لامتہ وبکاءہ شفقۃ علیہم۔......(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب دعاء النبی لامتہ...الخ،الحدیث:۲۰۲،ص۱۳۰۔علمیہ)

4......कफ़ालत करने वाला।

5......صحیح بخاری،کتاب فی الاستقراض،باب الصلوۃ علی من ترک دینا۔......(صحیح البخاری،کتاب فی الاستقراض...الخ،باب الصلاۃ علی من ترک دیناً،الحدیث:۲۳۹۹،ج۲،ص۱۰۸-۱۰۹۔علمیہ)

6......صحیح بخاری،کتاب الجمعۃ،باب من قال فی الخطبۃ بعد الثناء اما بعد۔

7......صحیح البخاری،کتاب الجمعۃ،باب من قال فی الخطبۃ بعد الثناء: اما بعد،الحدیث:۹۲۴،ج۱،ص۳۱۸۔علمیہ

www.dawateislami.net

अम्मा बा'द ! तुम्हारा मस्जिद में जम्अ़ होना मुझ पर पोशीदा न था लेकिन मैं डर गया कि कहीं तुम पर येह नमाज़ फ़र्ज़ न हो जाए और तुम इस के अदा करने से आ़जिज़ आ जाओ।

नमाज़े तरावीह़ की त़रह़ बा'ज़े और अफ़्आ़ल को आप ने सिर्फ़ इस डर से तर्क कर दिया कि कहीं उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाएं। हर नमाज़ के लिये मिस्वाक का तर्क करना, ताख़ीरे इशा का तर्क करना और सौमे विसाल[1] से मन्अ़ फ़रमाना इसी क़बील से हैं।

येह आप की शफ़्क़त ही का बाइ़स था कि दीनो दुन्या में उम्मत के लिये तख़्फ़ीफ़ व आसानी ही मद्दे नज़र रही। चुनान्चे, जब आप को दो अम्रों में इख़्तियार दिया जाता तो आप उन में से आसान को इख़्तियार फ़रमाते ब शर्त़ येह कि वोह आसान मूजिबे गुनाह न होता और अगर ऐसा होता तो आप सब से बढ़ कर उस से दूर रहने वाले थे।[2]

शबे मे'राज में पहले पचास नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं। बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त से वापस आते हुवे जब आप आस्माने शशुम में ह़ज़रते मूसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ السَّلَام) के पास से गुज़रे तो उन्हों ने आप से दरयाफ़्त किया कि क्या हुक्म मिला है? आप ने फ़रमाया कि हर रोज़ पचास नमाज़ों का हुक्म मिला है। ह़ज़रते मूसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ किया कि आप की उम्मत हर रोज़ पचास नमाज़े न पढ़ सकेगी। आप अपनी उम्मत से बोझ हल्का कराएं। चुनान्चे, आप दरगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में बार बार ह़ाज़िर हो कर तख़्फ़ीफ़ कराते रहे यहां तक कि पांच रह गईं और आप इस पर राज़ी हो गए।[3] (सह़ीह़ैन)

जब शबे मे'राज में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे क़ाब क़ौसैन में पहुंचे तो बारी तआ़ला की त़रफ़ से आप पर यूं सलाम पेश हुवा : "اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ" ऐ नबी ! तुम पर सलाम और **अल्लाह** की रह़मत और बरकतें। इस के जवाब में आप ने अ़र्ज़ किया : "اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِیْنَ" सलाम हम पर और **अल्लाह** के नेक बन्दों पर।

इस जवाब में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इ़बादे सालिह़ीन को अलग ज़िक्र कर के गुनहगाराने उम्मत को ग़ायते करम से सलाम में अपने साथ शामिल रखा और इसी वासित़े सीग़ए जम्अ़ (علینا) इस्ति'माल फ़रमाया।

---

1 ......पै दर पै बिग़ैर इफ़्त़ार के रोज़े रखना।

2 ......صحیح بخاری، باب قول النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم یسروا ولا تعسروا۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب قول النبی: یسروا ولا تعسروا، الحدیث:٦١٢٦، ج٤، ص١٣٣۔علمیه)

3 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، الحدیث:٣٨٨٧، ج٢، ص٥٨٦ وصحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللّٰہ...الخ، الحدیث:١٦٢، ص٩٨۔٩٩ ملخصاً۔علمیه

www.dawateislami.net

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरा ह़ाल और मेरी उम्मत का ह़ाल उस शख़्स की मिस्ल है जिस ने आग रोशन की पस टिड्डियां और परवाने उस में गिरने लगे और वोह उन को आग से हटाता था सो मैं कमर से पकड़ कर आग से बचाने वाला हूं और तुम मेरे हाथ से छूटते हो।(1) (और आग में गिरना चाहते हो।)

क़ियामत के दिन लोग ब ग़रज़े शफ़ाअ़त यके बा'द दीगरे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के पास जाएंगे मगर वोह सब उ़ज़्र पेश करेंगे। आख़िरे कार हुज़ूर शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़म्दो सना के बा'द सजदे में गिर पड़ेंगे। बारी तआ़ला की त़रफ़ से इरशाद होगा कि सर सजदे से उठाइये, जो कुछ मांगिये दिया जाएगा। शफ़ाअ़त कीजिये आप की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी। उस वक़्त आप यूं अ़र्ज़ करेंगे : يَا رَبِّ اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत।(2) (सह़ीह़ैन)

अब आ़लमे बरज़ख़ में हर रोज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उम्मत के आ'माल पेश होते हैं। अच्छे अ़मलों को देख कर आप ख़ुदा का शुक्र और बुरे अ़मलों को देख कर मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हैं जैसा कि आगे आएगा।

इमाम के पीछे क़िराअत न करने के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी मदनी फूल

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۝۲۰۴ और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़्म हो। इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त क़ुरआने करीम पढ़ा जाए ख़्वाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़, उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है। जमहूर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم इस त़रफ़ हैं कि येह आयत मुक़्तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है। ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ह़दीस में है आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया : क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो ! लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिह़ा वग़ैरा कुछ न पढ़े। (ماخوذ از:خزائن العرفان الاعراف تحت الآیت ۲۰۴)

---

1 ......صحیح مسلم،باب شفقۃ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم علی امتہ......(صحیح مسلم،باب شفقتہ علی امتہ...الخ،الحدیث: ۲۲۸۵،ص۱۲۵۴۔علمیہ)

2 ......صحیح البخاری،کتاب التوحید، باب کلام الرب عزوجل...الخ،الحدیث:۷۵۱۰،ج۴،ص۵۷۷ملخصاً وصحیح مسلم،کتاب الایمان،باب ادنی اھل الجنۃ منزلۃ فیھا،الحدیث:۱۹۳،ص۱۲۴۔

www.dawateislami.net

काफ़िरों पर रहमत

पहली उम्मतों में ना फ़रमानी पर अ़ज़ाबे इलाही होता था मगर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वुजूदे बा जूद की बरकत से कुफ़्फ़ार अ़ज़ाबे दुन्यवी से महफ़ूज़ रहे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ (انفال، ع ٤) *और ख़ुदा उन को अ़ज़ाब न करेगा जब तक तू उन में है।*[(1)]

बल्कि अ़ज़ाबे इस्तीसाल कुफ़्फ़ार से ता क़ियामत मरफ़ूअ़ है।[(2)]

एक दफ़्अ़ा सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप मुशरिकीन पर बद दुआ़ करें। आप ने फ़रमाया : "मैं ला'नत करने वाला बना कर नहीं भेजा गया मैं तो सिर्फ़ रह़मत बना कर भेजा गया हूं।"[(3)]

ह़ज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए दौस में दा'वते इस्लाम के लिये भेजा था। उन्हों ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर यूं अ़र्ज़ किया : "क़बीलए दौस हलाक हो गया क्यूंकि उन्हों ने ना फ़रमानी की और इताअ़त से इन्कार कर दिया, आप उन पर बद दुआ़ करें।" लोगों को गुमान हुवा कि आप बद दुआ़ करने लगे हैं मगर आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई :[(4)] اَللّٰهُمَّ اهْدِ دَوْسًا وَّ ائْتِ بِهِمْ ख़ुदाया ! क़बीलए दौस को हिदायत दे और उन को मुसलमान कर के ला।[(5)]

जब ताइफ़ से मुह़ासरा उठा लिया गया तो सहाबए किराम ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! हम को क़बीलए सक़ीफ़ के तीरों ने जला दिया आप उन पर बद दुआ़ करें। मगर आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई :[(6)] اَللّٰهُمَّ اهْدِ ثَقِيْفًا ख़ुदाया ! सक़ीफ़ को हिदायत दे।[(7)]

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ मह़बूब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो। (پ۹،الانفال:۳۳) **इल्मिय्या**

2 ......या'नी काफ़िरों पर क़ियामत तक कभी ऐसा अ़ज़ाब नहीं आएगा जो उन को बिल्कुल नेस्तो नाबूद कर दे। **इल्मिय्या**

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیح مسلم، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل و الشمائل، باب فی اخلاقه و شمائله، الحديث:٥٨١٢، ج٢، ص٣٦٥۔علميه)

4 ......صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب قصۃ دوس۔

5 ......صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب قصة دوس...الخ، الحديث:٤٣٩٢، ج٣، ص١٣٧۔علميه

6 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی، باب مناقب قریش وذکر القبائل۔

7 ......مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب قريش و ذكر القبائل، الحديث:٥٩٩٥، ج٢، ص٤١٠۔علميه

www.dawateislami.net

"जंगे उहुद" में दांत मुबारक शहीद हो गया था और चेहरए मुबारक ख़ून आलूदा था मगर ज़बाने मुबारक पर येह अल्फ़ाज़ थे : اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِیْ فَاِنَّھُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ख़ुदाया ! मेरी क़ौम का येह गुनाह मुआ़फ़ कर दे क्यूंकि वोह नहीं जानते ।[1]

जब क़ुरैश ने अज़ रूए तअ़न्नुतो इनाद ईमान लाने से इन्कार कर दिया[2] तो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ की : "या **अल्लाह** ! इन ह़ज़रात पर यूसुफ़ (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के सात सालों की त़रह़ सात साल क़ह़त़ ला ।" चुनान्चे, ऐसा ही हुवा और नौबत यहां तक पहुंची कि क़ुरैश ने हड्डियां और मुर्दार खाए । इस ह़ालत में अबू सुफ़्यान ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर यूं अ़र्ज़ किया : "या मुह़म्मद ! आप की क़ौम हलाक हो गई । **अल्लाह** से दुआ़ कीजिये कि उन की मुसीबत दूर हो जाए ।" पस हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई और वोह मुसीबत दूर हो गई ।[3]

ह़ज़रते सुमामा बिन उसाल यमामी के ईमान लाने का क़िस्सा पहले बयान हो चुका है वोह इस्लाम ला कर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से उ़मरह के लिये मक्का में आए मुशरिकीन में से किसी ने उन से कहा कि तुम हमारे दीन से बरगश्ता हो गए । सुमामा ने कहा कि "मैं ने दीने मुह़म्मदी जो ख़ैरुल अदयान है इख़्तियार कर लिया है । ख़ुदा की क़सम ! रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त के बिग़ैर ग़ल्ले का एक दाना तुम तक न पहुंचेगा ।"[4] मक्का में ग़ल्ला यमामा से आया करता था । जब यमामा से ग़ल्ले की आमद बन्द हो गई तो क़ुरैश में काल[5] पड़ गया । उन्हों ने तंग आ कर सिलए रेह़्म का वासित़ा दे कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लिखा । आप ने ह़ज़रते सुमामा को लिखा कि येह बन्दिश उठा दो चुनान्चे, ऐसा ही किया गया ।[6]

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،غزوة أُحد،ج٢،ص٤٢٨-٤٢٩ والشفاء بتعريف حقوق المصطفى،الباب الثاني في تكميل محاسنه،فصل واما الحلم،الجزء الاول،ص١٠٦-علميه

2 ......या'नी ए'तिराज़ात और हट धर्मी की बिना पर ईमान न लाए । **इल्मिय्या**

3 ......صحیح بخاری،تفسیر سورۂ دخان۔......(صحيح البخاری ، كتاب التفسير ، سورة الدخان ، الحديث:٤٨٢٢-٤٨٢٤ ، ج٣، ص٣٢٣ ملتقطاً-علميه)

4 ......صحیح بخاری،باب وفد بنی حنیفہ۔......(صحيح البخاری ، كتاب المغازی ،باب وفد بنی حنيفة ، الحديث:٤٣٧٢ ، ج٣، ص١٣٢-علميه)

5 ......क़ह़त़ ।

6 ......سیرت ابن ہشام،اسر ثمامہ بن آثال الحنفی واسلامہ۔......(السيرة النبوية لابن هشام ، أسر ثمامة بن اثال الحنفی و اسلامه ...الخ،ص٥٧٠-علميه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में मेरी मां मेरे पास आई वोह मुशरिका थी। मैं ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दरयाफ़्त किया कि वोह कुछ मांगती है क्या मैं उस से सिलए रेह़्म करूं ? हुज़ूर ने फ़रमाया :[1] نَعَمْ صَلِّيْ اُمَّكِ हां तू अपनी मां से सिलए रेह़्म कर।[2]

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सुलूक मुनाफ़िक़ीन के साथ क़ाबिले ग़ौर है। येह लोग सामने तो चापलूसी किया करते थे मगर पीठ पीछे हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अज़िय्यत दिया करते थे। बा वुजूद इ़ल्म के आप उन के साथ ख़ुल्क़ से पेश आते। उन के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाते और उन के जनाज़े की नमाज़ पढ़ा करते यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमा दिया।

औ़रतों पर शफ़्क़त व रह़मत

इस्लाम से पहले येह सिन्फ़े नाज़ुक क़ा'रे मुज़ल्लत में[3] गिरी हुई और मर्दों के इस्तिब-दाद[4] का तख़्तए मश्क़ बनी हुई थी। अ़रब में इज़्दिवाज की[5] कोई ह़द न थी। चुनान्चे, ह़ज़रते ग़ीलान सक़फ़ी ईमान लाए तो उन के तह़्त में दस औ़रतें थीं। जब कोई शख़्स मर जाता तो उस का बेटा अपनी सोतेली मां को विरासत में पाता। वोह ख़ुद उस से शादी कर लेता या अपने भाई या क़रीबी को शादी के लिये दे देता वरना निकाह़े सानी से मन्अ़ करता। इसी त़रह़ और ख़राबियां भी थीं जिन का ज़िक्र पहले आ चुका है।

हिन्दूस्तान में कसरते इज़्दिवाज और न्योग[6] को जाइज़ समझा जाता था। शोहर मर जाता तो बेवा निकाह़े सानी न कर सकती थी बल्कि उसे दुन्या में ज़िन्दा रहने का कोई ह़क़ न था वोह शोहर की चिता[7] में ज़िन्दा जल कर भस्म हो जाती और सती का पौतिर लक़ब[8] ह़ासिल करती। तुर्फ़ा[9] येह कि ऐसा हुक्म सिर्फ़ औ़रतों ही के लिये था शोहर औ़रत की चिता में न जलता।

बा'ज़ मुल्कों मसलन तिब्बत में कसरते इज़्दिवाज का अ़क्स पाया जाता था अगर औ़रत एक मर्द से शादी करती तो वोह उस मर्द के दूसरे भाइयों की भी ज़ौजा समझी जाती थी। मजूसियों के हां बेटी और मां से भी निकाह़ जाइज़ समझा जाता था।

---

1 ......بخاری، باب الهدية للمشركين۔

2 ......صحيح البخاری، كتاب الهبة وفضلها...الخ، باب الهدية للمشركين، الحديث: ٢٦٢٠، ج٢، ص١٨٢-علميه

3 ......ज़िल्लत के गढ़े में। 4 ......ज़ुल्मो सितम। 5 ......बीवियां रखने की।

6 ....हिन्दू मज़हब में ह़ुसूले अवलाद के लिये एक ख़ास रस्म। 7 ....लकड़ियों का ढेर जिस में हिन्दू मुर्दा जलाते हैं।

8 ......पाक लक़ब। 9 ......तअ़ज्जुब की बात है।

www.dawateislami.net

मसीही बयाजे़ ता'लीम[1] में औ़रत की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम का कोई पता नहीं चलता ख़ुद ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ السَّلَام अपनी वालिदए माजिदा को ऐ औ़रत कहते हैं। (यूह़न्ना, बाब 19, आयह 26) और सितम देखिये, शोहर इ़न्नीन[2] हो, ख़स्सी[3] हो, मजबूब[4] हो, मजनून[5] हो या सज़ा याफ़्ता ह़ब्से दवाम[6] हो। इन ह़ालात में इन्जीले मुक़द्दस ने औ़रत की ख़लासी की कोई सूरत नहीं बताई मगर येह कि ज़िना जैसे कबीरा गुनाह का इर्तिकाब करे। (मत्ता, बाब 5 आयह 32। बाब 19, आयह 9)

जज़ीरए पापूआ (न्योगनी) के क़दीम बाशिन्दों के ह़ालात जो अब मा'लूम किये गए हैं इन से पता चलता है कि "उन में शोहर को अपनी औ़रत पर पूरा इख़्तियार ह़ासिल था वोह अपने शोहर का माल थी क्यूंकि ख़ावन्द उस के लिये एक रक़म अदा करता था बा'ज़ ह़ालात में शोहर उस को क़त्ल कर सकता था।"[7]

दुन्या के किसी मज़्हब में वालिदैन या शोहर के तर्के में औ़रत का कोई ह़क़ न था और अब तक भी इस्लाम के सिवा किसी मज़्हब ने औ़रत को तर्के में किसी का ह़क़दार नहीं ठहराया।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से इस ज़लील व मज़्लूम गुरौह की वोह ह़क़ रसी हुई कि दुन्या के किसी मज़्हब में नहीं पाई जाती। हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने औ़रत को इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के दरबार में मर्दों के बराबर जगह दी और मज़्कूरए बाला मफ़ासिद का इन्सिदाद[8] फ़रमा दिया।

इस्लाम से पहले कसरते इज़्दिवाज की कोई ह़द न थी जैसा कि ऊपर बयान हुवा इस्लाम ने इसे ब सूरते ज़रूरत चार तक मह़दूद कर दिया और चार को भी शर्ते़ अ़द्ल पर मुअ़ल्लक़ रखा। ब सूरते फ़ुक़्दाने अ़द्ल सिर्फ़ एक पर मक़्सूर कर दिया। मर्द औ़रत पर ह़ाकिम है इस लिये रइय्यत का तअ़द्दुद[9] एक ह़द तक जाइज़ रखा गया मगर ह़ाकिम का तअ़द्दुद[10] जाइज़ नहीं हो सकता इस लिये एक औ़रत के मुतअ़द्दिद शोहर नहीं हो सकते। क़ुरआने मजीद में मह़रिमात की तफ़्सील मौजूद है जिन में मां और बेटी दाख़िल हैं। ख़ुदकुशी ख़्वाह किसी त़रह़ हो मन्अ़ है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

1......ईसाइयों की ता'लीमी कुतुब। 2......नामर्द। 3......हीजड़ा।
4......ज़कर कटा हुवा। 5......पागल। 6......उ़म्र क़ैद की सज़ा पाने वाला।
7......नेलसन की इन्साईक्लो पीडिया, तह़ते लफ़्ज़ Women। 8......रोक थाम।
9......या'नी बीवियों का एक से ज़ाइद होना। 10......या'नी शोहर का एक से ज़ाइद होना।

www.dawateislami.net

और न मार डालो अपने आप को।[1] وَلَا تَقۡتُلُوۡۤا اَنۡفُسَکُمۡ (نساء، ع ٥)

हुस्ने मुआ़शरत की ताकीद

बारी तआ़ला عَزَّاِسْمُهٗ का इरशाद है :

औ़रतों के साथ अच्छे त़रीके़ से बूदो बाश रखो।[2] وَعَاشِرُوۡهُنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ (نساء، ع ٣)

अगर औ़रत सर्कशी इख़्तियार करे तो मर्द को उसे क़त्ल करने का इख़्तियार नहीं बल्कि पहले उसे समझाए, न समझे तो घर में उस से जुदा सोए, फिर आख़िर दरजे मारे भी तो न ऐसा कि ज़र्बे शदीद पहुंचे। चुनान्चे, क़ुरआने करीम में है :

और जिन औ़रतों की सर्कशी का तुम को डर हो तुम उन को नसीहत करो और ख़्वाबगाह में उन को जुदा करो और उन को मारो।[3] وَالّٰتِیۡ تَخَافُوۡنَ نُشُوۡزَهُنَّ فَعِظُوۡهُنَّ وَاهۡجُرُوۡهُنَّ فِی الۡمَضَاجِعِ وَاضۡرِبُوۡهُنَّ (نساء، ع ٦)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : ''خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ وَاَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِيْ'' (तिर्मिज़ी व दारिमी व इब्ने माजा) तुम में सब से अच्छा वोह है जो अपने अहल के लिये सब से अच्छा हो। और मैं अपने अहल के लिये तुम सब से अच्छा हूं।[4]

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मर्दों को औ़रतों की कज ख़ुल्क़ी[5] पर सब्र की वसिय्यत यूं फ़रमाते हैं :

اِسْتَوْصُوْا بِالنِّسَآءِ خَيْرًا فَاِنَّ الْمَرْاَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ وَّاِنَّ اَعْوَجَ شَیْءٍ فِی الضِّلَعِ اَعْلَاهُ فَاِنْ ذَهَبْتَ تُقِيْمُهٗ كَسَرْتَهٗ وَاِنْ تَرَكْتَهٗ لَمْ يَزَلْ اَعْوَجَ فَاسْتَوْصُوْا بِالنِّسَآءِ.[6]

(बुख़ारी, बाब ख़ुल्क़े आदम व ज़ुर्रिय्यतिही)

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी जानें क़त्ल न करो। (پ٥،النساء:٢٩) **इल्मिय्या**

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन से अच्छा बरताव करो। (پ٤،النساء:١٩) **इल्मिय्या**

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिन औ़रतों की ना फ़रमानी का तुम्हें अन्देशा हो तो उन्हें समझाओ और उन से अलग सोओ और उन्हें मारो। (پ٥،النساء:٣٤) **इल्मिय्या**

4 ......سنن ابن ماجه،كتاب النكاح،باب حسن المعاشرة النساء،الحديث:١٩٧٧،ج٢،ص٤٧٨۔علميه

5 ..... बद अख़्लाक़ी।

6 ......صحيح البخارى،كتاب احاديث الانبياء،باب خلق آدم و ذريته،الحديث:٣٣٣١،ج٢،ص٤١٢۔علميه

www.dawateislami.net

मैं जो तुम्हें औ़रतों के साथ अच्छे बरताव की वसिय्यत करता हूं तुम मेरी वसिय्यत को क़बूल करो क्यूंकि औ़रत उस्तुख़ाने पहलू[1] से पैदा की गई है और उस्तुख़ाने पहलू में सब से टेढ़ी चीज़ उस का हिस्सए बालाई है। अगर तुम उस उस्तुख़ान को सीधा करने लगोगे तो उसे तोड़ दोगे और अगर उसे छोड़ दोगे तो वोह टेढ़ी रहेगी पस तुम औ़रतों के बारे में मेरी वसिय्यत को क़बूल करो।

औ़रतों पर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़्क़त इस क़दर थी कि अगर आप नमाज़ की ह़ालत में किसी बच्चे की आवाज़ सुनते तो उस की मां की मशक़्क़त के ख़याल से नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ फ़रमाते।[2] (بخاری، باب الایجاز فی الصلوٰۃ واکمالہا)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम अन्जशा नाम थे वोह ऊंटों के आगे ह़ुदी[3] पढ़ा करते थे। एक दफ़्आ़ सफ़र में अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ साथ थीं ऊंट तेज़ चलने लगे तो ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : (بخاری، کتاب الادب) ''وَيْحَكَ يَا اَنْجَشَةُ رُوَيْدَكَ بِالْقَوَارِيْرِ''
अन्जशा ! देखना शीशियों को आहिस्ता ले चल।[4]

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا मक्का में ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के निकाह़ में आईं। ह़ज़रते ज़ुबैर के पास एक घोड़े और एक आब कश ऊंट[5] के सिवा कोई मालो ममलूक न था इस लिये ह़ज़रते अस्मा घर के काम के इ़लावा घोड़े के लिये घास लातीं और ऊंट को खजूर की गुठलियां कूट कर खिलातीं। चुनान्चे, आप बयान फ़रमाती हैं कि मैं उस ज़मीन से जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (हिजरत के बा'द अम्वाले बनी नज़ीर में से) ह़ज़रते ज़ुबैर को अ़त़ा फ़रमाई थी और जो मेरे मकान से दो मील के फ़ासिले पर थी खजूर की गुठलियां अपने सर पर लाद कर लाया करती थी। एक रोज़ मैं आ रही थी और गुठलियां मेरे सर पर थीं। इस ह़ालत में मेरी नज़र रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पड़ी। आप के साथ अन्सार की एक जमाअ़त थी। आप ने मुझे आवाज़ दी और ऊंट को बिठा दिया ताकि

---

1 ......(اُش۔ٹ۔خان) पहलू की हड्डी या'नी पस्ली।

2 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب من اخف الصلاۃ عند بکاء الصبی، الحدیث:۷۰۷، ج۱، ص۲۵۳۔علمیه

3 ......अ़रब शुतर बानों का नग़्मा।

4 ......صحیح البخاری، کتاب الادب، الحدیث:۶۱۶۱، ج۴، ص۱۴۴۔علمیه

5 ......आब पाशी के लिये पानी ले जाने वाला ऊंट।

www.dawateislami.net

मुझे अपने पीछे सुवार कर लें। मैं मर्दों के साथ चलने से शर्मा गई। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आगे तशरीफ़ ले गए। कुछ अ़र्से के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक ख़ादिमा मेरे पास भेज दी जो घोड़े की ख़िदमत किया करती थी। इस त़रह़ सिद्दीक़े अक्बर ने मुझ को गोया ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया।[1]

सह़ीह़ मुस्लिम की दूसरी रिवायत में ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि "मैं ह़ज़रते ज़ुबैर के हां घर का काम किया करती थी उन का एक घोड़ा था जिस की निगहबानी मेरे ज़िम्मे थी। घोड़े की निगहबानी से ज़ियादा सख़्त और कोई ख़िदमत न थी मैं उस के लिये घास लाती, उस की ख़िदमत व निगहबानी करती।" कुछ अ़र्से के बा'द आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ग़ुलाम आए। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ख़ादिमा ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अ़त़ा फ़रमाई जो घोड़े की ख़िदमत किया करती थी।[2] हर दो रिवायत में वज्हे तत़बीक़ यूं है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह बांदी ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हां भेज दी ताकि वोह ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास भेज दें।

औ़रतों के हु़क़ूक़

इस्लाम में अज़ रूए क़ुरआनो ह़दीस औ़रतों के हु़क़ूक़ साबित हैं।

चुनान्चे, बारी तआ़ला عَزَّاِسْمُہٗ का इरशाद है :

وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ وَلِلرِّجَالِ عَلَیْهِنَّ دَرَجَةٌ ؕ (بقرہ، ع۲۸)

और औ़रतों का (मर्दों पर) ह़क़ है जैसा कि (मर्दों का) औ़रतों पर है साथ इन्साफ़ के और मर्दों को उन पर दरजा (फ़ौक़िय्यत) है।[3]

इस आयत से ज़ाहिर है कि औ़रतों के मर्दों पर हु़क़ूक़ हैं जैसा कि मर्दों के औ़रतों पर हैं। इज़्दिवाजी ज़िन्दगी में निबाह न होने की सूरत में अगर मर्द को त़लाक़ का ह़क़ है तो दूसरी त़रफ़ औ़रत को ख़ुलअ़ का इख़्तियार दिया गया है।

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب النکاح، باب الغیرۃ۔......(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب الغیرۃ، الحدیث:٥٢٢٤، ج٣، ص٤٦٩-٤٧٠۔علمیہ)

2 ......صحیح مسلم، باب جواز ارداف المرأۃ الاجنبیۃ اذا اعیت فی الطریق۔......(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب جواز ارداف المراۃ الاجنبیۃ...الخ، الحدیث:١٢٨٢، ص١٢٠٠۔علمیہ)

3 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और औ़रतों का भी ह़क़ ऐसा ही है जैसा उन पर है शरअ़ के मवाफ़िक़ और मर्दों को इन पर फ़ज़ीलत है। (پ٢، البقرۃ:٢٢٨) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۪ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ؕ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝ (نساء، ع ۱)

मर्दों के लिये ह़िस्सा है उस चीज़ से कि छोड़ गए हैं मां बाप और क़राबती और औ़रतों के लिये ह़िस्सा है उस चीज़ से कि छोड़ गए हैं मां बाप और क़राबती थोड़ा हो उस में से या बहुत हो । ह़िस्सा है मुक़र्रर किया हुवा ।[1]

इस आयत की रू से औ़रतें अपने मां बाप और क़राबतियों की वारिस हैं । आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के ख़ुत़बे में यूं इरशाद फ़रमाया : فَاتَّقُوا اللّٰهَ فِي النِّسَآءِ فَاِنَّكُمْ اَخَذْتُمُوْهُنَّ بِاَمَانِ اللّٰهِ[2] पस औरतों के मुआ़मले में तुम ख़ुदा से डरो क्यूंकि तुम ने उन को अ़ह्दे ख़ुदा के साथ लिया है ।[3]

एक रोज़ औ़रतों ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ किया कि आप के हां मर्दों का हर रोज़ हुजूम रहता है । आप हमारे वासिते़ एक ख़ास दिन मुक़र्रर फ़रमाएं । चुनान्चे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने औ़रतों के लिये एक दिन ख़ास कर दिया वोह उस दिन ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस होतीं । आप उन को वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाते ।[4]

۞.....हुक़ूक़ुन्निसा की तफ़्सील के लिये मुत़व्वलात[5] की त़रफ़ रुजूअ़ करना चाहिये ।

यतामा व मसाकीन व बेवगान पर शफ़्क़त व रह़मत

यतीमों और ग़रीबों पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बड़ी शफ़्क़त थी चुनान्चे, यतीम की ख़बरगीरी करने वाले का दरजा बताने के लिये आप ने अपनी अंगुश्ते सब्बाबा व वुस्त़ा[6] के दरमियान कुछ कुशादगी रख कर फ़रमाया : "मैं और यतीम का मुतकफ़्फ़िल ख़्वाह यतीम उस के रिश्तेदारों में से हो या अजनबियों में से हो बिहिश्त में यूं होंगे ।"[7]

---

1 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मर्दों के लिये ह़िस्सा है उस में से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले और औ़रतों के लिये ह़िस्सा है उस में से जो छोड़ गए मां बाप और क़राबत वाले तर्का थोड़ा हो या बहुत, ह़िस्सा है अन्दाज़ा बांधा हुवा । (پ٤،النساء:٧) **इल्मिय्या**

2 ......مشکوٰۃ، باب قصۃ حجۃ الوداع۔

3 ......مشكاة المصابيح، كتاب المناسك، باب قصة حجة الوداع، الحديث:٢٥٥٥، ج١، ص٤٧٦۔علميه

4 ......بخاری، کتاب العلم، باب ھل یجعل للنساء یوم علی حدۃ فی العلم۔......(صحيح البخارى، كتاب العلم، باب هل يجعل للنساء يوم على حدة فى العلم، الحديث:١٠١، ج١، ص٥٤۔علميه)

5 ......या'नी वोह कुतुब जिन में औ़रतों के हुक़ूक़ तफ़्सील से बयान किये गए हों ।

6 ......शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली ।

7 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیح بخاری، باب الشفقۃ والرحمۃ علی الخلق۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب الشفقة و الرحمة على الخلق، الحديث:٤٩٥٢، ج٢، ص٢١٠۔علميه)

www.dawateislami.net

हज़रते अबू उमामा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स महूज़ रज़ाए ख़ुदा के लिये किसी यतीम के सर पर हाथ फेरता है उस के लिये हर बाल के मुक़ाबले में जिस पर उस का हाथ फिरता है नेकियां हैं। और जो किसी यतीम लड़के या लड़की के साथ (जो उस की कफ़ालत में हो) नेकी करता है मैं और वोह बिहिश्त में इन दो उंगलियों (आप ने सब्बाबा व वुस्त़ा को मिला कर इशारा फ़रमाया) की मानिन्द होंगे।(1)

एक शख़्स ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मेरा दिल सख़्त है इस का इलाज क्या है ? आप ने फ़रमाया कि यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो।(2)

हज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस (ज़ौजए ह़ज़रते जा'फ़र त़य्यार) बयान करती हैं कि जिस दिन हज़रते जा'फ़र (ग़ज़्वए मौता में) शहीद हुवे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे हां क़दम रन्जा फ़रमाया : मैं उस दिन चालीस खालों की दबाग़त(3) कर चुकी थी और आटा पीस कर अपने बच्चों को नहला धुला कर तेल मल चुकी थी कि इतने में रसूलुल्लाह तशरीफ़ ले आए। फ़रमाया : अस्मा ! जा'फ़र के बच्चे कहां हैं ? मैं ने उन को हाज़िरे ख़िदमत किया। आप ने उन को सीने से लगा लिया फिर आप की आंखों में आंसू भर आए और आप रो पड़े। मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शायद आप को जा'फ़र की त़रफ़ से कुछ ख़बर आई है। फ़रमाया : हां वोह आज शहीद हो गए। येह सुन कर मैं चिल्लाने लगी, औ़रतें जम्अ़ हो गईं। फ़रमाने लगे : अस्मा ! लग्व न बोल और सीना न पीट। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ ले गए। वोह बोलीं : हाए चचा ! आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जा'फ़र जैसे पर औ़रतों को रोना चाहिये।(4)

बेवगान व मसाकीन की ख़बर गीरी का सवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं बयान फ़रमाया : "बेवगान व मसाकीन पर ख़र्च करने वाला राहे ख़ुदा (जिहाद व ह़ज) में ख़र्च करने वाले की मानिन्द है।"(5)

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ احمد وترمذی، باب الشفقۃ۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب الشفقة و الرحمة على الخلق، الحديث: ٤٩٧٤، ج٢، ص٢١٣۔علميه)

2 ......مشکوٰۃ بحوالہ احمد، باب الشفقۃ۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب الشفقة و الرحمة على الخلق، الحديث: ٥٠٠١، ج٢، ص٢١٧۔علميه)

3 ......कच्चे चमड़े को पकाना, साफ़ करना और रंगना।

4 ......طبقات ابن سعد، جزء ثانی، ص ا۔......(الطبقات الكبرى لابن سعد، ٤٢٢٩۔اسماء بنت عميس، ج٨، ص٢٢٠۔علميه)

5 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، باب الشفقۃ۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب الشفقة و الرحمة على الخلق، الحديث: ٤٩٥١، ج٢، ص٢١٠۔علميه)

www.dawateislami.net

हज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّ اَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَّ احْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ खुदाया ! मुझे मिस्कीन ज़िन्दा रख और मुझे मिस्कीन मौत दे और क़ियामत के दिन ग़रीबों के गुरोह में मेरा ह़श्र कर । हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह क्यूं ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह दौलत मन्दों से चालीस साल पहले बिहिश्त में जाएंगे । ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) किसी मिस्कीन को अपने दरवाज़े से ना मुराद न फेरना गो निस्फ़ ख़ुर्मा[1] ही क्यूं न हो । ऐ आ़इशा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ग़रीबों से मह़ब्बत रख और उन को अपने से नज़्दीक कर खुदा तुझे क़ियामत के दिन अपने से नज़्दीक करेगा ।[2]

बच्चों पर शफ़्क़त व रह़मत

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बच्चों पर निहायत शफ़्क़त फ़रमाते थे । बच्चे आप की ख़िदमत में ब ग़रज़े दुआ़ व तह़नीक[3] लाए जाते थे । एक रोज़ उम्मे क़ैस बिन्ते मोह़सिन अपने शीर ख़्वार बच्चे को ख़िदमते अक़्दस में लाई । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे को अपनी गोद में बैठा लिया उस ने आप के कपड़े पर पेशाब कर दिया । आप ने उस पर पानी बहा[4] दिया और कुछ न कहा ।[5]

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बच्चों को चूमते और प्यार करते थे । एक रोज़ आप ह़ज़रते ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को चूम रहे थे, अक़रअ़ बिन ह़ाबिस तमीमी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे थे, देख कर कहने लगे कि मेरे दस लड़के हैं, मैं ने उन में से किसी को नहीं चूमा । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जो रह़्म नहीं करता उस पर रह़्म नहीं किया जाता ।”[6] एक बद्दू[7] रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आ कर कहने लगा कि तुम बच्चों को चूमते

---

1 ......आधी खजूर ।

2 ......ترمذی،ابواب الزہد......(سنن الترمذی، کتاب الزھد،باب ماجاء ان فقراء المھاجرین...الخ، الحدیث:۲۳۵۹،ج٤، ص١٥٧۔علمیه)

3 ......कोई चीज़ मसलन खजूर चबा कर उसे बच्चे के तालू में लगा देना तह़नीक कहलाता है । सह़ाबए किराम ब ग़रज़े तह़नीक अपने बच्चों को बारगाहे रिसालत में लाते ताकि सब से पहले आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़ब मुबारक उन के शिकम में पहुंचे ।

4 ......صحیح بخاری،کتاب الوضوء،باب بول الصبیان۔

5 ......صحیح البخاری، کتاب الوضوء،باب بول الصبیان،الحدیث:٢٢٣،ج١،ص٩٨۔علمیه

6 ......صحیح البخاری، کتاب الادب،باب رحمة الولد...الخ،الحدیث:٥٩٩٧،ج٤،ص١٠٠۔علمیه

7 ......देहाती ।

www.dawateislami.net

हो हम नहीं चूमते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब **अल्लाह** तुम्हारे दिल से रहमत निकाल ले तो मैं क्या कर सकता हूं ?"(1)

हज़रते जाबिर बिन समुरह बयान करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़े ज़ोहर पढ़ी, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर आप दौलत ख़ाने को तशरीफ़ ले गए, मैं आप के साथ हो लिया, रास्ते में बच्चे मिले, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर एक के रुख़्सारों पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और मेरे रुख़्सारों पर भी फेरा, मैं ने आप के दस्ते मुबारक की ठन्डक या ख़ुश्बू ऐसी पाई कि गोया आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक अ़त्तार के सन्दूक़्चे में से निकाला था।(2) जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र बच्चों पर होता तो उन को सलाम किया करते थे।(3)

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी सफ़र से तशरीफ़ लाते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत के बच्चे ख़िदमत शरीफ़ में लाए जाते। एक दफ़्आ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी सफ़र से तशरीफ़ लाए तो पहले मुझे ख़िदमत शरीफ़ में ले गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने आगे सुवार कर लिया फिर हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दो लड़कों में से एक लाए गए, आप ने उन को अपने पीछे सुवार कर लिया इस त़रह़ तीनों एक सुवारी पर दाख़िले मदीना हुवे।(4)

फ़त्हे मक्का के दिन जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का में तशरीफ़ लाए तो हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादों क़ुसम और फ़ज़्ल को अपनी सुवारी पर आगे पीछे बिठा लिया।(5)

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب رحمۃ الولد وتقبیلہ۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب رحمة الولد و تقبيله و معانقته، الحديث:٥٩٩٨، ج٤، ص١٠٠ ـ علميه)

2 ......صحیح مسلم، طیب ریحہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(صحيح مسلم، كتاب الفضائل، باب طيب رائحة النبی...الخ، الحديث:٢٣٢٩، ص١٢٧١ ـ علميه)

3 ......صحیح بخاری، کتاب الاستیذان، باب التسلیم علی الصبیان۔......(صحيح البخاری، كتاب الاستيذان، باب التسليم على الصبيان، الحديث:٦٢٤٧، ج٤، ص١٧٠ ـ علميه)

4 ......مشکوہ بحوالہ مسلم، باب آداب السفر۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الجهاد، باب آداب السفر، الحديث:٣٩٠٠، ج٢، ص٤١ ـ علميه)

5 ......صحیح بخاری، باب الثلثۃ علی الدابۃ۔......(صحيح البخاری، كتاب اللباس، باب حمل صاحب الدابة غيره بين يديه، الحديث:٥٩٦٦، ج٤، ص٩١ ـ علميه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ बिन अ़म्र गिफ़ारी के चचा बयान करते हैं कि मैं लड़कपन में अन्सार के नख़्लिस्तान में जाता और दरख़्तों पर ढेले मारता, मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गए, आप ने पूछा : लड़के ! तू दरख़्तों पर ढेले क्यूं मारता है ? मैं ने कहा : खजूरें खाने के लिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ढेले न मारा करो खजूरें जो नीचे गिरी हों खा लिया करो। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर दस्ते शफ़्क़त फेरा और यूं दुआ़ फ़रमाई : "ख़ुदाया ! इस का पेट भर दे।"(1)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि फ़स्ल का कोई फल पकता तो लोग उसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया करते, आप उस पर येह दुआ़ पढ़ा करते : "ख़ुदाया ! हमें अपने मदीने में और अपने फल में और अपने मुद में और अपने साअ़(2) में बरकत दे।" इस दुआ़ के बा'द बच्चे जो ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा करते उन में से सब से छोटे को वोह फल इनायत फ़रमाते।(3)

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि एक औ़रत मेरे पास आई उस के साथ दो लड़कियां थीं, उस ने मुझ से कुछ मांगा, उस वक़्त मेरे पास सिर्फ़ एक खजूर थी मैं ने वोही उसे दे दी, उस ने दोनों लड़कियों में तक़्सीम कर दी फिर वोह चली गई। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर तशरीफ़ लाए तो मैं ने येह क़िस्सा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ कर दिया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस शख़्स के हां लड़कियां हों और वोह उन की परवरिश अच्छी त़रह़ करे तो वोह आतशे दोज़ख़ और उस के दरमियान ह़ाइल हो जाएंगी।"(4)

---

1 ......ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب من قال انہ یاکل مما سقط۔......(سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب من قال: انه یاکل مما سقط، الحدیث:٢٦٢٢، ج٣، ص٥٥۔علمیه)

2 ......मुद और साअ़ दो पैमाने हैं।

3 ......صحیح مسلم، باب فضل المدینہ۔......(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینة...الخ، الحدیث:١٣٧٣، ص٧١٣۔علمیه)

4 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب رحمۃ الولد وتقبیلہ۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب رحمة الولد و تقبیله و معانقته، الحدیث:٥٩٩٥، ج٤، ص٩٩۔علمیه)

www.dawateislami.net

उम्मे ख़ालिद बिन्ते ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स कुरशिय्या उमवय्या के वालिदैन हिजरत कर के ह़बशा में चले गए थे। येह वहीं पैदा हुईं और लड़कपन में वहां से मदीना आ गईं। ह़ज़रते जुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ बियाही गईं जिन से एक लड़का ख़ालिद नाम पैदा हुवा, इस सबब से उन की कुन्यत उम्मे ख़ालिद हुई। उन का बयान है कि एक रोज़ मैं अपने वालिद के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई, ज़र्द रंग का कुर्ता मेरे बदन पर था आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देख कर फ़रमाया : सनह सनह[1] (ह़बशी ज़बान में ह़सना को कहते हैं) मैं ख़ातिमे नबुव्वत से खेलने लगी, मेरे बाप ने मुझे झिड़क दिया, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खेलने दो। फिर तीन बार फ़रमाया : तू इस को पहन कर पुराना करे।[2]

उम्मे ख़ालिद ही बयान करती हैं कि एक दफ़्आ़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कपड़े आए उन में एक सियाह चादर थी जिस में दोनों त़रफ़ आंचल थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ाज़िरीन से पूछा कि येह चादर किस को ओढ़ाऊं ? किसी ने जवाब न दिया। आप ने फ़रमाया : उम्मे ख़ालिद को लाओ। मुझे ले गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से वोह चादर मुझे ओढ़ाई और दो दफ़्आ़ फ़रमाया : "तू इसे पहन कर पुरानी करे।" आप चादर की बूटियां देख रहे थे और हाथ मुबारक से मेरी त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाते थे : "उम्मे ख़ालिद ! येह सनह है। उम्मे ख़ालिद ! येह सनह है।" सनह ह़बशी ज़बान में ह़सन (अच्छे) को कहते हैं।[3]

ग़ज़वात में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिदायत थी कि बच्चों, औ़रतों और बूढ़ों को क़त्ल न करना। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे बा जूद लड़कियों के लिये ख़ुसूसिय्यत से रह़मत था। ज़मानए जाहिलिय्यत में बा'ज़े अ़रब अफ़्लास के डर से लड़कियों को ज़िन्दा दरगोर कर देते थे चुनान्चे, एक शख़्स ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि हम अहले जाहिलिय्यत व बुत परस्त थे अपनी अवलाद को मार डालते थे। मेरे हां एक लड़की

---

1 ......अच्छा है।

2 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب من ترک صبیۃ غیرہ حتی تلعب بہ۔......(صحيح البخاری، كتاب الادب، باب من ترك صبية غيره... الخ، الحديث: ٥٩٩٣، ج٤، ص٩٩۔علميه)

3 ......صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب مایدعی لمن لبس ثوباً جدیداً۔......(صحيح البخاری، كتاب اللباس، باب مايدى لمن لبس ثوباً جيداً، الحديث: ٥٨٤٥، ج٤، ص٦٣۔علميه)

www.dawateislami.net

थी मैं ने उसे बुलाया वोह ख़ुशी ख़ुशी मेरे पीछे हो ली जब मैं नज़्दीक ही अपने अहल के एक कूंएं पर पहुंचा तो मैं ने उस का हाथ पकड़ कर कूंएं में गिरा दिया वोह अब्बा अब्बा कहती थी। येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू टपक पड़े आप ने फ़रमाया कि येह क़िस्सा मुझे फिर सुनाओ। उस शख़्स ने दोहराया तो आप इतना रोए कि आंसूओं से दाढ़ी मुबारक तर हो गई।(1)

अ़रब की त़रह़ हिन्द में भी दुख़्तर कुशी(2) पाई जाती थी। रूमतुल कुब्रा(3) में बच्चा कुशी की रस्म(4) ज़मानए क़दीम से जारी थी। चुनान्चे, एडवर्ड गॅबन साहिब अपनी तारीख़ में यूं रक़म त़राज़ है :

"अपने नए पैदा हुवे बच्चों के बाहर फेंक आने या क़त्ल करने की ख़ौफ़नाक रस्म जिस से क़ुदमा ख़ूब आशना थे रूमतुल कुब्रा के सूबाजात बिल ख़ुसूस इत़ालिया में रोज़ बरोज़ कसीरुल वुक़ूअ़ होती जाती थी। इस का बाइ़स अफ़्लास था और अफ़्लास के बड़े अस्बाब टेक्सों का ना क़ाबिले बरदाश्त बोझ और मुफ़्लिसे मदयूनों(5) के ख़िलाफ़ मोहूकमए माल के अफ़्सरों के तक्लीफ़ देह और बे दर्द(6) मुक़द्दमात थे। नौए़ इन्सान के कम मालदार या कम मह़नत कश ह़िस्से ने अ़याल में इज़ाफ़े की ख़ुशी मनाने की बजाए शफ़्क़ते पिदरी का मुक़्तज़ा येह समझा था कि अपने बच्चों को ऐसी ज़िन्दगी की आने वाली तक्लीफ़ों से छुड़ा दिया जाए जिसे वोह ख़ुद निबाहने के क़ाबिल न थे। क़ुस्तन्त़ीन (मुतवफ़्फ़ा 22 मई सिने 337 ईसवी) की मुरव्वत शायद मायूसी के बा'ज़ ताज़ा ग़ैर मा'मूली वाक़िआत से ह़रकत में आई कि इस ने पहले इत़ालिया फिर अफ़्रीक़ा के तमाम शहरों की त़रफ़ एक फ़रमान भेजा जिस में येह हिदायत थी कि वालिदैन अपने ऐसे बच्चे मेजिस्ट्रेटों की अ़दालतों में पेश किया करें जिन को उन का अफ़्लास ता'लीम दिलाने की इजाज़त नहीं देता उन को फ़ौरी व काफ़ी इमदाद दी जाएगी। लेकिन येह वा'दा ऐसा फ़य्याज़ाना और येह बन्दोबस्त ऐसा बे सरो पा था कि इस पर कोई आ़म या दाइमी फ़ाइदा मुतरत्तब न हुवा। येह क़ानून अगर्चे किसी क़द्र क़ाबिले तह़सीन था मगर अफ़्लासे आ़म्मा को कम करने की बजाए येह अफ़्लास के इज़्हार का ज़रीआ़ बना।"(7)

---

1 ......مسند دارمی، صفحہ اول۔......سنن الدارمی، باب ما کان علیه الناس قبل مبعث النبی...الخ، الحدیث:٢، ج١، ص١٤۔علمیه

2 ....बेटी को क़त्ल करना। 3 ....येह रूम का दारुल हुकूमत था। 4 ....बच्चे को क़त्ल कर डालने की रस्म।

5 ......मक़रूज़ों। 6 ......बे रह़म। 7 ......تنزل وزوال رومۃ الکبری، جلد اول، باب ١٤

www.dawateislami.net

येह रस्मे बद जिस का इन्सिदाद[1] किसी दुन्यवी कुव्वत से न हो सका आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से अ़रब बल्कि आहिस्ता आहिस्ता तमाम दुन्या से उठ गई।

इरशादे बारी तआ़ला عَزَّاِسْمُہٗ यूं हुवा :

وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَ اِیَّاهُمْۚ (انعام،ع۱۹)

और तुम अपने बच्चों को मुफ़्लिसी के डर से हलाक न करो हम तुम को और उन को रिज़्क़ देते हैं।[2]

وَ اِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُىٕلَتْﭪ(۸) بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْۚ(۹) (تکویر)

और जब ज़िन्दा दरगोर लड़की पूछी जाएगी कि तू किस गुनाह के बदले हलाक की गई ?[3]

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमा दिया : اِنَّ اللّٰہَ حَرَّمَ عَلَیْکُمْ عُقُوْقَ الْاُمَّھَاتِ وَ وَاْدَ الْبَنَاتِ (مشکوٰۃ، باب البر والصلۃ) **अल्लाह** ने तुम पर ह़राम फ़रमा दिया माओं की ना फ़रमानी और लड़कियों को ज़िन्दा दरगोर करना।

औ़रतें जिन चीज़ों पर आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त किया करती थीं उन में से एक येह थी :

وَلَا یَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ (ممتحنہ،ع۲)

वोह अपने बच्चों को हलाक न किया करेंगी।[4]

गुलामों पर शफ़्क़त व रह़मत

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुलामों के आज़ाद करने को मूजिबे नजात फ़रमाया है चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : "जो कोई किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद करता है उस गुलाम के हर उ़ज़्व के मुक़ाबले में **अल्लाह** तआ़ला उस का एक उ़ज़्व दोज़ख़ की आग से आज़ाद करता है।"[5] इलावा अज़ीं कफ़्फ़ारात में जा बजा गुलाम आज़ाद करना वाजिब रखा गया है।

1 ......रोक थाम

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपनी अवलाद क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के बाइस, हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे। (پ۸،الانعام:۱۵۱) **इल्मिय्या**

3 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब ज़िन्दा दबाई हुई से पूछा जाए किस ख़ता पर मारी गई ? (پ۳۰،التکویر:۸۔۹) **इल्मिय्या**

4 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और न अपनी अवलाद को क़त्ल करेंगी। (پ۲۸،الممتحنۃ:۱۲) **इल्मिय्या**

5 ......مشکوٰۃ،کتاب العتق۔......(مشکاۃ المصابیح،کتاب العتق،الفصل الاول،الحدیث:۳۳۸۲،ج۱،ص۶۲۱۔علمیہ)

www.dawateislami.net

इस्लाम में गुलामों के हुक़ूक़ का ख़ास लिहाज़ है चुनान्चे, आं हज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तुम्हारे गुलामों में जो तुम्हारे मुवाफ़िक़ हो उसे खिलाओ उस में से जो तुम खाते हो और पहनाओ उस में से जो तुम पहनते हो और उन में से जो तुम्हारे मुवाफ़िक़ न हो उसे बेच दो और ख़ल्क़े ख़ुदा को अ़ज़ाब न दो।[1]

हज़रते अबू मसऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि मैं अपने गुलाम को मार रहा था कि मैं ने अपने पीछे से येह आवाज़ सुनी : "अबू मसऊ़द ! जान लो कि तुम को जिस क़दर इस गुलाम पर इख़्तियार है उस से ज़ियादा ख़ुदा को तुम पर इख़्तियार है।" मैं ने मुड़ कर जो देखा तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे। मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने इस को रज़ाए ख़ुदा के लिये आज़ाद कर दिया। आप ने फ़रमाया : "देखो ! अगर तुम ऐसा न करते तो दोज़ख़ की आग तुम को जलाती।"[2]

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मैं ने एक अ़जमी गुलाम को बुरा भला कहा। उस ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शिकायत कर दी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू ज़र ! तुम में जाहिलिय्यत है, वोह तुम्हारे भाई हैं, ख़ुदा ने तुम को उन पर फ़ज़ीलत दी है, उन में से जो तुम्हारे मुवाफ़िक़ न हो उसे बेच दो, और ख़ल्क़े ख़ुदा को अ़ज़ाब न दो।"[3]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम ख़ादिम को कितनी बार मुआ़फ़ कर दिया करें ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे। उस ने दूसरी बार दरयाफ़्त किया फिर भी आप ख़ामोश रहे। तीसरी बार दरयाफ़्त करने पर फ़रमाया कि हर रोज़ सत्तर बार मुआ़फ़ कर दिया करो।[4]

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ احمد وابوداؤد، باب النفقات وحق المملوک۔......(مشکاة المصابیح، کتاب النکاح، باب النفقات و حق المملوك، الحدیث:٣٣٦٩، ج٢، ص٦١٧۔علمیه)

2 ......مشکوٰۃ بحوالہ مسلم، باب النفقات وحق المملوک۔......(مشکاة المصابیح، کتاب النکاح، باب النفقات و حق المملوك، الحدیث: ٣٣٥٣، ج١، ص٦١٦۔علمیه)

3 ......دیکھو ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی حق المملوک۔......(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حق المملوك، الحدیث:٥١٥٧، ج٤، ص٤٣٧۔علمیه)

4 ......دیکھو ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی حق المملوک۔......(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حق المملوك، الحدیث:٥١٦٤، ج٤، ص٤٣٩۔علمیه)

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि जो शख़्स अपने ग़ुलाम के मुंह पर थप्पड़ मारे उस का कफ़्फ़ारा येह है कि उसे आज़ाद कर दे। ह़ज़रते सुवैद बिन मुक़र्रिन बयान करते हैं कि हम सात भाई थे, हमारे हां सिर्फ़ एक ख़ादिमा थी, हम में से एक ने उस के मुंह पर थप्पड़ मारा, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से कहा कि ख़ादिमा को आज़ाद कर दो ! उन्हों ने कहा कि हमारे हां सिर्फ़ येही एक ख़ादिमा है। आप ने फ़रमाया कि वोह ख़िदमत करती रहे यहां तक कि बे नियाज़ हो जाएं जब ज़रूरत न रहे तो उसे आज़ाद कर दें।(1)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुलामों की बेहबूदी का इस क़दर ख़याल था कि जब वफ़ात शरीफ़ का वक़्त ऐन क़रीब आ पहुंचा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं वसिय्यत फ़रमा रहे थे : اَلصَّلٰوةُ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ नमाज़ और ग़ुलाम।(2)

चौपायों पर शफ़्क़त व रह़मत

इन्सान तो दर किनार चौपायों पर भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़्क़त थी एक रोज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक अन्सारी के बाग़ में दाख़िल हुवे क्या देखते हैं कि वहां एक ऊंट है जब उस ऊंट ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो रो पड़ा और उस की दोनों आंखों से आंसू बहने लगे। आप उस के पास आए और उस के पसे गोश पर हाथ फेरा वोह चुप हो गया। आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस ऊंट का मालिक कौन है ? एक अन्सारी ने अ़र्ज़ किया कि येह ऊंट मेरा है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तू इस चौपाए के बारे में जिस का **अल्लाह** ने तुझ को मालिक बनाया है ख़ुदा से नहीं डरता ! इस ने मेरे पास शिकायत की है कि तू इसे भूका रखता है और कसरत से तक्लीफ़ देता है।(3)

---

1 ......تیسیر الوصول الی جامع الاصول بحوالہ ابوداؤد......(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حق المملوك، الحدیث:٥١٦٧، ج٤، ص٤٤٠ـ علمیه)

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الوصایا، باب هل اوصی رسول الله صلی الله علیه وآله وسلم، الحدیث:٢٦٩٧، ج٣، ص٣٠٢ـ علمیه

3 ......تیسیر الوصول الی جامع الاصول بحوالہ ابوداؤد......(سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب ما یؤمر به من القیام... الخ، الحدیث:٢٥٤٩، ج٣، ص٣٢ـ علمیه)

www.dawateislami.net

एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र एक ऊंट पर हुवा जिस की पीठ (भूक और प्यास के सबब से) पेट से लगी हुई थी। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इन बे ज़बान चौपायों के बारे में **अल्लाह** से डरो तुम इन पर सुवार हो दर आं ह़ाल येह कि लाइक़ (सुवारी के) हों और इन को छोड़ो दर आं ह़ाल येह कि लाइक़ (फिर सुवार होने के) हों।"(1)

एक दफ़्आ़ एक गधे पर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा जिस के चेहरे पर दाग़ दिया हुवा था। आप ने फ़रमाया : "ला'नत करे **अल्लाह** उस शख़्स को जिस ने इसे दाग़ दिया है।"(2)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम अपने चौपायों की पीठों को मिम्बर न बनाओ क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने उन को तुम्हारे ताबेअ़ किया है ताकि वोह तुम को ऐसे शहरों में पहुंचा दें जहां तुम बिग़ैर मशक़्क़ते जान न पहुंचते और तुम्हारे वासिते ज़मीन बनाई पस उस पर अपनी ह़ाजतें पूरी करो।"(3)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आदाबे सफ़र में फ़रमाया है कि जब फ़राख़ साली हो और घास ब कसरत हो तो तुम सफ़र में दिन को किसी वक़्त ऊंटों को छोड़ दिया करो ताकि वोह चर लें और जब क़ह़्त़ साली हो तो उन को तेज़ चलाओ ताकि वोह अच्छी ह़ालत में मन्ज़िले

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ ابوداؤد، باب النفقات وحق المملوک۔

(مشكاة المصابيح، كتاب النكاح، باب النفقات وحق المملوك، الحديث: ٣٣٧٠، ج٢، ص٦١٨۔علمیہ)

ह़कीमुल उम्मत मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मिरआत में फ़रमाते हैं : "या'नी जो जानवर सुवारी के लाइक़ हो उस पर सुवार हो, बीमार और कमज़ोर, छोटे बच्चे पर सुवारी न करो न बोझ लादो।" और "इन को छोड़ दो" के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस जुम्ले के दो मत़लब हो सकते हैं एक येह कि जानवर को बिल्कुल थका कर न छोड़ो बल्कि अभी उस में क़ुव्वत हो कि उसे खोल दो कि वोह दाना पानी खा पी लें इस से जानवर की तन्दुरुस्ती और क़ुव्वत ख़राब न होगी, दूसरे येह कि जानवर को बूढ़ा नाकारा कर के मेह़नत से आज़ाद न करो बल्कि अभी उस में कुछ त़ाक़त हो कि उस से काम लेना मौक़ूफ़ कर दो।" (मिरआतुल मनाजीह़, नफ़्क़ात का बयान, जि. 5, स. 171)। **इल्मिय्या**

2 ......مشکوٰۃ بحوالہ مسلم، کتاب الصید والذبائح۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الصيد والذبائح، الفصل الاول، الحديث: ٤٠٧٨، ج٢، ص٧٥۔علميه)

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ ابوداؤد، باب آداب السفر۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الجهاد، باب آداب السفر، الحديث: ٣٩١٦، ج٢، ص٤٣۔علميه)

www.dawateislami.net

मक़्सूद पर पहुंच जाएं। ऐसा न हो कि ब सूरते ताख़ीर वोह भूक के मारे कमज़ोर हो कर रास्ते ही में रह जाएं और जब तुम आख़िर शब में किसी जगह उतरो तो रास्ता छोड़ कर डेरा डालो क्यूंकि रात के वक़्त चौपाए और ह़शरातुल अर्ज़ रास्तों में फिरा करते हैं।(1) और खाने की गिरी पड़ी चीज़ें और हड्डियां वग़ैरा जो रास्ते में हों खाया करते हैं।(2)

ह़ज़रते अबू वाक़िद लैसी रिवायत करते हैं कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए और लोग ऊंटों की कोहान और भेड़ बकरी की सुरीन का गोश्त (खाने के लिये) काट लिया करते थे। आप ने फ़रमाया कि जो गोश्त किसी ज़िन्दा चौपाए से काटा जाए वोह मुर्दार है खाना न चाहिये।(3)

ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक औ़रत एक बिल्ली के सबब से दोज़ख़ में गई जिसे उस ने बांध रखा और खाना न खिलाया और न छोड़ा ताकि ह़शरातुल अर्ज़ को खाती।(4)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि एक शख़्स रास्ते में चल रहा था उसे सख़्त प्यास लगी एक कुंवां नज़र पड़ा तो उस में उतर कर उस ने पानी पिया फिर निकल आया नागाह उस ने एक कुत्ता देखा जो प्यास के मारे ज़बान निकाले हुवे था और मिट्टी खा रहा था उस शख़्स ने सोचा कि इस कुत्ते को प्यास से वैसी ही तक्लीफ़ है जैसी मुझे थी इस लिये वोह कूंएं में उतरा और अपना मोज़ा पानी से भरा फिर उसे अपने मुंह से पकड़ा यहां तक कि ऊपर चढ़ आया और कुत्ते को पानी पिलाया ख़ुदा ने उस की क़द्र दानी की और उसे बख़्श दिया। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया :

---

1 ......صحیح مسلم، باب مراعات مصلحۃ الدواب فی السیر۔

2 ......صحيح مسلم، كتاب الامارة، باب مراعاة مصلحة الدواب فی السير...الخ، الحديث:١٩٢٦، ص١٠٦٣۔علميه

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی وابوداؤد، کتاب الصید والذبائح۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الصيد و الذبائح، الفصل الثانی، الحديث: ٤٠٩٥، ج٢، ص٧٧۔علميه)

4 ......تیسیر الوصول بحوالہ بخاری ومسلم۔......(صحيح البخارى، كتاب بدء الخلق، باب خمس من الدواب فواسق...الخ، الحديث: ٣٣١٨، ج٢، ص٤٠٨۔علميه)

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या चौपायों में हमारे वासिते़ कुछ अज्र है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हर ज़ी रूह़ में अज्र है।(1)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़्क़ते आ़म्मा का मुक़्तज़ा था कि आप ने चौपायों को बाहम लड़ाने(2) किसी जानवर को निशाना बनाने(3) किसी चौपाए या जानवर को हलाक करने के लिये ह़ब्स(4) करने(5) और ह़ैवान को मुस्ला(6) बनाने से मन्अ़ फ़रमा दिया।

परन्दों और ह़शरातुल अर्ज़ पर शफ़्क़त व रह़मत

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान के वालिद अ़ब्दुल्लाह बयान करते हैं कि हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे। आप क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए हम ने एक परन्दा (ज़ोरक)(7) को देखा जिस के साथ उस के दो बच्चे थे हम ने दोनों बच्चों को पकड़ लिया ज़ोरक आई और उतरने के लिये बाज़ू फैलाने लगी इतने में नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए और आप ने फ़रमाया : "इस के बच्चों को पकड़ कर इसे किस ने दुख दिया है ? इस के बच्चे इसे वापस दे दो।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक च्यूंटियों का घर देखा जिसे हम ने जला दिया था। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि इसे किस ने जलाया है ? हम ने अ़र्ज़ किया कि हम ने

---

1 ......تیسیر الوصول بحوالہ مالک و بخاری و مسلم و ابوداؤد۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب،باب رحمة الناس و البهائم،الحدیث: ٦٠٠٩،ج٤،ص١٠٣ وصحیح البخاری، کتاب المساقاة،باب فضل سقی الماء،الحدیث:٢٣٦٣،ج٢،ص٩٨۔علمیه)

2 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی و ابوداؤد، باب ذکر الکلب۔......(مشکاة المصابیح، کتاب الصید و الذبائح،باب ذکر الکلب،الحدیث: ٤١٠٣،ج٢،ص٧٩۔علمیه)

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ بخاری و مسلم، کتاب الصید والذبائح۔......(مشکاة المصابیح ، کتاب الصید و الذبائح،الفصل الاول، الحدیث: ٤٠٧٥،ج٢،ص٧٥۔علمیه)

4 ......क़ैद करने।

5 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، کتاب الصید والذبائح۔......(مشکاة المصابیح، کتاب الصید و الذبائح،الفصل الاول،الحدیث:٤٠٧٤، ج٢،ص٧٥۔علمیه)

6 ......مرقات بحوالہ احمد و شیخین و نسائی، کتاب الصید والذبائح۔......(مرقاة المفاتیح ، کتاب الصید و الذبائح،الفصل الاول ، تحت الحدیث:٤٠٧٥،ج٧،ص٦٨١۔علمیه)

7 ......चिड़या की मिस्ल एक परन्दा।

www.dawateislami.net

जलाया है। इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जाइज़ नहीं कि ख़ुदा के सिवा कोई किसी को आग का अ़ज़ाब दे।"(1)

एक रोज़ ह़ज़रते उ़स्मान बिन ह़ब्बान ने एक पिस्सू पकड़ कर आग में डाल दिया। इस पर ह़ज़रते उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : मैं ने अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सुना है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आग के मालिक (ख़ुदा) के सिवा कोई किसी को आग का अ़ज़ाब न दे।"(2)

आ़मिर तीर अन्दाज़ से रिवायत है कि हम नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में थे, नागाह एक शख़्स आया जिस पर कम्बल था और उस के हाथ में कोई चीज़ थी जिस पर उस ने कम्बल लपेटा हुवा था, उस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दरख़्तों के जंगल में मेरा गुज़र हुवा मैं ने उस में एक परन्दे के बच्चों की आवाज़ें सुनीं मैं ने उन को पकड़ लिया और अपने कम्बल में रख लिया उन की मां आई और मेरे सर पर मन्डलाने लगी मैं ने कम्बल को बच्चों पर से दूर कर दिया वोह उन पर गिर पड़ी मैं ने उन सब को अपने कम्बल में लपेट लिया और वोह येह मेरे पास हैं। आप ने फ़रमाया : इन को रख दे। मैं ने उन को रख दिया मगर उन की मां ने उन का साथ छोड़ने से इन्कार किया। आप ने फ़रमाया : क्या तुम बच्चों पर मां के रह़्म करने पर तअ़ज्जुब करते हो ? उस ज़ात की क़सम ! जिस ने मुझे ह़क़ दे कर भेजा है, तह़क़ीक़ **अल्लाह** अपने बन्दों पर इन बच्चों की मां से बढ़ कर रह़्म करने वाला है तू इन को वापस ले जा और इन को मां समेत वहीं रख दे जहां से इन्हें पकड़ा है। पस वोह उन को वापस ले गया।(3)

नबातात व जमादात पर रह़मत

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मत से जमादात व नबातात को भी ह़िस्सा मिला है। आप की बिअ़्सत से ज़मीन शिर्क व कुफ़्र की नजासत से पाक हुई और नूरे ईमान चारों

1 ...... مشکوٰۃ بحوالہ ابوداوٗد، باب قتل اہل الردۃ۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الديات، باب قتل اهل الردة...الخ، الحديث:٣٥٤٢، ج١، ص٦٤٨۔علميه)

2 ...... مرقات بحوالہ مسند بزار، جزء رابع، ص۲۳۶۔......(مرقاة المفاتيح، كتاب الجهاد، باب القتال فى الجهاد، تحت الحديث: ٣٩٥٣، ج٧، ص٤٩٨۔علميه)

3 ...... مشکوٰۃ بحوالہ ابوداوٗد۔ ......(مشكاة المصابيح، كتاب الدعوات، باب سعة رحمة الله، الحديث: ٢٣٧٧، ج١، ص٤٤٣۔علميه)

www.dawateislami.net

त़रफ़ फैल गया। मस्जिदें ता'मीर होने लगीं, और अज़ान में **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम पुकारा जाने लगा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तवल्लुद होने के बा'द आस्मान पर शयात़ीन का जाना बन्द हो गया।

जब इमसाके बारां[1] होता तो लोग हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला पकड़ कर दुआ़ किया करते और वोह मुस्तजाब हो जाती या हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद दुआ़ फ़रमाया करते और बाराने रह़मत नाज़िल होता जिस से मुर्दा ज़मीन फिर ज़िन्दा हो जाती और नबातात उगते।

ग़रज़ आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रह़मत से दोनों आ़लम को ह़िस्सा पहुंचा है। इन्सान के इ़लावा जिन्नात भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत से दौलते ईमान से मुशर्रफ़ हुवे, फ़िरिश्ते आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने के सबब से मोरिदे रह़मते इलाही बने रहते हैं क्यूंकि ह़दीसे मुस्लिम में है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो कोई मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है **अल्लाह** उस पर दस बार दुरूद भेजता है।"[2]

तवाज़ोअ़ व ह़ुस्ने मुआ़शरत

बा वुजूदे उ़लू मर्तबत के आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से बढ़ कर मुतवाज़ेअ़ थे। आप की तवाज़ोअ़ का येह आ़लम था कि बारगाहे इलाही से एक फ़िरिश्ते ने ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का परवर दगार इरशाद फ़रमाता है कि अगर आप चाहें तो पैग़म्बरी के साथ बन्दगी व फ़क़्र इख़्तियार करें और अगर चाहें तो नबुव्वत के साथ बादशाहत और अमीरी ले लें। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पैग़म्बरी के साथ बन्दगी को पसन्द फ़रमाया। इस के बा'द हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक्या लगा कर खाना न खाते और फ़रमाते : "मैं खाना खाता हूं जैसे बन्दा खाया करता है और बैठता हूं जैसे बन्दा बैठा करता है।"[3]

---

1 ......ख़ुश्क साली।

2 ......صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی بعد التشھد، الحدیث:٤٠٨، ص٢١٦۔علمیه

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ شرح السنۃ، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیه واله وسلم ۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب فی اخلاقه و شمائله، الحدیث:٥٨٣٦، ج٢، ص٣٦٨۔علمیه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़सा पर टेक लगाए निकले हम आप के लिये खड़े हो गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम खड़े मत हो जैसा की अ़जमी एक दूसरे की ता'ज़ीम के लिये खड़े हो जाते हैं।(1)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक मुसलमान और एक यहूदी ने एक दूसरे को दुश्नाम दी(2) मुसलमान ने कहा : क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को तमाम जहान वालों पर बरगुज़ीदा किया। यहूदी ने कहा : क़सम है उस ज़ात की जिस ने मूसा (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को तमाम जहान वालों पर बरगुज़ीदा किया। इस पर मुसलमान ने हाथ उठा कर यहूदी के एक थप्पड़ मारा। यहूदी जनाबे पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास गया और अपना और मुसलमान का ह़ाल बयान किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मुसलमान से) फ़रमाया कि तुम मुझे मूसा पर फ़ज़ीलत न दो क्यूंकि लोग (क़ियामत के दिन) बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे मैं सब से पहले होश में आऊंगा नागाह मूसा अ़र्श की एक त़रफ़ को पकड़े हुवे होंगे। मुझे मा'लूम नहीं कि वोह उन में से होंगे जो बेहोश हुवे और फिर होश में आए या उन में से होंगे जो बेहोश होने से मुस्तसना रहे।(3)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा कहने लगा : "या ख़ैरल बरिय्या" ऐ बेहतरीन ख़ल्क़ ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ख़ैरल बरिय्या" तो इब्राहीम (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) हैं।"(4)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अश्शिख़्ख़ीर बयान करते हैं कि मैं बनू आ़मिर के वफ़्द में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा, हम ने कहा : आप हमारे आक़ा हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आक़ा ख़ुदा है।" पस हम ने कहा कि आप

---

1 ......مشکوٰۃ، کتاب الآداب، باب القیام۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب القیام، الحدیث: ٤٧٠٠، ج٢، ص١٧٣۔علمیہ)

2 ......बुरा भला कहा।

3 ......صحیح بخاری، کتاب الانبیاء، باب اِذْقَالَ مُوْسٰی لِقَوْمِہٖۤ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُکُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَۃً۔ (الآیۃ)......(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب وفاۃ موسی و ذکرہ بعد، الحدیث: ٣٤٠٨، ج٢، ص٤٤٤۔علمیہ)

4 ......مشکوٰۃ بحوالہ مسلم، باب المفاخرۃ والعصبیۃ۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب المفاخرۃ و العصبیۃ، الحدیث: ٤٨٩٦، ج٢، ص٢٠٢۔علمیہ)

www.dawateislami.net

फ़ज़्लो करम में हम सब से अफ़्ज़लो आ'ज़म हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम येह कहो या इस से भी कम कहो, देखना ! शैत़ान तुम्हें अपना वकील न बना ले।(1)

अ़दी बिन ह़ातिम त़ाई पहले ईसाई थे जो अपनी क़ौम के सरदार थे और ग़नीमत में से हस्बे क़ाइदए जाहिलिय्यत चौथा हिस्सा लिया करते थे जब उन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत की ख़बर पहुंची तो वोह भाग कर मुल्के शाम को चले गए। उन की बहन पीछे रह गई और गिरिफ़्तार हो कर बारगाहे रिसालत में आई उस ने अ़र्ज़ किया कि आप मुझ पर एह़सान कीजिये खुदा तआ़ला आप पर एह़सान करेगा। चुनान्चे, आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे ख़ूराक व पोशाक और सुवारी दे कर उस की क़ौम के एक क़ाफ़िले के साथ रवाना फ़रमा दिया वोह शाम में अपने भाई के पास पहुंच गई। अ़दी को शक था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बादशाह हैं या पैग़म्बर ? बहन ने मश्वरा दिया कि तुम खुद ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर देख आओ। चुनान्चे, अ़दी यूं बयान करते हैं कि जब मैं मदीने पहुंचा तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे। मैं ने सलाम अ़र्ज़ किया। आप ने पूछा कि तुम कौन हो ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं अ़दी बिन ह़ातिम त़ाई हूं। येह सुन कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और मुझे अपने घर ले चले। नागाह एक मिस्कीन बुढ़िया किसी ह़ाजत के लिये ह़ाज़िरे ख़िदमत हुई वोह कहने लगी : ठहरिये ! चुनान्चे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ठहर गए और वोह देर तक कुछ अ़र्ज़ करती रही येह देख कर मैं ने अपने दिल में कहा कि येह बादशाह नहीं हैं फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अपने घर ले गए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक तक्या जो खजूर की छाल से भरा हुवा था मेरी त़रफ़ फेंका और फ़रमाया कि इस पर बैठ जाओ ! मैं ने कहा : नहीं आप इस पर तशरीफ़ रखिये। आप ने फ़रमाया कि तुम ही इस पर बैठो। चुनान्चे, ह़स्बुल इरशाद मैं उस पर बैठ गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़मीन पर बैठ गए येह देख कर मैं ने अपने दिल में कहा कि बादशाह का येह ह़ाल नहीं हुवा करता। फिर आप ने फ़रमाया : अ़दी बिन ह़ातिम ! क्या तुम रकोसी(2) नहीं हो ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि हां। फिर फ़रमाया : क्या तुम ग़नीमत का चौथा हिस्सा

---

1 ......مشکوۃ شریف، کتاب الآداب، باب المفاخرۃ العصبیۃ۔ ......(مشكاة المصابيح، كتاب الآداب، باب المفاخرة و العصبية، الحديث: ٤٩٠٠، ج٢، ص٢٠٢۔علميه)

2 ......رکوسیہ گروہے است میان ترسایاں وصائبین۔۱۲منہ......

(नसारा और साइबीन के दरमियान एक फ़िर्क़ा या क़ौम है उन्हें ''रकोसिया'' कहते हैं। **इल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

नहीं लेते ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि हां। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तुम्हारे दीन में जाइज़ नहीं। मैं इस से पहचान गया कि आप पैग़म्बरे मुर्सल हैं इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अ़दी ! शायद तुम इस लिये दीने इस्लाम में दाख़िल नहीं होते कि मुसलमान ग़रीब और ता'दाद में थोड़े हैं और इन के दुश्मन बहुत और साह़िबे मुल्क व सल्त़नत हैं, मगर अ़न क़रीब मुसलमानों में माल की वोह कसरत होगी कि कोई सदक़ा लेने वाला न मिलेगा और तुम अ़न क़रीब सुन लोगे कि एक औ़रत ऊंट पर सुवार हो कर क़ादिसिय्या से मक्का में पहुंच कर बैतुल्लाह का ह़ज किया करेगी और उसे किसी का डर न होगा और तुम अ़न क़रीब सर ज़मीने बाबिल में सफ़ेद मह़ल्लात पर मुसलमानों के क़बजे़ की ख़बर सुन लोगे। येह सुन कर मैं इस्लाम लाया। ह़ज़रते अ़दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते थे कि इन तीन पेशगोइयों में से दूसरी और तीसरी पूरी हो चुकी है और पहली पूरी हो कर रहेगी।(1)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब को मद्ह़ में मुबालग़ा करने से रोकते और फ़रमाते : मेरी मद्ह़ में तुम मुबालग़ा न करो जैसा कि नसारा ने इब्ने मरयम की मद्ह़ में किया, मैं **अल्लाह** का बन्दा हूं, मुझे **अल्लाह** का बन्दा और **अल्लाह** का रसूल कहा करो।(2)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अहले ख़ाना व ख़ुद्दाम और अस्ह़ाब से निहायत तवाज़ोअ़ से पेश आया करते, अपने दौलत ख़ाने में अहले ख़ाना के कारोबार किया करते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी खाने को ऐब न लगाया, ख़्वाहिश होती तो खा लेते वरना छोड़ देते। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दस साल तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की इस अ़र्से में आप ने कभी उन को उफ़ न कहा और न यूं फ़रमाया कि फ़ुलां काम क्यूं किया और फ़ुलां क्यूं न किया ?(3)

---

1 ......سیرت ابن ہشام، امر عدی بن حاتم۔......(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، امر عدی بن حاتم، ص٥٤٣۔٥٤٤ ملخصاً۔علمیہ)

2 ......مشکوٰۃ، باب المفاخرۃ والعصبیۃ۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب المفاخرۃ و العصبیۃ، الحدیث:٤٨٩٧، ج٢، ص٢٠٢۔علمیہ)

3 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب حسن الخلق والسخاء۔......(صحیح البخاری، کتاب الاداب، باب حسن الخلق و السخاء...الخ، الحدیث:٦٠٣٨، ج٤، ص١١٠۔علمیہ)

www.dawateislami.net

जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र से[1] फ़ारिग़ होते तो अहले मदीना के ख़ादिम पानी के बरतन ले कर हाज़िर होते। आप उन में अपना दस्ते मुबारक डुबो देते[2] ताकि उन को शिफ़ा और बरकत हो। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेवाओं और मिस्कीनों के साथ चलते और उन की ह़ाजत बर आरी फ़रमाते।[3] अहले मदीना[4] की लौंडियां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ मुबारक पकड़तीं और अपने कामों के लिये जहां चाहतीं ले जातीं।[5]

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमारों की इ़यादत फ़रमाते, जनाज़े के पीछे चलते, ग़ुलामों की दा'वत क़बूल फ़रमाते, दराज़ गोश पर सुवार होते और अपने पीछे औरों को बिठा लेते। चुनान्चे, बनी क़ुरैज़ा की लड़ाई के दिन आप दराज़ गोश पर सुवार थे जिस की मुहार और पालान पोस्त[6] ख़ुरमा का था।[7] ह़ज्जतुल वदाअ़ में जिस कजावे पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुवार थे[8] जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहर में दाख़िल हुवे तो अज़ रूए तवाज़ोअ़ सरे मुबारक को इस क़दर झुका लिया कि कजावे से आ लगा।[9]

ग़ज़्वए बद्र में तीन तीन मुजाहिदों के लिये एक एक ऊंट था।[10] चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा व अबू लुबाबा अन्सारी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़दील[11] थे जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उतरने की बारी आती तो दोनों अ़र्ज़ करते कि आप न उतरें

1 ......مشکوٰۃ، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب احوال القيامة وبدء الخلق، باب في اخلاقه وشمائله، الحديث: ٥٨٠٨، ج٢، ص٣٦٤۔علميه

3 ......ज़रूरत पूरी फ़रमाते।

4 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب الکبر۔

5 ......صحيح البخاری، كتاب الادب، باب الكبر، الحديث: ٦٠٧٢، ج٤، ص١١٨۔علميه

6 ......या'नी नकील और दराज़ गोश पर रखी जाने वाली गद्दी खजूर की छाल की थी।

7 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی تواضع رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(الشمائل المحمدية للترمذی، باب ماجاء في تواضع رسول الله، الحديث: ٣١٥، ص١٩٠۔علميه)

8 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی تواضع رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم (इस की क़ीमत चार दिरहम थी।)

9 ......صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب الردف علی الحمار۔......(المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج٣، ص٤٣٤۔علميه)

10 ......سیرت ابن ہشام۔

11 ......बारी बारी ऊंट पर सुवारी करने वाले रफ़ीक़।

www.dawateislami.net

हम आप के बदले पैदल चलते हैं मगर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते कि तुम मुझ से ज़ियादा क़वी नहीं हो और मैं तुम्हारी निस्बत अज्रो सवाब से ज़ियादा बे नियाज़ नहीं हूं।(1)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ना'ले मुबारक को आप पैवन्द लगा लेते, अपने कपड़े आप सी लेते अपनी बकरी का दूध दोह लेते जब कोई आप से मिलने आता तो उस का इकराम(2) करते यहां तक कि बा'ज़ वक़्त अपनी चादर मुबारक उस के लिये बिछा देते जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी से मिलते तो पहले सलाम करते जब मुसाफ़ह़ा करते तो अपना हाथ न हटाते जब तक दूसरा शख़्स न हटाता और उस से अपना रूए मुबारक न फेरते यहां तक कि वोह फेर लेता। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ज़ानू अपने हम नशीन से आगे बढ़ा कर न बैठा करते।(3)

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का बयान है कि एक शख़्स इजाज़त ले कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास अन्दर आया आप ने उसे दरवाज़े में देखते ही फ़रमाया कि क़बीले का येह शख़्स बुरा है। जब वोह बैठ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के सामने कुशादा रूई और इम्बिसात़(4) ज़ाहिर किया जब वोह चला गया तो ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब आप ने उस शख़्स को दरवाज़े में देखा तो ऐसा फ़रमाया मगर उस के रू बरू ताज़ा रूई और इम्बिसात़ ज़ाहिर किया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! तू ने मुझे फ़ाह़िश कब पाया, क़ियामत के दिन **अल्लाह** के नज़्दीक मन्ज़िलत के लिह़ाज़ से सब से बुरा वोह शख़्स होगा जिस से लोग उस के फ़ोह़्श से बचने के लिये किनारा करते हैं।"(5)

---

1 ......طبقات ابن سعد، غزوۂ بدر۔ مشکوۃ بحوالہ شرح السنۃ، باب آداب السفر ۔......(الطبقات الکبری لابن سعد، غزوۃ بدر، ج۲، ص۱۵ ومشکاۃ المصابیح، کتاب الجھاد، باب آداب السفر، الحدیث:۳۹۱۵، ج۲، ص۴۳۔ علمیه)

2 ......इ़ज़्ज़त।

3 ......مشکوۃ بحوالہ ترمذی، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللہ تعالٰی علیه واله وسلم۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب فی اخلاقه و شمائله، الحدیث:۵۸۲۲-۵۸۲۴، ج۲، ص۳۶۶ ملتقطاً۔ علمیه)

4 ......ख़ुशी।

5 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب لم یکن النبی صلی اللہ تعالٰی علیه واله وسلم فاحشا ولا متفحشا۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لم یکن النبی فاحشاً و لا متفحشاً، الحدیث:۶۰۳۲، ج۴، ص۱۰۸۔ علمیه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ोह़्श कहने वाले न थे और न किसी पर ला'नत करने वाले और न गाली देने वाले थे। जब आप किसी पर इताब फ़रमाते तो यूं इरशाद फ़रमाते : "इसे क्या हुवा इस की पेशानी ख़ाक आलूदा हो।"(1)

एक सफ़र में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि खाने के लिये एक बकरी दुरुस्त कर लो। एक ने कहा : उस का ज़ब्ह़ करना मेरे ज़िम्मे है। दूसरे ने कहा : खाल उतारना मेरे ज़िम्मे है। एक और बोला : पकाना मेरे ज़िम्मे है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लकड़ियां चुन कर लाना मेरे ज़िम्मे है। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ किया कि येह काम हम ख़ुद कर लेते हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं जानता हूं कि तुम कर सकते हो लेकिन मुझे येह पसन्द नहीं कि मैं अपने तईं(2) तुम से मुम्ताज़ करूं क्यूंकि ख़ुदा तआ़ला उस बन्दे को पसन्द नहीं करता जो अपने साथियों से मुम्ताज़ बनता है। इस के बा'द आप लकड़ियां जम्अ़ कर के लाए।(3)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाबे किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की दिल जूई और तअ़ह्हुद(4) में कोई दक़ीक़ए फ़िरोगुज़ाश्त न फ़रमाते।(5) एक रोज़ एक शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और अपनी ह़ाजत अ़र्ज़ की वोह आप की हैबत से कांपने लगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया घबराओ मत मैं बादशाह नहीं हूं मैं एक औ़रत का बेटा हूं जो ख़ुश्क किया हुवा गोश्त खाया करती थी।(6)

एक दफ़्आ़ नजाशी शाहे ह़बशा का वफ़्द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया, आप ब ज़ाते ख़ुद उन की ख़िदमत करने के लिये खड़े हो गए। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ किया कि हम आप की त़रफ़ से ख़िदमत के लिये काफ़ी हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

---

1 ......صحیح بخاری، باب لم یکن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم فاحشا ولا متفحشا۔......(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب لم یکن النبی فاحشاً ولا متفحشاً، الحدیث:٦٠٣١، ج٤، ص١٠٨۔علمیه)

2 ......अपने आप को।

3 ......مواہب لدنیہ بحوالہ سیرت محب طبری۔......(المواهب اللدنیة مع شرح الزرقانی، الفصل الثانی فیما اکرمه اللّٰہ به...الخ، ج٦، ص٤٨۔علمیه)

4 ......वा'दा पूरा करना। 5 ......ख़ूब कोशिश फ़रमाते।

6 ......ابن ماجہ، باب القدید۔......(سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب القدید، الحدیث:٣٣١٢، ج٤، ص٣١۔علمیه)

www.dawateislami.net

फ़रमाया कि इन्हों ने अपने मुल्क में हमारे अस्ह़ाब का इकराम किया था इस लिये मुझे येही पसन्द है कि उस इकराम का बदला मैं ख़ुद दूं।[1]

ह़ज़रते क़ैस बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाए। मेरे वालिद ने आप की ख़ातिर तवाज़ोअ़ की। खाना तनावुल फ़रमाने के बा'द आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस आने लगे तो मेरे वालिद ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक दराज़ गोश तय्यार किया जिस पर कम्बल का पालान[2] था आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस पर सुवार हो गए जब चलने को हुवे तो वालिद ने मुझ से कहा : क़ैस ! तू रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जा। इस लिये मैं साथ हो लिया। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तू मेरे साथ सुवार हो जा मैं ने ब पासे अदब इन्कार कर दिया मगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "या तो सुवार हो जा या लौट जा।" इस लिये मैं वापस आ गया।[3]

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मत की दिल जूई के लिये कभी कभी ख़ुश त़बई भी फ़रमाया करते थे मगर वोह मुतज़म्मिने दरोग़ न होती थी।[4] चुनान्चे, ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक छोटा अख़्याफ़ी भाई[5] था वोह जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आता तो उस के हाथ में एक चिड़या (ममोला) होती जिस से वोह खेला करता था इत्तिफ़ाक़न वो चिड़या मर गई इस के बा'द जब वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आता तो आप ख़ुश त़बई के त़ौर पर फ़रमाते : يَا اَبَا عُمَيْرٍ مَا فَعَلَ النُّغَيْرُ या'नी ऐ अबू उ़मैर ! वोह चिड़या कहां गई ?[6]

एक रोज़ एक शख़्स ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि मुझे सुवारी इनायत कीजिये ताकि मैं उस पर सुवार हो जाऊं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तुझे ऊंटनी के

---

1 ......مواہب لدنیہ......(المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،الفصل الثاني فيما اكرمه الله به...الخ،ج٦،ص٥٠۔علميه)

2 ......दराज़ गोश पर रखी जाने वाली गद्दी।

3 ......ابوداؤد،کتاب الادب،باب کم مرة یسلم الرجل فی الاستیذان۔......(سنن ابی داود،کتاب الادب،باب کم مرة يسلم الرجل في الاستيذان،الحديث:٥١٨٥،ج٤،ص٤٤٥۔علميه)

4 ......या'नी उस में झूट शामिल न होता।

5 ......वोह भाई या बहन जिन के बाप अलग अलग और मां एक हो अख़्याफ़ी कहलाते हैं।

6 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین،کتاب الآداب،باب المزاح۔......(مشكاة المصابيح،كتاب الآداب،باب المزاح،الحديث:٤٨٨٤، ج٢،ص١٩٩۔علميه)

www.dawateislami.net

बच्चे पर सुवार करूंगा। वोह बोला : मैं ऊंटनी के बच्चे को क्या करूं ? इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऊंटनियां ही ऊंट जनती हैं।[1] या'नी हर एक ऊंट ऊंटनी का बच्चा होता है इस में तअ़ज्जुब क्या है !

इसी त़रह़ एक रोज़ एक औ़रत ने जो कुरआन पढ़ा करती थी आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप दुआ़ करें कि मैं बिहिश्त में दाख़िल होऊं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि कोई बूढ़ी औ़रत बिहिश्त में दाख़िल न होगी। उस ने इस का सबब पूछा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया क्या तू कुरआन नहीं पढ़ती इस में **अल्लाह** तआ़ला ने यूं फ़रमाया है :

اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿۳۵﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿۳۶﴾ (واقعہ،ع۱)

हम ने उन औ़रतों को ख़ास तौ़र पर पैदा किया और उन को कंवारियां बनाया।[2][3]

एक बदवी सह़ाबी ज़ाहिर नाम जो बद शक्ल थे जंगल के फल सब्ज़ी वग़ैरा आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या लाया करते थे। जब वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रुख़्सत होते तो आप शहर की चीजें कपड़ा वग़ैरा उन को दे दिया करते थे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन से मह़ब्बत थी और फ़रमाया करते थे कि ज़ाहिर हमारा रू सताई[4] है और हम इस के शहरी हैं। एक रोज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाज़ार की त़रफ़ निकले तो देखा कि ज़ाहिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी मताअ़ बेच रहे हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पीठ की त़रफ़ से जा कर उन की आंखों पर अपना दस्ते मुबारक रखा और उन को गोद में ले लिया वोह बोले : कौन है ? मुझे छोड़ दो। उन्हों ने मुड़ कर देखा तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे। पस अपनी पीठ और भी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीने से (ब ग़रज़े तबर्रुक) लिपटाने लगे। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......دیکھو مشکوٰۃ، باب المزاح اور شمائل ترمذی، باب ماجاء فی مزاح رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب،باب المزاح،الحدیث:٤٨٨٦،ج٢،ص٢٠٠ والشمائل المحمدیۃ للترمذی،باب ماجاء فی صفۃ مزاح رسول اللّٰہ،الحدیث:٢٢٨،ص١٤٢۔علمیہ)

2 ......**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने उन औ़रतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कंवारियां अपने शोहर पर प्यारियां। (پ٢٧،الواقعۃ:٣٥۔٣٦) **इल्मिय्या।**

3 ......مشکاۃ المصابیح ، کتاب الآداب، باب المزاح،الحدیث:٤٨٨٨، ج٢،ص٢٠٠ والشمائل المحمدیۃ للترمذی،باب ما جاء فی صفۃ مزاح رسول اللّٰہ،الحدیث:٢٣٠،ص١٤٤

4 ......देहाती।

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : कोई है जो ऐसे गुलाम को ख़रीदे। वोह बोले : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर आप बेचते हैं तो आप मुझे कम क़ीमत पाएंगे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तू ख़ुदा के नज़्दीक गिरां क़द्र है।"(1)

हज़रते महमूद बिन रबीअ़ अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो सग़ार सहाबा में से थे। पांच साल के थे कि आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के घर तशरीफ़ ले गए जिस में एक कुंवां था आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक डोल से पानी पिया और पानी की कुल्ली (ब त़रीक़े मिज़ाह़) हज़रते महमूद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चेहरे पर मारी।(2) इस की बरकत से उन को वोह हाफ़िज़ा हासिल हो गया कि इस क़िस्से को याद रखते थे इसी वज्ह से सहाबा में शुमार हुवे। इसी त़रह़ हज़रते ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमह मख़्ज़ूमिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रबीबा थीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आईं आप गुस्ल ख़ाने में थे आप ने उन के चेहरे पर पानी फेंक दिया इस की बरकत से उन के चेहरे में शबाब की रौनक़ क़ाइम रही यहां तक कि निहायत बूढ़ी हो गईं।(3)

सख़ावत व ईसार

जूदे हक़ीक़ी येह है कि बिग़ैर ग़रज़ व इवज़ के हो और येह सिफ़त है हक़ سُبْحَانَہٗ की जिस ने बिग़ैर किसी ग़रज़ व इवज़ के तमाम ज़ाहिरी व बातिनी ने'मतें और तमाम हिस्सी व अ़क़्ली कमालात ख़लाइक़ पर इफ़ाज़ा किये हैं। **अल्लाह** तआ़ला के बा'द "اَجْوَدُ الْاَجْوَدِیْن" उस के ह़बीबे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। ह़दीसे सह़ीह़ में वारिद है कि आप से कभी किसी चीज़ का सुवाल न किया गया कि उस के मुक़ाबिल आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला (नहीं) फ़रमाया हो।(4) या'नी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी के सुवाल को रद न फ़रमाते, अगर मौजूद होता तो अ़ता

---

1 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی مزاح رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(الشمائل المحمدیۃ للترمذی، باب ماجاء فی صفۃ مزاح رسول اللّٰہ، الحدیث:۲۲۹، ص۱۴۳ ومشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب المزاح، الحدیث:۴۸۸۹، ج۲، ص۲۰۰۔علمیہ)

2 ......صحیح بخاری، کتاب العلم، باب متی یصح سماع الصغیر۔......(صحیح البخاری، کتاب العلم، باب متی یصح سماع الصغیر، الحدیث:۷۷، ج۱، ص۴۵ والمواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ بہ...الخ، ج۶، ص۷۵۔علمیہ)

3 ......استیعاب لابن عبدالبر، ترجمہ زینب بنت ابی سلمہ۔......(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، ۳۳۹۵۔زینب بنت ابی سلمۃ المخزومیۃ، ج۴، ص۴۱۱۔علمیہ)

4 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب حسن الخلق والسخاء۔......(صحیح البخاری کتاب الادب، باب حسن الخلق و السخاء...الخ، الحدیث:۶۰۳۴، ج۴، ص۱۰۹۔علمیہ)

www.dawateislami.net

फ़रमाते और अगर पास न होता तो क़र्ज़ ले कर देते या वा'दा अ़ता फ़रमाते। एक दफ़्आ़ एक साइल आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया। आप ने फ़रमाया : मेरे पास कोई चीज़ नहीं मगर येह कि तू मुझ पर क़र्ज़ करे जब हमारे पास कुछ आ जाएगा हम उसे अदा कर देंगे। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदा ने आप को उस चीज़ की तक्लीफ़ नहीं दी जो आप की क़ुदरत में नहीं। ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बात हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द न आई। अन्सार में से एक शख़्स बोला : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ता कीजिये और अ़र्श के मालिक से तक़्लील[1] का ख़ौफ़ न कीजिये। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया और आप के रूए मुबारक पर ताज़गी व ख़ुशहाली पाई गई। फ़रमाया : "इसी का अम्र किया गया है।"[2]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बह़रैन से माल लाया गया और येह ज़ियादा से ज़ियादा माल था जो आप के पास लाया गया। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस को मस्जिद में डाल दो। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो उस माल के पास बैठ गए और तक़्सीम फ़रमाने लगे। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास आए और अ़र्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इस माल में से दीजिये क्यूंकि जंगे बद्र के दिन मैं ने फ़िदया दे कर अपने आप को और अ़क़ील बिन अबी त़ालिब को आज़ाद कराया था। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ले लो। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों हाथों से अपने कपड़े में डाल लिया। फिर उठाने लगे तो न उठा सके। अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप किसी से फ़रमा दें कि उठा कर मुझ पर रख दे। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं किसी से उठाने को नहीं कहता। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले : आप ख़ुद उठा कर मुझ पर रख दें। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं इसे नहीं उठाता। पस ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस में से

---

1 ......कमी।

2 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰہ، الحدیث:۳۳۸، ص۲۰۱۔علمیہ)

www.dawateislami.net

कुछ गिरा दिया फिर उठाने लगे तो तब भी न उठा सके। अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप किसी से फ़रमा दें कि उठा कर मुझ पर रख दे। आप ने फ़रमाया : मैं किसी से उठाने को नहीं कहता। ह़ज़रते अ़ब्बास बोले : आप खुद उठा कर मुझ पर रख दें। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं इसे नहीं उठाता। पस ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस में से भी कुछ गिरा दिया फिर उसे अपने कन्धे पर उठा लिया और रवाना हुवे। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की त़रफ़ देखते रहे यहां तक कि वोह ग़ाइब हो गए और हुज़ूर उन की त़म्अ़ पर तअ़ज्जुब फ़रमाते थे। ग़रज़ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां से उठे तो एक दिरहम भी बाक़ी न था।[1] मुस्नदे इब्ने अबी शैबा में ब रिवायते हुमैद बिन हिलाल ब त़रीक़े इरसाल मरवी है कि वोह माल एक लाख दिरहम था और उसे अ़ला बिन अल ह़ज़रमी ने बह़रैन के ख़िराज में भेजा था और येह पहला माल था जो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लाया गया।

ग़नाइमे हुनैन की तफ़्सील पहले आ चुकी है। इन में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत ह़द्दे क़ियास से ख़ारिज थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आ'राब[2] में बहुत सों को सो सो ऊंट अ़त़ा फ़रमाए।[3] मगर उस दिन आप की सख़ावत ज़ियादा तर मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब के लिये थी जैसा कि पहले मज़्कूर हो चुका है। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स (सफ़्वान बिन उमय्या) ने उस रोज़ बकरियों का सुवाल किया जिन से दो पहाड़ों का दरमियानी जंगल पुर था आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह सब उस को दे दीं। उस ने अपनी क़ौम में जा कर कहा : "ऐ मेरी क़ौम ! तुम इस्लाम लाओ !!! **अल्लाह** की क़सम ! मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ऐसी सख़ावत करते हैं कि फ़क़्र से नहीं डरते।"[4]

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب ما اقطع النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم من البحرین۔......(صحیح البخاری کتاب الجزیة و الموادعة،باب ما اقطع النبی من البحرین...الخ،الحدیث:٣١٦٥ ،ج٢،ص٣٦٥۔علمیه)

2 ......देहात में रहने वालों।

3 ......بخاری، باب غزوۃ الطائف۔ ...... (صحیح البخاری کتاب المغازی ، باب غزوة الطائف ، الحدیث:٤٣٣٦ ، ج٣ ، ص١١٨۔علمیه)

4 ......مشکوٰۃ، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم، فصل اول۔......(مشکاة المصابیح،کتاب الفضائل و الشمائل، باب فی اخلاقه و شمائله،الحدیث:٥٨٠٦ ، ج٢،ص٣٦٤۔علمیه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सफ़्वान बिन उमय्या ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुनैन के दिन मुझे माल अ़त़ा फ़रमाने लगे ह़ालांकि आप मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ थे पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे यहां तक कि मेरी नज़र में मह़बूब तरीन ख़ल्क़ हो गए।[1]

ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि जब मैं और दीगर लोग रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हुनैन से (बा'दे तक़्सीमे ग़नाइम) वापस आ रहे थे तो बादियए नशीनाने अ़रब[2] हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट गए वोह हुनैन की ग़नीमत में से मांगते थे। नौबत यहां तक पहुंची कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ब ह़ालते इज़्तिरार[3] एक बबूल के दरख़्त की त़रफ़ ले गए उस दरख़्त में आप की चादर मुबारक फंस गई। आप ठहर गए और फ़रमाया : "मुझे मेरी चादर दे दो अगर मेरे पास इस जंगल के दरख़्ताने बबूल जितने चौपाए होते तो अलबत्ता मैं उन को तुम्हारे दरमियान तक़्सीम कर देता फिर तुम मुझ को बख़ील न पाते और न दरोग़ गो और बुज़दिल पाते।"[4]

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि एक रोज़ मैं जनाबे पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था, जब आप ने कोहे उहुद को देखा तो फ़रमाया : "अगर येह पहाड़ मेरे लिये सोना बन जाए मैं पसन्द न करूंगा कि इस में से एक दीनार भी मेरे पास तीन रातों से ज़ियादा रह जाए ब जुज़ उस दीनार के जिसे मैं अदाए क़र्ज़ के लिये रख छोड़ूं।[5]

एक रोज़ नमाज़े अ़स्र का सलाम फेरते ही आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए फिर जल्दी निकल आए। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा। आप ने फ़रमाया कि मुझे नमाज़ में ख़याल आ गया कि सदक़े का कुछ सोना घर में पड़ा है

---

1 ......جامع ترمذی، باب ماجاء فی اعطاء المؤلفۃ قلوبہم۔......(سنن الترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی اعطاء المؤلفۃ قلوبهم، الحديث:٦٦٦، ج٢، ص١٤٧۔علميه)

2 ......अ़रब के देहातों में रहने वाले।

3 ......बे क़रारी की ह़ालत में।

4 ......صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب الشجاعۃ فی الحرب والجبن۔......(صحيح البخاری، کتاب الجهاد و السير، باب الشجاعة فی الحرب والجبن، الحديث:٢٨٢١، ج٢، ص٢٦٠۔علميه)

5 ......صحیح بخاری، کتاب الاستقراض، باب اداء الدین۔......(صحيح البخاری، کتاب فی الاستقراض...الخ، باب اداء الديون، الحديث:٢٣٨٨، ج٢، ص١٠٥۔علميه)

www.dawateislami.net

मुझे पसन्द न आया कि रात हो जाए और वोह घर में पड़ा रहे इस लिये जा कर उसे तक़्सीम करने के लिये कह आया हूं।(1)

ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं कि एक औ़रत एक चादर ले कर आई उस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मैं ने अपने हाथ से बुनी है, मैं आप के पहनने के लिये लाई हूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़रूरत थी इस लिये आप ने वोह चादर ले ली फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी त़रफ़ निकले और उसी चादर को बतौ़रे तहबन्द बांधे हुवे थे। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में से एक ने देख कर अ़र्ज़ किया : क्या अच्छी चादर है येह मुझे पहना दीजिये। आप ने फ़रमाया : हां ! कुछ देर के बा'द आप मजलिस से उठ गए फिर लौट आए और वोह चादर लपेट कर उस सह़ाबी के पास भेज दी। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने उस से कहा कि तू ने अच्छा न किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस चादर का सुवाल किया ह़ालांकि तुझे मा'लूम है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी साइल का सुवाल रद्द नहीं फ़रमाते। उस सह़ाबी ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने सिर्फ़ इस वासित़े सुवाल किया कि जिस दिन मैं मर जाऊं येह चादर मेरा कफ़न बने। ह़ज़रते सह्ल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि वोह चादर उस का कफ़न ही बनी।(2)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि एक काफ़िर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मेहमान हुवा आप के हुक्म से, उस के लिये एक बकरी दोही गई वोह उस का दूध पी गया, दूसरी दोही गई वोह उस का दूध भी पी गया फिर एक और दोही गई वोह उस का दूध भी पी गया इसी त़रह़ उस ने सात बकरियों का दूध पी लिया, सुब्ह़ जो उठा तो इस्लाम लाया। पस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि इस के लिये एक बकरी दोही जाए। वोह उस का दूध पी गया फिर दूसरी दोही गई मगर वोह उस का दूध तमाम न पी सका। पस रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन एक अंतड़ी में पीता है और काफ़िर सात अंतड़ियों में पीता है।''(3)

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب التہجد، باب یفکر الرجل الشیٔ فی الصلوٰۃ۔......(صحیح البخاری، کتاب العمل فی الصلاۃ، باب یفکر الرجل الشیء فی الصلاۃ، الحدیث:١٢٢١، ج١، ص٤١١۔علمیه)

2 ......صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب البرود والحبرۃ۔......(صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب البرود و الحبرۃ و الشملة، الحدیث:٥٨١٠، ج٤، ص٥٤۔علمیه)

3 ......صحیح مسلم، باب المومن یاکل فی معی واحد والکافر یاکل فی سبعۃ امعاء۔ इस मेहमान का नाम ग़ालिबन नुज़्ला बिन अ़म्र गिफ़ारी था। 12 मिन्हु (صحیح مسلم، کتاب الاشربة، باب المؤمن یاکل فی معی واحد...الخ، الحدیث:٢٠٦٣، ص١١٤١۔علمیه)

www.dawateislami.net

हज़रते बिलाल मुअज़्ज़िन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ आं हज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ज़ान्ची थे। एक रोज़ अ़ब्दुल्लाह हौज़नी[1] ने उन से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ज़ाने का ह़ाल पूछा उन्हों ने बयान किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कुछ न रहता था। बिअ़्सत से वफ़ात शरीफ़ तक येह काम मेरी तह़वील में था जब कोई नंगा भूका मुसलमान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आता आप मुझे हुक्म देते मैं किसी से क़र्ज़ लेता और चादर ख़रीद कर उसे उढ़ाता और खाना खिलाता। एक रोज़ एक मुशरिक मुझ से मिला, कहने लगा : बिलाल ! मेरे हां गुन्जाइश है। मेरे सिवा किसी और से क़र्ज़ न लिया करो। मैं ने ऐसा ही किया एक रोज़ मैं वुज़ू कर के अज़ान देने लगा तो क्या देखता हूं कि वोह मुशरिक ताजिरों की एक जमाअ़त के साथ आ रहा है उस ने मुझे देख कर कहा : ओ ह़बशी ! मैं ने कहा : लब्बैक ! फिर उस ने तुर्श रू हो कर[2] मेरी निस्बत सख़्त अल्फ़ाज़ कहे और बोला : "कुछ मा'लूम है वा'दे में कितने दिन बाक़ी हैं ?" मैं ने कहा : वक़्ते वा'दा क़रीब आ गया है। उस ने कहा कि सिर्फ़ चार दिन बाक़ी हैं अगर इस मुद्दत में तू ने क़र्ज़ा अदा न किया तो तुझे ग़ुलाम बना कर बकरियां चरवाऊंगा जैसा कि तू पहले चराया करता था। येह सुन कर मुझे फ़िक्रो ग़म दामन गीर हुवा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े इशा पढ़ कर दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए, मैं वहीं ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा, और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! मेरे मां बाप आप पर फ़िदा। वोह मुशरिक जिस से मैं क़र्ज़ा लिया करता था उस ने मुझ से ऐसा ऐसा कहा है, आप के पास अदाए क़र्ज़ के लिये कुछ मौजूद नहीं और न मेरे पास है वोह मुझ को फ़ज़ीह़त करेगा[3] आप इजाज़त दें तो मैं भाग कर मुसलमानों के किसी क़बीले में जा रहूं, जब अदाए क़र्ज़ के लिये ख़ुदा कुछ सामान कर देगा तो वापस आ जाऊंगा।" ग़रज़ मैं अपने घर आ गया और तल्वार, थैला, जूता और ढाल अपने सिरहाने रख लिये। सुब्ह़े काज़िब होते ही मैं चलने लगा तो क्या देखता हूं कि एक शख़्स दौड़ता आ रहा है और कहता है : "बिलाल ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुझे याद फ़रमा रहे हैं।" वहां पहुंचा तो देखता हूं कि चार लदे

1......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "अ़ब्दुल्लाह हवाज़नी" लिखा है, लेकिन "सुनने अबी दावूद" और दीगर ह़दीस व सीरत की कुतुब में येह रिवायत ह़ज़रते "अ़ब्दुल्लाह हौज़नी" رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने "हवाज़नी" की बजाए "हौज़नी" लिखा है। **इल्मिय्या**

2......बद मिज़ाजी से।

3......बुरा भला कहेगा, रुस्वा करेगा।

www.dawateislami.net

हुवे ऊंट बिठाए हुवे हैं। मैं इजाज़त ले कर हाज़िरे ख़िदमत हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुबारक हो !!! **अल्लाह** तआ़ला ने अदाए क़र्ज़ का सामान कर दिया, तुम ने चार ऊंट बैठे देखे होंगे ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि हां। आप ने फ़रमाया कि येह ऊंट हाकिमे फ़िदक ने भेजे हैं येह और ग़ल्ला और कपड़े जो इन पर हैं सब तुम्हारी तह़वील में हैं इन को बेच कर क़र्ज़ा अदा कर दो। मैं ने ता'मीले इरशाद की, फिर मैं मस्जिद में आया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सलाम अ़र्ज़ किया। आप ने अदाए क़र्ज़े का ह़ाल पूछा : मैं ने अ़र्ज़ किया कि क़र्ज़ा सब अदा हो गया कुछ बाक़ी नहीं रहा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि कुछ बच तो नहीं रहा। मैं ने अ़र्ज़ किया कि हां कुछ बच भी रहा। फ़रमाया : "मुझे इस से सुबुकदोश करो !! जब तक येह किसी ठिकाने न लगेगा मैं घर न जाऊंगा।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े इशा से फ़ारिग़ हुवे तो मुझे बुला कर उस बक़िय्या का ह़ाल पूछा : मैं ने अ़र्ज़ किया कि वोह मेरे पास है कोई साइल नहीं मिला। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात को मस्जिद ही में रहे। दूसरे रोज़ नमाज़े इशा के बा'द मुझे फिर बुलाया, मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुदा ने आप को सुबुकदोश कर दिया। येह सुन कर आप ने तक्बीर कही और ख़ुदा का शुक्र किया क्यूंकि आप को डर था कि कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए और वोह माल मेरे पास हो फिर आप दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए।(1)

बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी शख़्स से एक चीज़ ख़रीदते, क़ीमत चुका देने के बा'द वोह उसी को या किसी दूसरे को अ़ता फ़रमाते। चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक ऊंट ख़रीदा फिर वोही ऊंट उन को बत़ौरे अ़तिय्या इनायत फ़रमाया। इसी त़रह़ एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक शुतर का बच्चा ख़रीदा फिर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को अ़ता फ़रमाया।(2)

---

(1) ......ابوداوٗد، جلد ثانی، کتاب الخراج والفیٔ، باب فی الامام یقبل ہدایا المشرکین۔......(سنن ابی داود، کتاب الخراج و الفیء و الامارة، باب فی الامام یقبل هدایا المشرکین، الحدیث:۳۰۵۵، ج۳، ص۲۳۰-۲۳۲۔علمیه)

(2) ......صحیح بخاری، کتاب البیوع، باب شری الدواب والحمیر، باب اذا اشتری شیئا فوہب من ساعتہ قبل ان یتفرقا۔......(صحیح البخاری کتاب البیوع، باب شراء الدواب و الحمیر...الخ، الحدیث:۲۰۹۷، ج۲، ص۱۸ و باب اذا اشتری شیئاً فوهب من ساعته قبل ان یتفرقا...الخ، الحدیث:۲۱۱۵، ج۲، ص۲۳۔علمیه)

www.dawateislami.net

ग़रज़ जो कुछ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आता सब राहे ख़ुदा में दे देते पास न होता तो क़र्ज़ा ले कर साइल की ह़ाजत रवाई फ़रमाते। अपनी ज़ात शरीफ़ के लिये दूसरे दिन का नफ़क़ा भी जम्अ़ न करते[1] अलबत्ता बा'ज़ वक़्त अपने ह़रम के लिये एक साल का नफ़क़ा ज़ख़ीरा कर लेते। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी मोह़ताज को देखते तो बा वुजूद एह़तियाज के अपना खाना उसे दे देते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने में बा'ज़ दफ़्आ़ दो दो महीने आग न जलती थी। एक दफ़्आ़ ग़नीमत में कनीज़ें आई हुई थीं। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से कहा कि तुम इस मौक़अ़ पर अपने वालिदे बुज़ुर्ग वार से ख़िदमत के लिये एक कनीज़ मांग लो। जब वोह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं तो आप ने पूछा कि किस लिये आई हो ? अ़र्ज़ किया कि सलाम करने आई हूं और ब पासे ह़या इज़्हारे मत़लब न किया और वापस आ कर ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से येही उ़ज़्र बयान कर दिया फिर दोनों ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आब कशी करते करते मेरे सीने पर नील पड़ गए हैं। ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया कि चक्की पीसते पीसते मेरी हथेलियों पर आबले पड़ गए हैं। आप ख़िदमत के लिये एक कनीज़ इनायत फ़रमाइये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह की क़सम ! येह नहीं होने का कि मैं तुम को ख़ादिमा दूं और अहले सुफ़्फ़ा भूके मरें उन के ख़र्च के लिये मेरे पास कुछ नहीं मैं इन असीराने जंग को बेच कर इन की क़ीमत अहले सुफ़्फ़ा पर ख़र्च करूंगा।" रात हुई तो आप ह़ज़रते अ़ली व फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के घर तशरीफ़ ले गए। दोनों ऐसी पुरज़ा दार चादर में थे कि अगर उस से सर ढांपते तो पाउं नंगे हो जाते और पाउं ढांपते तो सर नंगे रहते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर दोनों उठने लगे आप ने फ़रमाया : "अपनी जगह पर रहो !" फिर इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें कनीज़ से बेहतर चीज़ बताता हूं और वोह, वोह कलिमात हैं जो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे सिखाए हैं या'नी हर नमाज़ के बा'द سُبْحٰنَ اللّٰه दस

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل و الشمائل، باب فی اخلاقه و شمائله، الحديث: ٥٨٢٥، ج٢، ص٣٦٧۔علميه)

www.dawateislami.net

बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ दस बार और اَللّٰہُ اَکْبَرُ दस बार और सोने के वक़्त سُبْحٰنَ اللّٰہ 33 बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ 33 बार और اَللّٰہُ اَکْبَرُ 34 बार पढ़ लिया करो ।[1]

शुजाअ़त व क़ुव्वत, अ़ज़्म व इस्तिक़लाल

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन अवसाफ़ में भी सब पर फ़ाइज़ थे । एक रात मदीनए मुनव्वरा के लोग डर गए और शोरो ग़ुल बरपा हुवा गोया कोई चोर या दुश्मन आया है । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का घोड़ा लिया जो सुस्त रफ़्तार और सरकश था आप उस की पीठ पर बिग़ैर ज़ीन के सुवार हो गए और तल्वार आड़े लटकाए हुवे जंगल की त़रफ़ अकेले ही तशरीफ़ ले गए, जब लोग उस आवाज़ की त़रफ़ गए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को रास्ते में वापस आते हुवे मिले, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को तसल्ली दी कि डरो मत डरो मत ! और घोड़े की निस्बत फ़रमाया कि हम ने उसे दरया की मानिन्द तेज़ रफ़्तार पाया ।[2]

ग़ज़्वात में जहां बड़े बड़े दिलावर व बहादुर भाग जाया करते थे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم साबित क़दम रहा करते थे । चुनान्चे, जंगे उहुद में जब मुसलमानों को हज़ीमत हुई तो येह कोहे इस्तिक़ामत अपनी जगह पर क़ाइम रहे और दुश्मनों पर तीर फेंकते रहे जब कमान पारा पारा हो गई तो संग अन्दाज़ी शुरूअ़ की । जंगे हुनैन में सिर्फ़ चन्द जांबाज़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रह गए थे बाक़ी सब भाग गए थे इस नाज़ुक ह़ालत में आप ने इसी पर इक्तिफ़ा न किया कि अपनी जगह पर क़ाइम रह कर मुदाफ़अ़त फ़रमाएं बल्कि अपने ख़च्चर को बार बार एड़ लगा कर दुश्मन की त़रफ़ बढ़ाना चाहते थे मगर वोह जांबाज़ मानेअ़ आ रहे थे ।

जब घमसान का मा'रिका हुवा करता था तो सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की आड़ में पनाह लिया करते थे । चुनान्चे, ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है : "**अल्लाह** की क़सम ! जब लड़ाई शिद्दत से हुवा करती थी तो हम

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی، باب فی اخلاقہ وشمائلہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم۔......(الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ،الباب الرابع، الفصل التاسع،ذکر ما کان فیہ من ضیق العیش...الخ،ج۲،ص۲۱۶۔علمیہ)

2 ......صحیح بخاری، کتاب الادب، باب حسن الخلق والسخاء۔......(صحیح البخاری ، کتاب الاداب ، باب حسن الخلق و السخاء.. الخ،الحدیث:۶۰۳۳،ج۴،ص۱۰۸-۱۰۹۔علمیہ)

www.dawateislami.net

नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पनाह ढूंडा करते थे और हम में से बहादुर वोह होता था जो आप के साथ दुश्मन के मुक़ाबिल खड़ा होता था।"(1)

ए'लाने दा'वत पर क़ुरैश ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़्त मुख़ालफ़त की। जब अबू त़ालिब ने भी आप का साथ छोड़ने का इरादा किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं फ़रमाया : "चचाजान ! अल्लाह की क़सम ! अगर वोह सूरज को मेरे दाएं हाथ में और चांद को बाएं हाथ में रख दें ताकि मैं इस काम को छोड़ दूं तब भी इस काम को न छोड़ूंगा यहां तक कि ख़ुदा इसे ग़ालिब कर दे या मैं ख़ुद हलाक हो जाऊं।"

हिजरत से पहले क़ुरैश ने मुसलमानों को इस क़दर सताया कि इन का पैमानए सब्र लबरेज़ हो गया। तंग आ कर इन्हों ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप उन पर बद दुआ़ फ़रमाएं। येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक सुर्ख़ हो गया और फ़रमाया : "तुम से पहले जो लोग गुज़रे हैं उन पर लोहे की कंघियां चलाई जाती जिस से गोश्त पोस्त सब अ़लाह़िदा हो जाता और उन के सरों पर आरे रखे जाते और चीर कर दो टुकड़े कर दिये जाते मगर येह अज़िय्यतें उन को दीन से बरगश्ता न कर सकती थीं। अल्लाह तआ़ला दीने इस्लाम को कमाल तक पहुंचाएगा यहां तक कि एक सुवार सन्आ़ से ह़ज़र मौत तक सफ़र करेगा और उसे ख़ुदा के सिवा किसी का डर न होगा।" (सह़ीह़ बुख़ारी)(2)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ुव्वते बदनी भी सब से ज़ियादा थी। ग़ज़वए अह़ज़ाब में जब सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ख़न्दक़ खोद रहे थे तो एक जगह ऐसी सख़्त ज़मीन ज़ाहिर हुई कि सब आ़जिज़ आ गए। आप से अ़र्ज़ किया गया तो आप ब ज़ाते शरीफ़ ख़न्दक़ में उतरे और एक कुदाल ऐसा मारा कि वोह सख़्त ज़मीन रेगे रवां(3) का एक ढेर बन गई।(4)

---

1 ...... صحیح مسلم،غزوۂ حنین۔......(صحیح مسلم، کتاب الجهاد و السیر،باب فی غزوة حنین،الحدیث:۷۹-(۱۷۷۶)ص۹۸۰۔علمیه)

2 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ما لقی النبی...الخ،الحدیث:۳۸۵۲،ج۲،ص۵۷۳۔علمیه)

3 ......उड़ने वाली रैत।

4 ...... صحیح بخاری،غزوۂ خندق۔......(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الخندق وهی الاحزاب،الحدیث:۴۱۰۱، ج۳،ص۵۱۔علمیه)

www.dawateislami.net

रुकाना बिन अ़ब्दे यज़ीद बिन हाशिम क़रशी मुत्तलबी क़ुरैश में सब से त़ाक़तवर था वोह एक रोज़ मक्का के रास्ते में हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام से मिला। आप ने उस से फ़रमाया : "रुकाना ! क्या तू ख़ुदा से नहीं डरता और मेरी दा'वते इस्लाम को क़बूल नहीं करता ?" उस ने कहा कि अगर मुझे मा'लूम हो जाए कि जो कुछ आप फ़रमाते हैं वोह सच है तो मैं आप पर ईमान ले आऊं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर मैं तुझे कुश्ती में पछाड़ दूं तो क्या तू मान जाएगा कि मैं जो कुछ कहता हूं सच है ?" वोह बोला कि हां। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे पकड़ते ही चारों शाने चित गिरा दिया।(1) कहने लगा : "मुह़म्मद ! आप मुझ से दोबारा कुश्ती लड़ें।" आप ने दूसरी दफ़्आ़ भी उसे पछाड़ दिया। इस पर उस ने कहा : "मुह़म्मद ! ख़ुदा की क़सम ! आप का मुझे पछाड़ना अ़जीब है !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तू ख़ुदा से डरे और मुझ पर ईमान लाए तो मैं इस से भी अ़जीब अम्र तुझ को दिखाता हूं। उस ने पूछा कि वोह क्या है ? आप ने फ़रमाया कि येह दरख़्त जो तू देखता है मैं उसे बुलाता हूं और वोह मेरे पास चला आएगा। उस ने कहा कि आप उसे बुलाइये। चुनान्चे, वोह दरख़्त आप के बुलाने पर पास आ खड़ा हुवा। रुकाना ने कहा कि इसे हुक्म दीजिये कि अपनी जगह पर चला जाए। आप के हुक्म से वोह अपनी जगह पर चला गया रुकाना ने अपनी क़ौम में जा कर कहा कि मैं ने मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से बढ़ कर किसी को जादूगर नहीं देखा फिर बयान किया जो कुछ देखा था।(2) रुकानए मज़्कूर फ़त्हे मक्का में ईमान लाए। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

आप ने अबुल अस्वद जुमह़ी को भी पछाड़ा था जो ऐसा त़ाक़तवर था कि गाए की खाल पर खड़ा हो जाता, दस जवान उस खाल को उस के पाउं के नीचे से निकाल लेने की कोशिश करते वोह चमड़ा फट जाता मगर उस के पाउं के नीचे से न निकल सकता था। उस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : "अगर आप मुझे कुश्ती में पछाड़ दें तो मैं आप पर ईमान ले आऊंगा।" आप ने उसे पछाड़ दिया मगर वोह बद बख़्त ईमान न लाया।(3)

---

1 ......पीठ के बल गिरा दिया।

2 ......سیرت ابن ہشام۔......(السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، امر رکانۃ المطلبی ومصارعتہ للنبی، ص۱۵۵ و المواھب اللدنیۃ و شرح الزرقانی،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ بہ...الخ،ج۶،ص۱۰۱۔علمیہ)

3 ......مواہب لدنیہ۔......(المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی،الفصل الثانی فیما اکرمہ اللّٰہ بہ...الخ،ج۶،ص۱۰۳۔علمیہ)

www.dawateislami.net

ज़ोहद

येह वस्फ़ भी आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारक में कमाल दरजे का था। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक क़ौम के पास से गुज़रे जिन के आगे बकरी का भुना हुवा गोश्त रखा हुवा था उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शरीके त़आ़म होने के लिये बुलाया मगर आप ने येह फ़रमा कर इन्कार कर दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए और जव की रोटी पेट भर कर न खाई।(1)

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत कभी लगातार दो रोज़ जव की रोटी से सैर न हुवे यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से रिह़्लत फ़रमा गए।(2) ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी ख़्वान पर(3) खाना न खाया(4) और न बारीक रोटी तनावुल फ़रमाई।(5)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने में बा'ज़ दफ़्आ़ दो दो महीने आग रोशन न हुवा करती थी और सिर्फ़ पानी और छुवारों पर गुज़ारा होता था।(6) बा'ज़ वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भूक की शिद्दत से पेट पर पथ्थर बांध लिया करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भूक की शिकायत की और हम में से हर एक ने अपने अपने पेट पर एक एक पथ्थर बंधा दिखाया। पस आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने पेट मुबारक पर दो पथ्थर बंधे दिखाए।(7)

---

1 ......صحیح بخاری، باب ما کان النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم واصحابہ یاکلون۔......(صحیح البخاری، کتاب الاطعمة، باب ما کان النبی واصحابه یاکلون، الحدیث:٥٤١٤، ج٣، ص٥٣٢۔علمیه)

2 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، باب فضل الفقراء۔

3 ......मेज़ वग़ैरा पर।

4 ......مشکاة المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء...الخ، الحدیث:٥٢٣٧، ج٢، ص٢٥٤۔علمیه

5 ......صحیح بخاری، کتاب الرقاق، باب فضل الفقر۔......(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب فضل الفقر، الحدیث:٦٤٥٠، ج٤، ص٢٣٣۔علمیه)

6 ......صحیح بخاری، باب کیف کان عیش النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم واصحابہ۔......(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی...الخ، الحدیث:٦٤٥٩، ج٤، ص٢٣٦۔علمیه)

7 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی، باب فضل الفقراء۔......(مشکاة المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء...الخ، الحدیث:٥٢٥٤، ج٢، ص٢٥٦۔علمیه)

www.dawateislami.net

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो मेरे घर के ताक़ में सिवाए आधे पैमानए जव के कुछ खाने को न था।[1] और आप की ज़िरह एक यहूदी के हां तीस साअ़ जव के इवज़ गिरव[2] थी जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अहलो अ़याल के नफ़क़े के लिये, लिये थे।[3]

ईला के ज़माने में आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मशरबे (बाला ख़ाने) में तशरीफ़ रखते थे जहां खाने पीने का अस्बाब रखा जाता था। हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब ईला की ख़बर मिली तो घबराए हुवे उस मशरबे में हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवे। क्या देखते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक खुर्री चारपाई[4] पर लैटे हुवे हैं जो बर्गे ख़ुरमा से बनी हुई है और जिस पर कोई तौशक[5] वग़ैरा नहीं। बोरयाए ख़ुर्मा के निशान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक पर पड़े हुवे हैं और बदन मुबारक पर एक तहबन्द के सिवा कुछ नहीं, सिरहाने एक तक्या है जिस में ख़ुर्मा की छाल भरी हुई है। फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ज़ाने को देखा। एक कोने में मुठ्ठी भर जव रखे हुवे थे पाउं मुबारक के क़रीब दरख़्ते सुलम के कुछ पत्ते (जो दबाग़त में काम आते हैं) पड़े हुवे थे और सरे मुबारक के पास एक खूंटी पर तीन खालें लटक रही थीं। येह देख कर मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : इब्ने ख़त्ताब ! क्यूं रोते हो ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि क्यूं न रोऊं बोरियाए ख़ुर्मा के निशान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक पर पड़े हुवे हैं येह आप का ख़ज़ाना है इस में जो कुछ है वोह नज़र आ रहा है। क़ैसरो किस्रा तो बाग़ो बहार के मज़े लूटें और ख़ुदा के रसूल व बर्गुज़ीदा

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الرقاق، باب فضل الفقر۔......(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب فضل الفقر، الحدیث:٦٤٥١، ج٤، ص٢٣٤۔علمیه)

2 .....गिर्वी।

3 ......صحیح بخاری، کتاب المغازی، باب وفات النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیه واله وسلم ۔......(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب٨٨، الحدیث:٤٤٦٧، ج٣، ص١٦١ و المواهب اللدنیة و شرح الزرقانی، النوع الاول فی عیشه...الخ، ج٦، ص١٥١۔علمیه)

4 ......बे बिछौने की चारपाई। 5 .....बिछौना।

www.dawateislami.net

के ख़ज़ाने का येह ह़ाल हो ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इब्ने ख़त्ताब ! क्या तुम येह पसन्द नहीं करते कि आख़िरत हमारे वासिते़ और दुन्या उन के लिये हो।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बोरियाए ख़ुर्मा पर सोए हुवे थे। उठे तो उस के निशान आप के पहलूए मुबारक पर पड़े हुवे थे। हम ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम आप के लिये गद्दा बनवा देते हैं। आप ने फ़रमाया : "मुझे दुन्या से क्या ग़रज़ दुन्या में मेरा ह़ाल उस सुवार की मानिन्द है जो एक दरख़्त के साए में बैठ जाता है फिर उस को छोड़ कर आगे बढ़ जाता है।"(2)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने अहलो अ़याल के लिये भी ज़ोह्द की ज़िन्दगी पसन्द फ़रमाते थे। चुनान्चे, आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के हुजरे खजूर की शाख़ों से बने हुवे थे जिन की छत कहगिल(3) की होती थी और वोह क़दे आदम से कुछ ही ऊंचे थे जैसा कि पहले मज़्कूर हो चुका है। पहनने के लिये उन में से हर एक के पास सिर्फ़ एक एक जोड़ा कपड़ा था।(4)

ह़ज़रते सौबान का बयान है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र का क़स्द फ़रमाते तो अपने अहल में से सब से अख़ीर ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मिल कर जाते और वापस आ कर सब से पहले ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मिलते। एक दफ़्अ़ा आप किसी ग़ज़्वे से तशरीफ़ लाए। ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने दरवाज़े पर पर्दा लटकाया हुवा था और इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन को चांदी के कंगन पहनाए हुवे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़स्बे मा'मूल ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के यहां आए तो अन्दर दाख़िल न हुवे और तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा ने ख़याल किया कि ज़ीनत व ज़ेवर

---

1 ......صحیح مسلم،بـاب بیان ان تخییر امرته لا یكون طلاقا بالنیة. صحیح بخاری،كتاب النكاح،باب موعظة الرجل ابنته لحال زوجها۔
......(صحیح مسلم،كتاب الطلاق،باب فی الایلاء...الخ،الحدیث:۱۴۷۹،ص۷۸۴ و صحیح البخاری،كتاب النكاح، باب موعظة الرجل ابنته لحال زوجها،الحدیث:۵۱۹۱،ج۳،ص۴۶۰۔علمیه)

2 ......جامع ترمذی،ابواب الزہد۔......(سنن الترمذی،كتاب الزهد،۴۴۔باب،الحدیث:۲۳۸۴،ج۴،ص۱۶۷۔علمیه)

3 ......भुस मिला कर मिट्टी से प्लस्तर करना।

4 ......صحیح بخاری،كتاب الحیض،باب ہل یصلی المرأة فی ثوب حاضت فیہ۔ابوداوٗد،باب المرأة تغسل ثوبہا الذی تلبسہ فی حیضہا۔ ......(صحیح البخاری،كتاب الحیض،باب هل تصلی المراة فی ثوب حاضت فیه،الحدیث:۳۱۲،ج۱،ص۱۲۵۔علمیه)

www.dawateislami.net

ही ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अन्दर आने से रोका है। इस लिये पर्दे को फाड़ डाला और बच्चों के हाथों से कंगन निकाल दिये। ह़ज़रते ह़सनैन रोते हुवे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कंगन उन से ले लिये और फ़रमाया : "सौबान ! येह ज़ेवर फुलां शख़्स की आल के हां ले जा क्यूंकि येह मेरे अहले बैत हैं मैं पसन्द नहीं करता कि येह अपनी दुन्यवी ज़िन्दगी में लज़ाइज़ से ह़ज़ उठाएं।[1] सौबान ! फ़ातिमा के लिये एक अ़सब[2] का हार और आ़ज (हाथी दांत) के दो कंगन ख़रीद लाओ।[3]

एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी साहिबज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ ले गए मगर अन्दर दाख़िल न हुवे। ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم आए तो ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन से येह ज़िक्र कर दिया। उन्हों ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया कि फ़ातिमा के दरवाज़े पर मुख़त़्त़त़[4] पर्दा लटक रहा था। फिर फ़रमाया कि मुझे दुन्या से क्या ग़रज़ ? जब ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से येह बयान किया तो वोह बोलीं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस बारे में जो चाहें इरशाद फ़रमाएं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इसे फुलां ह़ाजत मन्द अहले बैत को दे दें। इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मुझे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक हुल्यए सीरा (मुख़त़्त़त़ या रेशमी) बत़ौरे हदिय्या अ़त़ा फ़रमाया : मैं ने उसे पहन लिया। येह देख कर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक पर ग़ज़ब के आसार नुमूदार हुवे। मैं ने उसे फाड़ कर अपनी औ़रतों में तक़्सीम कर दिया।[5]

---

1 ......या'नी लज़्ज़तों से फ़ाइदा उठाएं।

2 ......अ़सब के मा'ना में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ कहते हैं कि एक बह़री जानवर के दांत को अ़सब कहते हैं जिस को तराश कर मनके बनाए जाते हैं। अ़सब के मा'ना पठ्ठे के भी हैं। मुमकिन है कि बा'ज़ ह़ैवानात के पठ्ठों को ख़ुश्क कर के कतर कर मनके बना लेते हों। واللّٰہ اعلم بالصواب 12 मिन्ह

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ احمد وابوداؤد، کتاب اللباس، باب الترجل۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب اللباس، باب الترجل، الحدیث: ٤٤٧١، ج٢، ص١٣٤۔علمیہ)

4 ......धारी दार, ख़ूब सूरत।

5 ......صحیح بخاری، کتاب الہبۃ، باب ہدیۃ ما یکرہ لبسہا۔......(صحیح البخاری، کتاب الھبۃ وفضلھا...الخ، باب ھدیۃ ما یکرہ لبسھا، الحدیث: ٢٦١٣، ٢٦١٤، ج٢، ص١٨٠۔علمیہ)

www.dawateislami.net

एक दफ़्आ़ एक शख़्स ने ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की दा'वत की और खाना तय्यार किया। ह़ज़रते फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने कहा : क्या ख़ूब हो अगर हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी शरीके त़आ़म कर लें चुनान्चे, हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बुलाया, आप तशरीफ़ लाए, आप ने दरवाज़े के बाज़ूओं पर अपना हाथ मुबारक रखा और घर के एक त़रफ़ पर्दा लटकता देख कर वापस तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से कहा कि जाइये और देखिये कि आप किस वासिते़ वापस हो गए। ह़ज़रते अ़ली ने आप से वापसी का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया कि येह पैग़म्बर की शान के ख़िलाफ़ है कि ज़ैबो ज़ीनत वाले घर में दाख़िल हो।[1]

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी ग़ज़्वे में तशरीफ़ ले गए थे मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वापसी का इन्तिज़ार किया करती थी। हमारे हां एक रंगीन फ़र्श था मैं ने उसे छत के एक शहतीर पर लपेट दिया। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मैं ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ सब सताइश ख़ुदा के लिये है जिस ने आप को शरफ़ व बुज़ुर्गी बख़्शी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने घर में बिसाते़ रंगीन[2] देख कर मेरे सलाम का जवाब न दिया। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक पर कराहत के आसार देखे। आप ने उस फ़र्श[3] को फाड़ डाला और फ़रमाया कि ख़ुदा ने जो कुछ हमें दिया है उस के बारे में हमें येह हुक्म नहीं दिया कि ईंट पथ्थर को पहना दें। बस मैं ने उस के दो तक्ये बना लिये जिन में खजूर की छाल भर दी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस पर ए'तिराज़ न फ़रमाया।[4]

---

1 ......ابوداوٗد، کتاب الاطعمہ، باب الرجل یدعی فیری مکروہا۔......(سنن ابی داود، کتاب الاطعمة، باب اجابة الدعوة اذا حضرھا مکروہ، الحدیث:٣٧٥٥، ج٣، ص٤٨٤۔علمیہ)

2 ......रंगीन बिछौना।

3 ......बिछौना।

4 ......ابوداوٗد، کتاب اللباس، باب فی الصور۔......(سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الصور، الحدیث:٤١٥٣، ج٤، ص٩٩۔علمیہ)

www.dawateislami.net

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हमारे हां एक पर्दा था जिस में परन्दों की तस्वीरें थीं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ आइशा ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस को बदल डालो क्यूंकि जब मैं इसे देखता हूं तो दुन्या याद आती है।(1)

वाज़ेह़ रहे कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह ज़ोहद इख़्तियारी था। ख़ुदा तआ़ला ने तो ज़मीन(2) के ख़ज़ानों की कुन्जियां आप पर पेश कीं मगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिम्मते आ़ली ने उ़बूदिय्यत व ज़ोहद को पसन्द फ़रमाया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि मेरे परवरदगार ने मुझ से फ़रमाया कि "अगर तू चाहे तो तेरे वासिते़ वादिये मक्का को सोना बना दूं।" मगर मैं ने अ़र्ज़ किया : "ऐ मेरे परवर दगार ! मैं येह नहीं चाहता बल्कि यूं चाहता हूं कि एक दिन सैर हो कर खाऊं और दूसरे रोज़ भूका रहूं जब भूका रहूं तो तेरे आगे ज़ारी व आ़जिज़ी करूं और जब सैर हो जाऊं तो तेरी ह़म्द और तेरा शुक्र करूं।"(3)

इस में शक नहीं कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़ुतूह़ात ब कसरत हुईं मगर जो कुछ आता राहे ख़ुदा में उठा देते और ख़ुद ज़ोहद की ज़िन्दगी बसर करते यहां तक कि जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हुवा तो बदने मुबारक पर सिर्फ़ एक कमली और तहबन्द था कमली में पैवन्द पर पैवन्द लगे हुवे थे और नम्दा(4) की त़रह़ हो गई थी। तहबन्द का कपड़ा भी पैवन्दों की कसरत से मोटा हो गया था।(5) और आप की ज़िरह ज़ातुल फ़ुज़ूल नाम अबुल शह़म यहूदी के पास बीस साअ़ जव में गिरव(6) थी जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अहल के लिये एक दीनार को लिये थे। (तिर्मिज़ी)(7)

---

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ امام احمد، کتاب الرقاق۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، الفصل الثالث، الحديث:٥٢٢٥، ج٢، ص٢٥٢۔علميه)

2 ......مواہب لدنیہ بحوالہ طبرانی۔......(المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، النوع الاول فی عيشه...الخ، ج٦، ص١٦٤۔علميه)

3 ......جامع ترمذی، ابواب الزہد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ۔......(سنن الترمذی، كتاب الزهد، باب ماجاء فی الكفاف و الصبر عليه، الحديث:٢٣٥٤، ج٤، ص١٥٥۔علميه)

4 ......मोटा ऊनी कपड़ा।

5 ......صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب ماذکر من درع النبی صلی اللّٰه تعالٰی عليه واله وسلم وعصاہ وسیفہ الخ۔......(صحيح البخاری، كتاب فرض الخمس، باب ما ذكر من درع النبی...الخ، الحديث:٣١٠٨، ج٢، ص٣٤٣ و المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، صفة ازاره، ج٦، ص٣٠١۔علميه)

6 ......गिरवी।

7 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، النوع الاول فی عيشه...الخ، ج٦، ص١٥١۔علميه

www.dawateislami.net

ख़ौफ़ व इबादत

आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'रिफ़ते इलाही और इल्म सब से ज़ियादा था। इस लिये आप सब से ज़ियादा ख़ुदा तरस और इबादत करने वाले थे। चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "क़सम है ! उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है अगर तुम्हें मा'लूम होता जो मुझे मा'लूम है तो तुम अलबत्ता ज़ियादा रोते और थोड़ा हंसते।"(1)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इबादत का येह हाल था कि कसरते क़ियामे शब के सबब से आप के पाउं मुबारक पर वरम आ गया था। सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने अ़र्ज़ किया कि आप येह तक्लीफ़ व मेहनत क्यूं उठाते हैं ? हालांकि ख़ुदा तआ़ला ने आप के सब अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये हैं।(2) आप ने जवाब में फ़रमाया : "क्या मैं शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं।"(3) या'नी क्या मैं इस बात का शुक्र न करूं कि मैं बख़्शा गया।

हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम रात नमाज़ में खड़े रहे और क़ुरआन की एक ही आयत बार बार पढ़ते रहे।(4)

हज़रते हुज़ैफ़ा बिन अल यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रात के एक हिस्से में नमाज़ पढ़ते देखा ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यूं पढ़ते थे : اَللّٰهُ اَكْبَر (तीन बार) ذُو الْمُلْكِ(5) وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ फिर दुआ़ए इस्तिफ़्ताह़ पढ़ते थे, बा'दे अज़ां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सूरए फ़ातिहा के बा'द) सूरए बक़रह पढ़ कर रुकूअ़ किया। आप का रुकूअ़ (त़वालत में) मानिन्दे क़ियाम के था और उस में "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ" पढ़ते थे। फिर

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الرقاق، باب قول النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہ وسلم لو تعلمون ما اعلم۔الخ۔......(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کان یمین النبی، الحدیث:٦٦٣٧، ج٤، ص٢٨٤۔علمیه)

2 ...सूरतुल फ़त्ह़ की इस आयत की त़रफ़ इशारा है : لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَاَخَّرَ (پ٢٦، الفتح:٢) और आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कन्ज़ुल ईमान शरीफ़ में इस का तर्जमा यूं फ़रमाया है : ताकि **अल्लाह** तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के। इस में कुछ तफ़्सील है लिहाज़ा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये फ़तावा रज़विय्या, जिल्द. 29, मस्अला.143, सफ़्हा. 394 ता 401

3 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی عبادۃ رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہ وسلم۔......(الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی عبادۃ رسول اللّٰہ، الحدیث:٢٤٨، ص١٦٠۔علمیه)

4 ...शमाइले तिर्मिज़ी, बाबो माजाओ फ़ी इबादते रसूलिल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रिवायते अबू ज़र में है कि वोह आयत येह है :

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۱۸﴾ (سنن ابن ماجه، باب ماجاء فی القراءۃ فی صلوۃ اللیل۔)١٢منه......

(الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی عبادۃ رسول اللّٰہ، الحدیث:٢٦١، ص١٦٥۔علمیه)

5 ...सुनने अबी दावूद" और "मिश्कातुल मसाबीह़" में "ذُوالْمُلْك" की बजाए "ذُوالْمَلَكُوْت" लिखा है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रुकूअ़ से सर उठाया। आप का क़ौमा मानिन्दे रुकूअ़ के था और आप उस में لِرَبِّيَ الْحَمْدُ पढ़ते थे। फिर आप ने सजदा किया। आप का सजदा मानिन्दे क़ौमा के था। आप सजदे में "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى" पढ़ते थे। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सजदे से सर उठाया, आप दो सजदों के दरमियान मानिन्दे सजदा के बैठते थे और رَبِّ اغْفِرْ لِيْ، رَبِّ اغْفِرْ لِيْ पढ़ते थे। इस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार रक्अ़तें पढ़ीं और इन में सूरए बक़रह व आले इमरान व निसा और माइदह या अन्आ़म ख़त्म कीं।(1)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ौफ़े इलाही कमाल दरजे का था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अश्शिख़्ख़ीर रिवायत करते हैं कि एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। क्या देखता हूं कि आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और रोने के सबब से आप के शिकमे मुबारक से तांबे की देग (के जोश) की मानिन्द आवाज़ आ रही है।(2)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़बादत के तफ़्सीली ह़ालात कुतुबे अह़ादीस में मौजूद हैं। यहां ब वज्हे इख़्तिसार इन के ईराद की गुन्जाइश नहीं। मगर इतना बता देना ज़रूरी है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े अ़मल इफ़रातो तफ़रीत़ से ख़ाली हुवा करता था न तमाम रात नमाज़ पढ़ते और न तमाम रात सोते बल्कि रात को नमाज़ भी पढ़ते और सो भी लेते इसी त़रह़ रोज़ों का ह़ाल था। माहे रमज़ान मुबारक की त़रह़ तमाम माहे शा'बान के रोज़े रखते बाक़ी दस महीनों में से हर एक में आप हमेशा रोज़ा न रखते कि इफ़रात़ लाज़िम आए और न हमेशा इफ़्त़ार फ़रमाते कि तफ़रीत़ लाज़िम आए बल्कि हर महीने में कभी रोज़ा रखते और कभी इफ़्त़ार फ़रमाते।(3)

अ़द्लो इन्साफ़

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा आ़दिल व अमीन थे। तुफ़ूलिय्यत में जब माई ह़लीमा ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहले पहल गोद में लिया तो आप ने सिर्फ़ दाहनी छाती से दूध पिया और दूसरी उन के शीर ख़्वार बच्चे के लिये छोड़ दी।(4)

1 ......مشکوٰۃ بحوالہ ابوداوٗد، باب صلوٰۃ اللیل۔......(مشكاة المصابيح، كتاب الصلاة، باب صلاة الليل، الحديث: ١٢٠٠، ج١، ص٢٣٧۔علميه)

2 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی بکاء رسول الله صلى الله تعالٰى عليه واله وسلم۔......(الشمائل المحمدية للترمذى، باب ماجاء فى بكاء رسول الله، الحديث: ٣٠٥، ص١٨٤۔علميه)

3 ......صحیح بخاری، باب مایذکر عن صوم النبی صلى الله تعالٰى عليه واله وسلم وافطاره۔......(صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب ما يذكر من صوم النبى وافطاره، الحديث: ١٩٧٢، ج١، ص٦٤٨۔علميه)

4 ......شرح ہمزیہ لابن حجر الہیتمی بحوالہ ابن اسحاق وابن راہویہ وابویعلی وطبرانی وبیہقی وابونعیم۔۔علميه

www.dawateislami.net

जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़नाइमे हुनैन तक़्सीम फ़रमा रहे थे तो ज़ुल ख़ुवैसिरा रासुल ख़वारिज[1] ने कहा : या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अ़द्ल कीजिये। आप ने फ़रमाया : "तुझ पर अफ़्सोस ! मैं अगर अ़द्ल न करूं तो और कौन करेगा ? अगर मैं आ़दिल नहीं तो तू ना उम्मीद व ज़ियांकार[2] है।" ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं इस की गर्दन उड़ा दूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इसे जाने दो क्यूंकि इस के अस्ह़ाब ऐसे हैं कि उन की नमाज़ों के मुक़ाबले में तुम अपनी नमाज़ों को और उन के रोज़ों के मुक़ाबले में अपने रोज़ों को ह़क़ीर समझोगे, वोह दीन से यूं निकल जाते हैं जैसा तीर शिकार में से निकल जाता है।"[3]

एक दफ़्अ़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से कुछ खजूरें उधार लीं। जब उस ने तक़ाज़ा किया तो आप ने फ़रमाया : "आज हमारे पास कुछ नहीं है, मोहलत दीजिये कि कुछ आ जाए तो अदा कर दूं।" येह सुन कर बोला : "आह बे वफ़ाई।" इस पर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को गुस्सा आ गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उ़मर ! जाने दो, साह़िबे ह़क़ ऐसा वैसा कहा करता है।" फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ौला बिन्ते ह़कीम अन्सारिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से खजूरें मंगवा कर उस के ह़वाले कीं।[4]

ह़ज़रते अबू ह़दरद अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मुझ पर एक यहूदी का चार दिरहम क़र्ज़ था येह वोह ज़माना था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए ख़ैबर का इरादा फ़रमा रहे थे। उस ने मुझ से तक़ाज़ा किया, मैं ने मोहलत मांगी तो वोह न माना और मुझे पकड़ कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गया, आप ने मुझ से दो दफ़्अ़ा फ़रमाया कि इस का ह़क़ अदा कर दो, मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मुहिमे ख़ैबर का इरादा फ़रमा रहे हैं शायद हमें वहां से कुछ ग़नीमत हाथ लगे, आप ने फिर फ़रमाया कि इस का ह़क़ अदा कर दो। येह क़ाइदा था कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी बात के

---

1 ......ख़ारिजियों का सरदार। 2 ......नुक़्सान पहुंचाने वाला है।

3 ......صحیح بخاری، باب علامات النبوۃ فی الاسلام۔......(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث: ٣٦١٠، ج٢، ص٥٠٣۔علمیہ)

4 ......معجم صغیر طبرانی، اسم محمد۔......(المعجم الصغیر للطبرانی، الجزء الثانی، ص٩٨۔علمیہ)

www.dawateislami.net

लिये तीन बार फ़रमा देते तो फिर कोई उ़ज़्र न किया जाता। मेरे पास बदन पर एक तहबन्द और सर पर इमामा था मैं ने उस यहूदी से कहा कि इस तहबन्द को मुझ से ख़रीद लो चुनान्चे, उस ने चार दिरहम में ख़रीद लिया, मैं ने इमामा सर से उतार कर कमर से लपेट लिया। एक औ़रत मेरे पास से गुज़री उस ने मुझे अपनी चादर औढ़ा दी।[1]

सुर्रक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक सहाबी थे उन से इस नाम की वज्हे तस्मिय्या दरयाफ़्त की गई तो कहने लगे कि एक बदवी दो ऊंट ले कर आया। मैं ने ख़रीद लिये फिर मैं (क़ीमत लाने के बहाने से) अपने घर में दाख़िल हुवा और अ़क़बे ख़ाना से निकल गया और उन ऊंटों को बेच कर अपनी ह़ाजत पूरी की। मैं ने ख़याल किया कि बदवी चला गया होगा मैं वापस आया तो क्या देखता हूं कि वोह खड़ा है। वोह मुझे पकड़ कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले गया और वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से पूछा कि तुम ने ऐसा क्यूं किया ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने ऊंटों को बेच कर अपनी ह़ाजत रवाई की है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बदवी को क़ीमत अदा कर दो। मैं ने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास कुछ नहीं है, आप ने फ़रमाया कि तू सुर्रक़ है फिर बदवी से फ़रमाया कि तुम इस को बेच कर अपनी क़ीमत वुसूल कर लो, चुनान्चे, लोग उस से मेरी क़ीमत पूछने लगे। वोह उन से कहता था कि तुम क्या चाहते हो ? वोह कहते थे कि हम ख़रीद कर इस को आज़ाद करना चाहते हैं। येह सुन कर बदवी ने कहा कि मैं तुम्हारी निस्बत सवाब का ज़ियादा मुस्तह़िक़ व ख़्वाहां हूं और मुझ से कहा कि जाओ मैं ने तुम को आज़ाद कर दिया।[2]

एक दफ़्आ़ ख़ानदाने मख़्ज़ूम की एक औ़रत ने चोरी की, क़ुरैश ने चाहा कि वोह ह़द से बच जाए। उन्हों ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मह़बूबे ख़ास थे दरख़्वास्त की, कि आप सिफ़ारिश कीजिये। चुनान्चे, ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सिफ़ारिश की। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ह़द में सिफ़ारिश करते हो ! तुम से पहले लोग (बनी इस्राईल) इसी सबब से तबाह हुवे कि वोह

1 ......मुअ़्जम صغیر طبرانی، اسم عبدان شروع۔......(المعجم الصغیر للطبرانی، الجزء الاول، ص ۲۳٤۔علمیه)

2 ......مستدرک حاکم، کتاب الاحکام، قصہ سرق رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ۔......(المستدرك على الصحيحين، كتاب الاحكام، ذكر قصة سرق، الحديث: ۷۱٤٤، ج ۵، ص ۱۳۸۔علمیه)

www.dawateislami.net

ग़रीबों पर ह़द जारी करते और अमीरों को छोड़ देते। ख़ुदा की क़सम ! अगर फ़ाति़मा बिन्ते मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) भी ऐसा करती तो मैं उस का हाथ काट देता।"(1)

एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़नीमत तक़्सीम फ़रमा रहे थे, एक शख़्स आया और आप पर झुक गया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की सूखी शाख़ से जो आप के दस्ते मुबारक में थी उसे ठोका दिया जिस से उस के मुंह पर ख़राश आ गई। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम मुझ से क़िसास ले लो, उस ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने मुआ़फ़ कर दिया।"(2)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जंगे बद्र के लिये सफ़ आराई कर रहे थे। ह़ज़रते सव्वाद बिन ग़ज़िय्या अन्सारी सफ़ से आगे निकले हुवे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक तीर की लकड़ी से उन के पेट को ठोका दिया और फ़रमाया : **استو یاسواد** ऐ सव्वाद ! बराबर हो जाओ। इस पर सव्वाद ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़िसास त़लब किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन अपना शिकम मुबारक नंगा कर दिया और फ़रमाया कि क़िसास ले लो। येह क़िस्सा बित्तफ़्सील पहले आ चुका है।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अमानत का येह आ़लम था कि नबुव्वत से पहले भी आप अ़रब में "अमीन" मश्हूर थे। चुनान्चे, कु़रैश का'बा को अज़ सरे नौ बनाने लगे और वोह ह़जरे अस्वद की जगह तक तय्यार हो गया तो क़बाइले कु़रैश में झगड़ा हुवा, हर एक क़बीला येही चाहता था कि ह़जरे अस्वद को उठा कर हम उस की जगह पर रखेंगे। आख़िर येह क़रार पाया कि जो शख़्स कल सुब्ह़ बाबे बनी शैबा से ह़रम में पहले दाख़िल हो वोह सालिस बने। इत्तिफ़ाक़न उस दरवाज़े से जो पहले दाख़िल हुवे वोह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे। आप को देखते ही सब पुकार उठे :(3)

"هٰذَا الْاَمِيْنُ رَضِيْنَا هٰذَا مُحَمَّدٌ" येह अमीन हैं, हम राज़ी हैं, येह मुह़म्मद हैं। (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب الانبیاء۔......(صحيح البخاري، كتاب احاديث الانبياء، ٥٦۔باب، الحديث:٣٤٧٥، ج٢، ص٤٦٨۔علميه)

2 ......ابوداؤد، باب القود بغیر حدید۔......(سنن ابي داود، كتاب الديات، باب القود من الضربة...الخ، الحديث:٤٥٣٦، ج٤، ص٢٤١۔علميه)

3 ......سیرت ابن ہشام، حدیث بنیان الکعبۃ۔

www.dawateislami.net

जब उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह मुआ़मला ज़िक्र किया तो आप ने एक चादर बिछा कर ह़जरे अस्वद को उस में रखा फिर फ़रमाया कि हर त़रफ़ वाले एक एक सरदार इन्तिख़ाब कर लें और वोह चारों सरदार चादर के चारों कोने थाम लें और ऊपर को उठाएं। इस त़रह़ जब वोह चादर मक़ामे नस्ब के बराबर पहुंच गई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से ह़जरे अस्वद को उठा कर दीवारे का'बा में नस्ब फ़रमाया और वोह सब ख़ुश हो गए।(1)

एक दफ़्आ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बदने मुबारक पर एक जोड़ा क़ित़री मोटे कपड़े(2) का था, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैठते तो वोह पसीने से बोझल हो जाता एक यहूदी के हां शाम से कपड़े आए। ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ किया कि आप किसी के हाथ उस से एक जोड़ा क़र्ज़ मंगवा लें। जब आप का आदमी यहूदी के पास पहुंचा तो उस ने कहा : "मैं समझा मत़लब येह है कि वोह मेरा माल या दाम यूं ही उड़ा लें।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुन कर फ़रमाया : "उस ने झूट कहा। उसे मा'लूम है कि मैं सब से ज़ियादा परहेज़गार और सब से ज़ियादा अमानत का अदा करने वाला हूं ?"(3)

क़ुरैश को अगर्चे आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सख़्त अ़दावत थी मगर बा वुजूद इस के अपनी जोखम की चीज़ आप ही के हां अमानत रखा करते थे जैसा कि इस किताब में पहले मज़्कूर हुवा।

सिद्क़

अपने तो दर किनार बेगाने भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सदाक़त के क़ाइल थे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम अभी ईमान न लाए थे कि ह़ुज़ूर को देखते ही पुकार उठे : وَجْهُهٗ لَيْسَ بِوَجْهِ كَذَّابٍ इन का चेहरा दरोग़ गो का चेहरा नहीं।(4)

1 ......السيرة النبوية لابن هشام،اختلاف قريش فيمن يضع الحجر ولعقة الدم،ص٧٩ـعلميه

2 ......क़ित़्र एक बस्ती का नाम है यमन या बह़रैन में, वहां का तय्यार कर्दा आ'ला दरजे का कपड़ा जो सूती, माइल ब सुर्ख़ी होता है और ह़ाशिये पर आ'ला दरजे का काम होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 116) । **इल्मिय्या**

3 ......ترمذی،باب ماجاء فی الرخصة فی الشراء الی اجل۔......(سنن الترمذی،کتاب البیوع،باب ماجاء فی الرخصة فی الشراء الی اجل،الحدیث:١٢١٧،ج٣،ص٧ـعلميه)

4 ......مشکوٰۃ شریف،باب فضل الصدقة۔......(مشكاة المصابيح،كتاب الزكاة،باب فضل الصدقة،الحديث:١٩٠٧،ج١،ص٣٦٢ـعلميه)

www.dawateislami.net

सुल्हे हुदैबिय्या की मुद्दत में हिरक़्ले रूम ने अबू सुफ़्यान (जो अब तक ईमान न लाए थे) से आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत पूछा : "क्या दा'वए नबुव्वत से पहले तुम्हें उन पर झूट बोलने का गुमान हुवा है ?" अबू सुफ़्यान ने जवाब दिया कि नहीं।

ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم रिवायत करते हैं कि एक दफ़्आ़ अबू जह्ल ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा कि "हम (मुअ़श्शरे कुरैश) तुम को झूटा नहीं कहते। लेकिन जो कुछ (किताब व शरीअ़त) तुम लाए हो उस से हम इन्कार करते हैं।" इस पर अबू जह्ल और उस के अमसाल की शान में **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

فَاِنَّهُمْ لَا یُكَذِّبُوْنَكَ وَ لٰكِنَّ الظّٰلِمِیْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿۳۳﴾ (انعام، ع۴)

वोह तुझ को झूटा नहीं कहते लेकिन ज़ालिम ख़ुदा की आयतों का इन्कार करते हैं। (1)

उ़त्बा बिन रबीआ़ ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या की वालिदा हिन्द का बाप था, जो जंगे बद्र में कुफ़्र पर मरा। एक रोज़ कुरैश ने उस को आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू करने के लिये भेजा। उस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर चन्द उमूर पेश किये कि उन में से जो चाहें इख़्तियार करें और नए मज़हब से बाज़ आएं। इस के जवाब में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूरए حٰمٓ السجدة पढ़नी शुरूअ़ की। जब आप आयए فَاِنْ اَعْرَضُوْا पर पहुंचे तो उ़त्बा ने आप के मुंह मुबारक पर हाथ रख कर और क़राबत की क़सम दे कर कहा कि आप आगे न पढ़ें। इस के बा'द उ़त्बा ने वापस जा कर कुरैश से येह माजरा बयान किया और कहा कि उस ने मुझे कुरआन सुनाया, जब वोह इस आयत पर पहुंचा :

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ؕ

अगर वोह मुंह फेरें तो कह दीजिये कि मैं ने तुम्हें एक कड़ाके से डराया है जैसा कि आ़द व समूद पर आया था। (2)

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम **अल्लाह** की आयतों से इन्कार करते हैं। (پ۷،الانعام:۳۳) **इल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अगर वोह मुंह फेरें तो तुम फ़रमाओ कि मैं तुम्हें डराता हूं एक कड़क से जैसी कड़क आ़द और समूद पर आई थी। (پ۲٤،حم السجدة:۱۳) **इल्मिय्या**

तो मैं ने उस के मुंह पर हाथ रख दिया और क़राबते क़रीबा की क़सम दे कर कहा कि बस आगे न पढ़िये। तुम्हें मा'लूम है कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) जब कुछ कह देता है तो झूट नहीं बोलता ! इस लिये मैं डर गया कि कहीं तुम पर वोह अ़ज़ाब नाज़िल हो जाए जिस से उस ने डराया था।[1]

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ए'लाने दा'वत का हुक्म आया तो आप ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर क़ुरैश को पुकारा, जब वोह जम्अ़ हो गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा : "बताओ अगर मैं तुम से येह कहूं कि वादिये मक्का से एक सुवारों का लश्कर तुम पर ताख़्तो ताराज[2] करना चाहता है तो क्या तुम्हें यक़ीन आ जाएगा ?" वोह बोले : "हां", क्यूंकि हम ने तुम को सच ही बोलते देखा है !(3)

हुस्ने अ़ह्दो वफ़ा

जब हिरक़्ल क़ैसरे रूम ने अबू सुफ़्यान से पूछा : "क्या वोह मुद्दइये नबुव्वत अ़ह्द शिकनी करता है ?" तो अबू सुफ़्यान ने जवाब दिया कि नहीं।

अबू राफ़ेअ़ एक क़िब्त़ी ग़ुलाम थे जो मक्का में रहा करते थे उन का बयान है कि क़ुरैश ने मुझे सफ़ीर बना कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ भेजा। जब मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो मेरे दिल में इस्लाम की सदाक़त जा गुज़ीं हो गई। मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं वल्लाह कभी उन के पास लौट कर न जाऊंगा।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं अ़ह्द शिकनी नहीं करता और न क़ासिदों को अपने पास रोकता हूं तुम अब लौट जाओ अगर वहां भी तुम्हारे दिल में सदाक़ते इस्लाम रही तो वापस आ जाना।" अबू राफ़ेअ़ का क़ौल है कि मैं चला गया फिर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ईमान लाया।[4]

---

1 ......خصائص کبریٰ للسیوطی، بحوالہ ابن ابی شیبہ وبیہقی وابی نعیم، جزء اول، ص۱۱۴۔......(الخصائص الکبری للسیوطی ، باب اعجاز القرآن...الخ، ج۱، ص۱۹۰ ملخصاً۔علمیہ)

2 ......तबाहो बरबाद करना।

3 ......صحیح بخاری، تفسیر سورۂ شعراء۔......(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ الشعراء، الحدیث:۴۷۷۰، ج۳، ص۲۹۴۔علمیہ)

4 ......ابوداؤد، باب فی الامام یستجن بہ فی العہود۔......(سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی الامام یستجن به فی العهود، الحدیث: ۲۷۵۸، ج۳، ص۱۰۹۔علمیہ)

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अ़ह्द शिकनी को बहुत बुरा जानते थे। चुनान्चे, फ़रमाया करते थे : "مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَمْ يَرَحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَاِنَّ رِيْحَهَا لَتُوْجَدُ مِنْ مَّسِيْرَةِ اَرْبَعِيْنَ عَامًا" जो शख़्स किसी ग़ैर मुस्लिम मुआ़हिद (ज़िम्मी) को क़त्ल करेगा वोह बिहिश्त की बू न सूंघेगा ह़ालांकि उस की बू चालीस साल की मसाफ़त से आएगी।[1]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अल ह़मसा बयान करते हैं कि मैं ने बिअ़्सत से पहले नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कोई चीज़ ख़रीदी उस की क़ीमत में से कुछ मेरे ज़िम्मे बाक़ी रहा। मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वा'दा किया कि मैं बाक़ी क़ीमत ले कर उसी जगह आप के पास आता हूं चुनान्चे, मैं चला गया और अपना वा'दा भूल गया। तीन रातों के बा'द मुझे याद आया, मैं बक़िय्या क़ीमत ले कर आया तो क्या देखता हूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी जगह बैठ रहे हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ नौजवान ! बेशक तू ने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया मैं तीन रातों से यहां तेरा इन्तिज़ार कर रहा हूं।"[2]

इफ़्फ़त व ह़या

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पाक दामनी का ज़िक्र किस ज़बान से किया जाए सिर्फ़ इतना बता देना काफ़ी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी किसी औ़रत को जिस के आप मालिक न हों नहीं छुवा।

ह़या वोह ख़ुल्क़ है जिस के ज़रीए़ इन्सान क़बाइहे शरइय्या[3] के इर्तिकाब से बचता है हुज़ूर عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ाते अक़्दस में ग़ायत दरजे की ह़या थी चुनान्चे, ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنۡهُ बयान करते हैं कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर्दे वाली दोशीज़ा से बढ़ कर ह़यादार थे। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी अम्र को ना पसन्द फ़रमाते तो हम उसे आप के चेहरए मुबारक में पहचान जाते।[4] या'नी ग़ायते ह़या के सबब से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी कराहत की तस्रीह़ न फ़रमाते थे[5] बल्कि हम उस के आसार चेहरए अन्वर पर पाते।"

---

1 ......بخاری، باب اثم من قتل معاہدا بغیر جرم۔......(صحیح البخاری، کتاب الجزیة و الموادعة، باب اثم من قتل معاهداً بغیر جرم، الحدیث:٣١٦٦، ج٢، ص٣٦٥۔علمیه)

2 ......ابوداوٗد، کتاب الادب، باب العدۃ۔......(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی العدة، الحدیث:٤٩٩٦، ج٤، ص٣٨٨۔علمیه)

3 .....वोह उमूर जो शरीअ़त की नज़र में ना पसन्दीदा और बुरे हैं।

4 ......شمائل ترمذی، باب ماجاء فی حیاء رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم۔......(الشمائل المحمدیة للترمذی، باب ماجاء فی حیاء رسول اللّٰه، الحدیث:٣٤١، ص٢٠٣۔علمیه)

5 .....या'नी अपनी ना पसन्दीदगी का इज़्हार न फ़रमाते।

www.dawateislami.net

तक़्सीमे अवक़ात

हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार से दरयाफ़्त किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जो वक़्त अपने दौलत ख़ाने में गुज़रता था आप उस में क्या क्या करते थे ? उन्हों ने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल होते तो उस में क़ियाम के वक़्त के तीन हिस़्से कर लेते थे । एक हिस़्सा **अल्लाह** (की इबादत) के लिये, दूसरा अपने अहल (के साथ मुवानसत व मुआ़शरत) के लिये, तीसरा अपनी ज़ाते अक़्दस के लिये । फिर अपने ज़ाती हिस़्से को अपने और आ़म लोगों के दरमियान तक़्सीम कर लेते । ख़व्वास सह़ाबा जो दौलत ख़ाने में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते आप उन की वसात़त से अ़वाम को जो दौलत ख़ाने में ह़ाज़िर न हुवा करते तब्लीग़े अह़काम फ़रमाते और नसीह़तो हिदायत की कोई बात आ़मो ख़ास से पोशीदा न रखते । हिस़्सए उम्मत में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा यूं था कि अहले फ़ज़्ल को तरजीह़ देते ताकि ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर इफ़ादए आ़म करें और इस हिस़्सए उम्मत को ब क़दरे ह़ाजाते दीनिय्या तक़्सीम फ़रमाते । अहले फ़ज़्ल में से किसी को एक मस्अलए दीन दरयाफ़्त करना होता किसी को दो और बा'ज़ को बहुत से मसाइल की ज़रूरत होती । पस उन अस्ह़ाबे ह़ाजात की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते और उन को वोही उमूर दरयाफ़्त करने देते जिन में उन की उम्मत की बेहबूदी हो । हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के मुनासिब ह़ाले अह़काम बयान फ़रमाते । इस के बा'द आप ह़ाज़िरीने मजलिस से इरशाद फ़रमाते कि तुम्हें चाहिये कि बक़िय्या उम्मत को जो ह़ाज़िर नहीं येह अह़काम पहुंचा दो, और नीज़ फ़रमाते कि जो लोग (मसलन औरतें, बीमार, ग़ाइब वग़ैरा) अपनी ह़ाजतें मुझ तक पहुंचा नहीं सकते तुम उन के ह़वाइज मुझ पर पेश करो क्यूंकि जो शख़्स ऐसे आदमी की ह़ाजत बादशाह तक पहुंचाता है जिसे वोह ख़ुद नहीं पहुंचा सकता **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उस के क़दम (पुल सिरात़ पर) साबित रखेगा इसी त़रह़ के ज़रूरी मुफ़ीद उमूर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश हुवा करते और ऐसे उमूर की शनवाई न होती जिन में कुछ फ़ाइदा न होता । त़ालिब व साइल दौलत ख़ाने में ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होते और आप से इस्तिफ़ादए उ़लूम करते और लोगों के रहबर बन कर निकलते ।

हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इस के बा'द मैं ने अपने वालिदे बुज़ुर्गवार से पूछा कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जो वक़्त घर से ख़ारिज गुज़रता था आप उस में क्या

www.dawateislami.net

क्या करते थे ? उन्हों ने फ़रमाया कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर ख़ामोश रहते और ब जुज़ मुफ़ीद व ज़रूरी अम्र के लब कुशाई न फ़रमाते। आप लोगों को (हुस्ने ख़ुल्क़ से) अपना गिरवीदा बनाते और ऐसी बात न करते जिस से वोह आप से नफ़रत करने लगें। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर क़ौम के बुज़ुर्ग की इ़ज़्ज़त करते और उस को उन का सरदार बनाते। आप लोगों को (अ़ज़ाबे ख़ुदा से) डराते उन से एह़तिराज़ करते और बचते मगर कुशादा रूई और हुस्ने ख़ुल्क़ में किसी से दरेग़ न फ़रमाते। अपने अस्ह़ाब की ख़बरगीरी फ़रमाते (मसलन मरीज़ की इ़यादत, मुसाफ़िर के लिये दुआ़ और मय्यित के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाते।) अपने ख़ास अस्ह़ाब से लोगों के ह़ालात दरयाफ़्त फ़रमाते (ताकि ज़ालिम से मज़्लूम का बदला लें) आप अच्छी बात की तह़सीन फ़रमाते और उस की ताईद करते और बुरी बात की बुराई ज़ाहिर फ़रमाते और उस की तज़्ईफ़ व तरदीद करते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़ाल हमेशा मो'तदिल था, इस में इख़्तिलाफ़ न था। आप (लोगों की तज़्कीरो ता'लीम से) ग़ाफ़िल न होते थे कि मबादा वोह ग़ाफ़िल हो जाएं या सुस्ती की त़रफ माइल हो जाएं। आप बहर ह़ाल (जमीअ़ अन्वाए इ़बादात के लिये) मुस्तइ़द थे। ह़क़ से कोताही न करते और न ह़क़ से तजावुज़ फ़रमाते, जो लोग (इस्तिफ़ादा के लिये) आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहते वोह ख़ैरुन्नास होते, सब से अफ़्ज़ल आप के नज़्दीक वोह होता जो सब मुसलमानों का ख़ैर ख़्वाह होता और मर्तबे में आप के नज़्दीक सब से बड़ा वोह होता जो मोह़ताजों की ग़म ख़्वारी करने वाला और (मुहिम्माते उमूर में)[1] अपने भाइयों की मदद करने वाला होता।

इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बा'दे अज़ां मैं ने वालिदे बुज़ुर्गवार से आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस का ह़ाल दरयाफ़्त किया। उन्हों ने फ़रमाया कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मजलिस से उठना और मजलिस में बैठना बिग़ैर ज़िक्रे इलाही न होता। जब आप किसी मजलिस में रौनक़ अफ़रोज़ होते तो जो जगह ख़ाली पाते वहीं बैठ जाते और दूसरों को भी येही हुक्म देते जो लोग आप के पास बैठते आप उन में से हर एक को (ह़स्बे ह़ाल कुशादा रूई और ता'लीमो तफ़्हीम से) बहरावर फ़रमाते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हर एक जलीस[2] येह समझता कि आप के नज़्दीक मुझ से ज़ियादा कोई बुज़ुर्ग नहीं। जो शख़्स आप के पास बैठता या किसी ह़ाजत के लिये आप से कलाम करता। आप उस के साथ उसी ह़ालत में

1.....अहम उमूर में।

2.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से फ़ैज़याब होने वाला।

www.dawateislami.net

ठहरे रहते यहां तक कि वोह ख़ुद वापस हो जाता। जो शख़्स आप से किसी ह़ाजत का सुवाल करता आप उस की ह़ाजत को पूरा करते या उस से कोई नर्म बात फ़रमाते। (या'नी वा'दा फ़रमाते या फ़रमाते कि फ़ुलां से हमारे ज़िम्मे क़र्ज़ ले लो) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कुशादा रूई और ह़ुस्ने ख़ुल्क़ तमाम लोगों के लिये आ़म था। आप (ब लिह़ाज़े शफ़्क़त) सब के बाप हो गए थे और वोह आप के नज़्दीक ह़क़ में बराबर थे (ह़स्बे ह़ाल व इस्तिह़्क़ाक़ हर एक की ह़क़ रसानी होती) आप की मजलिस ह़िल्मो ह़या व अमानत व सब्र की मजलिस हुवा करती थी। उस में आवाज़ें बुलन्द न हुवा करतीं और न उस में किसी की आबरू रेज़ी होती और न इशाअ़ते हफ़्वात होती।(1) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में सब मुतसावी थे हां ब लिह़ाज़े तक़्वा बा'ज़ को बा'ज़ पर फ़ज़ीलत थी। वोह सब मुतवाज़ेअ़ थे जो मजलिसे मुबारक में बड़ों की तौक़ीर छोटों पर रह़्म करते और साह़िबे ह़ाजत(2) को अपनी ज़ात पर तरजीह़ देते और मुसाफ़िर व अजनबी के ह़क़ की रिआ़यत करते।(3)

फ़रमाने सय्यिदुना ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم

"لَا يُفَضِّلُنِي أَحَدٌ عَلَى أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ إِلَّا جَلَدْتُهُ حَدَّ الْمُفْتَرِي اخرجه ابن عساكر والدار قطنی"

मुझे कोई शख़्स अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) पर फ़ज़ीलत न दे वगरना मैं उसे मुफ़्तरी की ह़द या'नी 80 कोड़े मारूंगा।

(تاریخ مدینه دمشق ج٤٤ ص٣٦٥ دار الفكربيروت/المؤتلف والمختلف للدار قطنی،باب حجل وجحل وحجل ج٢ص٨٠٧ دار الغرب الإسلامی بيروت)

और सवाइक़े लि इब्ने ह़जर हैतमी में येह अल्फ़ाज़ हैं :

"لَا أَجِدُ أَحَدًا فَضَّلَنِي عَلَى أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ إِلَّا جَلَدْتُهُ حَدَّ الْمُفْتَرِي" जिसे मैं पाऊंगा कि शैख़ैन (ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मुझे अफ़्ज़ल बताता (और मुझे उन में से किसी पर फ़ज़ीलत देता) है उसे मुफ़्तरी (इफ़्तरा व बोहतान लगाने वाले) की ह़द मारूंगा कि अस्सी80 कोड़े हैं। (الصواعق المحرقة على أهل الرفض والضلال والزندقة،ج١،ص١٧٧ مؤسسة الرسالة لبنان)

---

1 .....बुरी बातों की इशाअ़त। 2 .....ज़रूरतमन्द।

3 .....شمائل ترمذی، باب ماجاء فی تواضع رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ـ.......(الشمائل المحمدية للترمذی،باب ماجاء فی تواضع رسول اللّٰه،الحديث:٣١٩،ص١٩١ـ١٩٣ـعلميه)

www.dawateislami.net

सातवां बाब

आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ों का बयान

अल्लाह तआ़ला ने मुख़्तलिफ़ ज़मानों में अपने बन्दों की हिदायत के लिये अपने प्यारे पैग़म्बर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام भेजे और इन की रिसालत के सुबूत के लिये बत़ौरे दलाइल इन को मो'जिज़ात इनायत किये। कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं जिसे कोई न कोई मो'जिज़ा अ़त़ा न हुवा हो मगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात अक्सर व अक़्वा व अज़्हर व अश्हर हैं। कसरत का येह आ़लम है कि इन के अफ़राद का इह़ात़ा इन्सानी त़ाक़त से ख़ारिज है। क़ुरआने करीम को देखिये ! कहने को तो एक मो'जिज़ा है मगर इस में हज़ारहा मो'जिज़े हैं क्यूंकि फ़ुसह़ाए क़ुरैश से क़ुरआन की किसी एक सूरत का मुआ़रज़ा त़लब किया गया[1] तो वोह आ़जिज़ आ गए। अब जाए ग़ौर है कि क़ुरआन में छोटी से छोटी सूरत "कौसर" है। जिस में दस से कुछ ऊपर कलिमात हैं बक़ौले बा'ज़ क़ुरआन में 77934 कलिमे हैं। पस अगर सूरते कौसर की मिक़्दार कलिमाते क़ुरआन के अज्ज़ा बनाए जाएं तो क़रीबन सात हज़ार होंगे। जिन में से हर एक जुज़ फ़ी नफ़्सिही मो'जिज़ा होगा। फिर अगर बलाग़त व उस्लूब व अख़्बारे ग़ैब वग़ैरा वुजूहे ए'जाज़ पर ग़ौर किया जाए तो सात हज़ार की तज़्ईफ़ होती जाएगी।[2] पस आप ह़िसाब कर लें कि एक क़ुरआने करीम में कितने मो'जिज़े हैं। हम इसी मज़्मून को किसी क़दर तफ़्सील के साथ दो फ़स्लों में लिखते हैं।

फ़स्ले अव्वल

ए'जाज़ुल क़ुरआन का बयान

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने अपने ज़माने में मो'जिज़ात दिखाए, मगर उन मो'जिज़ात का वुजूद सिर्फ़ उन की ह़याते दुन्यवी तक रहा। इ़लावा अज़ीं उन के मो'जिज़ात उ़मूमन ह़िस्सी थे जिन को फ़क़त़ ह़ाज़िरीने वक़्त ने अपनी आंखों से देखा मसलन अ़साए मूसवी को अगर देखा तो उस वक़्त के ह़ाज़िरीन ने, नाक़ए ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام का अगर मुशाहदा किया तो उस वक़्त के मौजूदीन ने और माइदए[3] ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का अगर मुलाह़ज़ा किया तो ह़ाज़िरीने वक़्त ने, मगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त क़ियामत तक बाक़ी रहेगी और हर ज़माने में हर साहिबे

1.....या'नी इस सूरत की मानिन्द व मिस्ल लाने का मुत़ालबा किया गया।

2.....या'नी दुगने तिगने होते हुवे कई गुना होते जाएंगे।

3.....दस्तर ख़्वान।

www.dawateislami.net

अ़क़्ले सलीम इस को बसीरत की आंख से देख सकेगा। चुनान्चे, जब कुफ़्फ़ार ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले नबियों के से ह़िस्सी मो'जिज़े त़लब किये तो उन के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया :

اَوَلَمۡ یَكۡفِهِمۡ اَنَّاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡكَ الۡكِتٰبَ یُتۡلٰى عَلَیۡهِمۡ ؕ (عنکبوت،ع ۵)

क्या उन को बस नहीं कि हम ने उतारी तुझ पर किताब जो उन पर पढ़ी जाती है।[1]

मत़लब येह कि अगर कुफ़्फ़ार वाक़ेई त़ालिबे ह़क़ हैं तो हम ने तुझे क़ुरआने मजीद एक ऐसा मो'जिज़ा अ़त़ा किया है कि जिस की मौजूदगी में उन मो'जिज़ों की ज़रूरत नहीं जो अज़ रूए तअ़न्नुत व इनाद तुझ[2] से त़लब करते हैं। येह क़ुरआन हर मकान[3] व हर ज़मान में मुन्किरीन पर पढ़ा जाता है और पढ़ा जाएगा लिहाज़ा येह ज़िन्दा मो'जिज़ा ता क़ियामत उन के साथ रहेगा और दूसरे मो'जिज़ों की त़रह़ नहीं कि वुजूद में आए और जाते रहे, या एक मकान में हुवे और दूसरे में न हुवे। इसी मत़लब को इमाम बूसैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने क़सीदए बुर्दा में यूं अदा किया है :

دَامَتْ لَدَيْنَا فَفَاقَتْ كُلَّ مُعْجِزَةٍ   مِنَ النَّبِيِّيْنَ اِذْ جَاءَتْ وَلَمْ تَدُمِ[4]

हैं हमारे पास बाक़ी आज तक वोह आयतें
मो'जिज़े और अम्बिया के हो गए सब क़त्अ़ दम[5]

ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की सब से बड़ी सब से अशरफ़ और सब से वाज़ेह़ दलील येही क़ुरआने मजीद है। वज्ह येह कि मो'जिज़ात उ़मूमन उस वह़्य के मुग़ाइर हुवा करते थे जो किसी नबी पर नाज़िल होती थी और वोह नबी उस वह़्य की सदाक़त पर मो'जिज़े को बत़ौरे शाहिद पेश करता था। मगर क़ुरआने करीम वह़्य है और मो'जिज़ा भी इस लिये येह अपना शाहिद खुद आप है और किसी दूसरी दलील का मोह़ताज नहीं।

آفتاب آمد دلیل آفتاب   گر دلیلت بایدازوے رومتاب

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या येह उन्हें बस नहीं कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है। (پ۲۱،العنکبوت:۵۱) **इल्मिय्या** 2...बुग़्ज़ो अ़दावत की बिना पर। 3...मक़ाम।

4......القصیدتان،البردۃ للبوصیری،الفصل السادس فی ذکرشرف القرآن الکریم،ص۲۲۔علمیہ

5...इस शे'र के तह़त ह़ज़रते अ़ल्लामा उ़मर बिन अह़मद ख़रपूती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "अ़सीदतुश्शुहदा शर्हे क़सीदतुल बुर्दा" में लिखा है कि तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मो'जिज़ात उन की ह़याते ज़ाहिरी तक थे जब उन का विसाल हुवा तो वोह मो'जिज़ात भी मुन्क़त़अ़ हो गए जब कि हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात क़ियामत तक बाक़ी रहेंगे। (عصیدۃ الشھدۃ شرح قصیدۃ البردۃ،ص۲۱۸)......**इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ह़दीस "مَا مِنَ الْاَنْبِيَاء"[1] के येही मा'ना हैं[2] क्यूंकि इस ह़दीस में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमा दिया कि जब मो'जिज़ा नफ़्से वह़्य हो तो ब वज्हे इत्तिह़ादे दलील व मदलूल वोह दलालत में अवज़ह़ व अक़्वा होता है और उस पर ईमान लाने वाले ज़ियादा होते हैं इसी वासित़े क़ुरआने करीम पर ईमान लाने वाले हर ज़माने में ब कसरत रहे और रहेंगे।[3] ख़ुलासए कलाम येह कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत क़ुरआने मजीद पर मब्नी है। चुनान्चे, ख़ुद क़ुरआने मजीद में वारिद है :

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ۱ (فرقان، ع ۱)

बड़ी बरकत है उस की जिस ने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर कि हो जहान वालों के लिये डराने वाला।[4]

और क़ुरआने करीम के वह़्ये इलाही साबित करने के लिये किसी दलीले मग़ाइर की ज़रूरत नहीं[5] लिहाज़ा हम क़ुरआन ही की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं और बताते हैं कि वुजूहे ज़ैल से इस का मो'जिज़ा होना साबित है :

ए'जाज़ुल क़ुरआन की पहली वज्ह

फ़साह़तो बलाग़त :

वुजूहे ए'जाज़ में सब से आ'ला और मुक़द्दम क़ुरआने करीम की फ़साह़तो बलाग़त है जो ख़ारिक़े आ़दते अ़रब है। ज़मानए जाहिलिय्यत में फ़साह़तो बलाग़त में

---

1 ......عن ابی هريرة رضی اللّٰه تعالٰی عنه قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه عليه واله وسلم ما من الانبياء من نبی الا قد اعطی من الأيات ما مثله أمن عليه البشر وانما كان الذی اوتيت وحيا اوحی اللّٰه الیّ فارجو ان اكون اكثرهم تابعاً يوم القيامة. متتفق عليه(مشكوٰة باب فضائل سيد المرسلين صلوٰة اللّٰه وسلامه عليه)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि नबियों में से कोई नबी नहीं मगर येह कि मो'जिज़ात में से उसे ऐसा मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा कि जिस की सिफ़त येह है कि उसे देख कर लोग ईमान लाए और सिवाए उस के नहीं कि मुझे जो मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा वोह वह़्य है जो **अल्लाह** ने मेरी त़रफ़ भेजी है इस लिये मैं उम्मीद करता हूं कि क़ियामत के दिन मैं उम्मत के लिह़ाज़ से उन से ज़ियादा होऊंगा। येह ह़दीस मुत्तफ़िक़ अ़लैह है। 12 मिन्ह.... (مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل و الشمائل، باب فضائل سيد المرسلين، الحديث:٥٧٤٦، ج٢، ص٣٥٤-علميه)

2 .....देखो मुक़द्दमा तारीख़े इब्ने ख़ल्दून। 12 मिन्ह

3 ......مقدمة ابن خلدون، المقدمة السادسة فی اصناف المدركين للغيب...الخ، ج١، ص١٠٣-علميه

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बड़ी बरकत वाला है वोह कि जिस ने उतारा क़ुरआन अपने बन्दे पर जो सारे जहान को डर सुनाने वाला हो। (پ١٨، الفرقان:١) **इल्मिय्या**

5 .....क़ुरआने पाक के सिवा किसी और दलील की ज़रूरत नहीं।

www.dawateislami.net

अ़रब[1] का वोह पाया था कि किसी दूसरी क़ौम को नसीब नहीं हुवा। उन का नाम ही बता रहा है कि इस फ़न में उन को किस क़दर मुज़ावलत[2] थी। मुहिम्माते उमूर में वोह इस फ़न के अ़जाइबात बदाहतन ज़ाहिर किया करते थे। महाफ़िल व मजालिस में फिल बदिय्या ख़ुत़बे पढ़ दिया करते थे और घुमसान के मा'रिकों में त़ा'न व ज़र्ब के दरमियान रजज़ पढ़ा करते थे और मत़ालिबे आ़लिय्या के हुसूल में भी अपनी सह़्र बयानी से काम लेते थे। इस फ़न से वोह बुज़दिल को दिलैर, बख़ील को सख़ी, नाक़िस को कामिल, गुमनाम को नामवर और मुश्किल को आसान कर देते थे। जिसे चाहते मद्ह़ से शरीफ़ और हजू से वज़ीअ़[3] बना देते। और इसी से कीनए देरीना दिलों से दूर कर के बेगाने को अपना बना लेते। उन्हें यक़ीन था कि इक़्लीमे सुख़न के मालिक और मैदाने फ़साह़तो बलाग़त के शहसुवार हम ही हैं और वोह येह समझे हुवे थे कि कोई कलाम हमारे कलाम से सबक़त नहीं ले जा सकता।

फ़साह़तो बलाग़त के इस कमाल पर उन की रूह़ानी ह़ालत निहायत ही गिरी हुई थी वोह उ़मूमन बुतों की पूजा किया करते थे, ह़त्ता कि ख़ानए ख़ुदा को उन्हों ने बुत ख़ाना बनाया हुवा था। बा'ज़े आग की परस्तिश करते थे। कुछ लोग सितारों और सूरज और चांद को पूजते थे। बा'ज़े तश्बीह के क़ाइल थे और फ़िरिश्तों को ख़ुदा की बेटियां कहा करते थे और बा'ज़ को ख़ुदा की हस्ती ही से इन्कार था। अवामिर व नवाही की उन्हें मुत़लक़ ख़बर न थी और न उन के पास कोई इल्हामी किताब थी। दीने इब्राहीमी ब जुज़ चन्द रुसूम के बिल्कुल मफ़्क़ूद था। क़सावते क़ल्ब का येह आ़लम था कि बा'ज़े लड़कियों को पैदा होते ही ज़िन्दा दरगोर कर देते थे। वोह शबो रोज़ ज़िनाकारी, शराब ख़ोरी, क़िमार बाज़ी और क़त्लो ग़ारत गिरी में मश्ग़ूल रहते थे। उन के दरमियान जो अहले किताब मौजूद थे उन की ह़ालत भी दिगर-गूं थी और उन की किताबें भी मुह़र्रफ़ हो चुकी थीं।[4] यहूद ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को ख़ुदा का बेटा कहते थे और नसारा तीन ख़ुदा मानते थे और मस्अलए कफ़्फ़ारा की आड़ में आ'माले ह़सना की कोई ज़रूरत ही मह़सूस न करते थे। ग़रज़ मुल्के अ़रब में सारी दुन्या के मज़ाहिबे बात़िला और अ़क़ाइदे क़बीह़ा मौजूद थे। मुशरिकीन वहां थे, आतश परस्त, सितारा परस्त, आफ़्ताब परस्त, माहताब परस्त और दरख़्त परस्त वहां थे, नसारा वहां थे, यहूद वहां थे, मुशब्बह व मुजस्समा वहां थे, तनासुख़िय्या वहां थे दहरिया[5] वहां थे।

1.....लफ़्ज़े अ़रब आ'राब से है। जिस के मा'ना हैं پیدا گفتن سخن را و بفصاحت سخن گفتن। 12 मिन्ह

2.....महारत।

3.....कमीना।

4.....या'नी उन में रद्दो बदल हो चुका था।

5.....मुशब्बह : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ुदा के मुशाबेह क़रार देने वाले। मुजस्समा : बुत परस्त। तनासुख़िय्या : वोह लोग जिन का अ़क़ीदा है कि रूह़ एक क़ालिब से दूसरे में मुन्तक़िल हो जाती है। दहरिया : ख़ुदा को न मानने वाले, ला मज़हब।

www.dawateislami.net

नज़रे ब ह़ालाते मज़्कूरए बाला इस अम्र की ज़रूरत मह़सूस हो रही थी कि ऐसे मर्कज़ में ख़ुदा की त़रफ़ से एक कामिल त़बीबे रूह़ानी सारी दुन्या के लिये मबऊ़स हो चुनान्चे, ह़स्बे आ़दते इलाही उन के पास **अल्लाह** का एक कामिल बन्दा आया और एक कामिल किताब लाया। जिस में क़ियामत तक हर ज़माने और हर क़ौम के तमाम रूह़ानी अमराज़[1] का ख़ुदाई नुस्ख़ा दर्ज था।

उस त़बीबे रूह़ानी से वोह पहले ही आश्ना थे क्यूंकि वोह **अल्लाह** का प्यारा ख़ातिमे सिलसिलए अम्बिया उन्हीं में से था। उन्हीं के दरमियान पैदा हुवा और उन्हीं के दरमियान परवरिश पाई। अभी अपनी वालिदए माजिदा के बत़्ने मुबारक ही में था कि वालिदे माजिद ने इन्तिक़ाल फ़रमाया। जब छे साल का हुवा तो वालिदए माजिदा ने भी इस दारे फ़ानी से रिह़्लत फ़रमाई। बा'दे अज़ां दादा और चचा यके बा'द दीगरे उस की परवरिश के मुतकफ़्फ़िल हुवे। इस त़रह़ उस दुर्रे यतीम की ता'लीम का कोई सामान न हुवा न हो सकता था क्यूंकि मक्के में न कोई मद्रसा था न कुतुब ख़ाना और न वत़न से बाहर किसी दूसरी जगह जा कर ता'लीम पाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा। अगर ऐसा होता तो अहले मक्का से कब पोशीदा रह सकता था ? ग़रज़ चालीस साल की उ़म्र तक वोह बन्दा कामिल उम्मियों में उम्मी मगर सिद्क़ो अमानत में मश्हूर रहा फिर यका यक उस्तादे अज़ल की ता'लीम से मन्सबे नबुव्वत पर सरफ़राज़ हुवा।

उस उम्मी लक़ब अमीन ने जो किताब अपनी नबुव्वत के सुबूत में अपने हम वत़नों के सामने पेश की वोह उन्हीं की ज़बान में थी और उसी फ़न में उन से मुआ़रज़ा त़लब किया जिस में वोह नक़्क़ारए لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْم बजा रहे थे।[2] इस में शक नहीं कि उन में अफ़्सहुल फ़ुसह़ा अबलग़ुल बुलग़ा मसाक़िउ़ल ख़ुत़बा और अशअ़रुश शुअ़रा मौजूद थे मगर जब मुआ़रज़े के लिये वोह किताब पेश की गई तो उन की अ़क़्लें चकरा गईं।

उस रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बा वुजूदे क़िल्लते अतबाअ़[3] के खुले अल्फ़ाज़ में यूं फ़रमा दिया कि अगर तमाम इन्सो जिन्न मिल कर उस का मुआ़रज़ा करना चाहें तो न कर सकेंगे। (بنی اسرائیل، رکوع ۱۰) फिर बत़ौरे इरख़ाए इ़नान[4] कह दिया कि सारा नहीं तो ऐसी दस सूरतें ही बना लाओ। (ہود، ع ۲) फिर इतमामे हुज्जत के लिये फ़रमा दिया कि दस नहीं तो ऐसी एक ही सूरत पेश करो। (یونس، ع ۴) इसी त़रह़ वोह **अल्लाह** का प्यारा, दो जहान में हम गुनहगारों का सहारा मक्कए मुशर्रफ़ा

1.....(یونس، ع ۶) يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۷﴾ ऐ लोगो ! तुम को आई है नसीह़त तुम्हारे रब से और शिफ़ा वासित़े सीनों के रोग के और हिदायत और रह़मत ईमान लाने वालों के लिये। 12 मिन्ह

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से नसीह़त आई और दिलों की सिह़्ह़त और हिदायत और रह़मत ईमान वालों के लिये (پ ۱۱، یونس: ۵۷) **इ़ल्मिय्या**

2...बेजा नाज़ो फ़ख़्र करने पर येह जुम्ला कहा जाता है।   3...पैरूकारों की कमी।   4....ढील देते हुवे।

www.dawateislami.net

में लगातार दस साल कुफ़्फ़ार से त़लबे मुआ़रज़ा फ़रमाता रहा। फिर जब हुक्मे इलाही से हिजरत फ़रमा कर मदीने में रौनक़ अफ़रोज़ हुवा तो वहां भी दस साल "فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ" से तह़द्दी[1] करता रहा और साथ ही "وَلَن تَفْعَلُوا" से उन्हें चौंकाता और उक्साता रहा।

इस अ़र्सए दराज़ में उस ख़त्मुल मुर्सलीन ने इसी तह़द्दी पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि अ़रब जैसी क़ौम को जिस की ह़मिय्यते जाहिलिय्या मश्हूर है मजालिस में عَلٰی رُؤُسِ الْاَشْهَاد[2] यूं पुकार कर फ़रमा दिया कि तुम गुमराह हो, तुम्हारे आबाओ अज्दाद गुमराह थे, तुम्हारे मा'बूद दोज़ख़ का ईंधन हैं, तुम्हारी जानें और तुम्हारे माल मुसलमानों के लिये मुबाह़ हैं। बईं हमा[3] उन्हों ने मुआ़रज़े से पहलू तही की। उन की आंखों के सामने इस्लाम की शौकत रोज़ बरोज़ बढ़ती जा रही थी। उन के शहर इस्लाम के क़ब्ज़े में आ रहे थे उन की अवलाद को गिरिफ़्तार कर के ग़ुलाम बनाया जा रहा था। उन के बुत तोड़े जा रहे थे, उन के बाप दादा दोज़ख़ी बताए जा रहे थे। इस ह़ालत में अगर वोह ज़रा सा मुआ़रज़ा भी कर सकते तो इस ज़िल्लत को हरगिज़ गवारा न करते क्यूंकि क़ुरआन की छोटी से छोटी सूरत के मुआ़रज़े से येह तमाम ख़्वारी व रुस्वाई दूर हो सकती थी और इस्लाम की जमइय्यत व शौकत का शीराज़ा हमेशा के लिये परागन्दा हो सकता था। जमइय्यत के बा वुजूद उन का बीस साल इस ज़िल्लत को बरदाश्त करना और जिला वत़नी और जिज़्या को गवारा करना साफ़ बता रहा है कि वोह मुआ़रज़े से आ़जिज़ थे। मगर अपने इज्ज़ पर पर्दा डालने के लिये क़िस्म क़िस्म के उ़ज़्र और ह़ीले बहाने कर दिया करते थे। चुनान्चे, कभी इसे मन्ज़ूम देख कर शाइ़र का क़ौल या काहिन का क़ौल बताते। (حاقہ،ع۲) कभी अपनी क़ुदरत से ख़ारिज देख कर ह़ैरत से कहा करते कि येह तो सरीह़ जादू है। (سبا،ع۵) कभी अपनी जहालत के सबब से कहते कि चाहें तो हम भी ऐसा कह लें येह तो पहलों के क़िस्से कहानियां हैं। (انفال،ع۴) कभी कहते कि येह अज़्ग़ासु अह़लाम या'नी उड़ते ख़्वाब हैं।[4] (انبیاء،ع۱) कभी इस की तासीर रोकने के लिये कहते कि शोर मचाओ और सुनने न दो। (حم سجدہ،ع۴) कभी कहते कि क़ुरआन से हमारे दिल ग़िलाफ़ में हैं और हमारे कानों में गिरानी है। (حم سجدہ،ع۱) कभी कहते कि हम ने अपने बाप दादों में येह नहीं सुना येह तो बताई बात है। (ص،ع۱) और कभी उस रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को साह़िरे कज़्ज़ाब या'नी बड़ा झूटा जादूगर। (ص،ع۱) कभी मस्ह़ूर या'नी जादू मारा। (فرقان،ع۱) कभी मुअ़ल्लमे मजनून या'नी सिखाया हुवा बावला। (دخان،ع۱) कभी काहिन और कभी शाइ़र कहते। (طور،ع۲) मगर ऐसे ह़ीलों और उ़ज़्रों से क्या बन सकता था?

1.....ललकार। 2.....अ़लल ए'लान। 3.....बा वुजूद इस के। 4.....ऐसे ख़्वाब जिन की कोई ता'बीर न हो।

www.dawateislami.net

چراغے را کہ ایزد بر فروزد　　　ہر آں کو پف زند ریشش بسوزد

जब अ़रब के कमाले फ़साह़तो बलाग़त के ज़माने में फ़ुसह़ा व बुलग़ा छोटी से छोटी सूरत के मुआ़रज़े से आ़जिज़ आ गए तो अज़्मिनए मा बा'द[1] के अ़रबो अ़जम का इज्ज़ ख़ुद साबित हो गया। सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत की येह कैसी दलीले सात़ेअ़ और बुरहाने क़ात़ेअ़[2] है कि साढ़े तेरह सो साल से ज़ाइद अ़र्सा गुज़र चुका कोई शख़्स अक्सर सूरत[3] के मुआ़रज़े पर क़ादिर नहीं हुवा और न आयिन्दा होगा।

अगर हम किसी इन्सान के कलाम को ख़्वाह वोह कितना ही फ़सीह़ो बलीग़ हो मुत़ालआ़ करें तो इख़्तिलाफ़े मज़ामीन, इख़्तिलाफ़े अह़वाल और इख़्तिलाफ़े अग़राज़ से उन की फ़साह़तो बलाग़त में ज़ाहिर फ़र्क़ नज़र आएगा। मसलन शुअ़रा व ख़ुत़बाए अ़रब जो फ़साह़त में बत़ौरे नमूना पेश किये जाते हैं उन में से बा'ज़े मद्ह़ में बहुत बढ़ चढ़ कर और हजू में मा'मूल से बहुत गिरे हुवे और बा'ज़े इस के बर अ़क्स हैं। बा'ज़े मरसिया गोई में फ़ाइक़ और ग़ज़ल में भद्दे और बा'ज़े इस के ख़िलाफ़ हैं और बा'ज़े रजज़ में अच्छे और क़सीदे में ख़राब और बा'ज़े इस के बर अ़क्स हैं। बा'ज़े किसी ख़ास शै के वस्फ़ में औरों से सबक़त ले गए हैं। चुनान्चे, इम्रउल क़ैस घोड़े और औ़रत के वस्फ़ में, आ'शा शराब के वस्फ़ में, नाबिग़ा तरहीब और ज़ुहैर तरग़ीब में मश्हूर हैं। ज़ुरुम्मा तश्बीब व तश्बीह में अच्छा और रैत, दोपहर, बयाबान, पानी और सांप के वस्फ़ में बढ़ कर है मगर मदीह़ व हजा में गिरा हुवा है इसी सबब से इसे फ़ह़ूल शुअ़रा[4] में शुमार नहीं करते बल्कि कहते हैं कि उस के शे'र में हिरनों की मेंगनियां और ख़ाले उ़रूस[5] हैं। फ़रज़्दक़ अगर्चे साहि़बे ग़ज़ल है मगर तशबीब में अच्छा नहीं। जरीर अगर्चे औ़रतों से परहेज़ करने वाला है मगर तशबीब में सब से अच्छा है। इसी त़रह़ शाइ़र अगर ज़ोह्द को बयान करने लगे तो क़ासिर रह जाए। अगर कोई लाइक़े अदीब ह़लालो ह़राम को बयान करे तो उस का कलाम मा'मूल से गिर जाएगा। عَلٰی ھٰذَا الْقِیَاس इख़्तिलाफ़े अह़वाल से भी इन्सान का कलाम मुतफ़ावुत हो जाता है। मसलन ख़ुशी के वक़्त का कलाम ग़ुस्से के वक़्त के कलाम से ब लिह़ाज़े फ़साह़त मुख़्तलिफ़ होता है। इसी त़रह़ इख़्तिलाफ़े अग़राज़ के सबब से इन्सान कभी एक चीज़ की मद्ह़ करता है और कभी मज़म्मत जिस से उस के कलाम में ज़रूर फ़र्क़ हो जाता है। इलावा अज़ीं फ़ुसह़ा व बुलग़ा का कलाम फ़स्ल व वस्ल, उ़लू व नुज़ूल, तक़रीब व तबईद वग़ैरा में

---

1 ...इस के बा'द के ज़माने। 2 ...बुलन्द व मज़बूत़ दलील। 3 ...कु़रआन की सब से छोटी सूरत या'नी सूरतुल कौसर।
4 .....जय्यद शुअ़रा। 5 .....दुल्हन के काजल या तिल का ज़िक्र।

www.dawateislami.net

मुतफ़ावुत है। मसलन बहुत से शुअ़रा एक मज़्मून से दूसरे मज़्मून की त़रफ़ इन्तिक़ाल करने और एक बाब से दूसरे बाब की त़रफ़ ख़ुरूज करने में नाक़िस हैं। चुनान्चे, सब का इस अम्र पर इत्तिफ़ाक़ है कि बख़्तरी जो नज़्म में अच्छा है। नसीब से मदीह़ की त़रफ़ इन्तिक़ाल करने में क़ासिर है। इस तमाम के बर अ़क्स क़ुरआने करीम पर ग़ौर कीजिये बा वुजूद येह कि इस में वुजूहे ख़िताब मुख़्तलिफ़ हैं कहीं क़ससो मवाइज़ हैं, कहीं ह़लालो ह़राम का ज़िक्र है, कहीं आ'ज़ारो अन्ज़ार, कहीं वा'दाओ वईद, कहीं तख़्वीफ़ो तबशीर और कहीं ता'लीमे अख़्लाक़े ह़सना है। मगर वोह हर फ़न में फ़साह़तो बलाह़त व बलाग़त के ख़ारिक़े आ़दात आ'ला दरजे में है और इस में कहीं इस मन्ज़िलते उ़लिया से इन्ह़ितात़ नहीं पाया जाता और अव्वल से आख़िर तक मक़्सदे वाह़िद के लिये है और वोह ख़ल्क़त को **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाना और दुन्या से दीन की त़रफ़ फेरना है। चुनान्चे, आयए ज़ैल में इसी की त़रफ़ इशारा है :

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ﴿۸۲﴾ (نسآء، رکوع ۱۱)

*क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में और अगर येह होता किसी और का सिवाए **अल्लाह** के तो पाते उस में बहुत तफ़ावुत।*[1]

मिसाल के त़ौर पर देखिये :–

तरग़ीब में :–

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾ (سجدہ، ع ۲)

सो किसी जी को मा'लूम नहीं जो छुपा धरा है उन के वासित़े जो ठन्डक है आंखों की बदला उस का जो करते थे।[2]

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿۷۰﴾ یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِیْهَا مَا تَشْتَهِیْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْیُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۷۱﴾ (زخرف، ع۷)

चले जाओ बिहिश्त में तुम और तुम्हारी औ़रतें कि बनाओ कर दिये जाओगे। लिये फिरेंगे उन पर रकाबियां सोने की और आबख़ूरे और वहां है जो दिल चाहे और जिस से आंखें आराम पावें और तुम को उस में हमेशा रहना है।[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में और अगर वोह ग़ैरे ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते। (پ ٥ نسآء: ٨٢) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का। (پ٢١،السجدة:١٧) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियां तुम्हारी ख़ातिरें होतीं उन पर दौरा होगा सोने के प्यालों और जामों का और उस में जो जी चाहे और जिस से आंख को लज़्ज़त पहुंचे और तुम उस में हमेशा रहोगे। (پ٢٥،الزخرف:٧٠-٧١) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

तरहीब में :

اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿۶۸﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿۶۹﴾ (بنی اسرائیل، ع ۷)

सो क्या तुम निडर हो उस से कि धंसा दे तुम को जंगल के किनारे या भेज दे तुम पर आंधी फिर न पाओ तुम अपना कोई कारसाज़ या निडर हो उस से कि फिर ले जावे तुम को दरया में दूसरी बार फिर भेजे तुम पर पथराव हवा का फिर ग़र्क़ करे तुम को बदले उस ना शुक्री के फिर न पाओ तुम अपनी त़रफ़ से हम पर उस का दा'वा करने वाला।[1]

ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿۱۷﴾ (ملك، ع ۲)

क्या निडर हो तुम उस से जो आस्मान में है कि धंसा दे तुम को ज़मीन में। पस नागाह वोह जुम्बिश करे या निडर हो उस से जो आस्मान में है कि भेजे तुम पर पथराव हवा का सो अब जानोगे कैसा है डराना मेरा।[2]

ज़ज्र में :

فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۴۰﴾ (عنکبوت، ع ۴)

फिर हर एक को पकड़ा हम ने उस के गुनाह पर सो उन में से कोई था कि उस पर भेजा हम ने पथराव हवा का और कोई था कि उस को पकड़ा चिंघाड़ने और कोई था कि उस को धंसाया हम ने ज़मीन में और कोई था कि इस को डुबो दिया हम ने और **अल्लाह** ऐसा नहीं है कि इन पर ज़ुल्म करे पर थे वोह अपना आप बुरा करते।[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम उस से निडर हुवे कि वोह खुश्की ही का कोई किनारा तुम्हारे साथ धंसा दे या तुम पर पथराव भेजे, फिर अपना कोई हि़मायती न पाओ या उस से निडर हुवे कि तुम्हें दोबारा दरया में ले जाए फिर तुम पर जहाज़ तोड़ने वाली आंधी भेजे तो तुम को तुम्हारे कुफ़्र के सबब डुबो दे फिर अपने लिये कोई ऐसा न पाओ कि उस पर हमारा पीछा करे। (پ۱۵،بنی اسرائیل:۶۸-۶۹) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम उस से निडर हो गए जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि तुम्हें ज़मीन में धंसा दे जभी वोह कांपती रहे या तुम निडर हो गए जिस की सल्त़नत आस्मान में है कि तुम पर पथराव भेजे तो अब जानोगे कैसा था मेरा डराना। (پ۲۹،الملك:۱۶-۱۷) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन में हर एक को हम ने उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में किसी पर हम ने पथराव भेजा और उन में किसी को चिंघाड़ ने आ लिया और उन में किसी को ज़मीन में धंसा दिया और उन में किसी को डुबो दिया और **अल्लाह** की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करे हां वोह खुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (پ۲۰،العنکبوت:۴۰) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

वा'ज़ में :

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝٢٠٥ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٢٠٦ مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝٢٠٧
(شعراء، ع ١١)

भला बतलाओ अगर हम फ़ाइदा दें उन को कई बरस फिर आवे उन पर (अ़ज़ाब) जिस का उन से वा'दा था क्या काम आवेगा उन के तमत्तोअ़ उन का।[1]

इलाहिय्यात में :

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ۝٨ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ۝٩ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝١٠
(رعد، ع ٢)

अल्लाह जानता है जो पेट में रखती है हर मादा और जो सुकड़ते हैं पेट और बढ़ते हैं और हर चीज़ उस के नज़्दीक अन्दाज़े पर है। वोह जानने वाला छुपे और खुले का। अ़ज़ीमुश्शान बुलन्द। बराबर है तुम में जो चुपके बात कहे और जो कहे पुकार कर और जो छुपने वाला है रात को चलने वाला है दिन को।[2]

इसी त़रह़ कुरआने करीम के फ़वातेह़ व ख़वातिम, मवाज़ेए़ फ़स्ल व वस्ल और मवाक़ेए़ तह़व्वुल व तनकुल को देखिये इस के पढ़ने वालों को ख़ारिके़ आ़दत बदीए़ तालीफ़ के सबब से फ़स्ल भी वस्ल मा'लूम देता है और एक क़िस्से से दूसरे क़िस्से की त़रफ़ और एक शै से दूसरी शै की त़रफ़ मसलन वा'दे से वईद और तरग़ीब से तरहीब की त़रफ़ इन्तिक़ाल करने में मुख़्तलिफ़ मोतलिफ़ और मुतबाइन मुतनासिब नज़र आता है।

इस मक़ाम पर ब ग़रज़े तौज़ीह़ कुरआन की फ़साह़तो बलाग़त के मुतअ़ल्लिक़ चन्द शहादतें पेश की जातीं हैं। सब्ए़ मुअ़ल्लक़ात जो तमाम अ़रब जाहिलिय्यत का मायए फ़ख़्रो नाज़ थे और ख़ानए का'बा के दरवाज़े पर आवेज़ां थे। कुरआन शरीफ़ के नाज़िल होने पर उतार लिये गए। येह क़साइद अब तक मौजूद हैं मगर सब्अ़ त़िवाल[3] की झलक से अपनी आबो ताब सब खो बैठे हैं।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** भला देखो तो अगर कुछ बरस हम उन्हें बरतने दें फिर आए उन पर जिस का वोह वा'दा दिये जाते हैं तो क्या काम आएगा उन के वोह जो बरतते थे। (پ١٩، الشعراء:٢٠٥-٢٠٧) **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है और पेट जो कुछ घटते और बढ़ते हैं और हर चीज़ उस के पास एक अन्दाज़े से है हर छुपे और खुले का जानने वाला सब से बड़ा बुलन्दी वाला। बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो आवाज़ से और जो रात में छुपा है और जो दिन में राह चलता है। (پ١٣، الرعد:٨-١٠) **इल्मिय्या**

3 ......سورۃ البقرۃ، آل عمران، النساء، المائدۃ، الانعام، الاعراف، الانفال، التوبۃ،

येह आठ सूरतें सब्अ़ त़िवाल कहलाती हैं और अल अन्फ़ाल और अत्तौबह के दरमियान बिस्मिल्लाह न होने की वज्ह से इसे एक शुमार किया गया है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ह़ज़रते लबीद[1] बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो सब्अ़ मुअ़ल्लक़ात के शुअ़रा में से थे इस्लाम ले आए थे और साठ साल इस्लाम में ज़िन्दा रहे। इस्लाम लाने के बा'द उन्हों ने सिवाए एक बैत के कोई शे'र नहीं कहा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ख़िलाफ़त में उन से फ़रमाया कि मुझे अपने शे'र सुनाओ। इस पर आप ने सूरए बक़रह पढ़ी और अ़र्ज़ किया : मैं शे'र नहीं कहने का जब कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे सूरए बक़रह सिखा दी है।

अबू उ़बैदा[2] क़ासिम बिन सलाम बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा सिने 223 हिजरी) जो इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के शागिर्द और फ़िक़्ह व ह़दीस व लुग़त में इमाम हैं ह़िकायत करते हैं कि एक बादिय्या नशीन अ़रब ने किसी को येह आयत पढ़ते सुना :

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ (حجر، ع ٦) *सो सुना दे खोल कर जो तुझ को हुक्म हुवा।*[3]

उस ने सुनते ही सजदा किया और कहा कि मैं ने इस कलाम की फ़साह़त को सजदा किया है।

एक दफ़्आ़ किसी आ'राबी ने येह आयत सुनी :

فَلَمَّا اسْتَايْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا (یوسف، ع١٠) *फिर जब ना उम्मीद हुवे उस से अकेले बैठे मस्लहत को।*[4]

कहने लगे : मैं गवाही देता हूं कि कोई मख़्लूक़ इस कलाम की मिस्ल पर क़ादिर नहीं।[5]

इमाम अस्मई या'नी अ़ब्दुल मलिक बिन अस्मअ़ बसरी (मुतवफ़्फ़ा सिने 210 हिजरी) जो लुग़त व नह़्व व अदब व नवादिर में इमाम हैं बयान करते हैं कि मैं ने एक पांच या छे साल की लड़की को येह कहते सुना कि मैं अपने तमाम गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करती हूं। मैं ने सुन कर कहा : तू किस चीज़ पर इस्तिग़फ़ार करती है तू तो मुकल्लफ़ ही नहीं ? वोह बोली :

---

1 .....كتاب الشعر والشعراء لابن قتيبة، ترجمہ لبید بن ربیعہ۔

2 .....इन मिसालों के लिये देखो शिफ़ा शरीफ़ और मवाहिबे लदुन्निय्या। 12 मिन्ह

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ए'लानिय्या कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है। (پ١٤، الحجر:٩٤) **इल्मिय्या**

4 .....मत़लब येह है कि जब वोह ह़ज़रते यूसुफ़ से बहुत मायूस हो गए तो अलग हो कर बाहम मश्वरा करने लगे और सोचने लगे कि बाप के पास जा कर क्या झूट बना कर कहेंगे और इस ह़ादिसे का क्या ज़िक्र करेंगे ? पस येह थोड़े से कलिमे इस त़वील क़िस्से को शामिल हैं। 12 मिन्ह ....

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब उस से ना उम्मीद हुवे अलग जा कर सर गोशी करने लगे। (پ١٣، یوسف:٨٠) **इल्मिय्या**

5 .....الشفاء بتعریف حقوق المصطفی، فصل فی اعجاز القرآن، الجزء الاول، ص٢٦٢۔علمیہ

www.dawateislami.net

استغفر الله لذنبى كله قتلت انسانا بغير حله

مثل غزال ناعم فى دله انتصف الليل ولم اصله

मैं ने कहा : अल्लाह तुझे मारे तू कैसी फ़सीह़ है ! वोह कहने लगी : कुरआन में येह आयत है :

وَاَوْحَیْنَاۤ اِلٰۤى اُمِّ مُوْسٰۤى اَنْ اَرْضِعِیْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَیْهِ فَاَلْقِیْهِ فِی الْیَمِّ وَلَا تَخَافِیْ وَلَا تَحْزَنِیْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَیْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۝ (قصص،ع١)

और हम ने हुक्म भेजा मूसा की मां को कि उस को दूध पिला फिर जब तुझ को डर हो उस का तो डाल दे उस को दरया में और डर मत और ग़म मत खा बेशक हम लौटाने वाले हैं उस को तेरी त़रफ़ और बनाने वाले हैं उस को रसूलों से ।(1)

क्या इस आयत के मुक़ाबिल मेरा येह क़ौल फ़सीह़ कहा जाता है ? इस एक आयत में दो अम्र, दो नह्य, दो ख़बरें और दो बिशारतें जम्अ़ हैं ।(2)

ह़िकायत है कि ह़ज़रते उ़मर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक रोज़ मस्जिदे नबवी में लैटे हुवे थे । आप के सिरहाने खड़ा हुवा एक शख़्स कलिमए शहादत पढ़ रहा था आप ने उस से सबब दरयाफ़्त किया । उस ने कहा कि मैं बत़ारिक़ा रूम में से हूं मुझे अ़रबी ज़बानें आती हैं मैं ने एक मुसलमान क़ैदी से सुना कि वोह आप मुसलमानों की किताब में से एक आयत पढ़ रहा था मैं ने उस आयत पर ग़ौर किया उस में वोह अह़वाले दुन्या व आख़िरत जम्अ़ हैं जो अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَیْهِمَا السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाए वोह आयत येह है :

وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَیَخْشَ اللّٰهَ وَیَتَّقْهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ ۝ (نور،ع٧)(3)

और जो कोई हुक्म पर चले अल्लाह के और उस के रसूल के और डरता रहे अल्लाह से और बच कर चले उस से सो वोही लोग हैं मुराद को पहुंचने वाले ।(4)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने मूसा की मां को इल्हाम फ़रमाया कि उसे दूध पिला फिर जब तुझे उस से अन्देशा हो तो उसे दरया में डाल दे और न डर और न ग़म कर बेशक हम उसे तेरी त़रफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे । (پ٢٠،القصص:٧) **इल्मिय्या**

2......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانى،المقصد الرابع فى معجزاته الدالة على ثبوت نبوته،ج٦،ص٤٣٧-٤٣٨۔علميه

3......الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،فصل فى اعجاز القرآن،الجزء الاول،ص٢٦٢۔علميه

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो हुक्म माने अल्लाह और उस के रसूल का और अल्लाह से डरे और परहेज़गारी करे तो येही लोग कामयाब हैं । (پ١٨،النور:٥٢) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इब्ने मुक़फ़्फ़अ़[1] ने जो फ़साह़तो बलाग़त में यगानए रोज़गार था और ज़मानए ताबेईन में था कुरआन शरीफ़ के मुआ़रज़े में कुछ लिखना शुरूअ़ किया एक रोज़ एक मक्तब पर से उस का गुज़र हुवा जिस में एक लड़का येह आयत पढ़ रहा था :

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۴﴾ (هود، ع ٤)

और हुक्म आया ऐ ज़मीन निगल जा अपना पानी और ऐ आस्मान थम जा और खुश्क किया गया पानी और तमाम किया गया काम और किश्ती ठहरी जूदी पहाड़ पर और हुक्म हुवा कि दूर हों क़ौम बे इन्साफ़।[2]

वोह सुन कर वापस आया और जो कुछ लिखा था सब मिटा डाला और कहा : मैं गवाही देता हूं कि इस का मुआ़रज़ा नहीं हो सकता येह इन्सान का कलाम नहीं।[3]

यह्या बिन अल ह़कम अल ग़ज़ाल ने जो बक़ौले ज़हबी दूसरी और ब क़ौले इब्ने ह़ब्बान तीसरी सदी हिजरी में अन्दलुस में फ़ुहुवल शुअ़रा[4] में से था कुरआन के मुआ़रज़े का इरादा किया एक रोज़ सूरए इख़्लास का मुआ़रज़ा करने लगा तो उस पर हैबत त़ारी हो गई जो उस की तौबा का बाइ़स हुई।

इमाम इब्नुल जौज़ी[5] (मुतवफ़्फ़ा सिने 597 हिजरी) ने वफ़ा फ़ी फ़ज़ाइलुल मुस्त़फ़ा में ज़िक्र किया है कि इमाम इब्ने अ़क़ील ने कहा कि अबू मुह़म्मद बिन मुस्लिम नह़वी ने मुझ से ह़िकायत की है कि हम ए'जाज़ुल कुरआन पर गुफ़्तगू कर रहे थे। वहां एक फ़ाज़िल शैख़ मौजूद था उस ने कहा कि कुरआन में ऐसी कौन सी चीज़ है जिस से फ़ु-ज़ला आ़जिज़ आ जाएं। फिर वोह काग़ज़ दवात ले कर बालाख़ाने पर चढ़ गया और वा'दा किया कि तीन दिन के बा'द कुरआन के मुआ़रज़े में कुछ लिख कर लाऊंगा जब तीन दिन गुज़र गए तो एक शख़्स बालाख़ाने पर चढ़ा और उस को सहारा लिये हुवे इस ह़ाल में पाया कि उस का हाथ क़लम पर सूख गया था।[6]

1.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "इब्ने मक़्नअ़" लिखा है जो कि किताबत की ग़लत़ी मा'लूम होती है क्यूंकि "अल मवाहिबुल्लदुन्निय्या" वग़ैरा में "इब्ने मुक़फ़्फ़अ़" है लिहाज़ा हम ने यहां "अल मवाहिबुल्लदुन्निय्या" के मुत़ाबिक़ "इब्ने मुक़फ़्फ़अ़" लिखा है। واللّٰہ تعالٰی اعلم **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुवा और किश्ती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग। (پ١٢،هود:٤٤) **इल्मिय्या**

3.....المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،المقصد الرابع فی معجزاته الدالة علی ثبوت نبوته،ج٦،ص٤٤٤۔علمیه

4.....जय्यद शुअ़रा।

5.....देखो ह़िज्जतिल्लाहि अ़लल आ़लमीन फ़ी मो'जिज़ाते सय्यिदिल मुर्सलीन लिनबहानी मत़्बूआ़ बैरूत, स. 309। 12 मिन्ह

6.....حجة اللّٰه علی العالمین فی معجزات سید المرسلین،الفصل الثانی فی بیان وجوه...الخ،ص٢٢٨۔علمیه

www.dawateislami.net

मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने क़ुरआन की बा'ज़ छोटी सूरतों के मुआ़रज़े में कुछ लिखा मगर ऐसा कि अत्फ़ाले मक्तब भी उसे देख कर हंसें। सूरए कौसर पर जो इस लईन ने लिखा था हम اِنْ شَآءَاللّٰه उसे इस बह़्स के अख़ीर में लाएंगे और इस लईन के कलाम की सख़ाफ़त[1] ज़ाहिर करने के लिये इस सूरत की वज्हे ए'जाज़ पर मुफ़स्सल बह़्स करेंगे और मज़ीद तौज़ीह़ के लिये क़ुरआन की फ़साह़त के मुतअ़ल्लिक़ दो और मिसालें पेश करेंगे।

ए'तिराज़ :-

क़ुरआन शरीफ़ में अम्बियाए किराम के क़िस्से बार बार लाए गए हैं चुनान्चे, ब क़ौले बा'ज़ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्र एक सो बीस जगह है और ब क़ौले इब्ने अ़रबी ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का क़िस्सा पच्चीस आयतों में और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का क़िस्सा नव्वे आयतों में ज़िक्र किया गया है येह ख़िलाफ़े फ़साह़त है।

जवाब :-

वोह तकरार ख़िलाफ़े फ़साह़त होती है जिस में कुछ फ़ाइदा न हो मगर क़ससे क़ुरआनी की तकरार फ़वाइद से ख़ाली नहीं। अ़ल्लामा बद्र बिन जमाआ़ ने इस मज़्मून पर एक किताब लिखी है जिस का नाम "अल मुक़्तनस फ़ी फ़वाइदे तकरारिल क़सस" है। इस में तकरीरे क़सस के कई फ़ाइदे[2] ज़िक्र किये हैं।

﴿1﴾.....हर जगह कुछ न कुछ ज़ियादती है जो दूसरी जगह नहीं या किसी नुक्ते के लिये एक कलिमे की जगह दूसरा कलिमा लाया गया है और येह बुलग़ा की आ़दत है।

﴿2﴾.....एक जमाअ़त एक क़िस्सा सुन कर अपने घर चली जाती थी इस के बा'द दूसरी जमाअ़त हिजरत कर के आती थी और जो कुछ पहली जमाअ़त के चले जाने के बा'द नाज़िल होता उसे रिवायत करती अगर तकरारे क़सस न होती तो क़िस्सए मूसा को एक क़ौम सुनती और क़िस्सए ईसा को दूसरी क़ौम सुनती इसी त़रह़ बाक़ी क़िस्सों का ह़ाल होता। पस **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा कि तमाम लोग इन क़िस्सों के सुनने में मुश्तरक हों ताकि एक क़ौम को इफ़ादा और दूसरी को ज़ियादा ताकीद ह़ासिल हो।

﴿3﴾.....एक ही मज़्मून को मुख़्तलिफ़ असालीब में बयान करने में जो फ़साह़त है वोह पोशीदा नहीं।

1.....बेहूदा, वाहियात व बे फ़ाइदा। 2.....देखो इत्तिक़ान लिस्सुयूती, जुज़्ए सानी, सफ़्ह़ा. 68 . 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....क़सस के नक़्ल करने पर इस क़दर दवाई नहीं जितने कि अह़काम के नक़्ल करने पर हैं इस लिये अह़काम के बर अ़क्स क़सस को बार बार लाया गया है।

﴾5﴿.....**अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद नाज़िल फ़रमाया और लोग इस की मिस्ल लाने से आ़जिज़ आ गए फिर उन के इ़ज्ज़ के मुआ़मले को इस त़रह़ वाज़ेह़ कर दिया कि एक क़िस्से को कई जगह ज़िक्र किया ताकि मा'लूम हो जाए कि वोह इस की मिस्ल लाने से आ़जिज़ हैं ख़्वाह कोई से अल्फ़ाज़ में लाएं और किसी इ़बारत से ता'बीर करें।

﴾6﴿.....जब **अल्लाह** तआ़ला ने मुन्किरीन से तह़द्दी[1] की, कि इस की मिस्ल एक सूरत बना लाओ तो अगर एक क़िस्से को एक ही जगह ज़िक्र किया जाता और इसी पर किफ़ायत की जाती, अहले अ़रब कहते कि तुम ही इस की मिस्ल एक सूरत पेश करो पस **अल्लाह** तआ़ला ने हर त़रह़ से उन की हु़ज्जत दूर करने के लिये एक क़िस्से को कई सूरतों में नाज़िल फ़रमाया।

﴾7﴿.....जब एक क़िस्से को बार बार ज़िक्र किया गया और हर जगह इस के अल्फ़ाज़ में कमी बेशी और तक़्दीम व ताख़ीर कर दी गई और मुख़्तलिफ़ उस्लूब अ़मल में लाया गया तो येह अ़जीब बात पैदा हो गई कि एक ही मा'ना मुख़्तलिफ़ सूरतों में जल्वा अफ़रोज़ हुवा और लोगों को उस के सुनने की त़रफ़ कशिश हो गई क्यूंकि हर नए अम्र में लज़्ज़त होती है और इस से कुरआने मजीद का एक ख़ास्सा ज़ाहिर हो गया क्यूंकि बा वुजूद तकरार के लफ़्ज़ में कोई ऐ़ब और सुनने के वक़्त कोई मलाल पैदा नहीं होता पस कलामे इलाही बन्दों के कलाम से मुमताज़ रहा।[2]

ए'तिराज़ :-

माना कि एक मा'ना को मुख़्तलिफ़ लिबास और मुख़्तलिफ़ उस्लूब में ज़ाहिर करने से फ़साह़त में कोई ख़लल नहीं आता बल्कि येह अबलग़ है मगर बा'ज़ जगह एक ही जुम्ला बार बार लाया गया है चुनान्चे सूरए शुअ़रा में :

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةًؕ-وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ(۸) وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ۠(۹) [3]

आठ बार लाया गया है। और सूरए क़मर में :

1.....चेलेन्ज।

2 ......الاتقان فی علوم القرآن، النوع السادس والخمسون فی الایجاز والاطناب، ج۲،ص۳۹۳۔۳۹۴۔علمیه

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक उस में ज़रूर निशानी है और उन के अक्सर ईमान लाने वाले नहीं और बेशक तुम्हारा रब ज़रूर वोही इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान है। (پ۱۹،الشعراء:۸۔۹) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

لَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿۱۷﴾ (1)

चार बार और सूरए रह़मान में :

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ (2)

इकतीस बार और सूरए मुर्सलात में :

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۴۹﴾ (3)

दस बार मज़्कूर है।

जवाब :

इन सूरतों में भी तकरारे आयत फ़ाइदे से ख़ाली नहीं क्यूंकि हर जगह मुतअ़ल्लिक़ ब मुख़्तलिफ़ है ताकि हर ख़बर के सुनने के बा'द तजदीदे नसीह़त व इ़ब्रत हो।

चुनान्चे, सूरए शुअ़रा में हर क़िस्से के बा'द :

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ الاية (4)

मज़्कूर है और हर दफ़्अ़ा एक नबी और उस की उम्मत के क़िस्से की त़रफ़ इशारा है कि उस नबी पर ईमान लाने वाले सलामत रहे और मुन्किरीन तबाह हुवे और फिर बार बार बतला दिया गया है कि **अल्लाह** तआ़ला मोमिनों के लिये रह़्म वाला और मुन्किरों के लिये अ़ज़ीज़ या'नी ज़बरदस्त है ताकि इस उम्मत के लोग नसीह़त पकड़ें। येही ह़ाल सूरए क़मर में तकरारे आयत का है क्यूंकि इस में क़िस्सए नूह़ व आ़द व समूद व लूत़ में से हर एक के बा'द

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ الآية (5)

मज़्कूर है ताकि कु़रआन पढ़ने वाले इस से इ़ब्रत पकड़ें। इसी त़रह़ सूरए मुर्सलात में हर दफ़्अ़ा

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने कु़रआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला ? (پ۲۷،القمر:۱۷) **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ जिन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ? (پ۲۷،الرحمن:۱۳) **इल्मिय्या**

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी। (پ۲۹، المرسلٰت :۴۹) **इल्मिय्या**

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक इस में ज़रूर निशानी है। (پ۱۹،الشعراء:۸) **इल्मिय्या**

5 ......پ۲۷،القمر:۱۷۔علميه

www.dawateislami.net

एक निशानी के ज़िक्र के बा'द आया है कि क़ियामत के दिन ख़राबी होगी उन लोगों के लिये जो इस निशान को झुटलाने वाले हैं, (علٰی ہٰذا القیاس)

सूरए रह़मान में हर बार मुख़्तलिफ़ ने'मतों के ज़िक्र के बा'द :

فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ (1)

आया है ताकि लोग सुन कर हिदायत पाएं। जैसा कि एक ना शुक्र गुज़ार मुह़सन अलय्या को मोह़सिन कहे : क्या तू फ़क़ीर नहीं था ? मैं ने तुझे अमीर बना दिया ! आया तुझे इस से इन्कार है ? क्या तू नंगा न था ? मैं ने तुझे लिबास पहना दिया ! आया तुझे इस से इन्कार है ? क्या तू गुमनाम न था ? मैं ने तुझे नामवर कर दिया, आया तुझे इस से इन्कार है ?

कुतुबे अ़ह्दे अ़तीक़ में मज़मूर 136 में येही त़र्ज़ पाया जाता है जिस का अ़रबी तर्जमा जो क़सीसे वलीम हाज मल मुदर्रिस मद्रसए इस्क़ूफ़िय्या कलकत्ता ने किया है वोह इस वक़्त हमारे ज़ेरे नज़र है इस में हर आयत के बा'द " اِنَّ رَحْمَتَهٗ اِلَى الْاَبَدِ " अठ्ठाईस बार आया है। ब ख़ौफ़े त़वालत हम इस मज़मूर को यहां नक़्ल नहीं करते।

ए'जाज़ुल क़ुरआन की दूसरी वज्ह

नज़्मे कुरआन का उस्लूबे बदीअ़ :

अगर्चे कुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ कलामे अ़रब की जिन्स से हैं और उन की नज़्म व नस्र में मुस्ता'मल हैं मगर इस का उस्लूब तमाम असालीब से जुदा है और अन्वाए़ कलाम (क़साइद, ख़ुत़ब, रसाइल, मुह़ावरा) में से किसी से नहीं मिलता। बईं हमा सब अन्वाअ़ के मुह़ासिन का जामेअ़ है। अहले अ़रब अन्वाए़ चहारगाना के सिवा कोई और उस्लूब व त़र्ज़ न जानते थे और न किसी नए त़र्ज़ में कलाम कर सकते थे पस एक अ़जीब निराले उस्लूब का आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (जो उम्मी थे) की ज़बाने मुबारक पर जारी होना ऐन ए'जाज़ है।

इस किताब में पहले मज़्कूर हो चुका है कि एक रोज़ वलीद बिन मुग़ीरा ने कुरैश से कहा कि अय्यामे ह़ज करीब हैं अ़रब के क़बाइल तुम से इस मुद्दइये नबुव्वत (ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की निस्बत दरयाफ़्त करेंगे तुम इस की निस्बत एक राए क़ाइम कर लो। इस पर कुरैश ने मुख़्तलिफ़ राएं पेश कीं, कि वोह काहिन है, दीवाना है, शाइ़र है, जादूगर है। वलीद ने यके बा'द दीगरे उन तमाम की तरदीद कर के कहा :

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ जिन्नो इन्स तुम दोनों अपने रब की कौन सी ने'मत झुटलाओगे ? (پ۲۷، الرحمن:۱۳) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

"अल्लाह की क़सम ! उस के कलाम में बड़ी ह़लावत है। उस कलाम की अस्ल मज़्बूत़ जड़ वाला दरख़्त ख़ुरमा है और उस की फ़रअ़ फल है। इन बातों में से जो बात तुम कहोगे वोह ज़रूर पहचान ली जाएगी कि झूट है। इस के बारे में सिह़ह़त के क़रीब तर क़ौल येह है कि तुम कहो वोह जादूगर है और ऐसा कलाम लाया है जो जादू है। इस कलाम से वोह बाप बेटे में, भाई भाई में, मियां बीवी में, ख़ुवैश व अक़ारिब में जुदाई डाल देता है।"

इसी त़रह़ एक रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में अकेले बैठे हुवे थे। क़ुरैश ने अपने सरदार उ़त्बा बिन रबीआ़ को आप की ख़िदमत में भेजा और उस ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कई बातें पेश कर के कहा कि इन में से एक पसन्द कर लीजिये। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के जवाब में सूरए حٰمٓ السجدہ की शुरूअ़ की आयतें तिलावत फ़रमाईं। उ़त्बा ने क़ुरैश से जा कर कहा :

"अल्लाह की क़सम ! मैं ने ऐसा कलाम सुना कि उस की मिस्ल कभी नहीं सुना अल्लाह की क़सम ! वोह शे'र नहीं न जादू है न कहानत। ऐ गुरौहे क़ुरैश ! मेरा कहा मानो : उस शख़्स को करने दो जो करता है, और उस से अलग हो जाओ। अल्लाह की क़सम ! मैं ने जो कलाम उस से सुना है उस की बड़ी अ़ज़्मतो शान होगी अगर अ़रब उस को मग़्लूब कर लें तो तुम ग़ैर के ज़रीए़ से उस से बच गए। अगर वोह अ़रब पर ग़ालिब आ गया तो उस का मुल्क तुम्हारा मुल्क है और उस की इ़ज़्ज़त तुम्हारी इ़ज़्ज़त है और तुम उस के सबब से ख़ुश नसीब हो जाओगे।"

क़ुरैश येह सुन कर कहने लगे कि उस ने तो अपनी ज़बान से तुझे भी जादू कर दिया। उ़त्बा बोला कि "उस की निस्बत मेरी येही राए है तुम करो जो चाहो।"

सह़ीह़ मुस्लिम में ह़दीसे इस्लामे अबू ज़र ग़िफ़ारी में ख़ुद अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मेरे भाई अनीस ने मुझ से कहा कि मुझ को मक्का में एक काम है तू बकरियों की ह़िफ़ाज़त रखना। येह कह कर अनीस चला गया और मक्का पहुंच गया देर के बा'द वापस आया तो मैं ने पूछा : तू ने क्या किया ? वोह बोला : मैं मक्का में एक शख़्स से मिला जो कहता है कि मैं अल्लाह का रसूल हूं। मैं ने पूछा कि लोग उस के बारे में क्या कहते हैं ? उस ने जवाब दिया कि लोग कहते हैं : वोह शाइ़र है, काहिन है, जादूगर है। फिर अनीस ही जो ख़ुद बड़ा शाइ़र था कहने लगा :

www.dawateislami.net

"अल्लाह की क़सम ! मैं ने काहिनों का कलाम सुना हुवा है, उस का कलाम काहिनो का कलाम नहीं। अल्लाह की क़सम ! मैं ने उस के कलाम को शे'र की तमाम क़िस्मों के साथ मुक़ाबला किया है, मेरे बा'द किसी से येह न बन पड़ेगा कि कहे : वोह कलाम शे'र है। अल्लाह की क़सम ! वोह सच्चे नबी हैं और काफ़िर बेशक झूटे हैं।"[1]

इस ह़दीस में इस के बा'द येह मज़्कूर है कि येह सुन कर अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मक्का में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवे और इस्लाम लाए। जब अपने भाई अनीस के पास वापस आए तो उन के इस्लाम की ख़बर सुन कर ह़ज़रते अनीस और उन की वालिदा भी ईमान ले आए। फिर तीनों अपनी क़ौम गिफ़ार में आए आधी क़ौम ईमान ले आई। जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ लाए तो बाक़ी भी ईमान ले आए। इस त़रह़ क़बीलए अस्लम भी मुसलमान हो गया। इस पर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "غفار غفر الله لها واسلم سالمها الله" या'नी अल्लाह तआ़ला क़बीलए गिफ़ार को बख़्श दे और क़बीलए अस्लम को सलामत रखे।[2]

इब्ने सा'द ने त़बक़ात में ब रिवायते यज़ीद बिन रूमान और मुह़म्मद बिन का'ब और शा'बी और ज़ुहैरी वग़ैरा रिवायत किया है कि बनी सुलैम में से एक शख़्स जिस का नाम क़ैस बिन नुसैबा था रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा और आप का कलाम सुना और आप से कई बातें दरयाफ़्त कीं आप ने उन का जवाब दिया उस ने वोह सब कुछ याद कर लिया फिर आप ने उसे दा'वते इस्लाम दी वोह ईमान ले आया और अपनी क़ौम में जा कर कहने लगा : "बेशक मैं ने रूम का तर्जमा, फ़ारिस का ज़मज़मा[3], अ़रब के अश्आ़र, काहिन की कहानत और मलूके ह़िमयर का कलाम सुना है मगर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का कलाम उन के कलाम में से किसी से नहीं मिलता इस लिये तुम मेरा कहा मानो और उस से बहरा वर हो जाओ।"

---

1 ......لقد سمعت قول الکھنۃ فما ھو بقولھم ولقد وضعت قولہ علی اقراء الشعراء فما یلتئم علی لسان احد بعدی انہ شعر و اللّٰہ انہ لصادق وانھم لکا ذبون۔ ۱۲منہ

2 ......صحیح مسلم،کتاب فضائل الصحابۃ،باب من فضائل ابی ذر،الحدیث:۲۴۷۳،ص۱۳۴۲-۱۳۴۳ ملخصاً۔علمیہ

3 .....नग़मा, गीत।

इस त़रह़ बनू सुलैम फ़त्ह़े मक्का के साल मक़ामे कुदैद में ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुवे और इस्लाम लाए। वोह सात सो[1] थे और कहा गया है कि एक हज़ार थे। अ़ब्बास बिन मिरदास और अनस बिन अ़ब्बास बिन रअ़ल और राशिद बिन अ़ब्दे रब्बेह इन्हीं में थे।[2] कुरआने मजीद के उस्लूबे बदीअ़ की निस्बत मौलाना शाह वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने यूं फ़रमाया है :

"कुरआन को मतूने कुतुब की त़रह़ बाबों और फ़स्लों में तक़्सीम नहीं किया गया ताकि तू हर मत़लब इस में से मा'लूम कर ले या एक फ़स्ल में मज़्कूर हो बल्कि कुरआन को मक्तूबात का मजमूआ़ फ़र्ज़ कर जिस त़रह़ कोई बादशाह अपनी रिआ़या को ब ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़ाल एक फ़रमान लिखे और कुछ मुद्दत के बा'द दूसरा फ़रमान लिखे और इसी त़रह़ लिखता जाए यहां तक कि बहुत से फ़रमान जम्अ़ हो जाएं फिर एक शख़्स इन फ़रमानों को जम्अ़ कर के एक मजमूआ़ तय्यार कर दे। इसी त़रह़ उस मलिके अ़लल इत़लाक़ ने अपने बन्दों को हिदायत के लिये आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मुक़्तज़ाए ह़ाल के मुवाफ़िक़ यके बा'द दीगरे सूरतें नाज़िल फ़रमाईं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में हर सूरत अलग अलग मह़फ़ूज़ थी मगर सूरतों को एक जगह जम्अ़ न किया गया था।

ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ज़माने में तमाम सूरतों को एक जिल्द में ख़ास तरतीब से जम्अ़ किया गया और इस मजमूआ़ का नाम मुस्ह़फ़ रखा गया। अस्ह़ाबे किराम के दरमियान सूरतों को चार क़िस्मों में तक़्सीम किया गया। एक सब्अ़ त़िवाल दूसरी मिईन जिन में से हर एक में सो या कुछ ज़ियादा आयतें हैं। तीसरी मसानी जिन में से हर एक में सो आयतों से कम हैं। चौथी मुफ़स्सल और मुस्ह़फ़ की तरतीब में दो तीन सूरतें जो मसानी में से हैं मिईन में दाख़िल कर दी गईं क्यूंकि इन के सियाक़ को मिईन के सियाक़ से मुनासबत है। इसी त़रह़ बा'ज़ दीगर अक़्साम में भी कुछ तसर्रुफ़ हुवा है। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस मुस्ह़फ़ की कई नक़्लें करा के अत़राफ़ में भेज दीं ताकि इन से लोग फ़ाइदा उठाएं और किसी दूसरी तरतीब की त़रफ़ माइल न हों। चूंकि सूरतों का उस्लूब बादशाहों के फ़रमानों से पूरी पूरी मुनासबत रखता था

---

1 ....."अत़्त़बक़ातुल कुब्रा लि इब्ने सा'द" में है कि "و هم تسعمائة" या'नी वोह नव सो थे जब कि तारीख़े मदीना दिमश्क़ और दीगर में सात सो ही लिखा है, हो सकता है मुसन्निफ़ के पास अत़्त़बक़ातुल कुब्रा लि इब्ने सा'द का जो नुस्ख़ा हो उस में "و هم سبعمائة" ही हो। وَاللّٰه تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد،وفد سلیم،ج۱،ص۲۳۳ملخصاً و تاریخ مدینه دمشق،ذکر من اسمه انس،۸۲۷-انس بن عباس بن عامر،ج۹،ص۳۲٤۔علمیه

www.dawateislami.net

इस लिये इब्तिदा व इन्तिहा में मक्तूबात के त़रीके़ की रिआ़यत की गई। जिस त़रह़ बा'ज़ मक्तूबात को खु़दा तआ़ला की ह़म्द से शुरूअ़ करते हैं और बा'ज़ को उस के इम्ला की ग़रज़ से और बा'ज़ को मुर्सल और मुर्सल अलैह के नाम से शुरूअ़ करते हैं और बा'ज़ रुक़्ए़ और खु़तूत़ बे उ़न्वान होते हैं और बा'ज़ मक्तूबात त़वील और बा'ज़े मुख़्तसर होते हैं। इसी त़रह़ खु़दा तआ़ला ने बा'ज़ सूरतों को ह़म्द व तस्बीह़ से शुरूअ़ किया और बा'ज़ को उस के इम्ला की ग़रज़ के बयान से शुरूअ़ किया। चुनान्चे, फ़रमाया :

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۲﴾ (بقرہ، شروع)[1]

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا (نور، شروع)[2]

और क़िस्म मुशाबेह है इस के هذا ما صالح عليه فلان وفلان. هذا ما اوصى به فلان और आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वाक़िअ़ए हुदैबिय्या में यूं तह़रीर फ़रमाया था : هذا ما قاضى عليه محمد और बा'ज़ को मुर्सल और मुर्सल अलैह के ज़िक्र से शुरूअ़ किया। चुनान्चे, फ़रमाया :

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿۱﴾ (زمر، شروع)[3]

كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ ۙ﴿۱﴾ (ہود، شروع)[4]

और येह क़िस्म मुशाबेह है इस के कि लिखें ''ह़ज़रते ख़िलाफ़त का हुक्म सादिर हुवा।'' या लिखें : फ़ुलां शहर के बाशिन्दों को ह़ज़रते ख़िलाफ़त की त़रफ़ से येह आगाही हो। और आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तह़रीर फ़रमाया : ''من محمد رسول الله الى هرقل عظيم الروم'' और बा'ज़ सूरतों को रुक़्आ़त व खु़तूत़ के त़ौर पर उ़न्वान के बिग़ैर शुरूअ़ किया। चुनान्चे, फ़रमाया :

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ (منافقون، شروع)[5]

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह बुलन्द रुत्बा किताब (कुरआन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को। (پ۱، البقرة:۲) **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह एक सूरत है कि हम ने उतारी और हम ने इस के अह़काम फ़र्ज़ किये। (پ۱۸، النور:۱) **इल्मिय्या**

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** किताब उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले की त़रफ़ से। (پ۲۳، الزمر:۱) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह एक किताब है जिस की आयतें ह़िक्मत भरी हैं फिर तफ़्सील की गई ह़िक्मत वाले ख़बरदार की त़रफ़ से। (پ۱۱، ھود:۱) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर होते हैं। (پ۲۸، المنفقون:۱) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا (مجادلہ، شروع) (1)

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ (تحریم، شروع) (2)

चूंकि अ़रब की सब से मशहूर फ़साह़त क़सीदे थे और क़सीदों के शुरूअ़ में तशबीब में अ़जीब मवाज़ेअ़ और हौलनाक व क़ाएअ़ का ज़िक्र करना उन की क़दीम रस्म थी इस लिये इस उस्लूब को बा'ज़ सूरतों में इख़्तियार किया । चुनान्चे, फ़रमाया :

وَ الصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿۲﴾ (صافات، شروع) (3)

وَ الذّٰرِیٰتِ ذَرْوًا ﴿۱﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿۲﴾ (ذاریات، شروع) (4)

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿۱﴾ وَ اِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿۲﴾ (تکویر، شروع) (5)

जिस त़रह़ मक्तूबात के अवाख़िर को जवामेए़ कलिम और नवादिर वसाया और अह़कामे साबिक़ा की ताकीद और मुख़ालिफ़ीन अह़काम की तहदीद पर ख़त्म करते थे ।

इसी त़रह़ सूरतों के अवाख़िर को जवामेए़ कलिम और मनाबेअ़ हुक्म और ताकीदे बलीग़ और तहदीदे अ़ज़ीम पर ख़त्म फ़रमाया और कभी सूरत के दरमियान बड़े बड़े फ़ाइदे वाले बदीउ़ल उस्लूब बलीग़े कलाम को एक त़रह़ की ह़म्दो तस्बीह़ से या ने'मतों और अ़त़ायाए ने'मत के एक त़रह़ के बयान से शुरूअ़ किया है चुनान्चे, ख़ालिक़ व मख़्लूक़ के मरातिब में तबायुन के बयान को सूरए नम्ल के असना में आयत :

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰىؕ ءٰٓاللّٰهُ خَیْرٌ اَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ (6)

से शुरूअ़ किया और इस के बा'द पांच आयतों में इस मुद्दआ़ को निहायत ही बलीग़ वज्ह और निहायत ही बदीअ़ उस्लूब से बयान फ़रमाया और बनी इस्राईल के मुख़ासमे को सूरए बक़रह के अस्ना में अल्फ़ाज़ :

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** ने सुनी उस की बात जो तुम से अपने शोहर के मुआ़मले में बह़्स करती है । (پ۲۸،المجادلۃ:۱) **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) तुम अपने ऊपर क्यूं ह़राम किये लेते हो वोह चीज़ जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये ह़लाल की । (پ ۲۸،التحریم:۱) **इल्मिय्या**

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क़सम उन की, कि बा क़ाइदा सफ़ बांधें फिर उन की, कि झिड़क कर चिल्लाएं । (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۱-۲) **इल्मिय्या**

4...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क़सम उन की जो बिखैर कर उड़ाने वालियां फिर बोझ उठाने वालियां । (پ۲۶،الذّٰریٰت:۱-۲) **इल्मिय्या**

5...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब धूप लपेटी जाए और जब तारे झड़ पड़ें । (پ۳۰،التکویر:۱-۲) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम कहो सब ख़ूबियां **अल्लाह** को और सलाम उस के चुने हुवे बन्दों पर क्या **अल्लाह** बेहतर या उन के साख़्ता शरीक । (پ۱۹،النمل:۵۹) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ (1)

से शुरूअ़ फ़रमाया और इन ही अल्फ़ाज़ पर ख़त्म किया। पस इस मुख़ासमे का इस कलाम से शुरूअ़ करना और इसी कलाम पर ख़त्म करना कमाल दरजे की बलाग़त है। इसी त़रह़ यहूदो नसारा के मुख़ासमे को सूरए आले इमरान में आयत

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ (2)

से शुरूअ़ फ़रमाया ताकि मह़ल्ले नज़ाअ़ मुअ़य्यन हो जावे और क़ीलो क़ाल का तवारुद उस मुद्दआ़ पर वाक़ेअ़ हो।(3) (4) و اللّٰه اعلم بحقيقة الحال . انتهٰى-

ए'जाज़ुल क़ुरआन की तीसरी वज्ह

ग़ैब की ख़बरें :

क़ुरआन में पहले नबियों और गुज़श्ता उम्मतों और क़ुरूने माज़िया(5) के क़िस्से मज़्कूर हैं मसलन ह़ज़रते आदम व ह़व्वा का क़िस्सा, ह़ज़रते नूह़ व तूफ़ान का क़िस्सा, ह़ज़रते इब्राहीम व सारा का क़िस्सा, ह़ज़रते इस्ह़ाक़ और ह़ज़रते लूत़ के ह़ालात, ह़ज़रते मरयम व तवल्लुदे मसीह़(6) का क़िस्सा, इब्तिदाए पैदाइश का ह़ाल, इन में बा'ज़ क़िस्से जो उ़लमाए अहले किताब को भी शाज़ो नादिर ही मा'लूम थे यहूद के सुवाल करने पर बताए गए मसलन अस्ह़ाबे कह्फ़ का क़िस्सा, ज़ुल क़रनैन का क़िस्सा, ह़ज़रते यूसुफ़ और उन के भाइयों का क़िस्सा, ह़ज़रते मूसा व ख़िज़्र का क़िस्सा। येह तमाम क़िस्से क़ुरआने मजीद में कुतुबे साबिक़ए इल्हामिय्या(7) के मुत़ाबिक़ मज़्कूर हैं।

क़ुरआन में शराइए़ साबिक़ा के अह़काम मज़्कूर हैं। मसलन सूरए माइदह रुकूए़ अव्वल में है :

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ या'क़ूब की अवलाद याद करो मेरा वोह एह़सान। (پ۱،البقرۃ:۴۰) **इल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन है। (پ۳،اٰل عمرٰن:۱۹) **इल्मिय्या**

3 ......الفوز الكبير فى اصول التفسير،الباب الثالث فى بديع اسلوب القرآن،الفصل الاول،ص ٦١-٦٣-علميه

4 ......فوز الکبیر فی اصول التفسیر مطبوعہ مطبع مجتبائی دہلی ص ۲۱-۲۳-

5 .....गुज़श्ता ज़माने।

6 .....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की विलादते मुबारक।

7 .....साबिक़ा आस्मानी कुतुब।

www.dawateislami.net

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ

ह़राम हुवा तुम पर मुर्दा और लहू और गोश्त सुवर का और जिस चीज़ पर नाम लिया गया अल्लाह के सिवा का और जो मर गया गला घोट कर।[(1)]

आ'माल बाब 15, आयत 29 में है :

"तुम बुतों के चढ़ावों और लहू और गला घोंटी हुई चीज़ों और ह़रामकारी से परहेज़ करो।"

इस आयत में जो सुवर के गोश्त की जगह ह़रामकारी लिखा है दुरुस्त नहीं क्यूंकि इस मक़ाम पर ह़लालो ह़राम ख़ूराक का ज़िक्र है ह़राम कारी से क्या अ़लाक़ा।[(2)]

क़ुरआन में बा'ज़ अह़काम ब ह़वाला कुतुबे इल्हामियए साबिक़ा मज़कूर हुवे हैं मसलन सूरए माइदह रुकूअ़ 7 में है :

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ

और लिख दिया हम ने उन पर क़िसास उस किताब (तौरात) में कि जी के बदले जी और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्म का बदला बराबर।[(3)]

तौरात, किताबुल ख़ुरूज, बाब. 21, आयह 23-25 में यूं है :

"जान के बदले जान और आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत, हाथ के बदले हाथ, पाउं के बदले पाउं, जलाने के बदले जलाना, ज़ख़्म के बदले ज़ख़्म, चोट के बदले चोट।"

बा'ज़ अह़काम यहूद के त़ा'न के जवाब या उन की तरदीद में वारिद हुवे हैं चुनान्चे, सूरए आले इमरान, रुकूअ़ 10 में है :

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम पर ह़राम है मुर्दार और ख़ून और सुवर का गोश्त और वोह जिस के ज़ब्ह़ में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया और वोह जो गला घोंटने से मरे। (پ٦، المائدة:٣) **इल्मिय्या**

2 .....तअ़ल्लुक़।

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने तौरैत में उन पर वाजिब किया कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख़्मों में बदला है। (پ٦، المائدہ: ٤٥) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِیْلُ عَلٰی نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۳﴾

सब खाने की चीज़ें ह़लाल थीं बनी इस्राईल को मगर जो ह़राम कर ली थीं इस्राईल (या'क़ूब) ने अपनी जान पर तौरात नाज़िल होने से पहले । तो कह लाओ तौरात और पढ़ो उसे अगर सच्चे हो ।[1]

इस आयत का शाने नुज़ूल मौज़ुहुल क़ुरआन में यूं लिखा है : "यहूद आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहते कि तुम कहते हो हम इब्राहीम के दीन पर हैं और इब्राहीम के घराने में जो चीज़ें ह़राम हैं सो खाते हो, जैसा कि ऊंट का गोश्त और दूध । **अल्लाह** ने फ़रमाया कि जितनी चीज़ें अब लोग खाते हैं सब इब्राहीम के वक़्त में ह़लाल थीं यहां तक कि तौरात नाज़िल हुई । तौरात में ख़ास बनी इस्राईल पर ह़राम हुई हैं मगर एक ऊंट कि तौरात से पहले ह़ज़रते या'क़ूब ने उस के खाने से क़सम खाई थी उन की तबइय्यत[2] से उन की अवलाद ने भी छोड़ दिया था और क़सम का सबब येह था कि उन को एक मरज़ (इरकुन्निसा) हुवा था उन्हों ने नज़्र की, कि अगर मैं सिह़्ह़त पाऊं तो जो मेरी बहुत भाव की चीज़[3] है वोह छोड़ दूंगा । उन को येही बहुत भाता था सो नज़्र के सबब छोड़ दिया ।"

इसी त़रह़ ख़ुद यहूद पर जो चीज़ें ह़राम थीं उन की निस्बत वोह कहते कि येह हम ही पर ह़राम नहीं हुईं बल्कि ह़ज़रते नूह़ व ह़ज़रते इब्राहीम और पहली उम्मतों पर भी ह़राम थीं । उन के इस ख़याल की तरदीद आयए ज़ैल में मज़कूर है :

وَعَلَى الَّذِیْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِیْ ظُفُرٍ ۚ وَ مِنَ الْبَقَرِ وَ الْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَیْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَایَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَیْنٰهُمْ بِبَغْیِهِمْ ۖ٘ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ (انعام، ۱۸ع)

और उन पर हम ने ह़राम किया था हर नाख़ुन वाला और गाए और बकरी में से हम ने ह़राम की उन पर उन दोनों की चरबी मगर जो लगी हो पुश्त पर या आंत में या मिली हो हड्डी के साथ । येह हम ने उन को सज़ा दी थी इन की शरारत[4] *पर और हम सच कहते हैं ।*[5]

---

1 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सब खाने बनी इस्राईल को ह़लाल थे मगर वोह जो या'क़ूब ने अपने ऊपर ह़राम कर लिया था तौरैत उतरने से पहले तुम फ़रमाओ तौरैत ला कर पढ़ो अगर सच्चे हो । (پ۴،اٰل عمرٰن:۹۳) **इल्मिय्या**

2 ....पैरवी । 3 .....बहुत पसन्द की चीज़ ।

4 ....शरारत से मुराद उन का ज़ुल्म करना, राहे ख़ुदा से रोकना, सूद लेना, ह़ालांकि उन को इन की मुमानअ़त थी । तौरात किताबुल अह़बार, बाब 5 । आयत में और लोगों का माल नाह़क़ खाना है । जैसा कि सूरए निसा, रुकूअ़ 22 में आया है । 12 मिन्ह

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और यहूदियों पर हम ने ह़राम किया हर नाख़ुन वाला जानवर और गाए और बकरी की चरबी उन पर ह़राम की मगर जो उन की पीठ में लगी हो या आंत या हड्डी से मिली हो, हम ने येह उन की सरकशी का बदला दिया और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं । (پ۸،الانعام:۱۴۶) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

जानवरों के ह़लाल व ह़राम के अह़काम की त़रह़ अह़कामे जुनुब व ह़ाइज़ व नुफ़सा भी कु़रआन में कुतुबे साबिक़ा के मुत़ाबिक़ बयान हुवे हैं।

नाज़िरीने किराम ! मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब को मा'लूम है कि हु़जू़रे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मी थे। न कभी किसी उस्ताद के आगे ज़ानूए शागिर्दी तह किया और न कभी उ़लमाए अहले किताब में से किसी आ़लिम की सोह़बत से इस्तिफ़ादा फ़रमाया। जैसा कि पहले आ चुका है। पस तअ़ल्लुम व मुजालसते उ़लमा के बिग़ैर क़ससे मज़्कूरए बाला और अह़कामे मिलल साबिक़ा की ख़बर इस त़रह़ देना कि मुसद्दिक़े कुतुबे इल्हामियए साबिक़ा हो(1) इस अम्र की दलील है कि येह सब **अल्लाह** तआ़ला ने हु़जू़र को वह़्य के ज़रीए़ बताया। इसी वासित़े यहूदो नसारा की एक जमाअ़त आप पर ईमान लाई और बाक़ी जो इस ने'मत से मह़रूम रहे इस का सबब मह़्ज़ ह़सद व इनाद था।

क़सस व अह़काम के इलावा कु़रआन में कुतुबे साबिक़ा के बा'ज़ और मज़ामीन सराह़तन या इशारतन ब सूरते आ'माल कुतुब मज़्कूर हैं। देखो आयाते ज़ैल :

﴾1﴿.....

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰىۙ ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰىؕ ﴿۱۵﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَاؗ ﴿۱۶﴾ وَ الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰىؕ ﴿۱۷﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰىۙ ﴿۱۸﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى۠ ﴿۱۹﴾ (سورۂ اعلٰی)

बेशक भला हुवा उस का जो संवरा और पढ़ा नाम अपने रब का फिर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम आगे रखते हो दुन्या का जीना और आख़िरत बेहतर है और रहने वाली। येह लिखा है पहले सह़ीफ़ों में, सह़ीफ़ों में इब्राहीम के और मूसा के।(2)

---

(1).....या'नी उ़लमाए अहले किताब से न कुछ सीखा, न उन की मजलिसों में शिर्कत की इस के बा वुजूद येह वाक़िआ़त बताना और पिछली शरीअ़तों के अह़कामात को इसी त़रह़ बयान फ़रमा देना जिस त़रह़ वोह साबिक़ा किताबों में थे।

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा। और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम जीती दुन्या को तरजीह़ देते हो। और आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली। बेशक येह अगले सह़ीफ़ों में है। इब्राहीम और मूसा के सह़ीफ़ों में। (پ۳۰،الاعلٰی:۱۴-۱۹) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾2﴿.......

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّيْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾ (بنی اسرائیل، ع۱۲)

और हम ने दीं मूसा को नौ निशानियां साफ़ सो पूछ बनी इस्राईल से जब आया वोह उन के पास तो कहा उस को फ़िरऔ़न ने मेरी अटकल में ऐ मूसा तुझ पर जादू हुवा है।[1]

इस आयत में नौ निशानियों से वोह नौ मो'जिज़े मुराद हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُوَالسَّلَام को फ़िरऔ़न के मुक़ाबले में अ़ता किये। इन नौ निशानियों का ज़िक्र तौरात (किताबुल ख़ुरूज, बाब 7 ता 10) में बड़ी तफ़्सील से किया गया है।

﴾3﴿.......

ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۚۖۛ وَ مَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۚ۟ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْــَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ (سورۂ فتح، ع۴)

येह सिफ़त है उन की तौरात में और सिफ़त है उन की इन्जील में जैसा खेती ने निकाला अपना पठ्ठा फिर उस की कमर मज़्बूत की फिर पठ्ठा मोटा हुवा फिर खड़ा हुवा अपनी नाल पर ख़ुश लगता है खेती वालों को ता जलावे इन से जी काफ़िरों का।[2]

तौराते मौजूदा (किताबे पैदाइश, बाब 26, आयह 12-13) में येह तफ़्सील यूं पाई जाती है :

"और इस्ह़ाक़ ने उस ज़मीन में खेती की और उसी साल सो गुना ह़ासिल किया और ख़ुदावन्द ने उसे बरकत बख़्शी और मर्द बढ़ गया और उस की तरक़्क़ी चली जाती थी यहां तक कि बहुत बड़ा आदमी हो गया।"

और इन्जीले मत्ता, बाब 13, आयह 31-32 में यूं है :

"वोह इन के वासिते़ एक और तमसील लाया कि आस्मान की बादशाहत ख़रदल के दाने[3] की मानिन्द है जिसे एक शख़्स ने ले कर अपने खेत में बोया वोह सब बीजों में छोटा, पर

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक हम ने मूसा को नौ रोशन निशानियां दीं तो बनी इस्राईल से पूछो जब वोह उन के पास आया तो उस से फ़िरऔ़न ने कहा ऐ मूसा मेरे ख़याल में तो तुम पर जादू हुवा। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۰۱) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह उन की सिफ़त तौरैत में है और उन की सिफ़त इन्जील में जैसे एक खेती उस ने अपना पठ्ठा निकाला फिर इसे त़ाक़त दी फिर दबीज़ हुई फिर अपनी साक़ पर सीधी खड़ी हुई किसानों को भली लगती है ताकि इन से काफ़िरों के दिल जलें। (پ۲۶، الفتح: ۲۹) **इल्मिय्या**

3.....राई के दाने।

www.dawateislami.net

जब उगा सब तरकारियों से बड़ा होता और ऐसा पेड़ होता कि हवा की चिड़यां आ के उस की डालियों पर बसेरा करतीं।"

﴾4﴿.......

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَؕ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَیَقْتُلُوْنَ وَ یُقْتَلُوْنَ وَعْدًا عَلَیْهِ حَقًّا فِی التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِیْلِ وَ الْقُرْاٰنِؕ (سورۂ توبہ، ع١٤)

अल्लाह ने ख़रीद ली मुसलमानों से उन की जान और माल इस क़ीमत पर कि उन के लिये बिहिश्त है। लड़ते हैं अल्लाह की राह में फिर मारते हैं और मरते हैं। वा'दा हो चुका उस के ज़िम्मे पर तौरात और इन्जील और क़ुरआन में।[1]

मौजूदा कुतुबे अ़हदे अ़तीक़ व जदीद में बहुत जगह जिहाद का ज़िक्र है। तफ़्सील के लिये मसाबीहुल ज़लाम उर्दू और फ़ारसी मुअल्लिफ़हू ख़ाकसार देखो। पौलूस इब्रानियों को अपने नामा (बाब, 11, आयत 32-33) में यूं लिखता है :

"अब मैं क्या कहूं फ़ुरसत नहीं कि जिदऊ़न और बर्क़ और समसून और अफ़्तह़ और दावूद और समूईल और नबियों का ह़ाल बयान करूं। उन्हों ने ईमान से बादशाहों को मग़लूब किया और रास्ती[2] के काम किये और वा'दों को ह़ासिल किया और शेरे बबर के मुंह बन्द किये।"

﴾5﴿.......

وَ لَقَدْ كَتَبْنَا فِی الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ یَرِثُهَا عِبَادِیَ الصّٰلِحُوْنَ﴿۱۰۵﴾ (انبیاء، ع٧)

और हम ने लिख दिया है ज़बूर में बा'द ज़िक्र (तौरात) के कि आख़िर ज़मीन पर मालिक होंगे मेरे नेक बन्दे।[3]

ज़बूर 37, आयह 29 में है : "सादिक़ ज़मीन के वारिस होंगे।"

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है अल्लाह की राह में लड़ें तो मारें और मरें उस के ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा तौरैत और इन्जील और क़ुरआन में। (پ١١، التوبۃ: ١١١) **इल्मिय्या**

2.....सच्चाई।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक हम ने ज़बूर में नसीह़त के बा'द लिख दिया कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। (پ١٧، الانبیاء: ١٠٥) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾6﴿.......

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾ (مائده، ع ۱۱)

ला'नत खाई मुन्किरों ने बनी इस्राईल में से दावूद और मरयम के बेटे ईसा की ज़बान पर। येह इस सबब से कि गुनहगार थे और ह़द से बढ़ जाते थे।[1]

हज़रते दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं :

"वे जो मेरी बुराई से खुश होते हैं शर्मिन्दा और रुस्वा होवें और जो मेरी दुश्मनी पर फूलते हैं शर्मिन्दगी और रुस्वाई का लिबास पहनें।" (ज़बूर 35, आयह 25)

हज़रते ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं :

"ऐ रियाकार फ़क़ीहो और फ़रीसियो ![2] तुम पर अफ़्सोस कि तुम सफ़ेदी फिरी हुई क़ब्रों की मानिन्द हो जो बाहर से बहुत अच्छी मा'लूम होती हैं। पर भीतर[3] मुर्दों की हड्डियों और हर त़रह़ की नापाकी से भरी हैं। इसी त़रह़ तुम भी ज़ाहिर में लोगों को रास्त बाज़ दिखाई देते हो पर बातिन में रियाकार और शरारत से भरे हो।" (इन्जीले मत्ता, बाब 23, आयह 28)

﴾7﴿.......

اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۶﴾ (صف، ع ۱)

जब कहा ईसा मरयम के बेटे ने ऐ बनी इस्राईल ! मैं भेजा आया हूं ***अल्लाह*** *का तुम्हारी त़रफ़ सच्चा करता उस को जो मुझ से आगे है तौरात से और खुश ख़बरी सुनाता एक रसूल की जो आवेगा मुझ से पीछे उस का नाम अह़मद है। फिर जब आया उन के पास वोह रसूल खुले निशान ले कर बोले येह जादू है सरीह़।*[4]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का। (پ٦، المائدة:٧٨) **इल्मिय्या**

2.....क़दीम यहूदी फ़िर्क़ा जो रियाकारी में मश्हूर था।

3..... लेकिन अन्दर से।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** याद करो जब ईसा बिन मरयम ने कहा ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी त़रफ़ **अल्लाह** का रसूल हूं अपने से पहली किताब तौरैत की तस्दीक़ करता हुवा और उन रसूल की बिशारत सुनाता हुवा जो मेरे बा'द तशरीफ़ लाएंगे उन का नाम अह़मद है फिर जब अह़मद उन के पास रोशन निशानियां ले कर तशरीफ़ लाए बोले येह खुला जादू है। (پ٢٨، الصف:٦) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस आयत का पहला हिस्सए मत्ता, बाब 5, आयह, 17-18 और पिछला हिस्सा यूहन्ना, बाब 14, आयह 16 में है। मगर यूहन्ना के मौजूदा यूनानी नुस्ख़ों में आयए ज़ेरे इस्तिदलाल में बजाए लफ़्ज़ अह़मद के लफ़्ज़ पेराक्लेतोस (Paracletos) है जिस के मा'ना अंग्रेज़ी में कम्फ़रटर और उर्दू में तसल्ली देने वाला दर्ज कर दिये गए हैं। मगर येह साफ़ तह़रीफ़े लफ़्ज़ी है। अस्ल में यूनानी लफ़्ज़ पेरीक्लायतोस (Periclytos) था जिस के मा'ना हैं बहुत सराहा हुवा या'नी अह़मद, अहले किताब जो अपनी किताबों में तह़रीफ़ करते रहे हैं उन्हों ने लफ़्ज़ पेरीक्लायतोस को बदल कर पाराक्लेतोस बना दिया। जरूम जिस ने चौथी सदी मसीह़ी में इन्जील का लातीनी तर्जमा किया उस ने लफ़्ज़े ज़ेरे बह़स को लातीनी में पीर क़लीतास लिखा है जिस से साफ़ पाया जाता है कि अस्ली नुस्ख़ा यूनानी जो जरूम के पास था उस में पेरीक्लायतोस था न कि पेराक्लेतोस। इसी त़रह़ इन्जील बर नबास में भी पेरीक्लायतोस मौजूद है। इ़लावा अज़ीं अगर इन्जील में बिशारते अह़मद न होती तो उ़लमाए अहले किताब कभी क़ुरआन की सदाक़त पर ईमान न लाते बल्कि इस के बर अ़क्स क़ुरआने मजीद की तक्ज़ीब करते।

﴾8﴿.......

مِنْ اَجْلِ ذٰلِكَ ۚۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ (مائدہ، ع۵)

इसी सबब से लिखा हम ने बनी इस्राईल पर कि जो कोई मार डाले एक जान बिग़ैर बदले जान के फ़साद के बीच ज़मीन के तो गोया मार डाला उस ने सब लोगों को और जिस ने जिलाया एक जान को तो गोया जिलाया उस ने सब लोगों को।[1]

इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीरे मौज़ह़ुल क़ुरआन में यूं लिखा है : "या'नी अव्वल रूए ज़मीन में बड़ा गुनाह येही हुवा और इस से आगे रस्म पड़ी। इसी सबब से तौरात में इस त़रह़ फ़रमाया कि एक को मारा जैसे सब को मारा या'नी एक के करने से और दिलैर होते हैं तो सब के गुनाह में अव्वल भी शरीक थे और जैसा एक को जिलाया सब को जिला दिया या'नी ज़ालिम के हाथ से बचा दिया।"

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इस सबब से हम ने बनी इस्राईल पर लिख दिया कि जिस ने कोई जान क़त्ल की बिग़ैर जान के बदले या ज़मीन में फ़साद के तो गोया उस ने सब लोगों को क़त्ल किया और जिस ने एक जान को जिला लिया उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया। (پ٦، المائدة:٣٢) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

आयते मज़्कूरए बाला का मज़्मून अब तौराते मौजूदा में नहीं मिलता मगर तलमूद(1) या'नी अहादीसे यहूद से पाया जाता है कि उस में था। चुनान्चे, किताबे पैदाइश, बाब 4, आयते हाज़ा में लफ़्ज़े ख़ून अस्ल इब्रानी में ब सीग़ए जम्अ़ है। इस की तफ़्सीर में शनाह सन्हदरीन(2) में मुफ़स्सिरे यहूदी ने जो कुछ इब्रानी में लिखा है। इस का तर्जमा विल्यम सेन्ट क्लेरइज़्ल वाइज़् मिशने जल्फ़ा वाक़ेअ़ ईरान फ़ारसी में यूं करता है :

"نسبت بقاین کہ برادر خود را کشت یافتہ ایم کے در بارہ وے گفتہ: آواز خون ہائے برادرت فریاد برمے آورد نے گوید خون برادرت بلکہ خونہائے برادرت یعنی خون وے و خون اولادش بنا بریں انسان بہ تنہائی آفریدہ شد۔ برائے آزمودنِ تو کہ ہر کہ ہلاک کرد یکے نفسے از اسرائیل را کتاب بروے حساب‌ش رامے نماید کہ گویا ہمہ عالم راہلاک کردہ باشدو ہر کہ یکے نفسے از اسرائیل را زندہ کرد کتاب بروے حساب‌ش رامے نماید کہ گویا ہمہ عالم را زندہ کردہ باشد۔" (ینابیع الاسلام، صفحہ ۳۹۔۴۰)

इस तर्जमे में किताब से मुराद ब ज़ाहिर तौरात है। फ़ाफ़्हम(3)

﴾9﴿.......

وَّ اَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَ قَدْ نُهُوْا عَنْهُ (نساء، ع۲۲)

और उन के सूद लेने पर ह़ालांकि वोह इस से मन्अ़ किये गए।(4)

तफ़्सीरे हुसैनी में है : " حالانکہ نہی کردہ شدہ انداز اخذ ربو در تورات " तौरात में येह मुमानअ़त अह़बार, बाब, 25, आयह 36 में है।

आयाते मज़्कूरए बाला का इस नबिय्ये उम्मी (بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّی) की ज़बाने मुबारक से निकलना ब जुज़् वह़्ये इलाही ना मुमकिन था लिहाज़ा येह सब **इख़्बार बिल मुग़य्यिबात**(5) की क़िस्म से हैं और इन की सिह़्ह़त में किसी मुख़ालिफ़ ने चूनो चरा नहीं की। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले किताब को वोह बातें बता दीं जिन्हें वोह छुपाते थे। (مائدہ، ع۳) ह़ालांकि वोह उन की किताबों में मौजूद थीं मसलन नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत पेशीन गोइयां, आप के अवसाफ़, हुक्मे रज्म वग़ैरा मगर उन में से कोई भी अपनी किताब पेश कर

1.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "त़लमूद" ही लिखा है लेकिन तारीख़ व सीरत की कुतुब में "तलमूद" लिखा है लिहाज़ा हम ने यहां "त़लमूद" की जगह "तलमूद" लिखा है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلَم

2.....एक किताब का नाम है।

3.....ख़ूब समझ लो।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इस लिये कि वोह सूद लेते ह़ालांकि वोह इस से मन्अ़ किये गए थे। (پ۶، النساء:۱۶۱)

5.....ग़ैब की ख़बरें देना।

www.dawateislami.net

के आप की तक्ज़ीब न कर सका। इस से बढ़ कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सदाक़त का और क्या सुबूत हो सकता है ![1] وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى (سورۂ نجم)

कुतुबे इल्हामिय्या का मुहावरा भी क़ाबिले ग़ौर है देखिये आयाते ज़ैल :

﴾1﴿.......

فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ (انعام،ع٤)

*सो वोह तुझ को नहीं झुटलाते लेकिन बे इन्साफ़ **अल्लाह** के हुक्मों से मुन्किर हुवे जाते हैं।[2]*

अव्वले समूईल, बाब 8, आयह 7 में है :

"वोह तुझ से मुन्किर नहीं हुवे हैं बल्कि मुझ से मुन्किर हुवे हैं।"

﴾2﴿.......

نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (بقره، ع١٢)

*फेंक दी एक जमाअ़त ने किताब पाने वालों में से **अल्लाह** की किताब अपनी पीठों के पीछे गोया कि उन को मा'लूम नहीं।[3]*

नह़मियाह, बाब 9, आयह 26 में है :

"और उन्हों ने तेरी शरीअ़त को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया।"

﴾3﴿.......

وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ (حج، ع٦)

और एक दिन [4] तेरे रब के हां हज़ार बरस के बराबर है जो तुम गिनते हो।[5]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते वोह तो नहीं मगर वह्य जो उन्हें की जाती है। (پ۲۷،النجم:۳-٤) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम **अल्लाह** की आयतों से इन्कार करते हैं। (پ۷، الانعام:۳۳) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो किताब वालों से एक गुरौह ने **अल्लाह** की किताब अपने पीठ पीछे फेंक दी गोया वोह कुछ इल्म नहीं रखते। (پ۱،البقرة:۱۰۱) **इल्मिय्या**

4.....या'नी हज़ार बरस का काम एक दिन में कर सकता है। मौज़ुहुल क़ुरआन। 12 मिन्ह

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम्हारे रब के यहां एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिनती में हज़ार बरस। (پ۱۷، الحج:٤۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ज़बूर 90, आयह 4 में है :

"हज़ार बरस तेरे आगे ऐसे हैं जैसे कल का दिन जो गुज़र गया।"

﴾4﴿.......

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْ ؕ (بنی اسرائیل، ع٥)

उस की सुथराई बोलते हैं आस्मान सातों और ज़मीन और जो कोई उन में है और कोई चीज़ नहीं जो नहीं पढ़ती ख़ूबियां उस की लेकिन तुम नहीं समझते उन का पढ़ना।(1)

ज़बूर 19, आयह 2-3 में है :

"आस्मान ख़ुदा का जलाल बयान करते हैं और फ़ज़ा उस की दस्तकारी दिखाती है। एक दिन दूसरे दिन से बातें करता है और एक रात दूसरी रात को मा'रिफ़त बख़्शती है। उन की कोई लुग़त और ज़बान नहीं उन की आवाज़ सुनी नहीं जाती।"

﴾5﴿.......

كَمَثَلِ غَیْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ یَهِیْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ یَكُوْنُ حُطٰمًا ؕ (حدید، ع٣)

जैसे कहावत एक मींह की जो ख़ुश लगा किसानों को उस का सब्ज़ा उगना फिर ज़ोर पर आता है फिर तू देखे उस को ज़र्द हो गया फिर हो जाता है रौंदन।(2)

ज़बूर 90, आयह 6 में है :

"वे(3) फ़ज्र को उस घास की मानिन्द हैं जो उगी हो वोह सुब्ह़ को लहलहाती है और तरोताज़ा होती है शाम को काटी जाती है और सूख जाती है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस की पाकी बोलते हैं सातों आस्मान और ज़मीन और जो कोई उन में हैं और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उस की पाकी न बोले हां तुन उन की तस्बीह़ नहीं समझते। (پ١٥، بنی اسرائیل:٤٤) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस मींह की त़रह़ जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया। (پ٢٧، الحدید:٢٠) **इल्मिय्या**

3.....वोह।

www.dawateislami.net

﴾6﴿.......

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾ (اعراف، ع٥)

बेशक जिन्हों ने झुटलाई हमारी आयतें और उन के सामने तकब्बुर किया न खुलेंगे उन को दरवाज़े आस्मान के और न दाख़िल होंगे जन्नत में यहां तक कि दाख़िल हो ऊंट सूई के नाके में और हम यूं बदला देते हैं गुनहगारों को।[1]

इस आयत का अख़ीर हिस्सा इन्जील लूक़ा, (बाब 18, आयह 25) में यूं है :

"ऊंट का सूई के नाके में से गुज़र जाना इस से आसान है कि दौलत मन्द ख़ुदा की बादशाहत में दाख़िल हो।"

﴾7﴿.......

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ (یونس، ع١١)

*और मत पुकार **अल्लाह** के सिवा ऐसे को कि न भला करे तेरा और न बुरा करे तेरा।*[2]

यरमियाह, बाब 10, आयह 5 में है :

"उन के मा'बूदों से मत डरो कि उन में ज़रर पहुंचाने की सकत नहीं और न उन में कुव्वत है कि फ़ाइदा बख़्शे।"

﴾8﴿.......

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٤﴾ (انبیاء، ع٧)

जिस दिन हम लपेट लें आस्मान को जैसे लपेटता है तूर मार रक़ओं को जैसे सिरे से बनाया हम पहली बार फिर उस को दोहरा देंगे। वा'दा हो चुका है हम पर हम को करना है।[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं और उन के मुक़ाबिल तकब्बुर किया उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (پ٨،الاعراف:٤٠) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** के सिवा उस की बन्दगी न कर जो न तेरा भला कर सके न बुरा। (پ١١،یونس:١٠٦) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन हम आस्मान को लपेटेंगे जैसे सजल फ़िरिश्ता नामए आ'माल को लपेटता है हम ने जैसे पहले उसे बनाया था वैसे ही फिर कर देंगे येह वा'दा है हमारे ज़िम्मे हम को उस का ज़रूर करना। (پ١٧،الانبیاء:١٠٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

यसअ़्याह, बाब 34, आयह 4 में है :

"और आस्मान काग़ज़ के ताव के मानिन्द लपेटे जाएंगे।"

मुकाशफ़ात, बाब 6, आयह 14 में है :

"और आस्माने तूर मार की त़रह़[1] जब आप से लपेटा जाए दो ह़िस्से हो गया।"

﴾9﴿.......

اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ (بقرہ، ع ٣٤)

जीता है सब का थामने वाला नहीं पकड़ती है उस को ऊंघ और न नींद।[2]

ज़बूर 21, आयह 4 में है :

"देख वोह जो इस्राईल का मुह़ाफ़िज़ है हरगिज़ न ऊंघेगा और न सोवेगा।"

﴾10﴿.......

اَللّٰهُ یَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَ یَمُدُّهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۱۵﴾ (بقرہ، ع ٢)

अल्लाह हंसी करता है उन से और बढ़ाता है उन को उन की शरारत में बहके हुवे।[3]

ज़बूर 2, आयह 4, में है :

"वोह जो आस्मान पर तख़्त नशीन है हंसेगा और ख़ुदावन्द उन्हें ठठ्ठों में उड़ा देगा।"

इसी त़रह़ ज़बूर 59, आयह 8, में है :

"पर तू ऐ ख़ुदावन्द उन पर हंसेगा तो सारी क़ौमों को मस्ख़रा बना देगा।"

नाज़िरीन ! आप अमसिलए बाला से ब ख़ूबी अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि "क़ुरआन व दीगर कुतुबे इल्हामिय्या" में ब लिह़ाज़े मुह़ावरा किस क़दर मुत़ाबक़त है। आप को मा'लूम है कि नुज़ूले क़ुरआन और नुज़ूले कुतुबे साबिक़ा में कितना अ़र्सए दराज़ गुज़रा है और आप येह भी

1.....मुड़ी हुई बगल।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद। (پ٣،البقرة:٢٥٥) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** उन से इस्तिहज़ा फ़रमाता है (जैसा उस की शान के लाइक़ है) और उन्हें ढील देता है कि अपनी सरकशी में भटकते रहें। (پ١، بقرة:١٥) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

जानते हैं कि कुतुबे साबिक़ा में तह़रीफ़े मा'नवी और तह़रीफ़े लफ़्ज़ी इस कसरत से हुई कि किताबों तक का पता नहीं चलता। बईं हमा कुरआन व कुतूबे साबिक़ए मौजूदा में मुहा़वरे की ऐसी मुता़बक़त का पाया जाना साफ़ बता रहा है कि दोनों सूरतों में "मुतकल्लिम" एक ही है वोह खु़दाए अ़लीम जिस ने तौरात ह़ज़रते मूसा पर, ज़बूर ह़ज़रते दावूद पर, इन्जील ह़ज़रते ईसा पर और दीगर सही़फ़े दूसरे नबियों पर भेजे उसी ने कुरआने मजीद अपने प्यारे नबिय्ये उम्मी (بابی هو وامی) पर नाज़िल फ़रमाया जो ब ख़िलाफ़े दीगर कुतुबे इबारत में भी मो'जिज़[1] है और मुकम्मल ऐसा कि उस की मौजूदगी में कुतुबे साबिक़ा जो अपने अपने वक़्त में मुकम्मल व काफ़ी थीं ना मुकम्मल व मन्सूख़ हो गईं।

कुरआन व कुतुबे इल्हामिय्या साबिक़ा में मुता़बक़ते मज़्कूरए बाला को देख कर आज कल के ईसाई भी कुफ़्फ़ारे कुरैश की त़रह़ कहते हैं कि कुरआन में येह बातें अहले किताब में से किसी आ़लिम की मदद से लिखी गई हैं चुनान्चे, कभी येह गप उड़ाते हैं कि बुहै़रा राहिब ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह सब कुछ सिखाया था और कभी बड़ बड़ाते हैं कि आप ने दीने मसीही़ का कुछ इल्म सुहैब रूमी से ह़ासिल किया था[2] और कभी येह बड़ हांकते हैं कि ज़न्ने ग़ालिब तो उन राहिबों में से किसी एक की त़रफ़ इशारा करता है जो उस वक़्त मुल्के अ़रब में अ़ज़ीज़ुल वुजूद न थे और कुरआन अक्सर जगहों में उन का ज़िक्र तह़सीन व मद्ह़ के अल्फ़ाज़ में करता है।[3] मगर हम पूछते हैं कि इस तमाम हरज़ह सराई[4] का क्या सुबूत है। ऐसे इनाद से अपनी आ़क़िबत क्यूं ख़राब कर रहे हो? पामर ईसाई जिस ने कुरआन का अंग्रेज़ी में तर्जमा किया है यूं लिखता है:

"इसाई मुसन्निफ़ीन (ह़ज़रत) मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर येह इल्ज़ाम लगाते हैं कि उन की वह़्य का बड़ा हिस्सा एक नसरानी राहिब की ता'लीम का नतीजा है मगर इस इल्ज़ाम की ताईद में कोई शहादत मौजूद नहीं।[5]

1.....आ़जिज़ करने वाला।

2.....تفسیر کامل قرآن بزبان انگریزی مولفہ ویری صاحب، جلد اول، صفحہ ۴۴۔۴۶۔۱۲منہ

3.....انڈین اینٹیکوئری، جلد ۳۲، بابت جون ۱۹۱۳ء، صفحہ ۲۵۹۔۱۲منہ

4.....बे हूदा गुफ़्तगू।

5.....दीबाचा तर्जमए कुरआन ब ज़बाने अंग्रेज़ी, स. 48। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

हम ईसाइयों से खुले अल्फ़ाज़ में पुकार कर कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो पहले साबित करो कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी यहूदी या ईसाई से ता'लीम पाई और फिर जवाब दो कि मज़ामीने ज़ेरे बह़स को ऐसे मुअ़ज़्ज़ निज़ामे कलाम में किस ने अदा किया। हमारा येह दा'वा है और सच्चा दा'वा है कि क़ुरआन इफ़्तरा नहीं और ना मुमकिन है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई ऐसा क़ुरआन बनाए। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा जो होगा वोह मख़्लूक़ होगा और मख़्लूक़ ऐसा क़ुरआन बनाने पर क़ादिर नहीं। मगर येह उसूल दीन और बा'ज़ दीगर मज़ामीन में कुतुबे साबिक़ा के मुत़ाबिक़ है और बताता है कि वोह किताबें मिन जानिबिल्लाह और अपने अपने वक़्तों में मा'मूल बिहा थीं।(1) इस लिह़ाज़ से येह उन किताबों का मुसद्दिक़(2) और उन की सिह़्ह़त की दलील है क्यूंकि येह मो'जिज़ा है और वोह मो'जिज़ा नहीं इस लिये वोह अपने मज़ामीन की सिह़्ह़त के लिये इस की शहादत की मोह़ताज हैं न कि येह। पस जब क़ुरआन कुतुबे साबिक़ा का मुसद्दिक़ ठहरा तो येह नतीजा निकला कि येह इफ़्तरा नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से है क्यूंकि येह एक ऐसे बन्दए कामिल के हाथ पर ज़ाहिर हुवा जो न कोई इ़ल्म पढ़ा और न उ़लमाए अहले किताब में से किसी की सोह़बत में बैठा। फिर जो उस की पेश कर्दा किताब के मज़ामीन कुतुबे साबिक़ा के मुत़ाबिक़ पाए गए तो मा'लूम हुवा कि वोह किताब वह़्ये इलाही है। वोह किताब जो कुतुबे इल्हामिय्या साबिक़ा का सिद्क़ साबित करे खुद इफ़्तरा कैसे बन सकती है बल्कि वोह तो औला बिस्सिद्क़ है।(3)

येह तक़रीर आयए ज़ैल की तफ़्सीर है :

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ تَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۷﴾ (یونس، ع٤)

*और नहीं येह क़ुरआन कि कोई बना ले **अल्लाह** के सिवा और लेकिन सच्चा करता है अगले कलाम को और तफ़्सील है किताब की इस में शुबा नहीं जहां के परवर दगार से है।*(4)

क़ुरआन में मोमिनों के दिल की बा'ज़ ऐसी बातें मज़कूर हैं जहां अ़ल्लामुल ग़ुयूब(5) के सिवा और किसी की रसाई नहीं हो सकती। देखो अमसिलए ज़ैल :

1....या'नी उन पर अ़मल किया जाता था। 2....तस्दीक़ करने वाला। 3....सच्चाई के ज़ियादा लाइक़ है।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस क़ुरआन की येह शान नहीं कि कोई अपनी त़रफ़ से बना ले बे **अल्लाह** के उतारे हां वोह अगली किताबों की तस्दीक़ है और लौह़ में जो कुछ लिखा है सब की तफ़्सील है उस में कुछ शक नहीं परवर दगारे आ़लम की त़रफ़ से है। (پ۱۱،یونس:۳۷) **इल्मिय्या**

5.....ग़ैबों का जानने वाले।

www.dawateislami.net

﴾1﴿.......

وَ اِذْ یَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآىٕفَتَیْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَیْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ یُرِیْدُ اللّٰهُ اَنْ یُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ یَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِیْنَۙ (انفال، ع ۱)

*और जिस वक़्त वा'दा देता था **अल्लाह** तुम को एक उन दो जमाअ़त में से कि तुम को हाथ लगेगी और तुम चाहते थे कि बिन शौकत वाला मिले तुम को और **अल्लाह** चाहता था कि सच्चा करे सच को अपने कलामों से और काटे पीछा काफ़िरों का।*(1)

इस आयत में एक ऐसे अम्र की ख़बर है जो मोमिनों के दिल में आया था और जिसे वोह पसन्द करते थे मगर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह अम्र पोशीदा था। पस **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमा कर आप को इत्तिलाअ़ बख़्शी। इस का बयान यूं है कि जब मुसलमानों को ख़बर लगी कि अबू सुफ़्यान लदे हुवे ऊंटों का क़ाफ़िला मुल्के शाम से ला रहा है तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीन सो आठ की जमइय्यत के साथ निकले और वादिये जफ़रान में **अल्लाह** तआ़ला ने आप से दो अम्रों में से एक का वा'दा फ़रमाया क़ाफ़िले का हाथ आना या गुरौहे क़ुरैश का मग़्लूब होना जो मक्का से उस क़ाफ़िले के छुड़ाने के लिये निकला था। सह़ाबए किराम अपने दिलों में क़ाफ़िले की गिरिफ़्तारी पसन्द करते थे। पस **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा कि वोह दुश्मनों से मुक़ाबला करें ताकि कुफ़्र का ज़ोर टूट जाए और दीने ह़क़ को तक़्विय्यत पहुंचे चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया क्यूंकि बद्र की लड़ाई में सत्तर काफ़िर मारे गए और इतने ही गिरिफ़्तार हुवे और मुसलमानों में से सिर्फ़ चौदह शहीद हुवे।

﴾2﴿.......

اِذْ هَمَّتْ طَّآىٕفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَاۙ وَ اللّٰهُ وَلِیُّهُمَاؕ وَ عَلَى اللّٰهِ فَلْیَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (آل عمران، ع ۱۳)

*जब क़स्द किया दो फ़िर्क़ों ने तुम में से कि नामर्दी करें और **अल्लाह** मददगार था उन का और **अल्लाह** ही पर चाहिये भरोसा करें मुसलमान।*(2)

---

(1).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और याद करो जब **अल्लाह** ने तुम्हें वा'दा दिया था कि इन दोनों गुरौहों में एक तुम्हारे लिये है और तुम येह चाहते थे कि तुम्हें वोह मिले जिस में कांटे का खटका नहीं और **अल्लाह** येह चाहता था कि अपने कलाम से सच को सच कर दिखाए और काफ़िरों की जड़ काट दे। (پ۹، الانفال:۷) **इल्मिय्या**

(2).....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब तुम में के दो गुरौहों का इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं और **अल्लाह** उन का संभालने वाला है और मुसलमानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये। (پ٤، آل عمرٰن:۱۲۲) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस आयत में मोमिनों के एक ख़त्रए क़ल्बी का इज़्हार है। जिस का बयान यूं है कि जंगे बद्र से अगले साल (ग़ज़्वए उहुद में) काफ़िर जम्अ़ हो कर मदीने पर चढ़ आए। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों से मश्वरा किया अक्सर कहने लगे कि हम शहर ही में लड़ेंगे और हुज़ूर की मर्ज़ी भी येही थी। बा'ज़ कहने लगे कि येह आ़र है बल्कि हम मैदान में मुक़ाबिल होंगे। आख़िर इसी मश्वरे पर अ़मल किया गया। जब हुज़ूर शहर से बाहर चले अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ मदीने का रहने वाला था वोह भी शरीके जंग था मगर वोह ना खुश हो कर फिर गया कि हमारे कहने पर अ़मल न किया। उस के बहकाने से अन्सार के दो क़बीले (ख़ज़्रज से बनू सलमा और औस से बनी ह़ारिसा) भी फिर चले। आख़िर उन के सरदार अ़वाम को समझा कर ले आए। इस आयत में उन्हीं दो क़बीलों के ख़त्रए क़ल्बी का ज़िक्र है ह़ालांकि उन से न कोई क़ौल ज़ुहूर में आया और न कोई बुज़दिली। (मौज़ेहुल क़ुरआन)

क़ुरआने मजीद में मुनाफ़िक़ों के राज़ खोल कर बताए गए हैं जिन को वोह अपने दिलों में छुपाते थे या अपनी ही जमाअ़त से कहते थे। देखो आयाते ज़ैल :

﴾1﴿.......

يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ (آل عمران،١٥٤)

अपने जी में छुपाते हैं जो तुझ से ज़ाहिर नहीं करते। कहते हैं कि अगर कुछ काम होता हमारे हाथ तो हम मारे न जाते।(1)

इस आयत से ज़ाहिर है कि जंगे उहुद के दिन जब मुसलमानों को शिकस्त हुई तो मुनाफ़िक़ीन ख़ल्वत में एक दूसरे से कहते थे कि अगर लड़ाई के लिये निकलना हमारे इख़्तियार में होता तो इब्ने उबय की राए पर अ़मल करते और शहरे मदीना से बाहर क़दम न धरते और न मारे जाते। इस क़ौल को वोह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से छुपाते थे मगर **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ब ज़रीअ़ए वह़्य ख़बर दे दी।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने दिलों में छुपाते हैं जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते कहते हैं हमारा कुछ बस होता तो हम यहां न मारे जाते। (پ٤،اٰل عمرٰن:١٥٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿2﴾.......

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَ لٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ۝ (توبہ، ع ۷)

और क़समें खाते हैं **अल्लाह** की, कि वोह बेशक तुम में से हैं हालांकि वोह तुम में से नहीं हैं लेकिन वोह लोग डरते हैं।[1]

इस आयत में बता दिया गया है कि मुनाफ़िक़ीन जो क़सम खा कर कहते हैं कि हम तुम में से हैं झूट है।

﴿3﴾.......

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ۝ (توبہ، ع ۷)

और बा'ज़े उन में से हैं कि तुझ को ता'न देते हैं ज़कात बांटते में। सो अगर उन को मिले उस में से तो राज़ी हों और अगर न मिले उस में से तब ही वोह ना ख़ुश हो जावें।[2]

येह आयत अबुल जव्वाज़ मुनाफ़िक़ के बारे में नाज़िल हुई क्यूंकि उस ने कहा था कि तुम अपने साहिब को नहीं देखते कि तुम्हारे सदक़ात रेवड़ चराने वाले गडरियों मे तक़्सीम कर देता है और फिर समझता है कि मैं आ़दिल हूं। (तफ़्सीरे रूहुल बयान)[3]

﴿4﴾.......

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ (توبہ، ع ۸)

और बा'ज़े उन में से बद गोई करते हैं नबी की और कहते येह शख़्स कान है।[4]

बा'ज़ मुनाफ़िक़ीन मसलन जुलास और उस के साथी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में ऐसी बातें कहा करते थे कि जिन से इन्सान को अज़िय्यत पहुंचे और जब उन्हें मन्अ़ किया जाता तो कहते कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तो कान ही कान हैं हम उन के सामने

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की क़समें खाते हैं कि वोह तुम में से हैं और तुम में से हैं नहीं हां वोह लोग डरते हैं। (پ ۱۰،التوبۃ:۵۶) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन में कोई वोह है कि सदक़े बांटने में तुम पर ता'न करता है तो अगर उन में से कुछ मिले तो राज़ी हो जाएं और न मिले तो जभी वोह नाराज़ हैं। (پ ۱۰،التوبۃ:۵۸) **इल्मिय्या**

3......تفسیر روح البیان،الجزء العاشر،سورۃ التوبۃ،ج۳،ص ۴۵۱۔۴۵۲۔علمیہ

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन में कोई वोह हैं कि उन ग़ैब की ख़बरें देने वाले को सताते हैं और कहते हैं वोह तो कान हैं। (پ ۱۰،التوبۃ:۶۱) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

क़सम खा लेंगे और इन्कार कर देंगे वोह मान लेंगे क्यूंकि वोह जो सुनते हैं मान लेते हैं उन में ज़काअ व फ़तानत[1] नाम को नहीं । (तफ़्सीरे रूहुल बयान)[2]

﴾5﴿.......

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ
وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ

(توبه، ع ١٠)

क़समें खाते हैं अल्लाह की हम ने नहीं कहा बेशक कहा है लफ़्ज़ कुफ़्र का और मुन्किर हो गए हैं मुसलमान हो कर और फ़िक्र किया था उन्हों ने जो न मिला ।[3]

ग़ज़्वए तबूक में इन मुनाफ़िक़ीन की फ़ज़ीह़त[4] में आयात नाज़िल हुईं जो इस ग़ज़्वे में मदीनए मुनव्वरा में पीछे रह गए थे इस लिये जुलास बिन सुवैद ने कहा : अल्लाह की क़सम ! जो कुछ ह़ज़रत हमारे भाइयों की निस्बत कहते हैं अगर वोह सच है तो हम गधों से बदतर हैं । जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह ख़बर पहुंची तो आप ने जुलास को बुला कर पूछा वोह क़सम खा गया कि मैं ने ऐसा नहीं कहा । इस पर [5] يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ الآيه उतरी । अगर्चे इस क़िस्से में क़ाइल एक है मगर चूंकि बाक़ी मुनाफ़िक़ जुलास के क़ौल पर राज़ी थे इस लिये वोह भी ब मन्ज़िलए जुलास हो गए और सीग़ा जम्अ़ का लाया गया । मत़लब येह कि वोह क़सम खा गए कि हम ने कोई कलिमा ऐसा नहीं कहा जिस से आं ह़ज़रत या आप के दीन की तौहीन होती हो ह़ालांकि बेशक उन्हों ने कलिमए कुफ़्र कहा और इसी पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि अपने अफ़्आ़ल से भी कुफ़्रे बात़िनी ज़ाहिर कर दिया । चुनान्चे, मिन जुम्ला उन अफ़्आ़ल के एक येह है कि ग़ज़्वए तबूक से वापसी के वक़्त उन में से पन्दरह ने इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि ह़ज़रत जब तबूक और मदीना के दरमियान उ़क़्बा (घाटी) पर होंगे तो हम उन को सुवारी से वादी में धकेल कर मार डालेंगे मगर अल्लाह तआ़ला ने आप को मुनाफ़िक़ीन के इस इरादे से आगाह कर दिया । इस लिये जब लश्कर उ़क़्बा में पहुंचा तो आप तो उ़क़्बा में चले और बाक़ी सब आप के इरशाद से

1.....अ़क़्लमन्दी और ज़हानत ।

2......تفسير روح البيان، الجزء العاشر، سورة التوبة، ج٣، ص٤٥٦ـ علميه

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा और बेशक ज़रूर उन्हों ने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आ कर काफ़िर हो गए और वोह चाहा था जो उन्हें न मिला । (پ ١٠، التوبة: ٧٤) **इल्मिय्या**

4.....रुस्वाई ।

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्हों ने न कहा । (پ ١٠، التوبة: ٧٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

वादी में चलने लगे मगर उन मुनाफ़िक़ीन ने मुंह पर दहान बन्द डाल कर उ़क़्बा में चलना शुरूअ़ किया। ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी की मुहार पकड़े हुवे थे और ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन अल यमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه पीछे से हांक रहे थे इतने में हुज़ैफ़ा ने ऊंटों के पैरों की आहट और हथयारों की आवाज़ सुनी। इस लिये हुज़ैफ़ा अन्धेरी रात में उन की त़रफ़ बढ़े और ललकार कर कहा : ऐ **अल्लाह** के दुश्मनो ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दूर हो जाओ। येह सुन कर वोह वादी की त़रफ़ भाग गए और लोगों में मिल गए। (रूहुल बयान व रूहुल मआ़नी)[1]

﴾6﴿.......

وَ اِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ یَّقُوْلُ اَیُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖۤ اِیْمَانًا ۚ (توبہ، ع ١٦)

और जब नाज़िल हुई एक सूरत तो बा'ज़े उन में कहते हैं किस को तुम में ज़ियादा किया इस सूरत ने ईमान।[2]

या'नी जब मुनाफ़िक़ लोग हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में न होते और कोई सूरत नाज़िल होती जिस में दलाइले क़ात़िआ़ हों तो वोह एक दूसरे से बत़ौरे इस्तिहज़ा[3] कहते कि इस सूरत ने तुम में से किस का ईमान ज़ियादा किया ?

﴾7﴿.......

وَ اِذَا مَاۤ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ یَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ (توبہ، ع ١٦)

और जब नाज़िल हुई एक सूरत देखने लगे एक दूसरे की त़रफ़ कि कोई भी देखता है तुम को फिर चले गए।[4]

या'नी जब मुनाफ़िक़ीन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर में होते और कोई सूरत उतरती जिस में उन के छुपे ऐ़बों का बयान होता तो वोह मोमिनों से आंख बचा कर मजलिस से खिसक जाते और अगर जानते कि कोई मोमिन उन को देख रहा है तो वहीं बैठे रहते और इख़्तितामे मजलिस पर चले जाते।

---

1 ......تفسیر روح البیان، الجزء العاشر، سورة التوبة، ج٣، ص٤٦٧ ـ علمیه

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब कोई सूरत उतरती है तो उन में कोई कहने लगता है कि उस ने तुम में किस के ईमान को तरक़्क़ी दी। (پ١١، التوبة:١٢٤) **इल्मिय्या**

3 .....मज़ाक़ और तह़क़ीर के त़ौर पर।

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब कोई सूरत उतरती है उन में एक दूसरे को देखने लगता है कि कोई तुम्हें देखता तो नहीं फिर पलट जाते हैं। (پ١١، التوبة:١٢٧) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾8﴿.......

وَ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّ كُفْرًا وَّ تَفْرِيْقًۢا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَ لَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَاۤ اِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۰۷﴾ (توبه، ع ۱۳)

*और जिन्हों ने बनाई एक मस्जिद ज़िद और कुफ़्र पर और फूट डालने को मुसलमानों में और घात उस शख़्स के लिये जो लड़ रहा है **अल्लाह** से और रसूल से पहले से और अब क़समें खावेंगे कि हम ने तो भलाई ही चाही थी और **अल्लाह** गवाह है कि वोह झूटे हैं।*(1)

इस आयत से मा'लूम हुवा कि मस्जिदे ज़िरार वाले सब मुनाफ़िक़ थे। मुनाफ़िक़ीन के मज़ीद ह़ाल के लिये सूरए मुनाफ़िक़ून देखिये। क़ुरआने मजीद में मुनाफ़िक़ीन की त़रह़ यहूदियों के छुपे ऐब भी ज़ाहिर कर दिये गए हैं। देखो आयाते ज़ैल :

﴾1﴿.......

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَ يَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَ اِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ وَ يَقُوْلُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْ لَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۸﴾

(مجادله، ع ۲)

*क्या तू ने न देखे जिन को मन्अ़ हुई काना फूसी फिर वोही करते हैं जो मन्अ़ हो चुका है और कान में बातें करते हैं गुनाह की और तअ़द्दी की और रसूल की ना फ़रमानी की और जब आवें तेरे पास तुझ को दुआ़ दें जो दुआ़ नहीं दी तुझ को **अल्लाह** ने और कहते हैं अपने दिलों में क्यूं नहीं अ़ज़ाब करता हम को **अल्लाह** इस पर जो हम कहते हैं। बस है उन को दोज़ख़ दाख़िल होंगे उस में सो बुरी है जगह फिर जाने की।*(2)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जिन्हों ने मस्जिद बनाई नुक़्सान पहुंचाने को और कुफ़्र के सबब और मुसलमानों में तफ़रिक़ा डालने को और उस के इन्तिज़ार में जो पहले से **अल्लाह** और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो भलाई चाही, और **अल्लाह** गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं। (پ۱۱،التوبة:۱۰۷) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हें बुरी मशवरत (मुशावरत) से मन्अ़ फ़रमाया गया था फिर वोही करते हैं जिस की मुमानअ़त हुई थी और आपस में गुनाह और ह़द से बढ़ने और रसूल की ना फ़रमानी के मश्वरे करते हैं और जब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर होते हैं तो इन लफ़्ज़ों से तुम्हें मुजरा करते हैं जो लफ़्ज़ **अल्लाह** ने तुम्हारे ए'ज़ाज़ में न कहे और अपने दिलों में कहते हैं हमें **अल्लाह** अ़ज़ाब क्यूं नहीं करता हमारे इस कहने पर उन्हें जहन्नम बस (काफ़ी) है, उस में धंसेंगे तो क्या ही बुरा अन्जाम। (پ۲۸،المجادلة:۸) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

मौज़ेहुल कुरआन में है : "ह़ज़रत की मजलिस में बैठ कर मुनाफ़िक़ कान में बातें करते, मजलिस के लोगों पर ठट्ठे करते और ऐ़ब पकड़ते और ह़ज़रत की बात सुन कर कहते : येह मुश्किल काम हम से कब हो सकेगा ? पहले सूरए निसा में इस का मन्अ़ आ चुका था मगर फिर वोही करते थे और दुआ़ येह कि यहूद आते और اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ के बदले اَلسَّامُ عَلَيْكَ कहते। येह बद दुआ़ है कि तुझ पर पड़े मर्ग। फिर आपस में कहते कि अगर रसूल है तो इस कहने से हम पर अ़ज़ाब क्यूं नहीं आता और कोई मुनाफ़िक़ भी कहता होगा।"

﴾2﴿.......

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي
الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَ لَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوْبُهُمْ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛۚ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ
سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ
وَ اِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ
فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ
اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚۖ وَّ لَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۴۱﴾ (مائده، ع٦)

*ऐ रसूल तू ग़म न खा उन पर जो जल्दी मुन्किर होने लगते हैं उन लोगों में से जो कहते हैं हम मुसलमान हैं अपने मुंह से और उन के दिल मुसलमान नहीं और उन लोगों में से जो यहूदी हैं सुनने वाले हैं वासिते़ दूसरी जमाअ़त के जो तुझ तक नहीं आए बदल डालते हैं बात को उस का ठिकाना छोड़ कर कहते हैं अगर तुम को येह मिले तो लो और अगर न मिले तो बचते रहो और जिस को **अल्लाह** ने बचलाना[1] चाहा सो तू उस का कुछ नहीं कर सकता **अल्लाह** के यहां वोही लोग हैं जिन को **अल्लाह** ने न चाहा कि उन के दिल पाक करे उन को दुन्या में ज़िल्लत है और उन को आख़िरत में बड़ी मार है।*[2]

मौज़ेहुल कुरआन में इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ यूं लिखा है : "बा'ज़े मुनाफ़िक़ थे कि दिल में यहूद से मिलते थे और बा'ज़े यहूद थे कि ह़ज़रत के पास आमदो रफ़्त करते थे।

1.....गुमराह करना।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रसूल तुम्हें ग़मगीन न करें वोह जो कुफ़्र पर दौड़ते हैं कुछ वोह जो अपने मुंह से कहते हैं हम ईमान लाए और उन के दिल मुसलमान नहीं और कुछ यहूदी झूट ख़ूब सुनते हैं और लोगों की ख़ूब सुनते हैं जो तुम्हारे पास ह़ाज़िर न हुवे **अल्लाह** की बातों को उन के ठिकानों के बा'द बदल देते हैं कहते हैं येह हुक्म तुम्हें मिले तो मानो और येह न मिले तो बचो और जिसे **अल्लाह** गुमराह करना चाहे तो हरगिज़ तू **अल्लाह** से उस का कुछ बना न सकेगा वोह हैं कि **अल्लाह** ने उन का दिल पाक करना न चाहा उन्हें दुन्या में रुस्वाई है और उन्हें आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब। (پ٦، المائدة:٤١) इल्मिय्या

www.dawateislami.net

अल्लाह ने फ़रमाया कि येह लोग जासूसी को आते हैं कि तुम्हारे दीन में से कुछ ऐ़ब चुन कर ले जावें अपने सरदारों के पास जो यहां नहीं आते और फ़िल ह़क़ीक़त ऐ़ब कहां है लेकिन बात को ग़लत़ तक़रीर कर के हुनर का ऐ़ब करते हैं। यहूद में कई क़िस्से हुवे कि अपने क़ज़ाया[1] लाए। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास फ़ैसले को वोह सरदारे यहूद आप न आते बीच वालों के हाथ भेजते और कह देते कि हमारे मा'मूल के मुवाफ़िक़ हुक्म करें तो क़बूल रखो नहीं तो न रखो। ग़रज़ येह थी कि हुक्मे तौरात के ख़िलाफ़ मा'मूल बांधे थे कि एक भी अगर इस के मुवाफ़िक़ हुक्म कर दे तो हम को **अल्लाह** के यहां सनद हो जावे और जानते थे कि उन को तौरात की ख़बर नहीं जो हमारा मा'मूल सुनेंगे सो हुक्म करेंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रत को ख़बर दार किया। मुवाफ़िक़ तौरात ही के हुक्म फ़रमाया और तौरात में से साबित कर के उन को क़ाइल किया। एक क़िस्सा रजम का था कि वोह मुन्किर हुवे थे। फिर तौरात से क़ाइल किया और एक क़िसास का था कि वोह अशराफ़ और कम ज़ात का फ़र्क़ करते थे और तौरात में फ़र्क़ नहीं रखा।"

﴾3﴿.......

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّ رَاعِنَا لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ (نساء، ٧٤)

वोह जो यहूदी हैं बदल डालते हैं बात को उस की जगह से और कहते हैं कि हम ने सुना और न माना और सुन न सुनाया जाइयो और राइ़ना मोड़ दे कर अपनी ज़बान को और त़ा'न कर के दीन में।[2]

मौज़ि़हुल क़ुरआन में है कि "यहूद ह़ज़रत की मजलिस में बैठते और ह़ज़रत कलाम फ़रमाते। बा'ज़ बात जो न सुनी होती चाहते कि फिर तह़क़ीक़ करें तो कहते : राइ़ना। या'नी हमारी त़रफ़ तवज्जोह हो। यहूद को इस लफ़्ज़ कहने में दग़ा थी इस को ज़बान दबा कर कहते तो राईना हो जाता या'नी हमारा चरवाहा और उन की ज़बान में राइ़ना अह़मक़ को भी कहते थे। इसी त़रह़ ह़ज़रत फ़रमाते तो जवाब में कहते : सुना हम ने इस के मा'ना येह हैं कि क़बूल किया लेकिन आहिस्ता कहते कि न माना। या'नी फ़क़त़ कान से सुना और दिल से न सुना और ह़ज़रत से ख़ित़ाब करते तो कहते : सुन, न सुनाया जाइयो। ज़ाहिर में येह दुआ़ नेक है कि तू हमेशा ग़ालिब रहे कोई तुझ को बुरी बात न सुना सके और दिल में निय्यत रखते कि बहरा हो जाइयो। ऐसी

1.....झगड़े।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कुछ यहूदी कलामों को उन की जगह से फेरते हैं और कहते हैं हम ने सुना और न माना और सुनिये आप सुनाए न जाएं और राइ़ना कहते हैं ज़बानें फेर कर और दीन में त़ा'ने के लिये। (پ٥،النساء:٤٦) इल्मिय्या

www.dawateislami.net

शरारत करते। फिर दीन में ऐ़ब देते कि अगर येह शख़्स नबी होता तो हमारा फ़रेब मा'लूम कर लेता। वोही **अल्लाह** साहि़ब ने वाज़ेह़ कर दिया।

नाज़िरीने किराम! मोमिनों के दिलों के राज़ ज़ाहिर करना, मुनाफ़िक़ों का भांडा फोड़ना और यहूदियों के फ़रेबों की क़लई खोलना,[1] येह तमाम अज़ क़बीले इख़्बार बिल मुग़य्यिबात[2] है जिस से क़ुरआन का ए'जाज़ साबित है क्यूंकि इन्सान इस से आ़जिज़ है।

बयाने बाला से येह न समझना चाहिये कि क़ुरआन में सिर्फ़ ग़ुयूबे माज़िय्या की ख़बरें हैं क्यूंकि ग़ुयूबे मुस्तक़्बिला की ख़बरें भी इस में कसरत से हैं जिन में से बा'ज़ ज़ैल में दर्ज की जाती हैं :

पेशीन गोई.....﴾1﴿

وَاِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَیْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۳﴾ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۚۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِیْنَ ﴿۲۴﴾ (بقرہ، ع٣)

और अगर हो शक में इस कलाम से जो उतारा हम ने अपने बन्दे पर तो ले आओ एक सूरत इस क़िस्म की और बुलाओ जिन को ह़ाज़िर करते हो ***अल्लाह*** *के सिवा अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर न करो और अलबत्ता न कर सकोगे तो बचो आग से जिस की छिपटियां हैं आदमी और पथ्थर तय्यार है मुन्किरों के वासिते़।*[3]

इन आयतों में येह पेशीन गोई है कि क़ुरआने मजीद की एक सूरत की मिस्ल बनाने पर कोई क़ादिर न होगा चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया। हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारक में और उस वक़्त से अब तक कि तेरह सो छप्पन हिजरी मुक़द्दस है कसरत से मुख़ालिफ़ीन व मुआ़निदीने इस्लाम रहे मगर कोई भी क़ुरआन की छोटी से छोटी सूरत की मिस्ल बना कर पेश न कर सका और न आयिन्दा कर सकेगा।

1.....ह़क़ीक़त ज़ाहिर करना। 2.....ग़ैब की ख़बरें देना।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो हम ने अपने उन ख़ास बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ और **अल्लाह** के सिवा अपने सब ह़िमायतियों को बुला लो अगर तुम सच्चे हो फिर अगर न ला सको और हम फ़रमाए देते हैं कि हरगिज़ न ला सकोगे तो डरो उस आग से जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं तय्यार रखी है काफ़िरों के लिये। (پ١، البقرة:٢٣-٢٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

पेशीन गोई.....﴾2﴿

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۹۴﴾

(بقرہ، ع ۱۱)

*तो कह अगर तुम को मिलना है घर आख़िर का **अल्लाह** के हां अलग सिवाए और लोगों के तो तुम मरने की आरज़ू करो अगर सच कहते हो।*[(1)]

इस आयत में इख़्बार अ़निल ग़ैब है कि यहूद में से कोई मौत की तमन्ना न करेगा चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया। किसी यहूदी ने बा वुजूदे कुदरत के मौत की तमन्ना न की। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर यहूद मौत की तमन्ना करते तो अलबत्ता मर जाते और दोज़ख़ में अपनी जगह ज़रूर देख लेते।[(2)]

पेशीन गोई.....﴾3﴿

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ یُّذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ وَ سَعٰى فِیْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓىٕكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ یَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآىٕفِیْنَ ؕ۬ لَهُمْ فِی الدُّنْیَا خِزْیٌ وَّ لَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۱۴﴾

(بقرہ، ع ۱٤)

*और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जिस ने मन्अ़ किया **अल्लाह** की मस्जिदों में कि ज़िक्र किया जाए वहां नाम उस का और दौड़ा उन के उजाड़ने को। ऐसों को नहीं लाइक़ था कि दाख़िल हों उन में मगर डरते हुवे। उन को दुन्या में ज़िल्लत है और उन को आख़िरत में बड़ी मार है।*[(3)]

इस आयत में اُولٰٓىٕكَ से मुराद नसारा (तैतूस रूमी और इस के अतबाअ़) हैं जिन्हों ने यहूद पर ग़लबा पा कर मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस को वीरान किया और उन की मस्जिदें उजाड़ीं। येह पेशीन गोई ह़ज़रते उ़मर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़त में पूरी हुई जब कि यरूशलेम मअ़ मुल्के शाम ईसाइयों से ले लिया गया और हैकल यरूशलेम की ख़ास बुन्याद पर इस्लामी मस्जिद ता'मीर की गई।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ अगर पिछला घर **अल्लाह** के नज़्दीक ख़ालिस तुम्हारे लिये हो न औरों के लिये तो भला मौत की आरज़ू तो करो अगर सच्चे हो। (پ۱،البقرۃ:۹٤) **इल्मिय्या**

2 ......اخرج احمد والبخاری ومسلم والترمذی والنسائی وابن مردویه وابونعیم عن ابن عباس من رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ تعالی علیه وسلم قال: لو ان الیهود تمنوا الموت لماتوا ولرأوا مقاعدهم من النار.(درمنثور للسیوطی،جلداول،ص۸۹)۱۲منه ......(الدر المنثور،الجزء الاول،سورۃ البقرۃ،تحت الآیة:۹٤۔۹۵،ج۱،ص۲۲۰۔علمیه)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** की मस्जिदों को रोके उन में नामे ख़ुदा लिये जाने से और उन की वीरानी में कोशिश करे उन को न पहुंचता था कि मस्जिदों में जाएं मगर डरते हुवे उन के लिये दुन्या में रुस्वाई है और उन के लिये आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब। (پ۱،البقرۃ:۱۱٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

बा'ज़ के नज़्दीक أُولَٰٓئِكَ से मुराद मुशरिकीने अ़रब हैं जिन्हों ने हुदैबिय्या के साल आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को बैतुल ह़राम में दाख़िल होने से रोका था। इस सूरत में येह पेशीन गोई हिजरत के नवें साल पूरी हुई जब कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद से ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने मौसिमे ह़ज में मुनादी करा दी कि इस साल के बा'द कोई मुशरिक ह़ज न करे और न कोई नंगा बैतुल्लाह का त़वाफ़ करे।[1]

पेशीन गोई.....﴾4,5,6,7,8,9﴿

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّآ اَذًى ۭ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَاۗءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ۭ

(آل عمران، ع ۱۲)

*वोह हरगिज़ हरगिज़ ज़रर न पहुंचाएंगे तुम को मगर सताना थोड़ा और अगर तुम से लड़ेंगे तो तुम से पीठ फेर देंगे फिर वोह मदद न दिये जाएंगे मारी गई उन पर ज़िल्लत जहां पाए जाएं सिवाए दस्तावेज़ **अल्लाह** के और दस्तावेज़ लोगों के और कमा लाए गुस्सा **अल्लाह** का और मारी गई उन पर मोह़ताजी।*[2]

इन आयात में यहूद की निस्बत कई पेशीन गोइयां हैं :

﴾1﴿.....यहूद मुसलमानों को कोई ज़रर न पहुंचा सकेंगे।

﴾2﴿.....अगर यहूद मुसलमानों से लड़ेंगे तो शिकस्त खाएंगे।

﴾3﴿.....शिकस्त खाने के बा'द यहूद में कुव्वत व शौकत न रहेगी।

﴾4﴿.....यहूद हमेशा ज़लील रहेंगे मगर येह कि दूसरों की पनाह में हों।

﴾5﴿.....यहूद मग़ज़ूब रहेंगे।

﴾6﴿.....यहूद की सल्त़नत कहीं न होगी बल्कि मसकनत में[3] रहेंगे।

---

1 ......لا يحج بعد العام مشرك و لا يطوف بالبيت عريان۔(عینی شرح بخاری، جزء رابع، ص ۶۳۳)۱۲منہ......(عمدة القارى شرح صحيح بخارى، كتاب الصلاة، باب ما يستر من العورة، الحديث:٣٦٩، ج٣، ص ٢٩١ ۔علميه)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे मगर येही सताना और अगर तुम से लड़ें तो तुम्हारे सामने से पीठ फेर जाएंगे फिर उन की मदद न होगी उन पर जमा दी गई ख़्वारी जहां हों अमान न पाएंगे मगर **अल्लाह** की डोर और आदमियों की डोर से और ग़ज़बे इलाही के सज़ावार हुवे और उन पर जमा दी गई मोह़ताजी। (پ٤، آل عمران: ١١١-١١٢) **इल्मिय्या**

3 .....किसी न किसी के ज़ेरे असर।

www.dawateislami.net

येह तमाम पेशीन गोइयां पूरी हो चुकी हैं चुनान्चे, यहूद ज़बानी ता'न और सब्बो शितम के सिवा मोमिनीन को कोई बड़ा ज़रर न पहुंचा सके। यहूदे बनी क़ैनुक़ाअ़ व बनी क़ुरैज़ा व बनी नज़ीर व यहूदे ख़ैबर ने मुसलमानों से मुक़ाबला किया और मग़लूब हुवे। फिर उन के कहीं पाउं न जमे और उन की शानो शौकत जाती रही। यहूद हमेशा हर मुल्क में क़त्लो ग़ारत व क़ैद से पामाल होते रहे हैं रूए ज़मीन पर कहीं उन की सल्त़नत नहीं दूसरे मुल्कों में पनाह गुज़ीन हैं तो वहां के बादशाह या लोगों की इनायत से ऐसा होता रहा है। उन का मग़ज़ूब होना ज़ाहिर है।

पेशीन गोई.....﴾10﴿

سَنُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ یُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَ بِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِیْنَ ﴿۱۵۱﴾ (آل عمران، ع ١٦)

अब डालेंगे हम काफ़िरों के दिलों में हैबत इस वासित़े कि इन्हों ने शरीक ठहराया अल्लाह का उस चीज़ को जिस की उस ने कोई दलील नहीं उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और बुरी है जगह ज़ालिमों के रहने की।[1]

येह पेशीन गोई यौमे उहुद की निस्बत थी और उसी दीन पूरी हो गई क्यूंकि कुफ़्फ़ार बा वुजूद ग़ल्बा व ज़फ़र के मुसलमानों के ख़ौफ़ से लड़ाई छोड़ कर भाग गए।

पेशीन गोई.....﴾11﴿

قُلْ لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَ تُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۲﴾ (آل عمران، ع ٢)

कह दे काफ़िरों को कि तुम जल्दी मग़लूब हो गए और इकठ्ठे किये जाओगे दोज़ख़ की त़रफ़ और बुरा है बिछौना।[2]

जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जंगे बद्र से मदीने में रौनक़ अफ़रोज़ हुवे तो आप ने यहूद को बाज़ारे बनी क़ैनुक़ाअ़ में जम्अ़ किया और उन से फ़रमाया कि मुसलमान हो जाओ वरना तुम्हारा भी वोही ह़ाल होगा जो क़ुरैश का हुवा। वोह बोले कि नाज़ां न हो तेरा ऐसी क़ौम से मुक़ाबला हुवा जो फ़न्ने जंग से ना वाक़िफ़ थी अगर हम से पाला पड़े तो मा'लूम हो जाएगा कि हम बहादुर हैं और तू हमारी मानिन्द नहीं। इस पर येह आयत

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कोई दम जाता है कि हम काफ़िरों के दिलों में रो'ब डालेंगे कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक ठहराया जिस पर उस ने कोई समझ न उतारी और उन का ठिकाना दोज़ख़ है और क्या बुरा ठिकाना ना इन्साफ़ों का। (پ٤،ال عمرٰن:١٥١) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फ़रमा दो काफ़िरों से कोई दम जाता है कि तुम मग़लूब होगे और दोज़ख़ की त़रफ़ हांके जाओगे और वोह बहुत ही बुरा बिछौना। (پ٣،ال عمرٰن:١٢) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

उतरी जिस में येह ख़बर दी गई कि यहूद अ़न क़रीब मग्लूब हो जाएंगे ।[1] येह पेशीन गोई बनी कुरैज़ा के क़त्ल और बनी नज़ीर की जिला वत़नी और फ़त्हे ख़ैबर और बाक़ी यहूद पर जिज़्या लगाने से पूरी हुई ।

पेशीन गोई.....﴾12﴿

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ (مائدہ،ع۱)

आज मैं पूरा दे चुका तुम को दीन तुम्हारा और पूरी की मैं ने तुम पर अपनी ने'मत और पसन्द किया मैं ने तुम्हारे वासित़े इस्लाम को दीन ।[2]

येह आयत सिने 10 हिजरी में अ़रफ़ा के शाम को जुमुआ़ के दिन नाज़िल हुई । अस्ह़ाबे आसार का क़ौल है कि इस आयत के नुज़ूल के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इकासी या बयासी दिन ज़िन्दा रहे और शरीअ़त में कोई ज़ियादती या नस्ख़ या तब्दीली वुक़ूअ़ में न आई । इस आयत में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ की ख़बर है । ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْه इस से येही समझते थे जो उन के "اَعْلَمُ الصَّحَابَه"[3] होने की दलील है ।

पेशीन गोई.....﴾13﴿

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰۤى اَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪ فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿۱۴﴾ (مائدہ، ع۳)

और उन लोगों से जो कहते हैं हम नसारा हैं लिया हम ने अ़ह्द उन का फिर वोह भूल गए फ़ाइदा लेना उस नसीह़त से जो उन को की गई थी फिर हम ने लगा दी उन के दरमियान दुश्मनी और कीना क़ियामत के दिन तक और आख़िर जता देगा उन को अल्लाह जो कुछ वोह करते थे ।[4]

1.....درمنثور بحوالہ ابن اسحاق وابن جریر وبیہقی بروایت ابن عباس۔ ......(الدر المنثور،الجزء الثالث،سورة آل عمرٰن،تحت الآية: ١٢،ج٢،ص١٥٨۔علميه)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया । (پ٦، المائدة:٣) **इल्मिय्या**

3.....सह़ाबए किराम में सब से ज़ियादा इल्म वाला ।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जिन्हों ने दा'वा किया कि हम नसारा हैं हम ने उन से अ़ह्द लिया तो वोह भुला बैठे बड़ा ह़िस्सा उन नसीह़तों का जो उन्हें दी गई तो हम ने उन के आपस में क़ियामत के दिन तक बैर और बुग़्ज़ डाल दिया और अ़न क़रीब अल्लाह उन्हें बता देगा जो कुछ करते थे । (پ٦، المائدة:١٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस आयत में येह पेशीन गोई है कि क़ियामत तक नसारा के मुख़्तलिफ़ फ़िर्के़ रहेंगे जो एक दूसरे की तक्ज़ीब व तक्फ़ीर करते रहेंगे। येह भी पूरी हो चुकी है क्यूंकि अब तक ऐसा ही होता रहा है और आयिन्दा भी होता रहेगा। नसारा के मुख़्तलिफ़ सेंकड़ों फ़िर्क़े हैं जिन का ज़िक्र हम ने ब ख़ौफ़े त़वालत नहीं किया।

पेशीन गोई.....﴾14﴿

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِي اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۵۴﴾

(مائدہ، ع ۸)

*ऐ ईमान वालो ! जो कोई तुम में से फिरेगा अपने दीन से तो **अल्लाह** आगे लावेगा एक क़ौम को कि उन को दोस्त रखता है और वोह उस को दोस्त रखते हैं नर्म दिल हैं मुसलमानों पर और सख़्त हैं काफ़िरों पर जिहाद करेंगे **अल्लाह** की राह में और न डरेंगे किसी मलामत करने वाले की मलामत से येह फ़ज़्ल है **अल्लाह** का देता है जिस को चाहे और **अल्लाह** कशाइश वाला है ख़बरदार।*[1]

अल्लाह तआ़ला को मा'लूम था कि कुछ अ़रब दीन से फिर जाएंगे इस लिये फ़रमा दिया कि उन की गोशमाली[2] के लिये एक ऐसी क़ौम होगी जिस के अवसाफ़ येह होंगे। येह पेशीन गोई हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द पूरी हुई जब कि अ़रब के कई क़बीले दीने इस्लाम से मुन्ह़रिफ़ हो गए और बा'ज़ों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बा वुजूद[3] इख़्तिलाफ़े आरा उन के साथ जिहाद किया और उन को

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इल्म वाला है। (پ٦، المائدة:٥٤) **इल्मिय्या**

2.....सज़ा।

3.....देखो मिश्कात, किताबुज़्ज़कात, फ़स्ले सालिस। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

मग्लूब किया[1] और येह आयत सय्यिदुना अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ख़िलाफ़त की ह़क़िय्यत[2] पर दलीले वाज़ेह़ है।

पेशीन गोई.....﴾15﴿

وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۶۴﴾

(مائدہ، ع ۹)

और हम ने डाल दी उन में दुश्मनी और बुग़्ज़ क़ियामत के दिन तक जब एक आग सुलगाते हैं लड़ाई के वासिते अल्लाह उस को बुझाता है और दौड़ते हैं मुल्क में फ़साद करते और अल्लाह दोस्त नहीं रखता फ़साद करने वालों को।[3]

इस में येह पेशीन गोई है कि यहूद के मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़े होंगे जिन में अ़दावत व बुग़्ज़ क़ियामत तक रहेगा। इस पेशीन गोई के पूरा होने में कलाम नहीं क्यूंकि यहूद के मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़ों में अब तक अ़दावत है और आयिन्दा रहेगी।

पेशीन गोई.....﴾16﴿

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۷﴾

(مائدہ، ع ۱۰)

ऐ रसूल पहुंचा जो कुछ उतारा गया है तेरी त़रफ़ तेरे रब से और अगर तू ने न किया पस तू ने न पहुंचाया उस का पैग़ाम और अल्लाह तुझ को बचाएगा लोगों से, अल्लाह हिदायत नहीं करता मुन्किर क़ौम को।[4]

1.....مشكاة المصابيح، كتاب الزكاة، الفصل الثالث، الحديث: ١٧٩٠، ج١، ص٣٤٠۔علميه

2.....ह़क़ होने।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन में हम ने क़ियामत तक आपस में दुश्मनी और बैर डाल दिया जब कभी लड़ाई की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है और ज़मीन में फ़साद के लिये दौड़ते फिरते हैं और अल्लाह फ़सादियों को नहीं चाहता। (پ٦، المائدة:٦٤) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से और ऐसा न हो तो तुम ने उस का कोई पयाम न पहुंचाया और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से बेशक अल्लाह काफ़िरों को राह नहीं देता। (پ٦، المائدة:٦٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

येह आयत बक़ौले ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ (सिने 4 हिजरी) में नाज़िल हुई।[1] इस आयत के नुज़ूल से पहले सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पासबानी किया करते थे मगर जब येह आयत उतरी तो ह़िरासत मौक़ूफ़ कर दी गई क्यूंकि इस में ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त का वा'दा फ़रमाया है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी में इस पेशीन गोई का पूरा होना ज़ाहिर है क्यूंकि यहूदो नसारा और मुशरिकीन बा वुजूद कीना व अ़दावत के आप के क़त्ल पर क़ादिर न हुवे। चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़ात शरीफ़ के बा'द जसदे मुबारक के साथ मरक़दे मुनव्वर में ह़क़ीक़तन ज़िन्दा हैं इस लिये येह वा'दा क़ियामत तक पूरा होता रहेगा। ज़ैल में हम अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मुतवफ़्फ़ा सिने 911 हिजरी) की किताब "वफ़ाउल वफ़ा बि इख़्बारे दारिल मुस्त़फ़ा" से सिर्फ़ एक वाक़िआ़ नक़्ल करते हैं जिस से नाज़िरीन अन्दाज़ा लगा सकेंगे कि वफ़ात शरीफ़ के बा'द आ'दाए इस्लाम ने हमारे आक़ा, हमारे मालिक, हुज़ूर शहनशाहे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किस त़रह अज़िय्यत पहुंचानी चाही और किस त़रह येह वा'दा पूरा हुवा। वाक़िअ़ए मज़कूरा को अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه यूं बयान फ़रमाते हैं :

जान ले कि मुझे अ़ल्लामा जमालुद्दीन[2] इस्नवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तस्नीफ़ से एक रिसाला मा'लूम हुवा है जिस में नसारा को ह़ाकिम बनाने से मन्अ़ किया गया है। बा'ज़ ने इस रिसाले का नाम "इन्तिसाराते इस्लामिय्या" रखा है। मैं ने इस पर अ़ल्लामा मौसूफ़

---

1 ......اتقان للسیوطی، جزء اول، ص۱۶۔......(الاتقان فی علوم القرآن، النوع الثانی: معرفة الحضری و السفری، ج۱، ص۲۷۔علمیه)

2 .....शैख़ जमालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़ीम इस्नवी शाफ़ेई शहर इस्ना वाक़ेअ़ मुल्के मिस्र में ज़िल ह़िज्जा सिने 704 हिजरी में पैदा हुवे। सिने 721 हिजरी में क़ाहिरा आए और वहां मुख़्तलिफ़ उस्तादों से अदब, नह़्व, उसूले फ़िक़्ह और ह़दीस में ता'लीम पाई। अपने वक़्त में फ़िक़्हे शाफ़ेई में यगाना थे साह़िबे तदरीस व तस्नीफ़ थे। फ़िक़्ह व उसूल व नह़्व में बहुत सी किताबें आप की तस्नीफ़ हैं। आप का विसाल जुमादल ऊला सिने 772 हिजरी में हुवा। आप के जनाज़े पर अन्वारे विलायत नुमायां थे। (तफ़्सील के लिये देखो "بعية الدعا" और "حسن المحاضره"। हर दो मुसन्निफ़हू जलालुद्दीन सुयूत़ी) रिसाला "نصیحة اولی الالباب فی منع استخدام النصاریٰ" आप की ही तस्नीफ़ है जैसा कि मुसन्निफ़ के बयान से ज़ाहिर है। कशफ़ुज़्ज़ुनून में है कि अ़ल्लामा सुयूत़ी ने इस रिसाले का इख़्तिसार किया है और इस का नाम "جهد القریحة فی تجرید النصیحة" है। अ़ल्लामा जमालुद्दीन इस्नवी के क़लम से इसी क़िस्म के एक रिसाले "حسن المحاضرة" में लिखा है जिस का नाम "الریاسة الناصریة فی الرد علی من یعظم اهل الذمة ویستخدمهم علی المسلمین" है, मगर कशफ़ुज़्ज़ुनून में "الریاسة الناصریة" को अ़ल्लामा जमालुद्दीन के भाई अ़ल्लामा इमादुद्दीन मुह़म्मद बिन ह़सन इस्नवी (मुतवफ़्फ़ा सिने 794 हिजरी) की तस्नीफ़ ज़ाहिर किया है। واللّٰه تعالٰی اعلم بالصواب 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

के शागिर्द शैख़ ज़ैनुद्दीन मराग़ी के हाथ का लिखा हुवा देखा है और वोह येह है : نصيحة اولى الالباب فى منع استخدام النصارى كتاب لشيخنا العلامة جمال الدين اسنوى उस्ताद ने इस रिसाले का नाम न रखा था, मैं ने आप के सामने येह नाम अ़र्ज़ किया, जिसे आप ने बर क़रार रखा, इन्तिहा। पस मैं ने इस रिसाले में येह इबारत देखी :

सुल्ताने आ़दिल नूरुद्दीन शहीद के अ़हदे सल्तनत में नसारा के नफ़्सों ने उन्हें एक बड़े अम्र पर आमादा किया। उन का गुमान था कि वोह पूरा हो जाएगा। और **अल्लाह** अपनी रोशनी पूरा किये बिग़ैर नहीं रहता ख़्वाह मुन्किर बुरा मानें। वोह अम्र येह है कि सुल्ताने मज़कूर रात को तहज्जुद और वज़ाइफ़ पढ़ा करता था एक रोज़ तहज्जुद के बा'द सो गया ख़्वाब में नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि दो सुर्ख़ रंग शख़्सों की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमा रहे हैं : मेरी मदद कर और मुझे इन दो से बचा। वोह डर कर जाग उठा फिर वुज़ू किया नमाज़ पढ़ी और सो गया फिर उस ने वोही ख़्वाब देखा, जाग उठा और नमाज़ पढ़ कर सो गया फिर तीसरी बार वोही ख़्वाब देखा पस जाग उठा और कहने लगा : नींद बाक़ी नहीं रही। उस का वज़ीर एक सालेह़ शख़्स था जिस का नाम जमालुद्दीन मौसली था रात को उसे बुलाया और तमाम माजरा उसे कह सुनाया उस ने कहा : तुम कैसे बैठे हो इसी वक़्त मदीनतुन्नबी की त़रफ़ रवाना हो जाओ और अपने ख़्वाब को पोशीदा रखो। येह सुन कर उस ने बक़िया शब में तय्यारी कर ली और सुबुक्सार(1) सुवारियों पर बीस आदमियों के साथ निकला। वज़ीरे मज़कूर और बहुत सा माल भी उस के साथ था। सोलह दिन में वोह मदीने पहुंचा। शहर से बाहर ग़ुस्ल किया और दाख़िल हुवा, रौज़ए मुनव्वरा में नमाज़ पढ़ी और ज़ियारत की फिर बैठ गया हैरान था कि क्या करे ? जब अहले मदीना मस्जिद में जम्अ़ थे तो वज़ीर ने कहा : सुल्त़ान नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के इरादे से आया है और ख़ैरात के लिये अपने साथ बहुत सा माल लाया है जो यहां के रहने वाले हैं उन के नाम लिखो। इस त़रह़ तमाम अहले मदीना के नाम लिखे। सुल्त़ान ने सब को ह़ाज़िर होने का हुक्म दिया जो सदक़ा लेने आता सुल्त़ान उसे बग़ौर देखता ताकि वोह सिफ़त व शक्ल जो नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे दिखाई थी मा'लूम करे। जिस में वोह हुल्या न पाता उसे सदक़ा दे कर कहता कि चले जाओ यहां तक कि सब लोग आ चुके। सुल्त़ान ने पूछा कि क्या कोई बाक़ी रह गया है जिस ने सदक़ा न लिया हो। उन्हों ने अ़र्ज़ की नहीं। सुल्त़ान ने कहा : ग़ौरो फ़िक्र करो।

1 .....तेज़ रफ़्तार।

www.dawateislami.net

इस पर उन्हों ने कहा और तो कोई बाक़ी नहीं मगर दो मग़रिबी शख़्स जो किसी से कुछ नहीं लेते वोह पारसा और दौलत मन्द हैं और मोहताजों को अक्सर सदक़ा देते रहते हैं। येह सुन कर सुल्तान खुश हो गया और हुक्म दिया कि उन दोनों को मेरे पास लाओ। चुनान्चे, वोह लाए गए। सुल्तान ने उन्हें वोही दो शख़्स पाया जिन की तरफ़ नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इशारा कर के फ़रमाया था कि मेरी मदद कर और मुझे इन से बचा। पस उन से पूछा कि तुम कहां से आए हो? उन्हों ने कहा : हम दियारे मग़रिब से ह़ज करने के लिये आए हैं इस लिये इस साल हम ने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुजावरत[1] इख़्तियार की है। सुल्तान ने कहा : सच बताओ। मगर वोह अपनी बात पर क़ाइम रहे। फिर लोगों से पूछा : येह कहां ठहरे हुवे हैं? अ़र्ज़ किया गया कि हुजरा शरीफ़ के क़रीब रबात़[2] में रहते हैं। येह सुन कर सुल्तान ने दोनों को गिरिफ़्तार कर लिया और उन के मकान में आया। वहां बहुत सा माल, दो क़ुरआने मजीद और वा'ज़ो नसीह़त की किताबें पाईं। इन के सिवा और कुछ नज़र न आया। अहले मदीना ने उन की बड़ी ता'रीफ़ की, कि येह बड़े सख़ी और फ़य्याज़ हैं, साइमुद्दहर हैं और रौज़ा शरीफ़ में सलवात और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के पाबन्द हैं। हर सुब्ह़ जन्नतुल बक़ीअ़ की ज़ियारत को जाते हैं और हर शम्बा[3] क़ुबा की ज़ियारत करते हैं, किसी साइल का सुवाल रद्द नहीं करते, इन की फ़य्याज़ी से इस क़ह़्त़ साली में मदीने में कोई मोह़ताज नहीं रहा। येह सुन कर सुल्तान ने कहा : سُبْحٰنَ اللّٰه और अपने ख़्वाब को ज़ाहिर न किया। सुल्तान ब ज़ाते ख़ुद उस मकान में फिरता रहा उस में एक चटाई जो उठाई तो उस के नीचे तह ख़ाना देखा जो हुजरा शरीफ़ की तरफ़ खोद रखा था लोग येह देख कर डर गए। उस वक़्त सुल्तान ने कहा : तुम अपना ह़ाल सच सच बताओ! और उन्हें बहुत मारा। पस उन्हों ने इक़रार किया कि हम ईसाई हैं हम को नसारा ने मग़रिबी ह़ाजियों के भेस में भेजा है और हमें बहुत सा माल दिया है और कहा है कि इसे हुजरा शरीफ़ तक पहुंचने और जसदे मुबारक निकालने का ह़ीला व वसीला ठहराओ। भेजने वाले ईसाइयों का येह वह्म था कि **अल्लाह** तआ़ला उन को इस बात पर क़ादिर कर देगा और वोह, वोह करेंगे जो शैत़ान ने उन्हें समझाया था इस लिये वोह दोनों हुजरा शरीफ़ के सब से क़रीब रबात़ में उतरे थे और उन्हों ने वोह किया जो ऊपर ज़िक्र हुवा। वोह रात को खोदा करते थे और हर एक के पास मग़रिबियों के लिबास के मुत़ाबिक़ एक चमड़े की थैली थी जो मिट्टी जम्अ़ होती हर एक अपनी थैली में डाल लेता और

1.....हमसाएगी, क़ुर्ब। 2.....सराए, मुसाफ़िर ख़ाना। 3.....हफ़्ते के दिन।

www.dawateislami.net

दोनों ज़ियारते बक़ीअ़ के बहाने से निकल जाते और क़ब्रों में फेंक आते। कुछ मुद्दत वोह इसी त़रह़ करते रहे जब खोदते खोदते हुजरा शरीफ़ के क़रीब पहुंच गए तो आस्मान में गरज पैदा हुई, बिजली चमकी और ऐसा ज़लज़लए अ़ज़ीम पैदा हुवा कि गोया पहाड़ जड़ से उखड़ गए हैं उसी रात की सुब्ह़ को सुल्त़ान नूरुद्दीन आ पहुंचा और दोनों की गिरिफ़्तारी और ए'तिराफ़ वुक़ूअ़ में आया। जब दोनों ने ए'तिराफ़ कर लिया और उस के हाथ पर उन का ह़ाल ज़ाहिर हो गया और उस ने **अल्लाह** की येह इनायत देखी कि येह काम उस से लिया तो वोह बहुत रोया और उन की गर्दन ज़नी का हुक्म दिया। पस वोह उस जाली के नीचे क़त्ल किये गए जो हुजरा शरीफ़ के क़रीब बक़ीअ़ से मुत्तसिल है। फिर उस ने बहुत सी रांग(1) मंगवाई और तमाम हुजरा शरीफ़ के गिर्द पानी की तह तक एक बड़ी ख़न्दक़ खुदवाई वोह रांग पिघलाई गई और उस से ख़न्दक़ भर दी गई। इस त़रह़ हुजरा शरीफ़ के गिर्द पानी की तह तक रांग की दीवार तय्यार हो गई। फिर सुल्त़ाने मज़्कूर अपने मुल्क को चला आया और हुक्म दिया कि नसारा कमज़ोर कर दिये जाएं और कोई काफ़िर आ़मिल न बनाया जाए बईं हमा(2) हुक्म दिया कि मुह़ासिल चूंगी तमाम मुआ़फ़ कर दिये जाएं।

अ़ल्लामा जमालुद्दीन मुह़म्मद मत़री (मुतवफ़्फ़ा सिने 741 हिजरी) में इस वाक़िए़ की त़रफ़ ब त़रीक़े इख़्तिसार इशारा किया है, और हुजरा शरीफ़ के गिर्द ख़न्दक़ खोदना और उस में रांग का पिघला कर डाला जाना ज़िक्र नहीं किया है, मगर वोह साल बता दिया है जिस में येह ह़ादिसा वुक़ूअ़ में आया और बयाने बाला से बा'ज़ तफ़ासील में इख़्तिलाफ़ किया है। चुनान्चे, जो फ़सील (शहर के गिर्द चार दीवारी) अब मदीने के गिर्द है उस का ज़िक्र करते हुवे कहता है कि सुल्त़ान नूरुद्दीन मह़मूद बिन ज़ंगी बिन "अक़्सनक़द"(3) सिने 557 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में पहुंचा उस के आने का सबब एक ख़्वाब था जो इस ने देखा था। उस ख़्वाब को बा'ज़ लोगों ने ज़िक्र किया है और मैं ने उसे फ़क़ीह अ़लमुद्दीन या'क़ूब बिन अबी बक्र (जिस का बाप मस्जिदे नबवी की आतशज़दगी की रात को जल गया था) से सुना और अ़लमुद्दीन ने रिवायत की उन अकाबिर से कि जिन से वोह मिला कि सुल्त़ान मह़मूद मज़्कूर ने एक रात तीन बार नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा हर बार आप फ़रमाते थे : ऐ मह़मूद ! मुझे इन दो सुर्ख़ रंग

1.....एक क़िस्म नर्म व उ़म्दा धात जिसे सीसा कहते हैं। 2.....बा वुजूद इस के।

3.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "अस्क़नक़द" लिखा है जो कि किताबत की ग़लती़ मा'लूम होती है क्यूंकि "वफ़ाउल वफ़ा" के नुस्ख़ों में "अक़्सनक़द" है लिहाज़ा हम ने यहां "अक़्सनक़द" लिखा है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

शख़्सों से बचा। इस लिये उस ने सुब्ह़ होने से पहले अपने वज़ीर को बुलाया और उसे येह माजरा सुनाया। वज़ीर ने कहा कि मदीनतुन्नबी में कोई अम्रे ह़ादिस हुवा है[1] जिस के लिये तेरे सिवा कोई और नहीं। पस वोह तय्यार हो गया और क़रीबन एक हज़ार ऊंट और घोड़े वग़ैरा ले कर जल्दी रवाना हुवा यहां तक कि अपने वज़ीर के साथ मदीना में दाख़िल हुवा और अहले मदीना को ख़बर न हुई। ज़ियारत के बा'द मस्जिद में बैठ गया और ह़ैरान था कि क्या करे। वज़ीर ने कहा कि आप उन दो शख़्सों को देख कर पहचान लेंगे ? सुल्त़ान ने कहा : हां ! पस तमाम लोगों को ख़ैरात के लिये बुलाया और बहुत सा ज़रो सीम[2] उन में तक़्सीम किया और कहा कि मदीने में कोई बाक़ी न रह जाए इस त़रह़ कोई बाक़ी न रहा मगर अहले उन्दुलुस में से दो मुजावर जो इस जानिब में उतरे हुवे थे जो नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुजरे के आगे मस्जिद से बाहर आले उ़मर बिन अल ख़त्त़ाब के घर (जो अब दारुल इ़शरत के नाम से मश्हूर है) के पास है सुल्त़ान ने उन को ख़ैरात के लिये बुलाया। वोह न आए और कहने लगे हमें ज़रूरत नहीं हम कुछ नहीं लेते। सुल्त़ान ने उन के बुलाने पर इस्रार किया पस वोह लाए गए। जब सुल्त़ान ने उन को देखा तो अपने वज़ीर से कहा : येही वोह दो हैं। फिर उन का ह़ाल और उन के आने का बाइ़स दरयाफ़्त किया उन्हों ने कहा : हम नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुजावरत के लिये आए हैं। सुल्त़ान ने कहा : मुझ से सच सच कहो। और कई दफ़्आ़ सुवाल किया यहां तक कि मार पीट की नौबत पहुंची। पस उन्हों ने इक़रार किया कि हम ईसाई हैं और ईसाई बादशाहों के इत्तिफ़ाक़ से हम यहां आए हैं ताकि हुजरा शरीफ़ से जसदे मुबारक को निकाल कर ले जाएं। सुल्त़ान ने देखा कि उन्हों ने मस्जिद की क़िब्ला रू की दीवार के नीचे से ज़मीन दोज़नक़्ब लगाई हुई है[3] और हुजरा शरीफ़ की त़रफ़ को ले जा रहे हैं और जिस मकान में वोह रहा करते थे उस में एक गढ़ा था जिस में वोह मिट्टी डाल दिया करते थे। इस त़रह़ अ़लमुद्दीन या'क़ूब ने बिल अस्नाद मेरे पास बयान किया। पस उस जाली के पास जो मस्जिद से बाहर हुजरए नबी के मशरिक़ में है उन को क़त्ल कर दिया गया। फिर शाम को आग से जला दिये गए और सुल्त़ाने मज़्कूर सुवार हो कर शाम की त़रफ़ रवाना हुवा।[4]

1.....या'नी कुछ मुआ़मला या कोई वाक़िआ़ रू नुमा हुवा है।
2.....सोना चांदी, मालो दौलत।
3.....ज़ेरे ज़मीन सुरंग बनाई है।

4 ......وفاء الوفاء باخبار دار المصطفی،خاتمه،الجزء الثانی،ص٦٤٨-٦٥١-علميه

www.dawateislami.net

पेशीन गोई.....《17》

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۵﴾ (توبه، ع ۲)

*लड़ो उन से ता अ़ज़ाब करे **अल्लाह** उन को तुम्हारे हाथों के साथ और रुस्वा करे उन को और ग़ालिब करे तुम को उन पर और ठन्डे करे दिल कितने मुसलमान लोगों के और दूर करे उन के दिलों का गुस्सा और **अल्लाह** तौबा देगा जिस को चाहेगा और **अल्लाह** जानने वाला हिक्मत वाला है।*(1)

बनू खुज़ाआ़ में से कुछ लोग ईमान लाए थे और हिजरत के बा'द मक्कए मुशर्रफ़ा में बाक़ी रह गए थे। उन को मुशरिकीन से तक्लीफ़ पहुंची जिस की वज्ह येह हुई कि हुदैबिय्या में आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और कुरैश के दरमियान जो अ़हदो पैमान हुवे थे उन में से एक येह था कि एक दूसरे के ह़लीफ़ों(2) को ईज़ा न पहुंचाएंगे और अगर एक के ह़लीफ़ दूसरे के ह़लीफ़ों से जंग करें तो उन की मदद न करेंगे। इस अ़हद के ख़िलाफ़ कुफ़्फ़ारे कुरैश ने आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़लीफ़ खुज़ाआ़ के ख़िलाफ़ अपने ह़लीफ़ बनू बक्र को हथयार वग़ैरा से मदद दी जिस से खुज़ाआ़ का सख़्त नुक़्साने जान हुवा। इस लिये खुज़ाआ़ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शिकायत की जैसा कि इस किताब में पहले बयान हो चुका है। पस येह आयतें उतरीं जिन में मुसलमानों की नुस्रत और बा'ज़ कुफ़्फ़ार के ताइब होने की पेशीन गोई है। येह पेशीन गोई फ़त्हे मक्का से पूरी हो गई और कुफ़्फ़ार में से मसलन अबू सुफ़्यान और इकरमा बिन अबी जह्ल और सह्ल बिन अ़म्र वग़ैरा ईमान लाए।

पेशीन गोई.....《18》

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۹﴾ (توبه، ع ۷)

और उन में से बा'ज़ कहता है मुझ को रुख़्सत दे और फ़ित्ने में न डाल। ख़बरदार रहो वोह फ़ित्ने में गिर पड़े हैं और दोज़ख़ घेर रही है काफ़िरों को।(3)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उन से लड़ो **अल्लाह** उन्हें अ़ज़ाब देगा तुम्हारे हाथों और उन्हें रुस्वा करेगा और तुम्हें उन पर मदद देगा और ईमान वालों का जी ठन्डा करेगा और उन के दिलों की घुटन दूर फ़रमाएगा और **अल्लाह** जिस की चाहे तौबा क़बूल फ़रमाए और **अल्लाह** इल्म व हिक्मत वाला है। (پ۱۰، التوبة:۱۴-۱۵) **इल्मिय्या**

2.....एक दूसरे की इमदाद का मुआ़हदा करने वाले फ़रीक़।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन में कोई तुम से यूं अ़र्ज़ करता है कि मुझे रुख़्सत दीजिये और फ़ित्ने में न डालिये सुन लो वोह फ़ित्ने ही में पड़े और बेशक जहन्नम घेरे हुवे है काफ़िरों को। (پ۱۰، التوبة:۴۹) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

एक मुनाफ़िक़ जद्दु बिन क़ैस बहाना लाया कि रूम की औ़रतें ख़ूब सूरत हैं मैं उस मुल्क में जा कर बदी में गिरिफ़्तार होऊंगा, रुख़्सत दो कि सफ़र (ग़ज़्वए तबूक) में न जाऊं लेकिन मदद ख़र्च करूंगा माल से। (मौज़ुहुल क़ुरआन) इस पर येह आयत नाज़िल हुई जिस में येह इख़्बार बिल ग़ैब है कि जद्दु बिन क़ैस काफ़िर ही मरेगा। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा।

पेशीन गोई.....﴾19﴿

وَ مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ۝۷۵ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَ تَوَلَّوْا وَّ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ۝۷۶ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِیْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى یَوْمِ یَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَ بِمَا كَانُوْا یَكْذِبُوْنَ۝۷۷

(توبہ، ع ۱۰)

और उन में से बा'ज़ वोह है कि अ़हद किया अल्लाह से अगर देवे हम को अपने फ़ज़्ल से तो अ़लबत्ता हम ख़ैरात देंगे और अलबत्ता होंगे हम सालिहीन में से फिर जब दिया उन को अपने फ़ज़्ल से उस में बुख़्ल किया उन्हों ने और फिर गए मुंह फेर कर फिर उस का असर रखा ख़ुदा ने निफ़ाक़ उन के दिलों में उस दिन तक कि मिलेंगे उस से ब सबब उस के कि ख़िलाफ़ किया उन्हों ने जो वा'दा किया उस से और ब सबब इस के कि बोलते थे झूट।(1)

एक मुनाफ़िक़ था सा'लबा बिन हातिब उस ने आं हज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दुआ़ चाही कि मुझ को कशाइश हो। फ़रमाया कि थोड़ा जिस का शुक्र हो सके बेहतर है बहुत से कि ग़फ़्लत लावे। फिर आया, लगा अ़हद करने कि अगर मुझ को माल हो मैं बहुत ख़ैरात करूं और ग़फ़्लत में न पडूं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की उस को बकरियों में बरकत मिली यहां तक कि मदीने के जंगल से किफ़ायत न होती निकल कर गाऊं में जा रहा जुमुआ़ और जमाअ़त से महरूम हुवा। हुज़ूर ने पूछा कि सा'लबा क्या हुवा? लोगों ने हाल बयान किया फ़रमाया सा'लबा ख़राब हुवा। फिर ज़कात का वक़्त आया सब देने लगे उस ने कहा : येह तो माल भरना गोया जिज़्या देना है बहाना कर कर टाल दिया। फिर हज़रत के पास माल लाया ज़कात में, आप ने

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए तो उस के पीछे अल्लाह ने उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया उस दिन तक कि उस से मिलेंगे बदला इस का कि उन्हों ने अल्लाह से वा'दा झूटा किया और बदला इस का कि झूट बोलते थे। (پ۱۰، التوبة:۷۵-۷۷)

www.dawateislami.net

क़बूल न किया। ह़ज़रत के बा'द अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी अपनी ख़िलाफ़त में उस की ज़कात न लेते ख़िलाफ़ते उ़स्मान में मर गया। (मौज़ेहुल क़ुरआन) इसी सा'लबा के बारे में येह आयतें नाज़िल हुईं। अख़ीर आयत में येह पेशीन गोई है कि सा'लबा मुनाफ़िक़ ही मरेगा उसे तौबा नसीब न होगी। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा।

पेशीन गोई.....﴾20﴿

يَعْتَذِرُوْنَ اِلَیْكُمْ اِذَا رَجَعْتُمْ اِلَیْهِمْ ؕ قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنْ اَخْبَارِكُمْ ؕ وَ سَیَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ وَ رَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۴﴾ سَیَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ اِلَیْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ اِنَّهُمْ رِجْسٌ ٘ وَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۹۵﴾ (توبہ، ع ۱۲)

उ़ज़्र लावेंगे तुम्हारे पास जब फिर कर जाओगे उन की त़रफ़ तो कह उ़ज़्र मत लाओ हम न मानेंगे हरगिज़ तुम्हारी बात हम को बता दिया है अल्लाह ने तुम्हारा बा'ज़ अह़वाल और अभी देखेगा अल्लाह तुम्हारा अ़मल और उस का रसूल फिर जाओगे तुम त़रफ़ उस जानने वाले छुपे और खुले के सो वोह बता देगा तुम को जो तुम कर रहे थे अब क़समें खाएंगे अल्लाह की जब फिर कर जाओगे तुम उन की त़रफ़ ताकि उन से दरगुज़र करो तुम सो दरगुज़र करो उन से वोह लोग नापाक हैं और उन का ठिकाना दोज़ख़ है बदला उन की कमाई का।[1]

मुनाफ़िक़ीन (जद्दु बिन क़ैस व मुअ़त्तिब बिन क़ुशैर और उन दोनों के अस्ह़ाब) जो ग़ज़्वए तबूक में शरीक न हुवे थे और मदीनए मुनव्वरा में पीछे रह गए थे उन की निस्बत इन आयतों में येह पेशीन गोई है कि वोह अ़दमे शिर्कत का यूं उ़ज़्र करेंगे और यूं क़सम खाएंगे। येह पेशीन गोई ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर पूरी हुई।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम से बहाने बनाएंगे जब तुम उन की त़रफ़ लौट कर जाओगे तुम फ़रमाना बहाने न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारी ख़बरें दे दी हैं और अब अल्लाह व रसूल तुम्हारे काम देखेंगे फिर उस की त़रफ़ पलट कर जाओगे जो छुपे और ज़ाहिर सब को जानता है वोह तुम्हें जता देगा जो कुछ तुम करते थे अब तुम्हारे आगे अल्लाह की क़सम खाएंगे जब तुम उन की त़रफ़ पलट कर जाओगे इस लिये कि तुम उन के ख़याल में न पड़ो तो हां तुम उन का ख़याल छोड़ो वोह तो निरे पलीद हैं और उन का ठिकाना जहन्नम है बदला उस का जो कमाते थे। (پ۱۱، التوبۃ:۹۴-۹۵) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

पेशीन गोई.....《21》

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۳۱﴾ (رعد، ع٤)

*और पहुंचता रहेगा काफ़िरों को उन के किये पर खड़का या उतरेगा नज़्दीक उन के घर से यहां तक कि आवे वा'दा **अल्लाह** का बेशक **अल्लाह** ख़िलाफ़ नहीं करता वा'दा।*[1]

इस आयत में येह पेशीन गोई है कि जब तक सारे अ़रब ईमान न लावेंगे मुसलमान इन के साथ जिहाद करते रहेंगे और उन्हें क़त्ल व क़ैद करते रहेंगे। चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया।

पेशीन गोई.....《22》

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿۹﴾ (حجر، ع١)

हम ने आप उतारी है येह नसीहत (क़ुरआन) और हम इस के निगहबान हैं।[2]

इस आयत में येह ख़बर दी गई कि क़ुरआने करीम तह़रीफ़ व तब्दील से मह़फ़ूज़ रहेगा। इस पेशीन गोई के पूरा होने का मुख़ालिफ़ीन व आ'दाए इस्लाम[3] को भी ए'तिराफ़ है। मुलाह़िदा[4] व मुअ़त्तला[5] बिल ख़ुसूस क़रामित़ा ने तह़रीफ़े क़ुरआन के लिये ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाया मगर एक ह़र्फ़ भी अदल बदल न कर सके। कुतुबे समाविय्यए साबिक़ा[6] अगर्चे सब की सब कलामे इलाही थीं मगर तह़रीफ़ से कोई ख़ाली न रही फ़क़त़ एक क़ुरआने मजीद है जो तह़रीफ़ व तब्दील से मह़फ़ूज़ रहा और रहेगा क्यूंकि इस का ह़ाफ़िज़ ख़ुद ख़ुदा है। इस में ह़िक्मत येह है कि अगर कुतुबे साबिक़ा में तह़रीफ़ हो जाती थी तो दूसरा नबी आ कर उसे बयान फ़रमा देता था मगर क़ुरआन चूंकि ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल हुवा जिन के बा'द कोई नया नबी न आएगा जो ब सूरते वुक़ूए़ तह़रीफ़[7] उसे बयान फ़रमा देता इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने उस की ह़िफ़ाज़त अपने ज़िम्मे ली और इस त़रह़ अपने ह़बीबे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबिय्यत को भी ज़ाहिर फ़रमा दिया।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِكْ عَلٰى حَبِيْبِكَ سَيِّدِنَا وَ مَوْلٰينَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ عَلَيْنَا مَعَهُمْ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और काफ़िरों को हमेशा उन के किये पर सख़्त धमक पहुंचती रहेगी या उन के घरों के नज़्दीक उतरेगी यहां तक कि **अल्लाह** का वा'दा आए बेशक **अल्लाह** वा'दा ख़िलाफ़ नहीं करता। (پ١٣، الرعد:٣١) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने उतारा है येह क़ुरआन और बेशक हम ख़ुद इस के निगहबान हैं। (پ١٤، الحجر:٩) **इल्मिय्या** 3.....दुश्मनाने इस्लाम। 4.....दीने इस्लाम पर त़ा'ना ज़नी करने वाले, बे दीन।

5.....मुअ़त्त़ला वोह लोग हैं जो उलूहिय्यत व रिसालत और अह़काम के मुन्किर हैं और क़रामित़ा राफ़िज़ियों का एक फ़िर्क़ा है। 6.....साबिक़ा आस्मानी किताबें जैसे तौरात, इन्जील वग़ैरा। 7.....तह़रीफ़ हो जाने की सूरत में।

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम की ह़िफ़ाज़त का तुर्फ़ा सामान[1] किया है। उ़लमाए इस्लाम, कुर्रा व मुह़द्दिसीन हर दौर में इसे ब त़रीके़ तवातुर रिवायत करते रहे हैं जिन पर किज़्ब का वह्म तक नहीं हो सकता। इस के इ़लावा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़ह्दे मुबारक से ले कर हर ज़माने में कसरत से इस किताब के ह़ाफ़िज़ रहे हैं और आयिन्दा रहेंगे इस त़रह़ उम्मत के सीनों में मह़फ़ूज़ होना इस किताबे इलाही का ख़ास्सा है।

بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَؕ وَ مَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ۝۴۹ (عنکبوت، ع۵)

बल्कि येह कुरआन आयतें हैं साफ़, सीने में उन के जिन को मिला है इ़ल्म। मुन्किर नहीं हमारी आयतों से मगर वोह जो बे इन्साफ़ हैं।[2]

इसी वासित़े **अल्लाह** तआ़ला ने शबे मे'राज में अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मक़ामे क़ाब क़ौसैन अव अदना में मिन जुम्ला दीगर इन्आ़मात के येह भी इरशाद फ़रमाया :[3] "मैं ने तेरी उम्मत में से ऐसी जमाअ़तें बनाई हैं कि जिन के दिल उन की इन्जीलें हैं।"[4] या'नी उन के दिल किताबों की त़रह़ हैं जिस त़रह़ इन्सान किताब से पढ़ता है वोह दिल से कुरआने मजीद की तिलावत करते हैं।

इमाम बैहक़ी ने रिवायत की, कि यह़्या बिन अक्सम (मुतवफ़्फ़ा सिने 242 हिजरी) ने कहा कि एक यहूदी ख़लीफ़ा मामून की ख़िदमत में आया उस ने कलाम किया और अच्छा कलाम किया ख़लीफ़ा ने उसे दा'वते इस्लाम दी मगर उस ने इन्कार कर दिया जब एक साल गुज़रा तो वोह मुसलमान हो कर हमारे पास आया और उस ने इ़ल्मो फ़िक़्ह में अच्छी गुफ़्त्गू की। मामून ने उस से पूछा कि तेरे इस्लाम लाने का क्या बाइ़स है? उस ने कहा : मैं ने आप के हां से जा कर मज़ाहिब का इम्तिह़ान किया मैं ने तौरात के तीन[5] नुस्ख़े लिखे और उन में कमी

---

1 .....अनोखा इन्तिज़ाम।

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इ़ल्म दिया गया और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करते मगर ज़ालिम। (پ۲۱، العنکبوت:۴۹) **इ़ल्मिय्या**

3 ...... وجعلت من امتك اقواما قلوبهم اناجيلهم (خصائص کبریٰ للسیوطی مطبوعہ مجلس دائرۃ المعارف النظامیہ حیدرآباد دکن، جزء اول، ص ۱۷۵۔)

4 ......الخصائص الكبرى للسيوطي، باب خصوصيته بالاسراء...الخ، حديث ابی هريرة، ج۱، ص۲۸۸۔علميه

5 ......خصائص کبریٰ للسیوطی، جزء ثانی، ص ۱۸۵۔

www.dawateislami.net

बेशी कर दी और कनीसा[1] में भेज दिये वोह तीनों फ़रोख़्त हो गए फिर मैं ने इन्जील के तीन नुस्ख़े लिखे और उन में कमी बेशी कर दी और गिरजा में भेज दिये वोह तीनों भी फ़रोख़्त हो गए फिर मैं ने कुरआने मजीद के तीन नुस्ख़े लिखे और उन में कमी बेशी कर दी और उन को वर्राक़ीन[2] के हां भेज दिया उन्हों ने उन नुस्ख़ों की वर्क़ गर्दानी की।[3] जब उन में कमी बेशी पाई तो उन को फेंक दिया और उन को मोल न लिया। इस से मैं ने जान लिया कि येह किताब तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ है इसी लिये मैं मुसलमान हो गया। यह़्या ने कहा कि मैं ने उसी साल ह़ज किया और सुफ़्यान बिन उ़यैना से मिला मैं ने येह क़िस्सा उन से बयान किया। ह़ज़रते सुफ़्यान ने फ़रमाया कि इस का मिस्दाक़[4] कुरआने मजीद में मौजूद है। मैं ने पूछा : किस मक़ाम पर ? फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने तौरात और इन्जील की निस्बत بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ[5] फ़रमाया है। पस इन की ह़िफ़ाज़त उन पर छोड़ दी गई थी और कुरआन की निस्बत फ़रमाया : اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝۹[6] इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने इसे तह़रीफ़ व तब्दील से मह़फ़ूज़ रखा।[7]

पेशीन गोई.....《23》

اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ۝۹۵ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝۹۶ (حجر، ع۶)

*हम बस हैं तेरी त़रफ़ से ठठ्ठा करने वालों को जो ठहराते हैं **अल्लाह** के सिवा और मा'बूद सो वोह आगे मा'लूम करेंगे।*[8]

अशराफ़े कुरैश में से पांच शख़्स जहां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखते थे ठठ्ठा करते थे जब उन की शरारत ह़द से बढ़ गई तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयतें उन के बारे में

1.....यहूदियों का इबादत ख़ाना। 2.....कुतुब नवैस, कुतुब फ़रोश।

3.....بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ (مائده، ع۷) इस वासित़े कि वोह निगहबान ठहराए गए थे **अल्लाह** कि किताब पर और उस की ख़बरदारी पर थे। इस आयत में किताब से मुराद तौरात है। 12 मिन्हु

4.....इस बात की सच्चाई का सुबूत।

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उन से किताबुल्लाह की ह़िफ़ाज़त चाही गई थी। (پ٦، المائدة:٤٤) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद इस के निगहबान हैं। (پ١٤، الحجر:٩) **इल्मिय्या**

7.....الخصائص الكبرى للسيوطى،باب اختصاصه صلى الله عليه وسلم بأن كتابه معجز...الخ،ج٢،ص٣١٦-علميه

8.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं जो **अल्लाह** के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब जान जाएंगे। (پ١٤، الحجر:٩٥-٩٦) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

नाज़िल फ़रमाई पस वोह एक दिन रात में हलाक हो गए। उन में से एक आ़स बिन वाइल सह्मी था वोह अपने बेटे के साथ सैर करने निकला और एक दर्रए कोह[1] में उतरा जूंही उस ने पाउं ज़मीन पर रखा कहने लगा मुझे कुछ काट गया। हर चन्द लोगों ने इधर उधर देखा मगर कुछ न पाया। उस के पाउं में वरम हो गया यहां तक कि ऊंट की गर्दन की मानिन्द हो गया और वहीं मर गया। दूसरा ह़ारिस बिन क़ैस सह्मी था। उस ने नमकीन मछली खा ली सख़्त प्यास जो लगी वोह पानी पीता रहा यहां तक कि उस का पेट फट गया और मर गया। मरते वक़्त कहता था कि मुझे मुह़म्मद के रब ने मार डाला। तीसरा अस्वद बिन अल मुत्तलिब बिन अल ह़ारिस था। वोह अपने ग़ुलाम के साथ निकला एक दरख़्त की जड़ में बैठा हुवा था कि ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام आए और उस के सर को दरख़्त पर मारने लगे। वोह अपने ग़ुलाम से फ़रयाद करने लगा। ग़ुलाम ने कहा : मुझे तो कोई नज़र नहीं आता आप ही ऐसा कर रहे हैं। पस वोह वहीं मर गया। चौथा वलीद बिन मुग़ीरा था। वोह बनी ख़ुज़ाआ में से एक तीर तर्राश[2] की दुकान से गुज़रा। एक पैकान[3] उस की चादर के दामन से चिमट गया वोह चादर का दामन अपने कन्धे पर डालने लगा तो पैकान से उस की रगे हफ़्त अन्दाम[4] कट गई फिर ख़ून बन्द न हुवा यहां तक कि वोह मर गया। पांचवां अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस था वोह अपने घर से निकला उसे लू लगी पस वोह ह़बशी की त़रह़ सियाह हो गया जब वोह घर आया तो घर वालों ने उसे न पहचाना,[5] आख़िर वोह उस लू के असर से मर गया।

पेशीन गोई.....﴾24﴿

وَ اِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَ اِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۷۶﴾

(بنی اسرائیل، ع٨)

और तह़क़ीक़ वोह क़रीब थे कि बचला दें तुझ को ज़मीन से ताकि निकालें तुझ को उस में से और उस वक़्त वोह न रहेंगे तेरे पीछे मगर थोड़ा ज़माना।[6]

1.....पहाड़ के दरमियान रास्ता या शिगाफ़।
2.....तीर बनाने वाला।
3.....तीर का सिरा, फल।
4.....शह रग जो तमाम बदन को ख़ून पहुंचाती है।
5.....دلائل حافظ ابی نعیم، مطبوعہ مجلس دائرۃ المعارف النظامیہ حیدر آباد، ص۹۱۔۹۲۔......(دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل السادس عشر، الجزء الاول، ص ١٦٠ ۔علمیه)
6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक क़रीब था कि वोह तुम्हें उस ज़मीन से डिगा दें (हटा दें) की तुम्हें उस से बाहर कर दें और ऐसा होता तो वोह तुम्हारे पीछे न ठहरते मगर थोड़ा। (پ١٥، بنی اسراءیل:٧٦) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

कुफ़्फ़ारे कुरैश चाहते थे कि ईज़ा से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे आराम कर दें ताकि घबरा कर मक्का से निकल जाएं उस वक़्त येह आयत नाज़िल हुई जिस में येह बतला दिया गया है कि अगर वोह आप को निकाल देंगे तो आप के बा'द वोह देर तक ज़िन्दा न रहेंगे। बद्र के दिन येह पेशीन गोई पूरी हुई उस दिन आप को ईज़ा देने वाले क़त्ल हो गए।

पेशीन गोई.....﴾25﴿

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۵۵﴾ (نور، ع ۷)

*वा'दा किया **अल्लाह** ने उन लोगों से जो तुम में से ईमान लाए हैं और किये हैं नेक काम अलबत्ता पीछे ह़ाकिम करेगा उन को मुल्क में जैसा कि ह़ाकिम किया था उन से अगलों को और साबित कर देगा उन के वासिते़ दीन उन का जो पसन्द कर दिया उन के वासिते़ और बदल देगा उन को डर के बा'द अम्न, मेरी बन्दगी करेंगे, शरीक न ठहराएंगे मेरा कोई, और जो कोई ना शुक्री करेगा उस पीछे सो वोही लोग हैं फ़ासिक़।*[1]

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से जो मौजूद थे ख़िलाफ़त और तमकीने दीन[2] और कुफ़्फ़ार से अम्न का वा'दा फ़रमाया और साफ़ कह दिया कि येह ख़िलाफ़त इस तरह़ होगी जैसे बनी इस्राईल में क़ाइम हुई थी। येह वा'दा ख़ुलफ़ाए अरबआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ज़माने में लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ पूरा हुवा जिस की तफ़्सील की इस किताब में गुन्जाइश नहीं लिहाज़ा जो शख़्स उन की ख़िलाफ़त से मुन्किर हो उस का हुक्म वोही है जो इस आयत के अख़ीर हिस्से में मज़्कूर है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा जैसी उन से पहलों को दी और ज़रूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को अम्न से बदल देगा मेरी इ़बादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो उस के बा'द ना शुक्री करे तो वोही लोग बे हुक्म हैं। (پ۱۸، النور:۵۵) **इल्मिय्या**

2.....दीन में तक़्विय्यत।

www.dawateislami.net

पेशीन गोई.....《26》

اِنَّ الَّذِیۡ فَرَضَ عَلَیۡکَ الۡقُرۡاٰنَ لَرَآدُّکَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ
(قصص، ع۹)

जिस ने हुक्म भेजा तुम पर कुरआन का वोह फेर लाने वाला है तुझ को पहली जगह।(1)

जब हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब हुक्मे इलाही मदीने को हिजरत फ़रमाई तो रास्ते में मक़ामे जुह़फ़ा में आप को वत़न का ख़याल आया **अल्लाह** तआ़ला ने उस वक़्त येह आयत नाज़िल फ़रमाई और उस में फिर मक्का में वापस आने की खुश ख़बरी दी। येह पेशीन गोई हिजरत के आठवें साल फ़त्हे मक्का के दिन पूरी हुई।

पेशीन गोई.....《27》

الٓـمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۲﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ
بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ فِیۡ بِضۡعِ سِنِیۡنَ ۬ؕ لِلّٰہِ الۡاَمۡرُ
مِنۡ قَبۡلُ وَ مِنۡۢ بَعۡدُ ؕ وَ یَوۡمَئِذٍ یَّفۡرَحُ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۴﴾
بِنَصۡرِ اللّٰہِ ؕ یَنۡصُرُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الرَّحِیۡمُ ۙ﴿۵﴾
(روم، شروع)

*मग़्लूब हो गए हैं रूमी लगते मुल्क में और वोह उस मग़्लूब होने के बा'द अब ग़ालिब होंगे कई बरस में **अल्लाह** के हाथ में है काम पहले और पिछले और उस दिन खुश होंगे मुसलमान **अल्लाह** की मदद से मदद करता है जिस की चाहता है और वोही है ग़ालिब मेहरबान।*(2)

जब किसरा परवेज़ ने रूमियों पर ह़म्ला किया तो अ़रब से लगती ज़मीन (अज़्रिआ़त व बुसरा या अर्दन व फ़लिस्त़ीन) में दोनों लश्करों का मुक़ाबला हुवा और फ़ारिस रूम पर ग़ालिब आए। जब येह ख़बर मक्कए मुशर्रफ़ा में पहुंची तो मुशरिकीन खुश हुवे और मुसलमानों से कहने लगे : तुम और नसारा अहले किताब हो और हम और फ़ारिस बे किताब हैं जिस त़रह़ हमारे भाई तुम्हारे भाइयों पर ग़ालिब आ गए हम भी तुम पर ग़ालिब आ जाएंगे। मुसलमानों को येह अम्र

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जिस ने तुम पर कुरआन फ़र्ज़ किया वोह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो। (پ۲۰، القصص:۸۵) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रूमी मग़्लूब हुवे पास की ज़मीन में और अपनी मग़्लूबी के बा'द अ़न क़रीब ग़ालिब होंगे चन्द बरस में हुक्म **अल्लाह** ही का है आगे और पीछे और उस दिन ईमान वाले खुश होंगे **अल्लाह** की मदद से। वोह मदद करता है जिस की चाहे और वोही है इ़ज़्ज़त वाला मेहरबान। (پ۲۱، الروم:۱-۵) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

निहायत ना गवार गुज़रा पस **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई जिस में मज़्कूर है कि चन्द साल के अन्दर रूम फ़ारिस पर ग़ालिब आ जाएंगे। चुनान्चे, नौ साल के बा'द बद्र के दिन येह पेशीन गोई पूरी हो गई।(1)

पेशीन गोई.....《28》

اِنَّ الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ بِغَیْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ﴿۵۶﴾

(مومن، ع ٦)

*जो लोग झगड़ते हैं **अल्लाह** की बातों में बिग़ैर कुछ सनद के जो पहुंची हो उन को और कुछ नहीं उन के सीनों में मगर तकब्बुर वोह नहीं पहुंचने वाले उस तक सो तू पनाह मांग **अल्लाह** की बेशक वोह है सुनता देखता।*(2)

इस आयत में येह मज़्कूर है कि मुन्किरीन के दिलों में येह ग़ुरूर है कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ऊपर रहेंगे मगर येह नहीं होने का, चुनान्चे कुफ़्फ़ार को कभी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तआ़ज़ुम व तक़द्दुम(3) हासिल न हुवा।

पेशीन गोई.....《29》

فَلَا تَهِنُوْا وَ تَدْعُوْۤا اِلَى السَّلْمِ ۖۗ وَ اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖۗ وَ اللّٰهُ مَعَكُمْ وَ لَنْ یَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿۳۵﴾

(محمد، ع ٤)

*सो तुम सुस्ती न करो और न बुलाओ उन को सुल्ह़ की त़रफ़ और तुम ही रहोगे ग़ालिब और **अल्लाह** तुम्हारे साथ है और वोह हरगिज़ ज़ाएअ़ न करेगा तुम्हारे आ'माल।*(4)

---

1 ......اتقان للسیوطی، جزء اول، ص ۲۰۔......(الاتقان فی علوم القرآن، النوع الثانی: معرفة الحضری و السفری، ج ۱، ص ۲۷۔۲۸۔علمیه)

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो **अल्लाह** की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो उन के दिलों में नहीं मगर एक बड़ाई की हवस जिसे न पहुंचेंगे तो तुम **अल्लाह** की पनाह मांगो बेशक वोही सुनता देखता है। (پ ٢٤، المؤمن: ٥٦) **इल्मिय्या**

3 .....बरतरी और पेश क़दमी।

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम सुस्ती न करो और आप सुल्ह़ की त़रफ़ न बुलाओ और तुम ही ग़ालिब आओगे और **अल्लाह** तुम्हारे साथ है और वोह हरगिज़ तुम्हारे आ'माल में तुम्हें नुक़्सान न देगा। (پ ٢٦، محمد: ٣٥) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस आयत में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सुस्ती न करो और उन से सुल्ह़ त़लब न करो तुम ही ग़ालिब आओगे। चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया।

पेशीन गोई.....(30)

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْیَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِیْنَ ۙ مُحَلِّقِیْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ مُقَصِّرِیْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِیْبًا ﴿۲۷﴾

(فتح، ع ٤)

बेशक अल्लाह ने सच दिखाया अपने रसूल को ख़्वाब तह़क़ीक़ तुम दाख़िल हो जाओगे मस्जिदे ह़राम में अगर अल्लाह ने चाहा अम्न से बाल मूंडते अपने सरों के और कतरते हुवे बे ख़त़रा पस जाना अल्लाह ने जो न जाना तुम ने पस ठहरा दी उस से वरे एक फ़त्ह़ (ख़ैबर) नज़दीक।[1]

हुदैबिय्या की त़रफ़ जाने से पहले हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में देखा था कि आप मअ़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم सर मुन्डाए हुवे का'बतुल्लाह में दाख़िल हुवे हैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह ख़्वाब सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से बता दिया वोह समझे कि दाख़िला इसी साल होगा ह़ालांकि ख़्वाब में दाख़िले के वक़्त की ता'यीन न थी जब मुसलमान का'बतुल्लाह में दाख़िल हुवे बिग़ैर हुदैबिय्या ही से सुल्ह़ कर के मदीने वापस आने लगे तो मुनाफ़िक़ीन तमस्ख़ुर से कहने लगे : अब वोह ख़्वाब कहां है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा था। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को येह अम्र ना गवार गुज़रा इस लिये अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और दूसरे साल फ़त्ह़े ख़ैबर के बा'द येह पेशीन गोई पूरी हुई।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक अल्लाह ने सच कर दिया अपने रसूल का सच्चा ख़्वाब बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होगे अगर अल्लाह चाहे अम्नो अमान से अपने सरों के बाल मुन्डाते या तरशवाते बे ख़ौफ़ तो उस ने जाना जो तुम्हें मा'लूम नहीं तो उस से पहले एक नज़्दीक आने वाली फ़त्ह़ रखी। (پ٢٦، الفتح:٢٧) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

पेशीन गोई.....﴿31﴾

هُوَ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ۟ (فتح، ع ٤)

वोह है जिस ने भेजा अपना रसूल साथ हिदायत और सच्चे दीन के ताकि ग़ालिब करे उस को हर दीन पर और काफ़ी है अल्लाह शहादत देने वाला।[1]

इस आयत में दीने इस्लाम के तमाम दीनों पर ग़ालिब आने की पेशीन गोई है जिस के पूरा होने में कलाम नहीं। मौज़िहुल कुरआन में है : "इस दीन को अल्लाह ने ज़ाहिर में भी सब से ग़ालिब कर दिया एक मुद्दत और दलील से ग़ालिब है हमेशा।"

पेशीन गोई.....﴿32﴾

اَمْ یُرِیْدُوْنَ كَیْدًا ؕ فَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِیْدُوْنَ ۟ (طور، ع ٢)

क्या चाहते हैं कुछ दाव करना सो जो काफ़िर हैं वोही दाव में आने वाले हैं।[2]

इस आयते मक्की में येह इख़्बार बिल ग़ैब है कि जिन मुशरिकीन ने बिअ़्सत के तेरहवें साल दारुन्नदवा में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल करने पर इत्तिफ़ाक़ किया था वोह हलाक हो जाएंगे चुनान्चे, यौमे बद्र में ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया।

पेशीन गोई.....﴿33﴾

اَمْ یَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِیْعٌ مُّنْتَصِرٌ ۟ سَیُهْزَمُ الْجَمْعُ وَیُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ۟ (قمر، ع ٣)

क्या कहते हैं हम सब जमाअ़त बदला लेने वाले अब शिकस्त दी जावेगी वोह जमाअ़त और भागेंगे पीठ दे कर।[3]

येह आयतें मक्का में नाज़िल हुईं। जब बद्र का दिन आया और क़ुरैश को हज़ीमत[4] हुई तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़िर्ह पहने और तल्वार खींचे हुवे उन का तआ़क़ुब किया।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे सब दीनों पर ग़ालिब करे और अल्लाह काफ़ी है गवाह। (پ٢٦، الفتح:٢٨) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** या किसी दाऊं के इरादे में हैं तो काफ़िरों ही पर दाऊं पड़ना है। (پ٢٧،الطور:٤٢) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** या येह कहते हैं कि हम सब मिल कर बदला ले लेंगे अब भगाई जाती है येह जमाअ़त और पीठें फेर देंगे। (پ٢٧، القمر:٤٤۔٤٥) **इल्मिय्या**

4.....शिकस्त।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि उस दिन मुझे इस पेशीन गोई का मत़लब समझ में आया कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश हज़ीमत उठाएंगे और मुसलमान तल्वार व नेज़े से उन का तआ़क़ुब करेंगे। सह़ीह़ बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि बद्र के दिन नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ मांगी और आप अ़रीश[1] में थे, اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَنْشُدُکَ عَھْدَکَ وَ وَعْدَکَ اَللّٰھُمَّ اِنْ شِئْتَ لَمْ تُعْبَدْ या **अल्लाह** ! मैं तुझ से तेरा अ़हद और तेरा वा'दा त़लब करता हूं या **अल्लाह** तू अगर (हम पर काफ़िरों को ग़ालिब करना) चाहे तो तेरी इ़बादत न की जाएगी। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ुज़ूर का हाथ पकड़ लिया और अ़र्ज़ किया : "आप को येह काफ़ी है।" पस ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़रीश से निकले और आप यूं फ़रमा रहे थे :[2], [3] سَیُهْزَمُ الْجَمْعُ وَ یُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿۴۵﴾

पेशीन गोई.....﴾34﴿

هُوَ الَّذِیْۤ اَخْرَجَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِیَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؔ (حشر، ع ۱)

वोह है जिस ने निकाल दिये जो काफ़िर हैं किताब वालों में से उन के घरों से पहली जिला वत़नी के वक़्त।[4]

इस किताब में पहले आ चुका है कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनी नज़ीर को हिजरत के चौथे साल जिला वत़न कर दिया और वोह मुल्के शाम में चले गए। येह यहूद की पहली जिला वत़नी थी जैसा कि आयते बाला से ज़ाहिर है। इस में इशारा था कि यहूद की दूसरी जिला वत़नी भी होगी चुनान्चे, वोह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे मुबारक में वुक़ूअ़ में आई जब कि यहूद तमाम जज़ीरए अ़रब से निकाल दिये गए मगर ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के मालों की क़ीमत दी।[5]

1.....साइबान, सिपह सालार के लिये बनाया जाने वाला ख़ैमा जो उ़मूमन दरख़्त की टहनियों के ज़रीए क़ाइम किया जाता था।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अब भगाई जाती है येह जमाअ़त और पीठें फेर देंगे। (پ۲۷، القمر:۴۵) **इल्मिय्या**

3..... صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قول اللّٰہ تعالٰی...الخ،الحدیث:۳۹۵۳،ج۳، ص۶ ـعلمیہ

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोही है जिस ने उन काफ़िर किताबियों को उन के घरों से निकाला उन के पहले ह़श्र के लिये। (پ۲۸، الحشر:۲) **इल्मिय्या**

5.....देखो मिश्कात, बाबे अख़राजुल यहूद मिन जज़ीरतुल अ़रब, फ़स्ले अव्वल।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الجھاد،باب اخراج الیھود من جزیرۃ العرب،الحدیث:۴۰۵۱،ج۲،ص۷۰ـعلمیہ)

www.dawateislami.net

पेशीन गोई.....﴾35﴿

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ یَنْتَهِ ﴸ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِیَةِ ﴿۱۵﴾ (سورۂ علق)

हरगिज़ नहीं यूं अगर बाज़ न आवेगा हम घसीटेंगे पेशानी के बाल पकड़ कर।[1]

इस आयत में येह पेशीन गोई है कि अबू जह्ल ज़लील मौत मरेगा और उस को घसीट कर लाएंगे। येह पेशीन गोई जंगे बद्र के दिन पूरी हुई चुनान्चे, उस दिन जब वोह लईन मर रहा था तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो दुबले पतले थे उस के सीने पर चढ़ बैठे और उस का सर काट दिया। जब[2] कमज़ोरी के सबब उस के सर को न उठा सके तो उस के कान में सुराख़ कर के उस में रस्सी डाल कर घसीटते हुवे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए।[3]

पेशीन गोई.....﴾36, 37, 38, 39﴿

اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَ انْحَرْ ﴿۲﴾
اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿۳﴾ (كوثر)

हम ने दी तुझ को कौसर सो नमाज़ पढ़ अपने रब के आगे और कुरबानी कर बेशक दुश्मन तेरा वोही है पीछा कटा।[4]

येह कुरआन की छोटी सी सूरत है। इस की तीन आयतों में चार[5] पेशीन गोइयां हैं। एक तो पहली आयत में है जब कि कौसर से मुराद कसरते अतबाअ़[6] हो जैसा कि बा'ज़ रिवायात में वारिद है। दूसरी पेशीन गोई दूसरी आयत में है क्यूंकि وَانْحَرْ (और कुरबानी कर) सीग़ए अम्र है। पस इस में इशारा है कि **अल्लाह** तआ़ला हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और आप की उम्मत को तवंगरी अ़ता करेगा जिस से कुरबानी पर इक़्दाम हो सके। इसी त़रह़ तीसरी आयत में दो पेशीन गोइयां हैं। या'नी हुज़ूर नहीं बल्कि हुज़ूर का दुश्मन बे अवलाद मरेगा कि उस के पीछे

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हां हां अगर बाज़ न आया तो हम ज़रूर पेशानी के बाल पकड़ कर खींचेंगे। (پ۳۰، العلق:۱۵) **इल्मिय्या**

2.....देखो तफ़्सीरे कबीर, जुज़्ए सामिन।

3.....التفسیر الکبیر،سورۃ العلق،تحت الآیۃ:۱۵۔۱۶،ج۱۱،ص۲۲۴۔۲۲۵ ملخصاً۔علمیه

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और कुरबानी करो बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वोही हर ख़ैर से मह़रूम है। (پ۳۰،الکوثر:۱۔۳) **इल्मिय्या**

5.....تفسیر روح المعانی،جزءاول،ص۲۸۔

6.....पैरवी करने वालों की कसरत।

www.dawateislami.net

कोई उस का नाम न लेगा। येह चारों पेशीन गोइयां पूरी हुईं।[1] आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अतबाअ़ की कसरत[2] ज़ाहिर है ह़त्ता कि क़ियामत के दिन आप ब लिह़ाज़े उम्मत तमाम नबियों से बढ़ कर होंगे। **अल्लाह** ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तवंगरी इस क़दर अ़ता फ़रमाई कि एक दफ़्आ़ सो ऊंट बत़ौरे हदी[3] भेजे। आ़स बिन वाइल जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पीछा कटा होने का त़ा'न दिया करता था बे अवलाद मरा उस की नस्ल मुन्क़त़अ़ हो गई। कोई उस का नाम भी नहीं लेता। हालांकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ुर्रियत क़ियामत तक रहेगी। आप का नाम क़ियामत तक रोशन है। इलावा अज़ीं सब मोमिनीन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अवलाद हैं जो क़ियामत तक रहेंगे।

آثارِ اقتدارِ تو تا حشر متصل　　　خصمِ سیاہ روئے تو بے حاصل وخجل

पेशीन गोई.....﴾40﴿

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴿۱﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

(سورۂ نصر)

*जब आवे मदद **अल्लाह** की और फ़त्ह़ और तू देखे लोगों को दाख़िल होते हैं **अल्लाह** के दीन में फ़ौज फ़ौज पस पाकी बयान कर अपने परवर दगार की ह़म्द के साथ और बख़्शिश मांग उस से बेशक वोह मुआ़फ़ करने वाला है।*[4]

येह सूरत फ़त्ह़े मक्का से पहले नाज़िल हुई। इस में फ़त्ह़े मक्का की बिशारत है जो हिजरत के आठवें साल पूरी हुई और पेशीन गोई के मुत़ाबिक़ अहले मक्का व त़ाइफ़ व यमन व हवाज़िन और बाक़ी क़बाइले अ़रब दीने इस्लाम में गुरौह हा गुरौह दाख़िल हुवे ह़ालांकि इस से पहले इक्का दुक्का इस्लाम में दाख़िल हुवा करते थे।

मुन्दरिजए बाला पेशीन गोइयां जो सब की सब पूरी हुईं फ़क़त़ बत़ौरे मिसाल बयान की गई हैं और इस किताब में ज़ियादा की गुन्जाइश भी नहीं वरना क़ुरआने मजीद में तो इस कसरत से पेशीन गोइयां हैं कि कोई ज़माना ऐसा नहीं जिस में क़ुरआने मजीद की कोई न कोई पेशीन गोई पूरी न होती हो और कितनी पेशीन गोइयां हैं कि क़ुर्बे क़ियामत और यौमे क़ियामत को पूर होंगी। मसलन याजूज व माजूज का आना, दाब्बतुल अर्ज़ का ज़ाहिर होना, ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

---

1 ......تفسیر روح المعانی،المقدمۃ،الفائدۃ السابعۃ فی بیان وجہ اعجاز القرآن الکریم،ج۱،ص۴۳۔علمیہ

2 .....पैरवी करने वालों की कसरत।　　3 .....क़ुरबानी का जानवर जो ह़ाजी मक्का ले जाते हैं।

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब **अल्लाह** की मदद और फ़त्ह़ आए और लोगों को तुम देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं तो अपने रब की सना करते हुवे उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है। (پ۳۰، النصر:۱۔۳) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

का तशरीफ़ लाना, आस्मानों का फटना, पहाड़ों का गुबार होना, ज़मीन का चकना चूर होना, सूर का फूंका जाना, मुर्दों का ज़िन्दा होना, हाथ पाउं का गवाही देना, आ'माल का वज़्न किया जाना वग़ैरा वग़ैरा। पस मा'लूम हुवा कि कुरआने करीम बेशक मो'जिज़ा है।

ए'जाज़ुल कु़रआन की चौथी वज्ह

उ़लूमुल कुरआन :

उ़लूम के लिहाज़ से भी कुरआने करीम मो'जिज़ा है चुनान्चे, शाह वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मआ़निये मन्तूक़ा कुरआन पांच उ़लूमों से ख़ारिज नहीं।[1] **अव्वल :** इल्मे अह़काम या'नी वाजिब व मन्दूब व मुबाह़ व मकरूह व ह़राम ख़्वाह अज़ क़िस्मे इबादत हों या मुआ़मलात या तदबीरे मन्ज़िल या सियासते मुदुन।[2] **दूसरे :** चार गुमराह फ़िर्क़ों या'नी यहूदो नसारा व मुशरिकीन व मुनाफ़िक़ीन के साथ मुख़ासमा का इल्म। **तीसरे :** **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतों (आस्मानो ज़मीन की पैदाइश का ज़िक्र और बन्दों की ज़रूरियात का इल्हाम और **अल्लाह** की सिफ़ाते कामिला का बयान) के साथ नसीह़त करने का इल्म। **चौथे :** अय्यामुल्लाह या'नी उममे माज़िय्या में दुश्मनाने खुदा के साथ खुदा के वक़ाएअ़ बयान करने के साथ[3] नसीह़त करने का इल्म । **पांचवें :** मौत और मा बा'द मौत (ह़श्रो नश्र व ह़िसाबो मीज़ान व बिहिश्त व दोज़ख़) के साथ नसीह़त करने का इल्म।[4] कुरआन में इन उ़लूमे पंजगाना का होना इस बात की दलील है कि येह किताब **अल्लाह** तआ़ला ने बनी आदम की हिदायत के लिये नाज़िल फ़रमाई है। जिस त़रह़ आ़लिमे त़िब जब क़ानूने शैख़[5] का मुत़ालआ़ करता है और देखता है कि येह किताब बीमारियों के अस्बाब व अ़लामात और अदविय्या के बयान में ग़ायत दर्जे को पहुंची हुई है तो उसे ज़रा शक नहीं रहता कि उस का मुअल्लिफ़ इल्मे त़िब में कामिल है इसी त़रह़ शरीअ़तों के असरार का आ़लिम जब जान लेता है कि तहज़ीबे नुफ़ूस[6] में अफ़राद इन्सान के लिये किन किन चीज़ों के बताने की ज़रूरत है और बा'दे अज़ां फ़ुनूने पंजगाना में तअम्मुल करता है तो बेशक उसे मा'लूम हो जाता है कि येह फ़ुनूने अपने मआ़नी में इस त़रह़ वाक़ेअ़ हुवे हैं कि इस से बेहतर मुमकिन नहीं।[7]

1.....वोह पांच उ़लूम जो ज़ाहिरी मा'ना के ए'तिबार से कुरआन में है।
2.....शहरों का नज़्मो नसक़।
3.....या'नी पिछली उम्मतों पर जो अ़ज़ाब वग़ैरा नाज़िल हुवे उन का तज़्किरा कर के।
4......الفوز الكبير فی اصول التفسير،الباب الاول فی العلوم الخمسة...الخ،ص١٧-١٨-علميه
5.....बू अ़ली सीना की किताब अल क़ानून फ़ित्तिब।
6.....बदन और दिल की इस्लाह़।
7.....फ़ौज़ुल कबीर फ़ी उसूलुत्तफ़्सीर, स. 3992
(हम ने कई नुस्ख़े देखे सब में सफ़ह़ा नम्बर येही लिखा है, यक़ीनन किताबत में ग़लत़ी हुई है। **इल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

कुरआने करीम चूंकि तज़्कियए नुफ़ूस में मो'जिज़ किताब है।(1) इसी वासिते इस किताब की तिलावत के वक़्त दिलों में ख़शिय्यत व हैबत पैदा होती है।

चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ (زمر، ع ٣)

अल्लाह ने उतारी बेहतर किताब। किताब है आपस(2) में दोहराई हुई, बाल खड़े होते हैं उस से खालों पर उन लोगों की जो डरते हैं अपने रब से फिर नर्म हो जाते हैं उन के चमड़े और दिल उन के अल्लाह की याद की त़रफ़।(3)

दूसरी जगह इरशाद होता है :

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَیْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْیَةِ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ ۝۲۱ (حشر، ع ٣)

अगर हम उतारते इस कुरआन को एक पहाड़ पर अलबत्ता तू देखता उस को दब जाने वाला फट जाने वाला अल्लाह के डर से और येह मिसालें बयान करते हैं हम लोगों के वासिते़ ताकि वोह फ़िक्र करें।(4)

कुरआने करीम की इस ख़ारिके़ आ़दत तासीर से बचने के लिये कुफ़्फ़ारे कुरैश एक दूसरे से कह दिया करते थे कि जब कुरआन पढ़ा जाए तो तुम शोर मचा दिया करो।(5) (حم سجده، ع ٤) और इसी वासिते़ मुकज़्ज़िबीन(6) पर इस का सुनना निहायत दुश्वार गुज़रता था और ब वज्हे

1.....या'नी नफ़्सों को पाक करने वाली ऐसी किताब जिस की मिस्ल पेश करना मुमकिन नहीं।

2.....किताब आपस में मिलती या'नी ख़ूबी में कोई आयत कम नहीं। दोहराई हुई या'नी एक मुद्दआ़ कई त़रह़ तक़रीर किया हुवा। (मौज़ूहु कुरआन) 12 मिन्ह

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह ने उतारी सब से अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे बयान वाली उस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे खुदा की त़रफ़ रग़बत में। (پ٢٣، الزمر:٢٣) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अगर हम येह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुवा पाश पाश होता अल्लाह के ख़ौफ़ से और येह मिसालें लोगों के लिये हम बयान फ़रमाते हैं कि वोह सोचें। (پ٢٨، الحشر:٢١) **इल्मिय्या**

5.....وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِیْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ۝ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और काफ़िर बोले येह कुरआन न सुनो और इस में बेहूदा गुल करो शायद यूंही तुम ग़ालिब आओ। (پ٢٤، حم السجدة:٢٦) **इल्मिय्या**

6.....झुटलाने वालों।

www.dawateislami.net

ख़ुब्से त़ब्अ़ नफ़रत से पीठ दे कर भाग जाते थे।[1] (بنی اسرائیل،ع۵) जै़ल में तासीरे क़ुरआने मजी़द की तौज़ीह़ के लिये हम चन्द मिसालें दर्ज करते हैं।

इब्ने[2] इस्ह़ाक़ का बयान है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के इस्लाम लाने की कैफ़िय्यत मुझे येह मा'लूम हुई है कि आप की बहन फ़ात़िमा और फ़ात़िमा के ख़ावन्द सई़द बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफै़ल मुसलमान हो गए थे मगर अपने इस्लाम को अपनी क़ौम के डर से पोशीदा रखते थे। इसी त़रह़ ह़ज़रते नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह अन्निह़ाम[3] भी जो मक्का के रहने वाले और आप ही की क़ौम बनी अ़दी बिन का'ब में से थे इस्लाम ले आए थे और अपने इस्लाम को अपनी क़ौम के डर से पोशीदा रखते थे। ह़ज़रते ख़ब्बाब बिन अल अरत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते फ़ात़िमा के पास क़ुरआन पढ़ाने आया करते थे। एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर को जो ख़बर लगी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब मर्द व ज़न क़रीबन चालीस कोहे सफ़ा के क़रीब एक घर में जम्अ़ हो रहे हैं तो तल्वार आड़े लटकाए हुवे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हुज़ूर के अस्ह़ाब के क़स्द से निकले। उन अस्ह़ाब में ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते ह़म्ज़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) भी थे जो उन मुसलमानों में से थे जिन्हों ने मुल्के ह़बशा की त़रफ़ हिजरत न फ़रमाई थी। रास्ते में ह़ज़रते नुऐ़म मिले जिन से यूं गुफ़्तगू हुई :

उ़मर : मैं उस साबी (दीन से बरगश्ता) मुह़म्मद का फै़सला करने चला हूं जिस ने क़ुरैश की जमाअ़त को परागन्दा[4] कर दिया है और जो उन के दानाओं को नादान और उन के दीन को मा'यूब बताता है और उन के मा'बूदों को बुरा कहता है।

नुऐ़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **:** उ़मर ! **अल्लाह** की क़सम ! तुझे तेरे नफ़्स ने धोका दिया है। क्या तू समझता है कि अगर तू ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़त्ल कर देगा तो अ़ब्दे मनाफ़ की अवलाद तुझे ज़मीन पर ज़िन्दा छोड़ देगी ? तू अपने अहले बैत में जा और उन्हें सीधा कर।

1.....وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا﴿۴۶﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब तुम क़ुरआन में अपने अकेले रब की याद करते हो वोह पीठ फेर कर भागते हैं नफ़रत करते। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۴٦) **इल्मिय्या**

2.....देखो सीरते इब्ने हिशाम, ज़िक्रे इस्लाम उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه। 12 मिन्ह

3.....निह़ाम के मा'ना है खांसने वाला। ह़ज़रते नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का लक़ब है जिस की वज्ह येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं बिहिश्त में दाख़िल हुवा तो मैं ने नुऐ़म के खांसने की आवाज़ सुनी। (इसाबा) 12 मिन्ह

4.....मुन्तशिर।

www.dawateislami.net

उ़मर : कौन से अहले बैत ?

नुऐ़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **:** **अल्लाह** की क़सम ! तेरा बहनोई सईद बिन ज़ैद और तेरी बहन फ़ाति़मा दोनों मुसलमान हो गए हैं और दीने मुह़म्मदी के पैरू बन गए हैं तू उन से सुलझ ले ।

(येह सुन कर उ़मर अपनी बहन के घर पहुंचते हैं वहां ह़ज़रते ख़ब्बाब आप की बहन और बहनोई को कु़रआन की सूरए ता़हा पढ़ा रहे हैं जिन की आवाज़ उ़मर के कान में पड़ जाती है । उ़मर की आहट से ह़ज़रते ख़ब्बाब तो कोठड़ी में जा छुपते हैं और फ़ाति़मा वोह सह़ीफ़ए कु़रआन ले कर अपनी रान के नीचे छुपा लेती हैं)

उ़मर : (अन्दर दाख़िल हो कर) येह आवाज़ जो मैं ने सुनी कैसी थी ?

सईद व फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) **:** तू ने कुछ नहीं सुना ।

उ़मर : क्यूं नहीं **अल्लाह** की क़सम ! मुझे ख़बर लगी है कि तुम दोनों दीने मुह़म्मदी के पैरू बन गए हो । (येह कह कर उ़मर सईद को पकड़ लेते हैं बहन जो छुड़ाने उठती है उसे भी लहू लुहान कर देते हैं)

सईद व फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) **:** हां हम मुसलमान हो गए हैं और **अल्लाह** व रसूल पर ईमान ले आए हैं तू कर जो कर सकता है ।

उ़मर : (बहन को लहू लुहान देख कर नदामत से) बहन ! वोह किताब तो दिखाओ जो अभी तुम पढ़ रहे थे ।

फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا **:** मुझे डर है कि तू वापस न देगा ।

उ़मर : तू न डर (अपने मा'बूदों की क़सम खा कर) मैं पढ़ कर वापस कर दूंगा ।

फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا **:** (भाई के इस्लाम के लालच में आ कर) भाई ! तू मुशरिक होने के सबब से नापाक है इसे तो वोही छूते हैं जो पाक हों ।

उ़मर : (ग़ुस्ल के बा'द सूरए ता़हा की शुरूअ़ की आयतें तिलावत कर के) येह कलाम कैसा अच्छा और प्यारा है !

ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **:** (कोठड़ी से निकल कर) उ़मर ! मुझे उम्मीद है कि आप नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ के मिस्दाक़ होंगे क्यूंकि मैं ने कल सुना कि आप यूं दुआ़ फ़रमा रहे थे : "या **अल्लाह** ! तू अबुल ह़कम बिन हिशाम या उ़मर बिन अल ख़त्ता़ब के साथ इस्लाम को तक़्विय्यत दे ।" ऐ उ़मर ! तू **अल्लाह** से डर ।

www.dawateislami.net

उ़मर : मुझे ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले चलो ताकि मैं मुसलमान हो जाऊं।

ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ अस्ह़ाब के कोहे सफ़ा के क़रीब तशरीफ़ रखते हैं। (उ़मर तल्वार आड़े लटकाए दरे दौलत पर पहुंच कर दरवाज़ा खट खटाते हैं। अहले ख़ाना में से एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को इस हैअत में देख कर डर जाते हैं)

सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह उ़मर बिन अल ख़त्ताब है जो तल्वार ह़माइल किये हुवे[1] है।

ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** उसे आने की इजाज़त दो। अगर वोह कारे ख़ैर के लिये आया है तो हमें दरेग़ नहीं और अगर वोह शरारत का इरादा रखता है तो हम उसे उसी की तल्वार से क़त्ल कर देंगे।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उसे अन्दर आने दो।

सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **:** अन्दर आइये। (उ़मर दाख़िल होते हैं)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** (उ़मर की कमर या चादर का दामन खींच कर) ख़त्ताब के बेटे ! क्यूं कर आना हुवा ? **अल्लाह** की क़सम ! मैं नहीं देखता कि तू बाज़ आए यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर खड़का नाज़िल करे।

उ़मर : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप की ख़िदमत में आया हूं ताकि **अल्लाह** पर और **अल्लाह** के रसूल पर और उस पर जो वोह **अल्लाह** के हां से लाए ईमान लाऊं। (इस त़रह़ उ़मर इस्लाम लाते हैं और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तकबीर पढ़ते हैं जिस से तमाम ह़ाज़िरीने ख़ाना को मा'लूम हो जाता है कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हो गए।)[2]

एक[3] रोज़ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ऊंट पर सुवार एक कूचे में से गुज़र रहे थे, एक क़ारी ने येह आयत पढ़ी :

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾

बेशक अ़ज़ाब तेरे रब का होने वाला है उस को कोई नहीं हटाने वाला।[4]

---

1 ...तल्वार लटकाए हुवे।

2 ......السيرة النبوية لابن هشام،اسلام عمر بن الخطاب،ص۱۳۶۔۱۳۷۔علميه

3 ...मक्तूबाते ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी सय्यिदुना शैख़ अह़मद हिन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, दफ़्तरे अव्वल, मक्तूबे सह सद व दुवुम 302।

4 ...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है। उसे कोई टालने वाला नहीं। (پ۲۷، الطور:۷-۸) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इसे सुन कर आप बेहोश हो गए और बेहोशी की ह़ालत में ज़मीन पर गिर पड़े वहां से उठा कर आप को घर लाए मुद्दत तक इस दर्द से बीमार रहे यहां तक कि लोग आप की बीमार पुर्सी के लिये आते थे।(1)

दुश्मनाने इस्लाम भी क़ुरआने करीम की फ़ौक़ुल आ़दत(2) तासीर के क़ाइल थे चुनान्चे, जब सिने 6 नबुव्वत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हिजरत के इरादे से ह़बशा की त़रफ़ निकले तो इब्नुद्दुग़ुन्ना उन को बर्कुल ग़िमाद से अपनी जवार में मक्का वापस ले आया।(3) क़ुरैश ने इब्नुद्दुग़ुन्ना की जवार को रद न किया मगर उस से कहा कि अबू बक्र से कह दो कि अपने घर में अपने रब की इ़बादत करे और नमाज़ में चुपके जो चाहे पढ़े मगर हमें अज़िय्यत न दे और आवाज़ से क़ुरआन न पढ़े क्यूंकि हमें डर है कि मबादा(4) हमारी औ़रतों और बच्चों पर क़ुरआन का असर पड़ जाए। इब्नुद्दुग़ुन्ना ने येही आप से ज़िक्र कर दिया। कुछ मुद्दत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसी पर अ़मल किया। बा'दे अज़ां अपने घर के पास एक मस्जिद बना ली जिस में आप नमाज़ पढ़ते और क़ुरआन ब आवाज़ पढ़ते। रक़ीक़ुल क़ल्ब(5) थे, क़ुरआन पढ़ते तो बे इख़्तियार रो पड़ते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़िराअत व रिक़्क़त से सरदाराने क़ुरैश डर गए। उन्हों ने इब्नुद्दुग़ुन्ना को बुला कर कहा कि अबू बक्र ने ख़िलाफ़े शर्त़ अपने घर के पास एक मस्जिद बना ली है। जिस में वोह ब आवाज़ नमाज़ व क़ुरआन पढ़ता है। हमें डर है कि मबादा(6) हमारी औ़रतों और बच्चों पर इस का असर पड़े। तुम उस को रोक दो। हां अगर वोह अपने घर के अन्दर चुपके इ़बादत करना चाहे तो किया करे और अगर ब आवाज़ क़ुरआन पढ़ने पर इसरार करे तो तुम उस की ह़िफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी वापस ले लो क्यूंकि हमें येह पसन्द नहीं कि हम तुम्हारे अ़ह्द की ह़िफ़ाज़त को तोड़ दें। हम अबू बक्र को क़िराअत की इजाज़त नहीं दे सकते। येह सुन कर इब्नुद्दुग़ुन्ना आप के पास आया और कहने लगा कि आप को मेरी जवार की शर्त़ मा'लूम है आप इस की पाबन्दी करें वरना मेरी ज़िम्मेदारी वापस कर दें क्यूंकि मैं नहीं चाहता कि अ़रब येह सुनें कि एक शख़्स की ह़िफ़ाज़त का अ़ह्द जो मैं ने किया था वोह तोड़ डाला गया। आप ने जवाब दिया कि मैं तुम्हारी जवार को वापस करता हूं और ख़ुदा की जवार पर राज़ी हूं।(7)

---

1 ......مکتوباتِ امام ربانی، حصہ پنجم، دفتر اول، مکتوب سہ صد و دویم، ج۱، ص۱٤۷۔علمیه

2 .....हैरान कुन।
3 .....या'नी अमान दे कर अपने साथ मक्का ले आया।
4 .....कहीं ऐसा न हो कि।
5 .....नर्म दिल वाले।
6 .....कहीं ऐसा न हो कि।

7 ......صحیح بخاری، باب ہجرت النبی صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔......(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب ھجرۃ النبی و اصحابه الی المدینۃ، الحدیث:۳۹۰۵، ج۲، ص۵۹۱۔۵۹۲ملخصاً۔علمیه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते जुबैर बिन मुत़इम[1] जो इस्लाम लाने से पहले असीराने बद्र के बारे में गुफ़्त्गू करने के लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे थे बयान करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नमाज़े मग़रिब में सूरए तूर पढ़ते पाया। जब आप इस आयत पर पहुंचे।

اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿۳۶﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿۳۷﴾

(طور، ع۲)

क्या वोह पैदा हुवे हैं आप ही आप या वोही हैं पैदा करने वाले या उन्हों ने पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को बल्कि यक़ीन नहीं करते क्या उन के पास ख़ज़ाने हैं तेरे रब के या वोही दारोग़े हैं।[2]

तो क़रीब था कि (ख़ौफ़ से) मेरा दिल फट जाए। और एक रिवायत में है कि येह पहली दफ़्आ़ थी कि ईमान ने मेरे दिल में क़रार पकड़ा।[3]

ह़ज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र अद्दौसी[4] जो एक शरीफ़ व दाना शाइ़र थे अपने इस्लाम लाने का क़िस्सा यूं बयान फ़रमाते हैं कि मैं मक्का में आया, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहीं थे, क़बीलए क़ुरैश के लोगों ने मुझ से कहा : ऐ तुफ़ैल ! तू हमारे शहरों में आया है। येह शख़्स (ह़ज़रते मुह़म्मद) जो हमारे दरमियान है इस ने हमें तंग कर दिया है और हमारी जमाअ़त को परागन्दा[5] कर दिया। उस का क़ौल जादूगरों का सा है जिस से वोह बाप बेटे में, भाई भाई में और मियां बीवी में जुदाई डाल देता है। हम डरते हैं कि कहीं हमारी त़रह़ तुझ पर और तेरी क़ौम पर भी जादू कर दे। इस लिये तू उस से कलाम न करना और न उस से कुछ सुनना। वोह मुझे येही

1......सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम देखो।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या वोह किसी अस्ल से न बनाए गए या वोही बनाने वाले हैं या आस्मान और ज़मीन उन्हों ने पैदा किये बल्कि उन्हें यक़ीन नहीं या उन के पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं या वोह कड़ोड़े (ह़ाकिमे आ'ला) हैं। (پ۲۷، الطور: ۳۵-۳۷) **इल्मिय्या**

3......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورة الطور، ۱-باب، الحدیث: ٤٨٥٤، ج۳، ص۳۳٦ وصحیح البخاری، کتاب المغازی، ۱۲-باب، الحدیث: ٤٠٢٣-٤٠٢٤، ج۳، ص۲٤-علمیه

4......दलाइलुन्नुबुव्वत लिल ह़ाफ़िज़ अबी नुऐ़म, जुज़ए अव्वल, स. 78-79। येह क़िस्सा इस्तीआ़ब लि इब्ने अ़ब्दुल बर्र में भी मज़्कूर है। **इल्मिय्या**

5.....मुन्तशिर।

www.dawateislami.net

कहते रहे यहां तक कि मैं ने मुसम्मम इरादा[1] कर लिया कि मैं उस से कुछ न सुनूंगा और न कलाम करूंगा। नौबत यहां तक पहुंची कि जब मैं मस्जिद की त़रफ़ जाता तो इस डर से कि कहीं बे इरादा आप की आवाज़ मेरे कान में पड़ जाए अपने कानों में रूई ठूंस लेता। एक रोज़ जो सुब्ह़ को मैं मस्जिद की त़रफ़ गया तो क्या देखता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का'बे के पास खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। मैं आप के क़रीब खड़ा हो गया। पस **अल्लाह** ने मुझे आप का बा'ज़ क़ौल सुना ही दिया। मगर मैं ने एक उ़म्दा कलाम सुना और अपने जी में कहा : वाए बे फ़र्ज़न्दिये मादरे मन[2] मैं दाना शाइ़र हूं, बुरे भले में तमीज़ कर सकता हूं फिर उस का क़ौल सुनने से मुझे क्या चीज़ मानेअ़ हो सकती है जो कुछ वोह बयान करेगा अगर अच्छा हुवा तो मैं क़बूल कर लूंगा और अगर बुरा हुवा तो रद कर दूंगा। इस लिये मैं ठहरा रहा यहां तक कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने की त़रफ़ वापस हुवे। मैं आप के पीछे पीछे हो लिया। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने में दाख़िल होने लगे तो मैं ने अ़र्ज़ किया : ऐ मुह़म्मद ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप की क़ौम ने मुझे ऐसा ऐसा कहा है। **अल्लाह** की क़सम ! वोह मुझे आप के क़ौल से डराते रहे यहां तक कि मैं ने अपने कानों में रूई ठूंस ली ताकि आप का क़ौल न सुनूं मगर **अल्लाह** ने सुना ही दिया। मैं ने एक अच्छा क़ौल सुना। फिर मैं ने इल्तिजा की : अपना दीन आप मुझ पर पेश करें। इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ पर इस्लाम पेश किया और मुझे कुरआन पढ़ कर सुनाया। **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने कभी इस की ब निस्बत न कोई अच्छा क़ौल और न कोई रास्त अम्र सुना, पस मैं मुसलमान हो गया और मैं ने कलिमए शहादत पढ़ा और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी क़ौम मेरे कहने में है, मैं उन की त़रफ़ जाता हूं और उन्हें इस्लाम की दा'वत देता हूं आप मेरे लिये दुआ़ कीजिये कि ख़ुदा मुझे एक निशानी दे जो दा'वते इस्लाम में उन के मुक़ाबले में मेरी मददगार हो। येह सुन कर आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई : "ऐ **अल्लाह** ! इसे एक निशानी अ़त़ा कर।" फिर मैं अपनी क़ौम की त़रफ़ रवाना हुवा चलते चलते जब मैं घाटी में पहुंचा जहां से मेरा क़बीला मुझे देख सकता था तो मेरी आंखों के दरमियान चराग़ की मानिन्द एक नूर पैदा हुवा। मैं ने कहा : या **अल्लाह** ! मेरी पेशानी के सिवा किसी और जगह नूर पैदा कर दे क्यूंकि मैं डरता हूं वोह यूं गुमान करेंगे कि

---

1 .....मज़बूत़ इरादा।

2 .....मेरी मां मुझे खोए, येह मुहा़वरा है ग़फ़्लत पर तम्बीह या तअ़ज्जुब के इज़्हार के लिये बोला जाता।

www.dawateislami.net

येह इब्रतनाक सज़ा है जो इन का दीन छोड़ने के सबब मेरी पेशानी में ज़ाहिर हुई है। पस वोह नूर बजाए पेशानी के मेरे कोड़े के सिरे पर नुमूदार हुवा। जब मैं घाटी से अपने क़बीले की त़रफ़ उतर रहा था तो वोह नूर उन को मेरे कोड़े में मुअ़ल्लक़ क़िन्दील की त़रह़ नज़र आता था यहां तक कि मैं उन के पास पहुंच गया फिर सुब्ह़ हो गई जब मैं मकान में उतरा तो मेरा बाप जो बहुत बूढ़ा था मेरे पास आया। मैं ने कहा : अब्बा ! मुझ से दूर रहो मैं तेरा नहीं और न तू मेरा है। वोह बोला : बेटा ! क्यूं ? मैं ने कहा : मैं मुसलमान हो गया हूं और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन का पैरू बन गया हूं। येह सुन कर मेरे बाप ने कहा : मेरा दीन तेरा दीन है। पस उस ने ग़ुस्ल किया और अपने कपड़े पाक किये फिर मेरे पास आया। मैं ने उस पर इस्लाम पेश किया वोह मुसलमान हो गया फिर मेरी बीवी मेरे पास आई। मैं ने उस से कहा : मुझ से दूर रहो। मैं तेरा नहीं और तू मेरी नहीं। वोह बोली : मेरे मां बाप तुझ पर क़ुरबान ! क्यूं ? मैं ने कहा : इस्लाम मेरे और तेरे दरमियान फ़ारिक़ है। मैं मुसलमान हो गया हूं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन का पैरू बन गया हूं। वोह कहने लगी : मेरा दीन तेरा दीन है और वोह मुसलमान हो गई। फिर मैं ने क़बीलए दौस को इस्लाम की दा'वत दी मगर उन्हों ने इस में ताख़ीर की। फिर मैं मक्का में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। मैं ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह ! दौस मुझ पर ग़ालिब आ गए। आप उन पर बद दुआ़ कीजिये। इस पर आप ने यूं दुआ़ की : "या **अल्लाह** ! दौस को हिदायत दे।" और मुझ से फ़रमाया कि तू अपनी क़ौम में लौट जा और उन्हें नर्मी से दा'वते इस्लाम दे। इस लिये मैं लौट आया और दौस को नर्मी से इस्लाम की त़रफ़ बुलाता रहा यहां तक कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीने की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई और ग़ज़्वए बद्र व उह़ुद व ख़न्दक़ हो चुके। फिर मैं अपनी क़ौम के मुसलमानों को साथ ले कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और आप ख़ैबर में थे यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा में दौस के सत्तर या अस्सी घराने उतरे।(1)

पादरी रॉडवील साह़िब लिखते हैं कि अ़रब के सीधे साधे भेड़ बकरियां चराने वाले ख़ाना ब दोश बद्दू लोग ऐसे बदल गए जैसे किसी ने जादू कर दिया हो। वोह लोग ममलुकतों के बानी मबानी(2) और शहरों के बनाने वाले और जितने कुतुब ख़ाने उन्हों ने ख़राब किये थे इन से ज़ियादा कुतुब ख़ानों के जम्अ़ करने वाले हो गए और फ़िस्त़ात़, बग़दाद, क़ुरत़ुबा और दिल्ली के

---

1 ......دلائل النبوۃ لابی نعیم،الفصل الخامس عشر،الجزء الاول،الرقم ۱۹۱،ص۱۳۹۔علمیہ

2 .....नज़्मो नसक़ चलाने वाले।

www.dawateislami.net

शहरों को वोह कुव्वत हुई कि ईसाई यूरोप को कपकपा दिया और कुरआन की क़द्र हमेशा इन तब्दीलियों के अन्दाज़े से होनी चाहिये जो उस ने अपने बत़ीबे ख़ात़िर[1] मानने वालों की आ़दात और ए'तिक़ादात में दाख़िल कीं। बुत परस्ती के मिटाने, जिन्नात और मादियात के शिर्क के इ़वज़ **अल्लाह** की इबादत क़ाइम करने, अत़्फ़ाल कुशी की रस्म[2] को नैस्तो नाबूद करने, बहुत से तवहहुमात[3] को दूर करने और इज़्दिवाज[4] की ता'दाद को घटा कर उस की एक ह़द मुअ़य्यन करने में कुरआन बेशक अ़रबों के लिये बरकत और कुदरते ह़क़[5] था, गो ईसाई मज़ाक़ पर वह़्य न हो,[6] इन्तिहा। (अज़् दीबाचए कुरआन मत़्बूआ़ सिने 1861 ईसवी, सफ़्ह़ा 24)....यह़्या बिन अल ह़कम अल ग़ज़ाल और उ़त्बा बिन रबीआ़ वग़ैरा का ह़ाल बयान हो चुका है। ज़ियादा की यहां गुन्जाइश नहीं है।

मज़्कूरए बाला वुजूहे अरबआ़ के इ़लावा उ़लमाए किराम के कुरआने करीम के मो'जिज़ा होने की और वज्हें भी बयान की हैं मगर मेरे ख़याल में येह चारों वज्हें बिल्कुल काफ़ी हैं।

क़ुरआने करीम की फ़साह़तो बलाग़त की मिसालें

नाज़िरीन को याद होगा कि हम पहले एक वा'दा कर आए हैं इसी के ईफ़ा के लिये उ़नवाने बाला क़ाइम किया गया है। मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने अपने ज़ो'मे फ़ासिद में कुरआन की बा'ज़ छोटी छोटी सूरतों का मुआ़रज़ा किया था अज़ां जुम्ला एक सूरए कौसर थी जिस को इस लईन ने यूं सज्अ़[7] किया था :[8]

اِنَّا اَعْطَیْنٰکَ الْجَوَاھِرَ فَصَلِّ لِرَبِّکَ وَھَاجِرْ
اِنَّ مُبْغِضَکَ رَجُلٌ فَاجِرٌ (9)

हम ने दिये तुझ को जवाहिरात सो नमाज़ पढ़ अपने रब के आगे और हिजरत कर बेशक जो दुश्मन रखने वाला है तुझ को वोह बदकार शख़्स है।

मगर कोई मुन्सिफ़ मिज़ाज इसे मुआ़रज़ा नहीं कह सकता कि सूरत ही के अल्फ़ाज़ व तरतीब ले कर उस में कुछ अदल बदल कर दिया जाए। अ़ल्लामा जारुल्लाह ज़मख़्शरी साहि़ब तफ़्सीरे कश्शाफ़ ने इस सूरत की वज्हे ए'जाज़ पर एक मुस्तक़िल रिसाला लिखा है जिस का

1.....ब ख़ुशी व रिज़ामन्दी। 2....बच्चों को क़त्ल कर डालने की रस्म। 3....वह्म परस्ती।
4.....शादी करना। 5.....कुदरते ख़ुदा, तअ़ज्जुब के मौक़अ़ पर बोलते हैं।
6.....या'नी अगर्चे ईसाई इसे वह़्य तस्लीम न करें।
7.....सज्अ़ कहते हैं दो फ़क़रों के आख़िरी अल्फ़ाज़ का हम क़ाफ़िया व हम वज़्न होना।
8....देखो मवाहिबे लदुन्निय्या लिल क़स्त़लानी।
9 ......المواھب اللدنیة مع شرح الزرقانی، المقصد الثانی، الفصل العاشر، الوفد الخامس: وفد بنی حنیفة، ج٥، ص١٤٨ ـ علمیه

www.dawateislami.net

ख़ुलासा इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "निहायतुल ईजाज़ फ़ी दरायतुल ए'जाज़" में यूं लिखा है :[1]

इस आयत में आठ फ़ाइदे हैं : اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَؕ(۱)[2]

﴾1﴿.....येह जुम्ला मो'ती़ कबीर[3] की त़रफ़ से अ़त़िय्यए कसीरा पर दलालत करता है। जब अ़त़िय्या मुन्इमे अ़ज़ीम[4] की त़रफ़ से हो तो वोह ने'मते उ़ज़्मा होता है। कौसर से मुराद वोह मोमिनीने उम्मत हैं जो क़ियामत तक पैदा होंगे। नीज़ इस से मुराद वोह फ़ज़ाइलो ख़वास हैं जो **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दो जहां में इनायत फ़रमाए हैं। इन की कुन्ह[5] को ख़ुदा के सिवा और कोई नहीं जानता और मिन जुम्ला[6] कौसर वोह नहर है जिस की मिट्टी कस्तूरी और जिस के संगरेज़े चांदी की डलियां हैं और जिस के किनारों पर सोने चांदी के बरतन सितारों की गिनती से ज़ियादा हैं।

﴾2﴿.....इस्म की तक़्दीम मुफ़ीदे तख़्सीस है या'नी हम ने (न किसी ग़ैर ने) तुझे येह कसीर अ़ता की जिस की कसरत की कोई ग़ायत नहीं। इमाम राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि तह़क़ीक़ येह है कि यहां मुह़द्दस अ़न्ह की तक़्दीमे तख़्सीस के लिये नहीं बल्कि इस वासित़े है कि ऐसी तक़्दीमे इस्बात ख़बर के वासित़े ज़ियादा ताकीद वाली है इस की दलील येह है कि जब इस्मे मुह़द्दस अ़न्ह पहले ज़िक्र किया जाए तो सामेअ़ को ख़बर सुनने का शौक़ पैदा होता है इस लिये जब वोह ख़बर सुनता है तो उस का ज़ेहन इस को यूं क़बूल करता है जैसा आ़शिक़ मा'शूक़ को। पस वोह ख़बर उस के ज़ेहन में ब अह़सन वुजूह मुतमक्किन हो जाती है।[7]

﴾3﴿.....ज़मीर मुतकल्लिम ब सीग़ए जम्अ़ लाया गया है जिस से रबूबिय्यत की अ़ज़मत पाई जाती है।

﴾4﴿.....जुम्ले के शुरूअ़ में ह़र्फ़ ताकीद लाया गया है जो क़सम के क़ाइम मक़ाम है।

﴾5﴿.....फ़े'ल को ब सीग़ए माज़ी लाया गया है ताकि इस अम्र पर दलालत हो कि करीम की अ़त़ाए आजिला वाक़ेअ़ के हुक्म में है।

1.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इस रिसाले का नाम "निहायतुल ए'जाज़ फ़ी दरायतुल ए'जाज़" लिखा है जो कि किताबत की ग़लती़ मा'लूम होती है क्यूंकि हमारे पेशे नज़र दारे सादिर बैरूत (अत्त़बअ़तुल ऊला, हिजरी 1424- 2004) का नुस्ख़ा है जिस पर "निहायतुल ईजाज़ फ़ी दरायतुल ए'जाज़" लिखा है लिहाज़ा हम ने इसी के मुत़ाबिक़ तस्ह़ीह़ की है, وَاللّٰه تَعَالٰى اَعلم। **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़ता फ़रमाईं। (پ۳۰، الکوثر:۱) **इल्मिय्या**

3.....सब से बड़े अ़ता फ़रमाने वाले।

4.....बुज़ुर्ग व बरतर ने'मत देने वाले।

5.....ह़क़ीक़त।

6.....इन में से।

7.....या'नी अच्छी त़रह़ ज़ेहन नशीन हो जाती है।

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....कौसर के मौसूफ़ को मह़ज़ूफ़ कर दिया गया इस लिये कि मज़्कूर में वोह फ़र्ते इब्हाम व शियाअ़ नहीं जो मह़ज़ूफ़ में है।

﴾7﴿.....वोह सिफ़त इख़्तियार की गई है जिस के मा'ना में कसरत है। फिर उस को उस के सीग़े से मा'दूल कर के लाया गया।

﴾8﴿.....इस सीग़े पर लाम ता'रीफ़ लाया गया ताकि येह अपने मौसूफ़ को शामिल और कसरत के मा'ना देने में कामिल हो, चूंकि येह लाम अ़ह्द का नहीं इस लिये वाजिब है कि ह़क़ीक़त का हो और ह़क़ीक़त के बा'ज़ अफ़राद बा'ज़ से औला नहीं, पस वोह कामिला होगी। इस में उस त़ा'न का जवाब भी आ गया कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आप के बा'द कोई बेटा नहीं क्यूंकि आप के बा'द बेटे का बाक़ी रहना दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या तो वोह बेटा नबी बनाया जाए और येह मुह़ाल है क्यूंकि आप ख़ातमुल अम्बिया हैं या नबी न बनाया जाए और येह अम्र वह्म में डालता है कि वोह ना ख़लफ़ हो। पस **अल्लाह** तआ़ला ने आप को ख़ैरे कसीर अ़त़ा फ़रमा कर इस ऐ़ब से मह़फ़ूज़ रखा। अवलाद के होने से येही ग़रज़ हुवा करती है। इलावा अज़ीं वोह ऐ़ब भी लाज़िम न आया जो बेटों के नबी न होने की सूरत में था।

फَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ [1] इस में भी आठ फ़ाइदे हैं :

﴾1﴿.....फ़ाए ता'क़ीब यहां दो बातों का सबब बनाने के मा'ना के लिये मुस्तआ़र है। अव्वल इन्आ़मे कसीर को मुन्इम के शुक्रो इ़बादत में क़ियाम का सबब बनाना। दूसरे इन्आ़मे कसीर को दुश्मन के क़ौल की परवा न करने का सबब बनाना, क्यूंकि इस सूरत के नुज़ूल का सबब येह है कि आ़स बिन वाइल ने कहा : اِنَّ مُحَمَّدًا صُنْبُوْرٌ [2] येह क़ौल जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ना गवार गुज़रा, पस **अल्लाह** तआ़ला ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई।

﴾2﴿.....दो लामों से मक़्सूद ता'रीज़ है आ़स और इस जैसे दूसरों के दीन से जिन की इ़बादत व क़ुरबानी ग़ैरुल्लाह के वासित़े थी और नीज़ येह मक़्सूद है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने क़दम सिरात़े मुस्तक़ीम पर जमा दें और अपनी इ़बादत को **अल्लाह** की ज़ाते करीम के लिये ख़ालिस कर दें।

﴾3﴿.....इन दोनों इ़बादतों से इस अम्र की त़रफ़ इशारा है कि इ़बादत के दो नौअ़ हैं,
एक : आ'माले बदनिय्या जिन में मुक़द्दम नमाज़ है,
दूसरे : आ'माले मालिय्या जिन में आ'ला ऊंटों की क़ुरबानी है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो तुम अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ो और क़ुरबानी करो। (پ ۳۰،الکوثر:۲) **इल्मिय्या**

2.....वोह शख़्स जो वाली वारिस के बिग़ैर कमज़ोर हो। **इल्मिय्या** صنبور خرما بن تنہا گانہ......مرد فرد بے برے برادر و فرزند 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....इस आयत में इस बात पर तम्बीह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नमाज़ और ऊंटों की क़ुरबानी से बड़ा इख़्तिसास था[1] क्यूंकि नमाज़ आप की मुबारक आंखों के लिये ठन्डक बनाई गई है और ऊंटों की क़ुरबानी में आप की हिम्मते क़वी थी चुनान्चे, रिवायत है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सो ऊंट क़ुरबानी दिये जिन में अबू जह्ल का एक ऊंट था जिस के नाक में सोने की नकील थी।

﴾5﴿.....दूसरे लाम को इस लिये ह़ज़्फ़ किया गया कि पहला लाम इस पर दलालत कर रहा है।

﴾6﴿.....सज्अ़ के ह़क़ की रिआ़यत की गई और येह मिन जुम्ला बदाइअ़ है। जब क़ाइल इसे त़बई त़ौर पर लाए और तकल्लुफ़ से काम न ले।

﴾7﴿....."لِرَبِّكَ" में दो ख़ूबियां हैं एक तो इस में इल्तिफ़ात है, दूसरे मुज़्मर की जगह लफ़्ज़े मज़्हर लाया गया है और इस में **अल्लाह** तआ़ला की शाने किब्रियाई और उस के ग़लबए क़ुदरत का इज़्हार है। इसी से ख़ुलफ़ा ने येह क़ौल लिया يأمرك امير المؤمنين بكذا

﴾8﴿.....इस से मा'लूम हुवा कि ह़क़्क़े इ़बादत येह है कि बन्दे उस के साथ अपने रब और अपने मालिक को ख़ास करें और उस शख़्स की ख़त़ा से ता'रीज़[2] हो गई जो अपने रब की इ़बादत छोड़ कर किसी ग़ैर की इ़बादत करे।[3]

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ﴿۳﴾ ع[4] इस में पांच फ़ाइदे हैं :

﴾1﴿.....अम्र ("فَصَلِّ" "وَانْحَرْ") की इ़ल्लत में ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शानी (दुश्मन) के ह़ाल और उस के क़ौल की त़रफ़ तर्के तवज्जोह को बर सबीले इस्तीनाफ़[5] बयान किया गया और इस्तीनाफ़ का येह अच्छा अ़मल है। क़ुरआन शरीफ़ में मवाक़ेए़ इस्तीनाफ़ ब कसरत हैं।

﴾2﴿.....येह वज्ह भी हो सकती है कि इस जुम्ले को मो'तरिज़ा क़रार दिया जाए जो ख़ातिमए अग़राज़ के लिये ह़िक्मत के सियाक़ पर लाया गया है जैसा कि **अल्लाह** तआ़ला का क़ौल है : اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿۲۶﴾ (قصص،ع۳)[6] और शानी से मुराद आ़स बिन वाइल है।

1.....या'नी इन दोनों से मह़ब्बत थी।

2.....ता'रीज़ येह है कि एक लफ़्ज़ अपने मा'ना में मुस्ता'मल होता कि इस के साथ एक और मा'ना की त़रफ़ इशारा किया जाए। 12 मिन्ह

3.....نهاية الايجاز فی دراية الاعجاز،الباب السادس،الفصل الاوّل فی وجه الاعجاز فی سورة الكوثر،ص۲۳۸۔ علمیه

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वोही हर ख़ैर से मह़रूम है। (پ۳۰،الكوثر:۳) **इल्मिय्या**

5.....इस्तीनाफ़ का मा'ना अज़ सरे नौ आग़ाज़ करना है।

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक बेहतर नोकर वोह जो त़ाक़तवर अमानतदार हो। (پ۲۰،القصص:۲۶) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....आ़स को इस सिफ़त के साथ ज़िक्र किया और नाम के साथ ज़िक्र न किया ताकि येह मुतनाविल व शामिल हो उस शख़्स को जो दीने ह़क़ की मुख़ालफ़त में आ़स की मानिन्द हो।

﴾4﴿.....इस जुम्ले के शुरूअ़ में ह़र्फ़े ताकीद लाया गया इस से ज़ाहिर है कि जो कुछ आ़स ने कहा झूट है और मह़ज़ तअ़न्नुत व इनाद[1] का नतीजा है इसी वासिते़ इस को शानी कहा गया।

﴾5﴿.....ख़बरे मा'रुफ़ा लाई गई है ताकि अ़दू व शानी[2] के लिये बतर[3] ब दरजए कमाल साबित हो। गोया कि वोह जमहूर है जिस को सुम्बूर कहा जाए। फिर येह सूरत बा वुजूदे उ़लुव्वे मत़्लअ़ व तमामे मक़्त़अ़ के और बा वुजूद निकाते जलीला से पुर होने और मह़ासिने कसीरा के जामेअ़ होने के इस तसन्नुअ़ से ख़ाली है जिस से इन्सान अपने ख़स्म को साकित व मग़्लूब कर लेता है। इन्तिहा।[4]

इन तमाम उमूर के इ़लावा इस सूरत की तीन आयतों में चार पेशीन गोइयां हैं जो पहले मज़्कूर हो चुकी हैं।

आयह يٰۤاَرْضُ ابْلَعِیْ مَآءَكِ[5] की ख़ारिक़े आ़दत फ़साह़त की त़रफ़ पहले इशारा आ चुका है। अ़ल्लामा किरमानी[6] की किताब अ़जाइब में है कि मुआ़निदीन ने अ़रबो अ़जम के तमाम कलाम ढूंड मारे मगर कोई कलाम ख़ामते अल्फ़ाज़, ह़ुस्ने नज़्म, जवदते मआ़नी और ईजाज़ में इस की मिस्ल न पाया और इस अम्र पर मुत्तफ़िक़ हो गए कि इन्सानी त़ाक़त इस आयत की मिस्ल लाने से क़ासिर है।[7] इब्ने अबिल इस्बअ़[8] का क़ौल है कि मैं ने कलामे इन्सानी में इस आयत[9] की मिस्ल नहीं देखा। इस में सतरह लफ़्ज़ हैं और बीस बदाएअ़ हैं और वोह येह हैं :

1.....ता़'नो तशनीह और अ़दावत। 2.....बद ख़्वाह दुश्मन।

3.....ज़िल्लत व बुराई। ख़ैर से मह़रूमी।

4.....نهاية الايجاز فى دراية الاعجاز،الباب السادس،الفصل الاوّل فى وجه الاعجاز فى سورة الكوثر،ص٢٤٠۔ علميه

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले। (پ١٢، هود:٤٤) **इल्मिय्या**

6.....اتقان، جزء ثانی، ص ۵۵

7.....الاتقان فى علوم القرآن،النوع السادس والخمسون فى الايجاز والاطناب، ج٢،ص٣٧٤۔ علميه

8.....اتقان، جزء ثانی، ص ٩٦۔

9.....وَقِیْلَ یٰۤاَرْضُ ابْلَعِیْ مَآءَكِ وَ یٰسَمَآءُ اَقْلِعِیْ وَ غِیْضَ الْمَآءُ وَ قُضِیَ الْاَمْرُ وَ اسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِیِّ وَ قِیْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ۝۴۴
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी ख़ुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुवा और किश्ती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग। (پ١٢، هود:٤٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾1,2﴿....."اَقْلِعِی" "اِبْلَعِی" में मुनासबते ताम्मा है।

﴾3,4﴿....."اَقْلِعِی" "اِبْلَعِی" में इस्तिआ़रा है।

﴾5﴿.....अर्ज़ो समा में त़िबाक़ है।[1]

﴾6﴿....."یٰسَمَآءُ" में मजाज़ है क्यूंकि ह़क़ीक़त "یَا مَطَرَ السَّمَاءِ" है।

﴾7﴿.....[2]"وَغِیْضَ الْمَآءُ" में इशारा है।[3] क्यूंकि इस की कई मआ़नी से ता'बीर की गई है इस लिये कि पानी ख़ुश्क नहीं किया जा सकता यहां तक कि आस्मान का मींह थम जाए और ज़मीन पानी के उन चश्मों को निगल जाए जो इस से निकलते हैं तब सत़्हे जमीन का पानी कम हो जाए।

﴾8﴿....."وَاسْتَوَتْ" में सन्अ़त इरदाफ़[4] है क्यूंकि इस की ह़क़ीक़त जलसत है पस इस लफ़्ज़े ख़ास से इस के मुरादिफ़ की त़रफ़ उ़दूल किया गया। इस वासित़े कि इस्तिवा में अशआ़र है जलूसे मुतमक्किन का जिस में कोई कजी न हो और येह मा'ना लफ़्ज़े जलूस से अदा नहीं होते।

﴾9﴿.....[5]"وَقُضِیَ الْاَمْرُ" में तमसील[6] है।

﴾10﴿.....इस आयत में ता'लील[7] है। क्यूंकि "غِیْضَ الْمَآءُ" इस्तिवा की इ़ल्लत है।

﴾11﴿.....इस में सिह़ह़ते तक़्सीम है, नक़्स की ह़ालत में जो पानी के अक़्साम हैं वोह सब इस में मज़्कूर हैं क्यूंकि इस की सिर्फ़ येही क़िस्में हैं। आस्मान के पानी का थम जाना, ज़मीन से निकलने वाले पानी का बन्द हो जाना और सत़्हे ज़मीन के पानी का ख़ुश्क हो जाना।

﴾12﴿.....इस में एह़तिरास[8] फ़िद्दुआ़ है ताकि येह वह्म न गुज़रे कि ग़र्क़ अपने उ़मूम के सबब

1.....सन्अ़ते त़िबाक़ येह है कि कलाम में ऐसे दो मा'ने ज़िक्र करें जो एक दूसरे की ज़िद हों। 12 मिन्ह

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और पानी ख़ुश्क कर दिया गया। (پ۱۲، ھود:٤٤) **इल्मिय्या**

3.....इशारा येह है कि कलाम क़लील लाया जाए जिस के मा'ना बहुत हों। 12 मिन्ह

4.....सन्अ़ते इरदाफ़ येह है कि मुतकल्लिम एक मा'ना मुराद रखे और इसे लफ़्ज़े मौज़ूअ़ लह से या दलालत व इशारे से ता'बीर न करे बल्कि इस के मुरादिफ़ लफ़्ज़ से अदा करे। 12 मिन्ह

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और काम तमाम हुवा। (پ۱۲، ھود:٤٤) **इल्मिय्या**

6.....तमसील वोह है कि जिस की वज्ह मुतअ़द्दिद उमूर से मुन्तज़िअ़ हो। 12 मिन्ह

7.....ता'लील का फ़ाइदा तक़रीर और इबलग़ियत है। क्यूंकि नुफ़ूसे अह़काम मुअ़ल्लिला को दूसरों की निस्बत ज़ियादा क़बूल करते हैं। 12 मिन्ह

8.....एह़तिरास येह है कि किसी कलाम में जो ख़िलाफ़े मक़्सूद का मौहिम हो वोह अम्र ज़िक्र करें जो इस वह्म को दूर कर दे। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

से इस को शामिल है जो मुस्तह़िक़्के हलाक नहीं क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला का अ़द्ल इस से मानेअ़ है कि ग़ैरे मुस्तह़िक़ पर दुआ़ए बद करे।[1]

《13》.....इस में हुस्नुल नस्क़[2] है क्यूंकि इस में बा'ज़ जुम्ले बा'ज़ पर वाव अ़त्फ़ के साथ इस तरतीब से मा'तूफ़ हैं जो बलाग़त का मुक़्तज़ा है चुनान्चे, पहले ज़मीन पर से पानी का नापैद होना ज़िक्र किया गया जिस पर किश्ती वालों का ग़ायत मक़्सूद (किश्ती की क़ैद से नजात) मौक़ूफ़ है। फिर आस्मान के पानी का थम जाना बयान हुवा कि जिस पर येह सब (या'नी किश्ती से निकलने के बा'द की अज़िय्यत का दूर करना और ज़मीन पर के पानी का परागन्दा हो जाना) मौक़ूफ़ है। फिर इन हर दो मादों के बन्द होने के बा'द पानी के दूर हो जाने की ख़बर दी जो यक़ीनन इन से मुतअख़्ख़िर है। फिर क़ज़ाए अम्र की ख़बर दी या'नी जिस का हलाक होना मुक़द्दर था उस के हलाक होने की और जिस का बचना मुक़द्दर था उस के नजात पाने की ख़बर दी। येह अम्र मा क़ब्ल से मुतअख़्ख़िर किया गया क्यूंकि किश्ती वालों को येह किश्ती से निकलने के बा'द मा'लूम हुवा और उन का निकलना मा क़ब्ल पर मौक़ूफ़ था। फिर किश्ती के इस्तिक़रार की ख़बर दी जो इज़्तिराब व ख़ौफ़ दूर होने का इफ़ादा करता है। फिर ज़ालिमों पर बद दुआ़ करने पर ख़त्म किया गया ताकि मा'लूम हो जाए कि तूफ़ान तो तमाम रूए ज़मीन पर था मगर ग़र्क़ होना सिर्फ़ मुस्तह़िक़्क़ीने अ़ज़ाब पर शामिल था।

《14》.....इस में ائتلاف اللفظ مع المعنى है या'नी अल्फ़ाज़े मा'ना मक़्सूद के मुनासिब लाए गए हैं।

《15》.....इस में ईजाज़[3] है क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने येह तमाम क़िस्सा निहायत ही मुख़्तसर इबारत में बयान फ़रमा दिया।

《16》.....इस में तस्हीम[4] है क्यूंकि आयत का अव्वल इस के आख़िर पर दलालत करता है।

《17》.....इस में तहज़ीब[5] है क्यूंकि इस के मुफ़रिदात सिफ़ाते ह़सन से मुत्तसिफ़ हैं। हर लफ़्ज़

1.....या'नी ज़रर पहुंचाए।

2.....हुस्नुल नस्क़ येह है कि मुतकल्लिम पै दर पै मा'तूफ़ जुम्ले लाए जो बाहम इस त़रह़ पैवस्ता हों कि अगर उन में से कोई जुम्ला अ़लाहिदा कर दिया जाए तो वोह ब ज़ाते ख़ुद एक मुस्तक़िल जुम्ला हो जिस के मा'ना समझने के लिये उसी के अल्फ़ाज़ काफ़ी हों। 12 मिन्ह

3.....मक़्सूद को मा'मूल से कम अल्फ़ाज़ में अदा करना ईजाज़ कहलाता है। 12 मिन्ह

4.....तस्हीम येह है कि फ़ासिले का मा क़ब्ल फ़ासिले पर दलालत करे। 12 मिन्ह

5.....तहज़ीब येह है कि कलाम ऐसा मुहज़्ज़ब हो कि ए'तिराज़ को उस में गुन्जाइश न हो। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

के हुरूफ़ के मख़ारिज सहल हैं और उन पर फ़साह़त की रौनक़ है और बशाअ़त व अ़क़ादत से ख़ाली हैं।

﴾18﴿.....इस में ह़ुस्न बयान है क्यूंकि सामेअ़ को इस के मा'ने समझने में किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं इसी से वोह आसानी से समझ सकता है।

﴾19﴿.....इस में तमकीन[1] है।

﴾20﴿.....इस में इन्सिजाम[2] है।[3]

अ़ल्लामा सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इत्तिक़ान में इस के बा'द लिखते हैं कि इस आयत में ए'तिराज़[4] भी है। या'नी तीन जुम्ले मो'तरिज़ा लाए गए हैं और वोह येह हैं : وَغِيۡضَ الۡمَآءُ وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ وَاسۡتَوَتۡ عَلَى الۡجُوۡدِىِّ इस से समझा जाता है कि येह अम्र दोनों के दरमियान वाक़ेअ़ हुवा। इलावा अज़ीं इस में ए'तिराज़ में ए'तिराज़ है क्यूंकि "وَقُضِىَ الۡاَمۡرُ" غيض और استوت के दरमियान वाक़ेअ़ है। इस लिये कि इस्तिवा ग़ैज़ के बा'द ह़ासिल हुवा।[5]

"ईजाज़" की मिसाल : [6]وَلَكُمۡ فِى الۡقِصَاصِ حَيٰوةٌ है। इस से पहले येह मक़ूला ज़र्बुल मसल था : [7]"القتل انفى للقتل" जब येह आयत नाज़िल हुई तो इस मसल का इस्ति'माल मतरूक हो गया इस आयत की तरजीह़ मसले मज़्कूर पर ब वुजूहे ज़ैल ज़ाहिर है :

﴾1﴿.....आयत में मसल की निस्बत "ईजाज़" है जो ममदूह़ है क्यूंकि « الۡقِصَاصِ حَيٰوةٌ » के हुरूफ़ दस हैं और "القتل انفى للقتل" के चौदह हैं।[8]

1.....तमकीन येह है कि फ़ासिला अपने मह़ल में मुतमक्किन और अपनी जगह क़रार पज़ीर हो और उस के मा'ना को कलाम के मा'ना से ऐसा तअ़ल्लुक़े ताम हो कि अगर वोह गिर जाए तो कलाम के मा'ना में ख़लल आ जाए। 12 मिन्ह

2.....इन्सिजाम येह है कि कलाम पेचीदगी से ख़ाली होने के सबब आबे रवां की मानिन्द जारी और तरकीब की सहूलत और अल्फ़ाज़ की शीरीनी के सबब नर्म व आसान हो। 12 मिन्ह

3 ......الاتقان فی علوم القرآن،النوع الثامن والخمسون فی بدائع القرآن،ج۲،ص۴۳۵۔ علميه

4.....ए'तिराज़ येह है कि एक या ज़ियादा जुम्लों का कोई मह़ल्ले ए'राब न हो। एक या दो कलामों के दरमियान रफ़्ए़ इब्हाम के सिवा किसी और नुक्ते के लिये लाएं। 12 मिन्ह

5 ......الاتقان فی علوم القرآن،النوع السادس والخمسون فی الايجاز والاطناب،ج۲،ص۴۰۳ والنوع التاسع والخمسون فی فواصل الآی،ص۴۳۵۔ علميه

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ख़ून का बदला लेने में तुम्हारी ज़िन्दगी है। (پ۲، البقرة:۱۷۹) **इल्मिय्या**

7.....कहते हैं कि येह फ़ारिस के बादशाह अर्दशीर के क़ौल का तर्जमा है।الاعجاز والایجاز للثعالبی،ص۱۶۔ 12 मिन्ह (क़त्ल, क़त्ल को रोकने वाला है। **इल्मिय्या**)

8........اتقان،جزء ثانی،ص۵۵۔

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....क़त्ल की नफ़ी ह़यात को मुस्तलज़म नहीं और आयते ह़यात के सुबूत पर नस्स है जो मत़्लूबे अस्ली है।

﴾3﴿.....ह़यात की तन्कीर ता'ज़ीम के लिये है जैसा कि وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ۚ الآيہ۔(1) में है और इस अम्र पर दलालत करती है कि क़िसास में ह़याते मुतत़ाविला(2) है मगर मसल में येह बात नहीं क्यूंकि इस में लाम जिन्स के लिये है। इसी वासित़े मुफ़स्सिरीन ने वहां ह़यात की तफ़्सीर बक़ा की है।

﴾4﴿.....आयत में ता'मीम है और मसल में नहीं क्यूंकि हर क़त्ल انفی للقتل नहीं बल्कि बा'ज़ क़त्ल (और वोह क़त्ल ज़ुल्मन है) मूजिबे क़त्ल होता है और इस का (या'नी क़त्ले ज़ुल्मन का) नाफ़ी एक ख़ास क़त्ल है और वोह क़िसास है जिस में हमेशा ह़यात है।

﴾5﴿.....मसल में लफ़्ज़े "क़त्ल" दो बार आया है और आयत इस तकरार से ख़ाली है और तकरार से ख़ाली अफ़्ज़ल है उस से जिस में तकरार पाई जाए ख़्वाह वोह तकरार मुख़िले फ़साह़त न हो।

﴾6﴿.....आयत में मह़्ज़ूफ़ निकालने की ह़ाजत नहीं मगर मसल में है क्यूंकि इस में "افعل" तफ़्ज़ील के बा'द "من" और इस का मा बा'द मह़्ज़ूफ़ है और क़त्ले अव्वल के साथ "قصاصًا" और क़त्ले सानी के साथ "ظلمًا" मह़्ज़ूफ़ हैं और तक़्दीर यूं है : "القتل قصاصًا انفی للقتل ظلمًا من ترکه"

﴾7﴿.....आयत में सन्अ़त त़बाक़ है क्यूंकि क़िसास का ह़यात की ज़िद होना मशहूर है मगर मसल में ऐसा नहीं।

﴾8﴿.....आयत एक फ़न्ने बदीअ़ पर मुश्तमिल है और वोह दो ज़िदों में है एक का जो फ़ना व मौत है दूसरी के लिये जो ह़यात है मह़ल व मकान बनाना है और ह़यात का मौत में क़रार पकड़ना बड़ा मुबालग़ा है जैसा कि कशाफ़ में मज़्कूर है और साह़िबे ईज़ाह़ ने इसे यूं ता'बीर किया है कि فِيْ को क़िसास पर दाख़िल कर के क़िसास को ह़यात के लिये गोया मम्बअ़ व मा'दन क़रार दिया गया है।

﴾9﴿.....मसल में पै दर पै अस्बाबे ख़फ़ीफ़ा (सुकून बा'दुत्तह़रिक) हैं और येह अम्र कलिमे की सलासत और इस के ज़बान पर जर्यान में नक़्स डाल देता है जैसा कि सुवारी जब ज़रा सी ह़रकत करे और रुक जाए फिर ह़रकत करे फिर रुक जाए तो ऐसी सुवारी को सुवार अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ नहीं चला सकता मगर आयत इस नक़्स से पाक है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम ज़रूर उन्हें पाओगे कि सब लोगों से ज़ियादा जीने की हवस रखते हैं। (پ۱، البقرة:۹۶) **इल्मिय्या**

2.....त़वील ह़यात।

www.dawateislami.net

﴿10﴾.....मसल में ज़ाहिर तनाकुज़ है क्यूंकि एक शै अपनी ही ज़ात के लिये मनाफ़ी क़रार दी गई।

﴿11﴾.....मसल में क़लक़लए ق का तकरार है जो तंगी व शिद्दत का मूजिब है और ن का गुन्ना भी है।

﴿12﴾.....आयते हुरूफ़ मतलाइमा पर मुश्तमिल है क्यूंकि इस में ق से ص की त़रफ़ खुरूज है और ق हुरूफ़े इस्ति'लाअ से है और ص हुरूफ़े इस्ति'लाअ व इत़्बाक़ से है। मगर मसल में ق से ت की त़रफ़ खुरूज है जो हर्फ़े मुख़्फ़ज़ है और वोह ق के मलाइम नहीं। इसी त़रह़ ص से ح की त़रफ़ खुरूजे अह़सन है ل से ء की त़रफ़ खुरूज से क्यूंकि किनारए ज़बान और अक़्साए ह़ल्क़ में बो'द है।

﴿13﴾.....ص और ح और ت के तलफ़्फ़ुज़ में हुस्ने सौत है मगर ق और ت की तकरार में येह ख़ूबी नहीं।

﴿14﴾.....आयत लफ़्ज़े क़त्ल से ख़ाली है जो मुश्अ़रे वह़्शत है ब ख़िलाफ़े लफ़्ज़ ह़यात के जो त़बाएअ़ को ज़ियादा मक़्बूल व मरग़ूब है।

﴿15﴾.....आयत में लफ़्ज़े क़िसास के ज़िक्र से जो मुश्अ़रे मुसावात है अ़द्ल ज़ाहिर होता है मगर मुत़लक़ क़त्ल में ऐसा नहीं।

﴿16﴾.....आयत इस्बात पर मब्नी है और मसले नफ़ी पर मब्नी है और इस्बात अशरफ़ है क्यूंकि इस्तबाते अव्वल है और नफ़ी इस से दूसरे दर्जे पर है।

﴿17﴾.....आयत के मा'ना सुनते ही समझ में आ जाते हैं मगर मसल के मा'ना समझने के लिये पहले "القصاص هو الحيوٰة" के मा'ने समझने दरकार हैं।

﴿18﴾.....मसल में फ़े'ल मुतअ़द्दी से अफ़्अ़ल तफ़्ज़ील है और आयत इस से ख़ाली है।

﴿19﴾.....सीग़ए अफ़्अ़ल अक्सर इश्तिराक का मुक़्तज़ा होता है, पस तर्के क़िसास क़त्ल का नाफ़ी होगा और क़िसास क़त्ल का ज़ियादा नाफ़ी होगा और येह दुरुस्त नहीं। आयत इस नक़्स से ख़ाली है।

﴿20﴾.....आयते क़त्ल और जुर्ह़ दोनों से रोकने वाली है क्यूंकि क़िसास दोनों के लिये होता है और क़िसास आ'ज़ा में भी ह़यात है। क्यूंकि उ़ज़्व का क़त़्अ़ करना मस्लह़ते ह़यात को नाक़िस या मुनग़्ग़ज़ कर देता है और बा'ज़ वक़्त जान तक नौबत पहुंच जाती है मगर मसल में येह ख़ूबी नहीं।[1] كذا في الاتقان للسيوطی

[1] ......الاتقان فی علوم القرآن،النوع السادس والخمسون فی الایجاز والاطناب،ج۲،ص۳۷۵-۳۷۶۔ علمیه

www.dawateislami.net

अमसिलए मज़्कूरए बाला से जो बतौ़रे "मश्ते नुमूना अज़् ख़रवारे"[1] बयान की गई हैं नाज़िरीन कुरआने मजीद की ख़ारिके़ आ़दत फ़साह़तो बलाग़त का अन्दाज़ा ब ख़ूबी लगा सकते हैं।

अ़ल्लामा सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۬ الآيہ[2] की फ़साह़तो बलाग़त के मुतअ़ल्लिक़ एक रिसाला लिखा है और इस में एक सो बीस बदाएअ़ बयान किये हैं। ब ख़ौफ़े तत़वील इसे यहां दर्ज नहीं किया गया।

फ़स्ले दुवुम[3]

दीगर मो'जिज़ात का बयान

इस फ़स्ल में जो मो'जिज़ात ब त़रीके़ इख़्तिसार बयान होते हैं इन से हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात की वुस्अ़त का अन्दाज़ा ब ख़ूबी लग सकता है।

अस्रा व मे'राज शरीफ़

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़स ख़साइस और अज़्हर मो'जिज़ात में से येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को असरा व मे'राज की फ़ज़ीलत से ख़ास किया और किसी दूसरे नबी को इस फ़ज़ीलत से मुशर्रफ़ व मुकर्रम नहीं फ़रमाया और जहां तक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचाया किसी को नहीं पहुंचाया और जो आयात व अ़जाइबात आप को दिखाए वोह किसी को नहीं दिखाए।

بدیدہ آنچہ از دیدن بروں بود　　مپرس از ما ز کیفیت کہ چوں بود

बल्कि अगर तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तमाम फ़ज़ाइल यक्जा जम्अ़ किये जाएं तो इन का मजमूआ़ हमारे आक़ाए नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस एक फ़ज़ीलत (या'नी मे'राज और इस में जो अन्वार व अस्रार और हु़ब व कु़र्ब आप को ह़ासिल हुवा) के बराबर न होगा।

1...येह मुह़ावरा है या'नी ज़रा से नमूना ही से कुल चीज़ की अस्लिय्यत मा'लूम हो जाती है। **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्जुल ईमान : अल्लाह** वाली है मुसलमानों का उन्हें अन्धेरियों से नूर की त़रफ़ निकालता है। (پ۳، البقرۃ:۲۵۷) **इल्मिय्या**

3...सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "फ़स्ले दुवुम" नहीं लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लती है क्यूंकि मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस बाब की इब्तिदा में मो'जिज़ाते कुरआन से मुतअ़ल्लिक़ मज़्मून को दो फ़स्लों में बयान करने का ज़िक्र फ़रमाया था और फ़स्ले अव्वल की हेडिंग तो वहां है जब कि फ़स्ले दुवुम इस बाब में कहीं मज़्कूर नहीं, लिहाज़ा सियाक़ व सबाक़ और मुसन्निफ़ की इ़बारत "इस फ़स्ल में जो मो'जिज़ात......" को देख कर हम ने यहां "फ़स्ले दुवुम" लिख दिया है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

अस्रा से मुराद ख़ानए का'बा से बैतुल मुक़द्दस तक रात को जाना है और मे'राज बैतुल मुक़द्दस से आस्मानों के ऊपर तशरीफ़ ले जाने का नाम है। अस्रा क़ुरआने करीम से साबित है। चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَاؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

(بنی اسرائیل،شروع)

*पाक है वोह ज़ात जो अपने बन्दे को रात के वक़्त मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक ले गया जिस के गिर्द हम ने बरकतें दी हैं ताकि हम इस को अपने चन्द अ़जाइबात और निशानियां दिखलाएं बेशक **अल्लाह** है सुनने वाला देखने वाला।*[1]

येह आयत शरीफ़ अस्रा के सुबूत पर नस्स है[2] और इस का अख़ीर हिस्सा لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَاؕ[3] मे'राज शरीफ़ की त़रफ़ इशारा है या'नी मस्जिदे अक़्सा तक ले गया ताकि वहां से आस्मानों पर ले जा कर अ़जाइबे मलकूत व रबूबिय्यत दिखलाए क्यूंकि आयात का दिखाना और ग़ायत करामात व मो'जिज़ात का ज़ुहूर आस्मानों पर है सिर्फ़ इन उमूर पर मक़्सूर[4] नहीं जो मस्जिदे अक़्सा में ज़ाहिर हुवे। मस्जिदे अक़्सा तक ले जाना तो इस का मुब्दा है और فَكَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰىۚ ⑨ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰىؕ ⑩[5] (سورہ نجم)[6] में बिना बर तह़क़ीक़ मुन्तहाए मे'राज का ज़िक्र है।

सह़ीह़ येह है कि अस्रा व मे'राज शरीफ़ हर दो जसदे मुबारक के साथ ह़ालते बेदारी में एक ही रात वुक़ूअ़ में आए। जमहूर सह़ाबा व ताबेईन व मुह़द्दिसीन व फ़ुक़हा व मुतकल्लिमीन व सूफ़ियाए किराम का येही मज़्हब है और येही क़ुरआने मजीद से साबित है क्यूंकि आयए

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम इसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं बेशक वोह सुनता देखता है। (پ١٥، بنی اسرائیل:١) **इल्मिय्या**

2.....या'नी सराह़तन दलालत कर रही है।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं। (پ١٥، بنی اسرائیل:١) **इल्मिय्या**

4.....मह़दूद ।

5.....**तर्जमा :** फिर रह गया फ़र्क़ दो कमान का मियाना या इस से भी नज़्दीक फिर हुक्म भेजा **अल्लाह** ने अपने बन्दे पर जो भेजा। 12 मिन्ह

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस जल्वे और इस मह़बूब में दो हाथ का फ़ासिला रहा बल्कि इस से भी कम अब वह़्य फ़रमाई अपने बन्दे को जो वह़्य फ़रमाई। (پ٢٧، النجم:٩-١٠) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

करीमा [(1)] سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ में लफ़्ज़े अ़ब्द मौजूद है और अ़ब्द मजमूअ़ए जिस्म व रूह़ को कहते हैं। क़ुरआन शरीफ़ में जहां कहीं किसी इन्सान को कलिमए अ़ब्द से ता'बीर किया है वहां रूह़ और जिस्म दोनों मुराद हैं। मसलन सूरए मरयम में

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ۚ﴿۲﴾ *येह ज़िक्र उस रह़मत का है जो परवर दगार ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की थी।* [(2)]

यहां अ़ब्द से यक़ीनन ह़ज़रते ज़करिय्या मअ़ जिस्म व रूह़ के मुराद हैं। सूरए जिन्न में है :

وَّ اَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ یَدْعُوْهُ كَادُوْا یَكُوْنُوْنَ عَلَیْهِ لِبَدًا ؕ﴿۱۹﴾ *जब **अल्लाह** के बन्दे (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) इबादत के वासिते खड़े हुवे तो जिन्न उन पर टूटे पड़ते हैं (ताकि क़ुरआन शरीफ़ सुनें)* [(3)]

इसी त़रह़ आयते ज़ेरे बह़स में अ़ब्द से मुराद जिस्मे अक़्दस मअ़ रूहे़ अन्वर है। पस मे'राजे जिस्मानी का सुबूत इस आयत से रोज़े रोशन की त़रह़ साबित है और अह़ादीसे सह़ीह़ा कसीरा से भी जो ह़द्दे तवातुर को पहुंचने वाली हैं येही साबित होता है। फ़िल वाक़ेअ़ अगर ख़्वाब में होता तो कुफ़्फ़ार इन्कार न करते और बा'ज़ ज़ईफ़ मोमिन फ़ितने में न पड़ते। क्यूंकि ख़्वाब में तो अक्सर देखा जाता है कि हम एक लह़्ज़े में मशरिक़ में हैं दूसरे लह़्ज़े में हज़ारों कोसों पर मग़रिब में हैं। फ़लासिफ़ा और दीगर अ़क़्ल के मुक़ल्लिद जो ए'तिराज़ात इस पर करते हैं इन तमाम का जवाब اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ (अपने बन्दे को रात के वक़्त ले गया) से मिलता है क्यूंकि ले जाने वाला तो ख़ुदा है जो क़ादिरे मुत़लक़ और जमीअ़ नक़ाइस से पाक है। पस अगर वोह अपने कामिल बन्दे ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा अह़मदे मुज्तबा सय्यिद वलदे आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जिस्मे अत़्हर के साथ ह़ालते बेदारी में रात के एक हिस्से में ख़ानए का'बा से बैतुल मुक़द्दस तक और बैतुल मुक़द्दस से आस्मानों के ऊपर जहां तक चाहा ले गया तो इस में कौन सा इस्तिह़ाला लाज़िम आता है। [(4)] وما ذٰلك على الله بعزيز.

---

1 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया। (پ۱۵، بنی اسراءیل:۱) **इल्मिय्या**

2 ....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह मज़्कूर है तेरे रब की उस रह़मत का जो उस ने अपने बन्दे ज़करिय्या पर की। (پ۱۶، مریم:۲) **इल्मिय्या**

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह कि जब **अल्लाह** का बन्दा उस की बन्दगी करने खड़ा हुवा तो क़रीब था कि वोह जिन्न उस पर ठठ के ठठ हो जाएं। (پ۲۹، الجن:۱۹) **इल्मिय्या**

4 .....अगर ज़ियादा तफ़्सील मत़लूब हो तो "तोह़्फ़ए अह़मदिय्या दर सुबूते मे'राजे मुह़म्मदिय्या" मुसन्निफ़ह़ू शैख़ुल अ़ल्लामा मौलाना मौलवी मुश्ताक़ अह़मद साह़िब अंबेड़ी चिश्ती साबरी मअ़ ह़वाशी ख़ाकसार, दफ़्तर अन्जुमने नो'मानिय्या लाहोर से त़लब फ़रमा कर मुत़ालआ़ करें। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

शक़्क़ुल क़मर

मो'जिज़ए शक़्क़ुल क़मर क़ुरआने करीम की आयए ज़ैल से साबित है :

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝ (سورۂ قمر شروع)

पास आ लगी वोह घड़ी और फट गया चांद और अगर वोह देखें कोई निशानी तो टाल दें और कहें येह जादू है चला आता ।(1)

पहली आयत का येह मत़लब है कि क़ियामत क़रीब आ गई और दुन्या की उ़म्र का क़लील हिस़्सा बाक़ी रह गया क्यूंकि "शक़्क़ुल क़मर" जो मिन जुम्ला अ़लामाते क़ियामत था वुक़ूअ़ में आ गया। وَانْشَقَّ الْقَمَرُ से मुराद येह है कि शक़्क़ुल क़मर का वुक़ूअ़ बिल फ़े'ल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में हो चुका। इस मा'ना की ताईद ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़िराअत से होती है। و قد انشق القمر (और ह़ाल येह कि चांद फट चुका) क्यूंकि इस सूरत में येह जुम्ला ह़ाल होगा और क़ियामत से पहले इक़्तिराबे साअ़त और वुक़ूए़ इन्शिक़ाक़ में मक़ारनत का मुक़्तज़ा होगा और इस मा'ना की ताईद मा बा'द से होती है क्यूंकि इस का मुक़्तज़ा येह है कि शक़्क़ुल क़मर एक मो'जिज़ा है जिसे कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने देखा और टाल दिया और इस से पहले भी वोह पै दर पै मो'जिज़ात देख चुके थे कि इसे देख कर सेह़्रे मुस्तमर बताने लगे। इसी मा'ना पर मुफ़स्सिरीन का इज्माअ़ है।

सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम वग़ैरा में ब सराह़ते ताम येह क़िस्सा मज़्कूर है कि रात के वक़्त कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कोई निशान त़लब किया जो आप की नबुव्वत पर शाहिद हो, आप ने उन को येह मो'जिज़ा दिखलाया। इस मो'जिज़े के रावी ह़ज़रते अ़ली, इब्ने मसऊ़द, हुज़ैफ़ा, इब्ने उ़मर, इब्ने अ़ब्बास और अनस वग़ैरा हैं। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) इन में से पहले चार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने तो ब चश्मे ख़ुद देखा कि चांद दो टुकड़े हो गया।(2) एक टुकड़ा एक पहाड़ पर और दूसरा दूसरे पहाड़ पर था। येह वोह मो'जिज़ा है कि किसी दूसरे पैग़म्बर के लिये वुक़ूअ़ में नहीं आया और ब त़रीक़े तवातुर साबित है।

सुवाल : क्या अहले मक्का के सिवा और लोगों ने भी शक़्क़ुल क़मर देखा ?

जवाब : अहले मक्का के इ़लावा अत़राफ़ से आने वाले मुसाफ़िरों ने भी शक़्क़ुल क़मर की शहादत दी। चुनान्चे, मुस्नदे(3) अबू दावूद त़यालिसी (मुतवफ़्फ़ा सिने 204 हिजरी) में

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद और अगर देखें कोई निशानी तो मुंह फेरते और कहते हैं येह तो जादू है चला आता। (پ۲۷،القمر:۱۔۲) **इल्मिय्या**

2.....बा'ज़ क़िस्सा ख़्वां बयान करते हैं कि चांद जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जेब में दाख़िल हुवा और आस्तीन से निकल गया मगर येह बे अस्ल है। 12 मिन्ह

3.....مسند ابوداؤد طیالسی، مطبوعہ دائرۃ المعارف النظامیہ حیدرآباد دکن، جزء اول، ص۳۸۔۱۲ منہ

www.dawateislami.net

ब रिवायते ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मज़्कूर है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में चांद फट गया। कुफ़्फ़ारे कुरैश ने देख कर कहा कि येह अबू कब्शा(1) के बेटे का जादू है। फिर वोह कहने लगे : मुसाफ़िर जो आएंगे उन से पूछेंगे देखें वोह क्या कहते हैं क्यूंकि (ह़ज़रते) मुह़म्मद का जादू तमाम लोगों पर नहीं चल सकता। चुनान्चे, मुसाफ़िर आए और उन्हों ने कहा कि "हम ने भी शक़्कुल क़मर देखा है।"(2) अगर बिल फ़र्ज़ बा'ज़ जगह नज़र न आया तो इस का जवाब येह है कि इख़्तिलाफ़े मत़ालेअ़ के सबब बा'ज़ मक़ामात में चांद का तुलूअ़ होता ही नहीं इसी लिये चांद गहन सब जगह नज़र नहीं आता और बा'ज़ दफ़्आ़ दूसरी जगहों में अब्र या पहाड़ वग़ैरा चांद के आगे ह़ाइल हो जाता है।

सुवाल : शक़्कुल क़मर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में वुक़ूअ़ में आया। जिसे अब तेरह सो साल से ज़ियादा हो चुके हैं तो येह किस त़रह़ कुर्बे क़ियामत का निशान हो सकता है जो अब तक नहीं आई ?

जवाब : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे मुबारक और आप की नबुव्वत कुर्बे क़ियामत की अ़लामात में से है या'नी इस अम्र का एक निशान है कि दुन्या की उ़म्र का अक्सर हिस्सा गुज़र चुका है और बहुत थोड़ा बाक़ी रह गया है, चुनान्चे, सह़ीह़ैन में है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अंगुश्ते शहादत और दरमियानी उंगली की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : بُعِثْتُ اَنَا وَالسَّاعَةُ كَهَاتَيْنِ (3) या'नी मेरी बिअ़्सत और क़ियामत इन दो उंगलियों की मानिन्द हैं कि जिस क़दर वुस्त़ा (दरमियानी उंगली) सबाबा (शहादत की उंगली) से आगे है क़ियामत से पहले मेरा मबऊ़स होना भी इसी की मानिन्द है कि मैं पहले आ गया हूं और क़ियामत मेरे पीछे आ रही है। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत कुर्बे क़ियामत की अ़लामत हुई तो शक़्कुल क़मर का बिल फ़े'ल वुक़ूअ़ भी जो आप की नबुव्वत की दलील है कुर्बे क़ियामत का निशान ठहरा।

1.....अबू कब्शा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक जद्दे मादरी था। ज़मानए जाहिलिय्यत में कुरैश बुतों की पूजा करते थे और वोह इन के ख़िलाफ़ शे'री उ़बूर की परस्तिश करता था इस लिये जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बुतों की परस्तिश में कुरैश की मुख़ालफ़त की और ख़ुदाए वह़दहू ला शरीक की इबादत की ता'लीम दी तो वोह आप को इस की मुख़ालफ़त के सबब अबू कब्शा का बेटा कहा करते थे। 12 मिन्ह

2 ......مسند ابی داود الطیالسی،ماأسند عبد اللّٰه بن مسعود،الجزء الاول،الحدیث:۲۹۵،ص۳۸والشفاء بتعریف حقوق المصطفٰی،الباب الرابع...الخ،فصل فی انشقاق القمر وحبس الشمس،الجزء الاول،ص۲۸۱-۲۸۲۔ علمیه

3 ......صحیح مسلم،کتاب الفتن واشراط الساعة،باب قرب الساعة،الحدیث:۲۹۵۱، ص۱۵۸۰۔ علمیه

www.dawateislami.net

रद्दुश्शम्स

हज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक दफ़्आ़ सहबा[1] में नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह्य आ रही थी और आप का सरे मुबारक ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में था इस वज्ह से ह़ज़रते अ़ली ने नमाज़े अ़स्र न पढ़ी यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया और नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ ली थी। आप ने ह़ज़रते अ़ली से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम ने नमाज़े अ़स्र पढ़ ली ? ह़ज़रते अ़ली ने अ़र्ज़ किया : नहीं ! इस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :[2] या **अल्लाह** ! येह तेरी त़ाअ़त में और तेरे रसूल की त़ाअ़त में था तू इस के लिये आफ़्ताब को वापस ला। ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने आफ़्ताब को देखा कि ग़ुरूब हो गया था फिर मैं ने देखा कि ग़ुरूब होने के बा'द निकल आया और उस की शुआ़अ़ पहाड़ों और ज़मीन पर पड़ी।[3]

रद्दुश्शम्स[4] की त़रह़ ह़ब्सुश्शम्स[5] भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये वुक़ूअ़ में आया है चुनान्चे, शबे मे'राज की सुब्ह़ को जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने क़ाफ़िलों के ह़ालात पूछे तो आप ने एक क़ाफ़िले की निस्बत फ़रमाया कि वोह चहार शम्बा के दिन[6] आएगा। क़ुरैश ने उस का इन्तिज़ार किया यहां तक कि सूरज ग़ुरूब होने लगा और वोह क़ाफ़िला न आया। उस वक़्त आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई तो **अल्लाह** तआ़ला ने सूरज को ठहरा रखा और दिन में इज़ाफ़ा कर दिया यहां तक कि वोह क़ाफ़िला आ पहुंचा।[7]

1.....अ़रब में ख़ैबर से एक मन्ज़िल के फ़ासिले पर एक मक़ाम का नाम है। 12 मिन्ह

2.....اللّٰھمّ انّه كان فی طاعتك وطاعت رسولك فاردد عليه الشمس. (شفاء ومواہب وخصائص کبریٰ) इस ह़दीस को इमाम त़ह़ावी और क़ाज़ी इयाज़ ने सह़ीह़ कहा है और इब्ने मुन्ज़िर व इब्ने शाहीन व त़बरानी ने इसे ऐसे अस्नाद के साथ ज़िक्र किया है जिन में से बा'ज़ सह़ीह़ की शर्त़ पर हैं और इब्ने मर्दुविय्या ने अस्नादे ह़सन के साथ इसे रिवायत किया है। 12 मिन्ह

3.....المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،المقصد الرابع...الخ،رد الشمس له،ج٦،ص٤٨٤-٤٨٥ والشفاء بتعريف حقوق المصطفى،الباب الرابع...الخ،فصل فی انشقاق القمر وحبس الشمس،الجزء الاول،ص٢٨٤۔ علميه

4.....सूरज को वापस लाना। 5.....सूरज को रोक लेना। 6.....बुध के दिन।

7.....शिफ़ा शरीफ़। इस ह़दीस को त़बरानी ने मो'जमे औसत़ में ब सनदे ह़सन ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया है। (مواہب لدنیہ) और बैहक़ी ने इस्माईल बिन अ़ब्दुर्रह़मान से ब त़रीक़े इरसाल नक़्ल किया है। (خصائص کبریٰ للسیوطی) 12 मिन्ह (الشفاء بتعريف حقوق المصطفى،الباب الرابع...الخ،فصل فی انشقاق القمر...الخ،الجزء الاول،ص٢٨٤-٢٨٥۔ علميه)

www.dawateislami.net

मुर्दों को ज़िन्दा करना

इमाम[1] बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबुव्वत में रिवायत की है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को दा'वते इस्लाम दी। उस ने जवाब दिया कि मैं आप पर ईमान नहीं लाता यहां तक कि मेरी बेटी ज़िन्दा की जाए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे उस की क़ब्र दिखा। उस ने आप को अपनी बेटी की क़ब्र दिखाई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस लड़की का नाम ले कर पुकारा। लड़की ने क़ब्र से निकल कर कहा : لَبَّیْكَ وَسَعْدَیْكَ[2] नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तू पसन्द करती है कि दुन्या में फिर आ जाए? उस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़सम है **अल्लाह** की ! मैं ने **अल्लाह** को अपने वालिदैन से बेहतर पाया और अपने लिये आख़िरत को दुन्या से अच्छा पाया।[3]

हाफ़िज़ अबू नुऐम[4] ने का'ब बिन मालिक की रिवायत से नक़्ल किया है कि ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरा मुतग़य्यर पाया इस लिये वोह अपनी बीवी के पास वापस आए और कहने लगे : मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरा मुतग़य्यर देखा है मेरा गुमान है कि भूक के सबब से ऐसा है क्या तेरे पास कुछ मौजूद है? बीवी ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! हमारे पास येह बकरी और कुछ बचा हुवा तौशा है। पस मैं ने बकरी को ज़ब्ह़ किया और उस ने दाने पीस कर रोटी और गोश्त पकाया फिर हम ने एक प्याले में सरीद[5] बनाया। फिर मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले गया। आप ने फ़रमाया : ऐ जाबिर ! अपनी क़ौम को जम्अ़ कर लो। मैं उन को ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया। आप ने फ़रमाया : उन को मेरे पास जुदा जुदा जमाअ़तें बना कर भेजते रहो। इस त़रह़ वोह खाने लगे। जब एक जमाअ़त सैर हो जाती तो वोह निकल जाती और दूसरी आती यहां तक कि सब खा चुके और प्याले में जितना

---

1 .....देखो मवाहिबे लदुन्निय्या।

2 .....**तर्जमा :** मैं तेरी त़ाअ़त के लिये और तेरे दीन की ताईद के लिये ह़ाज़िर व तय्यार हूं। 12 मिन्ह

3 .....المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،المقصد الرابع...الخ،ابراء ذوی العاهات واحياء الموتى...الخ،ج۷،ص٦١-٦٢۔ علميه

4 .....خصائص کبریٰ، جزء ثانی، ص٦٧۔ ١٢منہ

5 .....एक क़िस्म का खाना है जो रोटी के टुकड़ों को गोश्त के शोरबे में तर करने से तय्यार होता है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

पहले था उतना ही बच रहा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे : खाओ और हड्डी न तोड़ो। फिर आप ने प्याले के वस्त़ में हड्डियों को जम्अ़ किया उन पर अपना मुबारक हाथ रखा फिर आप ने कुछ कलाम पढ़ा जिसे मैं ने नहीं सुना। नागाह[1] वोह बकरी कान झाड़ती उठी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : अपनी बकरी ले जा। पस मैं अपनी बीवी के पास आया, वोह बोली येह क्या है ? मैं ने कहा : अल्लाह की क़सम ! येह हमारी बकरी है जिसे हम ने ज़ब्ह़ किया था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह से दुआ़ मांगी पस अल्लाह ने इसे ज़िन्दा कर दिया। येह सुन कर मेरी बीवी ने कहा : मैं गवाही देती हूं कि वोह अल्लाह के रसूल हैं।[2]

ग़ज़्वए ख़ैबर के बा'द सलाम बिन मिशकम यहूदी की ज़ौजा ने बकरी का ज़ह्र आलूद गोश्त आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या भेजा। आप उस में से बाज़ू उठा कर खाने लगे वोह बाज़ू बोला कि मुझ में ज़ह्र डाला गया है। वोह यहूदिया त़लब की गई तो उस ने ए'तिराफ़ किया कि मैं ने इस गोश्त में ज़ह्र मिलाया है।[3] येह मो'जिज़ा मुर्दे के ज़िन्दा करने से भी बढ़ कर है क्यूंकि येह मय्यित के एक जुज़ का ज़िन्दा करना है ह़ालांकि इस का बक़िय्या जो उस से मुन्फ़सिल था मुर्दा ही था।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैन का आप की ख़ातिर ज़िन्दा किया जाना और उन का आप पर ईमान लाना भी बा'ज़ अह़ादीस में वारिद है। अ़ल्लामा सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस बारे में कई रिसाले तस्नीफ़ किये हैं[4] और दलाइल से इसे साबित किया है। جزاہ اللّٰہ عنّا خیر الجزاء

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुल से भी मुर्दे ज़िन्दा हो गए चुनान्चे, ह़ज़रते अनस[5] رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि अन्सार में से एक जवान ने वफ़ात पाई उस की मां अन्धी

1.....अचानक।

2 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب آیاتہ فی احیاء الموتی و کلامھم،ج۲،ص۱۱۲۔ علمیه

3 ......فتح الباری شرح صحیح بخاری لابن حجر،کتاب الطب،باب ما یذکر فی سم النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم...الخ، تحت الحدیث:۵۷۷۷، ج۱۰،ص۲۰۸۔ علمیه

4.....इन में से बा'ज़ येह हैं : التعظیم والمنة فی ان ابوی النبی صلی اللّٰہ علیه وسلم فی الجنة . الفوائد الکامنة فی ایمان السیدة آمنة .مسالک الحنفاء فی والدین المصطفی صلی اللّٰہ علیه وسلم .سبل النجاہ فی والدی المصطفیٰ صلی اللّٰہ علیه وسلم (ھدیة العارفین،ج۵،ص۵۳۹)۔ علمیه

5.....मवाहिबे लदुन्निय्या। इस ह़दीस को इब्ने अबिद्दुन्यिा, बैहक़ी और अबू नुऐ़म ने नक़्ल किया है। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

बुढ़िया थी। हम ने उस जवान को कफ़्ना दिया और उस की मां को पुर्सा दिया।(1) मां ने कहा : क्या मेरा बेटा मर गया है? हम ने कहा : हां! येह सुन कर उस ने यूं दुआ़ मांगी : या अल्लाह! अगर तुझे मा'लूम है कि मैं ने तेरी त़रफ़ और तेरे नबी की त़रफ़ इस उम्मीद पर हिजरत की है कि तू हर मुश्किल में मेरी मदद करेगा तो इस मुसीबत की मुझे तक्लीफ़ न दे। हम वहीं बैठे थे कि उस जवान ने अपने चेहरे से कपड़ा उठा दिया और खाना खाया और हम ने भी उस के साथ खाया।(2)

इन्क़िलाबे आ'यान

जिन चीज़ों को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक लगा, या हुज़ूर के इस्ति'माल में आईं उन की ह़क़ीक़त व माहिय्यत बदल गई। ब ग़रज़े तौज़ीह़ ज़ैल में चन्द मिसालें दर्ज की जाती हैं :

एक रात मदीनए मुनव्वरा के लोग डर गए (गोया कोई चोर या दुश्मन आता है) आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का घोड़ा लिया जो सुस्त रफ़्तार था और उस पर बिग़ैर ज़ीन के सुवार हो कर अकेले जंगल की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द लोग भी सुवार हो कर उस त़रफ़ निकले। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को वापस आते हुवे मिले, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "डरो नहीं डरो नहीं" और घोड़े की निस्बत फ़रमाया कि हम ने इसे दरया की मानिन्द तेज़ रफ़्तार पाया। उस दिन से वोह घोड़ा ऐसा चालाक बन गया कि कोई दूसरा घोड़ा उस से आगे न बढ़ सकता था।(3)

ह़ज़रते उम्मे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक चमड़े की कुप्पी थी जिस में वोह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में घी बत़ौरे हदिय्या भेजा करती थीं। एक दफ़्आ़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस को न निचोड़ना। येह फ़रमा कर आप ने कुप्पी उम्मे मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दे दी। वोह क्या देखती हैं कि कुप्पी घी से भरी हुई है। उम्मे मालिक के

1.....बेटे के इन्तिक़ाल पर उस की मां से ता'ज़िय्यत की।

2.....المواھب اللدنية مع شرح الزرقاني،المقصد الرابع...الخ،ابراء ذوی العاھات واحياء الموتی...الخ،ج۷،ص۶۳۔ علميه

3.....بخاری،کتاب الجہاد،باب السرعۃ والرکض فی الفزع۔......(صحيح البخاری،کتاب الجهاد،باب السرعة و الركض فی الفزع، الحديث:۲۹۶۹،ج۲،ص۳۰۱۔ علميه)

www.dawateislami.net

लड़के आ कर नाने ख़ुरिश[1] मांगते तो वोह कुप्पी में घी ब दस्तूर पातें। ग़रज़ वोह घी उसी त़रह़ ख़र्च होता रहा यहां तक कि एक रोज़ उम्मे मालिक ने कुप्पी को निचोड़ा तो ख़ाली हो गई।[2]

उम्मे औस बहज़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कुप्पी में घी डाल कर बत़ौरे हदिय्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बूल फ़रमाया और कुप्पी में से घी निकाल लिया और उम्मे औस के लिये दुआ़ए बरकत फ़रमा कर कुप्पी वापस कर दी। जब उम्मे औस ने देखा तो घी से भरी हुई पाई इसे ख़याल आया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हदिय्या क़बूल नहीं फ़रमाया इस लिये वोह फ़रयाद करती हुई ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुई। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उस से ह़क़ीक़ते ह़ाल बयान कर दी। उम्मे औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस कुप्पी में आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बक़िय्या उ़म्र शरीफ़ और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी व उ़स्मानी में घी खाती रही यहां तक कि ह़ज़रते अ़ली व अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के दरमियान जंग वुक़ूअ़ में आई।[3]

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन ख़त्त़ाब क़ुरशिय्य अ़दवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कोताह क़द पैदा हुवे थे। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के सर पर अपना दस्ते मुबारक फेरा और दुआ़ फ़रमाई इस का येह असर हुवा कि अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब किसी क़ौम में होते तो क़द में सब से बुलन्द नज़र आते, जैसा कि पहले मज़्कूर हुवा।[4]

एक रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े इशा के लिये निकले। रात अन्धेरी थी और बारिश हो रही थी। आप ने ह़ज़रते क़तादा बिन नो'मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देखा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : मैं ने ख़याल किया कि नमाज़ी कम होंगे इस लिये मैं ने चाहा कि जमाअ़त में शामिल हो जाऊं। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर ह़ज़रते

---

1 .....खाना।

2 ......صحیح مسلم وشفاء شریف۔......(صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب فی معجزات النبی، الحدیث:۲۲۸۰، ص۱۲۵۰ والشفاء بتعریف حقوق المصطفی، الباب الرابع فیما اظھرہ اللّٰہ...الخ، فصل فی کراماتہ و برکاتہ...الخ، الجزء الاول، ص۳۳۲۔ علمیہ)

3 ......اصابہ بحوالہ طبرانی وابن مندہ وابن السکن۔ ترجمہ ام اوس بہزیہ۔......(فی تمییز الصحابة، ۱۱۸۹۹۔ام اوس البھزیة، ج۸، ص۳۵۸۔ علمیہ)

4 ......صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب من اخف الصلاة عند بکاء الصبی، الحدیث:۷۰۷، ج۱، ص۲۵۳ والاصابة فی تمییز الصحابة، ۶۲۲۷۔عبد الرحمن بن زید، ج۵، ص۲۹۔۳۰۔ علمیہ

www.dawateislami.net

क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को खजूर की एक डाली दी और फ़रमाया कि येह डाली दस हाथ तुम्हारे आगे और दस हाथ पीछे रोशनी करेगी, जब तुम घर पहुंचो तो उस में एक सियाह शक्ल देखोगे, उस को मार कर निकाल देना क्यूंकि वोह शैत़ान है। जिस त़रह़ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वैसा ही ज़ुहूर में आया।(1)

जंगे बद्र में ह़ज़रते उ़क्काशा बिन मेह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार टूट गई। वोह आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए। हुज़ूर ने उन को एक लकड़ी इनायत फ़रमाई। जब उ़क्काशा ने हाथ में ले कर हिलाई तो वोह एक सफ़ेद मज़बूत़ तल्वार बन गई जिस से वोह जंग करते रहे। उस तल्वार का नाम औ़न था। ह़ज़रते उ़क्काशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी के साथ जिहाद करते थे। यहां तक कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में अय्यामुर्रिद्दा(2) में शहीद हो गए।(3)

जंगे उहुद में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार टूट गई। आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को एक खजूर की शाख़ इनायत फ़रमाई वोह उन के हाथ में तल्वार बन गई जिस के साथ वोह जंग करते रहे यहां तक कि शहीद हो गए। इस तल्वार को उ़र्जून कहते थे।(4)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक पानी का मश्कीज़ा लिया उस का मुंह बांध कर दुआ़ फ़रमाई और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم को अ़त़ा फ़रमाया। जब नमाज़ का वक़्त आया तो उन्हों ने उसे खोला, क्या देखते हैं कि उस में बजाए पानी के ताज़ा दूध है और उस के मुंह पर झाग आ रही है।(5)

---

1 ......شفاء شریف ومسند امام احمد۔......(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ا بی سعید الخدری،الحدیث:١١٦٢٤، ج٤، ص١٣١ والشفاء بتعریف حقوق المصطفی،الباب الرابع ...الخ،فصل فی کراماته ...الخ ،الجزء الاول،ص٣٣٣۔ علمیه)

2 .....इस से मुराद वोह ज़माना है जिस में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ज़कात वग़ैरा का इन्कार करने वाले मुर्तद्दीन से जिहाद फ़रमाया। **इल्मिय्या**

3 ......سیرت ابن ہشام۔......(السیرة النبویة لابن هشام،غزوة بدر الکبری،قصة سیف عکاشة،ص٢٦٣۔ علمیه)

4 ......استیعاب واصابہ۔......(الاستیعاب فی معرفة الاصحاب،١٥٠٢۔عبد اللّٰه بن جحش،ج٣،ص١٥ والاصابة فی تمییز الصحابة،٤٦٠١۔عبد اللّٰه بن جحش،ج٤،ص٣٢۔ علمیه)

5 ......شفاء شریف وابن سعد۔......(الشفاء بتعریف حقوق المصطفی،الباب الرابع...الخ،فصل فی کراماته...الخ،الجزء الاول، ص٣٣٤۔ علمیه)

www.dawateislami.net

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हज़रते सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये जो खजूर के पेड़ अपने दस्ते मुबारक से लगाए थे वोह एक ही साल में फल लाए।[1] बांझ बकरी के थनों पर आप का दस्ते मुबारक फिर गया वोह दूध देने लगी।[2] गन्जे के सर पर दस्ते शिफ़ा फेरा तो उसी वक़्त बाल उग आए।[3] इस क़िस्म की बरकात का ज़िक्र हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुल्या शरीफ़ के बयान में आ चुका है।

बच्चों की शहादत (गवाही)

मुअ़र्रिज़ बिन मुऐक़ीब यमानी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने ह़ज्जतुल वदाअ़ किया और मक्का में एक घर में दाख़िल हुवा। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा। आप से एक अ़जीब अम्र देखने में आया। अहले यमामा में से एक शख़्स आप की ख़िदमत में एक बच्चा लाया जो उसी दिन पैदा हुवा था। आप ने उस से पूछा : ऐ बच्चे ! मैं कौन हूं ? वोह बोला : आप **अल्लाह** के रसूल हैं। आप ने फ़रमाया : तू ने सच कहा, **अल्लाह** तुझे बरकत दे। फिर इस के बा'द उस बच्चे ने कलाम न किया यहां तक कि वोह जवान हो गया। हम उसे मुबारकुल यमामा[4] कहा करते थे।[5]

हज़रते शिम्र बिन अ़तिय्या ने अपने बा'ज़ शुयूख़ से रिवायत की है कि एक औ़रत नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक लड़का लाई जो जवान हो गया था। उस ने कहा : मेरे इस बेटे ने जब से पैदा हुवा कलाम नहीं किया। पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस लड़के से पूछा कि मैं कौन हूं ? उस ने जवाब दिया कि आप **अल्लाह** के रसूल हैं।[6]

---

1 ......اسد الغابة فی معرفة الصحابة،سلمان الفارسی:۲۱۵۰،ج۲،ص۴۹۰۔ علمیه

2 ......حجة اللّٰه علی العالمین،القسم الثالث،الباب التاسع،الفصل الثانی،ص۴۴۳۔ علمیه

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،۹۰۱۲۔الهلب الطائی،ج۶،ص۴۳۲۔ علمیه

4 .....इस ह़दीस को इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया है। मवाहिबे लदुन्निय्या। 12 मिन्हु

5 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،المقصد الرابع...الخ،ابراء ذوی العاهات و احیاء الموتی،ج۷،ص۶۶۔ علمیه

6 .....इस ह़दीस को इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया है। خصائص کبریٰ،جزء ثانی،ص۷۹ येह ह़दीस मुर्सल है क्यूंकि हज़रते शिम्र बिन अ़तिय्या इत्तिबाए ताबेईन में से हैं। देखो ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब। 12 मिन्हु

(دلائل النبوة للبیهقی،باب ماجاء فی شهادة الرضیع...الخ، ج۶،ص۶۱ والخصائص الکبری للسیوطی،باب آیاته فی ابراء الابکم...الخ،ج۲،ص۱۱۴۔ علمیه)

www.dawateislami.net

बीमारों को शिफ़ा देना

ह़ज़रते फ़ुदैक बिन अ़म्र अस्सलामानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की दोनों आंखें सफ़ेद हो गई थीं और वोह कुछ न देख सकते थे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दम कर दिया। वोह ऐसे बीना हो गए कि अस्सी बरस की उ़म्र में सुई में धागा डाल सकते थे।(1)

इमाम राज़ी ने ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बीवी को बरस की बीमारी थी वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई। आप ने अपना अ़सा मुबारक उस के बदन पर फेर दिया उसी वक़्त मरज़ जाता रहा।(2)

ह़ज़रते अबू सबरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ में एक ऐसी गिलटी थी कि ऊंट की मुहार न पकड़ सकते थे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक तीर मंगवाया और गिलटी पर फेर दिया वोह फ़ौरन जाती रही।(3)

ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के सर पर और चेहरे पर वरम हो गया था रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते शिफ़ा कपड़े पर से उन के चेहरे और सर पर रखा और दुआ़ फ़रमाई उसी वक़्त वरम जाता रहा।(4)

ह़ज़रते ह़बीब बिन यिसाफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ज़िक्र करते हैं कि मैं एक ग़ज़्वे में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था मेरी गर्दन पर एक ज़र्बे शदीद ऐसी लगी कि मेरा बाज़ू लटक पड़ा। मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आया। आप ने अपना लुआ़बे दहन लगा दिया और बाज़ू को उस की जगह पर चस्पां कर दिया तो वोह फ़ौरन चंगा(5) हो गया। फिर मैं ने उसे क़त्ल कर दिया जिस ने मुझे ज़र्बे शदीद लगाई थी।(6)

1.....इस ह़दीस को इब्ने अबी शैबा व बग़वी व बैहक़ी व त़बरानी व अबू नुऐ़म ने रिवायत किया है। (मवाहिबे लदुन्निय्या) 12 मिन्हु (المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني، المقصد الرابع...الخ،ابراء ذوى العاهات واحياء الموتى،ج۷،ص۷۳۔ علميه)

2.....التفسير الكبير،تحت الآية انا اعطينك الكوثر،ج۱۱،ص۳۱٤۔ علميه

3.....الخصائص الكبرى للسيوطى،باب آياته فى ابراء المرضى...الخ،ج۲،ص۱۱٦۔ علميه

4.....مواهب لدنيه، كتاب فى المعجزات۔.......(الخصائص الكبرى للسيوطى،باب آياته فى ابراء المرضى...الخ،ج۲،ص۱۱٦۔ علميه)

5.....ठीक।

6.....इस ह़दीस और अह़ादीस आयिन्दा के लिये देखो ख़साइसे कुब्रा लिस्सुयूत़ी, जुज़्ए सानी, स. 70। 12 मिन्हु

(الخصائص الكبرى للسيوطى،باب آياته فى ابراء المرضى...الخ،ج۲،ص۱۱٦۔ علميه)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर डाढ़ के दर्द की शिकायत की आप ने अपना मुबारक हाथ उन के रुख़्सार की उस जगह पर रखा जहां दर्द था और दुआ़ फ़रमाई। अभी आप ने दस्ते शिफ़ा वहां से न उठाया था कि **अल्लाह** तआ़ला ने शिफ़ा दी।[1]

ह़ज़रते जरहद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बाएं हाथ से खाना खाया करते थे। नबी صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दाएं हाथ से खाओ। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि दाएं हाथ में कुछ शिकायत है जिस के सबब से खाया नहीं जाता। हुज़ूर ने उस हाथ पर दम कर दिया। ह़ज़रते जरहद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फिर उ़म्र भर येह शिकायत न हुई।[2]

उ़नवाने बाला के मुतअ़ल्लिक़ और मिसालें हुल्या शरीफ़ में दहाने मुबारक और लुआ़बे मुबारक और दस्ते मुबारक के तह़्त में मज़्कूर हो चुकी हैं जिन के दोहराने की यहां ज़रूरत नहीं।

त़आ़मे क़लील को कसीर बना दिया

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए अह़ज़ाब के दिन हम ख़न्दक़ खोद रहे थे एक सख़्त ज़मीन ज़ाहिर हुई। सह़ाबए किराम, नबी صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए और अ़र्ज़ की, कि ख़न्दक़ में सख़्त ज़मीन पेश आ गई है। आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं ख़न्दक़ में उतरता हूं। फिर आप खड़े हुवे (ह़ालांकि भूक की शिद्दत से आप के शिकम पर पथ्थर बन्धा हुवा था और हम ने भी तीन दिन से कुछ न चखा था) हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने कुदाल ली और मारी। वोह सख़्त ज़मीन रैगेरवां[3] का एक ढेर बन गई। मैं नबी صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ह़ालत देख कर अपनी बीवी के पास आया और उस से कहा : क्या तेरे पास खाने की कोई चीज़ है? मैं ने नबी صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में सख़्त भूक की अ़लामत देखी है। मेरी बीवी ने एक थैली निकाली जिस में एक साअ़ जव थे। हमारे हां घर में पला हुवा एक बकरी का बच्चा था मैं ने उसे ज़ब्ह़ किया।

---

1 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب آیاته فی ابراء المرضی...الخ،ج۲،ص۱۱۷۔ علمیه

2 .....येह ह़दीस शरीफ़ सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में है। (मिश्कात, बाब फ़िल मो'जिज़ात) 12 मिन्हु

(الخصائص الکبری للسیوطی،باب آیاته فی إبراء المرضی...الخ،ج۲،ص۱۱۷۔ علمیه)

3 .....ऐसी बारीक रैत जिसे हवा उड़ा ले जाए।

www.dawateislami.net

मेरी बीवी ने जव पीस लिये। हम ने गोश्त देग में डाल दिया। फिर मैं नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और चुपके से अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह़ किया है और मेरी बीवी ने एक साअ़ जव पीसे हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मअ़ चन्द सह़ाबा के तशरीफ़ लाएं। येह सुन कर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आवाज़ दी : ऐ अहले ख़न्दक़ ! जाबिर (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) ने ज़ियाफ़त तय्यार की है जल्दी आओ। फिर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : तुम मेरे आने तक देग न उतारना और ख़मीर को न पकाना। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मेरी बीवी ने आप के सामने ख़मीर निकाला आप ने उस में अपने दहन मुबारक का लुआ़ब डाल दिया और दुआ़ए बरकत फ़रमाई फिर हमारी देग की त़रफ़ आए। उस में भी लुआ़बे मुबारक डाल दिया और दुआ़ए बरकत फ़रमाई फिर मेरी बीवी से फ़रमाया : रोटी पकाने वाली को बुला कि तेरे साथ रोटी पकाए और तू अपनी देग में कफ़गीर से गोश्त निकालना और देग को चूल्हे पर से न उतारना। रावी का बयान है कि अहले ख़न्दक़ जो एक हज़ार थे **अल्लाह** की क़सम ! सब खा चुके यहां तक कि उसे बाक़ी छोड़ गए मगर देग उसी त़रह़ जोश मार रही थी और ख़मीर उसी त़रह़ पकाया जा रहा था।(1)

क़िस्सए मज़्कूरए बाला में रिवायते अह़मद व नसाई में है कि जब ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस सख़्त पथ्थर पर बिस्मिल्लाह कह कर कुदाल मारी तो उस की एक तिहाई टूट गई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाहु अक्बर** ! मुझे मुल्के शाम की कुन्जियां दी गईं। **अल्लाह** की क़सम ! मैं इस वक़्त शाम के सुर्ख़ मह़ल्लात देख रहा हूं। फिर आप ने दूसरी बार कुदाल मारी तो दूसरी तिहाई टूट गई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाहु अक्बर** ! मुझे फ़ारिस की कुन्जियां दी गईं। ख़ुदा की क़सम ! मैं इस वक़्त मदाइने किस्रा का सफ़ेद मह़ल देख रहा हूं। फिर तीसरी बार कुदाल मारी तो बाक़ी तिहाई भी टूट गई। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाहु अक्बर** ! मुझे यमन की कुन्जियां दी गईं। ख़ुदा की क़सम ! मैं इस वक़्त यहां से अब्वाबे सन्आ़ को देख रहा हूं।"(2)

---

1 .....येह ह़दीस सह़ीह़ मुस्लिम में है। (مشكوٰة شريف، باب فى المعجزات) 12 मिन्ह

(مشكاة المصابيح، كتاب الفضائل والشمائل، باب فى المعجزات، الحديث:٥٨٧٧، ج٢، ص٣٨٢ـ علميه)

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث:١٨٧١٦، ج٦، ص٤٤٥ـ علميه

www.dawateislami.net

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए तबूक के दिन लोगों को भूक लगी। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप उन को हुक्म दें कि जिस के पास बचा हुवा तौशा है ले आए फिर आप उस पर दुआ़ए बरकत फ़रमाएं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्ज़ूर फ़रमाया और चमड़े का फ़र्श त़लब किया वोह बिछा दिया गया तो आप ने सह़ाबए किराम का बचा हुवा तौशा त़लब फ़रमाया। कोई चने की मुठ्ठी ला रहा था, कोई छुवारों की मुठ्ठी भरे आ रहा था, कोई रोटी का टुकड़ा ला रहा था यहां तक कि फ़र्श पर थोड़ा सा तौशा जम्अ़ हो गया। पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ए बरकत फ़रमाई। फिर फ़रमाया कि अपने बरतनों में डाल कर ले जाओ। चुनान्चे, लोग अपने बरतनों में ले गए यहां तक उन्हों ने लश्कर में कोई बरतन न छोड़ा जिसे भरा न हो। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि तमाम लश्कर(1) ने पेट भर कर खाया और बच भी रहा। पस रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं इस अम्र की, कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूदे बर ह़क़ नहीं और इस अम्र की, कि मैं **अल्लाह** का रसूल हूं इन दो शहादतों में शक न करने वाला कोई बन्दा **अल्लाह** से न मिलेगा कि वोह बिहिश्त से रोक दिया जाए।(2)

हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हम एक सो तीस शख़्स थे। आप ने पूछा कि क्या तुम्हारे पास त़आ़म है। एक शख़्स के पास एक साअ़ त़आ़म निकला वोह गूंधा गया। फिर एक मुशरिक दराज़ क़द, ज़ोलीदा मू,(3) बकरियां हांकता आया आप ने उस से एक बकरी ख़रीदी।(4) उसे ज़ब्ह़ किया गया और आप के हुक्म से उस का कलेजा भूना गया। आप ने उस कलेजे की एक एक बोटी सब को दी। फिर गोश्त दो प्यालों में डाल दिया। सब ने सैर हो कर खाया और दोनों प्याले भरे के भरे बच रहे हम ने बचे हुवे खाने को ऊंट पर रख लिया।(5) वाज़ेह़ रहे कि इस क़िस्से में दो मो'जिज़े हैं एक तक्सीरे कलेजा(6) दूसरे तक्सीरे साअ़ व गोश्त।(7)

---

1 ...कहते हैं कि ग़ज़्वए तबूक में लश्कर की ता'दाद एक लाख को पहुंच गई थी। कज़ाफ़ी अश्अ़तुल लमआ़त। 12 मिन्ह

2 ......مشكاة المصابيح،كتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات،الحديث:٥٩١٢،ج٢،ص٣٩١۔ علميه

3 .....बिखरे बालों वाला।

4 ......صحیح بخاری،باب قبول الہدیۃ من المشرکین۔

5 ......صحيح البخارى،كتاب الهبة وفضلها...الخ،باب قبول الهدية من المشركين،الحديث:٢٦١٨،ج٢،ص١٨١۔علميه

6 .....थोड़ी कलेजी का ज़ियादा हो जाना।

7 .....थोड़े से गोश्त और साअ़ भर त़आ़म का ज़ियादा हो जाना।

www.dawateislami.net

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं भूक की शिद्दत से कभी अपने पेट को ज़मीन से लगाया करता था और कभी पेट पर पथ्थर बांध लिया करता था। एक दिन मैं उस रास्ते में बैठ गया जहां से रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के सहाबए किराम गुज़रा करते थे। हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पास से गुज़रे मैं ने उन से कुरआन की आयत पूछी ताकि आप मेरा पेट भर दें मगर उन्हों ने कुछ तवज्जोह न की और गुज़र गए। इसी त़रह़ हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आए मैं ने उन से भी एक आयत पूछी मगर उन्हों ने भी कुछ तवज्जोह न की और गुज़र गए। इस के बा'द हज़रते अबुल क़ासिम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पास से गुज़रे तो मेरी ह़ालत को देख कर मुस्कुराए और फ़रमाया कि मेरे पीछे पीछे चले आओ। आप दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक प्याले में कुछ दूध देखा। आप ने दरयाफ़्त किया कि येह दूध कैसा है ? जवाब मिला कि हदिय्या है। मुझ से फ़रमाया कि अहले सुफ़्फ़ा को बुला लाओ। आप का मा'मूल था कि आप के पास सदक़ा आता तो उसे अहले सुफ़्फ़ा के लिये भेज देते और उस में से ख़ुद कुछ न खाते। अगर हदिय्या आता तो अहले सुफ़्फ़ा को बुला कर उस में शरीक कर लेते। मैं ने अपने जी में कहा कि इतने दूध से अहले सुफ़्फ़ा का क्या होगा ? उस का तो मैं ही ज़ियादा मुस्तह़िक़ था मगर इरशादे ता'मील से चारह न था मैं उन सब को बुला लाया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे वोह प्याला दिया और फ़रमाया कि इन को पिलाओ। मैं एक एक को पिलाता रहा यहां तक कि वोह सब सैर हो गए। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने प्याला ले कर अपने दस्ते मुबारक पर रखा और मेरी त़रफ़ देख कर मुस्कुराए। फिर फ़रमाया : अबू हुरैरा ! मैं और तुम दोनों बाक़ी हैं। मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने सच फ़रमाया। आप ने फ़रमाया : बैठ जाओ और पियो ! मैं ने ऐसा ही किया फिर फ़रमाया : और पियो ! मैं ने फिर पिया इसी त़रह़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते रहे यहां तक कि मैं ने अ़र्ज़ किया कि अब पेट में गुन्जाइश नहीं। बा'दे अज़ां बाक़ी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पी लिया।[1]

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ[2] ज़िक्र करते हैं कि एक बदवी ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से त़आ़म का सुवाल किया। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे आधा वस्क़[3] जव इनायत फ़रमाए

---

1 ......صحیح بخاری، باب کیف کان عیش النبی صلی اللہ تعالی علیہ والہ وسلم واصحابہ۔۱۲منہ ......(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی...الخ،الحدیث:٦٤٥٢،ج٤،ص٢٣٤ ملخصاً۔علمیہ)

2 ......مواہب لدنیہ بحوالہ صحیح مسلم۔

3 .....तीस साअ़।

www.dawateislami.net

वोह और उस की बीवी और उस के मेहमान उन को खाते रहे (और वोह कम न हुवे) यहां तक कि एक रोज़ उस ने उन को माप लिया (तो वोह कम होने लगे) उस ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर इस वाक़िए की इत्तिलाअ़ दी। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया अगर उन को न मापता तो तुम उ़म्र भर खाते रहते और वोह कम न होते।(1)

ह़ज़रते अनस(2) बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि अबू त़ल्ह़ा (वालिदे अनस) ने उम्मे सुलैम (वालिदए अनस) से कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में भूक की शिद्दत से ज़ो'फ़ के आसार देखे हैं क्या घर में कुछ है ? उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जव की चन्द रोटियां कपड़े में लपेट कर मेरे हाथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजीं। मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचा। आप मअ़ अस्ह़ाब मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि उम्मे सुलैम के घर चलो। मैं घर में पहले पहुंच गया और अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सूरते ह़ाल बयान कर दी। अबू त़ल्ह़ा ने रास्ते में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्तिक़्बाल किया। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुवे तो उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया कि मा ह़ज़र(3) ले आओ। आप के इरशाद से रोटियों के टुकड़े कर के उन में कुछ घी डाल दिया गया। फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई और अस्ह़ाब में से दस को त़लब किया, वोह सैर हो गए तो फिर और दस को त़लब किया। इसी त़रह़ सत्तर या अस्सी अस्ह़ाब ने सैर हो कर खाया।(4)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं चन्द खजूरें आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाया मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन में दुआ़ए बरकत फ़रमाएं। आप ने दस्ते मुबारक में ले कर दुआ़ए बरकत फ़रमाई और फ़रमाया कि लो इन को अपने तौशादान में रख लो जिस वक़्त इन में से कुछ लेना चाहो तो हाथ डाल कर निकाल लिया

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،المقصد الرابع...الخ،تكثير الطعام القليل...الخ،ج٧،ص٥٧ـ علميه

2 ......صحیح بخاری،باب علامات النبوۃ فی الاسلام۔

3 .....जो कुछ मौजूद है।

4 ......صحيح البخاری،كتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام،الحديث:٣٥٧٨،ج٢،ص٤٩٤-٤٩٥ملخصاًـعلميه

www.dawateislami.net

करना और तौशादान को न झाड़ना। हम ने इन में से इतने इतने वस्क़[1] राहे ख़ुदा में दे दिये। ख़ुद खाते और दूसरों को खिलाते रहे। वोह तौशादान मेरी कमर से जुदा न होता था यहां तक कि जब ह़ज़रते उ़स्मान की शहादत का दिन आया तो वोह गुम हो गया।[2] कहते हैं कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ उस दिन फ़रमाते थे :

لِلنَّاسِ هَمٌّ وَّلِی هَمَّانِ بَيْنَهُمْ هَمُّ الْجِرَابِ وَهَمُّ الشَّيْخِ عُثْمَانًا[3]

लोगों को एक ग़म है और मुझे दो ग़म हैं तौशादान के गुम होने का ग़म और ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के शहीद होने का ग़म।

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि मेरे वालिद उहुद के दिन शहीद हो गए और छे लड़कियां और बहुत सा क़र्ज़ छोड़ गए। जब खजूरों के तोड़ने का वक़्त आया तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को मा'लूम है मेरे बाप उहुद के दिन शहीद हो गए और बहुत सा क़र्ज़ छोड़ गए मैं चाहता हूं कि क़र्ज़ ख़्वाह आप की ज़ियारत करें।" आप ने फ़रमाया कि तुम जाओ और हर एक क़िस्म की खजूर का अलग अलग ढेर लगा दो। मैं ने ता'मीले इरशाद की और आप को बुलाने आया जब क़र्ज़ ख़्वाहों ने आप को देखा तो मुझे और तंग करने लगे। येह देख कर आप सब से बड़े ढेर के गिर्द तीन बार फिरे फिर बैठ गए और फ़रमाया कि क़र्ज़ ख़्वाहों को बुलाओ। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم माप कर उन को देते रहे यहां तक कि मेरे बाप की अमानत **अल्लाह** ने अदा कर दी। मैं उसी पर राज़ी था कि **अल्लाह** तआ़ला मेरे वालिद की अमानत अदा कर दे। ख़्वाह मेरी बहनों के लिये एक खजूर भी न बचे मगर **अल्लाह** की क़सम ! वोह तमाम ढेर सालिम रहे। मैं ने उस ढेर को देखा जिस पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ रखते थे। उस में से एक खजूर भी कम न हुई थी।[4]

---

1 ......وسق بار شتر وشصت صاع۔۱۲منہ

2 ......الخصائص الكبرى للسيوطى،باب معجزاته فى تكثير الطعام...الخ،ج٢،ص٨٤۔ علميه

3 ......مرقاة المفاتيح،كتاب الفضائل،باب فى المعجزات،الفصل الثانى، تحت الحديث:٥٩٣٣،ج١٠،ص٢٧٠۔ علميه

4 ......صحیح بخاری،باب قضاء الوصی دیون المیت۔......(صحيح البخارى،كتاب الوصايا،باب قضاء الوصى ديون الميت...الخ، الحديث:٢٧٨١،ج٢،ص٢٤٧۔ علميه)

www.dawateislami.net

तक्सीरे त़आ़म की त़रह़ हु़ज़ूर की दुआ़ व बरकत से क़लील पानी का कसीर हो जाना भी बहुत सी अह़ादीस में आया है। इस क़िस्म का तक्सीरे त़आ़म और तक्सीरे आब जनाबे सय्यिदे काइनात عَلَيْهِ اَلْوْفُ التَّحِيَّةِ وَالصَّلٰوة के मुरब्बी और वलिय्ये ने'म होने का असर है क्यूंकि जिस त़रह़ हु़ज़ूरे अन्वर ब ह़स्बे रूह़ानिय्यत क़ुलूबो अरवाह़ के मुरब्बी व मुकम्मल हैं आ़लमे जिस्मानिय्यत में अब्दान व अश्बाह़ के परवरिश फ़रमाने वाले भी हैं।

شکر فیض تو چمن چوں کند اے ابر بہار
کہ اگر خار و اگر گل ہمہ پروردہ تست

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "अशिअ़तुल लम्आ़त" में तह़रीर फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं सफ़ा व मर्वा के दरमियान बाज़ार में से गुज़र रहा था वहां मैं ने एक सब्ज़ी बेचने वाले को देखा कि सब्ज़ी पर पानी छिड़क रहा है और यूं कह रहा है : يَا بَرَكَةَ النَّبِيِّ تَعَالَيْ وَانْزِلِيْ ثُمَّ لَا تَرْتَحِلِيْ ऐ नबी की बरकत ! आ और मेरे मकान में उतर फिर कूच न कर।(1)

इजाबते दुआ़

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से एक येह भी है कि आप जो दुआ़ फ़रमाते वोह बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में क़बूल होती येह बाब निहायत वसीअ़ है नज़र बर इख़्तिसार सिर्फ़ चन्द मिसालें दर्ज की जाती हैं।(2)

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मां ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अनस आप का अदना ख़ादिम है इस के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर फ़रमाएं। पस आप ने यूं दुआ़ फ़रमाई : "या **अल्लाह** ! तू इस का माल व अवलाद ज़ियादा कर और जो ने'मत तू ने इसे दी है इस में बरकत दे।"(3) एक रिवायत येह भी है कि तू इस की उ़म्र ज़ियादा कर और बिहिश्त(4) में मेरा रफ़ीक़ बना। येह दुआ़ ऐसी मक़्बूल हुई कि ह़ज़रते

1 ......اشعة اللمعات، كتاب الفتن، باب فی المعجزات، ج٤، فصل اوّل، ص٥٧٠۔علميه

2 ...इन मिसालों के लिये बुख़ारी व मुस्लिम व तिर्मिज़ी और दलाइले अबी नुऐ़म व दलाइले बैहक़ी और त़बरानी देखो। 12 मिन्ह

3 ......الاصابة فی تمييز الصحابة، ٢٧٧۔انس بن مالك، ج١، ص٢٧٦۔٢٧٧۔ علميه

4 ...जन्नत।

www.dawateislami.net

अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाग़ में खजूरों के दरख़्त साल में दो दफ़्आ़ फल देते। इन की अवलाद सो से ज़ियादा थी। एक कम सो बरस की उ़म्र पाई। अख़ीर उ़म्र में फ़रमाते थे कि मुझे उम्मीद है कि ह़स्बे दुआ़ए जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं बिहिश्त में आप का रफ़ीक़ भी होऊंगा।

इसी त़रह़ हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई थी कि **अल्लाह** तुझे बरकत दे। इस दुआ़ की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तिजारत में इस क़दर नफ़्अ़ दिया कि जब सिने 31 हिजरी में इन्हों ने वफ़ात पाई तो इन के तर्के का सोना कुल्हाड़ियों से खोदा गया यहां तक कि कसरते कार से हाथ ज़ख़्मी हो गए और इन की चार बीवियों में से हर एक को अस्सी हज़ार दीनार मिले। इन्हों ने वसिय्यत की थी कि एक हज़ार घोड़े और पचास हज़ार दीनार फ़ी सबीलिल्लाह ख़ैरात कर दिये जाएं। येह तमाम इ़लावा उन सदक़ात के था जो इन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में किये। चुनान्चे, एक रोज़ तीस गुलाम आज़ाद किये। एक मरतबा सात सो ऊंटों का कारवां मअ़ मालो अस्बाब तसद्दुक़ कर दिया। एक दफ़्आ़ अपना आधा माल राहे ख़ुदा में दे दिया फिर चालीस हज़ार दीनार फिर पांच सो घोड़े फिर पांच सो ऊंट तसद्दुक़ किये।[1]

जंगे उहुद में ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जनाबे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे बैठे हुवे तीर चला रहे थे और यूं कह रहे थे। "या **अल्लाह** येह तेरा तीर है इस से तू अपने दुश्मन को हलाक कर।" और हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : "या **अल्लाह** ! इस का निशाना दुरुस्त कर दे और इस की दुआ़ क़बूल कर ले।"[2] आप की दुआ़ से ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात बन गए जो दुआ़ करते क़बूल होती और जो तीर फेंकते वोह कभी ख़त़ा न करता।

इसी त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई थी कि या **अल्लाह** ! इस्लाम को उ़मर बिन अल ख़त़्त़ाब या अ़म्र बिन हिशाम (अबू जह्ल) के साथ इ़ज़्ज़त दे।[3] येह दुआ़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में क़बूल हुई वोह ईमान लाए और उस दिन से इस्लाम को इ़ज़्ज़त व ग़लबा ह़ासिल हुवा।

---

1 ......اسد الغابة، ٣٣٦٤۔عبدالرحمن بن عوف، ج٣، ص٤٩٦۔٥٠٠۔علمیه

2 ......المستدرك على الصحيحين، كتاب المغازى و السرايا، ذكر رمية سعد يوم احد...الخ، الحديث: ٤٣٧٠، ج٣، ص٥٦٦۔علمیه

3 ......سنن الترمذى، كتاب المناقب، باب فى مناقب ابى حفص عمر بن الخطاب، الحديث: ٣٧٠٣، ج٥، ص٣٨٤۔علمیه

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के ह़क़ में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की थी कि "या **अल्लाह** ! इस को दीन में फ़क़ीह बना दे।"(1) इस दुआ़ की बरकत से हज़रते इब्ने अ़ब्बास रईसुल मुफ़स्सिरीन और ह़बरुल उम्मत बन गए।

एक रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी इस दुआ़ के तमाम होने तक अपना कपड़ा बिछाए रखेगा वोह मेरी अह़ादीस में से कभी कुछ न भूलेगा। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि मेरे पास एक कमली के सिवा कोई कपड़ा न था मैं ने कम्ली ही बिछा दी यहां तक कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दुआ़ तमाम की फिर मैं ने अपनी कमली लपेट कर अपने सीने से लगा दी। क़सम है उस ज़ात की जिस ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ दे कर भेजा है कि मैं आप की अह़ादीस को आज तक नहीं भूला।(2)

जब ह़ज़रते तुफ़ैल बिन अ़म्र दौसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर इस्लाम लाए तो उन्हों ने यूं अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! मेरी क़ौम मेरी इत़ाअ़त करती है। मैं उस के पास जाता हूं और उस को दा'वते इस्लाम देता हूं आप दुआ़ फ़रमाएं कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे ऐसी निशानी अ़त़ा करे जो उन के बर ख़िलाफ़ मेरी मुआ़विन हो।" हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई कि या **अल्लाह** ! इस के लिये एक निशानी पैदा कर दे। येह सुन कर मैं अपनी क़ौम की त़रफ़ आया जब मैं घाटिये कुदाअ(3) में पहुंचा तो मेरी दोनों आंखों के दरमियान चराग़ की मानिन्द एक नूर पैदा हुवा। मैं ने दुआ़ की : या **अल्लाह** ! इस नूर को मेरी पेशानी के सिवा किसी और जगह पैदा कर दे क्यूंकि मैं डरता हूं कि मेरी क़ौम इस को मेरी पेशानी में मुस्ला ख़याल करेगी। पस वोह नूर मेरे चाबुक के सिरे पर लटकती हुई क़िन्दील की त़रह़ हो गया। फिर मैं ने अपनी क़ौम को दा'वते इस्लाम दी मगर वोह ईमान न लाए। मैं ने

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب وضع الماء عند الخلاء، الحدیث:۱۴۳، ج۱، ص۷۴۔علمیه

2 ......مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، باب فی المعجزات۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الفضائل و الشمائل، باب فی المعجزات، الحدیث: ۵۸۹۶، ج۲، ص۳۸۷۔علمیه)

3 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "घाटिये कुदार" लिखा है येह हमें नहीं मिला, अलबत्ता अल ख़साइसुल कुब्रा और दीगर कुतुब में इस त़रह़ है "حتی اذا کنت بثنیۃ کداء وقع نور بین عینی" लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने इस वादी का नाम "कुदार" के बजाए "कुदाअ" लिखा है। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि क़बीलए दौस ने मेरी इत़ाअ़त से इन्कार कर दिया है आप उन पर बद दुआ़ फ़रमाएं। आप ने बजाए बद दुआ़ के दुआ़ए हिदायत फ़रमाई और मुझ से इरशाद फ़रमाया कि उन को नर्मी से दा'वते इस्लाम दो। मैं ता'मीले इरशाद करता रहा यहां तक कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीने में तशरीफ़ ले आए फिर मैं अपनी क़ौम के सत्तर या अस्सी अश्ख़ास के साथ जो ईमान लाए थे ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा।[1]

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मैं अपनी मां को इस्लाम की दा'वत देता हूं मगर वोह क़बूल नहीं करतीं, आप दुआ़ फ़रमाएं। हुज़ूर ने येह सुन कर दुआ़ फ़रमाई और वोह ईमान लाई। जैसा कि पहले आ चुका है।

ह़ज़रते नाबिग़ा (नाबिग़ा बनी जा'दा) बयान करते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शे'र सुनाया। आप ने पसन्द फ़रमाया और मेरे ह़क़ में यूं दुआ़ फ़रमाई : "**अल्लाह** तेरा दांत न गिराए।" ह़ज़रते नाबिग़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की उ़म्र सो साल से ज़ाइद हो गई मगर आप का कोई दांत न गिरा।[2]

ह़ज़रते साबित बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरा एक पाउं लंगड़ा है ज़मीन पर नहीं लगता।" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई वोह पाउं चंगा[3] हो गया और दूसरे की त़रह़ ज़मीन पर बराबर लगने लगा।[4]

ह़ज़रते उ़र्वतुल बारिक़िय्य رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई कि या **अल्लाह** ! इस के सौदे में बरकत दे। इस के बा'द ह़ज़रते उ़र्वा जो चीज़ ख़रीदते ख़्वाह वोह मिट्टी हो उस में नफ़्अ़ ही होता।[5]

---

1 ......الخصائص الکبریٰ،باب ما وقع فی اسلام الطفیل بن عمرو الدوسی،ج۱،ص۲۲۵۔علمیه

2 ......دلائل النبوۃ للبیهقی،باب ما جاء فی دعائه لنابغة...الخ،ج٦،ص۲۳۲۔علمیه

3 .....ठीक।

4 ......الخصائص الکبری للسیوطی،باب دعائه لثابت بن زید،ج۲،ص۲۸۳۔علمیه

5 ......دلائل النبوۃ للبیهقی،باب ما جاء فی دعائه لعروۃ البارقی...الخ،ج٦،ص۲۲۰۔علمیه

www.dawateislami.net

हिजरत के वक़्त जब हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ारे सौर से निकल कर मदीने की त़रफ़ रवाना हुवे तो सुराक़ा बिन मालिक घोड़े पर सुवार आप के तआ़क़ुब में बिल्कुल क़रीब आ गया। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें तो आ लिया। आप ने फ़रमाया कि ग़म न कर क्यूंकि **अल्लाह** हमारे साथ है। जब दो तीन नेज़े का फ़ासिला रह गया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई कि या **अल्लाह** ! तू जिस त़रह़ चाहे हम को बचा। इस पर सुराक़ा का घोड़ा पेट तक ज़मीन में धंस गया। येह देख कर सुराक़ा ने अ़र्ज़ किया : या मुह़म्मद ! (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मैं जानता हूं कि येह आप का काम है। आप इस मुसीबत से मेरी नजात के लिये दुआ़ फ़रमाएं। **अल्लाह** की क़सम ! मैं किसी को तआ़क़ुब में आप तक नहीं आने दूंगा। चुनान्चे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ से सुराक़ा ने नजात पाई और वोह वापस चला गया। रास्ते में जिस से मिलता उसे येह कह कर मोड़ लेता कि मैं ने बहुत ढूंडा ह़ज़रत इधर नहीं हैं।[1]

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी से पहले मदीने में त़ाऊ़न व वबा सब से ज़ियादा रहा करती थी। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ऐसी दूर हुई कि आज तक वोह मुबारक शहर वबा व त़ाऊ़न से मह़फ़ूज़ है और मह़फ़ूज़ रहेगा।

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबू लहब के बेटे उ़तैबा पर बद दुआ़ फ़रमाई चुनान्चे, उस को एक शेर ने फाड़ डाला[2] जैसा कि आगे मुफ़स्सल बयान होगा।

जब क़ुरैश ने ईमान लाने से इन्कार कर दिया तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : या **अल्लाह** ! इन पर ह़ज़रते यूसुफ़ के सात सालों की त़रह़ सात साल क़ह़त़ ला, चुनान्चे, ऐसा ही हुवा और यहां तक नौबत पहुंची कि क़ुरैश ने मुर्दार और हड्डियां खाईं। अबू सुफ़्यान ने आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : या मुह़म्मद ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप की क़ौम हलाक हो गई **अल्लाह** से दुआ़ कीजिये कि क़ह़त़ दूर हो जाए। पस आप ने दुआ़ फ़रमाई और वोह मुसीबत दूर हो गई।[3]

---

1 ......دلائل النبوة للبيهقى،باب اتباع سراقة بن مالك...الخ،ج٢،ص٤٨٤ـ٤٨٥ ملتقطاً وملخصاً۔علميه

2 ......شرح الزرقانى على المواهب،الفصل الثانى فى ذكر اولاده الكرام،ج٤،ص٣٢٥۔علميه

3 ......صحیح بخاری،تفسیر سورۂ دخان۔ ...... (صحيح البخارى،كتاب التفسير،سورة الدخان،الحديث:٤٨٢٢ـ٤٨٢٤،ج٣، ص٣٢٣ملتقطاً۔علميه)

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस्रा परवेज़ को जो दा'वते इस्लाम का ख़त़ लिखा था, उस ने उसे पढ़ कर फाड़ दिया, जब आप ने येह सुना तो फ़रमाया कि उस का मुल्क पारा पारा हो जाए। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि फ़ारिस से अकासिरा की सल्त़नत हमेशा के लिये जाती रही।[1]

ह़कम इब्ने अबिल आ़स ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इस्तिहज़ा करने के लिये अपना मुंह टेढ़ा कर लिया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इसी त़रह़ रहे। चुनान्चे, वोह कज दहान ही रहा यहां तक कि मर गया।[2]

जनाबे सरवरे काइनात عَلَیْہِ اُلُوْفُ التَّحِیَّۃِ وَالصَّلٰوۃ ने मुह़ल्लिम बिन जस्सामा[3] को एक सिरया में भेजा था जिस पर आ़मिर बिन अल अज़्बत़ को अमीर बनाया था। जब वोह एक वादी के दरमियान पहुंचे तो मुह़ल्लिम ने आ़मिर को एक मुआ़मले के सबब जो दोनों में था धोके से क़त्ल कर दिया। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस की इत्त़िलाअ़ हुई तो आप ने दुआ़ फ़रमाई कि मुह़ल्लिम को ज़मीन क़बूल न करे। इस दुआ़ के सात दिन बा'द मुह़ल्लिम मर गया जब उस को दफ़्न किया गया तो ज़मीन ने उस को फेंक दिया। इसी त़रह़ कई दफ़्आ़ किया गया मगर ज़मीन ने क़बूल न किया आख़िरे कार इस को एक ग़ार में फेंक दिया गया और पथ्थरों की एक दीवार उस पर बना दी गई।[4]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक दफ़्आ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में क़ह़त़ पड़ा। जुमुआ़ के दिन हुज़ूर मिम्बर पर ख़ुत़बा पढ़ रहे थे कि एक बादिय्या नशीन अ़रब[5] आप के पास आया और यूं अ़र्ज़ करने लगा : "या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे माल ज़ाएअ़ हो गए और बाल बच्चे भूके मर रहे हैं। आप हमारे ह़क़ में दुआ़ फ़रमाएं।" येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों हाथ उठाए उस वक़्त आस्मान पर कोई बादल नज़र न आता था।[6] क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी

---

1 ......دلائل النبوة للبیهقی،باب ما جاء فی الجمع بین قوله: اذا هلك قیصر...الخ،ج٤،ص٣٩٣۔٣٩٤ملتقطاً۔علمیه

2 ......الخصائص الکبریٰ، باب الآیة فی الحکم ابن ابی العاص،ج٢،ص١٣٢۔علمیه

3 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "मुह़ल्लिम बिन जश्शामा" लिखा है जब कि "दलाइलुन्नुबुव्वत लिल बैहक़ी" और दीगर कुतुब में "मुह़ल्लिम बिन जस्सामा" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "मुह़ल्लिम बिन जश्शामा" के बजाए "मुह़ल्लिम बिन जस्सामा" लिखा है। **इल्मिय्या**

4 ......دلائل النبوة للبیهقی،باب: السریة التی قتل فیها محلم...الخ،ج٤،ص٣٠٦۔علمیه

5 .....अ़रब के देहात में रहने वाला।

6 ....या'नी मदीने के अत़राफ़ में बादल था और मींह बरसता था मगर मदीने पर न बादल था न मींह बरसता था। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

जान है आप ने हाथ न छोड़े थे कि पहाड़ों की मिस्ल बादल उठा। फिर आप मिम्बर से न उतरे यहां तक कि मैं ने देखा कि बारिश का पानी आप की रीश मुबारक पर से नीचे गिर रहा है। इस त़रह़ जुमुअ़ए आयिन्दा तक बारिश होती रही। फिर वोही बादिय्या नशीन अ़रब आया और अ़र्ज़ करने लगा : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे मकानात गिर गए।" आप ने हाथ उठा के दुआ़ फ़रमाई : "या **अल्लाह** ! हमारे गिर्द मींह बरसा और हमारे मकानात से दूर रख।" पस जिस त़रफ़ आप इशारा फ़रमाते बादल दूर हो जाता यहां तक कि मदीना गोल गढ़े की मानिन्द हो गया और वादिये क़नात[1] में एक महीने तक पानी जारी रहा जिस त़रफ़ से कोई आता बाराने कसीर की ख़बर लाता।[2]

जब मुसलमान ग़ज़्वए तबूक[3] के लिये निकले तो गर्मी की शिद्दत थी। एक पड़ाव पर प्यास की शिद्दत से येह नौबत पहुंची कि ऊंट ज़ब्ह़ करते उस की लीद निचोड़ कर पानी पी लेते और बक़िय्या को अपने जिगर पर बांधते। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि दुआ़ फ़रमाइये। चुनान्चे, हुज़ूरे अन्वर की दुआ़ से पानी बरसा और मुसलमानों ने अपने बरतन भर लिये। फिर जो देखा तो येह बारिश हुदूदे लश्कर से मुतजाविज़ न थी।[4]

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नाबीना को अपनी ज़ात शरीफ़ से तवस्सुल का त़रीक़ बताया उस ने ऐसा ही किया और बीना हो गया,[5] जैसा कि आगे बित्तफ़्सील आएगा।[6] हम इस उ़न्वान को एक मश्हूर वाक़िए पर ख़त्म करते हैं जिस की कैफ़िय्यत ज़ैल में दर्ज है।

नजरान के नसारा के साथ मुबाहला

नजरान मक्कए मुशर्रफ़ा से जानिबे यमन सात मन्ज़िल के फ़ासिले पर एक बड़ा शहर है जो नजरान बिन ज़ैद बिन यश्जुब बिन या'रुब के नाम से मौसूम है। येह शहर मुल्के अ़रब में ईसाई मज़हब का मर्कज़ था और 73 गाऊं इस से मुतअ़ल्लिक़ थे। जनाबे सरवरे दो

1...क़नात एक वादी का नाम है जो ताइफ़ की त़रफ़ से आती है और कोहे उहुद में शुहदा की क़ब्रों तक पहुंचती है। 12 मिन्ह

2 ......صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب الاستسقاء فی الخطبة...الخ، الحدیث:۹۳۳، ج۱، ص۳۲۱۔علمیه

3 ......صحیح بخاری، تفسیر سورۂ دخان۔

4 ......المواهب اللدنیة مع شرح زرقانی، المقصد الرابع...الخ، تفجر الماء ببرکته...الخ، ج۷، ص۳۶۔۳۷ملخصاً۔علمیه

5 ......المعجم الکبیرللطبرانی، باب ما اسند الی عثمان بن حنیف، الحدیث:۸۳۱۱، ج۹، ص۳۱۔علمیه

6...येह वाक़िआ़ सफ़ह़ा नम्बर 708 पर मुलाहज़ा फ़रमाइये !

www.dawateislami.net

आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल से एक साल पेशतर यहां के ईसाइयों का एक वफ़्द मदीनए मुनव्वरा में आया। जब वोह अ़स्र के बा'द मस्जिदे नबवी में दाखि़ल हुवे तो उन की नमाज़ का वक़्त आ पहुंचा मस्जिद में उन्हों ने शर्क़ रू हो कर(1) नमाज़ अदा की। सहा़बए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मन्अ़ करने लगे मगर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तालीफ़े क़ुलूब(2) और तवक़्क़ोए इस्लाम को मद्दे नज़र रख कर उन से तअ़र्रुज़ करने(3) से मन्अ़ फ़रमाया। उस वफ़्द में साठ आदमी थे जिन में चौबीस उन के अशराफ़(4) में से थे और उन चौबीस में से तीन मरजए कुल थे।(5) अ़ब्दुल मसीह़ जिन का लक़ब आ़क़िब था और सय्यिद जिस का नाम ऐहम और ब क़ौले बा'ज़ शुरह़बील था और अबू ह़ारिसा बिन अ़ल्क़मा जो उन का उस्क़ुफ़ (बड़ा पादरी) था। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को दा'वते इस्लाम दी मगर वोह रू बराह न हुवे(6) बल्कि मुबाह़सा करने लगे और आखि़रे कार कहने लगे कि अगर ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) खुदा का बेटा नहीं तो बताओ उन का बाप कौन था? इस के जवाब में येह आयतें नाज़िल हुईं :

اِنَّ مَثَلَ عِیْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ(۵۹) اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِیْنَ(۶۰) فَمَنْ حَآجَّكَ فِیْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَ اَبْنَآءَكُمْ وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَكُمْ وَ اَنْفُسَنَا وَ اَنْفُسَكُمْ۫ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِیْنَ(۶۱) (آل عمران، ع٦)

*बेशक ईसा की मिसाल **अल्लाह** के नज़्दीक जैसी मिसाल आदम की बनाया उस को मिट्टी से फिर कहा कि हो जा वोह हो गया ह़क़ बात है तेरे रब की त़रफ़ से पस तू मत रह शक में फिर जो झगड़ा करे तुझ से इस बात में बा'द इस के कि पहुंच चुका तुझ को इ़ल्म तो तू कह आओ बुलाएं हम अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपनी जानों को और तुम्हारी जानों को फिर दुआ़ करें और ला'नत डालें **अल्लाह** की झूटों पर।*(7)

1.....मशरिक़ की त़रफ़ मुंह कर के। 2.....दिल जूई। 3.....रोकने। 4.....मुअ़ज़्ज़ज़ीन।
5.....या'नी तमाम ईसाई इन्हीं की त़रफ़ रुजूअ़ करते थे। 6.....आमादा न हुवे।
7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ईसा की कहावत **अल्लाह** के नज़्दीक आदम की त़रह़ है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है ऐ सुनने वाले येह तेरे रब की त़रफ़ से ह़क़ है तू शक वालों में न होना फिर ऐ मह़बूब जो तुम से ईसा के बारे में हु़ज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इ़ल्म आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औ़रतें और तुम्हारी औ़रतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत डालें। (پ٣، آل عمرٰن:٥٩-٦١) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इन आयात का ख़ुलासए मत़लब येह है कि ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का न बाप था न मां। अगर ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का बाप न हो तो क्या अ़जब है। अगर नसारा इस क़दर समझाने पर भी क़ाइल न हों तो इन के साथ क़सम करो कि येह भी एक सूरत फ़ैसले की है कि दोनों अपनी जान से और अवलाद से ह़ाज़िर हों और दुआ़ करें कि जो कोई हम में से झूटा है उस पर ला'नत और अ़ज़ाब पड़े।

अहले इस्लाम इस त़रह़ के फ़ैसले को मुबाहला कहते हैं और येह क्या ख़ूब फ़ैसले का ढंग है कि सिर्फ़ आ़दिले ह़क़ीक़ी जो बे रू व रिआ़यत और बिग़ैर भूल चूक के फ़ैसला करने वाला है फ़ैसला कर दे। इस इरशादे इलाही के मुत़ाबिक़ ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन उ़लमाए नसारा से मुबाहला के लिये कहा। उन्हों ने मोहलत मांगी। दूसरे रोज़ सुब्ह़ को ह़ज़रत ने ह़ज़रते इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को जो ख़ुर्द साल[1] थे हाथ से पकड़ा आप के पीछे ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और उन के पीछे ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم मक़ामे मुबाहला को रवाना हुवे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि जब मैं दुआ़ करूं तुम आमीन कहना। पंजतन पाक को देख कर अबू ह़ारिसा ने अपने साथियों से कहा :

"मैं[2] वोह सूरतें देखता हूं कि अगर वोह ख़ुदा से दुआ़ करें कि पहाड़ अपनी जगह से टल जाए तो बेशक उन की दुआ़ से टल जाएगा इस लिये तुम मुबाहला न करो, वरना हलाक हो जाओगे और रूए ज़मीन पर क़ियामत तक कोई ईसाई न रहेगा। **अल्लाह** की क़सम ! तुम्हें उस की नबुव्वत मा'लूम हो चुकी है और वोह तुम्हारे साह़िब (ईसा) के बारे में क़ौले फ़ैसल लाया है। **अल्लाह** की क़सम ! जिस क़ौम ने पैग़म्बर से मुबाहला किया वोह हलाक हो गई।"

येह सुन कर ईसाई डर गए और मुबाहला की जुरअत न कर सके बल्कि सुल्ह़ कर ली और जिज़्या देना क़बूल किया। ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर वोह मुबाहला करते तो बन्दर और सुव्वर बन जाते और येह जंगल उन पर आग बरसाता, **अल्लाह** नजरान और उस के बाशिन्दों को तबाह कर देता यहां तक कि कोई परन्दा भी दरख़्त पर बाक़ी न रहता।[3]

1.....कमसिन।

2.....زرقانی علی المواہب بروایت ابن ابی شیبۃ وابی نعیم وغیرہما، جزء رابع، ص ۴۳۔

3.....इब्ने सा'द की रिवायत में है कि आ़क़िब और सय्यिद कुछ मुद्दत बा'द जल्द मदीना आए और ह़ुज़ूर के दस्ते मुबारक पर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे। 12 मिन्ह (المواهب اللدنية وشرح زرقاني، المقصد الثاني، الوفد الرابع عشر، ج٥، ص١٨٦-١٩٠ ملتقطاً وملخصاً۔علمیه)

www.dawateislami.net

नसारा का इस त़रह़ मुबाहले से गुरेज़ साफ़ बता रहा है कि आ'दाए इस्लाम भी हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ की इजाबत के क़ाइल थे। इस मुबाहले से एक और बड़ा नतीजा येह निकला कि अगर दीने इस्लाम खुदा की त़रफ़ से न होता और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबिय्ये बर ह़क़ न होते तो हरगिज़ अपने दा'वे पर खुदा के हुज़ूर झूटे पर ला'नत और ग़ज़बे इलाही नाज़िल होने की बद दुआ़ करने का ह़ौसला और जुरअत न कर सकते क्या कोई अपनी चालाकी से खुदा को भी धोका दे सकता है? अगर ऐसा हो सकता तो फिर ईसाई उ़लमा क्यूं दुआ़ मांगने की जुरअत न कर सके?

उंगलियों से चश्मों की त़रह़ पानी जारी होना

ह़ज़रते सालिम[1] बिन अल जा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि हुदैबिय्या के दिन लोगों को प्यास लगी। नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक छागल थी आप ने उस से वुज़ू फ़रमाया तो लोग पानी के लिये आप की त़रफ़ दौड़े। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया: तुम्हें क्या हुवा? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि आप की छागल के पानी के सिवा हमारे पास न वुज़ू करने को है न पीने को। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक छागल पर रखा। पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उंगलियों से चश्मों की त़रह़ पानी निकलने लगा। हम ने पिया और वुज़ू किया। मैं ने ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा: तुम उस दिन कितने थे? ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाब दिया कि हम डेढ़ हज़ार थे अगर एक लाख होते तो तब भी वोह पानी किफ़ायत करता।[2]

येह मो'जिज़ा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुतअ़द्दिद दफ़्आ़ मुख़्तलिफ़ जगहों में एक जमाअ़ते कसीरा के सामने ज़ुहूर में आया और इस के रावी ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अनस बिन मालिक, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, अबू या'ला अन्सारी, ज़ैद बिन अल ह़ारिस अस्सदाई और अबू अ़मरह अन्सारी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) हैं। पस येह क़त़ईस्सुबूत है।[3] नज़रे बर इख़्तिसार यहां सिर्फ़ एक रिवायत पर किफ़ायत की गई है। येह मो'जिज़ा भी शक़्कुल क़मर की त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस में से है।

---

1 ......صحیح بخاری، باب علامات النبوت فی الاسلام۔

2 ......صحيح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، الحديث: ٣٥٧٦، ج٢، ص٤٩٣۔علميه

3 .....यक़ीनी त़ौर पर साबित है।

www.dawateislami.net

हैवानात की इत़ाअ़त और कलाम

जिस त़रह़ वोह इन्सान जिन के नाम पर कुरआए सआ़दत पड़ा हुवा है हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त के मुत़ीअ़ व मुसख़्ख़र[1] हैं इसी त़रह़ **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने हैवानात को ब त़रीक़े ए'जाज़ व ख़र्क़े आ़दत[2] हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत़ीअ़ व मुसख़्ख़र बनाया। अज़ां जुम्ला[3] चन्द मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं।

ऊंट की शिकायत और सजदा

ह़ज़रते अनस[4] बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि अन्सार में से एक के हां एक ऊंट था जिस से आब कशी किया करते थे।[5] वोह सरकश हो गया और अपनी पीठ पर पानी न उठाता था। ऊंट के मालिक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ करने लगे कि हमारे हां एक ऊंट है जिस से हम आब कशी किया करते थे वोह सरकश हो गया है अपनी पीठ पर पानी नहीं उठाता हमारी खजूरें और खेती सूख रही है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि उठो ! वोह उठे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ एक बाग़ में दाख़िल हुवे। वोह ऊंट उस बाग़ के एक गोशे में था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ रवाना हुवे, अन्सार ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह ऊंट काटने वाले कुत्ते की मानिन्द हो गया है हमें डर है कि कहीं आप को तक्लीफ़ पहुंचे। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे इस से कुछ डर नहीं। जब ऊंट ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो आप की त़रफ़ आया यहां तक कि आप के आगे सजदे में गिर पड़ा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की पेशानी के बाल पकड़ लिये और वोह ऐसा मुत़ीअ़ हुवा कि कभी न हुवा था यहां तक कि आप ने उस को काम पर लगा दिया। आप के अस्ह़ाब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह हैवाने ला या'क़ल[6] आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सजदा करता है और हम अ़क़्ल वाले हैं इस लिये हम इस की निस्बत आप को सजदा करने के ज़ियादा सज़ावार[7] हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इन्सान को सज़ावार नहीं कि दूसरे इन्सान को सजदा करे

---

1 ..... इत़ाअ़त गुज़ार। 2 .....बत़ौरे मो'जिज़ा। 3 .....इन में से।

4 .....इस ह़दीस को इमाम अह़मद व नसाई ने रिवायत किया है। (मवाहिबे लदुन्निय्या) और ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम ने भी दलाइल में नक़्ल किया है। 12 मिन्ह

5 .....उस पर पानी लाद कर लाया करते थे। 6 .....बे अ़क़्ल जानवर। 7 .....ह़क़दार।

www.dawateislami.net

अगर एक इन्सान का दूसरे इन्सान को सजदा करना जाइज़ होता तो मैं हुक्म देता कि औ़रत अपने ख़ावन्द को सजदा करे क्यूंकि ख़ावन्द का औ़रत पर बड़ा ह़क़ है।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह(2) बिन जा'फ़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सब से पसन्दीदा शै जिस को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ज़ाए ह़ाजत के लिये औट बनाया करते थे कोई बुलन्द चीज़ या दरख़्ताने ख़ुर्मा का मज्मअ़ था। एक दफ़्अ़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अन्सार में से एक शख़्स के बाग़ में दाख़िल हुवे। क्या देखते हैं कि उस बाग़ में एक ऊंट है, उस ऊंट ने जब नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो रो पड़ा और उस की आंखों से आंसू बहने लगे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के पास आए और उस के पसे गोश पर(3) अपना मुबारक हाथ फेरा वोह चुप हो गया आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस ऊंट का मालिक कौन है? अन्सार में से एक नौजवान ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! येह ऊंट मेरा है। आप ने फ़रमाया : क्या तू इस चौपाये के बारे में जिस का **अल्लाह** ने तुझे मालिक बनाया है **अल्लाह** से नहीं डरता इस ने मेरे पास शिकायत की है कि तू इसे भूका रखता है और कसरते इस्ति'माल से इसे तक्लीफ़ देता है।(4)

बकरी की ताअ़त और सजदा

ह़ज़रते अनस(5) बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अन्सार के एक बाग़ में दाख़िल हुवे और आप के हमराह ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और अन्सार के चन्द अश्ख़ास थे। उस बाग़ में एक बकरी थी उस ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे सजदा किया। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह! इस बकरी की निस्बत हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सजदा करने के ज़ियादा सज़ावार हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत को जाइज़ नहीं कि एक दूसरे को सजदा करे। अगर एक का दूसरे को सजदा करना जाइज़ होता तो मैं हुक्म देता कि औ़रत अपने ख़ावन्द को सजदा करे।(6)

1 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى،المقصد الرابع ...الخ،سجود الجمل...الخ، ج٦،ص ٥٣٨-٥٤٠ـعلميه

2 .....इस ह़दीस को अबू दावूद ने रिवायत किया है। (تیسیر الوصول۔مواہب لدنیہ) 12 मिन्ह

3 .....कान के पीछे वाले हिस्से पर।

4 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى،المقصد الرابع ...الخ،سجود الجمل...الخ، ج٦،ص ٥٤٣ ـعلميه

5 .....दलाइले ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म, स. 135। इमाम अह़मद व बज़्ज़ार ने भी इसे रिवायत किया है।
(نسیم الریاض شرح شفائے قاضی عیاض، جزء ثالث،ص۸۰) 12 मिन्ह

6 ......دلائل النبوة لابى نعيم،الفصل الثامن عشر،الحديث:٢٧٦،الجزء٢،ص٢٢٦ـعلميه

www.dawateislami.net

उम्मे मा'बद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बकरी का क़िस्सा[1] ह़ालाते हिजरत में आ चुका है। दूध न देती थी हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उस ने दूध दिया।[2]

भेड़िये की शहादत और ता़अ़त

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक भेड़िया बकरियों के रेवड़ की त़रफ़ आया। उस ने बकरियों में से एक बकरी पकड़ ली। चरवाहे ने भेड़िये का पीछा किया यहां तक कि बकरी उस से छुड़ा ली। पस भेड़िया एक रैत के टीले पर चढ़ गया और कुत्ते की त़रह़ अपने चूतड़ों पर बैठ गया और अपनी दुम को अपने पैरों के दरमियान कर लिया और बोला : मैं ने रिज़्क़ का क़स्द किया जो **अल्लाह** ने मुझे दिया और मैं ने उसे ले लिया फिर तू ने उसे मुझ से छीन लिया। चरवाहे ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने आज की त़रह़ किसी दिन भेड़िये को कलाम करते नहीं देखा। भेड़िये ने कहा : इस से अ़जीब तर एक शख़्स (ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का ह़ाल है जो नख़्लिस्तान में ज़ूह़र्रा के दरमियान या'नी मदीने में है तुम्हें ख़बर देता है उस की जो गुज़र चुका और जो तुम्हारे बा'द होने वाला है। (और लोग उस उम्मी लक़ब नबी का येह मो'जिज़ा देख कर भी ईमान नहीं लाते) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल है कि चरवाहा यहूदी था उस ने जनाबे पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर इस वाक़िए की ख़बर दी और मुसलमान हो गया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की तस्दीक़ की। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस त़रह़ के उमूर क़ियामत की निशानियों में से हैं क़रीब है कि एक शख़्स अपने घर से निकलेगा और वापस न आएगा यहां तक कि उस के हर दो ना'ल और उस का ताज़ियाना बताएगा कि उस की ग़ैर ह़ाज़िरी में उस के अहले ख़ाना ने क्या अ़मल किया है।[3]

1.....इस क़िस्से को शर्हुस्सुन्नह में और इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने इस्तीआ़ब में और इब्ने अल जौज़ी ने किताबुल वफ़ा में नक़्ल किया है। (मिश्कात बाबे फ़िल मो'जिज़ात, फ़स्ले सालिस) 12 मिन्ह

2.....येह वाक़िआ़ सफ़ह़ा नम्बर 109 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये !

3.....मिश्कात, बाबे फ़िल मो'जिज़ात ब ह़वाला शर्हुस्सुन्नह। ख़साइसे कुब्रा, जुज़ए सानी, स. 26 में है कि इस ह़दीस को इमाम अह़मद व ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म ने ब सनदे सह़ीह़ रिवायत किया है। 12 मिन्ह

(مشکاۃ المصابیح،کتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات،فصل الثانی، الحدیث: ۵۹۲۷،ج۲، ص۳۹۴-۳۹۵۔علمیه)

www.dawateislami.net

हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि एक चरवाहा[1] ह़र्रा में बकरियां चरा रहा था नागाह एक भेड़िया उस की बकरियों में से एक बकरी को पकड़ने आया। चरवाहा बकरी और भेड़िये के दरमियान ह़ाइल हो गया। भेड़िया अपनी दुम पर कुत्ते की त़रह़ बैठ गया फिर चरवाहे से बोला : क्या तू अल्लाह से नहीं डरता कि मेरे रिज़्क़ के दरमियान जो अल्लाह ने मेरे क़ाबू में कर दिया है ह़ाइल होता है ? चरवाहे ने कहा : तअ़ज्जुब है कि भेड़िया इन्सान की त़रह़ कलाम करता है। भेड़िये ने कहा : देख ! मैं तुझे इस से भी अ़जीब बात बताता हूं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ूहर्रा[2] (संगलाख़ ज़मीनों) के दरमियान (मदीने में) लोगों से गुज़श्ता उम्मतों के ह़ाल बयान फ़रमा रहे हैं। (और वोह उस उम्मी लक़ब नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा देख कर भी ईमान नहीं लाते) पस चरवाहे ने बकरियां हांक लीं यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा में आया और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर भेड़िये का क़िस्सा बयान किया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सच है। देखो ! दरिन्दों का इन्सान से कलाम करना क़ियामत की निशानियों में से है, क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है ! क़ियामत न आएगी यहां तक कि दरिन्दे इन्सान से कलाम करेंगे और इन्सान से उस के जूते का तस्मा और उस के कोड़े का सिरा कलाम करेगा और इन्सान को उस की रान ख़बर देगी जो उस की बीवी ने उस की ग़ैर ह़ाज़िरी में किया।[3]

हज़रते ह़म्ज़ा बिन अबू उसैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक शख़्स के जनाज़े में निकले देखते क्या हैं कि एक भेड़िया रास्ते में पाउं फैलाए बैठा है रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह तुम से अपना ह़िस्सा त़लब करता है इस के लिये कुछ मुक़र्रर करो। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप की क्या राए है ? आप ने फ़रमाया : "हर ऊंट पर हर साल एक बकरी।" उन्हों ने अ़र्ज़

1.....बक़ौले वाक़िदी इस का नाम अहबान बिन औस अस्लमी था जो ह़र्रतुल वबरह में रेवड़ चरा रहा था। अहबाने मज़्कूर सह़ाबी हैं जिन्हों ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या के ज़माने में इन्तिक़ाल फ़रमाया। 12 मिन्ह

2.....ह़र्रतुल वबरह मदीनए मुनव्वरा से तीन मील के फ़ासिले पर एक मक़ाम का नाम है। देखो वफ़ाउल वफ़ा लिल अ़लामतुल समहूदी 12 मिन्ह

3 ......مشکوٰۃ بحوالہ ترمذی، باب اشراط الساعۃ۔......(الخصائص الکبری،ذکر معجزاته فی ضروب الحیوانات،باب قصة الذئب،
ج٢، ص١٠٢۔علمیه)

www.dawateislami.net

किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह तो बहुत है । आप ने भेड़िये की त़रफ़ इशारा फ़रमाया कि यहां से जल्दी चल दो । भेड़िया येह सुन कर चला गया ।[1]

शेर की ता़अ़त

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम ह़ज़रते सफ़ीना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मैं समन्दर में एक किश्ती पर सुवार हुवा वोह किश्ती टूट गई । पस मैं उस के एक तख़्ते पर चढ़ बैठा और एक बन[2] में जा निकला जिस में शेर थे नागाह एक शेर आया जब मैं ने उसे देखा तो मैं ने कहा : ऐ अबल ह़ारिस ![3] मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का आज़ाद कर्दा गुलाम सफ़ीना हूं । येह सुन कर शेर दुम हिलाता हुवा आया यहां तक कि मेरे पहलू में खड़ा हो गया फिर मेरे साथ चला यहां तक कि मुझे रास्ते पर डाल दिया फिर उस ने कुछ देर हल्की आवाज़ निकाली मैं समझा कि येह मुझे वदाअ़ करता है ।[4]

जब हिजरत के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोहे सौर के ग़ार में थे । उस ग़ार के मुंह पर मकड़ी ने जाला तना हुवा था और किनारे पर कबूतरी ने अन्डे दे रखे थे । कुफ़्फ़ार तआ़कुब में वहां पहुंचे । इस अ़जीब दरबानी व पासबानी को देख कर वापस हुवे और कहने लगे कि अगर ह़ज़रत इस में दाखि़ल होते तो मकड़ी जाला न बुनती और कबूतरी अन्डे न देती । अमसिलए मज़्कूरए बाला के इ़लावा हिरनी का क़िस्सा और सोसुमार[5] की ह़दीस मश्हूर है ।

नबातात का कलाम व ता़अ़त और सलाम व शहादत

जिस त़रह़ हैवानात हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अम्र के मुती़अ़ थे इसी त़रह़ नबातात भी आप के फ़रमां बरदार थे चुनान्चे, दरख़्तों का आप की खि़दमते अक़्दस में आना और सलाम करना और आप की रिसालत पर शहादत देना अह़ादीसे कसीरा से साबित है जिन में से सिर्फ़ दो तीन मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं ।

---

1 .....इस ह़दीस को ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म और इमाम बैहक़ी ने रिवायत किया है । خصائص کبریٰ، جزء ثانی، ص۶۳

(الخصائص الکبریٰ، ذکر معجزاتہ فی ضروب الحیوانات، باب قصۃ الذئب، ج۲، ص۱۰۴۔علمیہ)

2 .....जंगल ।

3 .....शेर की कुन्यत है । 12 मिन्हु

4 .....इस ह़दीस को इब्ने सा'द व अबू या'ला व बज़्ज़ार व इब्ने मुन्ज़िर व ह़ाकिम व बैहक़ी और अबू नुऐ़म ने नक़्ल किया है और ह़ाकिम ने सह़ीह़ कहा है और बग़वी व इब्ने अ़साकिर ने भी इस को नक़्ल किया है । خصائص کبریٰ، جزء ثانی، ص۶۵

(الخصائص الکبریٰ، ذکر معجزاتہ فی ضروب الحیوانات، باب قصۃ الاسد، ج۲، ص۱۰۸۔علمیہ)

5 .....गोह ।

www.dawateislami.net

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत[1] है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब मेरी त़रफ़ वह्य भेजी गई तो जिस पथ्थर और दरख़्त पर मेरा गुज़र होता था वोह कहता था : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله[2]

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे एक बादिया नशीन अ़रब[3] आप के सामने आया। जब वोह नज़्दीक हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि क्या तू ख़ुदा की वह्दानिय्यत और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की रिसालत की गवाही देता है ? उस ने कहा : आप जो कुछ फ़रमाते हैं उस पर कौन शहादत देता है ? आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह दरख़्त ! पस आप ने उसे बुलाया ह़ालांकि वोह वादी के किनारे पर था वोह ज़मीन को चीरता हुवा सामने आ खड़ा हुवा। आप ने तीन बार उस से शहादत त़लब की और उस ने तीनों बार शहादत दी कि वाक़ेअ़ में ऐसा ही है जैसा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया। फिर दरख़्त अपनी जगह पर चला गया।[4]

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत[5] है कि बनी आ़मिर बिन सअ़सआ़ में से एक बादिया नशीन अ़रब[6] नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आया और कहने लगा : मैं किस चीज़ से पहचानूं कि आप **अल्लाह** के रसूल हैं ? आप ने फ़रमाया : बता ! अगर मैं उस दरख़्ते ख़ुर्मा की शाख़ को बुला लूं तो क्या तू मेरी रिसालत की गवाही देगा ? उस ने अ़र्ज़ किया : हां ! पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शाख़ को बुलाया। वोह दरख़्त से उतरने लगी यहां तक कि ज़मीन पर गिरी और फुदकने लगी। ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म की रिवायत में है कि

1.....इस ह़दीस को बज़्ज़ार व अबू नुऐ़म ने रिवायत किया है। (مواہب لدنیہ) 12 मिन्ह

2 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقاني،المقصد الرابع كلام الشجر له...الخ،ج٦،ص٥١٣۔علميه

3.....अ़रब के देहात में रहने वाला।

4 ......مشکوٰۃ،باب فی المعجزات۔ ...... (مشكاة المصابيح،كتاب الفضائل و الشمائل،باب فى المعجزات،الحديث:٥٩٢٥، ج٢، ص٣٩٤۔علميه)

5.....इस ह़दीस को इमाम अह़मद ने और इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में और दारिमी व तिर्मिज़ी व ह़ाकिम व बैहक़ी व अबू नुऐ़म व अबू या'ला व इब्ने सा'द ने रिवायत किया है और तिर्मिज़ी और ह़ाकिम ने सह़ीह़ कहा है। (ख़साइसे कुब्रा, जुज़ सानी, स. 36) 12 मिन्ह

6.....अ़रब के देहात में रहने वाला।

www.dawateislami.net

वोह आप की त़रफ़ इस ह़ाल में आई कि सजदा कर रही थी और अपना सर उठा रही थी यहां तक कि वोह आप के पास पहुंच गई और आप के सामने खड़ी हो गई। नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अपनी जगह पर वापस चली जा। पस वोह अपनी जगह वापस चली गई। येह देख कर उस आ'राबी ने कहा : मैं गवाही देता हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं और ईमान ले आया।[1]

ह़ज़रते जाबिर[2] رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सैर की यहां तक कि हम एक फ़राख़ वादी में उतरे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ज़ाए ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले गए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई चीज़ न देखी जिस के साथ पर्दा कर लें नागाह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस वादी के एक किनारे दो दरख़्त देखे आप ने उन दो में से एक के पास क़दम रन्जा फ़रमाया और उस की एक शाख़ को पकड़ कर यूं इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** के इज़्न से मेरी फ़रमां बरदारी कर। उस दरख़्त ने आप की इस त़रह़ फ़रमां बरदारी की जैसे कि नकील वाला ऊंट शुतरबान की फ़रमां बरदारी करता है यहां तक कि आप दूसरे दरख़्त के पास आए और उस की एक शाख़ को पकड़ कर फ़रमाया : **अल्लाह** के इज़्न से मेरी फ़रमां बरदारी कर। वोह भी इसी त़रह़ ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ चला ह़त्ता कि जब उन दोनों के बीच में हुवे तो फ़रमाया : **अल्लाह** के इज़्न से तुम दोनों मुझ पर मिल जाओ। पस वोह दरख़्त बाहम मिल गए। (ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं :) मैं अपने दिल में इस अम्रे अ़जीब की निस्बत ह़ैरत से सोचने लगा मैं ने जो नज़र उठाई क्या देखता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी त़रफ़ आ रहे हैं और वोह दरख़्त जुदा जुदा हो गए हैं और हर एक अपनी अस्ली ह़ालत में अपने तने पर क़ाइम है।[3]

जमादात की ताअ़त और तस्बीह़ व सलाम

जिस त़रह़ नबातात ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ेरे फ़रमान थे उसी त़रह़ जमादात[4] भी आप के मुत़ीअ़ थे। चुनान्चे, शजर का आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम करना

1 ......الخصائص الکبریٰ،ذکر معجزاته فی ضروب الحیوانات،باب فی قدوم الاعرابی من بنی عامر بن صعصعة،ج۲،ص۹۵۔علمیه

2 .....इस ह़दीस को इमाम मुस्लिम ने अपनी सह़ीह़ में रिवायत किया है। (مشکوٰۃ،باب فی المعجزات،فصل اول) 12 मिन्ह

3 ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الفضائل والشمائل،باب فی المعجزات،الحدیث:۵۸۸۵،ج۲،ص۳۸۳۔علمیه

4 .....बे जान चीज़ें, जैसे रैत, पथ्थर वग़ैरा।

www.dawateislami.net

और आप की रिसालत पर शहादत देना पहले आ चुका है। सख़्त पथ्थरों का आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये नर्म हो जाना और सख़रए बैतुल मुक़द्दस[1] का ख़मीर की मानिन्द होना इस किताब में आगे आएगा।

हज़रते अ़ली[2] كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मक्का में था एक रोज़ हम उस के बा'ज़ नवाह़ में निकले जो पहाड़ या दरख़्त आप के सामने आता था वोह कहता था :

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه"[3]

हज़रते अबू ज़र[4] رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि एक रोज़ मैं दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने पर ह़ाज़िर हुवा, नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा न थे। मैं ने ख़ादिम से दरयाफ़्त किया। उस ने कहा कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के घर में हैं। मैं वहां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैठे हुवे थे और कोई आदमी आप के पास न था। मुझे उस वक़्त येह गुमान होता था कि आप वह़्य की ह़ालत में हैं। मैं ने आप को सलाम किया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे सलाम का जवाब दिया फिर फ़रमाया : तुझे क्या चीज़ यहां लाई ? मैं ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और रसूल की मह़ब्बत। आप ने मुझ से फ़रमाया कि बैठ जा। मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू में बैठ गया न मैं आप से कुछ पूछता था और न आप मुझ से कुछ फ़रमाते थे। मैं थोड़ी देर ठहरा कि इतने में ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ जल्दी जल्दी चलते हुवे आए, उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम किया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया फिर फ़रमाया : तुझे क्या चीज़ यहां लाई ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया : अल्लाह और रसूल की मह़ब्बत। आप ने हाथ से इशारा फ़रमाया कि बैठ जा। वोह एक बुलन्द जगह पर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल बैठ गए। फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आए। उन्हों ने भी

---

1 .....बैतुल मुक़द्दस का बड़ा पथ्थर।

2 ......ترمذی شریف، مطبوعہ مطبع احمدی، جلد ثانی، ص۲۲۳۔

3 ......سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ماجاء فی ایات اثبات نبوۃ النبی... الخ، الحدیث:٣٦٤٦، ج٥، ص ٣٥٩۔علمیه

4 .....इस ह़दीस को बज़्ज़ार व त़बरानी व अबू नुऐ़म व बैहक़ी ने रिवायत किया है। (ख़साइसे कुब्रा, मवाहिबे लदुन्निय्या) 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

ऐसा ही किया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी वैसा ही फ़रमाया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पहलू में बैठ गए। फिर इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आए और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पहलू में बैठ गए। इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सात या नव या इस के क़रीब संगरेज़े लिये। उन संगरेज़ों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ में तस्बीह़ पढ़ी यहां तक कि आप के हाथ में उन में शहद की मख्खी की मानिन्द आवाज़ सुनी गई (फिर आप ने उन को ज़मीन पर रख दिया और वोह चुप हो गए) फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह संगरेज़े मुझे छोड़ कर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दिये। उन संगरेज़ों ने ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ में तस्बीह़ पढ़ी। (यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी) फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह कंकर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से ले कर ज़मीन पर रख दिये। वोह चुप हो गए और वैसे ही संगरेज़े बन गए। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दिये। उन के हाथ में भी उन्हों ने तस्बीह़ पढ़ी जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ में पढ़ी थी (यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी) फिर आप ने ज़मीन पर रख दिये वोह चुप हो गए। फिर आप ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को दिये। उन के हाथ में भी उन्हों ने तस्बीह़ पढ़ी जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के हाथ में पढ़ी थी (यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी) फिर आप[1] ने ले कर उन को ज़मीन पर रख दिया वोह चुप हो गए। (फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह नबुव्वत[2] की ख़िलाफ़त है)[3]

1....इब्ने अ़साकिर की रिवायत में ह़दीसे अनस में ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के बा'द यूं आया है :

ثم صيرهنّ فی ايدينا رجلاً رجلاً فما سبحت حصاة منهنّ (خصائص کبریٰ، جزء ثانی،ص۷۵) फिर हुज़ूर ने उन संगरेज़ों को हम में से एक एक के हाथ में रखा मगर उन में से किसी संगरेज़े ने तस्बीह़ न पढ़ी। 12 मिन्ह

2....इस से मा'लूम होता है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो ह़ज़रते अबू ज़र को बा वुजूद येह कि वोह मजलिस में औरों की निस्बत आप से ज़ियादा क़रीब थे संगरेज़े न दिये बल्कि उन को छोड़ कर ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान को दिये इस की वज्ह येह थी कि ह़ज़रते अबू ज़र ख़ुलफ़ा में से न थे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ब ज़ाहिर इस मौक़अ़ पर ह़ाज़िर न थे। 12 मिन्ह

3 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانی،المقصد الرابع...الخ،تسبيح الطعام...الخ،ج٦،ص ٤٩٥ـ٤٩٧ والخصائص الكبرىٰ،ذكر معجزاته فی انواع الجمادات،باب تسبيح الحصی و الطعام، ج٢،ص ١٢٤ ملخصاً۔علميه

www.dawateislami.net

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद[1] बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमार हुवे ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام एक ख़्वान लाए जिस में (बिहिश्त के) अनार और अंगूर थे। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तनावुल फ़रमाने के लिये उन में से कुछ उठाया तो उस में से سُبْحٰنَ اللّٰه की आवाज़ आई।[2]

येह ख़ारिक़े आ़दत (तस्बीहुत्त़आ़म) बहुत दफ़्आ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से भी ज़ुहूर में आया है। चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हम अलबत्ता[3] बेशक त़आ़म की तस्बीह़ सुना करते थे जिस ह़ाल में कि वोह खाया जाता था।"[4]

ह़ज़रते अबू असैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत[5] है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब से फ़रमाया : ऐ अबल फ़ज़्ल ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कल तुम और तुम्हारे[6] बेटे अपने मकान से न जाएं यहां तक कि मैं तुम्हारे पास आऊं क्यूंकि मुझे तुम से एक काम है उन्हों ने आप का इन्तिज़ार किया यहां तक कि आप चाश्त के बा'द तशरीफ़ लाए। आप ने फ़रमाया :

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ"

उन्हों ने जवाब दिया :

"وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ"

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने क्यूंकर सुब्ह़ की ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : بِحَمْدِ اللّٰه हम ने ब ख़ैरिय्यत सुब्ह़ की।" पस आप ने उन से फ़रमाया : नज़्दीक हो जाओ ! वोह एक दूसरे के नज़्दीक हो गए यहां तक कि जब वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत्तसिल हो गए तो आप ने अपनी चादर मुबारक से उन को ढांप लिया और यूं दुआ़ फ़रमाई : "ऐ मेरे परवर दगार !

1.....देखो शिफ़ाए क़ाज़ी इयाज़। 12 मिन्ह

2 ...... الشفاء،الباب الرابع...الخ،فصل و مثل هذا فی سائر الجمادات،الجزء١،ص٣٠٧۔علميه

3 ......صحیح بخاری،باب علامات النبوۃ فی الاسلام۔

4 ......صحيح البخاری،کتاب المناقب،باب علامات النبوة فی الاسلام، الحديث:٣٥٧٩، ج٢،ص٤٩٥ ۔علميه

5.....इस ह़दीस को बैहक़ी ने दलाइल में बित्त़वालत रिवायत किया है और इब्ने माजा ने बिल इख़्तिसार नक़्ल किया है। (मवाहिबे लदुन्निय्या) ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म ने भी दलाइल में इसे रिवायत किया है। 12 मिन्ह

6.....इन के नाम मुबारक येह हैं : फ़ज़्ल, अ़ब्दुल्लाह, उ़बैदुल्लाह, क़ासिम, मा'बद, अ़ब्दुर्रह़मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) येह सब उम्मुल फ़ज़्ल के बत़न से थे। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

येह मेरा चचा और मेरे बाप का भाई है और येह मेरे अहले बैत हैं तू इन को दोज़ख़ की आग से यूं छुपा लेना जैसा कि मैं ने इन को अपनी चादर में छुपा लिया है।" इस पर घर की चौखट और दीवारों ने तीन बार आमीन कही।(1)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत(2) है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोहे उहुद पर चढ़े और आप के साथ हज़रते अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)थे। वोह पहाड़ हिला आप ने उसे अपने पाए मुबारक से ठोकर लगा कर फ़रमाया : तू साकिन रह क्यूंकि तुझ पर नबी और सिद्दीक़ और शहीद हैं।(3)

हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत(4) है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोहे सबीर पर थे और आप के साथ हज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا थे और मैं था। वोह पहाड़ हिला यहां तक कि उस के पथ्थर नीचे दामने कोह में गिर पड़े। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पाए मुबारक से ठोकर लगा कर फ़रमाया : ऐ सबीर ! साकिन रह क्यूंकि तुझ पर नबी और सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।(5)

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस वक़्त नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान व अ़ली व त़ल्ह़ा व ज़ुबैर कोहे हिरा पर थे वोह पहाड़ हिला। नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ हिरा ! साकिन रह क्यूंकि तुझ पर नहीं हैं(6) मगर नबी या सिद्दीक़ या शहीद। एक रिवायत में सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र है और हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र नहीं और एक रिवायत में सिवाए अबू उ़बैदा के तमाम अ़शरए मुबश्शरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم(7) का ज़िक्र है और एक रिवायत में है कि जब

---

1 ......المواھب اللدنیة مع شرح زرقانی،المقصد الرابع...الخ،تسبیح الطعام...الخ،ج٦، ص٥٠٤-٥٠٥۔علمیه

2 .....इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी व इमाम अह़मद व तिर्मिज़ी व अबू ह़ातिम ने रिवायत किया है। (मवाहिबे लदुन्निय्या) 12 मिन्ह

3 ......المواھب اللدنیة مع شرح زرقانی،المقصد الرابع...الخ،تسبیح الطعام...الخ،ج٦، ص٥٠٦۔علمیه

4 .....येह ह़दीस नसाई व तिर्मिज़ी व दारे क़ुत़नी में है। (मवाहिबे लदुन्निय्या) 12 मिन्ह

5 ......المواھب اللدنیة مع شرح زرقانی،المقصد الرابع...الخ،تسبیح الطعام...الخ،ج٦، ص٥٠٩۔علمیه

6 .....या'नी जो तुझ पर हैं उन में से हर एक नहीं है मगर नबी या सिद्दीक़ या शहीद। मत़लब येह है कि इन में से हर एक अवसाफ़े सलासा से ख़ारिज नहीं। 12 मिन्ह (या'नी इन में कोई एक नबी, कोई एक सिद्दीक़ और कोई एक शहीद है। **इल्मिय्या**)

7 .....अ़शरए मुबश्शरा जो दस सहाबी हैं। जिन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत की बिशारत दी। उन के नाम मुबारक येह हैं : हज़रते अबू बक्र व उ़मर व उ़स्मान व अ़ली व त़ल्ह़ा व ज़ुबैर व सा'द इब्ने अबी वक़्क़ास व अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ व अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ व सईद बिन ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

हिजरत के वक़्त क़ुरैश ने जनाबे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलाश में अपने आदमी भेजे तो कोहे सबीर ने कहा : या रसूलल्लाह ! उतरिये क्यूंकि मुझे ख़ौफ़ है कि वोह आप को मेरी पुश्त पर क़त्ल कर दें और मुझे **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब दे पस ह़िरा ने कहा : या रसूलल्लाह ! मेरी त़रफ़ आइये ।[1]

ह़ज़रते जाबिर[2] رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस वक़्त नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुत़्बा पढ़ा करते थे मस्जिद के सुतूनों में से एक दरख़्ते ख़ुर्मा के ख़ुश्क तने से पुश्ते मुबारक लगा लिया करते थे । जब आप के लिये मिम्बर बनाया गया और आप उस पर रोनक़ अफ़रोज़ हुवे तो उस तने ने जिस के पास ख़ुत़्बा पढ़ा जाया करता था फ़रयाद की क़रीब था कि वोह पारा पारा हो जाए । पस नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर से उतर आए[3] यहां तक कि उस ने आराम व क़रार पाया । नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह इस लिये रोया कि जो ज़िक्र येह सुना करता था वोह अब इस से जुदा हो गया ।[4] इस सुतून को नाला करने के सबब ह़न्नानह बोलते हैं । नालए ह़न्नानह की ह़दीस मुतवातिर है इस लिये इस में किसी त़रह़ के शक की गुन्जाइश नहीं ।

फ़त्ह़े मक्का के रोज़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहले मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हुवे और मुहाजिरीन व अन्सार आप के आगे पीछे और दाएं बाएं थे । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले ह़जरे अस्वद को बोसा दिया फिर त़वाफ़ किया । उस वक़्त बैतुल्लाह शरीफ़ के गिर्द और ऊपर तीन सो साठ बुत थे जो रांग के साथ पथ्थरों में नस्ब किये हुवे थे । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी थी उस से आप जिस बुत की त़रफ़ इशारा फ़रमाते और येह पढ़ते :

1.....देखो मवाहिबे लदुन्निय्या और मदारिजुन्नबुव्वह ।
(المواھب اللدنیة مع شرح زرقانی،المقصد الرابع...الخ،تسبیح الطعام...الخ، ج٦، ص٥٠٩۔٥١٢ملخصاًوملتقطاً۔علمیه)

2.....इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है । (مشکوٰۃ،باب فی المعجزات) 12 मिन्ह

3.....मिश्कात और बुख़ारी शरीफ़ में यहां येह अल्फ़ाज़ भी हैं : "حتی أخذھا فضمھا إلیه فجعلت تئن أنین الصبی الذی یسکت" और उस सुतून के पास आ कर उसे अपने से चिमटा लिया वोह सिसकियां भरने लगा उस बच्चे की त़रह़ जिसे चुप कराया जाता है । बक़िय्या ह़दीस इसी त़रह़ है जो मुसन्निफ़ ने ज़िक्र की है । **इल्मिय्या**

4.....مشکاۃ المصابیح،کتاب الفضائل و الشمائل،باب فی المعجزات،الحدیث:٥٩٠٣، ج٢،ص٣٨٨۔علمیه

www.dawateislami.net

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ (بنی اسرائیل، ع ۹)

आया सच और निकल भागा झूट बेशक झूट निकल भागने वाला है।(1)

वोह मुंह के बल गिर पड़ता। इस त़रह़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बैतुल्लाह शरीफ़ को बुतों से पाक कर दिया।

बद्र के दिन जब लड़ाई सख़्त हो गई तो हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने संगरेज़ों की एक मुठ्ठी ली और क़ुरैश की त़रफ़ मुंह कर के फ़रमाया : "شَاهَتِ الْوُجُوْه" (उन के चेहरे बद शक्ल हो गए) फिर उन की त़रफ़ फेंक दी, कुफ़्फ़ार को शिकस्त हुई। इस बारे में येह आयत नाज़िल हुई :

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى (انفال، ع ۲)

*और नहीं फेंका तू ने जिस वक़्त कि फेंका तू ने लेकिन **अल्लाह** तआ़ला ने फेंका।*(2)

इसी त़रह़ हु़नैन के दिन जब हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ चन्द सह़ाबा रह गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ख़च्चर से उतर कर एक मुश्त ख़ाक ली और شَاهَتِ الْوُجُوْه कह कर कुफ़्फ़ार की त़रफ़ फेंक दी। कोई काफ़िर(3) ऐसा न था जिस की आंखों में वोह मिट्टी न पड़ी हो। पस वोह शिकस्त खा कर भाग गए।(4)

मुग़य्यबात पर मुत्त़लअ़ होना

हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात में से आप का मुग़य्यबात पर मुत्त़लअ़ होना और ग़ुयूबे माज़िय्या और मुस्तक़्बिला की ख़बर देना भी है।(5) इ़ल्मे ग़ैब बिज़्ज़ात **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास है जो कुछ इस क़बील से हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से ज़ाहिर हुवा वोह **अल्लाह** तआ़ला की वह़्य व इल्हाम से हुवा(6) जैसा कि आयाते ज़ैल से ज़ाहिर है।

1....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ह़क़ आया और बात़िल मिट गया बेशक बात़िल को मिटना ही था। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۸۱) **इ़ल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब वोह ख़ाक जो तुम ने फेंकी तुम ने न फेंकी थी बल्कि **अल्लाह** ने फेंकी। (پ۹، الانفال:۱۷) **इ़ल्मिय्या**

3.....सह़ीह़ मुस्लिम, ग़ज़्वए हु़नैन।

4......صحیح مسلم، کتاب الجهاد و السیر، باب فی غزوة حنین، الحدیث:۱۷۷۷، ص۹۸۰۔علمیه

5.....या'नी हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ग़ैब जानना और जो हो चुका और जो होगा उस के बारे में बताना येह भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा है। **इ़ल्मिय्या**

6.....या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इ़ल्मे ग़ैब ख़ुद से है और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो ग़ैब की ख़बरें इरशाद फ़रमाईं इन का इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अ़त़ा फ़रमाया है। **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾1﴿

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ (بقرہ، ع۱۷)

और इसी त़रह़ हम ने तुम को बेहतर उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह हो और रसूल तुम पर गवाह हो।[1]

﴾2﴿

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ؕ (آل عمران، ع۵)

येह ग़ैब की ख़बरों से है जिसे हम तेरी त़रफ़ वह़्य करते हैं।[2]

﴾3﴿

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۪ (آل عمران، ع۱۸)

नहीं है **अल्लाह** कि ख़बरदार करे तुम को ग़ैब पर लेकिन **अल्लाह** पसन्द करता है अपने पैग़म्बरों में से जिस को चाहे।[3]

﴾4﴿

وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿۱۱۳﴾ (نساء، ع۱۷)

और ख़ुदा ने उतारी तुझ पर किताब और ह़िक्मत और सिखाया तुझ को जो कुछ कि तू न जानता था और **अल्लाह** का फ़ज़्ल तुझ पर बड़ा है।[4]

﴾5﴿

تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ؕ (هود، ع۴)

येह बा'ज़ ख़बरें हैं ग़ैब की जिन को हम तेरी त़रफ़ वह़्य करते हैं इन को जानता न था तू और न तेरी क़ौम इस से पहले।[5]

---

❶.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बात यूं ही है कि हम ने तुम्हें किया सब उम्मतों में अफ़्ज़ल कि तुम लोगों पर गवाह हो और येह रसूल तुम्हारे निगहबान व गवाह। (پ۲،البقرة:۱۴۳) **इल्मिय्या**

❷.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम ख़ुफ़्या त़ौर पर तुम्हें बताते हैं। (پ۳،ال عمران:۴۴) **इल्मिय्या**

❸.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगो तुम्हें ग़ैब का इ़ल्म दे दे हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे। (پ۴،ال عمران:۱۷۹) **इल्मिय्या**

❹.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** ने तुम पर किताब और ह़िक्मत उतारी और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और **अल्लाह** का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है। (پ۵،النساء:۱۱۳) **इल्मिय्या**

❺.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह ग़ैब की ख़बरें हैं कि हम तुम्हारी त़रफ़ वह़्य करते हैं इन्हें न तुम जानते थे न तुम्हारी क़ौम इस से पहले। (پ۱۲،هود:۴۹) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾6﴿

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهِ اِلَیْكَ ۚ وَ مَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْۤا اَمْرَهُمْ وَ هُمْ یَمْكُرُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ (یوسف، ع ۱۱)

येह ग़ैब की ख़बरों से है जिसे हम तेरी त़रफ़ वह्‌य करते हैं और तू उन के पास न था जिस वक़्त उन्हों ने अपना काम मुक़र्रर किया और वोह मक्र करते थे।[1]

﴾7﴿

فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ﴿۱۰﴾ (نجم، ع ۱)

*पस **अल्लाह** ने वह्‌य पहुंचाई अपने बन्दे की त़रफ़ जो पहुंचाई।*[2]

﴾8﴿

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰى غَیْبِهٖۤ اَحَدًا ﴿۲۶﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (جن، ع ۲)

वोह ग़ैब का जानने वाला पस मुत़्त़लअ़ नहीं करता अपने ग़ैब पर किसी को मगर वोह पैग़म्बर जिस को उस ने पसन्द कर लिया।[3]

इस मज़्मून की और आयतें भी हैं। इन सब की तफ़्सीर के लिये एक अ़लाह़िदा किताब दरकार है यहां सिर्फ़ आयत ﴾1﴿ के ह़िस्सए अख़ीर की निस्बत कुछ ज़िक्र किया जाता है। अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी قُدِّسَ سِرُّهٗ अपनी तफ़्सीर "रूहुल बयान" में बा'ज़ अरबाबे ह़क़ीक़त का क़ौल यूं नक़्ल फ़रमाते हैं :

و معنى شهادة الرّسول عليهم اطلاعه على رتبة كل متدين بدينه و حقيقته الّتى هو عليها من دينه وحجابه الّذى هو به محجوب عن كمال دينه فهو يعرف ذنوبهم و حقيقة ايمانهم و اعمالهم و حسناتهم وسياتهم و اخلاصهم و نفاقهم و غير ذلك بنور الحق .

इन पर रसूल के गवाह होने के मा'ना येह हैं कि हुज़ूर मुत़्त़लअ़ हैं अपने दीन के हर मुतदय्यिन[4] के रुत्बे पर और उस के ईमान की ह़क़ीक़त पर और उस ह़िजाब पर कि जिस के सबब से वोह कमाले दीन से मह़जूब है। पस हुज़ूर उन के गुनाहों को और उन के ईमान की

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जो हम तुम्हारी त़रफ़ वह्‌य करते हैं और तुम उन के पास न थे जब उन्हों ने अपना काम पक्का किया था और वोह दाऊं चल रहे थे। (پ۱۳،یوسف:۱۰۲) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अब वह्‌य फ़रमाई अपने बन्दे को जो वह्‌य फ़रमाई। (پ۲۷،النجم:۱۰) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत़ नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के। (پ۲۹،الجن:۲۶-۲۷) **इल्मिय्या**

4.....ईमान वाले।

www.dawateislami.net

हक़ीक़त को और उन के आ'माल को और उन की नेकियों और बुराइयों को और उन के इख़्लास व निफ़ाक़ वग़ैरा को नूरे नबुव्वत से पहचानते हैं।[1]

इसी तरह़ मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ قُدِّسَ سِرُّهٗ "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में तह़रीर फ़रमाते हैं : وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ[2] या'नी

وباشد رسول شما بر شما گواہ۔ زیرا کہ او مطلع است بنور نبوت بر رتبۂ ہر متدین بدین خود کہ در کدام درجہ از دین من رسیدہ و حقیقت ایمان او چیست و حجاب کہ بداں از ترقی محجوب ماندہ است کدام است۔ پس او مے شناسد گناہان شمارا و درجات ایمان شمارا و اعمالِ نیک و بد شمارا و اخلاص و نفاق شمارا۔

ह़ालते ख़्वाब[3] में भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के ह़ालात से आगाह रहा करते थे। चुनान्चे, ह़ज़रते इमाम रब्बानी मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ अह़मद सरहिन्दी قُدِّسَ سِرُّهٗ मुल्ला ह़सन कश्मीरी को यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

حدیث تنام عینای و لا ینام قلبی کہ تحریر یافتہ بود اشارت بدوام آگاہی نیست بلکہ اخبار است از عدم غفلت از جریان احوال خویش و امت خویش۔[4]

आ़लमे बरज़ख़ में भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत के अह़वाल से आगाह रहते हैं। चुनान्चे, अ़ल्लामा क़स्त़लानी आदाबे ज़ियारत में यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

و ينبغي ان يقف عند محاذاة اربعة اذرع و يلازم الادب و الخشوع و التواضع غاض البصر فی مقام الهيبة كما كان يفعل فی حال حياته اذ لا فرق بين موته و حياته فی مشاهدته لامته و معرفته باحوالهم و نياتهم وعزائمهم وخواطرهم ذلك عنده جلی لاخفاء به فان قلت هذه الصفات مختصة بالله تعالٰی فالجواب ان من انتقل الٰی عالم البرزخ من المؤمنين يعلم احوال الاحياء غالباً وقد وقع كثير من ذلك كما هو مسطور فی مظنة ذلك من الكتب و قد روی ابن المبارك عن سعيد بن المسيب: ليس من يوم الا و تعرض علی النّبی صلی اللّٰه تعالٰی عليه واله وسلم اعمال امته غدوةً وعشيةً فيعرفهم بسيماهم واعمالهم فلذلك يشهد عليهم.(مواہب لدنیہ)[5]

---

1 ......تفسير روح البيان،سورة البقرة،تحت الاية:١٤٣،ج١،الجزء٢،ص٢٤٨۔علميه

2 ......پ٢،البقرة:١٤٣۔علميه

3 .....या'नी नींद की ह़ालत।

4 ......مکتوبات احمدیہ،جلد اول،مکتوب ٩٩۔......(مکتوبات امام ربانی،دفتر اول،حصہ دوم،مکتوب ٩٩،ج١،ص٩٩۔علميه)

5 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانی،المقصد العاشر،الفصل الثانی فی زيارة قبره الشريف...الخ،ج١٢،ص١٩٥۔علميه

www.dawateislami.net

चाहिये कि ज़ियारत करने वाला क़ब्र शरीफ़ से चार हाथ पर सामने खड़ा होवे, और अदब व खुशूअ़ व तवाज़ोअ़ को लाज़िम पकड़े और मक़ामे हैबत में आंखें बन्द करे जैसा कि हुज़ूर की ह़यात शरीफ़ की ह़ालत में किया जाता था क्यूंकि अपनी उम्मत के मुशाहदे और इन के अह़वाल व निय्यात व अ़ज़ाइम व ख़वातिर की मा'रिफ़त में[1] हुज़ूर की मौत व ह़यात यक्सां है और येह आप के नज़्दीक ज़ाहिर है इस में कोई पोशीदगी नहीं। अगर ए'तिराज़ किया जाए कि येह सिफ़ात तो **अल्लाह** तआ़ला से मुख़्तस हैं तो इस का जवाब येह है कि (कामिल) मोमिनों में से जो शख़्स आ़लमे बरज़ख़ में चला जाता है वोह ज़िन्दों के ह़ालात ग़ालिबन जानता है। ऐसा बहुत वुक़ूअ़ में आया है जैसा कि इस के मुतअ़ल्लिक़ किताबों में मज़्कूर है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ब रिवायते सईद बिन मुसय्यब नक़्ल किया है कि कोई दिन ऐसा नहीं कि सुब्ह़ो शाम उम्मत के आ'माल आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पेश न किये जाते हों। लिहाज़ा आप उन आ'माल को और खुद उन को उन के चेहरे से पहचानते हैं। इसी वासिते़ आप उन पर गवाही देंगे।

मवाहिबे लदुन्निय्या की त़रह़ मदख़ल इब्ने ह़ाज में भी ज़ियारते सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन में येही मज़्मून मज़्कूर है और येह भी लिखा है :

فاذا زاره صلی اللّٰه تعالٰی علیه و اله و سلم فان قدر ان لا یجلس فهو به اولٰی فان عجز فله ان یجلس بالادب والاحترام والتعظیم، و قد لا یحتاج الزائر فی طلب حوائجه و مغفرة ذنوبه ان یذکرها بلسانه، بل یحضر ذلك فی قلبه و هو حاضر بین یدیه صلی اللّٰه تعالٰی علیه و اله و سلم لانه علیه الصّلٰوة و السلام اعلم منه بحوائجه ومصالحه وارحم به منه لنفسه واشفق علیه من اقاربه. وقد قال علیه الصلٰوة و السلام: "انما مثلی و مثلکم کمثل الفراش تقعون فی النار و انا اخذ بحجزکم عنها " او کما قال و هٰذا فی حقه صلی اللّٰه تعالٰی علیه و اله و سلم فی کل وقت و اوان اعنی فی التوسل به و طلب الحوائج بجاهه عند ربه عز و جل و من لم یقدر له زیارته صلی اللّٰه تعالٰی علیه واله وسلم بجسمه فلینوها کل وقت بقلبه، و لیحضر قلبه انه حاضر بین یدیه متشفعا الٰی من منّ به علیه . (مدخل لابن الحاج، جزء اول، زیارت سید الاولین والاخرین صلی اللّٰه تعالٰی علیه واله وسلم)

---

1 .....उम्मत को मुलाह़ज़ा फ़रमाने और उन के ह़ालात, निय्यतें इरादे और दिली ख़यालात का इ़ल्म होने में।

www.dawateislami.net

जिस वक़्त ज़ाइर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करे अगर वोह त़ाक़त रखता हो कि न बैठे तो उस के लिये न बैठना औला है। अगर वोह खड़ा रहने से आ़जिज़ हो तो उसे अदबो एह़तिराम और ता'ज़ीम से बैठना जाइज़ है। ज़ाइर के लिये अपनी ह़ाजतें और गुनाहों की मुआ़फ़ी त़लब करने में येह ज़रूरी नहीं कि इन को अपनी ज़बान से ज़िक्र करे बल्कि इन को आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर में दिल में ह़ाज़िर कर ले क्यूंकि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ज़ाइर की ह़ाजात व ज़रूरियात का इ़ल्म ख़ुद ज़ाइर से ज़ियादा है, और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर ख़ुद उस की निस्बत ज़ियादा रह़म वाले और उस के अक़ारिब से ज़ियादा शफ़्क़त वाले हैं। चुनान्चे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया है : "मेरा ह़ाल और तुम्हारा ह़ाल परवानों के ह़ाल की त़रह़ है कि तुम आग में गिरते हो और मैं तुम को कमर से पकड़ कर आग से बचाने वाला हूं।" और येह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में हर वक़्त और हर लह़ज़ा में है या'नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तवस्सुल करने में और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जाह के वसीले से ह़ाजतें मांगने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से, और जिस शख़्स के लिये ब ज़ाते ख़ुद आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का मक़्दूर न हो उसे चाहिये कि हर वक़्त अपने दिल में ज़ियारत की निय्यत करे और येह समझे कि मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ह़ाज़िर हूं और हुज़ूर को बारगाहे इलाही में शफ़ीअ़ ला रहा हूं जिस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भेज कर मुझ पर बड़ा एह़सान किया है।(1)

अ़ल्लामा सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه आ़लमे बरज़ख़ में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अश्ग़ाल में यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

النظر فی اعمال امته و الاستغفار لهم من السیّات و الدعاء بکشف البلاء عنهم و التردد فی اقطار الارض لحلول البرکة فیها و حضور جنازة من مات من صالحی امته فان هذه الامور من جملة اشغاله فی البرزخ کما وردت بذلك الاحادیث و الآثار.(2)

---

1 ......المدخل،فصل فی زیارة القبور،الوجه الثالث،ج۱،ص۱۹۰۔علمیه

2 ......انتباہ الاذکیاء فی حیات الانبیاء، مطبوعہ مطبع محمدی واقع لاہور۔......(الحاوی للفتاوی، کتاب البعث،انباء الاذکیاء بحیاة الانبیاء، ج۲، ص۱۸٤۔علمیه)

www.dawateislami.net

अपनी उम्मत के आ'माल को देखना और उन के गुनाहों की बख़्शिश त़लब करना और उन से बला दूर करने की दुआ़ करना और अक़्त़ारे ज़मीन में हु़लूले बरकत के लिये तशरीफ़ ले जाना, अपनी उम्मत के सालिह़ीन में से किसी के जनाज़े में ह़ाज़िर होना बेशक येह उमूर बरज़ख़ में हु़ज़ूर के अश्ग़ाल में से हैं जैसा कि अह़ादीस व आसार में वारिद है।

अल्लाह तआ़ला ने हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्मे ما کان و ما یکون अ़त़ा फ़रमाया, चुनान्चे, सह़ीह़[1] बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम में (वा'ज़ के लिये) खड़े हुवे। इस में आप ने जो कुछ क़ियामत तक वाक़ेअ़ होने वाला है सब बयान फ़रमा दिया इसे याद रखा जिस ने याद रखा और भुला दिया जिस ने भुला दिया। इस वाक़िए़ का मेरे यारों को भी इ़ल्म है जो कुछ आप ने ख़बर दी इस में से ऐसी चीज़ वाक़ेअ़ होती है जिस को मैं भूल गया हूं जब उस को देखता हूं तो याद कर लेता हूं जिस त़रह़ एक शख़्स दूसरे शख़्स का चेहरा (ब त़रीक़े इजमाल) याद रखता है, जब कि वोह ग़ाइब हो जाता है फिर जब उस को देखता है तो उसे (ब तफ़्सील व तश्ख़ीस) पहचान लेता है।[2]

ह़ज़रते अबू ज़ैद[3] رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई और मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे और हमें वा'ज़ फ़रमाया यहां तक कि ज़ोहर का वक़्त हो गया आप मिम्बर से उतर आए और नमाज़ पढ़ी फिर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे और हमें वा'ज़ फ़रमाया यहां तक कि अ़स्र का वक़्त हो गया फिर आप उतर आए और नमाज़ पढ़ी फिर मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुवे और हमें वा'ज़ फ़रमाया यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो गया आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम को जो कुछ वाक़ेअ़ हो चुका है और जो होने वाला है सब की ख़बर दी। हम में से जो ज़ियादा याद रखने वाला है वोह ज़ियादा आ़लिम है।[4]

ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** ने मेरे लिये ज़मीन को लपेट दिया तो मैं ने उस के मशरिक़ों और

---

1 ......مشکوٰۃ، کتاب الفتن، فصل اول۔

2 ...... مشکاۃ کتاب الفتن، الفصل الاول، الحدیث: ٥٣٧٩، ج٢، ص٢٧٨۔علمیه

3 ......صحیح مسلم، جلد ثانی، کتاب الفتن۔

4 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن...الخ، باب اخبار النبی فی ما یکون الی...الخ، الحدیث: ٢٨٩٢، ص١٥٤٦۔علمیه

www.dawateislami.net

मग़्रिबों को देख लिया और क़रीब है कि मेरी उम्मत की सल्त़नत उन तमाम मक़ामात पर पहुंचे और मुझे दो ख़ज़ाने सुर्ख़ व सफ़ेद दिये गए। अल ह़दीस[1]

सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने के क़ल्ओं में से एक पर खड़े हुवे। फिर फ़रमाया : क्या तुम देखते हो जो मैं देखता हूं ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि नहीं ! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं देख रहा हूं कि फ़ितने तुम्हारे घरों के बीच बारिश की त़रह़ गिर रहे हैं।[2]

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़इश رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने अपने परवर दगार को निहायत अच्छी सूरत में देखा। उस ने पूछा कि फ़िरिश्ते किस चीज़ में झगड़ रहे हैं ? मैं ने अ़र्ज़ किया : तू ज़ियादा दाना है। आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पस परवर दगार ने अपना हाथ मेरे दो शानों के दरमियान रखा मैं ने उस हाथ की ठन्डक अपने दो पिस्तानों के दरमियान पाई और जान लिया जो कुछ आस्मानों और ज़मीनों में था[3] और आं ह़ज़रत ने येह आयत पढ़ी :

وَكَذٰلِكَ نُرِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿۷۵﴾

और इसी त़रह़ हम दिखाने लगे इब्राहीम को सल्त़नत आस्मान और ज़मीन की ताकि उस को यक़ीन आवे।[4]

इस ह़दीस को दारमी ने ब त़रीक़े इरसाल रिवायत किया है, इसी की मानिन्द तिर्मिज़ी में है।[5]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (अपने दौलत ख़ाने से) निकले और आप के दोनों हाथों में दो किताबें थीं।

---

1 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن۔......(صحيح مسلم، كتاب الفتن...الخ،باب هلاك هذه الامة بعضهم...الخ، الحديث:٢٨٨٩، ص١٥٤٤ ـ علميه)

2 ......صحيح البخارى، كتاب الفتن،باب قول النبى ويل للعرب...الخ،الحديث:٧٠٦٠، ج٤،ص ٤٣١ـ علميه

3 ......عبارت است از حصول تمام علوم جزئی وکلی واحاطہ آں۔اشعۃ اللمعات ۱۲ منہ

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इसी त़रह़ हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की और इस लिये कि वोह ऐ़नुल यक़ीन वालों में हो जाए। (پ٧،الانعام:٧٥) **इल्मिय्या**

5 ......مشکوٰۃ، کتاب الصلوٰۃ، باب المساجد۔ ......(مشكاة المصابيح، كتاب الصلوة،باب المساجد و مواضع الصلاة،الحديث:٧٢٥،ج١، ص١٥٢ـ علميه)

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम जानते हो येह दो किताबें कैसी हैं ? हम ने अ़र्ज़ किया : नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मगर येह कि आप हमें बता दें। जो आप के दाएं हाथ में थी उस की निस्बत फ़रमाया कि येह रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से एक किताब है इस में बिहिश्तियों के नाम और उन के आबा व क़बाइल के नाम हैं फिर अख़ीर में उन का मज्मूआ़ दिया गया है, उन में न कभी ज़ियादती होगी और न कमी होगी। फिर जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाएं हाथ में थी उस की निस्बत फ़रमाया कि येह रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से एक किताब है इस में दोज़ख़ियों के नाम हैं फिर अख़ीर में मजमूआ़ दिया गया है। उन में कभी न ज़ियादती होगी और न कमी होगी। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर इस अम्र से फ़रागत़ हो चुकी तो अ़मल किस वासित़े है ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने अ़मलों को दुरुस्त करो और क़ुर्बे इलाही ढूंडो क्यूंकि जो बिहिश्ती है उस का ख़ातिमा बिहिश्तियों के अ़मल पर होगा ख़्वाह वोह उ़म्र भर कैसा ही अ़मल करता रहे और जो दोज़ख़ी है उस का ख़ातिमा दोज़ख़ियों के अ़मल पर होगा ख़्वाह वोह उ़म्र भर कैसा ही अ़मल करता रहे। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों हाथों से इशारा फ़रमाया और उन दो किताबों को पसे पुश्त डाल दिया। फिर फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों से फ़ारिग़ हो गया है एक गुरौह बिहिश्त में और एक गुरौह दोज़ख़ में। इस ह़दीस को तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।(1)

इमाम अह़मद व त़बरानी ने ब रिवायते अबू ज़र नक़्ल किया है कि उन्हों ने फ़रमाया : हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से आए इस ह़ाल में कि आस्मान में परन्दा जो अपना बाज़ू हिलाता है उस के मुतअ़ल्लिक़ भी अपने इ़ल्म का आप ने हम से ज़िक्र फ़रमा दिया।(2)

त़बरानी में ब रिवायते इ़ब्ने उ़मर मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे सामने रखा दुन्या को मैं दुन्या की त़रफ़ और उस में क़ियामत तक होने वाले ह़वादिस की त़रफ़ यूं देखता था जैसे अपने इस हाथ की हथेली को देख रहा हूं।(3)

---

1 ......مشکوٰۃ، کتاب الایمان، باب الایمان بالقدر، فصل ثانی۔......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الایمان بالقدر، الحدیث: ۹۶، ج۱، ص۳۹۔علمیه)

2 ......مواہب لدنیہ، مقصد ثامن، فصل ثالث۔......(المواھب اللدنیة مع شرح زرقانی، المقصد الثامن، الفصل الثالث فی انبائه بالانباء المغیبات، ج۱۰، ص۱۲۶۔علمیه)

3 ......مواہب لدنیہ، مقصد ثامن، فصل ثالث۔ ......(المواھب اللدنیة مع شرح زرقانی، المقصد الثامن، الفصل الثالث فی انبائه با لانباء المغیبات، ج۱۰، ص۱۲۳۔علمیه)

www.dawateislami.net

तब़रानी में ह़ज़रते हुज़ैफ़ा बिन असैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कल रात इस हुजरे के पास मेरी उम्मत अव्वल से आख़िर तक मुझ पर पेश की गई। आप से अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह ! पेश किये गए आप पर वोह जो पैदा हो चुके हैं क्यूंकि वोह मौजूद हैं मगर वोह क्यूं कर पेश किये गए जो पैदा नहीं हुवे ? आप ने फ़रमाया कि मेरे लिये आबो गिल में[1] उन की सूरतें बनाई गईं यहां तक कि मैं उन में से हर एक को इस से भी ज़ियादा पहचानता हूं जितना कि तुम अपने साथी को पहचानते हो।[2]

मुस्नदे फ़िरदौस में है कि मेरे लिये आबो गिल में मेरी उम्मत की शक्ल बनाई गई और मुझे तमाम अस्मा का इ़ल्म ह़ज़रते आदम की त़रह़ दिया गया।[3]

जब हुज़ूर صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्म की वुस्अ़त का येह ह़ाल है तो इन्सो जिन्न व मलक में से किस को यारा है कि इस का इह़ात़ा कर सके लिहाज़ा यहां जो कुछ बयान होता है उसे समन्दर में से एक क़त़रा तसव्वुर करना चाहिये।

साह़िबे क़सीदए बुर्दा शरीफ़ यूं फ़रमाते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَ ضَرَّتَهَا   وَ مِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَ الْقَلَمِ [4]

क्यूंकि दुन्या और आख़िरत आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बख़्शिश से है और लौह़ो क़लम का इ़ल्म आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़लूम में से है।

इस बैत[5] की शर्ह़ में मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْبَارِی ज़ुब्दा शर्हे़ बुर्दा में यूं फ़रमाते हैं :

1.....पानी व मिट्टी में।

2.....خصائص کبریٰ للسیوطی، جزء ثانی، ص۱۹۷۔......(شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الرابع، الفصل الثانی فیما خصہ اللّٰہ به...الخ، ج۷، ص۷۹۔علمیه)

3.....مواہب لدنیہ، کتاب فی المعجزات والخصائص، الفصل الثانی فیما خصہ اللّٰہ تعالٰی بہ من المعجزات एक रिवायत में मेरी उम्मत की बजाए दुन्या का लफ़्ज़ है। देखो ज़ुरक़ानी। (المواھب اللدنية مع شرح الزرقانی، المقصد الرابع، الفصل الثانی فیما خصه اللّٰه به...الخ، ج۷، ص۷۹۔علمیه)

4.....القصیدتان، البردة للبوصیری، الفصل العاشر فی ذکر المناجات، ص۳٦۔علمیه

5.....शे'र।

www.dawateislami.net

توضیحه ان المراد بعلم اللوح ما اثبت فیه من النقوش القدسیة والصور الغیبیة وبعلم القلم ما اثبت فیه کما شاء و الاضافة لادنی ملابسة و کون علمها من علومه صلی اللّٰه تعالی علیه واله وسلم لان علومه تتنوع الی الکلیات والجزئیات وحقائق ودقائق وعوارف ومعارف تتعلق بالذات والصفات وعلمهما انما یکون سطراً من سطور علمه ونهرًا من بحور علمه ثم مع هذا هو من برکة وجوده صلی اللّٰه تعالی علیه واله وسلم

तौज़ीह़ इस की येह है कि लौह़ के इ़ल्म से मुराद नुक़ूशे क़ुदसिय्या और सुवरे ग़ैबिय्या हैं जो इस में मन्क़ूश हैं, और इ़ल्मे क़लम से मुराद वोह है जो **अल्लाह** ने जिस त़रह़ चाहा इस में वदीअ़त रखा। इन दोनों की त़रफ़ इ़ल्म की इज़ाफ़त अदना अ़लाक़ा के बाइ़स है और इन दोनों का इ़ल्म आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उ़लूम का एक जुज़्व है इस लिये कि ह़ज़रत के इ़ल्म कई क़िस्म के हैं इ़ल्मे कुल्लिय्यात, इ़ल्मे जुज़इय्यात, इ़ल्मे ह़क़ाइक़े अश्या, इ़ल्मे अस्रार और वोह उ़लूम व मआ़रिफ़ जो ज़ाते सिफ़ाते बारी तआ़ला से मुतअ़ल्लिक़ हैं और लौहो क़लम के उ़लूम तो उ़लूमे मुह़म्मदिय्या की सत़रों में से एक सत़्र और इन के दरयाओं में से एक नहर हैं बईं हमा इ़ल्मे लौहो क़लम आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के वुजूद की बरकत से है। (कि अगर ह़ुज़ूर न होते तो न लौहो क़लम होते न इन का इ़ल्म) इस बैत की शर्ह़ में शैख़ इब्राहीम बाजूरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यूं लिखते हैं :

استشکل جعل علم اللوح والقلم بعض علومه صلی اللّٰه تعالی علیه واله وسلم بان من جملة علم اللوح والقلم الامور الخمسة المذکورة فی اخر سورة لقمان مع ان النبی علیه الصلٰوة والسلام لا یعلمها لان اللّٰه قد استاثر بعلمها فلا یتم التبعیض المذکور واجیب بعدم تسلیم ان هذه الامور الخمسة مما کتب القلم فی اللوح والا لاطلع علیه من شانه ان یطلع علی اللوح کبعض الملائکة المقربین وعلی تسلیم انها مما کتب القلم فی اللوح فالمراد ان بعض علومه صلی اللّٰه تعالی علیه واله وسلم علم اللوح والقلم الذی یطلع علیه المخلوق فخرجت هذه الامور الخمسة. علی انه صلی اللّٰه تعالی علیه واله وسلم لم یخرج من الدنیا الا بعد ان اعلم اللّٰه تعالٰی بهذه الامور. فان قیل اذا کان علم اللوح والقلم بعض علومه صلی اللّٰه تعالی علیه واله وسلم فما البعض الأخر اجیب بان البعض الأخر هو ما اخبره اللّٰه عنه من احوال الأخرة لان القلم انما کتب فی اللوح ما هو کائن الٰی یوم القیامة.

www.dawateislami.net

नाज़िम ने इल्मे लौह़ो क़लम को ह़ज़रत के उ़लूम का एक जुज़ क़रार दिया है इस में येह अश्काल पेश आता है कि उमूरे ख़म्सा जो आख़िर सूरए लुक़्मान में मज़्कूर हैं इल्मे लौह़ो क़लम में से हैं हालांकि ह़ज़रत इन को नहीं जानते क्यूंकि इन का इल्म **अल्लाह** तआ़ला ने अपने लिये ख़ास कर लिया है लिहाज़ा जुज़इय्यते मज़्कूरा दुरुस्त नहीं रहती। इस का जवाब येह है कि अव्वल तो हम येह तस्लीम नहीं करते कि उमूरे ख़म्सा मज़्कूरा क़लम ने लौहे़ मह़फ़ूज़ में लिखे हैं अगर ऐसा होता तो बा'ज़ मुक़र्रब फ़िरिश्ते जिन की शान येह है कि वोह लौह़ पर मुत्त़लअ़ होते हैं इन उमूर पर मुत्त़लअ़ होते। अगर हम तस्लीम कर लें कि उमूरे ख़म्सा को क़लम ने लौह़ में लिखा है तो इस से मुराद येह है कि आं ह़ज़रत के उ़लूम का जुज़ वोह इल्मे लौह़ व क़लम है जिस पर मख़्लूक़ मुत्त़लअ़ है पस येह उमूरे ख़म्सा निकल गए। इलावा अज़ीं ह़ज़रत इस दुन्या से तशरीफ़ नहीं ले गए मगर बा'द इस के कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को इन उमूर का इल्म दे दिया। अगर येह कहा जाए कि जब इल्मे लौह़ व क़लम ह़ज़रत के उ़लूम का एक जुज़ ठहरा तो दूसरा जुज़ कौन सा है? इस का जवाब यूं दिया गया है कि दूसरा जुज़ वोह अह़वाले आख़िरत हैं जिन की **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रत को ख़बर दी है क्यूंकि क़लम ने तो लौह़ में फ़क़त़ वोह लिखा है जो रोज़े क़ियामत तक होने वाला है।

अ़ल्लामा शैख़ मुह़िय्युद्दीन मुह़म्मद बिन मुस्त़फ़ा मा'रूफ़ बेह शैख़ ज़ादा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه जिन्हों ने "तफ़्सीरे बैज़ावी" पर ह़ाशिया लिखा है इसी बैत की शर्ह़ में लिखते हैं :

والعلم فی ھذا البیت اما بمعناہ او بمعنی المعلوم ای معلوماتك

المعلومات الحاصلة منھما ولعل اللّٰہ اطلعه علٰی جمیع ما فی اللوح وزادہ ایضاً لان اللوح والقلم متناھیان فما فیھما متناہ ویجوز احاطة المتنا ھی با لمتناھی ھذا علی قدر فھمك اما من اکتحلت عین بصیرته بالنور الاِلٰھی فیشاھد بالذوق ان علم اللوح والقلم جزء من علومه کما ھی جزء من علم اللّٰہ سبحانه لانه علیه السلام عند الانسلاخ من البشریة کما لا یسمع ولا یبصر ولا یبطش ولا ینطق الا به جلت قدرته و عمت نعمته کذلك لا یعلم الا بعلمه الذی لا یحیطون بشیء منه الا بما شاء کما اشار الیه بقوله:(1)

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ط (2)

---

1 ......شرح شیخ زادہ علی ھامش عقیدة الشھدة، تحت فان من جودك الدنیا....الخ،ص۲۱۹ ـعلمیه

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे। (پ۵،النساء:۱۱۳) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस बैत में इ़ल्म या तो अपने मा'ना में है या मा'लूम के मा'ना में है या'नी आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मा'लूमात वोह मा'लूमात हैं जो दोनों से ह़ासिल हुवे हैं और शायद अल्लाह ने ह़ज़रत को उस तमाम पर मुत्तलअ़ कर दिया है जो लौह़ में है और इस से ज़ियादा का भी इ़ल्म दिया है चूंकि लौह़ो क़लम मुतनाही हैं। पस जो कुछ इन दोनों में है वोह मुतनाही है और मुतनाही का इह़ात़ा मुतनाही से जाइज़ है। इस क़दर बात तेरी समझ के मुत़ाबिक़ है। लेकिन वोह शख़्स जिस की बसीरत की आंख में नूरे इलाही का सुर्मा पड़ा हुवा है वोह ज़ौक़ से मुशाहदा करता है कि उ़लूमे लौह़ो क़लम ह़ज़रत के उ़लूम का जुज़ हैं जैसा कि अल्लाह سُبْحَانَهٗ के इ़ल्म का जुज़ हैं क्यूंकि हु़ज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام बशरिय्यत से इन्सिलाख़ के वक़्त जैसा कि नहीं सुनते, नहीं देखते नहीं पकड़ते और नहीं बोलते मगर साथ अल्लाह के इसी त़रह़ हु़ज़ूर नहीं जानते मगर साथ उस इ़ल्मे खुदा के जिस में से किसी चीज़ को नहीं घेरते मलाइक व अम्बिया वग़ैरा मगर जो वोह चाहे। जैसा कि उस ने अपने इरशाद : (وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ) में इस की त़रफ़ इशारा किया है।

बयाने बाला से येह न समझा जाए कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म के मसावी है क्यूंकि दोनों में ब लिह़ाज़े कैफ़िय्यत व कमिय्यत बड़ा फ़र्क़ है। अल्लाह तआ़ला का इ़ल्म बिग़ैर ज़राएअ़ व वसाइल, ज़ाती, क़दीम। हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का इ़ल्म अ़त़ाई, ह़ादिस है। इसी त़रह़ कमिय्यत में भी फ़र्क़ बय्यिन है क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म से वोह निस्बत भी नहीं रखता जो क़त़रे को समन्दर से होती है। चुनान्चे, सह़ीह़ बुख़ारी (तफ़्सीरे कह्फ़) में क़िस्सए ह़ज़रते मूसा व ह़ज़रते ख़िज़्र (عَلَيْهِمَا السَّلَام) में है :

"قال و جاء عصفور فوقع على حرف السفينة فنقر فى البحر نقرة فقال له الخضر ما علمي و علمك من علم الله الا مثل ما نقص هذا العصفور من هذا البحر."[1]

फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कि एक चिड़िया किश्ती के किनारे पर आ कर बैठी उस ने अपनी चोंच समन्दर में डुबोई। ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया कि मेरा इ़ल्म और आप का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म के मुक़ाबले में इतना भी नहीं जितना (पानी) इस चिड़िया ने समन्दर में से अपनी चोंच में ले लिया।

शैख़ इस्माई़ल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तफ़्सीरे "रूहुल बयान" में आयह وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ[2] के तह़त में यूं लिखते हैं :

1 ......صحيح البخارى، كتاب التفسير، سورة الكهف، باب واذ قال موسى لفتاه لا ابرح ...الخ، الحديث:٤٧٢٥، ج٣ ص٢٦٦ـعلميه

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह नहीं पाते उस के इ़ल्म में से मगर जितना वोह चाहे। (پ٣، البقرة:٢٥٥) **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

قال شيخنا العلامة ابقاه الله بالسلامة فى الرسالة الرحمانية فى بيان الكلمة الفرقانية : علم الاولياء من علم الانبياء بمنزلة قطرة من سبعة ابحر وعلم الانبياء من علم نبينا محمد عليه الصلٰوة والسلام بهذه المنزلة وعلم نبينا من علم الحق سبحانه بهذه المنزلة.(1)

हमारे उस्ताद अ़ल्लामा ने, **अल्लाह** उन को सलामत रखे, "الرسالۃ الرحمانیہ فی بیان الکلمۃ العرفانیہ" में फ़रमाया कि औलिया का इ़ल्म अम्बिया के इ़ल्म के मुक़ाबले में ब मन्ज़िला एक क़त़रा के है सात समन्दरों में से और अम्बिया का इ़ल्म हमारे नबी मुह़म्मद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इ़ल्म के साथ येही निस्बत रखता है और हमारे नबी का इ़ल्म ह़क़ سبحانہ के इ़ल्म के साथ येही निस्बत रखता है।

साह़िबे क़सीदए बुर्दा शरीफ़ फ़रमाते हैं :

وَ كُلُّهُمْ مِّنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ مُلْتَمِسٌ غَرْفًا مِّنَ الْبَحْرِ اَوْ رَشْفًا مِنَ الدِّيَمِ
وَ وَاقِفُوْنَ لَدَيْهِ عِنْدَ حَدِّهِمِ مِنْ نُّقْطَةِ الْعِلْمِ اَوْ مِنْ شَكْلَةِ الْحِكَمِ(2)

तर्जमए मन्ज़ूम

हैं रसूलुल्लाह के फ़ैज़ान से सैराब सब वोह किसी के ह़क़ में शबनम हैं किसी के ह़क़ में यम
उस की पेशी में खड़े हैं अपनी अपनी ह़द पे सब है कोई तो नुक़्ता इ़ल्म कोई ए'राबे हुक्म

इन शे'रों की तशरीह़ व मत़लब येह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने सब से पहले सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूह़े पाक को पैदा किया फिर इसे ख़िलअ़ते नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया वोह रूह़े पाक आ़लमे अरवाह़ में दीगर अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام की रूह़ों को ता'लीम दिया करती थी हर एक रूह़ ने ह़स्बे क़ाबिलिय्यत व इस्ति'दाद हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की रूह़ से इस्तिफ़ादए इ़ल्म किया। किसी ने हु़ज़ूर के इ़ल्म के "बह़्रे ज़ख़्ख़ार" से ब क़दर एक चुल्लू के लिया और किसी ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ान की लगातार बारिशों से ब क़दर एक क़त़रा या घूंट के लिया। "उ़लूम व मआ़रिफ़" जो अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूह़े अक़्दस से ह़ासिल किये इन की ग़ायत व निहायत(3)

1.....तफ़्सीरे "रूह़ुल बयान" में इस रिसाले का नाम "الرسالۃ الرحمانیۃ فی بیان الکلمۃ العرفانیۃ" लिखा है मुमकिन है मुसन्निफ़ के पास "रूह़ुल बयान" का जो नुस्ख़ा हो उस में "الرسالۃ الرحمانیۃ فی بیان الکلمۃ الفرقانیۃ" ही हो (किताबत की ग़लत़ी का भी एह़तिमाल है) وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم (تفسیر روح البیان،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ:۲۵۵،ج۱،الجزء۳،ص۴۰۳) **इ़ल्मिय्या**

2.....القصیدتان، البردۃ للبوصیری، الفصل الثالث فی مدح رسول اللّٰہ،ص۱۲-۱۳۔علمیہ

3.....इब्तिदा व इन्तिहा।

www.dawateislami.net

हुज़ूर के इ़ल्म के दफ़्तर का फ़क़त़ एक नुक़्त़ा या आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मआ़रिफ़ के दफ़्तर का मह़ूज़ एक ए'राब है।

जो शख़्स हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे ग़ैब का मुत़लक़न इन्कार करता है उसे आयए ज़ैल और इस का शाने नुज़ूल मुत़ालआ़ करना चाहिये :

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ قُلْ اَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۶۵﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ؕ (توبہ،ع ۸)

*और अलबत्ता अगर तू उन से पूछे तो अलबत्ता वोह कहेंगे सिवाए उस के नहीं कि हम बोल चाल करते थे और खेलते थे तू कह दे क्या तुम **अल्लाह** से और उस के कलाम और उस के रसूल से ठठ्ठा करते हो बहाने मत बनाओ तह़क़ीक़ तुम अपने ईमान के बा'द काफ़िर हो गए।* (1)

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه तफ़्सीर "दुर्रे मन्सूर" (जुज़्ए सालिस, स. 254) में फ़रमाते हैं कि इब्ने अबी शैबा और इब्नुल मुन्ज़िर और इब्ने अबी ह़ातिम व अबुश्शैख़ नक़्ल करते हैं कि इमाम मुजाहिद ने **अल्लाह** तआ़ला के क़ौल : وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ؕ का शाने नुज़ूल येह बयान किया है :

قال رجل من المنافقين يحدثنا محمد ان ناقة فلان بواد كذا وكذا في يوم كذا وكذا وما يدريه الغيب (2)

मुनाफ़िक़ीन में से एक शख़्स ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हमें बताते हैं कि फ़ुलां शख़्स की ऊंटनी फ़ुलां दिन फ़ुलां वादी में थी वोह ग़ैब क्या जानें।

मत़लब येह कि एक शख़्स की ऊंटनी गुम हो गई थी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह फ़ुलां वादी में है। एक मुनाफ़िक़ बोला : वोह ग़ैब की ख़बरें क्या जानें? इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ीन जो बत़रीक़े इस्तिह्ज़ा कहते हैं कि ह़ज़रत ग़ैब की ख़बर क्या जानें और इस के लिये बहाने बनाते हैं, उन से कह दीजिये कि इस इस्तिह्ज़ा के सबब तुम काफ़िर हो गए। येह क़िस्सा ग़ज़्वए तबूक में पेश आया था जिसे हम ब रिवायते इब्ने इस्ह़ाक़ व वाक़िदी पहले नक़्ल कर आए हैं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब अगर तुम उन से पूछो तो कहेंगे कि हम तो यूंही हंसी खेल में थे तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसते हो बहाने न बनाओ तुम काफ़िर हो चुके मुसलमान हो कर। (پ۱۰،التوبة:۶۵۔۶۶) **इ़ल्मिय्या**

2.....الدر المنثور فی التفسير الما ثور،سورة التوبة،تحت الاية:۶۵،ج۴، الجزء۱۰،ص۲۳۰۔علميه

www.dawateislami.net

"इख़्बार बिल मुग़य्यबात"[1] की दो क़िस्में हैं : एक तो वोह जो क़ुरआने मजीद में मज़्कूर हैं, दूसरे वोह जो अह़ादीस में वारिद हैं। क़िस्मे अव्वल का ज़िक्र ए'जाज़ुल क़ुरआन में हो चुका, क़िस्मे दुवुम की चन्द और मिसालें येह हैं :

कुफ़्फ़ार पर अपनी उम्मत के ग़लबे की ख़बर देना। ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को यमन की त़रफ़ रवाना करते वक़्त फ़रमा देना कि इस साल के बा'द तू मुझे न पाएगा। ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को रास्ते के अम्न की ख़बर देना और फ़रमा देना कि अगर तेरी ज़िन्दगी दराज़ हुई तो देख लेगा कि एक औ़रत ह़ीरा से तन्हा सफ़र कर के ख़ानए का'बा का त़वाफ़ करेगी और उसे ख़ुदा के सिवा किसी का डर न होगा। सह़ीफ़ए क़ुरैश जिसे उन्हों ने ब ह़िफ़ाज़ते तमाम ख़ानए का'बा की छत में रखा था उस की निस्बत तीन साल के बा'द बता देना कि **अल्लाह** के नाम के सिवा बाक़ी को दीमक चाट गई है। ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़ह़रा की निस्बत फ़रमाना कि अहले बैत में से मेरी वफ़ात के बा'द वोह सब से पहले मेरे पास पहुंचेगी। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ज़ैनब की निस्बत यूं फ़रमाना कि मेरी वफ़ात के बा'द मेरे अज़्वाज में से सब से पहले जो मुझ से मिलेगी वोह दराज़ दस्त (लम्बे हाथ वाली) है। उबय्य बिन ख़लफ़ की निस्बत ख़बर देना कि येह मेरे हाथ से क़त्ल होगा। अस्ह़मा नजाशी की मौत की ख़बर देना जिस दिन उस ने ह़बशा में वफ़ात पाई। शबे मे'राज की सुब्ह़ को क़ुरैश के क़ाफ़िलों की ख़बर देना जो तिजारत के लिये शाम को गए हुवे थे। ग़ारे सौर से निकलने के बा'द मदीने के रास्ते में सुराक़ा बिन मालिक से फ़रमाना कि तू किसरा के कंगन पहनाया जाएगा। सिलसिलए ख़िलाफ़त और ख़ुलफ़ाए सलासा ह़ज़रते उ़मर व उ़स्मान व अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) की शहादत की ख़बर देना, वाक़िअ़ए जमल व सिफ़्फ़ीन की ख़बर देना, वबाए अ़म्वास की ख़बर देना, ह़ज़रते इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दो गुरौहे इस्लाम में ज़रीअ़ए सुल्ह़ होने की ख़बर देना, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत की ख़बर देना, ह़ज़रते अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की विलायत की ख़बर देना, ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमा देना कि तुझे बाग़ी गुरौह क़त्ल करेगा, ख़ुलफ़ाए बनी उमय्या व बनी अ़ब्बास के ह़ालात की ख़बर देना, ह़ज्जाज ज़ालिम और मुख़्तार कज़्ज़ाब की ख़बर देना, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की निस्बत फ़रमाना कि येह बैतुल्लाह शरीफ़ को बचाएगा यहां तक कि शहीद हो जाएगा, ख़वारिज व राफ़िज़ा व क़दरिय्या व मुर्जइय्या व ज़नादिक़ा की ख़बर देना, उम्मत के तहत्तर फ़िर्क़े होने और उन में से एक के नाजी होने की ख़बर देना, ग़ज़्वए उहुद में ख़बर देना कि ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को फ़िरिश्ते ग़ुस्ल दे रहे

1.....ग़ैब की ख़बरे देना।

www.dawateislami.net

हैं, बद्र के मैदाने जंग में कुफ़्फ़ारे कुरैश के मरने की जगहों का अलग थलग निशान देना कि यहां फ़ुलां काफ़िर मरेगा और वहां फ़ुलां, जंगे बद्र के ख़ातिमे पर अपने चचा अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बता देना कि तुम अपनी बीवी उम्मुल फ़ज़्ल के पास मक्का में माल छोड़ आए हो ह़ालांकि अ़ब्बास व उम्मुल फ़ज़्ल के सिवा किसी और को उस माल का इल्म न था, ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लक़ से वापसी के वक़्त मदीनए मुनव्वरा के क़रीब फ़रमा देना कि येह तेज़ हवा एक बड़े मुनाफ़िक़ (रफ़ाअ़ा बिन ज़ैद बिन अत्ताबूत) की मौत के लिये चली है, ह़ज़रते अक़रअ़ बिन शक़ी अल अ़की से ह़ालते बीमारी में फ़रमा देना : तू इस बीमारी में नहीं मरेगा बल्कि मुल्के शाम में हिजरत करेगा और वहीं वफ़ात पाएगा और रम्ला में दफ़्न होगा, फ़त्हे मक्का की तय्यारियों के वक़्त ह़ातिब बिन अबी बलतआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ख़त़ की ख़बर देना जो उस ने अहले मक्का को इन तय्यारियों से मुत्त़लअ़ करने के लिये लिखा था और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वग़ैरा से बता देना कि इस हुल्ये की एक औ़रत उस ख़त़ को ले जा रही है और तुम उसे फ़ुलां जगह जा पकड़ोगे, वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस के आने की ख़बर देना, ग़ज़्वए मौता जो मदीनए मुनव्वरा से एक महीने की मसाफ़त पर मुल्के शाम में हो रहा था उस की निस्बत ख़बर देना कि ह़ज़रते ज़ैद व जा'फ़र व इब्ने रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) यके बा'द दीगरे शहीद हो गए और आख़िर ह़ज़रते ख़ालिद ने फ़त्ह़ पाई, मक़ामे तबूक में जो शाम व मदीने के दरमियान है फ़रमा देना कि आज मदीने में ह़ज़रते मुआ़विय्या लैसिय्यी ने इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं उन की नमाज़ पढ़ना, किसरा व क़ैसर के हलाक होने और फ़ारिस व रूम के फ़त्ह़ होने की ख़बर देना, लबीद बिन आ़सिम यहूदी के जादू की ख़बर देना, मोमिनीन व मुनाफ़िक़ीन के अस्रार की ख़बर देना, ह़ज़रते उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़बर देना, बिनाए बग़दाद व बुसरा व कूफ़ा की ख़बर देना, इमाम अबू ह़नीफ़ा व मालिक व शाफ़ेई (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) की बिशारत देना वग़ैरा वग़ैरा येह तमाम उमूर इसी त़रह़ वुक़ूअ़ में आए जिस त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी थी।

क़ियामत की निशानियां जो आप ने बयान फ़रमाईं वोह इन के इलावा हैं और वोह तीन क़िस्म की हैं : पहली दो क़िस्मों को आसारे सुग़रा से ता'बीर किया जाता है और तीसरी को आसारे कुब्रा कहते हैं।

अव्वल :- वोह आसार जो वुक़ूअ़ में आ चुके मसलन हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़, तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का इस दुन्या से रिह़लत फ़रमाना, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का शहीद होना, तातारियों का फ़ितना, ह़िजाज़ की आग, झूटे दज्जालों का दा'वाए रिसालत के साथ निकलना, बैतुल मुक़द्दस और मदाइन का फ़त्ह़ हो जाना, सल्त़नते

www.dawateislami.net

अ़रब का ज़ाइल हो जाना, तीन ख़ुसूफ़ का वुक़ूअ़, (एक मशरिक़ में एक मग़रिब में और एक जज़ीरए अ़रब में।)[1] क़त्ल और फ़ितनों और ज़लज़लों की कसरत, मस्ख़ व क़ज़्फ़, रीह़ अह़मर, इन्क़ित़ाए त़रीक़े ह़ज,[2] का'बतुल्लाह से हजरे अस्वद का उठ जाना,[3] कसरते मौत वग़ैरा।

दुवुम :- वोह आसार जो ज़ुहूर में आ चुके और ज़ियादा हो रहे हैं ह़त्ता कि क़िस्मे सिवुम से मिल जाएंगे। मसलन आ़बिदों का जाहिल होना, क़ारियों का फ़ासिक़ होना, चांदों का इतना बड़ा नज़र आना कि कहा जाए येह दूसरी रात का चांद है, बारिश का ज़ियादा होना और रूईदगी[4] का कम होना, क़ारियों की कसरत और फ़ुक़हा की क़िल्लत, अमीरों की कसरत और अमीनों की क़िल्लत, फ़ासिक़ों का सरदारे क़बीला और फ़ाजिरों का ह़ाकिमे बाज़ार बनाना, मोमिन का अपने क़बीले में नक़द[5] से ज़ियादा ज़लील होना, तिजारत की कसरत, औ़रत का अपने शोहर के साथ शरीके तिजारत होना, क़त़ए रेह़्म करना, कातिबों की कसरत और उ़लमा की क़िल्लत, झूटी गवाही का ज़ाहिर होना, अमानत को ग़नीमत समझना, ज़कात को तावान ख़याल करना, इ़ल्मे दीन को दुन्या की ख़ात़िर सीखना, उ़क़ूक़े वालिदैन[6] की कसरत, बड़ों की इ़ज़्ज़त न होना, छोटों पर रह़्म न किया जाना, अवलादे ज़िना की कसरत, ऊंचे मह़लों पर फ़ख़्र करना, मस्जिदों में दुन्या की बातें करना, नमाज़ पढ़ाने के लिये मस्जिदों में इमामों का न मिलना, बिग़ैर शुरूत़ व अरकान नमाज़ें पढ़ना ह़त्ता कि पचास में से एक नमाज़ का भी क़ाबिले क़बूल न होना, मस्जिदों की आराइश

---

1 ......صحیح مسلم،کتاب الفتن...الخ،باب فی الآیات التی...الخ،الحدیث:۲۹۰۱،ص۱۵۵۱۔علمیه

2.....ह़ज का मौक़ूफ़ हो जाना।

3.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ह़ज मौक़ूफ़ होने का वाक़िआ़ सिने 320 हिजरी में हुवा और फ़िर्क़ए क़रामत़ा के फ़ितने के सबब बग़दाद शरीफ़ से सिने 327 हिजरी तक ह़ज का सिलसिला मौक़ूफ़ रहा। इसी त़रह़ सिने 324 हिजरी में इ़राक़ से आने वाले ह़ाजियों को रास्ते से वापस लौटना पड़ा क्यूंकि उसैग़र आ'राबी ने उन्हें बाज (टेक्स) लिये बिग़ैर गुज़रने से रोक दिया, अहले यमन व शाम भी ह़ज न कर सके, सिर्फ़ मिसरियों ने ह़ज की सआ़दत पाई। ख़िलाफ़ते बनू उ़स्मान में, शैख़ अ़लवान ह़मवी के दौर में भी शाम के रास्ते से ह़ज का सिलसिला कई साल मौक़ूफ़ रहा। और ह़जरे अस्वद उखेड़ कर ले जाने का वाक़िआ़ ख़लीफ़ा मुक़्तदिर बिल्लाह के दौर में हुवा उस ने जब ह़ाजियों के हमराह मन्सूर दैलमी को मक्कए मुकर्रमा रवाना किया और क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा पहुंचा तो इसी दौरान दुश्मने ख़ुदा अबू त़ाहिर क़रमत़ी यौमे तरविय्या को वहां पहुंच गया उस ने मस्जिदे ह़राम में हज़ारों ह़ाजियों को क़त्ल किया, ह़जरे अस्वद को अपने गुर्ज़ से तोड़ डाला और उखेड़ कर ले गया। बीस साल से ज़ियादा अ़र्सा तक ह़जरे अस्वद क़रामत़ा के क़ब्ज़े में रहा फिर जब अ़ब्बासी ख़लीफ़ा मुत़ीअ़ के दौर में येह मग़लूब हुवे तो ह़जरे अस्वद को ला कर दोबारा का'बतुल्लाह शरीफ़ की दीवार में नस्ब कर दिया गया। (حجة الله علی العالمین،القسم الرابع،الباب الثانی،الفصل الثالث،ص۵۸۹)

4.....हरयाली, सब्ज़ा। 5.....नक़द ब फ़त्ह़े नून व क़ाफ़। एक क़िस्म की बद शक्ल बकरी होती है जिस के हाथ पाउं छोटे छोटे होते हैं। येह ज़िल्लत में ज़र्बुल मसल है। चुनान्चे, कहा जाता है اَذَلُّ مِنَ النَّقَدِ या'नी नक़द से ज़ियादा ज़लील। इस की जम्अ़ नक़्क़ाद है। 6.....मां बाप की ना फ़रमानी।

www.dawateislami.net

करना, मस्जिदों को रास्ते बनाना, क़रीबी लड़की से उस की मुफ़्लिसी के सबब निकाह़ न करना और किसी दनिय्यतुल अस्ल[1] से उस की दौलत मन्दी के सबब निकाह़ कर लेना, नाह़क़ माल लेना, ह़लाल दिरहम का न पाया जाना, साइल का मह़रूम रहना, इस्लाम का ग़रीब होना, लोगों में कीना व बुग़्ज़ होना, उ़म्रें कम होना, दरख़्तों के फलों का कम होना, झूटे को सच्चा और सच्चे को झूटा जानना, माल ह़ासिल करने के लिये लोगों की मुनाफ़िक़ाना मद्ह़ करना, ख़ुत़बा का झूट बोलना, हुक्काम का ज़ुल्म करना, नुजूमियों को सच्चा जानना, क़ज़ा व क़दर को ह़क़ न जानना, मर्द का औ़रत या दूसरे मर्द से लिवात़त करना, जिहाद न करना, मालदारों की ता'ज़ीम करना, कबीरा गुनाहों को ह़लाल जानना, सूद और रिश्वत खाना, क़ुरआन को मज़ामीर बनाना, दरिन्दों के चमड़ों के फ़र्श बनाना, रेशम पहनना, जहालत व ज़िना व शराब नोशी की कसरत, ख़ाइन को अमीन और अमीन को ख़ाइन समझना, गाने वाली लौंडियों का रखना, आलाते लह्व का ह़लाल समझना, ह़ुदूदे शरइय्या का जारी न होना, अ़ह्द तोड़ना, औ़रतों का मर्दों से और मर्दों का औ़रतों से मुशाबहत पैदा करना, अख़ीर उम्मत का अव्वल उम्मत को बुरा कहना, मर्दों का इमामे छोड़ कर अ़जमियों की त़रह़ ताज पहनना, क़ुरआन को तिजारत बनाना, माल में से **अल्लाह** का ह़क़ अदा न करना, जूआ खेलना, बाजे बजाना, कम तोलना, जाहिलों को ह़ाकिम बनाना, मस्जिदें बनाने पर फ़ख़्र करना, मर्दों की क़िल्लत और औ़रतों की कसरत यहां तक कि एक मर्द पचास औ़रतों का मुतकफ़्फ़िल होगा वग़ैरा वग़ैरा।[2]

सिवुम :– आसारे कुब्रा जिन के बा'द ही क़ियामत आ जाएगी येह आसार यके बा'द दीगरे पै दर पै ज़ाहिर होंगे जैसे सिल्के मर्वारीद[3] से मोती गिरते हैं, इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ुहूर से शुरूअ़ हो कर नफ़्ख़े सूर पर ख़त्म हो जाएंगे। इन का बयान जो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीसों में पाया जाता है इस का ख़ुलासा ह़स्बे मा'लूमात ख़ुद नीचे दर्ज किया जाता है :

जब आसारे सुग़रा सब ज़ाहिर हो चुकेंगे तो उस वक़्त नसारा का ग़लबा होगा, एक मुद्दत के बा'द ख़ालिद बिन यज़ीद बिन अबी सुफ़्यान उमवी की अवलाद से एक शख़्स सुफ़्यान नाम जानिबे दिमश्क़ से ज़ाहिर होगा जिस की ननहियाल क़बीलए क़ल्ब होगा वोह अहले बैत को बुरी त़रह़ क़त्ल करेगा, शाम व मिस्र के अत़राफ़ में उस का हुक्म जारी होगा। इसी असना में शाहे रूम की ईसाइयों के एक फ़िर्क़े से जंग और दूसरे से सुल्ह़ होगी, लड़ने वाला फ़िर्क़ा क़ुस्त़नत़ीनिय्या

---

1 .....ह़क़ीर।

2 ......حلية الاولياء،عبداللّٰه بن عبيد بن عمر،الحديث:٤٤٤٨،ج٣،ص٤١٠-٤١١وسنن الترمذى، كتاب الفتن،باب ما جاء فى علامة...الخ،الحديث:٢٢١٨،ج٤،ص٩٠وصحيح البخارى، كتاب العلم،باب رفع العلم وظهور الجهل، الحديث:٨١،ج١،ص٤٧وبهار شريعت،ج١،حصه اول،ص١١٦-١١٩ـعلميه

3 .....मोतियों के हार।

www.dawateislami.net

पर क़ब्ज़ा कर लेगा, शाहे रूम मुल्के शाम में आ जाएगा और दूसरे फ़िर्क़े की मदद से एक ख़ूं रेज़ लड़ाई के बा'द फ़त्ह़ पाएगा, दुश्मन की शिकस्त के बा'द फ़िर्क़ए मुवाफ़िक़ में से एक शख़्स बोल उठेगा कि येह फ़त्ह़ सुलैब की बरकत से हुई है। इस्लामी लश्कर में से एक शख़्स उसे मार पीट करेगा और कहेगा : नहीं बल्कि इस्लाम की बरकत से ऐसा हुवा है। अल ग़रज़ दोनों अपनी अपनी क़ौम को मदद के लिये पुकारेंगे और "ख़ाना जंगी" शुरूअ़ हो जाएगी[1] जिस में बादशाहे इस्लाम शहीद हो जाएगा और दोनों ईसाई फ़रीक़ बाहम सुल्ह़ कर लेंगे इस त़रह़ शाम में ईसाई राज हो जाएगा। बक़िय्यतुस्सैफ़[2] मुसलमान मदीनए मुनव्वरा चले आएंगे और ईसाइयों की ह़ुकूमत मदीनए मुनव्वरा के क़रीब ख़ैबर तक फैल जाएगी। उस वक़्त अहले इस्लाम को इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की तलाश होगी।

ह़ज़रते इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

ह़ज़रते इमाम मदीने से मक्का तशरीफ़ ले आएंगे, अहले मक्का की एक जमाअ़त ह़जरे अस्वद व मक़ामे इब्राहीम के दरमियान आप से बैअ़त करेगी ह़ालांकि आप उस मन्सबे इमामत पर राज़ी न होंगे, आप का इस्मे गिरामी मुह़म्मद, बाप का नाम अ़ब्दुल्लाह और मां का नाम आमिना होगा। आप ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की अवलाद से होंगे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की उ़म्र मुबारक उस वक़्त चालीस साल होगी।

इन ह़ालात में मा वराउन्नह्र से एक शख़्स ह़ारिस ह़र्रास नाम अहले इस्लाम की मदद के लिये एक लश्कर भेजेगा जिस का मुक़द्दमा मन्सूर के ज़ेरे कमान होगा,[3] येह लश्कर रास्ते ही में बहुत से ईसाइयों और बद दीनियों का सफ़ाया करेगा। ज़ालिम सुफ़्यान जिस का ऊपर ज़िक्र हुवा अपना लश्कर इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुक़ाबले के लिये भेजेगा जो शिकस्त खाएगा। इस के बा'द ख़ुद सुफ़्यान लश्कर के साथ मुक़ाबले के लिये आएगा और मक़ामे बैदा में मक्का व मदीना के दरमियान लश्कर समेत ज़मीन में धंस जाएगा, सिर्फ़ एक शख़्स बचेगा जो इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को इस वाक़िए की ख़बर देगा, ह़ज़रते इमाम की इस करामत की ख़बर दूर दूर पहुंच जाएगी। शाम के अब्दाल और इ़राक़ के अवताद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

---

1 ......سنن ابی داود،اول کتاب الملاحم،باب مایذکر من ملاحم الروم،الحدیث:۴۲۹۲-۴۲۹۳،ج۴، ص۱۴۸-۱۴۹
......اشعۃ اللمعات،کتاب الفتن،باب اشراط الساعۃ،ج۴،ص۳۳۸۔علمیہ

2 .....बचे हुवे।

3 ......سنن ابی داود،کتاب المھدی،الحدیث:۴۲۸۲-۴۲۸۴-۴۲۸۶،ج۴،ص۱۴۴-۱۴۵......سنن ابی داود،کتاب المھدی،الحدیث:۴۲۹۰،ج۴،ص۱۴۷۔علمیہ

www.dawateislami.net

के दस्ते मुबारक पर बैअ़त करेंगे,[1] फ़ौजे मदीना के इलावा बाक़ी अ़रब व यमन के लोग ब कसरत आप के लश्कर में दाख़िल हो जाएंगे।

अफ़्वाजे इस्लाम की ख़बर सुन कर नसारा भी मुमालिके रूम वग़ैरा से लश्करे जर्रार ले कर शाम में जम्अ़ हो जाएंगे। लश्करे कुफ़्फ़ार में अस्सी झन्डे होंगे और हर झन्डे तले बारह हज़ार सुवार होंगे। इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मक्का से ब ग़रज़े ज़ियारत मदीनए मुनव्वरा जाएंगे और वहां से मुल्के शाम पहुंचेंगे। ह़लब या दिमश्क़ के नवाह़ में लश्करे कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला होगा। ह़ज़रते इमाम के लश्कर का तिहाई ह़िस्सा भाग जाएगा जिन की मौत कुफ़्र पर होगी और एक तिहाई शहादत से मुशर्रफ़ होगा और बाक़ी तिहाई फ़त्ह़ पाएगा। दूसरे रोज़ इमाम मौसूफ़ नसारा के मुक़ाबले के लिये निकलेंगे। मुसलमानों की एक जमाअ़त अ़ह्द करेगी कि बिग़ैर फ़त्ह़ पाए या शहीद हुवे मैदान से वापस न आएंगे। येह सब के सब शहीद हो जाएंगे। अगले रोज़ फिर एक जमाअ़त येही अ़हद करेगी और जामे शहादत नोश करेगी। इसी त़रह़ तीसरे दिन भी वुक़ूअ़ में आएगा। चौथे रोज़ बक़िय्या अहले इस्लाम कुफ़्फ़ार पर फ़त्ह़ पाएंगे मगर इस से किसी को ख़ुशी न होगी क्यूंकि इस लड़ाई में बहुत से ख़ानदान ऐसे होंगे जिन में फ़ीसदी एक बचा होगा। इस के बा'द इमाम मौसूफ़ नज़्म व नसक़ में मश्ग़ूल होंगे और दुन्या को अ़द्लो इन्साफ़ से भर देंगे फिर एक सख़्त लड़ाई के बा'द क़ुस्त़नत़ीनिय्या फ़त्ह़ हो जाएगा।[2]

दज्जाले लईन

जब अहले इस्लाम ग़नाइमे क़ुस्त़नत़ीनिय्या तक़्सीम कर रहे होंगे तो शैत़ान आवाज़ देगा कि दज्जाल तुम्हारे अहलो अवलाद में आ गया है। येह सुनते ही ग़नाइम छोड़ कर दज्जाल की त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे और दस सुवार बत़ौरे त़लीआ़[3] ख़बर लाने के लिये भेजेंगे इन की निस्बत

1 ......سنن ابی داود، کتاب المهدی، الحديث:٤٢٨٦، ج٤، ص١٤٥ ......اشعة اللمعات، کتاب الفتن، باب اشراط الساعة، ج٤، ص٣٣٨۔علميه

2 ......صحيح مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب فی فتح قسطنطينية...الخ، الحديث:٣٤-(٢٨٩٧)، ص١٥٤٨-١٥٤٩، سنن ابن ماجه، کتاب الفتن، باب الملاحم، الحديث: ٤٠٨٩، ج ٤، ص٤١٦ ......صحيح مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب اقبال الروم...الخ، الحديث: ٣٧-(٢٨٩٩)، ص ١٥٤٩ ......سنن ابی داؤد، کتاب المهدی، الحديث: ٤٢٨٢، ج ٤، ص ١٤٤۔علميه

3 .....वोह लश्कर जो फ़ौज से आगे दुश्मन की नक़्ल व ह़रकत का पता लगाने के लिये भेजा जाए।

www.dawateislami.net

हुज़ूर रसूले करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं उन के नाम, उन के बापों के नाम, उन के घोड़ों के रंग पहचानता हूं और वोह उस वक़्त रूए ज़मीन पर बेहतरीन सुवारों में से होंगे।[1] येह अफ़्वाह ग़लत़ साबित होगी, लश्करे इस्लाम जब कुस्त़नत़ीनिय्या से रवाना हो कर शाम पहुंचेगा तो जंगे अ़ज़ीम से सातवें साल शाम व इ़राक़ के दरमियान एक रास्ते से दज्जाल ज़ाहिर होगा।[2] उस के ज़ुहूर से पहले दो साल क़ह़त़ रहेगा। तीसरे साल दौराने क़ह़त़ ही में उस का ज़ुहूर होगा।

दज्जाल की एक आंख और एक अब्रू बिल्कुल न होगी बल्कि वोह जगह हमवार होगी। मम्सूहुल ऐ़न होने[3] के सबब से उसे मसीहुद्दज्जाल कहते हैं। वोह एक बड़े गधे पर सुवार होगा और उस की पेशानी के दरमियान "ک ا ف ر" (काफ़िर) लिखा होगा जिसे सिर्फ़ अहले ईमान कातिब व ग़ैरे कातिब पढ़ लेंगे। वोह रूए ज़मीन पर फिरेगा और लोगों को अपनी उलूहिय्यत की दा'वत देगा और वोह उसी ग़रज़ के लिये अपने सराया[4] मुख़्तलिफ़ अत़राफ़ में भेजेगा। उस के साथ एक बाग़ होगा जिसे वोह जन्नत कहेगा और एक आग होगी जिसे दोज़ख़ बताएगा। मुवाफ़िक़ीन को वोह अपनी बिहिश्त में और मुख़ालिफ़ीन को अपनी दोज़ख़ में डालेगा। मगर ह़क़ीक़त में वोह बिहिश्त दोज़ख़ की ख़ासिय्यत रखती होगी और दोज़ख़ बाग़े बिहिश्त की मानिन्द होगी। उस के पास अश्याए ख़ुर्दनी का बड़ा ज़ख़ीरा होगा, उस में से जिसे चाहे देगा, लोगों की आज़्माइश के लिये उस से ख़ारिक़े आ़दत उमूर ज़ाहिर होंगे। जो लोग उस पर ईमान लाएंगे उन के लिये आस्मान को हुक्म देगा तो मींह बरसने लग जाएगा, ज़मीन को हुक्म देगा तो घास और ज़राअ़त ब कसरत उगाएगी, जो इन्कार करेंगे उन से मींह और ज़राअ़त व नबातात को रोक देगा, एक वीराने में पहुंचेगा तो ज़मीन से कहेगा कि अपने ख़ज़ाने निकाल दे चुनान्चे, उस वीराने के ख़ज़ाने उस के पीछे चलेंगे, बा'ज़ आदमियों से कहेगा कि मैं तुम्हारे मुर्दा मां बाप को ज़िन्दा कर देता हूं अगर तुम मेरी ख़ुदाई पर ईमान लाओ। फिर वोह शैत़ानों को हुक्म देगा कि ज़मीन में से उन के मां बाप के हम शक्ल हो कर निकलो। चुनान्चे, वोह ऐसा ही करेंगे। इसी त़रह़ उस के लश्करी एक मोमिन को पेश करेंगे वोह देखते ही कह देगा कि लोगो ! येह तो दज्जाल है जिस का ज़िक्र रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कर दिया है। येह सुन कर दज्जाल हुक्म देगा कि इस को लिटा कर इस का सर तोड़ दो। ऐसा ही किया जाएगा फिर दज्जाल उस से पूछेगा : क्या तू मुझ पर ईमान नहीं लाता ? मोमिन जवाब देगा कि तू झूटा मसीह़ है। फिर दज्जाल के हुक्म से सर से पाउं तक उस के दो टुकड़े

1 ......صحيح مسلم، كتاب الفتن واشراط الساعة، باب اقبال الروم...الخ، الحديث: ٣٧-(٢٨٩٩)، ص ١٥٥٠-علميه

2 ...... سنن ابى داؤد، اوّل كتاب الملاحم، باب فى تواتر الملاحم، الحديث: ٤٢٩٦، ج ٤، ص ١٥٠-علميه

3.....काना, एक आंख न होना।   4.....फ़ौजी दस्ते।

www.dawateislami.net

किये जाएंगे। दज्जाल दोनों टुकड़ों के दरमियान चलेगा और कहेगा : उठ। वोह उठ बैठेगा। दज्जाल कहेगा : क्या तू मुझ पर ईमान लाता है ? मोमिन जवाब देगा : अब तो मुझे ख़ूब यक़ीन हो गया कि तू झूटा दज्जाल है और कहेगा : ऐ लोगो ! मेरे बा'द येह किसी और से ऐसा न कर सकेगा। बा'दे अज़ां दज्जाल उसे ज़ब्ह़ करना चाहेगा मगर न कर सकेगा और उसे अपनी दोज़ख़ में फेंक देगा मगर वोह उस मोमिन के लिये जन्नत हो जाएगी। ह़ुज़ूर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि वोह मोमिन **अल्लाह** के नज़्दीक बड़ा शहीद होगा। अल ग़रज़ दज्जाल मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर जाएगा, शाम से इस्फ़हान में पहुंचेगा, वहां सत्तर हज़ार यहूदी उस के पैरू बन जाएंगे। फिरता फिराता सरह़दे यमन पर पहुंच जाएगा वहां से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का क़स्द करेगा मगर फ़िरिश्तों की मुह़ाफ़िज़त के सबब उस में दाख़िल न हो सकेगा फिर मदीनए मुनव्वरा में पहुंचेगा, उस वक़्त मदीनए त़य्यिबा के सात दरवाज़े होंगे हर दरवाज़े पर दो दो फ़िरिश्ते मुह़ाफ़िज़ होंगे इस लिये शहर के अन्दर दाख़िल न हो सकेगा, यहां से वोह लोगों को गुमराह करता हुवा शाम की त़रफ़ रवाना होगा।(1)

ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

क़ब्ल इस के कि दज्जाल दिमश्क़ में पहुंचे इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां पहुंच कर जंग की तय्यारी कर चुके होंगे। इसी अस्ना में अचानक **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते मसीह़ बिन मरयम عَلَیْہِمَا السَّلَام को आस्मान से भेजेगा। आप दो फ़िरिश्तों के बाज़ूओं पर हाथ रखे हुवे ज़र्द रंग का जोड़ा ज़ेबे तन किये हुवे निहायत नूरानी शक्ल में दिमश्क़ के मशरिक़ी जानिब सफ़ेद मिनारे पर उतरेंगे और इस उम्मत की तकरीम व ता'ज़ीम की जिहत से ह़ज़रते इमाम मेहदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे नमाज़ पढेंगे। फिर लश्करे इस्लाम लश्करे दज्जाल पर ह़म्ला करेगा, घमसान का मा'रिक़ा

(1) ......المسند للامام احمد بن حنبل، الحديث : ١٤٩٥٩، ج ٥، ص ١٥٦ و فيض القدير، حرف الدال، فصل فى المحلى بال من هذاالحروف، ج ٣، ص ٧١٩ ......صحيح مسلم، كتاب الفتن و اشراط الساعة، باب ذكر الدجال...الخ، الحديث: ١١٠ (٢٩٣٧)، ص ١٥٦٩ ......صحيح مسلم، كتاب الفتن و اشراط الساعة، باب ذكر الدجال...الخ، الحديث : ١٠٣ـ (٢٩٣٣)، ص ١٥٦٧ ......شرح المسلم للنووى، كتاب الفتن و اشراط الساعة، باب ذكر الدجال، ج ٧ ، الجزء ١٨، ص ٦٠ ......صحيح مسلم ، كتاب الفتن و اشراط الساعة، باب فى صفة الدجال...الخ، الحديث : ١١٣ـ(٢٩٣٣) ، ص ١٥٧١ ......مشكاة المصابيح، كتاب الفتن، باب العلامات بين يدى الساعة...الخ، الحديث : ٥٤٩١، ج ٢، ص ٣٠٢ ......سنن ابن ماجه ، كتاب الفتن ، باب فتنة الدجال...الخ، الحديث : ٤٠٧٧، ج ٤، ص ٤٠٦ ـ علميه

www.dawateislami.net

होगा उस वक़्त दमे ईसा की येह ख़ासिय्यत होगी कि जहां तक आप की नज़र की रसाई होगी वहां तक आप का सांस भी पहुंचेगा और जिस काफ़िर तक वोह पहुंचेगा हलाक हो जाएगा और दज्जाल भाग जाएगा मगर ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ السَّلَام उस को बैतुल मुक़द्दस के क़रीब मौज़ए लुद्द के दरवाज़े में जा लेंगे और नेज़े से उस का काम तमाम कर देंगे। लश्करे इस्लाम लश्करे दज्जाल के क़त्लो ग़ारत में मश्ग़ूल हो जाएगा। लश्करे दज्जाल में जो यहूद होंगे उन को कोई चीज़ पनाह न देगी यहां तक कि रात के वक़्त अगर कोई यहूदी पथ्थर या दरख़्त की आड़ में छुपा होगा तो वोह पथ्थर या दरख़्त बोल उठेगा कि यहां यहूदी है इस को क़त्ल कर दो।

ज़मीन पर दज्जाल का फ़ितना चालीस दिन रहेगा जिन में से एक दिन एक साल, एक दिन एक महीने और एक दिन एक हफ़्ते के मानिन्द होगा। बाक़ी दिन मा'मूली दिनों के मानिन्द होंगे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया : जो दिन एक साल के बराबर होगा क्या उस में एक दिन की नमाज़ें काफ़ी होंगी? आप ने फ़रमाया कि नहीं एक साल की नमाज़ें उस दिन में तख़्मीना से अदा करनी होंगी।

दज्जाल के फ़ितने के रफ़्अ़ होने के बा'द ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ السَّلَام इस्लाह़ात में मश्ग़ूल होंगे, सलीब को तोड़ देंगे, ख़िन्ज़ीर को क़त्ल कर देंगे और कुफ़्फ़ार से जिज़्या क़बूल न किया जाएगा। सिवाए क़बूले इस्लाम और क़त्ल के दूसरा हुक्म न होगा। सब काफ़िर मुसलमान हो जाएंगे। इमाम मेह्दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िलाफ़त 7 या 8 या 9 साल होगी इस के बा'द आप का विसाल होगा। ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आप के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएंगे।(1)

याजूज व माजूज

इस के बा'द लोग अम्नो अमान की ज़िन्दगी बसर करते होंगे कि **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य भेजेगा कि मैं ऐसे बन्दे निकालने वाला हूं कि किसी में उन के साथ लड़ने की त़ाक़त व क़ुदरत नहीं है। तुम मेरे ख़ालिस बन्दों को कोहे तूर की त़रफ़ ले जाओ। आप عَلَيْهِ السَّلَام क़ल्अ़ए तूर में पनाह गुज़ीं हो कर सामाने ह़र्ब व रसद के मुहय्या करने में मश्ग़ूल होंगे।

(1) ...... سنن ابن ماجه، كتاب الفتن،باب فتنة الدجال...الخ، الحديث : ٤٠٧٧،ج٤،ص٤٠٦ـ٤٠٧ ...... سنن ابن ماجه، كتاب الفتن، باب فتنة الدجال ...الخ، الحديث :٤٠٧٥،ج٤،ص٤٠٢ ...... مشكاة المصابيح، كتاب الفتن ، باب اشراط الساعة،الحديث :٥٤٥٦، ج ٢، ص ٢٩٣ـعلميه

www.dawateislami.net

उस वक़्त याजूज व माजूज निकल पड़ेंगे। येह लोग याफ़िस बिन नूह़ की अवलाद से हैं इन का मुल्क क़ुत़्बे शुमाली की त़रफ़ हफ़्ते इक़्लीम[1] से बाहर बताया जाता है। इस के जानिबे शिमाल समन्दर है जो साल भर मुन–जमद रहता है। मशरिक़ो मग़रिब में दीवारों की मिस्ल दो पहाड़ हैं इन के दरमियान की एक घाटी से निकल कर वोह इस त़रफ़ के लोगों को लूट लिया करते थे। सिकन्दर ज़ुल क़रनैन ने उन को एक आहनी दीवार के ज़रीए़ से बन्द कर दिया था जिस की बुलन्दी इन दोनों पहाड़ों की चोटी तक पहुंचती है और मोटाई साठ गज़ है। वोह दिन भर उस दीवार के तोड़ने में लगे रहते हैं मगर रात को क़ुदरते इलाही से वोह दीवार वैसी ही हो जाती है। जब उन के निकलने का वक़्त आएगा तो वोह दीवार टूट जाएगी और येह लोग टिड्डी दल की त़रह़ हर त़रफ़ फैल जाएंगे और बे दरेग़ क़त्लो ग़ारत करेंगे। उन की कसरत का येह ह़ाल है कि जब उन की पहली जमाअ़त बह़ीरए त़बरिय्या में (जो दस मील लम्बा है) पहुंचेगी तो उस का तमाम पानी पी जाएगी और इस त़रह़ सुखा देगी कि दूसरी जमाअ़त बा'द वाली जब आएगी तो देख कर कहेगी कि यहां कभी पानी था? फिर वोह क़त्लो ग़ारत करते हुवे क़ुद्स के पहाड़ ख़म्र में पहुंचेंगे तो कहेंगे कि हम ने ज़मीन वालों का तो सफ़ाया कर दिया चलो आस्मान वालों को भी मार डालें फिर वोह आस्मान की त़रफ़ तीर फेंकेंगे जिन को **अल्लाह** तआ़ला ख़ून आलूद कर के लौटा देगा। वोह देख कर खुश होंगे कि अब तो हमारे सिवा कोई नहीं रहा। मह़सूरीन (ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और आप के अस्ह़ाब) में क़ह़त़ का येह आ़लम होगा कि गाए का कलिया सो सो दीनार से भी ज़ियादा क़ीमती होगा। पस मह़सूरीन दुआ़ करेंगे। इस पर **अल्लाह** तआ़ला उन में मर्ज़े नग़फ़ भेजेगा। येह एक दाना होता है जो ऊंट और भेड़ बकरी की गर्दनों में निकलता है और त़ाऊ़न की त़रह़ हलाक कर देता है। इस मरज़ में याजूज व माजूज यकबारगी हलाक हो जाएंगे। फिर ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और आप के अस्ह़ाब मैदान की त़रफ़ आएंगे और ज़मीन में एक बालिश्त भर जगह ऐसी न पाएंगे जो उन की चरबी व गन्दगी से पुर न हो। फिर आप मअ़ अस्ह़ाब दस्त ब दुआ़ होंगे तो **अल्लाह** तआ़ला ऐसे परन्दे भेजेगा जिन की गर्दनें शुतरान बुख़्ती की मानिन्द[2] होंगी। वोह परन्दे उन की लाशों को वहां फेंक देंगे जहां **अल्लाह** तआ़ला चाहे। फिर **अल्लाह** तआ़ला एक

---

1 .....सात ममलुकतें : अ़रब, ईरान, तूरान, चीन, हिन्द, मिस्र, यूनान या फिर तमाम मुमालिक।

2 .....दो कोहानों वाले बड़े ऊंटों की गर्दन की त़रह़।

www.dawateislami.net

आ़लमगीर बारिश भेजेगा जिस से ज़मीन बिल्कुल साफ़ हो जाएगी। इस बारिश की बरकत से ज़मीन की पैदावार में बड़ी तरक़्क़ी होगी यहां तक कि एक अनार एक जमाअ़त के लिये काफ़ी होगा। हैवानात का दूध इस कसरत से होगा कि एक ऊंटनी का दूध एक क़बीले के लिये काफ़ी होगा और एक बकरी का दूध एक कुम्बे[1] के लिये काफ़ी होगा। क़ौमे याजूज व माजूज की कमानें, तरकश और तीर मोमिनों के लिये सात साल ईंधन का काम देंगे। ह़ज़रते ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दुन्या में चालीस साल रहेंगे, आप का निकाह़ होगा और अवलाद पैदा होगी, फिर आप इन्तिक़ाल फ़रमाएंगे और हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुत़हहरा में दफ़्न होंगे।

ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द क़बीलए क़ह्त़ान में से एक शख़्स जहजाह नाम यमन के रहने वाले आप के ख़लीफ़ा होंगे और उमूरे ख़िलाफ़त को अ़द्लो इन्साफ़ के साथ सर अन्जाम देंगे।[2] जहजाह के बा'द चन्द और बादशाह होंगे जिन के अ़ह्द में रुसूमे कुफ़्रो जह्ल शाएअ़ हो जाएंगी और इल्म कम हो जाएगा। इसी अस्ना में एक मकान मशरिक़ में और एक मग़रिब में ज़मीन में धंस जाएगा जिन में मुन्किरीने तक़्दीर हलाक हो जाएंगे।

दुख़ान (धुवां)

इस के बा'द एक बड़ा धुवां आस्मान से नुमूदार होगा जो चालीस रोज़ रहेगा। इस से मुसलमान ज़ुकाम में मुब्तला हो जाएंगे। काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर बेहोशी त़ारी हो जाएगी। बा'ज़ एक दिन बा'ज़ दो दिन और बा'ज़ तीन दिन के बा'द होश में आएंगे।[3]

आफ़्ताब का मग़रिब से निकलना

इस के बा'द माहे ज़िल हि़ज्जा में यौमे नह़र के बा'द रात इस क़दर लम्बी हो जाएगी कि बच्चे चिल्ला उठेंगे, मुसाफ़िर तंग दिल और मवेशी चरागाह के लिये बे क़रार होंगे यहां तक कि

---

1 .....ख़ानदान।

2 ......سنن الترمذی، کتاب الفتن،باب ماجاء فی فتنة الدجال، الحدیث :٢٢٤٨، ج٤، ص١٠٤ـ١٠٥......مرقاة المفاتیح، کتاب الفتن، باب العلامات بین یدی الساعة ، تحت الحدیث :٥٤٧٥، ج٩، ص ٣٨٨......فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الفتن،باب یاجوج ماجوج،تحت الحدیث:٧١٣٦، ج١٤، ص٩١-٩٢......صحیح مسلم ، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب لاتقوم الساعة...الخ،الحدیث : ٦٠ـ(٢٩١٠٠)،٦١ـ(٢٩١١) ، ص ١٥٥٦......التذکرة فی احوال الموتی وامور الآخرة (مترجم)حضرت عیسی علیه الصلوة والسلام کے زمین پر قیام کرنے کی مدت...الخ، ج٢، ص ٦١٦ـعلمیه

3 ......تفسیر الطبری ، سورة الدخان، تحت الآیتان: ١٠ـ١١، الحدیث : ٣١٠٦١، ج ١١، ص ٢٢٧ـعلمیه

www.dawateislami.net

लोग बे चैनी की वज्ह से नाला व ज़ारी करेंगे और तौबा तौबा पुकारेंगे। आख़िर तीन चार रात की मिक़्दार इस रात के दराज़ होने के बा'द इज़्तिराब की ह़ालत में आफ़्ताब मग़रिब से चांद ग्रहन की मानिन्द थोड़ी सी रोशनी के साथ निकलेगा। इस के बा'द तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा और उस दिन आफ़्ताब इतना बुलन्द हो कर ग़ुरूब होगा जितना कि चाश्त के वक़्त होता है। फिर ह़स्बे मा'मूल मशरिक़ की त़रफ़ से निकलता रहेगा।[1]

दाब्बतुल अर्ज़

दूसरे रोज़ लोग इसी का ज़िक्र कर रहे होंगे कि कोहे सफ़ा ज़लज़ले से फट जाएगा और इस से एक अ़जीब शक्ल का जानवर निकलेगा जिसे दाब्बतुल अर्ज़ कहते हैं। वोह चेहरे में आदमी से, गर्दन में ऊंट से, दुम में बैल से, सुरैन में हिरन से, सींगों में बारह सिंगे से, हाथों में बन्दर से और कानों में हाथी से मुशाबेह होगा। पहले यमन में फिर नज्द में ज़ाहिर हो कर ग़ाइब हो जाएगा। फिर दोबारा मक्कए मुशर्रफ़ा में ज़ाहिर होगा उस के एक हाथ में ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का अ़सा और दूसरे में ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام की अंगूठी होगी। वोह ऐसी तेज़ी से शहरों का दौरा करेगा कि कोई भागने वाला उस से न बच सकेगा। वोह अहले ईमान की पेशानी पर अ़साए मूसा से एक नूरानी ख़त़ खींच देगा जिस से तमाम चेहरा नूरानी हो जाएगा और कुफ़्फ़ार की नाक या गर्दन पर ख़ातमे सुलैमान[2] से मुहर कर देगा जिस से उन का चेहरा सियाह और बे रौनक़ हो जाएगा।[3]

ख़ानए का'बा का गिराया जाना

इस के बा'द एक ठन्डी हवा चलेगी जिस के सबब से हर साह़िबे ईमान की बग़ल में दर्द पैदा होगा। अफ़्ज़ल फ़ाज़िल से, फ़ाज़िल नाक़िस से और नाक़िस फ़ासिक़ से पहले मरने शुरूअ़ हो जाएंगे यहां तक कि कोई अहले ईमान बाक़ी न रहेगा। बा'दे अज़ां कुफ़्फ़ारे ह़बशा का ग़लबा होगा और उन की सल्त़नत क़ाइम होगी वोह ख़ानए का'बा को ढा देंगे, ह़ज मौक़ूफ़ हो

1 ......الدرالمنثور فی التفسیر المأثور، الانعام: ١٥٨، ج٣، ص ٣٩٢-٣٩٧-علميه

2 .....ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुबारक अंगूठी।

3 ......الدرالمنثور فی التفسیر المأثور، النمل: ٨٢، ج٦، ص٣٧٩-٣٨١ ......سنن ابن ماجه، كتاب الفتن، باب دابة الارض، الحديث: ٤٠٦٦، ج ٤، ص ٣٩٣-٣٩٤-علميه

www.dawateislami.net

जाएगा, कुरआने मजीद दिलों, ज़बानों और कागज़ों से उठ जाएगा, खुदा तरसी और ख़ौफ़े आख़िरत दिलों से उठ जाएगा, शर्मो ह़या न रहेगी, आदमी गधों और कुत्तों की मानिन्द दोस्तों के सामने जिमाअ़ करेंगे,[1] हुक्काम का ज़ुल्म और रिआ़या की एक दूसरे पर दस्त दराज़ी रफ़्ता रफ़्ता बढ़ जाएगी जिस से शहर व क़स्बात वीरान हो जाएंगे। क़ह़त़ व वबा का ज़ुहूर होगा।

एक बड़ी आग

उस वक़्त मुल्के शाम में कुछ अर्ज़ानी[2] होगी। दीगर मुमालिक के लोग अहलो अ़याल समेत शाम को रवाना होंगे। इसी अस्ना में एक बड़ी आग जुनूब की त़रफ़ से नुमूदार होगी वोह उन का तआ़क़ुब करेगी यहां तक कि वोह शाम पहुंच जाएंगे फिर वोह आग ग़ाइब हो जाएगी।[3]

नफ़्ख़े सूर

इस के बा'द चार पांच साल लोग ऐशो इ़शरत के साथ ग़फ़्लत में ज़िन्दगी बसर करेंगे। बुत परस्ती आ़म होगी। कोई **अल्लाह अल्लाह** कहने वाला न होगा। यका यक जुमुआ़ के रोज़ जो यौमे आ़शूरा भी होगा सुब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को सूर फूंकने का हुक्म देगा। सूर की आवाज़ के सदमे से तमाम जहान फ़ना हो जाएगा, ज़मीनो आस्मान के टुकड़े हो जाएंगे। चांद, सूरज और तमाम सितारे टूट कर गिर पड़ेंगे, दरया ख़ुश्क हो जाएंगे, आग बुझ जाएगी, सिवाए ज़ाते बारी तआ़ला के कोई बाक़ी न रहेगा, उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा [4]''لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ'' (आज सल्त़नत किस की है?) फिर ख़ुद ही जवाब देगा : لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾[5] (उस एक **अल्लाह** की जो क़हहार है) एक मुद्दत के बा'द बारे दीगर[6] नए

---

1 ......سنن ابن ماجه، كتاب الفتن، باب اشراط الساعة ، الحديث: ٤٠٧٥، ج٤، ص٤٠٦......صحيح البخارى، كتاب الحج، باب قول الله تعالى جعل الله الكعبة...إلخ، الحديث: ١٥٩١، ج ١، ص ٥٣٦،عمدة القارى شرح صحيح البخارى، باب قول الله تعالى جعل الله الكعبة...إلخ،تحت الحديث: ١٥٩١، ج٧، ص١٥٥۔١٥٦۔علميه

2 .....फ़िरावानी।

3 ......مرقاة المفاتيح، كتاب الفتن، باب العلامات بين يدى...إلخ،تحت الحديث: ٥٤٦٤، ج ٩ ، ص ٣٦٧۔علميه

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आज किस की बादशाही है? (پ٢٤،المؤمن:١٦) **इल्मिय्या**

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** एक **अल्लाह** सब पर ग़ालिब की। (پ٢٤،المؤمن:١٦) **इल्मिय्या**

6 .....दोबारा।

www.dawateislami.net

आस्मान और नई ज़मीन पैदा होगी फिर ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام दोबारा सूर फूंकेंगे उस की आवाज़ से सब मुर्दों के जिस्म दोबारा वोही बन जाएंगे और ज़िन्दा हो कर क़ब्रों से उठेंगे।[1] इसी को क़ियामत कहते हैं क़ियामत के वाक़िआत जो क़ुरआने मजीद व अह़ादीसे शरीफ़ा में मज़्कूर हैं मसलन मुर्दों का उन ही अजसाद के साथ ज़िन्दा हो कर उठना, आफ़्ताब का ज़मीन के क़रीब आ जाना, ह़िसाबे आ'माल होना, हाथ पाउं और दीगर आ'ज़ा का नेक व बद आ'माल की गवाही देना, नेकों को नामए आ'माल का सामने की त़रफ़ से दाएं हाथ में मिलना और बदों को पुश्त की त़रफ़ से बाएं हाथ में मिलना, आ'माल का तराज़ू में तुलना, पुल सिरात़ से गुज़रना, मोमिनों का अपने मर्तबे के मुवाफ़िक़ किसी का बिजली की त़रह़, किसी का दौड़ते घोड़े की त़रह़, किसी का उड़ते परन्दे की त़रह़, किसी का मा'मूली चाल से पुल सिरात़ उ़बूर कर जाना और मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार का कट कट कर दोज़ख़ में गिरना, ह़ौज़े कौसर के लज़ीज़ व सर्द पानी के पीने से मोमिनों की सब कुल्फ़तों का दूर हो जाना और जन्नत में दाख़िल होना वग़ैरा। इन सब के लिये एक अ़लाह़िदा किताब दरकार है यहां बत़ौरे नमूना ज़ैल में दो तीन पेशगोइयों का ज़िक्र किया जाता है।

ह़िजाज़ की आग

सह़ीह़ैन[2] में ब रिवायते सईद बिन अल मुसय्यिब मज़्कूर है कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझे ख़बर दी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ियामत क़ाइम न होगी यहां तक कि एक आग ह़िजाज़ की ज़मीन से निकलेगी जो बुस्रा[3] में ऊंटों की गर्दनें रोशन करेगी।[4] मज़्कूरए बाला पेशीन गोई के मुत़ाबिक़ वोह आग सर ज़मीने ह़िजाज़ में ज़ाहिर हुई। उस के ज़ुहुर से पहले कई ज़लज़ले आए जो उस का पेश ख़ैमा थे। चुनान्चे, माहे जुमादल ऊला सिने 654 हिजरी की अख़ीर तारीख़ को मदीनए मुनव्वरा में कई दफ़्आ ज़लज़ला आया मगर चूंकि ख़फ़ीफ़

1 ......صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب ذهاب الایمان آخر الزمان،الحدیث:۲۳٤،ص۸۸......شعب الایمان، باب فی حشر الناس...إلخ،فصل فی صفة یوم القیامة ، الحدیث:۳۵۳،ج۱، ص ۳۱۲۔۳۱۳۔علمیه

2.....सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम, किताबुल फ़ितन। इमाम बुख़ारी की विलादत सिने 192 हिजरी में और वफ़ात सिने 256 हिजरी में, इमाम मुस्लिम की विलादत सिने 204 हिजरी में और वफ़ात सिने 261 हिजरी में हुई। 12 मिन्ह

3.....मुल्के शाम के एक शहर का नाम। 12 मिन्ह

4 ......صحیح مسلم، کتاب الفتن...الخ،باب لاتقوم الساعة حتی تخرج نار من ارض الحجاز،الحدیث:۲۹۰۲،ج۱، ص:۱۵۵۲۔علمیه

www.dawateislami.net

था इस लिये बा'ज़ लोगों को महसूस न हुवा। सेह शम्बा के रोज़[1] सख़्त ज़लज़ला आया जिसे आ़मो ख़ास सब ने महसूस किया। शबे चहार शम्बा[2] 3 जुमादल उख़रा को रात के अख़ीर तिहाई हिस्से में मदीने में ऐसा सख़्त ज़लज़ला आया कि लोग डर गए और इस की हैबत से दिल कांप गए। ज़लज़ले का येह सिलसिला जुमुआ़ के दिन तक रहा। इस की आवाज़ बिजली से बढ़ कर थी, ज़मीन कांपती थी और दीवारें हिल रही थीं यहां तक कि सिर्फ़ दिन के वक़्त अठ्ठारह दफ़्आ़ ह़रकत हुई। जुमुआ़ को चाश्त के वक़्त ज़लज़ला बन्द हो गया दो पहर के वक़्त मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन एक मन्ज़िल जानिबे शर्क़ येह आग नुमूदार हुई इस के ज़ाहिर होने की जगह से आस्मान की त़रफ़ ब कसरत धुवां उठा जिस ने उफ़ुक़ को घेर लिया जब तारीकी छा गई और रात आ गई तो आग के शो'ले तेज़ हो गए येह आग एक ऐसे बड़े शहर की मानिन्द मा'लूम होती थी जिस के गिर्द एक फ़सील हो और उस फ़सील पर कंगुरे और बुर्ज और मीनार हों ग़रज़ इस आग को देख कर अहले मदीना डर गए।[3] चुनान्चे, क़ाज़ी सिनान हुसैनी का बयान है कि "मैं अमीरे मदीना अ़ज़्ज़ुद्दीन मुनीफ़ बिन शीहा[4] के पास गया और उस से कहा कि अ़ज़ाब ने हम को घेर लिया है। **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ कर। येह सुन कर उस ने अपने तमाम ग़ुलाम आज़ाद कर दिये और लोगों के अम्वाल उन को वापस कर दिये फिर वोह अपने क़ल्ए से निकल कर ह़रम शरीफ़ में आया। उस ने और तमाम अहले मदीना ह़त्ता कि औ़रतों और बच्चों ने जुमुआ़ और हफ़्ते की रात ह़रम शरीफ़ में गुज़ारी और बाग़ात में कोई ऐसा न रहा जो ह़रम शरीफ़ में न आया हो। लोग रात को गिर्या व ज़ारी और तज़र्रुअ़ करते थे और हुजरा शरीफ़ के गिर्द नंगे सर अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हुवे गिड़ गिड़ा कर दुआ़ मांग रहे थे और नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पनाह त़लब कर रहे थे।"

क़ुत़ुबे क़स्त़लानी जो उस वक़्त मक्का में मुक़ीम थे, उन का बयान है कि येह आग बढ़ती हुई ह़र्रह और वादिये शज़ात के मुत्तसिल आ पहुंची और वादिये शज़ात में से जिस के एक त़रफ़ वादिये ह़म्ज़ा है गुज़र कर ह़रमे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल ठहर गई। इस आग के

1.....बरोज़ मंगल। 2.....बुध की शब। 3.....मुफ़स्सल ह़ालात के लिये देखो वफ़ाउल वफ़ा ब अख़्बारे दारुल मुस्त़फ़ा लिल अ़ल्लामतुस्समहूदी अल मुतवफ़्फ़ा सिने 991 हिजरी, जुज़्ए अव्वल, सफ़्ह़ा 99 ता 106। 12 मिन्ह

4.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में अमीरे मदीना का नाम "अ़ज़ुद्दीन मुनीफ़ बिन शैमा" लिखा है येह हमें नहीं मिला, अलबत्ता "वफ़ाउल वफ़ा लिस्समहूदी" और दीगर कुतुब में "अ़ज़्ज़ुद्दीन मुनीफ़ बिन शीहा" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "अ़ज़्ज़ुद्दीन मुनीफ़ बिन शैमा" के बजाए "अ़ज़्ज़ुद्दीन मुनीफ़ बिन शीहा" लिखा है। وَاللهُ تَعَالٰى اَعلم **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

शो'ले ऐसे तेज़ थे कि शजरो ह़जर जो उस के रास्ते में आता उसे पारा पारा कर देती और पिघला देती। ग़रज उस रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तुर्बत शरीफ़ की बरकत से येह आग ह़रम शरीफ़ से ख़ारिज ही रही और वहां से पीछे हट कर अपना रुख़ जानिबे शिमाल कर लिया और 52 दिन तक रोशन रही।

येह आग मक्का, यम्बअ़ और तैमा से दिखाई देती थी और शहर बुस्रा के लोगों को इस की रोशनी में ऊंटों की गर्दनें नज़र आ गईं जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद है। मुअर्रिख़ीन का क़ौल है कि येह आग चार फ़रसंग लम्बी और चार मील चोड़ी और डेढ़ क़ामत अ़मीक़ वादी में चलती थी। इस की ह़रारत से पथ्थर रांग की मानिन्द पिघल जाता था। इस त़रह़ वादी के अख़ीर में ह़र्रह के मुन्तहा के नज़्दीक पिघले हुवे पथ्थर जम्अ़ होते गए और आख़िरे कार वादिये शज़ात के वस्त़ में कोहे वुऐ़रा की त़रफ़ एक सद्द (दीवार) बन गई। इस सद्द के आसार हुनूज़ बाक़ी हैं और अहले मदीना इसे ह़ब्स कहते हैं। मदीनए मुनव्वरा में इस आग का ज़ुहूर ऐसा मश्हूर है कि मुअर्रिख़ीन के नज़्दीक ह़द्दे तवातुर को पहुंचा हुवा है।[1] كذا فى وفاء الوفاء للسمهودى.

इमाम नववी (मुतवफ़्फ़ा सिने 676 हिजरी) जो उस ज़माने में मौजूद थे। इस आग की निस्बत शर्ह़े सह़ीह़ मुस्लिम (मत़बूआ़ अन्सारी, जिल्द सानी, किताबुल फ़ितन, स. 393) में यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

وقد خرجت فى زماننا نار بالمدينة سنة اربع و خمسين و ستمائة و كانت نارًا عظيمة جدا خرجت من جنب المدينة الشرقى وراء الحرة تواتر العلم بها عند جميع اهل الشام و سائر البلدان و اخبرنى من حضرها من اهل المدينة.[2]

और तह़क़ीक़ हमारे ज़माने में सिने 654 हिजरी में मदीने में एक आग निकली और निहायत बड़ी आग थी जो मदीने के शरक़ी जानिब से ह़र्रह के पीछे निकली। शाम और बाक़ी शहरों के तमाम बाशिन्दों को ब त़रीक़े तवातुर उस का इल्म हुवा और मुझे अहले मदीना में से एक शख़्स ने ख़बर दी जिस ने उस आग को देखा।

---

1 ...... وفاء الوفاء باخبار دارا لمصطفى،الباب الثانى...الخ،الفصل السادس عشر فى ظهور نار الحجاز...الخ،ج١،الجزء١، ص١٤٢-١٥٠ملخصاً،علميه

2 ......شرح النووى على صحيح مسلم،كتاب الفتن...الخ،باب لاتقوم الساعة حتى تخرج نار من ارض الحجاز،تحت الحديث:٢٩٠١،الجزء الثامن عشر،ج٩،ص٢٨ ـعلميه

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी (मुतवफ़्फ़ा 771 हिजरी) तबक़ातुश्शाफ़िइय्यतुल कुब्रा (जुज़ए ख़ामस, स. 112) में लिखते हैं कि जब माहे जुमादल उख़रा सिने 654 हिजरी की पांचवीं तारीख़ हुई तो मदीनतुन्नबी में उस आग का ज़ुहूर हुवा और इस से पहले की दो रातों में एक बड़ी आवाज़ ज़ाहिर हुई फिर एक बड़ा ज़लज़ला आया फिर क़ुरैज़ा के क़रीब ह़र्रह में आग ज़ाहिर हुई। अहले मदीना अपने घरों से इसे देखते थे। इस आग की रूएं पानी की त़रह़ जारी हुईं और पहाड़ आग बन कर रवां हुवे। येह आग ह़ाजियों के रास्तए इराक़ी की त़रफ़ रवाना हुई फिर ठहर गई और ज़मीन को खाने लगी। रात के अख़ीर ह़िस्से से चाश्त के वक़्त तक इस में से एक बड़ी आवाज़ आती थी। लोगों ने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मदद त़लब की और गुनाह तर्क कर दिये। येह आग एक महीने से ज़ियादा रोशन रही। येह वोही आग है जिस की ख़बर जनाबे मुस्त़फ़ा صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَيْه ने दी थी। क्यूंकि आप ने फ़रमाया था कि "क़ियामत क़ाइम न होगी यहां तक कि सर ज़मीने ह़िजाज़ से एक आग निकलेगी जिस से बुसरा में ऊंटों की गर्दनें रोशन हो जाएंगी।" एक शख़्स से जो रात के वक़्त बुसरा में था रिवायत है कि उस को उस आग की रोशनी में ऊंटों की गर्दनें नज़र आ गईं।[1]

तातारियों का फ़ितना और ह़ादिसए बग़दाद

ह़ज़रते अबू बकरह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه[2] से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरी उम्मत के लोग एक पस्त ज़मीन में जिस का नाम बुसरा होगा एक दरया के नज़दीक उतरेंगे जिस को दजला कहते हैं। उस दरया पर एक पुल होगा। बुसरा के बाशिन्दे ब कसरत होंगे और वोह शहर मुसलमानों के बड़े शहरों में से होगा जब आख़िर ज़माना आएगा तो क़नतूरा के बेटे आएंगे जिन के चेहरे फ़राख़ और आंखें छोटी होंगी यहां तक कि वोह उस दरया के किनारे पर उतरेंगे। उस वक़्त बुसरा के बाशिन्दे तीन गुरौह हो जाएंगे। एक गुरौह बैलों की दुमों[3] और बयाबान में पनाह लेगा और हलाक हो जाएगा और एक गुरौह अपनी जानों के लिये त़ालिबे

---

1 ......طبقات الشافعية الكبرى، الطبقة السادسة فيمن توفي...إلخ، الجزء ٨، ص ٢٦٦-علميه

2 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इस ह़दीस के रावी का नाम ह़ज़रते "अबू बक्र सिद्दीक़" लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि "मिश्कातुल मसाबीह़" (जिस का मुसन्निफ़ ने ह़वाला दिया है) "अबू दावूद" और दीगर कुतुब में येह ह़दीस ह़ज़रते "अबू बकरह" से मरवी है लिहाज़ा हम ने यहां ह़ज़रते "अबू बक्र सिद्दीक़" (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) के बजाए ह़ज़रते "अबू बकरह" (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) लिखा है। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعلم 12 मिन्ह

3 .....या'नी अहलो अ़याल और मालो अस्बाब को बैलों पर लाद कर जंगल को चले जाएंगे। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

अमान होगा और हलाक हो जाएगा और एक गुरौह अपनी अवलाद को पसे पुश्त डाल देगा और उन से लड़ेगा, वोही ह़क़ीक़ी शहीद होंगे। इस ह़दीस को अबू दावूद[1] ने रिवायत किया है।[2]

इस ह़दीस में क़न्तूरा से मुराद तातारी लोग या'नी तुर्क हैं क्यूंकि क़नतूरा ह़ज़रते इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की एक लौंडी का नाम है जिस की नस्ल से येह लोग हैं। इन के चेहरों के कुशादा और आंखों के छोटा होने में किसी को कलाम नहीं। अलबत्ता ह़दीस में बुसरा का लफ़्ज़ है मगर इस से मुराद शहरे बग़दाद है क्यूंकि दरयाए दिजला और पुल बग़दाद में हैं न कि बुसरा में। व नीज़ तर्के लड़ाई के लिये इस कैफ़िय्यत से जो ह़दीस में मज़्कूर है बुसरा में नहीं आए बल्कि बग़दाद में आए हैं जैसा कि मश्हूरो मा'रूफ़ है। ह़दीस में बुसरा का ज़िक्र इस लिये है कि बग़दाद की निस्बत बुसरा क़दीम शहर है जिस के मुज़ाफ़ात में से वोह गाऊं और मवाज़ेअ़ थे जिन में शहरे बग़दाद बना। इ़लावा अज़ीं बग़दाद के नज़दीक एक गाऊं का नाम[3] भी बुसरा है।[4]

येह पेशीन गोई माहे मुह़र्रम सिने 656 हिजरी में पूरी हुई जब कि चंगेज़ ख़ां तातारी के पोते "हलाकू" ने शहरे बग़दाद पर लश्कर कशी की। इस की मुख़्तसर कैफ़िय्यत[5] येह है कि उस वक़्त बग़दाद में ख़ानदाने अ़ब्बासिय्या का आख़िरी ख़लीफ़ा मो'तसिम बिल्लाह मस्नदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन था। उस का वज़ीर मुअय्यदुद्दीन मुह़म्मद बिन अ़ली अल अ़ल्क़मी फ़ाज़िल व अदीब मगर राफ़िज़ी था और उस के दिल में इस्लाम और अहले इस्लाम की त़रफ़ से कीना व बुग़्ज़ था। वज़ीरे मज़्कूर शहज़ादा अबू बक्र और अमीरे कबीर रुक्नुद्दीन दुवैदार का भी दुश्मन था क्यूंकि येह दोनों अहले सुन्नत थे और इन्हों ने येह सुन कर कि कर्ख़[6] के राफ़िज़ियों ने अहले सुन्नत से तअ़र्रुज़ किया है[7] कर्ख़ को लूट लिया था और

---

1 .....अबू दावूद की विलादत सिने 202 हिजरी में और वफ़ात सिने 275 हिजरी में हुई। 12 मिन्ह

2 ......مشکوۃ، کتاب الفتن، باب الملاحم، فصل ثانی۔۱۲منہ......(مشکاۃ المصابیح، کتاب الفتن، باب الملاحم، الحدیث:۵٤۳۲، ج۲، ص۲۸۹۔علمیہ)

3 ......اشعۃ اللمعات ترجمہ مشکوۃ، کتاب الفتن، باب الملاحم۔

4 ......اشعۃ اللمعات، کتاب الفتن، باب الملاحم، ج٤، ص۳۲۸۔علمیہ

5 .....मुफ़स्सल ह़ालात के लिये देखो त़बक़ातुश्शाफ़ेइय्यतुल कुब्रा लित्ताजुस्सुबकी अल मुतवफ़्फ़ा सिने 771 हिजरी, जुज़्ए ख़ामस, स. 110 ता 116। 12 मिन्ह

6 ......کرخ بفتح اول وثانی وخائے معجمہ دہے است قریب بغداد وقیل محلہ از بغداد۔غیاث اللغات۔۱۲منہ

7 .....मुज़ाह़मत की है।

www.dawateislami.net

रवाफ़िज़ को सख़्त सज़ाएं दी थी।[1] इब्ने अ़ल्क़मी चूंकि ब ज़ाहिर उन के ख़िलाफ़ कुछ न कर सकता था इस लिये उस ने पोशीदा त़ौर पर ब ज़रीअ़ए किताबत तातारियों को इराक़ पर ह़म्ला करने की तरग़ीब दी। हलाकू के दरबार में ह़कीम नसीरुद्दीन तूसी राफ़िज़ी था जिस ने इब्ने अ़ल्क़मी की तरग़ीब को और सहारा दिया और आख़िरे कार हलाकू को बग़दाद पर चढ़ाई के लिये आमादा कर दिया चुनान्चे, हलाकू बड़ी तय्यारी के साथ बग़दाद पर चढ़ आया। लश्करे बग़दाद बसर कर्दगी रुक्नुद्दीन दुवैदार मुक़ाबले के लिये बढ़ा और बग़दाद से दो मन्ज़िल के फ़ासिले पर हलाकू के मुक़द्दमा लश्कर से जिस का सरदार तायजू था मुठ भेड़ हुई।[2] बग़दादियों को शिकस्त हुई कुछ तहे तेग़[3] हुवे, कुछ पानी में डूब गए और बाक़ी भाग गए। तायजू आगे बढ़ा और दरयाए दिजला के मग़रिबी किनारे पर उतरा। हलाकू ने मशरिक़ से ह़म्ला किया और बग़दाद को घेर लिया। उस वक़्त इब्ने अ़ल्क़मी ने ख़लीफ़ा को सुल्ह़ का मश्वरा दिया और कहा कि मैं सुल्ह़ की शराइत़ ठहराने जाता हूं। चुनान्चे, वोह गया और वापस आ कर ख़लीफ़ा मो'तसिम से कहने लगा : ऐ अमीरल मोमिनीन ! हलाकू की दिली ख़्वाहिश है कि अपनी बेटी का निकाह़ आप के बेटे अमीर अबू बक्र से कर दे और आप को मन्सबे ख़िलाफ़त पर क़ाइम रखे मगर वोह सिर्फ़ आप से इतना चाहता है कि आप उस की इत़ाअ़त तस्लीम कर लें फिर वोह अपना लश्कर ले कर वापस चला जाएगा। लिहाज़ा आप इस पर अ़मल करें क्यूंकि इस त़रह़ मुसलमान ख़ूं रेज़ी से बच जाएंगे। येह सुन कर ख़लीफ़ा मअ़ अरकान व अ़याने सल्त़नत[4] त़ालिबे अम्नो अमान हो कर निकला। वहां पहुंचा तो वोह एक ख़ैमे में उतारा गया। फिर वज़ीरे मज़्कूर शहर में आया और उ़लमा व फ़ुक़हा से कहा कि आप शहज़ादे के अ़क़्द में शामिल हों। चुनान्चे, वोह बग़दाद से निकले और क़त्ल किये गए। इसी त़रह़ अ़क़्द के बहाने से एक के बा'द दूसरा गुरौह बुलाया गया और क़त्ल किया गया। फिर ख़लीफ़ा के ह़ाशिया नशीन[5] त़लब हुवे और क़त्ल किये गए। फिर ख़लीफ़ा की सब अवलाद क़त्ल हुई।

ख़लीफ़ा की निस्बत कहा गया है कि काफ़िर हलाकू ने उसे रात के वक़्त बुलाया और कई बातें दरयाफ़्त कीं। फिर उस के क़त्ल का हुक्म दिया। हलाकू ज़ालिम से कहा गया कि अगर ख़लीफ़ा का ख़ून गिराया जाएगा तो दुन्या तारीक हो जाएगी और तेरा मुल्क तबाह हो जाएगा

---

1 .....غیاث اللغات،باب کاف عربی، فصل کاف مع راء مہملة،ص٥٦٢۔علمیه

2 .....लड़ाई हुई। 3 .....क़त्ल ।

4 .....मुसाहि़बीन व वुज़रा। 5 .....मुसाहि़बीन व मुअ़ज़्ज़ज़ीन।

www.dawateislami.net

क्यूंकि वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा की अवलाद में से है और दुन्या में ख़लीफ़तुल्लाह है। इस पर वोह संग दिल ह़कीम नसीरुद्दीन तूसी खड़ा हुवा और कहने लगा कि वोह मार डाला जाए मगर उस का ख़ून न गिराया जाए। चुनान्चे, ब तारीख़ 28 मुहर्रम सिने 656 हिजरी उस बेचारे को एक बोरी में बन्द कर के हथोड़ों से मार डाला गया। बा'ज़े कहते हैं कि उसे लातों से मार डाला गया और उस के अमीरों से एक को भी ज़िन्दा न छोड़ा गया। फिर शहरे बग़दाद में ख़ूं रेज़ी शुरूअ़ हुई। अक्सर बाशिन्दे शहीद हुवे। तीस दिन से कुछ ऊपर क़त्ल जारी रहा। कहा गया है कि मक़्तूलीन की कुल ता'दाद अठ्ठारह लाख थी।

इस के बा'द अमान दी गई जो लोग छुपे हुवे थे उन में से अक्सर तो ज़मीन के नीचे ही त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों से मर गए। जो ज़िन्दा निकल आए उन्हों ने बड़ी दिक़्क़तें उठाईं फिर घरों को खोद कर बे शुमार दफ़ीने निकाले गए। फिर नसारा बुलाए गए ताकि एलानिय्या शराब ख़ोरी करें और सुव्वर का गोश्त खाएं और मुसलमान भी उन के साथ शरीक हों। सितमगार हलाकू सुवार हो कर क़स्रे ख़िलाफ़त तक आया और ह़रम की बे आबरूई की। वोह महल एक ईसाई को दिया गया मस्जिदों में शराब बहा दी गई और मुसलमानों को एलानिय्या अज़ान देने से मन्अ़ किया गया।(1) لا حول و لا قوة الا باللّٰه العلی العظیم

येह सब कुछ सिर्फ़ बग़दाद में हुवा। बग़दाद के इ़लावा और जगह भी तातारियों ने बहुत कुछ किया। इसी वासित़े कहा गया है कि तातारियों के फ़ित्ने से बढ़ कर दुन्या में कोई फ़ित्ना वुक़ूअ़ में नहीं आया है। ख़लीफ़ा मो'तसिम बिल्लाह के साथ ख़ानदाने अ़ब्बासिय्या का ख़ातिमा हो गया बल्कि यूं समझो कि अ़रब की सल्त़नत रूए ज़मीन से उठ गई जो क़ुर्बे क़ियामत के आसार में से है।

शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی (मुतवफ़्फ़ा सिने 691 हिजरी) ने जो ह़ादिसए बग़दाद के वक़्त ज़िन्दा थे मो'तसिम बिल्लाह का एक निहायत दर्दनाक मरसिया लिखा है जिस में से चन्द अश्आ़र ज़ैल में दर्ज किये जाते हैं।

﴾1﴿

آسماں را حق بود گر خوں ببارد بر زمین　　بر زوالِ ملک معتصم امیر المؤمنین

आस्मान पर वाजिब है कि अमीरुल मोमिनीन मो'तसिम की
सल्त़नत की तबाही पर ज़मीन पर ख़ून बरसाए।

---

1 ......طبقات الشافعية الكبرى، الطبقة السادسة فيمن توفى...إلخ، الجزء٨، ص ٢٦٩-٢٧٢-علميه

www.dawateislami.net

﴿2﴾

اے محمد گر قیامت را برآری سر زخاک　　سر برآر دایں قیامت درمیانِ خلق بیں

ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अगर आप क़ियामत को तुर्बत शरीफ़ से निकलेंगे

तो अभी निकल कर ख़ल्क़त में येह क़ियामत देख लीजिये।

﴿3﴾

نازنینانِ حرم را خونِ حلق نازنین　　زاستاں بگذشت ما را خونِ دل از آستیں

मह़ल के नाज़ परवर्दों का ख़ून डयूढ़ी से बह गया और

हमारे दिल का ख़ून आस्तीन से टपक निकला।

﴿4﴾

زینہار از دورِ گیتی وانقلاب روزگار　　در خیالِ کس نہ گشتی کانچناں گردد چنیں

ज़माने की गर्दिश और दुन्या के इन्क़िलाब से पनाह मांगनी चाहिये।

येह बात किसी के ख़याल में न आती थी कि यूं से यूं हो जाएगा।

﴿5﴾

دیدہ بردار اے کہ دیدی شوکتِ بیت الحرام　　قیصرانِ روم سر برخاک وخاقاں بر زمیں

ऐ मुख़ात़ब ! तू ने बैतुल ह़राम की सी शानो शौकत देखी है।

जहां रूम के क़ैसर ख़ाक पर सर रगड़ते थे और चीन के ख़ाक़ान ज़मीन पर बैठते थे।

﴿6﴾

خونِ فرزندانِ عم مصطفےٰ شد ریختہ　　ہم برآں خاکے کہ سلطاناں نہادندے جبیں

ज़रा आंख उठा कर देख कि ह़ज़रते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बनी अ़म्म[1] का ख़ून

उस ख़ाक पर बहाया गया है जहां बड़े बड़े बादशाह माथा रगड़ते थे।

﴿7﴾

دجلہ خوں ناب است زیں پس گر نہد سر در نشیب　　خاکِ نخلستانِ بطحا را کند ماخوں عجیں

दरयाए दिजला का पानी ख़ून हो गया है। अगर पस्ती की त़रफ़ बहेगा

तो नख़्लिस्ताने बत़ह़ा की ख़ाक को ख़ून से रंगीं कर देगा।

---

1 .....चचा के बेटे।

www.dawateislami.net

का'बा शरीफ़ की हिजाबत[1]

हम पहले फ़त्हे मक्का में इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा की रिवायत नक़्ल कर आए हैं जिस में तीन पेशीन गोइयां हैं। एक येह कि हिजरत से पहले हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा से फ़रमा दिया था कि एक दिन येह कुन्जी मेरे हाथ में होगी। सो उसी के मुत़ाबिक़ फ़त्हे मक्का के रोज़ वुक़ूअ़ में आया। दूसरी येह कि आप ने कुरैश की निस्बत फ़रमाया था कि वोह उस दिन बजाए हलाक व ज़लील होने के ज़िन्दगी व इ़ज़्ज़त पाएंगे। इसी के मुत़ाबिक़ फ़त्हे मक्का के दिन वाक़ेअ़ हुवा। कुरैश ने इस्लाम में दाख़िल हो कर दारैन में ह़याते त़य्यिबा ह़ासिल की और इ़ज़्ज़त पाई। वाक़ेअ़ में वोह इस से पहले ज़िल्लत की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे कि उन बुतों के आगे सर झुकाते थे जिन्हें खुद उन्हीं के हाथों ने तराशा था। फ़त्ह के दिन वोह इस ज़िल्लत से निकल गए और उन को खुदाए वह़्दहू ला शरीक की इ़बादत का शरफ़ ह़ासिल हुवा। तीसरी येह कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा को कुन्जी देते वक़्त फ़रमाया कि येह कुन्जी हमेशा तुम्हारे पास रहेगी, ज़ालिम के सिवा कोई इसे तुम से न छीनेगा। चुनान्चे, आज तक़रीबन साढ़े तेरह सो साल हो चुके हैं कि ख़ानए का'बा की कुन्जी ह़ज़रते उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा के ख़ानदान में रही। अब इब्ने सऊ़द नज्दी ने जो सुलूक इस ख़ानदान से किया है उस से साफ़ ज़ाहिर है कि नज्दिये मज़्कूर ह़स्बे इरशादे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ालिम है। **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल से इस फ़ितनए नजदिय्या का जल्दी ख़ातिमा कर दे। आमीन सुम्म आमीन।

मह़ासिने ज़ाहिरी व बात़िनी

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अवसाफ़े जमीला और अख़्लाक़े जलीला मिन जुम्ला दलाइलो सुबूत हैं। चुनान्चे, आप की त़लाक़त,[2] आप का ह़ुस्ने मन्ज़र और आप का ए'तिदाले सूरत ऐसा था कि अपनों का तो क्या ज़िक्र, बेगाने भी जब रूए मुबारक[3] को देखते तो बे साख़्ता पुकार उठते : هذا الوجه ليس بوجه كذاب (येह झूटे का चेहरा नहीं है) इन शमाइल के

1.....का'बा शरीफ़ की दरबानी और कुन्जी की पासबानी। 2.....ख़ुश बयानी। 3.....चेहरए अन्वर।

www.dawateislami.net

साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ व आदाब पर ग़ौर करें। आप उम्मी थे, आप की विलादत ऐसे शहर में हुई जहां कोई ज़रीअ़ए ता'लीम न था न आप ने कभी वत़न को छोड़ कर किसी दूसरे शहर में जा कर इल्म ह़ासिल किया बल्कि उम्मियों ही में यतीमी की ह़ालत में नश्वो नुमा पाई उ़लूम व मआ़रिफ़ से क़त़ए नज़र येह मकारिमे अख़्लाक़ और मह़ासिने आदाब आप ने ब जुज़ वह्ये इलाही कहां से सीखे !

अल ग़रज़ जो शख़्स ब नज़रे इन्साफ़ आप की सूरत, आप की सीरत, आप के अफ़्आ़ल और आप के अह़वाल का मुत़ालआ़ करता है उसे आप की नबुव्वत की सिह़्ह़त में ज़रा भी शक नहीं रहता क्यूंकि जो अवसाफ़ आप में मुज–तमअ़ थे वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले या आप के ज़माने में कभी किसी में जम्अ़ नहीं हुवे और न क़ियामत तक होंगे।

नसारा का ए'तिराज़

मो'जिज़ों का अक्सर ज़िक्र क़ुरआन में पाया जाता है मगर कोई आयत ऐसी नज़र नहीं आती जिस से येह साबित हो कि ह़ज़रत मुह़म्मद साह़िब ने मो'जिज़े दिखाए हैं बल्कि बहुत सी आयतें ऐसी हैं जिन में मो'जिज़े न दिखाने का सबब दर्ज है और बा'ज़ ऐसी भी हैं जिन में वोह साफ़ ज़ाहिर करते हैं कि मैं मो'जिज़े दिखाने को नहीं भेजा गया। सूरए अ़नकबूत में यूं मर्क़ूम है :

وَقَالُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِؕ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ(۵۰)

(عنکبوت، ع۵)

कहते हैं कि अगर उस के ख़ुदा की त़रफ़ से कोई निशानी उस पर नाज़िल न होगी तो हम ईमान न लाएंगे पस (ऐ मुह़म्मद) आप कह दीजिये कि निशानियां ख़ुदा के पास हैं मैं तो एक नसीह़त करने वाला हूं।(1)

फिर सूरए बनी इस्राईल में लिखा है :

وَمَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰیٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَؕ

कोई चीज़ हमें मानेअ़ नहीं हुई कि तुझे मो'जिज़ों के साथ भेजें मगर येह कि अगले पैग़म्बरों को जो हम ने मो'जिज़े दे कर भेजा था तो उन्हें लोगों ने झुटलाया।(2)

---

(1)...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बोले क्यूं न उतरीं कुछ निशानियां उन पर उन के रब की त़रफ़ से तुम फ़रमाओ निशानियां तो **अल्लाह** ही के पास हैं और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला हूं। (پ۲۱،العنکبوت:۵۰) **इल्मिय्या**

(2)...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूं ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने झुटलाया। (پ۱۵،بنی اسرائیل:۵۹) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस मज़्मून को त़वील करना ज़रूरी नहीं इस लिये कि क़ुरआन का हर बे तअ़स्सुब पढ़ने वाला इस क़ौल की तस्दीक़ करेगा कि अक्सर मुह़म्मदी (मुसलमान) मुसन्निफ़ मो'जिज़ों का ज़िक्र कर के मुह़म्मद साह़िब से मन्सूब करते हैं मगर येह बात ख़ुद मुह़म्मद साह़िब की बातों के ख़िलाफ़ है कि बिल्कुल क़ाबिले ए'तिबार नहीं। (ख़ुतूत़ बनाम जवानाने हिन्द। पंजाब रिलेजिस बुक सोसाइटी लूधयाना अमेरीकन मिशन प्रेस सिने 1890 ईसवी, सफ़्ह़ा 243-244)

जवाब

ईसाई लोग मुसलमानों पर अक्सर येह ए'तिराज़ करते हैं मगर उन्हें अपने घर की भी ख़बर नहीं। ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के मो'जिज़ात की निस्बत जो कुछ अनाजीले अरबआ़[1] में आया है इस का ख़ुलासा येह है :

﴾1﴿..... मत्ता,[2] बाब 12, आयह 38-39 में है कि बा'ज़ फ़क़िहिय्यों और फ़रीसियों ने मसीह़ से एक निशान त़लब किया जिस के जवाब में आप ने फ़रमाया :

"इस ज़माने के बद और ह़राम कार लोग निशान ढूंडते हैं पर यूनुस नबी के निशान के सिवा कोई निशान उन्हें दिखाया न जाएगा क्यूंकि जैसा यूनुस तीन रात दिन मछली के पेट में रहे वैसा ही इब्ने आदम तीन रात दिन ज़मीन के अन्दर रहेगा।"

इसी त़रह़ मत्ता, बाब 16 आयह 1-4 में है कि फ़रीसियों और सदूक़ियों[3] ने आज़्माइश के लिये ह़ज़रते मसीह़ से आस्मानी निशान त़लब किया मगर यहां भी आप ने वोही जवाब दिया कि यूनुस नबी के निशान के सिवा कोई और निशान उन्हें न दिखाया जाएगा। अगर ब नज़रे ग़ौर देखें तो येह जवाब भी क़ाबिले ए'तिबार नहीं क्यूंकि सुवाल तो आस्मानी निशान का था और जवाब में ज़मीनी निशान का वा'दा हुवा। [4]سوال از آسماں جواب از ریسماں बा वुजूद इस के इसी इन्जील में मसीह़ عَلَیْہِ السَّلَام से बहुत से मो'जिज़े मन्सूब किये गए हैं चुनान्चे, पांच रोटियों से चार हज़ार आदमियों का पेट भरा (बाब 14, आयह 15-21) और दरया पर अपने पाउं से चले (बाब

1.....चारों इन्जीलों। 2.....एक इन्जील का नाम।
3.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के दौरे मुबारक का एक फ़िर्क़ा जो क़ियामत का मुन्किर था।
4.....कहावत है या'नी सुवाल कुछ और जवाब कुछ।

www.dawateislami.net

14, आयह 25) फिर सात रोटियों से चार हज़ार को खिलाया (बाब 15, आयह 38) फिर दो अन्धों को बीना किया (बाब 20, आयह 30-34) फिर अन्जीर के दरख़्त को सुखा दिया (बाब 21, आयह 19) वग़ैरा । इसी त़रह़ जब सरदार काहिनों और क़ौम के बुज़ुर्गों ने ह़ज़रते मसीह़ عَلَيْهِ السَّلَام से उन के इख़्तियार की बाबत पूछा (बाब 12, आयह 23-24) तब भी आप ने कुछ साफ़ जवाब न दिया ।

﴾2﴿.....मर्क़ुस, बाब 8, आयह 11-13 में है कि फ़रीसियों ने मसीह़ के इम्तिह़ान के लिये आस्मान से कोई निशान चाहा उस ने अपने दिल से आह खींच कर कहा : "इस ज़माने के लोग क्यूं निशान चाहते हैं मैं तुम से सच कहता हूं कि इस ज़माने के लोगों को कोई निशान न दिया जाएगा ।"

यहां यूनुस नबी عَلَيْهِ السَّلَام के निशान का कोई ज़िक्र नहीं । बईं हमा[1] इस इन्जील में भी अन्धे को चंगा[2] करना, चार हज़ार को सात रोटियों से सैर करना, कोढ़ी को चंगा करना[3] वग़ैरा मो'जिज़ात ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ मन्सूब किये गए हैं ।

﴾3﴿.....लूक़ा,[4] बाब 11, आयह 14-16 व 30 में है कि मसीह़ ने एक देव को निकाला मगर देखने वालों ने इस मो'जिज़े को तस्लीम न किया बल्कि आज़माइश के लिये एक आस्मानी निशान मांगा । आप ने यूनुस नबी के निशान का वा'दा फ़रमाया । इस इन्जील में और भी बहुत से मो'जिज़ात आप से मन्सूब किये गए हैं । मसीह़ ने हीर वदीस को कोई मो'जिज़ा नहीं दिखाया ह़ालांकि हीर वदीस आप के मो'जिज़ात देखने का ख़्वाहिशमन्द था । आप से उस ने बोहतेरी बातें पूछीं पर आप ने कुछ जवाब न दिया ।

﴾4﴿.....यूह़न्ना, बाब 6, आयह 30 में है कि यहूदियों ने ह़ज़रते मसीह़ से कहा : "पस तू कौन सा निशान दिखाता है ताकि हम देख कर तुझ पर ईमान लावें ।" यहां भी ह़ज़रते ईसा ने कोई मो'जिज़ा नहीं दिखाया बल्कि यूनुस नबी के निशान का भी वा'दा न फ़रमाया बईं हमा इस इन्जील में भी बहुत से मो'जिज़े ह़ज़रते मसीह़ से मन्सूब हैं ।

अब हम इस ए'तिराज़ के तह़क़ीक़ी जवाब की त़रफ़ मुतवज्जेह होते हैं । इस में शक नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस क़दर मो'जिज़ात दिखाए कि किसी नबी ने अपनी उम्मत को नहीं दिखाए । और वोह ऐसे मुतवातिर व मश्हूर त़रीक़ों से साबित हैं कि दुन्या के किसी

1.....इस के बा वुजूद । 2.....ठीक या'नी अंखयारा ।
3.....कोढ़ी को अच्छा करना । 4.....एक इन्जील का नाम

www.dawateislami.net

और मज़हब में इस की नज़ीर नहीं पाई जाती। (जैसा कि इस किताब के नाज़िरीन पर रोशन है) मगर कुफ़्फ़ारे कुरैश के मकाबिरा[1] का येह आ़लम था कि वोह मो'जिज़ात गोया उन के नज़दीक मो'जिज़े ही न थे इस लिये सरकशी व इ़नाद के सबब उन्हों ने और निशानियां त़लब कीं जो अ़त़ा न की गईं। जिन दो आयतों से मो'तरिज़ ने इस्तिद्लाल किया है। इन में ऐसी निशानियों के न मिलने की वज्ह मज़्कूर है जिस की तफ़्सील ज़ैल में दर्ज है :

وَمَا مَنَعَنَاۤ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰیٰتِ اِلَّاۤ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَؕ وَ اٰتَیْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَاؕ وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰیٰتِ اِلَّا تَخْوِیْفًا۝۵۹ (بنی اسرئیل، ع٦)

हम को नहीं रोका निशानियां भेजने से किसी शै ने मगर येह कि झुटलाया उन को अगलों ने और हम ने दी समूद को ऊंटनी सूझाने को फिर उस का ह़क़ न माना और हम नहीं भेजते निशानियां मगर डराने को।[2]

इस आयत का ख़ुलासए तफ़्सीर येह है कि बारी तआ़ला फ़रमाता है कि कुरैश जो बा वुजूद मो'जिज़ाते कसीरा देखने के और निशानियां (मसलन कोहे सफ़ा का सोना हो जाना, मक्का के पहाड़ों का दूर किया जाना ताकि ज़मीन क़ाबिले ज़राअ़त हो जाए और नहरों का जारी होना ताकि बाग़ात लग जाएं) त़लब करते हैं। इन निशानियों के देने से हमें इस अम्र[3] ने रोका है कि इस क़िस्म की निशानियां हम ने पहली उम्मतों को त़लब करने पर अ़त़ा कीं मगर वोह ईमान न लाए और हलाक हुवे। चुनान्चे, क़ौमे समूद ने, जिन की हलाकत के आसार ब वज्हे क़ुर्बे दियार, येह कुरैश आते जाते देखते हैं, ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام से निशानी त़लब की और हम ने उन की दुआ़ से पथ्थर से ऊंटनी निकाली मगर उस क़ौम ने उस से इन्कार ही नहीं किया बल्कि उस के पाउं काट डाले इस लिये वोह लोग हलाक हो गए। हमारी आ़दत यूं ही जारी है कि हम किसी क़ौम के सुवाल पर ऐसी आयात को सिर्फ़ अ़ज़ाबे इस्तीसाल[4] से डराने के लिये बत़ौरे पेश ख़ैमा भेजा करते हैं। अगर वोह क़ौम इन आयात पर ईमान न लाए तो हम ज़रूर उन पर अ़ज़ाबे इस्तीसाल नाज़िल कर देते हैं। इसी त़रह़ अगर कुफ़्फ़ारे कुरैश के सुवाल पर वोह निशानियां हमारे

1.....गुरूर व तकब्बुर। 2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ऐसी निशानियां भेजने से यूं ही बाज़ रहे कि उन्हें अगलों ने झुटलाया और हम ने समूद को नाक़ा दिया आंखें खोलने को तो उन्हों ने उस पर ज़ुल्म किया और हम ऐसी निशानियां नहीं भेजते मगर डराने को। (پ١٥،بنی اسراءیل:٥٩) **इल्मिय्या**

3.....बात। 4.....ऐसा अ़ज़ाब जो उन्हें बिल्कुल नेस्तो नाबूद कर दे।

www.dawateislami.net

ह़बीब की दुआ़ से अ़त़ा की जाएं तो येह भी उन्हीं[1] की त़रह़ तक्ज़ीब करेंगे और अ़ज़ाबे इस्तीसाल के मुस्त–वजिब[2] होंगे मगर हम ने ब मुक़्तज़ाए ह़िक्मत[3] इस उम्मत को अ़ज़ाबे इस्तीसाल से मह़फ़ूज़ रखा है लिहाज़ा हम ने वोह निशानियां उन को अ़त़ा नहीं कीं।

وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ عِنْدَ اللّٰهِؕ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ۝۵۰ اَوَ لَمْ یَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ یُتْلٰى عَلَیْهِمْؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّ ذِكْرٰى لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ۝۵۱

*और कहते हैं क्यूं न उतरीं उस पर कुछ निशानियां उस के रब से तो कह निशानियां तो हैं इख़्तियार में **अल्लाह** के और मैं तो सुना देने वाला हूं खोल कर क्या इन को बस नहीं कि हम ने तुझ पर उतारी किताब कि उन पर पढ़ी जाती है। बेशक इस में बड़ी रह़मत है और समझाना उन लोगों को जो मानते हैं।*[4]

इन आयतों का ख़ुलासा येह है : **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश बा वुजूद मुलाह़ज़ए आयात[5] सरकशी व इनाद के सबब से हमारे ह़बीबे पाक की निस्बत कहते हैं कि उन पर ऐसी निशानियां क्यूं नहीं उतरीं जैसा कि नाक़ाए सालेह़ और अ़साए मूसा और माइदए ई़सा हैं। ऐ हमारे ह़बीब ! उन कुफ़्फ़ार से कह दीजिये कि ऐसी निशानियां **अल्लाह** की क़ुदरत व हुक्म में हैं वोह उन को ह़स्बे मुक़्तज़ाए ह़िक्मत नाज़िल करता है। मेरा काम तो येह है कि उन आयात के साथ जो मुझे मिली हैं कुफ़्फ़ार को डराऊं न येह कि वोह निशानियां लाऊं जो वोह इनाद व तअ़न्नुत से त़लब करते हैं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला उन कुफ़्फ़ार की तरदीद में जो ऐसी निशानियां त़लब करते हैं यूं फ़रमाता है : क्या उन को एक निशानी काफ़ी नहीं जो तमाम निशानियों से मुस्तग़्नी[6] कर देने वाली है या'नी क़ुरआने करीम जो हम ने तुझ पर

1.....مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَاۚ اَفَهُمْ یُؤْمِنُوْنَ۝۶ (انبیاء، ع ۱) नहीं माना उन से पहले किसी बस्ती ने जिस को हलाक किया हम ने अब येह क्या मानेंगे ? **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इन से पहले कोई बस्ती ईमान न लाई जिसे हम ने हलाक किया तो क्या येह ईमान लाएंगे ? (پ۱۷،الانبیاء:۶) **इल्मिय्या**

2.....लाइक़।

3.....अज़ रूए ह़िक्मत। **इल्मिय्या**.....ह़िक्मत येह कि उन में से बा'ज़ ईमान लाएंगे और बा'ज़ की नस्ल से मोमिन पैदा होंगे। फ़ाफ़हम। 12 मिन्ह

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बोले क्यूं न उतरीं कुछ निशानियां उन पर उन के रब की त़रफ़ से तुम फ़रमाओ निशानियां तो **अल्लाह** ही के पास हैं और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला हूं और क्या येह उन्हें बस नहीं कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है बेशक इस में रह़मत और नसीह़त है ईमान वालों के लिये। (پ۲۱،العنکبوت:۵۰-۵۱) **इल्मिय्या**

5.....निशानियां देखने के बा वुजूद।

6.....बे नियाज़।

www.dawateislami.net

उतारा है वोह एक ज़िन्दा मो'जिज़ा है हर मकान व ज़मान में उन पर पढ़ा जाता है और हमेशा के लिये उन के साथ रहेगा। इस में बड़ी रह़मत और तज़्किरा है ईमान वालों के लिये न उन के लिये जो इनाद रखते हैं।

इस तक़रीर से वाज़ेह़ हो गया कि आयाते बाला से मो'जिज़ात की नफ़ी नहीं पाई जाती बल्कि इन में बा वुजूदे कसरते मो'जिज़ात उन ख़ास निशानियों के न मिलने की वज्ह बयान हुई है जो कुफ़्फ़ार ने मह़ज़ इनाद से त़लब कीं। लिहाज़ा ईसाइयों का येह कहना कि क़ुरआन में कोई आयत नज़र नहीं आती जिस से साबित हो कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मो'जिज़े दिखाए सिर्फ़ इनाद पर मब्नी है वोह अपने मुंह से बड़ा बोल बोलते हैं। (یہوداہ،١٦)

كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝ (کہف،ع١)

क्या बड़ी बात हो कर निकलती है उन के मुंह से सब झूट है जो कहते हैं।[1]

''इल्मे ग़ैब'' के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनी मदनी फूल''

''وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ'' और **अल्लाह** की शान येह नहीं कि ऐ आ़म लोगों तुम्हें ग़ैब का इल्म दे दे हां **अल्लाह** चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे। **शाने नुज़ूल :** रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ख़िल्क़त व आफ़रीनिश से क़ब्ल जब कि मेरी उम्मत मिट्टी की शक्ल में थी उसी वक़्त वोह मेरे सामने अपनी सूरतों में पेश की गई जैसा कि ह़ज़रते आदम पर पेश की गई और मुझे इल्म दिया गया कि कौन मुझ पर ईमान लाएगा कौन कुफ़्र करेगा येह ख़बर जब मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो उन्हों ने बराहे इस्तिह्ज़ा कहा कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुमान है कि वोह येह जानते हैं कि जो लोग अभी पैदा भी नहीं हुवे उन में से कौन उन पर ईमान लाएगा कौन कुफ़्र करेगा बा वुजूद येह कि हम उन के साथ हैं और वोह हमें नहीं पहचानते इस पर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बर पर क़ियाम फ़रमा कर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्दो सना के बा'द फ़रमाया उन लोगों का क्या ह़ाल है जो मेरे इल्म में त़ा'न करते हैं आज से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला है उस में से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिस का तुम मुझ से सुवाल करो और मैं तुम्हें उस की ख़बर न दे दूं। अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी ने खड़े हो कर कहा : मेरा बाप कौन है या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ? फ़रमाया : ह़ुज़ाफ़ा फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हुवे उन्हों ने फ़रमाया : या रसूलल्लाह ! हम **अल्लाह** की रबूबिय्यत, इस्लाम के दीन होने, क़ुरआन के इमाम होने, आप के नबी होने पर राज़ी हुवे हम आप से मुआ़फ़ी चाहते हैं। ह़ुज़ूर ने फ़रमाया : क्या तुम बाज़ आओगे, क्या तुम बाज़ आओगे फिर मिम्बर से उतर आए। (बुख़ारी वग़ैरा कुतुबे कसीरा) क़ुरआनो ह़दीस से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ियामत तक की तमाम चीज़ों का इल्म अ़त़ा फ़रमाया गया है। और ह़ुज़ूर के इल्मे ग़ैब में त़ा'न करना मुनाफ़िक़ीन का त़रीक़ा है। (माख़ूज़ अज़ : ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, आले इमरान तह़्तुल आयत : 179)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कितना बड़ा बोल है कि उन के मुंह से निकलता है निरा झूट कह रहे हैं। (پ١٥،الکھف:٥)

www.dawateislami.net

आठवां बाब

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल व ख़साइस का बयान

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल व कमालात का इह़ाता ताक़ते बशरी से ख़ारिज है। उ़लमाए ज़ाहिरो बातिन सब यहां आजिज़ हैं। चुनान्चे, ह़ज़रते ख़्वाजा सालेह़ बिन मुबारक बुख़ारी ख़लीफ़ए मजाज़ ह़ज़रते ख़्वाजए ख़्वाजगान सय्यिद बहाउद्दीन नक़्शबन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ "अनीसुत्तालिबीन" स. 9 में लिखते हैं :

اجماع اہل تصوف است کہ صدیقیت نزدیک ترین مقامے ومرتبہ ایست بہ نبوت وسخن سلطان العارفین ابو یزید بسطامی است قُدِّسَ سِرُّہٗ کہ آخر نہایت صدیقان اول احوالِ انبیاء است واز کلمات قدسیہ وایشانست کہ نہایت مقام عامہ مومناں بدایت مقامِ اولیاست ونہایت مقام اولیاء بدایت مقام شہیدان است ونہایت مقام شہیداں بدایت مقام صدیقان است ونہایت مقام صدیقاں بدایت مقام انبیاء است ونہایت مقام انبیاء بدایت مقام رُسل است ونہایت مقام رُسل بدایت مقام اولوالعزم است ونہایت مقام اولوالعزم بدایت مقام مصطفٰے است صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ومقام مصطفٰے را نہایت پیدا نیست جز حق جَلَّ وَ عَلَا کسے نہایت مقام وے را نداند ودر روزِ ازل مقام ارواح وبروزِ میثاق ہم بریں مراتب بود کہ ذکر کردہ شد ودر روزِ قیامت ہم بریں مراتب باشد۔(1)

सूफ़ियाए किराम का इस अम्र पर इत्तिफ़ाक़ है कि नबुव्वत के सब से नज़्दीक मक़ाम व मर्तबा "सिद्दीक़िय्यत" है। और सुल्तानुल आरिफ़ीन अबू यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّہٗ का क़ौल है कि सिद्दीक़ों के मक़ाम की निहायत नबियों के मक़ाम की इब्तिदा है। और उन के कलिमाते कुदसिय्या में से है कि आ़म्मए मोमिनीन के मक़ाम की ग़ायत(2) औलिया के मक़ाम की इब्तिदा है और औलिया के मक़ाम की ग़ायत शहीदों के मक़ाम की इब्तिदा और शहीदों के मक़ाम की ग़ायत सिद्दीक़ों के मक़ाम की इब्तिदा है और सिद्दीक़ों के मक़ाम की ग़ायत नबियों के मक़ाम की इब्तिदा है, और नबियों के मक़ाम की ग़ायत रसूलों के मक़ाम की इब्तिदा है, और रसूल के मक़ाम की ग़ायत उलूल अ़ज़्म के मक़ाम की इब्तिदा है, और उलुल अ़ज़्म के मक़ाम की ग़ायत ह़ज़रते मुस्तफ़ा के मक़ाम की इब्तिदा है। (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और ह़ज़रते मुस्तफ़ा के मक़ाम की कोई इन्तिहा नहीं

1 ......انیس الطالبین (مترجم)، قسم اوّل، ولی اور ولایت کی تعریف، ص ٣٤۔علمیہ

2 .....इन्तिहा।

www.dawateislami.net

और ह़क़ جَلَّ وَعَلَا के सिवा और कोई आप के मक़ाम की इन्तिहा नहीं जानता रोज़े अज़ल में मीसाक़ के दिन रूहों का मक़ाम उन ही मरातिब पर था जो मज़्कूर हुवे और क़ियामत के दिन भी उन ही मरातिब पर होगा।

शैख़ अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّهٗ (मुतवफ़्फ़ा रोज़े आ़शूरा सिने 425 हिजरी) यूं फ़रमाते हैं :

"سہ چیز را غایت ندانستم غایت درجات مصطفٰے صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ندانستم وغایت کید نفس ندانستم و غایت معرفت ندانستم۔" (نفحات الانس)[1]

मुझे इन तीन चीज़ों की ग़ायत व ह़द मा'लूम न हुई : ह़ज़रते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरजात, मक्रे नफ़्स, मा'रिफ़त।

इमाम शरफ़ुद्दीन बुसीरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मुतवफ़्फ़ा सिने 694 हिजरी) अपने क़सीदए बुर्दा शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

دَعْ مَا ادَّعَتْهُ النَّصَارٰی فِیْ نَبِیِّهِمٖ   وَاحْكُمْ بِمَا شِئْتَ مَدْحًا فِیْهِ وَاحْتَكِمٖ
فَانْسُبْ اِلٰی ذَاتِهٖ مَاشِئْتَ مِنْ شَرَفٍ   وَانْسُبْ اِلٰی قَدْرِهٖ مَا شِئْتَ مِنْ عِظَمٖ
فَاِنَّ فَضْلَ رَسُوْلِ اللّٰهِ لَیْسَ لَهٗ   حَدٌّ فَیُعْرِبَ عَنْهُ نَاطِقٌ بِفَمٖ[2]

छोड़ कर दा'वा वोह जिस के हैं नसारा मुद्दई   *चाहो जो मानो उसे ज़ैबा है अल्लाह की क़सम !*
जो शरफ़ चाहो करो मन्सूब उस की ज़ात से   *कोई अ़ज़मत क्यूं न हो है मन्ज़िलत से उस की कम*
ह़द नहीं रखती फ़ज़ीलत कुछ रसूलुल्लाह की   *लब कुशाई क्या करें अहले अ़रब अहले अ़जम*

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه "मदारिजुन्नबुव्वत" में यूं फ़रमाते हैं :

ہر رتبہ کہ بود در امکان بروست ختم   ہر نعمتے کہ داشت خدا شد برو تمام[3]

शैख़ सा'दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه रक़म त़राज़ हैं :

---

1 ......نفحات الانس۔

2 ......القصیدتان، البردة للبوصیری، الفصل الثالث فی مدح رسول اللّٰه، ص ١٣۔علمیه

3 ......مدارج النبوت۔

www.dawateislami.net

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَ يَا سَيِّدَ الْبَشَرِ مِنْ وَّجْهِكَ الْمُنِيْرِ لَقَدْ نُوِّرَ الْقَمَرُ
لَا يُمْكِنُ الثَّنَآءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ بعد از خدا بزرگ توئی قصہ مختصر

ऐ साहि़बे जमाल ! ऐ सय्यिदल बशर ! आप के रोशन चेहरे से चांद रोशन है आप की सना कमा ह़क़्क़ुहू मुमकिन नहीं क़िस्सा मुख़्तसर येह कि ख़ुदा के बा'द आप ही बुज़ुर्ग हैं।

जो मो'जिज़ात व कमालात व फ़ज़ाइल दीगर अम्बियाए किराम صَلَوٰتُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में जुदा जुदा मौजूद थे उन सब के नज़ाइर या उन से भी बढ़ कर हुज़ूरे अन्वर بِاَبِيْ هُوَ وَاُمِّيْ की ज़ात शरीफ़ में मुज–तमअ़ थे।

حسن یوسف دم عیسٰی ید بیضا داری آنچہ خوباں ہمہ دارند تو تنہا داری

ब ग़रज़े तौज़ीह़ सिर्फ़ चन्द मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं :

अम्बियाए साबिक़ीन عَلَيْهِمُ السَّلَام	सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم
﴾1﴿ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام आप को अल्लाह तआ़ला ने तमाम चीज़ों के नामों का इ़ल्म दिया आप को फ़िरिश्तों ने सजदा किया।	सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को अल्लाह तआ़ला ने अस्मा के इ़लावा मुसम्मयात का भी इ़ल्म दिया[1] जैसा कि ह़दीस "त़बरानी" व "मुस्नदे फ़िरदौस" के ह़वाले से पहले आ चुका है। आप पर अल्लाह और अल्लाह के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते रहते हैं और मोमिनीन भी सलाम व दुरूद भेजते हैं। येह शरफ़ अतम व अकमल है क्यूंकि सजदा तो एक दफ़्आ़ हो कर मुन्क़त़ेअ़ हो गया और दुरूदो सलाम हमेशा के लिये जारी है और अअ़म भी क्यूंकि सजदा तो सिर्फ़ फ़िरिश्तों से ज़ुहूर में आया और दुरूद में अल्लाह और फ़िरिश्ते और मोमिनीन शामिल हैं। इ़लावा अज़ीं इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "तफ़्सीरे कबीर" में लिखते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों को इस लिये सजदे का हुक्म दिया था कि नूरे मुह़म्मदी ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में था।[2]

1 .....या'नी न सिर्फ़ तमाम चीज़ों के नामों का इ़ल्म दिया बल्कि उन चीज़ों का भी इ़ल्म अ़त़ा फ़रमा दिया।

2 ......التفسير الكبير،سورة البقرة،تحت الاية:٢٥٣،ج٢،الجزء٣،ص٥٢٥۔علميه

www.dawateislami.net

«2» हज़रते इदरीस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप को **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान पर उठाया।	आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने शबे मे'राज में आस्मानों के ऊपर मक़ामे क़ाब क़ौसैन तक उठाया।[1]
«3» हज़रते नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला ने आप को और आप पर ईमान लाने वालों को ग़र्क़ होने से नजात दी।	आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुजूद की बरकत से आप की उम्मत अ़ज़ाबे इस्तीसाल[2] से मह़फ़ूज़ रही [3][4] وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ **अल्लाह** तआ़ला ने किश्तिए नूह़ को भी आप ही के नूर की बरकत से ग़र्क़ होने से बचाया क्यूंकि उस वक़्त नूरे मुह़म्मदी हज़रते[5] साम की पेशानी में था।[6]
«4» हूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप की मदद के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने हवा भेजी।	आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि बादे सबा[7] से मेरी मदद की गई और क़ौमे आ़द मग़रिबी हवा से हलाक की गई।[8]
«5» हज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام आप के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने पथ्थर में से ऊंटनी निकाली आप फ़साह़त में यगानए रूज़गार थे।	ऊंट ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कलाम किया। फ़साह़त में कोई आप के दरजे को नहीं पहुंच सकता।[9]

---

1 ......پ ۲۷، سورۃالنجم:۹۔علمیه

2.....ऐसा अ़ज़ाब जो उन्हें बिल्कुल नेस्तो नाबूद कर दे।

3.....या'नी **अल्लाह** तआ़ला उन को अ़ज़ाब नहीं देने का जिस ह़ाल में कि आप उन में मौजूद हैं। 12 मिन्ह

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** का काम नहीं कि उन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ मह़बूब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो। (پ۹،الانفال:۳۳) **इल्मिय्या**

5.....देखो ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जुज़ए सालिस, स. 54। 12 मिन्ह

6 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصدالاول...الخ، غزوه تبوك...الخ،ج٤،ص١٠٤۔علمیه

7 ......خصائص کبریٰ بحوالہ صحیحین، جزءاول،ص۲۳۰۔

8 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصدالاول...الخ،غزوه خندق...الخ،ج٣،ص٥٥۔علمیه

9 ......الخصائص الکبریٰ،ذکر معجزاته فی ضروب الحیوانات،باب قصة الجمل،ج٢،ص٩٥۔علمیه

www.dawateislami.net

《6》 हज़रते इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** तआ़ला ने आप के लिये आग को ठन्डा कर दिया।	आप ही के[1] नूर की बरकत से हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह पर आग ठन्डी हो गई।[2] आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ पर फ़ारिस की आग जो हज़ार बरस से न बुझी थी गुल हो गई। शबे मे'राज में कर्रए नार से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा और कोई तक्लीफ़ न पहुंची। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में भी ऐसे बुज़ुर्ग गुज़रे हैं कि आग में डाले गए और सलामत रहे चुनान्चे, अबू मुस्लिम ख़ौलानी[3] व ज़ुवैब बिन कुलैब।[4]
आप को मक़ामे ख़ुल्लत अ़ता हुवा इसी वासिते़ आप को ख़लीलुल्लाह कहते हैं।	आप को न सिर्फ़ दरजए ख़ुल्लत अ़ता हुवा बल्कि इस से बढ़ कर दरजए मह़ब्बत अ़ता हुवा इसी वासिते़ आप को ह़बीबुल्लाह कहते हैं।[5]
आप ने अपनी क़ौम के बुत ख़ाने के बुत तोड़े।	आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ानए का'बा के गिर्द और ऊपर जो तीन सो साठ बुत नस्ब थे मह़ज़ एक लकड़ी के इशारे से यके बा'द दीगरे गिरा दिये।
आप ने ख़ानए का'बा बनाया।	आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी ख़ानए का'बा बनाया और ह़जरे अस्वद को उस की जगह पर रख दिया ताकि आप की उम्मत के लोग त़वाफ़ वहां से शुरूअ़ किया करें।

1.....जब ग़ज़्वए तबूक के बा'द रमज़ान सिने 9 हिजरी में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुवे तो ह़ज़रते अ़ब्बास ने आप की इजाज़त से आप की मद्ह़ में चन्द शे'र कहे। उन में से एक शे'र येह है :

وردت نار الخلیل مکتتما　　فی صلبہ انت کیف یحترق

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की आग में पोशीदा दाख़िल हुवे आप उन की पुश्त में थे वोह कैसे जल सकते थे। त़बरानी वग़ैरा ने इस क़िस्से को रिवायत किया है। देखो मवाहिब व ज़ुरक़ानी, ग़ज़्वए तबूक। 12 मिन्ह

2......شرح الزرقانی علی المواھب،المقصدالاول...الخ، غزوہ تبوک...الخ،ج٤، ص١٠٥۔علمیہ

3......خصائص کبریٰ، جزء ثانی، ص٧٩۔

4......الخصائص الکبریٰ،ذکر معجزاتہ......الخ،باب:الایۃ فی عدم احراق النار......الخ،ج٢،ص١٣٣۔علمیہ

5......زرقانی علی المواھب، جزء خامس، ص١٩٣......(التفسیر الکبیر سورۃ البقرۃ،تحت الایۃ:٢٥٣، الحجۃ السابعۃ عشر، ج٢، الجزء٦، ص٥٢٤۔علمیہ)

www.dawateislami.net

﴾7﴿ ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام आप को वालिदे बुज़ुर्गवार ज़ब्ह़ करने लगे तो आप ने सब्र किया।	इस की नज़ीर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का शक़्क़े सद्र है जो वुक़ूअ़ में आया ह़ालांकि ज़ब्ह़े इस्माईल वुक़ूअ़ में न आया बल्कि इन की जगह दुम्बा ज़ब्ह़ किया गया।(1)
﴾8﴿ ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام आप को जब बरादराने यूसुफ़ ने ख़बर दी कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया है तो आप ने भेड़िये को बुला कर पूछा : भेड़िया बोला कि मैं ने यूसुफ़ को नहीं खाया। (ख़साइसे कुब्रा, जुज़्ए सानी, स. 182)	आप से भी भेड़िये ने कलाम किया जैसा कि पहले आ चुका है।(2)
आप फ़िराक़े यूसुफ़ में मुब्तला हुवे और सब्र किया यहां तक कि ग़म के मारे आप की आंखें सफ़ेद हो गईं और क़रीब था कि हलाक हो जाते।	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने साह़िब ज़ादे इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की दाइमी मुफ़ारक़त में मुब्तला हुवे मगर आप ने सब्र किया ह़ालांकि उस वक़्त और कोई साह़िब ज़ादा आप का न था।
﴾9﴿ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام आप को **अल्लाह** तआ़ला ने बड़ा ह़ुस्नो जमाल अ़त़ा फ़रमाया।	आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसा ह़ुस्न अ़त़ा हुवा कि किसी को नहीं हुवा ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को तो निस्फ़ ह़ुस्न मिला था मगर आप को तमाम मिला।(3)-

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب،المقصدالخامس...الخ، فی تخصیصه بخصائص المعراج،ج٨، ص٢٨-٢٩ـعلمیه

2 ......الخصائص الکبریٰ،ذکر معجزاته فی ضروب الحیوانات،باب:قصة الذئب ،ج٢، ص١٠٤ـعلمیه

3 ......الخصائص الکبریٰ، باب اختصاصه صلی اللّٰه تعالی علیه وسلم بأنه اوّل النبیّین...إلخ،ج ٢، ص ٣١٥ـعلمیه

www.dawateislami.net

आप ख़्वाबों की ता'बीर बयान करते थे मगर क़ुरआने मजीद में सिर्फ़ तीन ख़्वाबों की ता'बीर आप से वारिद है।	आप से ता'बीर रूया की कसीर मिसालें अह़ादीस में मज़्कूर हैं।
आप अपने वालिदैन और वत़न के फ़िराक़ में मुब्तला हुवे।	आप ने अहल और रिश्तेदारों और दोस्तों और वत़न को छोड़ कर हिजरत की।
﴾10﴿ ह़ज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام आप साबिर थे।	सब्र में आप के अह़वाल ह़द्दे ह़स्र से ख़ारिज हैं।
﴾11﴿ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام आप को यदे बैज़ा अ़त़ा हुवा।	आप की पुश्ते मुबारक पर मोहरे नबुव्वत थी, इलावा अज़ीं आप सरापा नूर थे, अगर आप ने निक़ाबे बशरिय्यत न ओढ़ा होता तो कोई आप के जमाल की ताब न लाता।
आप ने अ़सा मार कर पथ्थर से पानी जारी कर दिया।	आप ने अपनी उंगलियों से चश्मों की त़रह़ पानी जारी कर दिया।[1] येह उस से बढ़ कर है क्यूंकि पथ्थर से पानी का निकलना मुतआ़रफ़ है मगर ख़ून व गोश्त में से मुतआ़रफ़ नहीं।
आप को अ़सा अ़त़ा हुवा जो अज़्दहा बन जाता था।	सुतूने ह़न्नाना जो खजूर का एक ख़ुश्क तना था आप के फ़िराक़ में रोया और इस से उस बच्चे की सी आवाज़ निकली जो मां के फ़िराक़ में रो रहा हो।[2]
आप ने कोहे तूर पर अपने रब से कलाम किया।	आप ने अ़र्श पर मक़ामे क़ाब क़ौसैन में अपने रब से कलाम किया और दीदारे इलाही से भी बह्‌रा वर हुवे और ह़ालते तम्कीन में रहे। موسیٰ زہوش رفت بیک پرتو صفات تو عین ذات می نگری در تبسّمے

❶ ......الخصائص الکبریٰ،ذکر بقیة المعجزات ...الخ،باب:نبع الماء من بین اصابعه...الخ،ج٢،ص٦٧۔علمیه

❷ ......الخصائص الکبریٰ،ذکر معجزاته فی ضروب الجمادات،باب:حنین الجذع، ج٢،ص١٢٦۔علمیه

www.dawateislami.net

आप ने अ़सा से बह़ीरए कुल्ज़ुम को दो पारा कर दिया।	आप ने अंगुश्ते शहादत से चांद को दो टुकड़े कर दिया।(1) मो'जिज़ए कलीम तो ज़मीन पर था और येह आस्मान पर वहां अ़सा का सहारा था और यहां सिर्फ़ उंगली का इशारा।
﴾12﴿ ह़ज़रते यूशअ़ عَلَيْهِ السَّلَام आप के लिये आफ़्ताब ठहराया गया।	आप के लिये भी आफ़्ताब ग़ुरूब होने से रोका गया।(2)
आप ने ह़ज़रते मूसा के बा'द जब्बारीन से जिहाद किया।	आप ने बद्र के दिन जब्बारीन से जिहाद किया और उन पर फ़त्ह़ पाई आप वफ़ात शरीफ़ तक जिहाद करते रहे और जिहाद क़ियामत तक आप की उम्मत में जारी रहेगा।
﴾13﴿ ह़ज़रते दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप के साथ पहाड़ तस्बीह़ पढ़ते थे।	आप के दस्ते मुबारक में संगरेज़ों ने तस्बीह़ पढ़ी बल्कि आप ने दूसरों के हाथ में भी कंकरों से तस्बीह़ पढ़वा दी। इस से बढ़ कर येह कि आप के त़आ़म में से तस्बीह़ की आवाज़ आया करती थी क्यूंकि पहाड़ तो ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से मुत्तसिफ़ हैं मगर त़आ़म से तस्बीह़ मा'हूद(3) नहीं।
परन्दे आप के मुसख़्ख़र कर दिये गए।	परन्दों के इ़लावा ह़ैवानात (ऊंट, भेड़िये, शेर वग़ैरा) आप के मुसख़्ख़र व मुत़ीअ़ कर दिये गए।
आप के हाथ में लोहा मोम की त़रह़ नर्म हो जाता।	आप के लिये शबे मे'राज में सख़रए बैतुल मुक़द्दस ख़मीर की मानिन्द हो गया था पस आप ने उस से अपना बुराक़ बांधा।(4) (दलाइले ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अस्फ़हानी)

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصدالرابع فی معجزاته الدالة...الخ،ج٦،ص٤٧٧۔علمیه

2 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصدالرابع فی معجزاته الدالة...الخ، رد الشمس له ...الخ،ج٦،ص٤٨٤-٤٨٥۔علمیه

3 .....या'नी मा'रूफ़।

4 ......دلائل النبوة لابی نعیم،الفصل الثلاثون فی ذکر مؤازاة الانبیاء،الرقم٥٣٩،الجزء٢،ص٣٥٣۔علمیه

www.dawateislami.net

आप निहायत खुश आवाज़ थे।	आप भी निहायत खुश आवाज़ थे चुनान्चे, तिर्मिज़ी ने ह़दीसे अनस में नक़्ल किया है : وكان نبيكم احسنهم وجها و احسنهم صوتا.(1)
﴿14﴾ ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام आप को मुल्के अ़ज़ीम अ़त़ा हुवा।	आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने इख़्तियार दिया कि नबुव्वत के साथ मुल्क लें या उ़बूदिय्यत। आप ने उ़बूदिय्यत को पसन्द फ़रमाया बईं हमा अल्लाह तआ़ला ने ख़ज़ाइनुल अर्द़ की कुन्जियां आप को अ़त़ा फ़रमाईं और आप को इख़्तियार दिया कि जिस को चाहें अ़त़ा करें।
आप के तख़्त को जहां चाहते हवा उड़ा ले जाती सुब्ह़ से ज़वाल तक एक महीने की मसाफ़त और ज़वाल से शाम तक एक महीने की मसाफ़त तै करते थे।	आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शबे मे'राज में बुराक़ अ़त़ा हुवा जो हवा बल्कि बिजली से भी तेज़ रफ़्तार था।(2)
जिन्न ब क़हर व ग़लबा आप के मुत़ीअ़ थे।	जिन्न बत़ूअ़ व रग़बत आप पर ईमान लाए।
आप परन्दों की बोली समझते थे।	आप ऊंट भेड़िये वग़ैरा ह़ैवानात का कलाम समझते थे आप से पथ्थर ने कलाम किया जिसे आप ने समझ लिया।
﴿15﴾ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आप मुर्दों को ज़िन्दा और अन्धों को बीना और कोढ़ियों को अच्छा कर देते थे।	आप ने मुर्दों को ज़िन्दा और अन्धों को बीना और कोढ़ियों को अच्छा किया। जब ख़ैबर फ़त्ह़ हुवा तो वहां की एक यहूदी औ़रत ने आप को ज़ह्र आलूद बकरी का गोश्त बत़ौरे हदिय्या भेजा आप ने बकरी का बाज़ू लिया और उस में से कुछ खाया वोह बाज़ू बोला कि मुझ में ज़ह्र डाला गया है।(3) येह मुर्दे को ज़िन्दा करने से बढ़ कर है क्यूंकि येह मय्यित के एक जुज़्व का ज़िन्दा होना है ह़ालांकि इस का बक़िय्या जो इस से अलग था मुर्दा ही था।

1 ......الشمائل المحمدية،باب:ما جاء فی قراء ة رسول اللّٰہ،الحدیث:٣٠٣، ص١٨٣ و فتح الباری لابن حجر،کتاب مناقب الانصار،باب المعراج،تحت الحدیث:٣٨٨٨،ج٧،ص١٧٩۔علمیه

2 ......مشکاة المصابیح،کتاب الفضائل، باب:فی المعراج، الحدیث:٥٨٦٣،ج٢،ص٣٧٧۔علمیه

3 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقانی،المقصد الاول...الخ،غزوه خیبر...الخ،ج٣، ص٢٩٠۔علمیه

www.dawateislami.net

आप ने मिट्टी से परन्दा बना दिया।	ग़ज़्वए बद्र में ह़ज़रते अ़क्काशा बिन मिह़सन की तल्वार टूट गई आप ने उन को एक ख़ुश्क लकड़ी दे दी जब उन्हों ने अपने हाथ में ले कर हिलाई तो वोह सफ़ेद मज़बूत़ लम्बी तल्वार बन गई।(1)
आप ने गहवारे में लोगों से कलाम किया।	आप ने विलादत शरीफ़ के बा'द कलाम किया।
आप बड़े ज़ाहिद थे।	आप का ज़ोह्द सब से ज़ियादा था।

ख़साइसे सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

फ़ज़ाइलो मो'जिज़ात मज़्कूरए बाला तो वोह हैं जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के दरमियान मुश्तरक हैं। इन के इलावा और फ़ज़ाइलो मो'जिज़ात वग़ैरा हैं जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मख़्सूस हैं। इन को आप के ख़साइस कहते हैं। येह ख़साइस भी ब कसरत और ह़द व ह़सर से ख़ारिज हैं। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बीस साल बड़ी मेह़नत से अह़ादीस व आसार व कुतुबे तफ़्सीर व शुरूहे ह़दीस व फ़िक़्ह व उसूल व तसव्वुफ़ में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़साइस का ततब्बोअ़(2) किया और "ख़साइसे कुब्रा" और "अनमुज़जुल लबीब फ़ी ख़साइसुल ह़बीब" तस्नीफ़ फ़रमाईं जिन में हज़ार से ज़ाइद ख़साइस मज़्कूर हैं। (3) جَزَاهُ اللّٰهُ عَنَّا خَيْرَ الْجَزَاء. कुतुबे शा'रानी ने "कश्फ़ुल ग़ुम्मा" में अपने उस्ताद अ़ल्लामा सुयूत़ी के ख़त़ से येही ख़साइस नक़्ल किये हैं।(4)

येह ख़साइस चार क़िस्म के हैं, **अव्वल :** वोह वाजिबात जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुख़्तस हैं मसलन नमाज़े तहज्जुद। **दुवुम :** वोह अह़काम जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही पर ह़राम हैं दूसरों पर नहीं मसलन तह़रीमे ज़कात। **सिवुम :** वोह मुबाह़ात जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुख़्तस हैं मसलन नमाज़े बा'दे अ़स्र। **चहारुम :** वोह फ़ज़ाइल व करामात

1 ......المواهب اللدنية مع شرح الزرقاني،المقصد الاول،باب:غزوة بدر الكبرى،ج٢،ص٣٠١ـعلميه

2 .....नक़्ल। 3 .....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें हमारी त़रफ़ से बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए।

4 ......كشف الغمة عن جميع الامة،كتاب النكاح،القسم الثامن: فيما اختص به من الكرامات و الفضائل،الجزء٢،ص٦٢ـعلميه

www.dawateislami.net

जो हुज़ूरे अन्वर بِاَبِی ھُوَ وَاُمِّی से मख़्सूस हैं ।[1] इस मुख़्तसर में सिर्फ़ क़िस्मे चहारुम में से बा'ज़ ख़साइस ज़िक्र किये जाते हैं ।

﴾1﴿.....**अल्लाह** तआ़ला ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब नबियों से पहले पैदा किया और सब से अख़ीर में मबऊ़स फ़रमाया ।[2]

﴾2﴿.....आ़लमे अरवाह़ ही में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया गया और इसी आ़लम में दीगर अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की रूहों ने आप की रूहे अन्वर से इस्तिफ़ाज़ा किया ।[3]

﴾3﴿.....आ़लमे अरवाह़ में दीगर अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की रूहों से **अल्लाह** तआ़ला ने अ़ह्द लिया कि अगर वोह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने को पाएं तो आप पर ईमान लाएं और आप की मदद करें ।[4]

﴾4﴿.....यौम **अलस्तु** में सब से पहले हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने **बला** कहा था ।[5]

﴾5﴿.....ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام और तमाम मख़्लूक़ात हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के लिये पैदा किये गए ।[6]

﴾6﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्मे मुबारक अ़र्श के पाये पर और हर एक आस्मान पर और बिहिश्त के दरख़्तों और मह़ल्लात पर और हूरों के सीनों पर और फ़िरिश्तों की आंखों के दरमियान लिखा गया है ।[7]

﴾7﴿.....कुतुबे इल्हामिय्यए साबिक़ा तौरात व इन्जील वग़ैरा में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारत दर्ज है ।[8]

﴾8﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बनी आदम के बेहतरीन क़ुरून, क़ुरनन बा'द क़र्न से और

---

1 ......كشف الغمة عن جميع الامة، كتاب النكاح، الباب الاوّل فى بيان جملة من خصائص...إلخ، ج ٢، ص ٥٣-٦٤۔علميه

2 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى، المقصد الاول...الخ،فى تشريف اللّٰه تعالى له ...الخ، ج ١، ص٧٦۔علميه

3 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى،المقصد الاول...الخ،فى تشريف اللّٰه تعالى له ...الخ،ج ١، ص٦٣۔علميه

4 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى ، المقصد الاول...الخ،فى تشريف اللّٰه تعالى له ...الخ،ج ١، ص٧٧۔علميه

5 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى ، المقصد الاول...الخ،فى تشريف اللّٰه تعالى له ...الخ،ج ١،ص٦٧۔علميه

6 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانى، المقصد الاول...الخ،فى تشريف اللّٰه تعالى له ...الخ،ج ١، ص٨٩-٩١ملخصاً۔علميه

7 ......الخصائص الكبرىٰ، باب:خصوصيته بكتابة اسمه الشريف مع اسم اللّٰه تعالى...الخ، ج ١،ص١٢-١٣۔علميه

8 ......الخصائص الكبرىٰ، باب:ذكره فى التوراة والانجيل و سائر الكتب...الخ، ج ١،ص١٨۔علميه

www.dawateislami.net

बेहतरीन क़बाइल व ख़ानदान से हैं। या'नी बरगुज़ीदा तरीने बर गुज़ीदगां और बेहतरीने बेहतरां और मेहतरीने मेहतरां[1] हैं।[2]

﴾9﴿.....ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ले कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद तक और ह़ज़रते ह़व्वा से ले कर हुज़ूर की वालिदए माजिदा तक हुज़ूर का नसब शरीफ़ सफ़ाह़ (ज़िना) से पाको साफ़ रहा है।[3]

﴾10﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ के वक़्त बुत औंधे गिर पड़े और जिन्नों ने अश्आ़र पढ़े।[4]

﴾11﴿.....हुज़ूर ख़त्ना किये हुवे, नाफ़ बुरीदा और आलूदगी से पाको साफ़ पैदा हुवे।[5]

﴾12﴿.....पैदाइश के वक़्त आप ह़ालते सजदा में थे और हर दो अंगुश्ते शहादत आस्मान की त़रफ़ उठाए हुवे थे।[6]

﴾13﴿.....आप के साथ पैदाइश के वक़्त ऐसा नूर निकला कि उस में आप की वालिदए माजिदा ने मुल्के शाम के मह़ल देख लिये।[7]

﴾14﴿.....फ़िरिश्ते हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गहवारे को हिलाया करते थे। आप ने गहवारे में कलाम किया। चुनान्चे, आप चांद से बातें किया करते। जिस वक़्त आप उस की त़रफ़ अंगुश्ते मुबारक से इशारा फ़रमाते वोह आप की त़रफ़ झुक आता।[8]

﴾15﴿.....बिअ़्सत से पहले गर्मी के वक़्त अक्सर बादल आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर साया करता था और दरख़्त का साया आप की त़रफ़ आ जाता था।[9]

1.....महतर की जम्अ़, मेहतर : सरदार, बुज़ुर्ग।

2 ......المواھب اللدنية مع شرح زرقانی،المقصد الاول...الخ،فی تشریف اللّٰہ تعالی له ...الخ، ج۱،ص۱۳۰۔علمیه

3 ......المواھب اللدنية مع شرح زرقانی، المقصد الاول...الخ،فی تشریف اللّٰہ تعالی له ...الخ، ج۱،ص۱۲۷۔علمیه

4 ......المواھب اللدنية مع شرح زرقانی،المقصد الاول...الخ،فی مدة حمله ج۱، ص۱۹۷ملتقطاً۔علمیه

5 ......المواھب اللدنية مع شرح زرقانی،المقصد الاول...الخ، باب:ذکر تزویج عبد اللّٰہ امنة ، ج۱،ص۲۳۲ملتقطاً۔علمیه

6 ......المواھب اللدنية مع شرح زرقانی،المقصد الاول...الخ،باب:ذکر تزویج عبد اللّٰہ امنة ، ج۱،ص۲۰۹ملتقطاً۔علمیه

7 ......الخصائص الکبریٰ،باب:ما ظهر فی لیلة مولوده من المعجزات...الخ،ج۱،ص۷۹۔علمیه

8 ......الخصائص الکبریٰ، باب: مناغاته للقمر وهو فی مهده، ج۱،ص۹۱۔علمیه

9 ......الخصائص الکبریٰ، باب: سفر النبی مع عمه ابی طالب الی الشام ...الخ،ج۱،ص۱۴۳۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾16﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सीनए मुबारक चार दफ़्आ़ शक़ किया गया। या'नी ह़ालते रिज़ाअ़त में, दस बरस की उ़म्र शरीफ़ में, ग़ारे ह़िरा में इब्तिदाए वह़्य के वक़्त, शबे मे'राज में। जैसा कि पहले मज़्कूर हुवा।(1)

﴾17﴿.....**अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के हर उ़ज़्व का ज़िक्र किया है जिस से ह़क़ جَلَّ وَعَلَا की कमाले मह़ब्बत व इनायत पाई जाती है।

क़ल्बे मुबारक	مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿۱۱﴾ (نجم، ع ۱)(2) نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾ عَلٰى قَلْبِكَ (شعراء، ع ۱۱)(3)
ज़बाने मुबारक	وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿۳﴾ (نجم، شروع)(4) فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ (دخان، ع ۳)(5)
चश्मे मुबारक	مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿۱۷﴾ (نجم، ع ۱)(6)
चेहरए मुबारक	قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِی السَّمَآءِ (بقره، ع ۱۷)(7)
हाथ मुबारक और गर्दन मुबारक	وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ (بنی اسرائيل، ع ۳)(8)
सीनए मुबारक और पुश्ते मुबारक	اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿۱﴾ وَ وَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿۲﴾ الَّذِیْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿۳﴾ (انشراح، شروع)(9)

---

1 ......الخصائص الكبرىٰ، باب: ما ظهر فى زمان رضاعه صلى الله عليه وسلم ...الخ، ج ۱، ص ۹۳ ملتقطاًو المواهب اللدنية مع شرح زرقانى،المقصد الاول...الخ،باب:شق صدره، ج ۱،ص ۲۸۸ ملتقطاًعلميه

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** दिल ने झूट न कहा जो देखा। (پ۲۷،النجم:۱۱) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे रूहुल अमीन ले कर उतरा तुम्हारे दिल पर। (پ۱۹،الشعراء:۱۹۳۔۱۹۴) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कोई बात अपनी ख़्वाहिश से नहीं करते। (پ۲۷،النجم:۳) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो हम ने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में आसान किया। (پ۲۵،الدخان:۵۸) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आंख न किसी त़रफ़ फिरी न ह़द से बढ़ी। (پ۲۷،النجم:۱۷) **इल्मिय्या**

7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम देख रहे हैं बार बार तुम्हारा आस्मान की त़रफ़ मुंह करना। (پ۲،البقرة:۱۴۴) **इल्मिय्या**

8.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुवा न रख। (پ۱۵، بنی اسرآءیل:۲۹) **इल्मिय्या**

9.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया और तुम पर से तुम्हारा वोह बोझ उतार लिया जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ी थी। (پ۳۰،الم نشرح:۱۔۳) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿18﴾.....हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का इस्मे मुबारक (मुह़म्मद) **अल्लाह** तआ़ला के इस्मे मुबारक (मह़मूद) से मुश्तक़ है।[1]

﴿19﴾.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्माए मुबारका में से तक़रीबन सत्तर नाम वोही हैं जो **अल्लाह** के हैं।

﴿20﴾.....हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक इस्मे मुबारक अह़मद है। आप से पहले जब से दुन्या पैदा हुई किसी का येह नाम न था ताकि इस बात में किसी को शक्को शुबा की गुन्जाइश न रहे कि कुतुबे साबिक़ा इल्हामिय्या में जो अह़मद का ज़िक्र है वोह आप ही हैं।[2]

﴿21﴾.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप का परवर दगार बिहिश्त के त़आ़म व शराब से खिलाता पिलाता था।

﴿22﴾.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने पीछे से ऐसा देखते जैसा कि सामने से देखते। रात को अन्धेरे में ऐसा देखते जैसा कि दिन के वक़्त और रोशनी में देखते।[3]

﴿23﴾.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहन मुबारक का लुआ़ब आबे शोर[4] को मीठा बना देता और शीर ख़्वार बच्चों के लिये दूध का काम देता।[5]

﴿24﴾.....जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी पथ्थर पर चलते तो उस पर आप के पाए मुबारक का निशान हो जाता। चुनान्चे, मक़ामे इब्राहीम में है और संगे मक्का में आप की कोहनियों का निशान मश्हूर है।

﴿25﴾.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बग़ल शरीफ़ पाको साफ़ और ख़ुश्बूदार थी। इस में किसी क़िस्म की बूए ना ख़ुश न थी।[6]

---

1 ......الخصائص الکبریٰ، باب:اختصاصہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم باشتقاق اسمہ الشریف ...الخ، ج۱،ص۱۳۴۔علمیہ

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب،المقصدالثانی...الخ،الفصل الاول فی اسمائہ ...الخ،ج۴، ص۲۳۲۔۲۳۴ ملخصاً۔علمیہ

3 ......الخصائص الکبریٰ، باب:المعجزۃ والخصائص فی عینیہ الشریفتین، ج۱،ص۱۰۴ملتقطاً والخصائص الکبریٰ، باب: المعجزۃ والخصائص فی عینیہ الشریفتین،ج۱،ص۱۰۴۔علمیہ

4 .....कड़वा पानी।

5 ......الخصائص الکبریٰ،باب:الایات فی فمہ الشریف وریقہ واسنانہ،ج۱،ص۱۰۵ والخصائص الکبریٰ،باب:الایات فی فمہ الشریف وریقہ واسنانہ،ج۱،ص۱۰۵۔علمیہ

6 ......سنن دارمی،المقدمۃ،باب فی حسن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم،الحدیث:۶۳،ج۱،ص۴۵۔علمیہ

www.dawateislami.net

﴾26﴿.....आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ मुबारक इतनी दूर तक पहुंचती कि किसी दूसरे की न पहुंचती चुनान्चे, जब आप ख़ुत़बा दिया करते थे तो नौजवान लड़कियां अपने घरों में सुन लिया करती थीं।(1)

﴾27﴿.....आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुव्वते सामिआ़ सब से बढ़ कर थी यहां तक कि अक्सर इज़्दिहामे मलाइक के सबब से आस्मान में जो आवाज़ पैदा होती है आप वोह भी सुन लेते थे।

हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام अभी सिद्रतुल मुन्तहा में होते कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के बाज़ूओं की आवाज़ सुन लेते थे और जब वोह वहां से आप की त़रफ़ वह्य के लिये उतरने लगते तो आप उन की ख़ुश्बू सूंघ लेते। आस्मान के दरवाज़ों के खुलने की आवाज़ भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन लिया करते थे।

﴾28﴿.....ख़्वाब में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्मे मुबारक सो जाती मगर दिल मुबारक बेदार रहता। बा'ज़ कहते हैं कि दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का भी येही ह़ाल था।(2)

﴾29﴿.....आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी जमाई और अंगड़ाई नहीं ली और न कभी आप को एह़तिलाम हुवा। दीगर अम्बियाए किराम भी इस फ़ज़ीलत में मुश्तरक हैं।(3)

﴾30﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसीनए मुबारक कस्तूरी से ज़ियादा ख़ुश्बूदार था।(4)

﴾31﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मियाना क़द माइल ब दराज़ी थे, मगर जब दूसरों के साथ चलते या बैठते तो सब से बुलन्द नज़र आते(5) ताकि बात़िन की त़रह़ ज़ाहिरी सूरत में भी कोई आप से बड़ा मा'लूम न हो।

﴾32﴿.....हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साया न था क्यूंकि आप नूर ही नूर थे और नूर का साया नहीं होता।(6)

﴾33﴿.....आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बदन शरीफ़ पर मख्खी न बैठती और कपड़ों में जूं न पड़ती।(7)

---

1 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:الآية فی صوته وبلوغه حيث لا يبلغه،ج١،ص١١٣۔علميه

2 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:الآية فی نومه،ج١،ص١١٨۔علميه

3 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:الآية فی حفظه صلى الله عليه وسلم من الاحتلام، ج١، ص١٢٠۔علميه

4 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:الآية فی عرقه الشريف،ج١،ص١١٦۔علميه

5 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:الآية فی طوله،ج١،ص١١٦۔علميه

6 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:الآية فی انه صلى الله عليه وسلم لم يكن يرى له ظل، ج١، ص١١٦۔علميه

7 ......الخصائص الكبرىٰ،باب:فی انه صلى الله عليه وسلم كان لا ينزل الذباب...الخ، ج١،ص١١٧۔علميه

www.dawateislami.net

﴾34﴿.....जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो फ़िरिश्ते (ब ग़रज़े हि़फ़ाज़त) आप के पीछे होते इसी वासिते़ आप ने अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से फ़रमाया कि तुम मेरे आगे चलो और मेरी पीठ फ़िरिश्तों के वासिते़ छोड़ दो।(1)

﴾35﴿.....हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ून और तमाम फ़ुज़्लात पाक थे बल्कि आप के बोल का पीना शिफ़ा था।(2)

﴾36﴿.....हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बराज़ को ज़मीन निगल जाया करती थी और वहां से कस्तूरी की खुश्बू आया करती थी।(3)

﴾37﴿.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस गन्जे के सर पर अपना दस्ते शिफ़ा फेरते उसी वक़्त बाल उग आते और जिस दरख़्त को लगाते वोह उसी साल फल देता।

﴾38﴿.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस सर पर अपना दस्ते मुबारक रखते आप के दस्ते मुबारक की जगह के बाल सियाह ही रहा करते कभी सफ़ेद न होते।

﴾39﴿.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात के वक़्त दौलत ख़ाने में तबस्सुम फ़रमाते तो घर रोशन हो जाता।

﴾40﴿.....हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बदने मुबारक से खुश्बू आती थी। जिस रास्ते से आप गुज़रते उस में बूए खुश रहती जिस से पता चलता कि आप यहां से गुज़रे हैं।

﴾41﴿.....जिस चोपाए पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवार होते वोह बोलो बराज़ न करता जब तक कि आप सुवार रहते।

﴾42﴿.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत पर काहिनों की ख़बरें मुन्क़ते़अ़ हो गईं और शहाबे साक़िब के साथ आस्मानों की हि़फ़ाज़त कर दी गई और शयाती़न तमाम आस्मानों से रोक दिये गए।

﴾43﴿.....हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़रीन व मुअक्किल (जिन्न) इस्लाम ले आया।

﴾44﴿.....शबे मे'राज में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये बुराक़ मअ़ ज़ीन व लगाम आया।

---

1 ......المواهب اللدنية مع شرح زرقانی ، المقصد الثالث ...الخ، الفصل الاول فی كمال خلقته وجمال صورته، ج٥، ص٥٢٣۔علمیه

2 ......الخصائص الكبرىٰ، باب: الاستشفاء ببوله ،ج١، ص١٢٢۔علمیه

3 ......الخصائص الكبرىٰ، باب:المعجزة فی بوله ،ج١، ص١٢٠۔١٢١۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾45﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शबे मे'राज में जसदे मुबारक के साथ ह़ालते बेदारी में आस्मानों से ऊपर तशरीफ़ ले गए।

بلکہ جائے کہ جا نبود آنجا　　　محرمے جز خدا نبود آنجا

और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने परवर दगार جَلَّ شَانُہ को आंखों से देखा और उस के साथ कलाम किया। उसी रात आप बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ में दीगर अम्बियाए किराम और फ़िरिश्तों के इमाम बने।

﴾46﴿.....बा'ज़े ग़ज़्वात में फ़िरिश्ते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो कर दुश्मनों से लड़े।

﴾47﴿.....हम पे वाजिब है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजें। पहली उम्मतों पर वाजिब न था कि अपने पैग़म्बरों पर दुरूद भेजें।

﴾48﴿.....कुरआने करीम और दीगर कुतुबे इल्हामिय्या[1] में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से सिवाए हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के और किसी पैग़म्बर पर दुरूद वारिद नहीं।

﴾49﴿.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने वोह किताब अ़ता फ़रमाई जो तह़रीफ़ से मह़फ़ूज़ और ब लिह़ाज़ लफ़्ज़ व मा'ना मो'जिज़ है। ह़ालांकि आप उम्मी थे, लिखना पढ़ना न जानते थे और न आ़लिमों की सोह़बत में रहते थे।[2]

﴾50﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियां अ़ता की गईं। चुनान्चे, आप का इरशादे मुबारक है : اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّاللّٰہُ یُعْطِی (मैं तो बांटने वाला हूं और **अल्लाह**

1.....आस्मानी किताबें।

2.....अ़ल्लामा अबुल वलीद बाजी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "कुरआने पाक में है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नुज़ूले कुरआन से पहले न कोई किताब पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे। इस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मी होना मुतह़क़्क़क़ हो गया (क्यूंकि अहले किताब कहते थे कि हमारी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की सिफ़त येह मज़्कूर है कि वोह उम्मी होंगे न लिखेंगे न पढ़ेंगे) और येह नफ़ी नुज़ूले कुरआन से पहले के ज़माने के साथ मुक़य्यद है लिहाज़ा नुज़ूले कुरआन के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लिखना पढ़ना तसरीह़े कुरआन के मनाफ़ी नहीं बल्कि येह आप का मो'जिज़ा है और येह दूसरा मो'जिज़ा है कि आप ने बिग़ैर किसी दुन्यावी उस्ताज़ की ता'लीम के पढ़ा भी और लिखा भी।" इब्ने दह़िय्या फ़रमाते हैं कि इस मस्अले में उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त ने अ़ल्लामा अबुल वलीद बाजी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुवाफ़क़त फ़रमाई है जिन में अबू ज़र हरवी, अबुल फ़त्ह़ नैशापूरी और अफ़्रीक़ा व दीगर मुमालिक के उ़लमा رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی शामिल हैं। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि अ़ल्लामा बाजी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दलील इब्ने अबी शैबा की येह ह़दीस है : ह़ज़रते औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह से मरवी है फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वफ़ात न पाई यहां तक कि आप ने लिखा और पढ़ा। मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। **इल्मिय्या**

(فتح الباری لابن حجر، کتاب المغازی، باب عمرۃ القضاء، تحت الحدیث:٤٢٥١-٤٢٥٢، ج٧، ص٤٢٩ ملخصاً)

www.dawateislami.net

देता है) उन ख़ज़ानों में से जो कुछ किसी को मिलता है वोह आप ही के दस्ते मुबारक से मिलता है क्यूंकि आप ह़ज़रते बारी तआ़ला के ख़लीफ़ए मुत़्लक़ व नाइबे कुल हैं। जो कुछ चाहते हैं बिइज़्ने इलाही अ़त़ा फ़रमाते हैं।

﴾51﴿.....**अल्लाह** तआ़ला ने हु़ज़ूर صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जवामेए़ कलिम अ़त़ा फ़रमाए हैं या'नी आप के कलाम शरीफ़ में फ़साह़तो बलाग़त और ग़वामिज़ मआ़नी और बदाइए़ हुक्म और मह़ासिने इ़बारात ब लफ़्ज़ मौजुज़ व लत़ीफ़ सब पाए जाते हैं।

﴾52﴿.....**अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हर शै का इ़ल्म दिया यहां तक कि रूह़ और उन उमूरे ख़म्सा का इ़ल्म भी इ़नायत फ़रमाया जो सूरए लुक़्मान के अख़ीर में मज़्कूर हैं।[1]

﴾53﴿.....हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सारे जहान (इन्सो जिन्न व मलाइक) के लिये पैग़म्बर बना कर भेजे गए हैं।

﴾54﴿.....हु़ज़ूरे अन्वर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام सारे जहान के लिये रह़मत बना कर भेजे गए हैं।

﴾55﴿.....हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रो'ब का येह ह़ाल था कि दुश्मन ख़्वाह एक माह की मसाफ़त पर होता आप उस पर रो'ब से फ़त्ह़ पाते और वोह मग़्लूब हो जाता। येह तख़्सीस ब निस्बत दीगर अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के है। सलात़ीन व जबाबिरह[2] का मुआ़मला ख़ारिज अज़् मबह़स है।

﴾56﴿.....आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये (और आप की उम्मत के लिये) ग़नाइम[3] ह़लाल कर दी गईं। आप से पहले किसी पर ह़लाल न थीं।

﴾57﴿.....आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये (और आप की उम्मत के लिये) तमाम रूए ज़मीन सजदागाह और पाक करने वाली बना दी गई जहां नमाज़ का वक़्त आ जाए और पानी न मिले तयम्मुम कर के वहीं नमाज़ पढ़ ली जाए। दूसरी उम्मतों के लिये पानी के सिवा किसी और चीज़ के साथ त़हारत न थी और नमाज़ भी मुअ़य्यन जगह कनीसा वग़ैरा के सिवा और जगह जाइज़ न थी।

﴾58﴿.....चांद का टुकड़े होना, शजरो ह़जर का सलाम करना और रिसालत की शहादत देना, ह़न्नाना[4] का रोना और उंगलियों से चश्मे की त़रह़ पानी जारी होना, येह सब मो'जिज़ात आप صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा हुवे।

---

1 ......كشف الغمہ للشعرانی بحوالہ خصائص للسیوطی، جزء ثانی ص۳۶۔......(الخصائص الکبری، باب: اختصاصه بالنصر بالرعب مسيرة شهرامامه...الخ، ج۲، ص۳۳۵۔علميه)

2 .....ज़ुल्म करने वाले। 3 .....ग़नीमतें। 4 .....सुतूने ह़न्नाना।

www.dawateislami.net

﴾59﴿.....हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नया नबी न आएगा।

﴾60﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त तमाम अम्बियाए साबिक़ीन की शरीअ़तों की नासिख़ है और क़ियामत तक रहेगी।

﴾61﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने किनाया से ख़िताब फ़रमाया, ब ख़िलाफ़ दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के कि उन्हें उन के नाम से ख़िताब किया है। देखो आयाते ज़ैल :

﴾١﴿ وَقُلْنَا يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۵﴾ (پ۱،ع۴) (1)

﴾٢﴿ عَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾ (پ۱۶،طٰہٰ،ع۷) (2)

﴾٣﴿ قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ؕ (پ۱۲،ھود،ع۴) (3)

﴾٤﴿ وَنَادٰى نُوْحُ ِۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۴۲﴾ (پ۱۲،ھود،ع۴) (4)

﴾٥﴿ يٰۤاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ (پ۱۲،ھود،ع۷) (5)

﴾٦﴿ وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۲۷﴾ (پ۱،بقرہ،ع۱۵) (6)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने फ़रमाया ऐ आदम तू और तेरी बीबी इस जन्नत में रहो और खाओ इस में से बे रोक टोक जहां तुम्हारा जी चाहे मगर उस पेड़ के पास न जाना कि ह़द से बढ़ने वालों में हो जाओगे। (پ۱،البقرة:۳۵) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** आदम से अपने रब के हुक्म में लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई तो जो मत़लब चाहा था उस की राह न पाई। (پ۱٦،طٰه:۱۲۱) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फ़रमाया गया ऐ नूह़ किश्ती से उतर हमारी त़रफ़ से सलाम और बरकतों के साथ जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर। (پ۱۲،هود:٤۸) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और नूह़ ने अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से किनारे था ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो। (پ۱۲،هود:٤۲) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ इब्राहीम इस ख़याल में न पड़। (پ۱۲،هود:۷٦) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जब उठाता था इब्राहीम उस घर की नेवें और इस्माईल येह कहते हुवे कि ऐ रब हमारे हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता। (پ۱،البقرة:۱۲۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿۷﴾ قَالَ یٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَیْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِیْ وَ بِكَلَامِیْ ﳲ فَخُذْ مَاۤ اٰتَیْتُكَ وَ كُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۴۴﴾

(پ۹،اعراف،ع۱۷)(1)

﴿۸﴾ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَیْهِ ﱪ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۵﴾

(پ۲۰،قصص،ع۲)(2)

﴿۹﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ یٰعِیْسَى ابْنَ مَرْیَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِیْ عَلَیْكَ وَ عَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ (پ۷،مائدہ،ع۱۵)(3)

﴿۱۰﴾ قَالَ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنْزِلْ عَلَیْنَا مَآىٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِیْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ اٰخِرِنَا وَ اٰیَةً
مِّنْكَ ۚ وَ ارْزُقْنَا وَ اَنْتَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ﴿۱۱۴﴾ (پ۷،مائدہ،ع۱۵)(4)

﴿۱۱﴾ یٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِیْفَةً فِی الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَیْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَ لَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَیُضِلَّكَ عَنْ سَبِیْلِ
اللّٰهِ ؕ (پ۲۳،ص،ع۲)(5)

﴿۱۲﴾ وَ وَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَیْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿ؕ۳۰﴾ (پ۲۳،ص،ع۳)(6)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फ़रमाया ऐ मूसा मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तू ले जो मैं ने तुझे अ़ता फ़रमाया और शुक्र वालों में हो। (پ۹،الاعراف:۱٤٤) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मूसा ने उस के घूंसा मारा तो उस का काम तमाम कर दिया कहा येह काम शैत़ान की त़रफ़ से हुवा बेशक वोह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला। (پ۲۰،القصص:۱۵) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब **अल्लाह** फ़रमाएगा ऐ मरयम के बेटे ईसा याद कर मेरा एह़सान अपने ऊपर और अपनी मां पर। (پ۷،المائدة:۱۱۰) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ईसा इब्ने मरयम ने अ़र्ज़ की ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (پ۷،المائدة:۱۱٤) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ दावूद बेशक हम ने तुझे ज़मीन में नाइब किया तू लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे **अल्लाह** की राह से बहका देगी। (پ۲۳،ص:۲٦) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने दावूद को सुलैमान अ़त़ा फ़रमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला। (پ۲۳،ص:۳۰) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿۱۳﴾ یٰزَكَرِیَّاۤ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ﰳاسْمُهٗ یَحْیٰىۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِیًّا۝ (پ۱۶،مریم،ع۱)(1)

﴿۱۴﴾ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَیْهَا زَكَرِیَّا الْمِحْرَابَۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًاۚ (پ۳،آل عمران،ع۴)(2)

﴿۱۵﴾ یٰیَحْیٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍؕ (پ۱۶،مریم،ع۱) (3)

﴿۱۶﴾ وَ زَكَرِیَّاۤ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْوٰرِثِیْنَ۝ۚۖ (پ۱۷،انبیآء،ع۶) (4)

मगर हमारे आक़ाए नामदार بِاَبِی ھُوَ وَاُمِّی को **अल्लाह** तआ़ला यूं ख़िता़ब फ़रमाता है :

﴿۱﴾ یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَ مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ۝ (پ۱۰،انفال،ع۸) (5)

﴿۲﴾ یٰۤاَیُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَؕ (پ۶،مائدہ،ع۱۰) (6)

﴿۳﴾ یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُۙ۝ (پ۲۹،مزمل،شروع) (7)

﴿۴﴾ یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُۙ۝ (پ۲۹،مدثر،شروع) (8)

जहां **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर के नामे मुबारक की तसरीह़ फ़रमाई है वहां साथ ही रिसालत या कोई और वस्फ़ बयान फ़रमाया है। देखो आयाते ज़ैल :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ज़करिय्या हम तुझे ख़ुशी सुनाते हैं एक लड़के की जिन का नाम यह़्या है इस के पहले हम ने इस नाम का कोई न किया।(پ۱٦،مریم:۷) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते। (پ۳،اٰل عمران:۳۷) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ यह़्या किताब मज़बूत़ थाम। (پ۱٦،مریم:۱۲) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ज़करिय्या को जब उस ने अपने रब को पुकारा ऐ मेरे रब मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से बेहतर वारिस। (پ۱۷،الانبیاء:۸۹) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) **अल्लाह** तुम्हें काफ़ी है और येह जितने मुसलमान तुम्हारे पैरू हुवे। (پ۱۰،الانفال:٦٤) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रसूल पहुंचा दो जो कुछ उतरा तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से। (پ٦،المائدۃ:٦۷). **इल्मिय्या**

7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ झुरमुट मारने वाले। (پ۲۹،المزمّل:۱) **इल्मिय्या**

8.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ बाला पोश ओढ़ने वाले। (پ۲۹،المدثّر:۱) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾١﴿ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ (پ٤،آل عمران،ع١٥) (1)

﴾٢﴿ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ (پ٢٦،فتح،ع٤) (2)

﴾٣﴿ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِیّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿۴۰﴾ۧ (پ٢٢،احزاب،ع٥) (3)

﴾٤﴿ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَیِّاٰتِهِمْ وَ اَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿۲﴾ (پ٢٦،محمد،ع١) (4)

जहां **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ख़लील व ह़बीब का यक्जा ज़िक्र किया है वहां अपने ख़लील का नाम लिया है और अपने ह़बीब को नबुव्वत के साथ याद फ़रमाया है। चुनान्चे, यूं इरशाद हुवा :

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِیْمَ لَلَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُ وَ هٰذَا النَّبِیُّ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ وَ اللّٰهُ وَلِیُّ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۶۸﴾ (پ٣،آل عمران،ع٧) (5)

﴾62﴿......हुज़ूर को नामे मुबारक के साथ ख़ित़ाब करने से **अल्लाह** तआ़ला ने मन्अ़ फ़रमाया हालांकि दूसरी उम्मतें अपने अपने नबियों को नाम के साथ ख़ित़ाब किया करती थीं। देखो आयाते ज़ैल :

﴾١﴿ قَالُوْا یٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ (پ٩،اعراف،ع١٦) (6)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं। (پ٤،ال عمران:١٤٤) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं। (پ٢٦،الفتح:٢٩) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हां **अल्लाह** के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले और **अल्लाह** सब कुछ जानता है। (پ٢٢،الاحزاب:٤٠) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और उस पर ईमान लाए जो मुह़म्मद पर उतारा गया और वोही उन के रब के पास से ह़क़ है **अल्लाह** ने उन की बुराइयां उतार दीं और उन की ह़ालतें संवार दीं। (پ٢٦،محمد:٢)

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़ियादा ह़क़दार वोह थे जो उन के पैरू हुवे और येह नबी और ईमान वाले और ईमान वालों का वाली **अल्लाह** है। (پ٣،ال عمران:٦٨) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले ऐ मूसा हमें एक ख़ुदा बना दे जैसा उन के लिये इतने ख़ुदा हैं। (پ٩،الاعراف:١٣٨) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿۲﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ (1) (پ۷، مائدہ، ع۱۵)

﴿۳﴾ قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّ مَا نَحْنُ بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَ مَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۳﴾ (2) (پ۱۲، ہود، ع۵)

﴿٤﴾ قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَ اِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ﴿۶۲﴾ (پ۱۲، ہود، ع۶) (3)

मगर हमारे आक़ाए नामदार بِاَبِیْ هُوَ وَاُمِّی की निस्बत यूं इरशादे बारी होता है :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ (پ۱۸، نور، ع۹) (4)

﴾63﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताबे पाक में ता़अ़त व मा'सिय्यत, फ़राइज़ व अह़काम, वा'दा व वई़द और इन्आ़मो इकराम का ज़िक्र करते वक़्त अपने पाक नाम के साथ याद फ़रमाया है। देखो आयाते ज़ैल :

﴿۱﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ (5) (پ۵، نساء، ع۸)

﴿۲﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ اَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ﴿۲۰﴾ (6) (پ۹، انفال، ع۳)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जब ह़वारियों ने कहा ऐ ई़सा बिन मरयम क्या आप का रब ऐसा करेगा कि हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतारे। (پ۷، المائدة:۱۱۲) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले ऐ हूद तुम कोई दलील ले कर हमारे पास न आए और हम ख़ाली तुम्हारे कहने से अपने ख़ुदाओं को छोड़ने के नहीं न तुम्हारी बात पर यक़ीन लाएं। (پ۱۲، ھود:۵۳) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले ऐ सालेह़ इस से पहले तो तुम हम में होनहार मा'लूम होते थे क्या तुम हमें इस से मन्अ़ करते हो कि अपने बाप दादा के मा'बूदों को पूजें और बेशक जिस बात की त़रफ़ हमें बुलाते हो हम उस से एक बड़े धोका डालने वाले शक में हैं। (پ۱۲، ھود:۶۲) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है। (پ۱۸، النور:۶۳) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का और उन का जो तुम में हुकूमत वाले हैं। (پ۵، النساء:۵۹) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो और सुन सुना कर उस से न फिरो। (پ۹، الانفال:۲۰) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿۳﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ
الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾
(پ۱۰، توبہ، ع۹) (1)

﴿۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ
(پ۱۸، نور، ع۹) (2)

﴿۵﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ (پ۹، انفال، ع۳) (3)

﴿۶﴾ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾ وَ
مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾ ع (پ۴، نساء، ع۲) (4)

﴿۷﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۵۷﴾
(پ۲۲، احزاب، ع۷) (5)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं भलाई का हुक्म दें और बुराई से मन्अ़ करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानें येह हैं जिन पर अ़न क़रीब **अल्लाह** रह़्म करेगा बेशक **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है। (پ۱۰، التوبة:۷۱) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर यक़ीन लाए और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम में ह़ाज़िर हुवे हों जिस के लिये जम्अ़ किये गए हों तो न जाएं जब तक उन से इजाज़त न ले लें। (پ۱۸، النور:۶۲) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो **अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी। (پ۹، الانفال:۲۴) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो हुक्म माने **अल्लाह** और **अल्लाह** के रसूल का **अल्लाह** उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी कामयाबी और जो **अल्लाह** और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की कुल ह़दों से बढ़ जाए **अल्लाह** उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है। (پ۴، النساء:۱۳-۱۴) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है। (پ۲۲، الاحزاب:۵۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿٨﴾ بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖۤ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ؕ﴿۱﴾ (پ۱۰، توبہ، شروع) (1)

﴿٩﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖۤ اِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِیْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ (پ۱۰، توبہ، ع۱) (2)

﴿١٠﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا
رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ (پ۱۰، توبہ، ع۲) (3)

﴿١١﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿۶۳﴾
(پ۱۰، توبہ، ع۸) (4)

﴿١٢﴾ اِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا اَنْ يُّقَتَّلُوْۤا اَوْ يُصَلَّبُوْۤا اَوْ تُقَطَّعَ
اَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ اَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْاَرْضِ ؕ (پ۶، مائدہ، ع۵) (5)

﴿١٣﴾ قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ
الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿۲۹﴾ (پ۱۰، توبہ، ع۴) (6)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेज़ारी का हुक्म सुनाना है **अल्लाह** और उस के रसूल की त़रफ़ से उन मुशरिकों को जिन से तुम्हारा मुआ़हदा था और वोह क़ाइम न रहे। (پ١٠، التوبة:١) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुनादी पुकार देना है **अल्लाह** और उस के रसूल की त़रफ़ से सब लोगों में बड़े ह़ज के दिन कि **अल्लाह** बेज़ार है मुशरिकों से और उस का रसूल। (پ١٠، التوبة:٣) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या इस गुमान में हो कि यूंही छोड़ दिये जाओगे और अभी **अल्लाह** ने पहचान न कराई उन की जो तुम में से जिहाद करेंगे और **अल्लाह** और उस के रसूल और मुसलमानों के सिवा किसी को अपना मह़रमे राज़ न बनाएंगे और **अल्लाह** तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (پ١٠، التوبة:١٦) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या उन्हें ख़बर नहीं कि जो ख़िलाफ़ करे **अल्लाह** और उस के रसूल का तो उस के लिये जहन्नम की आग है कि हमेशा उस में रहेगा येही बड़ी रुस्वाई है। (پ١٠، التوبة:٦٣) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह कि **अल्लाह** और उस के रसूल से लड़ते और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं उन का बदला येही है कि गिन गिन कर क़त्ल किये जाएं या सूली दिये जाएं या उन के एक त़रफ़ के हाथ और दूसरी त़रफ़ के पाउं काटे जाएं या ज़मीन से दूर कर दिये जाएं। (پ٦، المائدة:٣٣) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** लड़ो उन से जो ईमान नहीं लाते **अल्लाह** पर और क़ियामत पर और ह़राम नहीं मानते उस चीज़ को जिस को ह़राम किया **अल्लाह** और उस के रसूल ने और सच्चे दीन के ताबेअ़ नहीं होते या'नी वोह जो किताब दिये गए जब तक अपने हाथ से जिज़्या न दें ज़लील हो कर। (پ١٠،التوبة:٢٩) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿۱۴﴾ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ (پ۹، انفال، شروع) (1)

﴿۱۵﴾ وَ مَنْ یُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿۱۳﴾ (پ۹، انفال، ع۲) (2)

﴿۱۶﴾ فَاِنْ تَنَازَعْتُمْ فِیْ شَیْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ (پ۵، نساء، ع۸) (3)

﴿۱۷﴾ وَ لَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَیُؤْتِیْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗۤ
اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿۵۹﴾ (پ۱۰، توبہ، ع۷) (4)

﴿۱۸﴾ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَ لِلرَّسُوْلِ (پ۱۰، شروع) (5)

﴿۱۹﴾ وَ مَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ (پ۱۰، توبہ، ع۱۰) (6)

﴿۲۰﴾ وَ جَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِیُؤْذَنَ لَهُمْ وَ قَعَدَ الَّذِیْنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ سَیُصِیْبُ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ﴿۹۰﴾ (پ۱۰، توبہ، ع۱۲) (7)

﴿۲۱﴾ وَ اِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِیْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِ اَمْسِكْ عَلَیْكَ زَوْجَكَ وَ اتَّقِ اللّٰهَ وَ تُخْفِیْ فِیْ نَفْسِكَ مَا
اللّٰهُ مُبْدِیْهِ وَ تَخْشَى النَّاسَ وَ اللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ (پ۲۲، احزاب، ع۵) (8)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक **अल्लाह** व रसूल हैं। (پ۹، الانفال:۱) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त करे तो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है। (پ۹، الانفال:۱۳) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर अगर तुम में किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे **अल्लाह** व रसूल के हुज़ूर रुजूअ़ करो अगर **अल्लाह** व क़ियामत पर ईमान रखते हो। (پ۵، النساء:۵۹) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और क्या अच्छा होता अगर वोह इस पर राज़ी होते जो **अल्लाह** व रसूल ने उन को दिया और कहते हमें **अल्लाह** काफ़ी है अब देता है हमें **अल्लाह** अपने फ़ज़्ल से और **अल्लाह** का रसूल हमें **अल्लाह** ही की त़रफ़ रग़बत है। (پ۱۰، التوبۃ:۵۹) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत लो तो उस का पांचवां हिस्सा ख़ास **अल्लाह** और रसूल (का है)। (پ۱۰، الانفال:۴۱) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें क्या बुरा लगा येही ना कि **अल्लाह** व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। (پ۱۰، التوبۃ:۷۴) **इल्मिय्या**

7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बहाने बनाने वाले गंवार आए कि उन्हें रुख़्सत दी जाए और बैठ रहे वोह जिन्हों ने **अल्लाह** व रसूल से झूट बोला था जल्द उन में के काफ़िरों को दर्दनाक अ़ज़ाब पहुंचेगा। (پ۱۰،التوبۃ:۹۰) **इल्मिय्या**

8.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उस से जिसे **अल्लाह** ने ने'मत दी और तुम ने उसे ने'मत दी कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे और **अल्लाह** से डर और तुम अपने दिल में रखते थे वोह जिसे **अल्लाह** को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था और तुम्हें लोगों के त़ा'ने का अन्देशा था और **अल्लाह** ज़ियादा सज़ावार है कि उस का ख़ौफ़ रखो। (پ۲۲، الاحزاب:۳۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾64﴿......अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र बुलन्द किया है। चुनान्चे, अज़ान और खुत़बे और तशह्हुद में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ आप का ज़िक्र भी है।

﴾65﴿......हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर आप की उम्मत पेश की गई और जो कुछ आप की उम्मत में क़ियामत तक होने वाला है वोह सब आप पर पेश किया गया बल्कि बाक़ी उम्मतें भी आप पर पेश की गईं जैसा कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को हर चीज़ का नाम बताया गया।

﴾66﴿......आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के ह़बीब हैं और मह़ब्बत व खुल्लत और कलाम व रूयत के जामेअ़ हैं।

﴾67﴿......जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने पहले नबियों को उन के मांगने के बा'द अ़त़ा फ़रमाया वोह आप को बिन मांगे इनायत फ़रमाया। देखो अमसिलए ज़ैल :

(الف) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने खुदा तआ़ला से सुवाल किया :

وَلَا تُخْزِنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَ ﴿۸۷﴾ (شعراء،ع۵)

और रुस्वा न कर मुझ को जिस दिन जी कर उठें।(1)

हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की उम्मत के बारे में खुदा तआ़ला यूं इरशाद फ़रमाता है :

یَوْمَ لَا یُخْزِی اللّٰہُ النَّبِیَّ وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَہٗ ج (تحریم،ع۲)

जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी को और उन को जो ईमान लाए हैं उस के साथ।(2)

यहां सुवाल से पहले बिशारत है।

(ب) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام यूं दुआ़ करते हैं :

وَّاجْنُبْنِیْ وَبَنِیَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿۳۵﴾ (ابراہیم،ع۶)

मुझे और मेरे बेटों को बुतों की इबादत से बचा।(3)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुझे रुस्वा न करना जिस दिन सब उठाए जाएंगे। (پ۱۹، الشعراء:۸۷) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी और उन के साथ के ईमान वालों को। (پ۲۸، التحریم:۸) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा। (پ۱۳، ابراھیم:۳۵) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में बिन मांगे ख़ुदा फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿۳۳﴾ (احزاب، ع۴)

अल्लाह येही चाहता है कि दूर करे तुम से गन्दी बातें ऐ घर वालो और सुथरा करे तुम को सुथरा करना ।(1)

येह अब्लग़ है उस से जो ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के ह़क़ में हुवा क्यूंकि दुआ़ए ख़लील तो फ़क़त़ इबादते अस्नाम(2) की नफ़ी के लिये थी और येह हर गुनाह व नक़्स को आ़म है। वोह तो अपने बेटों के ह़क़ में ख़ास थी और येह आ़म है हर एक को कि शामिल है उस को बैत हुज़ूर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का या'नी आप के अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अवलाद वग़ैरा।

(ح) ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام यूं दुआ़ करते हैं :

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿۸۵﴾ (شعراء، ع۵)

मुझे जन्नते नई़म के वारिसों में से कर ।(3)

हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ में बिन मांगे ख़ुदा फ़रमाता है :

اِنَّاۤ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ﴿۱﴾ (کوثر)

हम ने तुझ को कौसर अ़त़ा किया ।(4)

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿۵﴾ (ضحٰی)

और आगे देगा तुझ को तेरा रब फिर तू राज़ी हो जाएगा ।(5)

(د) ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام यूं दुआ़ करते हैं :

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۸۴﴾ (شعراء، ع۵)

या'नी आइन्दा उम्मतों में क़ियामत तक मेरा ज़िक्रे जमील क़ाइम रख ।(6)

हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़ुदा तआ़ला ने बिन मांगे इस से बढ़ कर अ़त़ा फ़रमाया। चुनान्चे, सूरए الم نشرح में वारिद है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे। (پ۲۲، الاحزاب:۳۳) **इल्मिय्या**

2.....बुत परस्ती ।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मुझे उन में कर जो चैन के बाग़ों के वारिस हैं। (پ۱۹، الشعراء:۸۵) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब बेशक हम ने तुम्हें बे शुमार ख़ूबियां अ़त़ा फ़रमाईं। (پ۳۰، الکوثر:۱) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे। (پ۳۰، الضحی:۵) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरी सच्ची नामवरी रख पिछलों में। (پ۱۹،الشعراء:۸٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤ *और हम ने तेरा नाम बुलन्द किया।*[1]

लिहाज़ा हुज़ूर अज़ अ़र्श ता फ़र्श मश्हूर हैं और नमाज़ व खुत़बा व अज़ान में **अल्लाह** के नामे मुबारक के साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक मज़्कूर है और अ़र्श पर, कुसूरे बिहिश्त[2] पर, हूरों के सीनों पर, दरख़्ताने बिहिश्त के पत्तों पर और फ़िरिश्तों की चश्म व अब्रू पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्म शरीफ़ लिखा हुवा है और आप से पहले जिस क़दर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام गुज़रे हैं वोह सब आप के सना ख़्वां रहे हैं और क़ियामत को सना ख़्वां होंगे।

(ه) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام यूं दुआ़ करते हैं :

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۝٢٥ (طٰہ،ع٢) *ऐ मेरे परवर दगार मेरा सीना मेरे वासित़े रोशन कर दे।*[3]

हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये बिन मांगे यूं इरशाद होता है :

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝١ (انشراح،شروع) *क्या हम ने तेरे वासित़े तेरा सीना रोशन नहीं किया।*[4]

(و) ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने खुदा तआ़ला से किताब का सुवाल किया। **अल्लाह** तआ़ला ने उन से तीस रातों का वा'दा फ़रमाया फिर दस रातें और ज़ियादा की गईं। बा'दे अज़ां किताब तौरात अ़त़ा हुई।

मगर हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बिग़ैर किसी वा'दए साबिक़ के नुज़ूले कुरआन शुरूअ़ हुवा। चुनान्चे, बारी तआ़ला यूं इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ يُّلْقٰۤى اِلَيْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ (قصص،ع٩) *और तवक़्क़ोअ़ न रखता तू कि उतारी जाए तुझ पर किताब मगर फ़ज़्ल हो कर तेरे रब की त़रफ़ से।*[5]

﴾68﴿.....**अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत पर क़सम खाई है।

चुनान्चे, कुरआने करीम में वारिद है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया। (پ٣٠،الم نشرح:٤) **इल्मिय्या**

2.....जन्नत के मह़ल।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरे रब मेरे लिये मेरा सीना खोल दे। (پ١٦،طٰہ:٢٥) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम ने तुम्हारे लिये सीना कुशादा न किया। (پ٣٠،الم نشرح:١) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और तुम उम्मीद न रखते थे कि किताब तुम पर भेजी जाएगी हां तुम्हारे रब ने रह़मत फ़रमाई। (پ٢٠،القصص:٨٦) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

یٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِیْمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۙ﴿۳﴾

یٰسٓ! क़सम है क़ुरआने मोहकम की तह़क़ीक़ तू अलबत्ता पैग़म्बरों से है।[1]

﴾69﴿.....अल्लाह तआला ने हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी और आप के शहर की और आप के ज़माने की क़सम खाई है :

(الف)

لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِیْ سَكْرَتِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ﴿۷۲﴾ (حجر، ع۵)

या'नी तेरी ज़िन्दगी की क़सम ! वोह (क़ौमे लूत़) अलबत्ता अपनी मस्ती में सरगर्दां हैं।[2]

अल्लाह तआला ने किसी और पैग़म्बर की ज़िन्दगी की क़सम नहीं खाई।

(ب)

لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۱﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۲﴾

(سورۂ بلد)

मैं क़सम खाता हूं उस शहर की ह़ालांकि तू उतरने वाला है उस शहर में।[3]

इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहर या'नी मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की क़सम खाई है जिसे पहले ही से शरफ़े ज़ाती ह़ासिल था मगर हु़ज़ूरे अन्वर के नुज़ूल से और शरफ़ ह़ासिल हो गया। "मदारिजुन्नबुव्वत" में यूं लिखा है :

"در مواہب لدنیہ[4] میگوید کہ روایت کردہ شدہ است از عمر بن الخطاب رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ کہ گفت مر آنحضرت را بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ یارسول اللّٰہ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! بہ تحقیق رسیدہ است فضیلت تو نزد خدا بمرتبہ کہ سوگند خورد خدا تعالیٰ بحیات تو نہ بحیات سائر انبیاء عَلَیْھِمُ السَّلَام ورسیدہ است فضیلت تو نزد خدا تعالیٰ بحدیکہ سوگند خورد بخاک پائے تو وہ گفت لَاۤ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۱﴾ یعنی سوگند خوردن ببلد کہ عبارت است از زمین کہ بے سپر میکند آنرا پائے آنحضرت صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم سوگند بخاک پائے حضرت رسالت است ونظر بحقیقت معنی صاف وپاک است کہ غبارے براں نے نشیند۔"[5]

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हिक्मत वाले क़ुरआन की क़सम बेशक तुम सीधी राह पर भेजे गए हो। (پ۲۲، یٰس:۱۔۳) **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब तुम्हारी जान की क़सम बेशक वोह अपने नशे में भटक रहे हैं। (پ۱۴، الحجر:۷۲) **इल्मिय्या**

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझे उस शहर की क़सम कि ऐ मह़बूब तुम उस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो। (پ۳۰، البلد:۱۔۲) **इल्मिय्या**

4......المواھب الدنیہ مع شرح الزرقانی، المقصد السادس، الفصل الخامس، ج۸، ص۴۹۳۔علمیہ

5......مدارج النبوت، باب سوم، وصل مناقب جلیلہ، ج۱، ص۶۵۔علمیہ

www.dawateislami.net

(ج)

وَالْعَصْرِ ۙ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۙ﴿۲﴾ (سورۂ عصر)

क़सम है ज़माने की ! तह़क़ीक़ इन्सान टोटे में है।[1]

﴾70﴿.....हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वह़्य की तमाम क़िस्मों के साथ कलाम किया गया।

﴾71﴿......हुज़ूर का रूया[2] वह़्य है येही ह़ाल तमाम पैग़म्बरों का है। عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

﴾72﴿.....हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَیْهِ السَّلَام नाज़िल हुवे जो आप से पहले किसी और नबी पर नाज़िल नहीं हुवे।

﴾73﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेहतरीन अवलादे आदम हैं।

﴾74﴿.....आप के पिछले अगले गुनाह (बिल फ़र्ज़ वत्तक़दीर) मुआ़फ़ किये गए हैं या'नी अगर आप से किसी गुनाह (तर्के औला जिसे ब लिह़ाज़ आप के मन्सबे जलील के गुनाह से ता'बीर किया जाए) का सुदूर तसव्वुर किया जाए तो उस की मुआ़फ़ी की बिशारत ख़ुदा ने दे दी है। ह़ालांकि ऐसा तसव्वुर में नहीं आ सकता क्यूंकि आप से कभी कोई गुनाह (ख़्वाह तर्के औला ही हो) सादिर नहीं हुवा। किसी दूसरे पैग़म्बर को ख़ुदा तआ़ला ने ह़याते दुन्यवी में ऐसी मग़फ़िरत की बिशारत नहीं दी।

﴾75﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के नज़्दीक अकरमुल ख़ल्क़ हैं इस लिये दीगर अम्बिया व मुर्सलीन और मलाइक से अफ़्ज़ल हैं।

﴾76﴿.....इजतिहाद में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़त़ा (बर तक़्दीरे तस्लीमो वुक़ूअ़) जाइज़ नहीं।

﴾77﴿.....क़ब्र में मय्यित से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत सुवाल होता है।

﴾78﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ से निकाह़ ह़राम किया गया।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** उस ज़मानए मह़बूब की क़सम बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है। (پ۳۰،العصر:۱-۲) **इल्मिय्या**

2.....ख़्वाब मुबारक।

www.dawateislami.net

﴾79﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के अश्ख़ास व अज्साम का इज़्हार ख़्वाह चादरों में पोशीदा हों (ब इस्तिसनाए ज़रूरत) जाइज़ न था, इसी त़रह़ उन पर शहादत वग़ैरा के लिये मुंह हाथ का नंगा करना ह़राम था।

﴾80﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादियों की अवलाद आप की त़रफ़ मन्सूब है। चुनान्चे, ह़ज़रते इमामे ह़सन और इमामे ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) आप के साहि़बज़ादे कहलाते हैं।

﴾81﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादियों पर तज़व्वुज ह़राम था या'नी अगर आप की कोई साहि़बज़ादी किसी मर्द के निकाह़ में हो तो उस मर्द पर ह़राम था कि किसी दूसरी औ़रत से भी निकाह़ करे।

﴾82﴿.....जिस मेह़राब की त़रफ़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी उस में किसी को इजतिहाद व तह़र्री से दाएं बाएं होना जाइज़ नहीं और अगर कोई शख़्स ऐसा करे और इसरार करे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में इसी त़रह़ थी तो वोह काफ़िर हो गया और अगर येह तावील करे कि येह मेह़राब जो अब है वोह नहीं जो हुज़ूर के ज़माने में थी बल्कि इस में तग़य्युर आ गया है तो वोह काफ़िर नहीं होता।

﴾83﴿.....जिस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा उस ने बेशक आप ही को देखा क्यूंकि शैत़ान आप की सूरत शरीफ़ की त़रह़ नहीं बन सकता। इस बात पर तमाम मुह़द्दिसीन का इत्तिफ़ाक़ है कि जिस सूरत से किसी ने आप को ख़्वाब में देखा उस ने आप ही को देखा। तफ़ावुत आईने के ह़ाल में है, जिस का आईनए ख़याल ज़ियादा साफ़ और इस्लाम के नूर से ज़ियादा मुनव्वर है उस का देखना दुरुस्त तर और कामिल तर है। बा'ज़े कहते हैं कि शैत़ान किसी नबी की सूरत में मुतमस्सिल नहीं हो सकता।

﴾84﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्म शरीफ़ या'नी मुह़म्मद किसी का नाम रखना मुबारक और दुन्या और आख़िरत में नाफ़ेअ़ है मगर अबुल क़ासिम कुन्यत रखने में इख़्तिलाफ़ है। बा'ज़ों ने इस्म व कुन्यत के दरमियान जम्अ़ करने से मन्अ़ किया है और अफ़राद या'नी इस्म व कुन्यत में से एक का रखना जाइज़ बताया है। तफ़्सील मुतव्वलात में[1] देखनी चाहिये।

﴾85﴿.....किसी के लिये जाइज़ नहीं कि अपनी अंगूठी पर "मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह" नक़्श कराए जैसा कि हुज़ूर की अंगूठी पर था।

1.....या'नी सीरत की बड़ी कुतुब में मसलन सुबलुल हुदा वर्रुशाद, शर्हे ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब वग़ैरा। **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾86﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस शरीफ़ के पढ़ने के लिये ग़ुस्ल व वुज़ू करना और ख़ुश्बू मलना मुस्तह़ब है और येह भी मुस्तह़ब है कि ह़दीस शरीफ़ के पढ़ने में आवाज़ धीमी की जाए जैसा कि हुज़ूर की ह़यात शरीफ़ में जिस वक़्त आप कलाम करते हुक्मे इलाही था कि आप की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलन्द न करो। आप के विसाल शरीफ़ के बा'द आप का कलाम मरवी व मासूर इ़ज़्ज़तो रिफ़्अ़त में मिस्ल उस कलाम के है जो आप की ज़बान से सुना जाता था लिहाज़ा कलामे मासूर की क़िराअत के वक़्त भी वोही अदब मल्हूज़ रखना चाहिये और येह भी मुस्तह़ब है कि ह़दीस शरीफ़ ऊंची जगह पर पढ़ी जाए और पढ़ते वक़्त किसी की ता'ज़ीम के लिये ख़्वाह कैसा ही ज़ी शान हो खड़ा न होवे क्यूंकि येह ख़िलाफ़े अदब है।

﴾87﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस शरीफ़ के क़ारियों के चेहरे ताज़ा व शादमां रहेंगे।

﴾88﴿.....जिस शख़्स ने ब ह़ालते ईमान एक लम्ह़ा या एक नज़र हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख लिया उसे सह़ाबी होने का शरफ़ ह़ासिल हो गया त़वील सोह़बत शर्त़ नहीं। हां ताबेई होने के लिये येह शर्त़ है कि वोह सह़ाबी की सोह़बत में देर तक रहा हो।

﴾89﴿.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आ़दिल हैं लिहाज़ा शहादत व रिवायत में इन में से किसी की अ़दालत से बह़्स न की जाए जैसा कि दीगर रावियों में की जाती है। क्यूंकि सह़ाबए किराम की ता'दीले ज़वाहिर किताब व सुन्नत से साबित है।

﴾90﴿.....नमाज़ी तशह्हुद में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से यूं ख़ित़ाब करता है : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ" (आप पर सलाम ऐ नबी) और आप के सिवा किसी और मख़्लूक़ को इस त़रह़ ख़ित़ाब नहीं करता। शबे मे'राज में **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन्हीं अल्फ़ाज़ से ख़ित़ाब किया था। फ़ुक़हाए किराम लिखते हैं कि नमाज़ी को चाहिये कि तशह्हुद में शबे मे'राज के वाक़िए की ह़िकायत व अख़्बार का इरादा न करे बल्कि इन्शा का क़स्द करे कि गोया वोह अपनी त़रफ़ से अपने नबी पर सलाम भेजता है। अगर ह़िकायत व अख़्बार की निय्यत होगी तो वोह सलाम नमाज़ी का न होगा और तशह्हुद जो वाजिब है अदा न होगा लिहाज़ा नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होगी। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "इह़याउल उ़लूम" में फ़रमाते हैं कि नमाज़ी को चाहिये कि अपने क़ल्ब में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के जिस्मे करीम को ह़ाज़िर कर के कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ [1]

---

1 ......احياء علوم الدين ، كتاب اسرار الصلوة...الخ ، باب الثالث فى الشروط الباطنيه... الخ ، ج ١ ، ص٢٢٩-علميه

www.dawateislami.net

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी "अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त" में लिखते हैं :

"ونیز آنحضرت ہمیشہ نصب العین موموناں وقرۃ العین عابدان است در جمیع احوال واوقات خصوصاً در حالت عبادت وآخرآں کہ وجودنورانیت وانکشاف دریں محل بیشتر وقوی تر است۔ وبعضے ازعرفا گفتہ اند کہ ایں خطاب بجہت سریان حقیقت محمد یہ است در ذرائر موجودات وافراد ممکنات۔ پس آنحضرت در ذات مصلیان موجود وحاضر است۔ پس مصلی را باید کہ ازیں معنی آگاہ باشد وازیں شہود غافل نبود تا بانوار قرب واسرار معرفت متنور وفائض گردد۔"[1]

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه मीज़ाने कुब्रा (बाबे सिफ़तुस्सलात) में लिखते हैं कि मैं ने सय्यिदी अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को येह फ़रमाते सुना है कि शारेअ़ ने नमाज़ी को अत्तह़िय्यात में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम भेजने का इस लिये अम्र किया है कि ग़ाफ़िलों को आगाह कर दे कि तुम जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने बैठे हो इस दरबार में तुम्हारे नबी मौजूद हैं, क्यूंकि आप बारगाहे इलाही से कभी जुदा नहीं होते इस वासिते नमाज़ी आप को सलाम के साथ रू बरू ख़ित़ाब करते हैं ।[2]

﴾91﴿.....जिस मोमिन को हुज़ूर पुकारें उस पर आप को जवाब देना वाजिब है ख़्वाह वोह नमाज़ में हो । ह़ज़रते अबू सईद बिन मुअ़ल्ला का बयान है कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पुकारा मैं न आया नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं नमाज़ पढ़ रहा था । आप ने फ़रमाया कि क्या **अल्लाह** ने येह इरशाद नहीं फ़रमाया :

اِسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ
(انفال، ع ۳)

क़बूल करो ख़ुदा और रसूल का पुकारना जब वोह पुकारे तुम्हें उस चीज़ के लिये जो तुम को ज़िन्दा करे ।[3] (صحیح بخاری، تفسیر سورۂ انفال)[4]

---

1 ......اشعة اللمعات، كتاب الصلوة، باب: التشهد، تحت الحديث:٩٠٩، ج١، ص٤٣٠۔علميه

2 ......ميزان الكبرى الشعرانيه للشعرانى، الجزء الاول، باب صفة الصلاة، ص١٩٨۔علميه

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** व रसूल के बुलाने पर ह़ाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी । (پ٩، الانفال:٢٤) **इल्मिय्या**

4 ......صحيح البخارى، كتاب التفسير، باب: يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ... الخ، الحديث:٤٦٤٧، ج٣، ص٢٢٩
وايضاً باب ماجاء فى فاتحة الكتاب، ج٣، ص١٦٣، الحديث:٤٤٧٤۔علميه

www.dawateislami.net

अगर कोई मोमिन आप को जवाब न दे तो बिल इत्तिफ़ाक़ गुनहगार है। उस की नमाज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि बातिल हो जाती है या नहीं।

﴾92﴿.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर झूट बांधना ऐसा नहीं जैसा कि आप के ग़ैर पर है। ह़दीसे सह़ीह़ैन में आया है कि आप ने फ़रमाया : "जिस शख़्स ने जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधा वोह आग में अपना ठिकाना बना ले।"(1) ऐसे शख़्स की रिवायत ख़्वाह वोह तौबा करे हरगिज़ क़बूल न की जाएगी। बा'ज़ों के नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़मदन झूट बांधना कुफ़्र है। मगर ह़क़ येह है कि सख़्त गुनाहे अ़ज़ीम व कबीरा है।

﴾93﴿.....हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के हुजरों के बाहर से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारना ह़राम है। इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾ وَ لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَیْهِمْ لَكَانَ خَیْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵﴾ (حجرات، ع۱)

अलबत्ता वोह लोग जो पुकारते हैं तुझ को हुजरों के बाहर से उन में अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तू उन की त़रफ़ निकलता तो येह अलबत्ता उन के लिये बेहतर होता और ***अल्लाह*** *बख़्शने वाला मेहरबान है।*(2)

﴾94﴿.....हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बुलन्द आवाज़ से कलाम करना ह़राम है जैसा कि कुरआने मजीद में मज़्कूर है।

﴾95﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मा'सूम हैं गुनाहे सग़ीरा और कबीरा से अ़मदन और सह्वन क़ब्ल अज़ नबुव्वत और बा'दे नबुव्वत। येही मज़्हबे मुख़्तार है।

﴾96﴿.....हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जुनून और लम्बी बेहोशी त़ारी नहीं हुई क्यूंकि येह मिन जुम्ला नक़ाइस हैं। अ़ल्लामा सुब्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा कि पैग़म्बरों पर नाबीनाई वारिद नहीं होती क्यूंकि येह नक़्स है। कोई पैग़म्बर नाबीना नहीं हुवा। ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَیْہِ السَّلَام की निस्बत जो कहा गया है कि वोह नाबीना थे सो वोह साबित नहीं। (बर तक़्दीरे सुबूत वोह ना बीनाई मुज़िर नहीं

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب العلم، باب اثم من کذب علی النبی،الحدیث:۱۰۷، ج۱، ص۵۷۔علمیه

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ۲۶،الحجرات:٥٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

क्यूंकि वोह तह़क़ीक़े नबुव्वत के बा'द त़ारी हुई) रहे ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام सो उन की आंखों पर पर्दा आ गया था और वोह पर्दा दूर हो गया। मश्हूर येह है कि कोई पैग़म्बर असम (बहरा) न था।

﴾97﴿.....हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बराअत व तन्ज़ियह खुद **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमा दी ब ख़िलाफ़ दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के कि अपने मुकज़्ज़िबीन[1] की तरदीद वोह खुद किया करते थे। चुनान्चे, क़ौमे नूह़ ने जब उन से कहा :

اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۶۰﴾

तह़क़ीक़ हम तुझे सरीह़ गुमराही में देखते हैं।[2]

उन की नफ़ी खुद ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने की जब उन से कहा :

یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ ضَلٰلَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۸،اعراف،ع۸)

ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही नहीं व लेकिन मैं रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से रसूल हूं।[3]

क़ौमे हूद ने उन से कहा :

اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْ سَفَاهَةٍ وَّ اِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۶۶﴾

तह़क़ीक़ हम तुझ को बे वुक़ूफ़ी में देखते हैं और तुझे झूटों से गुमान करते हैं।[4]

इस पर हूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

یٰقَوْمِ لَیْسَ بِیْ سَفَاهَةٌ وَّ لٰكِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۷﴾ (پ۸،اعراف،ع۹)

ऐ मेरी क़ौम मुझ में बेवुक़ूफ़ी नहीं व लेकिन मैं रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से रसूल हूं।[5]

फ़िरऔ़न ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कहा था :

اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا ﴿۱۰۱﴾

तह़क़ीक़ मैं तुझे ऐ मूसा ! जादू किया हुवा गुमान करता हूं।[6]

1.....झुटलाने वाले।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं। (پ۸، الاعراف:۶۰) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं मैं तो रब्बुल आ़लमीन का रसूल हूं। (پ۸،الاعراف:۶۱) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम तुम्हें बे वुक़ूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूटों में गुमान करते हैं। (پ۸،الاعراف:۶۶) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरी क़ौम मुझे बे वुक़ूफ़ी से क्या अ़लाक़ा मैं तो परवर दगारे आ़लम का रसूल हूं। (پ۸،الاعراف:۶۷) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मूसा मेरे ख़याल में तो तुम पर जादू हुवा। (پ۱۵، بنی اسراءیل:۱۰۱) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस पर ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّكَ یٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا (پ۱۵، بنی اسرائیل، ع۱۲)

और तह़क़ीक़ मैं तुझे ऐ फ़िरऔ़न हलाक किया गया गुमान करता हूं।[1]

क़ौमे शोऐ़ब ने उन से कहा :

اِنَّا لَنَرٰىكَ فِیْنَا ضَعِیْفًا ۚ وَ لَوْ لَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ۫ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَیْنَا بِعَزِیْزٍ (ہود، ع۸)

तह़क़ीक़ अलबत्ता हम तुझ को अपने दरमियान कमज़ोर देखते हैं अगर तेरी बरादरी न होती तो अलबत्ता हम तुझ को संगसार कर देते और तू हम पर क़ुदरत वाला नहीं।[2]

ह़ज़रते शोऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام इस का जवाब यूं देते हैं :

یٰقَوْمِ اَرَهْطِیْۤ اَعَزُّ عَلَیْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَ اتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِیًّا ؕ اِنَّ رَبِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِیْطٌ (ہود، ع۸)

*ऐ मेरी क़ौम ! क्या मेरी बरादरी तुम पर **अल्लाह** से ज़ियादा अ़ज़ीज़ है और तुम ने इस को अपनी पीठ पीछे डाला हुवा है, तह़क़ीक़ मेरा परवरदगार घेरने वाला है उस चीज़ को कि तुम करते हो।*[3]

कुफ़्फ़ार ने हमारे आक़ाए नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत जो त़ा'न व तन्क़ीस की ह़क़ سبحانہ ने ब ज़ाते ख़ुद उस की तरदीद फ़रमा दी जिस से हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शाने महबूबिय्यत इ़यां है। चन्द मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं :

कुफ़्फ़ार का ए'तिराज़ व त़ा'न	बारी तआ़ला عَزَّ اِسْمُهٗ का जवाब
(1) یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْ نُزِّلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ (حجر، ع۱)[4] ऐ वोह शख़्स कि उतारा गया उस पर कुरआन तू अलबत्ता दीवाना है।	مَاۤ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ (قلم، ع۱)[5] नहीं तू अपने रब के फ़ज़्ल से दीवाना।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और मेरे गुमान में तो ऐ फ़िरऔ़न तू ज़रूर हलाक होने वाला है। (پ۱۵، بنی اسرائیل:۱۰۲) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम तुम्हें अपने में कमज़ोर देखते हैं और अगर तुम्हारा कुम्बा न होता तो हम ने तुम्हें पथराव कर दिया होता और कुछ हमारी निगाह में तुम्हें इ़ज़्ज़त नहीं। (پ۱۲، ھود:۹۱) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मेरी क़ौम क्या तुम पर मेरे कुम्बे का दबाव **अल्लाह** से ज़ियादा है और उसे तुम ने अपनी पीठ के पीछे डाल रखा बेशक जो कुछ तुम करते हो सब मेरे रब के बस में है। (پ۱۲، ھود:۹۲) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ वोह जिन पर कुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो। (پ۱٤، الحجر:٦) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं। (پ۲۹، القلم:۲) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾2﴿ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ۝۳۶ (صافات، ع۲) (1)

क्या हम छोड़ देने वाले हैं अपने मा'बूदों को एक दीवाने शाइर के वासिते।

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۳۷ (صافات، ع۲) (2)

बल्कि वोह लाया है ह़क़ और सच्चा किया है पैग़म्बरों को।

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ (یٰس، ع۵) (3)

और हम ने उस को शे'र नहीं सिखाया और उस के लाइक़ नहीं।

﴾3﴿ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝۴۷ (بنی اسرائیل، ع۵) (4)

नहीं पैरवी करते तुम मगर एक मर्द मस्ह़ूर (जादू मारा) की।

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۝۴۸ (بنی اسرائیل، ع۵) (5)

देख क्यूंकर बयान कीं उन्हों ने तेरे वासिते मिसालें। पस वोह गुमराह हो गए पस नहीं पा सकते कोई राह (त़ा'न की)।

﴾4﴿ لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۳۱ (انفال، ع۴) (6)

अगर हम चाहें तो कह लें ऐसा। येह कुछ नहीं मगर क़िस्से कहानियां पहलों की।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ۝۸۸ (بنی اسرائیل، ع۱۰) (7)

कह दे अगर जम्अ़ होवें आदमी और जिन्न इस पर कि लावें ऐसा क़ुरआन तो न लावेंगे ऐसा ख़्वाह मदद करें एक की एक।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें एक दीवाने शाइ़र के कहने से। (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۳۶) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बल्कि वोह तो ह़क़ लाए हैं और उन्हों ने रसूलों की तस्दीक़ फ़रमाई। (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۳۷) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया और न वोह उन की शान के लाइक़ है। (پ۲۳،الصّٰفّٰت:۳۷) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम पीछे नहीं चले मगर एक ऐसे मर्द के जिस पर जादू हुवा। (پ۱۵،بنی اسراءیل:۴۷) **इल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** देखो उन्हों ने तुम्हें कैसी तश्बीहें दीं तो गुमराह हुवे कि राह नहीं पा सकते। (پ۱۵،بنی اسراءیل:۴۸) **इल्मिय्या**

6.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम चाहते तो ऐसी हम भी कह देते येह तो नहीं मगर अगलों के क़िस्से। (پ۹،الانفال:۳۱) **इल्मिय्या**

7.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ अगर आदमी और जिन्न सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि इस क़ुरआन की मानिन्द ले आएं तो इस का मिस्ल न ला सकेंगे अगर्चे उन में एक दूसरे का मददगार हो। (پ۱۵،بنی اسراءیل:۸۸) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿5﴾ اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ (یونس،ع۴)[1] यूं कहते हैं कि आप ने इस को बांध लिया है ।	قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۸﴾ (یونس،ع۴)[2] कह दे तुम ले आओ एक सूरत ऐसी और पुकारो जिस को पुकार सको अल्लाह के सिवा अगर हो तुम सच्चे ।
﴿6﴾ لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَیْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً (فرقان،ع۳)[3] आप पर कु़रआन एक दफ़्अ़ा क्यूं नाज़िल नहीं किया गया ।	كَذٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَ رَتَّلْنٰهُ تَرْتِیْلًا ﴿۳۲﴾ (فرقان،ع۳)[4] इसी त़रह़ उतारा हम ने ताकि साबित रखें हम उस के साथ तेरे दिल को और आहिस्ता आहिस्ता पढ़ा हम ने इस को आहिस्ता पढ़ना । (या'नी हर बात के वक़्त पर इस का जवाब आता रहे तो पैग़म्बर का दिल साबित रहे । मौज़ुह़)
﴿7﴾ لَسْتَ مُرْسَلًا (رعد،اخیرآیت)[5] तू रसूल नहीं ।	قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِیْدًۢا بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ وَ مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿۴۳﴾ (رعد،اخیرآیت)[6] कह दे काफ़ी है अल्लाह गवाही देने वाला दरमियान मेरे और दरमियान तुम्हारे और वोह शख़्स कि उस के पास है इ़ल्म किताब का ।

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या येह कहते हैं कि उन्हों ने इसे बना लिया है । (پ۱۱،یونس:۳۸) **इल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ तो इस जैसी एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर जो मिल सकें सब को बुला लाओ अगर तुम सच्चे हो । (پ۱۱،یونس:۳۸) **इल्मिय्या**

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कु़रआन उन पर एक साथ क्यूं न उतार दिया । (پ۱۹،الفرقان:۳۲) **इल्मिय्या**

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम ने यूंही ब तदरीज इसे उतारा है कि इस से तुम्हारा दिल मज़्बूत़ करें और हम ने इसे ठहर ठहर कर पढ़ा । (پ۱۹،الفرقان:۳۲) **इल्मिय्या**

5 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम रसूल नहीं । (پ۱۳،الرعد:۴۳)

6 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ अल्लाह गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में और वोह जिसे किताब का इ़ल्म है । (پ۱۳،الرعد:۴۳)

www.dawateislami.net

یٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِیْمِ ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۳﴾

یٰسٓ ! क़सम है कुरआने मोह़कम की तह़क़ीक़ तू अलबत्ता रसूलों में से है।

﴾8﴿ اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿۹۴﴾
(بنی اسرائیل، ع۱۱) (1)

क्या **अल्लाह** ने आदमी को पैग़म्बर बना कर भेजा है ?

قُلْ لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓىٕكَةٌ یَّمْشُوْنَ مُطْمَىٕنِّیْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَیْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ﴿۹۵﴾ (بنی اسرائیل، ع۱۱) (2)

कह दे अगर होते ज़मीन में फ़िरिश्ते चला करते आराम से तो अलबत्ता हम उतारते उन पर आस्मान से फ़िरिश्ते को पैग़म्बर बना कर।

मत़लब येह कि तजानुस मूजिबे तवानुस और तख़ालुफ़ मूजिबे तबायुन है(3) इस लिये फ़िरिश्तों के लिये फ़िरिश्ता मबऊ़स होना चाहिये और अहले अर्द़ के लिये बशर रसूल चाहिये।

﴾9﴿ مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ یَاْكُلُ الطَّعَامَ وَ یَمْشِیْ فِی الْاَسْوَاقِ ؕ (فرقان، ع۱) (4)

क्या हुवा है उस पैग़म्बर को कि खाता है खाना और चलता है बाज़ारों में।

وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِیْنَ اِلَّاۤ اِنَّهُمْ لَیَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ یَمْشُوْنَ فِی الْاَسْوَاقِ ؕ (فرقان، ع۲) (5)

और नहीं भेजे हम ने तुझ से पहले पैग़म्बर मगर तह़क़ीक़ वोह अलबत्ता खाते थे खाना और चलते थे बाज़ारों में।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या **अल्लाह** ने आदमी को रसूल बना कर भेजा। (پ۱۵،بنی اسرائیل:۹۴) **इ़ल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ अगर ज़मीन में फ़िरिश्ते होते चैन से चलते तो उन पर हम रसूल भी फ़िरिश्ता उतारते। **इ़ल्मिय्या**

3.....या'नी हम जिन्स होना उनसिय्यत और ग़ैरे जिन्स होना अजनबिय्यत व दूरी का बाइ़स होता है।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इस रसूल को क्या हुवा खाना खाता है और बाज़ारों में चलता है। (پ۱۸،الفرقان:۷) **इ़ल्मिय्या**

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और हम ने तुम से पहले जितने रसूल भेजे सब ऐसे ही थे खाना खाते और बाज़ारों में चलते। (پ۱۸،الفرقان:۲۰) **इ़ल्मिय्या**

www.dawateislami.net

اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ (زخرف، ع۳)[2] क्या वोह बांटते हैं तेरे परवर दगार की रह़मत को। हम ने बांटी है उन के दरमियान उन की रोज़ी ह़याते दुन्या में और हम ने बुलन्द किया उन में से बा'ज़ को बा'ज़ पर दरजों में ताकि पकड़ें बा'ज़े उन के बा'ज़ों को मह़कूम और तेरे परवर दगार की रह़मत बेहतर है उस चीज़ से कि वोह जम्अ़ करते हैं।	﴿10﴾ لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿۳۱﴾ (زخرف، ع۳)[1] क्यूं न उतारा गया येह क़ुरआन एक मर्द पर उन दो बस्तियों से।
اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ﴿۸﴾ (سبا، ع۱)[4] क्या बांध लिया है उस ने अल्लाह पर झूट या उस को जुनून है बल्कि वोह लोग जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते अ़ज़ाब और दूर की गुमराही में हैं।	﴿11﴾ هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۷﴾ (سبا، ع۱)[3] क्या हम राह बता दें तुम को उस शख़्स की त़रफ़ जो ख़बर देता है तुम को कि जब तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे निहायत रेज़ा रेज़ा होना तह़क़ीक़ अलबत्ता नई पैदाइश में होगे।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्यूं न उतारा गया येह क़ुरआन उन दो शहरों के किसी बड़े आदमी पर। (پ۲۵،الزخرف:۳۱) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या तुम्हारे रब की रह़मत वोह बांटते हैं हम ने उन में उन की ज़ीस्त का सामान दुन्या की ज़िन्दगी में बांटा और उन में एक दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी कि उन में एक दूसरे की हंसी बनाए और तुम्हारे रब की रह़मत उन की जम्अ़ जथ्था से बेहतर। (پ۲۵،الزخرف:۳۲) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें जो तुम्हें ख़बर दे कि जब तुम पुर्ज़े हो कर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है। (پ۲۲،سبا:۷) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या अल्लाह पर उस ने झूट बांधा या उसे सौदा है बल्कि वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते अ़ज़ाब और दूर की गुमराही में हैं। (پ۲۲،سبا:۸) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣ (کوثر) (1)

तह़क़ीक़ तेरा दुश्मन वोही है बे नस्ल।

चुनान्चे, आ़से मज़्कूर का नाम नाबूद हो गया मगर हुज़ूरे अन्वर بِـاَبِـیْ هُوَ وَاُمِّیْ का नाम क़ियामत तक रोशन है और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ुर्रिय्यत क़ियामत तक रहेगी।

﴾12﴿ एक रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम से निकल रहे थे कि बाबे बनी सह्म में आ़स बिन वाइल सह्मी आप से मिला और कलाम किया। जब वोह मस्जिद में दाख़िल हुवा तो अश्क़ियाए क़ुरैश ने पूछा कि तुम किस से बातें कर रहे थे आ़स बोला कि अबतर (बे नस्ल) से, हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साह़िबज़ादा जो ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बत़्ने मुबारक से था इन्तिक़ाल कर चुका था इस लिये आ़स ने हुज़ूर को येह त़ा'न दिया कि ज़िन्दगी तक उन का नाम है पीछे कौन नाम लेगा। (मदारिजुन्नबुव्वत)(2)

وَالضُّحٰى ۝١ وَالَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۝٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ۝٣ (الضحیٰ) (4)

क़सम है दिन चढ़े की और रात की जब ढांप लेवे नहीं छोड़ दिया तुझ को तेरे रब ने और न ना ख़ुश रखा।

﴾13﴿ ह़ज़रत को कई दिन वह़्य न आई दिल मुकद्दर(3) रहा तहज्जुद को न उठे काफ़िरों ने कहा : इस को छोड़ दिया इस के रब ने। (मौज़ेहे क़ुरआन)

मौज़ेहुल क़ुरआन में है कि पहले फ़रमाई धूप रोशन की और रात अन्धेरी की या'नी ज़ाहिर में भी **अल्लाह** तआ़ला की दो क़ुदरतें हैं बात़िन में भी कभी चांदना है कभी अन्धेरा। दोनों **अल्लाह** के हैं **अल्लाह** से दूर कभी नहीं बन्दा।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक जो तुम्हारा दुश्मन है वोही हर ख़ैर से मह़रूम है। (پ۳۰،الکوثر:۳) **इल्मिय्या**

2 ......مدارج النبوت، قسم پنجم، باب اول، ذکر اولاد کرام انحضرت صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم، ج ۲،ص ۵۱۵ـعلمیہ

3.....ग़मगीन व रन्जीदा।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** चाश्त की क़सम और रात की जब पर्दा डाले कि तुम्हें तुम्हारे रब ने न छोड़ा और न मकरूह जाना। (پ۳۰،الضحیٰ:۱-۳) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ (2) कह दे वोह अच्छा सुनने वाला है तुम्हारे वासिते ईमान लाता है **अल्लाह** पर और बावर करने वाला है मोमिनों की बात और रह़मत है वासिते उन (मुनाफ़िक़ों) के जिन्हों ने इज़्हारे ईमान किया तुम में से।	﴾14﴿ هُوَ اُذُنٌ (توبہ، ع ۸) (1) वोह हर किसी की बात सुन कर लग जाने वाला है।
ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बराअत आस्मान से नाज़िल फ़रमाई। (देखो سورۂ نور، ع ۲)(3)	﴾15﴿ मुनाफ़िक़ों ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़रमे मोह़तरम आ़इशा सिद्दीक़ा पर बोहतान लगाया था जिस का ज़िक्र पहले आ चुका है।

﴾98﴿.....जो शख़्स हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब्बो शितम करे(4) या किसी वज्ह से सराह़तन या किनायतन आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तन्क़ीसे शान करे(5) उस का क़त्ल करना बिल इत्तिफ़ाक़ वाजिब है। मगर इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह क़त्ल करना ब त़रीक़े ह़द है कि बिल फ़े'ल मार डालना चाहिये और तौबा न करानी चाहिये। या ब त़रीक़े रिद्दत(6) है कि उस से तौबा त़लब की जाए अगर तौबा करे तो बख़्श देना चाहिये। इस मस्अले में मुख़्तार क़ौले अव्वल है। येह हुक्म इस सूरत में है कि इहानत करने वाला मुसलमान हो अगर काफ़िर हो और इस्लाम लावे तो दर गुज़र करना चाहिये।

﴾99﴿.....अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस जिहाद के लिये निकलें तो हर मुसलमान पर वाजिब था कि आप के साथ निकले और अगर कोई ज़ालिम आप के क़त्ल का क़स्द करे तो जो मुसलमान ह़ाज़िर हो उस पर वाजिब था कि आप की ह़िफ़ाज़त में अपनी जान से दरैग़ न करे। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह तो कान हैं। (پ۱۰، التوبۃ:۶۱) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ तुम्हारे भले के लिये कान हैं, **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और मुसलमानों की बात पर यक़ीन करते हैं और जो तुम में मुसलमान हैं उन के वासिते़ रह़मत हैं। (پ۱۰، التوبۃ:۶۱) **इल्मिय्या**

3.....پ۱۸، النور:۱۱ - ۲۰۔علمیہ

4.....बुरा भला कहे مَعَاذَ اللّٰہ।

5.....आप की शान में गुस्ताख़ी करे مَعَاذَ اللّٰہ।

6.....मुर्तद होने के त़ौर पर।

www.dawateislami.net

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ (توبہ،ع۱۵)

न चाहिये मदीने वालों को और जो उन के गिर्द आ'राब हैं कि रह जाएं रसूलुल्लाह के साथ से और न येह कि अपनी जान को चाहें ज़ियादा उन की जान से।[1]

《100》.....हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जिस शख़्स के लिये जिस हुक्म की तख़्सीस चाहते कर देते। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ुज़ैमा अन्सारी के लिये येह तख़्सीस फ़रमाई कि उन की शहादत, हुक्म दो शहादत का रखती है। इसी त़रह़ आप ने ह़ज़रते उम्मे अ़तिय्या अन्सारिय्या को नियाह़त की रुख़्सत दी और ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस को रुख़्सत दी कि वोह अपने ख़ावन्द ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की शहादत पर सिर्फ़ तीन दिन सोगवारी करे। बा'दे अज़ां जो चाहे करे और ह़ज़रते अबू बुर्दा बिन नियार को इजाज़त दे दी कि तुम्हारे वासित़े क़ुरबानी में एक साल से कम का बुज़ग़ाला[2] काफ़ी है और आप ने एक फ़क़ीर से एक औ़रत का निकाह़ कर दिया और उस का मेहर येह मुक़र्रर फ़रमाया कि फ़क़ीर को जितना क़ुरआन याद था वोह उस औ़रत को पढ़ा दे।

《101》.....हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तप[3] इस शिद्दत से चढ़ता था जैसा कि दो आदमियों को चढ़ता है ताकि सवाब दो चन्द मिले।

《102》.....मरज़े मौत में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़यादत के लिये ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام तीन दिन ह़ाज़िरे ख़िदमत होते रहे।

《103》.....जब मलकुत मौत हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो इज़्न त़लब किया। आप से पहले उस ने किसी नबी से इज़्न त़लब नहीं किया।

《104》.....हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जनाज़ए शरीफ़ की नमाज़ मुसलमानों ने गुरोह हा गुरोह अलग अलग बिग़ैर इमामत के पढ़ी। आप के ग़ुलाम शुकरान ने जसदे मुबारक के नीचे लह़द में क़त़ीफ़ए नजरानिय्या[4] बिछा दी जो आप ओढ़ा करते थे। नमाज़े बे जमाअ़त और क़त़ीफ़ा का बिछाना आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस से है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मदीने वालों और उन के गिर्द देहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें। (پ۱۱،التوبۃ:۱۲۰) **इल्मिय्या**

2.....भेड़ का बच्चा। 3.....बुख़ार। 4.....नजरानी चादर या कम्बल।

www.dawateislami.net

﴾105﴿.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे मुक़द्दस को मिट्टी नहीं खाती। तमाम पैग़म्बरों का येही ह़ाल है। عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

﴾106﴿.....हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बत़ौरे मीरास कुछ नहीं छोड़ा जो कुछ आप ने छोड़ा वोह सदक़ा व वक़्फ़ था और इस का मसरफ़ वोही था जो आप की ह़यात शरीफ़ में था। जैसा कि पहले मज़्कूर हुवा।

﴾107﴿.....हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मर्क़द शरीफ़ में ह़याते ह़क़ीक़िय्या के साथ ज़िन्दा हैं और अज़ानो इक़ामत के साथ नमाज़ पढ़ते हैं। तमाम पैग़म्बरों का येही ह़ाल है। عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

﴾108﴿.....हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मर्क़दे मुनव्वर का'बए मुकर्रमा और अ़र्शे मुअ़ल्ला से भी अफ़्ज़ल है।

﴾109﴿.....आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मर्क़दे मुनव्वर पर एक फ़िरिश्ता मुअक्कल है जो आप की उम्मत के दुरूद आप को पहुंचाता है। जैसा कि इमाम अह़मद व नसाई की रिवायत में है। जिस वक़्त कोई शख़्स आप पर दुरूद भेजता है वोह फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है कि या मुह़म्मद ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस वक़्त फ़ुलां बिन फ़ुलां आप पर दुरूद भेजता है।(1)

हाकिम की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** के फ़िरिश्ते हैं जो ज़मीन में गश्त करते हैं वोह मेरी उम्मत का सलाम मुझे पहुंचाते हैं।(2)

﴾110﴿.....हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर हर रोज़ सुब्ह़ो शाम आप की उम्मत के आ'माल पेश किये जाते हैं। नेक आ'माल पर आप **अल्लाह** का शुक्र बजा लाते हैं और बुरे आ'माल के लिये बख़्शिश त़लब फ़रमाते हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की, कि कोई रोज़ ऐसा नहीं मगर येह कि सुब्ह़ो शाम उम्मत के आ'माल नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पेश किये जाते हैं। पस आप उन की पेशानियों से और उन के आ'माल से पहचानते हैं।(3)

---

1 ......مسند البزّار،مسند عمار بن یاسر،الحدیث:١٤٢٥،ج٤،ص٢٥٤۔علمیه

2 ......سنن النسائی،کتاب السهو،باب السلام علی النبی،الحدیث:١٢٧٩،ص٢١٩۔علمیه

3 ......مسند البزار،مسند عبد اللّٰه بن مسعود،الحدیث:١٩٢٥،ج٥،ص٣٠٨ و الزهد لابن المبارک، زیادات الزهد لنعیم بن حماد، باب فی عرض عمل الاحیاء علی الاموات،الحدیث:١٦٦،ص٤٢۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾111﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से पहले क़ब्रे मुबारक से निकलेंगे। आप का ह़श्र इस ह़ालत में होगा कि आप बुराक़ पर सुवार होंगे और सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते हम रिकाब होंगे। ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत में है कि "हर रोज़ सुब्ह़ को सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आस्मान से उतर कर हु़ज़ूरे अन्वर की क़ब्रे मुबारक को घेर लेते हैं और अपने बाज़ू हिलाते हैं (और आप पर दुरूद भेजते हैं) इसी त़रह़ शाम के वक़्त वोह आस्मान पर चले जाते और सत्तर हज़ार और ह़ाज़िर हो जाते हैं यहां तक कि जब आप क़ब्र शरीफ़ से निकलेंगे तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आप के साथ होंगे। मौक़िफ़ में आप को बिहिश्त के ह़ुल्लों की निहायत नफ़ीस ख़ि़ल्अ़त अ़त़ा होगी।"

﴾112﴿.....आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बरे मुनीफ़[1] और क़ब्रे मुबारक के माबैन बिहिश्त के बाग़ों में से एक बाग़ है।

﴾113﴿.....हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ियामत के दिन मक़ामे मह़मूद अ़त़ा होगा जिस से मुराद ब क़ौले मश्हूर मक़ामे शफ़ाअ़त है।

﴾114﴿.....क़ियामत के दिन अहले मौक़िफ़ तूले वुक़ूफ़ के सबब से घबरा जाएंगे[2] और ब ग़रज़े शफ़ाअ़त दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के पास यके बा'द दीगरे जाएंगे और आख़िरे कार हु़ज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे आप को अहले मौक़िफ़ में फ़स्ले क़ज़ा के लिये शफ़ाअ़ते उ़ज़्मा अ़त़ा होगी और एक जमाअ़त के ह़क़ में बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल किये जाने के लिये और दूसरी जमाअ़त के रफ़्ए़ दरजात के लिये शफ़ाअ़त की इजाज़त हो जाएगी। इसी त़रह़ सत्तर हज़ार बिहिश्त में बे ह़िसाब दाख़िल होंगे और सत्तर हज़ार के साथ और बहुत से बे ह़िसाब बिहिश्त में जाएंगे। इस के इलावा आप को अपनी उम्मत के लिये और कई क़िस्म की शफ़ाअ़त की इजाज़त ह़ासिल होगी।

﴾115﴿.....क़ियामत के दिन हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तब्लीग़ पर शाहिद त़लब न किया जाएगा ह़ालांकि बाक़ी अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से त़लब किया जाएगा और आप तमाम अम्बियाए किराम के लिये तब्लीग़ की शहादत देंगे।

﴾116﴿.....हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ौज़े कौसर अ़त़ा होगा।

1.....अरफ़अ़ व आ'ला मिम्बर।
2.....या'नी मैदाने मह़शर में खड़े होने वाले बहुत लम्बा अ़र्सा खड़ा रहने की वज्ह से घबरा जाएंगे।

www.dawateislami.net

《117》.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मिम्बरे मुनीफ़[1] आप के ह़ौज़ पर होगा।

《118》.....क़ियामत के दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पहले सब पैग़म्बरों की उम्मतों से ज़ियादा होगी। कुल अहले बिहिश्त की दो तिहाई आप ही की उम्मत होगी।

《119》.....क़ियामत के दिन हर एक नसब व सबब मुन्क़त़अ़ होगा (या'नी सूदमन्द न होगा) मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नसब व सबब मुन्क़त़अ़ न होगा। इसी वासित़े ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उम्मे कुल्सूम बिन्ते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से निकाह़ किया था।

《120》.....क़ियामत के दिन लिवाए ह़म्द हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में होगा और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और इन के सिवा और तमाम अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) उस झन्डे तले होंगे।

《121》.....हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (उम्मत समेत) सब से पहले पुल सिरात़ से गुज़रेंगे।

《122》.....हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से पहले बिहिश्त का दरवाज़ा खट खटाएंगे। ख़ाज़िने जन्नत पूछेगा कि कौन हैं? आप फ़रमाएंगे कि मैं मुह़म्मद हूं। वोह अ़र्ज़ करेगा कि मैं उठ कर खोलता हूं मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले किसी के लिये नहीं उठा और न आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द किसी के लिये उठूंगा। फिर आप सब से पहले बिहिश्त में दाख़िल होंगे।

《123》.....आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला अ़त़ा होगा जो जन्नत में आ'ला दरजा है।

《124》.....जन्नत में ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कुन्यत उन की तमाम अवलाद में से सिवाए हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी और के नाम पर न होगी। चुनान्चे, उन को अबू मुह़म्मद कहा जाएगा।

《125》.....जन्नत में सिवाए हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की किताब (क़ुरआने करीम) के कोई और किताब न पढ़ी जाएगी और न सिवाए हुज़ूर की ज़बान के किसी और ज़बान में कोई तकल्लुम करेगा।

1.....अरफ़अ़ व आ'ला मिम्बर।

www.dawateislami.net

नवां बाब

आं हज़रत ﷺ की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अवलादे किराम का बयान

हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की फ़ज़ीलत कुरआने करीम से साबित है। चुनान्चे, सूरए अह़ज़ाब में बारी तआ़ला عَزَّ اِسْمُہٗ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿۲۸﴾

ऐ नबी ! अपनी बीवियों से कह दीजिये कि अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगानी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ फ़ाइदा दूं और खुश उस्लूबी से तुम्हें रुख़्सत कर दूं।(1)

﴿2﴾ وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

और अगर तुम खुदा और उस के रसूल और सराए आख़िरत को चाहती हो तो तुम में(2) *से नेकूकारों के लिये खुदा ने बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।*(3)

﴿3﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾

ऐ नबी की बीवियो ! तुम में से जो सरीह़ बे ह़याई का काम करेगी उस को दोहरी सज़ा दी जाएगी और येह खुदा पर आसान है।(4)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) अपनी बीबियों से फ़रमा दे अगर तुम दुन्या की ज़िन्दगी और उस की आराइश चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें माल दूं और अच्छी त़रह़ छोड़ दूं। (پ۲۱،الاحزاب:۲۸) **इल्मिय्या**

2.....मौज़ेह़े कुरआन में है कि येह जो फ़रमाया कि जो नेकी पर हैं उन को बड़ा सवाब है। ह़ज़रत की अज़्वाज सब नेक ही रहीं वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबीन मगर ह़क़ तआ़ला साफ़ खुश ख़बरी किसी को नहीं देता ताकि निडर न हो जावे, ख़ातिमे का डर लगा रहे। मदारिक व बैज़ावी में है कि مِنْكُنَّ में مِنْ बयानिय्या है क्यूंकि अज़्वाजे मुत़ह्हरात सब मोह़सिनात थीं। 12 मिन्ह

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर तुम **अल्लाह** और उस के रसूल और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारी नेकी वालियों के लिये बड़ा अज्र तय्यार कर रखा है। (پ۲۱،الاحزاب:۲۹)

تفسیرا لبیضاوی،سورۃ الاحزاب، تحت الاٰیۃ:۲۸-۳۰،ج۴، الجزء۲۱، ص۳۷۲۔علمیہ

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ नबी की बीबियो जो तुम में सरीह़ ह़या के ख़िलाफ़ कोई जुरअत करे उस पर औरों से दूना अ़ज़ाब होगा और येह **अल्लाह** को आसान है। (پ۲۱،الاحزاب:۳۰) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴾4﴿ وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ
صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا
كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾

और जो तुम में से **अल्लाह** और उस के रसूल के लिये फ़रमां बरदारी और नेक अ़मल करेगी हम उस को दोहरा सवाब देंगे और उस के लिये हम ने इ़ज़्ज़त की रोज़ी तय्यार कर रखी है।(1)

﴾5﴿ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ
اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ
قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿۳۲﴾

ऐ नबी की बीवियों ! तुम आ़म औ़रतों की मिस्ल नहीं हो। अगर तुम परहेज़गारी रखो तो दबी ज़बान से बात न किया करो जिस से वोह शख़्स जिस के दिल में बीमारी है लालच करे और तुम नेक बात कहा करो (2)

﴾6﴿ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ
الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ
اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ
الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿۳۳﴾

और तुम अपने घरों में टिकी रहो और क़दीम जाहिलिय्यत के से बनाव सिंगार दिखाती न फिरो और नमाज़ पढ़ो और ज़कात दो और ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करो। ऐ अहले बैते नबी ! ख़ुदा तो येही चाहता है कि तुम से पलीदी को दूर कर दे और तुम को ख़ूब पाक कर दे (3)

﴾7﴿ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ
وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿۳۴﴾

और तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की आयतें और दानाई की बातें पढ़ कर सुनाई जाती हैं उन को याद करो बेशक **अल्लाह** लुत्फ़ करने वाला ख़बरदार है।(4)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो तुम में फ़रमां बरदार रहे **अल्लाह** और रसूल की और अच्छा काम करे हम उसे औरों से दूना सवाब देंगे और हम ने उस के लिये इ़ज़्ज़त की रोज़ी तय्यार कर रखी है। (پ۲۲،الاحزاب:۳۱) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ नबी की बीवियो तुम और औ़रतों की त़रह़ नहीं हो अगर **अल्लाह** से डरो तो बात में ऐसी नर्मी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हां अच्छी बात कहो। (پ۲۲،الاحزاب:۳۲) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म मानो **अल्लाह** तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे। (پ۲۲،الاحزاب:۳۳) **इल्मिय्या**

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और याद करो जो तुम्हारे घरों में पढ़ी जाती हैं **अल्लाह** की आयतें और हिक्मत बेशक **अल्लाह** हर बारीकी जानता ख़बरदार है। (پ۲۲،الاحزاب:۳٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

आयाते मज़्कूरए बाला से मुतअ़ल्लिक़ उमूरे ज़ैल क़ाबिले ग़ौर हैं :

﴾**आयह 1, 2**﴿.....हिजरत के नवें साल आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात से ईला किया। जब 29 दिन गुज़रने पर महीना पूरा हुवा तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام येह आयते तख़्यीर लाए उस वक़्त अज़्वाजे मुत़ह्हरात नव थीं या'नी ह़ज़रते आ़इशा व ह़फ़्सा व उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान व सौदह बिन्ते ज़म्आ़ व उम्मे सलमह बिन्ते अबी उमय्या व सफ़िय्या बिन्ते हुयैय बिन अख़्त़ब व मैमूना बिन्ते ह़ारिस हिलालियह व ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदियह व जुवैरिय्या बिन्ते ह़ारिस (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ)। उन सब ने ज़ीनते दुन्या पर **अल्लाह** और रसूल को इख़्तियार किया। पस साबित हुवा कि वोह न दुन्या चाहती थीं और न उन के दिलों में दुन्या की ज़ीनत की कुछ हवस थी क्यूंकि अगर होती तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से मुफ़ारक़त कर के कुछ दे दिला कर उन्हें रुख़्सत फ़रमा देते मगर आप ने ऐसा नहीं किया। पस मा'लूम हुवा कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ रिज़ाए ख़ुदा व रसूल की त़लबगार थीं और हुस्ने आख़िरत की मुतमन्नी थीं इस अ़मले नेक पर **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन्हीं नव पर मक़्सूर फ़रमा दिया और फ़रमाया :

لَا یَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَ لَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ یَمِیْنُكَ ؕ

इस के बा'द तेरे वासित़े और औ़रतें ह़लाल नहीं और न येह कि तू उन की बजाए औरों को बीवियां बना ले अगर्चे उन का हुस्न तुझ को अच्छा लगे मगर वोह जिन का मालिक हो गया तेरा दायां हाथ।[1]

या'नी चूंकि उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इख़्तियार किया है इस लिये आप भी इन पर दूसरी औ़रतों को इख़्तियार न करें।

﴾**आयह 3, 4**﴿ इसी नेक अ़मल पर जज़ाए मज़्कूरा के इलावा **अल्लाह** तआ़ला ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ को येह शरफ़ बख़्शा कि ख़ुद उन से ख़ित़ाब किया और उन को अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ निस्बत दे कर फ़रमाया : ऐ नबी की बीवियो ! तुम में से अगर कोई ना शाइस्ता ह़रकत करेगी तो दीगर औ़रतों की निस्बत उसे दुगना अ़ज़ाब होगा

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इन के बा'द और औ़रतें तुम्हें ह़लाल नहीं और न येह कि इन के इवज़ और बीबियां बदलो अगर्चे तुम्हें उन का हुस्न भाए मगर कनीज़ तुम्हारे हाथ का माल। (پ۲۲،الاحزاب:۵۲) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

और अगर नेक अ़मल करेगी तो उसे दूसरी औ़रतों से दुगना सवाब मिलेगा। मौज़ुहुल कुरआन में है : येह बड़े दरजे का लाज़िमा है। नेकी का सवाब दूना और बुराई का अ़ज़ाब दूना। पैग़म्बर को भी फ़रमाया :

اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَیٰوةِ وَ ضِعْفَ الْمَمَاتِ

(بنی اسرائیل، ع ۸)

उस वक़्त अलबत्ता हम तुझे चखाते दुगना अ़ज़ाब ज़िन्दगी का और दुगना अ़ज़ाब मौत का।[1]

इस से अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ का मुक़र्रबाते दरगाहे इलाही होना साबित होता है। इसी वज्ह से हुर[2] की ह़द रक़ीक़[3] की ह़द से दुगनी है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को उन उमूर पर इ़ताब होता है जिन पर दूसरे लोगों को नहीं होता। यहां से येह भी पाया जाता है कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ बाक़ी तमाम औ़रतों से बेहतर थीं क्यूंकि उन का अ़ज़ाब व सवाब बाक़ी तमाम औ़रतों के अ़ज़ाब व सवाब से दुगना है। यहां अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के लिये येह भी बिशारत है कि उन से कोई खुली ना शाइस्ता ह़रकत सरज़द न होगी क्यूंकि आयह (30) सूरए अह़ज़ाब अज़ क़बील [4] لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ है। बईं हमा[5] जो लोग अज़्वाजे मुत़ह्हरात के ह़क़ में दरीदा दहनी[6] करते हैं वोह अपनी आ़क़िबत ख़राब कर रहे हैं क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाज को ना शाइस्ता ह़रकात से मह़फ़ूज़ रखा है और अजरे मुज़ाअ़फ़[7] के इ़लावा उन के लिये आख़िरत में रिज़्क़े करीम तय्यार कर रखा है। इस से उन का बिहिश्ती होना ज़ाहिर है :

﴾आयह 5﴿ इस आयत में ख़ुदावन्दे तआ़ला ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के लिये तज़्ईफ़े सवाब व अ़ज़ाब[8] की वज्ह बयान फ़रमा दी कि तुम और औ़रतों जैसी नहीं हो।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐसा होता तो हम तुम को दूनी उ़म्र और दो चन्द मौत का मज़ा देते। (پ۱۵، بنی اسراءیل:۷۵) **इल्मिय्या**

2.....आज़ाद। 3.....ग़ुलाम।

4.....येह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़िताब है। या'नी अगर बर सबीले फ़र्ज़ व तक़्दीर तू शिर्क करेगा अगर्चे येह मुह़ाल है तेरा अ़मल बातिल हो जाएगा। (زمر، ع۷) 12 मिन्ह (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** कि ऐ सुनने वाले अगर तू ने **अल्लाह** का शरीक किया तो ज़रूर तेरा सब किया धरा अकारत जाएगा। (پ۲۴، الزمر:۶۵) **इल्मिय्या**)

5.....इस के बा वुजूद। 6.....बुरा भला कहना।

7.....दुगना अज्र। 8.....सवाब व अ़ज़ाब का दुगना होना।

www.dawateislami.net

तुम में वोह वस्फ़ है जो औरों में नहीं। या'नी तुम तह़रीमे निकाह़ और एह़तिराम व ता'ज़ीम के लिह़ाज़ से मोमिनों की माएं हो। [1](وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ) और ज़ौजाते सय्यिदुल मुर्सलीन हो। फिर फ़रमाया कि अगर तुम हुक्मे इलाही और रिज़ाए रसूल की मुख़ालफ़त से डरती हो तो पसे पर्दा से मर्दों के साथ नर्मी से कलाम न करो क्यूंकि ऐसा करना अगर्चे फ़ाजिर से फ़ाजिर मोमिन में किसी शहवत व त़म्अ़ का बाइ़स नहीं हो सकता मगर मुनाफ़िक़ में हो सकता है और तुम ऐसी नेक बात किया करो जो तोहमत व इत़्माअ़ से पाक हो या'नी सन्जीदगी व ख़ुशूनत[2] से कलाम किया करो और नाज़ व करिश्मा से बात न किया करो।

﴾**आयह 6**﴿ और तुम अपने घरों में रहा करो क्यूंकि तुम्हारा तबर्रुज़ या'नी बाहर निकलना करिश्मा आमेज़ कलाम से भी ज़ियादा त़म्अ़ दिलाने वाला है और तुम जाहिलिय्यते ऊला की औ़रतों की त़रह़ चलने में तबख़्तुर[3] न करो क्यूंकि तबख़्तुर तो तबर्रुज़ से भी अशद है और तुम नमाज़ व ज़कात अदा किया करो तमाम और अवामिर व नवाही में ख़ुदा और रसूल की इत़ाअ़त किया करो क्यूंकि ऐ अहले बैते नबी ! **अल्लाह** तो येही चाहता है कि तुम से पलीदी दूर कर दे और पाको साफ़ बनाए जैसा कि पाक साफ़ बनाने का ह़क़ है।

﴾**आयह 7**﴿ और तुम्हारे घरों में जो आयात तिलावत की जाती हैं तुम उन को याद कर लिया करो ताकि ख़ुद अ़मल करो और दूसरों को भी बताओ।

आयह ﴾6﴿ में जिसे आयए तत़हीर कहते हैं इस बात का सुबूत है कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले बैत हैं। इसी वासित़े अज़्वाज के साथ मुत़ह्हरात इस्ति'माल किया जाता है। आयह ﴾1﴿ से आयह ﴾7﴿ तक इन ही से ख़ित़ाब और इन ही का ज़िक्र है और इन ही के लिये अवामिर व नवाही बयान हुवे हैं। मगर शीआ़ कहते हैं कि आयाते साबिक़ा व लाह़िक़ा के अह़काम तो अज़्वाज के लिये हैं दरमियान में सिर्फ़ आयह ﴾6﴿ में इन से ख़ित़ाब नहीं बल्कि फ़क़त़ ह़ज़रते अ़ली व फ़ात़िमा व ह़सनैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) मुख़ात़ब हैं। इन का येह क़ौल मह़्ज़ हटधर्मी है। इन चारों का आयात में ज़िक्र तक नहीं। ब ए'तिबारे मवारिद आयाते साबिक़ा व लाह़िक़ा किसी अजनबी के साथ फ़स्ले मूजिबे फ़सादे बलाग़त है। ज़ौजा का मर्द के अहले बैत में होना नस्से क़ुरआन से साबित है। देखो आयाते ज़ैल :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इस की बीबियां उन की माएं हैं। (پ۲۱،الاحزاب:٦) **इल्मिय्या**

2.....रो'ब। 3.....इतराना।

www.dawateislami.net

قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰی قَوْمِ لُوْطٍؕ ۝۷۰ وَ امْرَاَتُهٗ قَآىٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَۙ وَ مِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ یَعْقُوْبَ ۝۷۱ قَالَتْ یٰوَیْلَتٰۤى ءَاَلِدُ وَ اَنَا عَجُوْزٌ وَّ هٰذَا بَعْلِیْ شَیْخًاؕ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عَجِیْبٌ ۝۷۲ قَالُوْۤا اَتَعْجَبِیْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكٰتُهٗ عَلَیْكُمْ اَهْلَ الْبَیْتِؕ اِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝۷۳ (ہود، ع۷)

फ़िरिश्ते बोले (इब्राहीम से) डरो मत हम तो क़ौमे लूत़ की त़रफ़ भेजे गए हैं और उन की बीवी (सारा) खड़ी थी वोह हंस पड़ी। हम ने उस को इस्ह़ाक़ और इस्ह़ाक़ के बा'द या'क़ूब की बिशारत दी। वोह कहने लगी हाए मेरी ख़राबी ! क्या मेरे अवलाद होगी ह़ालांकि मैं बुढ़िया हूं और येह मेरा शोहर बूढ़ा है बेशक येह अ़जीब बात है। फ़िरिश्ते बोले क्या तू ख़ुदा के अम्र से तअ़ज्जुब करती है, ऐ अहले बैते नबी तुम पर ख़ुदा की रह़मत और उस की बरकतें हों वोह बेशक ता'रीफ़ किया गया और बुज़ुर्ग है।(1)

इन आयतों में फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते सारा को बेटा और पोता पैदा होने की बिशारत दी है। ह़ज़रते सारा इस पर तअ़ज्जुब करती हैं। फ़िरिश्ते ह़ज़रते सारा को लफ़्ज़े अहले बैत से ख़िताब कर के फ़रमाते हैं कि येह जाए तअ़ज्जुब नहीं। तुम पर ख़ुदा की रह़मत और बरकतें हैं जिन में से एक येह भी है। मज़ीद बह़्स के लिये तोह़फ़ए शीआ़ मोअल्लिफ़ह़ू ख़ाकसार देखो।

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है। ग्यारह पर सब का इत्तिफ़ाक़ है। जिन में से छे (ह़ज़रते ख़दीजा, आ़इशा, ह़फ़्सा, उम्मे ह़बीबा, उम्मे सलमह, सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) क़बीलए क़ुरैश से और चार (ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श, मैमूना, ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा, जुवैरिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) अ़रबिय्याते ग़ैरे क़ुरैश ख़ुलफ़ाए क़ुरैश से हैं और एक (ह़ज़रते सफ़िय्या) ग़ैर अ़रबिय्या बनी इस्राईल से है।(2) ज़ैल में ब तरतीब तज़्व्वुज इन सब का ह़ाल ब त़रीक़े इख़्तिसार लिखा जाता है।(3)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बोले डरिये नहीं हम क़ौमे लूत़ की त़रफ़ भेजे गए हैं और उस की बीवी खड़ी थी वोह हंसने लगी तो हम ने उसे इस्ह़ाक़ की ख़ुश ख़बरी दी और इस्ह़ाक़ के पीछे या'क़ूब की बोली हाए ख़राबी क्या मेरे बच्चा होगा और मैं बूढ़ी हूं और येह हैं मेरे शोहर बूढ़े बेशक येह तो अचम्भे (तअ़ज्जुब) की बात है फ़िरिश्ते बोले क्या **अल्लाह** के काम का अचम्भा करती हो **अल्लाह** की रह़मत और उस की बरकतें तुम पर ऐ इस घर वालो बेशक वोही है सब ख़ूबियों वाला इ़ज़्ज़त वाला। (پ۱۲،ھود:۷۰-۷۳) **इल्मिय्या**

2.......شرح الزرقانی علی المواھب، المقصدالثانی...الخ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات وسراریہ...الخ، ج۴، ص۳۵۹-۳۶۱ملخصاً۔علمیہ

3.....येह ह़ालात उ़मूमन ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब से माख़ूज़ हैं। ज़ुरक़ानी ने ब ह़वाला दीगर कुतुब इन को यक्जा जम्अ़ कर दिया है।

www.dawateislami.net

हज़रते ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

इन का सिलसिलए नसब कुसय्य में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से जा मिलता है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत से पहले ताहिरा के लक़ब से मशहूर थीं। इन की पहली शादी अबू हाला बिन ज़ुरारा तमीमी से हुई। जिन से दो लड़के हिन्द व हाला नाम पैदा हुवे। येह दोनों सहाबी हैं। ह़ज़रते हिन्द की रिवायत से आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुल्या शरीफ़ मन्क़ूल है।

अबू हाला के इन्तिक़ाल के बा'द दूसरी शादी अ़तीक़ बिन आ़इज़ मख़्ज़ूमी से हुई जिन से एक लड़की पैदा हुई। इस का नाम भी हिन्द था। येह इस्लाम लाईं और अपने चचेरे भाई सैफ़ी बिन उमय्या बिन आ़इज़ मख़्ज़ूमी से शादी की। उन से एक लड़का मुह़म्मद बिन सैफ़ी पैदा हुवा जिस की अवलाद को ह़ज़रते ख़दीजा के तअ़ल्लुक़ के सबब बनू ताहिरा कहते हैं।

अ़तीक़ के इन्तिक़ाल के बा'द आं ह़ज़रत के निकाह़ में आईं जिस का ज़िक्र पहले आ चुका है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तमाम अवलाद सिवाए इब्राहीम के इसी नेक निहाद बीवी के बत़्ने मुबारक से थी। तफ़्सील आगे आएगी। اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى

ह़ज़रते ख़दीजा सब से पहले आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाईं। निकाह़ के बा'द 25 बरस तक ज़िन्दा रहीं। इन की ज़िन्दगी में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दूसरी शादी नहीं की। इन्हों ने अपने माल से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदद दी। एक रोज़ ह़िरा में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये खाना ला रही थीं। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि ख़दीजा जब आएं तो आप उन को उन के रब की त़रफ़ से और मेरी त़रफ़ से सलाम पहुंचा दें और बिहिश्त में एक मोतियों के मह़ल की बिशारत दें।

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ में ह़ज़रते ख़दीजा व आ़इशा बाक़ी सब से अफ़्ज़ल थीं। ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा ने हिजरत से तीन साल पहले 65 साल की उ़म्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया और कोहे हुजून में दफ़्न हुईं। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को क़ब्र में उतारा। उन पर नमाज़ न पढ़ी गई क्यूंकि उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ न हुई थी।(1)

1 ......شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد الثانی ...الخ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاھرات وسراریه...الخ، ج٤، ص٣٦٣-٣٧٦ ملخصاً۔ علمیه

www.dawateislami.net

हज़रते सौदह बिन्ते ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

इन का सिलसिलए नसब का'ब बिन लुअय बिन ग़ालिब में आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलता है। क़दीमुल इस्लाम थीं। पहले अपने वालिद के चचेरे भाई सकरान बिन अ़म्र बिन अ़ब्दे शम्स के निकाह़ में थीं। ह़ज़रते सकरान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ भी क़दीमुल इस्लाम थे। दोनों ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरते सानिय्या की। जब मक्का वापस आए तो ह़ज़रते सकरान ने वफ़ात पाई और एक लड़का यादगार छोड़ा जिस का नाम अ़ब्दुर्रह़मान था। ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जंगे जलूला[1] (आख़िर सिने 16 हिजरी) में शहादत पाई।

ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के इन्तिक़ाल से आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निहायत परेशानी हुई क्यूंकि घर बार बाल बच्चों का इन्तिज़ाम उन ही से मुतअ़ल्लिक़ था। येह देख कर ख़ौला बिन्ते ह़कीम ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप निकाह़ कर लीजिये। फ़रमाया : किस से ? ख़ौला ने ह़ज़रते आ़इशा व सौदह का नाम लिया। आप ने दोनों से ख़्वास्तगारी[2] की इजाज़त दे दी। ख़ौला ह़ज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास गईं और कहा कि खुदा ने तुम पर कैसी ख़ैरो बरकत नाज़िल फ़रमाई है। सौदह ने पूछा कि वोह क्या है ? ख़ौला ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे आप के पास ब ग़रज़े ख़्वास्तगारी भेजा है। उन्हों ने कहा कि "मुझे मन्ज़ूर है मगर मेरे बाप से भी दरयाफ़्त कर लो।" चुनान्चे, वोह उन के वालिद के पास गईं और जाहिलिय्यत के त़रीक़े पर सलाम किया। या'नी "اَنْعِمْ صَبَاحًا" कहा। उन्हों ने पूछा कि तुम कौन हो ? ख़ौला ने अपना नाम बताया फिर निकाह़ का पैग़ाम सुनाया। उन्हों ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) शरीफ़ कुफ़्व हैं मगर सौदह से भी दरयाफ़्त कर लो। ख़ौला ने कहा कि वोह राज़ी हैं। येह सुन कर ज़मआ़ ने कहा कि निकाह़ के लिये आ जाएं। इस त़रह़ बाप ने नबुव्वत के दसवें साल सौदह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कर दिया। सौदह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का भाई अ़ब्दुल्लाह बिन ज़मआ़ आया। येह मा'लूम कर के कि बहन का निकाह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हो चुका है उस ने अपने सर पर ख़ाक डाल ली। अ़ब्दुल्लाहे मज़्कूर जब इस्लाम लाए तो उन को अपने इस फ़े'ल पर अफ़्सोस हुवा करता था।

---

1 .....एक मक़ाम का नाम।　　2 .....निकाह़ का पैग़ाम भेजना।

www.dawateislami.net

हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا तबीअ़त की फ़य्याज़ थीं। एक रोज़ हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक दिरहमों की थैली आप की ख़िदमत में भेजी। आप ने पूछा कि येह क्या है ? लाने वालों ने जवाब दिया कि दिरहम हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया कि दिरहम खजूरों की त़रह थैली में भेजे जाते हैं ! येह कह कर उसी वक़्त तमाम दिरहम तक़्सीम कर दिये।

आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद की ता'मील में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इम्तियाज़ी हैसिय्यत रखती थीं। चुनान्चे, इमाम अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ब रिवायते अबू हुरैरा नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ में अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ से फ़रमाया कि येह ह़ज इस्लाम है जो गर्दन से साक़ित़ हो गया इस के बा'द तुम बोरया को ग़नीमत समझना। (या'नी घर से न निकलना) आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ के बा'द तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात, सिवाए सौदह और ज़ैनब बिन्ते जह़्श (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के, ह़ज को जाया करती थीं और वोह दोनों फ़रमाती थीं कि ख़ुदा की क़सम ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत सुनने के बा'द हम चोपाये पर सुवार न होंगी।

हज़रते सौदह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से कुतुबे मुतदावला[1] में 5 ह़दीसें मरवी हैं जिन में से एक सह़ीह़ बुख़ारी में है। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और यह़्या बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ुरारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ) ने उन से रिवायत की है। उन्हों ने ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के आख़िरी ज़माने में इन्तिक़ाल फ़रमाया। बा'ज़े साले वफ़ात सिने 54 हिजरी या सिने 55 हिजरी बताते हैं।[2] واللّٰہ اَعْلَمُ بِالصَّواب

हज़रते आ़इशा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا)

इन का नसब मुर्रह बिन का'ब में आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से मिलता है। बिअ़्सत के चार बरस बा'द पैदा हुईं। अपने भांजे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के तअ़ल्लुक़ से उम्मे अ़ब्दुल्लाह कुन्यत रखती थीं।

छे बरस की थीं कि आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़क़्दे निकाह़ में आईं। पहले ज़ुबैर बिन मुत़इ़म के साह़िबज़ादे से मन्सूब थीं। ख़ौला बिन्ते ह़कीम आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

---

1 .....मश्हूर व राइज किताबें।

2 ......شرح الزرقانی علی المواھب، المقصدالثانی ...الخ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ الطاھرات وسراریہ...الخ، ج٤، ص ٣٨١-٣٩٣ملخصا۔علمیہ

www.dawateislami.net

ऐमा से उम्मे रूमान (वालिदए आ़इशा सिद्दीक़ा) के पास गईं और निकाह़ का पैग़ाम सुनाया। उम्मे रूमान ने रिज़ामन्दी ज़ाहिर की। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه घर आए तो उन से तज़्किरा किया उन्हों ने कहा कि आ़इशा तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भाई की बेटी है, क्या येह जाइज़ है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कहला भेजा कि तुम इस्लाम में मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूं येह निकाह़ जाइज़ है। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उम्मे रूमान से कहा कि "मुत़इम बिन अ़दी अपने पोते के लिये ख़्वास्तगारी कर चुका है, वल्लाह ! अबू बक्र ने कभी वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं किया।" इस लिये वोह मुत़इम के पास गए और उस से तज़्किरा किया। मुत़इम ने अपनी बीवी से पूछा कि तुम्हारी क्या राए है ? बीवी ने ह़ज़रते सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से कहा कि अगर हम ने उस लड़के का निकाह़ तुम्हारे हां कर दिया तो शायद तुम उस को साबी[1] बना लोगे और अपने दीन में दाख़िल कर लोगे। येह सुन कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वहां से उठ आए और ख़ौला के हाथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कहला भेजा कि निकाह़ के लिये तशरीफ़ ले आएं। चुनान्चे, आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने (माहे शव्वाल सिने 10 नबुव्वत में) ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह़ कर दिया और हिजरत के पहले साल माहे शव्वाल में मदीनए मुनव्वरा में नव साल की उ़म्र में आप की रस्मे उ़रूसी अदा की गई।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ के वक़्त ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की उ़म्र मुबारक अठ्ठारह साल थी। इन्हों ने छियासठ बरस की उ़म्र में सिने 57 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया और ह़स्बे वसिय्यत रात के वक़्त जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जो मरवान बिन अल ह़कम की त़रफ़ से उस वक़्त ह़ाकिमे मदीना थे नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ में से ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से ज़ियादा मह़ब्बत थी। इन को दूसरी अज़्वाज पर और कई बातों में फ़ज़ीलत थी। चुनान्चे, इन के सिवा किसी और ज़ौजा के वालिदैन मुहाजिर न थे। इन की बराअत **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान से नाज़िल फ़रमाई। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام इन की सूरत एक

1.....बे दीन।

www.dawateislami.net

रेशमी कपड़े में लपेट कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास लाए और अ़र्ज़ किया कि इन से शादी कर लीजिये। इन के सिवा किसी और ज़ौजा ने ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को नहीं देखा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और येह एक बरतन में ग़ुस्ल फ़रमाया करते थे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ा करते और येह सामने लेटी होतीं। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह़्य नाज़िल होती और आप और येह एक लिह़ाफ़ में होते। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ इन ही की गोद में और इन ही की नौबत[1] में हुवा और आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन ही के हुजरे में दफ़्न हुवे।

ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا आ़लिमा फ़सीह़ा थीं। ह़ज़रते मूसा बिन त़लह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ज़िक्र करते हैं कि मैं ने आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बढ़ कर फ़सीह़ नहीं पाया। ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि सह़ाबए किराम को कोई ऐसा मुश्किल मस्अला पेश नहीं आया कि जिस का ह़ल उन्हों ने ह़ज़रते आ़इशा के पास न पाया हो। मह़मूद बिन लबीद का बयान है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात को बहुत सी ह़दीसें याद थीं मगर ह़ज़रते आ़इशा व उम्मे सलमह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) उन में मुमताज़ थीं। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़ज़रते उ़मर व उ़स्मान (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के अ़ह्द में फ़तवा दिया करती थीं यहां तक कि इन्तिक़ाल फ़रमा गईं, يَرْحَمُهَا اللهُ। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब में से अकाबिर ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते उ़स्मान ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ख़िदमत में किसी को भेज कर ह़दीसें पूछा करते थे।

आप कसीरतुल ह़दीस[2] थीं। दो हज़ार दो सो दस ह़दीसें आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी हैं जिन में से 174 पर शैख़ैन का इत्तिफ़ाक़ है और 54 में इमाम बुख़ारी और 28 में इमाम मुस्लिम मुन्फ़रिद हैं।

आप वक़ाएअ़ व अश्आ़रे अ़रब से ख़ूब वाक़िफ़ थीं। ह़ज़रते उ़र्वा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बढ़ कर किसी को क़ुरआन व फ़राइज़ व ह़लाल व ह़राम व फ़िक़्ह व शे'र व त़िब्ब व ह़दीस अ़रब व नसब का आ़लिम नहीं पाया।

1.....बारी। 2.....बा कसरत ह़दीसें रिवायत करने वाली।

www.dawateislami.net

आप ज़ाहिदा और सख़ी थीं। उम्मुद्दरदा रिवायत करती हैं कि एक रोज़ ह़ज़रते आ़इशा रोज़ादार थीं उन के पास एक लाख दिरहम आए। उन्हों ने वोह सब तक़्सीम कर दिये, मैं ने कहा : क्या आप यूं न कर सकती थीं कि एक दिरहम बचा लेतीं जिस से गोश्त ख़रीद कर रोज़ा इफ़्तार करतीं ? उन्हों ने जवाब दिया कि अगर तू मुझे याद दिला देती तो मैं ऐसा ही कर लेती।(1)

ह़ज़रते ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

बिअ़्सत से पांच बरस पहले जब कुरैश ख़ानए का'बा की ता'मीर कर रहे थे पैदा हुईं। पहले ख़ुनैस बिन हुज़ैफ़ा सह्मी के निकाह़ में थीं। उन ही के साथ मदीने को हिजरत की। ह़ज़रते ख़ुनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ज़्वए बद्र में कई ज़ख़्म खाए। ग़ज़्वे के बा'द इन ही ज़ख़्मों की वज्ह से इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

ह़ज़रते ख़ुनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी बेटी के निकाह़ की फ़िक्र हुई। फ़त्हे़ बद्र के दिन ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो चुका था इस लिये ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि अगर तुम चाहो तो मैं ह़फ़्सा का निकाह़ तुम से कर देता हूं। उन्हों ने जवाब दिया कि मैं इस मुआ़मले में ग़ौर करूंगा। फिर चन्द रोज़ के बा'द कह दिया कि मेरा इरादा इन अय्याम में निकाह़ करने का नहीं है। बा'दे अज़ां ह़ज़रते फ़ारूक़ ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़िक्र किया मगर वोह चुप हो रहे और कुछ जवाब न दिया। इस पर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रन्ज हुवा। इस के बा'द आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वास्तगारी की और शा'बान सिने 3 हिजरी में निकाह़ हो गया। निकाह़ के बा'द ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि मेरी बे इल्तिफ़ाती की वज्ह सिर्फ़ येह थी जो मुझे मा'लूम था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़फ़्सा का ज़िक्र किया था मैं हुज़ूर का राज़ इफ़्शा करना न चाहता था। अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़फ़्सा से निकाह़ न करते तो मैं क़बूल कर लेता।

ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से साठ ह़दीसे मरवी हैं जिन में से सिर्फ़ पांच बुख़ारी में हैं। इन्हों ने शा'बान सिने 45 हिजरी में ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त में

---

(1) ......شرح الزرقانی علی المواھب،المقصدالثانی...الخ،الفصل الثالث فی ذکرازواجہ الطاھرات ..الخ،عائشة ام المؤمنین، ج٤، ص ٣٨١-٣٩٢ملخصاً۔علمیہ

www.dawateislami.net

इन्तिक़ाल फ़रमाया। मरवान इब्ने अल ह़कम ने जो मदीने का गवर्नर था नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और बनू ह़ज़्म के घर से मुग़ीरा के घर तक जनाज़े को कन्धा दिया और मुग़ीरा के घर से क़ब्र तक ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह शरफ़ ह़ासिल किया।[1]

ह़ज़रते उम्मे सलमह बिन्ते अबी उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

हिन्द नाम, उम्मे सलमह कुन्यत थी। बाप का नाम हुज़ैफ़ा और ब क़ौले बा'ज़ सुहैल था। मां का नाम आ़तिका बिन्ते आ़मिर कनानिय्या था। पहले अपने चचाज़ाद भाई अबू सलमह (अ़ब्दुल्लाह) बिन अ़ब्दुल असद बिन मुग़ीरा के निकाह़ में थीं जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिज़ाई भाई थे। उम्मे सलमह व अबू सलमह दोनों क़दीमुल इस्लाम थे। दोनों ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की। चुनान्चे, इन के बेटे सलमह ह़बशा ही में पैदा हुवे। फिर मक्का में आए और मदीने की त़रफ़ हिजरत की। उम्मे सलमह पहली औ़रत हैं जो हिजरत कर के मदीने में आईं। मदीने ही में उन के हां उ़मर और दुर्रा व ज़ैनब पैदा हुईं।

ह़ज़रते अबू सलमह बद्र व उहुद में शरीक हुवे। उहुद में ज़ख़्मी हो गए एक माह के बा'द ज़ख़्म चंगा[2] हो गया। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को एक सरया में भेज दिया। एक माह के बा'द वापस आए तो ज़ख़्म फिर फूट आया और 8 जुमादल उख़्रा सिने 4 हिजरी में वफ़ात पाई। वफ़ात के वक़्त ह़ज़रते उम्मे सलमह ह़ामिला थीं। वज़्ए ह़मल के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर ने ख़्वास्तगारी[3] की तो उम्मे सलमह ने इन्कार कर दिया। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने निकाह़ का पैग़ाम भेजा तो मरह़बा कह कर येह उ़ज़्र पेश किये :

﴾1﴿.....मैं सख़्त ग़य्यूर औ़रत हूं।

﴾2﴿.....साहि़बे अ़याल हूं।

﴾3﴿.....मेरे औलिया में से कोई यहां नहीं कि मेरा निकाह़ कर दे।

एक रिवायत में है कि मेरी उ़म्र ज़ियादा है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन उ़ज़्रों का तसल्ली बख़्श जवाब दिया और निकाह़ हो गया।

---

1 ......شرح الزرقانی مع المواهب اللدنية، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثالث فی ذكر ازواجه الطاهرات ...إلخ، ج ٤، ص٣٩٣،٣٩٥۔علميه

2.....ठीक। 3.....निकाह़ का पैग़ाम देना।

www.dawateislami.net

जब हुदैबिय्या में सुल्ह़नामा लिखा जा चुका तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया कि अब उठो कुरबानियां दो और सर मुन्डवाओ। चूंकि सह़ाबए किराम को बे नैले मराम[1] वापसी से रन्जो मलाल था। उन्हों ने ता'मीले इरशाद में तअम्मुल किया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़फ़ा हो कर ह़ज़रते उम्मे सलमह के ख़ैमे में तशरीफ़ ले आए और इम्तिसाले अम्र में तवक्कुफ़ की शिकायत की। उम्मे सलमह ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप उन को मा'ज़ूर रखें, उन पर एक अम्रे अ़ज़ीम गुज़रा है, उन का ख़याल तो फ़त्ह़े मक्का का था उन को यक़ीन था कि वोह मक्का में उ़मरह बजा लाएंगे। बा वुजूदे फ़ुक़्दाने मत़्लूब आप ने कुरैश से सुल्ह़ कर ली और उन की न सुनी। अगर ख़ात़िरे अशरफ़ इस पर है कि वोह नह़्र व ह़ल्क़ करें तो आप किसी से कुछ न फ़रमाएं और ख़ुद नह़्र व ह़ल्क़ फ़रमाएं। येह देख कर उन को ब जुज़ इत्तिबाअ़ चारह न होगा। चुनान्चे, ऐसा ही वुक़ूअ़ में आया और ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की तदबीर से वोह मुश्किल ह़ल हो गई और येह उन की दानिशमन्दी और सवाबे राए की वाज़ेह़ दलील है।

ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कुतुबे मुतदावला में 378 ह़दीसें मरवी हैं जिन में से तेरह पर बुख़ारी व मुस्लिम का इत्तिफ़ाक़ है और तीन के साथ इमाम बुख़ारी और तेरह के साथ इमाम मुस्लिम मुन्फ़रिद हैं। बाक़ी दीगर कुतुब में हैं।

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ में सब के बा'द ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने 84 बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई। इन के सिने वफ़ात में सख़्त इख़्तिलाफ़ है। वाक़िदी का क़ौल है कि शव्वाल सिने 59 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया और ह़ज़रते अबू हुरैरा ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। इमाम बुख़ारी तारीख़े कबीर में सिने 59 हिजरी लिखते हैं। ब क़ौले इब्ने ह़ब्बान इमामे हुसैन की शहादत की ख़बर आने के बा'द आख़िर सिने 61 हिजरी में वफ़ात पाई। इब्राहीम ह़रबी सिने 62 हिजरी बताते हैं। मगर सह़ीह़ मुस्लिम में है कि ह़ारिस बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उबय और अ़ब्दुल्लाह बिन सफ़्वान ह़ज़रते उम्मे सलमह की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और उन से उस लश्कर की बाबत पूछा जो ज़मीन में धंस जाएगा। येह सुवाल उस वक़्त किया गया जब यज़ीद बिन मुआ़विय्या ने मुस्लिम बिन उ़क़्बा को लश्करे इस्लाम के साथ मदीने की त़रफ़ भेजा था और वाक़िअ़ए ह़र्रह पेश आया था जो सिने 63 हिजरी में था। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि ह़ज़रते उम्मे सलमह वाक़िअ़ए ह़र्रह तक ज़िन्दा थीं।[2]

---

1 .....बिला हुसूले मक़्सद।

2 ....شرح الزرقانی مع المواهب اللدنیة، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات ...إلخ، ج٤، ص ٣٩٦-٤٠٣ـعلمیه

www.dawateislami.net

हज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

अस्ली नाम रम्ला और कुन्यत उम्मे ह़बीबा थी। आप ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुख़्तरे बुलन्द अख़्तर और ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन थीं। पहले अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श के निकाह़ में थीं। दोनों ने इस्लाम ला कर ह़बशा की त़रफ़ हिजरते सानिय्या की। वहीं उन की लड़की ह़बीबा पैदा हुई। अ़ब्दुल्लाह ईसाई हो कर ह़बशा ही में मर गया। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उम्मे ह़बीबा की ह़ालत व ग़ुर्बत को मद्दे नज़र रखते हुवे नजाशी की मा'रिफ़त निकाह़ का पैग़ाम दिया जिसे उन्हों ने ब ख़ुशी क़बूल किया। चुनान्चे, नजाशी ने सिने 7 हिजरी में उन का निकाह़ ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से कर दिया। जैसा कि इस किताब में पहले आ चुका है। जब निकाह़ के तमाम रुसूम अदा हो गए तो नजाशी ने उन को शुर्ह़बील बिन ह़सना के साथ ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रवाना कर दिया।

ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रिवायत से कुतुबे मुतदावला में 65 ह़दीसें मरवी हैं जिन में से दो पर बुख़ारी व मुस्लिम का इत्तिफ़ाक़ है और एक के साथ इमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मुन्फ़रिद हैं। बाक़ी दीगर कुतुब में हैं। आप का विसाल मदीनए मुनव्वरा में सिने 44 हिजरी में हुवा और वहीं दफ़्न हुईं।(1)

हज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श असदिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

इन की पहली शादी ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई थी। ह़ज़रते ज़ैद क़बीलए क़ज़ाआ़ में से था। लड़कपन में गिरिफ़्तार हो कर मक्का में ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हाथ बत़ौरे ग़ुलाम फ़रोख़्त हुवे। ह़ज़रते ख़दीजा ने इन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दिया। ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नबुव्वत से पहले इन को आज़ाद कर के मुतबन्ना(2) बना लिया इस लिये लोग इन को ज़ैद बिन मुह़म्मद कहा करते थे। ह़ज़रते ज़ैद साबिक़ीने अलल इस्लाम(3) में से थे इन पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ास तवज्जोह थी। आप अहम उमूर में इन से काम लेते और लश्कर की क़ियादत तक इन के सिपुर्द कर देते। इसी वज्ह से ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन का निकाह़ अपनी फूफी उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की साहिबज़ादी ज़ैनब बिन्ते जह़्श से कर देना चाहा मगर ज़ैनब और उन का भाई राज़ी न हुवे।

---

1 ......شرح الزرقانی مع المواهب اللدنية، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثالث فی ذكر ازواجه الطاهرات ...إلخ، ج٤، ص ٤٠٣-٤٠٩۔علمیه

2.....मुंह बोला बेटा।

3.....जिन्हों ने इब्तिदा ही में इस्लाम क़बूल कर लिया था।

www.dawateislami.net

इस पर येह आयत उतरी :

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ؕ﴿۳۶﴾ (احزاب،ع۵)

किसी मुसलमान मर्द या औ़रत को लाइक़ नहीं जिस वक़्त ख़ुदा और उस का रसूल कोई काम मुक़र्रर कर दे कि उन को अपने काम में इख़्तियार हो और जो कोई ***अल्लाह*** *और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे वोह सरीह़ गुमराह हो गया।*[1]

पस ह़ज़रते ज़ैनब निकाह़ पर राज़ी हो गईं और निकाह़ हो गया।

ह़ज़रते ज़ैद अगर्चे अ़रबिय्युल अस्ल थे मगर क़ुरैशी न थे। क़ुरैश की लड़कियां ख़ुसूसन अवलादे अ़ब्दुल मुत्तलिब के लिये अशराफ़े क़ुरैश में कुफ़्व तलाश किये जाया करते थे इस लिये कुछ अ़र्से त़बई त़ौर पर ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ह़रकाते आ़दिय्या को किब्र व तआ़ज़ुम[2] पर मह़मूल करने लगे और ह़ज़रते ज़ैनब भी उन से मतक़द्दर रहने लगीं। चुनान्चे, ह़ज़रते ज़ैद ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उन की शिकायत की। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस त़रह़ की बातों पर त़लाक़ नहीं दिया करते। इसी अम्र की त़रफ़ आयए ज़ैल में इशारा है।

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِیْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ (احزاب،ع۵)

और जिस वक़्त तू कह रहा था उस शख़्स से जिस पर ***अल्लाह*** *ने और तू ने इन्आ़म किया है कि अपनी बीवी को अपने लिये थाम रख और ख़ुदा से डर और तू अपने जी में छुपाता था उस चीज़ को जिसे* ***अल्लाह*** *ज़ाहिर करने वाला है और तू लोगों से डरता था और* ***अल्लाह*** *ज़ियादा लाइक़ है इस का कि तू उस से डरे।*[3]

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और किसी मुसलमान मर्द न मुसलमान औ़रत को पहुंचता है कि जब **अल्लाह** व रसूल कुछ हुक्म फ़रमा दें तो उन्हें अपने मुआ़मले का कुछ इख़्तियार रहे और जो हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका। (پ۲۲،الاحزاب:۳٦) **इल्मिय्या**

2.....बड़ाई।

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम फ़रमाते थे उस से जिसे **अल्लाह** ने ने'मत दी और तुम ने उसे ने'मत दी कि अपनी बीबी अपने पास रहने दे और **अल्लाह** से डर और तुम अपने दिल में रखते थे वोह जिसे **अल्लाह** को ज़ाहिर करना मन्ज़ूर था और तुम्हें लोगों के त़ा'ने का अन्देशा था और **अल्लाह** ज़ियादा सज़ावार है कि उस का ख़ौफ़ रखो। (پ۲۲،الاحزاب:۳۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

बईं हमा अगर ज़ैद उन को त़लाक़ देते तो ऐसी सय्यिदा शरीफ़ा के लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा कुफ़्व और कौन हो सकता था इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर अशरफ़ में आता था कि ब सूरते त़लाक़ ज़ैनब की तत़य्युब ख़ातिर[1] और इस के हुक़ूक़ की रिआ़यत के लिये उन से निकाह़ कर लेना ज़रूरी होगा मगर आप इसे ज़ाहिर न कर सकते थे क्यूंकि जाहिलिय्यत में मुतबन्ना[2] को ब मन्ज़िला वलदे ह़क़ीक़ी[3] समझते थे और येह अ़क़ीदा रखते थे कि मुतबन्ना की मुत़ल्लक़ा[4] के साथ निकाह़ जाइज़ नहीं।

आख़िरे कार ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने त़लाक़ दे दी। इ़द्दत गुज़रने पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ैद ही को निकाह़ का पैग़ाम देने के लिये ज़ैनब के पास भेजा। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया कि मैं इस्तिख़ारा कर लूं। पस **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآىٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَ كَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝۳۷

(احزاب،ع۵)

*फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी कि मुसलमानों पर कुछ ह़रज न रहे उन के ले पालकों की बीबियों में जब उन से उन का निकाह़ ख़त्म हो जाए और **अल्लाह** का हुक्म हो कर रहता है।*[5]

इस त़रह़ ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ (सिने 3 हिजरी या सिने 5 हिजरी में) 35 बरस की उ़म्र में हो गया। ह़ज़रते ज़ैनब फ़ख़्र किया करती थीं कि दीगर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का निकाह़ तो उन के बाप या भाई या अहल ने कर दिया मगर मेरा निकाह़ **अल्लाह** तआ़ला ने आस्मान से कर दिया। इस निकाह़ में येह ह़िक्मत भी थी कि पिसरे ख़्वांदा[6] की मुत़ल्लक़ा का हुक्म मा'लूम हो गया।

जब येह निकाह़ हो गया तो मुख़ालिफ़ों ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने बेटों की बीवियों से निकाह़ ह़राम कर दिया मगर ख़ुद अपने बेटे की बीवी से निकाह़ कर लिया। इस पर येह आयतें उतरीं :

1.....दिलजूई। 2.....मुंह बोला बेटा। 3.....ह़क़ीक़ी बेटे की त़रह़। 4.....त़लाक़ याफ़्ता।

5.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर जब ज़ैद की ग़रज़ उस से निकल गई तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी कि मुसलमानों पर कुछ ह़रज न रहे उन के ले पालकों की बीबियों में जब उन से उन का काम ख़त्म हो जाए और **अल्लाह** का हुक्म हो कर रहना। (پ۲۲،الاحزاب:۳۷) **इल्मिय्या**

6.....मुंह बोला बेटा।

www.dawateislami.net

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَؕ (احزاب،ع٥)

मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं लेकिन ख़ुदा के पैग़म्बर और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं।(1)

وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْؕ (احزاب،ع١)

और तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारे बेटे नहीं बनाया येह तुम्हारे मुंहों की बात है।(2)

पस ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जो ज़ैद बिन मुह़म्मद कहलाते थे इस के बा'द ज़ैद बिन ह़ारिसा कहलाने लगे।

ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फूफीज़ाद बहन होने के इ़लावा जमाल में भी मुमताज़ थीं इस लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ में से वोह ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ हमसरी का दम भरती थीं चुनान्चे, ख़ुद ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : كَانَتْ تُسَامِيْنِيْ वोह मेरा मुक़ाबला करती थीं।

आप निहायत रास्त गो और पारसा थीं। जब ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर बोहतान लगाया गया तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप से ह़ज़रते आ़इशा की निस्बत पूछा। आप ने साफ़ कह दिया : وَاللّٰهِ مَا عَلِمْتُ اِلَّا خَيْرًا वल्लाह ! मुझे आ़इशा की भलाई के सिवा किसी चीज़ का इ़ल्म नहीं।

इसी रास्ती से मुतअस्सिर हो कर ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि मैं ने कोई औ़रत ज़ैनब से दीन में बेहतर, ख़ुदा से ज़ियादा डरने वाली, ज़ियादा सच बोलने वाली और ज़ियादा सिलए रेह़्म और ख़ैरात करने वाली नहीं देखी।

एक दफ़्आ़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ माल मुहाजिरीन में तक़्सीम फ़रमा रहे थे। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस मुआ़मले में कुछ बोल उठीं। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ना गवार गुज़रा। ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : उ़मर ! इन को जाने दो ! येह अव्वाह या'नी ख़ाशेए़ मुतज़र्रअ़(3) हैं।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुह़म्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हां **अल्लाह** के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले। (پ٢٢،الاحزاب:٤٠) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारा बेटा बनाया येह तुम्हारे अपने मुंह का कहना है। (پ٢١،الاحزاب:٤) **इल्मिय्या**

3.....ख़ौफ़े ख़ुदा रखने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़ गिड़ाने वाली।

www.dawateislami.net

हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ज़ाहिदा और तबीअ़त की फ़य्याज़ थीं। अपने हाथ से मआ़श पैदा करतीं और ख़ुदा की राह में लुटा देतीं। हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन का सालाना वज़ीफ़ा बारह हज़ार दिरहम मुक़र्रर किया था जो उन्हों ने सिर्फ़ एक साल लिया और अपने ह़ाजत मन्द रिश्तेदारों में तक़्सीम कर के दुआ़ मांगी कि ख़ुदाया ! येह अ़तिय्या मुझे अगले साल न मिले। हज़रते फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर लगी तो उन्हों ने हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के लिये एक हज़ार और भेजा मगर हज़रते ज़ैनब ने उसे भी तक़्सीम कर दिया। आप की दुआ़ क़बूल हो गई और आयिन्दा साल वफ़ात पाई।

एक रोज़ आं हज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ से फ़रमाया : اَسْرَعُكُنَّ لِحَاقًا بِیْ اَطْوَلُكُنَّ یَدًا तुम में से मुझ से जल्दी मिलने वाली वोह है जिस का हाथ तुम सब से लम्बा है।

अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ इस इरशाद को ह़क़ीक़त पर मह़्मूल करती थीं। चुनान्चे, हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ के बा'द जब हम किसी एक के हुजरे में जम्अ़ होतीं तो हम दीवार पर अपने हाथों को नापा करती थीं। हमारा येही ख़याल रहा यहां तक कि हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने जो कोताह क़द थीं हम सब से पहले इन्तिक़ाल फ़रमाया उस वक़्त हमारी समझ में आया कि इरशादे मज़्कूर में हाथ का लम्बा होना फ़य्याज़ी की त़रफ़ इशारा था।

जब हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने अपना कफ़न तय्यार कर रखा है। हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी एक कफ़न भेजेंगे। दोनों में से एक को ख़ैरात कर देना। चुनान्चे, इस वसिय्यत पर अ़मल किया गया। हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने मदीनए मुनव्वरा में सिने 20 हिजरी में पचास या तिरपन बरस की उ़म्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया। हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। हज़रते फ़ारूक़ की येह आरज़ू थी कि ख़ुद हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को क़ब्र में उतारें इस लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ से दरयाफ़्त किया कि इन को क़ब्र में कौन उतारे ? जवाब आया कि जो ह़यात में इन के घर में दाख़िल हुवा करता था।

हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से ग्यारह ह़दीसें मरवी हैं जिन में से दो पर बुख़ारी व मुस्लिम का इत्तिफ़ाक़ है।[1]

1 ......شرح الزرقانی مع المواهب اللدنیة ، المقصد الثانی ...إلخ ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات ...إلخ، ج ٤، ص ٤٠٩ـ٤١٥ـعلمیه

www.dawateislami.net

हज़रते ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा हिलालिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

आप मसाकीन को कसरत से खाना खिलाया करती थीं इस लिये उम्मुल मसाकीन की कुन्यत से मश्हूर थीं। पहले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के निकाह़ में थीं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ने जंगे उहुद (सिने 3 हिजरी) में वफ़ात पाई। इसी साल आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निकाह़ में आईं और सिर्फ़ दो तीन महीने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में रहने पाई थीं कि तीस साल की उ़म्र में उन का इन्तिक़ाल हो गया और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं। ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के बा'द येही एक बीबी थीं जिन्हों ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़यात शरीफ़ में इन्तिक़ाल फ़रमाया।(1)

हज़रते मैमूना बिन्ते हारिस हिलालिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

इन की बहन उम्मुल फ़ज़्ल लुबाबा कुब्रा ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के निकाह़ में थीं। ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पहले मसऊ़द बिन अ़म्र बिन उ़मैर सक़फ़ी के निकाह़ में थीं। मसऊ़द ने त़लाक़ दे दी तो अबू रुह्म बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा ने इन से शादी कर ली। अबू रुह्म के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इन का निकाह़ मक़ामे सरफ़ में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कर दिया। सरफ़ ही में सिने 51 हिजरी में इन का इन्तिक़ाल हुवा। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने इन के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और क़ब्र में उतारा। जब जनाज़ा उठाने लगे तो ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने कहा कि येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजा हैं इन के जनाज़े को ज़ियादा ह़रकत न दो आहिस्ता ले चलो। इन की रिवायत से 76 ह़दीसें मरवी हैं जिन में से सात पर बुख़ारी व मुस्लिम का इत्तिफ़ाक़ है।(2)

---

(1) ......شرح الزرقانی مع المواهب اللدنية ، المقصد الثانی ...إلخ ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات ... إلخ ، ج٤ ، ص٤١٦۔٤١٨۔علمیه

(2) ......شرح الزرقانی مع المواهب اللدنية، المقصد الثانی ...إلخ ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات... إلخ ، ج٤ ، ص٤١٨۔٤٢٤۔علمیه

www.dawateislami.net

हज़रते जुवैरिय्या ख़ुज़ाइय्या मुस्त़लिक़िया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا

हज़रते जुवैरिय्या رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का वालिद ह़ारिस बिन अबी ज़िरार था जो क़बीलए बनी मुस्त़लिक़ का सरदार था। येह पहले मसाफ़ेअ़ बिन सफ़्वान मुस्त़लिक़ी के निकाह़ में थीं जो "ग़ज़्वए मुरैसीअ़" (सिने 5 हिजरी) में क़त्ल हुवा। इस ग़ज़्वे में बहुत से लौंडी ग़ुलाम मुसलमानों के हाथ आए। चुनान्चे, हज़रते जुवैरिय्या رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا हज़रते साबित बिन क़ैस बिन शिमास अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ह़िस्से में आईं मगर इन्हों ने हज़रते साबित से नव ऊक़िया सोने पर किताबत[1] कर ली। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर यूं अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह ! मैं ह़ारिस की बेटी जुवैरिय्या हूं मेरा ह़ाल आप से पोशीदा नहीं मैं साबित बिन क़ैस बिन शिमास के ह़िस्से में आई हूं मैं ने उन से नव ऊक़िया सोने पर किताबत कर ली है। येह रक़म मेरे मक़्दूर से ज़ाइद है मगर मैं ने आप की फ़य्याज़ी की उम्मीद पर मन्ज़ूर कर ली है और अब इसी का सुवाल करने के लिये आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई हूं।" रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम इस से बेहतर चीज़ नहीं चाहती हो ? उन्हों ने पूछा : वोह चीज़ क्या है ? हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारा ज़रे किताबत अदा कर देता हूं और तुम से निकाह़ कर लेता हूं। हज़रते जुवैरिय्या ने अ़र्ज़ किया कि मुझे मन्ज़ूर है। आं हज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते साबित को बुलाया वोह भी राज़ी हो गए चुनान्चे, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने नव ऊक़िया सोना अदा कर दिया और हज़रते जुवैरिय्या को आज़ाद कर के उन से निकाह़ कर लिया।

जब लोगों को इस निकाह़ की ख़बर लगी तो उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के रिश्तए मुसाहरत[2] की रिआ़यत से बनी मुस्त़लिक़ के बाक़ी तमाम लौंडी ग़ुलामों को आज़ाद कर दिया। हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का इरशाद है कि "हम ने कोई औ़रत ऐसी नहीं देखी जो अपनी क़ौम के लिये जुवैरिय्या से बढ़ कर बाइसे बरकत हो क्यूंकि इन के सबब से बनी मुस्त़लिक़ के सेंकड़ों घराने आज़ाद हो गए।"

1.....आक़ा का अपने ग़ुलाम से माल की अदाएगी के बदले उस की आज़ादी का मुआ़हदा करना किताबत कहलाता है और जो माल मुक़र्रर हो उसे बदले किताबत कहते हैं। **इल्मिय्या**

2.....सुसराली रिश्ता।

www.dawateislami.net

जब ह़ज़रते जुवैरिय्या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में आईं तो इन की उ़म्र बीस साल थी। इन का नाम बर्रह था हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बदल कर जुवैरिय्या रखा। रबीउ़ल अव्वल सिने 50 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं और मदीनए मुनव्वरा जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं। इन की रिवायत से सात ह़दीसें मन्क़ूल हैं जिन में से दो बुख़ारी में और दो मुस्लिम में और बाक़ी दीगर कुतुब में हैं।(1)

ह़ज़रते सफ़िय्या इस्राईलिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

बाप का नाम हुयय्य बिन अख़्त़ब था जो बनू नज़ीर का सरदार था। मां का नाम ज़रर था जो बनू कुरैज़ा के सरदार समुवाल की बेटी थी। ह़ज़रते सफ़िय्या की पहली शादी सलाम बिन मिश्कम कुरैज़ी से हुई। त़लाक़ के बा'द कनाना बिन अबिल ह़क़ीक़ के निकाह़ में आईं। जब ग़ज़वए ख़ैबर (सिने 7 हिजरी) में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू अबिल ह़क़ीक़ का क़ल्अ़ा क़मूस फ़त्ह़ किया तो कनाना क़त्ल हुवा। ह़ज़रते सफ़िय्या का बाप और भाई काम आए खुद भी गिरिफ़्तार हुईं। जब ख़ैबर के तमाम क़ैदी जम्अ़ किये गए तो दह़िय्या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक लौंडी की दरख़्वास्त की। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जाओ एक लौंडी ले लो। चुनान्चे, उन्हों ने ह़ज़रते सफ़िय्या को ले लिया। एक सह़ाबी ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने सफ़िय्या जो रईसए कुरैज़ा व नज़ीर थी दह़िय्या को अ़त़ा फ़रमा दी वोह तो आप ही के लाइक़ है।" इस पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दह़िय्या कल्बी को दूसरी लौंडी अ़त़ा फ़रमा दी और खुद सफ़िय्या को आज़ाद कर के उन से निकाह़ कर लिया। जब ख़ैबर से रवाना हो कर सहबा में पहुंचे तो रस्मे उ़रूसी अदा की गई और लोगों से मह़ज़र जम्अ़ कर के दा'वते वलीमा दी गई।

ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने तक़रीबन साठ साल की उ़म्र में सिने 50 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं। इन की रिवायत से दस ह़दीसें मन्क़ूल हैं जिन में सिर्फ़ एक मुत्तफ़िक़ अ़लयह है।(2)

---

1 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنية ، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاھرات ... إلخ ،ج٤، ص٤٢٤۔٤٢٨۔علمیه

2 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنية، المقصد الثانی ...إلخ ، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاھرات .. .إلخ ،ج٤، ص٤٢٨،۔٤٣٦۔علمیه

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अवलादे किराम

पहले ज़िक्र आ चुका है कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम अवलाद सिवाए इब्राहीम के जो ह़ज़रते मारिया क़िबति़या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बत़्ने मुबारक से थे ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से थी। साहि़बज़ादियां बिल इत्तिफ़ाक़ चार थीं। चारों ने ज़मानए इस्लाम पाया और शरफ़े हिजरत ह़ासिल किया मगर साहि़बज़ादों की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है। क़ासिम व इब्राहीम पर इत्तिफ़ाक़ है। बक़ौले ज़ुबैर बिन बकार (मुतवफ़्फ़ा सिने 256 हिजरी) साहि़बज़ादे तीन थे। क़ासिम, अ़ब्दुर्रह़मान (जिन को त़य्यिबो त़ाहिर भी कहते थे), इब्राहीम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) अक्सर अहले नसब की येही राए है।[1]

ह़ज़रते क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अवलादे किराम में ह़ज़रते क़ासिम बिअ़्सत से पहले पैदा हुवे और क़ब्ले बिअ़्सत ही सब से पहले इन्तिक़ाल फ़रमा गए। इब्ने सा'द ने ब रिवायते मुह़म्मद बिन ज़ुबैर बिन मुत़्इम नक़्ल किया है कि दो साल ज़िन्दा रहे। ब क़ौले मुजाहिद सात दिन और ब क़ौले मुफ़ज़्ज़ल बिन ग़स्सान ग़लाबी तेरह महीने ज़िन्दा रहे। इब्ने फ़ारिस कहते हैं कि सिने तमीज़ को पहुंच गए थे। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कुन्यत अबुल क़ासिम इन ही के नाम पर है।[2]

ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

साहि़बज़ादियों में सब से बड़ी थीं। बिअ़्सत से दस साल पहले जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक तीस साल की थी पैदा हुईं। इन की शादी इन के ख़ालाज़ाद भाई अबुल आ़स बक़ीत़ बिन रबीअ़ से हुई। अबुल आ़स ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा की बहन हाला के बत़्न से थे। हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा के कहने से इन का निकाह़ बिअ़्सत से पहले ह़ज़रते ज़ैनब से कर दिया था। जब हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को

1 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ ، المقصد الثانی ...إلخ ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام ... إلخ ، ج٤ ، ص ٣١٣۔٣١٤۔علمیہ

2 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ ، المقصد الثانی ... إلخ ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام ... إلخ ، ج٤ ، ص ٣١٦۔٣١٧۔علمیہ

www.dawateislami.net

मन्सबे रिसालत अ़ता हुवा तो ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिबज़ादियां आप पर ईमान लाईं मगर अबुल आ़स शिर्क पर क़ाइम रहा। इसी त़रह़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बिअ़्सत से पहले अपनी साहिबज़ादी रुक़य्या का निकाह़ उ़तबा बिन अबी लहब से और उम्मे कुल्सूम का निकाह़ उ़तैबा बिन अबी लहब से कर दिया था।

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्लीग़ का काम शुरूअ़ किया तो कु़रैश ने आपस में कहा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बेटियां छोड़ दो और इन को इस त़रह़ तक्लीफ़ पहुंचाओ। चुनान्चे, वोह अबुल आ़स से कहने लगे कि तू ज़ैनब को त़लाक़ दे दे हम तेरा निकाह़ कु़रैश की जिस लड़की से तू चाहे करा देते हैं। अबुल आ़स ने इन्कार किया मगर अबू लहब के बेटों ने ह़ज़रते रुक़य्या व उम्मे कुल्सूम को हम बिस्तरी से पेशतर त़लाक़ दे दी।

अगर्चे इस्लाम ने ह़ज़रते ज़ैनब व अबुल आ़स में तफ़रीक़ कर दी थी मगर मुसलमानों के ज़ो'फ़ के सबब से अ़मल दर आमद न हो सका यहां तक कि हिजरत वुक़ूअ़ में आई। जब कु़रैश जंग के लिये बद्र आए तो अबुल आ़स भी उन के साथ आए और गिरिफ़्तार हो गए। ह़ज़रते ज़ैनब ने उन के भाई अ़म्र के हाथ मक्का से उन का फ़िदया भेजा जिस में वोह हार भी था जो ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को पहना कर पहले पहल अबुल आ़स के हां भेजा था। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस हार को देखा तो आप पर निहायत रिक़्क़त त़ारी हो गई और ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का ज़माना याद आ गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद से सहाबए किराम ने फ़िदया वापस कर दिया और अबुल आ़स को भी छोड़ दिया। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अबुल आ़स से वा'दा लिया कि मक्का जा कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को मदीने भेज देंगे।

जब अबुल आ़स मक्का रवाना हुवे तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ैद बिन ह़ारिसा और एक अन्सारी को भेजा कि ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को "बत़ने याजज" से मदीना ले आएं। अबुल आ़स ने मक्का में पहुंच कर ईफ़ाए वा'दा किया और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से कह दिया कि तुम अपने वालिद के हां चली जाओ। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने चुपके चुपके सफ़र की तय्यारी की। अबुल आ़स के भाई किनाना ने ऊंट पर सुवार कर लिया और तीर व कमान ले कर दिन के वक़्त रवाना हुवा। कु़रैश के चन्द आदमियों ने तआ़कुब किया और ज़ूतुवा में जा घेरा। हिबार बिन अस्वद जो बा'द में ईमान लाया आगे बढ़ा। उस ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को नेज़े

www.dawateislami.net

से डरा कर ऊंट से गिरा दिया। वोह ह़ामिला थीं ह़म्ल साक़ित़ हो गया। येह देख कर किनाना ने तरकश[1] में से तीर निकाल कर ज़मीन पर रख लिये और कहने लगा : "जो शख़्स मेरे नज़दीक आएगा वोह तीर से बच कर न जाएगा।" येह सुन कर लोग पीछे हट गए। अबू सुफ़्यान ने कहा : "ठहरो ! हमारी बात सुन लो।" इस पर किनाना रुक गया। अबू सुफ़्यान बोला : "हमें मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के हाथ से जो मुसीबतें पहुंची हैं वोह तुम्हें मा'लूम हैं अब अगर तुम दिन दहाड़े उन की लड़की को ले जाओगे तो लोग इसे हमारी कमज़ोरी पर मह़मूल करेंगे हमें ज़ैनब को रोकने की ज़रूरत नहीं जब शौरे हंगामा कम हो जाएगा तो रात को इसे चोरी छुपे ले जाना।" किनाना ने इस राए को तस्लीम किया और चन्द रोज़ के बा'द एक रात ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ऊंट पर सुवार कर के ले आया और ज़ैद और अन्सारी के ह़वाले कर दी। वोह दोनों इन को मदीना ले आए।

जुमादल ऊला सिने 6 हिजरी में अबुल आ़स एक क़ाफ़िलए क़ुरैश के साथ ब ग़रज़े तिजारत मुल्के शाम को गए। उन के पास क़ुरैश का बहुत सा माल था। मक़ामे ऐ़स के नवाह़ में उन को आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक सरिय्या मिला जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब सरकर्दगी ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा भेजा था। उस सरिय्ये ने अबुल आ़स का तमाम माल ले लिया और अबुल आ़स हमराहियों समेत गिरिफ़्तार हो गए। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अबुल आ़स को पनाह दी। सुब्ह़ को जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ हुवे तो ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने पुकार कर कहा कि मैं ने अबुल आ़स को पनाह दी है मुसलमानों में से एक अदना शख़्स पनाह दे सकता है इस लिये हम ने भी इस को पनाह दी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे येह मा'लूम न था। इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़ारिश पर अबुल आ़स का तमाम माल वापस कर दिया गया। अबुल आ़स ने मक्का में पहुंच कर वोह माल क़ुरैश के ह़वाले कर दिया। फिर कहा : ऐ गुरौहे क़ुरैश ! क्या तुम में से किसी का माल मेरे ज़िम्मे बाक़ी है ? सब बोले कि नहीं। ख़ुदा तुझे जज़ाए ख़ैर दे। बा'दे अज़ां अबुल आ़स ने कलिमए शहादत पढ़ कर कहा : "अल्लाह की क़सम ! ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास इस्लाम लाने से मुझे येही अम्र मानेअ़ हुवा कि तुम गुमान करते कि मैं ने सिर्फ़ तुम्हारे माल हज़्म कर जाने के लिये एक ह़ीला किया है। इस के बा'द अबुल आ़स ने मुह़र्रम सिने 7 हिजरी में मदीने आ कर इज़्हारे इस्लाम किया और आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को निकाहे़ अव्वल या निकाहे़ जदीद के साथ उन के ह़वाले कर दिया।

---

1 .....तीरदान।

www.dawateislami.net

हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने सिने 8 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमाया। उम्मे ऐमन सौदह बिन्ते ज़मआ़ और उम्मे सलमह ने ग़ुस्ल दिया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़ब्र में उतारा।

हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की अवलाद एक लड़का अ़ली नाम और एक लड़की उमामा थी। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी वालिदए माजिदा की ज़िन्दगी में छोटी उ़म्र में क़रीबे बुलूग़ के वफ़ात पाई। इब्ने अ़साकिर कहते हैं कि बा'ज़ अहले नसब ने ज़िक्र किया है कि वोह जंगे यरमूक में शहीद हुवे।

आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उमामा से बड़ी मह़ब्बत थी। नमाज़ में भी उन को अपने कन्धे पर रख लेते जब रुकूअ़ करते तो उतार देते और जब सजदे से सर उठाते तो फिर सुवार कर लेते। एक दफ़्आ़ नजाशी ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में एक हुल्ला भेजा जिस में एक सोने की अंगूठी थी अंगूठी का नगीना ह़बशी था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह अंगूठी उमामा को अ़ता फ़रमाई।

हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान फ़रमाती हैं कि एक रोज़ किसी ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हदिय्या भेजा जिस में एक ज़र्रीन हार[1] था। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ सब एक मकान में जम्अ़ थीं उमामा मकान के एक गोशे में मिट्टी से खेल रही थीं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम सब से पूछा कि येह हार कैसा है ? हम ने अ़र्ज़ किया कि इस से ख़ूब सूरत व अ़जीब हार हमारे देखने में नहीं आया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं इसे अपने मह़बूब तरीन अहल को दूंगा। अज़्वाजे मुत़ह्हारत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ समझीं कि आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को मिलेगा मगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उमामा को बुलाया और अपने दस्ते मुबारक से वोह हार उन के गले में डाल दिया।

हज़रते अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से उमामा के निकाह़ कर देने की वसिय्यत कर गए थे। हज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने मरते वक़्त हज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से वसिय्यत की, कि मेरे बा'द उमामा से निकाह़ कर लेना इस लिये हज़रते ज़हरा के बा'द हज़रते ज़ुबैर ने उमामा का निकाह़ हज़रते अ़ली से कर दिया।

1.....सोने का हार।

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ली ने हज़रते मुग़ीरा बिन नौफ़ल से वसिय्यत की, कि मेरे बा'द तुम उमामा से निकाह़ कर लेना। चुनान्चे, हज़रते मुग़ीरा ने हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की शहादत के बा'द उमामा से निकाह़ कर लिया और उन से एक लड़का पैदा हुवा जिस का नाम यह़्या था। बा'ज़े कहते हैं कि उमामा की कोई अवलाद नहीं। ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ह़ज़रते मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के हां वफ़ात पाई।[1]

हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا

ह़ज़रते रुक़य्या और उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दोनों की शादी अबू लहब के बेटों से हुई थी जैसा कि ऊपर मज़्कूर हुवा। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्लीग़ का काम शुरूअ़ किया तो अबू लहब लईन ने अपने बेटों से कहा : "अगर तुम मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बेटियों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार नहीं करते तो तुम्हारे साथ मेरी निशस्त व बरख़ास्त ह़राम है।" उ़तबा और उ़तैबा दोनों ने बाप के हुक्म की ता'मील की। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रुक़य्या का निकाह़ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से कर दिया।

निकाह़ के बा'द ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ ह़बशा की त़रफ़ हिजरत की। इन के हां वहां एक लड़का पैदा हुवा जिस का नाम अ़ब्दुल्लाह था। अ़ब्दुल्लाह ने अपनी मां के बा'द सिने 4 हिजरी में छे बरस की उ़म्र में वफ़ात पाई।

ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ ह़बशा से मक्का में आए और मक्का से दोनों ने मदीना की त़रफ़ हिजरत की। अय्यामे बद्र में ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا बीमार थीं इस लिये ह़ज़रते उ़स्मान उन की तीमार दारी के लिये ग़ज़्वए बद्र में शामिल न हुवे। जिस रोज़ ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़त्ह़ की बिशारत ले कर मदीने में आए उसी रोज़ ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने बीस साल की उ़म्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए बद्र के सबब जनाज़े में शरीक न हो सके।

---

1 ......شرح الزرقانی مع المواهب اللدنیة،المقصد الثانی...إلخ،الفصل الثانی فی ذکراولادہ الکرام،ج٤،ص ٣١٨۔٣٢٢۔علمیه

www.dawateislami.net

हज़रते उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

कुन्यत के साथ ही मश्हूर हैं। पहले उ़तैबा बिन अबी लहब के निकाह़ में थीं। जब उ़तैबा ने इन को अपने बाप के कहने से त़लाक़ दी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुस्ताख़ी से पेश आया। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़मीस फाड़ दी तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से निकला : "या **अल्लाह** ! अपने कुत्तों में से एक कुत्ते को इस पर मुसल्लत़ कर दे।" कुछ मुद्दत के बा'द अबू लहब और उ़तैबा ब ग़रज़े तिजारत एक क़ाफ़िले के साथ शाम की त़रफ़ रवाना हुवे। रास्ते में एक राहिब के सौमआ़[1] के पास उतरे, राहिब ने कहा कि यहां दरिन्दे बहुत हैं। अबू लहब ने अपने साथियों से कहा कि तुम्हें मेरी उ़म्र और मेरा ह़क़ मा'लूम है ? वोह बोले कि हां ! अबू लहब ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने मेरे बेटे पर बद दुआ़ की है। तुम अपनी मताअ़ सौमआ़ पर जम्अ़ कर दो और उ़तैबा के लिये उस के ऊपर बिस्तर कर दो और खुद इस के गिर्दा गिर्द सो जाओ ! चुनान्चे, ऐसा ही किया गया। रात को एक शेर आया उस ने सब को सूंघा फिर मताअ़ पर कूद कर उ़तैबा को फाड़ डाला। अहले क़ाफ़िला ने हर चन्द शेर को तलाश किया मगर न मिला।

हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बा'द रबीउ़ल अव्वल सिने 3 हिजरी में उम्मे कुलसूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुवा और शा'बान सिने 9 हिजरी में इन्तिक़ाल हुवा। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।[2]

हज़रते फ़ात़िमा ज़ह्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

फ़ात़िमा नाम, ज़ह्रा और बतूल लक़ब हैं, जमाल व कमाल के सबब से ज़ह्रा कहलाती थीं और मा सिवा से इन्क़िताअ़ की वज्ह से बतूल थीं। बिअ़्सत के पहले साल या बिअ़्सत से एक साल पहले या पांच साल पहले बिना बर इख़्तिलाफ़े रिवायात पैदा हुईं।[3]

हिजरत के दूसरे साल आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का निकाह़ हज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से कर दिया। आप ने हज़रते अ़ली से पूछा कि अदाए महर के वासित़े

1.....गिर्जा।

2 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام ... إلخ، ج٤،ص ٣٢٢۔٣٢٧۔علمیہ

3 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام ... إلخ، ج٤،ص ٣٣١۔٣٣٣۔علمیہ

www.dawateislami.net

तुम्हारे पास कुछ है? हज़रते अली ने जवाब दिया कि एक घोड़ा और ज़िरह है। फ़रमाया कि घोड़ा जिहाद के लिये ज़रूरी है ज़िरह को फ़रोख़्त कर डालो। चुनान्चे, वोह ज़िरह हज़रते उ़स्माने ग़नी ने 480 दिरहम को ख़रीदी। हज़रते अ़ली ने क़ीमत ला कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे डाल दी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस में से कुछ हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया कि ख़ुश्बू ख़रीद लाएं और बाक़ी जहेज़ वग़ैरा के लिये उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़वाले किया, इस त़रह अ़क़्द हो गया। जहेज़ में येह चीजें थीं :[1] एक लिह़ाफ़, एक चमड़े का तक्या जिस में दरख़्ते ख़ुर्मा[2] की छाल भरी हुई थी, दो चक्कियां, एक मशक, दो घड़े। उसी साल माहे ज़ुल हिज्जा में रस्मे उ़रूसी अदा की गई। हज़रते अ़ली मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم ने अदाए रस्म के लिये मकान किराये पर लिया। फिर ह़ज़रते ह़ारिसा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दे दिया।[3]

आं हज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने अहल में फ़ातिमा सब से प्यारी थीं। जब सफ़र पर जाया करते तो अख़ीर में फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मिल कर जाते जब वापस आते तो सब से पहले फ़ातिमा से मिलते। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि फ़ातिमा मेरा पारए गोश्त है जिस ने फ़ातिमा को नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया। फ़ातिमा ही की निस्बत हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है :

خير نساء هذه الامة. سيدة نساء العالمين. سيدة نساء اهل الجنة. سيدة نساء المومنين. افضل نساء الجنة.[4]

साहिबज़ादियों में सिर्फ़ हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का सिलसिलए नसब जारी है और क़ियामत तक रहेगा।

हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को घर का तमाम काम करना पड़ता था। एक रोज़ ख़बर लगी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लौंडी ग़ुलाम आए हैं इस लिये वोह एक ख़ादिमा

1 ......طبقات ابن سعد، جزء ثامن، ترجمہ زہراء۔......(الطبقات الكبرى ،تسمية النساء المسلمات والمهاجرات من قريش...الخ، باب ما ذكر بنات رسول الله ، ج٨ ص١٩ ......شرح الزرقاني مع المواهب اللدنية، المقصد اوّل ...إلخ، ذكر تزويج على بفاطمة رضى الله عنها، ج ٢، ص ٣٥٧-٣٦٠-علميه)

2 .....खजूर के दरख़्त।

3 ......وفاء الوفاء للسمهودی۔......(الاصابة في تمييز الصحابة ، كتاب النساء ، حرف الفاء ، فاطمة الزهراء : ١١٥٨٧ ، ج٨ ، ص ٢٦٤-علميه)

4 ......شرح الزرقاني مع المواهب اللدنية، المقصد الثاني...إلخ،الفصل الثاني في ذكر اولاده الكرام، ج ٤، ص ٣٣٤-٣٣٦-علميه

www.dawateislami.net

की दरख़्वास्त करने के लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने में आईं। आख़िरे कार बारगाहे रिसालत से जो जवाब मिला उस का ज़िक्र पहले आ चुका है इआ़दा की ज़रूरत नहीं।

ख़ांगी[1] मुआ़मलात में बा'ज़ दफ़्आ़ हज़रते अ़ली व फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا में रन्जिश हो जाया करती थी तो हुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दोनों में मुसालहत करवा दिया करते थे। चुनान्चे, एक रोज़ का ज़िक्र है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا के दौलत ख़ाने में तशरीफ़ ले गए। हज़रते अ़ली को वहां न पाया आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते ज़हरा से (मुहावरए अ़रब के मुवाफ़िक़) पूछा कि मेरे चचा का बेटा कहां है ? उन्हों ने जवाब दिया कि हम दोनों में कुछ अन बन हो गई है वोह नाराज़ हो कर निकल गए और मेरे हां क़ैलूला नहीं फ़रमाया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से फ़रमाया कि देखो तो कहां है ? उस ने आ कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह मस्जिद में सोए हुवे हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। क्या देखते हैं कि वोह पहलू के बल लैटे हुवे हैं चादर पहलू से गिरी हुई है और ख़ाक आलूद हो रहे हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ाक झाड़ने लगे और फ़रमाया : ऐ अबू तुराब ! उठ बैठो। इस ह़दीस के रावी हज़रते सुहैल बिन सा'द बयान करते हैं कि हज़रते अ़ली को इस नाम से प्यारा कोई नाम न था।[2] (सहीहैन)

फ़त्हे मक्का के बा'द हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْه ने अबू जहल की लड़की से निकाह़ करना चाहा। हज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهَا ने सुना तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर कहने लगीं : "आप को क़ौम कहती है कि आप अपनी साह़िबज़ादियों के लिये नाराज़ नहीं होते। येह देखिये कि अ़ली अबू जहल की लड़की से निकाह़ करने लगे हैं।" येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अम्मा बा'द !** मैं ने अबुल आ़स से अपनी साह़िबज़ादी का निकाह़ कर दिया। उस ने मुझ से बात कही और सच कर दिखाई मुझ से वा'दा किया और पूरा कर दिया। फ़ातिमा मेरा गोश्त पारह है मैं पसन्द नहीं करता कि उसे तक्लीफ़ पहुंचे। **अल्लाह** की

---

1 .....घरेलू।

2 ......صحیح البخاری ، کتاب: فضائل اصحاب النبی ، باب مناقب علی بن ابی طالب ... الخ،الحدیث: ۳۷۰۳ ، ج۲، ص۵۳۵۔علمیه

www.dawateislami.net

क़सम ! रसूले ख़ुदा की लड़की और दुश्मने ख़ुदा की लड़की एक शख़्स के हां जम्अ़ न होंगी।" येह सुन कर ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने ख़्वास्तगारी[1] छोड़ दी।[2]

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ के बा'द ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا कभी हंसती न देखी गईं और विसाल शरीफ़ के छे माह बा'द 3 रमज़ान सिने 11 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं। ह़ज़रते अ़ब्बास ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। बक़ीअ़ में रात के वक़्त दफ़्न हुईं। ह़ज़राते अ़ली व अ़ब्बास व फ़ज़्ल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ने क़ब्र में उतारा।[3]

ह़ज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अवलाद तीन लड़के और तीन लड़कियां थीं। इमामे ह़सन व इमामे हुसैन जो अहले जन्नत के जवानों के सरदार हैं। मोह़सिन व रुक़य्या जो बचपन में इन्तिक़ाल कर गए। उम्मे कुलसूम जिन की शादी ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुई। ज़ैनब जिन का निकाह़ अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र से हुवा। इन में से सिवाए ह़ज़राते ह़सनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के किसी से नस्ल नहीं रही।[4]

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अवलाद में येह सब से छोटे हैं। बिअ़्सत के बा'द पैदा हुवे और बचपन में इन्तिक़ाल फ़रमा गए। त़य्यिबो त़ाहिर इन ही के लक़ब हैं।[5]

ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से आख़िरी अवलाद हैं। ज़िल हिज्जा सिने 8 हिजरी में मक़ामे अ़ालिय्या[6] में जहां इन की वालिदा ह़ज़रते मारिय्या क़िब्ति़या रहा करती थीं

---

1 .....निकाह़ का पैग़ाम भेजना।

2 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام، ج ٤، ص ٣٣٥۔علمیہ

3 ......الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، کتاب النساء، حرف الفاء، فاطمۃ الزھراء: ١١٥٨٧، ج ٨، ص٢٦٨۔علمیہ

4 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام، ج ٤، ص ٣٣٩ ...... الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، کتاب النساء، فیمن عرف بالکنیۃ من النساء، حرف الکاف، ام کلثوم بنت علی: ١٢٢٣٧، ج ٨، ص٤٦٥ ...... الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، کتاب النساء، حرف الزای المنقوطۃ، زینب بنت علی: ١١٢٦٧، ج٨، ص١٦٦ ......سبل الھدی والرشاد، فی بعض مناقب السیدۃ فاطمۃ ...إلخ، ج ١١، ص ٥١۔علمیہ

5 ......شرح الزرقانی مع المواھب اللدنیۃ، المقصد الثانی ...إلخ، الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام، ج٤، ص٣١٤۔علمیہ

6 .....मदीनए मुनव्वरा के बालाई ह़िस्से की आबादी को अ़ालिय्या या अ़वालिये मदीना कहते हैं।

www.dawateislami.net

पैदा हुवे। इसी सबब से आ़लिय्या को मशरबा उम्मे इब्राहीम भी कहने लगे थे। अबू राफ़ेअ़ की बीवी सलमा ने जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या आप की फूफी सफ़िय्या की लौंडी थीं दाया गिरी की ख़िदमत अन्जाम दी। जब अबू राफ़ेअ़ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन की विलादत की बिशारत दी तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अबू राफ़ेअ़ को एक गुलाम अ़ता फ़रमाया। सातवें दिन अ़क़ीक़ा दिया और सर के बालों के बराबर चांदी ख़ैरात की और ह़ज़रते इब्राहीम के नाम पर इब्राहीम नाम रखा।

दूध पिलाने के लिये आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इब्राहीम को उम्मे सैफ़ के ह़वाले किया। उम्मे सैफ़ का शोहर अबू सैफ़ लोहार था। ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इब्राहीम को देखने के लिये अ़वालिये मदीना में तशरीफ़ ले जाया करते थे हम आप के साथ हुवा करते ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इब्राहीम को गोद में ले कर चूमा करते। घर धूवें से पुर हुवा करता, बा'ज़ दफ़्आ़ मैं पेशतर पहुंच कर अबू सैफ़ को इत्तिलाअ़ कर देता कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ला रहे हैं धुवां न करो। येह सुन कर अबू सैफ़ अपना काम बन्द कर देते।

ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उम्मे सैफ़ ही के हां इन्तिक़ाल फ़रमाया। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई कि इब्राहीम ह़ालते नज़्अ़ में है। उस वक़्त अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप के पास थे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन को साथ ले कर वहां पहुंचे देखा कि नज़्अ़ की ह़ालत है गोद में उठा लिया आंखों से आंसू जारी हो गए। अ़ब्दुर्रह़मान ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ऐसा करते हैं ? फ़रमाया : इब्ने औ़फ़ ! येह रह़मत व शफ़्क़त (मय्यित पर) है। फिर फ़रमाया : "इब्राहीम ! हम तेरी जुदाई से ग़मगीन हैं आंखें अश्कबार हैं दिल ग़मगीन है हम वोही कहते हैं जिस से हमारा रब राज़ी हो।"

छोटी सी चार पाई पर जनाज़ा उठाया गया। बक़ीअ़ में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की क़ब्र से मुत्तसिल दफ़्न हुवे। फ़ज़्ल व उसामा ने क़ब्र में उतारा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्र के किनारे खड़े थे आप के

www.dawateislami.net

इरशाद से एक अन्सारी पानी की मशक लाया और क़ब्र पर छिड़क दिया और शनाख़्त के लिये एक निशान क़ाइम किया गया जैसा कि ह़ज़रते उ़स्मान की क़ब्र पर किया गया था। ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र ह़स्बे रिवायते सिह़ाह़ 17 या 18 माह थी।

अ़रब जाहिलिय्यत का ए'तिक़ाद था कि जब कोई बड़ा शख़्स मर जाता या कोई ह़ादिसए अ़ज़ीम वुक़ूअ़ में आता है तो सूरज या चांद में गहन लग जाता है। इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के दिन सूरज में गहन लग गया था इस लिये लोग कहने लगे कि येह इब्राहीम की मौत के सबब से है। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सूरज चांद ख़ुदा तआ़ला के दो निशान हैं किसी की मौत से इन में गहन नहीं लगता।[1]

ए'तिराज़ : यहूदो नसारा और उन के कासा लेस[2] आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कसरते इज़्दिवाज पर ता'न करते हैं और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में दरीदा दहनी[3] करते हैं।

जवाब : इस ए'तिराज़ का जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने अपने कलामे पाक में यूं दिया है :

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً (رعد،٢٦)

और अलबत्ता बेशक हम ने तुझ से पहले पैग़म्बर भेजे और उन को औ़रतें और अवलाद दी।[4]

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़िताब फ़रमाता है कि आप से पहले जो पैग़म्बर गुज़रे हैं हम ने उन को औ़रतें दीं जैसा कि तुझ को दीं। इस की तफ़्सील बाइबल में पाई जाती है चुनान्चे, ह़ज़रते इब्राहीम के हां तीन बीवियां थीं। (पैदाइश, बाब 11, आयह 29, बाब 16, आयह 3, बाब 25, आयए अव्वल) ह़ज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام की चार बीवियां थीं। (पैदाइश, बाब 29, बाब 30, आयह 4,9) इन चार में से राह़ील की निस्बत लिखा है : "राह़ील ख़ूब सूरत और ख़ुशनुमा थी। या'क़ूब (निकाह़ से पहले) राह़ील पर आ़शिक़ था।"

(पैदाइश, बाब 29, आयह 17, 18)

ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दो बीवियां थीं। (ख़ुरूज, बाब 2, आयह 21। आ'दाद, बाब 12, आयह अव्वल) ह़ज़रते जिदऊ़न नबी की बहुत सी बीवियां थीं जिन से सत्तर लड़के पैदा हुवे।

---

1 ......سبل الهدى والرشاد،فى الباب الخامس فى بعض مناقب سيدنا ابراهيم...إلخ،ج ١١، ص ٢١ـ٢٤ـعلميه

2 .....उन के नक़्शे क़दम पर चलने वाले।

3 .....गुस्ताख़ी।

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक हम ने तुम से पहले रसूल भेजे और उन के लिये बीबियां और बच्चे किये। (پ١٣،الرعد:٣٨) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

(अक़्ज़ाह, बाब 8, आयह 30) ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के हां बहुत सी बीवियां थीं। (अव्वल समूईल, बाब 18, आयह 27। बाब 25, आयह 42, 43। दुवुम समूईल, बाब 3, आयह 2 ता 5। बाब 5, आयह 13) ह़ज़रते दावूद ने ह़ालते पीरी में अबी साज सूनमी से निकाह़ किया ताकि वोह गर्म रहें। (अव्वल सलात़ीन, बाब अव्वल) ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के हां बहुत औ़रतें थीं।

चुनान्चे, अव्वल सलात़ीन (बाब 11, आयह 3, 4) में यूं है : "उस की सात सो जोरुवां बेगमात थीं और तीन सो ह़रमें[1] और उस की जोरूं ने उस के दिल को फेरा क्यूंकि ऐसा हुवा कि जब सुलैमान बूढ़ा हुवा तो उस की जोरूं ने उस के दिल को ग़ैर मा'बूदों की त़रफ़ माइल किया।"

पस साबित हुवा कि "एक से ज़ाइद ज़ौजा का होना" नबुव्वत के मनाफ़ी नहीं। बाइबल में जो पैग़म्बरों की निस्बत दरीदा दहनी[2] की गई है हम उसे ग़लत़ समझते हैं और पैग़म्बरों को मा'सूम जानते हैं। عَلٰى نَبِيِّنَا وعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : حُبِّبَ اِلَيَّ مِنَ الدُّنْيَا النِّسَآءُ وَالطِّيْبُ وَجُعِلَ قُرَّةُ عَيْنِيْ فِى الصَّلٰوةِ दुन्या से मेरे लिये औ़रतें और ख़ुश्बू मह़बूब बनाई गई और मेरी आंख की ठन्डक नमाज़ में बनाई गई।[3]

इस ह़दीस के मा'ना में दो क़ौल बयान किये जाते हैं : एक येह कि हु़ब्बे अज़्वाज, ज़ियादा मूजिबे इब्तिला व तक्लीफ़ और ब मुक़्तज़ाए बशरिय्यत[4] आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदाए रिसालत से ग़ाफ़िल होने का अन्देशा है मगर इस के बा वुजूद हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस से कभी भी ग़ाफ़िल न रहे तो इस से मा'लूम हुवा कि हु़ब्बे निसा में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये मशक़्क़त ज़ियादा और अज्रे आ'ज़म है।

दूसरे येह कि हु़ब्बे निसा इस वासित़े हुवा कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लवात अपनी अज़्वाज के साथ हों और मुशरिकीन जो आप को साह़िर व शाइर होने की तोहमत लगाते थे वोह जाती रहे। बस औ़रतों का मह़बूब बनाया जाना आप के ह़क़ में लुत़्फ़े रब्बानी है। ग़रज़ बहर सूरत येह हु़ब्ब आप के लिये बाइसे फ़ज़ीलत है।[5]

1.....कनीज़ें।   2.....गुस्ताख़ी।

3 ......سنن نسائى، كتاب عشرة النساء، باب حب النساء، الحديث: ٣٩٤٥، ص٦٤٤ـ علميه

4.....बशरी तक़ाज़े के तह़त।

5 ......شرح النسائى للسيوطى، كتاب عشرة النساء، باب حبّ النساء، ج٤، الجزء٧، ص٦١ـ٦٢ـ علميه

www.dawateislami.net

इस ह़दीस के अख़ीर में इस अम्र की त़रफ़ इशारा है कि वोह मह़ब्बत आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये अपने परवर दगार के साथ कमाले मुनाजात से मानेअ़ नहीं बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बा वुजूद इस मह़ब्बत के **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ ऐसे मुतवज्जेह हैं कि उस की मुनाजात में आप की आंखें ठन्डी रहती हैं और मासिवा में आप के लिये ठन्डक नहीं। पस हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ह़क़ीक़त में सिर्फ़ अपने ख़ालिक़ तबारक व तआ़ला के लिये है और ह़दीस में इस त़रफ़ इशारा है कि हुब्बे निसा हुब्बे हुक़ूक़े अ़बूदिय्यत के अदा में मुख़िल न हो बल्कि इनक़िताए़ इलल्लाह[1] के लिये हो तो वोह अज़ क़बीले कमाल है वरना अज़ क़बीले नुक़्सान है।[2]

शैख़ तक़िय्युद्दीन सुब्की फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो चार से ज़ियादा अज़्वाज की इजाज़त दी गई। उस में येह भेद है कि **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा कि बवात़ने शरीअ़त व ज़वाहिरे शरीअ़त[3] और वोह उमूर जिन के ज़िक्र से ह़या आती है और वोह जिन के ज़िक्र से शर्म नहीं आती। येह सब ब त़रीक़े नक़्ल उम्मत तक पहुंच जाएं चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा शर्मीले[4] थे इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने आप के लिये चार से ज़ाइद औ़रतें जाइज़ कर दीं जो शरअ़ में से नक़्ल करें ह़ज़रत के अफ़्आ़ल आंखों देखे और अक़्वाल कानों सुने, जिन को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मर्दों के सामने बयान करने से ह़या करते थे ताकि इस त़रह़ नक़्ले शरीअ़त कामिल हो जाए। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाज की ता'दाद कसीर हो गई ताकि इस त़रह़ के अक़्वाल व अफ़्आ़ल के नक़्ल करने वाले ज़ियादा हो जाएं। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ ही से ग़ुस्ल व हैज़ व इ़द्दत वग़ैरा के मसाइल मा'लूम हुवे। येह कसरते अज़्वाज हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से مَعَاذَ اللّٰه शहवत की ग़रज़ से न थी और न आप वत़ी को العياذ بالله लज़्ज़ते बशरिय्या के लिये पसन्द फ़रमाते थे। औ़रतें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सिर्फ़ इस वासित़े मह़बूब बनाई गईं कि वोह आप से

---

1 .....**अल्लाह** से ख़ास तअ़ल्लुक़।

2 .....شرح النسائى للسيوطى، كتاب عشرة النساء، باب حبّ النساء، ج٤، الجزء٧، ص٦٢-٦٣-علميه

3 .....शरीअ़त के ज़ाहिरी और बात़िनी उमूर।

4 .....शर्म वाले।

www.dawateislami.net

ऐसे मसाइल नक़्ल करें जिन के ज़बान पर लाने से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शर्मो ह़या करते थे। पस आप बदीं वज्ह अज़्वाज से मह़ब्बत रखते थे कि इस में शरीअ़त के ऐसे मसाइल नक़्ल करने पर इआ़नत थी। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ ने वोह मसाइल नक़्ल किये जो किसी और ने नहीं किये। चुनान्चे, इन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मनाम और ह़ालते ख़ल्वत में जो नबुव्वत की आयाते बय्यिनात देखीं और इ़बादत में आप का जो इजतिहाद देखा और वोह उमूर देखे कि हर आ़क़िल शहादत देता है कि वोह सिर्फ़ पैग़म्बर में होते हैं और अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ के सिवा कोई और उन को न देख सकता था। येह सब अज़्वाजे मुत़ह्हरात से मरवी हैं। इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कसरते अज़्वाज से नफ़ए अ़ज़ीम ह़ासिल हुवा।(1)

ईमान पर ख़ातिमे के चार अवराद

एक शख़्स आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर के लिये दुआ़ का त़ालिब हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : ﴾1﴿ (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को يَاحَیُّ یَا قَیُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ अव्वलो आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ ﴾2﴿ सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द सूरए काफ़िरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा। और ﴾3﴿ तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ़ का विर्द रखें :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ نُّشْرِکَ بِکَ شَیْـًٔا نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُکَ لِمَا لَانَعْلَمُهٗ (الملفوظ، حصہ۲،ص۳۱۱، مکتبۃ المدینہ باب المدینہ)

﴾4﴿ بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی نَفْسِیْ وَ وُلْدِیْ وَ اَھْلِیْ وَ مَالِیْ. सुब्ह़ो शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहें। (فیض القدیر شرح الجامع الصغیر،الحدیث:٦١٣٩،٦١٤٠،ج٤، ص٦٨٣)

(ग़ुरूबे आफ़्ताब से सुब्ह़ सादिक़ तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है।)

---

1 ......زہرالربیع للسیوطی وحاشیہ سندی برنسائی۔......(شرح النسائی للسیوطی ، کتاب: عشرة النساء ، باب میل الرجل الی بعض نسائه دون بعض، ج٤،جز ٧، ص٦٤۔علمیه)

www.dawateislami.net

दसवां बाब

उम्मत पर आं ह़ज़रत صلی اللہ علیہ وسلم के हुक़ूक़ का बयान

﴾1﴿ **ईमान व इत्तिबाअ़ :**

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत व रिसालत पर ईमान लाना फ़र्ज़ है। आप जो कुछ **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से लाए हैं उस की तस्दीक़ फ़र्ज़ है। ईमान बिर्रसूल के बिग़ैर कोई शख़्स मुसलमान नहीं हो सकता।

وَمَنۡ لَّمۡ یُؤۡمِنۡۢ بِاللّٰہِ وَرَسُوۡلِہٖ فَاِنَّاۤ اَعۡتَدۡنَا لِلۡکٰفِرِیۡنَ سَعِیۡرًا ﴿۱۳﴾ (فتح، ع۲)

*और जो कोई **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान न लाया पस तह़क़ीक़ हम ने काफ़िरों के लिये आग तय्यार कर रखी है।*[(1)]

इस आयत में बता दिया गया है कि जो शख़्स ईमान बिल्लाह और ईमान बिर्रसूल का जामेअ़ न हो वोह काफ़िर है।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त वाजिब है। आप के अवामिर का इम्तिसाल[(2)] और आप के नवाही[(3)] से इजतिनाब लाज़िम है।

وَمَاۤ اٰتٰىکُمُ الرَّسُوۡلُ فَخُذُوۡہُ ٭ وَمَا نَہٰىکُمۡ عَنۡہُ فَانۡتَہُوۡا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰہَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ شَدِیۡدُ الۡعِقَابِ ۘ﴿۷﴾ (سورہ حشر، ع۱)

*और जो कुछ रसूल तुम को दे तुम उसे ले लो और जिस से तुम को मन्अ़ फ़रमाए उस से तुम बाज़ रहो और **अल्लाह** से डरो तह़क़ीक़ **अल्लाह** सख़्त अ़ज़ाब करने वाला है।*[(4)]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत व सुन्नत का इक़्तिदा व इत्तिबाअ़ वाजिब है।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो ईमान न लाए **अल्लाह** और उस के रसूल पर तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिये भड़कती आग तय्यार कर रखी है। (پ۲۶،الفتح:۱۳) **इल्मिय्या**

2.....अह़कामात की ता'मील।

3.....जिन से आप ने मन्अ़ फ़रमाया।

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़त़ा फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** का अ़ज़ाब सख़्त है। (پ۲۸،الحشر:۷) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۳۱﴾ (آل عمران، ع۴)

कह दीजिये अगर तुम **अल्लाह** की महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो **अल्लाह** तुम को दोस्त रखेगा और तुम को तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (1)

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْیَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِیْرًا ﴿۲۱﴾ (احزاب، ع۳)

बेशक तुम्हारे वासिते़ रसूलुल्लाह में अच्छी पैरवी थी उस शख़्स के लिये जो सवाब ख़ुदा और रोजे़ आख़िर की तवक़्क़ोअ़ रखता था और जिस ने **अल्लाह** को बहुत याद किया। (2)

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ (احزاب، ع۱)

नबी मोमिनों के लिये उन की जानों से सज़ावार तर हैं और अज़्वाजे पैग़म्बर उन की माएं हैं। (3)

इस आयत से ज़ाहिर है कि दीनो दुन्या के हर अम्र में आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मोमिनों को अपनी जानों से ज़ियादा प्यारे हैं। अगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी अम्र की त़रफ़ बुलाएं और उन के नुफ़ूस किसी दूसरे अम्र की त़रफ़ बुलाएं तो हुज़ूर की फ़रमां बरदारी लाज़िम है। क्यूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस अम्र की त़रफ़ बुलाते हैं उस में उन की नजात है और उन के नुफ़ूस जिस अम्र की त़रफ़ बुलाते हैं उस में उन की तबाही है इस लिये वाजिब है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मोमिनों को अपनी जानों से ज़ियादा मह़बूब हों वोह अपनी जानें हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर फ़िदा कर दें और जिस चीज़ की त़रफ़ आप बुलाएं उस का इत्तिबाअ़ करें।

ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी तफ़्सीर में इस आयत के तह़्त में तह़रीर फ़रमाते हैं : "जो शख़्स येह न समझा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही मेरी जान के मालिक हैं और येह न समझा कि तमाम ह़ालात में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ मह़बूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ۳،ال عمرٰن:۳۱) **इल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है उस के लिये कि **अल्लाह** और पिछले दिन की उम्मीद रखता हो और **अल्लाह** को बहुत याद करे। (پ۲۱،الاحزاب:۲۱) **इल्मिय्या**

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है और इस की बीबियां उन की माएं हैं। (پ۲۱،الاحزاب:۶) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

की विलायत (हुक्म व तसर्रुफ़) नाफ़िज़ है उस ने किसी ह़ाल में आप की सुन्नत की ह़लावत नहीं चखी क्यूंकि आप اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْن हैं।"

जै़ल में चन्द मिसालें पेश की जाती हैं जिन से अन्दाज़ा लग सकता है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हुज़ूर सरवरे अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ कैसे बे चूनो चिरा[1] किया करते थे।

﴿1﴾.....ह़ज़रते सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी वफ़ात से चन्द घन्टे पेशतर अपनी साहिबज़ादी ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से दरयाफ़्त किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कफ़न में कितने कपड़े थे ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ किस दिन हुई ?[2] इस सुवाल की वज्ह येह थी कि आप की आरज़ू थी कि कफ़न व यौमे वफ़ात में भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुवाफ़क़त नसीब हो।[3] ह़यात में तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ था ही वोह ममात में भी आप ही का इत्तिबाअ़ चाहते थे। **अल्लाह ! अल्लाह !** येह शौके़ इत्तिबाअ़ ! क्यूं न हो ! सिद्दीके़ अक्बर थे। رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

﴿2﴾.....ह़ज़रते सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जिस अम्र पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़मल किया करते थे मैं उसे किये बिग़ैर नहीं छोड़ता। अगर मैं आप के ह़ाल से किसी अम्र को छोड़ दूं तो मुझे डर है कि मैं सुन्नत से मुन्ह़रिफ़[4] हो जाऊंगा।[5]

﴿3﴾.....ज़ैद के बाप अस्लम से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ता़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देखा कि ह़जरे अस्वद को बोसा दिया और (उस की त़रफ़ निगाह कर के) फ़रमाया : अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे बोसा देते न देखा होता तो मैं तुझ को बोसा न देता। (بخاری، کتاب المناسک)[6]

1.....बिला ह़ीलो हुज्जत।

2......صحیح البخاری، کتاب الجنائز ، باب موت یوم اثنین،الحدیث:١٣٨٧، ج١، ص٤٦٨۔علمیه

3......صحیح بخاری، کتاب الجنائز، باب موت یوم الاثنین۔

4......نسیم الریاض بحوالہ ابوداؤد و بخاری۔

5......نسیم الریاض ، القسم الثانی فیما یجب علی الانام من حقوقه ...الخ،الباب الاول فی فرض الایمان ...الخ ، فصل فی ان مخالفة امره...الخ ، ج٤، ص٤١٤۔علمیه

6......صحیح البخاری ، کتاب الحج ، باب ما ذکر فی الحجر الاسود،الحدیث :١٥٩٧، ج١، ص٥٣٧۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾4﴿.....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी। आप ने उस को निकाल कर फेंक दिया और फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई येह चाहता है कि आग की अंगारी अपने हाथ में डाले ?" रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने के बा'द उस शख़्स से कहा गया कि तू अपनी अंगूठी उठा ले और (बेच कर) इस से फ़ाइदा उठा। उस ने जवाब दिया : नहीं ! **अल्लाह** की क़सम ! मैं इसे कभी न लूंगा हालांकि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे फेंक दिया है।[1] (مشکوٰۃ بحوالہ صحیح مسلم، باب الخاتم)

﴾5﴿.....ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का गुज़र एक जमाअ़त पर हुवा जिन के सामने भुनी हुई बकरी रखी थी। उन्हों ने आप को बुलाया आप ने खाने से इन्कार किया और फ़रमाया कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या से रिह़लत फ़रमा गए और जव की रोटी पेट भर कर न खाई।[2] (مشکوٰۃ بحوالہ صحیح بخاری، باب فضل الفقراء)

﴾6﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आटे की भूसी कभी साफ़ न की जाती थी।[3] (بخاری، کتاب الاطعمہ) इब्ने सा'द ने ब रिवायते अबू इस्ह़ाक़ रिवायत किया है कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बिन छाने आटे की रोटी खाते देखा है इस लिये मेरे वासिते़ आटा न छाना जाया करे।[4] (طبقات ابن سعد، جزء اول، قسم ثانی، ص۱۰۹)

﴾7﴿.....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को देखा गया कि अपनी ऊंटनी एक मकान के गिर्द फिरा रहे हैं। इस का सबब पूछा गया तो फ़रमाया कि मैं नहीं जानता मगर इतना कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसा करते देखा है इस लिये मैं ने भी किया।[5] (امام احمد و بزار) इस से मा'लूम होता है कि अकाबिर सह़ाबा उमूरे आ़दिय्या[6] में भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इक्तिदा किया करते थे।

---

1 ......مشكاة المصابيح، كتاب الباس، باب الخاتم، الحديث:٤٣٨٥، ج٢، ص١٢٣۔علميه

2 ......مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، باب فضل الفقراء...الخ، الحديث:٥٢٣٨، ج٢، ص٢٥٤۔علميه

3 ......صحيح البخارى، كتاب الاطعمة، باب ماكان النبى و اصحابه ياكلون، الحديث: ٥٤١٣، ج٣، ص٥٣٢۔علميه

4 ......الطبقات الكبرى لابن سعد، باب ذكر طعام رسول الله وما كان يعجبه منه، ج١ ص٣٠١۔علميه

5 ......الشفا بتعريف حقوق المصطفى، القسم الثانى، الباب الاوّل، فصل و امّاوردعن السلف، ج٢، ص١٥۔علميه

6 .....रोज़ मर्रा के आ़म मुआ़मलात।

www.dawateislami.net

﴾8﴿.....मस्जिदे नबवी से मुल्हिक़ ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मकान था जिस का परनाला बारिश में आने जाने वाले नमाज़ियों पर गिरा करता था। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे उखाड़ दिया। ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास आए और कहने लगे : **अल्लाह** की क़सम ! इस परनाले को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से मेरी गर्दन पर सुवार हो कर लगाया था। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि आप मेरी गर्दन पर सुवार हो कर इस को फिर उसी जगह लगा दो ! चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।[1]

﴾2﴿ मह़ब्बतो इश्क़ :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत वाजिब है। चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है :

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَ اَبْنَآؤُكُمْ وَ اِخْوَانُكُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِیْرَتُكُمْ وَ اَمْوَالُ اقْتَرَفْتُمُوْهَا وَ تِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَیْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ جِهَادٍ فِیْ سَبِیْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى یَاْتِیَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِیْنَ۠ ﴿۲۴﴾
(توبہ،ع۳)

*कह दीजिये अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा क़बीला व कुम्बा और माल जो तुम ने कमाए हैं और तिजारत जिस के मन्दा होने से तुम डरते हो और घर जो तुम पसन्द रखते हो तुम्हारे नज़्दीक **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में जिहाद से ज़ियादा प्यारे हैं तो तुम इन्तिज़ार करो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म भेजे और **अल्लाह** ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता।*[2]

इस आयत से साबित है कि हर मुसलमान पर **अल्लाह** और रसूल की मह़ब्बत वाजिब है क्यूंकि इस में बता दिया गया है कि तुम को **अल्लाह** और रसूल की मह़ब्बत का

---

1 ......وفاء الوفاء، اول، ص۳۴۸۔......(وفاء الوفاء، الفصل الثانی عشر فی زیادۃ عمر بن الخطاب...الخ، بین عمر بن الخطاب فی المسجد النبوی، ج۱، الجزء۲، ص۴۸٦۔علمیہ)

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि **अल्लाह** अपना हुक्म लाए और **अल्लाह** फ़ासिक़ों को राह नहीं देता। (پ۱۰،التوبۃ:۲۴) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

दा'वा है इस लिये कि तुम ईमान लाए हो पस अगर तुम ग़ैर की महब्बत को **अल्लाह** और रसूल की महब्बत पर तरजीह़ देते हो तो तुम अपने दा'वे में सादिक़ नहीं हो। अगर तुम इस त़रह़ मह़ब्बते ग़ैर से अपने दा'वे की तकज़ीब करते रहोगे तो खुदा के क़ह्र से डरो। आयत के अख़ीर हिस्से से ज़ाहिर है कि जिस को **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत नहीं वोह फ़ासिक़ है।

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम में से कोई मोमिन (कामिल) नहीं बन सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस के बाप और उस की अवलाद और तमाम लोगों की निस्बत ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं। (بخاری،کتاب الایمان)[1]

ज़ैल में चन्द मिसालें पेश की जाती हैं जिन से ज़ाहिर है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم और सलफ़े सालिह़ीन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कैसी मह़ब्बत थी।

﴾1﴿.....एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि बेशक आप सिवाए मेरी जान के जो मेरे दो पहलूओं में है मेरे नज़्दीक हर शै से ज़ियादा मह़बूब हैं। आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से कोई हरगिज़ मोमिने (कामिल) नहीं बन सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस की जान से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई बेशक आप मेरे नज़्दीक मेरी जान से जो मेरे दो पहलूओं में है ज़ियादा मह़बूब हैं। इस पर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَلْاٰنَ یَا عُمَر या'नी ऐ उ़मर ! अब तुम्हारा ईमान कामिल हो गया। (صحیح بخاری)[2]

﴾2﴿.....ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त आया तो आप ने अपने साह़िबज़ादे से अपनी तीन ह़ालतें बयान कीं। दूसरी ह़ालत बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "कोई शख़्स मेरे नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब और मेरी आंखों में आप से ज़ियादा जलालत व हैबत वाला न था। मैं आप की हैबत के सबब से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नज़र भर कर न देख सकता था।" (صحیح مسلم)[3]

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب الایمان، باب حب الرسول من الایمان، الحدیث:١٥، ج١، ص١٧۔علمیه

2 ......صحیح البخاری،کتاب الأیمان والنذور،باب کیف کانت یمین النبی، الحدیث: ٦٦٣٢،ج٤، ص٢٨٣......والشفاء، القسم الثانی فیما یجب علی الانام، الباب الثانی فی لزوم محبته، ج٢ ص١٩۔علمیه

3 ......صحیح مسلم ،کتاب الأیمان،باب کون الاسلام یهدم ما قبله ...الخ، الحدیث: ١٩٢، ص٧٤-٧٥۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....जब फ़त्हे मक्का के दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद अबू क़ुह़ाफ़ा ईमान लाए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुश हुवे। इस पर ह़ज़रते सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया : क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप को दीने ह़क़ दे कर भेजा है इस (अबू क़ुह़ाफ़ा) के इस्लाम की निस्बत (आप के चचा) अबू त़ालिब का इस्लाम (अगर वोह इस्लाम लाते) मेरी आंखों को ज़ियादा ठन्डा करने वाला होता इस वासित़े कि अबू त़ालिब का इस्लाम आप की आंख को (बहुत से उमूर की निस्बत) ज़ियादा ठन्डा करने वाला था।[1]

﴾4﴿.....ह़ज़रते समामा बिन उसाल यमामी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जो अहले यमामा के सरदार थे ईमान ला कर कहने लगे : "ऐ मुह़म्मद ! ख़ुदा की क़सम ! मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ न था आज वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा मह़बूब है। **अल्लाह** की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई दीन आप के दीन से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। अब वोही दीन मेरे नज़्दीक सब दीनों से ज़ियादा मह़बूब है। **अल्लाह** की क़सम ! मेरे नज़्दीक कोई शहर आप के शहर से ज़ियादा मबग़ूज़ न था। अब वोही शहर मेरे नज़्दीक सब शहरों से ज़ियादा मह़बूब है।" (صحیح بخاری، باب وفد بنی حنیفہ)[2]

﴾5﴿.....ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़तबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا (ज़ौजए अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब) जो ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का कलेजा चबा गई थीं ईमान ला कर कहने लगीं : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ न थे लेकिन आज से मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब नहीं रहे।" (صحیح بخاری، باب ذکر ہند بنت عتبہ)[3]

﴾6﴿.....ह़ज़रते सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ह़ुनैन के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे माल अ़त़ा फ़रमाया ह़ालांकि आप मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ थे आप मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे यहां तक कि आप मेरी नज़र में मह़बूब तरीन ख़ल्क़ हो गए। (جامع ترمذی۔ باب ماجاء فی اعطاء المؤلفة قلوبہم)[4]

---

1 ......نسیم الریاض بحوالہ احمد و ابن اسحاق۔ اصابہ، ترجمہ ابوطالب۔......(الاصابة فی تمییز الصحابة حرف الطاء المهملة، ۱۰۱۷۵ ابو طالب، ج۷، ص۱۹۹ ملخصاً۔علمیه)

2 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب وفد بنی حنیفه...الخ، الحدیث:۴۳۷۲، ج۳، ص۱۳۱-۱۳۲ ملخصاً۔علمیه

3 ......صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ذکر هند بنت عتبة...الخ، الحدیث: ۳۸۲۵، ج۲، ص۵۶۷ ملخصاً۔علمیه

4 ......سنن الترمذی، کتاب الزکاة، باب:ما جآء فی اعطاء المولفة، الحدیث: ٦٦٦، ج۲، ص۱۴۷۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾7﴿.....फ़त्हे मक्का में ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब को जो अब तक ईमान न लाए थे अपने पीछे ख़च्चर पर सुवार कर के रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने अ़र्ज़ किया : अगर इजाज़त हो तो इस दुश्मने ख़ुदा की गर्दन उड़ा दूं। ह़ज़रते अ़ब्बास ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने अबू सुफ़्यान को पनाह दी है। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने इसरार किया तो ह़ज़रते अ़ब्बास ने कहा : ऐ इब्ने ख़त्ताब ! अगर अबू सुफ़्यान क़बीलए बनू अ़दी में से होते तो आप ऐसा न कहते। इस पर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने कहा : ऐ अ़ब्बास ! जिस दिन आप इस्लाम लाए आप का इस्लाम मेरे नज़दीक ख़त्ताब के इस्लाम से (अगर वोह इस्लाम लाता) ज़ियादा मह़बूब था क्यूंकि आप का इस्लाम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नज़दीक ज़ियादा मह़बूब था।[1]

﴾8﴿.....जंगे उहुद में एक अ़फ़ीफ़ा[2] के बाप, भाई और शोहर शहीद हो गए। उसे येह ख़बर लगी तो कुछ परवा न की और पूछा कि येह तो बताओ कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उसे बता दिया गया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم بِحَمْدِ اللّٰهِ ब ख़ैर हैं तो बोली कि मुझे दिखा दो ! हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर कहने लगी : كُلُّ مُصِيْبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ तेरे होते हर एक मुसीबत हैच है।[3] (सीरते इब्ने हिशाम)

बढ़ कर उस ने रुख़े अक़्दस को जो देखा तो कहा
तू सलामत है तो फिर हैच हैं सब रन्जो अलम
मैं भी और बाप भी शोहर भी बरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुवे क्या चीज़ हैं हम

﴾9﴿.....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन सा'द का बयान है कि ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का पाउं सुन हो गया। इन से येह सुन कर एक शख़्स ने कहा कि आप के नज़दीक जो सब लोगों से ज़ियादा मह़बूब है उसे याद कीजिये। येह सुन कर आप ने कहा : या मुह़म्मद ![4] صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (और आप का पाउं अच्छा हो गया।)[5]

---

1 ......بیہقی وبزار۔اصابہ،ترجمہ ابو طالب بحوالہ ابن اسحاق۔ ...... (الاصابة فی تمییز الصحابة ،حرف الطاء المهملة،اصابة١٠١٧٥، ابو طالب،ج٧،ص٢٠٠-٢٠١۔علمیه)

2 .....पारसा औ़रत।

3 ......السيرة النبوية لابن هشام، غزوة احد، ص ٣٤٠۔علميه

4 ......الادب المفرد للبخاری، باب مایقول الرجل اذا خدرت رجله۔

5 ......الأدب المفرد للبخاری،باب ما يقول الرجل اذاخدرت رجله،الحديث:٩٩٣،ص٢٦٢۔علميه

www.dawateislami.net

﴾10﴿.....ह़ज़रते बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात का वक़्त आया तो उन की बीवी ने कहा : وَا حُزْنَا (हाए ग़म) येह सुन कर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : وَا طَرَبَاهُ غَدًا اَلْقَى الْاَحِبَّةَ مُحَمَّدًا وَ حِزْبَه.[1] वारे खुशी ! मैं कल दोस्तों या'नी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और आप के अस्ह़ाब से मिलूंगा।[2]

﴾11﴿.....जब सिने 7 हिजरी में क़बीलए अश्अ़रिय्यीन में से ह़ज़रते अबू मूसा वग़ैरा मदीना शरीफ़ को आए तो ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने से पहले पुकार पुकार कर यूं कहने लगे : غَدًا نَلْقِي الْاَحِبَّةَ مُحَمَّدًا وَ حِزْبَه हम कल दोस्तों या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के दोस्तों से मिलेंगे।[3]

﴾12﴿.....जंगे उहुद के बा'द क़बीलए अ़ज़ल वक़ारह के चन्द अश्ख़ास आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। कहने लगे कि आप अपने चन्द अस्ह़ाब को हमारे साथ रवाना कर दें ताकि वोह हम को इस्लाम की ता'लीम दिया करें। आप ने मर्सद बिन अबी मर्सद, ख़ालिद बिन बुकैर, आ़सिम बिन साबित, खुबैब बिन अ़दी, ज़ैद बिन[4] दसिन्ना और अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ को उन के साथ भेज दिया। जब वोह आबे रजीअ़ पर पहुंचे तो उन्हों ने बे वफ़ाई की और क़बीलए हुज़ैल को बुला लिया और हुज़ैल के साथ मुसल्लह़ हो कर उन अस्ह़ाब को घेर लिया और कहा कि खुदा की क़सम ! हम तुम को क़त्ल करना नहीं चाहते। हम तुम्हारे इ़वज़ में अहले मक्का से कुछ लेना चाहते हैं। ह़ज़रते मरसद व ख़ालिद व आ़सिम ने अपने तईं दुश्मनों के ह़वाले न किया और मुक़ाबला करते हुवे शहीद हो गए। बाक़ी तीनों के हाथ उन्हों ने जकड़ लिये। जब ज़हरान में पहुंचे तो अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ ने अपना हाथ निकाल लिया और तल्वार हाथ में ली। दुश्मन पीछे हट गया और दूर से पथ्थर फेंकते रहे यहां तक कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह शहीद हो गए। बाक़ी दो को उन्हों ने क़ुरैश के हाथ बेच दिया। चुनान्चे, ह़ज़रते ज़ैद को सफ़्वान बिन उमय्या ने

---

1 ......شفاء شریف۔

2 ......الشفاء، القسم الثانی فیما یجب علی الأنام، الباب الثانی...الخ، فصل فی علامات محبته، ج۲، ص ۲۳۔علمیه

3 .....ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब ब ह़वाला इमाम अह़मद वग़ैरा।

(الشفاء، القسم الثانی فیما یجب علی الأنام، الباب الثانی...الخ، فصل فی علامات محبته، ج۲، ص ۲۵۔علمیه)

4 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "ज़ैद बिन मुस्नह" लिखा है येह हमें नहीं मिला अलबत्ता "अस्सीरतुन्नबविय्या लि इब्ने हिशाम, उसुदुल ग़ाबह, अल मुस्तदरक अ़लल सह़ीह़ैन लिल ह़ाकिम" और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में "ज़ैद बिन दसिन्ना" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "ज़ैद बिन मुस्नह" के बजाए "ज़ैद बिन दसिन्ना" लिखा है। و اللّٰه تعالٰی اعلم بالصواب **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

ख़रीदा ताकि उन को अपने बाप उमय्या बिन ख़लफ़ के बदले क़त्ल कर दे। सफ़्वान ने ह़ज़रते ज़ैद को अपने ग़ुलाम निस्त़ास के साथ तनईम भेज दिया। ह़ज़रते ज़ैद को क़त्ल करने के लिये ह़द्दे ह़रम से बाहर ले गए तो अबू सुफ़्यान ने (जो अब तक इस्लाम न लाए थे) उन से यूं कहा : "ऐ ज़ैद ! मैं तुम को ख़ुदा की क़सम दे कर पूछता हूं क्या तुम येह पसन्द करते हो कि इस वक़्त हमारे पास बजाए तुम्हारे मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हों जिन को हम क़त्ल कर दें और तुम आराम से अपने अह्ल में बैठो।"

ह़ज़रते ज़ैद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जवाब दिया : "**अल्लाह** की क़सम ! मैं पसन्द नहीं करता कि मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस वक़्त जिस मकान में तशरीफ़ रखते हैं उन को एक कांटा लगने की तक्लीफ़ भी हो, और मैं आराम से अपने अह्ल में बैठा रहूं !"

येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा : "मैं ने लोगों में से किसी को नहीं देखा कि दूसरों से ऐसी मह़ब्बत रखता हो जैसा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से रखते हैं।"

उस के ग़ुलाम निस्त़ास ने ह़ज़रते ज़ैद को शहीद कर दिया। رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه (سیرت ابن ہشام بروایت ابن اسحاق)[1]

अ़लामाते हुब्बे सादिक़

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुह़िब्बे सादिक़ में अ़लामाते ज़ैल पाई जाती हैं। अगर कोई शख़्स हुब्बे अह़मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दा'वा करे और उस में येह अ़लामात न पाई जाएं तो वोह हुब्ब में सादिक़ व कामिल नहीं।

﴾1﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वालो अफ़्आ़ल व आसार का इक़्तिदा, आप की सुन्नत पर अ़मल, आप के अवामिर का इम्तिसाल[2] और आप की नवाही[3] से इजतिनाब और आप के आदाब से आरास्ता होना।

﴾2﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र कसरत से करना। मसलन दुरूद शरीफ़ कसरत से पढ़ना, ह़दीस शरीफ़ पढ़ना, मौलूद शरीफ़ का पढ़ना या मजालिसे मीलाद शरीफ़ में शामिल होना।

---

1 ......السيرة النبوية لابن هشام ،غزوة احد، ذكر يوم الرجيع في سنة ثلاث، ج٣، ص٣٦٩- ٣٧١ـعلميه

2.....अह़काम की ता'मील। 3.....जिन से आप ने मन्अ़ फ़रमाया।

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने का निहायत इश्तियाक़ पैदा होना जैसा कि ह़ज़रते बिलाल व अबू मूसा वग़ैरा को था। رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم

﴾4﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना। (तफ़्सील आगे आएगी اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی)

﴾5﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिन से मह़ब्बत रखते थे (अहले बैते इ़ज़ाम व सह़ाबए किराम मुहाजिरीन व अन्सार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم) इन से मह़ब्बत रखना और जो शख़्स इन बुज़ुर्गवारों से अ़दावत रखे उस से अ़दावत रखना और जो इन को सब्बो शतम करे[1] उस को बुरा जानना।

सह़ाबए किराम को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस क़दर मह़ब्बत थी कि मुबाह़ात में भी जो अश्या हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मह़बूब व पसन्दीदा थीं वोही सह़ाबए किराम को भी मह़बूब थीं। जैसा कि वाक़िआ़ते ज़ैल से ज़ाहिर है।

ह़ज़रते उ़बैद बिन[2] जुरैज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि उस ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से कहा कि मैं ने देखा कि तुम बैल के दबाग़त किये हुवे चमड़े का बे बाल जूता पहनते हो। ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि आप ऐसा जूता पहना करते थे जिस में बाल न हों और उसी में वुज़ू किया करते थे इस लिये मैं दोस्त रखता हूं कि ऐसा जूता पहनूं। (शमाइले तिर्मिज़ी)[3]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खाने के लिये बुलाया जो उस ने तय्यार किया था। मैं भी हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ गया जव की रोटी और शोरबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे लाया गया जिस में कद्दू और ख़ुश्क किया हुवा नमकीन गोश्त था। मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि प्याले के अत़राफ़ से कद्दू की क़ाशें तलाश करते थे इस लिये मैं उस दिन के बा'द से कद्दू हमेशा पसन्द करता रहा। (مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین، کتاب الاطعمہ)[4]

1.....बुरा भला कहना।

2.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां इस त़रह़ लिखा है: उ़बैद बिन जरीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि उस ने ह़ज़रत उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से कहा.....इलख़, जब कि "शमाइले तिर्मिज़ी" में है: "عن عبيد بن جريج انه قال لابن عمر رأيتك تلبس النعال......الخ"

इस के इ़लावा बुख़ारी, मुस्लिम, दलाइलुन्नुबुव्वत लिल बैहक़ी, सुबलुल हुदा वर्रुशाद और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में भी (अल्फ़ाज़े मुख़्तलिफ़ा के साथ इस रिवायत में) "उ़बैद बिन जुरैज" और "इब्ने उ़मर" का ज़िक्र है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "उ़बैद बिन जरीह़" और "उ़मर" के बजाए "उ़बैद बिन जुरैज" और "इब्ने उ़मर" लिखा है। واللّٰہ تعالٰی اعلم بالصواب **इ़ल्मिय्या**

3.....الشمائل المحمدية للترمذى، الباب فى نعله، الحديث:٧٤، ص٦٤۔علميه

4.....مشكاة المصابيح، كتاب الاطعمة، الحديث:٤١٨٠، ج٢، ص٩٢۔علميه

www.dawateislami.net

इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ के सामने इस रिवायत का ज़िक्र आया कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कद्दू को पसन्द फ़रमाते थे। एक शख़्स ने कहा : اَنَا مَا اُحِبُّہٗ (मैं इस को पसन्द नहीं करता) येह सुन कर इमाम मौसूफ़ ने तल्वार खींच ली और फ़रमाया : جَدِّدِ الْاِیْمَانَ وَ اِلَّا لَاَقْتُلَنَّکَ तजदीदे ईमान कर वरना मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा। (مرقاۃ، جزء ثانی، ص ۷۷)[1]

एक रोज़ ह़ज़राते ह़सन बिन अ़ली और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र बिन अबी त़ालिब ह़ज़रते सलमा (ख़ादिमए रसूलुल्लाह) के पास आए और कहने लगे कि हमारे वासित़े वोह खाना तय्यार करो जिसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाया करते और ख़ुश हो कर खाया करते थे। उस ने (इमामे ह़सन से) कहा : बेटा ! आज तुम इसे पसन्द न करोगे। ह़ज़रते इमाम ने कहा कि तुम हमारे वासित़े वोही तय्यार कर दो। पस ह़ज़रते सलमा ने कुछ जव का आटा एक हन्डिया में चढ़ा दिया। ऊपर से रोग़ने ज़ैतून और काली मिर्चें और ज़ीरा डाल दिया। पक गया तो उन के आगे रख कर कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस खाने को पसन्द फ़रमाया करते थे और ख़ुश हो कर खाया करते थे। (شمائل ترمذی) [2]

﴾6﴿.....जो लोग आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखें उन को अपना दुश्मन समझना और मुख़ालिफ़े सुन्नत व मुब्तदेअ़ से दूर रहना, मुख़ालिफ़े शरीअ़त से नफ़रत करना।

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ (مجادلہ، ع ۳)

*तू न पाएगा किसी क़ौम को जो **अल्लाह** और रोज़े आख़िर पर ईमान रखते हैं कि वोह दोस्ती करें ऐसों से जो **अल्लाह** और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं। अगर्चे वोह लोग उन के बाप या उन के बेटे या उन के भाई या उन के घराने के हों।*[3]

---

1 .....مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلاۃ، باب الجماعۃ وفضلھا، ج۳، ص۱٦٦۔علمیه

2 .....الشمائل المحمدیة للترمذی، الباب فی ادام رسول اللّٰہ، الحدیث:۱٦۹، ص۱۱۱۔علمیه

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों। (پ۲۸، المجادلۃ:۲۲) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस आयत पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का पूरा पूरा अ़मल था। उन्हों ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इआ़नत में अपनी आबरू और जानो माल से दरेग़ न किया। कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के हाथों से अज़िय्यतें बरदाश्त कीं। ख़ुदा व रसूल के लिये अपना वत़न छोड़ा, ख़्वीश[1] व अक़ारिब से रिश्तए उल्फ़त तोड़ा, ए'लाए कलिमतुल्लाह के लिये जिहाद किया और ख़ुदा व रसूल की ख़ुशनूदी के लिये आ'दाए इस्लाम को ख़्वाह अक़ारिब ही हों क़त्ल किया या करना चाहा। चुनान्चे, ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यौमे बद्र में अपने वालिद को क़त्ल कर दिया।[2] अ़ब्दुल्लाह बिन उबय जो रासुल मुनाफ़िक़ीन[3] था उस के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : इजाज़त हो तो मैं इब्ने उबय को क़त्ल कर दूं। मगर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त न दी।[4] ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे बद्र में अपने मामूं आ़स बिन हिशाम बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी को क़त्ल कर दिया।[5] बद्र के दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लड़के अ़ब्दुर्रह़मान ने जो उस वक़्त तक ईमान न लाए थे मुबारिज़ त़लब किया तो ख़ुद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तल्वार खींच कर खड़े हो गए मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त न दी।[6] जंगे उहुद में ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने भाई को क़त्ल कर दिया।[7] ह़ज़राते अ़ली व ह़म्ज़ा व उ़तबा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने जंगे बद्र में उ़तबा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन उ़तबा को जो उन के घराने के थे क़त्ल कर डाला। जंगे बद्र के ख़ातिमे पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ैदियों के बारे में अपने अस्ह़ाब से मश्वरा किया। ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़िदया ले कर छोड़ देने का मश्वरा दिया लेकिन ह़ज़रते

---

1 .....रिश्तेदार।

2 ......اصابہ بحوالہ طبرانی۔......(الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف العین المهملة،عامر بن عبد الله: ٤٤١٨،ج٣،ص٤٧٦۔علمیه)

3 .....मुनाफ़िक़ीन का सरदार।

4 ......اصابہ،ترجمہ عبداللہ بن عبداللہ بن ابی۔......(الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف العین المهملة ، ترجمة : ٤٨٠٢ ، ج٤، ص١٣٣۔علمیه)

5 ......سیرت ابن ہشام۔......(السیرة النبویة لابن هشام ، من قتل ببدر من المشرکین، من بنی مخزوم، ص٢٩٧۔علمیه)

6 ......استیعاب،ترجمہ عبدالرحمٰن بن ابی بکر۔......(الاستیعاب فی معرفة الاصحاب،ترجمةعبدالرحمن بن ابی بکر،ج،ص٣٦٨۔علمیه)

7 .....नसीमुर्रियाज़ वग़ैरा।

www.dawateislami.net

फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि आप इन को हमारे ह़वाले कर दें ताकि हम इन को क़त्ल कर दें। मसलन अ़क़ील को ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़वाले कर दें और मेरे फ़ुलां रिश्तेदार को मेरे सिपुर्द कर दें। मगर ह़ुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की राए पर अ़मल किया।[1]

﴾7﴿.....क़ुरआने करीम से मह़ब्बत रखना जिस को रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना ख़ुल्क़ बनाया हुवा था। क़ुरआने करीम से मह़ब्बत रखने की निशानी येह है कि हमेशा इस की तिलावत करे और इस के मआ़नी समझे और इस के अह़काम पर अ़मल करे। ह़ज़रते सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं :

"ख़ुदा की मह़ब्बत की निशानी क़ुरआन से मह़ब्बत रखना है और क़ुरआन से मह़ब्बत रखने की अ़लामत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखना है और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखने की अ़लामत आप की सुन्नत से मह़ब्बत रखना है और सुन्नत से मह़ब्बत रखने की निशानी आख़िरत से मह़ब्बत रखना है और आख़िरत से मह़ब्बत रखने की निशानी दुन्या से बुग़्ज़ रखना है और बुग़्ज़े दुन्या की अ़लामत येह है कि इस से ब जुज़ कफ़ाफ़ व क़ुव्वते ला यमूत ज़ख़ीरा न करे जैसा कि मुसाफ़िर अपने हाथ उसी क़दर तौशा ले जाता है कि जिस से मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंच जाए।"

﴾8﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर शफ़्क़त रखना और इन की ख़ैर ख़्वाही करना जैसा कि ख़ुद ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किया करते थे।

﴾9﴿.....दुन्या में रग़बत न करना और फ़क़्र को ग़िना पर तरजीह़ देना। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल का बयान है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा की क़सम ! मैं बेशक आप से मह़ब्बत रखता हूं। ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : देख तू क्या कहता है। उस ने तीन मरतबा येही अ़र्ज़ किया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तू मुझ से मह़ब्बत रखता है तो फ़क़्रो फ़ाक़े के लिये

1 ......صحیح مسلم، باب الامداد بالملائکۃ فی غزوۃ بدر...... (صحيح مسلم، كتاب الجهاد و السير، باب : الامداد بالملائكة...الخ، الحديث: ١٧٦٣، ص ٩٧٠ علميه)

www.dawateislami.net

बरगुस्तवान[1] तय्यार कर ले क्यूंकि फ़क़्रो फ़ाक़ा मेरे मुहि़ब्ब की त़रफ़ इस से भी जल्दी पहुंचता है जितनी कि पानी की रो अपने मुन्तहा की त़रफ़ पहुंचती है।[2]

इस ह़दीस में बरगुस्तवान किनाया सब्र से है जिस त़रह़ लड़ाई में बरगुस्तवान घोड़े को अज़िय्यत से बचाती है इसी त़रह़ सब्र आ़शिक़े रसूले खुदा को फ़क़्रो फ़ाक़े की अज़िय्यत से बचाता है क्यूंकि सब्र के बिग़ैर नुफ़ूस फ़क़्र की तक्लीफ़ को बरदाश्त नहीं कर सकते।

खुश नसीब वोह लोग हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत रखते और आप की इत़ाअ़त करते हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : आप क्या फ़रमाते हैं उस शख़्स की निस्बत जो ऐसी क़ौम से मह़ब्बत रखता है जिन से उस की मुलाक़ात नहीं हुई। आप ने फ़रमाया : اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ या'नी इन्सान क़ियामत के दिन उन लोगों के ज़ुमरे में उठेगा जिन से वोह मह़ब्बत रखता था।[3]

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि क़ियामत कब होगी ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुझ पर अफ़्सोस ! तू ने उस दिन के लिये क्या तय्यार किया है ? उस ने जवाब दिया कि मैं ने कुछ तय्यार नहीं किया। हां खुदा और रसूल से मह़ब्बत रखता हूं। आप ने फ़रमाया कि तू उस के साथ होगा कि जिस से मह़ब्बत रखता है।[4]

इस ह़दीस के तह़्त में शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

1.....एक हि़फ़ाज़ती लुबादा जो जंग में पहनते हैं और घोड़े पर भी डालते हैं।

2.....ترمذی،ابواب الزہد۔ ...... (سنن الترمذی ، کتاب الزھد ، باب : ما جآء فی فضل الفقر ، الحدیث : ۲۳۵۷ ، ج ٤ ، ص١٥٧۔علمیه)

3.....مشکوٰۃ بحوالہ صحیحین،باب الحب فی اللہ ومن اللہ۔......(مشکاۃ المصابیح ، کتاب الآداب ، باب : الحب فی اللہ ومن اللہ ، الحدیث:٥٠٠٨ ج٣، ص٧٥۔علمیه)

4.....درمنثور بحوالہ طبرانی وابن مردویہ وابونعیم فی الحلیۃ والضیاء المقدسی فی صفۃ الجنۃ۔......(صحیح البخاری ، کتاب الآداب ، باب:ما جاء فی قول الرجل ویلك،الحدیث:٦١٦٧،ج٤،ص١٤٦۔علمیه)

www.dawateislami.net

چوں خدارا دوست مے داری در جوار رحمت وعزت وے خواہی بود و چوں رسول خدارا دوست داری نیز از مقام قربت وعنایت وے بہرہ ور باشی اگرچہ مقام او بلندتر و عزیز تر است کہ کسے بآنجا نرسد اما نور محبت وتبعیت وے بر محبان وتابعان وے خواہد تافت[1] وبمعیت قربت وے مشرف خواہد ساخت۔"[2]

हज़्रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान फ़रमाती हैं[3] कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप बेशक मेरे नज़्दीक मेरी जान और मेरी अवलाद से ज़ियादा प्यारे हैं, मैं अपने घर में होता हूं मगर जिस वक़्त आप याद आ जाते हैं तो जब तक आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर आप को देख न लूं सब्र नहीं आता। जब मैं अपनी मौत और आप की मौत को याद करता हूं तो मैं यक़ीन करता हूं कि जन्नत में दाख़िल हो कर आप अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ बुलन्द मर्तबे में उठाए जाएंगे और मैं जब जन्नत में दाख़िल होऊंगा तो (अदना दरजे में होने के सबब से) मुझे डर है कि आप को न देख सकूंगा। येह सुन कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे कुछ जवाब न दिया यहां तक कि ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام येह आयत ले कर नाज़िल हुवे :

وَمَنۡ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوۡلَ فَاُولٰٓـئِكَ مَعَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيۡقِيۡنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيۡنَ‌ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓـئِكَ رَفِيۡقًا ﴿۶۹﴾ (نساء،ع۹)[4]

*और जो कोई **अल्लाह** और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे पस वोह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर **अल्लाह** ने इन्आ़म किया है या'नी पैग़म्बरों, सिद्दीक़ों, शहीदों और नेकों के साथ और येह अच्छे रफ़ीक़ हैं।*[5]

1.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "تاخت" लिखा है जो कि किताबत की ग़लत़ी मा'लूम होती है क्यूंकि "अशिअ़तुल्लम्आ़त" में "تافت" है और अज़् रूए मा'ना भी "تافت" ही मुनासिब मा'लूम होता है लिहाज़ा हम ने यहां "अशिअ़तुल्लम्आ़त" के मुत़ाबिक़ "تافت" लिखा है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमा :** जब तू **अल्लाह** और उस के रसूल से मह़ब्बत रखता है तो तुझे **अल्लाह** के जवारे रह़मत और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़ुर्ब में जगह नसीब होगी अगर्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मक़ाम बहुत बुलन्द है और वहां तक कोई नहीं पहुंच सकता लेकिन आप की पैरवी और मह़ब्बत का नूर आप के मुह़िब्बीन व ताबेईन पर ज़रूर चमकेगा। **इल्मिय्या** (اشعة اللمعات، کتاب الآداب، باب الحب فی اللہ و من اللہ، ج٤، ص١٤٤) **इल्मिय्या**

3.....درمنثور بحوالہ طبرانی وابن مردویہ وابو نعیم فی الحلیۃ والضیاء المقدسی فی صفۃ الجنۃ۔

4.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं। (پ٥، النساء:٦٩) **इल्मिय्या**

5.....الدر المنثور فی التفسیر الماثور، سورۃ النساء، تحت الآیۃ: ٧٠، ج٢، الجزء٥، ص٥٨٨۔علمیہ

www.dawateislami.net

﴾3﴿ ता'ज़ीम व तौक़ीर

जै़ल में वोह आयात पेश की जाती हैं जिन में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर का ज़िक्र है :

(الف)

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًاۙ ﴿۸﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ تُعَزِّرُوْهُ وَ تُوَقِّرُوْهُؕ وَ تُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ﴿۹﴾ (فتح، ع ۱)

हम ने तुझे अह़वाल बताने वाला और ख़ुश ख़बरी देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा ताकि तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की मदद करो और उस की ता'ज़ीम करो और ख़ुदा को शाम व सुब्ह़ पाकी के साथ याद करो।(1)

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर के वाजिब होने की ता'लीम दी है।

(ب)

﴾1﴿ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَیْنَ یَدَیِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ﴿۱﴾

ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और उस के रसूल से आगे न बढ़ो और **अल्लाह** से डरो तह़क़ीक़ **अल्लाह** सुनने वाला जानने वाला है।(2)

﴾2﴿ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۲﴾

ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से ऊंची न करो और उस से बात ऊंची न कहो जैसा कि तुम एक दूसरे से कहते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारे आ'माल अकारत जावें और तुम्हें ख़बर न हो।(3)

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** की पाकी बोलो। (پ۲۶، الفتح:۸۔۹) **इल्मिय्या**

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और उस के रसूल से आगे न बढ़ो और **अल्लाह** से डरो बेशक **अल्लाह** सुनता जानता है। (پ۲۶، الحجرات:۱) **इल्मिय्या**

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो। (پ۲۶، الحجرات:۲) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

﴿3﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ﴿۳﴾

*तह़क़ीक़ जो लोग रसूलुल्लाह के पास अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं वोही हैं जिन के दिलों को **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये जांचा है उन के लिये मुआ़फ़ी और बड़ा सवाब है।*(1)

﴿4﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۴﴾

तह़क़ीक़ वोह लोग जो तुझे हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते।(2)

﴿5﴾ وَ لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَیْهِمْ لَكَانَ خَیْرًا لَّهُمْؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۵﴾ (حجرات، شروع)

*और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तू उन की त़रफ़ निकलता तो उन के वासित़े बेहतर होता और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।*(3)

सूरए हुजुरात की इन पांच आयतों में **अल्लाह** तआ़ला ने मोमिनों को आदाब ता'लीम फ़रमाए हैं।

आयह ﴿1﴾ में बताया गया है कि तुम किसी क़ौल या फ़े'ल या हुक्म में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पेश दस्ती न करो।(4) मसलन जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में कोई सुवाल करे तो तुम हुज़ूर से पहले उस का जवाब न दो। जब खाना ह़ाज़िर हो तो हुज़ूर से पहले खाना शुरूअ़ न करो। जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी जगह को तशरीफ़ ले जाएं तो तुम बिग़ैर किसी मस्लह़त के हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे न चलो। इमाम सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों को येह अदब सिखाया कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले तुम बात न करो। जब आप फ़रमाएं तो तुम आप के इरशाद को कान लगा कर सुनो और चुप रहो। आप के ह़क़ की फ़रोगुज़ाश्त(5) और आप के एह़तिराम व तौक़ीर के ज़ाएअ़ करने में तुम ख़ुदा से डरो। ख़ुदा तुम्हारे क़ौल को सुनता और तुम्हारे अ़मल को जानता है।

1...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है। (پ۲۶،الحجرات:۳) **इल्मिय्या**

2...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं। (پ۲۶،الحجرات:٤) **इल्मिय्या**

3...**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। (پ۲۶،الحجرات:۵) **इल्मिय्या**

4...या'नी आगे न बढ़ो।

5...कोताही।

www.dawateislami.net

आयह ﴾2﴿ का शाने नुज़ूल येह है कि सिने 9 हिजरी में बनी तमीम का एक वफ़्द आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि आप हम पर किसी को अमीर मुक़र्रर फ़रमा दें। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि आप क़अ़क़ाअ़ बिन मा'बद को अमीर बना दें। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि अक़राअ़ बिन ह़ाबिस को अमीर बना दें। ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा कि आप मेरी मुख़ालफ़त करते हैं। ह़ज़रते फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि नहीं ! इस त़रह़ दोनों झगड़ पड़े और उन की आवाज़ें बुलन्द हो गईं। इस पर येह आयत नाज़िल हुई। इस आयत के नुज़ूल के बा'द ह़ज़रते फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस क़दर धीमी आवाज़ से कलाम किया करते कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दोबारा दरयाफ़्त करने की ह़ाजत पड़ती[1] और ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब क़ौले ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا क़सम खा ली कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम न किया करूंगा मगर इस त़रह़ जैसा कि कोई अपने हमराज़ से पोशीदा बातें करता है।[2]

ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि जब आयह

لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ [3]

नाज़िल हुई तो ह़ज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ (जो बुलन्द आवाज़ और ख़त़ीबे अन्सार थे) घर में बैठ गए। कहने लगे कि मैं दोज़ख़ियों में से हूं और वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर न हुवे। एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि साबित का क्या ह़ाल है ? क्या वोह बीमार है ? ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि वोह मेरा हमसाया है मुझे मा'लूम नहीं कि वोह बीमार है। इस के बा'द सा'द ने ह़ज़रते साबित से रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ौल ज़िक्र किया। ह़ज़रते साबित ने कहा कि येह आयत नाज़िल हुई है। तुम्हें मा'लूम है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने तुम सब से ज़ियादा बुलन्द आवाज़ हूं इस लिये मैं दोज़ख़ियों में

---

1 ......بخاری، تفسیر سورۂ حجرات۔......(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورۃ الحجرات، باب :لاترفعوا اصواتکم...الخ، الحدیث :٤٨٤٥، ج٣ ص ٣٣١ وباب ان الذین ینادونك...الخ، ص٣٣٢، الحدیث:٤٨٤٧۔علمیه)

2 ......اسباب نزول للواحدی۔......(جامع اسباب النزول، سورۃ الحجرات، ص ٣٢٣۔علمیه)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से। (پ٢٦، الحجرات:٢) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

से हूं । ह़ज़रते सा'द ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह ज़िक्र कर दिया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं बल्कि वोह बिहिश्तियों में से है ।(1)

इस आयत की रू से आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस शरीफ़ में बुलन्द आवाज़ से बोलना इतना भारी गुनाह था कि इस से आ'माल अकारत व बरबाद हो जाते । **अल्लाह** तआ़ला को ह़ज़राते शैख़ैन व अमसालिहमा का त़रीक़े अदब पसन्द आया । इन की मदह़ में आयह ﴿3﴾ नाज़िल फ़रमाई और इन को मुत्तक़ी होने की सनद अ़त़ा फ़रमाई और क़ियामत के दिन इन को मग़फ़िरत व अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत दी ।

एक दफ़्आ़ बा'ज़ लोगों ने आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुजरों के बाहर से या मुह़म्मद या मुह़म्मद कह कर पुकारा । इस पर आयह ﴿4﴾ नाज़िल हुई(2) जिस में बता दिया गया है कि इस त़रह़ पुकारना सूए अदब है ऐसी जुरअत वोह लोग करते हैं जिन को अ़क़्ल नहीं । हुस्ने अदब और ता'ज़ीमे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो इस में थी कि वोह लोग हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे दौलत पर बैठ जाते और इन्तिज़ार करते यहां तक कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद बाहर तशरीफ़ लाते । इस त़रह़ का हुस्ने अदब इन के लिये मूजिबे सवाब था । जैसा कि आयह ﴿5﴾ में है ।

(ج)

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (نور،ع۹)

तुम अपने दरमियान रसूल का पुकारना ऐसा न ठहराओ जैसा कि एक दूसरे को पुकारते हो ।(3)

इस आयत में बता दिया गया है कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाम ले कर (या मुह़म्मद, या मुह़म्मद) न पुकारा करो जैसा कि एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हो बल्कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदब से यूं पुकारा करो : या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह । या ख़ैरे ख़ल्क़िल्लाह । इस का मज़ीद बयान पहले आ चुका है ।

---

1 ......صحیح مسلم، باب مخافات المؤمن ان یحبط عملہ۔......(صحيح مسلم ، كتاب الايمان،باب:مخافة المؤمن ان يحبط عمله، الحديث: ١١٩، ص٧٣-٧٤۔علميه)

2 ......جامع اسباب النزول، سورة الحجرات، ص ٣٢٣۔٣٢٤۔علميه

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है । (پ١٨،النور:٦٣) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

(ر)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَ قُوْلُوا انْظُرْنَا وَ اسْمَعُوْا ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾ (بقرہ، ع ۱۳)

ऐ ईमान वालो ! तुम رَاعِنَا न कहो और اُنْظُرْنَا कहो और बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।[1]

जिस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ इरशाद फ़रमाते तो मुसलमान अ़र्ज़ किया करते : "رَاعِنَا" (हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो जिये, या'नी ज़रा ठहरिये कि हम समझ लें) इ़बरानी ज़बान में इस लफ़्ज़ के मा'ना शरीर के हैं। यहूद इस लफ़्ज़ को ब त़रीक़े इस्तिहज़ा इस्ति'माल करते थे और ता'रीज़ व इशारा इसी मा'ना की त़रफ़ किया करते थे। चूंकि "رَاعِنَا" का इल्तिबास[2] इ़बरानी लफ़्ज़ से होता था इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने मोमिनो को ता'लीम दी कि तुम बजाए "رَاعِنَا" के "اُنْظُرْنَا" (हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हो जिये) इस्ति'माल करो।[3] जिस के मा'ना वोही हैं जो "رَاعِنَا" के हैं और इस में किसी क़िस्म की तल्बीस[4] का एह़तिमाल नहीं और तुम बग़ौर सुना करो ताकि दोबारा पूछने की ज़रूरत न पड़े। यहूद जो इस त़रह़ ता'रीज़ व इस्तिहज़ा करते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। इस आयत शरीफ़ से ज़ाहिर है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने मुबारक में ऐसे अल्फ़ाज़ मोह़तमला इस्ति'माल न करने चाहियें कि जिन में ता'रीज़ हो और तन्क़ीसे शान का वह्म हो।

आं ह़ज़रत صلى الله عليه وسلم की ता'ज़ीम व तौक़ीर और अदब के त़रीक़े

ज़ैल में चन्द ऐसी मिसालें दर्ज की जाती हैं जिन से अन्दाज़ा लग सकता है कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم किस किस त़रह़ अपने आक़ाए नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर बजा लाते और आप का अदब मलह़ूज़ रखते थे।

﴿1﴾ माहे ज़ी क़ा'दा सिने 6 हिजरी में जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुदैबिया में थे तो बुदैल बिन वरक़ा खुज़ाई के बा'द उ़रवा बिन मसऊ़द जो उस वक़्त तक ईमान न लाए थे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू करने के लिये ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवे वोह वापस जा कर क़ुरैश से यूं कहने लगे :

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो رَاعِنَا न कहो और यूं अ़र्ज़ करो कि हुज़ूर हम पर नज़र रखें और पहले ही से बग़ौर सुनो और काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (پ۱،البقرة:۱۰٤) **इल्मिय्या**

2.....यक्सानिय्यत की वज्ह से शुबा पड़ना।

3.....جامع اسباب النزول، سورۃ البقرۃ، ص ۲۷۔علمیه

4.....फ़रेब।

www.dawateislami.net

اى قوم و اللّٰه لقد وفدت على الملوك و وفدت على قيصر و كسرى و النجاشى و الله ان رايت ملكا قط يعظمه اصحابه ما يعظم اصحاب محمد محمدًا والله ان تنخّم نخامة الا وقعت فى كف رجل منهم فدلك بها وجهه و جلده و اذا امرهم ابتدروا امره و اذا توضأ كادوا يقتتلون على وضوئه و اذا تكلم خفضوا اصواتهم عنده و ما يحدون اليه النظر تعظيمًا له و انه قد عرض عليكم خطة رشدٍ فاقبلوها.

ऐ मेरी क़ौम ! अल्लाह की क़सम ! मैं अलबत्ता बादशाहों के दरबारों में हाज़िर हुवा हूं और क़ैसर और किस्रा व नजाशी के हां गया हूं, अल्लाह की क़सम ! मैं ने कभी कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा कि जिस के अस्हाब उस की ऐसी ता'ज़ीम करते हों जैसा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की करते हैं। अल्लाह की क़सम ! इस (मुह़म्मद) ने जब कभी खंकार फेंका है तो वोह अस्ह़ाब में से किसी न किसी के हाथ में गिरा है जिसे उन्हों ने अपने मुंह और जिस्म पर मल लिया है। जब वोह अपने अस्ह़ाब को हुक्म देते हैं तो वोह उस की ता'मील के लिये दौड़ते हैं और जब वुज़ू करते हैं तो उन के वुज़ू के पानी के लिये बाहम झगड़ने की नौबत पहुंचने लगती है और जब वोह कलाम करते हैं तो अस्ह़ाब उन के सामने अपनी आवाज़ें धीमी कर देते हैं और अज़् रूए ता'ज़ीम उन की त़रफ़ तेज़ निगाह नहीं करते। उन्हों ने तुम पर एक नेक अम्र पेश किया है इसे क़बूल कर लो।[1]

﴾2﴿.....ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब ने एक जाहिल आ'राबी से कहा कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करो कि क़ुरआन में जो सूरए अह़ज़ाब में आया है :

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ (احزاب، ع٣)

बा'ज़े मुसलमानों में से वोह मर्द हैं कि सच किया उन्हों ने वोह अ़ह्द जो अल्लाह से बांधा था पस बा'ज़ उन में से वोह है जो पूरा कर चुका काम अपना।[2]

---

❶ ......صحیح بخاری،کتاب الشروط۔......(صحيح البخارى، كتاب الشروط،باب الشروط فى الجهاد والمصالحة الحديث: ٢٧٣١ـ٢٧٣٢،ج٢، ص٢٢٤ـ٢٢٥ملخصًا۔علميه)

❷.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द अल्लाह से किया था तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका। (پ٢١،الاحزاب:٢٣) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

इस आयत में قَضٰی نَحْبَہٗ कौन है। अस्ह़ाबे किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल करने की जुरअत न किया करते थे। वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तौक़ीर किया करते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हैबत खाते थे। उस आ'राबी ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुंह फेर लिया। दोबारा पूछा तो भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से मुंह फेर लिया फिर मैं मस्जिद के दरवाज़े से सब्ज़ कपड़ों में नुमूदार हुवा। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो फ़रमाया कि वोह साइल कहां है? आ'राबी ने कहा : "या रसूलल्लाह! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْکَ وَسَلَّم) साइल मैं हूं।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मेरी त़रफ़ इशारा कर के) फ़रमाया : येह उन में से है जिस ने अपना अ़ह्द पूरा किया।[1]

﴾3﴿.....ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाबे मुहाजिरीन व अन्सार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में तशरीफ़ लाते और वोह बैठे होते। उन के दरमियान ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी होते। इन में से सिवाए ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर के कोई हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नज़र न उठाता। वोह दोनों हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नज़र उठा कर देखते और हुज़ूर उन की त़रफ़ नज़र उठा कर देखते, वोह दोनों हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ देख कर तबस्सुम फ़रमाते और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की त़रफ़ देख कर तबस्सुम फ़रमाते।[2]

﴾4﴿.....ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ाज़िरीने मजलिस के साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत का ज़िक्र करते हुवे फ़रमाते हैं : "जिस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कलाम शुरूअ़ करते तो आप के हम नशीन इस त़रह़ सर झुका लेते कि गोया उन के सरों पर परन्दे हैं। जिस वक़्त आप ख़ामोश हो जाते तो वोह कलाम करते और कलाम में आप के सामने तनाज़ोअ़[3] न करते और

---

1 ......ترمذی، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ احزاب۔......(سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب:سورۃ الاحزاب، الحدیث: ۳۲۱۴، ج۵، ص۱۴۰۔علمیہ)

2 ......ترمذی، ابواب المناقب۔......(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب: فی مناقب ابو بکر وعمر کلیھما، الحدیث:۳۶۸۸، ج۵، ص۳۸۸۔علمیہ)

3 .....बह़्सो तकरार।

www.dawateislami.net

जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने कलाम करता उसे ख़ामोश हो कर सुनते यहां तक कि वोह अपने कलाम से फ़ारिग़ हो जाता।"(1)

इस ह़दीस का ख़ुलासा येह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में सब से पहले ख़ुद हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते थे। ह़ाज़िरीने मजलिस सब सुकून की ह़ालत में बा अदब बैठे सुना करते थे। आप के बा'द सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم अ़र्ज़ करते। मगर वोह कलाम में तनाज़ोअ़ न फ़रमाते थे। मजलिस में एक वक़्त में दो शख़्स कलाम न करते और न कोई दूसरे के कलाम को क़त़अ़ करता था। बल्कि मुतकल्लिम के कलाम को सुनते रहते यहां तक कि वोह फ़ारिग़ हो जाता।

﴿5﴾.....ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم (ब पासे अदब) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरवाज़ों को नाख़ुनों से खट खटाया करते थे।(2)

﴿6﴾.....रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ी क़ा'दा सिने 6 हिजरी में उ़मरह के इरादे से रवाना हुवे। जब हुदैबिय्या में पहुंचे तो क़ुरैश डर गए। इस लिये आप ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मक्का में भेजा और उन से फ़रमाया कि तुम क़ुरैश को इत्तिलाअ़ दे दो कि हम उ़मरह के लिये आए हैं लड़ाई के लिये नहीं आए। और येह भी फ़रमाया कि उन को दा'वते इस्लाम दो और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औ़रतों को जो मक्का में हैं फ़त्ह़ की बिशारत दो। रास्ते में ह़ज़रते अबान बिन सई़द उमवी जो अब तक ईमान न लाए थे ह़ज़रते उ़स्मान से मिले। उन्हों ने ह़ज़रते उ़स्मान को जवार दी और अपने पीछे घोड़े पर सुवार कर के मक्का में ले आए। ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम पहुंचाया। हुदैबिय्या में मुसलमान कहने लगे कि उ़स्मान ख़ुश नसीब है जिस ने बैतुल्लाह का त़वाफ़ कर लिया। येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाने लगे कि मेरा गुमान है कि उ़स्मान हमारे बिग़ैर त़वाफ़े

---

1 .....شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم......(الشمائل المحمدية للترمذی، باب:ما جآء فی خلق رسول اللّٰه، الحديث:٣٣٤،ص١٩٨۔علميه)

2 .....الادب المفرد للبخاری، باب قرع الباب इस रिवायत से पाया जाता है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरवाज़ों में ह़ल्क़े न थे। सह़ाबए किराम ब पासे अदब बजाए दस्तक देने के नाख़ुनों से खट खटाया करते थे। 12 मिन्हु।........

(الأدب المفرد للبخاری،باب قرع الباب،الحديث:١١١١،ص٢٩٠۔علميه)

www.dawateislami.net

का'बा न करेंगे। इसी अस्ना में येह ग़लत़ ख़बर उड़ी की ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक्का में क़त्ल कर दिये गए। इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों से बैअ़ते रिज़्वान ली। ह़ज़रते उ़स्मान चूंकि मक्का में थे इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दायां हाथ बाएं हाथ पर मार कर उन को बैअ़त के शरफ़ में दाख़िल किया। इस त़रह़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का हाथ क़रार पाया। बैअ़ते रिज़्वान के बा'द जब ह़ज़रते उ़स्मान वापस तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों ने उन से कहा कि आप खुश नसीब हैं कि बैतुल्लाह का त़वाफ़ कर लिया। इस पर ह़ज़रते उ़स्मान ने जवाब दिया कि तुम ने मेरी निस्बत गुमाने बद किया। उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है अगर मैं एक साल ठहरा रहता और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुदैबिय्या में होते तो मैं आप के बिग़ैर त़वाफ़ न करता कुरैश ने मुझ से कहा था कि त़वाफ़ कर लो मगर मैं ने इन्कार कर दिया था।(1)

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह अदब क़ाबिले ग़ौर है कि कुफ़्फ़ारे मक्का आप से कह रहे हैं कि तुम बैतुल्लाह का त़वाफ़ कर लो मगर आप जवाब देते हैं कि मुझ से येह हरगिज़ नहीं हो सकता कि अपने आक़ाए नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर अकेला त़वाफ़ करूं। उधर जब मुसलमानों ने कहा कि खुशा ह़ाल उ़स्मान का कि उन को ख़ानए का'बा का त़वाफ़ नसीब हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह सुन कर फ़रमाते हैं कि उ़स्मान बिग़ैर हमारे ऐसा नहीं कर सकता। आक़ा हो तो ऐसा, ख़ादिम हो तो ऐसा। इमाम बूसैरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़सीदए हमज़िय्या में क्या ख़ूब फ़रमाया है :

وابٰی یطوف بالبیت اذ لم   یدن منه الی النبی فناء

فجزته عنها ببیعة رضوا   نَ یـد مـن نبیـه بیـضـاء

ادب عنده فضاعف الاعمال   بــالتــرك حبـذ الادبــاء (2)

---

1 ......ज़ादुल मआ़दिल इब्ने क़य्यिम, क़िस्सए हुदैबिय्या और दुर्रे मन्सूर लिस्सुयूत़ी, तफ़्सीरे सूरए फ़त्ह़।.......

(الدر المنثور فی التفسیر الما ثور،سورة الفتح، تحت الآیة: ۱۸،ج۷، الجزء۲۶،ص۵۲۱ ملتقطا و زاد المعاد فی هدی خیر العباد، فصل فی قصة الحدیبیة،الجزء الثالث،ج۲، ص۲۱۰-۲۱۱۔علمیه)

2 ......السیرة الحلبیة،باب ذکر مغازیه صلی اللّٰه تعالٰی علیه وآله وسلم، ج۳،ص۲۵۔علمیه

www.dawateislami.net

और ह़ज़रते उ़स्मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने बैतुल्लाह के त़वाफ़ से इन्कार कर दिया इस लिये कि बैतुल्लाह की कोई त़रफ़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब न थी । पस इन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यदे बैज़ा ने बैअ़ते रिज़्वान में इस नेक अ़मल का बदला दिया । येह (तन्हा त़वाफ़ न करना) उ़स्मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه में एक बड़ा अदब था जिस के सबब इन को त़वाफ़ से दुगना सवाब मिला । अस्ह़ाबे मुह़म्मद क्या ख़ूब अदीब थे ।

इस में शक नहीं कि सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सब के सब बा अदब थे मगर ह़ज़रते उ़स्मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه में येह ख़ूबी ख़ुसूसिय्यत से थी क्यूंकि इन में वस्फ़े ह़या जो मन्शाए अदब[1] है सब से ज़ियादा था । आप ने जब से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त की अपना दायां हाथ कभी अपनी शर्मगाह पर न रखा ।[2]

﴿7﴾.....ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मौत का वक़्त आया तो आप ने अपने साहि़बज़ादे से अपनी तीन ह़ालतें बयान करते हुवे फ़रमाया : पहली ह़ालत येह थी कि मैं सब से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जानी दुश्मन था अगर मैं इस ह़ालत में मर जाता तो दोज़ख़ी था । दूसरी ह़ालत इस्लाम की थी कि कोई शख़्स मेरे नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब और मेरी आंखों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा जलाल व हैबत वाला न था और मैं आप की हैबत के सबब से आप की त़रफ़ नज़र भर कर न देख सकता था इस वासित़े अगर मुझ से ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ुल्या शरीफ़ दरयाफ़्त किया जाए तो मैं बयान नहीं कर सकता । अगर मैं इस ह़ाल में मर जाऊं तो उम्मीद है कि अहले जन्नत में से होऊंगा । तीसरी ह़ालत ह़ुक्मरानी की थी कि जिस में मैं अपना ह़ाल नहीं जानता ।[3]

﴿8﴾.....ह़ज़रते अस्लअ़ बिन शरीक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाक़ा[4] का कजावा कसा करता था । मौसिमे सर्मा में एक रात मुझे ग़ुस्ल की ह़ाजत हो गई । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़र का इरादा किया । मैं ने ह़ालते जनाबत में कजावा कसना

1.....अदब का बाइ़स ।

2 ...... سنن ابن ماجه ، كتاب الطهارة و سننها، باب كراهية مس الذكر...الخ الحديث: ٣١١، ج ١، ص ١٩٨ ـ علميه

3 ...... صحیح مسلم، باب کون الاسلام یہدم ما قبلہ وکذا الحج والعمرۃ ـ ......(صحيح مسلم ، كتاب الأيمان، باب كون الاسلام يهدم ما قبله و كذا الهجرة...الخ، الحديث: ١٩٢، ص ٧٥ ـ علميه)

4.....ऊंटनी ।

www.dawateislami.net

पसन्द न किया और मैं डरा कि अगर ठन्डे पानी से ग़ुस्ल करूं तो मर जाऊंगा या बीमार हो जाऊंगा इस लिये मैं ने अन्सार में से एक शख़्स से कजावा कसवाया। फिर मैं ने पानी गर्म कर के ग़ुस्ल किया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अह़बाब से जा मिला। आप ने फ़रमाया : ऐ अस्लअ़ ! आज कजावा अपनी जगह से क्यूं हिल गया ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने नहीं कसा एक अन्सारी ने कसा है। आप ने सबब दरयाफ़्त फ़रमाया, मैं ने अ़र्ज़ किया : मुझे ग़ुस्ल की ह़ाजत हो गई थी और ठन्डे पानी से ग़ुस्ल करने से मुझे अपनी जान का ख़ौफ़ था इस लिये मैं ने उस से कसवाया था और फिर पानी गर्म कर के मैं ने ग़ुस्ल किया था। इस पर अल्लाह तआ़ला ने आयए तयम्मुम या'नी

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى ......الخ (نساء، ع ٧)[1]

नाज़िल फ़रमाई।[2]

﴾9﴿.....एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मिले। उन को ग़ुस्ल की ह़ाजत थी। उन का बयान है कि मैं पीछे हट गया। फिर ग़ुस्ल कर के ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तुम कहां गए थे ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि मुझे ग़ुस्ल की ह़ाजत थी। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मोमिन पलीद नहीं होता।[3]

﴾10﴿.....ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह हुज़ैफ़ा बिनुल यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मिले आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते हुज़ैफ़ा से मुसाफ़ह़ा करने लगे ह़ज़रते हुज़ैफ़ा पीछे हट गए और येह उ़ज़्र किया कि मुझ को ग़ुस्ल की ह़ाजत है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुसलमान जब अपने भाई से मुसाफ़ह़ा करता है तो उस के गुनाह यूं दूर हो जाते हैं जैसा कि दरख़्त के पत्ते झड़ जाते हैं। जब वोह दोनों एक दूसरे से सुवाल करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में निनानवे उस के लिये हैं जो उन दोनों में से

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो नशे की ह़ालत में नमाज़ के पास न जाओ। (پ٥، النساء:٤٣) **इल्मिय्या**

2.....اصابہ بحوالہ طبرانی، ترجمہ اسلع الاعرجی۔ تفسیر درمنثور بحوالہ طحاوی ودارقطنی وطبرانی وبیہقی وغیرہ۔......(الدر المنثور فی التفسیر الماثور، سورة النساء، تحت الآية: ٤٣، ج٢، الجزء٥، ص٥٤٧ ـ علميه)

3.....ترمذی، کتاب الطہارت، باب ماجاء فی مصافحۃ الجنب۔......(سنن الترمذی، كتاب الطهارة، باب: ماجآء فی مصافحة الجنب، الحديث: ١٢١، ج١، ص١٧٠ ـ علميه)

www.dawateislami.net

ज़ियादा बश्शाश व कुशादा रू और नेकूकार और अपने भाई की ह़ाजत रवाई में अह़सन हो।[1]

﴾11﴿.....ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते कुबास बिन अश्यम से पूछा कि तुम बड़े हो या रसूलुल्लाह ? (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उन्हों ने जवाब दिया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से बड़े हैं अलबत्ता मैं पैदाइश में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले हूं।[2]

﴾12﴿.....ह़ज़रते सई़द बिन यरबूअ़ मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम सर्म था। एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा कि हम में से कौन बड़ा है मैं या तू ? उन्हों ने जवाब दिया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से बड़े हैं और नेक हैं मैं उ़म्र में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा हूं। येह सुन कर आप ने उन का नाम बदल दिया और फ़रमाया कि तुम सई़द हो।[3]

﴾13﴿.....ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि मैं ने ह़दीस व कलाम में ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर किसी को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुशाबेह नहीं देखा। जब वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आतीं तो आप उन के लिये खड़े हो जाते और मरह़बा कह कर उन को चूमते और अपनी जगह बिठाते और जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह आप के लिये खड़ी हो जातीं और आप का दस्ते मुबारक पकड़ कर मरह़बा कहतीं और चूमतीं और अपनी जगह बिठातीं। जब मरज़े मौत में वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आईं तो हुज़ूर ने मरह़बा कह कर उन को चूमा।[4]

﴾14﴿.....दो यहूदी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और उन्हों ने आप से नव ज़ाहिर निशानियां दरयाफ़्त कीं आप ने बयान फ़रमा दीं तो उन्हों ने आप के

---

1 ......كشف الغمہ للشعرانی، جزء ثانی، ص۱۸۴۔......(كشف الغمة للشعرانى ، كتاب الاقضيةوالشهادات ، فرع فى المصافحة و طلاقة الوجه، ج۲، ص۲۸۸۔علميه)

2 ......جامع ترمذی، باب ماجاء فی میلاد النبی صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم۔......(سنن الترمذى، كتاب المناقب، باب: فى ميلاد النبى صلى الله عليه وآله وسلم، الحديث: ۳۶۳۹، ج۵، ص۳۵۶۔علميه)

3 ......اصابہ، ترجمہ سعید بن یربوع۔......(الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف السين المهملة، باب سعيد بن يربوع، ترجمه ۳۳۰۲، ج۳، ص۹۸۔علميه)

4 ......الادب المفرد للبخاری، باب الرجل یقبل ابنتہ۔......(الأدب المفرد للبخارى، باب الرجل يقبل ابنته، الحديث: ۱۰۰۰، ص۲۶۴۔علميه)

www.dawateislami.net

दोनों हाथ मुबारक और दोनों पाउं मुबारक को बोसा दिया और कहा कि हम गवाही देते हैं कि आप पैग़म्बर हैं ।(1)

﴾15﴿.....सफ़्वान बिन अ़स्साल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि यहूदियों की एक क़ौम ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और हर दो पाए मुबारक को बोसा दिया ।(2)

﴾16﴿.....ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि हम किसी ग़ज़्वे में थे लोग पस्पा हो गए । हम ने कहा कि हम नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस त़रह़ मिलेंगे ह़ालांकि हम लश्कर से भाग आए हैं और ख़ुदा का ग़ज़ब ले फिरे हैं । पस हम नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में नमाज़े फ़ज्र से पहले ह़ाज़िर हुवे । हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर निकले और फ़रमाया कि येह कौन हैं ? हम ने अ़र्ज़ किया कि हम फ़रारी हैं । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "لَا بَلْ اَنْتُمُ الْعَكَّارُوْنَ" नहीं बल्कि तुम अ़क्कारी (हट कर ह़म्ला करने वाले) हो । येह सुन कर हम ने हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक को बोसा दिया । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारा गुरौह हूं मैं मुसलमानों का गुरौह हूं । फिर आप ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ (انفال،۱٦)(3)

मगर हटने वाला लड़ाई के लिये या पनाह ढूंडने वाला एक गुरौह की त़रफ़(4)

﴾17﴿.....उम्मे अबान बिन्ते वाज़िअ़ बिन ज़ारेअ़ अपने दादा ज़ारेअ़ से जो वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस में थे रिवायत करती हैं कि उन्हों ने कहा कि जब हम मदीने में पहुंचे तो हम अपने कजावों से जल्दी जल्दी उतर कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और पाए मुबारक को चूमने लगे ।

---

1 ......جامع ترمذی، ابواب الاستیذان والادب، باب ماجاء فی قبلۃ الید والرجل۔......(سنن الترمذی، کتاب الاستئذان و الادب، باب ما جاء فی قبلة الید و الرجل، الحدیث: ٢٧٤٢، ج٤، ص٣٣٦۔علمیه)

2 ......ابن ماجہ، باب الرجل یقبل ید الرجل۔......(سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب الرجل یقبل ید الرجل، الحدیث:٣٧٠٥، ج٤، ص٢٠٥۔علمیه)

3 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मगर लड़ाई का हुनर करने या अपनी जमाअ़त में जा मिलने को । (پ٩، الانفال:١٦) **इ़ल्मिय्या**

4 ......الادب المفرد للبخاری، باب تقبیل الید۔ تفسیر درمنثور بحوالہ ابوداؤد و ترمذی و ابن ماجہ وغیرہ۔......(الأدب المفرد للبخاری، باب تقبیل الید، الحدیث:١٠٠١، ص٢٦٤۔علمیه)

www.dawateislami.net

"मुनज़िरुल अशज्ज"[1] (रईसे वफ़्द) कुछ देर के बा'द लिबास तब्दील कर के आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम में दो ख़स्लतें हैं जिन को **अल्लाह** तआ़ला दोस्त रखता है ह़िल्म व वक़ार। मुन्ज़िर ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! येह ख़स्लतें मुझ में कसबी हैं या जिबिल्ली ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिबिल्ली हैं। येह सुन कर मुन्ज़िर ने कहा : सब सताइश ख़ुदा को है जिस ने मुझे ऐसी दो ख़स्लतों पर पैदा किया है जिन को **अल्लाह** और **अल्लाह** का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोस्त रखते हैं।[2] रिवायते बैहक़ी में है कि मुन्ज़िर ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक को पकड़ कर बोसा दिया।[3]

﴾18﴿.....ह़ज़रते बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि एक आ'राबी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं इस्लाम लाया हूं मुझे कोई ऐसी चीज़ दिखाइये जिस से मेरा यक़ीन ज़ियादा हो जाए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तू क्या चाहता है ? उस ने अ़र्ज़ किया कि आप उस दरख़्त को अपने पास बुला लें। आप ने फ़रमाया कि तू जा कर उसे बुला ला। वोह उस के पास गया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुझे बुलाते हैं। येह सुन कर वोह एक त़रफ़ को झुका और उस की जड़ें उखड़ीं। फिर दूसरी त़रफ़ को झुका और जड़ें उखड़ीं, इसी त़रह़ वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया : "السلام علیک یا رسول اللّٰہ" येह देख कर आ'राबी ने कहा : मुझे काफ़ी है। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस दरख़्त से फ़रमाया कि अपनी जगह पर चला जा। चुनान्चे, वोह चला गया और अपनी जड़ों से क़ाइम हो गया। आ'राबी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं आप के सरे मुबारक और हर दो पाए मुबारक को बोसा दूं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त दे दी। (और उस ने सर

1......सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "मुनज़िरुशैख़" लिखा है जब कि "सुनने अबी दावूद शरीफ़" और ह़दीस व सीरत की दीगर कुतुब में इन सह़ाबी का नाम "मुनज़िरुल अशज्ज" मरक़ूम है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने "मुनज़िरुशैख़" के बजाए "सुनने अबी दावूद शरीफ़" के मुत़ाबिक़ "मुनज़िरुल अशज्ज" लिखा है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم **इ़ल्मिय्या**

2......ابوداؤد،کتاب الادب،باب فی قبلۃ الجسد۔الادب المفرد للبخاری،باب تقبیل الید۔......(سنن ابی داود، کتاب الادب،باب فی قبلۃ الرجل، الحدیث:٥٢٢٥،

3......زرقانی علی المواہب،وفد عبد القیس۔الادب المفرد للبخاری،باب التؤدۃ فی الامور۔......(دلائل النبوۃ لابی نعیم، الجزء الثانی،الفصل التاسع عشر، ص ٢٣١)

www.dawateislami.net

मुबारक और हर दो पाए मुबारक को चूमा) फिर उस ने अ़र्ज़ किया कि मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं आप को सजदा करूं। आप ने फ़रमाया कि एक शख़्स दूसरे को सजदा न करे। अगर मैं ऐसे सजदे की इजाज़त देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सजदा करे क्यूंकि शोहर का उस पर बड़ा ह़क़ है।(1)

﴾19﴿.....ह़ज़रते अबू बज़्ज़ा मक्की मख़्ज़ूमी बयान करते हैं कि मैं अपने आक़ा अ़ब्दुल्लाह बिन साइब के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। मैं ने उठ कर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और पाए मुबारक को बोसा दिया।

(इसाबा। तर्जमए अबू बज़्ज़ा मक्की)(2)

﴾20﴿.....ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िक्र करते हैं कि मेरे वालिद मख़्रमा ने मुझ से कहा : बेटा ! मुझे ख़बर मिली है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास क़बाएं आई हैं जिन्हें वोह तक़्सीम फ़रमा रहे हैं मुझे उन के पास ले चल ! चुनान्चे, हम वहां ह़ाज़िर हुवे उस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने दौलत ख़ाने में थे। वालिद ने मुझ से कहा : "बेटा ! नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मेरे वासिते़ बुला दो।" मुझ पर येह अम्र ना गवार गुज़रा। मैं ने कहा : क्या मैं तुम्हारे वासिते़ नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आवाज़ दूं ? मेरे वालिद ने कहा : बेटा ! वोह जब्बार नहीं हैं। तब मैं ने आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आवाज़ दी आप निकले और आप के पास एक दीबा(3) की क़बा थी जिस के तुक्मे(4) सोने के थे। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ मख़्रमा ! येह हम ने तुम्हारे वासिते़ छुपा रखी है और मख़्रमा को अ़त़ा फ़रमा दी।(5)

﴾21﴿.....ह़ज़रते क़ैस बिन सा'द बिन उ़बादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़िक्र करते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ़ लाए और दरवाज़े में फ़रमाया : "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَ رَحْمَۃُ اللّٰہ" मेरे बाप ने धीमी आवाज़ से जवाब दिया। मैं ने कहा : क्या आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अन्दर आने की इजाज़त नहीं देते ? उन्हों ने कहा : इसी त़रह़

---

1 ......دلائل حافظ ابی نعیم،مطبوعہ دائرۃ المعارف حیدرآباد دکن،ص ۱۳۸۔......(تاریخ مدینۃ دمشق ، باب جامع دلائل نبوتہ علیہ السلام، الحدیث:۱۱۲۳،ج٤،ص ۳٦٥۔علمیہ)

2 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، باب الکنی۔حرف الباء الموحدۃباب ابوبزۃ المکی،ترجمۃ ۹٦۱۹،ج۷،ص ۳٤۔علمیہ

3 .....एक क़िस्म का रेशमी कपड़ा। 4 .....बटन।

5 ......صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب المزرر بالذھب۔......(صحیح البخاری ، کتاب اللباس ، باب المزرر بالذھب ، الحدیث: ۵۸٦۲،ج٤، ص ٦۷۔علمیہ)

www.dawateislami.net

रहने दीजिये ताकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम पर ज़ियादा सलाम भेजें । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी बार इसी त़रह़ सलाम कहा । ह़ज़रते सा'द ने धीमी आवाज़ से जवाब दिया । हुज़ूर तीसरी बार सलाम कह कर वापस हो गए ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पीछे निकले और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप का सलाम सुनता रहा और धीमी आवाज़ से जवाब देता रहा ताकि आप हम पर ज़ियादा सलाम भेजें । येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ वापस तशरीफ़ लाए आप ने ह़ज़रते सा'द की दरख़्वास्त पर ग़ुस्ल फ़रमाया । ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ा'फ़रान से रंगी हुई चादर पेश की जो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ओढ़ ली और फिर आप ने दोनों हाथ उठा कर यूं दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ صَلَوَاتَکَ وَ رَحْمَتَکَ عَلٰی اٰلِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَۃَ[1]

बा'दे अज़ां आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खाना तनावुल फ़रमाया । जब आप वापस होने लगे तो मेरे वालिद ने सुवारी के लिये एक दराज़ गोश पेश किया जिस पर लिह़ाफ़ पड़ा हुवा था और मुझ से कहा कि साथ हो लो । मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो लिया । हुज़ूर ने मुझ से फ़रमाया कि मेरे साथ सुवार हो जाओ । मैं ने इन्कार किया आप ने फ़रमाया कि सुवार हो जाओ वरना वापस हो जाओ । इस लिये मैं वापस चला आया । (ابوداؤد، کتاب الادب)[2]

﴾22﴿.....ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे बुज़ुर्गवार बहुत सा क़र्ज़ छोड़ गए थे जब खजूरों के तोड़ने का वक़्त आया तो ह़ज़रते जाबिर ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में यूं अ़र्ज़ किया : "आप को मा'लूम है कि मेरे वालिद जंगे उहुद के दिन शहीद हो गए और अपने ऊपर बहुत सा क़र्ज़ छोड़ गए मैं चाहता हूं कि क़र्ज़ ख़्वाह आप की ज़ियारत कर लें ।"

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं न कहा कि आप क़र्ज़ ख़्वाहों के पास चलिये बल्कि ब पासे अदब अ़र्ज़ किया कि क़र्ज़ ख़्वाह आप की ज़ियारत कर लें ।

(بخاری، باب قضاء الوصی دیون المیت بغیر محضر من الورثۃ)[3]

1.....ऐ **अल्लाह** ! सा'द बिन उ़बादा की आल पर अपनी बरकतें और रह़मतें नाज़िल फ़रमा । **इल्मिय्या**

2 ...... سنن ابی داود، کتاب الادب، باب کم مرۃ یسلم الرجل فی الاستئذان، الحدیث:٥١٨٥، ج٤، ص٤٤٥۔علمیه

3 ......صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب قضاء الوصی دیون المیت...الخ، الحدیث: ٢٧٨١، ج٢، ص٢٤٧۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾23﴿.....एक रोज़ क़बीलए अस्लम के चन्द सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم तीर अन्दाज़ी में बाहम मुक़ाबला कर रहे थे कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र वहां हुवा। जब ह़ज़रते मेह़जन बिन अदरअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक अस्लमी से मुक़ाबला कर रहे थे तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ बनी इस्माईल ! तुम तीर अन्दाज़ी करो क्यूंकि तुम्हारा बाप तीर अन्दाज़ था। तुम तीर फेंकते जाओ मैं इब्ने अदरअ़ के साथ हूं। येह सुन कर ह़ज़रते नज़्ला बिन उ़बैद अस्लमी ने अपने हाथ से कमान फेंक दी और अ़र्ज़ किया : "जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इब्ने अदरअ़ के साथ हैं तो मैं उस के साथ तीर नहीं फेंकता क्यूंकि जिस के साथ आप हैं वोह मग़्लूब नहीं हो सकता।" येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम तीर अन्दाज़ी करो मैं तुम सब के साथ हूं।[1]

﴾24﴿.....जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरा में रौनक़ अफ़रोज़ हुवे तो आप ने ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान में क़ियाम फ़रमाया। आप मकान के नीचे के ह़िस्से में ठहरे और अबू अय्यूब मअ़ इ़याल ऊपर के ह़िस्से में रहे एक रात अबू अय्यूब बेदार हुवे और कहने लगे कि हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक के ऊपर चलते फिरते हैं। येह कह कर उन्हों ने उस जगह से हट कर एक जानिब में रात बसर की। फिर सुब्ह़ को आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि नीचे के ह़िस्से में मेरे वासिते़ आसानी है। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मैं उस छत पर नहीं चढ़ता जिस के नीचे आप हों। पस आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर के ह़िस्से में तशरीफ़ ले गए और अबू अय्यूब नीचे के ह़िस्से में चले आए। अबू अय्यूब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये खाना भेजा करते जो बच कर आता ख़ादिम से दरयाफ़्त करते कि त़आ़म में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उंगलियां किस जगह थीं। फिर उसी जगह से खाते। एक रोज़ खाना तय्यार किया गया जिस में लह्सन था। जब खाना वापस आया तो ह़ज़रते अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़स्बे मा'मूल ख़ादिम से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उंगलियों की जगह दरयाफ़्त की। जवाब मिला कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खाया ही नहीं। येह सुन कर अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه डर गए और ऊपर जा कर अ़र्ज़ किया कि क्या येह (लह्सन) ह़राम है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

---

[1] ......اصابہ بحوالہ ابن اسحاق، ترجمہ محجن بن ادرع اسلمی نیز مشکوٰۃ بحوالہ بخاری، باب اعداد آلۃ الجہاد۔......(عمدة القارى، كتاب الجهاد والسير، باب التحريض على الرمى، الحديث:٢٨٩٩، ج١٠، ص٢٢٠-علميه)

www.dawateislami.net

फ़रमाया कि ह़राम तो नहीं लेकिन मैं इसे पसन्द नहीं करता। येह सुन कर उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि मैं भी उस चीज़ को ना पसन्द करता हूं जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ना पसन्द करते हैं। (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कराहत की वज्ह येह कि) आप के पास फ़िरिश्ते और वह्‌य आया करती थी।(1)

﴾25﴿.....ह़ज़रते क़ैला बिन्ते मख़्रमा अ़म्बरिय्या ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मस्जिद में देखा। आप उकडूं(2) बैठे हुवे थे। इन का बयान है कि जब मैं ने आप को निहायत ख़ुशूअ़ से इस ह़ालत में बैठे हुवे देखा तो (हैबत व जलाल के सबब से) मैं ख़ौफ़ से कांपने लगी।(3)

(शमाइले तिर्मिज़ी, बाबे माजा फ़ी जल्सए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

﴾26﴿.....ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ पूछना चाहता तो इसे (आप की हैबत की वज्ह से) दो साल (या सालों) ताख़ीर में डाल देता।(4)

﴾27﴿.....ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ शरीके त़आ़म होते तो हम त़आ़म में हाथ न डालते यहां तक कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पहले शुरूअ़ फ़रमाते और अपना दस्ते मुबारक उस में डालते।

(صحیح مسلم، باب آداب الطعام والشراب واحکامہا)(5)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर जिस त़रह़ आप की ह़याते दुन्यवी में वाजिब थी इसी त़रह़ वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी वाजिब है। सलफ़ व ख़लफ़ का येही त़रीक़ा रहा है। ज़ैल में चन्द मिसालें ब ग़रज़े तौज़ीह़ दर्ज की जाती हैं।

---

1 ......صحیح مسلم، باب اباحت اکل الثوم۔......(صحيح مسلم، كتاب الأشربة، باب اباحة اكل الثوم، الحديث: ٢٠٥٣-١٨١، ص١١٣٥-علميه)

2 .....तल्वों के बल इस त़रह़ बैठना कि घुटने खड़े रहें।

3 ......الشمائل المحمدية للترمذى، باب:ما جاء فى جلسة رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وآله وسلم، الحديث:١٢٠، ص٨٩-علميه

4 .....शिफ़ा शरीफ़। अ़लल क़ारी शर्ह़ में लिखते हैं कि इसे अबी या'ला ने रिवायत किया है। 12 मिन्हु

(الشفاء القسم الثانى...الخ،الباب الثالث فى تعظيم امره، فصل: فى عادة الصحابة فى تعظيمه، ج٢، ص٤٠-علميه)

5 ......صحيح مسلم، كتاب الأشربة،باب آداب الطعام و الشراب و احكامها، الحديث:٢٠١٧،ص١١١٦-علميه

www.dawateislami.net

﴾1﴿.....ह़ज़रते इस्ह़ाक़ तुजीबी[1] رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा ज़ी क़ा'दा सिने 352 हिजरी) फ़रमाते हैं कि आं ह़ज़रत के विसाल शरीफ़ के बा'द जब आप का ज़िक्र आता तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ख़ुशूअ़ व इन्किसार ज़ाहिर किया करते। उन के बदन पर रोंगटे खड़े हो जाते और वोह हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ और इश्तियाक़े ज़ियारत में रोया करते। येही ह़ाल बहुत से ताबेई़न का था। (شفاء شریف)[2]

﴾2﴿.....ह़ज़रते साइब बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं मस्जिदे नबवी में लेटा हुवा था एक शख़्स ने मुझ पर कंकरी मारी। मैं ने सर उठाया तो क्या देखता हूं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। आप ने फ़रमाया : उन दो शख़्सों को लाओ ! मैं बुला लाया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा कि तुम कौन हो या कहां से आए हो ? उन्हों ने जवाब दिया कि हम त़ाइफ़ के रहने वाले हैं। आप ने फ़रमाया कि अगर तुम इस शहर के रहने वाले होते तो मैं दुर्रे लगाता। क्या तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हो।

(صحیح بخاری، باب رفع الصوت فی المسجد)[3]

﴾3﴿.....ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि इशा के वक़्त ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी में थे नागहां एक शख़्स के हंसने की आवाज़ कान में आई। आप ने उसे बुला कर पूछा : तुम कौन हो ? उस ने कहा कि मैं क़बीलए सक़ीफ़ से हूं। फिर दरयाफ़्त किया : तुम इस शहर के रहने वाले हो ? उस ने जवाब दिया : नहीं बल्कि त़ाइफ़ का रहने वाला हूं। येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे धमकाया और फ़रमाया : अगर तुम मदीने के रहने वाले होते तो मैं तुम्हें सज़ा देता। इस मस्जिद में आवाज़ें बुलन्द नहीं की जातीं। (وفاء الوفاء، جزو ثانی ص ۳۵۴)[4]

﴾4﴿.....ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर अ़ब्बासी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में इमाम मालिक से मुनाज़रा किया और असनाए मुनाज़रा में आवाज़ बुलन्द की। ह़ज़रते इमाम ने फ़रमाया : ऐ अमीरल मोमिनीन ! इस मस्जिद में अपनी आवाज़ को बुलन्द मत करो क्यूंकि

1.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "इस्ह़ाक़ नजीबी" लिखा है जब कि शिफ़ा शरीफ़ और दीगर कुतुब में इन बुज़ुर्ग का नाम "इस्ह़ाक़ तुजीबी" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने "इस्ह़ाक़ नजीबी" के बजाए "इस्ह़ाक़ तुजीबी" लिखा है। وَاللہ تَعَالٰی اَعلَم **इल्मिय्या**

2 ......الشفاء القسم الثانی ...الخ،الباب الثانی فی لزوم محبته، فصل: فی علامة محبته ، ج۲، ص۲٦۔علمیه

3 ......صحیح البخاری، کتاب الصلوة،باب رفع الصوت فی المساجد،الحدیث:۴۷۰،ج۱، ص۱۷۸۔علمیه

4 ......وفاء الوفاء،الابواب الشارعة فی المسجد،الفصل الثالث عشر فی البطیحاء فیه...الخ، ج۱،الجز۲،ص۴۹۹۔علمیه

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला ने एक क़ौम को यूं अदब सिखाया :

لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (17) الآيه۔ (1)

और एक क़ौम जो आदाब बजा लाई उन की यूं ता'रीफ़ की :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ (18) الآيه۔ (2)

और एक क़ौम की यूं मज़म्मत की :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ (19) الآيه۔ (3)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एह़तिराम वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी वैसा ही ज़रूरी है जैसा कि ह़ालते ह़यात में था। येह सुन कर अबू जा'फ़र धीमा पड़ गया, कहने लगा कि ऐ अ़ब्दल्लाह (इमाम मालिक) क्या मैं क़िब्ला रू हो कर दुआ़ मांगूं या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब मुंह करूं। इमाम मालिक ने जवाब दिया कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से अपना मुंह क्यूं फेरते हो ह़ालांकि वोह क़ियामत के दिन तुम्हारे वसीला और तुम्हारे बाप आदम के वसीला हैं बल्कि तुम हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ मुंह करो और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के वसीले से दुआ़ मांगो अल्लाह तआ़ला क़बूल करेगा।

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾ (نساء، ع۹)

और अगर येह लोग जिस वक़्त कि अपनी जानों पे ज़ुल्म करते हैं आप के पास आते और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते और पैग़म्बर उन के लिये बख़्शिश मांगता तो वोह अल्लाह को मुआ़फ़ करने वाला मेहरबान पाते(4)

(شفاء شریف)(5)

1.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से। (پ۲۶، الحجرات:۲) इल्मिय्या

2.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं। (پ۲۶، الحجرات:۳) इल्मिय्या

3.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं। (پ۲۶، الحجرات:٤) इल्मिय्या

4.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हु़ज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर अल्लाह से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं। (پ٥، النساء:٦٤) इल्मिय्या

5 ......الشفاء، القسم الثانی...الخ، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل: واعلم ان حرمۃ النبی...الخ، ج۲، ص۴۱ ۔ علمیه

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....शैख़ुल इस्लाम[1] नूरुद्दीन अ़ली बिन अह़मद समहूदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा सिने 911 हिजरी) लिखते हैं कि हमारे ज़माने में मुन्किरात से एक अम्र जिस में मुतसद्दियान सीग़ए ता'मीर तसाहुल करते हैं[2] येह है कि मस्जिदे नबवी में आरा कश और बढ़ई और संग तराश काम करने के लिये लाए जाते हैं। अश्या के तोड़ने फोड़ने और चीरने वग़ैरा से सख़्त शोरो शग़ब बरपा होता है ह़ालांकि येह सब काम मस्जिद से बाहर तय्यार हो सकता है। इसी त़रह़ इमारत का मसालह़ा ख़च्चरों और गधों पर मस्जिद में लाया जाता है ह़ालांकि इसे आदमी मस्जिद के दरवाज़े में से अन्दर ला सकते हैं। हम पहले बयान कर आए हैं कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अगर मस्जिदे नबवी के गिर्द किसी मकान में मीख़ के ठोंकने की आवाज़ सुनतीं तो कहला भेजतीं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत न दो। और येह भी बयान हो चुका है कि ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा ने अपने घर के दोनों किवाड़ मनासिअ़[3] में तय्यार कराए कि मबादा तय्यारी में लकड़ी की आवाज़ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अज़िय्यत पहुंचे। इन्तिहा[4] (وفاء الوفاء، جزء اول، ص۴۷۹)

﴾6﴿.....इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं अय्यूब सख़्तियानी, मुह़म्मद बिन मुन्कदिर तैमी, इमाम जा'फ़र सादिक़, अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबी बक्र सिद्दीक़, आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, सफ़्वान बिन सुलैम और इमाम मुह़म्मद बिन मुस्लिम ज़ोहरी से मिला करता था मैं ने उन का येह ह़ाल देखा कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र आता तो उन का रंग ज़र्द हो जाता वोह शौक़े ज़ियारत में रोया करते बल्कि बा'ज़े तो बे ख़ुद हो जाया करते। (شفاء شریف)[5]

﴾7﴿.....इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी तमाम उ़म्र मदीनए मुनव्वरा में बसर की ब पासे अदब कभी मदीना शरीफ़ के ह़रम की ह़द में बोलो बराज़ नहीं किया। (شفاء شریف)[6]

---

1 ......وفاء الوفاء بحوالہ ابن زبالہ، جزء اول، ص۳۹۸۔

2.....या'नी ता'मीर व तौसीअ़ के ज़िम्मेदारान सुस्ती दिखाते हैं।

3.....मनासिए मदीनए मुनव्वरा से बाहर एक जगह का नाम है जहां औ़रतें ज़मानए जाहिलिय्यत में रात के वक़्त बोलो बराज़ के लिये जाया करती थीं। کذا فی معجم البلدان للیاقوت। 12 मिन्ह

4 ...... وفاء الوفاء باخبار دار المصطفٰی، الباب الرابع، الفصل الحادی والعشرون، الجزء ٢، ص ٥٥٩۔علمیه

5 ......الشفاء، القسم الثانی...الخ، الباب الثالث فی تعظیم امره، فصل: واعلم ان حرمة النبی...الخ، ج٢، ص٤١۔٤٣۔علمیه

6 ...... بستان المحدثین، ص١٩

www.dawateislami.net

﴾8﴿.....इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि मैं ने इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के दरवाज़े पर कई ऐसे ख़ुरासानी घोड़े और मिस्री ख़च्चर देखे कि जिन से बेहतर मैं ने नहीं देखे। मैं ने इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से कहा कि येह कैसे अच्छे हैं ? उन्हों ने कहा कि येह सब मेरी त़रफ़ से आप के लिये हदिय्ये हैं। मैं ने कहा : अपनी सुवारी के लिये इन में से कुछ रख लें। उन्हों ने कहा : मुझे ख़ुदा से शर्म आती है कि उस ज़मीन को जिस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं अपने घोड़े के सुमों[1] से पामाल करूं। (وفاء الوفاء، جزء ثانی ص ۴۵۰)[2]

﴾9﴿.....एक शख़्स ने कहा कि मदीनए त़य्यिबा की मिट्टी ख़राब है। इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़तवा दिया कि इसे तीस दुर्रे मारे जाएं और क़ैद किया जाए और फ़रमाया कि ऐसा शख़्स तो इस लाइक़ है कि इस की गर्दन मारी जाए। वोह ज़मीन जिस में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे हैं उस की निस्बत वोह गुमान करता है कि वोह ख़राब है। (شفاء شریف)[3]

﴾10﴿.....ह़ज़रते अह़मद बिन फ़ज़्लुवय رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बड़े ग़ाज़ी और तीर अन्दाज़ थे। उन्हों ने जब सुना की आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कमान को अपने दस्ते मुबारक में लिया है तो उस रोज़ से ब पासे अदब कभी कमान को बे वुज़ू नहीं छुवा। (شفاء شریف)[4]

﴾11﴿.....ह़ज़रते उ़स्मान[5] ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अ़सा था, ह़ज़रते जहजाह ग़िफ़ारी ने यौमे वार से पहले उन के हाथ से छीन लिया और अपने घुटने पर रख कर उसे तोड़ना चाहा (या तोड़ दिया) इस जुरअत पर ह़ाज़िरीन चिल्ला उठे। उन के घुटने में मरज़ आकिला पैदा हो गया। उन्हों ने बदीं ख़याल कि मबादा मरज़ बदन में सरायत कर जाए घुटने को काट दिया मगर एक साल तमाम न होने पाया कि वफ़ात पाई।[6]

﴾12﴿.....ह़ज़रते अबुल फ़ज़्ल जौहरी अन्दुलुसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ज़ियारत के लिये मदीनए मुनव्वरा का क़स्द किया जब उस के मकानात के क़रीब पहुंचे तो सुवारी से उतर पड़े और येह अश्आ़र पढ़ते हुवे पैदल चले :

1.....ख़ुरों।

2.....وفاء الوفاء، الباب الثامن فی زیارة النبی...الخ،الفصل الرابع فی آداب الزیارة، ج٢، الجزء٤،ص١٤١٤ ـعلميه

3.....الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظيم امره،فصل:ومن اعظامه ...الخ، ج٢، ص٥٧ـعلميه

4.....الشفاء،القسم الثانی ...الخ،الباب الثالث فی تعظيم امره،فصل:ومن اعظامه ...الخ، ج٢،ص٥٧ـعلميه

5.....تاریخ صغیر للبخاری،مطبوعہ انوار احمدی الہ آباد،ص۴۲ـ

6.....الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظيم امره،فصل:ومن اعظامه ...الخ، ج٢، ص٥٧ـعلميه

www.dawateislami.net

وَلَمَّا رَاَیْنَا رَسْمَ مَنْ لَّمْ یَدَعْ لَنَا فُؤَادًا لِعِرْفَانِ الرُّسُوْمِ وَلَا لُبًّا
نَزَلْنَا عَنِ الْاَکْوَارِ نَمْشِیْ کَرَامَةً لِمَنْ بَانَ عَنْهُ اَنْ نُّلِمَّ بِهٖ رَکْبًا (شفاء شریف)[1]

जब हम ने उस ज़ात शरीफ़ के आसार देखे जिस ने आसारे शरीफ़ा की पहचान के लिये हमारे वासिते न दिल छोड़ा न अ़क्ले ख़ालिस । हम पालानों से उतर पड़े और उस ज़ाते शरीफ़ की ता'ज़ीम के लिये पैदल चलने लगे जिस की ज़ियारत सुवारी की ह़ालत में बईद अज़ अदब है ।

बा'ज़ मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पैदल ह़ज को गए । उन से सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया कि ग़ुलामे मफ़रूर अपने मौला के दरवाज़े पर सुवार हो कर नहीं आता अगर हम में त़ाक़त होती तो सर के बल आते । (شفاء شریف)[2]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर में से येह अम्र भी है कि आप की आले अत़हार व ज़ुर्रियते त़य्यिबा और अज़्वाजे मुत़ह्हरात की ता'ज़ीम व तकरीम और इन के हुक़ूक़ की रिआ़यत की जाए । इसी त़रह़ आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाबे किराम की ता'ज़ीम व तौक़ीर करना ह़ुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'ज़ीम व तकरीम है । सह़ाबए किराम के दरमियान जो इख़्तिलाफ़े मुशाजरात[3] वुक़ूअ़ में आए इन की तावील नेक करनी चाहिये । वोह मुज्तहिद थे जो कुछ उन्हों ने किया अज़ रूए इजतिहाद व ख़ुलूस किया । वोह किसी त़रह़ मौरिदे ता'न नहीं हैं । (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) तफ़्सील की इस मुख़्तसर किताब में गुन्जाइश नहीं ।

ترسم آں قوم کہ بر دردکشاں مے خندند در سرِ کارِ خرابات کنند ایماں را

क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه "शिफ़ा शरीफ़" में फ़रमाते हैं कि वोह तमाम चीज़ें जिन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत है उन की ता'ज़ीम व तकरीम करना, ह़रमैने शरीफ़ैन में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मशाहिद व मसाकिन की ता'ज़ीम करना, आप के मनाज़िल और वोह चीज़ें जिन को आप के दस्ते मुबारक या किसी और उ़ज़्व ने छुवा या आप के नाम से पुकारी जाती हों उन सब का इकराम करना ह़ुज़ूर عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही की ता'ज़ीम व तकरीम में दाख़िल है ।[4]

1 ......الشفاء، القسم الثانی...الخ، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل: ومن اعظامہ...الخ، ج۲، ص۵۸۔ علمیہ
2 ......الشفاء، القسم الثانی...الخ، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل: ومن اعظامہ...الخ، ج۲، ص۵۸۔ علمیہ
3 .....तनाज़ोअ़ ।
4 ......الشفاء، القسم الثانی...الخ، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل: ومن اعظامہ...الخ، ج۲، ص۵٦۔ علمیہ

www.dawateislami.net

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस शरीफ़ का अदब

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम में से एक अम्र येह है कि आप की ह़दीस शरीफ़ की ता'ज़ीम की जाए। ह़दीस शरीफ़ के पढ़ने या सुनने के लिये ग़ुस्ल करना और ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है। जब ह़दीस शरीफ़ पढ़ी जाए तो अपनी आवाज़ को बुलन्द न करना चाहिये बल्कि धीमी कर देनी चाहिये। जैसा कि ह़यात शरीफ़ में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तकल्लुम के वक़्त हुवा करता था और मुस्तह़ब है कि ह़दीस शरीफ़ ऊंची जगह पढ़ी जाए। ह़दीस शरीफ़ पढ़ते पढ़ाते वक़्त किसी की ता'ज़ीम के लिये उठना मकरूह है।

जब लोग इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास त़लबे इ़ल्म के लिये आते तो ख़ादिमा दौलत ख़ाने से निकल कर उन से दरयाफ़्त किया करतीं कि ह़दीस शरीफ़ के लिये आए हो या मसाइले फ़िक़्हिय्या के लिये। अगर वोह कहते कि मसाइल के लिये आए हैं तो इमामे मौसूफ़ फ़ौरन निकल आते और अगर वोह कहते कि हम ह़दीस के लिये आए हैं तो इमाम मालिक ग़ुस्ल कर के ख़ुश्बू लगाते फिर लिबास तब्दील कर के निकलते। आप के लिये एक तख़्त बिछाया जाता जिस पर बैठ कर आप रिवायते ह़दीस करते। असनाए रिवायत में मजलिस में ऊ़द जलाया जाता येह तख़्त सिर्फ़ रिवायते ह़दीस के लिये रखा हुवा था। जब इमामे मौसूफ़ से इस का सबब पूछा गया तो फ़रमाया कि मैं चाहता हूं कि इस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस की ता'ज़ीम करूं।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه(2) बयान करते हैं कि मैं इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ अ़क़ीक़(3) की त़रफ़ जा रहा था रास्ते में मैं ने उन से एक ह़दीस की बाबत

---

1 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امره،فصل:فی سیرة السلف...الخ، ج۲،ص۴۵۔علمیه

2 .....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से येह रिवायत हमें नहीं मिली अलबत्ता शिफ़ा शरीफ़ और दीगर कुतुब में येह रिवायत ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने महदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मन्क़ूल है, हो सकता है मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास शिफ़ा शरीफ़ का जो नुस्ख़ा हो उस में ऐसा ही हो या फिर किताबत में ग़लती हुई हो। واللّٰه تعالٰی اعلم بالصواب **इ़ल्मिय्या**

3 .....एक वादी का नाम।

www.dawateislami.net

पूछा। उन्हों ने मुझे झिड़क दिया और फ़रमाया कि मुझे तुम से तवक़्क़ोअ़ न थी कि रास्ते चलते हुवे मुझ से ह़दीस शरीफ़ की बाबत सुवाल करोगे।(1)

क़ाज़ी जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने इमाम मालिक से ह़ालते क़ियाम में एक ह़दीस की बाबत पूछा। इमामे मौसूफ़ ने उन के लिये क़ैद का हुक्म दिया। जब ह़ज़रते इमाम से इस का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया की क़ाज़ी तादीब का ज़ियादा सज़ावार है।(2)

हिशाम बिन अ़म्मार ने इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से जो खड़े थे एक ह़दीस पूछी। आप ने उस के बीस कोड़े मारे। फिर तरस खा कर बीस ह़दीसें रिवायत कीं। येह देख कर हिशाम ने कहा कि काश वोह और कोड़े मारते और ज़ियादा ह़दीसें रिवायत करते।(3)

ह़ज़रते इब्ने सीरीन ताबेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बा'ज़ वक़्त हंस पड़ते मगर जब उन के पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़दीस का ज़िक्र आता तो उन पर ख़ुशूअ़ त़ारी हो जाता।(4)

ह़ज़रते क़तादा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की निस्बत मरवी है कि जब वोह ह़दीस सुनते तो उन को गिर्या व इज़्तिराब लाह़िक़ हो जाता।(5)

ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा सिने 198 हिजरी) जब ह़दीस पढ़ते तो ह़ाज़िरीने मजलिस को चुप रहने का हुक्म देते और फ़रमाते कि ब फ़ह़्वाए(6) لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ(7) ह़दीस शरीफ़ की किराअत के वक़्त सुकूत वाजिब है जैसा कि ह़यात शरीफ़ में हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़ौल मुबारक के सुनने के वक़्त वाजिब था।(8)

इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि एक शख़्स ह़ज़रते इब्ने मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया आप उस वक़्त लेटे हुवे थे। उस ने आप से एक ह़दीस दरयाफ़्त की।

---

1 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:فی سیرۃ السلف ...الخ، ج۲، ص۴۶۔علمیہ

2 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:فی سیرۃ السلف ...الخ، ج۲، ص۴۶۔علمیہ

3 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:فی سیرۃ السلف ...الخ، ج۲، ص۴۶۔علمیہ

4 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:فی سیرۃ السلف ...الخ، ج۲،ص۴۴۔علمیہ

5 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:واعلم ان حرمۃ النبی...الخ، ج۲،ص۴۳۔علمیہ

6 .....या'नी इस आयते मुबारका के मुत़ाबिक़।

7 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से। (پ۲۶،الحجرات:۲) **इल्मिय्या**

8 ......الشفاء،القسم الثانی...الخ،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:واعلم ان حرمۃ النبی...الخ،ج۲،ص۴۳۔علمیہ

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه उठ बैठे और ह़दीस बयान की। उस ने कहा : मैं चाहता था कि आप उठने की तक्लीफ़ न फ़रमाते। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं पसन्द नहीं करता कि लेटे हुवे ह़दीस शरीफ़ बयान करूं।(1)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। आप हम से ह़दीसें बयान कर रहे थे। अस्नाए क़िराअत में आप को एक बिच्छू ने सोलह मरतबा डंक मारा। आप का रंग ज़र्द हो रहा था मगर आप ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस को क़त्अ़ न किया। जब आप रिवायते ह़दीस से फ़ारिग़ हुवे और सामेईन चले गए तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि मैं ने आज आप से एक अ़जीब बात देखी है। फ़रमाया : हां ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़दीस की अ़ज़्मत व एह़तिराम के लिये सब्र किया।(2) (ماخوذ از مواہب وشفاء شریف)

आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आसार शरीफ़ा की ता'ज़ीम

﴾1﴿.....ह़ज़रते इब्ने सीरीन ताबेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से कहा कि हमारे पास रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ बाल मुबारक हैं जो हमें ह़ज़रते अनस या अहले अनस से मिले हैं। येह सुन कर ह़ज़रते उ़बैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि मेरे पास इन बालों में से एक बाल का होना मेरे नज़्दीक दुन्या व माफ़ीहा से मह़बूब तर है। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सरे मुबारक के बाल मुंडवाते तो ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه सब से पहले आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक लेते।

(صحیح بخاری، کتاب الوضوء، باب الماء الذی یغسل بہ شعر الانسان)(3)

﴾2﴿.....ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि ह़ज्जाम आप के सरे मुबारक को मूंड रहा था। सह़ाबए किराम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ......الشفاء، القسم الثانی... الخ، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل: فی سیرۃ السلف ... الخ، ج۲، ص۴۴۔علمیہ

2 ......الشفاء، القسم الثانی... الخ، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل: فی سیرۃ السلف ... الخ، ج۲، ص۴۶۔علمیہ

3 ......صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب الماء الذی یغسل بہ شعر الانسان، الحدیث: ۱۷۰۔۱۷۱، ج۱، ص۸۲۔۸۳۔علمیہ

www.dawateislami.net

के गिर्द ह़ल्क़ा बांधे हुवे थे । वोह सब येह चाहते थे कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जो बाल मुबारक गिरे वोह किसी न किसी के हाथ में हो ।[1]

(صحیح مسلم، باب قربہ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم من الناس وتبرکھم بہ)

﴾3﴿.....ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मुज़्दलिफ़ा से) मिना में आए और जमरए अ़क़बा में कंकरियां फेंक कर अपने मकान पर तशरीफ़ लाए ।[2] फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जाम को बुलाया और सरे मुबारक के दाहिनी त़रफ़ के बाल मुंडवाए और अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर अ़त़ा फ़रमाए । बा'दे अज़ां हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बाईं त़रफ़ के बाल मुंडवा कर अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर इनायत किये और उन से फ़रमाया कि येह तमाम बाल लोगों में तक़्सीम कर दो ।[3]

(مشکوۃ بحوالہ صحیحین، کتاب المناسک، باب الحلق)

مرا از زلف تو موئے بسند است   فضولی مے کنم بوئے بسند است

﴾4﴿.....ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुछ सुर्ख़ रंग के बाल थे जो एक डिबया ब शक्ले जुलजुल[4] में रखे हुवे थे । लोग इन बालों से नज़्रे बद और दीगर बीमारियों का इलाज किया करते थे । कभी तो इन को पानी के प्याले में रखते फिर पानी को पी लेते और कभी जुलजुल को पानी के मटके में रख देते फिर उस पानी में बैठ जाते ।[5] येह मा ह़स्ले ह़दीसे बुख़ारी है । (صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب مایذکر فی الشیب)

---

1 ......صحیح المسلم، کتاب الفضائل، باب قرب النبی علیه السلام من الناس...الخ، الحدیث : ٢٣٢٥، ص ١٢٧٠

2 .....“मिश्कातुल मसाबीह़” में यहां येह अल्फ़ाज़ भी हैं : **و نحر نسکه** और क़ुरबानी का जानवर ज़ब्ह़ किया । **इल्मिय्या**

3 ......مشکاة المصابیح، کتاب المناسك، باب الحلق، الحدیث: ٢٦٥٠، ج١، ص ٤٩٣ ـ علمیه

4 .....छोटी घन्टी नुमा ।

5 ......صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب مایذکر فی الشیب، الحدیث: ٥٨٩٦، ج٤، ص ٧٦ ـ علمیه

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तारीख़ में ब रिवायते अबू सलमा नक़्ल किया है कि मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझ से बयान किया कि मेरे वालिद (अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद राइयुल अज़ान) मन्ह़र[1] में नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर थे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़ह़ाया[2] तक़्सीम फ़रमाए और उस को अपने बालों में से दिया।[3] (इसाबा)

तबक़ाते[4] इब्ने सा'द में इस रिवायत में इतना और है कि मुह़म्मदे मज़्कूर फ़रमाते हैं कि वोह बाल मेहंदी और वस्मा[5] से रंगा हुवा हमारे पास मौजूद है।[6]

﴾6﴿.....ह़ज़रते अबू मह़ज़ूरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه (मुअज़्ज़िने अहले मक्का) के सर के सामने के ह़िस्से में बालों का एक जोड़ा था जब वोह ज़मीन पर बैठते और उस को खोल देते तो बाल ज़मीन से लग जाते। किसी ने उन से कहा कि इन बालों को मुंडवा क्यूं नहीं देते? उन्हों ने जवाब दिया कि मैं इन को मुंडवा नहीं सकता क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक इन को लगा हुवा है।[7] (शिफ़ा शरीफ़)

﴾7﴿.....ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद क़ुरशी मख़्ज़ूमी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की टोपी जंगे यरमूक में गुम हो गई। उन्हों ने कहा कि तलाश करो तलाश करते करते आख़िरे कार मिल गई। लोगों ने उन से सबब पूछा तो फ़रमाया कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उ़मरह अदा फ़रमाया। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरे मुबारक मुंडवाया तो लोग आप के मूए मुबारक लेने के लिये दौड़े। मैं ने भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी मुबारक के बाल ले कर इस टोपी में रख लिये जिस लड़ाई में येह टोपी मेरे पास रही मुझे फ़त्ह़ नसीब होती रही।[8]

(इसाबा, तर्जमए ख़ालिद बिन वलीद)

1.....ऊंटों को नह़्र करने की जगह। 2.....क़ुरबानी के जानवर।

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف العین المهملة،ترجمةعبد اللّٰه بن زید بن ثعلبة،ج٤، ص٨٥-علميه

4 ......طبقات ابن سعد، جزء ثالث، قسم ثانی، ص٨٧-

5.....एक क़िस्म का ख़िज़ाब जिस के बारे में एक क़ौल येह है कि येह सुर्ख़ होता है। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعلم **इल्मिय्या**

6 ......الطبقات الكبرى لابن سعد طبقات البدريين من الانصار،عبد اللّٰه بن زيد٢١٨، ج٣، ص٤٠٦-علميه

7 ......الشفاء،الباب الثالث فی تعظيم امره،فصل:ومن اعظامه ...الخ، ج٢،ص٥٦-علميه

8 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف الخاء المعجمة خالد بن وليد المخزومی، ج٢، ص٢١٧-علميه

www.dawateislami.net

"शिफ़ा शरीफ़" में इस त़रह़ है कि ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की टोपी में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुछ बाल थे। वोह टोपी किसी ग़ज़्वे में गिर गई। ह़ज़रते ख़ालिद ने उस के लिये मुड़ कर सख़्त ह़म्ला किया जिस में बहुत से मुसलमान काम आए। सह़ाबए किराम ने उन पर ए'तिराज़ किया तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं ने येह ह़म्ला टोपी के लिये नहीं किया बल्कि मूए मुबारक के लिये किया था जो उस टोपी में थे कि मबादा[1] उन की बरकत मेरे पास न रहे और वोह काफ़िरों के हाथ लग जाएं।[2]

﴾8﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मे सुलैम (वालिदए अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के हां चमड़े के फ़र्श पर क़ैलूला फ़रमाया करते थे। जब आप सो जाते तो वोह आप के पसीनए मुबारक को एक शीशी में जम्अ़ कर लेतीं और शाना करते वक़्त[3] जो बाल गिरते उन को और पसीनए मुबारक को सक[4] में मिला देतीं। ह़ज़रते समामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल है कि जब ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त आया तो मुझे वसिय्यत की, कि इस सक में से कुछ मेरे ह़नूत[5] में डाल दिया जाए। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।[6] (صحیح بخاری، کتاب الاستیذان، باب من زار قوما فقال عندہم)

﴾9﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में आ कर उन के बिस्तर पर क़ैलूला फ़रमाया करते और वोह घर में न हुवा करतीं। एक रोज़ ह़स्बे मा'मूल ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उन के बिस्तर पर सोए हुवे थे जब उन को ख़बर हुई तो आ कर देखा कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीना बिस्तर पर एक चमड़े के टुकड़े पर पड़ा हुवा है। उन्हों ने अपने डिब्बे में से एक शीशी निकाली और पसीनए मुबारक को उस में निचोड़ने लगीं। ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंख खुली तो पूछा कि उम्मे सुलैम ! तुम क्या कर रही हो ? उम्मे सुलैम ने अ़र्ज़ किया कि हम अपने बच्चों के लिये आप के पसीने की बरकत के उम्मीदवार हैं। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम ने सच कहा।[7] (صحیح مسلم، باب طیب عرقہ صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم والتبرک بہ)

1.....कहीं ऐसा न हो।

2 ......الشفاء،الباب الثالث فی تعظیم امرہ،فصل:ومن اعظامہ ...الخ، ج٢، ص٥٦-علمیه

3.....कंघी करते वक़्त।

4.....एक क़िस्म की ख़ुश्बू है जो मुरक्कब होती है। 12 मिन्ह

5.....काफ़ूर व सन्दल वग़ैरा जो मुर्दे के कफ़न व जिस्म पर मल दिया जाता है। 12 मिन्ह

6 ......صحیح البخاری، کتاب الاستئذان،باب من زاروقوما فقال عندھم، الحدیث:٦٢٨١،ج٤، ص١٨٢-١٨٣-علمیه

7 ......صحیح المسلم، کتاب الفضائل ، باب طیب عرق النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ ، الحدیث :(٨٤) - (٢٣٣١)، ص١٢٧٢-علمیه

www.dawateislami.net

इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक को बच्चों के चेहरे और बदन पर मल दिया करते थे जिस से वोह तमाम बलाओं से मह़फ़ूज़ रहा करते थे।

﴾10﴿.....ह़ज़रते साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से कहा कि येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बालों में से एक बाल है जब मैं मर जाऊं तो इसे मेरी ज़बान के नीचे रख देना। चुनान्चे, मैं ने ह़स्बे वसिय्यत उन की ज़बान के नीचे रख दिया और वोह इसी ह़ालत में दफ़्न किये गए। (इसाबा, तर्जमए अनस बिन मालिक)(1)

﴾11﴿.....जब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त आया तो उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ बाल और नाख़ुन मंगवाए और वसिय्यत की, कि येह मेरे कफ़न में रख दिये जाएं। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।(2) (طبقات ابن سعد، جزء خامس، ص۳۰۰)

﴾12﴿.....ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुब्ह़ की नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो मदीने के ख़ुद्दाम अपने बरतन (जिन में पानी होता) ले कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर एक बरतन में अपना दस्ते मुबारक डुबो देते। बा'ज़ वक़्त सर्दी होती तो भी इसी त़रह़ करते।(3)

(صحیح مسلم، باب قربہ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم من الناس وتبرکھم بہ وتواضعہ لھم)

﴾13﴿.....जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वुज़ू फ़रमाते तो वुज़ू के पानी के लिये ह़ाज़िरीन में लड़ाई तक नौबत पहुंचने लगती। (صحیح بخاری، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس)(4)

﴾14﴿.....ह़ज़रते अबू जुहैफ़ा (वहब बिन अ़ब्दुल्लाह सुवाई) का बयान है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चर्मी सुर्ख़ क़ुब्बा में थे। मैं ने ह़ज़रते बिलाल को देखा कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू का पानी लिया

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف الالف انس بن مالك انصاری، ج۱، ص۲۷٦۔علمیه

2 ......الطبقات الکبری لابن سعد،الطبقة الثالثة من اهل المدینة من التابعین عمر بن عبد العزیز۹۹۵،ج۵،ص۳۱۸۔علمیه

3 ......صحیح المسلم،کتاب الفضائل،باب قرب النبی علیه السلام من الناس...الخ،ص۱۲۷۰،الحدیث: ۲۳۲٤۔علمیه

4 ......صحیح البخاری، کتاب الوضوء،باب استعمال فضل وضوء الناس، الحدیث:۱۸۹، ج۱، ص۸۹ملخصا۔علمیه

www.dawateislami.net

और लोग उस पानी को लेने के लिये दौड़ रहे थे। जिस को उस में से कुछ मिलता वोह उसे अपने हाथों पर मलता और जिस को कुछ न मिलता वोह दूसरे के हाथ की तरी ले कर मल लेता।[1] (صحیح بخاری،کتاب اللباس،باب القبۃ الحمراء من ادم)

《15》.....ह़ज़रते त़ल्क़ बिन अ़ली यमामी का बयान है कि हम अपने वत़न से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ निकले। ह़ाज़िरे ख़िदमत हो कर हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त की और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ी और अ़र्ज़ किया कि हमारे वत़न में हमारा एक गिरजा है। फिर हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने वुज़ू का बचा हुवा पानी इनायत फ़रमाएं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पानी त़लब फ़रमाया और वुज़ू कर के बक़िय्या आब की एक कुल्ली हमारे वासित़े छागल में डाल दी और रवानगी की इजाज़त दे कर फ़रमाया कि जब तुम अपने वत़न में पहुंच जाओ तो अपने गिरजा को तोड़ डालो और उस की जगह पर इस पानी को छिड़क दो और गिरजा की जगह पर मस्जिद बना लो। हम ने अ़र्ज़ किया कि हमारा शहर मदीनए मुनव्वरा से दूर है गर्मी सख़्त है येह पानी ख़ुश्क हो जाएगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस में और पानी डाल लेना बरकत ज़ियादा हो जाएगी।[2] (مشکوٰۃ بحوالہ نسائی،باب المساجد ومواضع الصلوٰۃ)

《16》.....एक रोज़ ह़ज़रते ख़िदाश बिन अबी ख़िदाश मक्की رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक प्याले में खाना खाते देखा। उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह प्याला बत़ौरे तबर्रुक ले लिया। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब ह़ज़रते ख़िदाश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हां तशरीफ़ ले जाते तो उन से वोही प्याला त़लब फ़रमाते। उसे आबे ज़मज़म से भर कर पीते और चेहरे पर छींटे मारते। (इसाबा, तर्जमए ख़िदाश)[3]

《17》.....ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि हम ने बा'ज़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हां बत़ौरे अ़रूस भेजा। जब हम ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुईं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बड़ा प्याला दूध का निकाला और उस में से

---

1 ......صحیح البخاری،کتاب اللباس،باب القبۃ الحمراء من ادم،الحدیث:٥٨٥٩،ج٤،ص٦٦۔علمیه

2 ......مشکاۃ المصابیح،کتاب الصلوۃ،باب المساجد ومواضع الصلوۃ،الحدیث:٧١٦،ج١،ص١٥١۔علمیه

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف الخاء المعجمة،ترجمة خداش بن ابی خداش،ج٢،ص٢٢٨۔علمیه

www.dawateislami.net

पी कर अपनी बीवी को दिया। वोह बोलीं कि मुझे इश्तिहा नहीं।[1] हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तू भूक और झूट को जम्अ़ न कर। फिर मुझे इनायत फ़रमाया मैं उस प्याले को अपने होंटों पर फिराने लगी ह़ालांकि मैं पीती न थी मह़्ज़ बदीं ग़रज़[2] फिराती थी कि मेरे होंट उस जगह से लग जाएं जहां रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के होंट मुबारक लगे थे। बा'दे अज़ां हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बीवी को छोड़ आए। (معجم صغیر طبرانی، اسم عبد الحمید)[3]

﴾18﴿.....ह़ज़रते आ़सिम अह़वल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का प्याला देखा जो अ़रीज़ व उ़म्दा और चौबे नज़ार (दरख़्ते गुज़्या शमशाद) का बना हुवा था वोह टूट गया था। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे चांदी के तार से जोड़ा हुवा था। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं ने उस प्याले में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बारहा पानी पिलाया है। बक़ौले इब्ने सीरीन उस में लोहे का एक ह़ल्क़ा था ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चाहा कि बजाए लोहे के सोने या चांदी का ह़ल्क़ा बनाएं मगर अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि जिस चीज़ को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनाया हो उसे तब्दील न करना चाहिये, येह सुन कर वैसा ही रहने दिया।[4]

(صحیح بخاری، کتاب الاشربہ، باب الشرب من قدح النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وانیتہ)

फिर येह प्याला ह़ज़रते नज़्र बिन अनस की मीरास से आठ लाख दिरहम को ख़रीदा गया। इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने इस प्याले को बसरा में देखा और इस में पानी पिया है।[5] (شرح شمائل للبیجوری بحوالہ شرح مناوی)

﴾19﴿.....एक रोज़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब सक़ीफ़ा बनी साइ़दा में रौनक़ अफ़रोज़ थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि हमें पानी पिलाओ। चुनान्चे, ह़ज़रते सह्ल ने एक प्याले में हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को और आप के

1.....या'नी भूक नहीं। 2.....इस ग़रज़ से।

3 ......المعجم الصغیر للطبرانی، باب العین، من اسمہ عبد الحمید، الحدیث: ۷۱۱، ج۱، ص۲۵۲۔علمیہ

4 ......صحیح البخاری، کتاب الاشربۃ، باب الشرب من قدح النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم...الخ، الحدیث: ۵۶۳۸، ج۳، ص۵۹۵ ملخصا۔علمیہ

5 ......مرقاۃ المفاتیح، کتاب الاطعمۃ، باب النقیع والانبذۃ، الفصل الاول، تحت الحدیث: ۴۲۸۶، ج۸، ص۱۰۹۔علمیہ

www.dawateislami.net

अस्ह़ाब को पानी पिलाया। ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ह़ज़रते सह्ल ने वोही प्याला हमारे वासिते़ निकाला और हम ने पानी पिया। उस प्याले को ख़लीफ़ा उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सह्ल से मांग कर ले लिया। (صحیح مسلم، باب اباحۃ النبیذ الذی لم یشتد ولم یصر مسکراً)[1]

﴾20﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उ़र्ना में ख़ालिद बिन सुफ़्यान बिन नुबैह़ हुज़ली[2] के क़त्ल करने के लिये भेजा। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ने उसे क़त्ल कर दिया और उस का सर ले कर एक ग़ार में दाख़िल हुवे, उस ग़ार पर मकड़ी ने जाला तन दिया, दुश्मन जो तआ़क़ुब में आए उन्हों ने वहां कुछ न पाया, और ना उम्मीद वापस हो गए। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ार से निकल कर अठ्ठारह दिन के बा'द ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और ख़ालिद के सर को सामने रख कर क़िस्सा बयान किया। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक में अ़सा था। आप ने अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया और यूं इरशाद फ़रमाया : "تَخَصَّر بِهٰذِهٖ فِى الْجَنَّة" बिहिश्त में इस पर टेक लगाना। वोह अ़सा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रहा जब उन की वफ़ात का वक़्त आया तो वसिय्यत की, कि इस अ़सा को मेरे कफ़न में रख कर मेरे साथ दफ़्न कर देना। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया।[3]

﴾21﴿.....इमाम इब्ने मामून का बयान है कि हमारे पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के प्यालों में से एक प्याला था हम उस में ब ग़रज़े शिफ़ा बीमारों को पानी पिलाया करते थे। (शिफ़ा शरीफ़)[4]

﴾22﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ऊनी जुब्बा कसरवानी था जिस की जेब और दोनों चाकों पर दीबा की सन्जाफ़[5] थी। येह जुब्बा पहले ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

---

1 ......صحیح المسلم، کتاب الاشربۃ، باب اباحۃ النبیذ الذی لم یشتد...الخ، الحدیث: ۲۰۰۷، ص ۱۱۱۲-علمیہ

2 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "नीज हुज़ली" लिखा है लेकिन ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब, ह़यातुल ह़ैवान और दीगर कुतुब में "नुबैह़ हुज़ली" है लिहाज़ा हम ने किताबत की ग़लती़ पर मह़मूल करते हुवे यहां "नीज हुज़ली" के बजाए "नुबैह़ हुज़ली" लिखा है। **इल्मिय्या**

3 ......حیاۃ الحیوان للدمیری تحت عنکبوت۔ زرقانی علی المواہب، باب ہجرۃ المصطفٰی واصحابہ الی المدینۃ۔......(حیاۃ الحیوان الکبری، باب العین المھملۃ، العنکبوت، ج۲، ص۲۲۶، و شرح الزرقانی علی المواھب، باب الھجرۃ المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم واصحابہ...الخ، ج۲، ص۱۲۶-علمیہ)

4 ......الشفاء بتعریف حقوق المصطفٰی، القسم الاوّل، الباب الرابع، فصل فی کراماتہ، ج ۲، ص ۳۳۱-علمیہ

5 .....एक क़ीमती रेशमी झालर।

www.dawateislami.net

के पास था उन के बा'द ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ले लिया । वोह फ़रमाती हैं कि इस जुब्बा को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहना करते थे । हम उसे धो कर ब गरज़े शिफ़ा बीमारों को पिलाते हैं ।(1)

﴾23﴿.....ह़ज़रते मुह़म्मद बिन जाबिर के दादा सय्यार बिन त़ल्क़ यमामी वफ़्दे बनी ह़नीफ़ा में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और ईमान लाए । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अपनी क़मीस का एक टुकड़ा इनायत फ़रमाइये मैं उस के साथ अपना दिल बहलाया करूंगा । ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर अपनी क़मीस का एक टुकड़ा इनायत फ़रमाया । मुह़म्मद बिन जाबिर का बयान है कि मेरे बाप ने मुझ से बयान किया कि वोह टुकड़ा हमारे पास था हम उसे धो कर ब ग़रज़े शिफ़ा बीमारों को पिलाया करते थे । (इसाबा, तर्जमए सय्यार बिन त़ल्क़)(2)

﴾24﴿.....जब ह़ज़रते वलीद बिन वलीद बिन मुग़ीरा क़ुरशी मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक्का में क़ैद से भाग कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो अ़र्ज़ किया कि मैं मरा जाता हूं आप मुझे किसी ज़ाइद कपड़े में जो आप के जसदे अत़्हर पर रहा हो कफ़नाना ! चुनान्चे, आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को अपनी क़मीस में कफ़नाया ।(3)

(इसाबा, तर्जमए वलीद बिन वलीद बिन मुग़ीरा)

﴾25﴿.....ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ाज़िम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ(4) के पास एक सियाह इमामा था जिसे वोह जुमुआ़ और ईदैन में पहना करते थे । लड़ाई में जब फ़त्ह़ पाते तो बत़ौरे तबर्रुक उस इमामे को पहनते और फ़रमाते कि येह इमामा मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहनाया था । (इसाबा)(5)

---

1 ......صحیح مسلم، باب تحریم اناء الذھب والفضۃ علی النساء والرجال۔.......(صحيح المسلم، كتاب اللباس و الزينة، باب تحريم استعمال اناء الذهب و الفضة على الرجال و النساء...الخ، الحديث: ٢٠٦٩ ص١١٤٧۔علميه)

2 ......الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف السين المهملة، سيار بن طلق اليمامى ج٣، ص١٩٤۔علميه

3 ......الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف الواو، الواو وبعدها اللام، الوليد بن الوليد بن المغيرة ٩١٧٢ ج٦، ص٤٨٦۔علميه

4.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ाज़िम" लिखा है लेकिन इसाबा और दीगर कुतुब में "अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ाज़िम" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने इसाबा के मुत़ाबिक़ "अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ाज़िम" लिखा है । **इल्मिय्या**

5 ......الاصابة فى تمييز الصحابة، حرف العين المهملة، عبد اللّٰه بن خازم، ج٤، ص٦١۔علميه

www.dawateislami.net

﴾26﴿.....अय्यूब बिन नज्जार ब रिवायते अबू अ़ब्दुल्लाह नक़्ल करते हैं कि इन के दादा के पास रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लिह़ाफ़ था। जब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा बनाए गए तो इन्हों ने उन के दादा को कहला भेजा। चुनान्चे, वोह उस लिह़ाफ़ को चमड़े में लपेट कर लाए। ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस से अपने चेहरे को मलने लगे। (تاریخ صغیر للبخاری،ص ۱۱۱)(1)

﴾27﴿.....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बा'ज़ वक़्त शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह क़रशिय्या अ़दविय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا के हां तशरीफ़ ले जाते और उन के घर में क़ैलूला फ़रमाते। ह़ज़रते शिफ़ा ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक बिछौना और एक चादर बनवाई थी जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सो जाया करते। वोह बिछौना और चादर ह़ज़रते शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا के ख़ानदान में रही यहां तक कि मरवान बिन अल ह़कम ने ले ली। (इस्तीआ़ब व इसाबा)(2)

﴾28﴿.....ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ईमान ला कर अपना क़सीदा بَانَتْ سُعَاد पढ़ा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को अपनी चादर ओढ़ाई। ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसाबा में ब रिवायते सईद बिन मुसय्यिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नक़्ल किया है कि येह वोही चादर है जिसे ख़ुलफ़ा ईदैन में पहनते हैं। (انتہی)(3)

अबू बक्र बिन अम्बारी (मुतवफ़्फ़ा 10 ज़िल ह़िज्जा सिने 328 हिजरी) की रिवायत में है कि जब ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस शे'र पर पहुंचे :

انّ الرّسول لنور يستضاء بهٖ مهند من سيوف اللّٰه مسلول

तो आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ चादर मुबारक फेंक दी। ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस चादर के लिये दस हज़ार दिरहम ख़र्च किये मगर ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चादर के लिये मैं किसी को अपनी ज़ात पर तरजीह़ नहीं देता। ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

---

1 ......تاریخ الصغیر للبخاری، ج ۱، ص ۲٦٤۔علمیه

2 ...... الاستیعاب فی معرفة الاصحاب ، کتاب النساء ، باب الشین ، ترجمة الشفاء بنت عبد اللّٰه القرشیة العدویة ، ج ٤ ، ص ۱۸٦۸۔علمیه

3 ......الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف الکاف، کعب بن زهیر بن ابی سلمی ۷٤۲٦، ج٥، ص ٤٤۳۔علمیه

www.dawateislami.net

ने उन के वरसा से वोह चादर बीस हज़ार दिरहम को ले ली। इब्ने अम्बारी का क़ौल है कि वोही चादर आज तक सलातीन के पास है। (شرح قصیدہ بانت سعاد لابن ہشام المتوفی ۷۶۱ھ)[1]

﴾29﴿.....ह़ज़रते सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि एक औ़रत एक चादर ले कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह चादर मैं ने अपने हाथ से बुनी है मैं आप के पहनने के लिये लाई हूं। आप को ज़रूरत थी इस लिये आप ने क़बूल फ़रमाई। फिर आप उसे बत़ौरे तहबन्द बांध कर हमारी त़रफ़ निकले। सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ में से एक ने देख कर अ़र्ज़ किया : क्या अच्छी चादर है येह मुझे पहना दीजिये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां ! कुछ देर के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मजलिस से उठ गए फिर वापस आए और वोह चादर लपेट कर उस साइल सह़ाबी के पास भेज दी। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ ने उस से कहा कि तू ने अच्छा न किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस चादर का सुवाल किया। ह़ालांकि तुझे मा'लूम है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी का सुवाल रद नहीं फ़रमाते। उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं ने सिर्फ़ इस वासिते़ सुवाल किया कि मेरे मरने पर येह चादर मेरा कफ़न बने। रावी का बयान है कि वोह चादर उस का कफ़न ही बनी। (صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب البرود والحبرۃ والشملۃ)[2]

﴾30﴿.....ह़ज़रते अबू बरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हमें एक कमली जो पैवन्दों की कसरत से नम्दा[3] की मिस्ल थी और एक मोटा तहबन्द निकाल कर दिखाया और फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन दोनों में विसाल फ़रमाया। (صحیح بخاری، کتاب اللباس، باب الاکسیۃ والخمائص)[4]

﴾31﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातम शरीफ़[5] जिस में तीन सत़रें यूं थी : (اللّٰه رسول محمد) ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास थी फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास रही

---

1 ......السيرة الحلبية، باب يذكر فيه مايتعلق بالوفود...الخ، ج٣، ص ٣٠٢ـ علميه

2 ......صحيح البخارى، كتاب اللباس، باب البرود والحبرة والشملة، الحديث: ٥٨١٠، ج٤، ص ٥٤ـ علميه

3 .....मोटा खुर्दरा ऊनी कपड़ा।

4 ......صحيح البخارى، كتاب اللباس، باب الاكسية والخمائص، الحديث: ٥٨١٨، ج، ص ٥٥ ملتقطا طرفه ٣١٠٨ـ علميه

5 .....अंगूठी मुबारक।

www.dawateislami.net

बा'दे अज़ां ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी को मिली। जब उन की ख़िलाफ़त को छे बरस हो गए तो एक रोज़ वोह चाहे अरीस पर बैठे हुवे थे कि हाथ में से कूएं में गिर पड़ी तीन दिन तलाश करते रहे कूएं का तमाम पानी निकाला गया मगर न मिली।

जब ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام की ख़ातम गुम हो गई थी तो उन की बादशाहत जाती रही थी। येही राज़ हुज़ूर ख़तमुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातम गुम होने में था। चुनान्चे, इस के बा'द उस फ़ितने का आग़ाज़ हुवा जिस का अन्जाम ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत पर हुवा।(وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص ۱۲۱)[1]

﴾32﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तल्वार ज़ुल फ़िक़ार ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास थी। जब वोह हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत के बा'द यज़ीद के पास मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते इमाम से वोही तल्वार मांगी थी और अ़र्ज़ किया था कि "आप से ले लेंगे, जब तक मेरे जिस्म में जान है कोई मुझ से न ले सकेगा।"[2] (صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب ما ذکر من درع النبی صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم وعصاہ وسیفہ الخ)

इमाम अस्मई (मुतवफ़्फ़ा सिने 213 हिजरी) ज़िक्र करते हैं कि एक रोज़ मैं ख़लीफ़ा हारून रशीद के हां गया उन्हों ने मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तल्वार ज़ुल फ़िक़ार दिखाई जिस से बेहतर मैं ने कोई तल्वार नहीं देखी।[3] (زرقانی، جزء ثالث، ص ۳۷۸)

﴾33﴿.....ह़ज़रते ई़सा बिन त़हमान का बयान है कि ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें दो पुराने ना'लैन निकाल कर दिखाए जिन में से हर एक में बन्दिश के दो दो तस्मे थे। इस के बा'द ह़ज़रते साबित बुनानी ने ब रिवायते अनस मुझ से बयान किया कि येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना'लैन शरीफ़ैन हैं।[4] (صحیح بخاری، باب ما ذکر من درع النبی صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم الخ)

---

1 ......وفاء الوفاء باخبار دار المصطفی، الباب السادس فی آبا رها المبارکات، الفصل الاول بئر أريس، ج٣، ص٩٤٣-٩٤٤-علميه

2 ......صحيح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ما ذکر من درع النبی صلی اللّٰه عليه و سلم و عصاه و سيفه...الخ، الحديث:٣١١٠، ج٢، ص٣٤٤-علميه

3 ......شرح الزرقانی علی المواهب، المقصدالثانی...الخ، الفصل الثامن فی الات حروبه...الخ، ج٥، ص٨٦-علميه

4 ......صحيح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ما ذکر من درع النبی صلی اللّٰه عليه و سلم و عصاه و سيفه...الخ، الحديث:٣١٠٧، ج٢، ص٣٤٣-علميه

www.dawateislami.net

﴾34﴿.....जंगे बद्र में ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो बरछी उ़बैदा बिन सईद बिन आ़स की आंख में मारी थी वोह यादगार रही बदीं त़ौर कि ह़ज़रते ज़ुबैर से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्तआ़र ली फिर आप के चारों ख़ुलफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के पास बत़ौरे तबर्रुक मुन्तक़िल होती रही बा'दे अज़ां ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रही यहां तक कि ह़ज्जाज ने उन को सिने 73 हिजरी में शहीद कर दिया।[1] (صحیح بخاری،باب شہود الملائکۃ ببدر)

﴾35﴿.....जंगे उहुद में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार टूट गई आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को एक खजूर की शाख़ अ़त़ा फ़रमाई वोह उन के हाथ में तल्वार बन गई। इस तल्वार को उ़र्जून कहते थे। येह बत़ौरे तबर्रुक उन के ख़ानदान में रही यहां तक कि बुग़ातुरकी[2] के हाथ जो मो'तसिम बिल्लाह इब्राहीम बिन हारून रशीद के अमीरों में से था बग़दाद में दो सो दीनारों में फ़रोख़्त हुई।[3] (زرقانی علی المواہب،جزء ثانی،ص ۴۳)

﴾36﴿.....ह़ज़रते इतबान बिन मालिक अन्सारी ख़ज़रजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मेरी बसारत जाती रही। मैं ने एक शख़्स को भेज कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : मैं चाहता हूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़दम रन्जा फ़रमाएं और मेरे मकान में नमाज़ पढ़ें ताकि मैं आप की जाए नमाज़ को मस्जिद मुक़र्रर कर लूं। चुनान्चे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ अस्ह़ाब तशरीफ़ लाए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे मकान में नमाज़ पढ़ी।[4] (صحیح مسلم،کتاب الایمان)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب شہود الملائکۃ بدرا، الحدیث:۳۹۹۸، ج۳، ص۱۸۔علمیہ

2 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "बफ़ातिरकी" लिखा है लेकिन ज़ुरक़ानी अ़लल मवाहिब और दीगर कुतुब में "बुग़ातुरकी" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "बफ़ातिरकी" के बजाए "बुग़ातुरकी" लिखा है। **इल्मिय्या**

3 ......شرح الزرقانی علی المواہب، المقصدالاول،کتاب المغازی، باب غزوۃ احد، ج۲، ص۴۳۳-۴۳۴۔علمیہ

4 ......صحیح المسلم،کتاب الایمان ، باب الدلیل علی ان من مات علی التوحید دخل الجنۃ قطعاً، ج۲، الحدیث: (۳۳)، ص۳۸۔علمیہ

www.dawateislami.net

﴾37﴿.....एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अबू मरयम जुहनी की इ़यादत को तशरीफ़ ले गए और वहीं मैदान में नमाज़ पढ़ कर वापस हो गए। क़बीलए जुहैना के चन्द अश्ख़ास ने अबू मरयम से कहा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त करें कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस हमारे वासिते एक मस्जिद की ह़दबन्दी कर दें। चुनान्चे, अबू मरयम रास्ते ही में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जा मिले और अ़र्ज़ किया कि आप मेरी क़ौम के लिये एक मस्जिद की ह़दबन्दी कर दें। चुनान्चे, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वापस हो कर बनू जुहैना में एक मस्जिद की ह़दबन्दी कर दी।[1] (اصابہ، ترجمہ ابومریم جہنی)

﴾38﴿.....आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बर शरीफ़ के तीन दरजे थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ऊपर के दरजे पर बैठते और दरमियानी दरजे पर अपने पाउं मुबारक रखते। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में ब पासे अदब दरमियानी दरजे पर खड़े होते और जब बैठते तो पाउं सब से नीचे के दरजे पर रखते। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी ख़िलाफ़त में सब से नीचे के दरजे पर खड़े होते और जब बैठते तो पाउं ज़मीन पर रखते। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी ख़िलाफ़त के पहले छे साल ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ की त़रह़ करते रहे फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जुलूस की जगह[2] चढ़े।[3] (وفاء الوفاء، جزء اول، ص۲۸۰)

कश्फ़ुल ग़ुम्मा लिश्शा'रानी (जुज़्ए अव्वल, स. 161) में है कि जब ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का अ़हद आया तो उन्हों ने मिम्बर शरीफ़ के दरजात ज़ियादा कर दिये। वोह ऊपर के तीनों दरजों को छोड़ कर ज़ियादत के पहले दरजे पर खड़े हुवा करते थे।[4]

---

1 ......الاصابة فی تمییز الصحابة،باب الکنی، حرف المیم،ابومریم الجهنی:۱۰۵۳۱، ج۷، ص۳۰۷۔علمیه

2.....तशरीफ़ फ़रमा होने की जगह।

3 ......وفاء الوفاء باخبار دار المصطفی،الفصل الرابع فی خبر الجذع الذی کان یخطب...الخ،عودالی الاختلاف فی صانع المنبر، ج۱،الجزء ۲،ص۳۹۸۔علمیه

4 ......کشف الغمة، کتاب الصلوة ،فصل فی الاذان والخطبة وغیرهما،الجزء ۱،ص۱۷۷۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾39﴿.....ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को देखा गया कि मिम्बरे मुनीफ़ में जो जगह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बैठने की थी उसे हाथ से मस किया फिर उस हाथ को अपने मुंह पर मल लिया ।(1) (شفاء شریف وطبقات ابن سعد)

﴾40﴿.....यह़्या बिन सईद जो इमामे मालिक के उस्ताद थे जब इराक़ को जाते तो मिम्बर शरीफ़ के पास आ कर उसे मस करते और दुआ़ मांगते ।(2) (وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص۴۴۲)

﴾41﴿.....मस्जिदे नबवी में पहली आतश ज़दगी यकुम रमज़ान सिने 654 हिजरी में हुई, इस में मिम्बरे नबवी का बक़ाया भी जल गया चुनान्चे, अबुल यमन बिन अ़साकिर जो आतश ज़दगी के वक़्त ज़िन्दा थे "तोह़फ़तुज़्ज़ाइर" में यूं लिखते हैं :

"मिम्बरे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बक़ाया जल गया । इस मिम्बर के रुम्माना को जिस पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठने के वक़्त अपना दस्ते मुबारक रखा करते थे, ज़ाइरीन मस किया करते थे और दो ख़ुत़बों के दरमियान और पेशतर हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर की जिस जगह पर बैठा करते थे उस जगह को और मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ होने के वक़्त जिस जगह पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर दो क़दम हुवा करते थे उस जगह को भी ज़ाइरीन मस किया करते थे । अब आतशज़दगी से वोह इस बरकते आ़म्मा व नफ़्ए़ आ़इद से मह़रूम हो गए ।(3) (وفاء الوفاء، جزء اول، ص۲۸۰)

﴾42﴿.....ह़ज़रते असअ़द बिन ज़िरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक चारपाई बत़ौरे हदिय्या पेश की थी जिस के पाए सागवान(4) की लकड़ी के थे । हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام उस पर सोया करते थे । जब वफ़ात शरीफ़ हुई तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उसी पर रखा गया ।

---

1 ......الشفاء، الباب الثالث، فصل: ومن اعظامه واکباره...الخ، ج۲، ص۵۷۔علمیه

2 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن فی زیارة النبی...الخ، الفصل الرابع فی آداب الزیارة...الخ، ما یلزم من الزائر من الادب...الخ، ج۲، الجزء٤، ص١٤٠٣۔علمیه

3 ......وفاء الوفاء باخبار دار المصطفی، الفصل الرابع فی خبر الجذع الذی کان یخطب...الخ، مساحة المنبر، ج۱، الجزء۲، ص٤٠٦۔علمیه

4 .....एक दरख़्त जिस की लकड़ी मज़बूत़ होती है ।

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भी वफ़ात पाने पर उसी पर रखा गया। बा'दे अज़ां उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भी उसी पर रखा गया। फिर लोग बत़ौरे तबर्रुक अपने मुर्दों को उसी पर रखा करते थे। येह चारपाई बनू उमय्या के अ़हद में मीरासे आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا में फ़रोख़्त हुई। अ़ब्दुल्लाह बिन इस्ह़ाक़ ने उस के तख़्तों को चार हज़ार दिरहमों में ख़रीद लिया।[1] (زرقانی علی المواهب بحوالہ ابن عماد، جزء ثالث، ص ٣٨٢)

﴾43﴿.....रिवायत है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मतरूकात में से बा'ज़ चीज़ें ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास थीं। वोह एक कमरे में मह़फ़ूज़ थीं। इब्ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हर रोज़ एक बार उन की ज़ियारत किया करते थे। अशराफ़ में से अगर कोई उन से मिलने आता तो उस को भी उन की ज़ियारत कराया करते थे। कहते हैं कि उस कमरे में एक चार पाई, चमड़े का तकया जिस में ख़ुर्मा की छाल भरी हुई थी, एक एक जोड़ा मोज़ा, क़ती़फ़ा (लिह़ाफ़), चक्की और तरकश थी जिस में चन्द तीर थे। लिह़ाफ़ में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक के मैल का असर[2] था। एक शख़्स को सख़्त बीमारी लाह़िक़ थी जिस से शिफ़ा न होती थी। इब्ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इजाज़त से इस मैल में से कुछ धो कर बीमार की नाक में टपका दिया गया वोह चंगा[3] हो गया।[4] (مدارج النبوت، جزء ثانی، ص ٢٠٨)

﴾44﴿.....दलाइले अबी नुऐ़म में है कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये सख़्त पथ्थर ऐसे नर्म हो गए कि ग़ार बन गए। चुनान्चे, उहुद के दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे मुबारक पहाड़ की त़रफ़ माइल किया ताकि मुशरिकीन से अपना जिस्मे मुबारक छुपाएं।

---

1 ......شرح الزرقانی علی المواهب،المقصد الثانی...الخ،الفصل الثامن فی الات حروبه...الخ، ج٥، ص٩٦ـعلمیه

2 .....येह "मैल का असर" मजाज़न है क्यूंकि हमारे पसीने का असर मैल कहलाता है जब कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसीना मुबारका का अ़र्क़ शरीफ़ मैल होने से पाक है। मश्हूर मुह़द्दिस ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी किताब "अल वफ़ा ब अह़वाले मुस्त़फ़ा" में तह़रीर फ़रमाते हैं: "وكان فی القطيفة اثر رشح عرق رأسه أطيب من ريح المسك" या'नी इस लिह़ाफ़ में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक के पसीनए अक़्दस के क़त़रात लगे थे जिस में मुश्क से ज़ियादा उ़म्दा और पाकीज़ा ख़ुश्बू थी। (الوفا باحوال المصطفی لابن الجوزی، ج٢، ١٣١) **इल्मिय्या**

3 ......ठीक।

4 ......مدارج النبوت ،باب یازدهم،ذکر عمامه مبارک،ج٢،ص٢٠٨ـعلمیه

www.dawateislami.net

पस **अल्लाह** तआ़ला ने पथ्थर को ऐसा नर्म किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सरे मुबारक उस में दाख़िल कर दिया। वोह पथ्थर अब तक बाक़ी है और लोग उस की ज़ियारत करते हैं। इसी त़रह़ मक्कए मुशर्रफ़ा के एक दर्रह में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ में एक सख़्त पथ्थर से क़रार पकड़ा वोह ऐसा नर्म हो गया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर दो बाज़ूए मुबारक ने उस में असर किया वोह पथ्थर मश्हूर है जो लोग ह़ज करने को जाते हैं उस की ज़ियारत करते हैं। हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के लिये शबे मे'राज में सख़्राए बैतुल मुक़द्दस[1] ख़मीर की मानिन्द हो गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से अपना बुराक़ बांधा। लोग आज तक उसे अपने हाथ से छूते हैं।[2] (دلائل النبوۃ للحافظ ابی نعیم الاصبہانی المتوفی ۴۳۰ھ،ص۳۱۵)

﴿45﴾.....अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद इराक़ी का बयान है कि हम रबज़ा में[3] ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। उन्हों ने अपना हाथ हमारी त़रफ़ बढ़ाया जो ऐसा ज़ख़ीम था कि गोया ऊंट का सुम था और फ़रमाया कि मैं ने इस हाथ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की है, पस हम ने उन का हाथ पकड़ कर उसे बोसा दिया।[4] (طبقات ابن سعد، جزء رابع قسم ثانی، ص۳۹)

﴿46﴾.....इस्माईल बिन या'क़ूब तैमी रिवायत करते हैं कि इब्ने मुन्कदिर (मुतवफ़्फ़ा सिने 205 हिजरी) मस्जिदे नबवी के सिह़्न में एक ख़ास जगह पर लौटते और लैटते। उन से इस का सबब दरयाफ़्त किया गया तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं ने इस जगह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा है। रावी का क़ौल है कि मेरा गुमान है कि इब्ने मुन्कदिर ने कहा कि ख़्वाब में देखा है।[5] (وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص۴۴۵)

1.....बैतुल मुक़द्दस का पथ्थर।

2 ......دلائل النبوة لابی نعیم ، الفصل الثلاثون، الحديث:٥٣٩، الجزء ٢،ص٣٥٣۔علمیه

3.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "ज़बदा" लिखा है लेकिन त़बक़ात इब्ने सा'द और दीगर कुतुब में "रबज़ा" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "ज़बदा" के बजाए "रबज़ा" लिखा है। **इल्मिय्या**

4 ......الطبقات الكبرى لابن سعد،الصحابة الذين اسلموا قبل فتح مكة،سلمة بن اكوع طبقات البدريين من الانصار،عبد الله بن زيد٢١٨، ج٤، ص٢٢٩۔علمیه

5 ......وفاء الوفاء،الباب الثامن فی زيارة النبی...الخ،الفصل الرابع فی آداب الزيارة...الخ،ما يلزم من الزائرمن الادب...الخ، ج٢، الجزء٢،ص١٤٠٦۔علمیه

www.dawateislami.net

अमसिलए मज़्कूरए बाला के मुत़ालए के बा'द किसी मुसलमान को आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आसार शरीफ़ा से तबर्रुक का इन्कार नहीं हो सकता। औलिया व उ़लमा जो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकात के वारिस हैं उन के आसार शरीफ़ा में भी बरकत होती है। इस से इन्कार करना ह़िरमान व बद नसीबी की अ़लामत है। ज़ियादा तफ़्सील की इस मुख़्तसर में गुन्जाइश नहीं।

शैख़ुल इस्लाम ह़ाफ़िज़ अबुल फ़त्ह़ तक़िय्युद्दीन बिन दक़ीक़िल ईद (मुतवफ़्फ़ा 11 सफ़र सिने 702 हिजरी) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में यूं फ़रमाते हैं :

يا سائرًا نحو الحجاز مشمّرًا	اجهد فديتك فى المسيروفى السرىٰ
واذا سهرت الليل فى طلب العلا	فحذار ثم حذار من خدع الكرىٰ
فالقصد حيث النّور يشرق ساطعًا	و الطرف حيث ترى الثرىٰ متعطرًا
قف بالمنازل والمناهل من لدن	وادى قباء الى حمى امّ القرىٰ
و توخّ آثار النّبىّ فضع بها	متشرفا خدّيك فى عفر الثرىٰ
و اذا رأيت مهابط الوحى الّتى	نشرت على الآفاق نورا انورا
فاعلم بانّك ما رأيت شبيهها	مذ كنت فى ماضى الزمان ولا ترىٰ

ऐ ह़िजाज़ की त़रफ़ तेज़ी से चलने वाले ! मैं तुझ पर फ़िदा तू रात दिन चलने में कोशिश करना। और जब तू बुज़ुर्गियों की त़लब में रात को जागे तो ऊंघ के फ़रेब से बचना फिर बचना। तू उस जगह का क़स्द करना जहां नूर ख़ूब चमक रहा है। और जहां ख़ाक ख़ुश्बूदार नज़र आती है तू उन मनाज़िल और चश्मों पर ठहर जाना जो वादिये क़ुबा के क़रीब से उम्मुल क़ुरा (मक्कए मुअ़ज़्ज़मा) के सब्ज़ाज़ार तक हैं। और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आसार का क़स्द करना और उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होते हुवे वहां अपने हर दो रुख़्सार को रूए ख़ाक पर रख देना। और जब तू वह्य के उतरने की जगहों को देखे जिन्हों ने तमाम दुन्या पर नूरे अन्वर फैला दिया है तो जान लेना कि तू ने अपनी गुज़श्ता उ़म्र में इन की मिस्ल नहीं देखा और न आयिन्दा देखेगा। (فوات الوفيات،ترجمہ ابن دقیق العید)(1)

---

1 ......فوات الوفيات،حرف الميم ،ترجمه شيخ تقى الدين ابن دقيق،ج٣،ص٤٤٤-علميه

www.dawateislami.net

﴾4﴿ दुरूद शरीफ़ व ज़ियारते क़ब्र शरीफ़

मोमिनों पर वाजिब है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजा करें।

चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (احزاب، ع۷)

*तह़क़ीक़ **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते पैग़म्बर पर दुरूद भेजते रहते हैं ऐ ईमान वालो ! तुम उन पर दुरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजो।*[1]

इस आयत में ताकीद के लिये जुम्लए इस्मिय्या लाया गया है जिस के शुरूअ़ में ब ग़रज़े ताकीद मज़ीद ह़र्फ़े ताकीद मज़्कूर है। इस जुम्ले की ख़बर फ़े'ले मुज़ारेअ़ है जो इफ़ादए इस्तमरारे तजदिदी करता है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मैं और मेरे तमाम फ़िरिश्ते (जिन की गिनती मुझे ही मा'लूम है) पैग़म्बर पर दुरूद भेजते रहते हैं ऐ मोमिनो ! तुम भी इस वज़ीफ़े में मेरी और मेरे फ़िरिश्तों की इक़्तिदा करो।[2]

वाज़ेह़ रहे कि ख़ुदा के दुरूद भेजने से मुराद रह़मत का नाज़िल करना और फ़िरिश्तों और मोमिनों के दुरूद से मुराद उन का बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में तज़र्रुअ़ व दुआ़ करना है कि वोह अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत व बरकत नाज़िल फ़रमाए।

मोमिनों की त़रफ़ से दुरूद भेजने में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम है और भेजने वालों का भी फ़ाइदा है। चुनान्चे, सह़ीह़ ह़दीस में आया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है **अल्लाह** तआ़ला उस पर दस बार दुरूद भेजता है।[3] मुसलमानो ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस शाने मह़बूबिय्यत और अ़ज़्मते जाह को देखिये कि उम्मत का एक बन्दा ह़क़ीर व ज़लील, ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजता है तो उस का बदला ख़ुद रब्बे जलील جَلَّ شَانُهٗ देता है और एक के मुक़ाबले में दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल से येह शरफ़ सिर्फ़ इसी उम्मत को अ़ता हुवा है क्यूंकि इस उम्मत के सिवा किसी और उम्मत को अपने पैग़म्बर पर दुरूदो सलाम भेजने का हुक्म नहीं दिया गया।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो। (پ۲۲،الاحزاب:۵۶) **इल्मिय्या**

2.....यहां वज़ीफ़े से मुराद काम है। अ़वाम में वज़ीफ़े के जो मा'ना मश्हूर हैं वोह मुराद नहीं। **इल्मिय्या**

3.....صحیح مسلم،کتاب الصلوٰۃ،باب الصلاۃ علی النبی،الحدیث:۴۰۸، ص۲۱۶۔علمیہ

www.dawateislami.net

दुरूद शरीफ़ के फ़वाइद में से एक येह भी है कि दुरूद शरीफ़ इजाबते दुआ[1] का ज़रीआ है क्यूंकि येह भी एक क़िस्म का तवस्सुल बिन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है। दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ में है कि ह़ज़रते अबू सुलैमान अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़तिय्या दारानी (मुतवफ़्फ़ा सिने 215 हिजरी)[2] ने फ़रमाया कि जब तुम खुदा तआ़ला से कुछ मांगो तो दुआ़ से पहले और पीछे दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करो क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला दोनों त़रफ़ के दुरूद शरीफ़ को तो अपने करम से क़बूल कर ही लेता है और येह उस के करम से बई़द है कि दरमियान की चीज़ को रद कर दे।[3] अ़ल्लामा फ़ासी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शर्हे दलाइलुल ख़ैरात में लिखते हैं कि बा'ज़ के नज़्दीक इमाम दारानी के क़ौले मज़्कूर का ततम्मा यूं है : "और हर एक अ़मल मक़्बूल होता है या मर्दूद सिवाए दुरूद शरीफ़ के कि वोह मक़्बूल ही होता है मर्दूद नहीं होता।"[4] इमाम बाजी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ[5] ने ब रिवायते इब्ने अ़ब्बास नक़्ल किया है कि जब तुम **अल्लाह** तआ़ला से कुछ मांगो तो अपनी दुआ़ में दुरूद शरीफ़ शामिल करो क्यूंकि दुरूद शरीफ़ मक़्बूल होता है और **अल्लाह** तआ़ला की शान से येह बई़द है कि वोह बा'ज़ को क़बूल करे और बा'ज़ को रद करे। शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह ह़दीस नक़्ल की है कि जब तुम **अल्लाह** तआ़ला से कुछ मांगो तो पहले दुरूद शरीफ़ पढ़ो। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला की शान से बई़द है कि उस से दो ह़ाजतें मांगी जाएं जिन में से एक को पूरा कर दे और दूसरी को रद कर दे। इस रिवायत को इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने "इह़याउल उ़लूम" में नक़्ल किया है।[6] इमाम इराक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा कि मैं ने इस रिवायत को मरफ़ूअ़ नहीं पाया वोह अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर मौक़ूफ़ है।[7] "शिफ़ा शरीफ़" में है कि ह़दीस में आया है कि दुरूद शरीफ़ के दरमियान की दुआ़ रद नहीं

1.....दुआ़ की क़बूलिय्यात।

2.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "अबू सलमान" है जब कि दलाइलुल ख़ैरात और मत़ालिउ़ल मसर्रात में "अबू सुलैमान" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "अबू सलमान" के बजाए "अबू सुलैमान" लिखा है। **इल्मिय्या**

3 ......دلائل الخیرات مع مطالع المسرات(مترجم)،فصل فی فضل الصلاۃ علی البنی...الخ، ص ۱۰۰۔علمیہ

4 ......مطالع المسرات (مترجم)،فصل فی فضل الصلاۃ علی النبی...الخ، ص ۱۰۲-۱۰۳۔علمیہ

5.....सीरते रसूले अ़रबी के बा'ज़ नुस्ख़ों में यहां "इमाम ख़फ़ाजी" और बा'ज़ में "इमाम बाजी" लिखा है, मत़ालिउ़ल मसर्रात के ह़वाले से हम ने "इमाम बाजी" लिखा है। **इल्मिय्या**

6 ......احیاء علوم الدین، کتاب الاذکار والدعوات،الباب الثانی فی آداب الدعاء...الخ، ج ۱، ص ۴۰۶۔علمیہ

7 ......المغنی عن حمل الاسفار فی الاسقار فی تخریج ما فی الاحیاء من الاخبار علی ھامش الاحیاء،کتاب الاذکار والدعوات، الباب الثانی، ج ۱، ص ۴۰۶ ......۔علمیہ

www.dawateislami.net

की जाती ।[1] अबू मुह़म्मद जबर ने इस रिवायत को किताब "शरफ़ुल मुस्त़फ़ा" से मन्सूब किया है। कज़ाफ़ी "मत़ालिउ़ल मसर्रात" ।[2]

अ़ल्लामा शामी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सलफ़ के क़ौल (कि दुरूद शरीफ़ कभी रद नहीं होता) की तावील व तस्ह़ीह़ यूं की है कि दुरूद शरीफ़ (اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ) दुआ़ है और दुआ़ कभी मक़्बूल होती है और कभी मर्दूद। मगर दुरूद शरीफ़ उ़मूमन दुआ़ से मुस्तसना है क्यूंकि नस्से कुरआनी से साबित है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने रसूल पर दुरूद भेजता रहता है। उस ने अपने मोमिन बन्दों पर एह़सान किया है कि इन को भी दुरूद भेजने का हुक्म दिया है ताकि इन को ज़ियादा फ़ज़्लो शरफ़ ह़ासिल हो जाए। वरना रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तो अपने परवरदगार का दुरूद ही काफ़ी है। पस मोमिन का अपने रब से त़लबे दुरूद करना क़त्अ़न मक़्बूल है। क्यूंकि खुदा तआ़ला खुद ख़बर दे रहा है कि मैं अपने रसूल पर दुरूद भेजता रहता हूं। बाक़ी तमाम दुआ़एं और इ़बादतें इस के बर अ़क्स हैं। लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ के मक़्बूल ही होने की सनद नस्से कुरआनी है। रहा उस पर सवाब का मिलना, सो वोह चन्द अ़वारिज़ से मशरूत़ है और वोह अ़वारिज़ येह हैं : क़ल्बे ग़ाफ़िल से पढ़ना, रिया व सुम्आ़ के लिये पढ़ना,[3] किसी ह़राम चीज़ पर इस्ति'माल करना, वग़ैरा। कज़ाफ़ी रद्दुल मुह़तार ।[4]

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ा शरीफ़ की ज़ियारत बिल इजमाअ़ सुन्नत और फ़ज़ीलते अ़ज़ीमा है। इस बारे में बहुत सी अह़ादीस आई हैं जिन में से चन्द "वफ़ाउल वफ़ा" से यहां पेश की जाती हैं।[5]

﴿1﴾.....مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त साबित हो गई ।[6]

---

1 ......الشفاء،القسم الثانی فیما یجب علی الانام،الباب الرابع فی حکم الصلوۃ علیه،فصل:فی المواطن التی تستحب فیها، ج۲، ص٦٦۔علمیه

2 ......مطالع المسرات شرح دلائل الخیرات (مترجم)،ص۱۰۲۔علمیه

3.....दिखावे और शोहरत के लिये पढ़ना।

4 ......رد المحتار،کتاب الصلوۃ ، مطلب فی ان الصلاۃ علی النبی...الخ،ج۲، ص۲۸۳و۲۸۵۔علمیه

5 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن فی زیارۃ النبی صلی اللّٰه علیه وسلم ...الخ،الفصل الاول فی الزیارۃ نصا...الخ، ج۲، الجزء ٤،ص۱۳۳۹ تا ۱۳٦۱۔علمیه

6 ......سنن الدارقطنی، کتاب الحج ، باب ماجاء فی زیارۃ قبر النبی صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم ، الحدیث:۲٦۹٥ ، ج۳،ص۳۳٤۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾2﴿.....مَنْ زَارَ قَبْرِیْ حَلَّتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ "जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस के वासिते़ मेरी शफ़ाअ़त साबित हो गई ।(1) (बज़्ज़ार)

﴾3﴿.....مَنْ جَآءَنِیْ زَآئِرًا لَا تَحْمِلُہٗ حَاجَۃٌ اِلَّا زِیَارَتِیْ کَانَ حَقًّا عَلَیَّ اَنْ اَکُوْنَ لَہٗ شَفِیْعًا یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ जो मेरी ज़ियारत को इस त़रह़ आया कि मेरी ज़ियारत के सिवा कोई और चीज़ उस को न लाई तो मुझ पर ह़क़ है कि क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ होऊंगा ।(2) (कबीर व अवसत़ त़बरानी । इमाम दारे क़ुत़नी वग़ैरा ।)

﴾4﴿.....مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ وَفَاتِیْ کَانَ کَمَنْ زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ जिस ने ह़ज किया और मेरी वफ़ात के बा'द मेरी क़ब्र की ज़ियारत की वोह मिस्ल उस के है जिस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की ।(3)

(दारे क़ुत़नी व त़बरानी वग़ैरा)

﴾5﴿.....مَنْ حَجَّ الْبَیْتَ وَلَمْ یَزُرْنِیْ فَقَدْ جَفَانِیْ जिस ने बैतुल्लाह का ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर सितम किया ।(4) (कामिल इब्ने अ़दी)

﴾6﴿..... مَنْ زَارَنِیْ اِلَی الْمَدِیْنَۃِ کُنْتُ لَہٗ شَھِیْدًا وَّشَفِیْعًا जिस ने मदीने आ कर मेरी ज़ियारत की मैं उस के लिये गवाह और शफ़ीअ़ होऊंगा ।(5) (सुनने दारे क़ुत़नी)

﴾7﴿.....مَنْ زَارَ قَبْرِیْ اَوْمَنْ زَارَنِیْ کُنْتُ لَہٗ شَفِیْعًا اَوْ شَھِیْدًا وَمَنْ مَاتَ فِیْ اَحَدِ الْحَرَمَیْنِ بَعَثَہُ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ فِی الْاٰمِنِیْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की (या फ़रमाया) जिस ने मेरी ज़ियारत की मैं उस के लिये शफ़ीअ़ या गवाह होऊंगा और जो शख़्स ह़रमैन में से एक में मर गया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठाएगा ।(6) (ابوداؤد طیالسی)

1 ......وفاء الوفاء،الباب الثامن فی زیارۃ النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ...الخ،الفصل الاول فی الزیارۃ نصا...الخ، ج۲، الجزء ٤،ص۱۳۳۹۔علمیه

2 ......المعجم الاوسط للطبرانی،من اسمه عبدان،الحدیث:٤٥٤٦،ج۳،ص۲٦٦۔علمیه

3 ......المعجم الکبیرللطبرانی، مجاھد عن ابن عمر،الحدیث:۱۳٤۹۷،ج۱۲،ص۳۱۰۔علمیه

4 ......الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی،۱۹۵٦/۳- النعمان بن شبل الباھلی البصری،ج۸،ص۲٤۸۔علمیه

5 ......شعب الایمان للبیھقی ، الخامس و العشرون باب فی المناسك ، فضل الحج و العمرۃ ، الحدیث : ٤۱۵۷ ، ج۳ ، ص٤۹۰۔علمیه

6 ......مسند ابی داود الطیالسی،الافراد،ج۱،ص۱۲۔علمیه

www.dawateislami.net

﴾8﴿..... مَنْ زَارَنِیْ مُتَعَمِّدًا کَانَ فِیْ جِوَارِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ जिस ने बिल क़स्द मेरी ज़ियारत की वोह क़ियामत के दिन मेरी पनाह में होगा।[1] (ابوجعفر عقیلی)

﴾9﴿..... مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ مَمَاتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ وَمَنْ مَاتَ بِاَحَدِ الْحَرَمَیْنِ بُعِثَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ जिस ने मेरी वफ़ात के बा'द मेरी ज़ियारत की उस ने गोया मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की और जो ह़रमैन शरीफ़ैन में से एक में मर गया वोह क़ियामत के दिन अम्न वालों के ज़ुमरे में उठाया जाएगा।[2] (दारे कुत़नी व वग़ैरा)

﴾10﴿..... مَنْ حَجَّ اِلٰی مَکَّةَ ثُمَّ قَصَدَنِیْ فِیْ مَسْجِدِیْ کُتِبَتْ لَهٗ حَجَّتَانِ مَبْرُوْرَتَانِ जिस ने मक्का में ह़ज किया फिर मेरी मस्जिद में मेरी ज़ियारत की उस के लिये दो मक़्बूल ह़ज लिखे गए।[3] (मुस्नदे फ़िरदौस)

अह़ादीसे मज़्कूरए बाला के इ़लावा किताबुल्लाह से भी येही साबित होता है।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾ (نساء، ع۹)

और अगर येह लोग जिस वक़्त कि अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं तेरे पास आते और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते और पैग़म्बर उन के लिये बख़्शिश मांगते तो वोह ख़ुदा को मुआ़फ़ करने वाला मेहरबान पाते।[4]

इस आयत में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर तौबा करने की तरग़ीब दी गई है मगर क़बूले तौबा के लिये एक तीसरे अम्र गुनाहगाराने उम्मत के लिये इस्तिग़फ़ारे रसूल की भी ज़रूरत बयान हुई है। आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तमाम मोमिनों के लिये त़लबे मग़फ़िरत फ़रमाना तो साबित ही है क्यूंकि हुज़ूर को हुक्मे इलाही यूं है :

---

1 ......كتاب الضعفاء للعقيلى، ١٩٧٧ هارون بن قزعة(مدينى)، ج٤، ص١٤٧٧ و شعب الايمان للبيهقى، الخامس و العشرون باب فى المناسك، فضل الحج و العمرة، الحديث: ٤١٥٢، ج٣، ص٤٨٨ ـ علميه

2 ......سنن الدارقطنى، كتاب الحج، باب ماجاء فى زيارة قبر...الخ، الحديث: ٢٦٩٤، ج٣، ص٣٣٤ ـ علميه

3 ......فردوس الاخبار، باب الميم، فصل مَن حج، الحديث: ٥٧٠٥، ج٢، ص٢٥٢ ـ علميه

4 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं। (پ٥، النساء: ٦٤) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِؕ

और तू अपने सबब से मोमिनीन और मोमिनात के लिये बख़्शिश मांग।(1)

ज़ाहिर बिल बदाहत है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस हुक्म की ता'मील की। पस अगर बाक़ी दो अम्र (गुनहगारों का ब ग़रज़े तवस्सुल हाज़िरे ख़िदमत होना और त़लबे मग़फ़िरत करना) पाए जाएं तो वोह मजमूआ़ मुतह़क़्क़क़ हो जाएगा जो मूजिबे क़बूले तौबा व रह़मते इलाही है।

आयते ज़ेरे बह़स اسْتَغْفَرَ لَهُمُ का अ़त़्फ़ جاء وك पर है इस लिये इस का मुक़्तज़ा येह नहीं कि इस्तिग़फ़ारे रसूल इस्तिग़फ़ारे आ़सियान के बा'द हो। इलावा अज़ीं हम तस्लीम नहीं करते कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वफ़ात शरीफ़ के बा'द गुनहगाराने उम्मत के लिये त़लबे मग़फ़िरत नहीं फ़रमाते क्यूंकि हुज़ूर (बल्कि तमाम अम्बियाए किराम عَلٰى نَبِيِّنَا وعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) वफ़ात शरीफ़ के बा'द ज़िन्दा हैं और आ़सियाने उम्मत के लिये त़लबे मग़फ़िरत फ़रमाते हैं। चुनान्चे, बज़्ज़ार ने सह़ीह़ रावियों के साथ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

”حَيَاتِيْ خَيْرٌ لَّكُمْ تُحَدِّثُوْنَ وَ اُحَدِّثُ لَكُمْ وَ وَفَاتِيْ خَيْرٌ لَّكُمْ تُعْرَضُ عَلَيَّ اَعْمَالُكُمْ فَمَا رَاَيْتُ مِنْ خَيْرٍ حَمِدْتُ اللّٰهَ عَلَيْهِ وَ مَا رَاَيْتُ مِنْ شَرٍّ اِسْتَغْفَرْتُ اللّٰهَ لَكُمْ.“(2)

मेरी ज़िन्दगी तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है। तुम मुझ से (ह़लाल व ह़राम) पूछते हो मैं तुम्हें (ब ज़रीअ़ए वह़्य) अह़काम सुनाता हूं और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है। तुम्हारे आ'माल मेरे सामने पेश हुवा करेंगे। मैं अच्छे अ़मलों को देख कर **अल्लाह** का शुक्र करूंगा और बुरे अ़मलों को देख कर तुम्हारे वासित़े मग़फ़िरत की दुआ़ किया करूंगा।

पस आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़यात शरीफ़ ही में आ़सियाने उम्मत को बिशारत दे दी कि मैं वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी उन के लिये इस्तिग़फ़ार किया करूंगा और हुज़ूर के कमाले रह़मत से मा'लूम है कि जो शख़्स अपने रब से त़लबे मग़फ़िरत करता हुवा हुज़ूर की बारगाहे आ़ली में ह़ाज़िर होता है आप उस के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाते हैं। इसी वासित़े उ़लमाए किराम ने तसरीह़ फ़रमा दी है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह रुत्बा आप की वफ़ात शरीफ़ से मुन्क़त़अ़ नहीं हुवा।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब अपने ख़ासों और आ़म मुसलमान मर्दों और औ़रतों के गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगो। (پ۲٦،محمد:۱۹) **इ़ल्मिय्या**

2.....مسند البزّار، زاذان عن عبدالله، الحديث:۱۹۲۵،ج۵،ص۳۰۸۔علميه

www.dawateislami.net

जो शख़्स येह कहता है कि इस आयत का हुक्म आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ालते ह़यात शरीफ़ के साथ ही मुख़्तस है वोह ग़लती पर है क्यूंकि येह उसूली क़ाइदा है कि उ़मूमे अल्फ़ाज़ का ए'तिबार होता है न कि मौरिदे ख़ास का। सह़ाबए किराम और ताबेईन उ़मूमे अल्फ़ाज़े कुरआनी से हुज्जत पकड़ते रहे बा वुजूद येह कि वोह आयतें ख़ास मौक़ओं पर नाज़िल हुईं। (اتقان للسیوطی) इसी त़रह़ आयते ज़ेरे बह़स अगर्चे एक ख़ास क़ौम के ह़क़ में ह़ालते ह़याते रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में नाज़िल हुई लेकिन जहां येह वस्फ़ (आ़सियाने उम्मत का हुज़ूर सय्यिदुल अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में गुनाहों की मुआ़फ़ी के लिये ह़ाज़िर होना) पाया जाएगा उ़मूमे ह़ालत के मुवाफ़िक़ इस का हुक्म भी आ़म और हर दो ह़ालते ह़यात व बा'दल वफ़ात को शामिल होगा। चुनान्चे, उ़लमाए किराम ने उ़मूम से हर दो ह़ालतें समझी हैं और जो शख़्स क़ब्र शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो उस के वासिते़ मुस्तह़ब ख़याल किया है कि वोह इस आयत को पढ़े और **अल्लाह** तआ़ला से मग़फ़िरत मांगे। इमाम उ़त्बा (इमाम शाफ़ेई के उस्ताद) की ह़िकायत इस बाब में मशहूर है और मज़ाहिबे अरबआ़ के उ़लमा ने इसे अपने मनासिक में नक़्ल किया है और इसे मुस्तह़सन समझ कर आदाबे ज़ियारत में शामिल किया है।(1) हम इस ह़िकायत को اِنْ شَآءَ اللّٰہ تعالٰی बह़से तवस्सुल में लाएंगे।(2)

सह़ाबए किराम के ज़माने से आज तक अहले इस्लाम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ा शरीफ़ की ज़ियारत और हुज़ूर से तवस्सुल व इस्तिग़ासा करते रहे हैं। जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अहले बैतुल मुक़द्दस से सुल्ह़ की तो का'ब अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और इस्लाम लाए। ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ उन से ख़ुश हुवे और फ़रमाया : क्या तुम चाहते हो कि मेरे साथ मदीनए मुनव्वरा चलो और आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत से फ़ाइदा उठाओ। ह़ज़रते का'ब अह़बार ने जवाब दिया कि हां।(3) (زرقانی علی المواھب)

ह़ाफ़िज़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मूसा बिन नो'मान अपनी किताब "मिस्बाहुज़्ज़लाम" में लिखते हैं कि ह़ाफ़िज़ अबू सईद सम्आ़नी ने ब रिवायते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ

---

1 .....देखो वफ़ाउल वफ़ा लिस्समहूदी और शिफ़ाउल सिक़ाम लिस्सुबकी।
وفاء الوفاء، الباب الثامن فی زیارة النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ...الخ، الفصل الاول فی الزیارة نصا...الخ، ج۲، الجزء٤، ص ١٣٦٠۔علمیہ

2 .....येह ह़िकायत सफ़्ह़ा 717 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये !

3 ......شرح الزرقانی علی المواھب، المقصد العاشر...الخ، الفصل الثانی فی زیارة قبرہ...الخ، ج۱۲، ص۱۸۳۔علمیہ

www.dawateislami.net

नक़्ल किया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दफ़्न शरीफ़ के तीन दिन बा'द एक आ'राबी हमारे पास आया उस ने अपने आप को क़ब्र शरीफ़ पर गिरा दिया और क़ब्र शरीफ़ की कुछ मिट्टी अपने सर पर डाली और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ने जो कुछ फ़रमाया वोह हम ने सुन लिया **अल्लाह** तआ़ला ने आप पर क़ुरआन नाज़िल किया जिस में इरशाद फ़रमाया : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ الآيه (1) मैं ने ज़ुल्म किया मैं आप के पास आया हूं ताकि आप मेरे ह़क़ में त़लबे मग़्फ़िरत फ़रमाएं । क़ब्र शरीफ़ से आवाज़ आई कि तुझे बख़्श दिया गया ।(2)

मुस्नदे इमाम अबी ह़नीफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ में ब रिवायते इमाम मन्क़ूल है कि ह़ज़रते अय्यूब सख़्तियानी ताबेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आए जब वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ के नज़्दीक पहुंचे तो अपनी पीठ क़िब्ले की त़रफ़ और मुंह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक की त़रफ़ कर लिया और रोए ।(3) तवस्सुल की दीगर मिसालें अ़न क़रीब मज़्कूर होंगी । اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی

ज़ैल में चन्द आदाबे ज़ियारत बयान किये जाते हैं । ज़ाइरीन को चाहिये कि इन को मल्हूज़ रखें ।

﴾1﴿.....ज़ाइरीन को मुनासिब है कि ज़ियारते रौज़ा शरीफ़ के साथ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत और उस में नमाज़ पढ़ने की भी निय्यत करें । अगर मुजर्रद ज़ियारत की निय्यत करें तो औला है । दूसरी बार अगर मौक़अ़ मिले तो हर दो की निय्यत करें ।

﴾2﴿.....मदीनए मुनव्वरा के रास्ते में दुरूदो सलाम की कसरत रखें ।

﴾3﴿.....रास्ते में मसाजिद और आसारे शरीफ़ा जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मन्सूब हैं उन की ज़ियारत करें और उन में नमाज़ पढ़ें ।

﴾4﴿.....जब मदीनए मुनव्वरा के मकानात नज़र आने लगें तो ब पासे अदब पैदल हो जाएं और दुरूदो सलाम भेजें और शहर में दाख़िल होने से पहले या दाख़िल हो कर ग़ुस्ल करें और तब्दीले लिबास कर के ख़ुश्बू लगाएं ।

1.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें । (پ٥،النساء:٦٤) **इल्मिय्या**

2 ......وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص۴۱۲۔......(وفاء الوفاء،الباب الثامن فی زيارة النبی صلى الله عليه وسلم...الخ،الفصل الاول فی الزيارة نصا...الخ، ج٢، الجزء٤،ص ١٣٦١۔علميه)

3 ......وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص۴۲۴۔......(وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج٢، الجزء٤،ص١٣٧٧۔علميه)

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....पहले मस्जिदे नबवी में दाख़िल हो कर दो रक्अ़त तहिय्यतुल मस्जिद फिर दोगानए शुक्र अदा करें कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीबे पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरवाज़े पर पहुंचा दिया।

﴾6﴿.....दो गानए शुक्र के बा'द रौज़ा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हों। ज़ियारत के वक़्त अपनी पीठ क़िब्ले की त़रफ़ और मुंह ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक की त़रफ़ करें और जाली मुबारक के क़रीब खड़े हो कर निहायत अदब व ख़ुशूअ़ से सलाम अ़र्ज़ करें और अगर किसी दोस्त वग़ैरा ने ह़ज़रते नबवी में सलाम भेजा हो तो उस की त़रफ़ से सलाम पहुंचाएं।

﴾7﴿.....ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सलाम से फ़ारिग़ हो कर एक हाथ अपनी दाईं त़रफ़ को हट कर ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ करें। फिर एक हाथ और दाईं त़रफ़ को हट कर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ करें।

﴾8﴿.....बा'दे अज़ां अपनी पहली जगह पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक के सामने खड़े हो कर दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करें। फिर गुनाहों से तौबा कर के ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के वसीले से दुआ़ मांगें।

﴾9﴿.....अय्यामे क़ियाम मदीनए मुनव्वरा में नमाज़े फ़र्ज़ हो या नफ़्ल मस्जिदे नबवी में पढ़ा करें।

﴾10﴿.....मस्जिदे क़ुबा में जा कर नमाज़ पढ़ें और आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आसारे शरीफ़ा व दीगर मज़ारात की ज़ियारत करें।

ह़दीस "لَا تُشَدُّ الرِّحَال" की बह़्स

बा'ज़ लोग अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलिया व शुहदाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मशाहिद व मक़ाबिर की त़रफ़ सफ़र करने को नाजाइज़ क़रार देते हैं और ह़दीस "لا تشد الرحال" को बत़ौरे दलील पेश करते हैं। वहाबिय्या के मूरिसे आ'ला इब्ने तैमिय्या ने तो खुले अल्फ़ाज़ में फ़तवा दे दिया कि ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए शरीफ़ की ज़ियारत के क़स्द से सफ़र करना सफ़रे मा'सिय्यत है जिस में नमाज़ क़स्र न करनी चाहिये। बिना बरीं ज़ाइरीन के इ़लावा फ़िरिश्ते भी जो हर रोज़ सुब्ह़ो शाम आस्मान से उतर कर रौज़ए शरीफ़ पर ह़ाज़िर होते और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं इसी मा'सिय्यत में मुब्तला हैं। येह ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में कमाल दरजे की गुस्ताख़ी है।

www.dawateislami.net

इब्ने तैमिय्या के इस फ़तवे से शाम व मिस्र में बड़ा फ़ितना बरपा हुवा। शामियों ने इब्ने तैमिय्या के बारे में इस्तिफ़्ता किया। अ़ल्लामा बुरहान बिन अल फ़ुरकाह फ़ज़ारी ने क़रीबन चालीस सत़्र का मज़्मून लिख कर इसे काफ़िर बताया। अ़ल्लामा शहाब बिन जहबल ने इस से इत्तिफ़ाक़ किया। मिस्र में येही फ़तवा मज़ाहिबे अरबआ़ के चारों क़ज़ात पर पेश किया गया। बद्र बिन जमाआ़ शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लिख दिया कि मुफ़्ती या'नी इब्ने तैमिय्या को ऐसे फ़तावाए बात़िला से ब ज़ज्रो तौबीख़ मन्अ़ किया जाए अगर बाज़ न आए तो क़ैद किया जाए। मुह़म्मद बिन अल जरीरी अन्सारी ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लिखा कि इसी वक़्त बिला किसी शर्त़ के क़ैद किया जाए। मुह़म्मद बिन अबी बक्र मालिकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कहा कि इसे इस क़िस्म की ज़ज्रो तौबीख़ की जाए कि ऐसे मफ़ासिद से बाज़ आ जावे। अह़मद बिन उ़मर मक़्दसी ह़म्बली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी ऐसा ही लिखा।(1) नतीजा येह हुवा कि इब्ने तैमिय्या शा'बान सिने 726 हिजरी में दिमश्क़ में क़ल्ए़ में क़ैद किया गया और क़ैद ही में 20 ज़ी क़ा'दतुल ह़राम सिने 728 हिजरी को इस दुन्या से रुख़्सत हुवा।(2)

ह़दीसे ज़ेरे बह़्स सह़ीह़ बुख़ारी के बाब फ़ज़्लुस्सलाह फ़ी मस्जिदे मक्का वल मदीना में ब रिवायते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वारिद है जिस में मज़्कूर है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ اِلَّا اِلٰی ثَلٰثَةِ مَسَاجِدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ مَسْجِدِ الرَّسُوْلِ وَ مَسْجِدِ الْاَقْصٰی कजावे न बांधे जाएं मगर तीन मस्जिदों या'नी मस्जिदे ह़राम व मस्जिदे रसूल व मस्जिदे अक़्सा की त़रफ़।(3) और बाबे मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस में ब रिवायते अबू सईद ख़ुदरी बदीं अल्फ़ाज़ मज़्कूर है :

لَا تُشَدُّ الرِّحَالُ اِلَّا اِلٰی ثَلٰثَةِ مَسَاجِدَ مَسْجِدِ الْحَرَامِ وَ الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی وَ مَسْجِدِی.(4)

---

(1)...... تکملة السيف الصقيل فی الرد علی ابن زفيل، فصل فی حياة الانبياء، ص١٢٥-علميه

(2)...... السیف الصقیل فی الرد علی ابن زفیل تکملہ علامہ کوثری، ص١٥٦ (सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में इस रिसाले का नाम "السیف الصقیل فی الرد علی ابن زخیل" लिखा है जो कि किताबत की ग़लती है, सह़ीह़ "السيف الصقيل فی الرد علی ابن زفيل" है येह इमाम अबुल ह़सन तक़िय्युद्दीन अस्सुबकी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा सिने 756 हिजरी) की तालीफ़ है जिस पर इमाम मुह़म्मद ज़ाहिद बिन अल ह़सन अल कौसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा सिने 1378 हिजरी) ने "तक्मिला" ब नाम "تبديد الظلام المخيم من نونية ابن القيم" तह़रीर फ़रमाया है। **इल्मिय्या**)

(3)...... الصحيح البخاری، كتاب فضل الصلاة فی مسجد مكة والمدينة، باب فضل الصلاة فی مسجد... الخ، الحديث:١١٨٩، ج١، ص٤٠١-علميه

(4)...... صحيح البخاری، كتاب فضل الصلاة فی مسجد مكة و المدينة، باب مسجد بيت المقدس، ج١، الحديث: ١١٩٧، ص٤٠٣-علميه

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ इमाम मुस्लिम ने ह़दीसे अबू हुरैरा को बाबे फ़ज़्लुल मसाजिदुस्सलसा में और ह़दीसे अबू सईद खुदरी को बाबे सफ़रुल मिरआत मअ़ मह़्रम अलल ह़ज वग़ैरा में ज़िक्र किया है। ह़दीसे अबू सईद खुदरी मिश्कात शरीफ़ में बाबुल मसाजिद व मवाज़ेउ़स्सलात में मज़्कूर है।

मुख़्तलिफ़ अबवाब पर नज़र डालने से मा'लूम होता है कि ह़दीसे ज़ेरे बह़्स में ब निस्बते दीगर मसाजिद के मसाजिदे सलासा में नमाज़ की फ़ज़ीलत का बयान है क्यूंकि येह तीनों मसाजिद उन फ़ज़ाइल से मुख़्तस हैं जो दूसरी मस्जिदों में नहीं पाए जाते। लिहाज़ा इस ह़दीस को मशाहिद व मक़ाबिर से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। इस मुद्दआ़ के इस्बात के लिये हम वुजूहे ज़ैल पेश करते हैं।

वज्हे अव्वल : ह़दीस ज़ेरे बह़्स में इस्तिसनाए मुफ़र्रग़ है। पस इस के लिये ऐसे आ़म मुस्तसना मिन्ह की तक़्दीर की ज़रूरत है जो मुस्तसना और ग़ैर को शामिल हो और मुस्तसना से मुनासबते क़रीबा रखता हो। जैसा कि नौए़ फ़र्द से और जिन्से नौअ़ से। इसी वासिते مَا جَاءَنِیْ اِلَّا زَیْدٌ में بِاَحَدٍ को मुक़द्दर नहीं करते बल्कि رَجُلٍ بِاَحَدٍ को मुक़द्दर करते हैं और ما كسوته الا جبّة में كسوت को और ما صليت الا فى المسجد में فى مكان يافى موضع को मुक़द्दर किया जाता है। (मुत़व्वल व ह़वाशी) पस सूरते ज़ेरे बह़्स में मुस्तसना मिन्ह ऐसा होना चाहिये जो मसाजिदे सलासा और दीगर मसाजिद को शामिल और मसाजिद के साथ निस्बते क़रीबा रखता हो और वोह सिवाए लफ़्ज़े मस्जिद के और कोई नहीं।

वज्हे दुवुम : ह़दीसे ज़ेरे बह़्स की तर्जमा बाबे बुख़ारी से मुत़ाबक़त और इसी बाब की दूसरी ह़दीस से मुनासबत है। येह मुनासबत व मुत़ाबक़त साफ़ बता रही है कि मुस्तसना मिन्ह मस्जिद है क्यूंकि इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह बाब मक्का व मदीना में नमाज़ की फ़ज़ीलत के बारे में बांधा है। इस बाब की पहली ह़दीस (لاتشد الرحال) में मक़्सूद मसाजिदे सलासा में नमाज़ की फ़ज़ीलत ब निस्बते दीगर मसाजिद के है ताकि तर्जमा बाब के मुत़ाबिक़ हो। येह न कहा जाए कि पहली ह़दीस में लफ़्ज़े सलात नहीं है क्यूंकि मसाजिदे सलासा की त़रफ़ रिह़लत से मुराद इन में नमाज़ का क़स्द है। इसी बाब की दूसरी ह़दीस जो ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : صَلٰوةٌ فِیْ مَسْجِدِیْ هٰذَا خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ صَلٰوةٍ فِیْ مَا سِوَاهُ اِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَام [1] (मेरी इस मस्जिद में नमाज़ बेहतर है हज़ार नमाज़ों से दूसरी मस्जिदों में सिवाए मस्जिदे ह़राम के) तर्जमा बाब के मुत़ाबिक़

1 ......الصحيح البخارى، كتاب فضل الصلاة فى مسجد مكة و المدينة،باب فضل الصلاة فى مسجد مكة و المدينة، الحديث: ١١٩٠، ج١، ص٤٠١۔علميه

www.dawateislami.net

है और पहली ह़दीस के मा'ना को ज़ाहिर करती है और नस्स है इस अम्र पर कि अदाए नमाज़ पर तज़ाउ़फ़े सवाब में[1] मसाजिदे सलासा को दीगर तमाम मसाजिद पर फ़ज़ीलत है क्यूंकि الا المسجد الحرام का मुस्तसना मिन्ह मसाजिद है जो बा'ज़ रिवायात में सराह़तन मज़्कूर है। चुनान्चे, सह़ीह़ मुस्लिम में है :

عن سعید بن المسیب عن ابی ھریرۃ قال:قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم

”صَلٰوۃٌ فِیْ مَسْجِدِیْ ھٰذَا خَیْرٌ مِنْ اَلْفِ صَلٰوۃٍ فِیْ غَیْرِہٖ مِنَ الْمَسَاجِدِ اِلَّا الْمَسْجِدَ الْحَرَام“۔[2]

और मुस्लिम ही में ह़दीसे मैमूना में है :

سمعت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم یقول صلوۃ فیہ افضل من الف صلوۃ فیما سواہ من المساجد الا مسجد الکعبۃ[3]

पस ज़ाहिर हुवा कि ह़दीस لا تشد الرحال में मुस्तसना मिन्ह मस्जिद है लिहाज़ा मसाजिदे सलासा के सिवा दुन्या की किसी मस्जिद की त़रफ़ ब क़स्दे नमाज़ सफ़र करना ममनूअ़ है और जो किसी और ज़रूरत के लिये हो वोह ममनूअ़ नहीं।

वज्हे सिवुम : ह़दीसे ज़ेरे बह़्स के बा'ज़ तुरुक़े पर मुरादे मक़्सूद की तसरीह़ और मुस्तसना मिन्ह का ज़िक्र मौजूद है और वोह मुस्नदे इमाम अह़मद में यूं मज़्कूर है :

حدثنی ھاشم حدثنی عبد الحمید حدثنی شھر سَمِعْتُ اَبَا سَعِیْدِ الْخُدْرِیْ وَذُکِرَ عِنْدَہٗ صَلٰوۃٌ فِی الطُّوْرِ فَقَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم لَا یَنْبَغِیْ لِلْمُطِیِّ اَنْ تُشَدَّ رِحَالُہٗ اِلٰی مَسْجِدٍ یُبْتَغٰی فِیْہِ الصَّلٰوۃُ غَیْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی وَمَسْجِدِیْ ھٰذَا۔[4] (قسطلانی وعمدۃ القاری)

तर्जमा : (ब ह़ज़्फ़े अस्नाद) शहर (बिन ह़ौसब) का बयान है कि मैं ने सुना अबा सईद खुदरी को और उन के पास तूर में नमाज़ का ज़िक्र आया। पस कहा कि फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शुतरान सुवारी के कजावे किसी मस्जिद की त़रफ़ ब क़स्दे नमाज़ न बांधे जाने चाहियें सिवाए मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे अक़्सा और मेरी इस मस्जिद के। इन्तिहा। पस ह़दीसे ज़ेरे बह़्स की तफ़्सीर ह़दीस ही से हो गई और येह बेहतरीन तफ़्सीर है।

वज्हे चहारुम : ह़दीसे ज़ेरे बह़्स की शर्ह़ में जम्हूर मुह़द्दिसीन व शुर्राह़ और अकाबिर फ़ुक़हाए ह़नफ़िय्या व शाफ़ेइय्या के अक़्वाल हैं जो हमारे मुद्दआ के मुअय्यद हैं। नज़्रे बर इख़्तिसार हम इन को यहां नक़्ल नहीं करते जिसे शौक़ हो वोह फ़त्ह़ुल बारी, उ़म्दतुल क़ारी,

1 .....सवाब ज़ियादा होने में।

2 ......صحیح مسلم، کتاب الحج ، باب فضل الصلاۃ بمسجدی مکۃ والمدینۃ، الحدیث:۱۳۹۴، ص۷۲۱۔علمیہ

3 ......صحیح مسلم، کتاب الحج ، باب فضل الصلاۃ بمسجدی مکۃ والمدینۃ، الحدیث:۱۳۹۶، ص۷۲۲۔علمیہ

4 ......المسند لامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث:۱۱۶۰۹، ج۴، ص۱۲۸۔علمیہ

www.dawateislami.net

इरशादुस्सारी, नववी अ़लल मुस्लिम, इह़याउल उ़लूम लिल ग़ज़ाली और जज़्बुल क़ुलूब लिश्शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ अद्दहेलवी वग़ैरा में देख ले।

खुलासए मज़्मून येह हुवा कि ह़दीस "لا تشد الرحال" मसाजिद के बारे में है। इस की रू से मसाजिदे सलासा की त़रफ़ बदीं ग़रज़ सफ़र करना कि उन में नमाज़ अदा करने से तज़ाउ़फ़े सवाब ह़ासिल हो जाइज़ है। दुन्या की किसी और मस्जिद की त़रफ़ इस ग़रज़ के लिये सफ़र करना न चाहिये क्यूंकि वोह दरजे में मुतसावी हैं किसी को किसी पर ब ए'तिबारे कसरते सवाब फ़ज़ीलत नहीं। हां किसी और मत़लब के लिये दूसरी मसाजिद की त़रफ़ भी सफ़र करना जाइज़ है। मसलन किसी मस्जिद में कोई बुज़ुर्ग रहते हैं उन की ज़ियारत या उन से इस्तिफ़ाज़ा के लिये उस मस्जिद की त़रफ़ सफ़र करना जाइज़ है। इसी त़रह़ किसी मस्जिद के सनाइए़ ग़रीबा[1] को देखने के लिये सफ़र करना भी ममनूअ़ नहीं। मक़ाबिर व मशाहिदए अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْھِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام व औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ज़ियारत के लिये सफ़र करना ह़दीसे ज़ेरे बह़स की नह्य के तह़्त में दाख़िल नहीं बल्कि जाइज़ व मशरूअ़ व मुस्तह़ब और मूजिबे ख़ैरो बरकत है। जब ह़वाइजे दुन्या के लिये सफ़र करना बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ है तो ह़वाइजे आख़िरत बिल ख़ुसूस उन में से जो अकद है[2] या'नी हुज़ूर सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन, इमामुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, सय्यिदुना व मौलाना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुजतबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुनव्वरा की ज़ियारत के लिये सफ़र करना ब त़रीक़े औला जाइज़ व मुस्तह़सन है। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن के अ़ह्दे मुबारक से इस वक़्त तक मुसलमानों का इसी पर अ़मल रहा है। इस का इन्कार ह़िरमान व शक़ावत[3] की अ़लामत है।

ख़ातिमा दर बह़्से इस्तिग़ासा व तवस्सुल

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से बारगाहे इलाही में दुआ़ करना मुस्तह़सन है। इस को मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़, तवस्सुल व इस्तिग़ासा व तशफ़्फ़ोअ़ व तवज्जोह से ता'बीर किया जाता है। बा'ज़ वक़्त तवस्सुल बिन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यूं होता है कि आप से कोई चीज़ त़लब की जाए बदीं मा'ना कि आप उस में तसब्बुब पर क़ादिर हैं कि **अल्लाह** तआ़ला से सुवाल करें या शफ़ाअ़त फ़रमाएं। इस का मत़लब भी हुज़ूर से त़लबे दुआ़ है।

1.....मस्जिद की मुन्फ़रिद बनावट या उस की नक़्शो निगारी वग़ैरा या ख़ुद वोह मस्जिद जो फ़न्ने ता'मीर का कोई शाहकार हो। 2.....या'नी जिन की ताकीद आई है। 3.....बद बख़्ती व मह़रूमी।

www.dawateislami.net

हुज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام से तवस्सुल व इस्तिग़ासा फ़े'ले अम्बिया व मुर्सलीन عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सीरते सलफ़े सालिहीन है और येह तवस्सुल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ से पहले, विलादत शरीफ़ के बा'द आ़लमे बरज़ख़ में और अ़रसाते क़ियामत में साबित है जिस की तौज़ीह ज़ैल में की जाती है।

﴾1﴿.....विलादत शरीफ़ से पहले तवस्सुल :-

जब ह़ज़रते आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से लग़्ज़िश सरज़द हुई तो उन्हों ने आख़िरे कार यूं दुआ़ की : یَارَبِّ اَسْأَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ لَمَا غَفَرْتَ لِیْ ऐ मेरे परवर दगार ! मैं तुझ से ब ह़क़्क़े मुह़म्मद सुवाल करता हूं कि मेरी ख़त़ा मुआ़फ़ कर दे।

अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ आदम ! तू ने मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को किस त़रह़ पहचाना ह़ालांकि मैं ने उन को पैदा नहीं किया। ह़ज़रते आदम ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे परवर दगार ! जब तू ने मुझ को अपने हाथ से पैदा किया और मुझ में अपनी रूह़ फूंकी तो मैं ने सर उठाया और अ़र्श के पायों पर लिखा हुवा देखा। لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه पस मैं जान गया कि तू ने अपने नाम के साथ उसी को ज़िक्र किया है जो तेरे नज़्दीक मह़बूब तरीन ख़ल्क़ है। **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ आदम ! तू ने सच कहा वोह मेरे नज़्दीक अह़ब्बुल ख़ल्क़ हैं चूंकि तुम ने उन के वसीले से दुआ़ मांगी है मैं ने तुम को मुआ़फ़ कर दिया। अगर मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) न होते मैं तुम को पैदा न करता।[1] (ह़ाकिम व त़बरानी)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत से पहले यहूद अपने दुश्मनों पर फ़त्ह़ पाने के लिये दुआ़ में हुज़ूरे अन्वर ही का वसीला पकड़ा करते थे। चुनान्चे, क़ुरआने करीम में वारिद है :

وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ (بقرہ، ع۱۱)

और वोह इस से पहले काफ़िरों पर फ़त्ह़ मांगा करते थे।[2]

ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म ने दलाइल में अ़त़ा व ज़ह़्ह़ाक के त़रीक़ से ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का येह क़ौल नक़्ल किया है कि ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत से

---

1 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج٢، الجزء٤،ص١٣٧١ - ١٣٧٢ـعلمیه

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और इस से पहले इसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह़ मांगते थे। (پ١،البقرۃ:٨٩) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

पहले यहूदी बनी क़ुरीज़ा व नज़ीर काफ़िरों पर फ़त्ह़ की दुआ़ मांगा करते थे और दुआ़ में यूं कहा करते थे : اللّٰھم انّا نستنصرك بحق النّبی الامّی ان تنصرنا علیھم[1] ख़ुदाया ! हम तुझ से ब ह़क़्क़े नबिय्ये उम्मी दुआ़ मांगते हैं कि तू हम को उन पर फ़त्ह़ दे, और फ़त्ह़ पाया करते थे।

(तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर लिस्सुयूत़ी)

﴿2﴾.....ह़यात शरीफ़ में तवस्सुल :-

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़यात शरीफ़ में दीगर ह़ाजात की त़रह़ आप से त़लबे दुआ़, त़लबे शफ़ाअ़त बरोज़े क़ियामत या त़लबे दुआ़ए मग़्फ़िरत भी किया करते थे। सिर्फ़ चन्द मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं। अगर ज़ियादा मत़लूब हों तो ''शिफ़ाउस्सक़ाम'' का मुत़ालआ़ कीजिये !

﴿1﴾......عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ سَاَلْتُ النَّبِیَّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَنْ یَّشْفَعَ لِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ فَقَالَ اَنَا فَاعِلٌ فَقُلْتُ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ ! فَاَیْنَ اَطْلُبُكَ قَالَ اُطْلُبْنِیْ اَوَّلَ مَا تَطْلُبُنِیْ عَلَی الصِّرَاطِ قُلْتُ فَاِنْ لَّمْ اَلْقَكَ عَلَی الصِّرَاطِ قَالَ فَاطْلُبْنِیْ عِنْدَ الْمِیْزَانِ قُلْتُ فَاِنْ لَّمْ اَلْقَكَ عِنْدَ الْمِیْزَانِ قَالَ فَاطْلُبْنِیْ عِنْدَ الْحَوْضِ لَا اُخْطِئُ ھٰذِہِ الثَّلَاثَ مَوَاطِنَ[2] (مشکوٰۃ شریف بحوالہ ترمذی، باب الحوض والشفاعۃ)

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि आप क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त फ़रमा दीजिये। फ़रमाया : ''मैं कर दूंगा।'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप को कहां ढूंडूं ?'' फ़रमाया : ''पहले मुझे सिरात़ पर ढूंडना।'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ''अगर मैं आप को वहां न पाऊं ? फ़रमाया कि फिर मीज़ान के पास ढूंडना।'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ''अगर मीज़ान के पास आप को न पाऊं ?'' फ़रमाया : ''तो फिर ह़ौज़ के पास मुझे ढूंडना क्यूंकि मैं इन तीन जगहों को न छोड़ूंगा।''

﴿2﴾.....ह़ज़रते सवाद बिन क़ारिब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ईमान लाते हुवे अ़र्ज़ करते हैं : وَکُنْ لِیْ شَفِیْعًا یَوْمَ لَا ذُوْشَفَاعَۃٍ بِمُغْنٍ فَتِیْلاً عَنْ سَوَادِ بْنِ قَارِبٍ[3] (इस्तीआ़ब लि इब्ने अ़ब्दुल बर्र) और आप मेरे शफ़ीअ़ बनें जिस दिन सवाद बिन क़ारिब को कोई शफ़ाअ़त करने वाला ज़रा भी फ़ाइदा न पहुंचा सकेगा।

---

1 ......الدر المنثور فی التفسیر الماثور، سورۃ التوبۃ، تحت الآیۃ: ٨٩، ج١، الجزء١، ص٢١٦۔علمیہ

2 ......مشکاۃالمصابیح، کتاب احوال القیامۃوبدء الخلق، باب الحوض و الشفاعۃ، الحدیث: ٥٥٩٥، ج٢، ص٣٢٦۔علمیہ

3 ......الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حرف السین، باب سواد، ترجمۃ ١١١٤، ج٢، ص٢٣٤۔علمیہ

www.dawateislami.net

《3》.....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़स्बे आ़दत तिजारत के लिये यमन गए हुवे थे। आप की ग़ैर ह़ाज़िरी में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मबऊ़स हुवे। अ़स्कलान बिन अ़वाकिन ह़िमयरी[1] ने सुन कर अपने ईमान का इज़्हार अश्आ़र में किया। वोह अश्आ़र ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसात़त से ख़िदमते अक़्दस में इरसाल किये। उन में से दो शे'र येह हैं :

اشهد بالله ربّ موسٰی　　انك ارسلت بالبطاح

فكن شفيعى الى مليك　　يدعو البرايا الى الصّلاح

मैं अल्लाह की क़सम खाता हूं जो मूसा का रब है कि आप वादिये मक्का में रसूल बना कर भेजे गए हैं। पस आप मेरे शफ़ीअ़ बनें उस बादशाह की त़रफ़ जो ख़लाइक़ को नेकी की त़रफ़ बुलाता है।

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह अश्आ़र सुन कर फ़रमाया :

اَمَا اِنَّ اَخَا حِمْيَرَ مِنْ خَوَّاصِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ رُبَّ مُؤْمِنٍ بِيْ وَلَمْ يَرَنِيْ وَ مُصَدِّقٍ بِيْ وَ مَا شَهِدَنِيْ اُولٰئِكَ اِخْوَانِيْ حَقًّا.[2]

(इसाबा, तर्जमए अ़स्कलान। नीज़ कन्ज़ुल उ़म्माल, सादिस, स. 421)

आगाह रहो ! बेशक ह़िमयरी भाई ख़वासे मोमिनीन से हैं और बा'ज़ मुझ पर ईमान लाने वाले हैं ह़ालांकि उन्हों ने मुझे नहीं देखा और मेरी तस्दीक़ करने वाले हैं ह़ालांकि वोह मेरे पास ह़ाज़िर नहीं हुवे वोह ह़क़ीक़त में मेरे भाई हैं।

《4》.....ह़ज़रते माज़िन बिन ग़ज़ूबा त़ाई ख़ित़ामी[3] उ़मान की एक बस्ती में एक बुत की ख़िदमत किया करते थे। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत की ख़बर सुन कर ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और इस्लाम लाए। आप ने बारगाहे रिसालत में अपनी बे ए'तिदालियों का ज़िक्र किया और त़ालिबे दुआ़ हुवे। चुनान्चे, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ की बरकत से वोह रज़ाइले मुबद्दल ब फ़ज़ाइल हो गए। इस बारे में आप ने येह अश्आ़र कहे हैं :

---

1 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "ह़ीरी" लिखा है जो कि किताबत की ग़लत़ी है, सह़ीह़ "ह़िमयरी"है इसाबा वग़ैरा में इसी त़रह़ है ख़ुद मुसन्निफ़ ने भी आगे अ़रबी इबारत "اما ان اخا حمير من خواص......الخ" में ह़िमयर लिखा है। **इल्मिय्या**

2 ......الاصابة فى تمييز الصحابة،٦٤٤٣-عسكلان بن عواكن الحميرى،ج٥، ص٩٨-علميه

3 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "माज़िन बिन अ़ज़ूबा" लिखा है लेकिन इसाबा और इस्तीआ़ब वग़ैरा में "माज़िन बिन ग़ज़ूबा" है लिहाज़ा किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे हम ने यहां "माज़िन बिन अ़ज़ूबा" के बजाए इसाबा के मुत़ाबिक़ "माज़िन बिन ग़ज़ूबा" लिखा है । **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

اليك رسول اللّٰه خبت مطيتي — تجوب الفيافي من عُمان الى العَرَج
لتشفع لي ياخير من وطىء الحصا — فيغفر لي ربي و ارجع بالفلج
الى معشر جانبت في اللّٰه دينهم — فلا دينهم ديني ولا شرجهم شرجي

(इसाबा ब ह़वाला त़बरानी व बैहक़ी वग़ैरा। नीज़ इस्तीआ़ब लि इब्ने अ़ब्दुल बर्र)[1]

या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं ने अपनी ऊंटनी आप की त़रफ़ दौड़ाई जो उ़मान से अ़रज तक बयाबानों को तै करती थी ताकि आप मेरी शफ़ाअ़त फ़रमाएं। ऐ बेहतरीन उन में के जिन्हों ने संगरेज़ों को पामाल किया पस मेरा रब मेरे गुनाह बख़्श दे और मैं कामयाब हो कर उस गुरोह की त़रफ़ जाऊं जिन के दीन से मैं अल्लाह के वासित़े किनारा कश हो गया। पस उन की राए मेरी राए नहीं और न उन का त़रीक़ मेरा त़रीक़ है।

﴿5﴾.....ह़ज़रते उ़स्मान बिन हुनैफ़ सह़ाबी का बयान है कि एक नाबीना पैग़म्बरे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। उस ने अ़र्ज़ किया कि आप अल्लाह से दुआ़ फ़रमाएं कि वोह मुझे आ़फ़िय्यत बख़्शे। हु़ज़ूर ने फ़रमाया कि अगर तू चाहे मैं दुआ़ कर देता हूं और अगर चाहे तो सब्र कर, सब्र तेरे वासित़े अच्छा है। उस ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा से दुआ़ फ़रमाइये। आप ने उस से इरशाद फ़रमाया कि अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के यूं दुआ़ करना : "اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ وَ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَامُحَمَّدُ[2] اِنِّىْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰى رَبِّىْ فِىْ حَاجَتِىْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰى لِىْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِىَّ" या अल्लाह ! मैं तेरी बारगाह में सुवाल करता हूं और तेरे नबी नबिय्युर्रह़मत का वसीला पेश करता हूं। या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं ने अपने परवर दगार की बारगाह में आप का वसीला पेश किया है अपनी इस ज़रूरत में ताकि वोह पूरी हो। या अल्लाह ! तू मेरे ह़क़ में हु़ज़ूर की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।

---

1 ......الاستيعاب فى معرفة الاصحاب، حرف الميم، باب مازن، ترجمة ٢٢٧٣، ج٣، ص ٤٠٠ و الاصابة فى تمييز الصحابة، ٧٦٠١- مازن بن الغضوبة، ج٥، ص ٥٢٠

2.....या मुह़म्मद पुकारने के बारे में आ'ला ह़ज़रत, मौलाना इमाम अह़मद रज़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने रिसाले تَجَلِّى الْيَقِيْن بِاَنَّ نَبِيَّنَا سَيِّدُ الْمُرْسَلِيْن में तह़रीर फ़रमाते हैं : उ़लमा तसरीह़ फ़रमाते हैं : हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाम ले कर निदा करनी ह़राम है, और वाक़ेई महल्ले इन्साफ़ है जिसे उस का मालिको मौला तबारक व तआ़ला नाम ले कर न पुकारे ग़ुलाम की क्या मजाल कि राहे अदब से तजावुज़ करे बल्कि इमाम ज़ैनुद्दीन मिराग़ी वग़ैरा मुह़क़्क़िक़ीन ने फ़रमाया : अगर येह लफ़्ज़ किसी दुआ़ में वारिद हो जो ख़ुद नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाई जैसा दुआ़ए يَا مُحَمَّدُ اِنِّىْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰى رَبِّىْ ताहम इस की जगह يَا رَسُوْلَ اللّٰه، يَانَبِيَّ اللّٰه चाहिये, ह़ालांकि अल्फ़ाज़े दुआ़ में ह़त्तल वस्अ़ तग़य्यीर नहीं की जाती। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 30 स. 157)

www.dawateislami.net

इस ह़दीस को तिर्मिज़ी व निसाई ने रिवायत किया है। तिर्मिज़ी ने कहा : هذا حديث حسن صحيح غريب इमाम बैहक़ी व त़बरानी ने भी इस ह़दीस को सह़ीह़ कहा है। मगर इमाम बैहक़ी ने इतना और कहा है कि उस नाबीना ने ऐसा ही किया और बीना हो गया।[1]

﴾6﴿.....ह़ज़रते रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि मैं रात को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में रहा करता था। आप के वुज़ू के लिये पानी ला दिया करता था और दीगर ख़िदमत (जामा व मिस्वाक व शाना वग़ैरा) भी बजा लाया करता था। एक रोज़ आप ने मुझ से फ़रमाया : सल (मांग) मैं ने अ़र्ज़ किया : اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِى الْجَنَّةِ मैं आप से बिहिश्त में आप का साथ मांगता हूं। आप ने फ़रमाया कि येह मर्तबा बहुत बड़ा है कुछ और मांग ! ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया कि मेरा मक़्सूद तो येही है जो अ़र्ज़ कर दिया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि (इस मक़्सद के ह़ुसूल में) तू मेरी मदद कर बदीं त़ौर[2] कि नमाज़ बहुत पढ़ा कर और सजदों में दुआ़ किया कर।[3] (मिश्कात ब ह़वाला मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाबे अस्सुजूद व फ़ुज़्ला) मत़लब येह कि मैं कोशिश करूंगा तू भी कुछ किया कर। "अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त" में इस ह़दीस के तह़्त में है।

واز اطلاق سوال کہ فرمود سل (بخواہ) و تخصیص نہ کرد بمطلوبے خاص معلوم مے شود کہ کار ہمہ بدست ہمت و کرامت اوست صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ہرچہ خواہد ہر کرا خواہد باذن پروردگار خود بدہد۔[4]

﴾3﴿ **वफ़ात शरीफ़ के बा'द तवस्सुल :-**

वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाबे किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم मसाइब व ह़ुरूब व ह़ाजात में आप को पुकारा करते और आप से इस्तिग़ासा किया करते थे। देखो अमसिलए ज़ैल :

﴾1﴿.....साह़िबे "मवाहिबे लदुन्निय्या" ब ह़वाला इब्ने मुनीर लिखते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हुवा तो इस सदमे से आप के अस्ह़ाबे किराम का अ़जब

1 ......وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص ۴۲۰۔......(وفاء الوفاء، الباب الثامن ... الخ، الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ ، ج ۲، الجزء ٤، ص ١٣٧٢۔علمیه)

2 .....इस त़रह़।

3 ......مشكاة المصابيح، كتاب الصلوة، باب السجود و فضله، الحديث: ٨٩٦، ج ١، ص ١٨٤۔علميه

4 ......اشعة اللمعات، كتاب الصلوة، باب السجود و فضله، تحت الحديث: ٨٩٦، ج ١، ص ٤٢٤-٤٢٥۔علميه

www.dawateislami.net

हाल हो रहा था। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुवे हाज़िर हुवे और हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक से कपड़ा उठा कर यूं अ़र्ज़ करने लगे : و لو ان موتك كان اختيارا لجدنا لموتك بالنفوس اذكرنا يامحمد عند ربك ولنكن من بالك.[1] अगर आप की मौत में हमें इख़्तियार दिया जाता तो हम आप की मौत के लिये अपनी जानें कु़रबान कर देते। या मुह़म्मद ! अपने परवर दगार के पास हमें याद करना और ज़रूर हमारा ख़याल रखना।

﴾2﴿.....वफ़ात शरीफ़ के तीन दिन बा'द आ'राबी का क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर होना और आप से तवस्सुल करना ब रिवायते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم पहले आ चुका है।

﴾3﴿.....मालिकुद्दार रावी हैं कि हज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में क़ह़त़ पड़ा। एक शख़्स (बिलाल बिन हारिस सह़ाबी) ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हो कर यूं अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! अपनी उम्मत के लिये बारिश की दुआ़ फ़रमाएं ! वोह हलाक हो रही है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में उस शख़्स से फ़रमाया कि उ़मर के पास जा कर मेरा सलाम कहो और बिशारत दो कि बारिश होगी और येह भी कह दो कि नर्मी इख़्तियार करे। उस शख़्स ने हाज़िर हो कर ख़बर दी। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर रोए। फिर कहा : ऐ रब ! मैं कोताही नहीं करता मगर उस चीज़ में कि जिस से मैं आ़जिज़ हूं।[2] (वफ़ाउल वफ़ा ब ह़वाला बैहक़ी व इब्ने अबी शैबा)

﴾4﴿.....एक साल मदीनए मुनव्वरा में सख़्त क़ह़त़ पड़ा। लोगों ने हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रयाद की। हज़रते ममदूहा ने फ़रमाया कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हो कर उस में एक रोशनदान आस्मान की त़रफ़ खोल दो ताकि क़ब्र शरीफ़ और आस्मान के दरमियान छत हाइल न रहे। उन्हों ने ऐसा ही किया। ख़ूब बारिश हुई और घास उगी और ऊंट ऐसे फ़र्बा हो गए कि चर्बी से फटने लगे। उस साल को "आ़मुल फ़त्क़" कहते थे।[3]

---

1 ......المواهب اللدنية مع زرقاني،المقصد العاشر...الخ ، الفصل الاول فی اتمامه تعالى نعمته عليه بوفاته ...الخ ، ج١٢، ص١٤٣ ـ علميه

2 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج٢، الجزء٤،ص١٣٧٤ ـ علميه

3 ......سنن دارمی، باب ما اکرم اللّٰه تعالٰی نبیہ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم بعد موته ـ......(سنن الدارمی،باب ما اكرم الله تعالى نبيه صلى الله عليه وسلم بعد موته، باب١٥،الحديث:٩٢،ج١،ص٥٦ ـ علميه)

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा क़ाज़ी ज़ैनुद्दीन मिराग़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि क़ह़त़ के वक़्त रोशनदान का खोलना इस वक़्त तक अहले मदीना का त़रीक़ा है। वोह क़ुब्बए ख़ज़रए मुक़द्दसा के अस्फ़ल में ब जानिबे क़िब्ला खोल देते हैं अगर्चे क़ब्र शरीफ़ और आस्मान के दरमियान छत ह़ाइल रहती है।(1)

अ़ल्लामा समहूदी (मुतवफ़्फ़ा सिने 911 हिजरी) लिखते हैं : "आज कल अहले मदीना का त़रीक़ा येह है कि हुजरा शरीफ़ के गिर्द जो मक़्सूरा है उस का वोह दरवाज़ा जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चेहरए मुबारक के सामने है खोल देते हैं और वहां जम्अ़ होते हैं।(2)

﴾5﴿.....इब्ने जरीर त़बरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सिने 18 हिजरी के वाक़िआ़त में बिल अस्नाद नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते आ़सिम बिन उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि एक साल ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के ज़माने में इम्साके बारां हुवा(3) मवाशी लाग़र हो गए। अहले बादिया(4) में से क़बीलए मुज़ैना के एक अहले ख़ाना ने अपने साह़िब (ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस सह़ाबी) से कहा कि हमें ग़ायत दरजे की तक्लीफ़ है तू हमारे वासित़े एक बकरी ज़ब्ह़ कर। उस ने कहा कि बकरियों में कुछ रहा नहीं। अहले ख़ाना इसरार करते रहे यहां तक कि उस ने उन के वासित़े एक बकरी ज़ब्ह़ की जब खाल उतारी तो सुर्ख़ हड्डियां दिखाई दीं। इस पर वोह पुकार उठा يامحمداه ...الخ(5) (تاریخ الامم والملوک، جزء رابع ص ۲۲۴۔ کامل ابن اثیر)

﴾6﴿.....ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने क़िनसैरीन से ह़ज़रते का'ब बिन ज़मरह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को एक हज़ार सुवार दे कर फ़त्ह़े ह़लब के लिये रवाना किया और फ़रमा दिया कि मैं तुम्हारे पीछे आ रहा हूं। उधर यूक़न्ना ह़ाकिमे ह़लब को उस के जासूसों ने ख़बर दी कि अ़रब एक हज़ार की जमइय्यत के साथ तुम्हारे शहर की फ़त्ह़ के इरादे से आ रहे हैं और वोह शहर से छे मील के फ़ासिले पर हैं। यूक़न्ना ने लश्कर को तय्यार कर के आधा अपने साथ लिया और आधा कमीनगाह में मुक़र्रर किया। जब ह़ज़रते का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की नज़र यूक़न्ना के लश्कर पर पड़ी

1.....क़ाज़ी ज़ैनुद्दीन अबू बक्र बिन हुसैन बिन उ़मर उ़स्मानी मिराग़ी नज़ील मदीनए मुनव्वरा (मुतवफ़्फ़ा सिने 816 हिजरी) ने मदीनए मुनव्वरा के ह़ालात में अपनी किताब तह़क़ीक़ुन्नसरतल बित्तलख़ीस मुआ़लिम दारुल हिजरत लिखी है जिस के मुबैज़ा से वोह सिने 766 हिजरी में फ़ारिग़ हुवे। क़शफ़ुज़्ज़ुनून।....

(وفاء الوفاء، الباب الرابع...الخ،الفصل الحادى والعشرون، ج ۱، الجزء۲، ص ۵۶۰۔علميه)

2.....وفاء الوفاء، جزء اول، ص ۳۹۸۔......(وفاء الوفاء، الباب الرابع ...الخ، الفصل الحادى و العشرون، ج ۱، الجزء۲، ص ۵۶۰۔علميه)

3.....बारिश न हुई।   4.....देहात में रहने वाले।

5.....الكامل فى التاريخ لابن اثير، سنة ثمان عشرة، ذكر القحط وعام الرمادة، ج ۲، ص ۳۹۷۔علميه

www.dawateislami.net

तो अपने लश्करियों से कहा कि मेरे अन्दाज़े में दुश्मन का लश्कर पांच हज़ार है जिस का तुम मुक़ाबला नहीं कर सकते। ग़रज़ मुक़ाबला हुवा यहां तक कि मुसलमानों की फ़त्ह़े मुबीन का यक़ीन हो गया मगर इसी अस्ना में कमीनगाह से यूक़न्ना का लश्कर आ पड़ा। जिस के सबब से लश्करे इस्लाम का एक फ़िर्क़ा भागने लगा। दूसरे फ़िर्क़े ने अहले कमीन का मुक़ाबला किया। तीसरा फ़िर्क़ा ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ था जो मुसलमानों के लिये बड़े बे चैन थे और उन के बचाने के लिये कोशिश कर रहे थे और गिर्दावा देते हुवे[1] यूं पुकार रहे थे :

"یامحمد یامحمد یانصراللہ انزل یامعشر المسلمین اثبتوا انما ھی ساعۃ ویأتی النصر وانتم الاعلون"

या मुह़म्मद ! या मुह़म्मद ! ऐ नुस्रते इलाही ! नुज़ूल फ़रमा, ऐ मुसलमानों के गुरौह ! साबित क़दम रहो, येही एक घड़ी है मदद आने वाली है तुम्हारा ही बोल बाला है।

(فتوح الشام،مطبوعہ مصر،جزءاول،ص۱۵۱)[2]

﴿7﴾.....ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ अपना ख़त़ अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम यरमूक भेजा और सलामती की दुआ़ की। अ़ब्दुल्लाह जब मस्जिद से निकले तो ख़याल आया कि मुझ से ख़त़ा हुई कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़े शरीफ़ पर सलाम अ़र्ज़ नहीं किया। इस लिये वोह रौज़ा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवे। वहां ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा और ह़ज़राते अ़ली इब्ने अबी त़ालिब व अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) ह़ाज़िर थे। इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ[3] ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की गोद में और इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में थे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह ने ह़ज़रते अ़ली व ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) से अ़र्ज़ किया कि कामयाबी के लिये दुआ़ फ़रमाएं। हर दो ने रौज़ा शरीफ़ पर हाथ उठा कर यूं दुआ़ की :

1.....झन्डा लहराते हुवे।

2 ......فتوح الشام،ذکر فتح مدینۃ حلب وقلاعھا،ج۱،ص۲٤٠۔علمیہ

3.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में येह इ़बारत यूं है : "इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की गोद में और इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में थे।" लेकिन "फ़त्हुश्शाम" में इस के बर अ़क्स है या'नी "इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की गोद में और इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में थे।" मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने चूंकि "फ़त्हुश्शाम" का ह़वाला दिया है लिहाज़ा हम ने किताबत की ग़लत़ी पर मह़मूल करते हुवे इस इ़बारत को "फ़त्हुश्शाम" के मुत़ाबिक़ लिखा है। واللہ تعالٰی اعلم بالصواب

www.dawateislami.net

اللّٰھم انا نتو سّل بھذا النبی المصطفٰی والرسول المجتبٰی الذی توسّل بہٖ اٰدم فاجیبت دعوتہ وغفرت خطیئتہٗ الا سھلت علی عبد اللّٰہ طریقہ وطویت لہ البعید وایدت اصحاب نبیک بالنصر انک سمیع الدعاء .

या अल्लाह ! हम उस नबिय्ये मुस्त़फ़ा व रसूले मुज्तबा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ़ करते हैं कि जिन के वसीले से ह़ज़रते आदम की दुआ़ क़बूल हो गई और उन की ख़त़ा मुआ़फ़ हो गई कि तू अ़ब्दुल्लाह पर उस का रास्ता आसान कर दे और बईद को नज़्दीक कर दे और अपने नबी के अस्ह़ाब की मदद फ़त्ह़ से कर दे। बेशक तू दुआ़ का सुनने वाला है।

इस के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़ब्दुल्लाह से फ़रमाया कि अब जाइये ! अल्लाह तआ़ला ह़ज़राते उ़मर व अ़ब्बास व अ़ली व ह़सन व ह़ुसैन व अज़्वाजे रसूलुल्लाह की दुआ़ को रद न करेगा क्यूंकि उन्हों ने अल्लाह की बारगाह में उस नबी का वसीला पकड़ा है जो अकरमुल ख़ल्क़ हैं।[1] (فتوح الشام، جزء اول، ص۱۰۵)

﴾8﴿.....इब्नुस्सुन्नी (मुतवफ़्फ़ा सिने 364 हिजरी) की किताब में हैसम बिन ह़न्श से रिवायत है कि उस ने कहा : "हम ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास थे। उन का पाउं सो गया तो एक शख़्स ने उन से कहा कि आप याद कीजिये उस को जो आप के नज़्दीक सब लोगों से प्यारा है। इस पर ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने कहा : या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पस गोया आप बन्द से खोल दिये गए और किताब इब्नुस्सुन्नी ही में मुजाहिद से रिवायत है कि ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पास एक शख़्स का पाउं सो गया। आप ने उस से कहा : तू याद कर उस को जो तुझे सब लोगों से प्यारा है। येह सुन कर उस ने कहा : या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) येह कहते ही उस के पाउं की ख़्वाबैदगी जाती रही।[2] (کتاب الاذکار للنووی، ص۱۳۵) ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पाउं सो जाने की रिवायत अल अदबुल मुफ़रद लिल बुख़ारी सफ़ह़ा 113 में भी है।

﴾9﴿.....एक शख़्स किसी ह़ाजत के लिये ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया करता था मगर वोह उस की त़रफ़ मुतवज्जेह न होते और उस की ह़ाजत पर ग़ौर न फ़रमाते। वोह एक रोज़ ह़ज़रते उ़स्मान बिन ह़ुनैफ़ से मिला और उन से शिकायत की। ह़ज़रते इब्ने ह़ुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से कहा कि वुज़ू कर के मस्जिद में जा और दो रक्अ़त पढ़ कर यूं दुआ़ कर :

---

1 ......فتوح الشام، جبلة بن الایھم، ج۱، ص۱٦٨ ملخصاً۔علمیه

2 ......کتاب الاذکار، کتاب الاذکار المتفرقة، باب ما یقوله اذا خدرت رجله، الحدیث:۸٦٣۔۸٦٤، ص۲٤٣ والادب المفرد، باب مایقول الرجل اذا خدرت رجله، ص ۲٦٢۔علمیه

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ وَاَتَوَجَّہُ اِلَیۡكَ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِیِّ الرَّحۡمَةِ یَامُحَمَّدُ اِنِّیۡ اَتَوَجَّہُ بِكَ اِلٰی رَبِّكَ اَنۡ تُقۡضٰی حَاجَتِیۡ

(यहां अपनी ह़ाजत का नाम लेना) उस ने ऐसा ही किया। फिर वोह ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दरवाज़े पर ह़ाज़िर हुवा। दरबान आया और उस का हाथ पकड़ कर अन्दर ले गया। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे अपने बराबर फ़र्श पर बिठाया और दरयाफ़्ते ह़ाल कर के उस की ह़ाजत पूरी कर दी। फिर इरशाद फ़रमाया कि इतने दिनों में इस वक़्त तुम ने अपना मत़लब बयान किया। आयिन्दा जो ह़ाजत तुम्हें पेश आया करे हमारे पास आ कर बता दिया करो। वोह वहां से रुख़्सत हो कर इब्ने हुनैफ़ से मिला और उन का शुक्रिय्या अदा किया कि आप ने ऐसी अच्छी दुआ़ बताई। इब्ने हुनैफ़ ने कहा कि मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं बताई। एक रोज़ मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। एक नाबीना ने अपनी बीनाई के जाते रहने की शिकायत की। आप ने फ़रमाया : अगर तुम चाहो मैं दुआ़ कर देता हूं या सब्र करो। उस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे बहुत दुश्वारी है कोई मेरा अ़सा पकड़ने वाला नहीं। आप ने फ़रमाया कि दो गाना अदा कर के येह दुआ़ पढ़ना : اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُكَ وَاَتَوَجَّہُ اِلَیۡكَ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ......الخ इब्ने हुनैफ़ का बयान है कि हम अभी बैठे हुवे थे कि वोह शख़्स आया गोया उस को कोई तक्लीफ़ ही न हुई थी।(1)

इस क़िस्से में ख़ुद हुज़ूर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाबीना को त़रीक़े तवस्सुल ता'लीम फ़रमाया है येही त़रीक़ा एक सह़ाबी सिखा रहे हैं और येही अ़मल आज तक उम्मत में जारी है। इस रिवायत को त़बरानी ने मो'जमे कबीर में नक़्ल किया है और इमाम बैहक़ी ने भी रिवायत किया है।

﴾10﴿.....हैसम बिन अ़दी ने ज़िक्र किया है कि बनू आ़मिर (क़बीलए नाबिग़ा जा'दी) बसरा में खेतों में मवेशी(2) चराया करते थे। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को उन के त़लब करने के लिये भेजा। उन्हों ने अबू मूसा को देखते ही यूं आवाज़ दी : या आले आ़मिर ! येह सुन कर नाबिग़ा जा'दी भी अपनी क़ौम के साथ निकला। अबू मूसा ने उस से पूछा कि तुम किस वासित़े निकले हो ? नाबिग़ा ने जवाब दिया कि मैं ने

1 ......وفاءالوفاء، جزء ثانی، ص۴۲۰۔......وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ، الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء ٤، ص ۱۳۷۳۔علمیه

2.....चौपाए। गाए, बकरी, ऊंट वग़ैरा।

www.dawateislami.net

अपनी क़ौम की दा'वत क़बूल की है। इस पर अबू मूसा ने नाबिग़ा को ताज़ियाने लगाए। नाबिग़ा ने इस बारे में येह अश्आ़र कहे हैं :

فان تك لابن عفان امينا　　فلم يبعث بك البر الامينا

و يا قبر النبى و صاحبيه　　الا يا غوثنا لو تسمعونا

(استیعاب لابن عبدالبر)[1]

《1》.....अगर तू इब्ने अ़फ़्फ़ान का अमीन है तो उस ने तुझे मेहरबान अमीन नहीं भेजा।

《2》.....ऐ क़ब्र नबी की और आप के दो साहि़ब की देखना ऐ हमारे फ़रयाद रस ! काश आप सुनें।

ह़ज़रते नाबिग़ा जा'दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबी हैं। आप ने ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तशद्दुद का इस्तिग़ासा आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से किया है और "يَاغَوْثَنَا" कह कर पुकारा है।

《11》.....मो'जमे कबीर व औसत़ में ब रिवायते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते अ़ली मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की वालिदा फ़ात़िमा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इन्तिक़ाल हो गया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के सिरहाने आ बैठे और फ़रमाया : ऐ मेरी मां के बा'द मेरी मां ! **अल्लाह** तुझ पर रह़्म करे और उस की ता'रीफ़ की और उसे अपनी चादर में कफ़नाया। फिर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़राते उसामा बिन ज़ैद, अबू अय्यूब अन्सारी, उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ) और एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम को बुलाया। उन्हों ने क़ब्र खोदी। जब लह़द तक पहुंचे तो ख़ुद ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लह़द[2] अपने दस्ते मुबारक से खोदी और आप उस में लैट गए। फिर यूं दुआ़ की :

"اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِاُمِّیْ فَاطِمَۃَ بِنْتِ اَسَدٍ وَ وَسِّعْ عَلَیْھَا مُدْخَلَھَا بِحَقِّ نَبِیِّكَ وَ الْاَنْبِیَاءِ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِیْ فَاِنَّكَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِیْنَ."

1 ......الاستيعاب فى معرفة الاصحاب لابن عبد البر،حرف النون،ترجمة النابغة جعدى٢٦٧٧، ج٤،ص٨٠۔علميه

2 .....उ़मर बिन शैबा ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन इमरान से नक़्ल किया है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिवाए पांच अश्ख़ास की क़ब्रों के और किसी की क़ब्र में नहीं उतरे। इन पांच में तीन औ़रतें और दो मर्द हैं बदीं तफ़्सील : ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा, आइशा सिद्दीक़ा की वालिदा उम्मे रूमान, ह़ज़रते अ़ली की वालिदा फ़ात़िमा बिन्ते असद, इब्ने ख़दीजा और अ़ब्दुल्लाह बिन नहम मुज़नी मुलक़्क़ब ब ज़ुल बजादैन (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) वफ़ाउल वफ़ा, जुज़्ए सानी, स. 87। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

या **अल्लाह** ! मेरी मां फ़ातिमा बिन्ते असद को बख़्श दे और इस पर इस की क़ब्र को कुशादा कर दे। ब वसीला अपने नबी के और उन नबियों के जो मुझ से पहले हुवे हैं क्यूंकि तू अरह़मुर्राह़िमीन है। (وفاء الوفاء، جزء ثانی، ص۸۹)[1]

जब आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बचपन में अबू त़ालिब की कफ़ालत में थे तो अबू त़ालिब की ज़ौजा फ़ातिमा बिन्ते असद ने खिलाने पिलाने में आप का ख़ास ख़याल रखा था। येह उसी एह़सान का बदला था कि आप ने फ़ातिमा को अपनी चादर में कफ़नाया ताकि आतशे दोज़ख़ से मह़फ़ूज़ रहे और आप उस की लह़द में लैट गए ताकि उसे राह़त व आराम मिले। येह रिवायत नज़रे बर "بحق نبيك" ह़यात शरीफ़ में तवस्सुल की दलील है और नज़रे बर "الانبياء الذين من قبلی" बा'दे वफ़ात तवस्सुल की दलील है।

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बा'द आज तक येह तवस्सुल व इस्तिग़ासा जारी है और ता क़ियामत जारी रहेगा। ह़ज़रते इमामुल अइम्मा सय्यिदुना अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित ताबेई कूफ़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपना ह़ाल यूं अ़र्ज़ करते हैं :

يا سيد السادات جئتك قاصدا	ارجوا رضاك واحتمی بحماك
انت الذی لولاك ما خلق امرء	كلا و لا خلق الوریٰ لو لاك
انا طامع بالجود منك ولم يكن	لابی حنيفة فی الانام سواك

﴾1﴿.....ऐ सय्यिद सादात ! मैं क़स्द कर के आप के पास आया हूं, मैं आप की ख़ुशनूदी का उम्मीद वार और आप के सब्ज़ाज़ार में पनाह गुज़ीं हूं।

﴾2﴿.....आप की वोह मुक़द्दस ज़ात है कि अगर आप न होते तो कभी कोई आदमी पैदा न होता और न कोई मख़्लूक़ पैदा होती।

﴾3﴿.....मैं आप के जूदो करम का उम्मीद वार हूं। आप के सिवा ख़ल्क़त में अबू ह़नीफ़ा का कोई सहारा नहीं। (इन्तिहा)[2]

ह़ज़रते अय्यूब सख़्तियानी ताबेई رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के तवस्सुल का ज़िक्र पहले आ चुका है। इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ख़लीफ़ा मन्सूर अ़ब्बासी को जो त़रीक़े दुआ बताया उस में भी तवस्सुल बिन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है जैसा कि ऊपर मज़्कूर हुवा।

1 ......وفاء الوفاء ، الباب الخامس فی مصلی النبی فی الاعیاد...الخ،الفصل السادس فی تعیین قبور...الخ،قبر فاطمة بنت اسد، ج۲، الجزء۳،ص۸۹۸-۸۹۹ملخصاً۔علمیه

2 ......قصیده نعمانیه للامام الاعظم ابی حنیفة نعمان بن ثابت رضی اللّٰه تعالی عنه......والمستطرف،الباب الثانی والاربعون فی المدح الخ ج۱،ص۳۹۱۔۳۹۳۔علمیه

www.dawateislami.net

आ'राबी का क़िस्सा (जिस को अइम्मा ने उ़तबी से नक़्ल किया है) चारों मज़्हब के उ़लमा ने मनासिक में ज़िक्र किया है और इसे आदाबे ज़ियारत में शुमार किया है। "इब्ने असाकिर" ने इसे अपनी तारीख़ में और इब्ने जौज़ी ने "मसीरुल ग़रामुस्साकिन अल अशरफ़ुल अमाकिन" में ब रिवायते मुह़म्मद बिन ह़र्ब हिलाली इस त़रह़ लिखा है कि उ़तबी[1] ने कहा कि मैं मदीने में दाख़िल हुवा और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत कर के हुज़ूर के सामने बैठ गया। एक आ'राबी ने आ कर ज़ियारत की और यूं अ़र्ज़ किया : या ख़ैरर्रुसुल ! **अल्लाह** ने आप पर एक सच्ची किताब नाज़िल की जिस में यूं इरशाद फ़रमाया :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ﴿۶۴﴾ (نساء، ۶٤)

*और अगर येह लोग जिस वक़्त कि अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं आप के पास आते और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते और पैग़म्बर उन के लिये बख़्शिश मांगता तो **अल्लाह** को मुआफ़ करने वाला मेहरबान पाते।*[2]

मैं आप की ख़िदमत में आप के परवर दगार से गुनाहों की मग़्फ़िरत का त़ालिब और आप की शफ़ाअ़त का उम्मीदवार बन कर ह़ाज़िर हुवा हूं। फिर उस ने रो कर येह अश्आ़र पढ़े :

يا خير من دفنت بالقاع اعظمهٗ — فطاب من طيبهن القاع والاكم

نفسى الفداء لقبر انت ساكنهٗ — فيه العفاف وفيه الجود والكرم

﴾1﴿.....ऐ सब से बेहतर जिस की हड्डियां मैदान में मदफ़ून हैं पस उन की ख़ुश्बू से पस्त और ऊंची ज़मीनें महक गईं,

﴾2﴿.....मेरी जान उस क़ब्र पर फ़िदा जिस में आप साकिन हैं। उस में पाकीज़गी है और उस में जूदो करम है।

बा'दे अज़ां उस आ'राबी ने तौबा की और चला गया। मैं सो गया तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा कि फ़रमा रहे हैं : "तुम उस शख़्स से मिलो और उसे बिशारत दो कि **अल्लाह** ने मेरी शफ़ाअ़त से उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये।" मेरी आंख खुली तो मैं उस की तलाश में निकला मगर वोह न मिला।[3]

1.....मुह़म्मद बिन उ़बैदुल्लाह बिन अ़म्र बिन मुआ़विय्या बिन अ़म्र बिन उ़तबा बिन अबी सुफ़्यान सख़्र बिन ह़र्ब (मुतवफ़्फ़ा सिने 228 हिजरी) 12 मिन्हु

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं। (پ٥، النسآء:٦٤) **इल्मिय्या**

3 ......وفاءالوفاء، جزء ثانی، ص ۴۱۱ـ......(وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ، الفصل الثانی فی بقیة ادلة الزیارة...الخ، ج۲، الجزء ٤، ص ١٣٦٠ - ١٣٦١ـ علمیه)

www.dawateislami.net

क़िस्सए आ'राबी में जो आयते क़ुरआन मज़्कूर है वोह ब इत्तिफ़ाक़े मुफ़स्सिरीन मुसबिते तवस्सुल है। इसी त़रह़ क़ुरआने करीम की आयते ज़ैल से भी तवस्सुल साबित है।

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ ابْتَغُوْۤا اِلَیْهِ الْوَسِیْلَةَ وَ جَاهِدُوْا فِیْ سَبِیْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۵﴾ (مائدہ،ع٦)

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो और उस की राह में जिहाद करो ताकि तुम फ़लाह़ पाओ।(1)

इस आयत में ख़ुदा की त़रफ़ वसीला ढूंडने का हुक्म है। वसीले से मुराद ख़्वाह ख़ास शख़्स हो या अ़मले सालेह़ बहर सूरत तवस्सुल ब सय्यिदुर्रुसुल साबित है क्यूंकि अश्ख़ास की त़रह़ आ'माले सालेह़ा भी मख़्लूक़े इलाही है। जैसा कि आयह :

وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَ مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾

अल्लाह ने पैदा किया तुम को और तुम्हारे अ़मल को (2)

से ज़ाहिर है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अशरफ़ुल ख़ल्क़ व अकरमुल ख़ल्क़ व अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ होने में कलाम नहीं। पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अशरफ़ुल वसाइल व अक़रबुल वसाइल इलल्लाह हैं लिहाज़ा आप से तवस्सुल ब त़रीक़े औला जाइज़ व मुस्तह़सन है।

मुख़्तसर येह कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام से तवस्सुल व इस्तिग़ासा मुस्तह़सन है और येही मज़्हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त है। हम यहां सिर्फ़ अ़ल्लामा इब्ने ह़ाज्जु मालिकी (मुतवफ़्फ़ा सिने 737 हिजरी) का क़ौल नक़्ल करते हैं जो मुतशद्दिदीन में शुमार होते हैं। वोह अपनी किताब मुदख़ल में ज़ियारते क़ुबूर के बारे में यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

ثم یتوسّل باهل تلك المقابر اعنی بالصالحین منهم فی قضاء حوائجه و مغفرة ذنوبهٖ ثم یدعوا لنفسهٖ و لوالدیه و لمشایخه و لا قاربهٖ و لاهل تلك المقابر و لاموات المسلمین و لاحیائهم و ذریتهم الی یوم الدین و لمن غاب عنه من اخوانه و یجار الی اللّٰه تعالٰی بالدعاء عندهم و یكثر التوسل بهم الی اللّٰه تعالٰی لانه سبحانه و تعالٰی اجتباهم و شرفهم و كرمهم فكما نفع بهم فی الدنیا ففی الاخرة اكثر فمن اراد حاجة فلیذهب الیهم و یتوسّل بهم فانهم الواسطة بین اللّٰه تعالٰی و خلقه و قد تقرر فی الشرع و علم ما

---

1 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और उस की त़रफ़ वसीला ढूंडो और उस की राह में जिहाद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ। (پ٦،المائدۃ:٣٥) **इल्मिय्या**

2 .....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को। (پ٢٣،الصّٰفّٰت:٩٦) **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

لله تعالٰى بهم من الاعتناء و ذلك كثير مشهور و ما زال الناس من العلماء و الاكابر كابرا عن كابر مشرقا و مغربا يتبركون بزيارة قبورهم و يجدون بركة ذلك حسا و معنى و قد ذكر الشيخ الامام ابو عبد الله بن النعمان رحمه الله فى كتابه المسمى بسفينة النجاء لاهل الالتجاء فى كرامات الشيخ ابى النجاء فى اثناء كلامه على ذلك ما هذا لفظه تحقق لذوى البصائر و الاعتبار ان زيارة قبور الصالحين محبوبة لاجل التبرك مع الاعتبار فان بركة الصالحين جارية بعد مماتهم كما كانت فى حياتهم و الدعاء عند قبور الصالحين و التشفع بهم معمول به عند علمائنا المحققين من ائمة الدين انتهٰى (1)

फिर ज़ाइर अपनी क़ज़ाए ह़ाजात और अपने गुनाहों की बख़्शिश के लिये उन क़ब्र वालों या'नी उन में से सालेह़ीन से तवस्सुल करे फिर अपनी ज़ात के लिये और अपने वालिदैन व मशाइख़ व अक़ारिब व अहले मक़ाबिर के लिये और मुसलमान मुर्दों और ज़िन्दों के लिये और क़ियामत तक उन की अवलाद के लिये और अपने ग़ाइब भाइयों के लिये दुआ़ करे और उन अहले क़ुबूर के पास **अल्लाह** तआ़ला से आ़जिज़ी व ज़ारी से दुआ़ करे और बार बार उन को **अल्लाह** तआ़ला के तक़र्रुब का वसीला बनाए क्यूंकि **अल्लाह** سبحانہ وتعالٰی ने उन को बर्गुज़ीदा बनाया और बुज़ुर्ग बनाया और गिरामी बनाया। पस जिस त़रह़ उस ने दुन्या में उन के ज़रीए़ से फ़ाइदा पहुंचाया आख़िरत में इस से ज़ियादा नफ़्अ़ पहुंचाएगा। जो शख़्स कोई ह़ाजत चाहे उसे चाहिये कि उन के पास जाए और उन से तवस्सुल करे क्यूंकि वोह **अल्लाह** तआ़ला और उस के बन्दों के दरमियान वासित़ा हैं और शरअ़ में साबित व मा'लूम है कि उन पर **अल्लाह** तआ़ला की कितनी तवज्जोह व मेहरबानी है और वोह कसीर व मश्हूर है और मशरिक़ व मग़रिब में उ़लमा व अकाबिरे क़दीम से उन की क़ब्रों की ज़ियारत को मुबारक समझते रहे हैं और ज़ाहिरो बात़िन में इस की बरकत मह़सूस करते रहे हैं। इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह बिन नो'मान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी किताब "सफ़ीनतुन्नजा" में यूं लिखते हैं : "अस्ह़ाबे बसाइर व ए'तिबार के नज़्दीक येह अम्र साबित है कि सालेह़ीन की क़ब्रों की ज़ियारत ब ग़रज़े तबर्रुक व ह़ुसूले इ़ब्रत पसन्दीदा है। क्यूंकि सालेह़ीन की बरकत उन की मौत के बा'द इसी त़रह़ जारी है जैसा कि उन की ज़िन्दगी में थी और अइम्मए दीन में से हमारे उ़लमाए मुह़क़्क़िक़ीन के नज़्दीक सालेह़ीन की क़ब्रों पर दुआ़ करना और उन से त़लबे शफ़ाअ़त करना मा'मूल बेह है।"

---

1 ......المدخل لابن الحاج، فصل فى زيارة القبور، ج١، الجزء١، ص١٨٤-علميه

www.dawateislami.net

و اما عظيم جناب الانبياء و الرسل صلوات الله وسلامه عليهم اجمعين فيأتي اليهم الزائر و يتعين عليه قصد هم من الاماكن البعيدة فاذا جاء اليهم فليتصف بالذل و الانكسار و المسكنة و الفقر و الفاقة و الحاجة و الاضطرار و الخضوع و يحضر قلبه و خاطره اليهم و الى مشاهدتهم بعين قلبه لا بعين بصره لانهم لا يبلون ولا يتغيرون ثم يثني على الله تعالٰى بما هو اهله ثم يصلي عليهم ويترضى عن اصحابهم ثم يترحم على التابعين لهم باحسان الى يوم الدين ثم يتوسل الى الله تعالٰى بهم فى قضاء ماربه و مغفرة ذنوبه و يستغيث بهم و يطلب حوائجه منهم و يجزم بالاجابة ببركتهم و يقوى حسن ظنه فى ذٰلك فانهم باب الله المفتوح و جرت سنته سبحٰنه و تعالٰى فى قضاء الحوائج على ايديهم و بسببهم و من عجز عن الوصول اليهم فليرسل بالسلام عليهم و يذكر ما يحتاج اليه من حوائجه و مغفرة ذنوبه و ستر عيوبه الى غير ذلك فانهم السادة الكرام والكرام لايردون من سألهم ولا من توسّل بهم ولا من قصد هم ولا من لجأ اليهم هذا الكلام فى زيارة الانبياء و المرسلين عليهم الصلوٰة و السلام عموما .(1)

रहा अम्बिया व मुर्सलीन صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की बारगाहे आ़ली, सो ज़ाइरीन उन के पास जाए और उसे चाहिये कि दूरो दराज़ मक़ामात से उन का क़स्द करे। जब उन के पास पहुंचे तो ज़ुल[2] व इन्किसार व मस्कनत व फ़क्रो फ़ाक़ा व ह़ाजत व इज़्तिरार व ख़ुशूअ़ ज़ाहिर करे और अपने दिल को उन की त़रफ़ मुतवज्जेह करे और चश्मे दिल से (न की चश्मे बसर से) उन के मुशाहदे में मश्ग़ूल हो जाए क्यूंकि वोह बोसीदा व मुतग़य्यर नहीं होते फिर अल्लाह तआ़ला की मुनासिब सना के बा'द उन पर दुरूद भेजे और उन के अस्ह़ाब के लिये रिज़ाए ख़ुदा त़लब करे और उन के ताबेईन ता क़ियामत के लिये रह़मत त़लब करे। फिर क़ज़ाए ह़ाजात और अपने गुनाहों की बख़्शिश के लिये उन को बारगाहे इलाही में वसीला बनाए और उन से इस्तिग़ासा करे और अपनी ह़ाजतें उन से मांगे और उन की बरकत से इजाबत का यक़ीन करे और इस बारे में अपने हुस्ने ज़न को क़वी करे क्यूंकि वोह ख़ुदा का खुला दरवाज़ा हैं और ख़ुदा की येह सुन्नते जारिय्या है कि वोह उन के हाथों पर और उन के सबब से क़ज़ाए ह़ाजात फ़रमाता है जो शख़्स उन की ख़िदमत में पहुंचने से आ़जिज़ हो उसे चाहिये कि किसी दूसरे के हाथ अपना सलाम पहुंचाए और

1 ......المدخل لابن الحاج، فصل فى زيارة القبور، ج١، الجزء١، ص١٨٦۔علميه

2 .....कमज़ोरी।

www.dawateislami.net

अपनी ह़वाइज व मग़्फ़िरते ज़ुनूब व सित्रे उ़यूब वग़ैरा का ज़िक्र करे क्यूंकि वोह सादाते किराम हैं और किराम रद नहीं करते उस को जो उन से सुवाल करे और न उस को जो उन से तवस्सुल करे और न उस को जो उन का क़स्द करे और न उस को जो उन की पनाह ले। येह कलाम आ़म अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ज़ियारत के बारे में है।

و اما فی زیارۃ سید الاوّلین و الاٰخرین صلوات اللّٰہ علیہ و سلامہ فکل ما ذکر یزید علیہ اضعافہ اعنی فی الانکسار و الذل و المسکنۃ لانہ شافع المشفّع الذی لا ترد شفاعتہ و لا یخیب من قصدہ و لا من نزل بساحتہ و لا من استعان او استغاث بہ اذ انہ علیہ الصلوۃ و السلام قطب دائرۃ الکمال و عروس المملکۃ.[1]

रहा ज़ियारते सय्यिदुल अव्वलीन वल आख़िरीन صَلَوَاتُ اللّٰہِ عَلَیْہِ وَسَلَامُہٗ सो इन्किसार व ज़ुल व मस्कनत जिन का ज़िक्र ऊपर हुवा उन का इज़्हार इस बारगाहे आ़ली में कई गुना ज़ियादा करे क्यूंकि ह़ुज़ूर शाफ़ेए़ मुशफ़्फ़ाअ़ हैं कि जिन की शफ़ाअ़त रद नहीं होती और वोह मह़रूम नहीं रहता जो आप का क़स्द करे या आप के आंगन में उतरे या आप से मदद मांगे या आप से इस्तिग़ासा करे क्यूंकि ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام क़ुत़्बे दाइरए कमाल और उ़रूसे[2] ममलुकत हैं।

قال اللّٰہ تعالٰی فی کتابہ العزیز:(لَقَدۡ رَاٰی مِنۡ اٰیٰتِ رَبِّہِ الۡکُبۡرٰی) قال علماؤنا رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہم: رأی صورتہ علیہ الصلوۃ و السلام فاذا ھو عروس المملکۃ فمن توسّل بہ او استغاث بہ او طلب حوائجہ منہ فلا یرد و لا یخیب لما شھدت بہ المعاینۃ و الا ثار و یحتاج الی الادب الکلی فی زیارتہ علیہ الصلوۃ و السلام و قد قال علماؤنا رحمۃ اللّٰہ علیہم: ان الزائر یشعر نفسہ بانّہ واقف بین یدیہ علیہ الصلوۃ و السلام کما ھو فی حیا تہ اذ لا فرق بین موتہ و حیا تہ اعنی فی مشاھدتہ لامتہ و معرفتہ باحوالھم و نیّا تھم و عزائمھم و خواطرھم و ذلک عندہ جلی لاخفاء فیہ فان قال القائل ھذہ الصفات مختصۃ بالمولٰی سبحانہ وتعالٰی فالجواب ان کل من انتقل الی الاٰخرۃ من المؤمنین فھم یعلمون احوال الاحیاء غالبا وقد وقع ذلک فی الکثرۃ بحیث المنتھٰی

1 ......المدخل لابن الحاج ، فصل فی زیارۃ القبور، ج۱، الجزء۱، ص۱۸۶۔علمیہ

2 .....उ़रूस के लिये सब चीज़ें आरास्ता की जाती हैं। सब उस की ख़िदमत करते हैं और उस का हुक्म मानते हैं और उस को ख़ुश करने के अस्बाब मुहय्या किये जाते हैं। इसी त़रह़ आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुल्क व मलकूत में **अल्लाह** तआ़ला के ख़लीफ़ए मुत़लक़ हैं। बसाइत़ व मुरकब्बात में आप का तसर्रुफ़ है और येह आ़लम आप ही के लिये बना है। पस आप उ़रूसे ममलुकत है। कज़ाफ़ी मत़ालेउ़ल मसर्रात। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

من حکایات وقعت منهم و یحتمل ان یکون علمهم بذلك حین عرض اعمال الاحیاء علیهم و یحتمل غیر ذلك و هذه اشیاء مغیبة عنا وقد اخبر الصادق علیه الصلوة و السلام بعرض الاعمال علیهم فلابد من وقوع ذلك و الکیفیة فیه غیر معلومة و الله اعلم بها و کفی فی هذا بیانا قوله علیه الصلوة و السلام (المؤمن ینظر بنور الله) انتهٰی . و نور الله لا یحجبه شیء هذا فی حق الاحیاء من المؤمنین فکیف من کان منهم فی الدار الاخرة و قد قال الامام ابو عبد الله القرطبی فی تذکرته ما هذا لفظه قال ابن المبارك اخبرنا رجل من الانصار عن المنهال بن عمرو و حدثنا انه سمع سعید بن المسیب یقول لیس من یوم الا و تعرض علی النبی صلی الله تعالٰی علیه وآله وسلم اعمال امته غدوة و عشیة فیعرفهم بسیماهم و اعمالهم فلذلك یشهد علیهم. قال الله تعالٰی (فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا) قال و قد تقدم ان الاعمال تعرض علی الله تبارك و تعالیٰ یوم الخمیس و یوم الاثنین و علی الانبیاء و الأباء و الامهات یوم الجمعة ولا تعارض فانه یحتمل ان یختص نبینا علیه الصلوة و السلام بالعرض کلّ یوم و یوم الجمعة مع الانبیآء. (انتهٰی)[1]

अल्लाह तआ़ला कुरआने मजीद में फ़रमाता है :

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿۱۸﴾

अलबत्ता तह़क़ीक़ देखा ह़ज़्रत ने अपने रब की निशानियों से बड़ी को[2]

हमारे उ़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने इस की तावील में कहा कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने शबे मे'राज में अपनी ज़ात शरीफ़ की सूरत को मलकूत में देखा तो नागाह आप उ़रूसे ममलुकत थे पस जिस ने हुज़ूर से तवस्सुल या इस्तिग़ासा किया या हुज़ूर से अपनी ह़ाजतें मांगीं उस की दुआ़ रद नहीं होती और वोह मह़रूम नहीं रहता। जैसा कि मुआइना व आसार इस पर शाहिद हैं। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत में पूरे अदब की ज़रूरत है। हमारे उ़लमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने फ़रमाया है कि ज़ाइर समझे कि मैं हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सामने ऐसा खड़ा हूं जैसा कि हुज़ूर की ह़यात शरीफ़ में, क्यूंकि अपनी उम्मत के मुशाहदे और उन के अह़वाल व निय्यात व अ़ज़ाइम व ख़्वातिर की मा'रिफ़त में हुज़ूर की मौत व ह़यात यक्सां है और येह आप के नज़्दीक ज़ाहिर है इस में कोई पोशीदगी नहीं। अगर कोई ए'तिराज़ करे कि येह सिफ़ात तो अल्लाह तआ़ला से मुख़्तस हैं तो इस का जवाब येह है कि मोमिनों में से जो आ़लमे बरज़ख़ में चले जाते हैं वोह ज़िन्दों के ह़ालात

1 ......المدخل لابن الحاج، فصل فی زیارة القبور، ج۱، الجزء۱، ص۱۸۷۔علمیه

2.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अपने रब की बहुत बड़ी निशानियां देखीं। (پ۲۷، النجم:۱۸) इल्मिय्या

www.dawateislami.net

अक्सर जानते हैं। चुनान्चे, ह़िकायतों में निहायत कसरत से ऐसे वाक़िआ़त मज़्कूर हैं और एह़तिमाल है कि मुर्दों को ज़िन्दों के ह़ालात का इ़ल्म उस वक़्त हो जाता हो जब कि उन पर ज़िन्दों के आ'माल पेश किये जाते हैं इस के सिवा और भी एह़तिमाल है। येह चीज़ें हम से पोशीदा हैं ह़ालांकि खुद हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ख़बर दी है कि ज़िन्दों के आ'माल मुर्दों पर पेश होते हैं। पस इस के वुक़ूअ़ में शक नहीं मगर हमें इस की कैफ़िय्यत मा'लूम नहीं खुदा को खूब मा'लूम है इस के बयान में हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का येह क़ौल काफ़ी है : "मोमिन खुदा के नूर से देखता है।" और खुदा के नूर के लिये कोई चीज़ ह़ाजिब नहीं[1] येह तो ज़िन्दा मोमिनों के ह़क़ में है, इन में से जो दारे आख़िरत में चला जाता है उस का क्या ह़ाल होगा ? इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह कुर्तुबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "तज़्किरा" में यूं फ़रमाया है :

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रावी हैं कि अन्सार में से एक शख़्स ने हमें ख़बर दी कि मिन्हाल बिन अ़म्र ने सईद बिन मुसय्यिब को सुना कि फ़रमाते थे कि कोई दिन ऐसा नहीं कि उम्मत के आ'माल सुब्ह़ो शाम नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पेश न किये जाते हों। पस हुज़ूर उन को उन के चेहरों से और उन के आ'माल से पहचानते हैं इसी वासिते़ आप अपनी उम्मत पर शहादत देंगे। बारी तआ़ला का इरशाद है :

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا ﴿٤١﴾

पस क्यूं कर होगा जिस वक़्त हम लाएंगे हर उम्मत से गवाही देने वाला और लाएंगे हम तुझ को उन पर गवाह।[2]

और पहले आ चुका है कि आ'माल **अल्लाह** तआ़ला पर पंजशम्बा[3] और दो शम्बा[4] को और पैग़म्बरों और बापों और माओं पर जुमुआ़ के दिन पेश होते हैं। इस में कोई तआ़रुज़ नहीं क्यूंकि एह़तिमाल है कि आ'माल का हर रोज़ पेश होना हमारे नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मुख़्तस हो और जुमुआ़ के दिन पेश होना हुज़ूर से और दूसरे पैग़म्बरों عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मख़्सूस हो।

1.....या'नी खुदा के नूर से कोई चीज़ पोशीदा नहीं।

2.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं और ऐ मह़बूब तुम्हें उन सब पर गवाह और निगहबान बना कर लाएं। (پ٥،النساء:٤١) **इल्मिय्या**

3.....जुमा'रात। 4.....पीर।

www.dawateislami.net

فالتوسّل به عليه الصلوة و السلام هو محل حط احمال الاوزار و اثقال الذنوب و الخطايا لان بركة شفاعته عليه الصلوة و السلام و عظمها عند ربه لا يتعاظمها ذنب اذ انها اعظم من الجميع فليستبشر من زاره ويلجأ الى الله تعالٰى بشفاعة نبيه عليه الصلوة و السلام من لم يزره اللهم لا تحرمنا من شفاعته بحرمته عندك أمين يارب العٰلمين ومن اعتقد خلاف هذا فهو المحروم .(1)

पस हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से तवस्सुल करना गुनाहों और ख़त़ाओं के बोझों के साकित़ होने का महल है क्यूंकि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शफ़ाअ़त की बरकत और **अल्लाह** के नज़्दीक आप की अ़ज़्मत के सामने कोई गुनाह बड़ा नहीं इस लिये कि आप की शफ़ाअ़त सब से बढ़ कर है। पस चाहिये कि ख़ुश होवे वोह शख़्स जिस ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत की जो शख़्स ज़ियारत के लिये हाज़िर न हो सका वोह हुज़ूर को शफ़ीअ़ बना कर ख़ुदा की पनाह ले। اللّٰهم لا تحرمنا من شفاعته بحرمته عندك أمين يارب العٰلمين जो शख़्स इस के ख़िलाफ़ अ़क़ीदा रखता है वोह मह़रूम है :

इमाम मुह़म्मद बिन मूसा बिन नो'मान मराकुशी फ़ासी मालिकी (मुतवफ़्फ़ा सिने 683 हिजरी) ने सिने 639 हिजरी में ह़ज से वापस आ कर अपनी किताब مصباح الظلام فی المستغيثين بخير الانام فی اليقظة والمنام तस्नीफ़ की। अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस में से चन्द मिसालें ऐसे अश्ख़ास की नक़्ल की हैं कि जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा किया या हुज़ूर की क़ब्र शरीफ़ के पास आप से कुछ मांगा और उन को उन का मत़लूब ह़ासिल हो गया। हम ज़ैल में "वफ़ाउल वफ़ा" के इलावा दीगर कुतुब से भी तवस्सुल व इस्तिग़ासा के चन्द वाक़िआ़त नक़्ल करते हैं :

﴾1﴿.....ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन मुन्कदिर (मुतवफ़्फ़ा सिने 205 हिजरी) का बयान है कि एक शख़्स ने मेरे वालिद के पास अस्सी[80] दीनार ब त़ौरे अमानत रखे और वोह येह कह कर जिहाद पर चला गया कि मेरी वापसी तक अगर तुम्हें ज़रूरत पेश आए तो ख़र्च कर लेना। वालिद ने क़ह़त़ साली के सबब से वोह दीनार ख़र्च कर लिये उस शख़्स ने वापस आ कर अपनी अमानत त़लब की। वालिद ने जवाब दिया : कल मेरे पास आना और रात मस्जिदे नबवी में गुज़ारी कभी क़ब्र शरीफ़ से लिपटते और कभी मिम्बरे मुनीफ़(2) से यहां तक कि क़ब्र शरीफ़ से इस्तिग़ासा करते करते सुब्ह़ होने को आई। नागाह तारीकी में एक शख़्स नुमूदार हुवा, वोह कह रहा था : "ऐ अबू

1.....المدخل لابن الحاج، فصل فی تحت فصل فی زيارة القبور، ج۱، الجزء۱، ص ۱۸۷۔علميه

2.....सब से बुलन्द रुत्बा मिम्बर।

www.dawateislami.net

मुह़म्मद ! येह लो ।" वालिद ने हाथ बढ़ाया तो क्या देखते हैं कि वोह एक थैली है जिस में अस्सी80 दीनार हैं । सुब्ह़ को वालिद ने वोही दीनार उस शख़्स को दे दिये ।(1)

﴾2﴿.....इमाम अबू बक्र मुक़री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है कि मैं, त़बरानी और अबुश्शैख़ ह़रमे नबवी में फ़ाक़ा से थे जब इशा का वक़्त आया तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम भूके हैं ।" येह अ़र्ज़ कर के मैं लौटा । अबुल क़ासिम (त़बरानी) ने मुझ से कहा कि बैठो रिज़्क़ आएगा या मौत । अबू बक्र का बयान है कि मैं और अबुश्शैख़ सो गए और त़बरानी बैठे हुवे कुछ देख रहे थे । एक अ़लवी ने आ कर दरवाज़ा खट खटाया । हम ने खोला तो क्या देखते हैं कि उस के साथ दो गुलाम हैं जिन में से हर एक के पास खाने से भरी हुई एक ज़म्बील है । हम ने बैठ के खाया और ख़याल किया कि बक़िय्या को गुलाम ले लेगा मगर वोह बाक़ी को हमारे पास छोड़ गए । जब हम खाने से फ़ारिग़ हुवे तो अ़लवी ने हम से कहा : क्या तुम ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़रयाद की थी ? क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में मुझे हुक्म दिया कि मैं तुम्हारे पास कुछ ले जाऊं ।(2)

﴾3﴿.....इब्ने जल्लाद का बयान है कि मैं मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुवा और फ़ाक़ा से था । मैं ने क़ब्र शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : मैं आप का मेहमान हूं । इतना अ़र्ज़ कर के मैं सो गया, ख़्वाब में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे एक रोटी इनायत फ़रमाई आधी मैं ने खा ली आंख खुली तो आधी मेरे हाथ में थी ।(3)

﴾4﴿.....अबुल ख़ैर अक़्त़अ़ ज़िक्र करते हैं कि मैं मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुवा और फ़ाक़ा से था पांच दिन इसी त़रह़ रहा फिर क़ब्र शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते शैख़ैन पर सलाम अ़र्ज़ किया और यूं गोया हुवा : "या रसूलल्लाह ! मैं आप का मेहमान हूं ।" येह अ़र्ज़ कर के मैं क़ब्र शरीफ़ के पीछे सो गया । मैं ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा । ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के दाईं त़रफ़ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाईं त़रफ़ और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सामने हैं । मुझे ह़ज़रते अ़ली ने हिलाया और कहा कि उठो !

---

1 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ... الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤،ص ١٣٨٠ ـعلميه
2 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ... الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤،ص ١٣٨٠ ـعلميه
3 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ... الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤،ص ١٣٨١ ـعلميه

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए हैं। मैं ने उठ कर हुज़ूर की पेशानी को बोसा दिया। हुज़ूर ने मुझे एक रोटी इनायत फ़रमाई। आधी मैं ने खा ली, आंख खुली तो आधी मेरे हाथ में थी।[1]

﴾5﴿.....अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन जुरआ़ सूफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़िक्र करते हैं कि मैं और मेरे वालिद और अबू अ़ब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुवे। हम रात को भूके रहे। मैं अभी बालिग़ न हुवा था और अपने वालिद से बार बार कहता था कि मैं भूका हूं। मेरे वालिद ने क़ब्र शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आज रात मैं आप का मेहमान हूं।" येह अ़र्ज़ कर के वालिद मुराक़िब हो गए।[2] कुछ देर के बा'द उन्हों ने सर उठाया तो कभी रोते कभी हंसते। उन से सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप ने कुछ दिरहम मेरे हाथ में रख दिये। हाथ जो खोला तो उस में वोह दिरहम मौजूद थे। **अल्लाह** तआ़ला ने उन दिरहमों में इतनी बरकत दी कि हम शीराज़ आ गए और वहां भी उन में से ख़र्च करते रहे।[3]

﴾6﴿.....अह़मद बिन मुह़म्मद सूफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि मैं तीन महीने बयाबान में फिरता रहा। फिर मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुवा और रौज़ा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर और ह़ज़राते शैख़ैन पर सलाम अ़र्ज़ किया फिर सो गया। ख़्वाब में मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अह़मद ! तुम आ गए हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया कि हां ! मैं भूका हूं और आप का मेहमान हूं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपने हाथ खोलो ! मैं ने हाथ खोल दिये। हुज़ूर ने मेरे दोनों हाथ दिरहमों से भर दिये। मेरी आंख खुली तो दोनों हाथ दिरहमों से भरे हुवे थे। मैं ने नाने मैदा और फ़ालूदा ख़रीदा और खाया फिर उसी वक़्त सह़रा की राह ली।[4]

﴾7﴿.....ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम बिन अ़साकिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी तारीख़ में बिल इस्नाद नक़्ल किया है कि अबुल क़ासिम साबित बिन अह़मद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़िक्र करते हैं कि एक शख़्स ने मदीनए मुनव्वरा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ के पास नमाज़े सुब्ह़ के लिये अज़ान दी और उस में **الصلوة خير من النوم** कहा, ख़ुद्दामे मस्जिद में से एक ने येह सुन कर उस पर थप्पड़ मारा। उस शख़्स ने रो कर अ़र्ज़ किया : "आप के हुज़ूर में

---

1 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج٢، الجزء٤، ص١٣٨١۔علمیه

2 .....या'नी गर्दन झुका कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मुतवज्जेह हो गए।

3 ......وفاء الوفاء،الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج٢، الجزء٤، ص١٣٨١۔علمیه

4 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج٢، الجزء٤، ص١٣٨١۔علمیه

www.dawateislami.net

मेरे साथ येह सुलूक किया जाता है।'' उसी वक़्त उस ख़ादिम पर फ़ालिज गिरा उसे वहां से उठा कर घर ले गए और वोह तीन दिन के बा'द मर गया।(1)

﴾8﴿.....मिन जुम्ला रिवायात इब्ने नो'मान येह है कि मैं ने अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम बिन सई़द से सुना कि मैं मदीनए मुनव्वरा में था मेरे साथ तीन फ़क़ीर थे हम फ़ाक़ा में मुब्तला हुवे। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत शरीफ़ में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास कुछ नहीं हमें तीन मुद(2) काफ़ी हैं ख़्वाह किसी चीज़ के हों।'' इस के बा'द एक शख़्स मुझ से मिला उस ने मुझे तीन मुद उ़म्दा खजूरें अ़त़ा कीं।(3)

﴾9﴿..... इमाम इब्ने नो'मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ही ब रिवायते अबुल अ़ब्बास बिन नफ़ीस मुक़री ज़रीर नक़्ल करते हैं कि उस ने कहा : मैं मदीनए मुनव्वरा में तीन दिन भूका रहा। मैं ने क़ब्र शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं भूका हूं।'' येह अ़र्ज़ कर के मैं सो गया। एक लड़की ने पाउं मार कर मुझे जगा दिया वोह मुझे अपने घर ले गई और गेहूं की रोटी और घी और खजूरें पेश कीं और कहा : ''अबुल अ़ब्बास ! खाओ ! मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे येह खाना तय्यार करने का हुक्म दिया है तुम्हें जब भूक लगे हमारे पास आ जाया करो।''(4)

﴾10 ता 13﴿.....अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने मसमूआ़त यूं बयान करते हैं : मैं ने शरीफ़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुस्सलाम बिन अ़ब्दुर्रह़मान हुसैनी फ़ासी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह फ़रमाते सुना कि मैं मदीनए मुनव्वरा में तीन दिन रहा मुझे खाने को कुछ न मिला मैं ने मिम्बर शरीफ़ के पास दोगाना अदा कर के यूं अ़र्ज़ किया : ''ऐ मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार ! मैं भूका हूं और आप से सरीद मांगता हूं।'' येह अ़र्ज़ कर के मैं सो गया नागाह एक शख़्स ने मुझे जगा दिया। मैं ने देखा कि उस के पास एक चोबी प्याला(5) है जिस में सरीद, घी, मसालह़ा और गोश्त है। उस ने मुझ से कहा कि खा लो। मैं ने पूछा कि तुम येह कहां से लाए हो ? उस ने जवाब दिया कि मेरे बच्चे तीन दिन से इसी खाने की तमन्ना करते थे आज **अल्लाह** तआ़ला ने कुछ कशाइश कर दी तो मैं ने येह

1.....अ़ल्लामा समहूदी इस के बा'द लिखते हैं कि अबू बक्र मुक़री का वाक़िआ़ वफ़ाओ लि इब्नुल जौज़ी में है। बाक़ी वाक़िआ़त मज़्कूरए बाला को इब्ने जौज़ी के इ़लावा औरों ने भी ज़िक्र किया है।

(وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤،ص١٣٨٢۔علميه)

2.....एक क़दीम पैमाना।

3.....وفاء الوفاء،الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤،ص١٣٨٢۔علميه

4.....وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤، ص١٣٨٥۔علميه

5.....लकड़ी का प्याला।

www.dawateislami.net

खाना तय्यार किया फिर मैं सो गया। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा कि फ़रमा रहे हैं कि तुम्हारा एक भाई मुझ से इसी खाने की आरज़ू करता है तुम इस में से उस को भी खिलाओ।(1)

मैं ने शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबिल अमान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को येह कहते सुना कि मैं मदीनए मुनव्वरा में मेह़राबे फ़ात़िमा के अ़क़ब में था। शरीफ़ मकसिर क़ासिमी मेह़राबे मज़्कूर के पीछे सोए हुवे थे। वोह उठ कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत शरीफ़ में ह़ाज़िर हुवे और हमारे पास मुस्कुराते हुवे आए। शम्सुद्दीन सवाब ख़ादिमे रौज़ा शरीफ़ ने उन से मुस्कुराने का सबब दरयाफ़्त किया। उन्हों ने बयान किया कि मैं फ़ाक़े से था अपने घर से निकल कर बैते फ़ात़िमा में आया और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा किया कि मैं भूका हूं। ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे दूध का प्याला अ़त़ा फ़रमाया। मैं ने पी लिया और सैराब हो गया। देख लो येह मौजूद है और अपने मुंह में से अपने हाथ पर थूक कर दिखला दिया। हम ने मुशाहदा किया कि उन के मुंह में दूध था।(2)

मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन दिम्यात़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बयान करते सुना कि मुझ से अ़ब्दुल क़ादिर तीन्सी ने ह़िकायत की, कि मैं फ़क़ीरों की त़रह़ सफ़र कर रहा था। मैं ने मदीनए मुनव्वरा में ह़ाज़िर हो कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ अ़र्ज़ किया और भूक की शिकायत की फिर मैं वहीं सो गया। एक नौजवान ने मुझे जगा दिया और अपने साथ ले गया। उस ने सरीद का एक प्याला और कई क़िस्म की खजूरें और बहुत सी रोटियां पेश कीं। मैं ने खाना खाया। उस ने गोश्त व नान व तमर(3) से मेरा तौशादान भर दिया और बयान किया कि मैं नमाज़े चाश्त के बा'द सोया हुवा था ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें येह खाना पहुंचा दूं। ह़ुज़ूर ने मुझे तुम्हारी जगह भी बता दी और फ़रमा दिया कि तुम ने ह़ुज़ूर से येही तमन्ना की थी।(4)

मैं ने अपने दोस्त अ़ली बिन इब्राहीम बूसैरी को फ़रमाते सुना कि अ़ब्दुस्सलाम बिन अबिल क़ासिम सक़ल्ली ज़िक्र करते थे कि एक सक़्क़ा शख़्स ने जिस का नाम मुझे याद नहीं रहा

1 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤، ص۱۳۸۲ ـ علمیه

2 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤، ص۱۳۸۳ ـ علمیه

3.....खजूर।

4 ......وفاء الوفاء، الباب الثامن...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤،ص۱۳۸۳ ـ علمیه

www.dawateislami.net

मुझ से बयान किया कि मैं मदीनए मुनव्वरा में था। मेरे पास कुछ न था। मैं कमज़ोर हो रहा था एक रोज़ हुजरे शरीफ़ के पास आ कर मैं ने अ़र्ज़ किया : "या सय्यदल अव्वलीन वल आख़िरीन ! मैं मिस्र का रहने वाला हूं पांच माह से आप की ख़िदमत में हूं, कमज़ोर हो गया हूं। या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा से दुआ़ फ़रमाइये ! मैं अल्लाह से और आप से सुवाल करता हूं कि मेरे पास कोई बन्दा ऐसा भेज दे जो मुझे पेट भर कर खाना खिलाए या मुझे अपने साथ ले जाए।" मैं येह अ़र्ज़ कर के मिम्बर शरीफ़ के पास बैठ गया। नागाह एक शख़्स हुजरे में दाख़िल हुवा उस ने कुछ कलाम किया और कहा : "ऐ जद्दे बुज़ुर्गवार ! ऐ जद्दे बुज़ुर्गवार ! फिर मेरी त़रफ़ आया और मेरा हाथ पकड़ कर बाबे जिब्रील से निकला और बक़ीअ़ में से होता हुवा एक ख़ैमे में पहुंचा वहां उस ने ग़ुलाम व कनीज़ से कहा कि अपने मेहमान के लिये खाना तय्यार करो।" चुनान्चे, ग़ुलाम लकड़ियां चुन लाया और कनीज़ ने अनाज पीस कर रोटी पकाई रोटी के साथ घी और खजूरें थीं। मैं आधी रोटी से सैर हो गया। उस ने बाक़ी आधी और दो साअ़ खजूरें मेरे तोशादान में डाल दीं। जब मैं फ़ारिग़ हुवा तो उस ने मेरा नाम पूछा। मैं ने बतला दिया। फिर मुझ से कहा कि तुझे ख़ुदा की क़सम ! मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार के पास फिर शिकायत न करना क्यूंकि उन्हें ना गवार गुज़रता है। आज से भूक के वक़्त तेरा रिज़्क़ तेरे पास आ जाया करेगा यहां तक कि सफ़र के लिये तुझे कोई साथी मिल जाए फिर उस ने अपने ग़ुलाम से कहा कि इन को हुजरा शरीफ़ में पहुंचा दो। जब मैं ग़ुलाम के साथ बक़ीअ़ में आया तो मैं ने उस से कहा कि अब तुम लौट जाओ। मैं पहुंच जाऊंगा। उस ने कहा : या सय्यिदी ! मैं तो आप को हुजरे शरीफ़ में पहुंचा कर ही आऊंगा। मबादा[1] रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे आक़ा को बता दें। ग़रज़ मुझे हुजरे शरीफ़ में पहुंचा कर चला गया। मैं चार रोज़ तोशा दान में से खाता रहा। फिर मुझे भूक लगी तो वोही ग़ुलाम मुझे खाना दे गया। बा'दे अज़ां ऐसा ही होता रहा कि जब भी मुझे भूक लगती खाना पहुंच जाता यहां तक कि एक जमाअ़त के साथ मैं यम्बुअ़ की त़रफ़ निकला।[2]

﴾14﴿.....अ़ल्लामा समहूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपना वाक़िआ़ बयान करते हैं कि मैं मस्जिदे नबवी में था। मिस्र के ह़ाजियों का क़ाफ़िला तिजारत को आया। मेरे हाथ में ख़ल्वत की कुन्जी[3] थी

1.....कहीं ऐसा न हो कि।

2......وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء٤، ص۱۳۸۳۔۱۳۸٤۔علمیه

3.....हुजरे या कमरे की चाबी।

www.dawateislami.net

जिस में मेरी किताबें थीं। एक मिस्री आ़लिम ने कहा कि मेरे साथ रौज़ा शरीफ़ में चलो। जब मैं वापस आया तो मुझे कुन्जी न मिली। मैं ने हर चन्द मुख़्तलिफ़ जगह तलाश की मगर न मिली। येह मुझ पर बहुत ना गवार गुज़रा क्यूंकि उस वक़्त मुझे कुन्जी की सख़्त ज़रूरत थी। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "या सय्यिदी ! या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मेरी ख़ल्वत की कुन्जी गुम हो गई है मुझे इस की ज़रूरत है मैं आप के पास दरवाज़े से मांगता हूं।" येह अ़र्ज़ कर के मैं वापस आया तो एक लड़के को जिसे मैं न पहचानता था ख़ल्वत के क़रीब देखा। उस के हाथ में वोह कुन्जी थी। मैं ने उस से पूछा कि तुम्हें येह कहां से मिली ? उस ने जवाब दिया कि आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मवाजा शरीफ़ के पास थी मैं ने वहां से उठा ली।(1)

﴾15﴿.....अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "मवाहिबे लदुन्निय्या" में अपना वाक़िआ़ यूं बयान करते हैं कि कई साल मुझे एक बीमारी लाह़िक़ रही जिस के इलाज से अत़िब्बा आ़जिज़ आ गए, मैं ने 28 जुमादल ऊला सिने 893 हिजरी की रात को मक्कए मुशर्रफ़ा में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा किया। ख़्वाब में मैं ने एक शख़्स को देखा जिस के पास एक काग़ज़ है। उस में लिखा हुवा है कि इज़्न शरीफ़ नबवी के बा'द ह़ज़रते शरीफ़ा से येह अह़मद बिन क़स्त़लानी की दवा है। जब मेरी आंख खुली तो वल्लाह मैं ने उस बीमारी का कोई निशान न पाया और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत से शिफ़ा ह़ासिल हो गई।(2)

﴾16﴿.....अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपना दूसरा वाक़िआ़ यूं ज़िक्र करते हैं कि सिने 885 हिजरी(3) में ज़ियारत शरीफ़ के बा'द मैं मिस्र को आ रहा था कि मक्का के रास्ते में हमारी ख़ादिमा ग़ज़ाल ह़बशिय्या पर कई रोज़ आसेब का असर रहा। इस बारे में मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा किया। ख़्वाब में एक शख़्स नज़र आया जिस के साथ

---

1 ......وفاءالوفاء، جزء ثانی، ص ۴۲۹۔......(وفاء الوفاء، الباب الثامن ...الخ، الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج ۲، الجزء ٤، ص ۱۳۸۵۔علمیه)

2 ......المواھب اللدنیة مع زرقانی، المقصد العاشر...الخ، الفصل الثانی فی زیارة قبره الشریف ...الخ ، ج ۱۲، ص ۲۲۲۔علمیه)

3 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "सिने 585 हिजरी" लिखा है यक़ीनन येह किताबत की ग़लत़ी है क्यूंकि "सिने 585 हिजरी" में तो अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत भी नहीं हुई थी, आप का सिने विलादत "सिने 851 हिजरी" है, मवाहिबे लदुन्निय्या और हुज्जतुल्लाह अ़लल आ़लमीन में लिखा है कि येह वाक़िआ़ "सिने 885 हिजरी" में पेश आया लिहाज़ा हम ने येही सिन लिखा है। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلَم **इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

वोह जिन्न था। उस ने कहा : इस जिन्न को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के पास भेजा है। मैं ने उस जिन्न को मलामत की और उस से ह़लफ़ लिया कि आयिन्दा उस ख़ादिमा के पास न आएगा। मेरी आंख खुली तो ख़ादिमा पर आसेब का कुछ असर न था। गोया उस को क़ैद से रिहा कर दिया गया है वोह आ़फ़िय्यत में रही यहां तक कि मैं ने सिने 894 हिजरी में उस को अ़लाह़िदा कर दिया।(1)

﴾17﴿.....अ़ल्लामा यूसुफ़ नब्हानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं कि कसीर बिन मुह़म्मद बिन रिफ़ाआ़ ने बयान किया कि एक शख़्स अ़ब्दुल मलिक बिन सईद बिन ख़य्यार बिन अबजर(2) के पास आया। उस ने उस शख़्स का पेट टटोला और कहा कि तुझे ला इ़लाज बीमारी है। उस ने पूछा : क्या बीमारी है? इब्ने अबजर ने कहा कि दुबैला।(3) येह सुन कर वोह लौट आया और उस ने तीन बार यूं दुआ़ मांगी :

اَللّٰهُ اللّٰهُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَامُحَمَّدُ اِنِّیْ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ وَرَبِّیْ اَنْ يَّرْحَمَنِیْ مِمَّا بِیْ رَحْمَةً يُغْنِيْنِیْ بِهَا عَنْ رَحْمَةٍ مِّنْ سِوَاهُ.

अल्लाह, **अल्लाह**, **अल्लाह** मेरा परवर दगार है मैं उस के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। या **अल्लाह**! मैं तेरी बारगाह में तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नबिय्ये रह़मत के वसीले से पेश होता हूं। या मुह़म्मद! मैं आप के और अपने रब की बारगाह में आप के वसीले से पेश होता हूं कि वोह इस बीमारी में मुझ पर ऐसी रह़मत करे कि जिस से किसी ग़ैर की रह़मत से मुझे बे नियाज़ कर दे।

इस दुआ़ के बा'द वोह फिर इब्ने अबजर के पास गया, उस ने उस का पेट टटोला तो कहा कि तू तन्दुरुस्त हो गया है तुझे कोई बीमारी नहीं।(4)

﴾18﴿.....अबू अ़ब्दुल्लाह सालिम मा'रूफ़ बेह ख़्वाजा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बयान किया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं दरयाए नील के एक जज़ीरे में हूं क्या देखता हूं कि एक मगरमच्छ मुझ

---

1 ......المواهب اللدنية مع زرقانى،المقصد العاشر...الخ،الفصل الثانى فى زيارة قبره...الخ، ج١٢،ص٢٢٢-٢٢٣۔علميه

2 .....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां "ख़यार बिन जबर" और आगे दो मक़ामात पर "इब्ने ज़ुबैर" लिखा है लेकिन "ह़ुज्जतुल्लाह अ़लल आ़लमीन" में "ख़यार बिन अबजर" है लिहाज़ा किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने तीनों मक़ामात पर, "जबर" और "ज़ुबैर" की जगह "अबजर" लिखा है। **इ़ल्मिय्या**

3 .....पेट की एक बीमारी का नाम है। 12 मिन्ह

4 ......حجة الله على العالمين فى معجزات سيد المرسلين،ص٧٩٠۔(حجة الله على العلمين ، القسم الرابع...الخ ، الباب الثانى فيما وقع بعد وفاته...الخ، الفصل الثانى فى ذكرمن استغاث به صلى الله عليه وسلم ...الخ،ص٥٦٧-٥٦٨۔علميه)

www.dawateislami.net

पर ह़म्ला करना चाहता है मैं उस से डर गया। नागाह एक शख़्स ने जो मेरे ज़ेहन में आया कि वोह नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं मुझ से फ़रमाया कि जब तू किसी सख़्ती में हो तो यूं पुकारा कर : "اَنَا مُسْتَجِیْرٌ بِكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ" या रसूलल्लाह ! मैं आप की पनाह का त़लबगार हूं। इत्तिफ़ाक़ से उन ही अय्याम में एक नाबीना ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का इरादा किया। मैं ने उस से अपना ख़्वाब बयान कर दिया और कह दिया कि जब तू किसी सख़्ती में मुब्तला हो तो यूं पुकारा कर "اَنَا مُسْتَجِیْرٌ بِكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ" वोह रवाना हो कर राबिग़ में पहुंचा वहां पानी की क़िल्लत थी उस का ख़िदमत गार पानी की तलाश में निकला। रावी का क़ौल है कि उस नाबीना ने मुझ से ज़िक्र किया कि मेरे हाथ में मश्क ख़ाली रह गई। मैं पानी की तलाश से तंग आया। उसी अस्ना में मुझे तुम्हारा क़ौल याद आ गया। मैं ने कहा : "اَنَا مُسْتَجِیْرٌ بِكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ" इसी ह़ाल में नागाह एक शख़्स की आवाज़ मेरे कान में पड़ी की तू अपनी मश्क भर ले। मैं ने मश्क में पानी के गिरने की आवाज़ सुनी यहां तक कि वोह भर गई। मैं नहीं जानता कि वोह शख़्स कहां से आ गया।(1)

﴾19﴿.....अबुल ह़सन अ़ली बिन मुस्त़फ़ा अ़स्क़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़िक्र करते हैं कि हम बह़्रे ऐ़ज़ाब में किश्ती में जिद्दा को रवाना हुवे, समन्दर में तुग़्यानी आ गई। हम ने अपना अस्बाब समन्दर में फेंक दिया। जब हम डूबने लगे तो नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा करने लगे और यूं पुकारने लगे। या मुह़म्मदा ! या मुह़म्मदा !। हमारे साथ मग़रिब का एक नेक दिल शख़्स था वोह बोला : ह़ाजियो ! घबराओ मत। तुम बच जाओगे क्यूंकि अभी मैं ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा हूं, मैं ने ह़ुज़ूर से अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) आप की उम्मत आप से इस्तिग़ासा कर रही है। ह़ुज़ूर ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया कि मदद करो। मग़रिबी का क़ौल है कि मैं अपनी आंख से देख रहा था कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर समन्दर में घुस गए। उन्हों ने किश्ती के पतवार(2) पर अपना हाथ डाला और खींचते रहे यहां तक कि ख़ुश्की से जा लगे। चुनान्चे, हम सह़ीह़ व सालिम रहे और इस के बा'द ब जुज़ ख़ैर हम ने कुछ न देखा और सह़ीह़ व सालिम ख़ुश्की पर पहुंच गए।(3)

---

1 ...... حجۃ اللّٰہ علی العالمین فی معجزات سید المرسلین، ص۷۸۶۔......(حجة الله على العلمين، القسم الرابع...الخ،الباب الثانى فيما وقع بعد وفاته...الخ، الفصل الثانى فى ذكر من استغاث به صلى الله عليه وسلم ...الخ،ص ٥٦٤ ـ ٥٦٥ـعلميه)

2.....किश्ती का रुख़ मोड़ने की लकड़ी।

3 ...... حجۃ اللّٰہ علی العالمین، ص۷۸۷۔......(حجة الله على العلمين، القسم الرابع...الخ،الباب الثانى فيما وقع بعد وفاته...الخ، الفصل الثانى فى ذكر من استغاث به صلى الله عليه وسلم ...الخ،ص ٥٦٥ـعلميه)

www.dawateislami.net

﴾20﴿.....अ़ल्लामा नबहानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "शवाहिदुल ह़क़" में अ़ब्दुर्रह़मान जुज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से नक़्ल करते हैं कि वोह फ़रमाते थे कि मेरी आंख हर साल ख़राब हो जाया करती थी। एक साल मदीनए मुनव्वरा में मेरी आंख दुखने लगी मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर फ़रयाद की : "या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं आप की ह़िमायत में हूं और मेरी आंख दुख रही है।" पस मुझे आराम हो गया और हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से अब तक मुझे आंख की तक्लीफ़ नहीं हुई।(1)

﴾21﴿.....अ़ल्लामा नबहानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه "शवाहिदुल ह़क़" में किताब "अल इशाराते इला मा'रिफ़तुज़्ज़ियारात" से नक़्ल करते हैं कि इस के मुसन्निफ़ शैख़ अबुल ह़सन अ़ली इब्ने अबी बक्र अस्साबेह़ अल हरवी (मुतवफ़्फ़ा ब ह़लब सिने 611 हिजरी) कहते हैं कि जज़ीरे में एक शहर तौना(2) है। वहां मश्हदे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मश्हदे अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मौजूद हैं। मैं ने जज़ीरा वालों से इन मुशाहिद की निस्बत दरयाफ़्त किया कि क्या येह नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अ़ली मुर्तज़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के नाम पर बनाए गए हैं ? उन्हों ने जवाब दिया कि येह क़िस्सा तफ़्सील त़लब है फिर एक ख़ूब सूरत शैख़ को बुला कर बतलाया कि येह शैख़ जुज़ाम में मुब्तला हो गया था। लोगों ने इस की बीमारी से डर कर इसे जज़ीरे के एक त़रफ़ निकाल दिया था। एक रात इस ने ऐसा गुल मचाया कि लोग वहां पहुंच गए और इसे तन्दुरुस्त खड़ा देखा। जब इस का ह़ाल दरयाफ़्त किया गया तो इस ने बयान किया कि इस जगह मैं ने ख़्वाब में नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा कि फ़रमाते हैं : यहां मस्जिद बनवाओ। मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं बीमार हूं। लोग मेरी बात का यक़ीन न करेंगे। हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने एक शख़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : ऐ अ़ली ! इस का हाथ पकड़ो। ह़ज़रते अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपना हाथ मेरी त़रफ़ बढ़ाया। मैं तन्दुरुस्त हो कर खड़ा हो गया जैसा कि तुम देख रहे हो।

इमाम इब्ने नो'मान मुसन्निफ़े "मिस्बाहुज़्ज़लाम" फ़रमाते है कि मैं ने उस मस्जिद को देखा है। हमारे उस्ताद ह़ाफ़िज़ दिम्याती़ और दीगर शुयूख़ इस क़िस्से का ज़िक्र करते थे और इस को सह़ीह़ बताते थे। येह क़िस्सा वहां मश्हूर है उस मस्जिद को मस्जिदुन्नबी कहते हैं।(3)

1 ......شواهد الحق، الباب السادس...الخ، الفصل الثانی فی ذکر من استغاث به صلی الله علیه وسلم، ص۲۲۸ ـعلمیه

2.....“शवाहिदुल ह़क़” में इस किताब का नाम “अल इशाराते फ़ी मा'रिफ़तुज़्ज़ियारात” और शहर का नाम “तौतह” लिखा है, والله تعالٰی اعلم بالصواب इल्मिय्या

3 ......شواهد الحق، الباب السادس...الخ، الفصل الثانی فی ذکر من استغاث به صلی الله علیه وسلم، ص۲۳٤ ـعلمیه

www.dawateislami.net

﴾22﴿.....अ़ल्लामा नबहानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी किताब "सआ़दतुद्दारैन" में ख़ुद अपने इस्तिग़ासा का क़िस्सा यूं तह़रीर फ़रमाते हैं कि किसी ना ख़ुदातरस दुश्मन ने मेरे ऊपर ऐसा इफ़्तिरा बांधा कि सुल्त़ान अ़ब्दुल ह़मीद ख़ान ने हुक्म दिया कि मुझे मा'ज़ूल कर के दूर अ़लाक़े में भेज दिया जाए। येह सुन कर मुझे बे क़रारी हुई। जुमा'रात का दिन था। जुमुआ़ की रात मैं ने एक हज़ार दफ़्आ़ इस्तिग़फ़ार पढ़ा और तीन सो पचास बार येह दुरूद शरीफ़ पढ़ा :

اللّٰھم صلّ علی سیّدِنا محمّدٍ وّعلٰی اٰل سیّدِنا محمّدٍ قَدْ ضَاقَتْ حِیْلَتِی اَدْرِکْنِی یا رسولَ اللہ

मुझे नींद आ गई, आख़िर रात फिर जागा और हज़ार दफ़्आ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा किया। जुमुआ़ की शाम ही को सुल्त़ान की त़रफ़ से तार आ गया कि मुझे बह़ाल रखा जाए। **अल्लाह** तआ़ला सुल्त़ान को नुस्रत दे और मुफ़्तरी[1] को रुस्वा करे। والحمد للہ ربّ العٰلمین[2]

﴾23﴿.....इमाम शरफ़ुद्दीन बूसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मुतवफ़्फ़ा सिने 694 हिजरी) अपने क़सीदए बुर्दा का सबबे तस्नीफ़ यूं बयान फ़रमाते हैं : "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में बहुत से क़सीदे लिखे जिन में से बा'ज़े वज़ीर ज़ैनुद्दीन या'क़ूब बिन ज़ुबैर की दरख़्वास्त पर तस्नीफ़ हुवे। बा'दे अज़ां ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुवा कि मैं मरज़े फ़ालिज में मुब्तला हो गया और इस से मेरा निस्फ़ बदन बेकार हो गया। मेरे जी में आया कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मद्ह़ में एक और क़सीदा लिखूं। चुनान्चे, मैं ने येह क़सीदए बुर्दा तय्यार किया और ब तवस्सुले हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बारगाहे बारी तआ़ला में अपनी आ़फ़िय्यत के लिये दुआ़ की। मैं ने उस क़सीदे को बार बार पढ़ा और आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुल से दुआ़ की और सो गया। (अब देखिये अह़मदे मुख़्तार की मसीह़ाई और मुह़म्मदे अ़रबी की चारह फ़रमाई) ख़्वाब में ज़ियारत हुई। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपना दस्ते शिफ़ा मेरे मफ़्लूज ह़िस्से पर फेरा और अपनी चादर (बुर्दा) मुबारक मुझ पर डाल दी। आंख खुली तो मैं ने अपने तईं तन्दुरुस्त व क़वी पाया। मैं ने उस क़सीदे का ज़िक्र किसी से न किया था। मगर जब मैं सुब्ह़ को घर से निकला तो रास्ते में एक दुरवेश ने मुझ से कहा कि वोह क़सीदा मुझे इनायत फ़रमाइये, जो आप ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में लिखा है। मैं ने कहा। आप कौन सा क़सीदा त़लब फ़रमाते हैं ? वोह बोले जो तुम ने

1.....झूट व इफ़्तिरा बांधने वाला।

2.....سعادۃ الدارین فی الصلاۃ علی سید الکونین، فصل فی الاستغاثۃ بہ ...الخ،ص۴۸۷۔علمیہ

www.dawateislami.net

ब ह़ालते मरज़ लिखा है और उस का मत़्लअ़ भी बता दिया और येह भी फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम ! रात को येही क़सीदा हम ने दरबारे नबवी में सुना है। जब येह पढ़ा जा रहा था तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام इस को सुन सुन कर झूम रहे थे। जैसा कि बादे नसीम के झोंके से मेवा दार दरख़्त की शाख़ें झूमती हैं। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को पसन्द फ़रमाया और पढ़ने वाले पर एक चादर डाल दी। येह सुन कर मैं ने अपना ख़्वाब बयान किया और येह क़सीदा उस दुरवेश को दे दिया। उस ने लोगों से ज़िक्र कर दिया और येह ख़्वाब मश्हूर हो गया।(1)

﴾24﴿.....शैख़ शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद जज़री शाफ़ेई (मुतवफ़्फ़ा सिने 734 हिजरी) अपनी मश्हूर किताब ''ह़िसने ह़सीन मिन कलामे सय्यिदुल मुर्सलीन'' के दीबाचे में अपने इस्तिग़ासे का यूं ज़िक्र करते हैं : ''जब मैं उस की तरतीब व तहज़ीब पूरी कर चुका तो मुझे ऐसे दुश्मन (अमीर तैमूर) ने त़लब किया कि **अल्लाह** के सिवा कोई उस को दफ़्अ़ नहीं कर सकता था। मैं उस दुश्मन से छुप कर भाग गया और उस किताब को मैं ने अपना ह़सीन(2) बनाया। मैं ने हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा। मैं हुज़ूर के बाईं जानिब बैठा हुवा हूं। हुज़ूर गोया फ़रमा रहे हैं कि तू क्या चाहता है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह ! मेरे लिये और मुसलमानों के लिये **अल्लाह** से दुआ़ कीजिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों दस्ते मुबारक उठाए, मैं देख रहा था, आप ने दुआ़ मांगी फिर दस्ते मुबारक चेहरे पर मले। येह ज़ियारत शबे पन्ज शम्बा(3) को हुई और शबे यक शम्बा(4) को दुश्मन भाग गया। **अल्लाह** तआ़ला ने उन अह़ादीस की बरकत से जो इस किताब में हैं मुझे और मुसलमानों को दुश्मन से नजात दी।''(5)

﴾25﴿.....फ़क़ीह अबू मुह़म्मद इश्बीली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब ''फ़ज़ीलते ह़ज'' में लिखा है कि अहले ग़र्नात़ा में से एक शख़्स को ऐसा मरज़ लाह़िक़ हो गया कि उस के इलाज से अत़िब्बा आ़जिज़ हो गए और शिफ़ा से मायूस हो गए। वज़ीर अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अबिल ख़िसाल ने एक नामा ब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लिखा और उस मरीज़ की शिफ़ा के लिये अश्आ़र में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तवस्सुल किया। येह नामा किसी के हाथ मदीनए मुनव्वरा को भेज दिया गया। जब वोह अश्आ़र हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रौज़ा शरीफ़ पर पढ़े गए

1 ......فوات الوفیات للعلامۃ محمد بن شاکر بن احمد کتبی متوفی ۷۶۴ھ ترجمہ محمد بن سعید بوصیری۔......(کشف الظنون، باب القاف، ج۲،ص۱۳۳۲۔علمیہ)

2.....मुह़ाफ़िज़ । 3.....जुमा'रात । 4.....इतवार ।

5 ......الحصن و الحصین،مقدمۃ المؤلف،ص۱۵۔علمیہ

www.dawateislami.net

तो बीमार अपने वत़न में उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गया। नामा ले जाने वाले ने वापस आ कर उसे देखा तो ऐसा तन्दुरुस्त पाया कि गोया वोह कभी बीमार ही न हुवा था।[1]

﴾26﴿.....अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद अज़्दी कह़ाल जो अन्दुलुस में एक नेक शख़्स था। बयान करता है कि अन्दुलुस में एक शख़्स का बेटा क़ैद हो गया। वोह अपने बेटे के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रयाद करने के लिये अपने शहर से निकला। रास्ते में कोई उस का वाक़िफ़ मिला। उस ने कहा : कहां जाते हो ? उस शख़्स ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रयाद करने जाता हूं क्यूंकि रूमियों ने मेरे बेटे को गिरिफ़्तार कर लिया है और तीन सो दीनार ज़रे फ़िदया क़रार दिया है। मुझ में इस्तित़ाअ़त नहीं। उस वाक़िफ़ ने कहा कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा हर जगह मुफ़ीद है।[2] मगर वोह न माना जब मदीनए मुनव्वरा में पहुंचा तो रौज़ा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अपना ह़ाल अ़र्ज़ किया और हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से तवस्सुल किया। उस ने ख़्वाब में देखा कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे हैं कि तुम अपने वत़न को लौट जाओ। जब वोह अपने शहर में वापस आया तो अपने बेटे को मौजूद पाया। उस से ह़ाल दरयाफ़्त किया तो बेटे ने कहा कि फ़ुलां रात मुझ को और बहुत से क़ैदियों को ख़ुदा तआ़ला ने रिहाई दी। वोह रात वोही थी जिस में उस का बाप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा था।[3] (شواهد الحق)

﴾27﴿.....इब्राहीम बिन मरज़ूक़ बयानी का बयान है कि जज़ीरए शक़र का एक शख़्स क़ैद हो गया और बेड़ियों और काठ[4] में ठोक दिया गया। वोह या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पुकार पुकार कर फ़रयाद करता था। उस के बड़े दुश्मन ने त़नज़न कहा कि उस से कहो कि तुम्हें छुड़ा दे। जब रात हुई तो एक शख़्स ने उसे बुलाया और कहा कि अज़ान कहो। वोह बोला :

---

1 ......وفاء الوفاء جزء ثانی ص ۴۳۰۔......(وفاء الوفاء، الباب الثامن ... الخ، الفصل الثالث فی توسل الزائر...الخ، ج۲، الجزء۲، ص ۱۳۸۷ ۔علمیه)

2.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में येह इ़बारत यूं है : "उस वाक़िफ़ ने कहा कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़ासा हर जगह मुफ़ीद नहीं है।" यक़ीनन येह किताबत की ग़लती है जिस की वज्ह से "नहीं" ज़ाइद लिखा गया है क्यूंकि "शवाहिदुल ह़क़" में इ़बारत यूं है : "فقال له إن التشفع بالنبی صلی اللّٰه تعالٰی علیه وسلم فی کل مکان نافع" लिहाज़ा हम ने इस इ़बारत को "शवाहिदुल ह़क़" के मुत़ाबिक़ लिखा है और जो "नहीं" ज़ाइद था उसे ह़ज़्फ़ कर दिया है। **इ़ल्मिय्या**

3 ......شواهد الحق، الباب السادس...الخ، الفصل الثانی فی ذکر من استغاث به، ص ۲۲۵ ۔علمیه

4.....मोटी लकड़ी जिस में सूराख़ कर के मुजरिमों के पाउं ठोक देते हैं।

www.dawateislami.net

तुम नहीं देखते कि मैं किस ह़ाल में हूं ? फिर उस ने अज़ान कही, जिस वक़्त वोह اشهد ان محمدا رسول الله (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर पहुंचा तो उस की बेड़ियां वग़ैरा ख़ुद ब ख़ुद टूट गईं और उस के सामने एक बाग़ नुमूदार हुवा। वोह बाग़ में फिर रहा था कि उसे एक रास्ता मिल गया जिस से वोह जज़ीरए शक़र में जा पहुंचा और उस का क़िस्सा उस के शहर में मश्हूर हो गया।[1] (شواهد الحق)

﴾28﴿.....सय्यिदी मुह़म्मद बिन सईद बसरी अल अस्ल क़ुरैशी शाफ़ेई (मुतवफ़्फ़ा सिने 839 हिजरी) के ख़िलाफ़ शाहे यमन ने कुछ त़लबे दुन्या के लिये लिख दिया था। इस पर आप ने हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जनाब में यूं तवस्सुल व इस्तिग़ासा किया :

ما لی سوی جاه النّبیّ محمّد | جاه بـه احمی و ابلغ مقصدی
فکم بـه زال العنا عنی و قد | اعدمت فی ظن العذول المعتدی
یاقلب لاتجزع وکن خیر امرئ | اضحٰی یرجی غارة من احمد
فعسٰی توافیك الفوائد ممسیًا | ولعلّ تاتیك البشائر فی غد

मेरे वासित़े नबी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के जाह के सिवा कोई ऐसा जाह नहीं कि जिस के वसीले से मैं मह़फ़ूज़ रहूं और अपने मक़्सद को पहुंचूं। क्यूंकि बहुत दफ़्आ़ आप के वसीले से मेरी तक्लीफ़ दूर हो गई क्यूंकि मैं मलामत करने वाले सितमगर के गुमान में मोह़ताज व हेच था। ऐ दिल तू बे सब्री न कर और अच्छा मर्द बन जो अह़मद से ग़ारत का उम्मीदवार रहे। क्यूंकि क़रीब है तुझे शाम को फ़ाइदे पहुंचेंगे और उम्मीद है तुझे कल बिशारतें आएंगी।

आप ने इस नज़्म को तमाम न किया था कि नींद आ गई। ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ज़ियारत हुई। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम ग़ारत के लिये आ गए हैं। तू हर रात हम पर एक हज़ार दुरूद भेजा कर। सूरज ग़ुरूब न होने पाया था कि मन्सूर की बीमारी की ख़बर आई। फिर तीसरे दिन वोह दुन्या से रुख़्सत हो गया।[2] (جامع الکرامات للنبہانی۔بحوالہ مناوی جزء اول ص ۱۵۶)

﴾29﴿.....सय्यिदी अबुल अ़ब्बास मिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का बयान है कि मैं जहाज़ पर सुवार हो गया। तलातुम के सबब से हम डूबने लगे। मैं ने हाथ उठा कर यूं दुआ़ की :

❶ ......شواهد الحق، الباب السادس...الخ، الفصل الثانی فی ذکر من استغاث به صلی الله علیه وسلم، ص ۲۲۶ ـ علمیه

❷ ......جامع کرامات الاولیاء، محمد بن سعید البصری العدنی، ج ۱، ص ۲۵۹-۲۶۰ ـ علمیه

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ بِحُرْمَةِ نَبِيِّكَ الْاُمِّيِّ اَنْقِذْنِيْ وَ سَلِّمْنِيْ .(1) या **अल्लाह** ! तू अपने नबिय्ये मुस्त़फ़ा के तुफ़ैल मुझे बचा ले और सलामत रख। मैं इस दुआ़ से फ़ारिग़ न हुवा था कि मुझे जहाज़ के गिर्द फ़िरिश्ते नज़र आए जिन्हों ने मुझे सलामती की बिशारत दी। मैं ने अपने साथियों को ख़ुश ख़बरी दी कि اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى तुम कल सुब्ह़ सह़ीह़ व सालिम मौज़ए़ मिरया में पहुंच जाओगे।(2)

(جامع الكرامات بحوالہ مصباح الظلام۔ جزء اول ص ۲۷۷)

﴾30﴿.....इमाम शरफ़ुद्दीन बूसैरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने क़सीदए हमज़िय्या में यूं फ़रयाद करते हैं :

و اتيـنـا اليك انضاء فقر ... حملتنا الى الغنى انضاء

وانطوت فى الصّدورحاجات نفس ... ما لها عن ندى يديك انطواء

فاغثنا يا من هو الغوث و الغى ... ث اذا اجهد الورى اللاواء

और हम गुनाहों के बोझ से नह़ीफ़ व नातुवां हो कर आप के पास आए हैं। दुबली ऊंटनियां हमें बारगाहे ग़िना में लाई हैं और हमारे दिलों में ज़ाती ह़ाजतें हैं। जिन के लिये आप के दस्ते मुबारक की सख़ावत से चारह नहीं। पस हमारी मदद कीजिये। ऐ फ़रयाद रस व बारां जब कि ख़िल्क़त क़ह़त़ से तंग आ जाए।(3)

﴾31﴿.....शैख़ुल इस्लाम ह़ाफ़िज़ अबुल फ़त्ह़ तक़िय्युद्दीन बिन दक़ीक़ुल ईद (मुतवफ़्फ़ा 11 सफ़र सिने 712 हिजरी) तवस्सुल व इस्तिग़ासा के बारे में यूं फ़रमाते हैं :

اقول لركب سائرين ليثرب ... ظفرتم بتقريب النبى المقرب

فبثوا اليه كل شكوى و متعب ... وقصوا عليه كل سئول ومطلب

و انتم بمرائى للرسول و مسمع ... ستحمون فى مغناه خير حماية

و تكفون ماتخشون اى كفاية ... و تبدو لكم من عنده كل اية

فحلوا من التعظيم ابعد غاية ... فحق رسول اللّٰه اكبر ما رعى

(طبقات الشافعية الكبرى للتاج السبكی ترجمہ ابن دقيق العيد)(4)

1.....मिस्बाहुज़्ज़ुलाम'' और ''जामेए़ करामातुल औलिया'' में अल्फ़ाज़ यूं हैं : اللهم بحرمة نبيك المصطفى عندك الا ما انقذتنا و سلمتنا हो सकता है मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास जो नुस्ख़ा हो उस में इसी त़रह़ हो या उन्हों ने बत़ौरे मा'ना इस दुआ़ को नक़्ल किया हो। واللّٰه تعالٰى اعلم بالصواب **इल्मिय्या**

2 ......مصباح الظلام، ص۱۱۹ و جامع كرامات الاولياء، ابو العباس المرى، ج۱، ص۴٦٠۔علميه

3 ......المنح المكية فى شرح الهمزية لابن حجر الهيتمى، رقم الاشعار ۳۸٤-۳۸٦، ص ٦١۔علميه

4 ......الطبقات الشافعية الكبرى، الطبقة السابعة فيمن توفى...الخ، الجز ۹، ص۲۱۹۔علميه

www.dawateislami.net

मैं यसरब जाने वाले शुतर सुवारों से कहता हूं कि तुम को नबिय्ये मुक़र्रब की ज़ियारत नसीब हो । तुम हुज़ूर से हर एक मरज़ व मशक़्क़त अ़र्ज़ कर देना और हर एक दरख़्वास्त व मत़लब बयान कर देना । इस ह़ाल में कि रसूलुल्लाह तुम्हें देखते और तुम्हारी बात सुनते होंगे और हुज़ूर की मन्ज़िल में तुम्हारी ख़ूब ह़िफ़ाज़त होगी । और जिस चीज़ से तुम डरते हो उस से ख़ूब बचाव होगा और हुज़ूर के हां से तुम्हारे वासित़े हर निशान ज़ाहिर होगा । पस तुम ग़ायत दरजे की ता'ज़ीम से उतरना क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ उन सब से बड़ा है जिन की रिआ़यत की जानी ज़रूरी है ।

﴾32﴿.....अ़ल्लामा कमालुद्दीन ज़म्लकानी अन्सारी (मुतवफ़्फ़ा 16 रमज़ान सिने 737 हिजरी) जिन्हों ने मस्अलए ज़ियारत व इस्तिग़ासा में अपने हम अ़स्र इब्ने तैमिय्या की तरदीद में एक रिसाला लिखा है, अपने क़सीदए मदह़िय्या में यूं फ़रमाते हैं :

يا صاحب الجاه عند اللّٰه خالقه   مـا رد جـاهك الا كـل افـاك
انت الوجيه على رغم العداء ابدا   انـت الشـفيـع لـفتـاك و نسـاك
يـا فرقة الـزيـغ لا لقيت صـالحة   و لا سقى اللّٰه يوما قلب مرضاك
ولا حظيت بجاه المصطفٰى ابدا   و من اعانك فى الدنيا و دالاك
ياافضل الرسل ويا مولى الانام ويا   خير الخلائق من انس و املاك
ها قد قصدتك اشكوبعض ماصنعت   بى الذنوب وهذا ملجاء الشاكى
قد قيدتنى ذنوبى عن بلوغ مدى   قصدى الى الفوز منها فهى اشراكى
فاستغفر اللّٰه لى واساله عصمته   فيما بقى وغنى من غير امساك
عليك من ربك اللّٰه الصلوة كما   منا عليك السلام الطيب الزاكى

(فوات الوفیات، جزء ثانی ص ۲۵۱)[1]

ऐ ख़ुदाए ख़ालिक़ के नज़दीक क़द्रो मन्ज़िलत वाले ! सिवाए दरोग़ गो[2] के किसी ने आप के जाहो मन्ज़िलत को रद नहीं किया दुश्मनों की ख़्वाहिश के बर अ़क्स आप हमेशा आबरू वाले हैं । आप दिलैरों और बहादुरों के शफ़ीअ़ हैं । ऐ फ़िर्क़ए कजरव ! तू किसी नेकी को न पाए

1 ......فوات الوفیات، حرف المیم،الباب کمال الدین ابن الزملکانی،ج٤،ص١٠ـعلمیه

2.....झूटा ।

www.dawateislami.net

और न ख़ुदा किसी रोज़ तेरे मरीज़ों के दिल सैराब करे और न तू जाहे मुस्तफ़ा से कभी फ़ाइदा उठाए और न दुन्या में तेरे मददगार और दोस्त फ़ाइदा उठाएं। ऐ फ़ज़्लर्रुसुल ऐ तमाम मख़्लूक़ात के आक़ा। ऐ तमाम इन्स व मलाइक से बेहतर! लो मैं आप की त़रफ़ मुतवज्जेह होता हूं ताकि मैं आप से अपने गुनाहों के सुलूक की शिकायत करूं और आप की बारगाह ही फ़रयाद करने वाले का मल्जा है। मेरे गुनाहों ने मुझे मेरे ग़ायत क़स्द तक पहुंचने से रोक कर अपने में फंसा लिया। पस वोह मेरा जाल हैं पस आप ख़ुदा से मेरे लिये मग़फ़िरत त़लब कीजिये और आयिन्दा इस से हि़फ़ाज़त और ग़िना बिला इम्साक की दुआ़ कीजिये। आप पर आप के परवर दगार **अल्लाह** की त़रफ़ से दुरूद हो। जैसा कि हमारी त़रफ़ से आप पर उ़म्दा पाक सलाम हो।

﴾33﴿.....मशहूर मुअर्रिख़ क़ाज़ी अ़ब्दुर्रह़मान मा'रूफ़ बेह इब्ने ख़ल्दून मालिकी (मुतवफ़्फ़ा सिने 808 हिजरी) यूं इस्तिग़ासा करते हैं :

هب لی شفاعتك التی ارجو بها — صفحا جمیلا عن قبیح ذنوبی

ان النجاة وان اتیحت لامرئ — فبفضل جاهك لیس بالتشبیب

انی دعوتك واثقا باجابتی — یاخیر مدعو و خیر مجیب

(المقالات الوفیہ فی الرد علی الوہابیہ)[1]

मुझे अपनी शफ़ाअ़त अ़त़ा फ़रमाइये। जिस से मैं अपने बुरे गुनाहों की मुआ़फ़ी की उम्मीद कर सकूं अगर नजात किसी मर्द के लिये मुक़द्दर है तो वोह आप के जाह के तुफ़ैल से है। तशबीब से नहीं। मैं आप को पुकारता हूं मुझे क़बूलिय्यत का यक़ीन है ऐ ख़ैरे मदऊ़! ऐ ख़ैरे मुजीब!

﴾34﴿.....शैख़ शहाबुद्दीन अबुल फ़ज़्ल अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी (मुतवफ़्फ़ा सिने 853 हिजरी) यूं अ़र्ज़ करते हैं :

نبی اللّٰه یا خیر البرایا — بجاهك اتقی فصل القضاء

و ارجو یا کریم العفو عما — جنته یدای یا رب الحباء

فقل یااحمد بن علی اذهب — الی دار النعیم بلا شقاء

(المقالات الوفیہ)[2]

---

1 ......نفح الطیب من غصن الاندلس الرطیب، بقیة ترجمة ابن خلدون عن الاحاطة ، الجزء ٧،ص ١٨٣۔علمیه

2 ......المقالات الوفیة

www.dawateislami.net

ऐ अल्लाह के नबी ! ऐ तमाम मख़्लूक़ से बेहतर ! हुज़ूर ही की क़द्रो मन्ज़िलत के तुफ़ैल क़ियामत में मेरा बचाव होगा। ऐ करीम ऐ साहिबे जूदो अ़ता ! मैं उन गुनाहों की जो मुझ से हुवे हैं मुआ़फ़ी की उम्मीद करता हूं। हुज़ूर फ़रमा दें कि ऐ अह़मद बिन अ़ली जन्नत में बिग़ैर मशक़्क़त के चला जा।

﴾35﴿.....इमाम उ़मर बिन अल वर्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه यूं अ़र्ज़ करते हैं :

يارب بالهادى البشير محمد وبدينه العالى على الاديان

ثبت على الاسلام قلبى واهدنى للحق وانصرنى على الشيطان

(المقالات الوفيه)[1]

ऐ मेरे परवर दगार हादिये बशीर ह़ज़रते मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के तुफ़ैल से और हुज़ूर के दीन की बरकत से जो सब दीनों पर ग़ालिब है मेरे दिल को इस्लाम पर साबित रख और ह़क़ की त़रफ़ मेरी रहनुमाई कर और मुझे शैत़ान पर ग़लबा दे।

﴾36﴿.....मौलाना शाह वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه क़सीदए हमज़िय्या में इस त़रह़ इस्तिग़ासा फ़रमाते हैं :

رسول اللّٰه ياخير البرايا نوالك ابتغى يوم القضاء

اذا ما حل خطب مدلهم فانت الحصن من كل البلاء

اليك توجهى وبك استنادى وفيك مطامعى وبك ارتجائى[2]

ऐ अल्लाह के रसूल ऐ तमाम ख़ल्क़ से बेहतर क़ियामत के दिन मैं आप की अ़ता बख़्शिश चाहता हूं जब कोई सख़्त मुसीबत पेश आवे तो हुज़ूर ही हर बला के बचाव के लिये क़ल्आ़ हैं हुज़ूर ही की त़रफ़ मेरी तवज्जोह है और हुज़ूर ही मेरा सहारा हैं और हुज़ूर ही से भलाई की त़म्अ़ और हुज़ूर ही से उम्मीद है।

﴾37﴿.....मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते शाह वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के क़सीदए अत़यबुन्नग़म की तज़्मीन में यूं फ़रमाते हैं :

---

1 ......المقالات الوفية

2 ......قصيده اطيب النغم ، قصيده همزيه، فصل ششم،ص ٢٢٠-٢٢١ـعلميه

www.dawateislami.net

مدار وجود الكون فی کل لحظة — ومفتاح باب الجود فی کل عسرة
و متمسك الملهوف فی کل شدة — ومعتصم المكروب فی کل غمرة
ومنتجع الغفران من کل تائب — اليك قد العين حين ضراعة [1]

आप हर लहजे़ वुजूदे आ़लम के दारो मदार हैं और हर मुश्किल में सख़ावत के दरवाजे़ की कुन्जी हैं और हर शिद्दत में परेशान बे क़रार की पनाह हैं और हर मुसीबत में आफ़त रसीदा का सहारा हैं और हर एक तौबा करने वाले के लिये बख़्शिश का वसीला हैं। ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ के वक़्त आप ही की त़रफ़ आंख उठती है।

﴾38﴿.....उस्ताद कबीर शैख़ ह़मदुल्लाह शबरावी मिस्री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत के वक़्त यूं अ़र्ज़ करते हैं :

يارسول اللّٰه انی مذنب — و من الجود قبول المذنب
يانبی اللّٰه مالی حيلة — غير حبی لك يا خير نبی
عظم الكرب ولی فيك رجاء — فيه يارب فرج كربی

(مقالات وفیہ)[2]

या रसूलल्लाह ! मैं गुनहगार हूं। गुनहगार की अ़र्ज़ का क़बूल करना जूदो करम है। या नबिय्यल्लाह या सय्यिदल अम्बिया आप की मह़ब्बत के सिवा मेरा कोई ह़ीला नहीं। मेरा अन्दोह ग़म बड़ा है। मुझे आप से उम्मीद है। ऐ परवर दगार ! ह़ुज़ूर के तुफ़ैल से मेरा ग़म दूर कर दे।

﴾39﴿.....ह़ज़रते ह़ाजी ह़ाफ़िज़ शाह मुह़म्मद इम्दादुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दरबारे नबवी में यूं अ़र्ज़ करते हैं :

करम फ़रमाओ हम पर और करो ह़क़ से शफ़ाअ़त तुम
हमारे जुर्मो इस्यां पर न जाओ या रसूलल्लाह
फंसा हूं बे त़रह़ गिर्दाबे ग़म में ना ख़ुदा हो कर
मेरी किश्ती किनारे पर लगाओ या रसूलल्लाह
जहाज़ उम्मत का ह़क़ ने कर दिया है आप के हाथों
बस अब चाहो तिराओ या डुबाओ या रसूलल्लाह

(رسالہ دردنامہ غمناک)[3]

1 ......قصیدہ اطیب النغم کی تضمین
2 ......المقالات الوفية
3 ......رسالة درد نامه غمناك

www.dawateislami.net

﴾40﴿.....मौलवी[1] क़ासिम नानोतवी ने लिखा है :

मदद कर ऐ करम अह़मदी कि तेरे सिवा — नहीं है क़ासिम बेकस का कोई ह़ामिये कार
येह है इजाबत ह़क़ को तेरी दुआ़ का लिह़ाज़ — क़ज़ाए मुबरम व मशरूत़ की नहीं है पुकार
ख़ुदा तेरा तू जहां का है वाजिबुत्ताअ़त — जहां को तुझ से तुझे अपने ह़क़ से है सरोकार

(क़साइदे क़ासिमी)

ह़दीसे तवस्सुल बिल अ़ब्बास की बह़स

ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त में सिने 18 हिजरी में जिसे आ़मुर्रिमादह कहते हैं सख़्त क़ह़त पड़ा, चौपाए और इन्सान भूक की शिद्दत से मरने लगे। लोगों ने तंग आ कर ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म से इस्तिस्क़ा के लिये दरख़्वास्त की जिसे इमाम बुख़ारी ने यूं नक़्ल किया है :

عن انس بن مالك ان عمر بن الخطاب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ كان اذا قحطوا استسقى بالعباس بن عبد المطلب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ فقال اللهم انا كنا نتوسل اليك بنبينا صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم فتسقينا وانا نتوسل اليك بعم نبينا فاسقنا قال فيسقون۔(باب سوال الناس الامام الاستسقاء اذا قحطوا)[2]

अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि उ़मर बिन ख़त्ता़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब लोगों में क़ह़त पड़ा अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब के वसीले से बारिश की दुआ़ की और यूं अ़र्ज़ किया : या अल्लाह ! हम तेरी जनाब में अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वसीला पकड़ा करते थे। पस तू हमें बारिश अ़त़ा कर देता था और अब हम तेरी बारगाह में अपने नबी के चचा को वसीला बनाते हैं। पस हमें बारिश अ़त़ा कर (क़ौले रावी) पस बारिश हो रही थी।

1.....सीरते रसूले अ़रबी के साबिक़ा मत़बूओं में यहां तकरीम के अल्फ़ाज़ हैं लेकिन फ़िर्क़ए वहाबिय्या और उन के अकाबिरीन के रद पर किताब "अन्वारे आफ़्ताबे सदाक़त" (अज़ : क़ाज़ी फ़ज़्ले अह़मद नक़्शबन्दी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) पर अ़ल्लामा मौलाना नूर बख़्श तवक्कुली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की तक़रीज़ मौजूद है जिस में आप फ़रमाते हैं : "फ़िर्क़ए वहाबिय्या नजदिय्या की तरदीद में येह मजमूआ़ बड़ा कार आमद है।" और येह भी तह़रीर फ़रमाया : "मुसन्निफ़ ने हर जगह अ़क़ीदए अहले सुन्नत के सुबूत में दलाइल वाज़ेह़ और बराहीने क़ात़िआ़ पेश किये हैं और उन मसाइल पर क़लम उठाया है जिन की तरदीद इस ज़मानए पुर आशोब में निहायत ज़रूरी है।" लिहाज़ा तकरीम के अल्फ़ाज़, किताबत की ग़लती पर मह़मूल करते हुवे हम ने ह़ज़्फ़ कर दिये हैं। **इल्मिय्या**

2 ......صحیح البخاری، کتاب الاستسقاء،باب سؤال الناس الامام...الخ، الحدیث:۱۰۱۰،ج۱، ص۳۴۶۔

www.dawateislami.net

इब्ने तैमिय्या और उन के मुक़ल्लिदीने नजदिय्या कहते हैं कि ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म ने जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर ह़ज़रते अ़ब्बास से तवस्सुल किया इस से साबित होता है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बा'दे वफ़ात शरीफ़ तवस्सुल जाइज़ नहीं। वरना ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसा न करते। इब्ने तैमिय्या का येह इजतिहाद ईजादे बन्दा है। उ़लमाए अहले सुन्नत में से आज तक किसी ने इस ह़दीस से येह नतीजा अख़ज़ नहीं किया। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में ह़यात व वफ़ात में इस त़रह़ फ़र्क़ करना कमाल दरजे की शक़ावत है। जैसा कि आगे बयान होगा। मस्अलए ज़ियारत व तवस्सुल की मुख़ालफ़त का ख़मयाज़ा जो इब्ने तैमिय्या को भुगतना पड़ा हम उस की त़रफ़ पहले इशारा कर आए हैं। अब हम ह़दीसे ज़ेरे बह़्स की निस्बत ब त़रीके़ इख़्तिसार ह़स्बे ज़ैल गुज़ारिश करते हैं :

सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) ने इस दुआ़ए बारां में नामे नामी ह़ज़रते अ़ब्बास को वसीला नहीं बनाया। बल्कि यूं अ़र्ज़ किया कि ऐ परवर दगार हम तेरी जनाब में अपने नबी के चचा का वसीला पेश करते हैं। अगर्चे नामे नामी ले कर वसीला पकड़ना भी जाइज़ था मगर इस मौक़अ़ पर फ़ारूके़ आ'ज़म और दीगर सह़ाबए किराम को ह़ज़रते अ़ब्बास की क़राबते नबवी जतला कर गोया हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ही का वसीला पेश करना मन्ज़ूर था। चुनान्चे, ख़ुद ह़ज़रते अ़ब्बास अपनी ज़बाने मुबारक से इक़रार करते हैं जैसा कि "उ़म्दतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीह़ बुख़ारी" में बदीं अल्फ़ाज़ मज़कूर है।

و فی حدیث ابی صالح فلما صعد عمر و معه العباس المنبر قال عمر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ : اللهم انا توجهنا اليك بعم نبيك وصنو ابيه فاسقنا الغيث و لا تجعلنا من القانطين ثم قال قل يا ابا الف ضل فقال العباس اللهم لم ينزل بلاء الا بذنب و لم يكشف الابتوبة و قد توجه بى القوم اليك لمكانى من نبيك. (الحديث)[1]

और ह़दीसे अबू सालेह़ में है कि जब ह़ज़रते उ़मर व ह़ज़रते अ़ब्बास मिम्बर पर चढ़े तो ह़ज़रते उ़मर ने अ़र्ज़ किया : या अल्लाह हम तेरी जनाब में तेरे नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा को जो बजाए वालिदे नबी के हैं पेश करते हैं तू हमें बारिश अ़त़ा फ़रमा और हमें ना उम्मीद न कर। फिर कहा : ऐ अ़ब्बास तुम भी दुआ़ करो। ह़ज़रते अ़ब्बास ने यूं दुआ़ की : या अल्लाह ! नहीं उतरी कोई बला मगर गुनाह के सबब से और नहीं दूर हुई मगर तौबा से और क़ौम ने इस वासित़े मेरा वसीला पकड़ा है कि मेरा तअ़ल्लुक़ तेरे नबी से है।

---

1 ......عمدة القارى، كتاب الاستسقاء، باب سؤال الناس الامام...الخ، تحت الحديث: ١٠١٠، ج٥، ص٢٥٥ـ علميه

www.dawateislami.net

खुद ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बयान से भी साफ़ पाया जाता है कि यहां ह़क़ीक़त में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तवस्सुल है। ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र "इस्तीआ़ब" में ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के ह़ालात में लिखते हैं :

ورويناه من وجوه عن عمر انه خرج يستسقى وخرج معه بالعباس فقال:اللهم انا نتقرب اليك بعم نبيك صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ونستشفع به فاحفظ فيه نبيك صلى الله تعالى عليه وآله وسلم كما حفظت الغلامين لصلاح ابيهما. (الحديث)(1)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से हमें कई वज्ह से रिवायत पहुंची है कि वोह अपने साथ ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ले कर निकले और अ़र्ज़ किया : या अल्लाह ! हम ब वसीला तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा के तेरी जनाब में ह़ाज़िर होते हैं और इन को अपना शफ़ीअ़ बनाते हैं। पस तू इस में अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिआ़यत कर जैसा कि तू ने उन दो यतीम बच्चों की रिआ़यत उन के बाप की नेकी के सबब की (कि उन की गिरती दीवार को सीधा खड़ा कर दिया)।

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه में आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिआ़यत का मत़लब येही है कि क़राबते नबवी को मल्ह़ूज़ रख कर बारिश की दुआ़ को शरफ़े क़बूलिय्यत अ़त़ा फ़रमा। तारीखे़ कामिल इब्ने असीर में भी येही मज़मून तक़रीबन इन ही अल्फ़ाज़ में मज़कूर है।(2)

"उ़म्दतुल क़ारी" में येह रिवायत भी है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब मुर्तद्दीन के मुक़ाबले में लश्करे इस्लाम को रवाना किया तो आप ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ मुशायिअ़त(3) के वासित़े शहर से बाहर निकले और कहा :

ياعباس استنصر و انا اومن فانى ارجو ان لا يخيب دعوتك لمكانك من نبى الله صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم.(4)

ऐ अ़ब्बास ! मदद की दुआ़ मांगो और मैं आमीन कहता जाऊं क्यूंकि मुझे उम्मीद है कि तुम्हारी दुआ़ बेकार न जाएगी ब वज्ह इस के कि तुम्हारा नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ है।

1 ......الاستيعاب فى معرفة الاصحاب لابن عبد البر،حرف العين،باب عباس،ج٢،ص٣٦١۔علميه

2 ......الكامل فى التاريخ لابن اثير،سنة ثمان عشرة،ذكر القحط وعام الرمادة،ج٢،ص٣٩٨۔علميه

3 .....फ़ौज को रुख़्सत करते वक़्त कुछ फ़ासिले तक इस के साथ जाना।

4 ......عمدة القارى،كتاب الاستسقاء،باب سؤال الناس الامام...الخ، تحت الحديث:١٠١٠،ج٥، ص٢٥٥۔علميه

www.dawateislami.net

खुलासए कलाम येह है कि ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसीला बनाना सिर्फ़ क़राबते नबवी के सबब से था और येह तवस्सुल बिन्नबी है (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) बईं हमा अगर तस्लीम भी कर लिया जाए कि ह़दीसे ज़ेरे बह़स में ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म ने ह़ज़रते अ़ब्बास की ज़ाते ख़ास से बिला तअ़ल्लुक़ क़राबते नबवी के वसीला पकड़ा है तो इस से हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ाते पाक से वसीला पकड़ने का इन्कार नहीं निकलता। हुज़ूर के वसीला होने और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ से दुआ़ मांगने का सुबूत मुत़लक़न इसी ह़दीस में मौजूद है। अब इस मुत़लक़ तवस्सुल को कि आ़म है ह़ालते ह़यात और वफ़ात से, मुक़य्यद ब ह़ालते ह़यात करना और ह़ालते वफ़ात की नफ़ी करना किस क़ाइदे से है और दलालाते अरबअ़ए इ़ल्मे उसूल (عبارة النص واشارة النص ودلالة النص و اقتضاء النص) में से कौन सी दलालत इस नफ़िय्ये तवस्सुल पर दलालत करती है? हरगिज़ कोई दलालत नफ़िय्ये तवस्सुल पर दलालत नहीं करती। येह इजतिहाद बे बुन्याद किसी इ़ल्मी क़ाइदे पर मब्नी नहीं क्यूंकि अगर मसलन एक शख़्स में एक वस्फ़ पाया जाए तो वोह दूसरे शख़्स में उस वस्फ़ के न पाए जाने की दलील नहीं बन सकता। पस इस सूरत में ह़दीसे ज़ेरे बह़स से तवस्सुल बिन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़लावा अहले बैत व दीगर सुलह़ाए उम्मत से तवस्सुल का जवाज़ साबित होता है और ह़ज़रते फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अवक़ात में हर दो त़रीक़ पर अ़मल किया है।

यहां नजदिय्या की त़रफ़ से येह ए'तिराज़ किया जाता है कि इस मौक़अ़ पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (जो अफ़्ज़ल ज़रीआ़ हैं) को छोड़ कर दूसरा वसीला क्यूं इख़्तियार किया? इस का जवाब कई त़रह़ से दिया गया है।

अव्वलन : ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र ''इस्तीआ़ब'' (तर्जमए अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब) में यूं लिखते हैं :

قال ابو عمر: وكان سبب ذلك ان الارض اجدبت اجدابا شديدا على عهد عمر زمن الرمادة و ذلك سنة سبع عشرة فقال كعب ياامير المؤمنين ان بنى اسرائيل كانو اذا اصابهم مثل هذا استسقوا بعصبة الانبياء فقال عمر: هذا عم رسول الله صلى الله تعالى عليه وآله وسلم وصنو ابيه و سيد بنى هاشم فمشى اليه عمر و شكا اليه ما فيه الناس من القحط ثم صعد المنبر و معه عباس....الخ (1)

1 ......الاستيعاب فى معرفة الاصحاب لابن عبد البر،حرف العين،باب عباس،ج٢،ص٣٦٠-علميه

www.dawateislami.net

अबू उ़मर ने कहा कि इस का सबब येह था कि ह़ज़रते उ़मर के अ़ह्द में आ़मुर्रिमादह में सख़्त ख़ुश्क साली थी और येह सिने 17 हिजरी था। ह़ज़रते का'ब ने कहा : ऐ अमीरल मोमिनीन बनी इस्राईल में जब ऐसा क़ह़त पड़ता था तो वोह पैग़म्बरों की एक जमाअ़त के वसीले से बारिश की दुआ़ किया करते थे। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर ने फ़रमाया : येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा और ब मन्ज़िला वालिदे नबी और सय्यिद बनी हाशिम हैं। पस ह़ज़रते उ़मर ने ह़ज़रते अ़ब्बास से क़ह़त की शिकायत की जिस में लोग मुब्तला थे। फिर मिम्बर पर चढ़े और आप के साथ ह़ज़रते अ़ब्बास भी थे।

पस यहां भी क़राबते नबवी की वज्ह से तवस्सुल है जो तवस्सुल बिन्नबी है। صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **सानिय्यन** : अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "**अज्जोहरुल मुनज़्ज़म**" स. 77[1] में फ़रमाते हैं :

وكان حكمة توسله به دون النبى صلى الله تعالىٰ عليه وآله وسلم و قبره اظهار غاية التواضع لنفسه و الرفعة لقرابة النبى ففى توسله توسل بالنبى صلى الله تعالىٰ عليه وآله وسلم وزيادة.[2]

गोया नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की क़ब्र शरीफ़ को छोड़ कर ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से तवस्सुल करने में ह़िक्मत ब मुक़ाबलए ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी तवाज़ोअ़ का ज़ाहिर करना और क़राबते नबवी की रिफ़्अ़त का इज़्हार था। पस ह़ज़रते अ़ब्बास से तवस्सुल तवस्सुल बिन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है और ज़ियादत है।

सालिसन : शैख़ैनुल अ़ल्लामा मौलाना मुश्ताक़ अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने रिसाले "**दफ़्उ़त्तामिल अ़नित्तवस्सुल बसय्यिदुर्रुसुल**" स. 17 में यूं तह़रीर फ़रमाते हैं :

येह इल्मे कलाम का मस्अलए मुसल्लमा है कि वली की करामत उस नबी का मो'जिज़ा है जिस की उम्मत में वोह वली है। येह जो करामत ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से उस मौक़ए इस्तिस्क़ा पर ज़ाहिर हुई कि उन की दुआ़ से मींह बरसा, येह मो'जिज़ा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुवा। यहां अफ़्ज़ल ज़रीए को सह़ाबा ने छोड़ा नहीं बल्कि और ज़ियादा अफ़्ज़लिय्यत को जतला दिया कि हमारे पास ऐसा अफ़्ज़ल ज़रीआ़ है जिस के अदना ग़ुलामों या जिस के क़राबत दारों के वसीला बनाने से ख़ुदावन्दे करीम दुआ़ क़बूल फ़रमा लेता है। इन्तिहा[3]

1.....सीरते रसूले अ़रबी के नुस्ख़ों में यहां अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के रिसाले का नाम "**जोहर मुअ़ज़्ज़म**" लिखा है जो कि यक़ीनन किताबत की ग़लती है, सह़ीह़ नाम "अज्जोहरुल मुनज़्ज़म" है। नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत के आदाब व फ़ज़ाइल वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की येह एक उ़म्दा तालीफ़ है। **इल्मिय्या**

2 ......الجوهر المنظم، الفصل السابع، ص ٦٢ ـ علميه

3 ......دفع التامل

www.dawateislami.net

इन नजदिय्या से पूछना चाहिये कि तुम्हारा दा'वा तवस्सुल बिल ह़दीस है और ह़दीसे सह़ीह़ में वारिद है कि क़ियामत के दिन सब लोग ब ग़रज़े शफ़ाअ़त दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के पास यके बा'द दीगरे जाएंगे । फिर अख़ीर में हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होंगे। शफ़ाअ़ते उ़ज़्मा के बा'द जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से मुख़्तस है। उ़लमा और शुहदाए उम्मत भी गुनहगारों के लिये जो दोज़ख़ में होंगे शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। पस वहां अफ़्ज़ल ज़रीए छोड़ कर दूसरे वसीले क्यूं इख़्तियार किये जाएंगे? इस ह़दीस से तो ज़ाहिर है कि अफ़्ज़ल ज़रीआ़ की मौजूदगी में दीगर वसाइल इख़्तियार करना जाइज़ है। ग़रज़ तवस्सुल बिन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जाइज़, तवस्सुल बि अहलुल बैत वस्सुलह़ा जाइज़, एक वक़्त में हर दो मअ़न जाइज़ और मुख़्तलिफ़ अवक़ात में अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा भी जाइज़ हैं।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ के बा'द सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को कई मौक़ओं पर तवस्सुल की ज़रूरत पड़ी है। जिन में से इस्तिग़ासा व तवस्सुल ज़ेरे बह़्स एक मिसाल है। अब देखना येह है कि इन्हों ने ऐसे मवाक़ेअ़ पर किस त़रह़ तवस्सुल किया है? इस किताब में ऐसी दस मिसालें पहले मज़्कूर हो चुकी हैं। जिन का मा ह़स्ल हम यहां बित्तरतीब दोहराते हैं :

﴾1﴿.....हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हो चुका है। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ चेहरए मुबारक से चादर उठा कर यूं पुकारते हैं : اذكرنا يا محمد عند ربك و لنكن من بالك ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें अपने परवर दगार के पास याद करना और ज़रूर हमारा ख़याल रखना।

﴾2﴿.....दफ़्न शरीफ़ के तीसरे रोज़ एक आ'राबी मज़ारे मुक़द्दस पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करता है : "या रसूलल्लाह! मैं आप के पास आया हूं ताकि आप मेरे ह़क़ में दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाएं।" क़ब्र शरीफ़ से आवाज़ आई कि तुझे बख़्श दिया गया।

﴾3﴿.....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में क़ह़त़ पड़ा। ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करते हैं : या रसूलल्लाह! आप की उम्मत हलाक हो रही है। बारिश की दुआ़ फ़रमाएं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मेरा सलाम कहो और बारिश की बिशारत दो और उन से येह भी कह दो कि दीन में नर्मी इख़्तियार करें। चुनान्चे, बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ह़ज़रते फ़ारूक़े

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर सुनाई। आप सुन कर रो पड़े। अगर बा'दे वफ़ात शरीफ़ तवस्सुल जाइज़ न होता तो अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़रूर मन्अ़ करते।

﴾4﴿.....एक साल मदीनए मुनव्वरा में क़ह़त़ पड़ा। लोग ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रयाद करते हैं। ह़ज़रते ममदूह़ा फ़रमाती हैं कि रौज़ा शरीफ़ पर ह़ाज़िर हो कर एक रोशनदान आस्मान की त़रफ़ खोल दो चुनान्चे, ऐसा ही किया जाता है और ख़ूब बारिश होती है। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से किसी ने इस तवस्सुल पर ए'तिराज़ न किया बल्कि बा'द में येह त़रीक़े तवस्सुल अहले मदीना में जारी रहता है ह़ज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इ़ल्मी क़ाबिलिय्यत मोह़ताजे बयान नहीं। अगर वफ़ात शरीफ़ के बा'द तवस्सुल नाजाइज़ होता तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم सुकूत न फ़रमाते। येह जवाज़े तवस्सुल पर इजमाए़ सुकूती है।

﴾5﴿.....अ़ह्दे फ़ारूक़ी में आ़मुर्रिमादह ही का वाक़िआ़ है कि ह़ज़रते बिलाल बिन ह़ारिस सह़ाबी अपने अहले ख़ाना के इसरार पर एक बकरी ज़ब्ह़ करते हैं। खाल उतारने पर सुर्ख़ हड्डियां नज़र आईं तो यूं पुकारते हैं। या मुह़म्मदा !

﴾6﴿.....अ़ह्दे फ़ारूक़ी ही में सिने 15 हिजरी में मुसलमानों का मुक़ाबला यूक़न्ना ह़ाकिमे ह़लब के लश्करे जर्रार से होता है। ह़ज़रते का'ब बिन ज़मरा लश्करे इस्लाम के बचाने के लिये बे चैन हो रहे हैं और यूं पुकार रहे हैं : يامحمد يامحمد يانصر الله انزل या मुह़म्मद ! या मुह़म्मद ! (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ऐ नुस्रते इलाही ! नुज़ूल फ़रमा।

इस लश्करे इस्लाम में किस क़दर सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم शामिल होंगे मगर किसी ने इस इस्तिग़ासा पर ए'तिराज़ नहीं किया।

﴾7﴿.....सिने 13 हिजरी में ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना ख़त़ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ुर्त़ सह़ाबी के हाथ ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम यरमूक भेजते हैं और ब वसीलए ह़ुज़ूर रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सलामती की दुआ़ करते हैं। जाते वक़्त ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रौज़ए अक़्दस पर ह़ाज़िर होते हैं। वहां आप की दरख़्वास्त पर ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) रौज़ा शरीफ़ पर हाथ उठा कर यूं दुआ़ करते हैं اللهم انا نتوسل بهذا النبى المصطفى والرسول المجتبى...الخ या **अल्लाह** ! हम उस नबिय्ये मुस्त़फ़ा रसूले मुजतबा (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के वसीले से दुआ़ करते हैं.....इलख़।

www.dawateislami.net

इस मौक़अ़ पर ह़ज़राते ह़सनैन व ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم भी इस दुआ़ में शरीक हैं। इस के बा'द ह़ज़रते अ़ली ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह से फ़रमाते हैं कि अब जाइये। **अल्लाह** तआ़ला उ़मर व अ़ब्बास व अ़ली व ह़सन व हुसैन व अज़्वाजे रसूलुल्लाह की दुआ़ को रद न करेगा। इस लिये कि इन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला की जनाब में अपने नबी का वसीला पकड़ा है जो अकरमुल ख़ल्क़ हैं।

﴾8﴿.....ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का पाउं सो गया। आप पुकारते हैं : या मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और ख़्वाबेदगी दूर हो जाती है।

﴾9﴿.....एक शख़्स किसी ह़ाजत के लिये बार बार ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता है मगर ह़ज़रते ख़लीफ़ा तवज्जोह नहीं फ़रमाते। ह़ज़रते उ़स्मान बिन हुनैफ़ सह़ाबी उस शख़्स को वोह त़रीक़े तवस्सुल बताते हैं जो ख़ुद हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नाबीना को बताया था जिस में येह अल्फ़ाज़ हैं :

اللهم انی اسئلك و ا توجه اليك بنبيك محمد نبی الرحمة يا محمد انی ا توجه بك الی ربك ان تقضی حاجتی

वोह शख़्स इस पर अ़मल करता है और कामयाब होता है। येही अ़मल आज तक मशाइख़े उम्मत में जारी है।

﴾10﴿.....बनू आ़मिर (क़बीलए ह़ज़रते नाबिग़ा जा'दी) बसरा में खेतों में अपने मवेशी चराया करते थे। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को उन के त़लब करने के लिये भेजते हैं। ह़ज़रते नाबिग़ा अपनी क़ौम के साथ शामिल हो जाते हैं। ह़ज़रते अबू मूसा उन को ताज़ियाने लगाते हैं। ह़ज़रते नाबिग़ा सह़ाबी इस तशद्दुद की फ़रयाद आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से यूं करते हैं : فيا قبر النبی وصاحبيه الايا غوثنا لو تسمعونا. पस ऐ क़ब्र नबी की और आप के दो सह़ाबा की देखना ऐ हमारे फ़रयाद रस काश आप सुनें।

मैं ने येह मिसालें सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم की इस वासित़े दोहराई हैं कि मोमिनों के ईमान को ताज़गी बख़्शती हैं। इस अ़शरए कामिला के इलावा क़ुरआने करीम की दो आयतों से तवस्सुल ज़ेरे बह़्स का सुबूत ख़ुद हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अम्बियाए साबिक़ीन عَلَيْهِمُ السَّلَام से तवस्सुल ह़ज़राते ताबेईन का तवस्सुल बिन्नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आ'राबी का क़िस्सा ब रिवायते इमाम उ़त्बी (मुतवफ़्फ़ा सिने 228 हिजरी) जिसे उ़लमाए मज़ाहिबे अरबआ़ ने आदाबे ज़ियारत में शुमार किया है। फिर इस ज़माने तक तवस्सुल की और चालीस मिसालें, येह सब कुछ इस किताब में पहले आ चुका है। ज़ियादा की ज़रूरत नहीं।

www.dawateislami.net

क़ारेईने किराम ! ग़ौर का मक़ाम है हुज़ूर रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इब्तिदाए आफ़रीनश से ता क़ियामत वासिता व वसीला व ज़रीआ़ हैं। चुनान्चे, ख़ल्क़े आ़लम में आप ही वासिता थे। आ़लमे अरवाह़ में अम्बियाए किराम की रूहों ने जो उ़लूम व मआ़रिफ़ ह़ासिल किये वोह आप ही के वासिते व ज़रीए से किये। इस आ़लम में अम्बियाए किराम को जो मुश्किलात पेश आईं और जो इन्आ़माते इलाही उन पर हुवे इन मुश्किलात का ह़ल और इन इन्आ़मात का ह़ुसूल आप ही के वासिते से था। दुन्या में वुजूदे उ़न्सुरी के साथ तशरीफ़ लाने पर ख़ालिक़ व मख़्लूक़ में वासिता आप ही की ज़ाते अक़्दस थी। आप का इरशादे मुबारक है : "देता ख़ुदा है, बांटता मैं हूं।"[1] सह़ाबए किराम क़ज़ाए ह़ाजात के लिये अल्लाह तआ़ला की जनाब में आप ही का वासिता पेश किया करते थे। वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी ज़मानए सह़ाबए किराम से आज तक ऐसा ही होता चला आया है और ता क़ियामत रहेगा। अ़रसाते क़ियामत में तमाम उम्मतों की मुश्किल का ह़ल आप ही के वासिते से होगा। इनदरीं ह़ालात मुन्किरीन का तवस्सुल बा'दल वफ़ात से इन्कार निहायत ह़ैरत अंगेज़ है। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी क़ब्र शरीफ़ में ब ह़याते ह़क़ीक़िय्या दुन्यविय्या ज़िन्दा हैं। आप के तसर्रुफ़ात ब दस्तूर जारी हैं। इसी वासिते आप की उम्मत में क़ुतुब व अवताद व अब्दाल ता क़ियामत होते रहेंगे। आप की दुन्यवी ज़िन्दगी में जिस आ'ला वस्फ़ के सबब से आप से तवस्सुल किया जाता था, वोह वफ़ात शरीफ़ के बा'द भी ब दस्तूर साबित है क्यूंकि आप ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। इसी त़रह़ वस्फ़े रह़मतुल्लिल आ़लमीन भी बा'दल वफ़ात आप में मौजूद है क्यूंकि आप का इरशादे मुबारक है कि मेरी ह़यात और मेरी ममात दोनों तुम्हारे वासिते बेहतर हैं।[2] जैसा कि पहले बयान हो चुका है। बईं हमा आप की ह़यात व ममात में फ़र्क़ करना और तवस्सुल बा'दल वफ़ात का इन्कार करना यक़ीनन ह़रमान व शक़ावत की अ़लामत है। अल्लाह तआ़ला हिदायत दे बिजाहे ह़बीबहू صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّم

﴾4﴿.....अ़रसाते क़ियामत में शफ़ाअ़त व तवस्सुल :

इस किताब में शफ़ाअ़त का ज़िक्र पहले आ चुका है। शफ़ाअ़त के जिस क़दर अन्वाअ़ हैं वोह सब हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये साबित हैं। जिन में से बा'ज़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुख़्तस हैं और बा'ज़ में मुशारकत है। क़ियामत में सब से पहले जो

---

1 ......صحیح بخاری، کتاب العلم،من یرد اللہ بہ...الخ،الحدیث:۷۱،ج۱،ص۴۳۔علمیہ

2 ......الجامع الصغیر للسیوطی،الحدیث:۳۷۷۰،ص۲۲۹۔علمیہ

www.dawateislami.net

बाबे शफ़ाअ़त खोलेंगे वोह आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم होंगे। इस लिये ह़क़ीक़त में तमाम शफ़ाअ़तें हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की त़रफ़ राजेअ़ हैं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही साह़िबे शफ़ाअ़त अ़लल इत़्लाक़ हैं। वोह अन्वाअ़ ह़स्बे ज़ैल हैं :

अव्वल : शफ़ाअ़ते उ़ज़्मा है जो तमाम ख़लाइक़ को आ़म है और हुज़ूर को मुख़्तस है। मैदाने ह़श्र में तूले वुक़ूफ़ के सबब से सब लोग घबरा जाएंगे और ब ग़रज़े शफ़ाअ़त अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पास यके बा'द दीगरे जाएंगे मगर सब की त़रफ़ से येही जवाब मिलेगा कि हम इस के अहल नहीं। आख़िरे कार हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर होंगे और हुज़ूर انالها (मैं इस का अहल हूं) फ़रमाते हुवे बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में तूले वुक़ूफ़ से नजात और ता'जीले ह़िसाब के लिये शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

दुवुम : एक जमाअ़त के ह़क़ में बिग़ैर ह़िसाब बिहिश्त में दाख़िल होने के लिये शफ़ाअ़त होगी। चुनान्चे, हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शफ़ाअ़त से सत्तर हज़ार आदमी बे ह़िसाब बिहिश्त में जाएंगे। उन सत्तर हज़ार के साथ और बहुत से भी बे ह़िसाब जन्नत में चले जाएंगे। बा'ज़ के नज़्दीक येह नौअ़ भी आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मख़्सूस है।

सिवुम : वोह अक़्वाम जिन की नेकियां और बुराइयां बराबर हैं, शफ़ाअ़त से जन्नत में जाएंगे।

चहारुम : जो लोग दोज़ख़ के मुस्तह़िक़ व मस्तूजिब हैं वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बिहिश्त में चले जाएंगे।

पन्जुम : एक जमाअ़त के रफ़्ए़ दरजात के लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

शशुम : गुनहगार लोग जो दोज़ख़ में होंगे वोह शफ़ाअ़त से निकल आएंगे। येह शफ़ाअ़त तमाम अम्बिया व मलाइका व शुहदा में मुशतरक है।

हफ़्तुम : इस्तिफ़ताहे़ जन्नत के लिये शफ़ाअ़त होगी।

हशतुम : जो लोग अ़ज़ाबे दाइमी के मुस्तह़िक़ होंगे उन (में से बा'ज़) के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ के लिये होगी।

नहुम : ख़ास अहले मदीना के लिये होगी।

दहुम : आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ा शरीफ़ के ज़ाइरीन के लिये होगी।(1)

(اشعۃ اللمعات جلد رابع ص ۴۰۴)

---

1 ......اشعة اللمعات، كتاب الفتن،باب الحوض و الشفاعة،ج٤،ص٤٠٤ـعلميه

www.dawateislami.net

अब अख़ीर में तवक्कुली मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ मुंह कर के रोता हुवा दरबारे रिसालत में यूं अ़र्ज़ कर रहा है : "या रसूलल्लाह ! क़ियामत में इस मिस्कीन, आ़जिज़, बे नवा, सरापा गुनाह, **मुह़म्मद नूर बख़्श तवक्कुली** की शफ़ाअ़त फ़रमा दीजियेगा।"

هٰذا اٰخر الكلام فى سيرة خير الانام عليه الف الف تحية و سلام

رَبِّ تَقَبَّلْ مِنِّیْ هٰذِهِ الْهَدِيَّةَ الطَّفِيْفَةَ لِجَنَابِ حَبِيْبِكَ الْخَصِيْبِ عَلَيْهِ
اُلُوْفُ الصَّلٰوةِ وَالتَّحِيَّةِ وَ اجْعَلْهَا اِلٰى حُصُوْلِ رِضَاكَ وَنَيْلِ شَفَاعَتِهٖ وَسِيْلَةً
اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَّبِعِيْنَ لِشَرِيْعَتِهٖ الْمُتَّصِفِيْنَ بِمُحَبَّتِهٖ الْمُهْتَدِيْنَ
بِهَدْيِهٖ وَسِيْرَتِهٖ وَ تَوَفَّنِیْ عَلٰى سُنَّتِهٖ وَ مِلَّتِهٖ وَ لَا تَحْرِمْنِیْ فَضْلَ شَفَاعَتِهٖ
وَ احْشُرْنِیْ فِیْ اَتْبَاعِهِ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ وَ اَشْيَاعِهِ السَّابِقِيْنَ وَ اَصْحَابِ
الْيَمِيْنِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِشُيُوْخِیْ وَ لِسَآئِرِ الْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ
يَقُوْمُ الْحِسَابُ بِرَحْمَتِكَ يَا رَحْمٰنُ يَارَحِيْمُ يَاغَفَّارُ يَاوَهَّابُ هٰذَا وَ
اٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِنَا
وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَ اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ وَ اَوْلِيَاءِ اُمَّتِهٖ
وَ اَتْبَاعِهٖ اَجْمَعِيْنَ .

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مؤلف / مصنف / متوفی	مطبوعات/سن طباعت
1	قرآن مجید	کلام الٰہی	مکتبة المدینه، کراچی
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبة المدینه، کراچی
3	المحرر الوجیز	ابو محمد عبد الحق بن غالب بن عبد الرحمٰن الاندلسی المحاربی متوفی ۵۴۲ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ۲۰۰۷ء
4	تفسیر الطبری	امام ابو جعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
6	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹه ۱۴۱۹ھ
7	روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبة المدینه، کراچی
9	الاتقان فی علوم القرآن	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
10	مسند الطیالسی	امام سلیمان بن داود بن جارود طیالسی، متوفی ۲۰۳ھ	دار المعرفه، بیروت
11	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
12	سنن الدارمی	امام حافظ عبد اللّٰہ بن عبد الرحمٰن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۰۷ھ
13	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ۱۴۱۹ھ
14	الادب المفرد	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	تاشقند ایران، ۱۳۹۰ھ
15	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی، عرب شریف ۱۴۱۹ھ
16	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجه، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفه، بیروت ۱۴۲۰ھ
17	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
18	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار المعرفه، بیروت ۱۴۱۴ھ
19	سنن الدار قطنی	امام علی بن عمر دار قطنی، متوفی ۳۸۵ھ	مدینة الاولیاء، ملتان ۱۴۲۰ھ
20	نوادر الاصول	ابو عبد اللّٰہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبه امام بخاری
21	البحر الزخار المعروف بمسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبةالعلوم و الحکم، المدینة المنورة ۱۴۲۴ھ
22	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ۱۴۲۶ھ
23	الضعفاء	ابو جعفر محمد بن عمرو بن موسیٰ بن حماد العقیلی، متوفی ۳۲۲ھ	دار الصمیعی السعودیة ۱۴۲۰ھ
24	المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
25	المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

26	المعجم الصغير	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٠٤ھ
27	الكامل في ضعفاء الرجال	امام ابواحمد عبداللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤١٨ھ
28	المستدرك على الصحيحين	امام ابوعبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفه، بیروت ١٤١٨ھ
29	حلية الاولياء	حافظ ابونعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤١٩ھ
30	شعب الايمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٢١ھ
31	السنن الكبرى	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٢٤ھ
32	فردوس الاخبار	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٨ھ
33	تاريخ دمشق لابن عساكر	علامہ علی بن حسن، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٥ھ
34	مشكاة المصابيح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیه بیروت ١٤٢١ھ
35	الجامع الصغير	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٢٥ھ
36	الفوز الكبير في اصول التفسير	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	باب المدینه، کراچی
37	جامع اسباب النزول	شیخ خالد عبدالرحمٰن العک	باب المدینه، کراچی
38	الحصن والحصين	ابوخیر محمد بن محمد بن محمد بن الجزری متوفی ۸۳۳ھ	مکتبة العصریه بیروت ٢٠٠٤ء
39	كتاب الاذكار للنووى	امام محی الدین ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت١٩٩٩ء
40	شرح النووى على المسلم	امام محی الدین ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٠١ھ
41	فتح البارى	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٢٠ھ
42	عمدة القارى	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دارالفکر، بیروت ١٤١٨ھ
43	ارشاد السارى	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الفکر، بیروت ١٤٢١ھ
44	مرقاة المفاتيح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر، بیروت ١٤١٤ھ
45	فيض القدير	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیه، بیروت ١٤٢٢ھ
46	اشعة اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ١٣٣٢ھ
47	مرأة المناجيح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
48	نزهة القارى	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	برکاتی پبلشرز کھارادر کراچی ٢٠٠٠ء
49	شرح النسائى للسيوطى	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الجیل بیروت
50	المدخل	علامہ محمد بن محمد ابن الحاج، متوفی ۷۳۷ھ	دار الکتب العلمیه بیروت، ١٤١٥ھ
51	الميزان الكبرىٰ	عبدالوہاب بن احمد بن علی احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	مصطفی البابی، مصر
52	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفه، بیروت ١٤٢٠ھ
53	بهارشريعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبة المدینه باب المدینه کراچی٢٠٠٨ء
54	الحاوى للفتاوى	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت

www.dawateislami.net

55	كتاب الزهد	امام عبد اللہ بن مبارک مروزی، متوفی ۱۸۱ھ	دار الكتب العلميه، بيروت
56	احياء علوم الدين	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بيروت ۲۰۰۰ء
57	مكتوبات امام ربانى	مجدد الف ثانی شیخ احمد سرہندی، متوفی ۱۰۳۴ھ	کوئٹہ
58	جامع كرامات الأولياء	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مركز اهلسنت بركات رضاهند ۱۴۲۲ھ
59	العقد الفريد	الفقیہ احمد بن محمد بن عبدربہ الاندلیسی ۳۲۸ھ	دار الكتب العلميه، بيروت ۱۴۱۷ھ
60	كشف الغمة	عبدالوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار الكتب العلميه، بيروت ۱۴۱۹ھ
61	شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مركز اهلسنت بركات رضا(هند)
62	مكتوبات شيخ عبدالحق محدث دهلوى	شیخ عبدالحق محدث دهلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	گمبٹ ضلع خیر پور
63	التذكرة في احوال الموتى وامور الآخرة	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار السلام رياض ۲۰۰۸ء
64	انيس الطالبين (مترجم)	صلاح بن مبارک بخاری متوفی ۷۹۳ھ	قادری رضوی کتب خانہ لاہور
65	نفحات الانس (مترجم)	مولانا عبدالرحمٰن الجامی ۸۹۸ھ	شبیر برادرز لاہور
66	السيرة النبوية لابن هشام	ابو محمد عبدالملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار الكتب العلمية بيروت ۱۴۲۲ھ
67	الشمائل المحمديه للترمذى	امام محمد بن عیسیٰ الترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	داراحياء التراث بيروت
68	دلائل النبوة	امام ابو بکر احمد بن الحسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الكتب العلميه، بيروت ۱۴۲۳ھ
69	الشفا بتعريف حقوق المصطفى	القاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مركز اهلسنت بركات رضا هند ۱۴۲۳ھ
70	الروض الانف	الامام ابو القاسم عبدالرحمٰن بن عبداللہ الخثعمی السہیلی، متوفی ۵۸۱ھ	دار الكتب العلمية بيروت
71	الخصائص الكبرى	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الكتب العلميه، بيروت
72	المواهب اللدنية	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الكتب العلميه، بيروت ۱۴۱۶ھ
73	الجوهر المنظم	شیخ الاسلام احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	مكتبه قادريه، لاهور ۱۹۸۷ء
74	مدارج النبوة	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	نوريه رضويه لاهور ۱۹۹۷ء
75	نسيم الرياض	شہاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ۱۴۲۱ھ
76	شرح المواهب	محمد زرقانی بن عبدالباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ	دارالكتب العلميه ۱۴۱۷ھ
77	حجة الله على العالمين	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مركز اهل سنت بركات رضا، هند
78	السيرة الحلبية	ابو الفرج نور الدین علی بن ابراہیم حلبی متوفی ۱۰۴۴ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ۱۴۲۲ھ
79	وفاء الوفاء للسمهودى	نور الدین علی بن احمد السمہودی متوفی ۹۱۱ھ	داراحياء التراث بيروت
80	زاد المعاد	ابو عبداللہ محمد بن ابی بکر دمشقی متوفی ۷۵۱ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ۱۴۲۱ھ
81	دلائل النبوة لابى نعيم	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	مكتبة العصريه بيروت ۲۰۰۹ء

www.dawateislami.net

82	طبقات الشافعية الكبرى	امام ابوحسن تاج الدين بن على بن عبدالكافى السبكى متوفى ۷۷۱ھ	المكتبه الشامله ١٤١٣ھ
83	الكامل في التاريخ	عزالدين ابن الأثير متوفى ۶۳۰ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ١٩٩٨ء
84	فتوح الشام	محمد بن عمر بن واقد السہمى الاسلمى بالولاء، المدنى، الواقدى المتوفى ۲۰۷ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ٢٠٠٥ء
85	أخلاق النبي و آدابه لابي الشيخ الاصبهاني	حافظ عبدالله بن محمد الاصبهانى متوفى ۳۶۹	دارالكتاب العربى بيروت ٢٠٠٧ء
86	مطالع المسرات شرح دلائل الخيرات (مترجم)	امام علامہ محمد مہدى فاسى متوفى ۱۱۰۹ھ	نوريه رضويه پبليكيشنز لاهور ٢٠٠٣ء
87	شواهد الحق	امام يوسف بن اسماعيل نبہانى، متوفى ۱۳۵۰ھ	مركز اهل سنت بركات رضا، هند
88	سعادة الدارين في الصلاة على سيد الكونين	امام يوسف بن اسماعيل نبہانى، متوفى ۱۳۵۰ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ١٤٢٢ھ
89	الطبقات الكبرىٰ	محمد بن سعد بن منيع هاشمى، متوفى ۲۳۰ھ	دارالكتب العلميه، بيروت ١٩٩٧ء
90	الاستيعاب في معرفة الاصحاب	ابوعمر يوسف عبدالله بن محمد بن عبدالبر قرطبى، متوفى ۴۶۳ھ	دار الكتب العلميه بيروت ١٤٢٢ھ
91	الاصابة في تمييز الصحابة	امام الحافظ احمد بن على بن حجر العسقلانى، متوفى ۸۵۲ھ	دار الكتب العلميه بيروت ١٤١٥ھ
92	أسد الغابة	امام حافظ احمد بن على بن حجر عسقلانى، متوفى ۸۵۲ھ	دار الكتب العلميه، بيروت ١٤١٧ھ
93	فوات الوفيات	محمد بن شاكر بن احمد الكتبى متوفى ۷۶۴ھ	دار صادر بيروت ٧٤-١٩٧٣ء
94	حياة الحيوان الكبرىٰ	كمال الدين محمد بن موسى دميرى، متوفى ۸۰۸ھ	دار الكتب العلميه بيروت ١٤١٥ھ
95	المستطرف في كل فن مستظرف	شہاب الدين محمد بن ابى احمد ابى الفتح، متوفى ۸۵۰ھ	دار الفكر بيروت ١٤١٩ھ
96	سبل الهدى والرشاد	محمد بن يوسف صالحى شامى، متوفى ۹۴۲ھ	دار الكتب العلميه بيروت ١٤١٤ھ
97	المغني عن حمل الاسفار	ابوالفضل زين الدين العراقى متوفى ۸۰۶ھ	مكتبه طبريه الرياض
98	مَذاهب اسلام	مولوى محمد نجم الغنى خان رامپورى	ضياء القران پبلى كيشنز مركز الاوليا لاهور
99	عقيدة الشهدة شرح قصيدة البردة	علامہ عمر بن احمد الخرپوتى متوفى	باب المدينه كراچى
100	القصيدة النونية	محمد بن ابى بكر ابن قيم متوفى ۷۵۱ھ	مكتبه قاهره شامله ١٤١٧ھ
101	بستان المحدثين	شاه عبدالعزيز بن شاه ولى الله محدث دہلوى، متوفى ۱۲۳۹ھ	باب المدينه كراچى
102	قصيده نعمانيه للامام الاعظم	علامہ شيخ شہاب الدين احمد بن حجر مكى متوفى ۹۷۳ھ	مكتبة الحقيقة استنبول تركى
103	قصيده اطيب النغم	شاه ولى الله محدث دہلوى، متوفى ۱۱۷۶ھ	ضياء القران پبلى كيشنز لاهور ١٩٩٩ء
104	نفح الطيب من غصن الاندلس الرطيب	احمد بن محمد المقرى التلمسانى متوفى ۱۰۴۱ھ	دار صادر بيروت
105	تكملة السيف الصقيل	محمد زاہد بن الحسن الكوثرى	المكتبة الازهرية للتراث مصر
106	نهاية الايجاز في دراية الاعجاز	امام فخر الدين محمد بن عمر بن حسين رازى، متوفى ۶۰۶ھ	دار صادر بيروت ١٤٢٤ھ
107	غياث اللغات	مولانا محمد غياث الدين	باب المدينه كراچى
108	القصيدتان (البردة للبوصيري)	امام محمد شرف الدين بوصيرى متوفى ۶۹۵ھ	ضياء القران پبلى كيشنز لاهور ٢٠٠٤ء
109	المنح المكية في شرح الهمزية	شہاب الدين احمد بن محمد بن على بن حجر ہيتمى شافعى متوفى ۹۷۴ھ	دار المنهاج بيروت ٢٠٠٥ء

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये,

इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है।

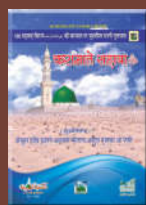

ISBN 978-969-631-302-1
0101826

مكتبة المدينة
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net